अयन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- जो शुभ गुण युक्त सुखकारक पशुओ के गले छुरों से काटकर अपने पेट भर सब ससार की हानि करते हैं क्या ससार मे उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी दुख देने वाले और पापी जन होंगे ?
- मैं तो अपना तन, मन धन सब कुछ सत्य के ही प्रकाशनार्थ समर्पण कर चुका। मुझसे खुशामद करके अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता किन्तु ससार को लाभ पहुचाना ही मुझे चक्रवर्ती राज्य के तुल्य हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । १२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अक २] दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ माघ शु० ९ स० २०५० २० फरवरी १९९४

शाहीइमाम के यहां मुस्लिम देशोंके राजनयिकों और अमरीकी प्रतिनिधि का जमावड़ा

कश्मीर पर चर्चा : भारतीय खुफिया तन्त्र कहां है

नई दिल्ली, १३ फरवरी। राजधानी दिल्ली मे केन्द्रीय खुफिया एजेंसियो की नाक के नीचे राष्ट्र विरोधी तत्त्व सक्रिय है।

परसो शाही इमाम के यहा एक जमावडा हुआ। किसी विश्वसनीय एव जमावडा मे मौजूद सूत्र के अनुसार शाही इमाम के यहा जमा लोगो मे ईरान, सऊदी अरब अल्जीरिया सुडान और अफगानिस्तान जैसे आधी दर्जन मुस्लिम देशो के राजनयिकों के अलावा अमरीकी दूतावास के एक अधिकारी की आश्चर्यजनक उपस्थिति थी। इस बैठक मे कश्मीर के मामले पर अच्छी-खासी चर्चा हुई।

अमरीका के राष्ट्रपति क्लिटन की चिट्ठी से बहुचर्चित एव विवादित गुलाम नबी फई भी पिछले महीने दिल्ली आया था और १२ दिन तक यहा रहा था। उसने कुछ दिन सरकारी गैस्ट हाउस मे और कुछ दिन पाच तारा होटलो म बिताए। बताया जाता है कि उसने राजधानी मे विराम के दौरान एक ओर कश्मीरी नेताओं के साथ और दूसरी ओर अनेक विदेशी दूतावासो के साथ सम्पर्क स्थापित किए और फिर भारत विरोधी प्रचार सामग्री के बोरे भरकर कश्मीर चला गया। इस प्रचार सामग्री मे राफल के कश्मीर सम्बन्धी वक्तव्यो के अलावा क्लिटन और बेनजीर की चिट्ठियां भी शामिल थीं। खबर है कि वह शाम दिन तक कश्मीर में रहा वहां उसने अनेक आतकवादी और अलगाववादी गुटो के प्रतिनिधियों से मुलाकातें कीं। उन्हे नई नई भारत विरोधी प्रचार सामग्री जुटाई और आतकवादी कारवाइया तेज करने के लिए उकसाया।

यह भी चर्चा है कि कश्मीर हाउस के कुछ कमरो मे जो जम्मू-कश्मीर के प्रशासनिक अधिकारियों के नाम से बुक रहते है, प्राय दिल्ली मे सक्रिय कश्मीरी उग्रवादी सगठनो के सदस्य आकर रहते हैं। ये तत्त्व सरकारी गाडिया इस्तेमाल करते हैं। यह भी चर्चा है कि कुछ अन्य सरकारी गैस्ट हाउसो मे भी देश विरोधी तत्त्व पनाह लेते हैं। महाराष्ट्र सदन के कुछ कमरे भी ऐसे ही तत्त्वों द्वारा इस्तेमाल किए जाने की सूचना है। नेशनल कान्फ्रेस के कुछ नेताओ के बगले भी ऐसे ही कार्यों के लिए प्रयोग मे लाए जाते है।

इन हालात मे भारतीय खुफिया तन्त्र कहा है, क्या कर रहा है यह एक अत्यन्त गम्भीर विचारणीय विषय है।

(पजाब केसरी १४ फरवरी से साभार)

हमारा खुफिया तन्त्र कहां सो रहा है ?

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

राष्ट्रविरोधी और विघटनकारी तत्त्वो द्वारा इस प्रकार की मन्त्रणा और आतकवादियो से साठ गाठ की उक्त घटना केन्द्र सरकार के खुफिया तन्त्र की कार्य क्षमता पर गम्भीर प्रश्नचिह्न है। सरकार ने यदि इस मामले को गम्भीरता से लेकर कड़े कदम न उठाये तो राष्ट्रविरोधी शक्तिया इस देश को ऐसी क्षति पहुचायेंगी जिसकी पूर्ति कभी नही हो सकेगी।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस

आगामी ७ मार्च १९९४ को महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७०वा जन्म दिवस बृहद् समारोह के साथ महर्षि दयानन्द गो सवर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर दिल्ली मे दोपहर २ बजे से मनाया जाएगा। इस अवसर पर केन्द्रीय मानव ससाधन मन्त्री श्री अर्जुनसिंह, कृषि मन्त्री श्री बलराम जाखड दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना हरियाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल आदि अनेक नेता पधार रहे हैं। भारी सख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनायें।

इसी दिन प्रात १० बजे राष्ट्रपति भवन मे भी महामहिम राष्ट्रपति डा० शकरदयाल शर्मा की अध्यक्षता मे प्रमुख अन्य जनो की उपस्थिति मे महर्षि दयानन्द जन्म दिवस धूमधाम से मनाया जायेगा।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

संपादक . डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता मे उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की सूची

क्र० सं०	नाम पता	प्राप्तांक	रोल नं०
१	डा० सुशील खन्ना, सुपुत्री श्री मेहरचन्द खन्ना, आर जेड.-बी-२/१०, डाबरी पालम रोड विजय एन्क्लेव, दिल्ली-४५	३९५	१०४
२	श्री अशोक कुमार कसल, द्वारा कसल फीलिंग स्टेशन, ए० एच० रोड स्थान पो० थोल जिला कुरुक्षेत्र (हरियाणा) पिन-१३२१३६	३५४	११४
३	डा० जीतसिंह खोखर, (द्वितीय स्थान) ५६०, नजदीक धोबी घाट, सिनेमा के पीछे, नाभा-१४७२०१पटियाला (पंजाब)	४४४	११७
४	श्री रमेश चन्द्र वर्मा, सघन हथकरघा विकास परियोजना विश्वेश्वर गंज पुलिस चौकी के निकट गाजीपुर (उ० प्र०) २३३००१	३४८	११८
५	श्री विन्ध्या प्रसाद शास्त्री सदन, नई आबादी नगला अजीता, आगरा-२	२६७	१३९
६	श्रीमती पूर्णिमा त्यागी द्वारा श्री देवराज त्यागी स्कूटर सैन्टर, सैक्टर-२ बी० एच० ई० एल०, रानीपुर हरिद्वार (उ० प्र०)	३२५	१४१
७	डा० श्रीमती विजय अग्रवाल नवजीवन अस्पताल, नजदीक बस स्टैंड, हिसार (हरियाणा)	३८३	१४८
८	श्री रजनीश महोत्रा वार्ड न० ६, म० न० १९१ कठुआ (ज० का०) पिन-१८४१०१	३९३	१५३
९	श्री वेद भूषण गुप्ता सुपुत्र श्री आदित्य प्रकाश, आर्य समाज, खेड़ा अफगान सहारनपुर (उ० प्र०)	३५७	१५४
१०	श्री चण्डी प्रसाद यादव गवर्नमेन्ट गर्ल्स सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल सैक्टर १८/सी० चण्डीगढ़	३६५	१५६
११	आचार्य ब्रह्मदत्त आर्य, वैदिक उपदेशक महाविद्यालय, ३८, क्षेत्र मित्र लेन सलकिया हावड़ा (प० बंगाल)	३१९	१५७
१२	श्री अखिलेश आर्य, द्वारा विजय कुमार बढ़ी, मण्डी धामपुर बिजनौर (उ० प्र०)	३२६	१६०
१३	श्रीमती आशा गुप्ता, पत्नी सुक्खू प्रसाद-गुप्ता, जनता साईकिल स्टोर के ऊपर रानी की सराय आजमगढ़ (उ० प्र०)	३२२	१६२
१४	श्री नन्दकिशोर जी बी० पी० स्टाप, कदमा रोड जे०-६, क्वाटर न० ३४५, जमशेदपुर (बिहार)	३५०	१६५
१५	श्री पी० आर० मोहन १८, सीता अम्मा रोड, अलवरपेट, मद्रास-६०००१८	३२४	१६६
१६	ब्र० सुधीर कुमार, गुरुकुल ऐरवा कटरा, इटावा (उ० प्र०)	३४१	१६८

(क्रमश:)

स्वामी सोमानन्द के जीवन के अविस्मरणीय क्षण

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
(अवैतनिक कार्यकर्ता दिल्ली सभा)

स्वामी सोमानन्द सरस्वती प्रसिद्ध गायक कवि तथा कथा वाचक थे। उन्होंने अपने जीवन मे वैदिक धर्म की दुन्दभि बजाई। वह कर्मठ उत्साही वेद विद्वान थे। वह क्षण आज भी चित्रपट की तरह सामने घूम रहा है। इस काल की धारा के प्रवाह में कितने लोग सहसा मिलते और बिछुड़ते हैं।

इन्सान की जिन्दगी पानी के बुलबुले के समान है। जो एक क्षण में लुप्त हो जाती है वह अल्पकालिक मिलन अवधि में ही चिरस्मृति छोड़ जाते हैं। उनका हम लोगो के बीच से चला जाना अस्वाभाविक है वह एक ऐसी शक्ति थे जो प्रकाश देकर विराट सत्ता मे विलीन हो गई। हर मनुष्य को परमपिता का विधान स्वीकार करना पड़ता है। उस सृष्टिकर्ता ने जीवन-मरण अपने अधिकार में रखा है।

जिनकी अब स्मृतियां ही शेष है वह एक मार्ग के पथिक थे उनका साहस और विवेक, मुस्कान से दीप्त चेहरा, आज हमारे बीच से चले जाने पर कभी भुलाया नही जा सकेगा।

उनके जीवन की झांकी

जिला मधु पुरी नरी, ग्राम मे जन्माये।
शीतल प्रसाद शीतल शुभ नाम से कहलाए ।।
शीतल प्रसाद शीतल संगीतज्ञ थे निराले।
कवि भी थे अनेको भजन, गीत रच डाले ।।

जादू का असर करती स्वर लहरियां तराने।
प्रसिद्ध है जगत मे उनके अनेक गाने ।।
वैदिक धर्म चमन के प्रहरी थे सोमानन्द।
सब भांति सुयोग्य वैदिक मिशनरी थे सोमानन्द ।।

संगीत की कला से सबको रिझाने वाले।
वह शुष्क मरुस्थल मे थे पुष्प खिलाने वाले ।।
प्रचण्ड ज्वाला मे पडकर सोना निखार आये।
सन्यास्रम ग्रहण कर सोमानन्द जी कहाये ।।

अमित मुदित उल्लसित बढ़ते चले अगारी।
वैदिक धर्म प्रचार मे बिताई उम्र सारी ।।
वैदिक विवेक के थे अनुयायी सोमानन्द।
पाखण्ड रोग मिटाने की थे दवाई सोमानन्द ।।

पाखण्ड रूढिवाद जहां जहां पनपते देखा।
छल, कपटी, पाखण्डियो को बढ़ यौवन हडपते देखा ।।
स्वामी जी ने वहां जाकर वैदिक ध्वनि गुंजाई।
झटके से तोड़ डाली पाखण्ड की कलाई।

अन्तिम पड़ाव

जीवन के अन्त का जब अन्तिम पड़ाव आया।
जीवनमरण होता है वह क्षण निकटतम आया।
क्रूर काल ने अचानक आकर के धावा बोला।
एक क्षण मे स्वास क्या ने नाशवान चोला ।।
श्रद्धा सुमन सत सत नमन।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल की साधारण सभा दिनांक २३-१-९४ की बैठक में वर्ष १९९३-९४, ९४-९५ और ९५-९६ के लिए निम्न पदाधिकारी चुने गए। प्रधान—श्री बटकृष्ण बर्मन, मन्त्री—श्री आनन्द कुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री सिद्धार्थ गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष—श्री मधुसूदन सिद्धार्थ।

सम्पादकीय

जातीय विद्वेष की विष बेल देश के लिए घातक

निर्वाचन आयोग आवश्यक कदम उठावे

स्वाधीन भारत के इतिहास मे शायद पहली बार साम्प्रदायिकता को कोसने वाले तथा कथित धर्म निरपेक्षता वादियो ने जातिवाद को जिस खुले रूप मे भड़काया है इससे जाति-जाति के बीच घृणा की खाई पैदा करने के तमाम रिकार्ड टूट गए हैं।

कुछ राज्यो मे नवम्बर १९९३ मे विधान सभा चुनावो मे दलितो और हरिजनो को भड़काने के लिए "तिलक-तराजू और तलवार इनको मारो जूते चार" आदि विषैले नारे लगाकर जातिवाद की विद्वेष भावना को खूब भड़काया गया। बसपा नेता कांशीराम तथा मायावती ने तो अपनी चुनावसभाओ मे यहा तक कह दिया कि 'उनकी सभा मे यदि ब्राह्मण बनिए और राजपूत हो तो उठकर चले जावें" हम इन जातियो के लोगो को सहन करने को तैयार नही है। चुनाव मे लाभ उठाने के लिए बसपा ने दलितो तथा मुसलमानो को हिन्दू साम्प्रदायवाद का हव्वा दिखाकर और भाजपा को हिन्दुओ की प्रतिनिधि संस्था बताकर उसे हराना ही अपना एकमात्र उद्देश्य घोषित किया था। यद्यपि इस नारे की बदौलत बसपा सपा के साथ उत्तर प्रदेश मे शासन हथियाने मे भी सफल हो गई है। परन्तु मुख्य प्रश्न यह है कि जाति विद्वेष की जो विष बेल चुनावो के दौरान रोपी गई हैं क्या उसके दुष्परिणाम पूरे समाज और राष्ट्र को नही भोगने पड़ेंगे ? उन भयकर दुष्परिणामो और राष्ट्रहित के विरुद्ध होने वाली बाधाओ की रोकथाम के क्या कोई उपाय नही हैं। प्रश्न यह भी उठता है कि क्या भारतीय संविधान के अन्तर्गत चुनाव आयोग के पास इस गम्भीर मामले मे विचार करने का भी कोई अधिकार है या नही ? क्योंकि मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टी एन शेषन ने गत चुनावो मे अनेक महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए हैं, उनकी सख्ती से विगत चुनावो मे मतदाताओ ने बिना भय किये अपने मताधिकार का प्रयोग किया था, और चुनावी हिंसा भी नही के बराबर हुई थी। यदि चुनाव आयोग ने सख्ती से जातिवाद प्रथा की चुनावी राजनीति का निदान नही किया तो, इसके दुष्परिणाम का जो दृश्य १६ दिसम्बर को उत्तर प्रदेश विधान सभा मे हिंसक लावे के रूप मे फूटकर सामने आया है कोई आश्चर्य नही होगा कि भविष्य मे वह संसद तथा अन्य विधान सभाओ तक भी फैल जायेगा।

आर्य समाज ने जन्मना जातिपात का हमेशा विरोध किया है। आर्य समाज के संस्थापक और महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तनाव विहीन समाज के निर्माण पर बल दिया था। जिसमे गुण कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्णव्यवस्था स्वीकार की गई थी। स्वामी दयानन्द ने भी ब्राह्मणवाद के कोरे आडम्बरो का खण्डन किया था। उन्होने वेदानुकूल वर्ण व्यवस्था के आधार पर हिन्दू समाज मे व्याप्त अध विश्वासो, आडम्बरो और धार्मिक एकाधिकार का कड़ा विरोध किया था। समय-२ पर अन्य समाज सुधारको और सन्त महात्माओ ने भी जन्मना जातपात तथा ऊंच-नीच के भेदभाव का विरोध किया था। महामना पंडित मदनमोहन मालवीय ने हरिजनो तथा दलितो को मन्दिर प्रवेश तथा नाम जाप का समान अधिकार देने की पहल करते हुए जन्मगत जाति प्रथा पर कड़ा प्रहार किया था। इसी प्रकार गोस्वामी गणेशदत्त जैसी धर्म विभूतियों ने, हरिजनो तथा ब्राह्मणो को समानता का अधिकार देने के लिए सनातन धर्म सभा के मच पर घोषणा की थी। महात्मा गांधी ने अछूतो का 'हरिजन' शब्द देकर सम्बोधित करते हुए कहा था शूद्रो तथा दलितो पर अत्याचार करने वाले घोर पापी और अधर्मी हैं। इनके अतिरिक्त वीर सावरकर, स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेक महान विभूतियो ने भी जातिवाद व ऊंच नीच के विद्वेष को दूर करने और समाज मे सबको समानता का दर्जा देने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए थे।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जातिवाद के आधार पर कोई भी व्यक्ति बड़ा या छोटा नही होता है। कर्म ही उसे ऊंचा या नीचा बनाते हैं। शुद्ध आचरण वाले, चाण्डाल या शूद्र जाति मे पैदा होने पर भी अनेक महापुरुष आज भी आदर के साथ पूजनीय माने जाते है जिनमे महान संत रैदास कबीर आदि प्रमुख हैं। जिन्होने सदैव एकता तथा भक्ति भाव की प्रेरणा दी—

जाति पात पूछे नही कोई, हरि को भजे, सो हरि को होई।

उक्त कथन से वर्तमान राजनीतिक दलो को सीख लेनी चाहिए और गलत और विषैले तरीको से सत्ता प्राप्ति की बजाय, जनसेवा, आपसी सद्भाव और सदाचार के आधार पर जनता का समर्थन लेकर अपनी कार्य योजना पर आगे बढ़ना चाहिए। तभी भारत सुरक्षित रह पायेगा, अन्यथा जातिवाद का विषैला अजगर पूरे देश को ही डस लेगा।

मद्रास में भारतीय भाषा सम्मेलन आगामी १३-१४ अप्रैल ९४ को होगा

यह पहला अवसर है कि तमिलनाडु मे भारतीय भाषा सम्मेलन आगामी १३-१४ अप्रैल १९९४ को "तमिल और हिन्दी का मधुर मिलन" शीर्षक से आयोजित किया जा रहा है और इस आयोजन की अध्यक्षता करेंगे पूर्व राष्ट्रपति श्री आर० वेंकट रमण जी। इस अवसर पर तमिल और हिन्दी के विद्वानो के इस सम्मिलित समारोह मे लब्ध प्रतिष्ठित ८ विद्वानो को सम्मानित किया जायेगा।

टी० एस के० कनन्, मद्रास

एक अनोखी प्रतियोगिता

घर बैठे विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एवं उस पर आधारित प्रश्न पत्र प्राप्त करें और छ मास के भीतर उत्तर भेजकर निम्न पुरस्कार प्राप्त करें।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
३०००) रु०	२०००) रु०	१०००) रु०

पूर्ण विवरण प्रश्न-पत्र एवं प्रवेश शुल्क आदि के लिए मात्र तीस रुपए मनीआर्डर द्वारा—रजिस्ट्रार परीक्षा विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०), ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ को भेजें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री-सभा

अफगानिस्तान में हिन्दू-सिखों को चुन-चुन कर निशाना बनाया गया

पाकिस्तान के रास्ते अटारी पहुँचे सिख परिवारों ने रौंगटे खड़े कर देने वाली आप-बीती सुनाई : भारत सरकार से मदद के लिए गुहार

अटारी, ६ फरवरी। अफगानिस्तान में मुजाहिदीनों के बीच चल रहे १४ वर्षों के युद्ध में इस वर्ष जनवरी में हुई लड़ाई बहुत ही भयंकर थी।

अटारी रेलवे स्टेशन पर काबुल से पाकिस्तान के रास्ते बचकर बेघर होकर आये कुछ सिख परिवारों ने बताया कि केवल जनवरी में ही १७ हजार लोग मारे जा चुके हैं और करीब २५ हजार लोग घायल हैं जिनमे से ७ हजार लोगो के बचने की कोई उम्मीद नहीं है। अधिकतर मौतें राकेट हमले से काबुल शहर मे हुई। एक माह की इस अपूर्व लड़ाई मे काबुल पूरी तरह तहस-नहस हो चुका है।

करीब सात परिवार अपने घरेलू सामान सहित जब अटारी पहुंचे तो उनमे दो अनाथ बच्चे और एक विधवा भी शामिल थी। काबुल के एक सिख परिवार का कुलबीर सिंह जो कि हकीम की दुकान करता था, अपने बचे-खुचे सामान, तीन बच्चों और एक बहन के साथ अटारी आया। उसने बताया कि उसके छोटे भाई को मुजाहिदीन उठाकर ले गये और फिरोती न देने पर उसकी हत्या कर दी।

तीस वर्षीय मित्तर सिंह को यह नहीं मालूम कि उसके बाकी परिवार के सदस्य कहा हैं। उसने बताया कि वह अपने दोस्त के साथ तीन दिन तक पहाड़ी इलाका पार करके राकेट हमलों से बचता हुआ पाक सीमा तक पहुंचा। उसका कहना है कि जनवरी में तेज हुई यह लड़ाई इतनी भीषण है कि इस बारे में कोई सोच नहीं सकता। उसने बताया कि अब तक मुजाहिदीनों के दो धड़ों में लड़ाई होती रही है परन्तु अब तो लड़ाई करीब सात धड़ों में हो रही है। मुसलमान तो मुसलमान के खून का प्यासा हुआ ही है परन्तु हिन्दू सिखों को भी चुन-चुन कर निशाना बनाया जा रहा है।

इस जनवरी माह में इतना कहर ढाया गया कि काबुल एक माह से बन्द पड़ा है। यह लड़ाई एक जनवरी १९९४ को सुबह चार बजे शुरू हुई थी तथा एक मिनट के लिए भी बन्द नहीं हुई है। राकेटों और बमों की इतनी वर्षा होती है कि कोई घर से बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करता। सभी देशों के दूतावास अफगानिस्तान को अलविदा कह चुके हैं। मंहगाई की चर्चा करते हुए मित्तर सिंह ने बताया कि हजार अफगानी नोट की कीमत भारत के १३ रुपये के बराबर है। सौ किलो आटे की बोरी ८५००० अफगानी नोटों में मिलती है। इसके अलावा मिट्टी का तेल (५ लीटर) ६०००, पैट्रोल (५ लीटर) ६५००, चीनी (प्रति किलो) ४०० अफगानी नोट की दर पर मिलती है।

केवल पिछले माह में ही सराय शहजादा नर्गी में ही दुनिया भर की मुद्राओं और सोने चांदी की लगभग ३०८ दुकानों को लूटकर आग लगा दी गई। काबुल की जामा मस्जिद जो पुल खिश्ती के नाम से मशहूर थी उसे भी गिरा दिया गया।

मूल भारतीयो के करीब एक माह में ३०० लोगों के अपहरण हो चुके हैं। खूबसूरत औरतो को उठाकर ले जाते हैं और उनकी लाश ही १५ दिन बाद मिलती है। सिख परिवार औरतों को छिपाकर पाकिस्तान तक पहुंचे परन्तु पाक मे औरतो की इज्जत पर किसी ने हाथ नहीं डाला।

पाकिस्तान और जलालाबाद में करीब ७० हजार टैंट लगे हुए हैं जहां घायल लोग बिना इलाज के तड़प रहे हैं। काबुल के बाजारों मे लाशें ही लाशें नजर आती हैं। बदबू इतनी फैल चुकी है कि बीमारी फैलने का डर है।

सेवर इलाके मे, जहा करीब ७०० मूल भारतीयों के परिवार रहते थे, अब ११५ परिवार बचे हैं जिनके पास पैसा व खाने के लिये कुछ भी नहीं है। शेर बाजार मे करीब ६ गुरुद्वारों मे आग लगाई गई और राकेटों के हमले से तीन मन्दिर गिराये गये। कई गुरुद्वारों मे तो गुरु ग्रन्थ साहिब की पवित्रता को भी बुरी तरह नष्ट किया गया है।

किराना व्यापारी ईश्वर सिंह का परिवार अपने साथ अफगानी नोट लाया है, उसकी कीमत भारतीय करेंसी में १३ सौ रुपये बनती है। वह सात परिवारों का गुजारा कैसे करेगा। चेतसिंह राकेट हमलों को सुनकर ६ माह से पागल हो चुका है और वह न सुन सकता है और न ही बोल सकता है। विचित्र सिंह को बचने के लिए बाल कटवाने पड़े और वह अपनी पत्नी और बच्चों को साथ नहीं ला सका। बेघर हुए मूल भारतीयों की हालत इतनी दर्दनाक थी कि विधवाओं, अनाथों के लिए प्रमुख समस्या थी कि वह भारत में गुजारा कैसे करेंगे। ऐसा सोमवार और वीरवार कोई भी खाली नहीं जाता कि जिस दिन मूल भारतीय घरों का सामान लेकर न आये हों।

परन्तु अब इनकी संख्या माह जनवरी के मध्य में काफी बढ़ी है, लोग अपने कीमती सामान को साथ ले आते हैं परन्तु कुछ भारतीय जो भारत में आकर अपना कारोबार ठीक कर चुके हैं वह दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा अफगानिस्तान पहुंच कर तस्करी का धंधा भी करते हैं जो गरीब बेघर लोगों का शोषण करने में पीछे नहीं रहते। इन लोगों की मांग है कि जिन मूल भारतीयों के पासपोर्ट और वीजा तथा पैसे नहीं है, भारत सरकार उन्हें वापिस लाने के लिए विशेष प्रबन्ध करे नहीं तो लोग भूखे मर जायेंगे।

इनका कहना है कि सभी इनके लिए सहायता की मांग तो करते हैं परन्तु न कोई शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, चीफ खालसा दीवान, पुतलीघर का यतीम खाना, कई कीर्तन करने वाली सभाएं और सामाजिक कार्यों में प्रोत्साहन और निजी प्रचार लेने वाले नेता इनके लिए लंगर और पानी की बूंद तक भी उपलब्ध नहीं करवाते। इन लोगों का अगला ठिकाना दिल्ली होता है पर भविष्य धूमिल है क्योंकि गृह युद्ध में वह वापिस फिर अफगानिस्तान जाने के सम्बन्ध मे सोच भी नहीं सकते।

बसन्त का बलिदानी बाल हकीकतराय

भगवान भारत वर्ष को लाखों हकीकत दीजिए॥
वह कौम मिट सकती नहीं जिसमें हकीकत वीर हो।
कोई बतादे विश्व में ऐसा कोई वर वीर हो॥
जालिम के जुल्मों से हकीकत खौफ खाता है नहीं।
वह राम सीता के लिए दी गालियां सहता नहीं॥
इसको सजाये मौत का था हुक्म जालिम ने दिया।
इसको मुसलमां बनने पर था लोभ हाकिम ने दिया॥
धर्म हिन्दू छोड़ कर गर तू मुसलमां बन गया।
जागीर लेकर इस जमीं पर ऐसे जन्नत कर गया॥
मुंह तोड़ उत्तर था हकीकत ने उसे ऐसा दिया।
धर्म से बढ़कर न कोई वस्तु है यह कह दिया॥
लाहौर के मैदान में आया बसन्ती पर्व था।
सिर हकीकत दे गया उसको बड़ा ही गर्व था॥
उठ खड़े हो हिन्दुओ सोते रहोगे कब तलक।
घर में लुटेरे घुस रहे लुटते रहोगे कब तलक॥
आज फिर से धर्म वैदिक की परीक्षा आ गई।
चहुं ओर काली ही घटायें फिर से घिर कर छा गई॥
याद रक्खो आज भी ऐसे हकीकत हैं कहां।
धर्म से बढ़कर न कोई भी हकीकत है कहां॥
भगवान भारत वर्ष को लाखों हकीकत दीजिए।
कर्तव्य से सुन्दर न कोई धर्म है वर दीजिए॥
समझाया काजी ने बहुत पर वीर वह माना नहीं।
धर्म से बेहतर हिफाजत जान को जाना नहीं॥

वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति
शास्त्री सदन, पश्चिम आजादनगर दिल्ली-५२

सफलता प्राप्त करने के रहस्य

—अभय कुमार जैन

सफलता-असफलता, जय-पराजय, सुख दुःख, आशा-निराशा जीवन में धूप-छांव की भांति हैं। हर व्यक्ति चाहता है कि उसे निरन्तर सफलता प्राप्त हो, उसे सुख मिलता रहे और पराजय का मुख न देखना पड़े लेकिन यह संभव नहीं है। हर व्यक्ति के जीवन में सभी प्रसंग आते हैं और चले जाते हैं। यदि हम मेहनत, प्रयास करने में व्यस्त रहें, आशावादी दृष्टिकोण रखें, समय का सदुपयोग करें, हर स्थिति मे प्रसन्न रहें तो हम जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की ओर अग्रसर होते रहेंगे। जब हमें निरन्तर सफलता मिलती रहेगी तो यह भी निश्चित है कि हम मानसिक रूप से प्रसन्न व तनाव रहित रहेंगे। परिणाम स्वरूप हम बीमारियों से स्वयं को बचा पाने में सफल हो सकेंगे।

समय का सदुपयोग

समय अमूल्य है। बीता हुआ समय लौट कर नहीं आता है अतः वर्तमान पर पूर्ण विश्वास रखकर प्रत्येक क्षण का उपयोग करें, हर कार्य को योजना-बद्ध तरीके से करें। अपनी दिन चर्या को व्यवस्थित व नियमित रखें। समय चक्र के अनुसार कार्य करने पर हम बहुत से कार्यों को कुछ ही समय में सम्पन्न करने में कामयाब हो सकेंगे।

हीन भावना से ग्रसित न रहें

कई बार निरन्तर असफलता मिलने पर पारिवारिक मेदभाव, वैमनस्यता, कटुता इत्यादि अनेक कारणों से हीन भावना पनपने लगती है जो कि गलत है एवं अन्ततः सफल व स्वस्थ जीवन में बाधा उत्पन्न करती है अतः आवश्यकता इस बात की है हीनभावना को अपने जीवनमें किसी भी स्थिति में न पनपने देना चाहिए क्योंकि सफलता-असफलता, सुख-दुःख, आशा-निराशा, जय-पराजय तो जीवन के अविभाज्य अंग हैं। हमें हर प्रतिकूल स्थिति का भी बहुत ही धैर्य व दृढ़ता से मुकाबला करना चाहिए। हीन-भावना दूर करने के लिए सर्वप्रथम आत्म विश्वास पैदा करना चाहिए। यह विचार न करें कि हर व्यक्ति हर क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता है। अपनी असफलताओं के कारणों की खोज करें एवं अपने स्तर को ऊंचा करने की कोशिश करें। आत्म विश्वास, अथक व सतत प्रयत्नशील रहने से हीनभावना समाप्त हो जाती है।

काम को टालें नहीं

कई बार कार्य की अधिकता होने पर हम घबरा जाते हैं व यह चिंता करने लगते हैं कि कार्य की अधिकता है, किन्तु कहा गया है—कार्य की अधिकता नहीं, कार्य की अनियमितता आदमी को मार देती है' अतः कार्य अधिक होने पर उसे उसकी प्राथमिकता व महत्ता के आधार पर करते जायें। बहुत ज्यादा आवश्यक कार्य नहीं होने पर उसे कुछ घंटे आगामी दिवस के लिए भी टाला जा सकता है, किन्तु दूसरे दिन सर्वप्रथम वही कार्य करें जो एक दिन पूर्व आपके द्वारा छोड़ा गया था।

अपना व परिवार जनो का ख्याल रखें

पहला सुख निरोगी काया है। हर श्रेष्ठ वस्तु की प्राप्ति के लिए अथक व सतत परिश्रम की आवश्यकता होती है, किन्तु श्रेष्ठतम वस्तु की प्राप्ति के लिए स्वयं का अर्थात शरीर का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। नियमित समय पर भोजन (पौष्टिक आहार) इत्यादि के साथ पर्याप्त मात्रा में नींद छः सात घंटे अवश्य लेनी चाहिए। नींद के अभाव में मनुष्य चिड़चिड़ा हो जाता है। व्यायाम व सुबह-शाम पैदल घूमना चाहिए। गर्मी के दिनों में दिन के समय भी आराम किया जाना चाहिए अपने साथ-साथ बच्चों के स्वास्थ्य, उनकी लिखाई-पढ़ाई खेलकूद पर ध्यान देना चाहिए। आप कितने ही व्यस्त क्यों न हों बच्चों पर ध्यान देना चाहिए, उनकी उपेक्षा न करें।

हर पल प्रसन्न रहें

सदैव हर स्थिति में प्रसन्न रहना चाहिए। चाहे आप कितने व्यस्त हों, तनाव युक्त हों, कार्य की अधिकता हो, किसी वस्तु का अभाव हो, व्यर्थ की झुंझलाहट व परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है। जो कुछ हमें मिला है उसे प्रसन्नता से स्वीकार करें किन्तु अपने स्तर पर प्रयत्नशील रहें।

'ओं नमः तेरी दया' इस वाक्य पर विश्वास रखें। किसी भी व्यक्ति से मिलें, प्रसन्नता पूर्वक मिलें। कोई आगन्तुक आया है तो उसका एक हल्की-सी मुस्कराहट के साथ स्वागत कीजिए। आपकी हल्की सी मुस्कराहट, आगन्तुक व्यक्ति पर अमिट छाप अंकित कर देगी।

आवश्यक प्रपत्र संभाल कर रखें

आवश्यक कागजात, बिल, रसीदें, शेयर सार्टीफिकेट, फिक्स डिपाजिट रसीदें, बीमा प्रीमियम रसीदें, मकान कागजात की रजिस्ट्री इत्यादि सभी प्रपत्र व्यवस्थित फाइलों में रखने चाहिए।

आपका टेलीफोन जहां रखा हो उसके पास ही एक नोटबुक व पेन भी रखा हुआ होना चाहिए ताकि कोई भी मेसेज, नम्बर आदि नोट करना हो तो तत्काल ही नोट कर ले। कई बार फोन खुला छोड़कर इधर-उधर भागना पड़ता है।

प्रतिकूल समय के लिये तैयार रहें

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। आशा के साथ निराशा सफलता के साथ असफलता, जीवन के साथ मृत्यु, घटना के साथ दुर्घटना जुड़ी होती है। अतः हर प्रतिकूल परिस्थिति का भी बहुत ही धैर्य से व गम्भीरता से मुकाबला करना चाहिए। विवेक से काम लें, संतुलन व संयम बना रहने दें अन्यथा विचलित होने पर सारा कारोबार खराब हो जाता।

व्यस्त रहिए

अपने श्रम तथा समय को अपने लक्ष्य प्राप्ति में ही व्यय करें। व्यर्थ की बातें, गपशप, किसी की आलोचना में समय व्यय न करें अपितु अपने कार्य से निवृत्त होने के पश्चात समाचार-पत्र, अच्छी पत्र-पत्रिकायें पढ़ना चाहिए। व्यस्तता के साथ-साथ अवकाश के समय अपना कुछ समय मनोरंजन के लिए भी खर्च करें ताकि आप स्वयं को तरोताजा महसूस कर सकें।

मानसिक तनाव से बचें

मानसिक तनाव आधुनिक युग की देन है। हर छोटी-छोटी बातों पर तनावग्रस्त होना स्वयं के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ है, अतः तनाव से बचने का प्रयास करें। हर समस्या का समाधान हो सकता है। जिन्दगी का मजा तकलीफों से लड़कर विजय प्राप्त करने में है, अतः तकलीफों से घबराना नहीं चाहिए बल्कि हमें उनका स्वागत करना चाहिये।

कल्याण कार्यो में भाग लें

व्यक्ति को स्वयं के साथ-साथ सामाजिक भी होना चाहिए। सार्वजनिक हित के कार्यों में रुचि लेनी चाहिए। जब भी आपके पास अवकाश हो अथवा अवकाश का समय निकाल कर सार्वजनिक हित का कार्य करें। इसका एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हमारे नगर भवानी मण्डी (राजस्थान) का है। यहां पर जल सेवा दल नाम की संस्था है। इसके संस्थापक श्री बाबूराम जी खत्री हैं। इस संगठन द्वारा गर्मी के दिनों में हर ट्रेन पर हर डिब्बे में हर यात्री तक निःशुल्क जल पहुंचाया जाता है। इस कार्य हेतु नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति तक अपनी सेवाएं देते हैं एवं स्वयं ही पानी की ट्रालियां धकेलते हुए अपनी सेवा अर्पित करते हैं। ऐसी सुन्दर व्यवस्था अन्यत्र देखने को मिलना असम्भव सा है।

इस प्रकार का कार्य करने पर एक अजीबोगरीब मानसिक शांति मिलती है जो कि हजारों रुपये खर्च करने पर भी नहीं मिल सकती है।

बचत की आदत डालें

आधुनिक समय में बचत बहुत आवश्यक है। कभी भी संकटकालीन स्थिति बच्चों की पढ़ाई, शादी-विवाह व अन्य मांगलिक अवसरों पर बचत की रकम बहुत काम आती है। फिजूल-खर्ची व दिखावे में कतई विश्वास नहीं करना चाहिए। जैसी अपनी हैसियत हो उसी के अनुसार कार्य करना चाहिए। शेष पृष्ठ ७ पर)

नमस्ते के औचित्य पर विचार

धर्मवीर शास्त्री

नमस्ते का वर्तमान रूप मे प्रचलन आर्य समाज द्वारा प्रवर्तित सामाजिक धार्मिक पुनरुत्थान के आन्दोलन मे जुड़ा हुआ माना जाता है। यों तो नमस्ते का बहुश प्रयोग वेद मे पाया जाता है। सस्कृत व्याकरण मे भी इसका प्रयोग उपलब्ध है—भगो, नमस्ते।

नमस्ते' द्विपदात्मक वाक्य है तथा सक्षिप्त रूप है 'नमोऽस्तुते' का नमस्ते की द्विपदात्मकता को नकारना और उसे निपात सिद्ध करना व्यर्थ का प्रयत्न है।

यद्यपि वेद मे पूजनीय पितर आदि के लिये युष्मद का प्रयोग हुआ है—नमो व पितरो रसाय नमो व पितर शोषाय यजु २।३२ अग्निष्वात्ता पितर एह गच्छत (यूयम्) तथा कालिदास ने भी एक ही व्यक्ति के लिये एक ही प्रसग मे त्व और भवान् का युगपत्त प्रयोग किया है—पुत्र लभस्वात्मगुणानुरूप भवन्तमीड्य भवत पितेव (कौत्स द्वारा रघु का वर-प्रदान) इसके अतिरिक्त गुरु जैसे पूजनीय के प्रति भी युष्मद् एक वचन का प्रयोग उसी प्रसग मे कवि ने किया है—देवीना मानुषीणा च प्रति हर्त्ता त्वमापदाम्। (दिलीप का गुरु वशिष्ठ से निवेदन), किन्तु आजकल के शिष्टाचार मे पूजनीयो के लिये तू तेरा का प्रयोग घोर अभद्रता माना जाता है। अनेक भद्र परिवारों मे तो घर के बड़ो की भाषा बच्चों के प्रति भी अति शिष्ट होती है, जिससे बच्चे प्रारम्भ से ही शिष्ट भाषा का प्रयोग सीख जायें। अस्तु बड़ो के लिये युष्मद् के त्व, ते आदि निश्चित रूप से अरुचिकर है।

बात है नमस्ते के ते की। नमस्ते का निर्विवाद अर्थ है—नमन या सत्कार तेरे लिये। सोचिये, क्या हम आर्य समाजी भी वार्तालाप मे या पत्र-व्यवहार मे बड़ों को पूजनीय, आदरणीय मानकर बहुवचन मे स्मरण नहीं करते? आर्य समाजी को तो यथायोग्य सत्कारादि के निर्वहण मे और अधिक सतर्क होना चाहिये। फिर बड़ो को अभिवादन 'नमस्ते' इस द्विपद वाक्य द्वारा करना कैसे उचित माना जा सकता है?

पूजनीयो के समादर सन्दर्भ मे नमस्ते के प्रयोग पर तो आपत्ति है ही, यह आपत्ति और भी गहरा जाती है जब कहा जाता कि छोटो को भी नमस्ते करना वैध है। आशय यह है कि नमस्ते बड छोटे सब के लिये सामान्य है।

यह विधान भी लोकाचार एव सामान्य शिष्ट आचरण की मर्यादा के विपरीत है। विपरीत इसलिये कि छोटे के लिये ते पद का प्रयोग तो ठीक है, पर उसके लिये विद्या-वय एव रिश्ते मे बड़ा व्यक्ति नत हो, यह उचित नहीं है। व्यावहारिक दृष्टि से देखें तो हम स्वय भी सबके लिये समान प्रशस्ति का प्रयोग नहीं करते। देखिये जब हम पत्र लिखते हैं तब अन्त मे लिखते हैं—बड़ो को चरण-स्पर्श अथवा नमस्ते, छोटो को प्यार शुभाशी इत्यादि। यही बात पत्रारम्भ मे है। छोट भाई को पत्र मे 'प्रसन्न रहो' आदि लिखते हैं। जब हमारा अपना व्यवहार ऐसा है तो नमस्ते की सर्वोपयुक्तता के प्रति आग्रह-शील नही होना चाहिये।

कारण, नमस्ते के पदश अर्थ पर विचार करने पर जो बात सामने आती है, वह यह है कि बड़ों के लिये नमः ठीक है ते नहीं और छोटो के लिये अर्थात् स्नेह एव वात्सल्य के पात्रो के लिये ते ठीक है, किन्तु नम (नमन, प्रणाम, नमस्कार) ठीक नही है। एक प्रकार से देखें तो नमस्ते की सर्वोपयुक्तता के स्थान पर पूर्णत अनुपयुक्तता ही सिद्ध होती है।

स्वर्गीय आचार्य नरदेवशास्त्री वेदतीर्थ अपनेवात्सल्य पात्रो के प्रति लिखे पत्रो मे स्वस्ति का प्रयोग करते थे। शेष गुरुओ के भी पत्रों मे यदि कभी पत्राचार हुआ, शुभाशीर्वादात्मक प्रशस्ति ही होती थी जिसके हम हकदार थे। सचमुच बड़ों की ओर से छोटो को नमस्ते लिखा जाना अटपटा लगता है और बड़ो के सन्दर्भ मे ते को देखते हुए लगता कि हम सस्कृत की अभिवादन सम्बन्धी शालीन विनम्र एव पद मर्यादा के प्रति सतर्क परम्परा को तिलाजलि दे रहे हैं।

सबके लिये समान रूप से नमस्ते के प्रयोग के पक्षधर मन्त्र उद्धृत करते है—नमो ज्येष्ठाय च नम कनिष्ठाय च (यजु०)। किन्तु इसका अर्थ वह नही है जो गलती से समझ लिया गया है। इसका अर्थ है—ज्येष्ठ अर्थात् सबसे बड़े और कनिष्ठ अर्थात् बड़ों मे सबसे छोटे। जैसे कोई पिता को पत्र लिखे तो दादी मा (बड़ी मा, तथा माँ को तथा चाची को नमन लिखे) अर्थात् आकनिष्ठम् सर्वपूज्येभ्यो नम।

जिस प्रकार यहा ज्येष्ठ वृद्ध और कनिष्ठ वृद्ध अर्थ लिया जाना उचित है वैसा ही अर्थ रखने वाले मन्त्र पितृ-प्रसग मे यजुर्वेद मे आये है—

(क) इद पितृभ्यो नमोऽअस्त्वद्य ये पूर्वासो यऽउपरास ईयु।

(ख) अधा यथा न पितर परास प्रत्नासोऽअग्नऽऋतमाशुषाणा।

१९वें अ० की ६८,६९ की अर्द्धालिया

यहा पूर्वास उपरासः तथा परास एव प्रत्नास पितरो में ही पूर्वापर बोध के लिये प्रयुक्त हुए हैं। वैसे ही ज्येष्ठ-कनिष्ठ के प्रसग मे जानना चाहिये।

क्या महर्षि दयानन्द नमस्ते के प्रयोग के आग्रही थे? यदि आग्रही थे तो उन्होने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के पितृयज्ञ प्रकरण मे सत्ष्या मे नम. का नमस्कार अर्थ क्यो किया है। वह भी एक बार नहीं अनेक बार यदि कहे कि भूमिका की हिन्दी महर्षि की नहीहै तो यह बात भी प्रामाणिक नहीं है। छोड़िये इस बात को, उन्होंने अपनी सस्कृत मे भी अनेक स्थानो पर मन्त्रगत नम का नमस्कृत्य, नमस्कुर्मः अर्थ किया है। इसके अतिरिक्त महर्षि के यजुर्वेद भाष्य मे मन्त्र स० १९।३२ के भावार्थ मे लिखा मिलता है—'पितृ लोग जब समीप आवें अथवा सन्तान लोग इनके समीप जावे तब भूमि मे घुटने टिका नमस्कार कर इनको प्रसन्न कर पितर लोग भी आशीर्वाद विद्या और अच्छी शिक्षा के उपदेश से अपने सन्तानों को प्रसन्न करके सदा रक्षा किया कर।

नमस्ते के पक्षधरो ने महर्षि के ग्रन्थो मे नमस्ते का बलात् प्रवेश किया प्रतीत होता है। नमूने के रूप मे नमो ज्येष्ठाय० १६।३२ के भावार्थ को देखे। महर्षि का स्पष्ट अभिप्राय है कि नमोज्येष्ठाय० यह मन्त्र वाक्य बोलकर परस्पर सत्कार करें। वहा कोष्ठको में नमस्ते देकर लिखा है कि यह वाक्य बोलकर छोटे-बड़ों का निरन्तर सत्कार करे। मेरी धारणा है कि भाष्य की मूल प्रति मे नमस्ते नही लिखा होगा। यह बाद मे डाला गया है। नमस्ते के पक्षधर नम तथा नमोऽस्तु ते देखकर नमस्ते का औचित्य सिद्ध करने लगते हैं। किन्तु यह घोर अज्ञान का सूचक है। इतना ही नहीं, नमस्ते की वेदोक्तता प्रमाणित करने के अति उत्साह मे कुछ ने यह भी नहीं देखा कि नम के बाद लगा हुआ ते तुभ्यम् का स्थानिक है अथवा तव का। यह अविवेक तथा असदाग्रह की परम सीमा है।

(क्रमश)

आवश्यक सूचना

साप्ताहिक के समस्त ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि कागज आदि के दाम अत्यन्त बढ़ जाने के कारण न चाहते हुए भी "सार्वदेशिक साप्ताहिक" के शुल्क में नगण्य वृद्धि की जा रही है। १ जनवरी ९४ से अब सार्वदेशिक साप्ताहिक का वार्षिक शुल्क मात्र ४० रुपये और आजीवन सदस्यता शुल्क १५० रुपये होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग हमेशा की तरह प्राप्त होता रहेगा। —सम्पादक

वैचारिक क्रान्ति शिविरों के आयोजन से माता प्रेमलता द्वारा मध्यप्रदेश में वैदिक प्रचार की धूम

नई आर्यसमाज का गठन

प० राजगुरु शर्मा वनवासी विद्या विकास समिति, बरखेडा (जिला झाबुआ, म०प्र०) जो कि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ से सम्बद्ध है, के तत्वावधान मे दिनाक २५-१२-९३ से ३१ १२ ९३ तक, यहा एक वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर का आयोजन किया गया। शिविर मे १५० वनवासी युवक युवतियो ने सक्रिय भाग लिया तथा सन्ध्या-हवन एव आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त किया। दिल्ली से आए अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री श्री वेदव्रत महता एव मन्त्रिणी श्रीमति प्रमलता खन्ना शास्त्री श्रीमति ईश्वर रानी, श्रीमति सन्तोष कपूर एव प० विश्वामित्र शास्त्री ने सात दिनो का बहुमूल्य समय देकर वनवासी शिविर मे वैदिक प्रचार की धूम मचा दी।

२५-१२-९३ को ग्राम बरखेडा मे एक शोभायात्रा निकाली गई जिसका सचालन अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ, थादला, के पितामह श्री रामकृष्ण बजाज ने किया। ग्राम वासियो पर इसका व्यापक प्रभाव पडा।

प्रतिदिन प्रात काल माता प्रेमलता द्वारा यज्ञ से कार्यवाही का शुभारम्भ होता था जिसमे यज्ञ की वेदी पर ही माता जी के उत्तम एव क्रान्तिकारी विचार वनवासियों को अत्यन्त प्रभावित करते थे। परिणामत अनेको क्षेत्रीय लोगो ने मास-मदिरा, बीडी-तम्बाकू चोरी तथा झूठ बोलना इत्यादि दुर्व्यसनो को सदा के लिए त्यागने की शपथ ली।

आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री जीववर्धन शास्त्री द्वारा शिवरार्थियो को व्यायाम एव योगासनो का प्रशिक्षण दिया गया। सभा के प्रचारक श्री हीरालाल आर्य एव बहिन शान्ति देवी जी के भजनो ने लोगों मे जोश भर दिया। क्षेत्रीय प्रचारक श्री ओंकार सिंह जी बामनिया एव खेमचन्द जी आर्य के भजन भी आकर्षक थे। ३० १२-९३ को क्षेत्रीय कन्याओ द्वारा गीतो का कार्यक्रम रखा गया। स्व० प० राजगुरु शर्मा जी के दामाद श्री प्रकाशचन्द आर्य (एडवोकेट) के वक्तव्य ने प्रचार कार्य को और प्रबल किया। शिविर मे भाग लेने वाले १५० युवक-युवतियों को माता प्रेमलता द्वारा प्रमाण पत्र दिये गये।

३१-१२ ९३ को माता प्रमलता द्वारा विशाल भूत-डाकिनी भगाओ यज्ञ करवाया गया जिसमे लगभग सभी ग्रामवासियो ने आहुति दी। माता जी ने इस महायज्ञ द्वारा, इस क्षत्र मे व्याप्त भूत डाकिनी नामक महामारी का व्यापक खण्डन किया जिसकी खलबली वहा के ईसाई मिशनरियों मे भी महसूस की गई।

उपर्युक्त सारे कार्यक्रम से क्षेत्रीय वनवासी लोगो पर अत्यधिक प्रभाव पडा। मानो लोगो को शिविर का समाप्त होना पसन्द न था। वे चाहते थे कि यह कार्यक्रम निरन्तर चलता ही रहे। पहले दिन से ही यह प्रस्ताव था कि क्षेत्र मे एक आर्य समाज को स्थापना की जाए। अन्तत जनादेश कार्यान्वित हुआ और ३१-१२ ९३ को ही महर्षि दयानन्द वन कन्या आश्रम बरखेडा जिला झाबुआ। (म०प्र०) के तत्वावधान मे श्री प्रकाशचन्द आर्य (एडवोकेट) की अध्यक्षता मे आर्य समाज की स्थापना की गई। निर्वाचित पदाधिकारियों की सूचि निम्न प्रकार से है।—

अध्यक्ष श्री मूलचन्द बामनिया, उपाध्यक्ष श्री मालसिंह मेडा, मन्त्री श्री मनिया भाई भूरा, उपमन्त्री श्री मूलचन्द बलवामा, कोषाध्यक्ष श्री खुमानसिंह मेडा (शिक्षक), प्रचार मन्त्री श्री ओम-प्रकाश पड्या आर्य वीर दल अधिष्ठाता श्री प्रेमसिंह बामनिया।

कार्यक्रम मे निम्न दानी महानुभावो ने अपना आर्थिक योगदान दिया—

श्री रमेशचन्द ललवानी, अध्यक्ष मेघनगर उद्योग	१०००)
श्री एस०एल० नागर, उद्यान अधिकारी मेघनगर	५००)
श्री अशोकसिंह राठौर, निदेशक हर्षवर्धन उद्योग	५००)
श्री लल्लूसिंह चौहान, थाना प्रभारी कल्याणपुरा	५००)
श्री रामस्नेही शर्मा	१५०)
श्री प्रदीपकुमार रुनवाल, झाबुआ	२०१)
श्री नरेन्द्रसिंह नानालाल जी रुनवाल झाबुआ	२०१)
अखिल भा० द० से० सघ, दिल्ली	२०००)
प० राजगुरु शर्मा परिवार	११००)

आर्येन्द्र मन्त्री
प० राजगुरु शर्मा विद्या विकास समिति
बरखडा जिला झाबुआ (म०प्र०)
(अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ नई दिल्ली से सम्बन्धित)

सफलता प्राप्त करने का रहस्य

(पृष्ठ ५ का शेष)

बुरी आदतो से दूर रहें

मद्यपान, धूम्रपान, जुआ इत्यादि बुरी आदतो से सदैव दूर रहे। यह आदतें आर्थिक रूप से तो हमे कमजोर कर ही देती है, साथ ही शारीरिक रूप से भी नुकसान पहुचाती है। मद्यपान, धूम्रपान के कारण हमारा अच्छा-भला स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है। यह सामाजिक दृष्टि से भी गलत है।

आशावादी दृष्टिकोण

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें आशावादी दृष्टिकोण रखना होगा। पूर्व में हो चुके कार्य में उसके प्रतिकूल परिणाम भी न होवें। यह विचार न करे कि यह मेरे लिए असम्भव है। हर कार्य को आशावादी दृष्टिकोण से प्रारम्भ करे।

वर्तमान में ज्यादा खा रही है बुद्धि मांस को

—श्री गोपालकश्यपार्य

जिस प्रकार कोई मनुष्य अन्धा होकर या बहरा होकर अथवा लूला-लंगड़ा होकर दुःखी होता है ठीक उसी प्रकार कोई भी प्राणी यथासमय अपने सन्तान को न देखकर दुःखी होता है। मानव जाति जिस प्रकार अपने ही सन्तान से प्रेम करती है उसी प्रकार पशु पक्षी भी अपने सन्तान से प्रेम करते हैं।

भारतीय संस्कृति मे अलग-अलग वस्तुओ प्राणियो तथा पशु पक्षियो का अलग-अलग महत्व है। सभी पशु-पक्षी, कीट पतंग अपने कर्तव्याकर्तव्य को जानते हैं। मनुष्य भी जानता है पर कई जगह जानकर भयंकर भूल या अपराध अथवा पाप कर जाता है। जब कि इस संसार मे सर्वोत्तम जीवन मनुष्य को प्राप्त हुआ है। मनुष्य जानता है कि हमे कोई मारे पीटे या दुःख दे तो कितना दर्द होता है। हमे कोई सुई चुभोए तो कितना चुभता है। पर आज तक मनुष्य ने किसी को भी सुख से रहने नहीं दिया। मनुष्य जानता है कि मास मनुष्य का भोजन नहीं पर मास को भोजन जरूर बनाता है। इस सबका कारण है मनुष्य की बुद्धि मे अल्पता। विशेषकर आज के मनुष्य मे यह ज्यादा घटती है। मनुष्य ने कभी चैन की नींद नहीं ली। "मास मनुष्य का भोजन नहीं" इस पर कुछ प्रमाण दिये जा रहे हैं जो आपको सत्य प्रतीत होगे।

१—शेर, बाघ, बिल्ली, कुत्ता आदि मासाहारी प्राणियो के जन्म से ही कोने-२ लम्बे दात होते हैं। पर गाय, भैंस, भेड़ बकरी, मनुष्य आदि प्राणियो के नहीं होते। लोग जानते हैं कि मास न खाने वाले प्राणियो के दात प्राणी के आयु अनुसार निकलते हैं लेकिन मास खाने वाले प्राणियों के जन्म से ही निकलते हैं। इसलिए लम्बे दात वालो का भोजन मास है। अन्यो का नहीं। किसी ने कहा है—"जीवो जीवस्य भोजनम्"।

२—बहुत सारे लोग मास खाने से घृणा करते हैं पर अण्डे जरूर खाते हैं "गांधी जैसे लोगो ने इसे फल बताया" क्या अण्डे किसी लता, पेड़ आदि मे लगते हैं? आखिर अण्डे भी तो किसी न किसी पक्षी के गर्भ से ही तो निकलते हैं। बाद मे वही अण्डे से निकलकर पक्षी के रूप मे दिखाई देते है। फल-फूल आदि भूमि से उत्पन्न होने वाले हैं। इसलिए हमे फल फूल, अन्न खाना चाहिए मास नहीं। पशु पक्षी आदि पेड़ पोधो या लताओ मे नहीं होते। इसलिए मास खाने योग्य वस्तु नहीं है।

३—जो पशु मास खाते हैं उनके पैर के नाखून लम्बे और नुकीले होते हैं। गाय बकरी, हिरण भैंस, मनुष्य आदि मास न खाने वाले प्राणियो के नहीं होते। फिर मनुष्य क्यो मास खाता है? जबकि अन्य नहीं खाते।

४—मास भक्षी प्राणी पेय पदार्थ को चाटते हैं और मास न खाने वाले प्राणी पेय पदार्थ को पीते हैं। फिर मनुष्य पेय पदार्थ को पीने वाला होकर मास क्यो खाता है? जबकि अन्य नहीं खाते।

५—(क) कुत्ता कुत्ते को देख द्वेष करता है बिल्ली बिल्ली को देख द्वेष करती है, शेर, शेर को देख द्वेष करता है अन्य मास भक्षी प्राणी भी अपनी ही जाति से द्वेष करते हैं। शेर कुत्ते से द्वेष करता है, कुत्ता बिल्ली से, बिल्ली चूहे से द्वेष करती है। इस प्रकार सभी मास भक्षी आपस मे द्वेष करते हैं।

(ख) गाय, गाय से द्वेष नहीं करती, बकरा बकरी से द्वेष नहीं करती, हिरण, हिरण से द्वेष नहीं करता, भैंस भैंस से द्वेष नहीं करती इत्यादि जितने भी मास न खाने वाले प्राणी आपस मे किसी से द्वेष नहीं करते। आप लोगों ने मास न खाने वाले प्राणियो के समूह देखे हैं। पर क्या कुत्ते, बिल्ली, शेर आदि के अलग-अलग या एक साथ के समूह को देखा है?

मान लीजिए मास भक्षी प्राणियो को एकत्रित करके एक या दो दिन के लिए घुमाने हेतु ले जाना चाहेंगे तो आप दो दिन के बाद किसी को देख न सकेंगे। पहली बात तो वे जायेंगे ही नहीं यदि वे चले भी जाएं तो सब आपस मे मर मिटेंगे। यहा तक कि आपको भी नहीं छोड़ेंगे।

लेकिन सोचें! मास न खाने वाले प्राणियो के समूह को एकत्रित करके आप दस साल के लिये घुमाने या चराने के लिए ले जाना चाहेंगे तो जितने प्राणियो को लेकर जायेंगे उससे वर्षानुसार १० वर्ष मे ७ गुना ज्यादा ही होंगे कम नहीं। लेकिन क्या? मनुष्य जा सकता है? नहीं। जिस प्रकार मास भक्षी प्राणी आपस मे सभी से द्वेष करता है। इसी प्रकार मास भक्षी मनुष्य भी सभी प्राणियो से द्वेष करके उनको मारता है। यहा तक की मास भक्षी मनुष्य माता-पिता भाई बहन को भी मार डालता है।

६—कुछ मास भक्षी मनुष्य कहते हैं कि जितने भी मास न खाने वाले पशु होते हैं उनके सींग होते हैं, जैसे गाय, बकरी, भैंस, हिरण आदि। फिर मनुष्य के सींग क्यों नहीं? शेर, कुत्ता, बिल्ली आदि मास भक्षी प्राणियो के सींग नहीं होते और वे मास खाते हैं। इसलिए मनुष्य को मास नहीं खाना चाहिए।

तो उनको उत्तर दिया जाता है कि क्या घोड़े के सींग होते हैं? जो मास नहीं खाते। इतना ही नहीं बन्दर तो एक प्रकार से मनुष्य ही होता है। उसके सींग भी नहीं होते और मास भी नहीं खाता। इत्यादि

इस प्रकार बुद्धिमान मनुष्य का कर्तव्य है कि जीवन मे ऐसे कर्म मनुष्य के नजर मे न पड़े। जिससे आने वाली पीढ़ी बुद्धिमान मनुष्य को कुछ न कह सके। परमात्मा सभी को सद्बुद्धि दे।

गु० प्रभाताश्रम टोला, मेरठ

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार १५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

हमारे गणतंत्र के आधार स्तंभ
न्याय
स्वतंत्रता
समानता
बंधुत्व
धर्मनिरपेक्षता

राष्ट्र निर्माण के लिए चरित्र निर्माण आवश्यक है

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

दिल्ली २१ जनवरी। ग्राम प्रचार समिति दिल्ली की ओर से किरण गार्डन के पैराडाइज पब्लिक स्कूल मे मानव सुधार सम्मेलन और नेताजी सुभाषचन्द्रबोस की ७९ वी० पुण्य तिथि का आयोजन समारोह पूर्वक किया गया। विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश भर की समस्त शिक्षण सस्थाओ मे नैतिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण के लिए चरित्र निर्माण आवश्यक है। जब तक मनुष्यमात्र के चरित्र निर्माण की ओर ध्यान नही दिया जायेगा, तब तक वर्तमान समस्याओ से मानव समाज मुक्त नही हो सकेगा।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि दिल्ली के शिक्षा मन्त्री श्री साहिबसिंह वर्मा ने कहा कि दिल्ली मे शीघ्र ही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नाम पर एक व्यवसायिक कालेज खोला जायेगा। उन्होने कहा आज लोग स्वामी दयानन्द सरस्वती, भगवान रामचन्द्र योगीराज श्री कृष्ण चन्द्रशेखर आजाद भगतसिंह जैसे महापुरुषों को श्रद्धा से याद करते हैं, नेताजी सुभाषचन्द्रबोस भी इसी श्रेणी के महापुरुष हैं। उन्होने राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के लिए आर्य समाज के सिद्धान्तो पर अमल करने के लिए जनता से आह्वान किया।

समारोह का आयोजन ग्राम प्रचार समिति के सयोजक श्री अशोककुमार के प्रयत्नो से बहुत सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पैराडाइज पब्लिक स्कूल सीमा माडल स्कूल तथा भटिया कान्वैण्ट कालेज के बच्चो द्वारा विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। क्षेत्र की समस्त आर्य समाजो, धार्मिक सस्थाओ और सामाजिक सस्थाओ ने इस आयोजन मे भाग लिया। इस अवसर पर स्वागत बैंकट हाल के मालिक श्री राजतिलक का भव्य स्वागत किया गया। इस समारोह मे श्री व्यासदेव मेहता जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को पाच हजार तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को पाच हजार रुपए की राशि स्थिरनिधि हेतु प्रदान की, इन निधियो जो वर्ष भर मे ब्याज से जो राशि प्राप्त होगी वह ग्राम प्रचार कार्यों मे लगाई जायेगी। इसके लिए श्री स्वामी जी ने श्री व्यासदेव मेहता का धन्यवाद किया। इस समारोह मे पश्चिमी दिल्ली की आर्य समाजो, शिक्षण सस्थाओ, हिन्दू सगठनो के अधिकारी, कार्यकर्ता स्कूलो बच्चो ने भाग लिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने भी आयोजको को अपना आशीर्वाद दिया और कार्यक्रम की सफलता की प्रशसा की।

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला--राजकोट-३६३६५० (गुजरात)

उप कार्यालय : आर्य समाज, 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

दूरभाष . ३४३७१८, ३१२११०

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण

एवं

आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते !

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव ९, १०, ११ मार्च १९९४ तदनुसार बुध, गुरु, शुक्र को ऋषि जन्म स्थली टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार होंगे। देश-देशान्तर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान तथा कलाकार इस शुभअवसर पर महर्षि के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इस वर्ष महात्मा आर्य भिक्षु जी, श्री ओमप्रकाश वर्मा पधार रहे है। कन्या गुरुकुल बड़ौदा, पोरबन्दर तथा जामनगर की कन्याएं, आर्य वीर दल ध्रांगध्रा तथा अन्य संस्थाओं के युवक समारोह में कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे।

इस समय टंकारा में जो मुख्य कार्य चल रहे हैं, उनमें १. अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, २. दिव्य दयानन्द दर्शन चित्र गृह, ३. आर्ष साहित्य प्रचार केन्द्र, ४. गो-संवर्धन केन्द्र (गौशाला), ५. अतिथि गृह, ६. वेद प्रचार, ७. पुस्तकालय आदि प्रमुख हैं। महर्षि जन्मस्थली टंकारा में अभी और भी अनेक विशेषकरणीय कार्य हैं जैसे--ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार में लेना, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा जन्म स्थली को विश्वदर्शनीय बनाना। टंकारा में महर्षि जन्म स्थान के लिए वार्ता चल रही है जल्दी ही वह स्थान हमें मिल जायेगा, जो दो मकान जन्मस्थान से बिल्कुल मिले हुए है, वह हमने लगभग १,२५,००० रुपये में खरीद लिए हैं, इससे पहले भी कुछ जन्म स्थान के साथ का स्थान हमने लिया था। उस सारे स्थान पर हम पुनः निर्माण कार्य करने जा रहे है। टंकारा ट्रस्ट के अधिकारी जनता जनार्दन के सहयोग से टंकारा उत्सव की सफलता, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा अन्यान्य कठिनाइयों को दूर करने का प्रबल प्रयत्न कर रहे है। इन सब कार्यों के लिए कम-से-कम १०-११ लाख रुपये की और आवश्यकता है।

टंकारा की गोशाला में २[illegible] से अधिक गायें है। इस गोशाला से विद्यार्थियों को शुद्ध दूध मिलता है। परंतु हर वर्ष इस गौशाला में घाटा हो जाता है। यह घाटा ऋषि-भक्तो और गो-भक्तों के दान से ही पूरा होता है।

ऋषि मेले में देश-विदेश से हजारों ऋषि भक्त पधारते हैं, जिनके ठहरने व भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क की जाती है। अतः ऋषिलंगर हेतु जो लोग चावल, आटा, घी, चीनी एवं दालें आदि देना चाहें, वह आर्य समाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर भेज सकते है। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि ऋषि बोधोत्सव पर आप इष्ट मित्रों सहित टंकारा पधारिये (बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लावें) और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिए। यह दान राशि आप नगद/क्रास चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा "महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम से दिल्ली कार्यालय, आर्यसमाज (अनारकली) मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-१ के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से अपनी आर्यसमाज, अपनी शिक्षण संस्था तथा अन्य संबन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेजकर ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि पर आय-कर की छूट है

निवेदक :

ओंकारनाथ	दरबारी लाल	[illegible]	रामनाथ सहगल
मैनेजिंग ट्रस्टी	प्रधान	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

पोस्ट रजिस्टशन न० डी० एल० ११०४६/६४ सावदेशिक साप्ताहिक २० २ १६६४) बिना टिकट भजने का लाइसेंस न० U (C) ६३
R N 625/57 Licensed to post without prepayment License No U (C) 93 Post in N.D P S O.on 17-18-2-1994

वार्षिकोत्सव

—आय समाज मेस्टनरोड कानपुर का ११४ वा वार्षिकोत्सव समारोह पूवक सोमवार ७ माच से बृहस्पतिवार १० मार्च १६६४ तक शिवरात्रि के पावन पव पर मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

बृहस्पतिवार १० मार्च को ऋषि बोधोत्सव एव महर्षि का जन्म दिवस भी मनाया जाएगा। आवास एव भोजन आदि का समुचित प्रबन्ध रहेगा। आने की सूचना पूव देवें।

—आय समाज चोक प्रयाग का ११८ वा वार्षिकोत्सव २२ से २४ फरवरी तक आय कन्या इन्टर कालेज मुटठीगज के प्रागण मे बड़ समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। २१ फरवरी को अपराह्न २ बजे शोभायात्रा व नगर कीर्तन निकाली जावेगी।

प० फूलचन्द शर्मा निडर अस्वस्थ

भिवानी निवासी श्री पूज्य पडित जी अस्वस्थता के कारण अपने छोटे सुपुत्र श्री वेदप्रिय आय के पास मकान न० ७६३ सेक्टर १४ सोनीपत में स्वास्थ्य लाभ व औषधि उपचार कर रहे हैं। यहा आपकी सुश्रूषा सेवा भली प्रकार हो रही है।

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रभु से प्राथना है कि पूज्य पडित जी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ दें और वह हमारे मध्य इसी प्रकार जीवन मे लाभप्रद अपना आशीर्वाद देते रहे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

उपदेशक तथा भजनोपदेशको की आवश्यकता

आय प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब एव चण्डीगढ को दो उपदेशक एव भजनोपदेशको की तुरन्त आवश्यकता है इनका मुख्य कार्यालय जालन्धर में रहेगा वहा से इन्हे पजाब चण्डीगढ एव उसके आस पास के क्षत्रो मे वेद प्रचार काय करना होगा वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा कृपया निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें—

श्री प्रि० इन्द्रजीत जी तलवाड़
मन्त्री आय प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पजाब एव चण्डीगढ
कार्यालय साईं दास ए० एस० सीनियर सै० स्कूल
पटेल चोक जालन्धर (पजाब)
—रामनाथ सहगल, सभा मन्त्री

नौएडा म —

आर्य समाज नौएडा के तत्वावधान मे सैक्टर २७ के पाक म — रोचक वेद कथा का आयोजन २६ १ ६४ को किया गया जिसमे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान वेद रत्न डा० रामप्रसाद वेदालकार जी ने अत्यन्त सरल एव रोचक शैली में वेदमन्त्रो की व्याख्या की। सुख दुख शब्दो मे सु का अथ अच्छा दु का अथ बुरा और ख का अर्थ इन्द्रिया हैं क्योंकि प्रभु ने आख कान दात आदि खोदकर बनाए हैं इन्द्रियो को सन्मार्ग में ले जाने का नाम सुख और बुरे काय मे ले जाने का अथ दुख है सुख प्राप्ति के और साधनो की चर्चा करते हुए उन्होने बताया कि—

—सुख चाहने हो तो औरो पर सुख की वर्षा करो।

—सुख चाहते हो तो औरो के साथ ऐसा व्यवहार कभी न करो जैसा तुम अपने साथ नहीं चाहते।

—सुख चाहने हो तो औरो के लिए त्याग करो।

—सुख चाहते हो तो उस प्रभु को प्रात साय धन्यवाद करो जिसने सब खान पान वायु जल सूर्य चन्द्र आदि बनाए हैं।

—सुख चाहते हो तो सबको एक दृष्टि से देखो।

—सुख चाहते हो तो बाटकर खाओ प्रभु सब देखते हैं कि कौन अपनी रोटी दूसरे को देता है कौन दूसरे की छीनने का प्रयास करता है कौन अपने मे ही मस्त रहता है और प्रभु उसके अनुसार फल देता है।

—सुख चाहते हो तो अन्तरात्मा की आवाज के अनुसार कार्य करो।

—सुख चाहते हो तो वेदादि शास्त्रो के सुविचार जो आपने पढ़े अथवा सुने हैं औरो को भी वह [illegible] देने का प्रयास करो पढ़ाकर सुनाकर अथवा आर्य साहित्य [illegible] भेंट करें।

—सुख चाहते हो [illegible]

[illegible] समारोह

आय समाज राधा कुण्ड मोथरा का शताब्दी समारोह आगामी माह ६ से १२ माच ६४ तक मनाया जावेगा। इस अवसर पर शिक्षा वेद महिला, मद्यपान निषेध रक्षा एव स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी कल्याण परिषद सम्मेलन मनाया जाएगा।

प्रात ८ बजे से देवयज्ञ भजन एवं वेदोपदेश होगा। सायकाल ७ बजे से भजन वेदोपदेश व आशीष वचन के कार्यक्रम होगे।

— नरेन्द्र नाथ श्रीवास्तव

आर्य सभा मारीशस का प्रतिनिधि मण्डल दिल्ली में

आर्य सभा मोरीशस के कोषाध्यक्ष श्री शीतल प्रसाद प्रोयाग जी आय सभा के प्रधान पुरोहित प० राजमन रामसाहा तथा पुरोहित प० धर्मेन्द्र रिकाई आज कल दिल्ली आये हुए है। १२ फरवरी को इस प्रतिनिधि मण्डल ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री से आर्य समाज के सम्बन्ध में विस्तृत विचार विमर्श किया। ये लोग मोरीशस मे वैदिक धर्म तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मकर सक्रान्ति पर्व मनाया गया

लखना आय समाज के मन्त्री लक्ष्मीनारायण शर्मा तथा प्रधान कृष्ण लाल आय ने जानकारी दी कि दिनाक १४-१-६४ को आर्य समाज मन्दिर लखना मे 'मकर संक्रान्ति पर्व" पुरोहित आचार्य श्री गोपीनाथ जी के सयोजकत्व मे मनाया गया जिसमे यज्ञ प्रवचन तथा मकर सक्रान्ति पर्व के ऊपर विचार व्यक्त किए गये शान्ति पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

सार्वदेशिक साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र　　दूरभाष । ३२७४७७१　　वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया

वर्ष ३२ अंक ४]　　दयानन्दाब्द १६९　　सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५　　फाल्गुन कृ० ९ सं० २०५०　　६ मार्च १९९४

महर्षि दयानन्द उवाच

- शिक्षा देश और जाति का जीवन है। शिक्षा से ही मानव और कुशिक्षा से दानव बन जाते हैं। जातियों में जो संस्कार उत्पन्न होते हैं उनका मूल कारण शिक्षा ही है।
- मैं तो अपना तन, मन, धन सब कुछ सत्य के ही प्रकाशनार्थ समर्पण कर चुका। मुझ से खुशामद करके अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता, किन्तु संसार को लाभ पहुंचाना ही मुझे चक्रवती राज्य के तुल्य है।

महर्षि दयानन्दसरस्वतीका १७०वां जन्मोत्सव पूरे विश्व में सोत्साह मनाया जा रहा है

दिल्ली में मुख्य समारोह महर्षि दयानन्द गो-संवर्द्धन दुग्ध केन्द्र (गाजीपुर) में होगा

आर्य समाज के संस्थापक, महान वेदोद्धारक और सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७०वां जन्म दिवस फाल्गुन वदी दशमी सम्वत् २०५० तदनुसार ७ मार्च १९९४ को समूचे आर्य जगत् द्वारा विश्व भर में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती ने सम्पूर्ण आर्य जगत् के नाम अपनी शुभ कामनायें भेजते हुए कहा—महर्षि दयानन्द का आगमन, अन्ध विश्वास, रूढ़िवाद, अवतारवाद और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार की विकृतियों से मनुष्य जाति को मुक्ति दिलाना था। इसी निमित्त महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की थी। उन्होंने धार्मिक क्षेत्र में विकृत परम्पराओं को सुसंस्कृत किया, पुरातन संस्थाओं का जीर्णोद्धार किया, नारी जाति का सम्मान, अछूतोद्धार और उन्हें वेद पढ़ने का अधिकार महर्षि की ही देन हैं। उन्होंने ही सर्वप्रथम गाय और गोवंश को राष्ट्र की सुदृढ़ अर्थ व्यवस्था का आधार बताया था।

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में दिल्ली में बृहद् समारोह महर्षि दयानन्द गो-संवर्द्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में ७ मार्च ९४ को मध्याह्न २ बजे से ४-३० बजे तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री श्री अर्जुनसिंह, कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड़ और दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना भी पधार रहे हैं। समारोह सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में होगा।

देश के अन्य भागों से भी आर्य समाजों तथा आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा महर्षि के जन्म दिवस समारोह के आयोजन की सूचनायें सभा में प्राप्त हो रही हैं।

दिल्ली में ही ८ मार्च को महामहिम राष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा की उपस्थित में महर्षि का जन्म दिवस राष्ट्रपति भवन में, सादे समारोह के साथ मनाया जायेगा।

अविद्या जग में छाई थी,
नींद गफलत की आई थी।
ऋषिवर तेरा आना था गुणकारी,
तेरी हिम्मत पर बलिहारी।

समूचा आर्य जगत् नये संकल्प और उत्साह के साथ महर्षि के सिद्धान्तों और आदर्शों के प्रचार में जुट जावें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

इसी माह १० मार्च को ऋषि बोधोत्सव समस्त आर्य समाजें तथा आर्य जन समारोह पूर्वक मनायें। इस दिन आर्य समाजों में विशेष यज्ञ एवं विद्वानो के प्रवचन आदि के कार्यक्रम रखे जायें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

राष्ट्रपति भवन में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव ८ मार्च को समारोह पूर्वक मनाया जायेगा

समय ११-४५ से १२-३० तक

आर्य समाज के प्रवर्तक महान क्रान्तिकारी और वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७०वां जन्मदिवस राष्ट्रपति भवन में ८ मार्च को ११-४५ से १२-१५ बजे तक समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

इस मंगल वेला में महामहिम राष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती स्वामी दीक्षानन्द जी केन्द्रीय ग्रामीण विकासमन्त्री श्री रामेश्वर ठाकुर, केन्द्रीय कपड़ा मन्त्री श्री जी० वेंकट स्वामी तथा सुश्री सुनन्दा आर्या सहित अनेकों विद्वान विदुषियां महर्षि की जीवन झांकी पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगे।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

आर्यसमाज के आजीवन सेवाभावी पं० शान्तिप्रकाश जी

अभी कल की बात है प० ओमप्रकाश शास्त्री खतौली वाले शास्त्रार्थ महारथी स्नातक गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ने भी इस संसार से विदा ली थी। एक से एक विद्वान जा रहे है उनकी पूर्ति नहीं हो पा रही है चिन्ता का विषय है—

जब सुनने को मिला कि आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के महारथी प० शान्तिप्रकाश जी भी प्रस्थान कर गए। आश्चर्य जनक प्रतिभा थी। व्याख्यान की शैली सरल सुबोध सिद्धांत परक होती थी।

वैदिक सिद्धांतो पर शास्त्रार्थ करने में आप दक्ष थे। ईसाई मुसलमानो से हजारो शास्त्रार्थ आपने किए और उन्हें निरुत्तर किया। शास्त्रार्थ में आप क्रोध नहीं करते थे हसते हुए उत्तर देना—उनका स्वभाव था।

९२ वर्ष की आयु पाकर इस संसार से विदा ली। आपके स्वभाव में धर्म की शुचिता थी उत्सवो पर जाते जो दक्षिणा दे दी, उस पर कभी आपत्ति नहीं की।

सिन्ध पाकिस्तान से आकर दिल्ली-पुष्पांजलि में वास किया।

एक बार स्वामी आनन्दबोध जी ने इच्छा प्रकट की कि आपने आर्य जगत की महान सेवा की है सार्वदेशिक सभा से आपको कुछ सेवा में पत्र पुष्प जीवन भेंट किए जायें। आपने मुस्कराकर कहा—मेरे पुत्र मेरी सेवा करते हैं मैं अर्थ के प्रलोभन में नहीं रहता आपका धन्यवाद, आपने पूछा तो सही—बहुत से सेवकों की सेवा सभा कर रही है।

आपका लक्ष्य था संस्कृति का स्वरूप विकृत न हो, वैदिक आर्य मर्यादाओं का विनाश न हो, राष्ट्र की आत्मा का हनन न हो। इन सब बातों का ध्यान रखते हुए ही महा पुरुषो ने राष्ट्रीयता का आधार सुरक्षित रखने के लिए प्राचीन मर्यादाओ को सुरक्षित रखने को कहा था। उन्होंने कहा था कि—

इस्लाम अथवा ईसाइयत को स्वीकार करने पर धर्मान्तरित लोग राष्ट्र-घाती हो जायेंगे। मुसलमान जब तक अपने को मुसलमान समझता रहेगा, उसे भारतीय परिवेश में आत्मसात नहीं किया जा सकता है। प्रबुद्ध वर्ग को इतिहास भुला देने के लिए कहना भारी भूल होगी। क्योंकि पाकिस्तान बन जाने पर मुसलमान सम्पूर्ण भारत पर आधिपत्य करने के सपने देखता है।

अत अपने राष्ट्र के साथ एकात्मभाव और अपने पीड़ित बन्धुओ की व्यथा का यह गहरा अनुभव ही सामाजिक न्याय व सामाजिक समरसता को भरता ही जायें था। प० शान्तिप्रकाश जी का जीवन ही उपर्युक्त बातो के लिए एक सच्चा जीवन दर्शन था सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा में बीता। सादा जीवन सरल स्वभाव मधुर मुस्कान उनकी आदत में रहा था।

प्रारम्भिक जीवन, पजाब, सिन्ध तक सीमित था। पाकिस्तान बनने के बाद दिल्ली और सारे भारत में वैदिक धर्म का नाद गुजाते रहे।

कुरान और बाइबिल के ज्ञाता थे। सैकड़ों शास्त्रार्थ विधर्मियो से किए आज आपके स्वर्गवासी होने पर समस्त आर्य जगत दुखी एव चिन्ता ग्रस्त है, आपके अभाव की पूर्ति कैसे होगी—

प्रभू आपको स्वर्गवासी बना सद्गति दें और परिवार के साथ समस्त आर्य जगत को वियोग मे सहन करने की शक्ति दें।

आर्ष गुरुकुल नौएडा को आवश्यकता है

(क) एक त्यागी, तपस्वी आचार्य अथवा सन्यासी की जो पाँच बच्चों को अष्टाध्यायी एव प्राचीन आर्ष पद्धति से विद्वान व महान बना सके।

(ख) पाँच ऐसे बच्चों की (आयु १०-१५ वर्ष) जो रामकृष्ण, दयानन्द जैसे महापुरुष बनने की अभिलाषा रखते हों।

शीघ्र सम्पर्क करें—डा०ए०बी० आर्य प्रधान आर्य समाज नौएडा, गाजियाबाद, पिन-२०१३०१, दूरभाष : ८९५३४९७

"शहीद परिवार फंड" का ६२वां वितरण समारोह

हिन्द समाचार पत्र समूह, जालन्धर (पजाब) द्वारा सचालित 'शहीद परिवार फड"का ६२वा वितरण समारोह दिनाक १३ फरवरी १९९४ को जालन्धर मे सम्पन्न हुआ।

इस समारोह की अध्यक्षता पजाब की पर्यटन राज्य मन्त्री श्रीमती सुखबस कौर ने की। केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मन्त्री श्री गुलाम नबी आजाद इसके मुख्य अतिथि थे।

इस अवसर पर ८८२,५००) रुपये ८६ परिवारों को यू०टी०आई० बाड के रूप मे सहायतार्थ वितरित किये गये। इस समय तक इस फड में ४७१ करोड रुपया जमा हुआ, जिसमे से ३,७१,४९,२३२)रुपये ३१११ परिवारों मे बाटे जा चुके हैं।

सत्यार्थ प्रकाश कथा

आर्य समाज मेन बाजार रानी बाग शकूर बस्ती दिल्ली ३४ में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस एव ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष में ३ मार्च से १२ मार्च तक सत्यार्थ प्रकाश कथा तथा प्रात ५ ३० से ७-३० तक स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में राष्ट्रभृत यज्ञ का आयोजन किया गया है। रात्रि मे ८ से ९ बजे तक सत्यार्थ प्रकाश पाठ तथा बाद में स्वामी दीक्षानन्द जी के प्रवचन होंगे। १३ मार्च को यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर श्री साहिब सिंह वर्मा (शिक्षा एव विकास मन्त्री) श्री गौरीशंकर जी भारद्वाज पधार रहे हैं। सैन्ट्रल पार्क, नजदीक नगर निगम प्राथमिक पाठशाला रानी बाग में आयोजित इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर आयोजन को सफल बनाये।

एक अनोखी प्रतियोगिता

घर बैठे विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एव उस पर आधारित प्रश्न पत्र प्राप्त करें और छ मास के भीतर उत्तर देकर निम्न पुरस्कार प्राप्त करें।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
३०००) रु०	२०००) रु०	१०००) रु०

पूर्ण विवरण प्रश्न पत्र एवं प्रवेश शुल्क आदि के लिए पाँच रुपये मनीआर्डर द्वारा—रजिस्ट्रार परीक्षा विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०), ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ को भेजें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
संयोजक

आध्यात्मिक जगत को आर्य समाज की देन

डा० प्रेमचन्द श्रीधर

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन, प्रचार-प्रसार के लिए की। परन्तु खेद है कि आज भी आर्यसमाज को लोग एक धर्म विशेष के प्रचारक के रूप मे देखते हैं और इसके महान क्रान्तिकारी सामाजिक, सास्कृतिक, राष्ट्रीय और आध्यात्मिक रूप को नहीं समझ पाए। आर्यसमाज की स्थापना के समय इसका मुख्य उद्देश्य निम्न शब्दो में स्पष्ट कर दिया गया था—

"आ समाजनो मुख्य उद्देश ए छे के वेदविदित धर्मतत्वो प्रत्येक सज्जनने मान्य करवा अने तेनो प्रचार देश-प्रदेश करवाने यथाशक्ति प्रयत्न करवो।"

आर्यसमाज के मूल नियमों में पहला था—"सब मनुष्यों के हितार्थ आर्यसमाज को अवश्य होना चाहिए।" इसकी व्याख्या मे लिखा गया "इस समाज से धर्म अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों की प्राप्ति मनुष्यों को यथावत् होगी। अतएव आर्यावर्तादि देशस्थ मनुष्य जाति मात्र का हित इस समाज से निश्चित होना है।"

आध्यात्मिक जगत को आर्यसमाज की देन का सीधा सा अर्थ है महर्षि दयानन्द की देन। हम इन पंक्तियो मे आर्यसमाज की आध्यात्मिक देन या मान्यताओ का स्पष्ट सरल और तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। महर्षि दयानन्द की आध्यात्मिक देन का कितना भारी प्रभाव पड़ा, यह महान शिक्षाशास्त्री रवीन्द्रनाथ टैगोर के श्रद्धाञ्जलि के शब्दो से स्पष्ट है —

"देव दयानन्द ने भारतीय जीवन की विविधता को सूक्ष्मदृष्टि से देखा था। उनका आह्वान सत्य और पवित्रता का आह्वान था क्योंकि उस समय तक भारतवासी मिथ्या विश्वासो की जड़ता और गौरवपूर्ण अतीत के प्रति अज्ञान के जाल मे फस चुके थे। आर्यसमाज के क्रान्तिकारी आन्दोलन द्वारा भारतवासियों को अन्ध मिथ्याविश्वासों की जड़ता से मुक्त करने का ही प्रयास हुआ।

त्रैतवाद का प्रतिपादन

दर्शनो का मुख्य विषय है सृष्टि प्रक्रिया का यथार्थ विवेचन करके जिज्ञासु को आध्यात्म की ओर प्रवृत्त करना। सृष्टि प्रक्रिया का वर्णन करने मे दर्शनो के मध्यकालीन व्याख्याकारों ने अनेक ऐसे मतों को उभारा जिनसे यह तथ्य स्पष्ट होने की बजाय और झमेले में पड़ गया। इन सभी मतों को संक्षप मे तीन कोटियो मे विभाजित किया जा सकता है।

१—समस्त विश्व का मूल एक मात्र तत्त्व जड़ है चेतन नाम का पृथक तथा स्वतन्त्र सत्ता रखने वाला कोई तत्त्व नही है।

२—दूसरा विचार है कि मूल म वास्तविक तत्त्व एक मात्र चेतन है। चेतन से अतिरिक्त अन्य कोई तत्त्व अपनी अतिरिक्त स्वतंत्र सत्ता नहीं रखता। मूल चेतन तत्त्व केवल लीलावश इस रूप मे दृष्टिगोचर है, जिसे मिथ्या समझना चाहिए।

३—तीसरी विचारधारा है जिसके अनुसार जड और चेतन दोनों प्रकार के तत्त्वों का अस्तित्व वास्तविक है। दोनो के सहयोग से सृष्टि आदि जगत के कार्य का निर्वाह होता है।

अब हम इन तीनो का पृथक-पृथक विश्लेषण करेंगे। वैदिक काल मे आर्य लोगो का परमात्मा की सत्ता मे पूर्ण विश्वास था और उस परम पुरुष की उपासना तथा तदनुकूल अपने जीवन मे सभी कार्यों का अनुष्ठान उनका आदर्श था। परन्तु कालान्तर मे एक ऐसा तीव्र बुद्धि नवयुवक बृहस्पति हुआ, जिसने परमात्मा की उपासना को ढकोसला बताया और इसकी सत्ता को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। उसका विश्वास था कि ब्रह्म नाम के किसी भी तत्त्व की [illegible] है यह जगत मात्र इतना ही है जितना कि प्रत्यक्ष है [illegible] किसी भी सत्ता का अस्तित्व नहीं है। यह युवक इतना प्रभावशाली था कि उसकी विचारधारा के अनुसार तत्कालीन समाज भी दो विचारधाराओं में विभाजित हो गया। दोनों वर्गों का जीवन दर्शन और तदनुरूप कर्मों का अनुष्ठान भी भिन्न-भिन्न हो गया। यही वर्ग देव" और 'असुर" नाम से प्रसिद्ध है। इस विचारधारा के प्रधान प्रसारक और प्रचारक के रूप मे चार्वाक का नाम आता है। उनके दर्शनो को चार्वाक—दर्शन' या बार्हस्पत्य दशन' भी कहते हैं। सांख्यदर्शन के अन्तर्गत भी एक वार्षगण्य आचार्य की शाखा है जो परमात्मा को सत्ता को स्वीकार नही करती। इसलिए सांख्य दर्शन को केवल प्रकृतिवादी दशन भी कहते है। बौद्ध दर्शन इस मुख्य विचारधारा से प्रभावित हुआ है।

पाश्चात्य दर्शन जिसका हेगल और कार्लमार्क्स जैसे प्रबुद्ध मनीषियो ने जो की मूलरूप से भौतिवादी थे, प्रतिपादन किया। यह भी मूलरूप से आधिभौतिक विचारधारा से पल्लवित और पुष्पित हुई। भौतिकवाद का विचार इसी प्रकृतिवादी विचारधारा से प्रभावित था। लोकायत दर्शन इसी का नाम है। इस दर्शन मे जो भी असगतिया है उनका कोई युक्तियुक्त उत्तर आज तक नही मिला। यह दार्शनिक कसौटी पर टिक नही पाता। नास्तिकता इसी विचार की देन है।

इसी विचारधारा मे केवल नाम परिवर्तन मात्र है 'जड' के स्थान पर 'चेतन' के अस्तित्व को स्वीकार किया है। बौद्ध मन्तव्यो का आधार यही है। ईश्वर की सत्ता को कही भी स्पष्ट रूप से नकारा तो नहीं गया परन्तु ऐसा लगता है कि वैदिक विचाराधारा मे जो कालान्तर मे व्यवहारिक त्रुटिया आ गई थी बौद्धदर्शन इसकी प्रतिक्रिया मात्र ही है। परन्तु कालान्तर मे ईश्वर की ओर विमुखता के परिणामस्वरूप जब पथभ्रष्ट होने का भय उपस्थित हुआ और आध्यात्मिक जीवन और अब पतन की ओर उन्मुख हुआ तो इसकी भी प्रतिक्रिया हुई और यह माना जाने लगा कि चेतन सत्ता का अस्तित्व तो है पर वही ब्रह्म है, शेष सब अज्ञानमूलक भ्रम है मिथ्या है। इस विचारधारा को आद्यशंकराचार्य ने सम्पुष्ट किया। (क्रमश)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस पर हरियाणा सरकार का संशोधित आदेश

क्रमांक २७/५/९३-२-जी एस

प्रेषक

मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार

सेवा मे

(१) सभी विभागाध्यक्ष हरियाणा।

(२) आयुक्त, अम्बाला, हिसार, रोहतक तथा गुड़गाव मण्डल।

(३) सभी उपायुक्त, हरियाणा।

(४) सभी उप मंडल अधिकारी (ना) हरियाणा।

(५) रजिस्ट्रार, पंजाब तथा हरियाणा हाई कोर्ट तथा सभी जिला एवं सत्र न्यायाधीश, हरियाणा।

दिनांक २२ फरवरी १९९४

विषय — वर्ष १९९४ के दौरान स्वामी दयानन्द सरस्वती, के जन्म दिवस ५ अप्रैल, १९९४ के स्थान पर ७ मार्च १९९४ को अवकाश करने के बारे में।

महोदय,

मुझे निर्देश हुआ है कि वर्ष १९९४ के दौरान हरियाणा सरकार के कार्यालयों हेतु सार्वजनिक अवकाश सूचि जो अधिसूचना क्रमांक २७/५/९३-२ जी एस II दिनांक १२-११ १९९३ द्वारा जारी की थी, क्रम सख्या १० पर दर्शायी गई महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म तिथि ५ अप्रैल १९९४ के स्थान पर ७ मार्च १९९४ पढ़ा जाए।

भवदीय

वासदेव शर्मा

अवर सचिव, सामान्य प्रशासन

कृते मुख्य सचिव हरियाणा सरकार

महर्षि दयानन्द का नारा-ए मस्ताना-

संसार का प्रत्येक मानव श्रेष्ठ पुरुष बन जाए

प्रि० ओमप्रकाश

महर्षि दयानन्द के समकालीन, प्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खां ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था—'हमारा स्वामी जी से घनिष्ठ सम्बन्ध था और हम उनका आदर करते थे। वे विद्वान ही नहीं, एक अत्यन्त श्रेष्ठ पुरुष थे।

उन 'अत्यन्त श्रेष्ठ पुरुष' की सबसे बड़ी इच्छा, सबसे बड़ा उद्देश्य यही था कि दुनिया के सभी मनुष्य 'श्रेष्ठ पुरुष' बनें। इसीलिए उन्होंने अपने सर्वतोमुखी आन्दोलन का नाम 'आर्य समाज' रखा, क्योंकि 'आर्य' शब्द का मूल अर्थ ही 'श्रेष्ठ पुरुष' है, प्रगतिशील-सदाचारी-ईमानदार व्यक्ति है। अपने 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में ऋषिवर लिखते हैं—'जैसे 'आर्य' श्रेष्ठ पुरुषों और 'दस्यु' दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं, वैसे ही मैं भी मानता हूं।'' उनके मन्तव्य ही नहीं, उनका समूचा जीवन तथा कृतियां इसका प्रमाण हैं कि वे संसार में श्रेष्ठ मानवता का प्रचार-प्रसार चाहते थे। अमेरिका के परोक्षदर्शी विद्वान श्री एण्ड्रू ज ने महर्षि की शुद्ध सात्विक भावना की पुष्टि करते हुए आर्य समाज को 'असीम प्रेम की आग' की संज्ञा दी थी, जो मानव के द्वेष को मिटा देगी एवं मनुष्य-मनुष्य में सौहार्द उत्पन्न करके · दुनियां में फैले पाखण्ड को दूर करके · संसार को सच्ची मानवता का पाठ पढ़ाकर पृथ्वी को नवजीवन प्रदान करेगी और सर्वत्र सुख-शान्ति के युग का प्रारम्भ होगा।

'श्रेष्ठ पुरुष' का निर्माण :

'श्रेष्ठ पुरुष' के निर्माण की प्रक्रिया देव दयानन्द की अनोखी है। वे उसका आधार 'धर्म' को मानते हैं। पर उनकी धर्म की परिभाषा साम्प्रदायिक नहीं मानवीय है। वे कहते हैं—'ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपात-रहित न्याय सर्वहित करना 'धर्म' है। और 'अधर्म' उनकी दृष्टि मे है—'ईश्वर की आज्ञा को छोड़कर और पक्षपात-सहित अन्यायी होके ··अविद्या, हठ, अहंकार, क्रूरता आदि दोषो से युक्त होके · अपना ही हित करना (सोचना) है।' वे 'श्रेष्ठ पुरुष' बनने के लिये अधर्म एवं असत्य को छोड़ने पर बल देते हैं। अतः 'सत्पुरुष' की व्याख्या करते हुए वे स्पष्टतः कहते हैं—'सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी महाशय ही 'सत्पुरुष' (अच्छे इंसान) कहाते हैं' और संसार के प्रत्येक व्यक्ति को वे ऐसा ही सत्पुरुष बनाना चाहते हैं।

दिव्य द्रष्टा दयानन्द की कसौटी भी निराली है। वे घोषणा करते हैं—'जो सत्य है, उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझे अभीष्ट है। अधर्मयुक्त चाल-चलन का त्याग और धर्म युक्त आचार का स्वीकार ही मनुष्य धर्म है, सच्ची मानवता है।' वे आगे लिखते हैं 'मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत अन्यो के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे' न कि दूसरो के अधिकार, धन-सम्पत्ति छीनने तथा युद्ध वैमनस्य आदि द्वारा अन्य लोगों के उत्पीड़न मे लगा रहे।

अद्भुत योजना :

महर्षि की मनुष्य-निर्माण की योजना भी अद्भुत है। वे कहते हैं कि मनुष्य पहले अच्छी तरह समझ ले कि दुनिया मे जो कुछ दिखता है, वह महान शक्ति ईश्वर (ईशा वास्यमिदं सर्वम्) से व्याप्त है, वही उसका निर्माता, पालक व मालिक है। सृष्टिकर्ता को मनुष्य निष्ठापूर्वक माने और उसकी कारीगरी को नित्य देखा करे (पश्य तस्य काव्यम्)। उस ब्रह्मा ने मनुष्य के आनन्द भोग के लिए जो सूर्य चन्द्र, भूमि-आकाश, पर्वत-समुद्र, हवा-पानी, दूध-मलाई, फल-फूल, सब्जी-तरकारी तथा पत्नी-पुत्र, कोठी-कार आदि बनाए या दिए हैं, उसका मजे से भोग करे, पर उस दाता' को भूले नहीं, उसकी स्तुति प्रार्थना उपासना नित्य करता रहे। भोग्य पदार्थों का रसास्वादन भी वह मधु मक्खी की तरह करे, उनमे फंसे नहीं। इस तरह मनुष्य अपनी आत्मा को जितना परमात्मा के सुपुर्द रखेगा तथा प्रकृति के नियमों के अनुसार जीवन-यापन करता रहेगा, उतना ही अधिक वह 'श्रेष्ठ पुरुष' बनने की ओर अग्रसर होता रहेगा।

फिर अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में महर्षि मनुष्य-निर्माण की योजना को बढ़ाते हैं। वे कहते हैं कि बच्चा पैदा होने से पहले मां-बाप संकल्प लें कि गर्भावस्था में ही बच्चे में 'श्रेष्ठ पुरुष' बनने के बोज डालने हैं। तदर्थ दोनों को मर्यादा-पालन करना होगा और संयम बरतना होगा। मां (जननी) को तो विशेष रूप से शुद्ध विचार, शुद्ध आचार, शुद्ध व्यवहार एव आहार से रहना होगा। 'मातृमान् पितृमान् पुरुषों वेद'–बालक को 'श्रेष्ठ पुरुष' बनाने की योजना 'श्रेष्ठ माता-पिता' ही बना सकेंगे। उसके लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा खान-पान, स्वास्थ्य चरित्र का ध्यान बड़ी सावधानी से रखना होगा, ताकि उम्र के बढ़ने के साथ-साथ बच्चे का शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास ठीक प्रकार से हो सके। माता-पिता और बाद में आचार्य को इसके लिये विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

गृहस्थाश्रम का महान दायित्व :

महर्षि दयानन्द ने मनुष्य-जीवन को चार आश्रमों या भागों में बांटा है—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। इसमें गृहस्थाश्रम को उन्होंने सर्वोपरि माना है, क्योंकि वह अन्यों का मुख्य सहयोगी एवं पालक है। उनकी दृष्टि मे यह राष्ट्र की धुरी भी है, क्योंकि परिवारों का समूह ही तो राष्ट्र है, देश है, जाति है और परिवार उसकी बुनियाद व व्यावहारिक प्रशिक्षण है जहां हम स्वस्थ सहज एवं निश्छल भाव से [illegible]

(शेष पृष्ठ ११ पर)

शास्त्रार्थ समर के महायोद्धा पं० शान्ति प्रकाश नहीं रहे

आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी, कुरान के हदीस के अद्वितीय विद्वान, महोपदेशक, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त और कर्मठ कार्यकर्ता पं० शान्ति प्रकाश जी का लगभग ९० वर्ष की आयु में २२ फरवरी १९९४ को गुड़गांव में निधन हो गया है। वह पहले जयपुर में अपने पुत्रों के पास रहते थे और पिछले कई वर्षों से उपचार पर थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पंडित शान्ति प्रकाश के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा कि पंडित जी ने पंडित लेखराम और पंडित रामचन्द्र देहलवी के चरण चिन्हों पर चलते हुए मुसलमानों के साथ हजारों शास्त्रार्थ करके आर्य समाज का नाम पूरे देश मे उज्जवल किया था। जीवन भर उन्होंने पूरे देश का भ्रमण करते हुए आर्य समाज का प्रचार किया था। उनके निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। आर्य समाज उन्हें शास्त्रार्थ महायोद्धा के रूप मे सदैव याद करेगा। स्वामी जी ने दिवंगत आत्मा की सद्गति की कामना करते हुए, शोक संतप्त परिवार के प्रति आर्य जगत की ओर से हार्दिक संवेदना प्रकट की।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

महर्षि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन

—डा० सावित्री देवी शर्मा, बरेली

अज्ञान तिमिरान्ध वसुन्धरा को वैदिक प्रकाश से आलोकित करने वाले युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीति क्षेत्र में व्याप्त अव्यवस्थाओं को मिटाने के लिए जहां अनेक क्रांतिकारी कदम उठाए वहां दार्शनिक जगत भी उनकी लौह लेखनी से प्रभावित हुए बिना न रह सका। यद्यपि अनेक दार्शनिक गुत्थियां उनकी ऋतम्भरा प्रज्ञा से विद्वानों के समक्ष समाहित हुई किन्तु इस संक्षिप्त लेख में केवल तीन नवीन उद्भावनाओं पर विचार विमर्श किया जाएगा। त्रैतवाद मुक्ति से पुनरावृत्ति तथा षड्दर्शन समन्वयन।

सर्वप्रथम त्रैतवाद पर विचार किया जाता है—

ऋषिवर दयानन्द के शुभावतरण से पूर्व दार्शनिक क्षेत्र मे अनेक वादो में संघर्ष रत विद्वान तर्क प्रमाण युक्त शास्त्रार्थ ग्रन्थो की रचनाओ मे ही अपना पाण्डित्य प्रदर्शन कर रहे थे। द्वैतवाद के संस्थापक ब्रह्म और आत्मा की विलक्षण सगतिया प्रस्तुत कर प्राकृतिक सत्ता को नकार रहे थे। अद्वैतवाद के समर्थक 'ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या' का प्रबल उद्घोष कर आत्मा और प्रकृति के अस्तित्व का खण्डन करते हुए अपने पक्ष की साधिकार प्रस्तुति करने में संलग्न थे इसी प्रकार द्वैताद्वैतवाद एव विशिष्ट द्वैतवाद के प्रचारक अपनी अस्पष्ट, अनिर्वचनीय कल्पनाओं से सत्यसिद्धांतो को भी अबोध गम्य बनाकर तार्किक, दुरूहता का परिचय दे रहे थे। ऐसी स्थिति में देवदयानन्द ने अपनी आर्ष प्रतिभा से अवैदिक वादों का निराकरण कर विशुद्ध त्रैतवाद की स्थापना की।

समस्त दृश्यमान जगत में तीनो अनादि सत्ताओ (ईश्वर, जीव, प्रकृति) का प्रत्यक्ष साम्राज्य दृष्टि गोचर हो रहा है। यही तीन शक्तिया सृष्टि का प्रबल आधार हैं। इस ससार की वैज्ञानिक रचना करने वाला परमेश्वर निमित्त कारण है। उसके अनन्त सामर्थ्य के बिना पाञ्चभौतिक उपादानों से परिपूर्ण यह प्रकृति माता सृष्टि निर्माण करने मे सर्वथा असमर्थ है। साधारण कारण रूप मे अकिञ्चित सहयोग करने वाला जीवात्मा अल्पज्ञ अल्पशक्ति युक्त तथा एकदेशीय है। वह अनन्त सागर की एक बूंद के समान यह सच्चिन्मात्र जीव विशाल सृष्टि की रचना मे सामान्य सत्तामात्र दीखता है। अनेक वेदमन्त्र इन्ही तीन अनादि कारणो के स्वरूप का वर्णन करते हैं। निम्नांकित मन्त्र विचारणीय है—

'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्य पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति'। अर्थात इस पिण्ड शरीर रूपी वृक्ष पर दो सुपर्ण पक्षी साथ २ मित्र भाव से परस्पर सप्रेम आलिंगन किए बैठे हैं। उनमे एक तो सुन्दर स्वादिष्ट मधुर फलो का रसास्वादन करता है और दूसरा पक्षी साक्षी बनकर बैठा हुआ दर्शक मात्र दीख रहा है। प्रस्तुत मन्त्र में त्रैतवाद का स्वरूप विचारणीय है। पिण्ड अथवा ब्रह्माण्ड रूपी वृक्ष ही जगत माता प्रकृति है जो सरस सुस्वादु फलो को उत्पन्न करती है। सुन्दर पखों वाले दो पक्षी ही आत्मा परमात्मा का प्रतीकात्मक स्वरूप हैं। उनमे से परमात्मा रूपी पक्षी अकाम धीर और अमृत है। उसे सासारिक भोग्य पदार्थों की रञ्चमात्र इच्छा नहीं है क्योंकि वह सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी होने से स्वत: तृप्त है 'रसो वै स' तस्योच्छिष्ट जगत सर्वम्। स्वादिष्ट फलो मे रमा हुआ प्रभु कैसे सकाम हो सकता है। अब केवल शेष रहा अल्पज्ञ जीवात्मा जो ईश्वर के अधिष्ठातृत्व मे सकाम तथा निष्काम भाव से सकल फलो का रसास्वादन करता रहता है।

निष्कर्ष यह है कि जगत निर्माण में ईश्वर निमित्त कारण है। उसकी आज्ञा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता है। माता प्रकृति उपादान कारण है जिसे सृष्टि रचना का साधकतम करण कारक कहा जा सकता है विविध रसभोगी जीवात्मा इस मोहक ससार को देखता हुआ कर्मफल रूप प्रयोजन सिद्ध करता है जिसके शुभाशुभ कर्मों का भुगतान इसी भोगालय में सम्भव है।

सर्वत्र यही त्रिविध सत्ताएं दृष्टिगोचर हो रही है। एक साधारण मिट्टी के पात्र निर्माण में कुम्भकार निमित्तकारण रूपरचयिता, मिट्टीउपादान कारण तथा दण्ड चक्रादि साधारण सहयोगी कारण बने दीख रहे हैं। आकर्षक आभूषणो की रचना में संलग्न स्वर्णकार उपादान स्वर्ण के द्वारा मण्डन प्रियजनो के लिए साधारण कारण रूप यान्त्रिक साधनो से अलंकार बना रहा है। यहां भी देखो यही तीन सत्ताए सभी उत्पादनो मे परिलक्षित हो रही हैं।

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के प्रथम मन्त्र मे यही त्रिविध विश्वव्यापारो में तन्मय दीख रहे हैं। ऋचा सानन्द उद्घोष करती है—

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत् किञ्चित जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्यस्विद्धनम्॥

अर्थात यह सम्पूर्ण जगत विश्वाधार परमेश्वर से सर्वत्र व्याप्त है। अत सभी सच्चित रूपिणी आत्माएं उसके धर्म विधान के अनुसार ही भौतिक पदार्थों का भोग करे। उसकी सार्वदेशिक, सार्वकालिक व्यापकता को जानकर कोई मनुष्य किसी के धन पर लोभ दृष्टि न डालें। यहां भी सर्वव्यापक ईश्वर, व्याप्य भोग साधन स्वरूपा प्रकृति, कर्मफल भोक्ता, स्वतन्त्र कर्ता जीव के रूप में त्रैतत्व विद्यमान है। वस्तुत जीवात्मा के लिए ही यह त्रैतवाद अत्यन्त उपयोगी है प्रभु प्रसाद के रूप मे जीवात्माओ को भी त्रिविध शक्तियां उपलब्ध हैं। ज्ञान, बल और आस्था के रूप में तीन शक्तियां पाकर ही मनुष्य अपने कार्यों को सम्पन्न करने मे समर्थ होता है। इन्हीं का सदुपयोग ही इस लोकयात्रा मे त्रैतवाद की सार्थकता को सिद्ध करता है।

आत्मा का ज्ञान सर्वप्रथम अपने लाभ के लिए है जिसने उस प्रभु प्रदत्त ज्ञान आत्मसात् नहीं किया अर्थात ज्ञान पयस् को कर्मयोग द्वारा मन्थन कर नवनीत प्रसाद नहीं प्राप्त किया उसका केवल परोपदेश पाण्डित्य भ्रान्ति मात्र है। धर्म क्षेत्र मे अप्रयुक्त कल्पित श्रुतज्ञान किसी उपदेशक को यशस्वी नहीं बना सकता। अत कर्म पथ में प्रयुक्त आत्मज्ञान ही मानव का अपना सम्बल हो सकेगा। शेष तो सूर्य द्वारा उड़ाए गए थोथे कूड़े करकट के समान स्वत. अलग छट जाता है जिसका कोई उपयोग नहीं होता।

आत्मा की द्वितीय शक्ति है शारीरिक, आत्मिक, बौद्धिक बल। यह एक वैज्ञानिक रहस्य है कि मनुष्य इन बलो का प्रयोग जितना ही परोपकार के निमित्त करेगा उतनी ही अक्षय बल वृद्धि प्राप्त कर ऐश्वर्य सम्पन्न हो सकेगा अन्यथा स्वार्थ साधना में प्रयुक्त वही बल उत्तरोत्तर क्षीण होते जाते हैं। अन्ततोगत्वा दीन हीन सा होकर महाप्रयाण की वेला में पश्चाताप के आंसू बहाता हुआ परलोक को जाता है। यही स्वार्थ तथा परमार्थ में अपने बलों का प्रयोग करने में अन्तर है।

(क्रमश.)

गायत्री परिवार ने शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार नहीं की

गत ६ फरवरी से १० फरवरी तक उद्योग नगरी कोरबा में गायत्री परिवार शान्तिकुञ्ज हरिद्वार की ओर से तथाकथित अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया इसे विधि सम्मत एवं शास्त्रीय सिद्ध करने के लिए आर्य समाज की ओर से श्री स्वामी परमानन्द जी पाखण्ड खण्डन मंच उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ने शास्त्रार्थ की चुनौती विज्ञापनों एवं समाचार पत्रो मे मुख्य पेज पर स्थूल अक्षरो मे चुनौती छपी। सारे शहर एवं आयोजन स्थल पर खलबली मच गई। परन्तु यज्ञ के आयोजकों ने शास्त्रार्थ करने से साफ मना कर दिया और कहने लगे शास्त्रार्थ से किसी समस्या का समाधान नहीं होता।

जब कि प्राचीन काल से ही ऋषिमुनि एवं सारे विद्वान शास्त्रार्थ के द्वारा ही सत्यासत्य का निर्णय करते आये हैं। प्राचीन संस्कृत साहित्य इस प्रकार के शास्त्रार्थों से भरा हुआ है। इनके पडाल मे वेद शास्त्रो के विरोधी मत ईसाई, मुसलमानो का भी प्रचार केन्द्र होता है। इस प्रकार परोक्ष में ये लोग वैदिक धर्म पर कुठाराघात कर देश के टुकड़े करने वाले विदेशी मतो के फैलाने मे सहायक हो रहे हैं और अपने को वैद संस्कृति के प्रचारक घोषित करते हैं। यह देश की भोली-भाली जनता के साथ कितनी बड़ी ठगी है।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
प्रधान उत्कल आर्य प्र० सभा

महर्षि दयानन्द और सत्यार्थ प्रकाश

—सत्यपाल आर्य बन्धु, मुरादाबाद

किसी विद्वान् का यथार्थ कथन है कि "महापुरुष होने का अर्थ है गलत समझा जाना।" महापुरुषों को संसार प्रायः गलत ही समझता चला आया है। उनके जीवन काल में तो प्रायः लोग उन्हें ठीक से समझ ही नहीं पाते। महामानव दयानन्द इसके अपवाद नहीं थे। संसार ने उन्हें समझने में भी प्रायः भूल ही की है। कोई उन्हें केवल एक समाज-सुधारक ही समझता रहा है तो कोई कोरा एक धर्म-प्रचारक। कोई केवल एक कुरीति निवारक समझता रहा है, तो कोई मात्र एक पाखण्ड-निवारक। यहां तक कि कोई उन्हें नास्तिक समझता रहा है तो कोई अंग्रेजों का एजेन्ट। जब कि स्वयं अंग्रेज उन्हें सदैव शंका की दृष्टि से देखते रहे हैं और बागी फकीर मानते रहे हैं। मतवादी लोग (विशेषतया ईसाई और मुसलमान) उन्हें अपना डबल शत्रु समझते रहे हैं। पर खेद है कि महर्षि दयानन्द का वास्तविक सत्य स्वरूप जग समझ ही नहीं पाया। सत्य तो यह है कि क्षुद्र दृष्टि वाले भला महर्षि का समग्र स्वरूप देख ही कैसे सकते थे? वस्तुतः महर्षि का यथार्थ एवं समग्र स्वरूप अभी जन सामान्य के सम्मुख रखा जाना शेष है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी महामानव थे कि जिन्हें किसी भी सीमित तथा संकुचित दायरे में प्रस्तुत करना उनके प्रति अन्याय ही होगा। उनके व्यक्तित्व कर्तृत्व तथा विचार-धारा का सूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् कोई भी व्यक्ति इस परि-णाम पर पहुंचे बिना नहीं रह सकता कि वे एक बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न महामानव थे। उनके जैसा सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति इतिहास के पन्नों में खोजने से कहीं नहीं मिलता। तभी कविवर प्रकाश चन्द्र जी प्रकाश ने मस्ती से झूम कर कहा था कि—

यूं तो कितने ही महापुरुष हुये दुनिया में।
कोई गुरुदेव दयानन्द सा देखा न सुना॥

इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं, न ही यह कवि की कोई कोरी कल्पना मात्र ही है। यह एक सच्चाई है। आप संसार भर के महा-पुरुषों पर एक दृष्टि डाल जाइये और एक दृष्टि महर्षि दयानन्द के चरित्र पर भी डालिये और फिर हमारे कथन की सत्यता की परख कीजिये। आप पायेंगे कि किसी महापुरुष में कोई एक या दो गुण विशेष होने से उसे इतनी महत्ता मिली कि वह कोटि-कोटि मानवों का पूज्य बन गया, पर महर्षि दयानन्द में एक नहीं, दो-चार नहीं अनेकों गुण एक साथ ऐसे पुंजीभूत हो गये थे कि जिनका वर्णन करना भी कठिन है। लगता है कि जैसे ये सद्गुण अथवा विशेषण तड़प रहे थे कि कोई तो ऐसा महामानव मिले कि जिसमें हम सब एक साथ पुंजीभूत होकर अपनी सार्थकता को प्रकट कर सकें। और जब महर्षि दयानन्द के रूप में उन्हें एक ऐसा महामानव मिल गया कि जिसमें सभी एक साथ समा सकते थे, तो उनकी प्रसन्नता का कोई पारावार नहीं रहा और सत्य तो यह है कि महर्षि के साथ लगकर इन गुणों अथवा विशेषणों ने महर्षि की नहीं, अपनी ही महिमा की वृद्धि की है। महर्षि के नाम के साथ लगकर विशेषण स्वयं साकार हो उठे हैं। वस्तुतः मानव का जो ऊंचे से ऊंचा आदर्श कोई सोच सकता है, महर्षि दयानन्द सदैव इससे बढ़कर ही दृष्टिगोचर होते हैं। उनके जैसा आदित्य ब्रह्मचारी, वेदवेत्ता, धर्म संशोधक, वेदभाष्यकर्ता, देशभक्त, राष्ट्रीयता का अग्रदूत, क्रान्तिकारी, समाजसुधारक, क्षमा-शील, योगी, यति, तार्किक विद्वान, दिग्विजयी और विजेता तथा सर्व-हितकारी महामानव कहीं ढूंढने से भी नहीं मिल सकता। पाठक गण! महापुरुषों की सुदीर्घ पंक्ति में दीपक लेकर खोजें और देखें कि उन सबमें कोई ऐसा महामानव भी कहीं है कि जो महर्षि दयानन्द के सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व की समता कर सके? मानवता का जो आदर्श वे स्थापित कर गये हैं, उसका अपना ही कीर्तिमान है। स्यात् इसी को देखकर ही महाकवि निराला ने कभी कहा था, कि—"महर्षि दयानन्द से भी बढ़कर मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं होता है।" योगी अरविन्द के शब्दों में "संसार के महापुरुषों को यदि पर्वत की चोटियां माना जावे, तो दयानन्द सबसे ऊंची चोटी हैं।" जैनेन्द्र कुमार की निम्न उक्ति महर्षि दयानन्द पर कितनी खरी उतरती है - 'उन्होंने बन्धन के मध्य मुक्ति की और मृत्यु के मध्य अमरता की साधना की है, ऐसे महा-पुरुष स्वयं जीवन का मापदण्ड बन गये हैं—इनसे हम जीवन सत्य को समझा करते हैं।" श्री के० एम० मुन्शी अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "The Creative Art of Life" में महर्षि दयानन्द की विद्वत्ता के सम्बन्ध में ठीक ही लिखते हैं कि—"Dayanand Was I earned beyond the measure of Man" वस्तुतः महर्षि भारत के ही नहीं विश्व के इतिहास में अपने ढंग के अकेले महापुरुष थे। ऐसे महा-मानव को समझने में यदि संसार कोई भूल करता है, तो उसमें आश्चर्य ही क्या?

दयानन्द को समझना है तो सत्यार्थप्रकाश को समझें

महामानव दयानन्द को समझना है तो इसके लिए प्रथम उनके विचारपुंज सत्यार्थ प्रकाश को समझने की आवश्यकता है। पर दुःख इस बात का है कि महर्षि की ही भांति उनके अमर ज्ञानकोष सत्यार्थ प्रकाश को समझने में भी संसार ने बड़ी भूल की है। और इसे ठीक से न समझने के कारण ही महात्मा गांधी जैसा प्रबुद्ध एवं विचारशील व्यक्ति भी महर्षि द्वारा लोक कल्याण की भावना से अभिप्रेत खण्डन-मण्डन के अभिप्राय को लेखक की सदाशयता के अनुकूल न आंक कर उसे एक निराशा जनक पुस्तक कह बैठे। अनेकशः मतवादी लोगों ने उस पर राज्य द्वारा प्रतिबन्ध लगाये जाने के अत्यन्त घिनौने उपक्रम किये। अज्ञ लोगों ने उसके पन्नों को फाड़-फाड़ कर होली जलाने की कुचेष्टायें कीं और न जाने इसके विरुद्ध किस-किस ने कितना विष-वमन किया। पर आखिर यह सब क्यों? निश्चय ही सत्यार्थ प्रकाश को ठीक से न समझने के कारण ही। अतः महर्षि दयानन्द को समझने के लिए उनके विचारपुंज सत्यार्थ प्रकाश को प्रथम समझना अत्यन्त आवश्यक है और सत्यार्थप्रकाश को समझने के लिए ग्रन्थकार के ग्रन्थ रचना के उद्देश्य को समझने की आवश्यकता है। हमें उन परिस्थितियों एव कारणों की खोज करनी होगी कि जिनसे प्रेरित होकर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की गई। (क्रमशः)

महान विभूति देव दयानन्द

— आचार्य विष्णुमित्र आर्य

आधुनिक युग की महान विभूति सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी अवधूत महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण दशमी सवत् १८८१ शनिवार को गुजरात राज्य के टंकारा ग्राम में औदीच्य जी के समृद्ध परिवार में हुआ। बाल्यकाल में देव दयानन्द का नाम मूलशंकर था। सत्यपिपासु बालक मूलशंकर के चित्त में जन्म जन्मान्तरों के सस्कारों के परिणाम स्वरूप विभिन्न घटनाओं से वैराग्य का उदय होने लगा। भगिनी व चाचा की मृत्यु की घटनाओं से सस्कारी बालक के वैराग्य की अग्नि तीव्र हो गयी मानो अपने प्रिय जन प्रभु से मिलने की छटपटाहट बढ़ गयी और मृत्युञ्जय बनने का दृढ़ संकल्प लेकर वह आत्मपिपासु ब्रह्मचारी अमरता की खोज में निकल पड़ा। मूलशंकर नैष्ठिक दीक्षा लेकर शुद्ध चैतन्य बने फिर शीघ्र ही दण्डी स्वामी पूर्णानन्द जी की अनुकम्पा से सन्यास आश्रम मे प्रविष्ट होकर दयानन्द सरस्वती बन गए।

ब्रह्मविद्यापिपासु दयानन्द ने ज्वालानन्दपुरी और शिवानन्द गिरि आदि शान्तात्मा योगियों से योगाभ्यास की अभिलाषा भलीभांति पूर्ण की। तत्पश्चात कार्तिक सुदी २ सवत १९१७ को वह जिज्ञासु दयानन्द मथुरा मे गुरु विरजानन्द जी के पास पहुचा। गुरु जी उत्तम पात्र मानकर इन्हें प्राणपण से विद्या दान करने लगे। गुरु विरजानन्द की पाठशाला में दयानन्द सामान्य विद्यार्थी न थे अपितु योगी होने के साथ महाबुद्धिमान भी थे। पाठ पढ़ते हुए जब दयानन्द शकाए करते थे तो यदा कदा गुरु शिष्य मे शास्त्रार्थ छिड़ जाता था। गुरु विरजानन्द दयानन्द को कालजिह्व एव कुलक्कर की उपाधि देते थे। कालजिह्व कहते हैं जिसकी जिह्वा असत्य के खण्डन मे काल के समान कार्य करे। कुलक्कर का अर्थ है खूटा अर्थात सत्यपक्ष के प्रति विचलित न होता हुआ जो खूटे के समान सदा दृढ़ रहे। निस्सन्देह ऋषि दयानन्द ने इन उपाधियों को अपने जीवन में चरितार्थ करके दिखाया। गुरुकुल से प्रस्थान के समय जब समावर्तन सस्कार का अवसर आया तब गुरु विरजानन्द प्रसन्न होकर कहते हैं कि दयानन्द! समाज मे अनेक मत मतान्तरो से कुरीतिया उत्पन्न हो गयी हैं वैदिक ग्रन्थो का पठन पाठन समाप्त हो गया है उसे प्रारम्भ करके समाज को सत्य की ओर प्रेरित करो यही मेरी गुरु दक्षिणा है। आदर्श शिष्य दयानन्द विनीत भाव से गुरु वचनों को कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार करके गुरुचरणो का गाढ़ आलिंगन करते हुए वहां से विदा हुए।

१९ वीं शताब्दी में सम्पूर्ण समाज अविद्या रूप गहन अन्धकार से घिरा हुआ था। ऐसे अवसर पर कपिल कणाद, गौतम जैसे पाण्डित्य के धनी भीष्म से ब्रह्मचारी राम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम कृष्ण समान नीतिमान महात्मा बुद्ध से वैरागी व्यास एव पतञ्जलि जैसे आध्यात्मिक बहुगुण सम्पन्न दयानन्द को पाकर सारा जग निहाल हो गया मानो उसे सब कुछ मिल गया।

आचार्य दयानन्द विश्वबन्धुत्व की पुनीत भावना को हृदयगम करके ससार के उपकार मे प्रवृत्त हो गये। दूसरो के अधिकारो का हनन करने वाली दूषित जाति व्यवस्था के स्थान पर गुण कर्म स्वभावानुसार होने वाली विशुद्ध वर्णव्यवस्था का उपदेश करके मानव जाति पर महान उपकार किया विद्या रूप सूर्य के अस्त होने से समाज नारी जाति को शिक्षा के अधिकार से वञ्चित कर रहा था ऐसे समय में इस महर्षि ने विद्या का द्वार खोलते हुए नारी के प्रति उत्पन्न होने वाली दुष्ट मान्यताओं का खण्डन करके कन्याओं का पठन पाठन अनिवार्य घोषित किया और यज्ञोपवीत धारण करने व यज्ञ करने-कराने का पुरुषों के तुल्य अधिकार पावन वेदो के प्रकाश में कर सम्पूर्ण नारी जाति को उपकृत कर दिया। नारी जाति को वैधव्य के दुःख से बचाने के लिए बाल विवाह और वृद्ध विवाह का निराकरण तथा बहुविवाह का भी प्रबल खण्डन करके वैदिक मर्यादा की पुनर्स्थापना की।

विद्याभास्कर दयानन्द ने दूषित शिक्षा पद्धति को चुनौती देकर आर्ष शिक्षा पद्धति को उपस्थित किया और मानवमात्र के लिए शिक्षा अनिवार्य घोषित की तथा सहशिक्षा का विरोध करके बालक व बालिकाओ को पृथक पृथक् पठन-पाठन की व्यवस्था दी। वे वास्तविक रूप से साम्यवादी थे इस लिए चाहते थे कि पाठशालाओं में सबको तुल्य वस्त्र खान पान आसन आदि दिये जावें चाहे वह राजकुमार या राजकुमारी हो अथवा दरिद्र के सन्तान।

वैदिक सस्कृति के इस प्रहरी ने आत्मिक उन्नति हेतु यज्ञ पर्व सस्कार आदि का लाभ सामने रखते हुए यथार्थ सस्कृति उपस्थित की। जब ईश्वर एक है धर्म एक है तो सस्कृति अनेक कैसे? स्थान-स्थान की सभ्यताओं में अन्तर प्राप्त हो सकता है परन्तु आत्मिक उन्नति के साधनो में नहीं, आत्मिक उन्नति के साधन ही संस्कृति हैं। अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह आदि गुण क्या जगत के किसी व्यक्ति के आत्मिक उत्थान मे बाधक हैं? यदि नही है तो निस्सन्देह सस्कृति सारे जगत की एक है। ससार के प्रत्येक व्यक्ति के लिए वैदिक सस्कृति से लाभ प्राप्त कराने हेतु सस्कार विधि नामक महान ग्रन्थ की रचना की। वैदिक आश्रम व्यवस्था का प्रचार करके मानव जीवन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

आर्ष ग्रन्थों मे गाय को यज्ञो की सर्वश्रेष्ठ दक्षिणा तथा गो सेवा को यज्ञीय जीवन निर्माण का आधार क्यो माना है इसे भलीभांति जानने वाले आधुनिक युग के इस महर्षि ने सात्विक बुद्धि का निर्माण व आधिभौतिक उन्नति का दर्शन गोसरक्षण मे देखकर गोकरुणानिधि नामक अभूतपूर्व ग्रन्थ की रचना की। तथा सामाजिक उन्नति की दिशा में पग बढ़ाते हुए गोकृष्यादि रक्षिणी सभा का गठन किया।

दार्शनिक दयानन्द ने ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुकूल कपिल कणाद पतञ्जलि आदि आचार्यों के दार्शनिक सिद्धांतो का प्रचार करके सत्यविद्या दी। सांख्यकार आचार्य कपिल को नास्तिक कहा जाता था वेदान्त दर्शन के रचयिता व्यास को अद्वैतवादी प्रतिपादित किया जाता था परन्तु आचार्य दयानन्द ने अपने प्रबल दार्शनिक पाण्डित्य के द्वारा आचार्य कपिल को आस्तिक तथा व्यास को त्रैतवाद का विवेचक सिद्ध किया। सतान्वियो पश्चात छहो दर्शनो का यह कहकर समर्थन किया कि ये सब सृष्टि के पृथक पृथक अगो का अपने अपने विषयो के रूप मे वर्णन व विवेचन करते हैं इनमे परस्पर विरोध नाममात्र नही है।

मानवजाति के आरम्भकाल से राष्ट्र धर्म का वर्णन व विवेचन होता आया

(शेष पृष्ठ १० पर)

नारी चेतना और उनके कार्य

सन्यासिनी मीरा यति आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

महर्षि दयानन्द जी ने आकर नारियों को जागृत किया, उन्हें विद्या पढने का अधिकार दिलाया, उसी के पुण्य प्रताप से आज आर्य समाज की महिलायें कितना कार्य कर रही हैं। मैं अभी-अभी देहली से आ रही हूं, वहा पर राजेन्द्र नगर मे एक अन्ध विद्यालय है जिसका सारा प्रबन्ध महिलायें ही करती हैं। दूसरी आर्य समाज की संस्था कन्या गुरुकुल है, वह देहली की प्रान्तीय महिला सभा चला रही है। उसमे डेढ सौ के लगभग लड़कियां पढती हैं, उसका सारा खर्च दान से होता है। निर्धन परिवारों को पुत्रियां आचार्य की उपाधि प्राप्त करती है। वहां की आचार्या एक ८० वर्ष की वृद्धा माता शान्तिदेवी जी हैं, जो वर्षों से वहां सेवा कार्य में लगी हुई हैं।

उसके साथ ही महिला आश्रम है, जिसमे ४० कुटियां हैं, बहुत बड़ी यज्ञशाला है, जिसमें प्रातःकाल को यज्ञ, उपदेश, सत्संग होता है फिर दोपहर को हाल कमरे में मातायें सत्संग लगाती हैं और इसी प्रकार से रात्रि की सध्या भजन और साधना होती है।

वहां पर ऋषि दयानन्द जी की आज्ञानुसार कार्य होता है। अजमेर मे दीपावली के दिन १८८३ को जब महर्षि नश्वर चोला त्याग रहे थे तो उन्होंने यही सन्देश दिया था कि आर्यो सबके लिए दरवाजे खोल दो बस यही बात है वहां पर पौराणिक सिख मातायें रख ली जाती हैं जो कि निर्धन भी है और परिवार से दु:खी हैं। बेटे-बहू तंग करते हैं, पास पैसा नहीं। उनको सब तरह की वहां सुविधा दी जाती है। अन्न, वस्त्र, फल, दूध सब कुछ मिलता है। फिर बीमार होने पर अपना होमयोपैथिक अस्पतालसे दवाई दी जातीहै,वहां पर दो डाक्टर निःशुल्क सेवा करती है। उनके लिए एक नर्सिग होम बना रहे है। अब तक एक कमरे में पूरा प्रबन्ध है जो माताएं रोगी होती हैं दूसरी मातायें उनकी सेवा करती हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ माताओं की सरकार की ओर से पेंशन लगाई हुई है। वहां हर प्रकार से दुःखी माताओं को सुविधा दी जाती है। वहां पर भोजन भण्डार है जिसमे दो माताओ की ड्यूटी है। प्रातःकाल मदर डेयरी का दूध ५ बजे आ जाता है, उसको दो मातायें वितरित करती हैं। आश्रम के बीच मे ही जनरल स्टोर खोल दिया है जहा पर तीन मातायें सब वस्तुयें मूल्य देकर हिसाब रखती हैं। इसी तरह से चार पांच मातायें जो कि कार्यालय मे बैठकर सारा काम करती हैं। जितना भी निर्माण कार्य होता है उसका हिसाब तथा अन्य काम मन्त्राणी, उप-मन्त्राणी इत्यादि करती है। इस संस्था को चलाना कोई आसान काम नही है, फिर भी वृद्ध मातायें ही चलाती है। पहले माता पूर्ण देवो जी प्रधाना थी अब विगत कई वर्षों से पूज्या माता सुरेन्द्रा जी भगत सारा काम दिन रात करती हैं। उनकी आयु ७१ वर्ष की है। परन्तु अहर्निश सेवा मे लगी रहती हैं वह प्रत्येक दुःखी माता का ध्यान रखती हैं।

मुझे वहां पर प्रति वर्ष एक दो मास रहने का सौभाग्य प्राप्त होता है। प्रधाना जी मुझे इस कारण बुला लेती हैं कि प्रतिदिन मेरे उपदेश सुनना चाहती हैं। मैं जहां पर उपदेश देती हू वहां पर अपनी लिखी पुस्तकें भी उनको पढ़ने को देती हूं। इसके साथ-साथ मुझे देहली की आर्य समाजें उपदेश के लिए बुलाती हैं वहां पर भी चली आती हूं। परन्तु रहती आश्रम मे इस कारण हूं कि वहां पर खुली पवन, खुला स्थान, शान्त और प्यारा-प्यारा वातावरण है।

दूसरी संस्था गुरुकुल में दान देने और उपदेश देने के लिए कभी-कभी चली आती हूं। इसी प्रकार अन्ध विद्यालय मे भी जाना होता है। मैंने प्रिय पाठकों को जानकारी के लिए लिखा है ताकि सब लोगों को ज्ञात हो कि आर्य समाज की नारियां किस प्रकार से सबकी भलाई के कार्य कर रही हैं।

सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की सूची

क्र० सं०	नाम पता	प्राप्तांक	रोल नं०
३०	श्री मोहनलाल शर्मा 'आर्य पुष्प' (प्रथम) आशीष कुंज, धोबी मोहल्ला, खोलापानी, दरवाजा, छोटी सादड़ी चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) ३१२६०४	४८४	२५९
३१	डा० रामकृष्ण आर्य (तृतीय) ग्राम माधोरामपुर, पो० परसीपुर जिला वाराणसी (उ० प्र०) २२१४०२	४२८	२५८
३२	श्री यज्ञदत्त शर्मा मु० पो० फिरंज बाया सोहना जिला गुड़गाव (हरियाणा)	३४५	२७३
३३	कुमारी सीमा, सुपुत्री श्री नानकचन्द गली न०-४, मकान नं०५०, बटाला, जिला गुरदासपुर (पंजाब) पिन-१४३५०५	३२१	२७८
३४	कुमारी राजेश, सुपुत्री श्री जगन्नाथ जनता मेडिकल हाल, भवानी खेड़ा भिवानी (हरियाणा)-१२५०३२	४०३	२६०
३५	श्री नेमीचन्द गुप्त मु० पो० मिढोहारा जिला-आगरा (उ० प्र०)	३५३	२६८
३६	श्री रामअवतार सिंह सुपुत्र श्री फतेसिंह ग्राम पो० बिरानी, तहसील खेतड़ी, जिला झुंझनू (राजस्थान)	२७३	२६५
३७	श्री गौरी पासवान साहित्यालंकार द्वारा सन्त शरण आर्य बरेव (काली स्थान) पो० नेमदारगज, जिला नवादा (बिहार) पिन-८०५१२१	२६८	२६५
३८	ब्र० योगेन्द्रार्य दर्शन योग महाविद्यालय आर्य वन रोजड़ पो० सागपुर जिला साबरकाठा (गुज०) ३८३३०७	४१२	२६६
३९	मीना आर्या सुपुत्री योगेश प्रसाद आर्य रामपुरा वाले, बयाना मोड़ हिण्डोन सिटी (राजस्थान)	२१४	११३
४०	मञ्जू रानी आर्या, धर्मपत्नी श्री मोहनलाल द्वारा मोहन प्रदीप इन्टरप्राइजेज हिण्डोन सिटी (राजस्थान)	२८१	११६
४१	श्री विनोद प्रसाद यादव ग्राम-पो० बेलोरी वाया-गुलाब बाग जिला पूर्णिया (बिहार)	३५२	१२६
४२	श्री श्यामराज वरेल ग्राम बुकलाई (२ नं०) पो० बुकलाई दरंग, (आसाम) पिन ७८४५२७	३५५	१२७
४३	सुश्री मौसमी जायसवाल, द्वारा मदनलाल शास्त्री मु० पो० डीमकोंग जिला शिवसगढ़ (आसाम) पिन-७८९११२	२८६	१४५

(क्रमशः)

मूर्तिपूजा का कलंक

—डा० प्रज्ञा देवी

इस समय आर्य समाज सदर के प्रधान श्री आरेश जी मेरजा का लिखा हुआ एक पत्र मेरे समक्ष है जिसमे श्री पाण्डुरंग शास्त्री द्वारा गुजराती, मराठी व हिन्दी में लिखित कुछ ऐसी पुस्तको की चर्चा है जिनमें बड़े छलपूर्ण ढंग से आर्य समाजियों की निन्दा एवं वैदिक सिद्धांतो पर कुठाराघात करते हुए मूर्तिपूजा का समर्थन किया गया है। जिस मूर्ति पूजा को परमेश्वर-प्राप्ति की सीढ़ी नहीं, खाई बताते हुए अकाट्य तर्कों को प्रस्तुत कर महर्षि दयानन्द ने प्रबल खण्डन किया, उस सम्बन्ध में भ्रम फैलाते हुए एतादृश कपटी लोग क्या कहना चाहते हैं ? इससे सावधान रहना होगा। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध है इसको सिद्ध करने के लिए सदैव शास्त्रार्थ हेतु तत्पर रहते थे वेदानुयायी आर्य समाज भी समाज के साथ धोखाधड़ी करने वाले इन स्वार्थी लोगों से सदैव शास्त्रार्थ करने को तत्पर है। कहना न होगा कि निराकार ईश्वर की मूर्ति बनाकर चन्दनानुलेपन, पूजन, अर्चन भोग लगाना आदि अवैदिक कर्म जब तक समाज में चलते रहेंगे समाज को कभी पूर्णरूपेण बुराइयो से मुक्त नहीं किया जा सकेगा। कल्पित देवी देवताओं के नाम पर बलि चढ़ाई जायेगी, वाममार्गी प्रथा चलेगी तो मांसाहारादि समाज मे बढ़ेगा ही फिर इन कलंकों का मूल आधार अवैदिक मूर्तिपूजा ही तो हुई।

अब रही इन ढोंगियो की यह बात कि 'भगवद्गीता के ७-१२ आदि अध्यायो में श्रीकृष्ण जी महाराज ने अपने आपको 'माम्' 'मया' 'अहम्' आदि शब्दों से सम्बोधित करते हुए शिक्षा दी है अर्थात अपने आपको परमेश्वर बताया है इससे सिद्ध होता है कि वे परमेश्वर थे और उन्होंने अवतार लिया" तो इस सम्बन्ध में सर्वसाधारण को यह जान लेना चाहिये कि श्रीकृष्ण जी महाराज ने गीता में कहीं पर भी अपने आपको परमेश्वर नहीं कहा है, उन्होंने अपने आपको मार्ग दर्शक, वेदाज्ञाओं का अनुपालन करने वाला पुरुष ही माना है। वे गीता के तृतीय अध्याय मे कहते हैं—

> यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन ।
> स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।
> न मे पार्थास्ति कर्तव्य त्रिषु लोकेषु किञ्चन ।
> नानवाप्त मवाप्तव्य वर्त एव च कर्मणि ।।
> यदि ह्यह न वर्तेय जातु कर्मण्यतन्द्रित ।
> मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्या पार्थ सर्वश. ।।
> उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्या कर्म चेदहम् ।
> सकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमा प्रजा ।।
>
> (गीता ३। २१-२४)

अर्थात श्रीकृष्ण जी महाराज का कहना है कि जो-जो श्रेष्ठ लोग आचरण करते हैं उसी को प्रमाण मान लोग अनुसरण किया करते हैं अत मेरे कर्तव्य कर्म यद्यपि कोई शेष नहीं हैं तथापि मैं कर्मों को अप्रमादी होकर विधिवत करता हू यदि मैं ऐसा न करू तो लोग मेरा अनुसरण करके अपने कर्तव्य कर्मों को करने में आलसी हो जायेंगे तो मैं स्वय समाज में वर्ण सकर और आश्रम सकर आदि दोषों को उत्पन्न करने वाला बन जाऊंगा।' अब थोड़ा इन श्लोको पर ध्यान दें तो स्पष्ट पता चलेगा कि वे यहा अपने आपको लोक सग्राहक पुरुष के रूप में व्यक्त कर रहे हैं न कि सृष्टिकर्ता भगवान के रूप में किन्तु इतना विचार ये अन्ध भक्त करें कैसे ? विचार शक्ति तो इनकी पाण्डुरंग शास्त्री जैसे लोग खा गए, क्या करें ?

यहा यह सिद्ध है कि श्रीकृष्ण जी महाराज महापुरुष ही थे पर उन्होंने अपने आपको अहम् माम् आदि शब्दो से क्यों सम्बोधित किया तो इसके लिए हमें अपनी पुरातन शास्त्रीय शैली देखनी होगी क्योंकि श्रीकृष्ण जी महाराज कोई छली कपटी पुरुष नहीं थे जो अपने आपको महापुरुष भी कहें और ईश्वर भी कहें। अहम्, माम्, मत्परायण, मच्चित्त आदि जो शब्द गीता में आये हैं वे इससे अबाधित नहीं हैं। बादरायण मुनि के वेदान्त दर्शन के निम्न सूत्रो को देखने से पता चलता है कि कोई भी प्रतिनिधि मुख्य की भाषा का प्रयोग करते हुए अहम् माम् आदि शब्दों का कथन किया करते हैं। जैसा कि सूत्र में है—

(१) न वक्तुरात्मोपदेशादिति चेत् अध्यात्म--
सम्बन्ध भूमा ह्यस्मिन् (वे द १।१।२९)

(२) शास्त्रदृष्ट्या तूपदेशो वामदेववत् (१।१।३०)

अर्थात इन्द्र--प्रतर्दन सवाद मे इन्द्र ने अपहतपाप्मादि गुणो को धारण करके जो 'अह प्रज्ञात्मा आदि शब्दो का प्रयोग अपने लिए ब्रह्म परमेश्वर जैसा किया है उससे यह नही समझना चाहिए कि वे परमात्मा थे बल्कि जैसा कि वेदोपदेष्टा परमात्मा का प्रतिनिधि समझा जाता है उसी प्रकार इन्द्रादि देहधारी पुरुष परमात्मा के प्रतिनिधि स्वरूप थे। परमात्मा के प्रतिनिधि होने के कारण से इन लोगो ने अपने आपके लिए अहम् शब्द का प्रयोग किया है।

कोई भी व्यक्ति जब किसी का प्रतिनिधित्व करता है तो वह उस मुख्य व्यक्ति की भाषा अपने भावो को सशक्त बनाने के लिए ओढ लेता है यह हमारी एक शास्त्रीय शैली थी जो इन्द्र और प्रतर्दन के सवाद मे देखी जा सकती है। वेदान्त दर्शन के इन दोनो सूत्रो ने इस प्राचीन शैली का स्पष्टीकरण करते हुए सारे भ्रमो की निवृत्ति कर दी है पर "आख के अन्धे नाम नयनसुख' लोगो से क्या कहा जाये जो शास्त्र पढते नहीं और केवल भ्रम फैलाते हैं। 'मुख्यवत्त्व प्रतिनिधि' (काशिका २।३।११) ऐसा शास्त्रो मे कहा गया है अत जब कोई भी वेदवेत्ता विधूतकल्मष व्यक्ति ससार को ईश्वरीय ज्ञान वेद का उपदेश करते हैं तो उस मुख्य की ही भाषा मे 'अहम् शब्द का प्रयोग करते हैं। इसका तात्पर्य कदापि यह नही हो सकता कि वे ब्रह्म ही हो गए। यह शैली पुरातन है। सासारिक व्यवहारो मे आज भी यही देखा जाता है। किसी बिजनेस मैन का पुत्र जब किसी समस्या का हल करने के लिए अपने पिता का प्रतिनिधि बनकर देशान्तर को जाता है तो अपने आपको पूर्ण सशक्त दिखाते हुए उसी भाषा का प्रयोग करता है जो उसका पिता कर सकता है। इसका अभिप्राय यह नहीं कि वह पिता बन गया। पिता पिता है, पुत्र पुत्र है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

तुष्टिकरण के विरोधी मजार पर चादर चढ़ा रहे हैं

कांग्रेस, जनता दल आदि के नेता जब मजारो पर चादर चढाते थे, रोजा इफ्तारी की दावतें देते थे, ईद मिलनो का आयोजन करते थे, उर्दू को बढावा देते थे, तब भाजपा के नेता उनकी यह कहकर आलोचना किया करते थे कि ये तुष्टीकरण के कार्य हैं क्योंकि उनकी राय में धर्मनिरपेक्ष शासन-व्यवस्थामे सभी धर्मों का सम्मान करना तथा सभी धर्मावलम्बियो को अपनी आस्था के अनुसार पर्व, उत्सव मनाने की छूट देना न्यायोचित है किन्तु अन्य धर्मावलम्बियो की संस्कृति को अपनाना आवश्यक नहीं है। इस आधार पर वे आरोप लगाते थे, जो किसी हद तक ठीक था क्योंकि प्राय हिन्दू ही इस्लामी सस्कृति को अपनाते थे जबकि मुस्लिम लोग हिन्दू सस्कृति को नही अपनाते थे।

अब यह देखकर अजीब सा लगता है कि जो आरोप लगाते थे अब स्वय आरोप लगवा रहे हैं। १० जनवरी को नई दिल्ली में मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना उर्स मे सम्मिलित हुए। केवल सम्मिलित होते तो ठीक था कोई आरोप नहीं लगता। उन्होने वहा निजामुद्दीन औलिया की कबर पर चादर चढ़ाई, मुस्लिम सस्कृति ढंग से दुआ मागी तथा पगड़ी बधवाई। ठीक वही कार्य किये जो कांग्रेसी तथा जनता दल वाले करते रहे हैं। फिर उनमें तथा अन्यों मे अन्तर क्या रहा ?

वीर सावरकर का कथन सही सिद्ध हो रहा है कि ढीलापन भविष्य में बढता ही रहेगा।

—इन्द्रदेव शास्त्री, सिद्धान्त भूषण (बुलन्दशहर)
(हिन्दू सभा वार्ता से साभार)

देव दयानन्द

(पृष्ठ ७ का शेष)

है। राष्ट्रीयता के तीन प्रधान आधार है इडा, सरस्वती व मही अर्थात समान भाषा, समान संस्कृति तथा समान मातृभूमि। इसी आधार पर राष्ट्रनिर्माता दयानन्द ने संस्कृति की ज्येष्ठपुत्री हिन्दी के साथ-साथ देवनागरी लिपि को विश्वलिपि बनाने की दृष्टि से आर्य समाज के विधान में प्रत्येक आर्य को हिन्दी भाषा का ज्ञान अनिवार्य ठहराया। राष्ट्र का दूसरा प्रमुख आधार है समान संस्कृति। जब तक तथाकथित संस्कृतियों के स्थान पर संसार में प्रारम्भ से ही फैली हुई वैदिक संस्कृति को राष्ट्र ग्रहण नहीं करता तब तक राष्ट्रीयता कहां? ऐसा विचार करके आत्म विस्मृत भारत को राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से 'स्वराज्य' मन्त्र के सर्वप्रथम उद्घोषक इस ऋषि ने संस्कृति के प्रसार में अपना सर्वस्व लगा दिया। राष्ट्र का तीसरा प्रमुख आधार समान मातृभूमि है। जिस भूमि पर हम उत्पन्न हुए, यहां का अन्न व वायु हमारे शरीर का पोषक है उस मातृभूमि के प्रति समर्पित होना कर्तव्य है यह ज्ञान कराया।

आर्य समाज के प्रवर्तक यह आचार्य उच्च कोटि के ऋषि थे। अपनी ऋषित्व शक्ति से मन्त्रार्थ दर्शन करके 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' सिद्ध कर देना ऋषि आत्मा का ही कार्य है। एकेश्वरवाद के सिद्धांत का पोषक यह ऋषि सारे संसार का मूल अर्थात निमित्त कारण परमेश्वर को मानता है। प्रत्येक व्यक्ति को मोक्षानन्द की प्राप्ति के लिए ईश्वर की उपासना अनिवार्य सिद्ध करता है। सत्यासत्य के निर्णय की कसौटी इस महर्षि के ग्रन्थों में देखो। सत्य के ग्रहण व असत्य से दूर रहकर संसार का उपकार करना दयानन्द का मुख्य उद्देश्य था। इस महर्षि ने अन्त समय में अपने विष-दाता को भी क्षमादान करके संसार के इतिहास में अहिंसा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया व संसार से जाते-जाते भी गुरुदत्त जैसे दीपक को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित कर गए। यह देवता थे, ज्ञानी थे, मानवता के उद्धारक और सत्य के अनुपम प्रेमी थे, सचमुच दयानन्द दया और आनन्द के सागर थे। वे सत्य के लिए उभरे और यावज्जीवन सत्य के लिए संघर्ष करते हुए वैदिक दिशा देते रहे।

आदर्शनगर, नजीबाबाद जनपद-बिजनौर (उ० प्र०)

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

'नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये, एक बार २५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

संसार का प्रत्येक मानव

(पृष्ठ ४ का शेष)

अपना कर्तव्य निभाता है। अतः महर्षि कहते हैं कि जब ब्रह्मचारी लड़का व ब्रह्मचारिणी कन्या अपने आश्रम के दोनों मुख्य काम—शरीर की पुष्टि व विद्या की प्राप्ति कर लें, तो युवा-युवती का गुण-कर्म-स्वभाव मिलाकर पाणि-ग्रहण (विवाह) कर देना चाहिए। यह ईश्वर की सृष्टि चलाने के लिए भी आवश्यक है और सामाजिक व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए भी अनिवार्य है।

आजीवन बाल ब्रह्मचारी होते हुए दयानन्द ने 'गृहस्थ' की इतनी ज्यादा महिमा क्यों गाई, इस पर कईयों को अचम्भा अथवा आपत्ति होती है, पर वे तो सत्यधर्म के प्रचारक थे। पति-पत्नी के मेल को वे 'दो आत्माओं का मेल' समझते हैं, जो एक महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हुआ है। और, वह लक्ष्य है 'तन्तुं तन्वन् ..मनुर्भव ..जनय दैव्यं जनम्—संसार का ताना-बाना बुनता हुआ ऐ मनुष्य, तू 'श्रेष्ठ पुरुष' बनने का निरन्तर प्रयत्न करता रह और दिव्य सन्तान को उत्पन्न कर! इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए पत्नी-पति जीवन-रथ के दो पहिए हैं जिनमें पूरा ताल-मेल होना बहुत जरूरी है, वे एक दूसरे के सहयोगी भी हैं और पूरक भी, उनमें कोई 'दुर्भाव' तो होने की बिल्कुल गुंजायश नहीं।

विदेशी गुलामी व पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव तथा सिनेमा, रेडियो व टेलीविजन ने तो 'नकली' पति-पत्नी के दिलों को मिलाते हुए 'दिल के टुकड़े हजार' कर दिये, छोटी-छोटी मन-मुटाव की बातों पर 'दो आत्माओं के मेल' को तलाक (तोड़) दिया। पर उस दिव्य द्रष्टा ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कारविधि' के अनुसार, विवाह की वेदि पर बैठे वर-वधू से कहलवाया—'समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ' उपस्थित भद्र लोगों, हम अपनी प्रसन्नता पूर्वक गृहस्थाश्रम में एकत्र रहने के लिए, जल के समान शान्त रहने के लिए, एक दूसरे को स्वीकार करते हैं)। यही नहीं, वे 'ओ३म् मम व्रते हृदयं दधामि मम चित्तं तु चित्तं ते अस्तु' के अनुसार एक दूसरे को अपना 'हृदय' अन्तःकरण, चित्त' दे देते हैं और यह मानते हैं कि परमपिता परमात्मा ने ही हमारा यह 'संयोग' रचाया है।

अब जरा सोचिए कि टी०वी० सिनेमा आदि का बाजारी 'प्रेम' व्यक्ति को 'श्रेष्ठ पुरुष' बनाएगा या सत्यवक्ता दयानन्द द्वारा निर्देशित शुद्ध सात्विक 'प्रेम'।

इस प्रकार 'शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक तौर पर निर्मित 'श्रेष्ठ पुरुष (नेक इंसान)' अपना कल्याण भी कर पाएगा, देश-धर्म, जाति की सेवा भी कर पाएगा और 'संसार का उपकार' भी। वह खुद सुख-शान्ति से अपना जीवन बितायेगा और दूसरों की शान्ति भंग नहीं करेगा। तब न कोई आतंक-वादी बनेगा, न चोर-लुटेरा डाकू बदमाश। यह संसार सदाचारियों का संसार बन जाएगा और भ्रष्टाचार का सदा से खात्मा हो जाएगा। न हिन्दू-मुसल-मान का फसाद होगा, न मुस्लिम (ईरान) की मुस्लिम (इराक) से लम्बी लड़ाई। न कोई सास बहू से लड़ेगी, न बेटा बाप से। तब मानव-जाति सुख-चैन की नींद सो सकेगी और विश्व का मानव वैर-विरोध, लड़ाई-झगड़ा, कलह-क्लेश, लोभ-लालच की बात न करके श्रेष्ठता व प्यार की बात करेगा। ऐसा हो 'मानव', ऐसा ही 'श्रेष्ठ पुरुष', ऐसा ही 'नेक इंसान' बनाना चाहते हैं' महर्षि दयानन्द संसार के प्रत्येक व्यक्ति को।

पूर्व महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली-राज्य

राष्ट्र कल्याण चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

गांधी धाम समिति रजि० लाक्षागृह बरनावा जि० मेरठ का ३५ वां वार्षिक महोत्सव एवं उसके अन्तर्गत श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय का ओजस्वी वार्षिकोत्सव ११ से २० मार्च ९४ तक समारोह पूर्वक मनाया जावेगा। इसके साथ ही चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न होगा। इस यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी वेद रक्षानन्द जी गुरुकुल कालवां होंगे। इस अवसर पर सार्व० सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सहित आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा उपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा शारीरिक बौद्धिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न होंगे।

पुस्तक समीक्षा

चतुर्वेद शतकम्

लेo- स्व० स्वा० अच्युतानन्द सरस्वती

पृष्ठ संख्या--२६६, मूल्य--२५ रुपये

प्रकाशक--श्री राजपाल सिंह शास्त्री

मधुर प्रकाशन, आर्य समाज सीताराम बाजार, दिल्ली-६

वेद रूपी वाटिका में नाना प्रकार के पुष्प खिले हैं जिन्हें चुनकर एक माला को बनाने वाले हैं स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती। जिसका नाम दिया है--"चतुर्वेद शतकम्"।

चिरकाल से यह कमी अनुभव की जा रही थी कि समयाभाव से संक्षेप स्वाध्याय युक्त वेद मन्त्रों का मनन-चिन्तन हो, उस अभाव की पूर्ति स्वामी जी महाराज ने की थी। इस पुस्तक में जीवनोपयोगी तथा ईश्वर भक्ति से ओत-प्रोत मन्त्रों का चयन कर जब मानव चिन्तन करेगा तभी कर्तव्य परायण भी बनेगा। तदनुकूल आचरण पर भी ध्यान देगा।

नवीन शैली शब्दार्थ भावार्थ के साथ सरल भाषा में पुस्तक को पठनीय बनाया है मुख पृष्ठ आकर्षक, सुन्दर छपाई आदि से युक्त इस स्वाध्याय युक्त ग्रन्थ को अपने अपने घरों में रखें और प्रातः इन चुने हुए मन्त्रों का स्वाध्याय करें। जीवन उपयोगी बनेगा तो प्रकाशक का परिश्रम भी सफल होगा।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

मूर्तिपूजा का कलंक

(पृष्ठ १ का शेष)

इस प्रकार श्रीकृष्ण जी महाराज का अपने लिए 'अहम्' आदि प्रयोग अपने आपको ब्रह्म का प्रतिनिधि समझ कर है अपने को परमेश्वर मानकर नहीं यह स्पष्ट हुआ। श्रीकृष्ण जी महाराज परमेश्वर का अवतार नहीं थे क्योंकि सर्वव्यापक परमात्मा का गर्भ में आना एकदेशी बन जाना शास्त्र विरुद्ध एवं असम्भव है। जो पौराणिक भाई पुराणों की दुहाई देते हुए मूर्तिपूजा एवं अवतारवाद का पोषण किया करते हैं उन्हें पता होना चाहिए कि पुराणों ने भी मूर्तिपूजा की जड़ काटी है, पोषण नहीं किया है। भागवत पुराण दशम स्कन्ध अध्याय चौरासी श्लोक तेरह में कहा है—

यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके
स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः।
यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचित्
जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः॥

अब बताइये! मूर्ति पूजक को बोझ ढोने वाला गोखरः = गधा तक कहा बताया है फिर मूर्ति पूजा का पोषण कहा हुआ। मूर्ति पूजा का शास्त्रानुमोदन तो कहीं प्राप्त होता नहीं इसलिए इन आधारहीन बातों से जन समाज को सावधान अवश्य रहना चाहिए तथा महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश को पढ़-कर उनके ठोस मन्तव्यों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

आचार्या--पाणिनि कन्या महाविद्यालय--वाराणसी

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४९/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (९-३-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) ९३
R N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D P S.O.on 3-4-3-1994

भगवान भारत वर्ष को दयानन्द ऋषि फिर दीजिए

विश्व के लोगो यदि दयानन्द यति को जान लो।
वह कौन था क्या कर गया इस बात को पहचान लो ॥
कल्याण होगा शीघ्र ही इसमें तो कुछ संशय नहीं।
मुक्ति मिलेगी शीघ्र ही बन्धन का कोई भय नहीं ॥
आदि सृष्टि से चला आया जो वैदिक धर्म था।
नर भुजगो ने उसे डसना किया आरम्भ था ॥
शुद्धि सुदर्शन चक्र से फन काट कर ठंडा किया।
वेद मन्त्रो की ध्वनि और ओ३म् का झंडा दिया ॥
विधवायें रोती थी यहा बालायें मारी जा रहीं।
वृद्ध पुरुषो की यहा बारातें सजकर आ रहीं ॥
अधिकार विधवा को दिया जीवन सुखी उसका किया।
बालायें विदुषी हो रही पाण्डित्य फिर है ले लिया ॥
शूद्र कुल मे जन्म लेना ही बड़ा अभिशाप था।
ब्राह्मण जन्म का मूर्ख हो उसका बड़ा सम्मान था ॥
दयानन्द के सन्देश से अब शूद्र भी हैं पढ़ रहे।
वेद विद्या के धनी बनकर के ब्राह्मण बन रहे ॥
गऊओ के हा हा कार से मा भारती भी रो रही।
करुणा निधि की आज है सर्वत्र चर्चा हो रही ॥
जन्म से काग्रेस के दस वर्ष पहले कह दिया।
परदेशियो के राज्य मे सुख है नहीं वर दे दिया ॥
जीवन पढ़ो ऋषिराज का सत्यार्थ भी पढ़ते चलो।
आर्य जीवन को बना फिर वेद पथ बढ़ते चलो ॥
दयानन्द को यदि त्याग दें इतिहास ही ...।
कोई बतावे विश्व में ऐसा कोई इंसान है ॥
सत्य है वह बूझकर विष पान करता ही रहा।
सब यन्त्रणायें भी सहीं अमृत पिलाता ही रहा ॥
आज यदि यह विश्व सारा वेद पथ गामी बने।
भ्रान्तिया सब दूर भागें शान्ति का धन फिर मिले ॥
भगवान भारत वर्ष को दयानन्द ऋषि फिर दीजिए।
अन्धकार फिर से बढ रहा आलोक फिर भर दीजिए।

वेदोपदेशक—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, विद्यावाचस्पति
शास्त्री सदन पश्चिम आजाद नगर दिल्ली-५१

आचार्य कर्मवीर शास्त्री दिवंगत

अत्यन्त दु ख के साथ सुना जाएगा कि डी० ए० वी० उपदेशक विद्यालय के आचार्य डा० कर्मवीर शास्त्री का २६ फरवरी को गाजियाबाद जाते हुए एक ट्रक के साथ दुर्घटना मे उनकी मृत्यु हो गयी। २७ फरवरी को सैकड़ों व्यक्तियो की उपस्थिति मे पचकुइया रोड स्थित श्मशान घाट पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया। आर्य जनता ने उनकी इस दु खद मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया तथा दिवगत आत्मा की शान्ति तथा परिवार जनो को इस असह्य दुःख को सहन की शक्ति हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। सार्वदेशिक परिवार उनके देहावसान पर गहरा शोक प्रकट करता है।

—सम्पादक

मुस्लिम युवती तथा ईसाई युवक ने वैदिक धर्म स्वीकार किया

बसन्त विहार निवासी मुस्लिम युवती कु० शबाना हुसैन ने इस्लाम मत को छोड़कर वैदिक धर्म स्वीकार कर अपना नाम कु० सुमन रखा तथा ईसाई युवक आर्नल्ड ने ईसाई धर्म को छोडकर अपना महेश रखा।

दोनों का बाद मे वैदिक रीति से विवाह संस्कार किया गया। शुद्धि तथा विवाह संस्कार आर्य समाज बसन्त विहार के धर्माचार्य प० गणेश राम शर्मा ने किया। नव दम्पति ने शुद्धि सभा को दान दिया। यज्ञोपवीत धारण कर गायत्री मन्त्र का उच्चारण किया।

—प० गणेशराम शर्मा

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

महर्षि दयानन्द उवाच

● जो सब जगत् का कर्त्ता सर्वशक्तिमान्, सबका इष्ट सबके उपासना के योग्य, सबका धारण करने वाला, सबमें व्यापक और सबका कारण है जिसका आदि अन्त नहीं और जो सच्चिदानन्द स्वरूप है जिसका जन्म कभी नहीं होता और जो कभी अन्याय नहीं करता, इत्यादि विशेषणों से वेदादि शास्त्रों में जिसका प्रतिपादन किया है उसी को इष्टदेव मानना चाहिए और जो इससे भिन्न को इष्टदेव मानता है उसको अनार्य अथवा अनाड़ी कहना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र　दूरभाष । ३२७४७७१　वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ५]　दयानन्दाब्द १७०　सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९७　फाल्गुन शु० १ सं० २०५३　१३ मार्च १९९७

राष्ट्रपति भवन में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस समारोह सम्पन्न

महर्षि के प्रति राष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा के उद्गार

हमारे देश के अग्रणी चिन्तक और महान् समाज-सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म-दिन पर आयोजित इस समारोह में उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं।

दयानन्द सरस्वती जी ने जब सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया था, तब देश में विदेशी हुकूमत थी। अंग्रेजी सत्ता ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की आलोचना करके भारतीयों के मन में हीन भावना पैदा कर दी थी। वैसे भी चूंकि वे सत्ता में थे, और हम गुलाम थे, इसलिए हममें आत्मविश्वास की कमी आ गई थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती का सबसे बड़ा योगदान मैं यह मानता हूं कि उन्होंने उस समय भारतीयों के खोए हुए आत्मविश्वास को फिर से जागृत किया और उनकी सोई हुई शक्ति को झकझोरा। उन्होंने "वेदों की ओर लौट चलो" का नारा देकर यह बताया कि भारत की प्राचीन संस्कृति और चिन्तन विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति और चिंतन में से एक है।

मुझे यह बात भी महत्वपूर्ण लगती है कि उन्होंने अपनी बात उपदेश-पद्धति के द्वारा ही नहीं, बल्कि वाद-विवाद और तर्क वितर्क के द्वारा कही। इस बारे में उनकी शक्ति अद्भुत थी। उन्होंने लोगों को केवल आस्थावान नहीं बनाया, बल्कि अपनी बात सप्रमाण कहकर ज्ञानवान बनाया। लोग प्रश्न पूछते थे, और वे उनका सप्रमाण उत्तर देते थे। चूंकि उनके उत्तर तर्क पर आधारित होते थे, इसलिए लोगों पर उनका प्रभाव पड़ता था।

तर्क को वे ज्ञान का मुख्य आधार मानते थे। दिनांक २४ जुलाई, १८७७ को बम्बई में आर्य समाज के जो १० मूल सिद्धान्त बनाए गए थे, उनमें चौथा और पांचवा सिद्धान्त तर्क की प्रधानता वाले हैं। चौथे सिद्धान्त के अन्तर्गत कहा गया है—

"हमें हमेशा सत्य को स्वीकार करने तथा असत्य को अस्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

पांचवे नियम में कहा गया है—

"हमारे प्रत्येक कार्य सही एवं गलत का निर्णय करने के बाद धर्म के अनुकूल होने चाहिए।"

यहां तक कि उन्होंने ईश्वर पर भी विश्वास करने की बात नहीं कही, बल्कि ज्ञान के आधार पर उसे जानने की बात कही। आर्य समाज के पहले नियम मे उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा—

"ईश्वर उन सभी सच्चे ज्ञान और सभी वस्तुओं का आदि स्रोत है, जिन्हें ज्ञान द्वारा जाना जा सकता है।"

दयानन्द सरस्वती जी ने उस समय समाज की कुरीतियों, अन्धविश्वासों और जड़ताओं के विरोध का जो बीड़ा उठाया, उसका भी मूल आधार तर्क ही था। स्वाभाविक है कि इसलिए उन्होंने शिक्षा पर बहुत अधिक जोर दिया। वे शिक्षा को व्यक्ति और राष्ट्र की उन्नति का आधार मानते थे। 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास में हमें शिक्षा के बारे में उनके विचार जानने को मिलते हैं। उन्होंने तृतीय समुल्लास के आरम्भ में ही लिखा है—

"सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।"

उन्होंने यहां तक लिखा है—

"राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवे-आठवें वर्ष के आगे अपने लड़कों और लड़कियो को घर में न रखें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे, वह दण्डनीय हो।

दयानन्द सरस्वती ने जिस 'आर्य समाज' की स्थापना की थी, उसका हमारे देश में शिक्षा के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मुझे इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह लगती है कि दयानन्द सरस्वती ने लड़कियों के लिए शिक्षा की बात कहकर अपने समय के समाज में एक हलचल पैदा की थी। अभी मैंने जो उदाहरण दिया, उसमें उन्होंने लड़कियों के लिए भी शिक्षा की बात कही है। इतना ही नही, बल्कि उन्होंने नारी-विकास के लिये अन्य अनेक महत्वपूर्ण बातें कहीं। इनका उल्लेख 'सत्यार्थ प्रकाश' में मिलता है। उन्होंने वेदों का उदाहरण देते हुए कहा—

- लड़कियों को भी लड़कों के समान पढ़ाना चाहिए।
- प्रत्येक कन्या का अपने भाई के समान यज्ञोपवित संस्कार होना चाहिए।
- लड़कियों का विवाह न तो बाल्यावस्था में हो, न ही उसकी इच्छा के विपरीत हो।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों का अनुसरण करें

—डा० बलराम जाखड़

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस

महर्षि दयानन्द गोसंवर्धन दुग्ध केन्द्र गाजीपुर में समारोह पूर्वक सम्पन्न

नई दिल्ली, ७ मार्च। केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड़ ने आज कहा कि भारत मे स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र की रक्षा महर्षि दयानन्द के सिद्धांतो का अनुसरण करके ही हो सकती है, जिन्होंने देशवासियों में स्वदेशी और स्वराज की प्रेरणा जगाई थी।

डा० जाखड़ आज महर्षि दयानन्द सरस्वती की १७० वीं जयन्ती पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित समारोह में बोल रहे थे। इसकी अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की तथा दिल्ली के मुख्यमन्त्री मदन लाल खुराना इस अवसर पर उपस्थित थे।

गोपालन और गोसंरक्षण पर बल देते हुए डा० जाखड़ ने कहा कि मां और गोमाता में कोई अन्तर नहीं है। उन्होंने महर्षि दयानन्द गोसम्वर्धन दुग्ध केन्द्र के लिए कृषि मन्त्रालय की ओर से पांच लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की।

मुख्यमन्त्री मदनलाल खुराना ने भी इस दुग्ध केन्द्र को यथासम्भव सहायता देने तथा दिल्ली सरकार की ओर से दस गोसदन खोलने की घोषणा की। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि राष्ट्र के नवनिर्माण की प्राथमिकताओं में आर्य समाज गोसम्वर्द्धन के कार्य को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानता है।

डा० जाखड़ ने दुग्ध केन्द्र के नवनिर्मित कार्यालय का उद्घाटन किया, जिसका निर्माण श्री रूपचन्द नागर के सौजन्य से हुआ। डा० प्रेम चन्द श्रीधर और डा० गणेश दत्त शर्मा आदि ने समारोह को सम्बोधित किया, जिसका संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि सभी आर्यजन महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर चलते हुए गऊ रक्षा एवं सम्वर्द्धन के लिए आर्य समाज का पूर्ण सहयोग करें।

राजनैतिक दल वोटों की राजनीति कर समाज को कमजोर बना रहे हैं

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती—

छाता, २८ फरवरी। आर्यसमाज छाता के रजतजयन्ती समारोह के दूसरे दिन अपने मुख्य सम्बोधन में पूर्व संसद सदस्य एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा है कि विनाश के गर्त में जा रहे देश को आर्य समाज के अपनाने से ही रोका जा सकता है।

मुख्य अतिथि के रूप में उन्होंने कहा कि आर्य समाज भारत देश के नैतिक पतन को नष्ट करने के लिए कटिबद्ध है। आर्य समाज सभी को वेदों का ज्ञान ग्रहण करने और यज्ञ करने की अनुमति देता है।

उन्होंने शंकराचार्य द्वारा गत दिनों महिलाओं को वेद पढ़ने से रोकने पर की गई टिप्पणी पर कहा कि यदि ईश्वर की हवा सबके लिए है, पानी सबके लिए है, प्रकाश सबके लिए है तो वेदों का ज्ञान सबके लिये क्यों नही है। वेद ईश्वर की वाणी है और ईश्वर के वचनो को ग्रहण करने का सभी को अधिकार है।

उन्होंने महर्षि दयानन्द के सपनों के भारत की कल्पना करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने एक ऐसे भारत की कल्पना की थी, जिसमें सभी को ईश्वर का ज्ञान मिल सके, बुद्धि का विकास हो, गौ हत्या पर पूर्ण पाबन्दी हो, कोई भी मदिरापान न करे। चारों तरफ हिन्दी-हिन्दू हिन्दुस्तान की गूंज हो।

आर्यावर्त भारतीय मूल संस्कृति है। आर्य ही हमारे पूर्वज हैं। हमें अपनी संस्कृति की हर कीमत पर रक्षा करनी चाहिए। उन्होंने भारतवर्ष के सभी स्कूलों कालेजों में आर्य समाज की विधिवत शिक्षा प्रदान किये जाने की मांग की।

उन्होंने कहा कि आर्य समाज किसी से वोट नहीं मांगता है। आज कल राजनैतिक पार्टियां वोटों की राजनीति कर हम लोगों के बीच जात-पात, छुआछूत के नाम पर भेदभाव फैलाकर हमें कमजोर बना रही है। उन्होंने कहा कि वोटों की राजनीति सबसे बुरी और खतरनाक है। आजकल हर उम्मीदवार चुनावों में लाखों, करोड़ों रुपये तक खर्च करके एम० एल० ए० या एम० पी० की सीट पाना चाहता है। और इसको पा लेने के बाद मनमानी करते हुये खतरनाक मन्सूबो को हल करता है।

उन्होंने आगे कहा कि महर्षि दयानन्द ने ऐसे भारत की कल्पना की थी जिसमें देश का हर नागरिक युवा लड़की तक फौज का सैनिक हो और देश के संकट पर अपना सर्वस्व लुटा देने के लिए तत्पर हो।

उन्होंने कहा आर्य समाज आगामी दिनो में अंग्रेजी हटाओ, हिन्दी बचाओ, गो हत्या पर पूर्ण बन्दी और शराब पर बन्दी के लिये आन्दोलन चलाया जा रहा है, जिसमें दुकानों के अंग्रेजी में लिखे बोर्डों के दुकानदारों को भी नोटिस दिया जायेगा और उनको अपने बोर्ड हिन्दी में बनवाये जाने को कहेगा। इसके लिये चाहे आर्य समाज को जेल भरो आन्दोलन ही क्यों न चलाना पड़े।

उन्होंने अपने देश को बचाने के लिये उपस्थित लोगो से स्वदेशी वस्तु अपनाने, विदेशी भगाने और शराब पीने वाले लोगों से अपनी झोली फैला कर भविष्य में शराब न पीने का संकल्प करने के निश्चय करने की अपील की।

आनन्द बोध सरस्वती ने हालैंड डेनमार्क से देश के राजनैतिकों द्वारा ८ करोड़ टन गोबर का आयात करने के निर्णय को गलत ठहराते हुये कहा कि यदि अपने ही देश के पशुओ का वध रोक कर उनको पोषक चारा दिया जाये तो भारत में इस आयातित गोबर से अधिक उत्तम गोबर की किस्म मिल जाएगी। इसके बाद पंकज बाल विद्यालय एवं छाबेलाल आर्यन की नन्ही मुन्नी छात्राओ द्वारा सरस्वती के स्वागत में एक गान प्रस्तुत किया गया।

इससे पूर्व ब्रजवाहिनी आश्रम नगिवार की संचालिका सुश्री बहिन कलावती देवी ने भी आर्य समाज छाता के वार्षिकोत्सव पर अपने मूल्यवान विचार रखे। आर्य समाज की छाता इकाई के मन्त्री [illegible] आर्य द्वारा स्वामी जी का आभार व्यक्त किया गया।

अमर उजाला, आगरा १-३-९४ से साभार

मानवतावाद के पक्षधर महर्षि दयानन्द सरस्वती

भगवान देव "चैतन्य" एम०ए० साहित्यालंकार

किसी भी व्यक्ति के महान बनने के पीछे किसी न किसी घटना का विशेष महत्व है। बालक मूलशंकर जब अभी केवल बारह वर्ष का ही था तब शिव मन्दिर मे एक चूहे को शिव मूर्ति पर उछल कूद करते एव मिष्ठान खाते देखकर मन सशयग्रस्त हो गया। बालक सोचने लगा कि मैंने जिस शिव के बारे मे सुना था कि वह बड़ा ही प्रतापी और शक्तिशाली है, यह वह शिव कदापि नहीं हो सकता है। उन्होंने पिता जी को जगाकर समाधान चाहा मगर पिता जी मूलशकर की शका को निर्मूल नही कर सके। परिणाम स्वरूप बालक का मन विद्रोही हो उठा। मगर यह विद्रोह सृजनात्मक था क्योकि मूलशकर ने सच्चे शिव को प्राप्त करने का सकल्प मन ही मन ले लिया। उन्होंने ईश्वरता को नही बल्कि एक परम्परा एव रूढी को चुनौति दी थी। इस सकल्प का क्रियान्वयन करने की बालक सोच ही रहा था कि अचानक उनकी प्रिय बहिन और चाचा जी मृत्यु के ग्रास बन गए। बालक के मन मे मृत्यु के बारे मे भी तरह तरह के प्रश्न उठने लगे जिनका समाधान भी उसे नही मिल सका। अत उसी समय बालक मूलशकर ने मन ही मन मृत्युञ्जयी बनने का भी शकल्प ले ही लिया। इन्ही दो भावनाओ ने मूलशकर को मा बाप, घर-परिवार एव धन-दौलत तक का परित्याग करने के लिए प्रेरित किया। कई साधु महात्मा का सम्पर्क किया मगर उनमे से ढोंगी ही मिले। मगर कुछेक ऐसे महात्माओ से भी उनका सम्पर्क हुआ जिनसे उन्हे अपनी आध्यात्मिक पिपासा शान्त करने की प्रेरणा और शिक्षा भी मिली। देखा जाए तो मूलशकर का आगामी जीवन इन दोनो ही प्राप्तियो के प्रति समर्पित था और उन्होंने सच्चे शिव को प्राप्त भी किया तथा मृत्युजयी भी बने। यही मूलशकर कालान्तर मे महान समाज सुधारक और स्वतन्त्रता के प्रथम प्रणेता के रूप मे प्रसिद्ध हुए तप और त्याग की मूर्ति दयानन्द ने समाज सुधार को अपना मुख्य लक्ष्य बना लिया। महर्षि दयानन्द जी के जीवन मे पता नही कितने ही उतार-चढाव आए मगर वे लगातार मानवता की सेवा मे जुटे रहे।

उन्होने अपने गुरु विरजानन्द जी से आर्ष ग्रन्थो की जो शिक्षा प्राप्त की उसी के आधार पर उन्होने स्त्री और शूद्रो का उद्धार किया। उनकी दृष्टि मे कोई हिन्दू, ईसाई, मुसलमान या सिक्ख नही था और न ही जाति पाती की सीमाओ मे उनका दृष्टिकोण कैद था। उनकी दृष्टि इतनी विशाल थी कि उसमे प्राणीमात्र के लिए कल्याण की भावना सन्निहित थी। आज हम समाज और राष्ट्र मे देख रहे हैं कि मानवता को काट-काट कर अनेक प्रकार के दायरे बनाए जा रहे। अलग-अलग जातियो और मजहबो के मसीहाओ ने राष्ट्र मे अनेक समस्याओ का सृजन कर रखा है। बाहर-बाहर से एकता के नारे लगाने वाले ये लोग समय मिलते ही साम्प्रदायिकता का ऐसा जहर उगलते हैं जो केवल बस्तिया नही जलाता बल्कि मानवता का खून गलियो और मुहल्लो मे बहाया जाता है। जो भी महापुरुष हुए उनमे से भी अधिकतर ने अपने प्रचार प्रसार का क्षेत्र किसी विशेष मजहब या जाति और क्षेत्र विशेष तक ही रखा मगर एक महर्षि दयानन्द हमे एक ऐसे महामानव दिखाई देते हैं जिनकी विचारधारा मे ऐसी कोई भी सकुचितता नहीं। उन्होंने मानव को मानव ही माना और उसे मानवता की ही शिक्षा भी दी। मानव निर्माण ही महर्षि का मुख्य लक्ष्य था। उन्होंने वेद के बारे मे फैली हुई तमाम भ्रान्तियो का निराकरण करते हुए कहा कि वेद ही सभी मानवमात्र के लिए परमपिता परमेश्वर की शिक्षा है। यही हम सभी का धर्म ग्रन्थ है। इसी की छत्र-छाया मे आकर हम मानवता का ऐसा सन्देश प्राप्त कर सकते हैं जो हमे भाई-भाई की तरह आपस मे प्यार करना सिखा सकता है। इसलिए उन्होंने बस एक ही नारा दिया—वेदो की ओर लौटो। महर्षि ने यह बात उस समय कही जब पाश्चात्य विद्वान ही नही—कुछ नाम मात्र के भारतीय विद्वान भी वेदो के वास्तविक महत्व को भूल चुके थे। वेदो को तो मात्र गडरियों के गीत समझा जाता था। महर्षि ने जब वेदो का भाष्य करके लोगों के समक्ष रखा तो वही लोग जो वेदो के बारे मे तरह तरह की अटकलें लगाते थे—वेदों को ज्ञान विज्ञान का खजाना मानने लगे। वेदो को महर्षि ने सब सत्य विद्याओं का पुस्तक घोषित किया है। उनका कथन था कि मूलरूप मे वेदो मे सभी विषय विद्यमान हैं। उन्होंने स्पष्ट शब्दों मे कहा कि वेद किसी विशेष सम्प्रदाय या राष्ट्र के लिए नहीं बल्कि समूची मानवता के लिए हैं। वेदो के आधार पर ही उन्होंने एक वैदिक धर्म एक ईश्वर और एक ग्रन्थ का विचार लोगो के सामने रखा ताकि छिन्न-भिन्न होती हुई मानवता को एक सूत्र मे पिरोया जासके।

यह एक निर्विवाद सत्य है कि महर्षि ने जो भी कहा वेदो के आधार पर कहा और सार्वभौमिक रूप से कहा। उन्होंने कोई नया मत सम्प्रदाय चलाकर मानवता को और अधिक खण्डित नही किया। हा उन्होंने वेदो का प्रचार प्रसार करने के लिए आर्यसमाज नामक सस्था का गठन अवश्य किया मगर इस बात को आम जनता तक पहुचाने की आवश्यकता है कि आर्य समाज कोई नया मत या

(शेष पृष्ठ १० पर)

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री "सभा-मन्त्री" थाईलैण्ड की प्रचार यात्रा पर

माननीय डा० सच्चिदानन्द शास्त्री एम०ए०पी०एच० डी० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा (थाईलैण्ड) बेंकाक मे आर्य समाज के आमन्त्रण पर एक मास के लिये ८ मार्च १९९४ को एयर इण्डिया के विमान से भारत से प्रस्थान करेंगे। और लगभग एक मास बेंकाक मे रहकर वैदिक धर्म प्रचार मे सलग्न रहेगे।

श्री शास्त्री इससे पहले भी नीदर लैण्ड इगलैण्ड जर्मनी पूर्वी अफ्रीका, नैरोबी, मारीशस आदि देशों मे वैदिक मिशन पर जा चुके हैं।

आपकी यात्रा शुभ हो और सफलता पूर्वक कार्य सम्पन्न कर पुन भारत सकुशल वापस आयेंगे इस कामना से

—चौ० लक्ष्मीचन्द

अंग्रेजी का प्रयोग करने वाले फ्रांस में गिरफ्तार होंगे

फ्रांस सरकार का निर्णय

—श्री के० नरेन्द्र

हमारे देश मे अपने आपको बुद्धिमान कहने वाले ऐसे बहुत से लोग है जो यह सुनकर तड़प उठते है कि इस देश में अंग्रेजी को इतना महत्व दिया जा रहा है। इन्हें गांधी जी की याद दिलाई जाए जो यह कहा करते थे कि हमें अंग्रेजो से कोई दुश्मनी नहीं है, परन्तु वह भारत से अंग्रेजियत को निकालना चाहते हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात गांधी जी चन्द महीनों में ही हम से विदा हो गए, इसलिए वह अपनी बात का भारतीयों को अधिक ध्यान न दिला सके। यदि यह कहा जाए कि गांधी जी के कत्ल के पश्चात देश का दुर्भाग्य आरम्भ हो गया, यह अनुचित बात न होगी, क्योंकि गांधीजी जब अंग्रेजियत का नाम लेते थे तो उनकी नजर में अंग्रेजी जबान की आधीनता सबसे प्राथमिक मानते थे। इसलिए आप कौमी जबान पर बल देते थे परन्तु जिस प्रकार आज हमारी सरकार, हमारे नेता, अधिकारी और स्वयं अपने आपको बुद्धिमान समझने वाले अंग्रेजी पर जोर दे रहे हैं, उसे देखकर आश्चर्य और दुःख का भी अनुभव होता है। सत्य तो यह है जो अंग्रेजी का प्रयोग नहीं जानता उसके लिए केन्द्रीय शासन में और समाज में कोई स्थान नहीं है। जब इनके दृष्टिकोण पर आपत्ति उठाई जाती है तो वह लोग फौरन उत्तर देते हैं कि दुनिया भर के देश अंग्रेजी को अपना रहे हैं, मगर जिन देशों में आत्म सम्मान है वह अंग्रेजी के बाबत क्या सोचते हैं—इसका ताजा उदाहरण फ्रांस मे मिलता है, यहा फ्रांस, यूरोप का अति विशेष देश है जहां के लोगों को अपनी भाषा पर गर्व है, परन्तु वह लोग कुछ समय से महसूस कर रहे थे कि अंग्रेजी उनकी भाषा पर प्रभाव डाल रही है, इसलिए फ्रांसीसी सरकार ने कानून बना दिया है कि जो फ्रांसीसी नागरिक अपने विज्ञापनों में सरकारी सूचनाओं और घोषणाओं टेलीविजन अथवा आकाशवाणी पर अंग्रेजी का प्रयोग करेगा उसे पुलिस गिरफ्तार कर लेगी और उस पर जुर्माना होगा, और सरकार की तरफ से जो उसे आर्थिक सहायता दी जा रही है, उसे समाप्त कर दिया जायेगा। प्रसारण में अंग्रेजी के शब्द का प्रयोग करना जुर्म माना जाएगा। अगर अंग्रेजी शब्द के मुकाबले फ्रांसीसी शब्द है। इस समय कई फ्रांसीसी कार्यालयो मे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हो रहा है। अब किसी को इस बात की इजाजत न होगी कि फ्रांस में जितने सम्मेलन तथा वाद-विवाद गोष्ठियां होंगी तथा विज्ञान का आदान प्रदान होगा वह सब फ्रांसीसी जबान मे ही होगा, अंग्रेजी मे नहीं—जैसा आज तक होता आ रहा है, जो बिल फ्रांस की लोक सभा में प्रस्तुत किया गया है उसको सब राजनैतिक पार्टियों और बुद्धिमान लोगो का समर्थन प्राप्त है। हकीकत में १९७५ में फ्रांस में ऐसा कानून बना दिया गया था कि फ्रांसीसी भाषा का प्रयोग किया जाए परन्तु इस समय अमेरिका का इतना प्रभाव था कि किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया, मगर एक दो वर्षों में फ्रांस पर इतना अधिक अमेरिका के जरिए हमला हुआ है, जिसके कारण जनता में हाय तौबा मच गई। यह बिल प्रस्तुत करते हुए संस्कृति के वजीर ने कहा कि वह फ्रांसीसी भाषा को एक राष्ट्रीय संघर्ष का रूप देना चाहते हैं—कहा जाता है कि फ्रांसीसी राष्ट्रपति मित्रां और जनरल डिगाल के समर्थक मानते हैं कि भूतपूर्व फ्रांसीसी नौ आबादियों में फ्रांसीसी जबान के स्थान पर अंग्रेजी बढ़ती जा रही है।

इन्हें इस बात पर इतना ही अफसोस हुआ कि वियतनाम में विद्यार्थियों ने फ्रांसीसी भाषा की बजाए अंग्रेजी जबान में शिक्षा लेने पर विवश किया। इसी प्रकार खेलों के वजीर मेरी ने यह धमकी दी कि सरदियों मे ओलम्पिक खेलों की कार्यवाही केवल अंग्रेजी और नारवे की जबानों में चलेगी तो फ्रांस खेलों का बहिष्कार कर देगा। इससे अनुमान किया जा सकता है कि फ्रांस मे अंग्रेजी के विरोध मे कितना वातावरण बनता जा रहा है, परन्तु कोई यह न समझे कि भारतीय रहनुमाओं पर इसका कोई प्रभाव पड़ेगा।

प्रताप के सौजन्य से

इंगलिस्तान में अन्त्येष्टि

एक सरकारी सूचना में बताया गया है कि इंगलिस्तान में पिछले साल छः लाख व्यक्तियों की मृत्यु हुई और इनमें से चार लाख बीस हजार की हिन्दू तौर तरीके से अन्त्येष्टि करनी पड़ी और सिर्फ एक लाख ८ हजार को दफनाया गया। सूचना एकत्रित करने वालों का कहना है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता जाएगा अधिक से अधिक अंग्रेज हिन्दू रस्मों-रिवाजों को अपनाना आरम्भ कर देंगे। क्योंकि यह लोग धीरे-धीरे अपनी बौद्धिक पराधीनता से छुटकारा करके यह अनुभव कर रहे हैं कि जिन हिन्दुओं पर उन्होंने २५० साल शासन किया और जिन्हें अशिक्षित, गंवार इत्यादि समझते रहे हैं वह और उनके पूर्वज जिन्होंने हजारों वर्ष तप और त्याग के बाद समाज के लिए नियम-उपनियम और रीति रिवाज बनाये उन्हें आज तक जिस नजर से देखा गया है इस पर पुनः विचार किया जाए। ऐसे व्यक्ति धीरे-धीरे यह मानने लगे हैं कि मुर्दे को जला देने से उत्तम और किसी विधि से उसका कार्य पूर्ण नहीं किया जा सकता। कोई यह न समझे कि मुर्दे को जलाना मात्र ही किया है। सत्य तो यह है कि हमारे पूर्वजों ने ऐसा करने में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण भी प्रस्तुत किए हैं। बरतानिया में भी लोग इस दृष्टिकोण से प्रभावित होते जा रहे हैं परन्तु इसके अतिरिक्त उनके सामने एक समस्या और भी है वह है कब्रिस्तान बनाने के लिए जमीन की कमी, जब लाखों लोग हर वर्ष दम तोड़ देते हैं तो उनके लिए कितनी जमीन की आवश्यकता होगी। जो जहां कहीं रहता है उसके सम्बन्धी उसकी कबर अपने जितनी नजदीक हो सके बनाना चाहते हैं। वह हर वर्ष और अन्य समय में आवश्यकता पड़ने पर उनकी कब्र पर फूल चढ़ाते हैं और इस प्रकार अपना मानसिक सन्तोष प्राप्त करते हैं। इस बढ़ती हुई कमी का मुकाबला करने के लिए ८५ वर्ष से जो पुरानी कब्रें हैं उन्हें पुनः खोला जाए और साफ करने के बाद उनमें नये मुर्दे दफनाये जा सकते हैं। इन विशेषज्ञों का कहना है कि इतने वर्ष बीतने के पश्चात मुर्दों की हड्डियां ही रह जाएंगी उनका मांस के रहने का कोई प्रश्न ही नहीं। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार कब्रें यूरोपीय समाज में बनती रही और उन पर जो व्यय होता है वह आज के महंगाई के युग में अनेकों व्यक्तियों के लिए व्यय करना अति कठिन है। इन सारी बातों ने विशेषकर संसार के अंग्रेजों को भी हिन्दुओं की इस रस्म रिवाज का स्वागत करने पर विवश कर दिया है।

— श्री के० नरेन्द्र

बोधोत्सव आया है, जागोगे?

—डा० प्रेमचन्द श्रीधर

आर्य समाज अपने जीवन के ११९ वर्ष पूर्ण कर रहा है। अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण था। उसे आर्य समाज का स्वर्णकाल कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आर्य समाज और ऋषि दयानन्द से महात्मा गांधी जिन्हें राष्ट्रपिता कहकर स्मरण करते हैं इतने प्रभावित थे कि बाद में स्वतन्त्रता संग्राम के लिए जितने कार्यक्रम बने उन पर आर्य समाज की विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। वह आन्दोलन स्वराज्य स्वभाषा, स्ववेशभूषा, स्व-संस्कृति और स्वदेशी का, कुछ भी हो, इन सब मे जो 'स्व' शब्द जुड़ा वह आर्य समाज की ही देन थी और आज भी है। स्वतन्त्रता के उस आन्दोलन मे भाग लेने वाले बलिदानियों की पंक्तियों मे भी आर्य समाज के लोग सबसे अधिक थे, इस तथ्य को सब स्वीकार करते हैं। प्रो० राजा प्रताप राजा सम्नौरी' ने ऋषि के प्रति श्रद्धा भरे शब्दों में लिखा—

तूने मेरे स्वामी बड़ा उपकार किया है।
सोई हुई इस कौम को बेदार किया है।
जो तुझको चमत्कार मे विश्वास नहीं था।
लेकिन जो किया है वह चमत्कार किया है।

यद्यपि महर्षि के अनुयायी आज लाखो मे हैं केवल भारत में ही नहीं, संसार के अन्य देशो में भी महर्षि का सन्देश पहुंच चुका है। इतने पुरोहित प्रचारक और संन्यासी आर्यसमाज के कार्य में जुटे हुए हैं फिर भी सबके कार्य को जोड़ा जाए और पूरी ईमानदारी से उस कार्य की तुलना अकेले महर्षि के कार्य से करने का प्रयास किया जाए यद्यपि तुलना करना कोई तर्क संगत बात प्रतीत नहीं होती, तो भी अभी तक उनके द्वारा किये गए कार्य का हम सब मिलकर भी अंशमात्र कार्य नहीं कर पाये।

तब आर्य समाज की स्थापना को अभी ८ वर्ष ही व्यतीत हुए थे जब ऋषिवर की सांसारिक यात्रा ही समाप्त हो गई। परन्तु उसका प्रभाव कितना पड़ा, इस पर विचार करने लगें तो आश्चर्य मिश्रित आनन्द की अनुभूति होने लगती है। हम यहां महात्मा गांधी के ही शब्दों को ज्यों का त्यों उद्धृत कर रहे हैं—'महर्षि दयानन्द के विषय मे मेरा वक्तव्य यह है कि वह हिन्दोस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों, श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे उनका ब्रह्मचर्य विचार स्वतन्त्रता सर्वप्रति प्रेम, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत ही पड़ा है। मैं जैसे जैसे प्रगति करता हूं वैसे वैसे मुझे महर्षि जी का बताया मार्ग दिखाई देता है। ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के पश्चात जनता के साथ सीधा सम्पर्क रखने का मार्ग महर्षि दयानन्द ने खोज निकाला। इसका श्रेय महर्षि दयानन्द एवं उनकी आर्यसमाज को प्राप्त है। महर्षि दयानन्द तथा उनकी आर्य समाज ने अनेक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया है। राष्ट्रीय शिक्षण, स्त्री शिक्षण तथा दलितोद्धार आदि न भुलाई जा सके ऐसी राष्ट्र की महान सेवा की है। मुझे आर्य समाज बहुत प्रिय है महर्षि दयानन्द के इस पवित्र देशोपकारी कार्य का कभी भी अपमान होगा तो मै उसको महापाप समझूंगा।"

हम कब तक केवल अपने अतीत के गुणगान करके अपनी वर्तमान की कमजोरियों और भविष्य की अत्यन्त भयावह दिखने वाली स्थितियों से आंख मूंदे रहेंगे? यह आज बोधोत्सव पर हमारे चिन्तन मनन का विषय होना चाहिए। यह बात हम आत्म-ग्लानि की अनुभूति से नहीं लिख रहे, आप इसे अन्यथा न लें। हम केवल आत्मालोचन के पक्ष मे हैं। हमें कुछ क्षण चिन्ता के नहीं, अब आर्य समाज के लिए चिन्तन के लिए निकालने ही चाहिए। तभी हमारे जीवन में भी कर्तव्य बोध हो सकता है और जो हमें एक आर्य समाज के सदस्य के नाते हितचिन्तक के नाते अथवा ऋषि के अनुयायी और वेद-प्रेमी होने के नाते करना चाहिए उसका शायद बोध हो जाए और बोधोत्सव हमारे लिए आ बोध पर्व बन जाए। परन्तु अपने से परे सोचने की अब आदत ही नहीं रही तो चिन्तन कब करेंगे? ऐसे कई बोधोत्सव जीवन में आए, चले गए। हमने हर वर्ष की भान्ति कुछ भीड़ इकट्ठी की, कुछ सुनाया और वहीं फेंक कर चले आए। स्थिति जो ज्यों की त्यों रही। फिर जो अपेक्षित परिवर्तन में गुणोत्तर वृद्धि होनी चाहिए वह तो नहीं हो पा रही।

यही चिन्ता और चिन्तन का विषय है। आर्य समाज के तपस्वी, यशस्वी, निर्भीक और अगर मैं भूल नहीं कर रहा तो पूरे विश्वास से कहा जा सकता है कि सबसे बड़े विद्वान लेखक और वक्ता स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने इस वयोवृद्ध अवस्था में एक चेतावनी दी है। यह चेतावनी आर्यसमाज खण्डवा की शताब्दी स्मारिका में छपी थी, हम उसकी ओर आपका ध्यान दिलाना चाहेंगे। स्वामी जी ने लिखा है—

"आर्य समाज कल (बीते हुए) पर जितना गर्व करे, थोड़ा है। आज पर जितना लज्जित हो, थोड़ा है। कल (आने वाला) आर्य समाज अपने मूल या वास्तविक रूप में होगा ही नहीं, केवल नाम शेष रह जाएगा।'

क्या हम मान लें कि स्वामी जी की चेतावनी मे भविष्य स्पष्ट दिखाई दे रहा है। हृदय तो इस चेतावनी को पढ़कर न केवल स्वीकार कर रहा है अपितु कम्पायमान भी हो रहा है। इसी कारण हमने शीर्षक में लिखा है, जागोगे?

जैसे कोई गहरी नींद में सो रहा हो तो कन्धा हिलाकर ऐसा कहना ठीक भी लगता है परन्तु जागता हुआ केवल सोने का बहाना कर रहा हो उसे कैसे जगाया जा सकता है?

एक वो थे जिन्हें तस्वीर बनानी आती थी।
एक हम हैं लिया अपनी ही सूरत को बिगाड़॥

आर्य समाज की वर्तमान स्थिति को देखकर यही कहना पड़ता है। हमें ऐसे शब्दों का प्रयोग करके वेदना कितनी हो रही है, आपको उसका शायद विश्वास नहीं होगा।

आदिकाल से मनुष्य देख ही रहा है कि फल वृक्ष से नीचे गिरते हैं। परन्तु न्यूटन का देखना कुछ और था। वह घटना असाधारण हो गई गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का प्रतिपादन हुआ। आकाश मे पक्षियों को कौन प्रतिदिन उड़ते हुए नहीं देखता परन्तु राईट बन्धुओं ने उसी से उड़ने की कल्पना को वायुयान का रूप देकर संसार का सारा चित्र ही बदल दिया। जेम्ज वाट ने केवल पतीली के ढक्कन को भाप की शक्ति से ऊपर उठते हुए देखा था आज रेल गाड़ी कितनी गति से भाग रही है यह जेम्ज वाट के वैज्ञानिक बोध की घड़ी थी। सब देखते हैं रोगी को वृद्ध को और शव को परन्तु राज कुमार सिद्धार्थ का देखना, उसे गौतम बना गया और फिर महात्मा बुद्ध के रूप में पूजनीय।

और अब आप शान्त चित्त होकर विचार कीजिए प्रतिदिन लाखों नर-नारी क्या इस दृश्य को नहीं देखते कि जड़ मूर्ति पर मूषक उछल कूद भी करते हैं और लगाये हुए भोग का भक्षण भी परन्तु क्षण मात्र को चित्त मे बोध नहीं होता कि जड़मूर्ति ईश्वर नहीं हो सकती। विज्ञान के इस युग मे भी सुपठित लोग उसी मे ईश्वर आज भी मान रहे हैं। भोग अब भी लग ही रहा है। जबकि शिव और शव अर्थात शिव रात्रि का जागरण तथा बहिन और चाचा की मृत्यु ने मूलशंकर को सच्चे शिव के बोध के लिए प्रेरित कर दिया। मूलशंकर दया और आनन्द का सागर बनकर सबको अमृत देकर स्वयं शंकर की भांति सारे गरल को पीकर अमर हो गये। स्वयं गरल पीकर गर्त मे पड़े मां भारती के पुत्रों को गौरवान्वित होने का मार्ग दिखा गये।

एक हम हैं जो अपने को उनका शिष्य अनुयायी और आर्य समाज का सदस्य व हितचिन्तक मानते हैं, हमें तनिक भी बोध नहीं हो रहा कि हम कर क्या रहे हैं? और करना क्या चाहिए? जा कहां रहे हैं? जाना किधर चाहिए? हमारा लक्ष्य क्या था? उसे प्राप्त करने की बजाय अपनी ही स्वार्थ सिद्धि में आर्य समाज की सम्पूर्ण शक्ति और साधनों को स्वाहा कर रहे हैं। इससे अधिक लज्जित होने की कोई बात हो सकती है?

हमने आज से ११ वर्ष पूर्व एक लेख लगभग इसी शीर्षक से लिखा था, तब जितनी पीड़ा अनुभव होती थी आज उस पीड़ा में कमी नहीं आई, वृद्धि अवश्य हुई है। उस लेख का कुछ अंश यहां पुनः दे रहे हैं। हमने लिखा था--

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्द और सत्यार्थ प्रकाश [२]

यज्ञपाल आर्य बन्धु, मुरादाबाद

सत्यार्थ प्रकाश क्यों लिखा गया ?

गुरुवर विरजानन्दजी से दीक्षा लेने के पश्चात् जब महर्षि दयानन्द कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हुये तो अपने क्रान्तिकारी विचारों से जगती को हिला दिया। सर्वत्र एक हड़कम्प सा एक भूकम्प सा, एक अनोखी एवं अद्‌भुत हलचल सी, क्रान्ति सी चारों ओर मच गई। लोग आश्चर्य में थे कि यह कौन है जो हलचल मचा रहा है। सुश्री सावित्री देवी शर्मा के शब्दों में—

> हुआ चमत्कृत विश्व अरे यह कौन वीरवर सन्यासी,
> जिसकी भीषण हुंकारों से कांप उठी मथुरा काशी ?
> यह किसका गर्जन-तर्जन है, कौन उगलता प्याला है ?
> किसकी वाणी में से निकली आज धधकती ज्वाला है ?

महर्षि कभी यहां तो कभी वहां अपने क्रान्तिकारी विचार दे रहे थे। लोग उनके विचारों से प्रभावित हो रहे थे और वे उन विचारों को स्थायित्व देना चाहते थे ताकि महर्षि दयानन्द की अनुपस्थिति में उनके क्रान्तिकारी विचारों के बल पर कार्य को आगे बढ़ा सकें। अतः प्रबुद्ध लोगों ने महर्षि दयानन्द को अपने विचारों को लिपिबद्ध करने का सुझाव दिया। दूसरी ओर महर्षि दयानन्द भी अपने प्रचार कार्य को व्यवस्थित स्वरूप देने के लिए एक संगठन बनाने की सोच रहे थे। प्रत्येक समाज अथवा संगठन के लिये किसी न किसी आधार-भूत ग्रन्थ की आवश्यकता हुआ करती है, जिसमें उसके आदर्श, मन्तव्य, सिद्धान्त एवं उद्‌देश्यादि की समुचित व्याख्या की गई हो। सत्यार्थ प्रकाश की रचना के पीछे एक उद्‌देश्य यह भी है। पर इसका जो मुख्य उद्‌देश्य है वह ग्रन्थकार के अपने शब्दों में इस प्रकार है। "मेरा इस ग्रन्थ बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।" "साथ में यह भी कि 'सब मत-मतान्तरों की गुप्त व प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान् अविद्वान् सब साधारण मनुष्यों के सामने रखा है कि जिससे सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी होकर एक सत्य मतस्थ होवें।"

महर्षि की मान्यता है कि विद्वानों आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश या लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।" अतः स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द का इस पवित्र ग्रन्थ की रचना का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य का निर्णय करना मानवमात्र की उन्नति करना था न कि किसी का मन दुखाना। इसी पवित्र उद्‌देश्य से प्रेरित होकर ही उन्होंने अन्य मतमतान्तरों की निष्पक्ष समालोचना की है। अपनी अनुभूमिका में वे स्पष्ट लिखते हैं कि "मेरा तात्पर्य किसी की हानि वा विरोध करने में नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का है।"

फिर खण्डन क्यों किया ?

किसी भी धर्म संशोधक के लिए खण्डन-मण्डन का कार्य, चाहे वह कितना ही अप्रिय एवं अरुचिकर क्यों न हो, अवश्यमेव करणीय होता है। महर्षि ने अन्तिम चारों खण्डनात्मक समुल्लासों की पृथक्-पृथक् अनुभूमिका लिख कर उन-उन मतों की समीक्षा के विषय में अपने दृष्टिकोण तथा सौहार्द को सुस्पष्ट कर दिया है। वस्तुतः इन मतों की आलोचना में निहित महर्षि की सदाशयता और पक्षपात शून्यता उनके निम्न कथन से रस्फुटित होती है जब कि वे लिखते हैं कि—"मेरे इस कर्म से यदि उपकार न मानें, तो विरोध भी न करें, क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि या विरोध करने में नहीं, किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने-कराने का है।" दुःख है कि महर्षि की इस स्पष्टोक्ति के रहते हुए भी सत्यार्थ प्रकाश में की गई आलोचना के आशय को लोग क्यों नहीं समझ पाये ?

खण्डन या विचार स्वातन्त्र्य

महर्षि दयानन्द की जिस सदाशयता भरी भावना को लोग खण्डन मण्डन के नाम पर कलंकित करने का दुःसाहस करते हैं, उसी को कुछ निष्पक्ष उदारमना महानुभावों ने खूब सराहा भी है। इस सम्बन्ध में मौ० जहूर बख्श हिन्दी कोविद के विचार उल्लेखनीय हैं। वे लिखते हैं कि "कुछ लोग महर्षि के जिस गुण और उसके विकास को दोष समझते है, उसे ही मैं एक बड़ा आवश्यक गुण समझता हूं। बालक मूलशंकर की शिवरात्रि सम्बन्धी घटना से लेकर ऋषि दयानन्द पर पुराण, कुरान, बाइबिल आदि की स्वतन्त्र आलोचना तक लोग विचार स्वातन्त्र्य को अन्य धर्मों की ओर घृणात्मक दृष्टि का लांछन लगाते हैं, परन्तु उन्होंने कब और कहां अन्य धर्मों पर घृणात्मक दृष्टि की है, मुझे तो इसका पता नहीं चलता ? उन्होंने यह तो कहीं नहीं लिखा कि अमुक मत बुरा और घृणा के योग्य है ? इसलिए इस मत के अनुयायी उसे मानना छोड़ दें - उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में अन्य मतसम्बन्धी ग्रन्थों की जो आलोचना की है वह उनके विचार-स्वातंत्र्य का सुन्दर उदाहरण है। स्मरण रखना चाहिए कि विचार स्वातन्त्र्य कोई भयंकर वस्तु नहीं, इससे संसार में युगान्तर उपस्थित होता है। वही संसार को उत्थान के शिखर पर ले जाता है। विचार स्वातन्त्र्य से घबराना कोरी कायरता है।" (देखें सत्यार्थ प्रकाश का इतिहास, पृष्ठ ९९-६०) वस्तुतः महर्षि दयानन्द का खण्डन किसी मत विशेष के प्रति विरोध का सूचक न होकर अज्ञान अधर्म और असत्य की समाप्ति के लिए था।

सत्यार्थ प्रकाश की विशेषता

सत्यार्थ प्रकाश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह महर्षि दयानन्द के विचारों के अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व की भी प्रकाशिका है। Style is the man के अनुसार शैली लेखक के व्यक्तित्व की भी प्रकाशिका होती है। किसी लेखक की रचना या कृति को पढ़कर उसके व्यक्तित्व का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। वैसे शैली पर विषय और व्यक्ति दोनों का ही प्रभाव पड़ता है। इसीलिए शैली भी कभी विषय प्रधान और कभी व्यक्ति प्रधान हो उठती है। फिर भी शैली विषय से चाहे कितनी ही प्रभावित क्यों न हो, उस पर लेखक के व्यक्तित्व का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। अपितु यूं कहना चाहिये कि उसका व्यक्तित्व स्वयं को प्रकट करता हुआ, एक प्रकार से गरजता हुआ सा चलता है।

महर्षि दयानन्द वैचारिक क्रान्ति के अग्रदूत थे और सत्यार्थप्रकाश उनके विचारों का पुंज है। यह उनकी दार्शनिक अभिव्यक्ति तथा ज्ञानकोष है। इसी कारण यह ग्रन्थ भी वैचारिक क्रान्ति का अग्रदूत माना जाता है। वैचारिक क्रान्ति के इस ग्रन्थ की यह विशेषता है कि इसमें विश्व भर के सभी प्रमुख मतमतान्तरों के मान्य सिद्धान्तों को एक ही स्थान पर एकत्रित कर दिया गया है। अतः इसे विश्व-धर्म कोश कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कहते हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका में कभी एक ऐसे मन्दिर के निर्माण की योजना बनाई गई थी कि जिसमें विश्व भर के प्रायः सभी प्रमुख मतों एवं उनकी शिक्षाओं का एक ही स्थल पर संग्रह करने की योजना बनी थी। दुर्भाग्य से वह मन्दिर नहीं बन पाया किन्तु देव दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के रूप में वह मन्दिर खड़ा कर दिखाया जो कि अनुपम ज्ञान-मन्दिर बन गया।

(क्रमशः)

सत्यबोध का पर्व-शिवरात्रि

—डा० महेश विद्यालंकार

शिवरात्रि का आर्य समाज से गहरा सम्बन्ध है। इस पर्व का इतिहास स्वरूप व परम्परा पूर्व से ही प्रचलित रही है। किन्तु आर्य समाज के लिए इस दिन की महत्ता इसलिये महत्वपूर्ण है कि मूलशंकर को कण-कण मे व्याप्त शकर के वास्तविक सत्य स्वरूप को जानने और पाने की प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न हुई थी। शिवरात्रि की घटना ने मूलशंकर के जीवन की दिशा ही मोड़ दी। वे तप त्याग साधना बलिदान, परोपकार आदि की दृष्टि से इतने ऊचे उठे कि वे ससार के इतिहास मे हस्ताक्षर बन गए। महापुरुषो के जीवन घटनाए व्यवहार व बलिदान ससार को प्रेरणा, गति चेतना, जागरूकता आदि प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से ऋषि का व्यक्तित्व एव कृतित्व आनन्त प्रेरक रहा है। उनका जीवन खुली किताब रहा है। कहीं किसी प्रकार की न्यूनता, दुर्बलता और कमजोरी नही मिलेगी। ऐसी प्रेरक अनुपम विशेषता शायद ही ससार के किसी महापुरुष मे सम्भव हो। इसीलिए इतिहासविदो को कहना पड़ा—यदि गांधी जी राष्ट्रपिता हैं तो ऋषि दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। ऐसा दिव्य भव्य अमूल्य पारसमणि जिस व्यक्ति परिवार समाज एव राष्ट्र को मिला हो, फिर भी उसकी दीन हीन पाप अधर्म एव नास्तिक दशा हो इससे बढ़कर दुर्भाग्य और कुछ न होगा।

सदियो के बाद इस धरती का सौभाग्य जागा। जब इस धरा पर ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। वह पवित्रात्मा ससार को जगाने आई थी। भूले-बिछरे गौरवपूर्ण इतिहास के पन्नो को प्रकाशित करने का सकल्प लेकर चले थे ऋषिवर इसलिए शिवरात्रि उनके सत्य बोध का पर्व है इसी दिन उन्हें जड़ और चेतन, सत्य और असत्य का बोध हुआ था। उनका हृदय सत्यबोध के लिए लालायित हो उठा। सत्य ज्ञान की आंधी ने सब छुड़ा दिया। सत्य की खोज के लिए सत्य के पाने के लिए, और सत्य के प्रकाशित करने के लिये उस महामानव ने न जाने कितने जहर पिये कितना अपमान सहा, कितना शारीरिक कष्ट उठाया। कितने स्थानो की खाक छानी। तब कहीं जाकर उन्हें सत्य की उपलब्धि हुई। उसी सत्य को उन्होने जीवन भर प्रचारित व प्रसारित किया ऐसा उदाहरण इतिहास मे दुर्लभ है।

हाय! हम भारतीय उस योगी आध्यात्म पुरुष और महान क्रान्तिकारी का मूल्यांकन न कर सके? उनके योगदान तथा महत्व को समझ सकते, तो शायद यह हमारी दुर्दशा व दीन हीन स्थिति न होती। वह देव पुरुष जीवन सत्य के लिए लड़ाई लड़ता रहा। सत्य के लिए जहर पीता रहा। हर साल शिवरात्रि आती है। वैसे चली जाती है, अश्रुपूर्ण श्रद्धाजलि मे ही अपनी करुण कहानी छोड़ जाती है। कहीं भी आत्म चिन्तन आत्म सुधार, दुर्गुण और दुर्व्यसनो से छूटने की ललक, बेचैनी व पीड़ा नजर नही आती है। जीवन से सद्धर्म, सत्कर्म एव सद्भाव छूटते जा रहे हैं? पाप और पुण्य, सत्य और असत्य, धर्म और अधर्म विवेचना शक्ति का निरन्तर ह्रास हो रहा है। जीवन, शरीर और ससार का सत्य मृत्यु आत्मा एव परमात्मा आंखो से ओझल होने लगा है। चारो ओर अधर्म, पाप पाखण्ड, प्रदर्शन का बोलबाला हो रहा है? चमत्कार को नमस्कार के प्रवाह मे सब तेजी से बहे जा रहे। पहले सामाजिक पारिवारिक व नैतिक मूल्यो का भय और सीमाए होती थीं। उन्हें आज आधुनिकता की आंधी ने इतना दूर उड़ा दिया है कि कहीं नामो-निशान भी नजर नहीं आता है। अब पाप अधर्म असत्य व अनैतिक कर्म करते हुए किसी को लज्जा, और सकोच नही होता है? यह हमारे आत्मिक पतन की चरम सीमा हो रही है? अन्दर आत्मा की आवाज को सुनने के लिए कोई तैयार नहीं है। न किसी को अन्दर की आवाज सुनने की फुर्सत है। आर्य समाज का इतिहास साक्षी है कि इसके प्रवर्तक और अनुयायियो के जीवन व्यवहार तथा कार्य मे सत्य कूट-कूट कर भरा था। आर्य समाज के दस नियमों में पांच बार सत्य का प्रयोग किया गया है। इसी सत्याचरण सत्य भाषण तथा शुद्ध पवित्र जीवन के कारण जनता मे आर्य समाज और आर्य समाजी की विश्वसनीयता बनी थी। लोग सहज रूप से विश्वास व सम्मान करते थे। आज वे विश्वसनीयता टूट रही है। अब हमारे जीवन व्यवहार और आचरण में असत्य, और अधर्म अनैतिक चिन्तन, पाप कमाई बड़ी तेजी से फैलते जा रहे हैं। उदाहरण सामने है—आर्य समाज की सम्पत्ति को जायदादों दुकानों स्कूलों के माध्यम से मिल बांट कर खाया जा रहा है? जाने

जाने के झूठे बिल बन रहे हैं? जो जहां बैठ गया, हिलने का नाम नहीं लेता है। कब्जे की भावना आ गई। विद्वान जन किराया प्रथम श्रेणी का लेते हैं सफर द्वितीय श्रेणी मे कुछ लोग करते हैं। करनी कथनी का फासला बढ़ता जा रहा है। उससे हमारी साख गिरी है। पहचान खत्म हो रही है। विश्वसनीयता घट रही है। आर्यत्व छूट रहा है।

खान पान की दृष्टि से भी हमारे मे गिरावट आ रही है। अब आर्य समाज का सगठन दावे के साथ नहीं कह सकता है कि हमारे सगठन मे खाने पीने वाले नहीं हैं? खान पान की दृष्टि से भी हम सत्य से बहुत दूर होते जा रहे हैं। आर्य समाज मे बड़े लोग खूब शौक से खाते पीते हैं। उन्हें सबसे बड़ा सम्मान भी मिलता है। उन्हें आर्य समाज का उद्धारक, कर्णधार और दयानन्द के बाद सबसे बड़ा आर्य समाज का हित चिन्तक के विशेषणो से विभूषित भी किया जाता है। क्या ये हमारी गिरावट की पहचान नहीं है? एक आर्य समाजी दीवाने का यह भी सस्मरण है जब वह मृत्यु शैया पर था, डाक्टरो ने कहा आप के स्वास्थ्य के लिए दवाई के रूप में मास का सेवन करना होगा तो उन्होने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया था मरना स्वीकार है पर मास का सेवन नहीं करूगा। यह आत्मा के विरुद्ध है।

आर्य समाज ने अपने तप त्याग सेवा सच्चाई और बलिदानो से ससार मे अपनी अलग पहचान बनाई थी। वह पहचान अब हमारे और कर्णधारो के कर्मों से ढह रही है धूमिल हो रही है। यह चिन्तनीय और विचारणीय है। पर्व हमे जगाने, दिशाबोध कराने और समझने की प्रेरणा व चेतना देने के लिए आते हैं। यदि पर्वों से महापुरुषो के जीवनो से और धर्म ग्रन्थोसे कुछ नही सीखा तो ये हमारी नासमझी होगी। शिवरात्रि का पर्व हमे आत्म चिन्तन तथा सत्य पथ की ओर चलने की प्रेरणा देता है। ससार मे व्याप्त अज्ञान अन्धकार जड़ता पाखण्ड अंध विश्वास आदि हैं उनसे सत्यज्ञान के द्वारा मुकाबला करनेकी भावना जाग्रत करता है। सच्चे शिव के साथ नाता जोड़ने की प्रेरणा देता है। बिना प्रभु सम्बन्ध के जीवन नीरस, अतृप्त अशान्त व चिन्तित रहेगा। जब तक हम उस जगन्नियन्ता को कण-कण मे अनुभव नही करेंगे, तब तक हम पाप कर्म से छूट नहीं सकते है। यही शिवरात्रि के जागरण पूजा व प्रार्थना का प्रयोजन है।

आज आवश्यकता है आर्य समाज और आर्यसमाजियो को जीवन व्यवहार आचरण, सभा सगठनो, मन्दिरो सस्थाओ आदि मे सत्याचरण के द्वारा ऋषि प्रदत्त पहचान बनाए रखने की। तभी हम दूसरो को अपनी ओर आकर्षित कर सकेंगे। तभी हम आत्मा परमात्मा के नजदीक हो सकेंगे। तभी हम बाहर के दिखावटी बनावटी व प्रदर्शनपूर्ण जीवन व व्यवहार से मुक्त हो सकेंगे। तभी हम सच्चे अर्थ मे ऋषि के नाम के लेने के हकदार होंगे। यही शिवरात्रि प्रति वर्ष हमे सन्देश देती है। क्या हम इस सन्देश को सुनेंगे? पालन करेंगे? कुछ जीवन में परिवर्तन का सकल्प लेंगे?

महर्षि दयानन्द का दार्शनिक चिन्तन [२]

—डा० सावित्री देवी शर्मा, बरेली

आत्मा की अन्तिम अक्षय निधि उसकी अविचल आस्था है। यद्यपि ससार के सभी पारिवारिक, सामाजिक सम्बन्ध आस्था योग्य हैं। पारस्परिक प्रेम-सदव्यवहार आ द आस्था के बिना सम्भव नहीं किन्तु लौकिक सम्बन्ध तो अस्थिर है केवल परमपिता परमात्मा ही अमर साथी होने के कारण पूर्ण आस्था के योग्य है। आत्मा की यह अटल आस्था प्रभु चरणो मे ही अर्पित होनी चाहिए। जीवात्मा की इन शक्तियो का यथोचित प्रयोग ही (आत्मा का ज्ञान अपने लिए, सभी बल ससार के परोपकारार्थ तथा भावपूर्ण हार्दिक आस्था प्रियतम परमेश्वर के लिए समर्पित हो) त्रैतवाद की सच्ची उपयोगिता है। महर्षि दयानन्द का वेदसम्मत त्रैतवाद दार्शनिक जगत मे अकारण उलझे हुए विद्वानो के लिए कड़ी चुनौती है।

२--मुक्ति से पुनरावृत्ति :

प्राचीन आचार्यों ने सांख्य दर्शन के सूत्र "अथ त्रिविध दु खात्यन्त निवृत्ति रत्यन्त पुरुषार्थ" (सांख्यदर्शन १।१) के अनुसार यह अर्थ लगाया कि जीवात्मा अपने विशेष पुरुषार्थ से सांसारिक बन्धनों से पूर्णतया मुक्त हो जाता है। पुन वह अनन्त काल के लिए ब्रह्मलीन होकर उस मुक्ति लोक से कभी वापस नहीं आता है। इसी प्रकार न्याय दर्शन के सूत्र 'तदत्यन्त विमोक्षोऽपवर्ग' का अर्थ यही समझा कि जीव का सब बन्धनो से पूर्ण मोक्ष ही अपवर्ग है। मुक्तात्मा मोक्षावस्था से कभी नहीं लौटता। किन्तु ऋषिवर ने जीवात्मा के स्वल्प सामर्थ्य का फल मुक्ति से अपुनरावृत्ति को नहीं स्वीकार किया। सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास मे मुण्डकोपनिषत् (३।२।६) के श्लोक 'वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्था सन्यास योगाद्यतय शुद्धसत्वा। ते ब्रह्मलोकेषु परान्त काले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे' का सन्दर्भ प्रस्तुत करते हुए मोक्षकाल को परान्तकाल बताया है नारायणोपनिषत् मे भी पञ्चम्यन्त 'परामृतात्' शब्द का ही प्रयोग किया गया है जिससे ऋषियो की भावना महर्षि के विचारानुकूल मुक्ति से पुनरावृत्ति' ही प्रकट हो रही है। उपर्युक्त श्लोक का अर्थ महर्षि के शब्दो मे निम्नांकित है—

जो वेदान्त अर्थात् परमेश्वर प्रतिपादक वेदमन्त्रो के अर्थ ज्ञान और आचार मे अच्छे प्रकार स्थित सन्यास योग से शुद्धान्त करण वाले सन्यासी होते हैं वे परमेश्वर मे मुक्ति सुख को प्राप्त हो भोग के पश्चात जब मुक्ति मे सुख की अवधि पूरी हो जाती है तब वहा से छूटकर ससार मे आते हैं मुक्ति के बिना दु ख का नाश नहीं होता। सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास मे भी यही विचारधारा व्यक्त की गई है। 'वे मुक्त जीव मुक्ति मे प्राप्त होके आनन्द को तब तक भोग के पुन महाकल्प के पश्चात मुक्ति सुख को छोडकर ससार मे आते हैं। इसकी सख्या यह है—तेतालीस लाख बीस हजार वर्षों की एक चतुर्युगी दो सहस्र चतुर्युगियो का एक अहोरात्र, ऐसे तीस अहोरात्रो का एक मास, ऐसे द्वादश मासो का एक वर्ष तथा ऐसे शत वर्षों का एक परान्त काल होता है। यही परान्तकाल मुक्ति सुख के भोगार्थ निश्चित है। उसे भोगने के पश्चात ससार में पुनरावर्तन आवश्यक है।

आचार्य शंकर ने भी इसी विचार का समर्थन किया है। वाजसनेयी शाखा के शतपथ ब्राह्मण मे प्रयुक्त "तेषामिहन पुनरावृत्ति" का भाष्य इस प्रकार किया है "यदिहिमावर्तन्त एव इहग्रहणमनर्थकमेव स्यात्।" तस्मादस्मात् कल्पादर्ध्वं आवृत्तिर्गम्यते अर्थात वर्तमान कल्प के पश्चात मुक्ति सुख भोगकर मर्त्यलोक मे पुनरागमन स्पष्ट सिद्ध होता है। काण्व शाखीय बृहदारण्यकोपनिषत् के (६।२।१५) के प्रसग "ते तेषु ब्रह्मलोकेषु परा परावतो वसन्ति तेषा न पुनरावृत्ति' का शांकर भाष्य भी स्पष्टत मुक्ति से पुनरावृत्ति का पोषक है। यथा परा परावत प्रकृष्टा समा. सम्वत्सरानेकान् वसन्ति ब्रह्मणो ऽनेकान् कल्पान् वसन्तीत्यर्थं। तेषा ब्रह्मलोक गतानां नास्ति पुनरावृत्ति.। अस्मिन् ससारे न पुनरागमनम् अर्थात् प्रवर्तमाने ससारे 'इह' इति शाखान्तर पाठात् तात्पर्य स्पष्ट है। योगिजन मुक्त होकर अनेक सम्वत्सर पर्यन्त वहां निवास करते हैं। उनका आगमन इस चालू सम्वत्सर में नहीं होता। पश्चात नवसृष्ट्यारम्भ में पुन वे मुक्तात्मा जन्म लेते हैं।

न्याय सांख्यादि दर्शनों में प्रयुक्त अत्यन्त शब्द का अर्थ वस्तुत. ऋषि ने 'अत्यधिक' ही उचित समझा है 'अनन्तकाल' नही। सक्षेपत उपरिलिखित विद्वानो के तर्कसंगत विचारो से सिद्ध होता है कि मुक्ति से पुनरावृत्ति ही प्राचीन वैदिक मान्यताओ के अनुकूल है। मुक्ति भोग काल सीमित है अनन्त नहीं।

३—षड्दर्शन समन्वय :

षड्दर्शनो के विषय मे चिरकाल से यह विचारधारा मूल सा हो गया है कि इन दर्शनो मे परस्पर विरोधी धारणाए व्यक्त की गई है। इस भ्रान्त साम्प्रदायिक विचारधारा के कारण लब्ध प्रतिष्ठ विद्वानो मे मतभेद प्रबल हो गया। दार्शनिक सनातन तथ्य तिरोहित होने लगा। क्रान्तिकारी देव दयानन्द की दृष्टि इस ओर भी गई। उन्होने साधिकार उद्घोष किया। 'मूल शास्त्रकारो के हृदय निर्विरोध थे। कुछ लोगो ने रागद्वेष पूर्ण प्रवृत्ति के कारण अपनी सुविधानुसार दर्शनशास्त्र का दुरुपयोग किया। अपनी अन्तर्दृष्टि से इस विशृंखलता का कारण समझ कर ऋषि ने षड्दर्शन समन्वय का मार्ग प्रशस्त किया। सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास मे उनका लेख इस विषय में इस प्रकार दिया है "छह शास्त्रो मे अविरोध देखो इस प्रकार है (१) मीमांसा में ऐसा कोई भी कार्य जगत में नहीं जिसके बनाने मे कर्म चेष्टा न की जाए। (२) वैशेषिक मे--समय लगे बिना कार्य नही होता। (३) न्याय में--उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बनता। (४) योग मे--विद्या, ज्ञान विचार के बिना कार्य नहीं बनता। (५) सांख्य मे--तत्वो के मेल न होने से कुछ नहीं बनता। (६) वेदान्त मे--बनाने वाला न बनावे तो कोई भी पदार्थ उत्पन्न नही हो सकता इसलिए सृष्टि ६ कारणो से बनती है। इन छह कारणों की व्याख्या ही क्रमश. एक एक शास्त्र मे वर्णित है। सृष्टि रूप छह कार्यों की व्याख्या शास्त्रकारो ने अपने २ शास्त्रो में मिलकर पूरी की है' उन साक्षात् कृत धर्मा ऋषियो का तात्पर्य जगत के विभिन्न रहस्यो का उद्घाटन करना था। अपने मौलिक ज्ञान विज्ञान एव रुचि के अनुसार उन्होंने अपने ग्रन्थो में सृष्टि सम्बद्ध कार्यों का साङ्गोपाङ्ग वर्णन किया है। ऐसे तपपूत ऋषियो के हृदय मे पारस्परिक विरोधी भावना को देखना उनके पवित्र लक्ष्य का उपहास करना है।

दार्शनिक जगत के साम्प्रदायिक असन्तुलन को मिटाकर उनमे अन्तर्निहित एकरूपता का प्रतिपादन करना ही ऋषिवर की अनन्य देन है। षड्दर्शनो मे सामञ्जस्य पूर्ण समन्वय का प्रकाशन प्राचीन एव अर्वाचीन पडितों के समक्ष उस आर्ष प्रतिभा का प्रत्यक्ष चमत्कार है।

सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता मे उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की सूची

क्र० सं०	नाम पता	प्राप्तांक	रोल न०
४४	डा० सत्यदेव निगमालकार द्वारा डा० रामनाथ वेदालकार गीता आश्रम वेद मन्दिर अशोका सिनेमा के सामने ज्वालापुर, हरिद्वार (उ० प्र०)	३५०	३५३
४५	श्री प० वसन्त कुमार शास्त्री अध्यापक आवास स्टेशन रोड, अमेठी, जिला सुलतानपुर (उ० प्र०)	४२७	३६७
४६	श्री लगड़े मनोहर मारुतीराव ग्राम पो० मोगरगा ता० औसा जिला लातुर (महा०) पिन-४१३५११	१२७	३६८
४७	कु० स्वाती नामदेवराव जोशी गजानन टाइपराईटिंग इन्स्टीट्यूट, पोस्ट आफिस के सामने, पो० देगलूर, जिला नांदेड (महाराष्ट्र) पिन-४३१७१७	२५७	३७१
४८	श्री श्याम मोहन आर्य आजाद रोड, भरथना जिला इटावा (उ० प्र०)	१०६	३७५
४९	श्री रुद्रदत्त शर्मा, सुपुत्र श्री मूलशकर शर्मा ग्राम पो० मदपुरी, वाया बल्लभगढ़ जिला फरीदाबाद (हरियाणा) पिन-१२१००४	४०१	३९२
५०	श्री विजयपाल आर्य आर्य समाज मन्दिर, प्लाट न० ६, सेक्टर १ए, वाशी नई बम्बई-४००७०३	३०२	३९३
५१	कु० स्मृति सत्यव्रत भोपले मु० पो० हिवर खेड (रुपराव) जिला अकोला (महाराष्ट्र) पिन-४४४१०३	३३८	४०८
५२	श्री सजय कुमार शास्त्री 'आर्य निवास' ग्राम दाहोली पो० चिड़िया, जिला भिवानी (हरियाणा) पिन-१२३०२२	११४	४१६
५३	सौ वेदमती आर्या द्वारा श्री पडित राव लाडके नागेश्वर मन्दिर के पास मु० पो० ता० देगलूर जिला नांदेड (महाराष्ट्र)	२७०	४२५
५४	श्री जितेन्द्र कुमार कटियार मु० पो०-ब्रतरोज खास जिला अल्मोड़ा (उ० प्र०)	१४१	४२६
५५	श्री राजीव कुमार "राज" द्वारा सदीप प्रेस साहित्य सदन सेवा घाट सैकण्डी रोड पटना (बिहार),	१६६	४३२
५६	श्री विजय कुमार आर्य ओ३म् वेडीकल हाल उत्तर बारी पोखरा बेतिया, प० चम्पारण बिहार)	२५०	४४४
५७	श्री अरविन्द कुमार आर्य द्वारा विजय कुमार आर्य मेन रोड नवड़ा, ग्राम पो० नवड़ा वाया टेल्को, जिला जमशेदपुर (बिहार)	२६५	४५०

(क्रमश)

नया प्रभात लाया बोध शिवरात्रि का पर्व

सुविख्यात शिवरात का पर्व आया।
मूलशकर को पितुवर ने समझाया।।
जो जन श्रद्धा से पूजन करेगा।
वही भक्त जीवन मे खुशिया भरेगा।।

रात भर जागरण कर व्रत जो निभाये।
वही भगत भोला के दर्शन पाये।।
समझ ले भली भाति समझा रहा हू ।
व्रत निष्फल न करना ये बतला रहा हू।।

शिवालय मे बैठ नाम शकर का जपना।
अटल व्रत रखना न पीछे को हटना।।
कहा मूल ने जो कहा वह करू गा।
करू जागरण ध्यान शिव का धरू गा।।

जब तलक शिव पिण्डी से बाहर आय।
नजर मूलशकर जरा न हटाये।।
रेशम की धोती पहन करके काला।
गले मे पहिन कर रुद्राक्षी माला।

थाली मे मेवा व मिष्ठान लेकर।
जलाया था दीपक तुरन्त धूप देकर।
बजे ढोल डप झाझ करताल थाली।
हुआ कीर्तन वह छटा थी निराली।।

सभी भक्त जन जो थे शिव के पुजारी।
सभी सो गये नींद आई थी भारी।।
मगर मूलशकर ने व्रत को निभाया।
किया जागरण नाम शकर का गाया।।

जल रहा दीप शकर की पिण्डी के आगे।
चूहे चढावा आकर खाने लागे।।
यह देख शकर ने शकर पुकारा।
हटाओ इन्हे भोग चट करे सारा।।

न पिण्डी फटी न शकर ही आया।
चूहो ने सारा ही चढावा उड़ाया।
न चूहो को आकर शिव ने हटाया।
किया मल चढावा निडर होके खाया।।

खुले ज्ञान चक्षु वृथा जड की पूजा।
ये झूठा है शकर प्रभु कोई दूजा।।
करू खोज शकर की मन मे समाई।
यही रात थी नया प्रभात लाई।।

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

मानवतावाद के पक्षधर

(पृष्ठ ३ का शेष)

सम्प्रदाय नही है और न ही वेदों से अलग किसी अन्य धर्म को मानने वाला है। आर्यसमाज ने अपने विगत इतिहास में समाज राष्ट्र व विश्व को क्या कुछ दिया है इसका आकलन इस लघु लेख में करना सम्भव नहीं है। स्वराज्य का नारा महर्षि जी ने ही सर्वप्रथम दिया आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर मिटने वाले लाला लाजपत राय, डा० हरदयाल, स्वामी श्रद्धानन्द, सरदार अजीतसिंह, भगतसिंह रामप्रसाद बिस्मिल, श्याम जी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद जैसे अनेकों क्रान्तिकारी दिए। महर्षि के ग्रन्थों के स्वाध्याय से पता लगता है कि समाज व राष्ट्र को सभी समस्याओं का समाधान उन्होंने कितनी विलक्षणता के साथ प्रस्तुत किया है। वे विश्व प्रेम के पक्षधर थे, राष्ट्र भाषा हिन्दी के वे प्रबल समर्थक थे। मजहब वाद, जात-पात, सती प्रथा, बाल विवाह, मांसाहार, दहेज तथा शराब आदि मादक वस्तुओं के वे घोर विरोधी थे। आज के सन्दर्भ मे उनकी शिक्षाएं कदम कदम पर हमारा मार्गदर्शन कर सकती हैं। जिन बातों और समस्याओं को हम आज विकट से विकटतर होती हुई देख रहे हैं उन्होंने उनका समाधान हमें समय रहते ही बता दिया था। युवक और युवती के विवाह की आयु उन्होंने पहले ही बता रखी है। पर्यावरण की शुद्धि का मन्त्र भी उन्होंने दे रखा है। यही नहीं आज सभी स्थानों पर साक्षरता अभियान जोरो से चलाया जा रहा है। महर्षि जी ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे पहले ही लिखा हुआ है कि लड़के और लड़कियो को एक निश्चित आयु तक 'गुरुकुलों में अनिवार्य रूप से भेजा जाना चाहिए तथा जो मां बाप ऐसा नहीं करते हैं उन्हें सरकार की ओर से दण्ड दिया जाना चाहिए। आज नहीं तो कल हमें उनकी बताई हुई शिक्षाओं की शरण मे जाना पड़ेगा।

क्योंकि वे सही अर्थों में मानवता वादी थे इसलिए उन्होंने किसी विशेष मजहब राष्ट्र या जाति आदि का पृष्ठपोषण नही किया बल्कि सबके लिए एकसा उपदेश दिया। उनकी इस स्पष्टवादिता से शिक्षा लेना तो दूर रहा बल्कि लगभग सभी सम्प्रदाय और मजहब रूपी दुकानदारो ने विरोध का स्वर मुखरित कर दिया। मगर वे किसी लोभ या लालच में तो थे नहीं अतः वे अपनी सत्यवादिता से जरा सा भी इधर-उधर नही हुए। हां उन्होंने उन भोले लोगों के लिए अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में अवश्य लिखा कि वे तो समूची मानवता के हितैषी है। किसी व्यक्ति विशेष से उनका कोई बैर विरोध नही। वे सही अर्थों में समन्वयवादी थे क्योंकि उनका समन्वयवाद देश धर्म और मजहब आदि से परे था। उन्होंने समन्वयवाद का वेदों के रूप मे प्रत्यक्ष प्रमाण भी दिया मगर लोगो ने उन्हें समझने में बड़ी भारी भूल की। इसी का कुपरिणाम है कि आज दिन प्रतिदिन और भी अधिक नए-नए सम्प्रदाय बनते जा रहे हैं मानवता खण्ड खण्ड हो रही है। यदि हम समूचे विश्व मे भाईचारे का वातावरण बनाना चाहते हैं तो हमे निश्चित रूप से उनके द्वारा प्रशस्त वैदिक धर्म की शरण में आना पड़ेगा। आज नही तो कल।

दलित ईसाइयों को भी आरक्षण मिले-काशीराम

नई दिल्ली, १ मार्च। बहुजन समाज पार्टी के नेता काशीराम ने कहा है कि दलित ईसाइयों को भी सरकारी नोकरी और शिक्षा के क्षेत्र में आरक्षण मिलना चाहिए। पिछड़ापन किसी धर्म सम्प्रदाय तक ही सीमित नहीं है। सभी समाजों में दलित वर्ग के लोग हैं। उन्हें भी न्याय मिलना चाहिए। वे आल इण्डिया क्रिश्चियन पीपुल्स फोरम की रैली मे बोल रहे थे। रामलीला मैदान मे हुई रैली मे हजारो लोगो ने भाग लिया। जगह जगह से आये दलित ईसाई जतर मन्तर के पास इकटठे हुए और जुलूस के रूप में छह किलोमीटर रास्ता तय करते हुए रामलीला मैदान पहुचे।

ससद सदस्य और जनता दल नेता रामविलास पासवान ने भी रैली को सम्बोधित किया। रैली मे दलित मसीहियों के लिए आरक्षण की माग के अलावा अनुसूचित पृष्ठ भूमि वाले मसीहियों की जातिय पहचान कायम रखने के लिये सविधान में सशोधन करने की माग भी की गई। तय किया गया है कि इस बाबत राष्ट्रपति को ज्ञापन भी दिया जाए।

—जनसत्ता १ ३ ९४ से साभार

बाजपेयी का मन्त्रोचारण के लिए महिला को बुलाने का सुझाव

नई दिल्ली १ मार्च। लोक सभा में विपक्ष के नेता अटल बिहारी बाजपेयी ने आज सुझाव दिया कि सरकार सस्कृत को बढ़ावा देने के लिए अखिल भारतीय बैठक बुलाए। इस बैठक में मन्त्रो के उच्चारण के लिए किसी महिला को आमन्त्रित किया जाए।

श्री बाजपेयी ने आज प्रश्नकाल के दौरान पुरी के शकराचार्य प्रकरण का उल्लेख करते हुए उक्त सुझाव दिया। इस पर शिक्षा उपमन्त्री कुमार सैलजा ने कहा कि सरकार सुझाव की जाच करेगी।

इस पर श्री बाजपेयी ने कहा कि ऐसे सुझाव को तुरन्त स्वीकार किया जाना चाहिए।

—दैनिक जागरण १ ३ ९४ से साभार

सार्वदेशिक पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ नियम ८

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान	महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २
प्रकाशन का समय	प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम	डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ आसफअली रोड महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली २
सम्पादक	श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	पूर्ववत
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी है भागीदार या हिस्सेदार हैं	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पत्र की स्वामिनी है।
सम्पूर्ण पूजी के १ प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं उनके नाम व पते।	

मैं डा० सच्चिदानन्द शास्त्री इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हू कि उपर्युक्त विवरण जहा तक मेरा ज्ञान एव विश्वास है सही है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रकाशक व मुद्रक

हांसी में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का शानदार अभिनन्दन

भानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय हांसी में सेठ द्वारिकादास स्वर्ण जयन्ती स्मारक भवन का उद्घाटन समारोह सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे ६-२-९४ को सम्पन्न हुआ। स्मृति भवन का उद्घाटन श्री रोशनलाल अग्रवाल द्वारा किया गया। उसके बाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का शानदार अभिनन्दन स्कूल के प्रधान तथा प्रधानाचार्या जी द्वारा किया गया।

इस अवसर पर स्कूल के बच्चो की ओर से शानदार सास्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस समारोह मे अनेक महानुभाव उपस्थित थे जिनमें श्री रामनाथ सहगल श्री बी० बी० मक्कड़, श्री सुरेश कुमार गुप्ता श्री अमीचन्द आदि मुख्य थे। इस अवसर पर विद्यालय के लिये श्री रोशन लाल अग्रवाल दिल्ली ने ५१००० श्री सुरेशकुमार गुप्ता सी० ए० ११००० श्री दिलीपचन्द १०००० रुपये तथा अन्य अनेक महानुभावो ने दिल खोल कर दान दिया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१३-३-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) ९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 10-11-3-1994

राष्ट्रपति के उद्‌गार

(पृष्ठ १ का शेष)

- पुत्री भी अपने भाई के समान दायभाग मे अधिकारणी हो।
- विधवा को भी विधुर के समान विवाह का अधिकार है।

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा—

'विवाह लडके और लडकी की पसन्द के बिना नही होना चाहिए, क्योंकि एक-दूसरे की पसन्द से विवाह होने से विरोध बहुत कम होता है, और सन्तान उत्तम होती है।"

निश्चित रूप से आर्यसमाज ने इस दिशा मे महत्वपूर्ण काम किया। दयानन्द जी के इन प्रगतिशील विचारो का प्रभाव समाज पर पडने से धीरे धीरे नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदला। यह बात अत्यन्त महत्व की है कि दयानन्द सरस्वती के निधन से पचास वर्ष से भी पहले बाल-विवाह को रोकने के लिये 'शारदा विवाह कानून' पारित हुआ। इसी प्रकार अन्तर्जातीय विवाहो को वैध घोषित करने के लिए "आर्य विवाह कानून भी पारित किया गया।

यदि वेदो का आश्रय लिया जाए और तर्क के आधार पर सोचा जाये तो मानव-मानव मे कोई भेद मालूम नहीं पडता। वेदो मे कहा गया है—"एकैव मानुषि जाति"। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी सम्पूर्ण मानव-जाति को एक मानते हुए, उसके आचरण को प्रधानता दी है। 'सत्यार्थ प्रकाश' मे उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा—

"जो दुष्टकर्मकारी-द्विज को श्रेष्ठ और श्रेष्ठ कर्मकारी शूद्र को नीच माने, तो इससे परे पक्षपात, अन्याय, अधर्म दूसरा अधिक क्या होगा।"

स्पष्ट है कि उनके लिये आचरण महत्वपूर्ण था, जन्म नहीं। वे धर्म को भी सीधे सीधे आचरण से जोडते थे। उन्होंने धर्म से जुडे सभी आडबरो, पाखण्डो और अन्धविश्वासों का अपने तर्क के बल पर खण्डन किया और धर्म को सीधे-सीधे जीवन-व्यवहार का अग बनाया। उन्होंने स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश" के अनुच्छेद ३ मे लिखा है—

'जो पक्षपात रहित न्यायाचरण सत्यभाषणादियुक्त ईश्वराज्ञा वेदो से अविरुद्ध है, उसको धर्म मानता हू।"

इसी प्रकार "ऋग्वेदादिभाष्य" के पृष्ठ ३१५ पर धर्म के लक्षण की चर्चा करते हुये वे लिखते हैं—

'सत्यभाषणात् सत्याचरणाच्च पर धर्म लक्षण किञ्चिन्नास्त्येव'

अर्थात, सत्यभाषण और सत्याचरण के अतिरिक्त धर्म का कोई दूसरा लक्षण नहीं है।

मैंने ये उद्धरण यहा इसलिये दिये हैं, ताकि इस बात को अच्छी तरह से समझा जा सके कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का धर्म न तो किसी जाति, क्षेत्र और लोगो तक सीमित था और न ही उसका सम्बन्ध किसी प्रकार की सकीर्णता और अव्यवहारिकता से था। उनके लिए धर्म व्यक्ति के आचरण का निर्माण करने वाला तत्व था। इसके साथ ही वह समाज का विधान करने वाली व्यवस्था थी। मैं समझता हू कि दयानन्द सरस्वती के विचारों को इसी सदर्भ मे समझा जाना चाहिये। विशेषकर एक ऐसे समय में, जबकि निहित स्वार्थ धर्म की अपनी-अपनी दृष्टि से व्याख्या कर रहे हो, यह जरूरी हो जाता है कि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुषो के विचार लोगो के सामने रख जायें ताकि लोग धर्म के सच्चे स्वरूप को समझ सकें, और उसके अनुकूल आचरण कर सकें।

यदि दयानन्द सरस्वती जी को स्वराज्य का प्रवक्ता कहा जाये, तो गलत नहीं होगा। श्रीमती एनी बेसेंट ने इण्डिया ए नेशन' में बिल्कुल सही लिखा है—

स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम घोषणा की कि भारत भारतीयों के लिये है।"

ठीक इसी प्रकार लोकमान्य तिलक ने उन्हे "स्वराज्य का प्रथम सदेशवाहक तथा मानवता का उपासक" कहा।

मातृभाषा, मातृ सस्कृति, मातृभूमि और मातृशक्ति के प्रति दयानन्द जी के मन में अगाध और गहरा लगाव था। वे स्वदेशी के समर्थक थे। उन्होंने विदेशी कपडो के बहिष्कार की बात कही थी। सस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान और गुजराती भाषी होने के बावजूद उन्होंने लोगों की सुविधा की दृष्टि से अपनी बात हिन्दी मे कही, और 'सत्यार्थ प्रकाश' हिन्दी में लिखी। निश्चित रूप से इससे उस समय के भारतीयों की आत्मशक्ति जाग्रत हुई' और उनका आत्म विश्वास बढा। हमारे देश की सोई हुई शक्ति को उन्होंने सक्रिय करके राष्ट्रीय आन्दोलन तथा सामाजिक एव सास्कृतिक क्रान्ति की दिशा में प्रेरित किया।

पंडित नेहरू ने अपनी पुस्तक 'भारत एक खोज' में उन्हें बिल्कुल सही "विचारो की नई प्रक्रिया शुरू करने वाले चिंतकों में से एक" माना है। डा० राधाकृष्णन ने उनके कार्यों को "मूक क्रांति" का नाम दिया। मुझे इस में कोई दो मत नहीं मालूम पडते कि उन्होंने अपने चिन्तन में जिस दूरदृष्टि का परिचय दिया, और जिन कार्यो की शुरुआत की, उसका हमारे देश पर सकारात्मक प्रभाव पडा। आज हम अपने सामने उन कार्यों की उपयुक्तता देख सकते है।

मुझे ऐसा लगता है कि एक ऐसे समय में, जबकि एक नई विश्व व्यवस्था उभर रही है स्वदेशी की भावना की अनदेखी नहीं की जानी चाहिये। हम विश्व व्यवस्था से अलग नही रह सकते। लेकिन हमे इस बात का भी सकल्प लेना होगा कि हम अपनी सस्कृति, अपनी जडो से भी अलग नहीं रह सकते। मैं समझता हू कि दयानन्द सरस्वती जी के दर्शन का यह एक महत्वपूर्ण सदेश था। और आज हमारे देश को इसे पूरे मनोयोग के साथ अपनाना चाहिये। मुझे विश्वास है कि इस तरह के समारोह दयानन्द सरस्वती जी के जीवन दर्शन को देश के लोगो तक पहुचाने में सहायक होंगे।

बापू ने 'हरिजन' के ५ मई, १९३२ के अक में लिखा था—

'दयानन्द जी की आत्मा आज भी हमारे बीच काम कर रही है। वे आज उस समय से भी अधिक प्रभावशाली हैं, जबकि वे हमारे बीच सदेह थे।"

मैं आशा करता हू कि देश के लोग भी इसी तरह का अनुभव कर रहे होंगे। हमारे लोगो को ऐसे प्रगतिशील दृष्टिकोण वाले समाज की स्थापना के लिये काम करना है, जिसमे कोई अशिक्षित नहीं होगा, कोई अस्पृश्य और छोटा बडा नहीं होगा तथा जिसमे नारी के प्रति पूर्ण सम्मान का भाव होगा। और यही इस महापुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

आप लोगो ने मुझे इस कार्यक्रम में शामिल किया, इसके लिये मैं आप सबका आभारी हू।

जय हिन्द

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर का ११४ वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि महापर्व के अवसर पर प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी फाल्गुन कृष्णा १० से फाल्गुन कृष्ण १३ २०५० वि० तदनुसार सोमवार ७ से बृहस्पतिवार १० मार्च १९९४ तक समारोह पूर्वक मनाया जाना निश्चित हुआ है सोमवार ७ मार्च को शोभायात्रा तथा ८, ९, १० तक महोत्सव तथा कार्यक्रम भी होंगे।

जयसिंह, उपमन्त्री

—आर्य समाज रानी की सराय का ५१वा वार्षिकोत्सव दि० १८ से २१ मार्च सन १९९४ को आर्य समाज रानी की सराय मन्दिर के प्रांगण मे सयोजित है। इस अवसर पर अनेको आर्य विद्वान, भजनोपदेशक, उपदेशक सादर आमन्त्रित है। अधिक से अधिक सख्या में पधारकर लाभ उठायें।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मेम्बर मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

- मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि तीन काल में सबको एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना या मत-मतान्तर चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोडना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।
- ज्ञान प्राप्ति आत्मा की उन्नति और आरोग्यता होने से शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि होना। उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये ये सिद्ध होते हैं। इनको प्राप्त होकर मनुष्यों को सुखी होना उचित है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । १२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ७] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९४ फाल्गुन शु० १५ स० २०५० २७ मार्च १९९४

भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों में आर्य समाज के शिष्टमण्डल का दौरा

लातूर में अनाथ बच्चों के लिए वैदिक छात्रावास

सरकारी कार्यों में अफसरशाही की ढील

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के एक शिष्टमण्डल ने हाल ही में महाराष्ट्र के भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया। शिष्टमण्डल मे सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, वरिष्ठ उप प्रधान पंडित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, दिल्ली राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी तथा आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कान्तिकुमार कोरटकर आदि आर्य नेता सम्मिलित थे।

प्रभावित क्षेत्रो की वर्तमान स्थिति का निरीक्षण करने के पश्चात् शिष्ट मण्डल के सदस्य निम्न निष्कर्ष पर पहुंचे हैं।

१—लातूर और उस्मानाबाद जिलो के निवासियों की दशा मे कोई मूल-भूत परिवर्तन नही हुआ है। अधिकांश लोग इस भीषण गर्मी मे टीन की अस्थाई छतो के नीचे रह रहे हैं।

२—बहुत से मृतको के शव अभी तक मलबे के नीचे दबे हुए हैं।

३—मलबा हटाते समय बनाये गये टेढे मेढे रास्तो के अतिरिक्त कोई भी सड़क आदि अभी तक नहीं बनाई गई है।

४—केन्द्रीय तथा राज्य सरकारो को भूकम्प प्रभावित लोगों की सहायता के लिए देश विदेश से करोडो रुपयो का धन राशि प्राप्त हुई है। लेकिन क्षेत्र की हालत देखते हुए यह नही लगता कि उस राशि का उपयोग किया गया है। आर्य नेताओ को यह समझ नहीं आ सका कि इतनी विपुल धनराशि जनता की सहायता के नाम पर किस प्रकार खर्च की गई? केन्द्रीय तथा राज्य सरकारो को इसकी विस्तृत जानकारी देनी चाहिए।

भूकम्प पीडित विभिन्न क्षेत्रों मे आर्य समाज की ओर से प्रदूषण समाप्त करने के लिए वहा बडे बडे यज्ञो का आयोजन किया गया और हजारो आर्य वीरों व कार्यकर्ताओं ने वहा रात दिन सेवा कार्य किया था पीडितों मे वस्त्र, कम्बल दवाईया भी वितरित की गई थीं। आर्य समाज की विभिन्न सस्थाओं की ओर से वहा लगभग २५ लाख रुपये की सहायता सामग्री वितरित की गई थी।

लातूर मे सार्वदेशिक सभा ने एक छात्रावास भी खोला है, जिस पर लगभग दस हजार रुपये प्रति मास खर्च आता है। इसका सचालन श्री एव श्रीमती डा० हजगुडे कर रहे हैं जो व्यवसाय से (दोनो ही) डाक्टर हैं। ४ से १२ वर्ष के बीच की आयु के अनाथ बच्चे इस छात्रावास मे रखे जाते है। छात्रावास का स्थाई भवन बनाने के लिए सार्वदेशिक सभा लातूर मे जमीन खरीदने का विचार कर रही है। जमीन की कीमत तथा भवन निर्माण का समस्त व्यय सभा वहन करेगी। इस समय छात्रावास टीन के शैडो मे चल रहा है।

सार्वदेशिक सभा जन-साधारण से अपील करती है कि वे उपरोक्त आयु सीमा के अन्दर आने वाले बच्चो को छात्रावास मे प्रवेश हेतु, देश मे आर्य समाज की सर्वोच्च सभा के प्रतिनिधियो से सम्पर्क करें जिससे ऐसे बच्चो की आगे अध्ययन करने की इच्छा को पूरा किया जा सके।

महाराष्ट्र के भूकम्प पीड़ित क्षेत्रों मे आर्यसमाज का प्रशंसनीय कार्य

गत सप्ताह आर्य समाज का एक शिष्ट मण्डल सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे महाराष्ट्र के भूकम्प पीडित क्षेत्रों का निरीक्षण करने हेतु पहुचा। इस शिष्टमण्डल में सार्व० सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव दिल्ली आ० प्र० सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कान्ति कुमार कोरटकर तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के दिनकर देशपाण्डे आदि आर्य नेता सम्मिलित थे।

भूकम्प से प्रभावित क्षेत्रों की वर्तमान स्थिति तथा आर्य समाज के द्वारा किये गये सेवा कार्यों का निरीक्षण करने के पश्चात स्वामी जी ने बताया कि उस क्षेत्र में कार्य कर रही समस्त सस्थाओ से आर्य समाज का कार्य अत्यन्त उत्तम है, उन्होने सेवा कार्यो को देखकर सन्तोष प्रकट किया। उन्होने बताया कि सरकारी स्तर पर कार्य अच्छा नहीं चल रहा है और यह सब अफसरशाही की ढील के कारण है।

संपादक: डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

राजस्थान विधान सभा में

'द ग्रेट मराठा' और 'अकबर द ग्रेट' पर रोक की मांग

जयपुर, १६ मार्च। महाराणा प्रताप को गद्दार और महाराजा सूरजमल को डकैत बताने वाले दो दूरदर्शनी महासीरियलों अकबर दि ग्रेट और द ग्रेट मराठा पर आज राजस्थान विधानसभा में नाराजगी जताई गई। दलीय सीमा से ऊपर उठकर पक्ष-विपक्ष के सदस्यों ने एक स्वर में मांग की कि खान भाइयों के इन सीरियलों पर फौरन रोक लगाई जाए।

सभी विधायकों ने एक स्वर में संजय खान के द ग्रेट मराठा टीवी सीरियल पर रोक लगाने के साथ ही उसकी राजस्थान में हो रही शूटिंग पर पाबंदी लगाने की भी मांग की। देशभक्तों के बारे में टीवी सीरियलों में गलत चित्रण पर विधायकों ने गहरा गुस्सा जाहिर किया।

सदस्यों ने अकबर द ग्रेट पर भी रोक लगाने की मांग की। सदस्यों का कहना था कि देश के दो महान सपूतों के बारे में इन दोनों सीरियलों में अपमानजनक टिप्पणियां की गई हैं। निर्माणाधीन 'अकबर दि ग्रेट' में महाराणा प्रताप और दूरदर्शन पर प्रसारित किए जा रहे 'दि ग्रेट मराठा' में महाराजा सूरजमल का चरित्र हनन किया गया है। शून्यकाल में जगदीप धनखड़ (कांग्रेस) ने मामला उठाते हुए कहा कि सीरियल में महाराणा प्रताप को 'गद्दार' और राजा सूरजमल का 'डकैत' बताया जा रहा है।

पक्ष विपक्ष के सदस्यों की नाराजगी से सहमत होते हुए गृहमंत्री कैलाश मेघवाल ने कहा कि महान देश भक्तों को सही रूप से सीरियल में प्रस्तुत नहीं करने को सरकार बहुत गंभीरता से लेती है। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप और महाराजा सूरजमल जैसे महापुरुष योद्धा आक्रांताओं के खिलाफ लड़े। उनका इतिहास में नाम है। अगर उनके बारे में गलतबयानी की जाती है तो शब्द कोष में से स्वाधीनता और स्वाभिमान शब्द को भी निकाल दिया जाना चाहिए। सरकार के ध्यान में यह मामला लाया गया तो तेजी से कार्रवाई की गई। इसकी स्क्रिप्ट' देखी जाएगी। शुक्रवार को ही राज्य के मुख्यसचिव ने दूरदर्शन के महानिदेशक को पत्र लिखकर कहा है कि ऐसे सीरियलों से राजस्थान की जनता उद्वेलित है। पत्र में यह भी लिखा गया है कि देश के महापुरुषों की छवि गिराने वाली कोई बात इन सीरियलों में नहीं आनी चाहिए।

गृहमंत्री ने कहा कि वे खुद भी इस बारे में केंद्रीय सूचना और प्रसारण मन्त्री को पत्र लिखेंगे। केन्द्र को इस संबंध में कार्रवाई करने को कहा जाएगा। उन्होंने साफ किया कि राज्य सरकार ने द ग्रेट मराठा' सीरियल को बनाने में किसी प्रकार की सुविधा या रियायत नहीं दी है। जहां इसकी शूटिंग हो रही है वह निजी संपत्ति है। उन्होंने विपक्ष के एक सदस्य के इस आरोप का खंडन किया कि मुख्यमंत्री ने इस सीरियल का उद्घाटन किया था। उन्होंने इतिहास के दुबारा लिखे जाने का जिक्र करते हुए कहा कि बाहर के लेखकों ने स्वार्थवश देश भक्तों के बारे में तोड़मरोड़ कर लिखा है। फिर से सही लिखा जाना चाहिए।

विधान सभा अध्यक्ष हरिशंकर भाभड़ा ने सदस्यों की चिंता में शामिल होते हुए कहा कि आज जिस तरह की हालत है उसमें देश की एकता की जरूरत है। अच्छे कार्यक्रम प्रसारित होने चाहिए। ऐसे सीरियल नहीं आने चाहिए जो विवादित हों। विवादित चीजें ही एकता पर चोट पहुंचाती हैं। विवादित सीरियलों को मंजूरी नहीं देनी चाहिए।

पूर्व केंद्रीय मन्त्री और कांग्रेस के जगदीप धनखड़ ने कहा कि महाराजा सूरजमल राष्ट्र की धरोहर हैं। महान लोगों का सही चित्रण किया जाना चाहिए। भाजपा के घनश्याम तिवाड़ी ने कहा कि महाराजा सूरजमल ने महान काम किया। उनकी बातें राजनैतिक और सांप्रदायिक नहीं हैं। सीरियलों में देश के सपूतों के बारे में अपमानजनक टिप्पणी सहन नहीं की जाएगी। इस तरह के सीरियल बनाने वालों की उन्होंने कठोर निंदा की।

कांग्रेस के रामनारायण चौधरी ने कहा कि महाराजाओं को जाति में नहीं बांटना चाहिए। सीरियलों में इस तरह से गलत चित्रण किया तो राज्य में विद्रोह हो जाएगा। कांग्रेस के ही हरिसिंह कुम्हेर ने कहा कि महाराजा सूरजमल का नाम इतिहास में कुशल प्रशासक और योद्धा के रूप में आता है। बहादुर लोगों का सम्मान किया जाना चाहिए। संजय खान के सीरियल को किसी तरह का षड्यन्त्र बताते हुए उन्होंने कहा कि संजय खान जनता को भड़काना चाहता है। 'द ग्रेट मराठा सीरियल की वजह से राज्य में विप्लव और आंदोलन शुरु हो जाएगा। नौटंकी करने वाले को इतिहास बिगाड़ने का अधिकार नहीं दिया जा सकता।

भरतपुर राजघराने से जुड़े निर्दलीय अरुण सिंह और कांग्रेस के विश्वेन्द्र सिंह ने सीरियल में आपत्तिजनक बातों पर गहरा एतराज जताया। अरुण सिंह ने कहा कि महाराणा प्रताप और सूरजमल का इतिहास में बहुत बड़ा योगदान रहा है। संजय खान के सीरियल पर पाबंदी लगनी चाहिए। इस वीर भूमि पर शूटिंग की इजाजत ही नहीं देनी चाहिए। विश्वेन्द्र सिंह ने कहा है कि सीरियल को देखने के बाद फैसला लिया जाना चाहिए।

आर्य समाज शकरपुर में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

आर्य समाज मंदिर शकरपुर में महर्षि जन्मोत्सव तथा ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर ६ मार्च से १३ मार्च तक विशेष यज्ञ तथा प्रवचन आदि का कार्यक्रम रखा गया। प्रतिदिन यज्ञ के उपरान्त श्री पतराम जी त्यागी के द्वारा महर्षि के जीवन पर प्रकाश डाला जाता था तथा श्री ओमप्रकाश वकील ने अपनी मधुर वाणी में भजनों के माध्यम से ऋषि का गुणगान किया। श्री मिश्रीलाल जी प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न यह कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

—रामनिवास कश्यप मन्त्री

सीताराम केसरी की पत्नी का निधन

नई दिल्ली, १५ मार्च। केन्द्रीय कल्याण मन्त्री श्री सीताराम केसरी की पत्नी श्रीमती केसर देवी का आज यहां अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में निधन हो गया। वह ७३ वर्ष की थी।

श्रीमती केसर देवी पिछले कुछ समय से बीमार थी उन्हें पिछले सप्ताह यहां अस्पताल में भरती करवाया गया था। पारिवारिक सूत्रों के अनुसार उनकी अन्त्येष्टि हरिद्वार में की गयी। प्रधानमन्त्री पी. वी. नरसिम्हा राव ने लंदन से फोन कर श्री केसरी से बात की और उनकी पत्नी के निधन पर संवेदना प्रकट की।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

'नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये एक बार १५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

हिन्दी को प्रोत्साहन दें

फिर वही गलती

केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री शंकर राव चव्हाण ने नरसिम्हा राव सरकार के कार्यकाल के एक हजार दिन पूरे होने पर गत दिवस एक भेंट मे कहा है कि केन्द्र ने कश्मीर मे राजनीतिक प्रक्रिया शुरू करने के लिए एक खाका तैयार कर लिया है मगर इस सिलसिले म वह सही समय की जानकारी नहीं दे सकते क्योंकि एक बार इसकी जानकारी मिलने पर पाकिस्तान गडबड करने का प्रयास करेगा। पहले भी जब कभी हमने कश्मीर में राजनीतिक प्रक्रिया शुरू करने की बात की तो पाकिस्तान ने आतंकवादियों को सीमा भेजकर वहां हिंसा भड़काई।

श्री चव्हाण ने यह भी कहा कि प्रधान मन्त्री श्री पी वी नरसिम्हा राव और स्वयं उन्होंने सभी राजनीतिक दलो के नेताओ के साथ कश्मीर मे राजनीतिक प्रक्रिया शुरू करने के सम्बन्ध मे अलग अलग बातचीत की है और इसके परिणाम काफी उत्साहवर्धक रहे हैं।

इससे पहले सोलह मार्च को केन्द्रीय गृह राज्यमन्त्री श्री राजेश पायलट ने भी ससद में एक सवाल के जवाब मे यह बात कही कि सरकार जम्मू कश्मीर में जल्दी से जल्दी शांति और लोकतान्त्रिक सस्थाओ की बहाली की कोशिश कर रही है।

जहां तक कश्मीर मे राजनीतिक-प्रक्रिया शुरू करने की बात है, वह तो 'उपयुक्त समय आने पर शुरू होनी ही चाहिए मगर सवाल इस समय यह है कि क्या वह 'उपयुक्त समय' सचमुच आ गया है? जवाब है नहीं। स्वय प्रधान मन्त्री श्री नरसिम्हाराव ने अपनी ब्रिटेन यात्रा के दौरान बी बी सी को दिये गये एक इटरव्यू मे जम्मू कश्मीर मे जल्दी चुनाव कराने की सभावना से इन्कार करते हुए कहा है कि

"जम्मू-कश्मीर में जल्दीबाजी मे चुनाव कराना घातक सिद्ध हो सकता है। इसलिए हम पहले पूरी तैयारी करेंगे, फिर चुनाव करायेंगे।'

अपनी इस बात का स्पष्टीकरण करत हुए प्रधानमन्त्री ने पजाब का उदाहरण दिया और कहा कि

'पजाब मे १९९१ में जल्दबाजी मे चुनाव कराने की घोषणा कर दी गई और उसके बाद २७ उम्मीदवार मार दिये गये। यहां ऐसी बात नही है कि बटन दबाया और काम हो गया।'

घाटी की ताजा स्थिति के बारे मे श्री नरसिम्हा राव ने कहा कि लगता ऐसा है कि वहां स्थिति गम्भीर है और आतंकवाद हम पर थोपा जा रहा है (प्रधानमन्त्री का यह सकेत पाकिस्तान की ओर था)। वैसे कश्मीर मे लोकतन्त्र चाहने वालो की कमी नही है। जब भी वहां भारतीय सविधान के अन्तर्गत चुनाव कराया जाएगा, नई पार्टियां और गठबन्धन उनमे भाग लेने के लिए सामने आ जायेंगे—पुराने राजनीतिक नेता भी वहा राजनीतिक पहल मे शामिल हो सकते हैं। हम कश्मीर मे शांति चाहने वाले हर किसी से सम्पर्क कर रहे हैं—राष्ट्रीय स्तर पर भी और स्थानीय स्तर पर भी।

जहां प्रधा मन्त्री श्री नरसिम्हा राव ने ये सब बातें कही हैं वहा राज्यपाल जनरल के वी कृष्णा राव भी रह-रहकर यही बात कह रहे हैं कि अभी प्रदेश की परिस्थितियां 'लोकतान्त्रिक प्रक्रिया' आरम्भ करने के अनुकूल नहीं हैं। जनवरी के महीने में ही जनरल राव प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हा राव पर भी यह बात स्पष्ट कर चुके हैं कि इस समय लोकतान्त्रिक-प्रक्रिया की बहाली का पग हानिकारक हो सकता है। जनरल राव ने उस समय यह भी कहा था कि कम से कम चार महीने तक लोकतांत्रिक प्रक्रिया की बहाली के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए क्योंकि तब तक बन्दूको का डर काफी कम हो सकता है। जनरल राव चाहते हैं कि इस समय, जबकि आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई निर्णायक दौर मे चल रही है, 'लोकतान्त्रिक प्रक्रिया' की बात न करके आतंकवादियों पर दबाव बढ़ाने की बात ही की जानी चाहिए।

अब भी जनरल राव ने यही कहा है कि कश्मीर में अब हालात सुधर रहे हैं और इस वर्ष के अन्त तक वहां चुनाव करा दिए जायेंगे। जनरल राव के इस बयान का भी अगर गहराई तक जाकर अध्ययन किया जाए तो निष्कर्ष यही निकलता है कि प्रदेश में राजनीतिक-प्रक्रिया आरम्भ करने में अभी नौ-दस महीने का समय और लगेगा—स्पष्ट है कि राज्यपाल का यह बयान भी श्री चव्हाण और श्री राजेश पायलट के उपरोक्त बयानों से मेल नही खाता। पहले वह राजनीतिक प्रक्रिया शुरू करने के लिए चार महीने की प्रतीक्षा करने को कहते थे—अब नौ दस महीने की प्रतीक्षा की बात उन्होंने कह दी है।

जनरल राव ने प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हा राव से यह भी कहा है कि वह श्रीनगर मे कांग्रेस के प्रेस 'दि खिदमत प्रिंटिंग प्रेस' के प्रबन्ध पर भी ध्यान दें। कहा जाता है कि यह प्रेस आतंकवादियो के पक्ष मे और भारत के विरुद्ध साहित्य छापता रहा है और इसमे कुछ ऐसे पर्चे भी छपते हैं जो कई आतंकवादी सगठनो के 'भोंपू' का काम करते हैं। इससे भी पाठक कश्मीर की स्थिति का अदाजा लगा सकते हैं।

वैसे प्रदेश की परिस्थितिया आज भी राजनीतिक-प्रक्रिया के कितनी प्रतिकूल हैं, इसका अनुमान इस बात से भली-भांति लगाया जा सकता है कि जहां आतंकवाद की घटनाएं हर रोज बिना नागा हो रही हैं और आतंकवादी जब जी चाहे तब ही सारा काम काज ठप्प करके रख देते हैं, वहां लाखो की सख्या मे हिन्दू और मुसलमान भय और आतंक के कारण घाटी से पलायन कर गए हैं। इतना ही नहीं तमाम राजनीतिक दल भी आज कश्मीर के सन्दर्भ मे सारहीन होकर रह गए हैं। अत जब कोई राजनीतिज्ञ खुल कर घाटी मे घूम-फिर न सके, प्रचार और चुनाव सभाएं न कर सके और वोटर लाखो की तादाद मे घाटी से बाहर बैठे हो तब राजनीतिक प्रक्रिया शुरू करने की बात करने का औचित्य क्या है? अर्थ क्या है?

यहां यह लिखना भी असगत नही होगा कि परिस्थितियो का आकलन किए बगैर ही पजाब की तरह ही कश्मीर मे भी रह-रह कर लोकतान्त्रिक-प्रक्रिया बहाल करने की डफली बजती रही है। जब प्रदेश के राज्यपाल श्री जगमोहन को अचानक हटाकर उनकी जगह श्री गिरीश चन्द्र सक्सेना को लाया गया तो लोकतान्त्रिक प्रक्रिया बहाल करने के विचार से ही लाया गया और उन्होंने कहा भी कि उनका पहला काम लोकतन्त्र की बहाली होगा, मगर ज्यो ज्यो प्रदेश की परिस्थितियो को वह देखते और समझते चले गये, यह बात उन पर स्पष्ट होती चली गई कि जिन विकट परिस्थितियो मे से प्रदेश गुजर रहा है उनमे चुनाव कराने की बात सोची भी नही जा सकती।

इसके बाद श्री सक्सेना को हटाकर जनरल कृष्णा राव को दोबारा राज्यपाल बना कर लाया गया और लोकतान्त्रिक-प्रक्रिया की रागनी फिर जोर शोर से अलापी जाने लगी मगर अब वह भी यह समझने लगे हैं कि कश्मीर में पहली जरूरत आतंकवादियो पर दबाव बढ़ाने की है—राजनीतिक प्रक्रिया इस वर्ष के अन्त तक ही शुरू करने की बात सोची जा सकती है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आत्मा की अनन्त यात्रा
एक उपयोगी पुस्तक

महान विद्वान, योगाचार्य, बाल ब्रह्मचारी और प्राणायाम के ज्ञाता स्व० वीरभद्र राव (हैदराबाद, जो सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान पंडित वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी के बड़े भाई थे, के द्वारा यह अमूल्य पुस्तक लिखी गयी थी। लेखक ने इस सुन्दर पुस्तक मे परमात्मा, जीव और प्रकृति के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए गवेषणा पूर्ण खोज के बाद भौतिक शरीर नष्ट होने पर आत्मा की क्या नियति होती है? 'आत्मा की अनन्त यात्रा" नामक इस पुस्तक मे विस्तार से जानकारी दी है। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी और जीवन के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश करने वाली है।

बढ़िया कागज पर सुन्दर ढग से प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य मात्र ४०/ रु० है। सार्वदेशिक सभा के प्रकाशन विभाग मे विक्रय के लिए उपलब्ध है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

ईदगाह बूचड़खाना बन्द करने का आदेश

दिल्ली उच्च न्यायालय ने ईदगाह स्थित बूचड़खाने को बन्द करने का आदेश दिया है और तब तक के लिए दिल्ली नगर निगम को निर्देश दिया है कि वहां सफाई बनाये रखें तथा बूचड़खाने में प्रतिदिन कटने वाले जानवरों की संख्या घटा दे।

न्यायालय के पूर्व आदेशों को बहाल रखते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश गोकुलचन्द मित्तल और न्यायाधीश दलवीर भंडारी ने कहा कि यदि किसी भी कारण से बूचड़खाना कुछ दिनों के लिए चलता है तो वहां कटने वाले जानवरों की संख्या घटाकर प्रतिदिन २५०० कर दी जाय तथा वहां सफाई की उचित व्यवस्था की जाये।

इन आदेशों के कार्यान्वयन के लिए अदालत ने एक उच्च स्तरीय समिति गठित की है जिसकी अध्यक्षता सेवानिवृत न्यायाधीश जे०डी० जैन करेंगे। दिल्ली न्यायिक सेवा के एक अधिकारी समिति के सदस्य होंगे। खण्डपीठ ने इस बात पर क्षोभ व्यक्त किया है कि एक अक्तूबर १९९२ में दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा इस विषय पर दिये गये निर्णय को नजरअन्दाज कर दिया गया है।

आज का आदेश पूर्व पर्यावरण मन्त्री श्रीमती मेनका गांधी की याचिका पर जारी किया गया। अदालत ने बूचड़खाने के प्रबन्धक डा० आर० के० भार्गव की इस बात पर आलोचना की है कि उन्होंने अदालत को यह बताने की कोशिश की कि बूचड़खाने की सफाई व्यवस्था ठीक है। न्यायाधीशों ने कहा है 'सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के जिम्मेदार अधिकारियों से सही तस्वीर पेश करने की उम्मीद की जाती है।

श्रीमती मेनका गांधी की याचिका में कहा गया है कि ईदगाह स्थित बूचड़खाने से प्रतिदिन १३ हजार लीटर खून बहकर यमुना नदी में मिलता है। इसके अलावा कई प्रकार के पक्षी वहां से जानवरों के मांस के टुकड़े तथा चमड़े अपनी चोंच में दबाकर उड़ते हैं तथा आस-पास के मकानों, दुकानों, स्कूलों तथा अन्य भवनों पर गिरा देते हैं। इससे आसपास के इलाके का वातावरण स्वास्थ्य और पर्यावरण की दृष्टि से बिगड़ गया है और लोगों के लिए खतरनाक साबित हो गया है। इसी मुद्दे को ध्यान में रखकर अदालत ने दिल्ली नगर निगम को निर्देश दिया है कि उसे स्थानीय लोगों को स्वच्छ पानी तथा वातावरण उपलब्ध कराना चाहिये।

याचिका में यह भी कहा गया है कि इस बूचड़खाने में जानवरों को काटने का तरीका काफी बर्बरतापूर्ण है। जानवरों की गर्दन को रेत दिया जाता है। इससे जानवर धीरे-धीरे और तड़प-तड़प कर मरते हैं कई बार तो जीवित जानवरों की चमड़ी उधेड़ ली जाती है। यहां तक कि बीमार और गर्भवती पशुओं को भी निर्दयता से काट डाला जाता है। उनकी कोशिश रहती है कि जितनी सम्भव हो जानवरों को उतनी यातना दी जाए।

न्यायाधीशों ने जानवरों की अवैध कटाई को पूर्ण रूप से बन्द करने का निर्देश दिया है। अदालत ने यह भी निर्देश दिया है कि जानवरों की जांच करने के लिए पर्याप्त संख्या में पशु डाक्टरों को वहां उपस्थित होना चाहिए। अवैध रूप से काटे गए भेड़-बकरे के लिए जुर्माना राशि ५० रुपये से बढ़ाकर ५०० रुपये तथा भैंस के लिए २०० से बढ़ाकर २००० रुपये करने का निर्देश भी जारी किया गया है।

नगर निगम को निर्देश दिया गया है कि बूचड़खाने को सही ढंग से चलाने के लिए वह उचित उपनियम बनाये। खण्डपीठ ने पिछले साल बूचड़खाने के निरीक्षण के लिए वकीलों की एक समिति गठित की थी। समिति ने अपनी रिपोर्ट पेश की थी तथा बूचड़खाने की गतिविधियों पर एक वीडियो फिल्म भी प्रस्तुत किया था।

ईदगाह के नागरिक इस बूचड़खाने को बन्द करने की मांग लम्बे समय से करते आ रहे हैं। विशेषकर आस-पास के लोगों का कहना है कि मृत जानवरों की बदबू के कारण उनका वहां रहना असम्भव होता जा रहा है। कई बार क्षेत्र की सफाई पर ध्यान न देने से पूरा क्षेत्र बदबूग्रस्त हो जाता है। चूंकि यह क्षेत्र संवेदनशील है, इसलिए अशान्ति उत्पन्न होते ही बूचड़खाना भी बन्द हो जाता है।

दिल्ली नगर निगम ने करीब पांच वर्ष पूर्व ईदगाह बूचड़खाना बन्द करने और यमुनापार में विदेशी उपकरणों से नया बूचड़खाना बनाने का फैसला किया था किन्तु वह योजना केवल कागजों तक ही सीमित रह गयी। इसी प्रकार बाहरी दिल्ली में बूचड़खाना खोलने की योजना भी विरोध के कारण लटकी पड़ी है।

सांप जीभ से सूंघता है

वाशिंगटन, १८ मार्च। सांप अपनी जीभ से सूंघता है और अपने शिकार या अपने साथी का पता लगा लेता है। यह निष्कर्ष अमरीकी शोधकर्ता कुर्त श्वेक ने अपने अध्ययन से निकाला है।

कनेक्टिकट विश्वविद्यालय के जीव विज्ञानी श्री श्वेक ने बताया है कि सांप में रसायनों की गन्ध पहचानने की अत्यधिक क्षमता होती है। यही कारण है कि सरीसृप (रेंगने वाले) वर्ग के अन्तर्गत आने वाला यह जीव किसी भी वस्तु को गन्ध की पहचान करने में कोई गलती नहीं करता।

प्रसिद्ध विज्ञान पत्रिका 'साईंस' में आज प्रकाशित इस रिपोर्ट में श्री श्वेक ने कहा है कि सांपों में छिपकली जैसे अन्य जीवों की तुलना में गन्ध के प्रति संवेदनशीलता अधिक होती है।

शोधकर्ता का मानना है कि जिस सांप की जीभ जितनी अधिक गहराई तक विभाजित होती है, उसमें सूंघने की क्षमता उतनी ही अधिक होती है। सामान्यतः सभी सांपों की जीभ काफी गहराई तक विभाजित होती है।

श्री श्वेक का कहना है कि इसी कारण सांप किसी वस्तु की पहचान करता है, वांछित दिशा में चलता है, शिकार पर आक्रमण करता है और उसे पकड़ता है।

अध्ययन के दौरान देखा गया कि सांप बार-बार अपनी जीभ निकाल कर लपलपाता है और इधर-उधर घुमाता है। इस दौरान वह हवा की गन्ध और स्वाद लेता है। वह जीभ से जमीन को भी स्पर्श करता है।

हाई स्पीड फोटोग्राफी से पता चलता है कि वह बार-बार अपनी जीभ निकाल कर हिलाता है। जीभ हिलाने के प्रत्येक क्रम के दौरान वह अपनी जीभ के दोनों भागों को अलग-अलग करता है ताकि अधिक से अधिक दूरी की वस्तुओं का जायजा ले सके।

सांप अपनी जीभ से यह भी पता लगा लेता है कि कोई चूहा या शिकार मरा हुआ है या जिन्दा है।

आध्यात्मिक जगत को आर्य समाज की देन [२]

डा० प्रेमचन्द श्रीधर

(६ मार्च के अंक से आगे)

आचार्य शंकर वेदान्तदर्शन के भाष्य में अनेकत्र जगत को ब्रह्म का परिणाम मानते हैं—

'चेतनैकं ब्रह्म स्वयं परिणममानं जगत: कारणमिति स्थितम्'

शांकर भाष्य २। १। २६

इस प्रकार वह चेतन है और किसी अवस्था में जड़ रूप होकर भी प्रतीत होता है। स्पष्ट है कि चेतन यदि जड़ हो सकता है तो जड़ का भी चेतन होना स्वीकार कर लिया जाना चाहिए। अन्तर केवल अनुभूतिमात्र का है। इस प्रकार हमने देखा कि तीन प्रकार की इस दार्शनिक विचारधारा में एक जड़ अर्थात प्रकृति तत्व को महत्व देती है, दूसरी चेतन अर्थात जीव को और तीसरी जड़ और चेतन दोनों को ब्रह्म' का रूप स्वीकार करती है। तात्विक विवेचन पर तीनों ही अपूर्ण असंगत और एकपक्षीय हैं। इनको विज्ञान तर्क और बुद्धि की कसौटी पर युक्तियुक्त स्वीकार नहीं किया जा सकता।

दर्शन मे यही चेतन तत्व दो भागों मे विभक्त किया गया है परमात्मा और आत्मा-दर्शन में परमात्म तत्व को ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म आदि नामों से जाना गया है इनमें परमात्मा एक मात्र तत्व है और जीवात्माएं संख्या में अनन्त हैं। इनके अतिरिक्त जड़तत्व प्रकृति है जो समस्त जगत का उपादान कारण है।

हम, यहां इनका जो मूल भेद है, उसे संक्षेप में स्पष्ट कर रहे हैं—परमात्मा भोक्ता नहीं है, जबकि जीवात्मा भोक्ता है। देहेन्द्रियादि के साथ सम्बद्ध अवस्था में जीवात्मा भोगों को भोगता है। प्रकृति भोग्य तत्व है। इसे अर्थशास्त्र की भाषा में और अधिक आसानी से समझा जा सकता है। एक (CONSUMER) जीवात्मा, दूसरा (CONSUMPTION) (प्रकृति) तीसरा (CONTROLLER OFCONSUMER & CONSUMPTION BOTH) दोनों का नियन्ता। इसी नियन्ता को ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म नाम से जाना गया है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में इसी को 'भोक्ता भोग्यं प्रेरितारञ्चमत्वा सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममेतत्। कहा गया है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

—ऋ० वे० १। १६४। २०

वेद का यह प्रसिद्ध मन्त्र है। इसमे मूलभूत तीनों तत्वों--भोक्ता-जीवात्मा, अभोक्ता--परमात्मा और भोग्यफल युक्त वृक्ष के रूप में प्रकृति का उल्लेख हुआ है।

जो ब्रह्म और जीव दोनों चेतनता और पालनादि गुणों से सदृश, व्याप्य-व्यापक भाव से संयुक्त, परस्पर मित्रतायुक्त सनातन अनादि हैं और वैसा ही अनादि मूलरूप कारण, स्थूल और शाखा रूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न-भिन्न हो जाता है, वह तीसरा अनादि पदार्थ है। इन तीनों के गुण-कर्म और स्वभाव भी अनादि हैं। इन जीव और ब्रह्म में से एक जो जीव है, वह इस वृक्ष रूप संसार में पापपुण्य रूप फलों को अच्छे प्रकार भोगता है। और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलों को न भोगता हुआ चारों ओर अर्थात भीतर-बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है। जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न स्वरूप है। ये तीनों अनादि हैं।

—सत्यार्थ प्रकाश ८ वां समुल्लास

श्वेताश्वतरोपनिषद में भी परमात्मा, जीव और प्रकृति तीनों को अनादि और अज कहा है। अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वी: प्रजा सृजमानां स्वरूपा:। अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्य ॥

श्वेता० ४। ५ ॥

दार्शनिक जगत में त्रैतवाद का प्रतिपादन जो आध्यात्मिकता की सीढ़ी पर प्रथम पग है, महर्षि दयानन्द की देन है। आर्य समाज इसी मान्यता का प्रचार-प्रसार करता है। इससे सभी दार्शनिक विसंगतियों का समाधान स्वयमेव हो जाता है। तर्क, बुद्धि और विज्ञान की कसौटी पर यही विचार अपने में पूर्ण है।

जीवात्मा का स्वरूप एकदेशी है

'अनन्तो वै जीवा:' जीवात्मायें अनन्त हैं इसे सब स्वीकार करते हैं परन्तु जीवात्मा विभु है या एकदेशीय इस प्रश्न का वैदिक दर्शन ही स्पष्ट रूप से निरूपण करता है।

संक्षेप में जीव सम्बन्धी भ्रममूलक विचार दो भागों में विभाजित किए जा सकते हैं--

(१) वह जो जीव को प्रकृति का केवल विकसित रूप मानते हैं। प्रकृतिवादी इत्यादि सब इसके अन्तर्गत हैं।

(२) जो जीव को ईश्वर का माया से या भ्रम से आच्छादित अंग मानते हैं।

परन्तु दोनों धारणाएं अवैदिक और तर्क तथा वैज्ञानिक आधार पर कहीं भी नहीं टिक पाती क्योंकि यदि जीव अनादि न माना जाएगा तो यह मानना पड़ेगा कि परमात्मा सम्बन्धी वे गुण जो जीव के सम्बन्ध से हैं, कभी ईश्वर में विद्यमान न थे और इसलिए सर्वगुण सम्पन्न ईश्वर अनादि व अनन्त न रहेगा।

यदि जीव की ईश्वर से उत्पत्ति मानेंगे तो ईश्वर के सारे लक्षण जीव में होने चाहिए, जैसा कि हम नहीं देखते।

यदि जीव को स्वतन्त्रकर्ता न माना जाएगा तो पाप और पुण्य का सारा उत्तरदायित्व ईश्वर पर रहेगा, जो किसी प्रकार भी ठीक नहीं हो सकता।

जीव को चार्वाक वाले पृथक स्वतन्त्र सत्ता नहीं मानते और न ही पूर्वजन्म के सिद्धांत में विश्वास रखते हैं, क्योंकि ऐसा मानने से उनको भोग-विलास की वासनाओं में बाधा उपस्थित होती है।

इसके विपरीत बौद्ध और जैनियों के काल में त्यागमार्ग की प्रबल ध्वनि उठी तो जीव का ठीक-ठीक स्वरूप जनता के सम्मुख न रहा और मोक्ष के सम्बन्ध में भी भ्रम फैल गया। स्वतन्त्रकर्ता होने के स्थान में शून्यवाद के विचार फैले।

इस प्रकार अन्य अनेक विचारधाराएं आत्मा के सम्बन्ध में हैं जिनका विश्लेषण करना यहां लेख के लघुकाय होने के भय से सम्भव नहीं है। सारी धारणाएं, मान्यताएं तर्क और विज्ञान की कसौटी पर टिक ही नहीं पाती। केवल वैदिक मान्यता जिसका प्रतिपादन महर्षि दयानन्द ने किया विचारणीय है और ग्राह्य है।

दर्शन के अनुसार—

तमणुमात्रमात्मानमनुविद्यास्मीत्येवं तावत सं प्रजानीते।

मैं ऐसा हू योग बल के द्वारा योगी इस प्रकार का आत्मसाक्षात्कार करने में समर्थ है। आत्मा को यहां साक्षात्कृत अणुमात्र अर्थात एकदेशीय माना है। यह आत्मा जहा रहता है वहा ज्ञान आदि होना स्वाभाविक है। न वह अन्यत्र रहता है न वहां उसे ज्ञान आदि होना ही सम्भव है। अत: आत्मा जिस देह में रहती है वही उसका निवास होने से वह एकदेशीय अर्थात अणु है विभु नहीं है।

(क्रमश:)

ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवादि पर विचार

महेन्द्र प्रताप यादव, पहाड़पुर (आर्यनगर), हेतमपुर वाराणसी

ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा गणेश ये सब परमपिता परमात्मा के गौणिक नाम हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कायाकल्प करने वाले अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में यह सिद्ध किया है। इसके अतिरिक्त ब्रह्मा, विष्णु तथा महादेव (शिव) नाम के ऐतिहासिक महापुरुष भी हुए थे। 'कालान्तर मे इन लोगों के स्मरणार्थ राजासनों के नाम पड़ गये। जो उन पर बैठता, वही ब्रह्मा, विष्णु तथा महादेव हो जाता था।' ये राजासन महाभारत काल तक चलते रहे। कालान्तर में समाप्त हो गये। इसी प्रकार इन्द्र, कुबेर तथा जनकादि राजासन तथा वसिष्ठ, विश्वामित्र, नारद इत्यादि देवर्षि आसन भी थे। जैसे पुराणियों में शंकराचार्य, गोरखनाथ तथा कीनाराम इत्यादि के आसन (पीठ) चल रहे हैं। प्रथम इन्द्र त्वष्टा के पुत्र थे इसी प्रकार कुबेर विश्रवा के तथा जनक निमि के पुत्र थे। इतिहास के अतिरिक्त विष्णु, शिव तथा गणेश रूपक तथा प्रतीक भी हैं। नवीन पुराणकारों ने प्रतीक रूपक तथा इतिहास के रूप में वर्णन कर अनर्थ कर डाला। आइये इन पर पृथक्-पृथक् स्वल्प बुद्धि से विचार करें।

ब्रह्मा

ये आदि सृष्टि में उत्पन्न हुए थे। इनकी पत्नी का नाम सरस्वती था। ब्रह्मा के उपरान्त अन्य ब्रह्मा पुष्कर के राजा थे। ब्रह्मा तथा सरस्वती चारों वेदों के ज्ञाता की उपाधि थी। ये चारों वेद उनके ४ मुंह के समान थे। ब्रह्मा नाम के राजा भी होते रहे तथा प्रजा में भी चारों वेदों के ज्ञाता को ब्रह्मा कहा जाता था। आदि ब्रह्मा विराट् के पिता थे। ब्रह्मा का रूपक नहीं मिलता है।

विष्णु

विष्णु के पिता का नाम विराट् तथा पत्नी का नाम लक्ष्मी था। ये तिब्बत के बैकुण्ठ के राजा थे। इतिहास के अतिरिक्त विष्णु राष्ट्र का प्रतीक है। आर्ष ग्रन्थ में 'राष्ट्रं वै विष्णुः' कहा गया है। विष्णु के ४ हाथ हैं जिनमें क्रमशः शंख, चक्र, गदा तथा पद्म हैं। विष्णु कमल पर खड़ा रहता है। शिर के ऊपर सर्प रहते हैं तथा सर्पों पर सोता है तथा लक्ष्मी उसका पैर दबाती है। यह क्षीर सागर में सोता है। शंख घोषणा वा विजय, चक्र प्रगति का, गदा आयुध का, पद्म (कमल) धन का प्रतीक हैं। सर्प कड़ी सुरक्षा का, लक्ष्मी धन का, दबाना पुष्टि का, पैर आधारशिला का तथा क्षीर सागर आस-पास के देश का प्रतीक है। इन प्रतीकों को इतिहास के विष्णु से पृथक् रखना चाहिए। ऐतिहासिक विष्णु के गरुड़ (गरुड़ सदृश) विमान था। कहीं आने जाने के लिए गरुड़ का प्रयोग करते थे।

शिव

शिव अग्निष्वात्ता के पुत्र थे। इनकी पत्नी का नाम दुर्गा तथा पार्वती था। दुर्गा वा पार्वती के विमान का नाम व्याघ्र या सिंह यान था। प्रथम शिव भूटान के राजा थे इसलिए इन्हें भूतनाथ कहा जाता है। इन्होंने सुनीति, धर्म, सच्चाई तथा सच्चरित्रता इन गुणों से युक्त होकर ३६ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करने के कारण रुद्र की उपाधि प्राप्त की थी। प्रथम शिव की राजधानी कैलाश थी। अन्य शिव काशी तथा कन्नौज के भी राजा थे। शिव अत्यन्त ज्ञानी थे जिससे उनकी ज्ञानाक्षि खुल गयी थी। मनुष्य में ज्ञानाक्षि को ही तीसरी आंख कहते हैं। जब ज्ञानाक्षि खुलती है तो काम भस्म हो जाता है। काम का कोई देवता नहीं होता, वरन कामवासना को ही काम कहा गया है। शंकर जी ने अपनी कामवासना को जीत लिया था। शिर से जलधारा का तात्पर्य ज्ञान की धारा से है अर्थात् वे हर समय ज्ञान रस प्रवाहित करते रहते थे। विभूति धारण का तात्पर्य कर भी बड़े ऐश्वर्य वाले थे तथा योगाभ्यास से अनेक विभूतियों को प्राप्त किए थे। शिर पर चन्द्रमा का तात्पर्य बड़े शान्त स्वभाव के थे। सर्प धारण का तात्पर्य वे विपत्ति सहने वाले थे। ये दानी, तपस्वी तथा अप्रतिम शक्तिशाली थे। इनके पास पाशुपतास्त्र तथा शूलायुध या शूलास्त्र थे। इनके पुत्र गणेश तथा कार्तिकेय थे। गणेश मनुष्य थे उनका मुख हाथी के समान नहीं था। कार्तिकेय छहों शास्त्रों (दर्शनों) के ज्ञाता थे। ये ही शास्त्र उनके ६ मुंह थे। शिव मनुष्य थे। सर्प, चन्द्रमा, गंगा (जलधारा) तथा विभूति चित्र में दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है। उनके शरीर पर ये चीजें नहीं थीं। उनमें आन्तरिक गुण थे। तीसरी आंख का होना भी गुण था न कि शंकर जी के पास तीन आंखें थी। उनके पास भी हमीं लोगों के समान दो आंखें ऊपर से थीं। भीतर ज्ञान की तीसरी आंख खुल गयी थी। पौराणिकों ने तो शिव जी को जो ऐतिहासिक महापुरुष थे उन्हें डमरू, त्रिशूल, सर्प, चन्द्रमा, गंगा, विभूति तथा तीसरी आंख प्रदर्शित कर मदारी वा बरुआ बना दिये हैं। ऐसे चित्र देखकर प्रबुद्ध वर्ग में शंका उत्पन्न हो जाती है कि ऐसा विचित्र व्यक्ति भी कभी हुआ था वा नहीं। ऐसे रेखांकनों से अबुद्ध वर्ग में पाखण्ड तथा प्रबुद्ध वर्ग में घृणा भी उत्पन्न हो सकती है। यहां तक ऐतिहासिक राजा शिव के विषय में लिखा गया है। अब शिव के रूपक को लिखा जा रहा है। इतिहास तथा रूपक को पृथक् रखना चाहिए।

शिव परमात्मा को कहते हैं। शिव सबका आदि कारण है। उसका वंश कोई नहीं है। वह अपने आप अकेला है। इसी से वह दिगम्बर कहलाता है। सत्, रज तथा तम ही त्रिशूल तथा सोना, चांदी तथा लोहे के त्रिपुर हैं। जिनसे बने जीवात्मा, स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीरों में रहता है। मोक्षावस्था में परमात्मा इन शरीरों को नष्ट कर देता है। जिससे उसे त्रिपुरारि कहते हैं। धर्म ही वृषभ है। धर्म ही आनन्द की वर्षा कराता है। शिव (परमात्मा) वृषभारूढ़ (धर्मारूढ़) है। जो धर्माचरण करता है वह आनन्द को प्राप्त करता है। नाना कर्म ही उसकी जटाएं हैं। वेदत्रयी ही उसके नेत्र (ईक्षण शक्ति) हैं। यह शिव का रूपक हुआ। रूपक तथा इतिहास पृथक्-पृथक् होते हैं।

गणेश

ये शिव जी के पुत्र थे। इनका सम्पूर्ण आकार मनुष्यवत् था ये मनुष्य थे। इतिहास के अतिरिक्त गणेश (गण=गणराज्य, ईश=स्वामी) राष्ट्राध्यक्ष का प्रतीक है। गणेश (राष्ट्राध्यक्ष अर्थात् सम्राट्) के वर्णन मे निम्नलिखित बातें वर्णित की जाती हैं—

तीखी आंखें, बड़े-बड़े कान, लम्बी नाक, भारी पेट तथा निचले भाग में मूषक निम्न के प्रतीक हैं—

राष्ट्राध्यक्ष को चाहिए कि शत्रुओं पर तीखी आंखें रखें अर्थात् प्रत्येक कार्य को सावधानी से देखें लम्बे कान अर्थात् शत्रुओं की बात सुनते रहें, लम्बी नाक अर्थात् हानिकारक पदार्थ को दूर फेंक कर दूर का लाभ कर पदार्थ ग्रहण करना, भारी पेट अर्थात् सभी प्रकार की बातें जानकर पचा लेना तथा अपने नीचे मूषक अर्थात् गुप्तचर रखना जो शत्रुओं की रहस्यमय बातों को मूष (चुरा) करके ले आएं। राष्ट्राध्यक्ष को गणेश के वर्णन के अनुरूप बनना चाहिए। गणेश पूजन का तात्पर्य राष्ट्राध्यक्ष (सम्राट्) के आज्ञा के अनुरूप चलना है, देशभक्ति करना है। सभी जनों को विशेषकर आर्यजनों को चाहिए कि वे, रूपक इतिहास तथा प्रतीक को पृथक्-पृथक् रखकर सत्यासत्य से जनता को अवगत करावें।

भारतीय संस्कृति की परिवार-परिकल्पना

डा० धर्मचन्द्र विद्यालंकार

मानव ने अपनी विकास-यात्रा के दौर में जिस सामाजिक संस्था का विकास स्थायी रूप से किया वह परिवार है। अपनी सभ्यता के शैशवकाल में उसने देखा कि परिवार के बिना न तो उसका अपना विकास संभव है और न ही सामाजिक। उसने देखा कि परिवार मनुष्य का प्रमुखतम आश्रय-स्थल है। यहीं पर उसको पालन-पोषण, स्नेह-सहकार, अपनत्व-ममत्व और सेवा व सत्कार जैसी मधुर अनुभूतियां मिल सकती हैं, जो कि समाज में अन्यत्र दुर्लभ थी। अतएव सभ्यता के प्रभात-काल में ही वैदिक साहित्य में परिवार की परिकल्पना को साकार किया गया और उसमें सुखद व समरस जीवन-यापन के लिए सौमनस्य का वातावरण बनाने के लिए संगठन-सूक्त में एकता और प्रेम का भावपूर्ण आह्वान किया गया।

परिवार का शाब्दिक अर्थ "चारों ओर से आच्छादित करने वाला" होता है। जो व्यक्ति को अपनाकर उसके सर्वांगीण विकास में योग दे, वही परिवार समझना चाहिए। परिवार के माध्यम से ही वह समाज के सम्पर्क में आता है। एक प्रकार से परिवार ही प्रथम सामाजिक सोपान है।

आज कल के कई व्यक्तिवादी लोग कहते हैं कि आखिर परिवार की जरूरत ही क्या है? परिवार की परम्परा के विरोधियों से सबसे बड़ा प्रश्न हमारा यह है कि जवानी तो तुम होटलों और सड़कों और आफिस या कारखानों में बिता दोगे, लेकिन शैशव और वृद्धावस्था में तुम्हारा लालन-पालन और सेवा-सत्कार कौन करेगा? क्या बच्चा पालन-पोषण स्वयं ही कर सकता है? शैशव या वृद्धावस्था में ही क्यों युवावस्था में भी व्यक्ति को परिवार की जरूरत होती है। बीमारी की स्थिति में कौन आपकी सेवा-सुश्रुषा करेगा? कौन घर पर डाक्टर को बुलाकर लायेगा? कौन दवाई लाने के लिए बाजार के चक्कर लगायेगा? आवश्यकता पड़ने पर कौन आपको अपनी पीठ का सहारा देकर हस्पताल पहुंचायेगा? अतएव प्रत्येक अवसर पर वह चाहे दुख का हो या सुख का, परिवार की आवश्यकता अनुभव होती ही है। अकेला व्यक्ति तो सोल्लास हर्ष भी नहीं मना सकता। इसलिये हर्ष-दुख, रोग शोक और जीवन-मरण में आत्मीय जनों की उपस्थिति होती ही रहती है।

मनु महाराज ने लिखा कि जिस प्रकार सारे जीव-जन्तु वायु से जीवन पाते हैं उसी प्रकार से सभी आश्रमी गृहस्थी के आधार पर ही अपनी जीवन यात्रा चलाते हैं। उन्होंने तो इसे ऐसे बतलाया कि जैसे अनेकानेक नदी-नाले अन्त में आकर समुद्र में ही स्थान पाते हैं: उसी प्रकार से सभी आश्रमों के लोग गृहस्थ से ही आश्रय प्राप्त करते हैं। आधुनिक युग के महान समाज सुधारक और भारतीय संस्कृति के परम पुरस्कर्ता महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी गृहस्थ आश्रम अथवा परिवार के महत्व को दर्शाया है। उनके अनुसार जो परिवारों अथवा गृहस्थ की निन्दा करता है, वह स्वयं निन्दनीय है और परिवार-व्यवस्था का प्रशंसक है वह वंदनीय है। उनका कहना है कि परिवारों में ही यज्ञ-यागादि व संस्कार समारोहादि उत्तम से उत्तम और शुभ कार्य सम्पन्न होते हैं। अकेला व्यक्ति कभी भी कोई संस्कार या समारोह नहीं मना सकता। अतएव पारिवारिक व्यवस्था का अक्षुण्ण रहना किसी भी संस्कृति अथवा समाज के लिए अनिवार्य है।

मानव समाज के आदि स्रष्टा और शास्ता महाराज मनु ने समाज की इस स्वर्ण-शृंखला-परिवार-व्यवस्था को विकृत और विघटित होने के कारणों पर प्रखरतया प्रकाश डाला साथ में उनके निवारणोपायों की ओर भी दिशा निर्देश किया। उन्होंने लिखा है:

> "कुविवाहैः क्रियालोपैः वेदानामनध्यायेन च।
> कुलान्यकुलतां यान्ति: ब्राह्मणातिक्रमेण च॥"
>
> (मनुस्मृति)

अर्थात परिवारों में कुविवाहों की कुप्रथा प्रारम्भ होने से, वेदों के स्वाध्याय के न होने से, परिवारों में संस्कार-समारोह न होने से और ब्राह्मणों (विद्वानों) द्वारा अपनी मर्यादा का पालन न करने से ही कुल (परिवार) अकुलता अर्थात विग्रह-क्लेशादि को प्राप्त होते हैं।

मनु जी के कथनानुसार परिवारों के विघटन का सर्वप्रमुख कारण गुण-कर्म स्वभाव की कसौटी को भुलाकर किये गये विवाह हैं जिनमें कन्या और वर के धन और रूप को ही देखा जाता है। उनके गुण, रुचि, स्वभाव, क्षमता, संस्कारादि की उपेक्षा की जाती है। कई बार तो ऐसी शादियां लड़की लड़के के बीच न होकर, नौकरी-नौकरी के बीच व कार और कोठी के बीच होती है, क्योंकि आज हमने आर्थिक उपादानों को ही विवाह का मापदण्ड बना लिया है। जिस समाज में वर की बोली लगती है, ऐसे परिवारों में क्या कभी श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न होगी? अतएव दहेज को छोड़कर गुण कर्मानुसार विवाह ही वांछनीय हैं।

पारिवारिक विघटन का दूसरा कारण है संस्कारों का अभाव आज हम अपने बच्चों को महंगे से महंगे कपड़े पहनाते हैं, उन पर खूब खर्च करते हैं, लेकिन उनमें अच्छे संस्कार नहीं डाल पाते। स्वामी दयानन्द ने 'संस्कार विधि' में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त षोडश संस्कारो का विधान किया है। लेकिन आज कल तो हमारे परिवारों में मात्र रस्म अदायगी भर के लिए संस्कार कराये जाते हैं। संस्कार का अर्थ शोधना होता है। जिस प्रकार से भूमि से निसृत धातुएं, धूल, कार्बन युक्त होती है, तब उन्हें शोध शालाओं में शोधकर शुद्ध किया जाता है ऐसे ही मानव का भी संस्कारों से शोधन होना चाहिए। वह आजकल नहीं हो पा रहा। इसलिये भी सन्तान बिगड़ रही है।

तीसरा कारण वेदादि सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय का न होना बतलाया गया। अच्छे ग्रन्थों के अध्ययन से अच्छे विचार मिलते हैं, अच्छे विचारों से अच्छे आचार बनते हैं। आचार ही कर्म का व्यवहार है। पहले चाहे पूजा पाठ के रूप में ही सही घरों में सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय होता था, लेकिन आजकल उसका नितान्त अभाव है। तभी लोगों के विचार बिगड़ रहे हैं और विचारों के बिगड़ने से आचार-व्यवहार विकृत हो रहे हैं।

परिवारों की विकृति का चौथा कारण ब्राह्मणों द्वारा मर्यादा का उल्लंघन है। ब्राह्मण विद्वानों को कहा जाता है। विद्वान ही शिक्षक अथवा आचार्य होते हैं। उन्हें स्वयं स्वाध्याय करके ज्ञानवान बनके उत्तम ज्ञान और सदाचार की परम्परा को पुरस्सर करते हुए नयी पीढ़ी में उसे वितरित करना चाहिए। लेकिन शिक्षक तो आज मात्र वेतन भोगी है। वह आचार्य कहां? जो स्वयं उत्तम आचरण करे और दूसरों से कराये। चलचित्र, दूरदर्शन आदि ने भी हमारे पारिवारिक और सामाजिक वातावरण को दूषित किया है। हमें उपरोक्त बुराइयों को दूर करके अपने परिवारों को आर्य बनाना होगा, परिवारों से ही समाज बनेगा, तभी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का स्वप्न साकार हो सकेगा।

प्रवक्ता, सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल
नगर-१२११०२, जिला फरीदाबाद

मनुष्य का निर्माण और गुरुकुल

—कैप्टन देवरत्न आर्य

युग निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य निर्माण के समस्त उपायो पर गहन चिन्तन किया तथा उन उपायो का अपने ग्रन्थो में विस्तृत विवेचन किया है। मनुष्य जब तक वास्तविक अर्थ में मनुष्य नहीं बने तब राष्ट्र या विश्व का निर्माण नही हो सकता और इसके बिना विश्व शान्ति भी नहीं हो सकती है। मनुष्य के निर्माण या उसके विकास या उन्नति में आने वाली समस्त बाधाओ का अपनी सूक्ष्मदर्शिता से अवलोकन कर के प्रबल तर्कों एव शास्त्रो के पुष्ट प्रमाणो द्वारा खण्डन करके विश्व मे एक नई चेतना जागृत की है।

मनुष्य के निर्माण मे माता-पिता और गुरु इन तीनो का महत्व पूर्ण योगदान होता है। माता-पिता सन्तान का निर्माण कैसे करें इस विषय मे उन्होने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे लिखा है। माता पिता गृहस्थ के कार्यो मे व्यस्त रहते हैं इस लिए सन्तान की ओर हर समय ध्यान नहीं दे सकते तथा व्यक्ति को शिक्षा देने के साथ माता पिता का ममत्व और प्यार भी देने मे समर्थ व योग्य हो जिससे बच्चे को एकाकीपन का आभास न हो ऐसे उत्तरदायित्व का पूरी आस्था व निष्ठा से निर्वाह करने वाले व्यक्ति को 'गुरु' कहा है। गुरु बच्चे का बौद्धिक विकास ही नहीं करता और अपने आचरण के द्वारा शिष्य को सच्चरित्र और आत्मिक शक्तियो का विकास करता है। जहा पर बैठकर गुरु शिष्य का निर्माण करता है उसे 'गुरुकुल' कहते हैं। गुरु के द्वारा पढ़ाये जाने वाले ग्रन्थ अर्थात शिक्षा प्रणाली कैसी हो इसका विस्तार से विवेचन ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में किया है।

गुरुकुल की व्यवस्था के विषय मे ऋषि ने लिखा है कि 'सबको तुल्य वस्त्र, खान पान, आसन दिये जायें, चाहे वह राजकुमार या राजकुमारी हो चाहे दरिद्र की सन्तान हो, सबको तपस्वी होना चाहिए। ऋषि के इन वाक्यो से स्पष्ट प्रतीत होता है कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं होना चाहिए, शिक्षा प्राप्त करने का सभी को समान अधिकार है। धनी और निर्धन, या अधिकारी और सेवक की सन्तानो मे गुरु किसी भी प्रकार का भेद भाव न करे। वहा शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी एक ही गुरु के शिष्य अत खान पान, रहन सहनादि मे समानता होनी चाहिए। ऋषि के शब्दो स यह भी स्पष्ट होता है कि दरिद्र की सन्तान को भी शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अवसर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली द्वारा मिलता था। आज के भौतिकवादी शिक्षा प्रणाली मे अच्छे स्कूलो मे अधिक राशि दिये बिना प्रवेश ही नहीं मिल पाता है, जिससे प्रतिभा सम्पन्न योग्य निर्धन माता पिता की सन्तान होने के कारण शिक्षा से वंचित रह जाता है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली मे विद्या प्राप्ति के स्थान ग्राम नगर एव महानगरो की ओर शराबे और चकाचौन्ध से दूर एकान्त मे होने चाहिए जिनसे विद्यार्थी पूरे मनोयोग से विद्या प्राप्ति कर सके और उसका ध्यान भौतिक आकर्षण की ओर न जाने पाये। जिससे विद्यार्थी विविध विद्याओ मे योग्यता प्राप्ति के साथ अपना चरित्र निर्माण भी करता था। किन्तु वर्तमान विद्यालयो, महाविद्यालयो और विश्व विद्यालयो मे भौतिक वातावरण का दुष्प्रभाव छात्रो पर पड़ रहा है जिससे छात्रो के चरित्र का बहुत पतन हो रहा है। गन्दे गन्दे उपन्यासो से मानसिक चेतना का अध पतन हो रहा है। बीड़ी, सिगरेट, चरस, भग आदि नशीली चीजो के सेवन के आदी बनते जा रहे हैं जिनसे आज की युवा पीढ़ी की शारीरिक और बौद्धिक शक्तियो का ह्रास हो रहा है आज के युवा वर्ग के चारित्रिक पतन से सभी चिन्तित हैं और यदि यही क्रम चलता रहा तो ज्ञान-विज्ञान के हर क्षेत्र में प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों का अभाव हो जायेगा।

आधुनिक विषयो की शिक्षा गुरुकुलो में नहीं दी जाती है, इस कारण आज के वैज्ञानिक युग मे 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली' की ओर से विमुख हैं। अर्थ प्रधान युग मे विद्या अर्थकारी होनी चाहिये इसलिए गुरुकुल के प्रबन्धकों, सचालको को गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए तथा ऐसा पाठ्यक्रम तैयार करना चाहिए जिसे पढ़कर विद्यार्थी आज के किसी भी क्षेत्र मे होने वाले (कम्पीटिशन) स्पर्धा में भाग ले सके। चाहे व्यापार हो या विज्ञान, या चिकित्सक किसी भी क्षेत्र मे आधुनिक महाविद्यालयो मे पढ़ने वाले विद्यार्थी के समान गुरुकुल का विद्यार्थी भी भाग ले सके ऐसा पाठ्यक्रम गुरुकुलो का बनाना होगा। यदि नहीं तो क्या दुनिया से सब जगह गुरुकुल खोलकर अष्टाध्यायी महाभाष्य पढ़ाकर सस्कृत के पण्डित बनाकर उपदेशक पुरोहित बना दिये जायें तो गुरुकुलो के सभी स्नातक अपनी जीविकोपार्जन न कर सकेंगे। ऋषि दयानन्द ने भी आर्ष पाठ विधि का वर्णन करते हुए, आयुर्वेद अर्थात चिकित्सा शास्त्र गन्धर्ववेद अर्थात सगीत या राग विद्या, शिल्प गणित, ज्योतिष, भूगोल तथा अन्य देशीय भाषा के अध्ययन का उल्लेख किया है। ऋषि का विशाल दृष्टिकोण शिक्षा ने विषय मे था। इन विषयो का ज्ञान सस्कृत में विद्यमान ऋषियो के जिन ग्रन्थो मे था उनका उल्लेख किया। यदि इन विषयो के लिए ऋषि ग्रन्थ नही मिलते हैं तो आधुनिक ग्रन्थो से शिक्षा देनी ही चाहिए। शस्त्र अस्त्र का सचालन धनुर्वेद मे था और यदि आज उपलब्ध नहीं है। तो गुरुकुलीय छात्रो को लाठी चलाने के अतिरिक्त बन्दूक, पिस्तौल, मशीन गन या अन्य विविध शस्त्र अस्त्र सचालन का सैनिक प्रशिक्षण आधुनिक ढग से देना होगा। यदि ऐसा प्रशिक्षण दिया जाता है तो गुरुकुल से क्षत्रियोपाधिकरण धारण करने वाला स्नातक देश का सेनापति बन सकता है। ऐसा न होने से गुरुकुल के क्षत्रिय स्वभाव वाले स्नातक सेना से सर्वथा दूर रह जाते हैं। इसलिए मेरा विचार है कि गुरुकुलो का आधुनिकीकरण कर दिया जाए और आधुनिक महाविद्यालयो मे गुरुकुलो मे गुरुकुलों जैसी दिनचर्या और चरित्र निर्माण कार्यक्रम अपना लिया जाए तो हमारा राष्ट्र विश्व नेतृत्व कर सकता है। देश मे पुन. कपिल, कणाद पाणिनी, शकर, दयानन्द हरगोविन्द, खुराना जैसी प्रतिभाओ का प्रादुर्भाव हो सकता है और पुन हम विश्व को ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा का मार्ग निर्देश कर सकते हैं जैसा कि हजारों वर्षों पूर्व करते थे। जैसा कि मनु ने कहा है—

'एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्या सर्वमानवा।"

होलिकोत्सव समारोह

आर्य समाज शिवपुरी निकट रेलवे लाइन खतोली मे गत वर्षो की भाति इस वर्ष भी होलिकोत्सव समारोह दि० २४-३ ९४ से २७ ३ ९४ तक बडे हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है । इस अवसर पर श्रद्धे । स्वामी विश्वामित्र सरस्वती हिसार एव महाशय बेगराज आय फरीदाबाद अपनी निमल वाणी से ज्ञान की पावन गगा बहायेंगे अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनायें ।

वैदिक साहित्य वितरण समारोह

पश्चिमी दिल्ली की समस्त आर्य समाजो तथा धार्मिक एव सामाजिक सगठनो के सहयोग से १७ अप्रैल ९४ को बिन्दापुर मटियाला रोड नजदीक शिव मदिर परमपुरी नई दिल्ली ५९ मे दोपहर २ बजे से ५ बजे तक वैदिक साहित्य वितरण समारोह का आयोजन किया गया है । इस अवसर पर यज्ञ भजन तथा विशाल जनसभा आयोजित की गयी है। समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाज सेवी श्री मुन्शीलाल जी गुप्ता करेंगे । इस अवसर पर स्वामी आनन्द बोध सरस्वती श्री मदन लाल खुराना श्री साहिब सिह वर्मा प्रो० जगदीश मुखी श्री सूर्यदेव जी सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति समारोह की शोभा बढायेंगे । अत अधिक से अधिक सख्या मे पहुच कर समारोह को सफल बनायें ।

—सयोजक प अशोक कुमार

मुस्लिम युवती ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया

दिनाक ३-३ ९४ को आर्य समाज वसन्त विहार नई दिल्ली मे मुस्लिम युवती गुलरुख इनायत निवासी श्रीनगर कश्मीर ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार कर यज्ञोपवीत धारण किया तथा गायत्री मत्र का उच्चारण किया । युवती का नाम 'किस्मत'' रखा गया । तदुपरान्त आर्य युवक शिव परमार से विवाह सस्कार किया गया । सभा उपप्रधान श्री एस० पी कपूर तथा अन्य व्यक्तियो ने आशीर्वाद दिया । वर पक्ष के सभी सदस्यो ने हर्ष ध्वनि के साथ वधू को स्वीकार किया शुद्धि तथा विवाह सस्कार प० गणेशराम शर्मा ने सम्पन्न किया ।

—प० गणेशराम शर्मा

महात्मा वेदभिक्षु जयन्ती समारोह

म० वेदभिक्षु (प० भारतेन्द्र नाथ) की ६६वीं जयन्ती एव सस्थान का वार्षिकोत्सव वेद मन्दिर महात्मा वेद भिक्षु, वेदाश्रम इब्राहीमपुर दिल्ली ३६ मे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर ८ से १४ मार्च तक भिक्षु दिवस्यपुत्र भारती के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेदीय यज्ञ का आयोजन किया गया है। समारोह मे अनेको सम्मेलनो का आयोजन किया गया है। १२ मार्च को सामाजिक समरसता सम्मेलन महत अवेद्यनाथ (ससद सदस्य) की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। मुख्य अतिथि श्री साहिबसिंह वर्मा, श्री वैकुण्ठ लाल शर्मा, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा, इन्द्रराज सिंह विधायक स्वामी उत्तम प्रकाश प्रो० रघुबीर वेदालकार तथा चमनलाल क्षत्रिय सहित अनेको प्रतिष्ठित जन पधार रहे हैं। १३ मार्च को तीन बजे से महात्मा वेद भिक्षु जयन्ती व धर्म सस्कृति सम्मेलन स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री मदनलाल खुराना, केदारनाथ साहनी विजयकुमार मल्होत्रा, आलोक कुमार, डा० श्याम सिंह शशि सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनाये।

पुरी के शकराचार्य महाराज से अपील

नारियो हरिजनो के वेद पढने पर शकराचार्य ने आक्रोश मे आकर कलकत्ता मे नारी विरोधी भाषण देकर जगत गुरु का नाम बदनाम कर दिया साथ साथ सृष्टिकर्ता ईश्वर के ज्ञान वेद से विरोधी बयान देकर ऐसा सिद्ध करने का प्रयास किया है जैसे वेद में नारियो का कोई स्थान ही नही हो। नारी का अपमान करके उन्होने असभ्य अपराध किया है। अत उनको अपने शब्द वापस लेने चाहिए अन्यथा हम आन्दोलन करने के लिए विवश होगे।

समस्त सदस्य आर्य समाज मधुपुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार १९९४

वैदिक धर्म, वैदिक साहित्य आर्य एवं समाज के प्रति समर्पित भाव से गई श्लाघनीय सेवाओ के फलस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार नीधि न्यास, आर्य समाज फुलेरा जिला जयपुर राजस्थान की ओर से १०,०००/ (दस हजार रुपया) नकद दयानन्द स्वर्ण पदक, उत्तरीय पत्र, अभिनन्दन पत्र तथा राजस्थानी सस्कृति का प्रतीक चुनड़ी का साफा एवं श्री फल महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार स्वरुप प्रति वर्ष महर्षि निर्वाण दीवस पर प्रदान किया जाता हैं। सन १९९४ के महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार के लिए कोई भी आर्य विद्वान स्वय अपना या अन्य आर्य विद्वान का नाम पूर्ण विवरण तथा कृतियों सहित दिनाक ३१ ७-९४ तक प्रस्तुत कर सकता है।

—भवर लाल शर्मा आचार्य

आर्य समाज लोअर परेल की ओर से अभ्यासपुस्तिका एव नोटबुक का वितरण व सत्कार समारम्भ

आर्य समाज लोअर परेल की ओर से नोटबुक का वितरण तथा सत्कार समारम्भ माटुगा आर्य समाज के महामन्त्री श्री मिठाईलाल जी सिंह की अध्यक्षता मे रविवार दिनाक ८ अगस्त १९९३ को सम्पन्न हुआ। इस समय श्री ओकारनाथ जी आर्य प्रधान आर्य प्र तनिधि सभा बम्बई एव पूर्व विधायक श्री रा० अ० खरे उपस्थित थे।

पूर्व विधायक श्री रा० अ० खरे ने अपने भाषण मे सस्था के सस्थापक स्व० कर्मवीर विटठलराव यादव व प० लक्ष्मणराव ओवले शास्त्री ने ६० साल पूर्व कामगार बस्ती मे शुरू किये इस सस्था के प्रगति के लिए मदद का आह्वान किया।

अधरों की मुस्कान स्वास्थ्य का कीर्तिमान

आज हम अपने चारो ओर मानवों के चेहरो पर दृष्टि डालते है, तो एक बात स्पष्ट दिखाई देती है कि मुस्कराहट कम हो गई है या गायब हो गई है और विषादो, उलझनो, नसो के तनाव आदि से ग्रस्त मानव तेजी से रोग का शिकार बनता आ रहा है।

जैसे बिना सुगन्ध के सुन्दर से सुन्दर फूल फीका और सारहीन लगता है। वैसे ही बिना मुस्कान के सुन्दर मुख भी। चेहरे की या होठो की मुस्कान के लिए चित्त की प्रसन्नता आवश्यक है। यदि चित्त प्रसन्न है तो शारीरिक व्याधि न होते हुई भी मनुष्य रोगी हो जाता है। चिकित्सा वैज्ञानिको ने साबित कर दिया है कि उच्च रक्त चाप (High Blood Presure) मधुमेह (Diabeta), दमा और कैन्सर जैसे रोग भी नसो के तनाव (Mental Tension) और चित्त की अप्रसन्नता के कारण होते हैं। चित्त की प्रसन्नता और स्वास्थ्य का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। वास्तव में स्वस्थता का अर्थ है 'स्व-स्थता' अर्थात् अपने मे स्थित होना। और अपने में स्थित व्यक्ति ही प्रसन्न चित्त हो सकता है और प्रसन्नचित्त व्यक्ति ही स्वस्थ।

मुख की प्रसन्नता एक ऐसा परिधान है जिसे पहन कर हम समाज में चाहे कहीं चले जाए, हमारा स्वागत होगा सम्मान होगा, स्वागत और सम्मान दो ऐसे टॉनिक हैं जो मनुष्य को दीर्घ जीवी करत हैं।

जब अस्वस्थ तन हो या पीडित मन हो तब जबरदस्ती हंसना भी औषधि का काम करता है। हसी ऐसी प्रसन्नता है जो शरीर और मन के कण-कण मे व्याप्त होती है और शरीर एव मन के हर रोग को हर लेती है 'कामायनी' में दी गई यह सलाह आज के लाखो रोगो का सहज इलाज है।

औरो को हसते देखो मनु
हसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर लो
सब को सुखी बनाओ।

होली पर्व

क्या ही सुन्दर दृश्य है इस मस्त फागुन मास का
एक नया सन्देश है सबके लिए मधु हास का।
बह रहा शीतल पवन चहु ओर नभ हरषा रहा,
आज हस हस कर सुधाकर है सुधा बरसा रहा।
मालती चम्पा जुही हाथो मे ले पिचकारियां,
खेलने को फाग पिय से कर रही तैयारियां।
आज देखो कैसा उत्सव हो रहा आकाश मे,
एक अदभुत ही छटा है चन्द्र के प्रकाश में।
नाचते गाते सितारे रत जगा है रात भर,
आज रजनी बन के सजनी जा रही साजन के घर।
पर यह होली आर्यों का एक अनोखा पर्व है,
चिरकाल से अपने हमे हर पर्व पर ही गर्व है।
वृद्ध बालक और युवा क्या रक है क्या राव है,
आज तो सबके मनो मे एक जैसा भाव है।
ग्वाल बालो की यह टोली ग्राम मे सजने लगी,
कृष्ण की मुरली मधुर भी फिर यहा बजने लगी।
देख कर हर बाल मे मोती जडे अनमोल है,
हो रहे हैं कृषक हर्षित गाते बजाते ढोल है।
अन्न पक कर खेत में देखो खड़ा है इस समय,
यज्ञ कर इस अन्न का भगवान से करते विनय।
हे प्रभो रक्षा करो इसकी नहीं यह नष्ट हो,
हो सुखी सब भाग्य से नहीं किसी को कष्ट हो।
आज तो निष्कपट मनो से दूर कर दो शत्रुता,
हो परस्पर और भी दृढ़ हम सभी की मित्रता।
भाई भाई की तरह सब प्यार से शीतल रहे,
बन के आर्य का नाम हो सन्मार्ग पर चलते रहे।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बैंच द्वारा श्री कैलाशनाथसिंह की अपील रद्द

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के गत वर्ष सम्पन्न हुए चुनाव जिसमे समस्त प्रान्त के प्रतिनिधियो द्वारा श्री इन्द्रराज जी को प्रधान और प० मनमोहन तिवारी को मन्त्री चुना गया था, उसे संस्था पंजीयक कार्यालय द्वारा अपने पत्र दिनांक २४ २-९१ द्वारा सरकारी रिकार्ड में दाखिल कर लिया गया था। रजिस्ट्रार की इस कार्यवाही के विरुद्ध श्री कैलाशनाथसिंह आदि ने उच्च न्यायालय के सम्मुख एक याचिका प्रस्तुत करते हुए प्रार्थना की थी कि रजिस्ट्रार के उक्त आदेश को रद्द कर दिया जाय।

उच्च न्यायालय के लखनऊ बैंच के माननीय न्यायाधीश न्यायमूर्ति ए० रज्जा ने श्री कैलाशनाथसिंह की याचिका को अपने ४-३ ९४ के निर्णय द्वारा इस टिप्पणि के साथ रद्द कर दिया है कि याचिकाकर्ता चुने हुए प्रतिनिधियों के स्थान पर स्वय आर्य प्रतिनिधि सभा का सचालन करना चाहता है।

फिर वही गलती

(पृष्ठ ३ का शेष)

कश्मीर के मामले मे सबसे बड़ी विडम्बना यह रही है कि प्रधानमन्त्री कुछ कहते रहे गृहमन्त्री कुछ कहते रहे केन्द्रीय गृह राज्यमन्त्री कुछ कहते रहे और राज्यपाल कुछ और ही कहते रहे। सबकी ढपली अलग रही, सबके राग अलग रहे। नतीजा यह हुआ कि भ्रांतियां बढ़ती चली गई, गुत्थी उलझती चली गई और कुल मिलाकर हालत बकौल शायर यह हो गई कि—

कुछ न समझे खुदा करे कोई।

हैरानी की बात तो यह है कि अतीत की गलतियो से कुछ भी सीखने की कोशिश आज तक नहीं की गई और पहले वाली गलती ही कश्मीर के मामले मे फिर दोहराई जा रही है और प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हा राव, गृहमन्त्री श्री चवन गृह राज्यमन्त्री श्री राजेश पायलट और राज्यपाल जनरल कृष्णा राव सभी की बातो मे विरोधाभास प्रतीत हो रहा है।

कुछ समय पहले फैसला यह हुआ था कि कश्मीर के मामले को प्रधान मन्त्री श्री नरसिम्हा राव स्वय देखेंगे, अत होना तो यह चाहिए था कि जो कुछ श्री राव कहें वही उनके गृहमन्त्री और गृह राज्यमन्त्री कहे और वही केन्द्र द्वारा नियुक्त राज्यपाल कहें मगर हो रहा है इसके उलट।

ऐसी स्थिति मे स्वाभाविक रूप से प्रदेश मे आतकवाद के विरुद्ध लड़ रहे सैनिको और सुरक्षा बलो को क्या गलत सकेत नही जायेंगे क्या आतकवादी तत्व और उन्हें सहायता सहयोग और समर्थन देने वाली शक्तियो को लाभ नहीं पहुचेगा और क्या आतकवाद के विरुद्ध लड़ाई मे हमारी स्थिति दुर्बल नहीं होगी ?

यह बात कदापि भूली नहीं जानी चाहिए कि पाकिस्तान ने आतकवादियो के माध्यम से एक अघोषित युद्ध हम पर थोप रखा है, अत पूरी गम्भीरता के साथ उनके इस षडयन्त्र को विफल बनाने को ही प्रधिमान दिया जाना चाहिए। इस लड़ाई में ऊपर से नीचे तक अर्थात प्रधानमन्त्री से राज्यपाल तक सभी की सोच एक होनी चाहिए, सुर एक होना चाहिए, एक्शन एक होना चाहिए और जब तक आतकवाद की आग पर प्रभावपूर्ण ढग से पानी नहीं पड़ जाता, तब तक 'लोकतान्त्रिक प्रक्रिया' की बात जबान पर भी नहीं आनी चाहिए।

— विजय
सम्पादक, पंजाब केसरी

दयानन्द सेवाश्रम संघ थान्दला

आज दिनांक ७ ३-९४ को महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थान्दला में महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक सौ सत्तरवां जन्मोत्सव समारोहपूर्वक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष में संस्था द्वारा आयोजित यज्ञ, व्याख्यान एवं विशाल शोभा-यात्रा में संस्थान्तर्गत संचालित समस्त प्रवृत्तियों के कार्यकर्ता एवं छात्र-छात्राओं ने भी भाग लिया।

२
पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४६/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२७-३-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९१
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 24-25-3-1994

आर्यसमाज स्थापना दिवस

९ अप्रैल ९४, शनिवार, मध्याह्नोत्तर २ से ५ बजे तक
सप्रूहाऊस, नई दिल्ली

आप सब परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

—: निवेदक :—

महाशय धर्मपाल वानप्रस्थ — प्रधान
डा० शिवकुमार शास्त्री — महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

होलिका जली नहीं

स्वराज्य में सुराज की है कामना फली नहीं।
यह आसुरी प्रवृत्तियों की होलिका जली नहीं।।
स्वतन्त्रता का तन्त्र आज लक्ष्मी है चूमती।
उलूक पे सवार जो स्वदेश में है घूमती।।
प्रसुप्त न्याय हो चुका उलूक की चपेट में।
प्रबुद्ध जन भी लक्ष्मी की आ चुके लपेट में।।
प्रजा के तन्त्र-मन्त्र की है दाल कुछ गली नहीं।
यह आसुरी प्रवृत्तियों की होलिका जली नहीं।।
स्वतन्त्र देश में स्वतन्त्र जन अभी निरे नहीं।
कफन दफन समय में तन अभी निरे नहीं।।
स्वदेश का दरिद्र वर्ग आज भी अछूत है।
विवेक जग सका नहीं भगा न छूत-भूत है।।
विडम्बना पुजारियों की आज भी ढली नहीं।
यह आसुरी प्रवृत्तियों की होलिका जली नहीं।।
सुगन्धि यज्ञ का करे न धूम्रपान होम है।
प्रमत्त पेय पी रहे सुरा का आज सोम है।
पिशाच सा बना लिया मनुष्य ने यह अंग है।
बसन्त में अनन्त आज कीचड़ों का रंग है।।
शरीर पे सुगन्धि अब लगे इन्हें भली नहीं।
यह आसुरी प्रवृत्तियों की होलिका जली नहीं।।
विचारकों की दृष्टि दाम वाम में लगी हुई।
बिसार ओ३म् नाम वृत्ति काम की जगी हुई।।
विशुद्ध आज देश में मिले कहीं दवा नहीं।
सुमानवी चरित्र की मिले कहीं हवा नहीं।।
मनीषियों की मन्त्र शान्ति भी चली नहीं।
यह आसुरी प्रवृत्तियों की होलिका जली नहीं।।

—सत्यव्रत चौहान सिद्धान्त शास्त्री
पुङ्री मैनपुरी (उ०प्र०)

मूर्तिपूजा के दुष्परिणाम

मूर्तिपूजा के बारे में एक मनोवैज्ञानिक आपत्ति यह भी है कि मूर्तिपूजक अपने पुरुषार्थ के स्थान में सर्वथा परावलम्बी हो जाता है अपने कर्त्तव्य, पुरुषार्थ तथा परिश्रम की उपेक्षा करके वह अपने उपास्यदेव की कृपा और आशीर्वाद को ही अपने जीवन का एक मात्र लक्ष्य समझने लगता है, परिणामस्वरूप इस कृपा और आशीर्वाद,को प्राप्त करने के लिए वह उन सब साधनों का भी सहारा लेता है,जिनके द्वारा हम अपने से वरिष्ठ या शक्तिशाली व्यक्तियों को प्रसन्न करते हैं चाहे उसके लिए भेंट, रिश्वत, खुशामद, कुछ भी क्यों न करनी पड़े। इसीलिए मूर्तिपूजक वास्तव में व्यवहार में सबसे बड़े नास्तिक बन जाते हैं। ईश्वर की श्रद्धा,शक्ति या अस्तित्व उनके लिए एक ढोंग और साधन मात्र रह जाता है।

आर्य गुरुकुलों की गो.

भारत के आर्य गुरुकुलों तथा संस्कृत विद्यालयों की दो दिवसीय गोष्ठी १०, ११ अप्रैल १९९४ को गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार में हो रही है। गोष्ठी में गुरुकुलों से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर विचार किया जाएगा। गुरुकुलों के अध्यक्षों तथा आचार्यों से पुनः निवेदन है कि वे इस गोष्ठी में भाग लेकर अपने अमूल्य सुझावों से उपकृत करें। अपने आने की सूचना संयोजक सार्वदेशिक विद्यार्य सभा दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली ११०००२ के पते पर ३०-३-९३ तक देने का कष्ट करें ताकि भोजन निवासादि की सुव्यवस्था की जा सके।

जगदेव, संयोजक सार्व० विद्यार्य सभा

महर्षि जन्मोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली : ८ मार्च—युग पुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती के १७०वें जन्म-दिवस पर राजधानी के आर्य समाज मंदिरों में विशेष यज्ञ, प्रीतिभोज, साहित्य वितरण, आदि का आयोजन किया गया। अन्ध विश्वास कुरीतियों का अन्धकार दूर करने वाले दयानन्द की याद में रात्रि को आर्य-समाज मंदिरों में दीपमाला कर जगमगाहट की गयी।

आर्य समाज मंदिर तिमारपुर—में पत्राचार विद्यालय के पास झुग्गी बस्ती [illegible] हवन के बाद प्रसाद में मिठाई वितरित कर दयानन्द का जन्मोत्सव मनाया गया। दिल्ली [illegible] प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्य देव ने झुग्गी-वासियों [illegible] से धूम्रपान, मांस, शराब व नशीले पदार्थों का सेवन त्याग [illegible] को सच्ची श्रद्धांजलि दें। गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल ने ऋषि दयानन्द को निर्धनों, दलितों व अछूतों का मसीहा बताया। समाज के प्रधान श्री तेजपाल मलिक ने भी ऋषि को श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्यसमाज हनुमान रोड—में दयानन्द जन्मोत्सव लीक से हटकर भक्ति संगीत कार्यक्रम के रूप में मनाया गया। आर्य संगीताचार्यों ने दयानन्द एवं प्रभु भक्ति के मधुर गीतों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। सर्वश्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती, वेदप्रचार अधिष्ठाता, दिल्ली सभा, भजनोपदेशक पं० आशानन्द सहित आठ महानुभावों को सम्मानित किया गया।

आर्यसमाज दीवान हाल—में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिन पर हवन के बाद ऋषि जीवन पर विशेष प्रकाश डाला गया तथा प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया।

आर्यसमाज सदर बाजार—में दयानन्द के जन्म दिन पर डा० वाचस्पति उपाध्याय, श्री अशोक विद्यालंकार को सम्मानित किया गया। यह सम्मान स्व० वैद्य प्रहलाद दत्त जी की जन्मशती में दिया गया।

आर्यसमाज जनकपुरी सी-ब्लाक, आर्यसमाज सैनिक विहार, आर्यसमाज दरिया गंज आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, आदि में भी दयानन्द जन्मोत्सव धूम-धाम से मनाया गया।

आर्य समाज बुरहानपुर (म० प्र०)

दि० ७ मार्च ९४ को महर्षिदयानन्द सरस्वती जी का १७०वां जन्म दिवस सानन्द मनाया गया। प्रातः काल ७ से ९-३० तक ध्वज वन्दन, हवन, भजन, प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। ९-३० से ११-३० बजे तक प्रभात फेरी निकाली गई।

अपराह्न ४ बजे सभा का आयोजन किया गया जिसमें भजन और व्याख्यान का कार्यक्रम हुआ।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

महर्षि दयानन्द उवाच

इससे मनुष्यों को उचित है कि सद्विद्यादिक उत्तम गुणोंका जगत् मे प्रचार करना,व्यवहार परमार्थ की शुद्धि और उन्नति करना तथा वेदविद्यादि सनातन ग्रन्थ का पठन-पाठन और नाना भाषाओं में वेदादि सत्य शास्त्रों का सत्यार्थ प्रकाश करना, एक निराकार परमात्मा की उपासनादि का विधान करना, कलाकौशलादि से स्वदेशादि मनुष्यों का सुख विधान, परस्पर प्रीति का करना, हठ, दुराग्रह दुष्टों के संगादि को छोड़ना,उत्तम-उत्तम पुरुष तथा स्त्री लोगों की सभाओं से सब मनुष्यों का हिताहित विचारना और सत्य व्यवहारों की उन्नति करना इत्यादि मनुष्यों का आवश्यक कर्त्तव्य है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ८]   दयानन्दाब्द १७०   सृष्टि सम्बत् १९७२९४९०९५   चैत्र कृ० ८ सं० २०५२   ३ अप्रैल १९९५

हिन्दू विहीन कश्मीर स्वीकार नहीं होगा

पाकिस्तान अपनी खुफिया एजेंसी द्वारा भारत में मजहबी नफरत पैदा करने की कोशिश कर रहा है

—फारुक अब्दुल्ला

नई दिल्ली १९ मार्च। कश्मीर के पूर्व मुख्यमन्त्री फारुक अब्दुल्ला का मानना है कि हम उस कश्मीर को कबूल नहीं करेंगे जहां हिन्दू न हो। जागरण के साथ लम्बी बात-चीत मे डा० अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि पाकिस्तान अपनी खुफिया एजेंसी आई०एस०आई०के माध्यम से साम्प्रदायिकता का जहर फैलाकर बड़े स्तर पर साम्प्रदायिक अशान्ति फैलाना चाहता है। पाकिस्तान चाहता है कि हिन्दुस्तान में मुसलमानों के प्रति घृणा पैदा हो।

उन्होंने बड़ी दृढ़ता से कहा कि मेरे पास इस बात के पक्के सबूत हैं कि मजहब के नाम पर नफरत पैदा कर लोगों को बांट दिया जाए ऐसी योजना पाकिस्तान बना रहा है।

कश्मीर के हालात क्यो खराब हुए और उसके लिये कौन जिम्मेदार है इस पर डा० अब्दुल्ला खुलकर कुछ नहीं कहना चाहते लेकिन वह काफी हद तक पूर्व प्रधानमन्त्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को दोषी मानते हैं।

कश्मीर में तैनात नौकरशाही पर भ्रष्टाचार के अनेक आरोप लगाते हुए डा० अब्दुल्ला कहते है कि लोगों में यदि विश्वास पैदा करना है तो नौकरशाही को बदलना होगा। प्रस्तुत है डा० फारुक अब्दुल्ला से हुई बात-चीत—

जागरण—कश्मीर के जो हालात हैं वह ऐसे क्या है? कौन जिम्मेवार है? आपने जब कश्मीर छोड़ा, तब के और आज के कश्मीर में जमीन आसमान का अन्तर है। यह अन्तर कैसे आ गया?

फारुक—देखिये लम्बी कहानी है। पांच साल की कहानी। चन्द लाइनों में चन्द मिनटों में पूरा करना बड़ा मुश्किल होगा। गलतियां हुई हैं, इसमें कोई शक नहीं है। गलतियो से ही आज यह हालत हुई। उस वक्त मुश्किल से तीन सौ लड़के थे, जिनको ट्रेन्ड करके ले आये थे। उनमें आधे हमारी जेलों में पड़े हुए थे। बहुत कम लोग बाहर रह गये थे। उसके बाद जो स्थिति बनी और जिस तरह से बार्डर खुल गये और लोग आते गये। आसानी से इधर से गये उधर से आये। जितना उनसे हो सका उतना उन्होंने किया। अब उसको दोहराना या उसका बयान करना गलत होगा। हालत तो यहां तक पहुंच गई कि ९० से आज तक जमीन आसमान का फर्क है। जो बरबादी होनी थी वह तो हो चुकी है। अस्पताल जमीन जला दिये गये हैं और खुद अपने लोग जो बेचारा गरीब कश्मीरी है वह तो सहमा हुआ है क्योंकि अब बन्दूक जो आ गई है। वह ऐसे लोगों के सामने आ गई है जो अब तक 'क्लासवार' भी लड़ रहे हैं। जिनके पास कुछ नही था वह अब पैसा बनाके अपना मकान बना रहे हैं। अपनी दुकानें खड़ी कर रहे हैं। बन्दूक के बल पर वे अपने आपको मजबूत बना रहे हैं। पहले तो आपसी प्यार था, वह अब खत्म हो गया। औरतों के साथ अत्याचार किये जा रहे हैं।

जागरण—क्या आप उनको आइडेंटीफाई करेंगे कि वे कौन लोग है?

फारुक—वे लोग हैं जो पाकिस्तान से ट्रेनिंग पा के आये हैं। खासकर हिजबुल मुजाहिद्दीन के लोग है या इकवानुल मुसलमीन के। आतंकवादियों के खिलाफ लोगों में जबरदस्त रोष है लेकिन बन्दूक की वजह से बोल नहीं रहे हैं। अभी हम गए वहां। गांवों में गए। हमने देखा लोगों की हालत काफी सहमी हुई है, डरे हुये हैं। वे समझते हैं कि जैसे ही हम जायेंगे बन्दूक वाले लोग फिर आ जायेंगे और उधम करना शुरू कर देंगे। क्योंकि उनसे वे चावल भी ले जाते हैं सामान भी ले जाते हैं। पैसे भी ले जाते हैं भेड़ बकरी भी इनसे ले जाते है। बन्दूक के बल पर।

जागरण—प्रशासन तन्त्र नाम की चीज नही रही वहां यह मान लिया जावे?

फारुक—हां ऐसी कई चीजें हैं। जितना हमारा कन्ट्रोल होना चाहिये उतना नहीं है।

जागरण—इसके लिये किसे दोषी मानते हैं आप?

फारुक—मैं दोषी मानता हूं सरकार को जो लोकल सरकार है वह जिम्मेवार है।

जागरण—आपके हटने के बाद तो वहां कोई सरकार रही कहां?

फारुक—लोकल सरकार से मतलब है एडमिनिस्ट्रेटिव सेटअप। गवर्नर हैं, उसके बाद उसके एडवाइजर हैं और उसके बाद नीचे हैं। वे सब जिम्मेदार हैं इस मुसीबत के लिये।

जागरण—बार-बार यह बात उठती रही है और आपने भी बा -

(शेष पृष्ठ २ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आई.एस.आई. भारत में सांप्रदायिक अशांति पैदा कर रही है

कश्मीर में राजनीतिक प्रक्रिया के लिए सियासी माहौल बनाना चाहिए

(पृष्ठ १ का शेष)

बार यह दोहराया है कि जो अधिकारी केन्द्र से गये उनके खिलाफ जो जजमेंट है लोगों के अन्दर कि वे उनकी वर्किंग से सेटेसफाइड नहीं है। उनके खिलाफ तमाम शिकायतें है, पैसे बनाने की।

फारुक—आपने जो कहा, उसमें कोई शक नहीं है। अभी उन्होंने यह देख लिया भ्रष्टाचार का वह केस जिसमें आठ करोड़ रुपये का गबन हुआ। एक ही जिले में। पता नहीं कितने हजारों करोड़ों का गबन हुआ होगा बाकी जिलों में फंड्स निकाले जा रहे हैं। जो काम नहीं हुए हैं उन पर पैसा दिया जा रहा है। कई जगह से लोग शिकायत करते हैं कि जो लोग नौकरी में लगते हैं वे आतंकवादियों की सिफारिशों पर लगते हैं जिनसे वे पैसा ले रहे हैं। जिस तरह हजरत बल के मामले को निपटाया गया, कोई गोली नहीं चली और जिस तरह से जिनेवा में एक जीत हासिल हुई। उससे आतंकवादी बौखला गए हैं। पाकिस्तान से शह मिल रही है। इसमें कोई शक नहीं है। पाकिस्तान में आई.एस.आई. से इनको कहा दी जा रही है कि ये करो वो करो, ऐसा करो। ये लोग उनके गुलाम हैं। गुलामी में ये सब कर रहे हैं।

जागरण—हमारी इंटेलिजेंस, हमारी होम मिनिस्ट्री ये सब बैठकर क्या कर रहे हैं। हमारी इतनी बड़ी फौज, हमारा पूरा तन्त्र हमारी पूरी व्यवस्था घाटी में क्या करती है? क्योंकि जिस समय आपकी सरकार रही। आपके पिताश्री की लम्बे समय तक सरकार रही, ये हालात कश्मीर में कभी पैदा नहीं हुए। कश्मीर जन्नत माना जाता रहा, हिन्दुस्तान का। आपके कश्मीर छोड़ने के बाद हालात इतने बदले और बद से बदतर हो गये कि आज विदेशी तो दूर हिन्दुस्तानी भी वहां जाने की स्थिति में नहीं है। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि हमें कहीं तो रिसपोंसिबिलिटी फिक्स करनी होगी, क्या राजनीतिज्ञ जिम्मेदार हैं?

फारुक : राजनीतिज्ञ मूलतः इसके लिए जिम्मेदार हैं केंद्र सरकार हो मनमर्जी हुकूमत हो या फिर उसके बाद प्रशासन जो हमने वहां सेट की है वह जिम्मेदार है। क्योंकि वहां आज जो भी हुकूमत चल रही है वह केंद्र से चल रही है। अगर हालत बिगड़ी तो उसके लिए केंद्र जिम्मेदार है। आज हम यह नहीं कह सकते कि वहां स्थानीय राजनीतिज्ञ जिम्मेदार है। स्थानीय राजनीतिज्ञ तो वहां है ही नहीं, जिम्मेदार वे खुद हैं जो सेंटर में हैं और इसी वजह से वहां हालत ऐसी बन गई है कि लोग तंग आ गए हैं। मैं उन सुरक्षा बलों से कहूं कि वे सब ठीक कर देंगे तो ठीक नहीं है। स्थानीय प्रशासन की मदद हो और वह ऐसी प्रभावशाली हो जो कि सुरक्षा बलों को इस्तेमाल कर सके। जब तक समन्वय नहीं होगा तालमेल नहीं होगा इनका तब तक हम वह परिणाम नहीं हासिल कर सकेंगे जो चीज हम चाहते हैं।

जागरण तो यह प्रक्रिया कैसे शुरु होगी।

फारुक : कहा गया था कि यूनिफाइड कमांड के नीचे बाकी सब फोर्स काम करेगी। एक ढांचा चलेगा उस ढांचे को मजबूत करना है और उस ढांचे को मजबूत करके किसी आदमी को बराबर उसके काम को देखना है, उसके बिना नहीं चलेगा। ये नहीं होगा कि हम छह महीने के बाद आएंगे। और छह महीने के बाद नहीं आएंगे। हर महीने जाना पड़ेगा। तीन चार दिन वहां रुकना होगा और तीन चार दिन में देखें कि वहां पर क्या हालत है तब कुछ हो सकता है। लेकिन मैं समझता हूं कि कुछ पहल होने वाली है। राजेश पायलट का कश्मीर पहुंचने का देखा हुआ है, आगे भी इस चीज को देखें।

जागरण : जम्मू कश्मीर में राज्यपाल की नियुक्ति पर राजनीतिक प्रक्रिया शुरू करने के लिए राजनीतिक, व्यक्ति ज्यादा सक्षम साबित हो सकता है या फिर सरकारी व्यक्ति?

फारुक : मैं समझता हूं कि राजनीतिक प्रक्रिया के लिए एक सियासी माहौल पैदा करने के लिए एक सियासी आदमी बहुत जरूरी है। सियासी आदमी ऐसा होना चाहिए वह जिसमें हिम्मत हो कि अपनी जान पर खेलकर भी वह समझे कि वह कुछ हासिल करने आया है। जो हमने पंजाब में किया वह वहां क्यों नहीं कर सकते?

जागरण : अगर लोगों से वहां जाकर बातचीत की जाए तो पता लगता है कि उनमें किसी और है?

फारुक : देखिए कई दफा इंसान अपने घर में भी अपने रिश्तेदारों से अपने चाहने वालों से नाराज होकर बहुत कुछ कह देता है। वही हालत कश्मीर के लोगों की है। वे सोचते हैं कि उन पर चार पांच साल से जाक

(शेष पृष्ठ ११ पर)

नव सम्वत् शोभा यात्रा में आर्य समाजें अवश्य भाग लें

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों को प्रेरणा की जाती है कि आगामी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रमी सम्वत् २०५१ को नव सम्वत् के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय श्री सनातन धर्म युवक मण्डल(पंजीकृत) १८१, नयाबांस दिल्ली-६ की ओर से विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। शोभा यात्रा दिनांक ११ अप्रैल १९९४ को मध्याह्न २ बजे से गांधी मैदान चांदनी चौक से फव्वारा, आर्यसमाज दीवानहाल मन्दिर, गौरी शंकर, मदिर साईकिल मार्किट, दरीबा, चांदनी चौक, खारी बावली, श्रद्धानन्द बाजार, अजमेरीगेट, हौज-काजी, चावड़ी बाजार, नई सड़क होती हुई सायंकाल ७ बजे गांधी मैदान में ही समाप्त होगी।

अतः सभी आर्य समाजें, समाज के नामपट्ट और ओ३म् ध्वज के साथ इस शोभायात्रा में अवश्य भाग लें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली-२

श्री के. एल. भाटिया नहीं रहे

दिल्ली में आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता और समाजसेवी श्री के. एल. भाटिया का सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त करने के बाद लगभग ६६ वर्ष की आयु में निधन के समाचार से गहरा दुःख हुआ। वह आर्यसमाज के जागरूक सेवक थे। आर्य समाज पंजाबी बाग, राजौरी नगर और सफदरजंग इंक्लेव में उन्होंने आर्य समाज के लिए जो सराहनीय कार्य किये हैं, उनकी स्मृति आर्य जनों को सदैव प्रेरणा करती रहेगी।

सार्वदेशिक सभा दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए कामना करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सा० आ० प्र० सभा, नई दिल्ली

सवाल संस्कृति और संस्कार का है !

जब किसी राष्ट्र पर एक विदेशी भाषा हावी होने लगती है तो उस राष्ट्र की संस्कृति के लिए सबसे बड़ा खतरा उपस्थित हो जाता है। संस्कृति क्या है ? हमारे पूर्वजों ने विचार और कर्म के क्षेत्र में जो कुछ भी श्रेष्ठ किया है, उसी धरोहर का नाम संस्कृति है। यह संस्कृति अपनी भाषा के जरिये जीवित रहती है। यदि भाषा नष्ट हो जाए तो संस्कृति का कोई नाम लेवा-पानी देवा नहीं रहता। संस्कृति ने जिन आदर्शों और मूल्यों को हजारों सालों के अनुभवों के बाद निश्चित किया है, वे विस्मृति के गर्त में विलीन हो जाते हैं। भाषा संस्कृति का अधिष्ठान है। संस्कृति भाषा पर टिकी हुई है।

मैं तो इससे भी एक कदम आगे जाना चाहता हूं कि हमारे पूर्वजों ने जो कुछ बुरा सोचा या किया है, वह भी हमारे सामने होना चाहिए। इसे आप चाहे विकृति कह लीजिए। इससे भी हम अपना भविष्य सुधार सकते हैं। यह भी भाषा की बदौलत है। अपनी संस्कृति और विकृति दोनों से परिचित होने के लिए अपनी भाषा की धारा निरन्तर बहती रहनी चाहिए। अगर अपनी भाषा नहीं होगी तो हमें न तो अपनी अच्छाइयों का पता चलेगा और न बुराइयों का।

आज जो बच्चे अनिवार्य अंग्रेजी पढ़ रहे हैं कि वह उत्कृष्ट भाषा है, उनका ध्यान भारत की विरासत से हट रहा है। वे शेक्सपियर पढ़ेंगे, मिल्टन पढ़ेंगे शैली पढ़ेंगे लेकिन कालिदास, तुलसी सूर कबीर, बिहारी उनके लिए अजनबी बन जाएंगे। हो सकता है कि कान्वेंट की अंग्रेजी पुस्तकों में शकुन्तला के बारे में या भरत के बारे में या कन्हैया की रासलीला के बारे में थोड़ा बहुत पढ़ा दिया जाए। लेकिन जब ये बच्चे बड़े होंगे तो वे अपनी प्यास बुझाने के लिए ग्रन्थों को मूल रूप से पढ़ना चाहेंगे, घटनाओं के बारे में विस्तार से जानना चाहेंगे। मगर जानेंगे कैसे ? ये सारे ग्रन्थ अंग्रेजी में तो नहीं लिखे गये हैं। तब क्या होगा ?

ये बच्चे बड़े होकर या तो अपने ही ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद पढ़ेंगे और राम को 'रामा', कृष्ण को कृष्णा' तथा कुंती को कुंटी कहेंगे या फिर इनका ध्यान पूरी तरह से अंग्रेजों की संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाले अंग्रेजी ग्रन्थों की ओर चला जाएगा। शेक्सपियर के हेमलेट' के हर वर्ष नए संस्करण निकलेंगे और बाणभट्ट की कादम्बरी को दीमक खाया करेगी। हाब्स का 'लेवियाथन' गर्म पकोड़ों की तरह बिकेगा और कौटिल्य का अर्थशास्त्र' बासी डबलरोटी की तरह सड़ता रहेगा।

राम को रामा, कृष्ण को कृष्णा, कुंती को कुंटी कब तक ?

मैं हेमलेट या मेकबेथ पढ़ने का विरोधी नहीं हूं। मैं तो चाहता हूं कि आधुनिक भारत के नौजवान गबरे दाले, अरस्तू शेक्सपियर हीगल कामू सार्त्र, टालस्टाय मेक्सुवेल्को सभी का रस पीने वाले बनें लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि भाषा रेल की पटरी की तरह होती है। जिधर पटरी जाती है, रेल भी उधर जाती है अगर पटरी नई दिल्ली की तरफ जा रही है तो लाख कोशिश करने के बावजूद रेल बम्बई की तरफ नहीं मुड़ सकती। आज हिन्दुस्तान की शिक्षा की रेल को अंग्रेजी की पटरी पर दौड़ाया जा रहा है। यह रेल कहां जाएगी ? यह रेल गंगा के घाट पर कालिंदी के कूल पर या अयोध्या की गलियों में हजार साल की यात्रा के बाद भी कभी नहीं जाएगी। यह जाएगी और दौड़ी जाएगी टेम्स के किनारे या ट्राफलगर स्क्वेयर बकिंघम के राजमहल के पास ! क्यों ? क्योंकि वह अंग्रेजी की पटरी पर दौड़ रही है। याद रखिए। भाषा जितनी अच्छी सेविका है, वह उतनी ही कठोर स्वामिनी है।

जब आप विदेशी भाषा के साथ इश्क फरमाते हैं तो वह उसकी पूरी कीमत वसूलती है। वह अपनी आदतें अपने मूल्य आप पर थोपने लगती है। यह काम धीरे-धीरे होता है। सौन्दर्य के उपमान बदलने लगते हैं दुनिया को देखने की दृष्टि बदल जाती है। आदर्श और मूल्य बदल जाते हैं। आदर्श और मूल्य आर्थिक ढंग के बदलें तो मुझे आपत्ति नहीं है। विदेशी भाषा कुछ बेहतर मूल्य भी दे सकती है लेकिन आपत्ति तो तब होती है जबकि एक खंडित चिन्तन का, एक दो मुंहे व्यक्तित्व का निर्माण होने लगता है। और पूछे तो है भारतीय परिवेश में और बौद्धिक रूप से समर्पित होते हैं

> ### संगठन विरोधी कार्यों के कारण
> ## श्री भगवानदेव शर्मा के लिए आर्य समाज की वेदी बन्द
> ### आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का फैसला
>
> आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री श्री सुमेधानन्द जी ने राजस्थान सभा के साधारण अधिवेशन दिनांक १२ मार्च १९९४ में श्री भगवान देव शर्मा के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव रखा। जिसकी जांच पड़ताल के बाद निम्नलिखित निर्णय लिया गया—
>
> श्री भगवानदेव शर्मा की घोषणाएं छल व प्रपंच एवं असत्य पर आधारित हैं। इस सभा का यह निश्चित मत है कि ऐसा आचरण अनार्यत्व का प्रतीक है। अतः आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का यह साधारण अधिवेशन असत्य कथन करने, अनधिकृत रूप से इस सभा के नाम का प्रयोग कर संगठन विरोधी गतिविधियों में सम्मिलित होने, तथा घोर अनुशासन हीन आचरण का दोषी पाये जाने के कारण राजस्थान राज्य के समस्त आर्य समाजों की वेदी आचार्य भगवान देव के लिए तत्काल प्रभाव से बन्द करता है। सभा के इस निर्णयात्मक संकल्प के विरुद्ध आचरण करने वाले किसी भी आर्य समाज उसकी अन्तरंग सभा तथा पदाधिकारियों के विरुद्ध सभा की ओर से अनुशासन की कार्यवाही की जायेगी।"
>
> मन्त्री
>
> आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

अंग्रेजी परिवेश के प्रति ! ऐसा व्यक्तित्व सृजनशील नहीं बन पाता। उदाहरण के लिए यूरोप का आदमी बादलों को देखकर प्रायः प्रसन्न नहीं होता। पहले से ही वे ठंडे देश हैं। फिर बादल आ जायें आसमान कुछ-कुछ गहराने लगे तो मातम सा छा जाता है।

इसके विपरीत भारत में ज्यों ही बादल मंडराए कि मन-मयूर नाचने लगता है। मेघदूत की रचना होती है। हमारा देश सूरज का देश है, धूप का देश है। यूरोप धूप के लिए तरसता है और हम बादलों के लिए ! अब बताइए अंग्रेजी में कविता लिखने वाला हिन्दुस्तानी क्या करेगा ? अगर वह बादलों की तारीफ करेगा तो उसकी कविता उसके पश्चिमी स्वामियों के गले नहीं उतरेगी और अगर वह कड़ाके की धूप पर गीत लिखेगा तो घटाओं पर झूमने वाला उसका दिल उसका साथ कहां तक देगा ?

भाषा के बदलने से मूल्य भी बदल जाते हैं। हिन्दी में बड़ों को आप, बराबरी वालों को तुम और छोटों को तू कहने की सुविधा है लेकिन अंग्रेजी में सपाट सम्बोधन है—'यू'। पिताजी के लिए, पत्नी के लिए, बच्चे के लिए - सबके लिए एक ही चाबुक है। उसी से हांकिये ! हमारे यहां देवर, भाभी जेठ देवरानी, जेठानी मौसा मौसी, चाचा, फूफा भानजा भतीजा साला जीजा —सब सम्बोधनों के लिए निश्चित शब्द हैं। शब्दों से सम्बन्ध निश्चित होते हैं जब मुझे कहा जाए कि ये आपके साले हैं तो मैं तत्काल समझ जाऊंगा कि ये मेरी पत्नी के भाई हैं और जब यह कहा जाये कि ये आपके जीजा हैं तो मैं तत्काल समझ जाऊंगा कि ये मेरी बहिन के पति हैं लेकिन अंग्रेजी में सब घोटाला है। साला और जीजा दोनों के लिए एक ही शब्द है—ब्रदर इन ला।

इसका कारण स्पष्ट है। मानवीय सम्बन्धों की जिन बारीकियों का महत्व हमारी संस्कृति में है, पश्चिम में नहीं है। एस्किमो लोगों की भाषा में बर्फ के लिए लगभग १०० शब्द हैं जबकि हमारी भाषा में पांच-सात ! बर्फ से हमारा इतना सबका नहीं पड़ता जितना एस्किमो का ! ब्रह्म के लिए, जीव के लिए जगत के लिए, मोक्ष के लिए—एक एक शब्द के लिए हमारे यहां जितने भिन्न भिन्न शब्द हैं उतने शब्द सारी यूरोपीय भाषाओं में कुल मिलाकर नहीं है। और सिर्फ शब्द ही नहीं है शब्दों के पीछे गहरी अनुभूतियां हैं। इस प्रकार संस्कृति से भाषा प्रभावित होती है और जैसा कि ऊपर कह आये हैं भाषा से संस्कृति प्रभावित होती है। अपनी भाषा को छोड़कर विदेशी भाषा के पिछलग्गू बनने के पहले विद्वानों को इन तथ्यों पर विचार करना चाहिए।

("लोक प्रतिभा"—सितंबर, १९९० से साभार)

आवश्यकता है मायावतियों कांशीरामों को पहचानने की

अनिल नरेन्द्र

पिछले कुछ दिनों से विचित्र प्रकार का सिलसिला चल निकला है। सस्ती प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए कुछ नेता धर्म गुरुवरों और महापुरुषों को गालियां देना शुरु कर रहे हैं। सलमान रशदी इसकी एक मिसाल है। भारत मे भी ऐसे लोग कम नही है। बहुजन समाज पार्टी की एक नेता है मायावती वह भी इस पंक्ति मे शामिल की जा सक्ती है। दो ही तरीकों से मनुष्य सुर्खियों में आ सकता है या तो वह इतना बड़ा काम करे तो संसार में उसकी प्रशंसा हो या फिर किसी बड़े महापुरुष को बुरा भला कहे ताकि समाचार पत्रों में वाद-विवाद उत्पन्न हो मायावती ने सोचा कि महात्मा गांधी जी को क्यों न गाली दे दी जाए इससे मामला एकदम तूल पकड़ जाएगा, बहुजन समाज पार्टी की इस जनरल सैक्रेट्री ने गांधी जी के द्वारा दलितों को हरिजन कहे जाने पर आपत्ति करते हुए यहां तक कह दिया कि अगर हरिजन का अर्थ ईश्वरीय सन्तान है तो महात्मा गांधी क्या शैतान की औलाद थे? इनका कहना था कि गांधी ने दलितों को सबसे अधिक हानि पहुंचाई यदि हरिजन शब्द इतना ही प्रिय था तो इन्होंने अपने जवाहरलाल नेहरू या गोविन्दवल्लभ पन्त के नाम के साथ हरिजन क्यों नहीं जोड़ा। इतना ही नहीं जब उनसे कहा गया कि गांधी जी ने तो देश के लिए इतनी बड़ी लड़ाई लड़ी, तो मायावती ने उत्तर दिया कि देश के लिए भले ही उन्होंने कुछ भी किया हो परन्तु दलितों के तो वह सबसे बड़े शत्रु थे।

मायावती के इस कथन से देश मे तूफान उठना स्वाभाविक था। सड़कों से लेकर विधान सभाओं, लोक सभा तथा राज्य सभा जैसे प्लेटफार्मों पर मायावती को आड़े हाथों लिया जा रहा है।

महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि मायावती ने यह बयान अपनी व्यक्तिगत हैसीयत से दिया है या अपनी पार्टी की नीति के अन्तर्गत दिया है? बसपा प्रधान कांशीराम ने इतने दिन गुजर जाने के बाद भी अभी तक इस समस्या पर अपनी जबान नहीं खोली है—यद्यपि इनके नजदीकी सूत्रो द्वारा ज्ञात हुआ है कि मायावती की बयान बाजी को उचित नहीं ठहराया है। इन्होंने अपने साथियों से कहा है कि किसी भी व्यक्ति के प्रति अनुचित शब्दों का प्रयोग वह उचित नही समझते और न ही यह बसपा की राजनैतिक संस्कृति है जहां तक मुख्यमन्त्री मुलायमसिंह का सम्बन्ध है इन्होने स्पष्ट कर दिया है कि इनकी सरकार महात्मा गांधी के विचारों से पूर्णतया सहमत है। ऐसेम्बली और कौनसल मे इस पर हुई बहस का उत्तर देते हुए कहा कि वह गांधी जी के विरुद्ध नुकताचीनी पसन्द नहीं करते और यकीन दिलाते हैं कि सरकार गांधी जी के असूलों पर डटी रहेगी और इनके पद-चिह्नों पर चलेगी। इस तरह समाजवादी पार्टी की भावना तो प्रकट हो गयी परन्तु बसपा को नहीं हुई। भले ही मायावती और इनके आका कांशीराम को जात-पांत की राजनीति से लाभ हुआ है परन्तु गांधी जी और गांधीवाद के सम्बन्ध में इनकी दुहाई इन्हें और इनकी पार्टी को कितनी महगी पड़ सकती है इसका अभी इन्हें अनुमान नहीं है। अपने घटिया बयानों और छिछोरापन से वह गांधी जी के किए कराए पर पानी नही फेर सकते हैं। हरिजनों के दिलो दिमाग से गांधी जी को निकाल नहीं सकते।

आज समाज में दलितों और हरिजनों को जो स्थान प्राप्त है उसमें महात्मागांधी का सबसे अधिक हाथ है। मायावती इतनी कच्ची उमर की या राजनीति में बिलकुल नयी नहीं है वह यह न जानती हो कि गांधी जी किसी विशेष समुदाय अथवा पार्टी के नेता नहीं थे इनका सम्मान प्रत्येक भारतीय के मन में है। जिन्दगी का कोई ऐसा पहलू नहीं है जो उनसे अछूता रह गया हो हरिजन और दलितों की सामाजिक व आर्थिक अवस्था का पूरा-पूरा ध्यान सबसे अधिक इनको ही था।

आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं में राष्ट्रीय गीत वन्देमातरम् के साथ कार्य शुरू होगा

आर्य कन्या विद्यालय महासमिति की साधारण बैठक समिति प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट की अध्यक्षता में दिनांक १०-३-९४ सायं ४ बजे सम्पन्न हुई। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि समिति के अन्तर्गत चल रहीं सभी संस्थाओं में – आर्य महिला शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, आर्य कन्या महाविद्यालय, आर्य बा० उ० मा० वि०, सभी प्राथमिक विद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं मे राष्ट्रीय गीत वन्देमातरम के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ किया जायेगा। संस्था प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के उप-प्रधान श्री छोटूसिंह एडवोकेट ने यह भी बताया कि सार्वदेशिक स्तर पर देहली में यह निर्णय ले लिया गया है कि सभी शिक्षण संस्थाओं में प्रारम्भ में वन्दे-मातरम् का राष्ट्रीय गीत गाया जायेगा।

—कमला शर्मा, मन्त्रिणी
आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर

गांधी जी कितने बड़े थे और इनके विचारों, विशेषतया अहिंसा के नियम को संसार के बुद्धिजीवियों और राजनैतिकों को किस प्रकार प्रभावित किया इस बारे में मायावती के प्रमाण-पत्र देने की कोई आवश्यकता नही है फिर भी लखनऊ का इनका बयान इनका व्यक्तिगत दृष्टिकोण नहीहै अपितु वह राजनैतिक नेता के रूपमें दिया गया था। इन्होंने घोषणा की उनकी पार्टी का उद्देश्य गांधीवाद को समाप्त करना है। समाजवादी पार्टी नेता और भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर जी ने मायावती को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि मायावती राजनीति मे अभी अशिक्षित हैं और उनका बयान राजनीति की अज्ञानता से पैदा हुआ बद दिमागी का नमूना है। चन्द्रशेखर जी ने कहा कि वह इस बयान पर कोई टिप्पणी करना तो दूर कुछ कहना अपने लिए अपमान अनुभव करते हैं। दरअसल जो लोग यह मानतेहैं कि बसपा नेताओं की विचारधारा बुनियादी और पर मजबूत नहीहै वह गलती कर रहे हैं यह लोग भी जाने-अनजाने मायावतियों और कांशीरामों को ही समर्थन दे रहे हैं—हकीकत तो यह है कि मायावती ने गांधी जी के विरुद्ध नही अपितु समाज पर चोट की है। गांधी जी ने अछूतों को हरिजन कहकर दबाया नहीं समाज में अपनाने की राह हमवार की थी जब इनकी छाया पड़ने पर ब्राह्मण ९ बार नहाया करता था परन्तु डा० अम्बेडकर ने हरिजन के स्थान पर दलित शब्द का प्रयोग किया था। फिर भी डा० अम्बेडकर समाज में ऊंच-नीच के भेदभाव का सियासी शोषण करने के हक मे न थे। परन्तु ऐसे नेताओं का व्यवहार समाजमें जात-पात के नाम पर झगड़ों पर ही आधारित है समय रहते इन्हें पहचान लेने की आवश्यकता है।

(प्रताप के सौजन्य से)

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों को बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर पत्रिका भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" अथवा [illegible] "पुराना ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये एक बार १५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

आध्यात्मिक जगत को आर्य समाज की देन [३]

डा० प्रेमचन्द श्रीधर

एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यः ॥ मुण्डक उपनिषद

इस अणु आत्मा को शुद्ध चित्त से जानने का यत्न करना चाहिए।

'जो अल्प और अल्पज्ञ है, वह सर्वव्यापक और सर्वज्ञ नहीं हो सकता। क्योंकि जीव का स्वरूप एकदेशी और परिमित गुण कर्म स्वभाव वाला होता है।'

—सत्यार्थ प्रकाश ११ वां समुल्लास

जीव और ईश्वर का गुण कर्म और स्वभाव कैसा है? इसका उत्तर देते हुए महर्षि कहते हैं—'दोनों चेतन स्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है। परन्तु परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति-स्थिति प्रलय, सबको नियम में रखना, जीवों को पाप-पुण्यों का फल देना आदि धर्मयुक्त कर्म हैं। और जीव के सन्तानोत्पत्ति उनका पालन, शिल्पविद्या आदि अच्छे-बुरे कर्म हैं। ईश्वर के नित्यज्ञान आनन्द अनन्तबल आदि गुण हैं।'

—सत्यार्थ प्रकाश ९वां समुल्लास

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गमिति ॥

न्यायदर्शन १. १. १०

प्राणापान निमेषोन्मेष (जीवन) मनोगतीन्द्रियान्तर्विकाराः

सुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नाश्चात्मनो लिङ्गानि ॥ वैशेषिक दर्शन ३.२.४

जीव के लक्षणों को दर्शन के अनुसार स्पष्ट करते हुए महर्षि लिखते हैं: (इच्छा) पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा (द्वेष) दुःखादि की अनिच्छा, वैर (प्रयत्न) पुरुषार्थ बल (सुख) आनन्द (दुःख) विलाप अप्रसन्नता (ज्ञान) विवेक पहचान ये तुल्य हैं परन्तु वैशेषिक में (प्राण) प्राण वायु को बाहर निकालना (अपान) प्राण वायु को बाहर से भीतर को लेना (निमेष) आंख को मींचना (उन्मेष) आंख को खोलना (जीवन) प्राण का धारण करना (मनः) निश्चय स्मरण और अहंकार करना (गति) चलना (इन्द्रिय) सब इन्द्रियों को चलाना (अन्तर्विकार) भिन्न-भिन्न क्षुधा-तृषा हर्षशोकादि युक्त होना। ये विशेष हैं। ये जीवात्मा के गुण परमात्मा (के गुणों) से भिन्न हैं। इन्हीं से आत्मा की प्रतीति करनी, क्योंकि वह स्थूल नहीं है।

जब तक आत्मा देह में होता है, तभी तक ये गुण प्रकाशित रहते हैं। और जब शरीर छोड़ चला जाता है, तब यह गुण शरीर में नहीं रहते।

—सत्यार्थ प्रकाश ६ वां समुल्लास

इस प्रकार वैदिक सिद्धांत में जीव सम्बन्धी निम्नलिखित विशेषताएं हैं:

(१) जीव एक स्वतन्त्र व अनादि सत्ता है।

(२) वह अल्पज्ञ है और सुख दुःख के चक्कर में रहता है।

(३) वह ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार शरीर धारण करता है और यह जगत उसका कर्म का क्षेत्र है।

(४) ईश्वर इसके भोग को मर्यादित रखता है और इस सारे भोग की व्यवस्था उसके आधीन है।

(५) ईश्वर से इसमें यह भिन्नता है कि ईश्वर परमानन्दमय है, इसमें आनन्द की कमी है। ईश्वर सर्वव्यापक है, यह एकदेशीय है। ईश्वर सर्वज्ञ, यह अल्पज्ञ है, जीव और ईश्वर का व्याप्य व्यापक सम्बन्ध है।

(६) प्रकृति से इसमें विशेषता यह है कि ये चेतन और प्रकृति जड़ है।

(७) ईश्वर और जीव दोनों निराकार हैं। ईश्वर जीवन से अति सूक्ष्म है।

आत्मा का इतना सुन्दर और तर्क पूर्ण विवेचन अन्यत्र कहीं नहीं मिलता।

प्रकृति का स्वरूप

जगत की उत्पत्ति में तीन कारण हैं, निमित्त, दूसरा उपादान, तीसरा साधारण। निमित्त कारण उसे कहते हैं कि जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने। आप स्वयं बने नहीं, दूसरे को प्रकारान्तर बना देवे। दूसरा 'उपादान कारण' उसको कहते हैं जिसके बिना कुछ न बने। वही अवस्थान्तर रूप होके बने और बिगड़े भी। तीसरा 'साधारण कारण' इसको कहते हैं कि जो बनाने में साधन और साधारण निमित्त हो।

निमित्त कारण दो प्रकार के हैं। एक सब सृष्टि को कारण से बनाने धारने और प्रलय करने तथा सबकी व्यवस्था रखने वाला निमित्त कारण परमात्मा दूसरा परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेक विध कार्यान्तर बनाने वाला साधारण निमित्त कारण 'जीव'।

हम त्रैतवाद के प्रतिपादन में परमात्मा और जीवात्मा की चर्चा कर चुके हैं। तीसरा 'उपादान कारण' प्रकृति परमाणु, जिसको सब संसार के बनाने की सामग्री कहते हैं। वह जड़ होने से आप से आप न बन और न बिगड़ सकती है।

यह प्रकृति तीसरा अनादि तत्व है। जगत का उपादान कारण प्रकृति है, ब्रह्म नहीं। प्रकृति का लक्षण दर्शन शास्त्र के अनुसार—

सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् महतोऽहंकारोऽहंकारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं पञ्चतन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि पुरुष इति पञ्चविंशतिर्गणः ॥ सांख्यदर्शन १ । ६१

'सत्व'=शुद्ध, 'रजः'=मध्य, 'तमः'=जाड्य अर्थात जड़ता तीन वस्तु मिलकर एक संघात है, उसका नाम प्रकृति है। उससे महत्तत्व बुद्धि, उससे अहंकार, उससे पांच तन्मात्रा सूक्ष्मभूत और दस इन्द्रियां तथा ग्यारहवां मन, पांच तन्मात्राओं से पृथिव्यादि पांच भूत, ये चौबीस और पच्चीसवां पुरुष अर्थात जीव और परमेश्वर है।

इनमें से प्रकृति अविकारिणी और महत्तत्व अहंकार तथा पांच सूक्ष्म भूत प्रकृति का कार्य और इन्द्रियां मन तथा स्थूलभूतों का कारण है। पुरुष न किसी की प्रकृति=उपादान कारण और न किसी का कार्य है।

छान्दोग्य उपनिषद में कार्यकारण सम्बन्ध को बहुत ही सुन्दर ढंग से समझाया गया है—

सोम्यान्नेन शुङ्गेनापो मूलमन्विच्छ अद्भिस्सोम्य शुङ्गेन तेजोमूलमन्विच्छ, तेजसा सोम्य शुङ्गेन सन्मूलमन्विच्छ, सन्मूलाः सोम्येमाः (सर्वाः) प्रजाः सदायतनाः सत्प्रतिष्ठाः ॥—छान्दोग्य उपनिषद ६ । ८ । ४ ।

हे सौम्य (श्वेतकेतो) अन्नरूप पृथिवी कार्य से जलरूप मूलकारण को तू जान। कार्यरूप जल से तेजोरूप मूल, और तेजोरूप कार्य से सद्रूप कारण जो नित्य प्रकृति है, उसको जान, यही सत्य रूप प्रकृति सब जगत का मूल घर और स्थिति का स्थान है। यह सब जगत सृष्टि के पूर्व असत के सदृश और जीवात्मा, ब्रह्म और प्रकृति में लीन होकर वर्तमान था, अभाव न था।

—सत्यार्थ प्रकाश ८वां समुल्लास

और अन्त में ई. डब्ल्यू. बार्नस के शब्दों में—

प्रकृति के पीछे, जैसा कि मुझे प्रतीत होता है, एक शक्ति है जिसने सृष्टि की, व पथ निर्देश किया तथा अब भी रक्षित रखती है। उसके पथ विचित्र हैं और उनके सम्बन्ध में हमारा ज्ञान सदा अधूरा है। जीवन की पहेली अभी तक सुलझी नहीं है, सम्भवतया यह न सुलझने वाली ही हो।

जैसा कि मैं देखता हूं कि पदार्थ जीवन व मन उस ईश्वर की सृष्टि-शक्ति के उच्चतम उदाहरण हैं।

इस प्रकार परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति तीनों अनादि हैं। त्रैतवाद को स्वीकार कर लेने पर बहुत बड़ा भ्रम और अज्ञान समाप्त हो जाता है।

(क्रमशः)

एक अनोखी प्रतियोगिता

घर बैठे विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एवं उस पर आधारित प्रश्न पत्र प्राप्त करें और छः मास के भीतर उत्तर भेजकर निम्न पुरस्कार प्राप्त करें।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
३०००) रु०	२०००) रु०	१०००) रु०

पूर्ण विवरण प्रश्न-पत्र एवं प्रवेश शुल्क आदि के लिए मात्र तीन रुपए मनीआर्डर द्वारा—रजिस्ट्रार परीक्षा विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०), ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ को भेजें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

मन्त्री-सभा

तहरीक-ए-मुजाहिद्दीन की प्रति न होने की कलई खुली

नई दिल्ली, १९ मार्च। सिख गुरुओं का अपमान करने वाली पुस्तक 'तहरीक ए मुजाहिद्दीन' पर गुरुवार को मजबूरन पाकिस्तान मे लगाई गई पाबन्दी और राजधानी में उपलब्ध इसकी प्रति ने इन खबरो और दावो को झुठला दिया है कि इस तरह की कोई किताब अस्तित्व मे नहीं है। पुस्तक की मौजूदगी ने इन आरोपो को भी झुठला दिया है कि यह "बेबुनियाद विवाद खड़ा करने मे भारतीय गुप्तचर एजेंसी 'रा' का हाथ रहा है।

पाकिस्तान में प्रकाशित विवादास्पद पुस्तक "तहरीक ए मुजाहिद्दीन' की प्रति यहा उपलब्ध है। अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य बलवन्त सिंह रामूवालिया को जो प्रति मिली है वह वास्तव मे इस पुस्तक का पहला खण्ड है। इससे लगता है कि यह पुस्तक कई खण्डो मे है। २८० पेज की इस पुस्तक के लेखक डा० सादिक हुसैन एम बी बी एस हैं।

पुस्तक के कवर पर प्रकाशन की तिथि १३९५ हिजरी बामुताबिक १९७५ ईस्वी छपी है। मिलने का पता डा० सादिक हुसैन, नूर मंजिल, दिल मुहम्मद रोड लाहौर है। किताब मे दी गई जानकारी के मुताबिक डा० सादिक हुसैन प्रिंटर व पब्लिशर ने अंजुमन हिमायते इसलाम प्रेस रेलवे रोड, लाहौर से तबह करवाकर नूर मंजिल दिल मोहम्मद रोड से जारी करवाया। पुस्तक पर जिल्द अव्वल या खण्ड एक लिखा है।

मालूम हो कि इस पुस्तक मे सिख गुरुओ के बारे मे अपमानजनक बातें कहे जाने की खबरे छपने के बाद कुछ अंग्रेजी अखबारो मे इस आशय की खबरें छपी थीं कि इस तरह की कोई किताब अस्तित्व में है ही नहीं। एक अखबार ने तो यहा तक लिख दिया कि पाकिस्तान के इतिहासकारो ने इस नाम के लेखक व पुस्तक का नाम ही नहीं सुना किसी ने लिखा कि यह पुस्तक बटवारे के समय लिखी गई थी। पाकिस्तान मे शरण लेकर रह रहे आतंकवादी वाधन सिंह जफरवाल से सम्बन्ध रखने वाली काउंसिल आफ खालिस्तान के नेता मनमोहन सिंह खालसा ने यह आरोप लगाया कि वास्तव मे सिखो और मुसलमानो के बीच नफरत पैदा करने के लिए भारतीय गुप्तचर एजेंसी 'रा' ने इस नाम से आठ पेज की एक छोटी पुस्तक प्रकाशित करवा कर बटवाई है।

अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य बलवन्त सिंह रामूवालिया ने जनसत्ता को बताया कि पाकिस्तान की लाइब्रेरियो और विश्वविद्यालयो में यह पुस्तक मौजूद है। उन्हें इसकी प्रति भी बहुत आसानी से मिल गई। मालूम हो कि श्री रामूवालिया इस मामले पर सरकार के साथ उच्चस्तरीय बातचीत कर चुके हैं। सिख गुरुओ और सिख धर्म के बारे मे अपमानजनक बातें कहे जाने पर कड़ी नाराजगी जताते हुए उन्होंने कहा कि न सिर्फ देश बल्कि विदेशो मे बसे सिखों ने भी उनसे सम्पर्क कर इस पुस्तक को लेकर कड़ी नाराजगी जताई है।

उर्दू मे लिखी गई इस पुस्तक में वास्तव में इतनी अपमानजनक और अश्लील बातें कही गई हैं कि उन्हे लिखा जाना मुश्किल है। खासतौर से महाराजा रंजीत सिंह की मा और पत्नी के बारे मे तो बेहद घटिया और अश्लील आरोप लगाये गये हैं। गुरु नानक देव के बारे में यह कहा गया है कि उनकी सेना मे अधाधम पेशा लोग शामिल थे। तीसरे गुरु अमरदास गधे पर माल लाद कर बेचते थे। बाद में वे नमक तेल बेचने लगे।

'सिख और सिखाशाही' शीर्षक के तहत गुरु हरगोविन्द सिंह को मांस खाने का शौकीन और शिकारी बताते हुए यह कहा गया है कि वह जहांगीर की फौज में काम करता था। अपने मातहत लोगों की तनख्वाह खुद हजम कर जाता था। इसलिए जहांगीर उसके खिलाफ हो गये। उसके जत्थे में आवारा भगोड़े मुजरिम शामिल थे। उससे बाद अर्जुनदेव पर भारी जुर्माना लगाया गया था। जुर्माना अदा न करने के बाद उसे १२ साल तक ग्वालियर की जेल में कैद रखा गया। बाद में जहांगीर ने उस पर रहम खाकर रिहा कर दिया। लेखक लिखता है १६२८ में जहांगीर की मृत्यु के बाद वह लूटमार करने लगा। उसके चेलों ने शाही घोड़ा चुरा लिया। शाही फौजों ने हरगोविन्द का पीछा किया। वह भटिंडा के जंगलो में जा छुपा। भटिंडा चोरों, मुजरिमो का अड्डा बन गया। इन लुटेरो में बाबा बुढ्ढा भी था जो शाही अस्तबल के दो घोड़ चुरा लाया था।

खालसा की उत्पत्ति के बारे में कहा गया है कि गुरु तेग बहादुर का एकमात्र बेटा गुरु गोविन्द सिंह १५ साल की उम्र में गद्दी पर बैठा। उसने अपनी पत्नी बीबी गूजरी से पंच प्यारे बनाने के लिए अपने बेटे देने को कहा। पर बीबी गूजरी इसके लिए तैयार नहीं हुई। तब ब्राह्मण ने उसे अपने चेलो में से खालसा बनाने की सलाह दी। गुरु गोविन्द सिंह ने अपने पांच चेलो मे से एक का सिर काटकर आग में फेंक दिया व चार को खालसा बना दिया।

पुस्तक मे सिखो को लुटेरा, औरतो और बच्चो के साथ दरिन्दो जैसा बरताव करने और मसजिदो का नामोनिशां मिटाने वाला बताया गया है। लेखक के अनुसार उन्होंने इतने जुल्म किये कि इंसानियत की गरदन शर्म से झुक जाए। अहमद शाह अब्दाली के साथ १७६४ में हुई लड़ाई का जिक्र करते हुए डा० सादिक हुसैन लिखते हैं कि तीन सिखो ने लाहौर पर कब्जा कर लूट का माल आपस मे बांट लिया।

महाराजा रणजीत सिंह को बचपन से ही निहायत बदमाश, आवारा और शराबी बताते हुए लेखक लिखता है कि रजीत सिंह की मां बचपन से आवारा थी। वह हुक्का पीती थी। इसलिए रणजीतसिंह ने तम्बाकू और हुक्का पीने पर लगी रोक हटा दी। उनकी पत्नी, मा और दादी के बारे में भी पुस्तक मे अपमान जनक बातें लिखी गई हैं।

—विवेक सक्सेना
जनसत्ता सम्वाददाता

मांस खरीदने वाला धन से हत्या करता है, खाने वाला स्वाद द्वारा हत्या करता है, मारने वाला छुरे से हत्या करता है। ये सभी हत्यारे है जो दूसरो का मांस खाकर अपना मांस बढ़ाना चाहते हैं उनसे नीच और कौन होगा।

आखिर नैतिकता का आधार क्या है ?—

आस्तिकता या नास्तिकता

—श्री बाबूलाल, एम. एस. सी.

हमारे देश में सामान्यतया दो प्रकार के आस्तिक हैं। एक प्रकार के आस्तिक वे हैं जो समझते हैं कि संसार में जितने भी क्रिया-कलाप हो रहे हैं वे सब ईश्वर की प्रेरणा से ही हो रहे हैं। उनका स्वयं का कर्त्तव्य तो बस इतना ही है कि किसी नाम विशेष का सहारा लेकर भगवद् भजन करते रहें और प्रत्येक इष्ट की पूर्ति की कामना उससे करते रहें। दूसरी प्रकार के आस्तिक वे हैं जिनको सच्चिदानन्द परमात्मा का स्वरूप जानने की उतनी चिन्ता नहीं जितनी उसके साक्षात्कार की। जब कभी वे यह सुन लेते हैं कि अमुक व्यक्ति उनको प्रभुदर्शन करा सकता है तो वे पागल के समान उस ओर दौड़ पड़ते हैं और उस व्यक्ति विशेष की योग्यता और दिनचर्या की सूक्ष्म दृष्टि से परख किये बिना ही उसके अन्धभक्त बन जाते हैं। इन दोनों प्रकार के व्यक्तियों का अपने आचरण की ओर किंचित भी ध्यान नहीं होता। परिणामतः न वे अपना ही कुछ हित साध पाते हैं और न उनसे अन्यों का ही कुछ भला हो पाता है।

इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य की उन्नति हेतु जहां उसके निज प्रयत्नों की आवश्यकता है वहां ईश्वर की कृपा और सहयोग की भी है पूर्व भाग पुरुषार्थ है और उत्तर भाग परमात्मा से प्रार्थना करना। आर्य जन जो प्रातः सायं ब्रह्म यज्ञ अर्थात् सन्ध्योपासना करते हैं वह यदि सार्थक रूप से कर ली जावे तो निश्चित रूप से मनुष्य का उपकार हो सकता है। आर्य समाजान्तर्गत प्रचलित सन्ध्योपासना विधि के अनुसार उपासक प्रथम मन्त्र द्वारा अपनी समस्त सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति एवं मोक्ष के आनन्द की प्राप्ति हेतु उस सर्वव्यापक मंगलमय भगवान से प्रार्थना करने की पूर्ति के पश्चात् इन्द्रियों का इस भांति उपयोग करेगा जिससे उसकी प्रत्येक इन्द्रिय दिनों दिन बलवती और यशदायिनी होती जावे। स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि मौखिक तोता रटन्त से कभी किसी को कोई लाभ प्राप्त होने वाला नहीं है। लाभ तब ही प्राप्त होगा जब मन्त्र के प्रत्येक पद के उच्चारण के साथ-साथ तदनुकूल चिन्तन और अभ्यास किया जावे। उदाहरण के रूप में जब मुख से ओं 'वाक्-वाक्' शब्दों का उच्चारण किया जावे अथवा मन में उनका ध्यान किया जावे तब उपासक को उन समस्त क्रिया कलापों पर ध्यान देना आवश्यक है जिनके अभ्यास से उसकी वाणी बलवती हो और उसका कथन यशोपार्जन में सहायक सिद्ध हो सके। इसी प्रकार अन्य इन्द्रियों का स्मरण करते समय ऐसा ही चिन्तन एवं अभ्यास करना आवश्यक है।

सन्ध्योपासना का तृतीय मन्त्र अर्थात् इन्द्रिय मार्जन मन्त्र और भी अधिक महत्वपूर्ण है। उक्त मन्त्र द्वारा उपासक सर्वशक्तिमान प्रभु से उसकी विविध शक्तियों का स्मरण करते हुये प्रार्थना करता है कि उसकी सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां पवित्र होवें। परम पिता परमात्मा से अपनी इन्द्रियों की पवित्रता की याचना करते समय यदि उपासक इस बात का भी ध्यान रखता जावे कि उसकी अमुक इन्द्रियां कब पवित्र समझी जायेंगी और उनको वैसा रूप प्राप्त करने हेतु कौन-कौन से उपाय करने आवश्यक होंगे, तब कोई कारण नहीं कि उसकी प्रार्थना निष्फल हो जावे। इस मन्त्रान्तर्गत शिर अथवा बुद्धि की पवित्रता की याचना उपासक मन्त्र के आरम्भ में एवं अन्त में अर्थात् दो बार करता है और उसका ऐसा करना आवश्यक भी है क्योंकि जीवन यात्रा में सफलता-विफलता मनुष्य की बुद्धि की पवित्रता और मलिनता पर ही निर्भर करती है।

स्वस्थ बने रहने हेतु यह परमावश्यक है कि यथा सम्भव उपासक का समस्त क्रिया कलाप स्वच्छ वायु एवं सूर्य के प्रकाश से युक्त स्थान में होवे। प्रातः सायं जब वह सन्ध्योपासन करने लगे तो सूर्याभिमुख बैठकर न्यूनातिन्यून वह तीन प्राणायाम अवश्य करे। एतदर्थ यदि उसको किसी अनुभवी व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त हो जावे तो अत्युत्तम, अन्यथा महर्षि दयानन्द विरचित 'पंचमहायज्ञ विधि' पुस्तक के सन्ध्या प्रकरण में जो प्राणायाम विषय निर्देश दिया गया है उसका सावधानीपूर्वक पालन करने से प्रयोजन सिद्ध हो जायेगा। दो बातों का ध्यान रखना नितान्त आवश्यक है। प्रथम तो यह कि प्राणायाम सदैव खाली पेट किया जाए, भरे पेट पर नहीं और द्वितीय यह कि प्राणायाम करते समय रीढ़ की हड्डी सीधी रहे, झुकी हुई न हो। ब्रह्मचर्यव्रत के पालन में इससे बड़ी सहायता मिलती है।

इस चराचर जगत के अस्तित्व के विषय में दो प्रकार के मत अधिक प्रचलित हैं। एक मत के अनुसार संसार का न कभी आदि हुआ और न इसका कभी अन्त होगा। जिस रूप में यह अब वर्तमान है उसी रूप में यह सदैव से रहा है और सदैव रहेगा। इस मत के अनुसार जगत का कोई स्रष्टा और नियन्ता भी नहीं है, अतः इस मत के मानने वालों के सामने नैतिकता का प्रश्न उपस्थित नहीं होता। शासकीय दण्ड व्यवस्था अथवा इनसे कोई अधिक बलवती सत्ता इनको मनमानी करने से कभी रोक दे तो भले ही ये उच्छृंखलता दिखाने से बाज आ जावें अन्यथा सामान्यतया तो इनका व्यवहार पशुओं जैसा ही होना अनिवार्य है।

दूसरा मत—"ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या"—अर्थात् ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य समस्त दृश्य मान जगत केवल भ्रान्ति ही है। इन तथाकथित ब्रह्मवादियों के सामने भी नैतिकता का प्रश्न उपस्थित होना एक अनहोनी बात है क्योंकि जब ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य किसी जीव का अस्तित्व ही नहीं तो कौन किसके साथ दुराचार करता है और कौन किसको दुराचार का दण्ड देवे, यह कल्पनातीत बात हो जाती है।

नैतिकता और न्याय अन्याय के प्रश्न तो केवल उन लोगों के सामने ही उपस्थित होते हैं, जिनका यह विश्वास है कि इस चराचर जगत का स्रष्टा, पालनकर्त्ता और नियन्ता एक सर्वोपरि शक्ति है। संसार के समस्त जीवित प्राणियों के शरीरों में पृथक्-पृथक् जीवात्माएं विद्यमान रहती हैं जो न कभी उत्पन्न होती हैं और न जिनका कभी अन्त हुआ है। किन्तु निज-निज कर्मानुसार और संसार के रचयिता की न्याय व्यवस्था के आधीन एक शरीर से दूसरे शरीर में जाती आती रहती हैं।

अन्तिम मत केवल कल्पना नहीं है, अपितु वेद-सम्मत और वैज्ञानिक क्षेत्र की आधुनिकतम जानकारी के अनुकूल है। वैदिक संध्योपासना के अन्तर्गत उपासक तीन मन्त्रों का मनन करता है जो "अघमर्षण मन्त्र' के नाम से जाने जाते हैं। उनके द्वारा सृष्टि-क्रम का बोध कराते हुए उपासक को यह शिक्षा दी जाती है कि संसार की जैसी कुछ स्थिति वह आज देख रहा है वह स्थिर रहने वाली नहीं है और न यह सदैव से इसी रूप में विद्यमान रही है। कल्प के आरम्भ में जगन्नियन्ता पर-ब्रह्म परमात्मा के तप और ज्ञान के बल पर कारण रूप प्रकृति को अदृष्ट सूक्ष्म अवस्था से यह स्थूल रूप में परिवर्तित होती है और कल्पान्त में ईश्वरीय नियम के अन्तर्गत मूल रूप में प्रलय हो जाती है। सृष्टि और प्रलय का चक्र अनादि काल से चला आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा जीवों की सत्ता यद्यपि नष्ट कभी नहीं होती किन्तु कर्मफल भोगने में जगन्नियन्ता की न्याय व्यवस्था के सदैव आधीन रहते हैं। अतः यदि प्रजाजनों को स्वच्छन्द आचरण करने के स्थान पर उनको न्याय-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सरलता, संयम, सादगी और सत्य विचार के प्रचारक श्री महावीर स्नातक

श्री महावीर जी स्नातक का जन्म सन् १९०८ को गुजरांवाला (पाकिस्तान) में हुआ था। जब वह आठ वर्ष के थे तब उनके पिता श्री बख्त राम जी ने उन्हें स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती द्वारा संचालित गुरुकुल पोठोहार (जेहलम) में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेज दिया। वहां उन्होंने स्वामी आत्मानन्द जी के सान्निध्य में रहते पच्चीस वर्ष की आयु तक वैदिक शिक्षा प्राप्त की तथा स्नातक बने। स्वामी जी उनकी प्रतिभा तथा उनके प्रबन्धकीय गुणों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने एक नये गुरुकुल की जेहलम में स्थापना की और श्री महावीर जी को वहां का संचालक नियुक्त किया। इस गुरुकुल का संचालन उन्होंने सफलतापूर्वक किया। तत्पश्चात् १९३३ में आर्य अनाथालय झंग शहर (पाकिस्तान) में उनकी प्रबन्धक के रूप में नियुक्ति हुई। इसके साथ-साथ स्नातक जी आर्य समाज झंग शहर के १९४७ तक मन्त्री का कार्य करते रहे तथा आर्य कन्या हाई स्कूल के प्रबन्धक भी रहे।

भारत स्वतन्त्रता के पश्चात वे दिल्ली आए १९५५ तक आर्यसमाज आर्य पुरा में तथा १९६१ तक आर्यसमाज दयानन्द नन्द वाटिका में तथा १९८१ तक आर्य समाज देवनगर में पुरोहित का कार्य सुचारु रूप से करते रहे तथा आर्य जगत में उच्च स्तर प्राप्त किया। १९८१ बाद वे आर्य समाज देवनगर के मंत्री, व प्रधान के रूप में कार्य करते रहे। वे जीवन पर्यन्त आर्य जगत की सेवा में लगे रहे। उनके रोम-रोम में आर्य समाज की लगन थी। स्नातक जी ने आर्य समाज की जो सेवा की है उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे स्नेह, सत्यनिष्ठा, सद्विचार, सहयोग तथा सहृदयता के साधक थे। "तत्पश्च तन् तथामो त अश्नुते" यह उनके जीवन का लक्ष्य था।

उनका निधन २७ फरवरी ९४ को उनके निवास स्थान B-III/१५९, पश्चिम विहार, दिल्ली में हुआ। उनके निधन का समाचार सुनकर सारा आर्य जगत स्तब्ध रह गया। उनके निधन से आर्य-समाज में जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति करना अति कठिन है।

हम सब परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्राप्त होवे तथा उनके परिवारजनों को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

आस्तिकता या नास्तिकता

(पृष्ठ ८ का शेष)

संगत धर्मानुसार आचरण कराना अभिष्ट है तो वेद प्रतिपादित आस्तिकता की शिक्षा देना नितान्त आवश्यक है।

वेद के अतिरिक्त संसार के जितने अन्य मत हैं संसार के रचयिता और पालनकर्त्ता का नाम तो अवश्य लेते हैं। परन्तु वे उसको सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, सर्व शक्तिमान (अपने सम्पूर्ण कार्य बिना किसी की सहायता के करने वाला) और सर्वकाल में उसका न्यायकारी बने रहना नहीं मानते। उनमें अनेकों की मान्यता है कि ईश्वर न तो सर्वव्यापक है और न सर्वज्ञ है। ईश्वर को संसार की व्यवस्था करने के लिए अनेकों नामों से प्रख्यात सहायकों की अपेक्षा रहती है। ईश्वर की खुशामद करने से वह प्रसन्न होकर जीवों के पापों को क्षमा भी कर देता है। स्पष्ट है कि जब तक यह विचारधारा प्रचलित रहेगी, जीवों की प्रवृत्ति कभी पाप कर्मों से पराङ्मुख न हो सकेगी और जैसी आपाधापी आजकल देखने में आती है, वेद विरुद्ध मतों के प्रचलित रहते, उसका अन्त नहीं हो सकता।

बात धूप-छांव की

—डा० रतन लाल रत्नेश

कभी धूप कभी छाया का खेल सबके सामने है। उसमें कहीं कुछ छिपाव नहीं होता। यह सभी जानते हैं कि समय किसी का एक समान नहीं रहता। 'यह प्रकृति का नियम है जो व्योम चढ़ता है प्रथम गिरता वही मार्तण्ड है।' दिन आता है। दिन के बाद रात आती है। निरंतर क्रिया शील है धूप, छांव। यह समय के चक्र के दो पाट हैं, दिन रात जिसमें हम पिसते रहते हैं। इसलिए हम सब मिल कर रहना सीखें। मिल कर रहने से अपार सुख शांति की प्राप्ति होती है। मिल कर रहने से हमारा दुख बट जाता है। दुख का आभास नहीं होता। सुख बढ़ जाता है। हम दिन रात के पाटों में पिसकर भी आभास नहीं करते कि हम पिस रहे हैं। हमारा मन कभी निराश नहीं होता। निरंतर उत्साह का संवर्धन होता है। यह धूप छांव का मेल ही सुख शान्ति की अजस्त्र धारा है।

धूप छाव की आंख मिचौली जीवन का एक तमाशा नहीं है। यह विचारणीय है इसी में सब कुछ है। दिन रात की धूप छांव, हास्य रुदन की धूप छांव ये सब जीवन के पूरक है। यह सब बाहरी प्रकृति का विस्तार है। हमारे भीतर की प्रकृति का यह बाहरी होना अभ्यास है। यह योगाभ्यास हमारे जीवन को स्वस्थ बनाता है हम को जीवन दान देता है। यह दुनिया प्रकृति की व्यायामशाला है।

इसका मनमाना उपयोग भयंकर आग है। तब हम अपने ही हाथ में एक शोला लिए होते हैं। यानी मनुष्य ही सब कुछ है। यानी वही धूप वही छाव है। प्रकृति की धूप छाव ही हमारा जीवन है। धूप छांव के बिना जीवन का कोई अस्तित्व नहीं। धूप छाव हमारे जीवन की पूरक है। कभी हम धूप हैं कभी हम छाव हैं। कभी धूप कमजोर होती है तो वह छाया की शरण में आती है कभी छाया कमजोर होती है तो धूप से याचना करती है। सारे ब्रह्माण्ड के हम स्वामी हैं परम पिता परमात्मा हमारा अक्षय वट है। इसमें छाया वर्तमान है। 'ईश्वर जीव अंश अविनाशी' इसी छाया की सब पूजा करते हैं। हम धूप हैं हमारी अक्षय छाया परम ब्रह्म है।

निश्चलानन्द नहीं विषफैलानन्द

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

जब क्रूर कुचाली बकक-बकक बकता है।
फिर सीधेपन से काम नहीं चलता है।।

नारी जाति का अपमान किया निश्चलानन्द ने।
कितना पाप कमाया है विष फैला मति मन्द ने।।
यह महा घोर अपमान कौन सह सकता है।
फिर सीधेपन से काम नहीं चलता है।। १।।

नारी जाति से ही जन्म इसने पाया।
यह किसी भैंस के पेट से निकल कर आया है।।
यह पशुओं जैसे ही पैतरा बदलता है—
अब भोलेपन से काम नहीं चलता है।। २।।

जाने क्यों मनमानी बकते अनाप सनाप।
इन पर बैठा नहीं जाता है कहीं चुपचाप।।
हर मनुष्य नारी की गोदी में ही पलता है।
फिर सीधेपन से काम नहीं चलता है।।३।।

जब महिलायें मारेंगी सिर पर चप्पल।
तब ठीक ठिकाने आजायेगी अक्कल।।
क्योंकि सीधी ऊंगली घी भी नहीं निकलता है।
फिर भोलेपन से काम नहीं चलता है।। ४।।

वीर जननी देवी लक्ष्मी, सरस्वती हैं नारियां।
अबला नहीं सबला ये वीरांगना हैं सुकुमारियां।।
बर्बर इलाए दीपक भी नहीं जलता है।
अब भोलेपन से काम नहीं चलता है।। ५।।

जीवनोपयोगी कुछ विचार

(१) किसी से मिलने जाते समय हर व्यक्ति के कपड़े, जूते, छड़ी, छतरी टोपी आदि साफ सुथरे होने चाहिए।

स्वच्छता, शिष्टाचार यह प्रकट करता है कि आगन्तुक का विकास बहुत-बहुत किस स्तर के लोगों के साथ हुआ। वह सभ्य समाज का सदस्य रहा है या नहीं।

(२) बिना बुलाये किसी के घर में घुस जाना असभ्यता है। दूसरों से मिलने के लिए उनकी सुविधा का समय पूछ लिया जाय। हो सकता है कि उसी समय व्यक्ति को किसी जरूरी काम से जाना हो।

(३) वार्तालाप कुशल क्षेम से प्रारम्भ करनी चाहिए। अपनी बात कहने की अपेक्षा संक्षेप में दूसरे की मन:स्थिति और परिस्थिति जाननी चाहिए। इससे अपनी आत्मीयता प्रकट होती है। बहुत गम्भीरता प्रकट करने की अपेक्षा हंसते हुए हल्के मूड में बात करनी सदैव लाभदायक होती है। चर्चा के आरम्भ में दूसरों के सद्गुणों और सत्कार्यों की, सुरुचि की प्रशंसा करनी चाहिए। वार्ता के शुभारम्भ का यह अच्छा तरीका है। इतना सब कुछ हो चुकने के उपरान्त ही अपना अभिप्राय प्रकट करना चाहिए।

संभाषण में मधुरता का समावेश करना और बीच-बीच में उसकी स्थिति के प्रति सहानुभूति या प्रशंसा व्यक्त करते रहना आवश्यक है। मूल विषय पर जितने समय वार्ता करनी है, उसका कम से कम आधा समय वातावरण अनुकूल बनाने में खर्च करना चाहिए ताकि आप नितान्त स्वार्थी ही न मालूम पड़ें।

(४) अपनी नम्रता और दूसरे का सम्मान प्रकट करने का अवसर हाथ से न जाने देना चाहिए।

(५) दूसरे के द्वारा किये गये अभिवादन की अपेक्षा अपनी ओर से ही उसका प्रारम्भ करना चाहिए, चाहे दूसरा छोटा ही क्यों न हो। उसमें अपनी नम्रता का समावेश हो। बात न इतनी तेजी से करनी चाहिए कि दूसरों के समझने में कठिनाई पड़े और न इतनी धीमी करनी चाहिए कि अनावश्यक विलम्ब लगे।

इसी प्रकार स्वर न बहुत ऊंचा हो और न नीचा। सामान्यत: चेहरे पर गम्भीरता लाने की अपेक्षा मुस्कराते रहना उत्तम है।

(६) दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए सर्वप्रथम अपना दर्शनीय स्वरूप होना चाहिए, जिससे शिष्टता, स्वच्छता, शिक्षा, सभ्यता एवं स्तर का आभास मिलता हो। फूहड़ व्यक्ति से कोई प्रसन्नता पूर्वक नहीं मिलना चाहता। यदि मिलता भी है, तो बेमन से, आधी अधूरी बात सुनकर, बिना समाधान कारक उत्तर दिये ऐसे ही टाल मोल कर देता है। ऐसी दशा में जिस उद्देश्य के लिए मिला गया था, उसकी पूर्ति हो सकने का वातावरण बनता ही नहीं। अस्तु इन सभी बातों की पूर्ति का प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को ध्यान अवश्य रखना चाहिए जो वार्तालाप के माध्यम से अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहते हैं।

—जयपाल सिंह आर्य

आदर्श जनता इण्टर कालेज जसराना, फीरोजाबाद

गुरुकुल गोष्ठी

भारत के समस्त गुरुकुलों के प्रधानाचार्यों तथा व्यवस्थापकों से निवेदन है कि सार्वदेशिक विद्यार्य सभा द्वारा आगामी १०-११ अप्रैल १९९४ को आयोजित की जाने वाली गोष्ठी में अपने सम्मिलित होने की सूचना शीघ्र देने की कृपा करें।

आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा सम्बन्धित आर्य विद्या सभाओं/परिषदों के अधिकारी भी इस गोष्ठी में भाग लेने के लिए सादर आमन्त्रित हैं। कृपया वे भी अपनी स्वीकृति से शीघ्र अवगत करें।

गोष्ठी का कार्यक्रम १० अप्रैल रविवार को दोपहर २ बजे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्रारम्भ होगा। तदनुसार सभी सहभागी उसमें समय पर अथवा समय से पूर्व सुविधानुसार पहुंचने की कृपा करें।

गोष्ठी में आर्य विद्वानों के निर्देशन में निम्न महत्वपूर्ण विषयों पर विचार विमर्श होगा :

(१) आर्य गुरुकुलों के संगठन का निर्माण।

(२) सभी गुरुकुलों में समान पाठ्यक्रम की सम्भावनायें।

(३) गुरुकुलों के स्तर को ऊंचा उठाने के उपाय।

(४) आर्य समाज के प्रचार तथा प्रसार में गुरुकुलों की भूमिका।

(५) कन्या गुरुकुलों की विशेष समस्याओं पर विचार।

गोष्ठी का समापन ११ अप्रैल १९९४ को सायं ६ बजे होगा।

कृपया निम्न पते पर यथाशीघ्र सम्पर्क करें, ताकि भाग लेने वाले भाई-बहिनों को कोई कठिनाई न हो। —धर्मदेव

संयोजक : सार्वदेशिक विद्यार्य सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

आर्यसमाज स्थापना दिवस

९ अप्रैल ९४, शनिवार, मध्याह्नोत्तर २ से ५ बजे तक

सप्रूहाउस, नई दिल्ली

आप सब परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

—: निवेदक :—

महाशय धर्मपाल वानप्रस्थी (प्रधान) — डा० शिवकुमार शास्त्री (महामन्त्री)

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

पुस्तक समीक्षा

सामवेदीय (ब्राह्मणों का) परिशीलन

लेखक : डा० ओमप्रकाश पाण्डेय
प्रकाशक : भारत-भारती अनुष्ठानम्, १४६-कानूनगोयान, बाराबकी (उ० प्र०),
पृष्ठ संख्या . ३८२,
मूल्य : २०० रु० ।

आचार्य सायण से भी पूर्ववर्ती कुमारिलभट्ट ने सामवेद के आठ ब्राह्मण-ग्रन्थों को मान्यता प्रदान की है—

ब्राह्मणानि हि यान्यष्टौ सरहस्यान्य धीयते ।
छन्दोगास्तेषु सर्वेषु न कश्चिन्नियतः स्वरः ।।

इन आठ सामवेदीय ब्राह्मण ग्रन्थों पर ही, वैदिक साहित्य के विद्वान् डा० ओमप्रकाश पाण्डेय ने, अपने प्रस्तुत ग्रन्थ में, व्यापक शोधकार्य किया है । प्रस्तुत शोध ग्रन्थ को नौ परिच्छेदों मे विभक्त किया गया है । जिसमें सामवेदीय साहित्य का परिचयात्मक विवरण ब्राह्मण-साहित्य के अन्तर्गत सामवेदीय ब्राह्मणों के स्थान सामगान की प्रक्रिया, ऋषि, देवता एव छन्द पर विचार, सामवेदीय ब्राह्मणों में निरूपित यज्ञ सम्पत्ति, अभिचार कर्म एवम् अन्य अनुष्ठानों पर कार्य, सामवेदीय ब्राह्मणों मे निहित सांस्कृतिक सेवधि का वर्णन, सामवेदीय ब्राह्मणों के साहित्यिक अनुशीलन, सामवेदीय ब्राह्मणों का भाषा-शास्त्रीय एवं निर्वचनात्मक अध्ययन, सामवेदीय आख्यायिकाओं एवं उनके औचित्य पर विचार किया गया है । अन्तिम नवम परिच्छेद में, सामवेदीय ब्राह्मणों के दार्शनिक तत्वों तथा आचार-दर्शनों पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । जिसमे ब्राह्मणोक्त साम-सूची तथा ग्रन्थ-सूची को दिया गया है ।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के लेखक ने पहले भी 'वेदत्रयी-परिचय', 'वैदिक खिल सूक्त : एक अध्ययन', 'पारस्कार गृह्य सूत्र' तथा वैदिक साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास' नामक प्रसिद्ध शोध ग्रन्थों की रचना की है । अब, इस 'सामवेदीय ब्राह्मणों का परिशीलन' नामक शोध ग्रन्थ की रचना करके, लेखक डा० ओमप्रकाश पाण्डेय ने, वैदिक-साहित्य के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किया है । प्रस्तुत ग्रन्थ में, लेखक ने, सामवेद तथा उससे सम्बद्ध पूर्ण वाङ्मय पर एक व्यापक एवं आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है । इस ग्रन्थ की रचना से अवश्य ही वैदिक विद्वान् अनुगृहीत होंगे, ऐसी मुझे पूर्ण आशा है ।

—सम्पादक

शताब्दी समारोह सम्पन्न

आर्य समाज देवास का शताब्दी समारोह का आयोजन १०, ११ एवं १२ मार्च ८४ को सम्पन्न हुआ । इन तीन दिनों में २४ जोड़े यजमानों ने ब्रह्म-पारायण-यज्ञ सम्पन्न किया । 'राष्ट्रभाषा-सम्मेलन' 'महिला-सम्मेलन' एव 'वेद-सम्मेलन' क्रमशः मध्याह्न २ से ४ अपराह्न में हुए । तीनों दिन यज्ञोपदेश श्री प० मनुदेव जी 'अभय' पं० वेदप्रिय जी शास्त्री तथा डा० रामकृष्ण आर्य के प्रेरक उपदेश हुए । कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा ।

हिन्दू विहीन कश्मीर स्वीकार न होगा

(पृष्ठ २ का शेष)

बरस रही है किसी को ख्याल नहीं। उस स्थिति में वह कहते हैं कि भई अब हमें तो आप माफ ही कर दो जो होगा देखा जाएगा। वो एक ऐसी सूरत है जिससे हम पलट भी सकते हैं। जैसे पंजाब में हुआ। विधान सभा चुनाव के बाद वहां पंचायत चुनाव में ८१ प्रतिशत वोट आए और हालत बदल गई।

जागरण : इन्दिरा गांधी और राजीव गांधी तथा वी. पी. सिंह तीनों प्रधानमंत्रियों में आप किसको सबसे ज्यादा दोषी मानते हैं, कश्मीर की हालत के लिए ?

फारूक : मैं नहीं समझता कि मैं प्रधानमंत्रियों को दोषी मानूं क्योंकि प्रधानमंत्रियों को सारे मुल्क पर नजर रखनी पड़ती है और इन्दिरा गांधी ने भी अपनी तरफ से कोशिश की भारत मजबूत हो, भारत एक रहे। राजीव गांधी ने भी की और नरसिंह राव भी यही कोशिश कर रहे हैं कि भारत जुड़ा रहे, एक दूसरे के खिलाफ नफरत न फैले, हम किसको दोषी समझें। वह बात नहीं है। यह हमारी किस्मत का दोष है।

जागरण : विश्वनाथ प्रताप सिंह के शासनकाल पर आपने कोई टिप्पणी नहीं की ?

फारूक : विश्वनाथ प्रताप सिंह ने भी कोशिश की मुल्क को बचाने की मगर उनकी अपनी मजबूरी कि मुल्क की हालत ऐसी थी। हमारी किस्मत ऐसी थी।

जागरण : आप मुख्यमंत्री रहे। आप कश्मीर के जर्रे-जर्रे से वाकिफ हैं, इन तीनों प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल में सबसे ज्यादा नुकसान किसके कार्यकाल में हुआ ? राजनीतिक दृष्टि से राजनीतिक स्थिति किसके कार्यकाल में सबसे ज्यादा खराब हुई ?

फारूक : अब किसको दोष देना। जब विश्वनाथ प्रताप सिंह आए और उन्होंने सत्ता संभालने के बाद जो कदम उठाए वे गलत थे।

जागरण : टट्टू की हत्या के बाद अधिकारियों को बदला जाना चाहिए ?

फारूक : बड़े पैमाने पर वहां रद्दो बदल करना पड़ेगा। एक आध का नाम लूं तो ठीक नहीं। मैं तो यह कहूंगा कि पूरे प्रशासन में रद्दोबदल करना होगा। लोग समझें कि हमारे लिए प्रशासन काम कर रहा है। अगर इसी तरह बाबूशाही रही तो फिर इसमें कोई फायदा है नहीं अगर आप मेरी आवाज न सुनें और फिर उस पर अमल न करें तो मेरा मन तो फिर उठ ही गया समझो। गलत काम तो मैं नहीं कहूंगा आपसे, मगर जब सही काम भी नहीं होंगे तो लोग क्या कहेंगे ? इसलिए कारगर प्रशासन हो जो लोगों की सुन सके। उनके दुख दर्द को दूर कर सके।

जागरण : स्थानीय लोगों की भागीदारी बढ़ाई जानी चाहिए।

फारूक : मैं यह समझता हूं वैसे लोग भेजने चाहिए। जिनमें काम करने की क्षमता व स्थानीय हों वो सेंटर के हों, कहीं के हों। एक मरीज को, एक दुखी आदमी को जब वह डाक्टर के पास जाता है तो वह कभी यह नहीं देखता कि डाक्टर हिंदू है या मुसलमान है इसाई है बौद्ध है काला है गोरा है। वो तो उसके पास इसलिए जाता है कि इसकी ड्यूटी लगी हुई है वह उसे देखेगा दुख दर्द पहचान जाएगा। उसके बाद मुझे दवा देगा। ऐसा ही हमें आदमी चाहिए जो किसी भी लेवल पर हो वो उसके दर्द को पहचान सके।

जागरण : हिंदुओं का जो पलायन हो रहा है और जो जम्मू से शिफ्ट होकर दिल्ली में आ गए हैं उनके बारे में आप क्या सोचते हैं ?

फारूक : उन्हें अपने घर कश्मीर वापस जाना है हिंदू मुसलमान सिख और बौद्ध जिस तरह पहले रहते थे उसी तरह उनको वापस बसना पड़ेगा। अगर वे नहीं बसे तो मैं यह कहूंगा कि वह कश्मीर नहीं है हमें वैसा कश्मीर नहीं चाहिए। हमें जल्द से जल्द हालात पैदा करने चाहिए जहां लोग वापस हों और आजादी से इज्जत से और इस डर के बगैर कि हमें कोई मारने वाला है। हम वहां रह सकें। यह हमें करना चाहिए और जब जरूरत हो तब तक हमें उनके लिए वहां हालात अच्छे करने चाहिए। लोगों के रहने खाने का अच्छा इंतजाम हो। उनके बच्चों का इंतजाम हो। रहने का इंतजाम हो। उनकी नौकरियों का इंतजाम हो।

हमें फिर वह कश्मीर नहीं चाहिए जिसमें हिंदू मुसलमान का प्यार से जहाँ वह माहौल हो जो १९४७ में था।

जागरण : प्रधानमंत्री से अपनी बातचीत पर क्या कुछ रोशनी डालेंगे ?

फारूक : बातें बहुत हुई हैं मीटिंगें हुई हैं और हर मीटिंगों में हमने यही कोशिश की है कि प्रधानमंत्री को सही स्थिति बताने की। खासकर जब टट्टू जी गुजर गए उसके बाद हम उनके पास गए। वहां की हालत बता दी, हमने उनसे कहा कि आप इसे अपने हाथ में लें, यदि कश्मीर नहीं लेंगे तो तब तक नहीं होगा। प्रधानमंत्री पर ही है वही इस मसले को हल कर सकते हैं और कोई नहीं। और मुझे उम्मीद है कि हमारी जो बातें हुई हैं उनका कुछ नतीजा निकलेगा।

जागरण : तो कब से शुरुआत हो जाएगी इसकी ?

फारूक : मैं समझता हूं बहुत जल्दी इसकी शुरुआत हो जाएगी। हम चाहते हैं जल्दी से जल्दी मामला सुलझा लिया जाए क्योंकि पाकिस्तान का प्रेशर कभी कम नहीं होगा। भारतवासियों को एक बात याद रखनी चाहिए कि पाकिस्तान हरवक्त अपने को बचाने के लिए यह उठाता है। अपने को बचाने के लिए यदि कश्मीर का मामला नहीं होता तो वह दूसरा कोई मामला उठाता।

अगर कश्मीर का मामला नहीं होता तो वे और कोई मामला उठा ले तो पानी के मामले पर बात कर लेंगे। इसलिए पाकिस्तान नफरत से पैदा हुआ है। वह नफरत पर जिंदा रह रहा है और वह नफरत पर ही जिंदा रहेगा। हमें उस नफरत के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें घबराना नहीं चाहिये। हम अपना घर ठीक करते जाएंगे और यह बहुत जरूरी है कि हमें हर वक्त तैयार रहना चाहिए। हर मुश्किल के लिए तैयार रहना चाहिए और आपस में भाईचारा कायम रखना चाहिए क्योंकि पाकिस्तान कोशिश कर रहा है कि कश्मीर का मसला खड़ा करने के साथ क्योंकि कई हिंदुओं को जाना पड़ा एक नफरत पैदा करने की कोशिश की हिंदू और मुसलमानों में। टोटल कम्युनल प्रोक्सीवार की कोशिश कर रहा है। वे कोशिश करेंगे कि ज्यादा से ज्यादा दंगे फसाद भारत में हों। हिंदुस्तान जो आगे जाने की कोशिश कर रहा है वह न जाए और रुक जाये उसकी प्रोग्रेस। तो हमें उससे हर वक्त दूर रहना है उनकी चालों को समझना है और उन चालों का मुकाबला करना है।

जागरण : इस तरह की सूचनाएं भी मिली हैं कि पाकिस्तान इस तरह के आपरेशन की कोशिशों में लगा हुआ है।

फारूक : मुझे कल ही बताया गया। मैं एक मीटिंग में था। वहां राजेश पायलट ने साफ कहा कि पाकिस्तान की आई एस आई का यह ऐलान है कि किसी न किसी प्रकार से मुसलमानों को शामिल किया जाये। हिंदुओं में मुसलमानों के प्रति नफरत पैदा कर दी जाए।

भूल सुधार

२७ फरवरी ९४ के अंक में पृष्ठ २ पर श्रीमती सुनीति देवी की मृत्यु का समाचार छपा था। इस समाचार में सुनीति जी को श्री रामदेव जी की पुत्रवधू पढ़ा जाये। असुविधा के लिये खेद है।

—सम्पादक

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४१/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१-४-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 1-4-1994

सभामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा आर्यसमाज बैंकाक से प्रचार कार्य आरम्भ

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री दिल्ली से ८ मार्च की रात्रि हवाई जहाज से चलकर मध्य रात्रि को लगभग १-३० बजे बैंकाक हवाई अड्डे पर पहुंचे। दिल्ली से शास्त्री जी को जिस जहाज से जाना था, वह फ्लाइट स्थगित हो जाने के कारण दो-तीन घण्टे बाद वह रूसी जहाज द्वारा बैंकाक पहुंचे थे।

थाईलैण्ड में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव और शिवरात्रि पर्व

ऐशिया भूभाग में श्याम (थाईलैण्ड) देश में प्राचीन कर्मठ लोगों ने आर्यसमाज का भवन व उसका विशाल प्रांगण बनाया हुआ है। अतिथि कक्ष और सुन्दर यज्ञशाला भी निर्मित है। शिवरात्रि पर्व के उपलक्ष में पुरोहित पं० मार्कण्डेय तिवारी के पौरोहित्य में तथा यजमान श्री पं० रामपलट पाण्डेय जी अपनी धर्मपत्नी सहित यज्ञ में पधारे। यज्ञ के उपरान्त विशेष कार्यक्रम आर्य समाज के हाल में प्रारम्भ हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री रामवृक्षचन्द्र ने की।

समारोह के आकर्षण थे सत्यार्थप्रकाश के थाई भाषा के अनुवादक। जापानी प्रतिनिधि श्री हिरोसीसातो भी उपस्थित थे। भारतीय दूतावास के विशेष प्रतिनिधि के रूप में श्री मुकेश जी ने महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे, उन्होंने महर्षि के प्रादुर्भाव और देश की परिस्थितियों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुये आर्य समाज के समाज सुधार आन्दोलनों, धार्मिक व राजनीतिक चिन्तन और भारत की आजादी में उनके योगदान पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। विश्व की वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की भूमिका पर भी महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किये गये थे।

इस अवसर पर आर्य विद्वानों और स्त्री पुरुषों ने बड़ी संख्या में भाग लिया था।

वार्षिक महासम्मेलन एवं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) गाजियाबाद उ० प्र० का वार्षिक महासम्मेलन एवं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ १ से ३ अप्रैल ९४ तक कुलभूमि में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के महान संन्यासी विद्वान उपदेशक तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में होने वाले यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति ३ अप्रैल को प्रातः १० बजे होगी। २ तथा ३ अप्रैल को सायं ४ बजे आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन होगा।

श्री देवीदास आर्य का रोटरी क्लब द्वारा अभिनन्दन

कानपुर १३ मार्च, रोटरी क्लब ब्रह्मावर्त द्वारा प्रख्यात समाजसेवी श्री देवीदास आर्य का होटल हाली-डे इन में विगत रात्रि अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता बनवारी लाल गोयल (मंडलाध्यक्ष) ने की।

श्री आर्य को अभिनन्दन पत्र समर्पित करते हुए रोटरी क्लब ब्रह्मावर्त के सचिव सुभाष चमन ने श्री आर्य की समाज सेवाओं का विस्तार से उल्लेख किया।

अभिनन्दन पत्र क्लब के निदेशक रोटरी अशोक वर्मा ने पढ़ा तथा रोटरी गवर्नर बनवारी लाल गोयल ने भी आर्य को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया, तथा उन्हें क्लब की आजीवन मानद सदस्यता से विभूषित किया गया।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज मन्दिर सैक्टर III रामकृष्णपुरम नई दिल्ली-११००२२, के लिए सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। निवास की सुविधा उपलब्ध है। कृपया शीघ्र सम्पर्क करें। — वेद प्रकाश कपिल, प्रधान

राष्ट्रभृत यज्ञ तथा वार्षिकोत्सव सम्पन्न

डी. के. बाल ज्योति आर्य पब्लिक स्कूल, ए-४, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३ का वार्षिकोत्सव और राष्ट्रभृत यज्ञ बड़ी श्रद्धा निष्ठा और हर्षोल्लास से ११ से १३ मार्च १९९४ तक सम्पन्न हो गया।

वेद विदुषी बहिन आशा जी की सहयोगी बहनों ने तीन दिन वेदपाठ से यज्ञ सम्पन्न कराया।

वेद विद्वान श्री अभयदेव शर्मा ने सत्पथ पर गतिशील रहने की प्रभावशील प्रेरणा प्रदान की। मुख्य अतिथि के रूप में कुमारी सुरेन्द्र की सैनी, अध्यक्षा समाज कल्याण बोर्ड दिल्ली और स्वरूप चन्द राजन विधायक दिल्ली सरकार ने भाग लिया।

समारोह का संचालन इस संस्था के मन्त्री तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डा० धर्मपाल ने किया। दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारी तथा गणमान्य आर्य महानुभाव इस समारोह में उपस्थित थे।

विद्यालय के नन्हें मुन्ने बच्चो ने महर्षि दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। समारोह की अध्यक्षता श्री अभयदेव ने की तथा बच्चों को पारितोषिक प्रदान कर आशीर्वाद दिया। तथा संस्था की अध्यक्षा श्रीमती प्रकाश आर्या ने सभी का आभार प्रकट करते हुए संस्था की गतिविधियों का परिचय दिया।

राजेन्द्र दुर्गा, प्रचार सचिव

आर्य महासम्मेलन

[illegible] का वार्षिक उत्सव आर्य महासम्मेलन के रूप में १, २, [illegible] १९९४ को भव्यता के साथ आयोजित किया जा रहा है। उक्त कार्यक्रम में १ अप्रैल को नगर में भव्य शोभा यात्रा निकाली जाएगी। रात्रि में आर्य युवा चेतना सम्मेलन तथा २ अप्रैल को २ से ५ बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा रात्रि में ८ से ११ बजे तक महिला जागृति सम्मेलन आयोजित होगा। ३ अप्रैल को २ से ५ बजे तक पत्रकार गोष्ठी व प्रवचन तथा रात्रि ८ से ११ बजे तक संस्कृति रक्षा सम्मेलन आयोजित किए गए हैं।

उक्त कार्यक्रम में श्री राजनाथ सिंह पूर्व शिक्षा मन्त्री उ० प्र०, स्वामी कल्याणदेव जी महाराज तथा आर्य जगत के विशिष्ट आर्य नेता, विद्वान व संन्यासी भाग ले रहे हैं।

—रामकुमार गुप्ता (मन्त्री)

वैवाहिक विज्ञापन

आगरा स्थित क्षत्रिय आर्य प्रतिष्ठित परिवार की दो कन्यायें स्वस्थ व सुन्दर आयु ज्येष्ठ २४ वर्ष कद ५ फुट शिक्षा एम० ए० (राजनीति शास्त्र) तथा कनिष्ठ आयु २२ वर्ष एम०ए०एल०एल०बी० कद ५ फुट १ इन्च स्वस्थ सुन्दर हेतु जीविका सम्पन्न शिक्षित वर चाहिये।

आर्य परिवार के गुण कर्म स्वभावानुसार सम्बन्ध विचारणीय, सम्पूर्ण पत्र-व्यवहार समस्त जानकारी के साथ प्रथम बार ही अपेक्षित

पत्र व्यवहार— आर्येन्द्र उपाध्याय १६१, ध्रुव अपार्टमेंटस मदर डेयरी के पीछे पटपड़गंज, दिल्ली-११००९२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रतिनिधि तथा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द उवाच

● परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देख मिला कि वेदभाष्य सम्पूर्ण हो जावे, तो निस्सन्देह इस आर्यावर्त्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जायेगा कि जिसके मेटने और झांपने को किसी का सामर्थ्य न होगा। क्योंकि सत्य का मूल ऐसा नहीं कि जिसको कोई सुगमता से उखाड़ सके। और कभी भानु के समान ग्रहण मे भी आ जावे, तो थोड़े ही काल में फिर उग्रह अर्थात् निर्मल हो जावेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष । ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ६]   दयानन्दाब्द १७०   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५   चैत्र कृ० १४ सं० २०५१ १० अप्रैल १९९४

मुख्य निर्वाचन आयुक्त

श्री टी०एन० शेषन को सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का महत्वपूर्ण-पत्र

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने २६-२-९४ को भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री टी०एन० शेषन को एक विशेष-पत्र भेजा था। इस पत्र में स्वामी जी ने देश के समस्त नागरिकों को समान रूप से परिचय-पत्र जारी करने के सम्बन्ध में लिखा था। उक्त-पत्र अविकल रूप से नीचे प्रकाशित किया जा रहा है।

मान्यवर श्री टी०एन० शेषन जी,

सेवा में सम्मान पूर्वक नमस्ते।

मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में आप जो शानदार भूमिका निभा रहे हैं, आर्य समाज का समूचा संगठन उसकी प्रशंसा करता है। स्वतन्त्रता के बाद पहली बार आप जैसा सत्य व न्याय का पालन करने वाला निर्भीक और सशक्त प्रशासक देश को मिला है।

देश के नागरिकों के लिए परिचय-पत्र जारी करने का आपका निर्णय स्वागत योग्य कदम है। हमने ऐसी अनेक शिकायतें सुनी हैं कि बुरके की आड़ में अनेकों युवकों द्वारा मुस्लिम महिलाओं के वोट डाले जाते रहे हैं। कृपया आप अपने इस निर्णय पर दृढ़ता से कार्यवाही करें, पूरा देश आपके साथ होगा।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आप जैसे सत्य व न्याय की रक्षा करने वाले कुशल प्रशासक की अपने ग्रन्थों में बार-बार कल्पना की है। मेरी धारणा है कि आप यदि महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित साहित्य का अवलोकन करेंगे तो आपको ऐसा ही प्रकाश दृष्टिगत होगा, जिसके लिए आप अहर्निश प्रयत्नशील हैं।

शुभ कामनाओं सहित,

भवदीय

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रधान

बुर्कानशीनों को मिली छूट शेषन ने वापस ली

भुवनेश्वर, ३ अप्रैल। मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन ने कहा है कि बुर्का पहनने वाली महिलाओं को अपने मतदाता होने का पहचान-पत्र बनाने के लिए फोटो नहीं खिचाने की छूट निर्वाचन आयोग ने वापस ले ली है।

श्री शेषन ने कहा कि अगर ऐसी महिलाएं पासपोर्ट की खातिर अपनी तस्वीर खिचाने में गुरेज नहीं करती है, तो वे परिचय-पत्र के लिये भी फोटो खिचवा सकती हैं।

श्री शेषन कल उत्कल विश्वविद्यालय के छात्रों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अगर बुर्का पहनने वाली महिलाएं मतदान करना चाहेंगी, तो उन्हें लाजिमी तौर पर अपनी फोटो खिचवानी पड़ेगी।

उन्होंने कहा कि यह बात और है कि फोटो परिचय-पत्र के जरिये चुनावों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर आंशिक रूप से ही रोक लग सकेगी।

समस्त आर्य जनों को नव वर्ष की शुभ कामनायें

नव वर्ष आपके जीवन में सुख समृद्धि और ऐश्वर्य का पथ आलोकित करे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सभा-प्रधान

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

दिल्ली में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लागू

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जोरदार सराहना

नई दिल्ली २९ मार्च। भाजपा सरकार द्वारा आज पारित विधेयक के साथ ही दिल्ली में गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

दिल्ली कृषि पशु संरक्षण विधेयक १९९४ के नाम से प्रस्तुत यह विधेयक ध्वनिमत से पारित किया गया। इस विधेयक द्वारा गाय, बछड़े, व बैल सांड का वध करने, वध के लिए निर्यात या ढुलाई तथा वध के लिए बिक्री, खरीद या क्रयन पर दस वर्ष तक के कारावास व १० हजार तक के जुर्माने का प्रावधान है।

विधेयक में अधिनियम के प्रतिकूल दिल्ली के बाहर वध किए गए कृषि पशु मांस को स्वामित्व में रखने की भी मनाही है। इसका उल्लंघन करने पर एक साल तक का कारावास व दो हजार रुपये तक के जुर्माने के दण्ड की व्यवस्था है। अपराध जांच के समय स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने की जिम्मेवारी भी अभियुक्त की होगी।

दिल्ली विधान सभा ने गौमाता की जै के नारे के बीच आज दिल्ली कृषि पशु संरक्षण विधेयक १९९४ को पारित कर अपने विधायी कार्यों का श्रीगणेश किया। यह नवनिर्वाचित विधान सभा द्वारा पारित पहला विधेयक था।

विधेयक पर चर्चा प्रारम्भ करते हुए कांग्रेस (इ) के श्री अजय माकन ने इसके नाम में परिवर्तन तथा इसका क्षेत्र व्यापक बनाने का सुझाव दिया तथा इस बारे में संशोधन पेश किए जो रद्द कर दिए गये।

सदन ने कांग्रेस (इ) के नेता श्री जगप्रवेशचन्द्र द्वारा पेश संशोधनों को भी रद्द कर दिया। श्री जगप्रवेश द्वारा प्रस्तुत एक संशोधन में विधेयक में प्रस्तावित पर्यवेक्षण बोर्ड के उपाध्यक्ष के पद पर गैर-सरकारी व्यक्ति के स्थान पर किसी विधायक को उपाध्यक्ष बनाने तथा सरकार द्वारा नामित तीन विधान सभा सदस्यों के स्थान पर दो महिलाओं सहित पांच विधायक रखने का प्रस्ताव किया था।

संशोधनों को रद्द किए जाने के विरोध में कांग्रेस (इ) सदस्यों ने सदनसे वाक-आउट कर दिया। जनता दल के सदस्य भी उन्हीं के साथ सदन से बाहर चले गए। विधेयक पर विचार व इसे पारित करने के लिए आज सदन की बैठक ४५ मिनट के लिए बढ़ाई गई।

विधेयक पर विचारके दौरान प्रायः सभी सदस्यों ने इसका समर्थन किया परन्तु कांग्रेस (इ) के सदस्यों ने कुछ प्रावधानों की आलोचना की तथा कहा कि सत्ता-रूढ़ दल इसका राजनीतिक लाभ उठाने की नीयत रखता है। श्री प्रेमसिंह ने कहा कि दिल्ली में गोवध पर पहले भी प्रतिबन्ध था। इस विधेयक द्वारा मामूली परिवर्तन ही किए गए हैं। कांग्रेस (इ) के श्री मुकेश शर्मा ने सुझाव दिया कि दिल्ली में शहरी क्षेत्र के भी हर परिवार को एक गाय पालने की अनुमति दी जानी चाहिए।

चर्चा का उत्तर देते हुए शिक्षा व विकास मन्त्री श्री साहिबसिंह वर्मा ने कहा कि दिल्ली में लागू पिछले अधिनियम में नाकारा पशुओं को मार देने का प्रावधान था। यह विधेयक इस सम्भावना को तथा डिब्बा बन्द गोमांस की बिक्री को पूर्णतः प्रतिबन्धित करता है। विधेयक में पशुओं के संरक्षण के लिए गोशाला स्थापना का भी प्रावधान है।

विधेयक में [illegible] सरकारी संशोधन सदन से पारित कर दिए।

मदनलाल खुराना को बधाई

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दिल्ली राज्य सरकार द्वारा दिल्ली में गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाये जाने सम्बन्धी विधेयक पारित करने पर, दिल्ली के मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना को सम्पूर्ण आर्य जगत् की ओर से हार्दिक शुभ कामनायें और बधाई देते हुए उनके कुशल नेतृत्व और शतायु की कामना प्रकट की है।

स्वामी जी ने अपने बधाई सन्देश में कहा है—दिल्ली राज्य सरकार ने यह ऐतिहासिक निर्णय लेकर भगवान कृष्ण, महर्षि दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी की भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्हें मूर्त रूप देकर करोड़ों भारतीयों के हृदयों को जीत लिया है।

हिन्दी में कामकाज राष्ट्रीय आदेश

नई दिल्ली, ३१ मार्च। हिन्दी में सरकारी कामकाज करना न केवल सरकारी आदेश है, बल्कि राष्ट्रीय आदेश भी है। यह बात मन्त्रिमंडल सचिव जफर सैफुल्ला ने आज केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में कही। यह पहला अवसर था जब मन्त्रिमण्डल सचिव ने राजभाषा समिति की बैठक में हिस्सा लिया और उन्हें हिन्दी में कामकाज करने के लिए प्रेरित किया। श्री सैफुल्ला ने कहा कि वे हिन्दी के प्रयोग के सम्बन्ध में विभिन्न मन्त्रालयों और विभागों के सचिवों को स्वयं पत्र लिखेंगे।

बैठक के सम्बन्ध में जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि इसमें विभिन्न मन्त्रालयों की राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्ष व अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। बैठक में विभिन्न मन्त्रालयों तथा विभागों में सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति की समीक्षा की गई।

बैठक में यह भी सुझाव आया कि उन कर्मचारियों को जिनकी मातृभाषा हिन्दी है, उन्हें हिन्दी में अनिवार्य रूप से काम करने के निर्देश दिए जाएं। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए दिये जाने वाले पुरस्कारों की राशि में वृद्धि किये जाने का भी प्रस्ताव आया। साथ ही प्रशिक्षण कार्यक्रमों को तेज करने और हिन्दी सलाहकार समितियों की सिफारिशों पर तेजी से अमल करने पर भी सहमति हुई। (दैनिक जागरण १ अप्रैल)

सम्पादकीय

आर्य समाज बैंकाक के चौहत्तर वर्ष

मानव जीवन में परिवर्तन कभी आकस्मिक घटना बन जाता है। जैसे महात्मा बुद्ध को नव जीवन मिला, महर्षि दयानन्द की बोध रात्रि भी विचित्र संयोग ही है। महर्षि के सत्यार्थप्रकाश ने भी इसी प्रकार जीवन में नई चेतना व नई प्रेरणा भर दी।

मारीशस के इतिहास में सेना के नव जवानों में नई चेतना—चिता की जलती हुई लपटों में संस्कार विधि तथा सत्यार्थ प्रकाश ने की थी। आज मारीशस आर्य समाज की जन-जागृति का मुख्य केन्द्र बिन्दु है। ठीक उसी प्रकार स्याम देश, (थाईलैण्ड) में आर्यसमाज के द्वारा जन-जागृति मिली, उसका भी बौद्धिक आधार सत्यार्थ प्रकाश ही रहा है।

बैंकाक में आर्य समाज के उद्गम को यदि आकस्मिक घटना या रहस्यमय घटना की संज्ञा दी जाय तो अत्युचित न होगी।

म० गाजर मुज जी को एक कबाड़ी द्वारा आर्य जाति का गौरव वैदिक वाङ्मय, भूषण, महर्षि रचित सत्यार्थ प्रकाश मिल गया। आपने उसे देखा, सरसरी दृष्टि डाली, इस ग्रन्थ की उपयोगिता जन-जागरण की बेला में सुन रखी थी आपने वह पुस्तक ले ली और डा० पलकधारीसिंह, श्री रामदेव जी सिंह प्रभृति सज्जनों को दिखाया इसी ग्रन्थ का पारायण किया गया और आर्य समाज बैंकाक की स्थापना का मूल स्रोत बन गया। प्रतिदिन इसका पारायण प्रारम्भ हो गया और सत्संग के नाम से यत्र-तत्र चलाकर ९ मई १९२० को कप्तानपुर में वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा के नाम से आर्य समाज का कार्य प्रारम्भ हो गया। आर्यसमाज के उद्गम के साथ द्वितीय सप्ताह से आर्य समाज के १० नियमों का पारायण भी शुरु किया गया। इसके नियम और इनके उद्देश्यों को सर्व सम्मति से उद्घोषित कर साप्ताहिक अधिवेशन के अतिरिक्त पारिवारिक सत्संग भी प्रारम्भ किये गये।

वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा का कार्य आर्यसमाज के नियमों की भांति ही किया जाने लगा। उसी के अनुसार पदाधिकारियों व अन्तरंग सदस्यों का भी विधिवत गठन किया गया।

१९२० में प्रधान श्री रामदेव सिंह और श्री पलकधारीसिंह मन्त्री तथा अन्य पदाधिकारियों तथा अन्य अन्तरग सभा का भी गठन हुआ।

सत्यार्थ प्रकाश का प्रभाव

इन महानुभावों ने पांच सदस्यों को उपदेशक के रूप मे चयन किया। अब स्वाध्याय कर प्रतिसप्ताह प्रचार-प्रसार मे यह लोग युद्ध रत हो गये। निर्धारित विषयों पर बोलते रूढ़िवाद सिद्धान्त विरोधी विषयों को लेकर खण्डन मण्डन भी चालू हो गया प्रचार कार्य आर्य समाज का होता था। नाम केवल वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा का था। प्रचार में उत्साहवर्धक ज्ञानवर्धक विचार दिये जाते थे अब सत्संग में बढ़ती संख्या को देखकर स्थान का अभाव अखरने लगा।

अन्तत: श्री सरयू त्रिपाठी को नवस्थान और नया भवन बनवाने की जिम्मेदारी सौंपी गई। संकल्पित व्यक्तियो ने दृढ़व्रत लेकर भूमि का चयन कर भवन बनाने का कार्य प्रारम्भ करा दिया।

नये अध्याय का युग

५ दिसम्बर १९२२ युग निर्माण से युग परिवर्तन का काल आया और मन्त्री श्री पलकधारी के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से नया नाम आर्यसमाज घोषित किया गया तथा १ मार्च १९२३ को नये भवन में श्री रामबली सिंह की अध्यक्षता में वार्षिक अधिवेशन समारोह पूर्वक मनाया गया।

संस्था का सम्बन्ध

२३ मार्च १९२३ को आर्य समाज बैंकाक का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा (उ०प्र०) आगरा व अवध से किया गया। इस समय आर्य समाज के सदस्यों की संख्या ६० के लगभग थी।

प्रचार कार्य में विद्वान्

१९२५ में श्री महता जैमिनी जी यहां पधारे थे डा० प्रवीणसिंह जी ने काफी समय रहकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। इसी प्रकार यहां बाहर से विद्वान् आते थे और धर्म प्रचार कराया जाता था। समय-समय पर महता जैमिनी के भाषण विश्व विद्यालयोमें भी कराये गये।

स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज भी यहां पधारे और काफी समय तक प्रचार कार्य में तत्पर रहें। इनके बाद पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय मन्त्री सा० सभा भी आये और बैंकाक सिंगापुर दो माह तक प्रचार में लगे रहे। श्री पं० उपाध्याय द्वारा पारितोषिक संस्कृत सम्भाषण में विजयी होने वाले हेतु पुरस्कार भी बैंकाक से घोषित किया। जो दो वर्ष तक चला।

अब बारी थी स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा की आप भी दो मास तक रहकर प्रचार करते रहे और सदस्यों की परीक्षा तक लेते थे। स्वामी जी के भाषण वि० वि० व बौद्ध धर्म जातकों में हुए जिनकी चर्चा आज भी वहां होती है।

इन भिन्न-भिन्न विद्वानों के भाषणों का ऐसा प्रभाव पड़ा इससे आर्य समाज का गौरव बढा और आर्यसमाज के व्यक्तियों में आशा का संचार भी हुआ।

एक बार महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज भी पधारे और अपने मधुर भाषणों की जो दुन्दुभि बजाई वह अनुपम थी। यहां पंजाबी हिन्दू सिक्ख नामधारी लोगों की सख्या काफी है। हिन्दू सनातन धर्म समाज में भी आपके भाषण हुए, जो रुचिकर रहे पं० नन्दलाल वानप्रस्थी का आगमन भी मिशनरी तरीके का था वे भी सफल प्रचारक सिद्ध हुए।

आर्यसमाज जन कल्याण के क्षेत्र में

१९३४ के भूकम्प पीड़ित क्षेत्र में बैंकाक से डा० राजेन्द्रप्रसाद जी को थैली दी गई थी अन्य तूफान ग्रस्त बाढ़-पीड़ितो की सहायता कार्य मे भी यह सदा अग्रणी रहा है।

सत्याग्रह चाहे हैदराबाद का हो हिन्दी सत्याग्रह या गो रक्षा आन्दोलन, ईसाई विरोध, महासम्मेलनो आदि में सदा ही अपनी प्रान्तीय सभा उ०प्र० तथा सार्वदेशिक सभा के निर्देशों आदेशों का पालन करता रहा है।

गुरुकुल चाहे कन्याओं के हों बालकों के सदा ही उन्हे भी सहायता देते रहे हैं।

सार्वदेशिक पत्र, आर्य मित्र, परोपकारी आदि पत्रिकायें भी निरन्तर आती हैं। अपना छोटा-सा पुस्तकालय भी है।

आर्यसमाज का अब अपना विशाल भवन भी है कछ भाग अलग बनाकर किराये पर दिया हुआ है संस्कार हवनादि हेतु पुरोहित जी की नियुक्ति की हुई है।

सत्यार्थप्रकाश का थाई-भाषा में एक प्रोफेसर से अंग्रेजी से अनुवाद कराकर नि:शुल्क पठित वर्ग मे वितरित किया है यह सराहनीय कार्य है। छोटी छोटी पुस्तकों को प्रकाशित कर या दिल्ली से मंगाकर वितरित भी की जाती है। आज के परिपेक्ष्य में—श्री प० रामदलट पाण्डेय प्रधान और मन्त्री सभी लगनशील व्यक्ति हैं—सार्वदेशिक सभा दिल्ली से डा० सच्चिदानन्द शास्त्री आर्य समाज के आमन्त्रण पर पधारे और एक मास तक आर्य समाज व विष्णु मन्दिर देवस्थान सनातन धर्म मन्दिरों मे भी व्याख्यान कराये गये, सरल भाषा में मण्डनात्मक शैली का अच्छा प्रभाव पड़ा।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

हिन्दू और बौद्ध धर्म के समन्वय के लिए मुहिम

सारनाथ (वाराणसी), २३ मार्च। हिन्दू और बौद्ध धर्म में समन्वय के सूत्र तलाशने के अलावा दोनों धर्मों के अनुयायियों को करीब लाने केलिए मुहिम छेड़ी जाएगी। मुहिम फिलहाल बौद्धिक स्तर पर होगी लेकिन इसका दायरा जापान, कम्बुच्या, थाईलैंड, बर्मा, श्रीलंका, सूरीनाम आदि तमाम बौद्ध देशों में फैला होगा। तीन दिन तक यहां चली हिन्दू और बौद्ध धर्म पर कार्यशाला के बाद यह फैसला किया गया। मुहिम के तहत अगली कार्यशालाएं थाईलैंड और जापान में होंगी। विश्व बौद्ध संस्कृति प्रतिष्ठान ने पहली बार इस तरह की कार्यशाला की। आयोजक मानते हैं कि यह काफी कामयाब रही।

कार्यशाला में करीब पांच सौ विद्वानों ने हिस्सा लिया। ज्यादातर विश्वविद्यालयों और शोध अनुसंधान संस्थाओं से जुड़े लोग थे। धर्मतन्त्र से जुड़े संत महात्माओं और आचार्य बौद्ध भिक्षुओं को भी बड़ी संख्या में आमन्त्रित किया गया था। स्वामी दयानन्द, रविशंकर, भदंत मेधंकर, स्वामी सर्वानन्द, संते ज्ञानजगत, भानुपुरा मठ के शंकराचार्य, स्वामी दिव्यानन्द, स्वामी चिन्मयानन्द आदि ने विभिन्न सत्रों में सक्रिय हिस्सा लिया। कई बड़ी धार्मिक हस्तियों ने कार्यशाला के लिए आशीर्वाद और शुभकामना संदेश भेजे। इनमें दलाई लामा और कांचीमठ के शंकराचार्य भी शामिल हैं। जापान से आये बौद्ध विद्वानों का दल भी कार्यशाला में शरीक था। उनकी अध्यक्षता मिहोम जी मन्दिर के अध्यक्ष नोरिहिको माशिनोमोतो ने की।

पांच सत्रों में जिन विषयों पर विचार मंथन हुआ, वे हिन्दू और बौद्ध दर्शन में विरोध के मुख्य कारण रहे हैं। ये विषय 'कर्म और पुनर्जन्म', 'आत्मा और चेतना', 'मोक्ष और निर्वाण', 'परब्रह्म तथा शून्यता' और युगावतार की धारणा एवं भगवान बुद्ध' हैं स्वामी दयानन्द ने इन विषयों पर टिप्पणी करते हुए कि विरोध सिर्फ अभिव्यक्ति और प्रतिपादन की शैली के कारण ही दिखाई देता है। तात्विक दृष्टि से तो बौद्ध और हिन्दू परम्परा एक दूसरे की पूरक है। आदि शंकराचार्य को बौद्ध दर्शन का सबसे बड़ा आलोचक कहा जाता है लेकिन उनका चिन्तन थोड़े बहुत शब्दों के अन्तर से बौद्ध दर्शन की ही छाया लगता है। इस समानता के कारण आदि शंकराचार्य को आगे चल कर 'प्रच्छन्न बौद्ध' कहा गया। जिसे हम परब्रह्म कहते हैं बौद्ध दर्शन उसे शून्यता के रूप में परिभाषित करता है।

कार्यशाला मे कई विद्वानों ने दोहराया कि भगवान बुद्ध न तो ब्राह्मणो के खिलाफ थे और न ही वेदों के। अपने उपदेशों में उन्होने बार-बार सच्चे ब्राह्मण और वेदो के तत्वज्ञान की चर्चा की है। आत्म कल्याण के लिए वे परम्परा से बंधे होना जरूरी नहीं समझते थे। इसलिये कहीं कहीं वे वेद के विरुद्ध भी दिखाई देते हैं। स्वामी दिव्यानन्द ने भागवत, गीता और गीत गोविंद के उद्धरण देते हुए कहा कि भगवान बुद्ध का उद्देश्य कोई अलग धर्म सम्प्रदाय चलाना नहीं था। बल्कि धर्म में उस समय आई जड़ता और संकीर्णता का निवारण करना था। इस तथ्य को स्वीकार करने के बाद हिन्दू परम्परा ने उन्हें विष्णु का एक अवतार मान लिया।

विश्व बौद्ध संस्कृति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार मोदी ने बताया कि करीब दस साल पहले इस तरह के आयोजन का संकल्प किया था। वह पूरा हुआ। अब सिलसिला शुरू हो गया है और इसी तरह चलता रहा तो हमें दोनों धर्मों के बीच पुल बनाने में कामयाबी मिलेगी। उन्होंने कहा कि अपने ढंग का यह पहला प्रयास था। इसमें खामियां रही होंगी। अगले आयोजनों में हम उन्हें दूर कर लेंगे। भाग लेने वाले विद्वानों में कुछ को शिकायत थी कि उन्हें समय नहीं दिया गया या बहुत थोड़ा समय दिया। आखिरी सत्र में बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय में प्रोफेसर कमलाकांत त्रिपाठी ने असहमति दर्ज कराई कि कार्यशाला शुरू होते वक्त तय हुई पद्धति मनमाने ढंग से अचानक बदल दी गई। इन छुटपुट आपत्तियों के अलावा कार्यशाला के नतीजों पर आमतौर से सन्तोष ही जताया गया।

(जनसत्ता २४ मार्च से साभार)

कलकत्ता में अग्निवेश का भारी विरोध

आर्य समाजों में नहीं बोलने दिया गया

कलकत्ता। अग्निवेश को आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के पदाधिकारियों और आर्य जनता के भारी विरोध और प्रदर्शन के कारण, कलकत्ता की दो प्रमुख आर्य समाजों--विधान सरिणी और बड़ा बाजार में भाषण दिए बगैर खाली हाथ वापस लौटना पड़ा है। इस विरोध और प्रदर्शन पर अग्निवेश के तथाकथित उग्रवादी साथियों ने आर्य बन्धुओं पर डण्डे और लाठियों से वार भी किये। उल्लेखनीय है कि अग्निवेश के ये उग्रवादी तेवर राज्य स्तर पर प्रारम्भ किये गये नए उग्रवादी कार्यक्रम के तहत हैं, इसकी पुष्टि उनके कलकत्ता में की गई २० मार्च की उस घोषणा से होती है जिसमें उन्होंने ऐलान किया था—कि बंधुआ मुक्ति मोर्चे के लिए वह अब उग्रवाद का रास्ता अपनायेंगे। यह सभा ४ नक्सलवादी गुटों के संयुक्त मोर्चे द्वारा आयोजित की गई थी।

विदित हो कि आर्य समाज में व्यापक भ्रष्टाचार और अनुशासनहीनता के कारण अग्निवेश और उनके साथियों को सार्वदेशिक सभा ने कई वर्ष पूर्व से आर्य समाज की प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित किया हुआ है। उनका निष्कासन अभी भी प्रभावी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री बटुकृष्ण बर्म्मन और मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य की कलकत्ता में--सार्वदेशिक सभा के अनुशासन की रक्षा और निर्देशों का पालन करने के लिए आर्य जनों द्वारा सर्वत्र प्रशंसा हो रही है।

आ० प्र० सभा, बंगाल

आर्य समाज बैंकाक

(पृष्ठ ३ का शेष)

क्रान्ति की ज्वालायें

वैसे तो आर्य समाज सदा ही स्वतन्त्रता आन्दोलन मे अग्रणी रहा है परन्तु एक ऐतिहासिक घटना की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं।

जब नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जापान सिंगापुर वर्मा आदि में युद्धरत थे, उस समय बैंकाक मे श्री रासबिहारी बोस संगठन के कार्य में संलग्न थे, परन्तु यहां जनता चाहती थी जब तक नेता जी के दर्शन नही होंगे, हम आगे नहीं आयेंगे, अन्ततः रंगून से श्री नेताजी जब बैंकाक आये और आर्य समाज का प्रांगण छावनी बना हुआ था। आर्य समाज के ३८० सदस्यों ने आन्दोलन को सफल बनाने में अनुपम भाग लिया। फौज में भी भर्ती हुए, जिसे नेताजी ने भी सराहा था। उस समय के युवा नेता श्री सहदेवसिंह, श्री अनिरुद्ध शुक्ल, श्री कस्तूरीलाल का नाम विशेष उल्लेखनीय है सहदेवसिंह जी का मोर्चे पर सूझ बूझ का परिचय स्तुत्य है। युद्ध के परिपेक्ष्य में—

श्री सीताराम जी श्री नरसिंह शाहजी श्री कालिका शाहजी सिंह श्री भागीरथीशाही, श्री रामधनी शाह, आदि शूरवीरों ने सरकार में कार्य किया था। श्री सुन्दरचन्द्र जी श्री रामनारायण सिंह जी विशेष उल्लेखनीय है –

ये सभी जन जनता की निगाहों मे प्रतिष्ठा की नजरों से देखे जाते थे।

आज का आर्य समाज

श्री रामपलट पाण्डेय प्रधान श्री लालबहादुरसिंह मन्त्री श्री रमेश शाही, श्री दयानन्द जैसे प्रमुख कार्यकर्त्ता अभी भी उत्साह से संलग्न हैं।

डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री आजकल धर्म प्रचार में लगे हुए हैं। एक मास तक रहेंगे। वह सदा ही भारत में तथा विदेशों में प्रचारार्थ जाते ही रहते हैं यह उनकी छठी विदेश यात्रा है।

आध्यात्मिक जगत को आर्य समाज की देन [४]

डा० प्रेमचन्द श्रीधर

षड्दर्शनों का समन्वय :

दर्शन शब्द का अर्थ है—देखना, या जिस माध्यम से देखा जाए 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' परन्तु चर्मचक्षुओं से तो केवल स्थूल जगत ही दिखाई देता है। परन्तु सृष्टि में दृष्टिगोचर समस्त पदार्थों का वास्तविक तात्त्विक स्वरूप क्या है ? इनके गुण धर्म का ज्ञान, इनकी उत्पत्ति का कारण तथा प्रक्रिया क्या है ? इसका विचार स्थूल चक्षुओं से नही जाना जा सकता अपितु ज्ञान चक्षु ही इस रहस्य को जान सकते हैं। 'दर्शन' शब्द इन्हीं ज्ञान चक्षुओं द्वारा जानने और समझने के अर्थ में आता है। इसलिए हलायुधकोष के अनुसार -

'दृश्यते यथार्थतत्त्वमनेनेति''

अर्थात जिसके द्वारा यथार्थतत्व का बोध हो उसे 'दर्शन' कहा है।

उपरोक्त परिभाषा के अनुसार सृष्टि-उत्पत्ति, ईश्वर, जीव, प्रकृति जन्म-मरण कर्म तथा पुनर्जन्म आदि विषय भी दर्शन के अन्तर्गत ही आते हैं।

दार्शनिक विवेचन के तीन ही प्रमुख विषय हैं – ब्रह्माण्ड, ब्रह्म और स्वय मनुष्य। हम इनके स्वरूप को जानने की जिज्ञासा रखते हैं इन तीनो का आपस का सम्बन्ध क्या है ? यह भी दर्शन का विषय है।

प्राचीन काल मे प्रमुख प्रश्न ब्रह्माण्ड और ब्रह्म का सम्बन्ध था, मध्यकाल में परमात्मा और जीवात्मा के विषय को प्रमुखता प्राप्त हुई। नवीनकाल मे ज्ञान-मीमासा चर्चा का विषय बनी, अब आत्मा और प्रकृति का सम्बन्ध प्रमुख रूप से अध्ययन का केन्द्र है।

मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु है। आश्चर्य का भाव ही विभिन्न प्रश्नो की माता है। विश्व को देखकर आश्चर्य चकित अवस्था मे मनुष्य का हृदय निम्न प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए उत्सुक हो उठता है

(१) यह जगत क्या है ?

(२) कहां से आया ?

(३) कब और कैसे प्रकट हुआ ?

किं स्विद्वन क उ स वृक्ष आस यतो द्यावा पृथिवी विमर्ति।

ऋ० मं० १० ३१ ८

यह अज्ञानता का भाव ही भारतीय दर्शन शास्त्र का मूल उदगम है।

इन प्रश्नों का उत्तर खोजना और गहरे चिन्तन मे उतरना ही दार्शनिक विवेचन है। उपनिषदो मे इनकी चर्चा है। दर्शन शास्त्र भी इन प्रश्नो के समाधान मे सहायक है। दर्शन मे (१) जगत के निमित्त कारण (२) जगत के उपादान कारण (३) जगत की बनावट (४) क्रिया और दृष्ट घटना का विवेचन विभिन्न दार्शनिको के चिन्तन के परिणाम स्वरूप प्राप्त ज्ञान के आधार पर मिलता है।

ब्रह्मवादी जगत का कारण ब्रह्म को मानते हैं। परन्तु हम कैसे पैदा हुए ? किससे जीवित रहते हैं ? किसमे स्थित हैं ? कौन हमे अपने अटल नियमो की व्यवस्था मे बाधे हुए हैं ? जगत मे निमित्त और उपादान दोनो का ही कारण ब्रह्म मानने से इन समस्याओ का यथोचित उत्तर नही मिल पाता।

काल, स्वभाव, नियति, योग (इत्तिफाक) भूत या पुरुष यह भी कारण माने गये हैं। इन पर विचार आवश्यक है। काल से भूत तक निमित्त कारण मानने पर, आत्मा का कोई समाधान प्रस्तुत नहीं होता। आत्मा भी कारण नहीं क्योंकि फिर सुख-दु ख किसके आधीन है ? कौन कर्माध्यक्ष है ?

यदि स्वभाव जगत का कारण है तो वह स्वभाव किसका ? अस्तित्व का होना पहले आवश्यक है। वह अस्तित्व कहा से आया ?

तीसरा समाधान पदार्थों के अन्दर नहीं उनके बाहर देखता है, और नियति (अनिवार्यता) को कारण मानता है। किसी बाह्य शक्ति की अनिवार्यता को, तो वह शक्ति क्या है ? यह प्रश्न फिर भी बना रह गया।

सयोग (इत्तिफाक) को कारण म नने वाले कहते हैं कि कारण कार्य सम्बन्ध हम देखते हैं, परन्तु हमारा अनुभव तो अत्यन्त सीमित है।

प्रकृतिवादी जगत को भूतो से बना मानता है. वह भूत एक प्रकार के परमाणु हैं या अनेक प्रकार के, यह विवाद है। परन्तु मौलिक सिद्धात यह है कि विश्व पचभूतों का बना है। हां, यदि इनको ही कारण मान लें तो आत्मा का समाधान शेष रह जाता है। और यदि आत्मा को ही मूल कारण मान लिया जाए तो जो अपने सुख दु ख के निश्चित करने मे समर्थ नहीं, वह (आत्मा) विश्व की रचना का मूल कारण कैसे हो सकती है ? आत्मा के सम्बन्ध में वेदान्त की कुछ धारणाओ पर भी एक दृष्टि डाल लेना समीचीन रहेगा। इससे ब्रह्म, ब्रह्माण्ड और आत्मा का सम्बन्ध निर्भ्रान्त होकर समझा जा सकेगा।

(१) आत्मा को परमात्मा अपने से उत्पन्न करता है।

(२) अभाव से उत्पन्न करता है।

(३) परमात्मा का अश है जैसे जल-बिन्दु समुद्र का।

(४) अग्नि से चटखने वाली चिंगारियो के समान मूल मे परमात्मा एक है।

(५) आत्मा उस परमात्मा का सान्त परिणाम है जैसे बुलबुले समुद्र।

(६) आत्मा स्वप्न दृश्यो की भान्ति सर्वथा मायिक है।

इसके अतिरिक्त चार्वाक और बौद्ध दर्शन के अनुसार आत्मा और परमात्मा दोनो हैं ही नहीं।

इन सब धारणाओ का अति सुन्दर उत्तर यजुर्वेद के ४० वें अध्याय में मिलता है।

ब्रह्म दृश्य जगत का भाग नहीं है, इसलिए हमारी ज्ञानेन्द्रियो का विषय ही नहीं हो सकता। वेद में कहा है—'सत्य का मुख चमकीले पात्र से ढका हुआ है और प्रार्थना की गई है कि ईश्वर इस स्वर्णमय ढक्कन को (अपावृणु) हटा दे, ताकि हम सत्य और धर्म के दर्शन कर सके।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म॥

—यजु० ४०। १७

वह चमकीला पात्र, जिसे हिरण्मय कहा है, वह दृश्यजगत ही है। हम इसी पर मोहित हैं, इसके नीचे और इससे परे कभी भी नही देखते। जब बाहर से, अर्थात दृश्यमान जगत से दृष्टि को हटाकर देखेंगे तो आत्मा और परमात्मा को जानने का सामर्थ्य प्राप्त होगा।

प्रश्नोपनिषद मे भी सुन्दर विवरण पढने को मिलता है। कात्यायन कबन्धी के प्रजा की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे पूछने पर महर्षि पिप्पलाद ने कहा "प्रजापति ने प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा से तप तपा और तप के फलस्वरूप 'रयि और प्राण का जोडा उत्पन्न हुआ। यह दोनो अनेक प्रकार की प्रजा को उत्पन्न करने मे समर्थ हुए। 'रयि' हैं अजीव सामग्री (ऐश्वर्य) और 'प्राण' है जीवन शक्ति। दोनो मे प्राण ही प्रबल है और रयि पर शासन करता है। सूर्य प्राण है तो चन्द्रमा 'रयि। दिन प्राण' है तो रात्रि रयि' मनुष्यो मे जितनी शक्ति किसी मे होती है, उतना ही वह प्राण रूप है, जितनी निर्बलता होती है, उतना ही वह रयिरूप है। जहा तक प्राण और रयि का सम्बन्ध है, पहला शासक है दूसरा शासित।

हम सक्षेप मे यहा कुछ निष्कर्ष देकर सन्तोष करेगे

(१) ब्रह्माण्ड ब्रह्म की रचना है। जड प्रकृति या अल्प आत्मा मे इस रचना का कोई सामर्थ्य स्वय मे नही है।

(२) अभाव से भाव की उत्पत्ति सम्भव नहीं है। सृष्टि बीज रूप में अव्यक्त प्रकृति (अक्षर) के रूप मे विद्यमान थी।

(३) सृष्टि की बनावट मे प्राण और रयि विद्यमान हैं। दोनो के कारण यह नाम रूप ससार है।

(४) क्रिया चेतन कर्ता की ही होती है। प्राकृत जगत मे कुछ भी हो रहा है, वह वास्तव मे ब्रह्म की शक्ति का ही प्रकाशित रूप है।

(५) ब्रह्म प्रकृति और जीवात्मा तीनों ही अनादि हैं।

(क्रमश)

जो मुसलिम विरोधी बात करे वह मान्य नेता नहीं

काशी व मथुरा भाजपा के एजेंडा में नहीं : उमा भारती

नई दिल्ली, २८ मार्च। भाजपा सांसद सुश्री उमा भारती को, भारत में यदि रहना होगा-वन्देमातरम कहना होगा, और जो हिन्दू हित की बात करेगा वही देश पर राज करेगा, सरीखे नारों पर कड़ी आपत्ति है। उन्होंने कहा है कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी भी ऐसे नारों के विरोधी हैं। तथा जो नेता मुसलिम विरोधी बात करता है, वह भाजपा का मान्य नेता हो ही नहीं सकता।

सुश्री उमा भारती ने उक्त विचार सोमवार को यहां 'मुसलिम युवा सम्मेलन' में व्यक्त किए। वह सम्मेलन में भाग लेने वाले मुसलिम युवाओं के सवाल का जवाब दे रही थीं। भारतीय जनता युवा मोर्चा के इस सम्मेलन में जामिया मिलिया इस्लामिया, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय तथा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अनेक छात्रों सहित लगभग दो सौ लोगों ने हिस्सा लिया।

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कृष्णलाल शर्मा मुख्य अतिथि थे। भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के अध्यक्ष आरिफ बेग मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हुए। सम्मेलन की अध्यक्षता सुश्री उमा भारती ने की। अन्य वक्ताओं में मोर्चा के महामन्त्री विजय गोयल, उपाध्यक्ष मुख्तार अब्बास नकवी और कार्यकारिणी सदस्य सैय्यद शाहनवाज हुसैन प्रमुख थे।

सम्मेलन दो चरणों में सम्पन्न हुआ। पहले में नेताओं का सम्बोधन था और दूसरे चरण में प्रश्नोत्तर काल। मुख्य अतिथि शर्मा ने कहा कि भाजपा ने कभी भी मुसलिम समुदाय के साथ भेदभाव नहीं किया है।

श्री आरिफ बेग ने कहा कि दूसरी पार्टियां अब तक मुसलमानों के जज्बात को भड़का कर उन्हें टकराव के रास्ते पर ले जाती रही हैं। सुश्री उमा भारती ने भारतीय संस्कृति, सैक्यूलरिज्म, ६ दिसम्बर की घटना भाजपा का मुसलिम समुदाय के प्रति दृष्टिकोण जैसे तमाम पहलुओं को शामिल किया। उन्होंने कहा कि 'सैक्यूलरिज्म' बहुत जटिल शब्द है। यह अंग्रेजी की 'आंटी' जैसा है जो यह नहीं स्पष्ट कर पाता कि आंटी बुआ है, मौसी है या चाची है। उन्होंने कहा कि यदि यह साम्प्रदायिकता विरोधी है तो फिर अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक सभी प्रकार की साम्प्रदायिकता प्रतिबन्धित होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि वास्तव में तुष्टिकरण आम मुसलमान का न होकर कुछ मुसलिम नेताओं का हो रहा है। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे मुसलिम वोटों की सौदेबाजी करने वाले परम्परागत नेतृत्व की बजाय एक नई शुरुआत करें। ६ दिसम्बर की घटना का उल्लेख करते हुए सुश्री उमा ने कहा कि 'मैंने यह कभी नहीं कहा कि एक धक्का और दो···' जबकि ऐसी बातें प्रचारित की गई।

सलमान रुश्दी की विवादास्पद पुस्तक 'सैटेनिक वर्सेज' का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि 'इस पुस्तक को मैंने पढ़ा है। बहुत अपमान लगा। यह घटिया स्तर की किताब है। इसमें मोहम्मद साहब की पत्नियों के साथ-साथ भगवान हनुमान के बारे में भी न जाने क्या-क्या लिखा है।

मुसलिम विरोधी नारों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इस सम्बन्ध में वे बातें जो विरोधी करते हैं ज्यादा प्रचारित हुई हैं जबकि सही बात सामने नहीं आ पाई। उन्होंने एक शेर पढ़ा, 'इधर चिलमन से हम झांके, उधर चिलमन से तुम झांकों-लगाएं आग चिलमन को न हम झांके न तुम झांकों।'

दूसरे चरण में प्रश्नोत्तर के दौरान मुसलिम विरोधी नारों के सवाल पर उन्होंने कहा कि हमारे मान्य नेता ऐसे तमाम नारों आदि पर आपत्ति जताते आए हैं। भाजपा की स्पष्ट मान्यता है कि "फूट डालो-शासन करो की राजनीति नहीं चलने दी जाएगी।"

हिन्दुत्व की क्या परिभाषा है? इसकी सार्थक व्याख्या कर समझाएं तथा काशी की ज्ञानवापी मसजिद और मथुरा की ईदगाह के बारे में अपना नजरिया स्पष्ट करें? इन सवालों के जवाब में सुश्री उमा ने कहा कि हिंदुत्व की व्याख्या किसी ग्रन्थ, पंथ से नहीं हो सकती। हिंदुत्व उन विभिन्न विचार-धाराओं और अनुभवों का समूह है जो आत्मा का उत्कर्ष परमात्मा तक करते हैं।

काशी और मथुरा के सवाल पर उन्होंने कहा कि इन दोनों पर भाजपा अपनी ओर से न कोई चर्चा करती है और न करना चाहती है। इस बीच श्री आरिफ बेग ने स्पष्ट किया कि भाजपा के एजेण्डा में सिर्फ राम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण का मुद्दा शामिल है। काशी, मथुरा भाजपा के एजेण्डा में नहीं है। हिंदुत्व को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि यह इस मातृभूमि की माटी की खुशबू है।

जामिया इस्लामिया के एक विद्यार्थी ने सवाल उठाया कि संगोष्ठियों और रैलियों में आपके तेवर अलग-अलग क्यों नजर आते हैं? एक अन्य सवाल था क्या आप अपनी वर्तमान लाइन पर टिकी रहेंगी? इस पर सुश्री उमा का कहना था कि यह कोई ऐसी लाइन नहीं है जिसे मैंने अब एडाप्ट किया है, मैं इसी लाइन में हूं। उन्होंने कहा कि "यह देश मनुस्मृति या शरीअत से नहीं, भारतीय संविधान से चलेगा।" उन्होंने कहा कि हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि मजहब के आधार पर फूट डालकर वोट की राजनीति का षड्यन्त्र रचाने वालों के इरादों को विफल कर देंगे तथा मुसलिम समुदाय में भाजपा के प्रति फैली नफरत व भ्रांतियों को दूर करेंगे।

(दैनिक जागरण से साभार)

महाराष्ट्र के भूकम्प पीड़ितों हेतु—

संस्था सत्यसनातन वैदिक प्रकाश (आर्य समाज एम्सटर्डम) द्वारा सराहनीय योगदान

क्रम	दाता	राशि	
१	संस्था सत्य सनातन वैदिक प्रकाश एम्सटर्डम	१०००.००	गिल्डर
२	परिवार शुभधन	१००.००	"
३	परिवार पुनवासी	५०.००	"
४	परिवार महादेव	२५.००	"
५	परिवार कुमार	२५.००	"
६	परिवार एस० नगेसर	५०.००	"
७	परिवार जे० सीताराम	२५.००	"
८	परिवार एस० बिहारी	२५.००	"
९	परिवार एस० बिहारी	२५.००	"
१०	परिवार एच० विशम्भर	१०.००	"
११	परिवार आर० धुमे	२५.००	"
१२	परिवार ज्वाला प्रसाद	२५.००	"
१३	परिवार एम० छोटकन	२५.००	"
१४	परिवार आर० दविन्दर	५०.००	"
१५	परिवार जी० पुनवासी	२५.००	"
१६	परिवार एम० जयागोदा	२०.००	"
१७	परिवार बी० छोटकन	२५.००	"
	होलैण्ड के गिल्डर	१५१०.००	
	भारतीय मुद्रा में	२३१४७)	

कोर्ट मार्शल की खबर से स्तब्ध सुरक्षाकर्मियों का प्रश्न

तो क्या राष्ट्र विरोधियों के गले में हार डालें ?

हरबंस नागोके

जम्मू, २८ मार्च। राष्ट्रविरोधी तत्वों को दबाने में जुटे सीमा सुरक्षा बल के १४ कर्मियों के कोर्ट मार्शल की खबर से घाटी में आतंकवादियों के हौसले बढ़े हैं और सुरक्षा बल स्तब्ध हैं।

जागरण संवाददाता ने सुरक्षा बलों के दर्जनों अधिकारियों व जवानों से इस विषय पर बात की। जवानों के चेहरे पर कठोरता और उच्च अधिकारियों की आंखों में केन्द्र सरकार पर गुस्सा पाया गया। काफी आश्वासन देने के बाद कि नाम प्रकाशित नहीं किया जाएगा, अधिकारियों और जवानों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

जम्मू छावनी में कई जवानों का कहना है कि ट्रेनिंग समाप्ति के बाद धर्मग्रन्थों और तिरंगे पर हाथ रखवा कर शपथ दिलाई जाती है, हम देश की एकता, अखण्डता और मातृभूमि की रक्षा के लिए तन-मन से सेवा करेंगे।' अब हमारे सामने राष्ट्रविरोधी नारे लगाए जा रहे हैं। भारत मां को गाली दी जा रही है। तो क्या हम इन राष्ट्र विरोधियों को गोली न मार उनके गले में हार डालें ?

बी०एस०एफ० मुख्यालय पलौड़ा में कुछ जवान चाहते हैं कि गेहूं के साथ तो घुन पिसता ही है। हम में हर कोई अर्जुन तो नहीं जो एक अच्छा निशानेबाज हो। क्या सरकार ने अभी तक किसी आतंकवादी का कोर्ट मार्शल किया है ? आतंकवादियों ने तो पाकिस्तान की शह पर देश की रक्षा में जुटे हमारे सैकड़ों भाईयों को बारूदी सुरंग लगाकर, हथगोला फेंककर और घात लगाकर शहीद कर दिया। यह कहना था केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के उन जवानों का जो जम्मू में गश्त दे रहे हैं।

झगड़े के तीन मूल कारण हैं :—जर, जमीन, जोरू जबकि हमारे जवानों के साथ तीनों ही लागू नहीं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारा झगड़ा नहीं। हमारे जवानों की तैनाती देश की अखण्डता बनाए रखने के लिए है। जो उसे तोड़ने की कोशिश करेगा तो उस पर जवान की बन्दूक नहीं चलेगी तो क्या भाषण चलेगा ? यह एक जूनियर अफसर ने कहा।

बी०एस०एफ० के एक उच्च अधिकारी ने स्वीकार किया कि जवानों ने २२ अक्टूबर को बिजबेहरा में गोली चलाई। परन्तु क्या उन लोगों को राज्य सरकार दबोच सकी जिन्होंने वहां के नागरिकों को उकसा कर उनकी ओट लेकर सुरक्षा बलों पर गोली चलाई ?

एक अन्य अधिकारी का मानना है कि राज्य सरकार ने इस कांड को अधिक तूल दिया। सुरक्षा बलों को बदनाम करवाने की यह साजिश थी।

१२ जवानों और दो अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की खबर से जंगजुओं के हौंसले अवश्य बढ़े हैं घाटी से प्राप्त समाचारों के अनुसार अब जंगजुओं ने एक और योजना बनाई है। इसके तहत अब लोगों को जुलूस निकालने के लिए उकसाया जाएगा। जुलूस में कुछ जंगजू भी होंगे। जंगजू सुरक्षाबलों पर फायरिंग करेंगे। जवाबी कार्रवाई से कई निर्दोष नागरिक स्वाभाविक रूप से मारे जाएंगे। इस योजना के अनुसार जंगजू संगठनों को अब सुरक्षाबलों को बदनाम करने का एक और मौका मिलेगा।

सूत्र बताते हैं कि केन्द्र सरकार की इस कार्रवाई के आरम्भ करते ही कश्मीर में कार्यरत सुरक्षाबलों के हौसले गिरने आरम्भ हो गये थे। कुछ घटनाओं का विवरण सूत्रों ने बताया।

७ नवम्बर को अंतरराष्ट्रीय सीमांत रामगढ़ सैक्टर में एक भूखंड को पाकिस्तान ने हथियाने की कोशिश की। गोलीबारी हुई तीन पाकिस्तानी रेंजर मारे गये व पांच घायल हो गए।

सूत्र बताते हैं कि अधिकारी की कमांड थी, उससे पूछताछ आरम्भ हो गई। गोलीबारी में खाली खोल कम मिले। नतीजा हुआ कि पाक रेंजरों ने २२ दिसम्बर को पुन: इसी सैक्टर में गोलीबारी आरम्भ कर दी।

सूत्र बताते हैं कि बी०एस०एफ० के तीन जवान पाक रेंजरों की फायरिंग के रेंज में आ गए थे। इन जवानों ने ४ घण्टे में पाकिस्तानी गोलियों की बौछार से अपने आप को बचाया। सूत्र बताते हैं कि यदि गोलीबारी अधिक चलती और कारतूसों के खोल न मिलते तो इनकी भी जांच पड़ताल होनी थी। हालांकि इस गोलीबारी के जवाब में तीन रेंजर पुन: मारे गए थे।

सूत्र बताते हैं कि जिला डोडा में सुरक्षा बलों ने जंगजुओं के साथ जो समझौता कर रखा था कि 'तुम हमें न छेड़ो हम तुम्हें नहीं' का मूल कारण सुरक्षा बलों के बन्धे हाथ बताया गया था।

आवश्यकता है

एक ट्रस्ट को हिन्दू धर्म का प्रसार करने के लिये लगन से कार्य करने वाले आयु लगभग ४० वर्ष, आर्य समाज के साहित्य पर श्रद्धा रखने वाले जिसने अंग्रेजी माध्यम से बी०ए० पास किया हो ऐसे आकर्षक व्यक्तित्व के युवक की आवश्यकता है। मासिक मानदेय ढाई हजार रुपये या योग्यतानुसार अधिक। आवेदक की दिल्ली में रहने की अपनी व्यवस्था होनी चाहिये। सम्पर्क निम्न पते पर करें।

गंगादेव शर्मा
सी० ११९ सरोजनी नगर
नई दिल्ली-२३

दक्षिण दिल्ली में इस्लामी अदालत का कामकाज शुरू

नई दिल्ली, २८ मार्च (प्रेट्र)। अखिल भारतीय मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने अपनी पहली इस्लामी अदालत यहां स्थापित कर ली है। हाल में बोर्ड की बैठक में देशभर में मुसलमानों के लिए शरीयत अदालतें स्थापित करने का निर्णय लिया गया था।

दक्षिणी दिल्ली के ओखला क्षेत्र में जनवरी के अंतिम सप्ताह में दारुल काजा (काजी की अदालत) स्थापित की गई। इस इलाके में बड़ी संख्या में मुसलमान रहते हैं।

शादी, तलाक, वारिस व भरण-पोषण संबंधी मामले बराबर अदालत के समक्ष लाए जा रहे हैं। कई मामलों में काजी ने नोटिस भी जारी किए हैं।

अक्टूबर में बोर्ड की जयपुर में हुई बैठक में निर्णय लिया गया था कि देश के सभी राज्यों में ऐसी अदालतें स्थापित की जाएं। ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सचल अदालतें बनाई जाएं ताकि मुसलमानों को जल्द से जल्द न्याय दिलाया जा सके।

यह फैसला देशभर में विवाद का विषय बन गया था। प्रश्न उठे थे कि क्या यह असंवैधानिक न होगा। क्या संवैधानिक न्याय व्यवस्था से अलग कोई न्याय व्यवस्था बनाई जा सकती है। मुसलमानों में बीच भी यह विवाद हुआ था कि ऐसे समय में जब समाज के समक्ष वृहत्तर मुद्दे मुंह बाये हैं, ऐसे निर्णय नहीं लिए जाने चाहिए।

काजी कामिल की नियुक्ति पर्सनल लॉ बोर्ड के अध्यक्ष सैयद अबुल हसन अली नदवी ने की। उन्हें दक्षिण दिल्ली अदालत का प्रमुख बनाया गया है।

यह अदालत सिर्फ दक्षिणी दिल्ली क्षेत्र के लिए है। पर अगर दोनों में से एक पक्ष भी इस इलाके का रहने वाला हो, तो ऐसे मामले भी इस अदालत में लाए जा सकते हैं।

अभी अदालत के समक्ष जो आठ मामले हैं, उनमें से एक बस्ती निजामुद्दीन में एक जमीन के टुकड़े के स्वामित्व को लेकर है। शेष वैवाहिक मामले हैं। काजी ने उम्मीद जताई है कि सभी मामले एक माह के भीतर निपटा दिए जाएंगे।

काजी कामिल के अनुसार अगर वादी दारुल काजा के निर्णय से सहमत नहीं होते तो वे इमारते-ए-शरीया के समक्ष अपील कर सकते हैं। यह संस्थान ७३ वर्ष पहले बिहार में स्थापित किया गया था।

विवादों पर विवाद

विमल वधावन, मुख्य सम्पादक कानूनी पत्रिका

जिस प्रकार इस देश का तापमान बदलता रहता है, उसी तरह इस देश मे विवाद के मुद्दे भी बदलते रहते हैं। हमारा प्रयत्न यह रहता है कि समय-समय पर उठने वाले विभिन्न विवादो पर कानूनी दृष्टिकोण पत्रिका के पाठकों के समक्ष रखते रहे। अभी फरवरी अंक मे हमने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की कमान पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री रंगनाथ मिश्र को सौपे जाने का स्वागत किया ही था कि मानवाधिकार हनन-विशेष रूप से महिलाओं और गरीब वर्ग के लोगों पर अत्याचार की बेशर्मी पूर्ण दर्जनो घटनाए हमारे सामने आ गई। यह सब घटनाए बिहार और उत्तर प्रदेश मे ही उत्पन्न हुई।

इनका मामला ठण्डा पड ही रहा था कि शकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द ने यह मूर्खता पूर्ण ऐलान कर दिया कि महिलाओं को वेदमन्त्र पढने का अधिकार नहीं, वास्तव मे विवाद पैदा होते ही तब है जब इतिहास और कानून की पूर्ण जानकारी न हो। शकराचार्य को शायद यह पता नही था या याद नही रहा कि लगभग १२० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिलाओं को पढने का अधिकार दिए जाने के समर्थन मे पूरा जोर लगाया आर्यसमाज की स्थापना की और अन्ततः उस महान सन्यासी का आन्दोलन सविधान मे लिखे गये उस अनुच्छेद से सफल सिद्ध हुआ जिसमे रग, जाति या लिंग भेद के आधार पर किसी को असमान मानना कानूनी अपराध घोषित हुआ। इन सब बातों से अन्जान शकराचार्य का विरोध समस्त भारत के महिला सगठनो और आर्य समाज द्वारा किया जाना स्वाभाविक था।

यह विवाद सुलझा भी न था कि विश्व हिन्दू परिषद के नेता अशोक सिंघल ने शकराचार्य का विरोध करने वालो को इस्लामी ताकत कहकर एक नया विवाद खडा कर दिया।

इन सब मिले जुले विवादों के चलते सरदार बूटासिंह का नाम दुनिया भूलती जा रही थी सो इन महाशय को भी अखबारी सुर्खियों म आने के लिए अपने सवैधानिक कर्त्तव्यो को अपना सबसे बडा अपराध कहना पडा। मन्त्री महोदय ने सविधान के तहत ईश्वर की शपथ लेकर मन्त्री पद सम्भाला था। यह पद मात्र एक साधारण नौकरी नहीं अपितु पूर्णत सवैधानिक मामला था। खैर अब तो बूटासिंह का नाम भी ५६ दिन के बाद लोग भूलने लगेंगे क्योकि कतार मे दर्जनो विवाद अपनी अपनी बारी का इन्तजार कर रहे हैं।

इस देश की पुलिस के सामने विवाद यह होता है कि अदालते उनके मार्ग मे बाधा उत्पन्न करती है। उनके घूमते हुए डन्डे को अचानक रोकने का दम यदि किसी मे है तो वे अदालत ही है। अदालत तो पुलिस कमिश्नर का भी लिहाज नही करती, जब चाहती है उसे भी थाना और मीटिंगो की मौज मस्ती छोडकर अदालत मे हाजिर होने के लिए मजबूर कर देती है। जब कमीश्नर की यह अवस्था हो तो छोटे मोटे अफसरो या पुलिस वालो का तो कहना ही क्या अभी कुछ ही दिन पहले पुलिस ने उच्चतम न्यायालय मे ही एक युवक अपराधी को पीटना प्रारम्भ कर दिया तो इसमे पुलिस का क्या कसूर। कसूर तो उन सस्कारो का है जो उनके मन-मस्तिष्क पर पड चुके हैं। उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशो ने भी एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। उन पुलिस वालो मे से तीन को सजा, दो को जुर्माना तथा एक को प्रताडना दण्ड दिया। यह फसला सुनाने मे अदालत को कुल तीन घण्टे से भी कम समय लगा।

समाज तो सदैव विवादग्रस्त रहेगा परन्तु देखना यह है कि इन विवादो से समाज और उसके कानून कितने प्रभावित होते हैं उनसे क्या परिवर्तन होते हैं? अथवा उनका प्रयोग किस प्रकार किया जाता है।

—शकराचार्य तथा अशोक सिंघल पर कानूनी कार्यवाही न सही परन्तु क्या सामाजिक बहिष्कार की पचायती व्यवस्था लागू नहीं की जा सकती?

—क्या बूटासिंह के लिए समाज यह व्यवस्था नही दे सकता कि भविष्य मे उन्हे कभी सवैधानिक दायित्व न सौपा जाए?

—क्या पुलिस मे सस्कार शुद्धि के लिए किसी धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम को कानूनी मान्यता प्रदान नहीं की जा सकती?

शिविर के समापन समारोह के अवसर पर खण्डवा जिला के कलेक्टर श्री इकबालसिंह बैस एक महिला को प्रमाण पत्र तथा मान देय देते हुये। साथ मे श्री रामचन्द्र आर्य, स्वामी सुमेधानन्द जी श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव तथा श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल खडे हुये हैं।

नारी शिक्षा एवं उत्थान मे आर्य समाज की अहमभूमिका

– श्री श्रीवास्तव

भारत में नारी शिक्षा और उत्थान के लिए हुए कार्यो मे आर्य समाज की एक अहम और विशेष भूमिका रही है। फलस्वरूप आज महिलाओं में आई जागृति व चेतना से नारी को समाज मे प्रतिष्ठा और बराबरी का सम्मान प्राप्त है।

यह बात मध्यप्रदेश विदर्भ आर्य समाज के प्रधान श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव ने मध्यप्रदेश राज्य समाज कल्याण बोर्ड भोपाल के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द आर्य शिक्षण समिति द्वारा ग्राम छैगांव देवी मे आयोजित ८ दिवसीय ग्रामीण महिला जन जागरण शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि पद से कही। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने की इस अवसर पर खण्डवा जिला के कलेक्टर श्री इकबाल सिंह बैस व ग्राम सरपच श्री नत्थु सिंह भी थे।

कलेक्टर श्री बैस ने समापन समारोह में २५ महिला शिविरार्थियो को मानदेय राशि और प्रशिक्षण प्रमाणपत्र भी वितरित किए।

इस अवसर पर स्वामी सुमेधानन्द जी ने अध्यक्षीय भाषण दिया। समारोह मे श्रीमती आशाबाई दयानन्द शिक्षा समिति के मन्त्री श्री कैलाश चन्द्र पालीवाल श्रीमती सुनीति दिवे सहित अनेको वक्ताओं ने विविध विषयो पर महिलाओ के समक्ष विचार रख कर उन्हें जागरूक होकर सक्रिय रूप से समाज मे भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहको से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक सख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वत ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहको का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

'नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा 'नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये एक बार १२० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

विदेश समाचार

नीदरलैंड में महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७०वां जन्मोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदरलैण्ड से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७०वा जन्म दिन बडी धूमधाम से मनाया गया।

रविवार ६ मार्च को कार्यक्रम सुबह ११ बजे से विशेष यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के उपरान्त महिला समाज द्वारा भजनों का कार्यक्रम हुआ तथा बच्चों ने विशेष रूप से तैयार किये भजनो को गाया जिसे जनता ने बहुत पसन्द किया।

डा० रघुबरसिंह ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला और अन्त मे पण्डित शुभधन जी ने अपने प्रवचन मे महर्षि के जीवन से सम्बन्धित विशेष घटनाओं को बताते हुये भारत मे किस प्रकार महर्षि दयानन्द ने अन्धविश्वास तथा समाजिक बुराईयों के विरुद्ध कार्य करके प्रकाश का मार्ग दिखाया और यही कारण है कि योरपियन समाज तक में महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त है। और अब तो इंगलैण्ड में भी महिलायें धर्म के क्षेत्र मे भी पुरुषों के समान बराबर का अधिकार पा रही हैं। यह सब महर्षि के विचारों व आर्य समाज के प्रचार की ही देन है। अतः हमे महर्षि के कार्य को आगे बढाते रहना चाहिये जिससे संसार में समानता, भाई चारे और सच्चाई का प्रकाश हो।

अन्त मे विभिन्न प्रकार के पकवान इत्यादि जो कि विशेष रूप से तैयार किये गये थे का वितरण किया गया।

—डा० महेन्द्र स्वरूप प्रधान

आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर

(१) दिनांक २५-५-९४ से १६-९४ तक आर्य वीर दल मण्डल मऊ द्वारा आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर मऊ में लगना निश्चित हुआ है। शिविर के संयोजक श्री ब० नरेन्द्र आर्य (सह संचालक) पूर्वी उ० प्र० तथा सह संयोजक श्री शिवशंकर आर्य (मण्डलापति) जी हैं।

(२) दिनांक ३ से १३-६ ९४ तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर आर्य उप प्रतिनिधि सभा बलिया एवं आर्य वीर दल मण्डल बलिया द्वारा बलिया मे लगना निश्चित हुआ है जिसके संयोजक श्री रामनाथ चौरसिया मन्त्री आर्य समाज बलिया तथा सह संयोजक श्री कमलासिंह आर्य (मण्डलापति) हैं।

वार्षिकोत्सव

—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) का ८७ वा वार्षिक महोत्सव ११ से १२ अप्रैल ९४ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेद, आर्य, शिक्षा राष्ट्ररक्षा एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है, साथ ही छात्रों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन और शक्ति प्रदर्शन भी दर्शनीय होगा। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको के अमृत वचन सुनने हेतु अधिक से अधिक संख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनाए।

आर्य समाज मधुपुर का ४४ वा वार्षिकोत्सव ६ से १० अप्रैल तक आर्य समाज मन्दिर मधुपुर देवघर मे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेद, राष्ट्रीय एकता महिला तथा अन्य सम्मेलनो का आयोजन किया गया है। समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—आर्य समाज राणा प्रताप बाग ए ६/६ दयानन्द मार्ग दिल्ली का वार्षिकोत्सव ३ से १० अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा प० धर्मपाल शास्त्री रहे। समारोह में अनेकों विद्वानों ने पधार कर श्रोताओं का मार्गदर्शन किया।

आर्य (हिन्दू) युवक को मुस्लिम होने से बचाया

भीनमाल ६ मार्च ९४ स्थानीय आर्य समाज मन्दिर ने ग्राम छापड़ा (नागौर) के एक भवरसिंह राठौड़ नामक नाबालिक (आयु १६ वर्ष) को मुस्लिम होने से बचाया। पूर निवासी श्री रणजीतसिंह परमार ने इस बच्चे की सूचना सर्वप्रथम आर्य समाज को दी तत्पश्चात् दिनाक २ मार्च ९४ को आर्य समाज के संचालक श्री ब्रह्मचारी प्रदीपार्य जी 'नैष्ठिक' की प्रेरणा पर समाज के सदस्य श्री हुकमसिंह आर्य एवम् श्री अनूपसिंह आर्य ने अजीज खा जो इस नगर मे झूले लेकर आया था, के चुगल से इस बालक को निकाल कर आर्य समाज मे लाये लेकिन वह किसी प्रकार पुनः अजीज खा के पास भाग गया तब स्थानीय राजपूत छात्रावास के वार्डन श्री हनुवन्त सिंह जी देवड़ा इस बालक के घर गये तत्पश्चात् भवरसिंह राठौड़ के पिता आये और आज रात्रि १ बजे श्री हनुवन्तसिंह जी देवड़ा, श्री हुकमसिंह जी चौहान श्री हुकमसिंह आर्य, श्री मानसिंह आदि ने उसके पिता श्री शोभसिंह राठौड़ के साथ रायसीन जाकर अजीज खा (झूले वाला) के पास उस बालक को पकड़ा और वह बालक भी अपने पिता से मिलकर अतीव प्रसन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि अजीजखा ने भवरसिंह का नाम सलीम खा रख दिया था। इस सफलता का विशेष श्रेय श्री हुकमसिंह आर्य एव श्री अनूपसिंह आर्य को है।

मन्त्री आर्य समाज मन्दिर
भीनमाल

शताब्दी समारोह

आर्य समाज मन्दिर, राधाकुण्ड, कोण्डा का शताब्दी समारोह गत दिवस आर्य समाज के प्रांगण में सम्पन्न हो गया। शताब्दी समारोह का उद्घाटन वैद्य अजीतकुमार कोण्डा ने किया।

इस समारोह में एक भव्य शोभा यात्रा निकाली गयी। इस शोभा यात्रा में दयानन्द बाल मन्दिरो के बच्चो ने आर्यवीर दल आर्य कुमार सभा के बच्चों, शहर के गणमान्य व्यक्ति एव बाहर से आये हुए विद्वानों व भजनोपदेशकों ने भाग लिया।

शताब्दी समारोह में, महिला सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन, आर्य सम्मेलन तथा स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इन सम्मेलनो में बहन मनोरमा देवी, अलीगढ़, प० सत्यमित्र शास्त्री, प० देवव्रत शास्त्री देहरादून प्रभातकुमार नैनीताल डा० धर्मसिंह, बुलन्दशहर एव चन्द्रदेव हरियाणा ने अपने अपने विचार प्रकट किये।

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज राणा प्रताप बाग दिल्ली में आर्य समाज स्थापना दिवस का कार्यक्रम १० अप्रैल को ९ बजे से दोपहर १ बजे तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा० प्रशान्त वेदालंकार प्रो० उत्तम चन्द शरर तथा डा० वाचस्पति उपाध्याय सहित अनेकों विद्वानों तथा भजनोपदेशको ने पधार कर समारोह को सफल बनाया।

पाकिस्तान के पास छह से बारह परमाणु बम

हर बम मे हिरोशिमा जितना विनाश करने की ताकत

लास एंजलेस टाइम्स की रिपोर्ट

वाशिंगटन, १९ मार्च। पाकिस्तान के पास छह से बारह तक ऐसे परमाणु बम हैं जो हिरोशिमा जैसे शहरों को पूरी तरह नष्ट कर सकते हैं। अमेरिका के प्रतिष्ठित अखबार 'लास एंजेलस टाइम्स' ने पश्चिमी विशेषज्ञों के हवाले से यह खबर छापी है।'

खबर में कहा गया है कि पाकिस्तान को ३८ एफ १६ लड़ाकू विमानो की प्रस्तावित आपूर्ति को लेकर भारत का चिंतित होना स्वाभाविक है क्योंकि भारतीय वायु सेना के पास एक भी ऐसा लड़ाकू विमान नहीं है जो एफ-१६ को जवाबी चुनौती दे सके। एफ-१६ विमान परमाणु बम ले जा सकता है और अपने दुश्मन विमान के साथ 'डागफाइट' कर सकता है। इसके अलावा लम्बी दूरी तक मारक क्षमता, आकाश में ही ईंधन लेने, अति आधुनिक संचार प्रणाली और लगातार उड़ान भरना जैसे अनेक गुण एफ १६ विमान में हैं। साथ ही पाकिस्तान को अमेरिका ने अन्य सैन्य हथियारो की आपूर्ति की पेशकश की है। ए जिलस टाइम्स ने कहा है कि ऐसी स्थिति में नई दिल्ली की तीखी प्रतिक्रिया होना आश्चर्य की बात नहीं है।

अखबार ने कहा है कि पाकिस्तान हथियारो की आपूर्ति के मामले को ३१ मार्च से पहले सुलझाना चाहता है। वाशिंगटन स्थित नई पाकिस्तानी राजदूत सुश्री मलिहा लोधी ने अखबार को बताया कि भारत हमसे हर दृष्टिकोण से ताकतवर है। इस हालत मे आप हमसे क्या करने की अपेक्षा रखते हैं। आइए हमारी सहायता कीजिए।

पाकिस्तानी सेना एफ-१६ विमान को जल्द से जल्द हासिल करने के लिए दबाव बनाये हुए हैं।

पाकिस्तानी दूतावास में तैनात सैन्य सचिव के हवाले से अखबार ने कहा है कि लोगो में यह धारणा बनती जा रही है कि अमरीका पर विश्वास न किया जाए। पाकिस्तानी दृष्टिकोण से अखबार ने कहा है कि यदि अमरीका इन लड़ाकू विमानो की आपूर्ति नहीं करता है तो वाशिंगटन पर धोखेबाज होने का आरोप लग सकता है क्योंकि अमरीका इस्लामाबाद से १००० लाख डालर की राशि का अग्रिम भुगतान कर चुका है।

जो भारतीय इसका विरोध कर रहे हैं उनका कहना है कि ऐसा लगता है अमरीका ने पाकिस्तान को परमाणु सम्पन्न देश के रूप मे मान्यता दे दी है। उनका यह भी कहना है कि इन विमानो की आपूर्ति से भारत के सबसे खतरनाक शत्रु पाकिस्तान के पास परमाणु बम ले जाने वाले विमानो की क्षमता चौगुनी हो जाएगी।

वाशिंगटन मे अमेरिकी विदेश मन्त्रालय के प्रवक्ता ग्लोरिया मैकर्टी ने कहा है कि क्लिंटन प्रशासन उसी स्थिति मे इन विमानो की आपूर्ति करेगा जब पाकिस्तानी प्रधानमन्त्री बेनजीर भुट्टो अपने परमाणु कार्यक्रम को रोकने का वायदा करे। यदि पाकिस्तान इस पर सहमत हो जाता है तो कांग्रेस की इजाजत लेकर आपूर्ति की जा सकती है। पाकिस्तान की संभावित सहमति के मद्देनजर क्लिंटन प्रशासन कांग्रेस की इजाजत के लिए दबाव बनाये हुए है। यह दावा प्रेसलर संशोधन के निर्माता सीनेटर लैरी प्रेसलर का है। लैरी प्रेसलर ने कहा कि रक्षा मन्त्रालय ने उपमन्त्री फ्रैंक विजनर ने मुझसे सम्पर्क कर यह जानना चाहा कि प्रेसलर संशोधन की क्या एक बार अनदेखी नही की जा सकती है।

अमेरिकी प्रवक्ता मैकर्टी ने कहा कि वाशिंगटन ने दक्षिण एशिया मे परमाणु अप्रसार के प्रयत्नों को आगे बढ़ाते हुए पाकिस्तान को एक लचीला प्रस्ताव किया है। प्रस्ताव के तहत पाकिस्तान अपने परमाणु कार्यक्रम को रोक लगा देगा और बदले में अमेरिका उसे ३८ एफ-१६ विमानो की आपूर्ति कर देगा।

एफ-१६ विमानों की एक खेप पाकिस्तान को प्रतिबन्ध लगने से पहले ही मिल चुकी है। पेंटागन के प्रवक्ता मेजर टाम लारोक के अनुसार १९८८ मे पाकिस्तान अमेरिका के साथ इस विमान की खरीद सम्बन्धी एक करार किया था। इसके तहत ७१ लड़ाकू विमानो के खरीदने पर सहमति हुई थी जिनकी आपूर्ति दो चरणों में होनी थी।

नव वर्ष पर मंगल कामना

नव वर्ष की नयी चेतना भरे मधुर संगीत।
नई शक्ति अरु नव जीवन पा बदलें जग की रीत॥
देखें शत बसन्त जीवन के जग हित में रह तत्पर।
करें राष्ट्र निर्माण सभी मिल कष्टों को भी सहकर॥
करके पथ आलोकित जग का नव प्रभात हम लायें।
समता न्याय का संबल लेकर भ्रातृ-भाव बढ़ाएं॥
बंधु ! देश भारत को फिर से नूतन चमन बनाएं।
सदा कामना करे 'सुन्दरम्' जीवन भर मुस्काएं॥

कवि - रामानुज सिंह 'सुन्दरम्'
९८८२ अहाता ठाकुरदास नवाब रोहिल्ला नई दिल्ली ।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल, उदयपुर (राज०)

प्रवेश सूचना

सभी आर्य सज्जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की "सत्यार्थ प्रकाश" रचना स्थली नवलखा महल, उदयपुर मे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के सहयोग से संगीत विद्या मे निपुण भजनोपदेशक प्रशिक्षित करने हेतु विद्यालय प्रारम्भ किया गया है। जिसमे विद्यार्थियो को दो वर्ष मे संगीत, वैदिक संस्कार एवं महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो का ज्ञान कराया जायेगा। इस विद्यालय मे समाज सुधार एवं राष्ट्र भक्ति से प्रेरित सामाजिक कार्यकर्ता प्रशिक्षित किये जायेंगे।

प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियो की शैक्षणिक योग्यता १२वी अथवा समकक्ष उत्तीर्ण हो। संगीत मे विशेष योग्यता प्राप्त १०वीं उत्तीर्ण विद्यार्थी भी आवेदन कर सकता है। विद्यालय आवासीय होगा, विद्यार्थी विद्यालय मे ही रहेंगे। विद्यार्थियो के लिए शिक्षा, आवास और भोजन की व्यवस्था न्यास की ओर से निःशुल्क होगी। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी आवेदन के साथ आर्य समाज, आर्य संस्था अथवा किसी प्रतिष्ठित आर्य महानुभाव का पत्र संलग्न करें। साक्षात्कार हेतु आने पर विद्यार्थी को मार्ग व्यय स्वयं वहन करना होगा। जो विद्यार्थी प्रवेश के इच्छुक हो, उनका आवेदन दिनांक ३० अप्रैल तक मन्त्री, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राज०) के पते पर प्राप्त हो जाना चाहिए। विशेष जानकारी के लिये दस रुपये मात्र का धनादेश भेजकर नियमावली प्राप्त कर सकते हैं।

नोट—दो वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् विद्यार्थी को तीन वर्ष तक न्यास एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के निर्देशन मे प्रचार कार्य करना अनिवार्य होगा। इस अनुबन्ध को स्वीकार करने वाले हो प्रवेश पा सकेंगे। सेवा कार्यकाल मे कार्यकर्ता को उचित दक्षिणा दी जायेगी।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती	केशवदेव वर्मा
सभा-मन्त्री	मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश
बापा पार्क, जयपुर-४	न्यास, नवलखा महल,
	गुलाब बाग, उदयपुर

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४९/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१०-४-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 7-8-4-1994

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन और कार्य

सार्वदेशिक निबन्ध प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार : ५० अमेरिकन डालर
द्वितीय पुरस्कार : ३० ,, ,,
तृतीय पुरस्कार : २० ,, ,,

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि वैदिक धर्म समाज, ९९९९ पाम स्ट्रीट बेल फ्लोवर, कैलीफोर्निया-९०७०६ द्वारा सभी उम्र के लोगों के लिए आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के जीवन और उनके कार्य विषय पर हिन्दी/अंग्रेजी में निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। ३० मई १९९४ को निम्न आयु वर्गानुसार प्रतियोगियों की ४ श्रेणियां रखी गई हैं।

(१) १५ वर्ष से कम (२) १५ से १८ वर्ष (३) १९ से ३५ वर्ष (४) ३५ वर्ष से ऊपर।

(१) सभी प्रतियोगियों को "सम्मान प्रमाण पत्र" दिया जाएगा।
(२) प्रार्थना पत्र ५ अमेरिकन डालर शुल्क सहित स्वीकार होगा, यह राशि वापस नहीं होगी।
(३) प्रार्थना-पत्र देने की अन्तिम तिथि : ३० मई १९९४
(४) निबन्ध भेजने की अन्तिम तिथि : ३० जुलाई १९९४
(५) परिणाम की घोषणा : ३० अक्तूबर १९९४
(६) प्रार्थी अपने निबन्ध टाइप की हुई दो प्रतियों में जो अधिकतम ५ पेज का (८॥×११ इंच) सिंगल स्पेस में ही भेजें। अधिकांश निबन्धों की जांच संभवतः भारत में ही होगी।
(७) निबन्ध के विषय के लिए निकटवर्ती आर्य समाज से सम्पर्क किया जावे। स्वामी दयानन्द का जीवन और उनके कार्य विषयक पुस्तक : १० अमेरिकन डालर में वैदिक धर्म समाज कैलीफोर्निया से प्राप्त की जा सकती है।

डा० एस० मनचन्दा
सह संयोजक-प्रतियोगिता
वैदिक धर्म समाज, कैलीफोर्निया

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण २०)००
(प्रथम व द्वितीय भाग)
मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण १६)००
(भाग ३-४)
लेखक - पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति
महाराणा प्रताप १६)००
खिलाफत अर्थात इस्लाम का फोटो ५)५०
लेखक—धर्मपाल जी, बी० ए०
स्वामी विवेकानन्द की विचार धारा ४)००
लेखक—स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती
उपदेश मञ्जरी २१)
संस्कार चन्द्रिका मूल्य—१२५ रुपये
सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
पुस्तक मंगवाते समय २५% धन अग्रिम भेजें।
प्राप्ति स्थान—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली-२

बालिकाओं को गर्भ में हत्या कराने के लिए भारत पर दबाव

स्वीडन ने कहा है कि यदि भारत ने बालिकाओं के भ्रूणों को गर्भ में ही समाप्त करने की बढ़ती घटनाओं को रोकने के लिए प्रभावी कदम नहीं उठाया तो वह द्विपक्षीय सहायता पर रोक लगा देगा। विदेशी मामलों पर स्वीडन की संसदीय समिति की सदस्य एवं क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी की सांसद मारग्रेटा विकलुन्द ने स्वीडन टेलीविजन पर 'विदेशों में दस्तावेज' कार्यक्रम में एक साक्षात्कार में कहा कि भारत सरकार दहेज जैसी कुप्रथा के विरुद्ध कानून को प्रभावी ढंग से लागू नहीं कर पाई है और यही भारत में 'महिलाओं के संहार' के पीछे मुख्य कारण है।

कार्यक्रम में भारतीय प्रो० ने जिस 'महिला संहार' का जिक्र किया था, वह बी.बी.सी. के टिप्पणीकार भी हैं। उन्होंने भारत में बालिकाओं के संहारकी तुलना नाजी जर्मनीमें यहूदियों तथा अन्य जातियों के संहार से की। जब कार्यक्रम के एक संयोजक ने कहा कि स्वीडन से सहायता पाने वाले देश भारत पर इस कुप्रथा को रोकने के लिए दबाव डाल सकते है, तो सुश्री विकलुन्द ने कहा कि स्वीडन के विदेश मन्त्री ने पहले ही भारतीय अधिकारियों के साथ इस सन्दर्भ में बातचीत शुरू कर दी है।

सुश्री विकलुन्द ने कहा कि दहेज को लेकर ही युवतियों की अधिकतर हत्या की जाती है और हमारी सहायता के साथ अब दहेज विरोधी कानून को प्रभावी ढंग से लागू करने की शर्त रखी जायेगी। उन्होंने कहा कि वह [illegible] सहायता एजेंसियों, मानवाधिकार सगठनों तथा [illegible] जैसी को सुझाव देंगी कि वे इस मामले में प्रभावी कदम उठाने के लिए भारत को मजबूर करें।

(कानूनी पत्रिका से साभार)

वार्षिकोत्सव

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला (दिल्ली-४०) का ३७ वां वार्षिक महोत्सव दि० १६, १७ अप्रैल १९९४, रविवार को समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। इस शुभ अवसर पर अनेक महात्मा संन्यासी, धार्मिक, सामाजिक एवं राजनेता, शिक्षाविद महानुभाव पधार रहे हैं।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ उत्सव से एक सप्ताहपूर्व प्रारम्भ होगा। पूर्णाहुति १७ अप्रैल रविवार १० बजे सम्पन्न होगी। ब्रह्मचारिणियां सामूहिक यज्ञ का अनुष्ठान करेंगी।

व्यायाम एवं शस्त्र संचालन का आश्चर्य जनक प्रदर्शन दर्शनीय होगा।

वैद्य कर्मवीर आर्य महामन्त्री

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजी जा रही है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

महर्षि दयानन्द उवाच

- जिस लिए सब मनुष्यो को सुशिक्षा से युक्त होना आवश्यक है। इसलिए यह बालक से लेकर वृद्ध पर्यन्त मनुष्यो के सुधार के अर्थ व्यवहार सम्बन्धी शिक्षा का विधान किया जाता है।
- जो धर्म युक्त व्यवहार मे ठीक-ठीक वर्त्तता है, उसको सदा सर्वत्र लाभ और जो विपरीत वर्त्तता है, वह सदा दु खी होकर अपनी हानि कर लेता है।
- सभ्य वे मनुष्य हैं कि जो अपने आत्मा के समान सुख मे सुख और दु ख में दु ख, अन्य मनुष्यो का जानकर धार्मिकता को कदापि नहीं छोडते।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक १०] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ चैत्र शु० ८ स० २०५१ १७ अप्रैल १९९४

विदेशों से सुअर की विष्टा वाली खाद को खरीद और अलकबीर यांत्रिक बूचड़खाने को तुरन्त बन्द करने की मांग

विभिन्न धार्मिक संगठनों द्वारा सरकार की कड़ी निन्दा और आन्दोलन की चेतावनी

दिल्ली ११ अप्रैल १९९४। श्री मुनि सुशील आश्रम मे देश के सभी धर्मों के प्रमुख नेताओं की जिसमे हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, जैन व अन्य सगठनों के प्रमुख नेता सम्मिलित थे एक बैठक हुई। इस बैठक में मुनि सुशील कुमार, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सर सघ चालक श्री रज्जू भैया, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती, जत्थेदार रिछपाल सिंह, श्री नारायणदत्त मोदी, श्री सत्यनारायण बसल, श्री गुमान मल लोढा, श्री रामचन्द्र विकल तथा गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के प्रमुख और विभिन्न सगठनो के अनेक नेता उपस्थित थे।

इस बैठक मे विदेशों से सुअर की विष्टा वाली खाद का क्रय करके देश में खाद की कमी की पूर्ति करने के लिये भारत सरकार की कडी निन्दा की गई। सबका मत था कि विदेशियों के इशारो पर यदि हमारी सरकार इसी प्रकार की भूलो पर भूलें करती रही तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी सभ्यता व सास्कृतिक पहचान पूर्ण रूप से गवा बैठेंगे। गाय के गोबरका जो उत्पादन के लिये मूल्यवान है उसका उचित उपयोग नहीं होने दिया जा रहा है और प्रतिदिन हैदराबाद के अल कबीर यांत्रिक कत्लखाने मे ९ हजार गायें और ३ हजार अन्य पशुधन कट रहा है। इसके अतिरिक्त देश के अन्य भागो मे भी कई कत्लखानो में हजारों गायें रोज कट रही हैं। गोवश की रक्षा और उसके गोबर के सदुपयोग के लिये देशवासियों के बार-बार के अनुरोधो को अस्वीकार करते हुये सरकार ने मास का निर्यात करके बदले में सुअर की विष्टा वाली खाद का आयात करके इस देश की जनता को एक बहुत बडा तोहफा देने का घृणित कार्य किया है।

बैठक में भारत सरकार से विदेशों से खाद की खरीद को तुरन्त रोकने और अलकबीर यांत्रिक बूचडखाने को बन्द करने की जोरदार माग की गई। यह चेतावनी भी दी गई है कि यदि उसने ऐसा नहीं किया तो देशव्यापी आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया जायेगा। इस आन्दोलन से सरकार को क्षति तो होगी ही परन्तु जनता भी उसे माफ नहीं कर सकेगी।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बैठक के बाद भारत सरकार को विशेष पत्र लिखकर चेतावनी दी है कि वह देशवासियो के साथ इस विश्वासघात पूर्ण खाद की खरीद के सौदे और अलकबीर बूचडखाने को तुरन्त रद्द करने की सार्वजनिक रूप से घोषणा करे। यदि सरकार ने इसमे कोई ढील की तो देशवासी इसके विरोध मे हर प्रकार के सघर्ष और बलिदान के लिये तैयार हैं। उसका जो भी परिणाम होगा सरकार इसके लिये जिम्मेदार रहेगी।

स्वामी जी द्वारा डा० बलराम जाखड़ को भेजा गया पत्र अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है

मान्यवर डा० बलराम जी जाखड,

सादर नमस्ते।

कल सायकाल सुशील आश्रम मे देश के विभिन्न धार्मिक सगठन और अन्य सस्थाओं के प्रमुख व्यक्तियो की बैठक हुई थी जिसमे हिन्दू मुसलमान और सिक्ख सगठन के प्रमुख नेता बडी सख्या में उपस्थित थे। मैं भी वहां गया था।

उक्त बैठक में सरकार की विदेशों से सुअर के विष्टा वाली खाद आयात करके देश मे खाद की पूर्ति करने के कदम का कडा विरोध हुआ और सरकार द्वारा इसे देशवासियों के साथ विश्वासघात पूर्ण कदम बताया गया है।

यदि भारतमे खाद की कमी पड रही है तो गाय के गोबर की खादकी उपयोगिता क्यो नही समझी जा रही है और भारी विरोध

(शेष पृष्ठ १२ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यों के विषय में इतिहास के अन्तर्गत आपत्तिजनक प्रसंगों पर भारत सरकार द्वारा सार्वदेशिक सभा की मांग पर कार्यवाही प्रारम्भ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में २१-२-९४ को केन्द्रीय मानव संसाधन विकासमन्त्री माननीय अर्जुनसिंह जी से मिला था, और उन्हें एक ज्ञापन देते हुए मांग की थी कि इतिहास की पुस्तकों में आर्यों के सम्बन्ध में अनेक आपत्ति जनक प्रसंग अंग्रेजों के जमाने से चलते आ रहे हैं, इसलिए इन गलत प्रसंगों को इतिहास की पुस्तकों से हटाया जावे।

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार ने सभा की मांग पर कार्यवाही प्रारम्भ कर दी है। इस सम्बन्ध में मन्त्रालय का उक्त पत्र अविकल रूप से दिया जा रहा है।

सं० २८-१/९४-स्कूल-१
भारत सरकार
मानव संसाधन विकास मन्त्रालय
शिक्षा विभाग
नई दिल्ली-११०००१

सेवा में :
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती,
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली-११०००२

महोदय,

आर्यों के विषय में तथाकथित आपत्ति जनक प्रसंगों के सम्बन्ध में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्री जी को सम्बोधित आपके पत्र सं० २०९० दिनांक २१-२-९४ के सन्दर्भ मे निदेशानुसार निवेदन है कि आपके पत्र में उठाये गये बिन्दुओं पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद का सुविचारित मत चाहा गया है। उसकी प्राप्ति के बाद अग्रिम कार्रवाई होगी तथा लिए गये निर्णय से आपको अवगत करा दिया जाएगा।

भवदीय
प्रियदर्शी ठाकुर
संयुक्त सचिव, भारत सरकार

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज मन्दिर कोटला मुबारिकपुर के तत्वावधान में रामनौमी एवं आर्य समाज स्थापना दिवस तथा वार्षिकोत्सव २० से २४ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य हरिदेव जी के ब्रह्मत्व मे यज्ञ का आयोजन किया गया है। समारोह में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के अतिरिक्त आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान वेता तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर नवनिर्मित भवन का उद्घाटन तथा पुराने कार्यकर्ताओं का सम्मान भी किया जायेगा।

कश्मीरियों को रियायतें देना भूल थी : खुर्शीद

कोटा, ३ अप्रैल (वार्ता)। विदेश मन्त्री सलमान खुर्शीद का मत है कि कश्मीर की जनता को रियायती दर पर सामग्री उपलब्ध कराना सबसे बड़ी गलती थी। कश्मीर मसले पर हाल ही में जिनीवा में महत्वपूर्ण कूटनीतिक जीत हासिल करने में श्री खुर्शीद ने उल्लेखनीय भूमिका निभायी थी।

श्री खुर्शीद ने आज यहां लाल विद्यालय के सभागार में भारत में विश्व के प्रति और विश्व का भारत के प्रति दृष्टिकोण विषय पर व्याख्यान के बाद पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि कश्मीर की जनता में आत्मसम्मान की प्रबल भावना है जिसे वे कश्मीरीयत कहते हैं।

उन्होंने कहा कि इसी कश्मीरीयत का तकाजा है कि वे लोग रियायती दरों पर मुहैया करायी जा रही खाद्य सामग्री और अन्य वस्तुए स्वीकार तो कर लेते है परन्तु यह अहसास कर नाराज भी हो जाते हैं कि उन्हे भिखारी की तरह समझा जाता है। उन्होंने कहा कि कश्मीरी लोग सस्ती खाद्य सामग्री नहीं बल्कि अच्छा रोजगार चाहते हैं।

श्री खुर्शीद का कहना है कि रोजगार कश्मीर समस्या का एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्होने कहा कि समस्या के हल के लिए जरूरत इस बात की है कि कश्मीर के लोगों को साथ लेकर चला जाये और वहां की जनता को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ा जाये। राजनैतिक नजरिये की सीमा से बाहर हटकर मिल बैठकर उनसे पूछा जाये कि संविधान के अनुच्छेद ३७० से उन्हें क्या मिला है।

उन्होंने कहा कि पचास करोड़ की लागत से जम्मू-श्रीनगर रेलमार्ग के न जाने पर आवागमन की कठिनाई का निराकरण होगा तथा वास्तविक एकता कायम हो सकेगी।

श्री खुर्शीद ने कहा कि विदेश नीति का सीधा सम्बन्ध देश की घरेलू नीतियों से है। अगर देश में शांति, सद्भावना और एकता कायम है तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एकजुटता दिखाकर बेहतर प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि एक दशक पूर्व भारत की जो स्थिति थी, वह अब नहीं है। उस समय गुट निरपेक्ष आंदोलन, रंगभेद समाप्ति, विकासशील देशों के मध्य वार्ता जैसे महत्वपूर्ण अवसर पर भारतीय नेतृत्व को काफी अहमियत दी जाती थी लेकिन अब यह स्थिति नहीं है। इसके लिए उन्होंने मूल रूप में बोफोर्स से उत्पन्न आपसी अविश्वास से देश की प्रतिष्ठा को गहरा आघात लगा और देश अन्तरराष्ट्रीय कूटनीति मे एक दशक पीछे चला गया। श्री खुर्शीद ने कहा कि सबसे बड़ी आवश्यकता नेतृत्व पर विश्वास की है। भारत में धर्म, जाति, राजनैतिक, नेतृत्व एव पहचान और आर्थिक व्यवस्था संचालन को लेकर जो आपसी टकराव की स्थिति बनी उससे भारत की अन्तरराष्ट्रीय छवि धूमिल हुई है।

श्री खुर्शीद ने कहा कि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के मुकाबले चीन की बात को सिर्फ इसी कारण प्रमुखता दी जाती है कि चीनी नेतृत्व जो कहता है उसमें पूरे राष्ट्र की भावना शामिल मानी जाती है परन्तु भारतीय नेतृत्व से जब कोई विदेशी राजनयिक बात करता है तो उसे पूर्वाभास होता है कि आगे भारत का दृष्टिकोण नेतृत्व के दृष्टिकोण से अलग है।

उन्होंने डंकल समझौते का उदाहरण देकर कहा कि यह भ्रम पैदा किया जा रहा है कि डंकल प्रस्ताव स्वीकार कर राष्ट्र का सम्मान गिरवी रख दिया गया है। जब कि आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्र अपने नेतृत्व के कार्यों पर विश्वास करें।

श्री खुर्शीद ने कहा कि कोई भी सरकार न तो देश को बेचेगी और नहीं बेच सकती है। इस देश की अपनी महान परम्पराएं हैं और इसे कोई गुलाम नहीं बना सकता।

उन्होंने कहा कि भारत हिन्द महासागर में अपनी महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर उसका आर्थिक केन्द्र बना सकता है। भारत आसि-यान देशों के माध्यम से आस्ट्रेलिया तक और दक्षिण अफ्रीका के माध्यम से लैटिन अमेरिका तक व्यापारिक सम्पर्क कायम कर सकता है।

(समाचार साप्ताहिक ४ अप्रैल)

सिक्ख गुरुओं का अपमान

श्री के० नरेन्द्र

जिन लोगों का मुसलमान हुक्मरानो के हाथों सिक्खों पर हुये अत्याचारों की तारीख याद है। वह जानते है कि इन हुक्मरानों ने यह सब इसलिये किया क्योंकि वह सब समझते थे, कि एक तो यह सिक्ख उनकी सरदारी को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। और दूसरे इन लोगों ने जो धार्मिक शिक्षा ली थी इन्हें यह समझा रखा था जो कोई इस्लाम के असूलों का हामी नहीं है। वह इस्लाम का दुश्मन है। और इस्लाम के दुश्मनों का नाश करना सच्चे मुसलमान का परम धर्म है।

यह बात इतनी साफ थी कि कोई पढ़ा लिखा सिक्ख इस्लामी प्रचार का शिकार होने को तैयार नहीं था। लेकिन आजकल के अकाली लीडरों की तारीफ कीजिये। कि अपने साधारण राजनतिक लाभ के लिये वह इन्हीं मुसलमानों की जा नशीन पाकिस्तानी मुसलमानों के साथ घी शक्कर होते हुये शर्माते नहीं हैं। ऐसे अकाली नेताओं के मुंह पर पाकिस्तानियों ने ऐसा तमाचा मारा कि अब यह लोग तड़फ उठें है, जो बात यह भूल गये थे वह बात पाकिस्तानियों ने इन्हें याद दिला दी है। इसका प्रमाण पाकिस्तान के एक लेखक डा० सादिक हुसैन की लिखी हुई किताब तहरीर ए मुजाहादीन मे मिलता है। इसमें डा० महोदय ने सिक्ख गुरुओं के सम्बन्ध में ऐसी-ऐसी बातें लिख दी हैं जो न सिर्फ बेबुनियादी हैं, अपितु झूठ और शर्मनाक भी हैं।

पंजाबी पत्रकार प्रतिपाल सिंह कपूर ने इन्हीं दिनों अकाली अखबार अजीत के एक लेख में बताया है, कि आपको पाकिस्तान में कई ऐसी किताबें मिली जिनमें गुरुओं का अपमान किया गया है। और जिन्हें पाकिस्तानी बच्चों को स्कूलों और कालेजों में पढ़ाया जाता है। आपने यह भी बताया है कि पाकिस्तान के महकमा यासारे कदीमा ने लाहौर की कई इमारतों पर बोर्ड और प्लेटें लगा रखी हैं। जिनमें यह लिखा है, कि सिक्खों ने सगमरमर के टुकड़े चुराये और शालीमार बाग के एक फव्वारे को तोड़ने की कोशिश की। आपने यह भी बताया कि पाकिस्तानी सरकार ने कई लेखकों को यह भी कहा कि वह ऐसी किताबे तैयार करें जिनमे कि सिक्खों को हर प्रकार से जलील और जालिम साबित करें, यह किताबें पाकिस्तानी सरकार विदेशों में मुफ्त बांटती है।

लन्दन के खालिस्तान समर्थक देश-विदेश के सम्पादक सरदार तरसीम सिंह ने यह भी बताया कि पाकिस्तानी सरकार ने एक जगह गुरु नानक का समाधि को एक फौजी चौकी मे तबदील कर दिया। इस धर्म स्थान की दीवारों पर कायले, इतरास और गन्दे दोहे लिख दिये गये एक स्थान को पेशाब घर भी बना दिया गया। कनेडा के वेन्कोवर नाम के इण्डोकनेडियन के एक सिक्ख यात्री ने बताया कि जर्मनी मुसलमानों ने ननकाना साहब के सिक्खों को मजबूर कर दिया कि वह गुरुद्वारा के जन्म स्थान पर से गुरु नानक की तस्वीर को हटा दें। इन सिक्खों को बताया गया कि पाकिस्तानी एक इस्लामी देश है। इसलिये तस्वीर लगाने की इजाजत नही दी जा सकती है।

डा० सादिर हुसैन की किताब में महाराजा रणजीत सिंह के खिलाफ सैयद अहमद के संघर्ष की चर्चा है। सैयद अहमद रायबरेली का रहने वाला था और इसने अपने आपको इस्लाम का इमाम और खलीफा होने का ऐलान कर दिया था। लेखक का कहना है कि सैयद ने यह निश्चय किया कि अंग्रेजों के बजाय सिक्खों पर हमला करें। क्योंकि इसके ख्याल में सिक्ख अंग्रेजों से कमजोर थे। इसने बर्लिन में मुसलमानों के जलसे में भाषण करते हुये कहा कि रणजीत सिंह मुसलमानों पर अत्याचार कर रहा है। इसकी फौज इन्हें परेशान कर रही है और इनको जलील किया जा रहा है। और इनकी मस्जिदों को जलाया जा रहा है, और इनकी स्त्री बच्चों को लाहौर में बेचा जा रहा है। यही नहीं बल्कि मुसलमानों को अदान की स्वीकृति नहीं है। मस्जिदों को घोड़ों का अस्तबल बना दिया गया है, और मुसलमानों को गो हत्या की इजाजत नहीं है और जो कोई इनके हुक्म को नहीं मानते उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाता है। इस वजह से इसने इस काफिर राजा के खिलाफ जेहाद का ऐलान कर दिया।

लेखक ने अहमद शाह अब्दाली, नादिर शाह दुर्रानी, महमूद गजनवी और जकरिया खान की सराहना की है। इसका कहना है, कि यह इमाम शियों के खिलाफ था और उसके एक फौजी ने उत्तर प्रदेश में शियों की एक इमाम गाह को नष्ट कर दिया। इस खलीफा ने पण्डारों की प्रशंसा की जब कि वह लुटेरे थे।

अपनी किताब के एक शीर्षक सिक्ख सिक्खाशाही के तहत, इसने सिक्ख गुरुओं पर कई इल्जामात लगायें है। और कहा है, कि वह दरअसल मुजरिम थे आगे चलकर उसने लिखा है कि तीसरे गुरु श्री अमरदास एक छावणी फरोस थे जो अपनी चीजों को गधे पर लादकर बेचा करते थे, इनकी बेटी मोहिनी को एक नौजवान रामदास से प्यार हो गया वह भी एक छावणी लगाने वाला था। इन दोनों की शादी हो गई, इस तरह वह अपने ससुर की मौत पर एक नया गुरु बन बैठा।

मुगल बादशाह ने इसे एक जागीर भी दी थी इसका बेटा गुरु अर्जुनदेव एक नवाब की तरह रहता था, इसके पास कई नौकर-चाकर घोड़े हाथी थे। इसने एक बागी शहजादा खुसरू की मदद की थी इसे गिरफ्तार कर लिया गया, कैद खाने की गर्मी यह बर्दास्त न कर सका और दम तोड़ दिया, इस गुरु ने गुरुनानक के उपदेशों को भुला दिया था गुरु नानक ने मांस खाने का विरोध किया था। लेकिन गुरु हर गोविन्द को मांस बेहद पसन्द था। वह एक शिकारी बन गया इसने भक्ति का त्याग कर दिया और अपने समर्थकों की एक फौज बना ली इसने अपने दुश्मन चन्दू शाह पर अत्याचार करके उसे मार डाला वह अमीरों की तरह रहता था। और अपने चेलों से नजराना वसूल करता था इसने जहांगीर को फौज में नौकरी करली और बादशाह के साथ कश्मीर भी गया। लेकिन सिपाहियों का वेतन इसने गमन कर लिया। बादशाह इस पर बड़ा नाराज हुआ। इसके जत्थे में आवारागर्दो, बदमाशों भगोड़ों को भर्ती करना शुरू किया, इसे ग्वालियर के किले में बन्द किया गया जहां यह बारह वर्ष तक रहा अन्त मे इसके साथियों की प्रार्थना पर छोड़ा गया। सन् १६२८ ई० मे जहांगीर की मौत हो गई और गुरुजी ने शाहजहां की फौज में नौकरी कर ली, इसने एक काजी से एक घोड़ा खरीदा लेकिन यह उसकी कीमत न दे सका और अमृतसर भाग गया। वह बदमाश बन गया इसके एक साथी ने शाही हार चुरा लिया। इस पर बादशाह ने एक सिपहसालार मुमताजखान को इसे गिरफ्तार करने के लिये रवाना किया, गुरु ने इसे हरा तो दिया लेकिन अपनी जान बचाने के लिये भटिण्डा भाग गया और दारा शिकोह ने शाहजहां को इस पर कोई कार्यवाही न करने पर राजी कर लिया। गुरु ने अपने षड़यन्त्र जारी रखे जंगल में इसके साथ चोर, लुटेरे, बदमाश गुन्डे इकट्ठे हो गये, गुरुनानक के उपदेशों को भुला दिया गया, इन डाकुओं में एक डाकू था बाबा बुड्ढा इसने बादशाह के दो घोड़े चुरा के गुरु को पेश किये, पेन्दाखान गुरु का एक साथी था लेकिन दोनों हार के लिये लड़ पड़े गुरु इसको मार कर भाग गया।

इस लेखक ने नवें गुरु तेगबहादुर को एक पेशेवर डाकू कहा है, इसने अपने सोढ़ी विरोधियों को मार डाला। और हासी सतलज के दरम्यान गांव के गांव लूट लिये इसने एक मुसलमान आदम हाफिज को अपना साथी बनाया गुरु हिन्दुओं को लूटता था और हाफिज मुसलमानों को। (शेष पृष्ठ १२ पर)

उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धुओं से—

ऋषि भक्त प्रिय बन्धुओ !

कैलाशनाथ जैसे भ्रष्टतम और अन्य-स्वार्थी दुरभिसंधियों के द्वारा, नियम विरुद्ध कार्य, व्यवहार और आचरण करके आर्य समाज के पवित्र संगठन को अपवित्र तथा विघटित करने से बचाने हेतु, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० तथा आर्यसमाज के नियमोपनियमों से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण तकनीकी जानकारी आपकी सेवा में निम्न प्रकार से प्रस्तुत है—

(१) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज की सर्वोच्च तथा एकमात्र नियामक संस्था है। संगठन के भीतर, सा० सभा की अवज्ञा, अवहेलना अवमानना और उपेक्षा करने का किसी को भी कोई भी अधिकार नहीं है।

(२) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने नियम सं०-२ (६) के अन्तर्गत समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य समाजों के विवादों का निर्णय करने का अधिकार है और संगठन के भीतर वह निर्णय अन्तिम होता है। सा० सभा के 'निर्णय' का तात्पर्य, सा० न्याय सभा के 'निर्णय' से है।

(३) आर्य समाज के किसी भी उपनियम को शिथिल करने का एकमात्र अधिकार सा० सभा को है, अन्य किसी को भी नहीं।

(४) आर्य समाज के उपनियम सं० ४१ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नियम -१९ (१) के, एक नियत अवधि के लिये, क्रियान्वित करने का अधिकार, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के उपनियम सं०—६ की कार्यवाही पूर्ण होने तथा अन्तरंग सभा के निश्चय के उपरान्त, केवल प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० को है, मन्त्री को नहीं।

(५) किसी भी आर्य सदस्य को, सिद्धांत: आर्य समाज के उपनियम सं० ५ के अन्तर्गत ही, उसकी सदस्यता से स्थगित और पृथक किया जा सकता है। क्योंकि वह सदस्यता आर्य समाज ही प्रदान करता है। परन्तु अत. आर्य समाज स्वयं रजिस्टर्ड सोसायटी नहीं है और उसकी रजि० सोसायटी एवं स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० है। अत. वह भी, सोसायटी और स्वामिनी होने के नाते, अपने नियम सं० १९ (२) के अन्तर्गत, अपने किसी भी आर्य समाज के किसी भी आर्य सदस्य को, उसकी सदस्यता से स्थगित और पृथक कर सकती है।

(६) आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की रजि० नियमावली के अनुसार उसकी 'अन्तरंग—सभा' का कार्यकाल अब तक मात्र एक वर्ष का है।

(७) इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के विधिवत निर्वाचित तथा सा० सभा द्वारा मान्यता प्राप्त प्रमुख पदाधिकारी गण—सर्वश्री इन्द्रराज जी—प्रधान तथा मनमोहन जी तिवारी मन्त्री आदि हैं।

—कुं० भूपाल सिंह 'बटस'
मुख्य निरीक्षक-आर्य प्र० सभा उ. प्र.
करपरी, मैनपुरी

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती को स्वास्थ्य लाभ

आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे, परमात्मा की अनुकम्पा से वे अब निरन्तर स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। उनके सम्बन्ध में अमेठी से प० दीनानाथ शास्त्री ने पूज्य स्वामी जी को पत्र भेजा है जो अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

पूज्यपाद स्वामी जी महाराज,

सादर चरण स्पर्श नमस्ते।

आशा है स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी इस समय ठीक हैं। विगत २७ फरवरी से अस्वस्थ हो गये थे जिससे चिकित्सा आदि में व्यस्तता के कारण पत्र नहीं लिख सका। लगभग एक सप्ताह से अब ठीक हैं। अपने आप उठने-बैठने लगे हैं। लोगों को पहचान भी लेते हैं तथा बातें करते हैं। सब प्रकार से ठीक है। कहीं से मुझे आर्थिक सहायता नहीं मिल रही है। केवल आपकी ओर से ही २०००/- (दो हजार रु०) प्रतिमास मिलने की स्वीकृति मिली है।

आप द्वारा जनवरी ९४ मास के व्यय हेतु २०००/- का ड्राफ्ट मिला था, जिसकी पावती मैंने ५-२ ९४ को भेजी है। आपके कृपा पत्र से ज्ञात हुआ था, कि सार्वदेशिक सभा जनवरी ९४ से स्वामी जी की परिचर्या हेतु रु० २०००/- भेजती रहेगी। इससे हमने तथा हमारे परिवार ने काफी राहत महसूस की। उनकी परिचर्या में लगभग ३,००० रुपये प्रतिमास का व्यय पड़ रहा है। उनकी छोटी बहू भी कल देखने आयीं थी आज ही गयी हैं। वे यह देखकर अति प्रसन्न तथा आश्चर्यचकित थीं कि स्वामी जी अपने आप बैठ तथा खड़े हो जाते हैं और लोगों को पहचान लेते हैं। जबकि एक वर्ष पूर्व इलाहाबाद में ऐसा नहीं था।

आपसे प्रार्थना है कि फरवरी तथा मार्च मास की सहायता शीघ्र भेजने की कृपा करें। हम सपरिवार आपके सदा आभारी हैं।

आपका स्नेह भाजन—
प० दीनानाथ शास्त्री

वैदिक प्रोफेसर की आवश्यकता

दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अजमेर मे राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत दयानन्द शोधपीठ के लिए प्रो० तथा अध्यक्ष पद के लिए एक सुयोग्य, दस वर्ष के स्नातकोत्तर अध्यापन के अनुभवी तथा ऋषि दयानन्द के जीवन तथा शिक्षाओं के ज्ञाता की आवश्यकता है जो संस्कृत में एम०ए० (कम से कम ५५ प्रतिशत प्राप्तांक) तथा पी०एच०डी० हों। वेतन रु० ७८१५) (महंगाई भत्ते सहित) वेतन शृंखला ४५००-७३००, आयु ५५ वर्ष से कम हो। अनुसंधान छात्रों के मार्ग दर्शक रहे हों। आवेदन मन्त्री, आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर को १५ दिन में रु० २०) के निर्धारित प्रपत्र पर भेजें।

प्रशासनिक अधिकारी
दयानन्द कालेज, अजमेर

श्रीमद्दयानन्द भजनोपदेशक महाविद्यालय प्रवेश सूचना

वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार हेतु भजनोपदेशक प्रशिक्षण का द्विवार्षिक पाठ्यक्रम श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास (राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा) के तत्वावधान में प्रारम्भ किया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु संगीत में रुचि, मधुर कण्ठ सौम्यव्यक्तित्व एवं वैदिक संस्कृति में अभिरुचि युक्त इच्छुक उम्मीदवारों से प्रार्थना पत्र आमन्त्रित है। प्रार्थी आयु में १८से२५ वर्ष एवं किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा बोर्ड की सीनियर सैकेण्डरी या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण हो। ऐसे संस्कृत के ज्ञान वाले प्रार्थी को वरीयता दी जावेगी। पाठ्यक्रम अवधि में न्यास की ओर से निःशुल्क आवास व्यवस्था एवं ५००/- (पांच सौ) रुपए प्रतिमाह की छात्रवृत्ति प्रदत्त है। चयनित प्रशिक्षार्थी को वैदिक संस्कृति के अनुरूप जीवन व्यतीत करना आवश्यक होगा। पाठ्यक्रम समाप्ति पर जीविकोपार्जन हेतु आर्यसमाज अथवा अन्य संस्थाओं में सेवा उपलब्ध कराने की व्यवस्था होगी जो न्यूनतम पांच वर्ष तक करना आवश्यक है।

प्रार्थना पत्र मंगाने हेतु १०×२२ से०मी० आकार के स्वलिखित पते वाले लिफाफे के साथ निम्न पते पर आवेदन करें—

अधिष्ठाता
भजनोपदेशक महाविद्यालय
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल (गुलाब बाग), उदयपुर-३१३००१

आध्यात्मिक जगत को आर्य समाज की देन [५]

डा० प्रेमचन्द श्रीधर

ऊपर की पंक्तियों में जिन प्रश्नों को हमने उठाया है या जिस मानव जिज्ञासा से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं चाहे वह लौकिक हैं या पारलौकिक, की चर्चा हुई है, उन सबका उत्तर दर्शनों में ही मिलता है।

ऐसा प्राय माना जाता है कि प्राच्य तथा पाश्चात्य दर्शनों की मौलिक समस्याएं एक सी ही हैं, कुछ सिद्धान्तों में समानता भी लक्षित होती है परन्तु विचार पद्धति में स्पष्ट रूप से अन्तर है। भारतीय दर्शन की विशेषता है कि यहां तत्त्व विज्ञान, नीति-विज्ञान, तर्क विज्ञान, मनो-विज्ञान तथा प्रमाण विज्ञान किसी की भी उपेक्षा नहीं की गई और सब पर एक साथ दार्शनिकों ने चिन्तन किया है। अनेक विद्वान इसे भारतीय दर्शन का समन्वयात्मक दृष्टिकोण मानते हैं, परन्तु ऐसे भी विद्वान और दार्शनिक हैं जो इस पक्ष को स्वीकार नहीं करते।

वास्तविकता यह है कि भारतीय दर्शन की अनेक शाखाएं हैं तथा उनमें मतभेद भी हैं, फिर भी वे एक दूसरे की उपेक्षा नहीं करतीं। हमारा विचार है कि एक-दूसरे के पक्ष को समझने में सहायक हैं, बाधक नहीं। भारतीय दर्शन की यह विशेषता है कि वे युक्तियुक्त विचारों की समीक्षा करता है और किसी निश्चित सिद्धांत पर ले जाकर खड़ा कर देता है। इसी उदार मनोवृत्ति के कारण भारतीय दर्शन में विचार-विमर्श के लिए विशेष स्थान है। इसमें पहले पूर्वपक्ष, फिर खण्डन और अन्त में उत्तरपक्ष के रूप में सिद्धान्त की चर्चा होती है। भारतीय दर्शन का उद्देश्य केवल बौद्धिक और मानसिक स्तर पर कौतूहल की निवृत्ति मात्र नहीं है अपितु एक ऐसा दृष्टिकोण उत्पन्न करना है, मार्ग प्रशस्त करना है जिससे दूर दृष्टि तथा अन्तर्दृष्टि के साथ साथ जीवन को जीने की कला आ जाए और सभी पुरुषार्थ साधनों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) की प्राप्ति हो।

इसी दृष्टिकोण से प्राचीन आचार्यों ने भारतीय दर्शन को दो भागों में विभक्त किया। आस्तिक तथा नास्तिक। वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य, मीमांसा तथा वेदान्त आस्तिक दर्शन कहे गये हैं। इन्हें ही षड्दर्शन की संज्ञा दी गई है। यहां आस्तिक दर्शन का अर्थ केवल ईश्वरवादी दर्शन नहीं है। इन्हें इस लिए आस्तिक-दर्शन का नाम दिया गया है क्योंकि ये वेद को मानते हैं। मनु के अनुसार 'नास्तिको वेद निन्दक' मीमांसा और सांख्य ईश्वर को नहीं मानते फिर भी आस्तिक दर्शन हैं।

मनु ने तो घोषणा ही कर दी, जो वेद कहे या वेदानुकूल हो, वही धर्म है—

'धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुति।'—मनु० २ १३

नास्तिक दर्शन तीन हैं. (१) चार्वाक (२) बौद्ध, (३) अर्हत (जैन)। ये नास्तिक इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि ये वेदों को नहीं मानते। बौद्ध दर्शन की चार शाखाएं हैं। आस्तिक दर्शनों के समान नास्तिक दर्शन की भी छः शाखाओं की चर्चा पढ़ने को मिलती है। चार्वाक, माध्यमिक, योगाचार सौत्रान्तिक, वैभाषिक तथा अर्हत ये छः नास्तिक दर्शन हैं।

हम केवल षड्दर्शन तक ही अपनी चर्चा को सीमित रखेंगे, यही इस लेख का अभिप्राय विषय भी है। जैसा कि ऊपर हम कह आए हैं, ये छः दर्शन आस्तिक दर्शन हैं। परन्तु कुछ विद्वान इनमें समन्वय स्वीकार न कर इनमें विरोधाभास की बात करते हैं जैसे सांख्य और मीमांसा ईश्वर की चर्चा नहीं करते।

जैसा कि कुछ विद्वानों का विचार है कि षड्दर्शन परस्पर विरोधी हैं, वास्तविकता इससे भिन्न है। साम्प्रदायिक विचारधारा ने स्व-स्व पक्ष के लिए पुष्टि की कामना से ऐसा भ्रम बनाया और उसी रूप में उसे प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया। सूत्रकार के सूत्रकारों की भावना ऐसी नहीं थी। महर्षि दयानन्द ने इसी विरोध समस्या का भी समाधान प्रस्तुत किया। आध्यात्मिक क्षेत्र में यह उनकी देन है कि उन्होंने निश्चित रूप से समन्वयवादी दृष्टिकोण (Synthetic out-look) है। महर्षि दयानन्द ने षड्दर्शनों के प्रामाणिक भाष्यों की भी [illegible] उन्होंने स्पष्ट लिखा है—'पूर्व मीमांसा पर व्यासमुनि कृत व्याख्या, वैशेषिक पर गौतम मुनि कृत, न्यायसूत्र पर वात्स्यायन मुनि कृत भाष्य, पातञ्जलि मुनि कृत सूत्र पर व्यास मुनि कृत भाष्य, कपिल मुनि कृत सांख्य सूत्र पर भागुरिमुनि कृत भाष्य, व्यासमुनि कृत वेदान्त सूत्र पर वात्स्यायन मुनि कृत भाष्य अथवा बौधायन मुनिकृत भाष्य वृत्तिसहित पढ़े-पढ़ावें।

—सत्यार्थ प्रकाश तीसरा समुल्लास

सत्यार्थ प्रकाश के इसी समुल्लास में आगे एक प्रश्न है जैसा सत्याऽसत्य और दूसरे ग्रन्थों का परस्पर विरोध है, वैसे अन्य शास्त्रों में भी है। जैसा सृष्टि विषय में छः शास्त्रों का विरोध है—मीमांसा कर्म, वैशेषिक काल न्याय परमाणु, योग पुरुषार्थ, सांख्य प्रकृति और वेदान्त ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति मानता है। क्या यह विरोध नहीं है ?

उत्तर में ऋषि दयानन्द ने कहा है 'प्रथम तो बिना सांख्य और वेदान्त के दूसरे चार शास्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति प्रसिद्ध नहीं लिखी। और इनमें विरोध (भी) नहीं। क्योंकि तुमको विरोधा विरोध का ज्ञान नहीं। मैं तुमसे पूछता हूं कि विरोध किस स्थल में होता है ? क्या एक विषय में, अथवा भिन्न-भिन्न विषयों में ?"

पुन एक प्रश्न उठाया गया है। 'एक विषय में अनेकों का परस्पर कथन हो, उसको 'विरोध' कहते हैं। यहां भी सृष्टि एक विषय है।

ऋषिवर इसका सटीक और विस्तारपूर्वक उत्तर देते हुए कहते हैं—'क्या विद्या एक है या दो ? एक है। जो एक है, तो व्याकरण वैद्यक ज्योतिष आदि का भिन्न भिन्न विषय क्यों है ? जैसा एक विद्या में अनेक विद्या के अवयवों का एक दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टिविद्या के भिन्न भिन्न छः अवयवों का छः शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं। जैसे घड़े के बनाने में कर्म, समय, मिट्टी विचार, संयोग-वियोगादि का पुरुषार्थ प्रकृति के गुण और कुम्हार कारण है, वैसे ही सृष्टि का जो कर्मकारण है उसकी व्याख्या मीमांसा में, समय की व्याख्या वैशेषिक में, उपादान कारण की व्याख्या न्याय में, पुरुषार्थ की व्याख्या योग में, तत्त्वों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या सांख्य में, और निमित्त कारण जो परमेश्वर है उसकी व्याख्या वेदान्त शास्त्र में है। इससे कुछ भी विरोध नहीं। जैसे ही सृष्टि के छः कारण हैं। इनमें से एक-एक कारण की व्याख्या एक एक शास्त्रकार ने की है। इसलिए इनमें कुछ भी विरोध नहीं।'

—सत्यार्थ प्रकाश तीसरा समुल्लास

(१) कर्म (२) समय (३) उपादान कारण (४) विद्या ज्ञान और विचार (५) तत्त्वों का मेल और (६) बनाने वाला निमित्त न होने से कोई पदार्थ अस्तित्व में नहीं आ सकता। मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त दर्शन इन सबकी पृथक् पृथक् व्याख्या का रूप है अतः इनमें कहीं भी विरोध नहीं है। इसको समझाते हुए ऋषिवर कहते हैं 'छः शास्त्रों में देखो अविरोध इस प्रकार है। मीमांसा में—'ऐसा कोई भी कार्य जगत में नहीं होता कि जिसके बनाने में कर्म की चेष्टा न की जाए।' वैशेषिक में- समय न लगे बिना बने ही नहीं। न्याय में—'उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता।' योग में—'विद्या ज्ञान विचार न किया जाए तो नहीं बन सकता। सांख्य में तत्त्वों का मेल न होने से नहीं बन सकता। और वेदान्त में बनाने वाला न बनाये तो कोई पदार्थ उत्पन्न न हो सके। इसलिये सृष्टि छः कारणों से बनती है। उन छः कारणों की व्याख्या एक एक की (एक-एक) शास्त्र में है। इसलिए उनमें विरोध कुछ भी नहीं। जैसे पुरुष मिल के एक छप्पर उठाकर भित्तियों पर धरें, वैसे ही सृष्टि रूप कार्य की व्याख्या छः शास्त्रकारों ने मिल कर पूरी की है।'

—सत्यार्थ प्रकाश ८ वां समुल्लास

इस प्रकार छः दर्शन एक दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं और सृष्टि रचना की पूर्ण व्यवस्था का व्याख्यान हैं।

पता—ई/३६, रणजीत सिंह मार्ग
आदर्श नगर, दिल्ली-११००३३

आरोग्य के कुछ स्वर्ण सूत्र

श्री नृसिंहदेव अरोड़ा

ऋषि-मुनियों द्वारा रचे गये धर्म ग्रन्थों में ऐसे अद्‌भुत प्रयोगों का वर्णन है जिनका पालन करने से साधक स्वास्थ्य और सुख की अनुभूति करता है। जीवेम शरदः शतम् को चरितार्थ करने में प्राचीन विज्ञान सफल रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि सर्व साधारण मे सच्चे स्वास्थ्य की जागरुकता पैदा की जाए।

प्रकृति—प्रकृति के साथ चलिए और अति से बचिए। स्वस्थ जीवन प्रकृति का वरदान है तथा बीमारी प्रकृति के साथ किये अत्याचार का बदला है। शीतल मस्तिष्क एवं मन की शान्ति जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

ब्रह्ममुहूर्त—ब्रह्ममुहूर्त में (सूर्योदय से घण्टे दो घण्टे पूर्व (उठिये) जल्दी सोने और जल्दी उठने से शरीर व मन निरोग रहते हैं। प्राचीन काल में सभी भारतीय ब्रह्ममुहूर्त में ईश्वर-चिन्तन, यज्ञ, योग-ध्यान आदि नित्य-कर्म करते हुए परमसुख और शान्तिपूर्वक दीर्घ जीवन बिताते थे।

उषःपान—बिस्तर से उठकर कुल्ला करिए और मुंह में पानी भरिए। आंखों पर ठन्डे पानी के कई बार हल्के हाथ से छींटे लगाइए। तदन्तर तांबे के पात्र में रात्रि का रखा हुआ पानी जितना पी सकें पी लीजिये। तांबे का असर आरोग्यकारी होता है। पानी पीकर बिस्तर पर अंगड़ाई व करवटें लेकर, शौच के लिये जाना चाहिये।

शौच शुद्धि—मल त्याग करते समय ऊपर नीचे के दांतों को भींचे रखिए। इससे दांत दृढ़ होते हैं तथा कहते हैं कि लकवा होने का डर नहीं रहता है एवं हृदय ठीक रहता है। पच्चीस वर्ष की आयु के समान प्रत्येक इन्द्रिय का सौ वर्ष तक चेतन्य रखने का यह मूल रहस्य है। करके देखिये। शौच हो जाने के बाद यदि पेट में हल्कापन मालूम पड़े तो समझिये कि आपको कब्ज वगैरह नहीं है। यदि किसी दिन शौच साफ नहीं आया हो तो शौच के बाद मलद्वार को अन्दर बाहर से भली-भांति जल से शुद्धि करना अनिवार्य है।

जलनेति दातुन कुल्ले करके, उंगलियों के द्वारा धीरे-धीरे जीभ को साफ करिए तथा अंगूठे से मुंह के अन्दर तालु को भी साफ करिये। कुल्ले करके सारे मुंह को स्वच्छ करिये। तदन्तर, तीन-चार बार सांस के साथ नाक द्वारा पानी अन्दर चढाइये और मुंह से निकाल दीजिए। कोई-कोई तो उषःपान भी नासिका द्वारा करते हैं। जलनेति से नाक व गले के साथ-साथ नेत्रों को भी आरोग्यता मिलती है।

प्रातः भ्रमण व्यायाम—प्रातःकाल जो नियम से जाय घूमने रोज बल बुद्धि दोनों बढ़ें, मिटे, कब्ज की खोज। नित्य प्रातः खुली हवा मे, बगीचे में, नदी, झील या हरे-भरे खेतों के किनारे-किनारे तीन-चार मील तेजी से घूमना एक प्राकृतिक व्यायाम है। गर्मियों में तैरना अथवा सूर्योदय से पूर्व हरी-हरी दूब पर नंगे पैर घूमना स्वास्थ्य व शीतलता प्रदान करने वाले तथा नेत्रों को आरोग्यता देने वाले सरल व्यायाम हैं। जोगिंग यानी मंथर गति से दौड़ना भी एक उत्तम व्यायाम है। कहते हैं कि नित्य शुद्ध वायु में दौड़ने वाले को एकाएक डायबिटिज (मधुमेह) रोग नहीं होता।

घर्षण स्नान—एक कहावत है कि "दोनों बेर जो घूमे फिरे, दीर्घकाल जो खाय, सदा निरोग चंग रहे, जो प्रातः उठ नहाय'। स्नान से पूर्व सिर से पैर तक सारे शरीर को दोनों हाथों से रगड़ें ताकि तेजी से खून प्रवाहित होने लगे। अच्छा हो यदि तेल मालिश करके स्नान करें। विशेषकर सर्दी में तो नित्य तेल मालिश अवश्य करनी चाहिए। मालिश करते समय नाभि, नाक, कान तथा पैरों के तलवों में तेल लगाना न भूलें। स्नान करके फौरन दोनों हथेलियों से सारे शरीर को फुर्ती से रगड़ें कि जैसे आप पानी की मालिश कर रहे हों, फिर तौलिये से बदन को रगड़ रगड़ कर पोंछ डालें। अन्त में एक बार फिर सूखी हथेलियों से सारे शरीर को ऊपर से नीचे तक रगड़ें। इस घर्षण स्नान से बदन में हल्कापन और ताजगी मालूम पड़ेगी तथा शरीर के छोटे-मोटे विकार स्वतः ही दूर हो जायेंगे।

सूर्य स्नान नित्य प्रातः उगते सूर्य की किरणों को नंगे बदन पर पड़ने दीजिये। आंखें बन्द करके सूर्य की ओर मुंह करके बैठ जाइये तथा चेहरे को बायें व दायें घुमाइये। इससे गर्दन का व्यायाम भी हो जायेगा। फिर बन्द आंखों को हथेलियों से ढकें कि कुछ दिखाई न देकर अन्धकार मालूम पड़े, इसे पामिंग कहते हैं। इससे नेत्र ज्योति बढ़ती है। बाद मे पश्चिम की ओर मुंह करके रीढ़ की हड्डी पर सूर्य की किरणें पड़ने दें। इस प्रक्रिया से दस मिनट में ही बड़ा स्वास्थ्य लाभ होता है, 'सूर्य स्नान प्रकृति का वरदान है।

भोजन—सब सुखों मे भोजन ही प्रधान सुख माना जाता है। भोजन (जैसा भी मिले) हमेशा भगवान का प्रसाद मानकर, शान्त चित्त होकर सुख पूर्वक, चबा-चबाकर करना चाहिए। यथा सम्भव अंकुरित अनाज, दूध, दही, छाछ, मूली, पालक, गाजर, टमाटर, आंवला, नींबू, ककड़ी, अमरूद, केला पिंड खजूर आदि मोसमी फल सब्जी लेते रहने चाहिए। तली हुई चीजें नहीं के बराबर लें। कब्ज को दूर रखने के लिए घर-गृहस्थी में सबसे अच्छी चीज कढ़े (काढे) गेहूं का दलिया है भोजन के तुरन्त बाद पेशाब करने से पेट की फालतू गर्मी निकल जाती है एव धातु जरियान की बीमारी नही होती। तदन्तर दस मिनट बाई करवट लेटने से भोजन पचने में सहायता मिलती है। शाम के भोजन के बाद बाई करवट लेटने के बाद दस मिनट अवश्य टहलना चाहिये अथवा वज्रासन में बैठिए और स्वस्थ रहिए।

शयन प्रार्थना—ऋतु अनुसार रात्रि को नौ-दस बजे तक सो जाना चाहिए। प्रकाश मे भी भार होता है। अतः बिजली बन्द करके सोना चाहिये, जिससे आंखो पर रोशनी नहीं पड़ने से उन्हें पूर्ण विश्राम मिल सके। सोते समय चिंताओं, समस्याओं को ईश्वर व प्रकृति के भरोसे छोड़कर मन को स्थिर व शान्त रखकर, प्रभु प्रार्थना मे लीन होते हुए निद्रा देवी की गोद मे सो जाना चाहिए। प्रार्थना हमारी दिनचर्या का एक आवश्यक अंग है जो मन व आत्मा का भोजन है।

सुखी परिवार जीवन का आधार—अपने जीवन के वे सबसे आनन्ददायक क्षण होने चाहिए जो कि घर में अपने बन्धु-बांधवों के साथ बिताते हैं। आलोचना से बचकर सहनशील बनने मे ही सार है। सदा जवान बने रहने का रहस्य है कि आप अपने व्यक्तित्व में कठोरता न आने दें। कड़वी बात का जवाब भी मिठास से देकर सर्वप्रिय व विनोदी बनें, और जियें तो ऐसे जियें कि अपने आचरण की सुगन्ध से चारों तरफ प्रेम और प्रसन्नता की बगियां लहलहा उठे और घर स्वर्ग सा लगे। आप आत्म-विश्वास के साथ प्रसन्नता पूर्वक इनका पालन कीजिए और देखते जाइए कि बुढ़ापा आता आता भी पीठ फेर कर पीछे लौट रहा है एवं आप जवानी की ओर बढ़ रहे हैं। हमेशा प्रसन्न व सक्रिय रहना सदा जवान बने रहने का अचूक नुस्खा है। सुखद वृद्धावस्था मानव जीवन का सर्वोच्च शिखर है। स्वस्थ वृद्धावस्था वास्तव मे सर्वोपरि सुख है जिसकी अनुभूति संयम द्वारा परिवार नियोजन का पालन करने वालों को अवश्य होती है।

ये प्रयोग आज भी वैज्ञानिक कसौटी पर खरे उतरते हैं प्रकृति के अनुसार चलने वाले प्राणी के लिए मृत्यु भी उतनी ही सहज और सुखद हो जाती है जितनी की गहरी मीठी नींद।

पता—चौक लीलाधर बीहुलता,
[illegible]-१०२००१

जब शिवरात्री बोधरात्री बन गयी

ब्रह्मदत्त स्नातक, जनकपुरी, नई दिल्ली

> **जो व्यक्ति प्राणियों की हत्या करता है, उसके मांस से देवताओं और पितरो का तर्पण करता है वह ऐसा ही काम करता है जैसे कोई मूर्ख चन्दन को जला कर कोयले का लेप करे।**

मनुष्य के जीवन में प्रभु कृपा से ऐसे क्षण आते हैं, जिनसे न केवल उसकी अपनी जीवन की दिशा बदल जाती है, अपितु इतिहास में एक मोड़ आ जाता है और मानवता की धारा दूसरी ओर बहने लगती है। कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ के जीवन में एक वृद्ध मनुष्य तथा एक शव यात्रा को देखकर जो तूफान उठा और जिज्ञासा जागी, उसने लौकिक जीवन से परे एक ऐसे सत्य को उजागर किया जिसने झोपड़ी से महल तक श्रावस्ती वैशाली सम्पूर्ण भारत, श्रीलंका, तिब्बत, चीन, जापान, अफगानिस्तान मध्य एशिया तथा दक्षिण पूर्व के देशों में एक नवीन क्रान्ति धार्मिक क्षेत्र मे खड़ी कर दी।

एक वैज्ञानिक तथा सामान्य व्यक्ति की भांति न्यूटन ने भी वृक्ष से फल को गिरते देखा था परन्तु उसके मस्तिष्क ने पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की जो स्थापना की थी उससे विज्ञान के सम्पूर्ण क्षेत्र मे एक भूचाल आ गया और एक के बाद एक नये सिद्धांतों की स्थापना होती गयी। गणित और ज्योतिष के क्षेत्र मे वैज्ञानिक डायमेंशी ने अनेक सत्यों का उद्घाटन इसी प्रकार अकस्मात किया था।

लगभग १५० वर्ष पूर्व गुजरात की भूतपूर्व मोरवी रियासत के टंकारा नामक कस्बे में प० करसन जी तिवारी के यहां भी शिवरात्री के दिन एक इसी प्रकार की क्रान्ति की चिनगारी उठी थी जिसने आगे चलकर अमरीकी विचारक लेखक एण्ड्रू जैक्सन के शब्दो मे विश्व मे एक ऐसी क्रांति को आर्य समाज के रूप में जन्म दिया जिसने विश्व के धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में दावानल की भांति अन्धविश्वास एवं धार्मिक शोषण को तिनके की तरह जला दिया था। और जिसके परिणाम स्वरूप तर्क एवं वैज्ञानिकता के अकुर इन क्षेत्रो में उठने लगे। इससे धार्मिक कठमुल्लापन एवं मानव और परमात्मा के बीच स्वयभू अवतारों एवं ठेकेदारो का वर्चस्व धीरे धीरे समाप्त होने लगा।

यह वही मोरवी स्थान है जहां से कि पिछले दिनों मच्छु बांध के टूटने पर विनाश की लीला के समाचार आये थे।

भगवान् शिव जी विश्व के प्रतिपालक एवं कल्याणकारी स्रष्टा हैं उनकी प्राप्ति और आराधना के लिए विशेष रूप से प्रतिवर्ष शिवरात्री पर्व नियमानुसार लाखों भक्त इस पर्व को मनाते हैं। करसन जी के पुत्र मूलशंकर के जीवन में सच्चे कल्याणकारी इसी शिव परमात्मा को प्राप्त करने की जिज्ञासा जागी थी। वे यावज्जीवन इसी शिव की खोज की और केवल अपने लिए मुक्ति पाने की कामना से नहीं अपितु समस्त विश्व के कल्याण की भावना से इस शिव की आराधना मे लगे रहे। उन्होंने सच्चे शिव के स्वरूप को बहा और मनन किया था और उसी का प्रतिपादन वे यावज्जीवन करते रहे थे। इसी एक शिवरात्री की कथा वृतांत हम आपको बता रहे हैं जिसने बालक मूलशंकर को शिव की खोज में और उसकी आराधना में बाद मे स्वा दयानन्द सरस्वती के रूप में विश्व के सामने प्रख्यात किया। यह कथा बड़ा अत्यन्त रोचक एवं विस्मयकारी है यह मूलशंकर से बाद में स्वामी दयानन्द नाम से प्रसिद्ध होने वाले व्यक्ति के सच्चे शिव तत्व के अनुशीलन एवं जिज्ञासा पर गहरा प्रकाश डालती है।

बालक मूलशंकर का तत्कालीन औदीच्य ब्राह्मणों की परम्पराओं के अनुसार ८ वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। वेदपाठ ब्राह्मणों से संस्कार वेदपाठ और सन्ध्योपासना। [illegible] गायत्री मन्त्र का [illegible] दिया गया। क्योंकि प० करसन जी तिवारी बालक मूलशंकर को [illegible] एवं क्रियावान बनाना चाहते थे इन्होंने [illegible] उसको शीघ्र ही कण्ठस्थ करा दिए। और अब [illegible], फिर इन सबके पिता ने उपवास तथा अनुष्ठान करने के लिए मूलशंकर को प्रेरणा की। बड़ा पालन एवं व्रत के प्रेमी उनके पिता ने इस आदेश को तुरन्त स्वीकार कर लिया। तब उनकी आयु १४ वर्ष की रही होगी। चूं कि व्रत तथा साधना बालक के लिए दुष्कर होती है, स्वाभावत माता एवं अन्य परिवारिकजनों ने इस विचार का विरोध किया परन्तु मूलशंकर अपने निश्चय पर अडिग थे।

[illegible] की जीवन के अन्तःस्तर है। उसका वर्णन इस प्रकार है।

टंकारा मे नदी तट पर एक शिवमन्दिर था। दिनभर वहा शिव के भक्तो की भीड़ रही। फिर वहां रात घिर आई। उस समय के वर्णन का आनन्द श्रीमद्दयानन्द प्रकाश के स्वर्गीय लेखक एव भक्तिरसामृतसिन्धु स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के शब्दो मे लीजिए। वे लिखते हैं —

ऐसे गम्भीर निस्तब्ध, नीरव, सुनसान समय मे उस शोभन शिवालय की ऊपर की छत को चारो ओर की दिवालो को समतल भूमि को, और पुष्प हार सहित शिव पिण्डी को दो ही ज्योतियां प्रकाशित कर रहीं थीं एक तो मन्दिर के दीपक की जलती बत्ती और दूसरे बालक दयानन्द की उज्ज्वल चित्तवृत्ति। दीपक की बत्ती ग्रहणशक्ति रहित है। ज्ञान-शून्य है। किसी घटना का परिणाम निकालने मे असमर्थ है। वह केवल उजाला ही उगल सकती है। कदाचित बुझने लगे तो अपने बचाने का उसके पास कोई उपाय नहीं। परन्तु दयानन्द की चमत्कारिणी चित्तवृत्ति ज्ञानवती और ग्रहणशक्ति-सम्पन्न थी। उसमे अतुल त्वरा से घटना के परिणाम पर पहुंच जाने का सामर्थ्य है। श्री दयानन्द जी पर जब निद्रा का आक्रमण होता और उनकी आंखें झपने लगतीं तो वे नेत्रों पर ठण्डे पानी के छींटे दे देकर अपने आपको सावधान और सचेत करते। उन्हें भय था कि आंखें लग जाने से कहीं व्रत निष्फल न हो जाय।

पर उनका चित्त आश्चर्य से चकित हो गया जब उन्होंने देखा कि शिव पिण्डी पर अपवित्र क्षुद्र जन्तु चूहे कूद कूद कर और उछल उछल कर चढ़ते हैं। उस पर चढ़ाया हुआ भक्तों का पुष्पोपहार वह आनन्द से खा रहे हैं जिस प्रकार मेघमाला मे रहकर विद्युत् की रेखा फिर जाती है और जिस प्रकार वायु से ताड़ित महासागर मे ऊंचे ऊंचे तरंग उठते हैं वैसे ही दयानन्द के चित्ताकाश मे इस घटना से सचलित विचार और प्रश्नो के तारे एक एक करके चमचमा उठे। शंकासमाकुल हृदय मे उन्होंने सोचा कि शिव से तो मैंने सुना है कि शिव त्रिशूल धारी हैं उनका वाहन वृषभ और निवास कैलाश है वह मनुष्याकारधारी देवता डमरु बजाने वाला वरप्रदायक और वराशापप्रदान मे समर्थ परब्रह्म हैं। वह पाशुपतास्त्र से दैत्यों का संहार करता है तो क्या वही महादेव यह मूर्ति हो सकती है? अहो! इसके सिर पर तो ये अपावन प्राणी चूहे दौड़ लगा रहे हैं इसके चढ़ावे को बड़ी निर्भयता से खा रहे हैं। इस तुच्छ जीवो को भगाने का भी बल नहीं! यह महादेव कैसा?

घटना नई नहीं थी पर प्रश्न नया था। जो इससे पूर्व किसी शिवभक्त के हृदय में नहीं आया था। उनके मन मे जिज्ञासा थी कि आखिर मे मानव जीवन का चरम उद्देश्य क्या है? मनुष्य इन बुद्धिगम्य प्रश्नो का उत्तर चाहता है पर ऐसे मार्ग पर वह एक सीमा तक ही जा सकेगा। पर्वत की ऊंची चोटियों पर एवं गुफाओं के भीतर गहन जंगल में जिस सत्य की अनुभूति हमारे पूर्वजों को हुई थी, उसका प्रकाश पाने के लिए वे दीर्घकाल तक सर्वत्र भ्रमण करते रहे, और अन्तिम सत्य एवं उपदेश जो उन्होंने संसार के सामने महर्षि दयानन्द के रूप में सन्यासी होने के बाद रखा वह विश्व के सामने एक अनूठी प्रस्तुति थी। दिग्भ्रमित मानव और ईश्वर के बीच की दीवार को टुकड़े टुकड़े करके मानव में आस्था और श्रद्धा की ज्योति आगे आने वाली पीढ़ी के सामने प्रकाशित कर दी। इस सत्य का बोध शिवरात्रि के दिन स्वामी दयानन्द को हुआ था इसलिए वस्तुत वह शिवरात्री मानव की सच्चे शिव को पाने की जिज्ञासा के प्रतीक के रूप मे बोधरात्री बन गयी। स्वामी दयानन्द सरस्वती का सारा जीवन इसी ज्ञान की सिद्धि एवं प्रसार में बीता।

आर्य समाज मीरजापुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मीरजापुर का १०८ वां वार्षिकोत्सव गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ४ से ६ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह में आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान और संगीतज्ञों ने पधार कर श्रोताओं को ज्ञान लाभ प्राप्त कराया। इस अवसर पर ४ मार्च को भव्य शोभा यात्रा भी निकाली गयी।

—आर्य समाज खेड़ा अफगान का चौदहवां वार्षिकोत्सव १८ से २० मार्च तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। १८ मार्च को विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी।

इनसे प्रेरणा ले ?

१—सर्वश्री महाशय तेजपाल सिंह जी स्वतन्त्रता सेनानी गाव पोस्ट-कोराली, फरीदाबाद ने सार्वदेशिक साप्ताहिक के १५ सदस्य बनाए हैं।

२—सुखदा शर्मा वार्ड सिस्टर जिला चिकित्सालय चम्बा ने भी १० सदस्य सार्वदेशिक के बनाए हैं। यदि इसी प्रकार सभी आर्य जन १०-१० सदस्य बनाने का प्रयास करें तो सार्वदेशिक की ग्राहक संख्या में वृद्धि हो सकती है। प्रत्येक आर्य इनसे शिक्षा ग्रहण करें।

—सम्पादक

आर्य जगत के मान्यता प्राप्त विद्वानों ने समारोह में पधारकर श्रोताओं को लाभान्वित किया।

—आर्य समाज बिनरौली जिला मेरठ का छठवां वार्षिकोत्सव २ से ६ अप्रैल १९९४ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक यज्ञ भजनोपदेश वेदोपदेश धार्मिक एवं क्रान्तिकारी प्रवचनों को सुनकर श्रोताओं में नवजीवन का संचार हुआ। समारोह में प० उदयवीर जी आचार्य, कुंवर महिपाल सिंह सहित अनेकों विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने भाग लिया।

—आर्यसमाज जावरा मे श्री ज्ञानप्रकाश जी मलहोत्रा प्रधान, श्री मागीलाल जी जैसवाल मन्त्री, श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी कोषाध्यक्ष चुने गए।

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजी जा रही है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्यसमाज सुखारी भावर मे कन्हैयालाल प्रधान, श्री इन्द्र-सिंह मन्त्री, श्री ओमप्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज सिरसा मे जगदीश सीपर प्रधान, श्रवण कुमार आर्य मन्त्री, उदे रामगोदारा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज लश्कर मे डा० आनन्द मोहन सक्सेना प्रधान, श्री मदनमुरारी मन्त्री श्री अभिमन्यु खुल्लर कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज नागदा मे सेवाराम जी आर्य प्रधान श्री मोहनलाल सोनी मन्त्री श्री कृष्णमुरारी चतुर्वेदी कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज चन्दौसी मुरादाबाद मे श्रीहरिओम जी आर्य प्रधान, श्री रामकुमार शर्मा मन्त्री श्री ज्ञानप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज सुल्तानपुर पट्टी मे श्री सुरसिंह आर्य प्रधान श्री दर्शनसिंह मन्त्री, श्री श्रीकृष्ण आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज पटेल नगर जोधपुर मे मागीलाल जी प्रधान, श्री आनन्दप्रकाश जी पटेल मन्त्री, श्री पोकरराम जी कोषाध्यक्ष चुने गए।

एक हजार एक वां आदर्श विवाह सम्पन्न

भोपाल। विगत दिवस आदर्श विवाह मण्डल मध्य प्रदेश के प्रधान कार्यालय डी १९६, वैदिक नगर, भोपाल के तत्वावधान में एक हजार एक वां दहेजविहीन अन्तर्जातीय आदर्श विवाह सम्पन्न हुआ। आदर्श विवाह मण्डल मध्यप्रदेश के उपाध्यक्ष श्री शिवनारायण दसौरे ने एक विज्ञप्ति में बताया कि श्री राजेन्द्र पटेल एवं कु० सुनीता पहाड़िया का आदर्श विवाह वैदिक पद्धति से प० हरिश्चन्द्र विद्यावाचस्पति ने सम्पन्न कराया। आपने आगे बताया कि राष्ट्रीय एकता एवं समाज कल्याण की दिशा में दहेज विहीन अन्तर्जातीय एक हजार एक विवाह सम्पन्न कराने का श्रेय मण्डल के महामन्त्री प० हरिश्चन्द्र विद्या वाचस्पति के प्रयत्नों का फल है।

विवाह में सम्मिलित वधू के पिता श्री जीवनलाल पहाड़िया रिटा एस पी लोकायुक्त ने नवयुवकों से अपील की कि वे भी दहेजविहीन विवाह आदर्श विवाह मण्डल के तत्वावधान में कर समाज में व्याप्त दहेज दानव का नाश करने में सहयोग प्रदान करें।

योग साधना शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ

साधना स्थली व्यास आश्रम सप्त सरोवर का ३६ वां योग साधना शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ १ से ५ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह में आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वानों भजनोपदेशकों तथा विदुषी बहिनों ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया। शिविर में योग आसन, प्राणायाम यज्ञ भजन उपदेश ज्ञान गोष्ठी आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

पटेलनगर में आर्यवीर दल के बढ़ते कदम

श्रीमान सत्यव्रत आर्य जी प्रांतीय उपसंचालक राजस्थान के आदेश पर श्री धर्मवीर शास्त्री (व्या० शिक्षक) ने दिनांक १९ से २८ मार्च ९४ तक लगातार प्रातः से (आर्य वीरों को) प्रातः सायं दोनों समय ५० अच्छे युवकों को आर्य समाज पटेल नगर, (पीपाड़ शहर) जोधपुर में प्रशिक्षण दिया। यहां नियमित शाखा लगती है। आर्य वीरों का दीक्षान्त समारोह धूमधाम के साथ २८ मार्च को प्रातः हुआ।

—ब्र० सुरेन्द्र आचार्य (व्या शिक्षक)
कार्यालय मन्त्री, सञ्चालक (सा० आर्य वीर दल)
जोधपुर (राज०)

होलिकोत्सव सम्पन्न

बागपत। आर्य समाज मन्दिर बागपत में होली पर मा० सत्यप्रकाश गौड़ के पौरोहित्य में आर्य पर्व पद्धति के अनुसार विशेष आहुतियों से यज्ञ किया गया। यज्ञोपरान्त पर्व की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए राकेश मोहन ने इसे मन मालिन्य मिटाने व भ्रातृभाव बढ़ाने वाला पर्व बताया। मन्त्री सत्यप्रकाश गौड़ ने कहा कि होली पर अभद्रता व अश्लीलता को दूर कर वैदिक रीति से प्रेमपूर्ण शुद्ध पवित्र वातावरण बनाना चाहिए। समाज प्रधान जयप्रकाश वर्मा ने सभी आगन्तुकों को पुष्प भेंट कर नगर वासियों को होली की शुभकामनायें प्रेषित की। जनता में वैदिक साहित्य निःशुल्क वितरित किया गया।

सत्य प्रकाश गौड़, मन्त्री-आ स बागपत

शराब के ठेकों की नीलामी के विरुद्ध आर्यसमाज का विशाल प्रदर्शन

ठेकों की नीलामी स्थगित की गई

कानपुर—आर्यसमाज की पूर्व घोषणा अनुसार आज शराब के ठेकों की नीलामी के विरुद्ध कचहरी मे भारी संख्या में महिलाओं व पुरुषों ने नीलामी के स्थल पर आर्य नेता श्री देवीदास आर्य के नेतृत्व में जोरदार प्रदर्शन किया जिलाधिकारी द्वारा कानपुर देहात के ठेको की नीलामी को स्थगित करने की घोषणा के बाद प्रदर्शन समाप्त कर दिया गया।

प्रदर्शन से पूर्व केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वावधान मे महानगर के सभी आर्य समाजो की महिलायें तथा पुरुष शिक्षक पार्क नवीन मार्केट से जलूस के रूप मे कचहरी पहुचे जहा कानपुर के ठेको की नीलामी चल रही थी। जलूस का नेतृत्व श्री देवीदास आर्य बालगोविन्द आर्य, श्यामप्रकाश शास्त्री आदि आर्य नेता कर रहे थे।

आर्यवीरो का नव वर्ष का गीत

(डा० सारस्वत मोहन मनीषी)

आर्य वीर दल रहा रहेगा प्राण आर्यों का।
इससे ही होना है नव निर्माण आर्यों का ॥
गुरुवर दयानन्द का इससे गहरा नाता है।
आर्यवीरदल पुन जागरण शंख बजाता है ॥
केसरिया का रक्त धमनियो में लहराता है।
सावधान शिशुपालो चक्र सुदर्शन आता है ॥
ऐसा फिर सजे यही कल्याण आर्यों का ॥१॥

आर्य वीर दल राख नही जलता अंगारा है।
आर्य वीर दल दयानन्द की आंख का तारा है ॥
आर्य वीर दल देश भक्त वीरो की टोली है।
डायर की छाती में ऊधम सिंह की गोली है ॥
न्यायालय में पक्का रहा प्रमाण आर्यों का ॥२॥

आर्य वीर दल पेचीदा प्रश्नो का उत्तर है।
आर्य वीरदल जहा वहा हर प्रश्न का उत्तर है॥
आर्य वीर दल सपनों की आग मे तपना है।
आर्य वीरदल कलियुग मे सतयुग का सपना है॥
आर्य वीर दल सजीवन निष्प्राण आर्यों का ॥३॥

आर्य वीर दल सिर्फ नहीं है सिर्फ साधना है।
आर्य वीर दल सुप्त मनुज की जगी भावना है ॥
आर्य वीरदल एक सत्य है नहीं कल्पना है।
आर्य वीर दल शान्ति सिन्धु और राष्ट्र वन्दना है ॥
वीर मनीषी तम मे अग्नि बाण आर्यों का। ४॥

यज्ञ से मानव व विश्व का कल्याण होता है : कौर

अम्बाला। प्राचीन काल से यज्ञ कार्य की पुनीत परम्परा हमारे ऋषि मुनियों एवं धर्माचार्यों द्वारा मानव सेवा जन कल्याण शुद्धि एवं पर्यावरण शुद्धि के लिए श्रेष्ठ मानी गई है जिसके करने से विश्व का कल्याण होता है। समाज, देश व राष्ट्रीय एकता को मजबूती मिलती है।

उक्त विचार अम्बाला स्थित रमा कालोनी में आर्य समाज द्वारा निर्मित की जाने वाली दो लाख से ऊपर की लागत वाली यज्ञशाला के शिलान्यास समारोह में नगरीय कल्याण मन्त्री तनवतसिंह कौर ने कही। इस समारोह की अध्यक्षता स्वामी सुमेधानन्द ने की। विदर्भ के प्रधान आर्य प्रतिनिधि रमेशचन्द्र श्रीवास्तव तथा अम्बाला के समाजसेवी एवं उद्योगपति अमरचन्द कटारिया विशेष अतिथि के रूप मे उपस्थित थे।

कार्यक्रम के आरम्भ में मन्त्री तनवतसिंह कौर द्वारा वेदोमन्त्राचार के साथ यज्ञशाला निर्माण स्थल का भूमि पूजन किया गया। वैदिक यज्ञशाला की जानकारी प० रामचन्द्र आर्य और आर्य समाज की गतिविधियों का ब्यौरा कृष्णकांत आर्य ने दिया। निर्मित होने वाली आर्य समाज की यज्ञशाला हेतु दानदाताओं ने मुक्त हस्त से दान देने की घोषणा से लगभग ६० हजार की राशि एकत्र हो गई। दानदाताओं में आर्य समाज अम्बाला व महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति द्वारा २१ २१ हजार अमरचन्द कटारिया तथा श्रीमती प्रमिला मांगीलाल सोनी ने ५ १०१ मन्त्री जी कौर स्वामी सुमेधानन्द जी ने ग्यारह सौ प्रत्येक ने म० प्र० एवं विदर्भ प्रांतीय आर्य समाज नागपुर द्वारा और प० रामचन्द्र शर्मा आर जी आई मातुशाली प्रत्येक ने ११ हजार १११ रुपये के दान की घोषणा की। मन्त्री जी ने समारोह में उपस्थित जन समुदाय के साथ यज्ञशाला के भव्य मॉडल का अवलोकन भी किया तथा आयोजको के प्रयास की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन कृष्णलाल आर्य ने तथा आभार कैलाश पालीवाल ने माना।

वैदिक दर्शनो का अध्ययन करे

योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय वेदान्त मीमांसा दर्शनों का (संस्कृत भाष्यो सहित) तथा १०उपनिषद व वेदो के चुने हुए अध्यायों का अध्ययन करने के इच्छुक व्याकरणाचार्य, शास्त्री स्वर के संस्कृत भाषा बोलने मे सक्षम ब्रह्मचारी सम्पर्क कर। प्रवेश १५ अप्रैल ९४ से प्रारम्भ होगा।

भोजन आवास, वस्त्र, पुस्तक आदि की समस्त सुविधाए नि:शुल्क हैं। पूर्ण अनुशासन मे रहना अनिवार्य है। स्थान सीमित हैं।

आचार्य
दर्शनयोग महाविद्यालय, आर्यवन,
रोजड, पो० सागपुर, जि० साबर कांठा
(गुजरात) पिन० ३८३३०७

एक अनोखी प्रतियोगिता

घर बैठे विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एवं उस पर आधारित प्रश्न पत्र प्राप्त करें और छ मास के भीतर उत्तर भेजकर निम्न पुरस्कार प्राप्त करे।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
३०००) रु०	२०००) रु०	१०००) रु०

पूर्ण विवरण प्रश्न-पत्र एवं प्रवेश शुल्क आदि के लिए मात्र तीस रुपए मनीआर्डर द्वारा—रजिस्ट्रार परीक्षा विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजि०), ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ को भेजें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सभा

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४६/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१७४-१९९७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 14-15-4-1994

डा० बलराम जाखड़ को भेजा गया पत्र

(पृष्ठ १ का शेष)

बावजूद हैदराबाद के अल कबीर यांत्रिक [illegible] हजार गोवंश और ३ हजार अन्य पशुओं का कत्ल करके उसका मांस विदेशों को क्यों भेजा जा रहा है ? सरकार की इस नीति का पूरे [illegible] में प्रबल विरोध होना स्वाभाविक है। . . . जो बहुत बड़ी

आप भारत के कृषि मन्त्री हैं। आपकी [illegible] भावनाओं से प्रधान-है। यदि यह सरकार का निर्णय है तो करें। हमें आशा है कि राष्ट्र-मन्त्री जी को अवगत कराते [illegible] करते हुये विदेशों से सुअर की वासियो की [illegible] आयात को बन्द करने की भारत सरकार द्वारा [illegible] सार्वजनिक घोषणा की जायेगी। यदि ऐसा नहीं हुआ तो देश मे जोरदार आन्दोलन खड़ा हो जायेगा, जिसे रोक पाना सरकार के लिये सम्भव नहीं हो सकेगा और उसके दुष्परिणामों से भी सरकार बच नहीं सकेगी।

आपने हमारे विचारों को हमेशा ध्यान से सुना है। मुझे आशा है आप अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे। कृपया उत्तर देकर भी अनुगृहीत करें।

शुभ कामनाओं सहित,

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा-प्रधान

सिक्ख गुरुओं का अपमान

(पृष्ठ १ का शेष)

बादशाह ने इनकी गिरफ्तारी के लिये फौज रवाना की इस तरह इनकी गिरफ्तारी अमल में आई, हाफिज को तो देश से निकालने का आदेश हो गया, और सिक्ख गुरुओं को १६७५ ई० में मौत के घाट उतार दिया गया। लेखक के मुताबिक गुरु गोविन्दसिंह ने गुरु नानक के उपदेशों को नजरन्दाज कर दिया और एक नया पन्थ चला दिया था। इसने एक यज्ञ किया जिसमें एक देवी प्रकट हुई, परन्तु गुरु ने डर के मारे अपनी तलवार उसके चरणों में रख दी इतने में देवी लुप्त होगई। बादमे गुरु औरंगजेब के बेटे बहादुर के दरबारमे हाजिर हो गया जिसने इसे पन्च हजारी बना दिया। इसने एक पठान को भी सेवक रखा था, जो इसके लिये घोड़े खरीदता था। लेकिन गुरु आसानी से इसकी कीमत अदा न कर सका। एक दिन यह पठान गुरु से झगड़ पड़ा, जिस पर गुरु ने इसकी हत्या कर दी परन्तु दूसरे ही क्षण पठान के लड़के ने गुरु की हत्या कर दी।

लेखक के अनुसार महाराजा रणजीतसिंह शराबी, बदचलन और हुक्के का शौकीन था। इसने महाराजा की रानियों और इसकी माता के चाल-चलन पर भी छींटा-कसी की। दूसरे सिक्ख सरदारों को भी इसी रूप मे पेश किया इसने यह भी कहा कि अकाली फूलासिंह एक डाकू था। इस तरह के अपमान जनक तथा दोषपूर्ण आरोप लेखक ने पाकिस्तान मे प्रकाशित हुई अपनी किताब में सिक्ख गुरुओं के सम्बन्ध में लगाये हैं। यह पुस्तक आज से कई वर्ष पहले प्रकाशित हुई थी। परन्तु पाकिस्तानी सरकार ने इसके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की। अब जब कि भारत में इसके विरोध में वातावरण उत्पन्न हुआ, तो पाकिस्तानी सरकार ने अपने खालिस्तानी सिक्खों को खुश करने के लिये यह किताब जब्त करली है। परन्तु इतने वर्ष इसके विरोध मे कोई उचित कार्यवाही न करके पाकिस्तानी सरकार ने सबको यह बता दिया कि जिन सिक्खों पर भारत सरकार के अत्याचार का यह रोना रोती है इनके प्रति इनके मन मे कैसे विचार मौजूद हैं।

(प्रताप से साभार)

...सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर

५ से १९ जून १९९४ ई०

स्थान—गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरयाणा) योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा दिये गये कर्मयोग की पावन स्थली और सुरम्य वातावरण मे स्थित गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा राष्ट्रीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर मे शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक एवं आचार्य श्रेणी में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले आर्य वीरों को ही प्रवेश मिलेगा। प्रवेश शुल्क ७० रुपये—प्रवेश सीमित रहेगा। इसके लिये पूर्व अनुमति सार्वदेशिक कार्यालय से लेना अनिवार्य होगा तथा प्रथम श्रेणी के प्रमाण-पत्र की प्रतिलिपि साथ लानी होगी। साथ ही आर्य समाज या आर्य वीर दल के अधिकारियों का संस्तुति पत्र भी साथ लायें।

व्यवस्थापक	संयोजक	शिविराध्यक्ष
आचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र	सत्यवीर आर्य	डा० देवव्रत आचार्य

निर्वाचन

—आर्य समाज जंगपुरा विस्तार में चौ० निहाल सिंह प्रधान श्री सुभाष बवेजा मन्त्री, श्री नन्दलाल भाटिया कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज [illegible] में डा० कन्हैयालाल आर्य प्रधान, श्री श्याम बिहारी [illegible] आर्य मन्त्री, श्री धर्ममित्र आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

मुगल साम्राज्य की क्षय और उसके कारण (प्रथम व द्वितीय भाग)	२०)००
मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (भाग ३-४)	१६)००
लेखक - पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति	
महाराणा प्रताप	१६)००
खिलाफत अर्थात इस्लाम का कोढ़	५)५०
लेखक—धर्मपाल बी० ए०	
स्वामी विवेकानन्द की विचार धारा	४)००
लेखक—स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती	
उपदेश मञ्जरी	२१)
संस्कार चन्द्रिका	मूल्य—१२५ रुपये

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पुस्तक मंगवाते समय २५% धन अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली-२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ११] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ चैत्र शु० १३ सं० २०५१ २४ अप्रैल १९९४

महात्मा हंसराज जन्म दिवस समारोह

सख्ती से ही कश्मीर समस्या का समाधान संभव

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही सिक्ख पंथ का गठन हुआ था

—बेअन्तसिंह

आर्य समाज युवा वर्ग का चरित्र निर्माता : जगमोहन

नई दिल्ली. १७ अप्रैल । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि राजसत्ता चलाने के लिए मजबूत दण्ड विधान की भी आवश्यकता पड़ती है। कश्मीर मसले को इसी नीति के तहत सुलझाना होगा। वह रविवार को यहां डी.ए.वी. आन्दोलन के संस्थापक सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज के जन्म दिवस समारोह में बोल रहे थे।

समारोह में उपस्थित जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल जगमोहन की ओर इशारा करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि कश्मीर के सुधारने के लिए ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि देश की एकता को तोड़ने के षड़यन्त्र रचे जा रहे हैं। आर्य युवा इस तरह के सभी षड़यन्त्रों के खिलाफ संघर्ष करेंगे।

स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि अगर कभी देश पर संकट के क्षण आयेंगे तो आर्य प्रतिनिधि सभा के लोग भाले की नोक पर काम करेंगे।

लगभग छह हजार से अधिक लोग इस समारोह में उपस्थित थे। आर्य प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कालेज प्रबन्ध समिति ने संयुक्त रूप से समारोह का आयोजन किया। तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में हुए इस समारोह में अधिकांश महिलाएं थीं। प्रातः ११ बजे तक लोग कार्यक्रम मे शामिल होते रहे। एक स्थिति तो ऐसी आ गई कि इतने विशाल स्टेडियम में लोगों को बैठने तक की जगह नही मिली। गैलरी फर्श फ्लोर की सीढियां आदि सभी जगह लोग बैठे हुए थे।

वैदिक मन्त्रों व भक्ति गीतों के बीच शुरू हुए समारोह मे सौम्यता व भव्यता अन्त तक बनी रही।

सभा के मुख्य सचिव मदनलाल खन्ना ने बताया कि कार्यक्रम में दिल्ली के अलावा गाजियाबाद रोहतक फरीदाबाद गुडगांव आदि क्षेत्रों से भी आर्य प्रतिनिधि सभा व डी ए.वी. संस्थान के शिक्षक छात्र-छात्राएं प्रबन्धक व समाजसेवी आदि शामिल हुए।

समारोह का उद्घाटन पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिंह ने किया। उन्होने कहा कि आम जनता समझ गई है कि पंजाब मे पिछले एक दशक में जो कुछ भी हुआ वह सब पाकिस्तान के इशारे पर हुआ।

उन्होने कहा कि पाकिस्तान अब आगे बढ रहा है। लोगो से

(शेष पृष्ठ ११ पर)

काशीराम और मायावती का खेल

भारत को तोड़ने की साजिश

चन्द्रशेखर पूर्व प्रधानमन्त्री

काशीराम और मायावती द्वारा भारत को तोड़ने की अन्तर्राष्ट्रीय साजिश की जा रही है। महात्मा गांधी ने हिन्दू समाज को तोड़ने की साजिश के विरुद्ध आमरण अनशन करके पूना पैक्ट को नाकाम किया था। महात्मा गांधी भारत की एकता, विलक्षणता, स्वाभिमान और स्वदेशी के प्रतीक थे।

बसपा नेता काशीराम और मायावती पिछले दिनों से महात्मा गांधी के ऊपर वैचारिक हमला करके देश को तोड़ने वालों की साजिश के शिकार हुए हैं। इस सम्बन्ध में पूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने विस्तार से अपने विचार देते हुये इसे अन्तर्राष्ट्रीय साजिश माना है। अगले अंक में उनका पूरा लेख प्रकाशित किया जायेगा।

—सम्पादक

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

गली गली में बूचड़खानें और गोश्त सौदागरों की मौज

जाफराबाद, ११ अप्रैल। जाफराबाद और सीलमपुर की गली-गली में बूचड़खाने हैं। प्रशासन, पुलिस और निगम की मिलीभगत से चल रहे इन बूचड़खानों मे रोजाना तकरीबन डेढ़ से दो सौ भैंसें काटी जाती हैं। घरों के अन्दर ही अवैध रूप से बने इन बूचड़खानों में जानवरों को काटने के बाद उसकी गंदगी यहीं नालियों और सड़कों पर डाल दी जाती है। इससे आस-पास का माहौल तेजी से प्रदूषित होता जा रहा है। बिना डाक्टरी जांच के काटे जा रहे इन जानवरों के गोश्त से कभी भी बीमारी फैल सकती है। क्योंकि यहां बूढ़े और बीमार जानवरों को काटा जाना भी आम बात है। इलाके के लोगों ने कई बार निगम से अवैध रूप से चल रहे इन बूचड़खानों को हटा कर किसी खुले स्थान पर ले जाने की मांग की। लेकिन निगम ने इस पर कभी संजीदगी से विचार ही नहीं किया। जिसकी वजह से आबादी के साथ-साथ बूचड़खानों की तादाद भी बढ़ती गई। अब तो नौबत यहां तक आ पहुंची है कि इन इलाकों की हर गलियों में रिहायशी मकानों के नीचे गोश्त बिकते देखे जा सकते हैं।

ऐसा नहीं कि इन कसाइयों के धन्धों और उनकी तफसील पुलिस को पता न हो। हर महीने मिलने वाली उस बंधी-बंधाई रकम का ही कमाल है कि पुलिस और प्रशासन के अधिकारी तेज बदबू को बरदाश्त करते हुए नाक पर रूमाल रख कर चुपचाप गुजर जाते हैं। पुलिस और प्रशासन के निष्क्रिय होने के कारण इलाके के लोगों ने तंग आकर खुद ही इस गंदगी के खिलाफ मुहिम चलाने का फैसला किया। जिसके तहत इलाके की घनी आबादी के सैकड़ों लोगों ने इन कसाइयों की मुखालफत शुरू कर दी जो खुद भैंसों का गोश्त इस्तेमाल करती हैं। इस सिलसिले में इन लोगों ने पुलिस और प्रशासन को दर्जनों आवेदन भी दिए। जो शायद रद्दी के टोकरी में डाल दिए गए। प्रशासन के निकम्मेपन की वजह से कसाइयों के खौफ के बावजूद जिन लोगों ने इनकी मुखालफत करने की हिम्मत जुटाई थी अब तो वह भी पस्त हो चुके हैं।

जाफराबाद की गली नंबर-३१ के अफसर कसाई को पिछले दिनों पुलिस ने अवैध रूप से जानवरों को काटने के सिलसिले में पकड़ा था। लेकिन बाद में न जाने क्यों उसे छोड़ दिया गया। जाहिर है गोश्त के इन अवैध सौदागरों से होने वाली मोटी कमाई ने पुलिस को अपना फर्ज निभाने से रोक रखा है। अफसर कसाई हर रोज १५ से १८ भैंसें काटता है। इलाके का यह सबसे बड़ा कसाई है। अफसर जमना पार के चौहान बांगड़, सीलमपुर और वैलकम के इलाकों में गोश्त की सप्लाई तो करता ही है उसका माल राजधानी के आस-पास के इलाकों में भी जाता है। मस्जिद मोहम्मदी के सामने वाली गली नंबर-३० में भी अवैध तौर पर भैंसें काटी जाती हैं। कय्यूम कसाई यहां हर रोज चार-छह भैंसें हलाल कर डालता है। गली नंबर २१ में जनाब बड़े मियां उस्मान हैं जो रोजाना चार भैंसें काट डालते हैं। कश्मीरी बिल्डिंग के पास शम्सू कसाई भी हर रोज दो-चार भैंसें तो निपटा ही डालते हैं। हसन पहलवान, बहरा निजामू जैसे कई दर्जन और छोटे कसाई हर रोज दो-एक भैंस हलाल कर देते हैं।

बगल में ब्रह्मपुरी में भी कई कसाई हर रात कानून को ठेंगा दिखा कर और मोहल्ले वालों को धता बता कर भैंसें काट रहे हैं। कल्याण सिनेमा के पास भी कई कसाई सक्रिय हैं। सीमापुरी में भी कमोबेश जाफराबाद जैसी ही स्थिति है। यहां भी दर्जनों भैंसें कटती हैं। कसाइयों में कई तो बहुत ही खौफनाक हैं। ज्यादातर लोग इनके डर से कुछ भी कहने से बचते हैं। इलाके के एक हाजी साहब ने अपना नाम न छापने की शर्त पर बताया कि इन लोगों ने तो हमारी पूरी कौम को ही बदनाम कर डाला है।

बूचड़खाने के लिए खुली और पर्याप्त जगह न होने के कारण यहां छोटे-छोटे कमरों में भैंसों को काटा जाता है। रोजाना एक कमरे में दो तीन भैंसें कटती हैं। जगहों की तंगी और जानवरों की संख्या ज्यादा होने के कारण यहां गंदगी का जो आलम है उसमें एक मिनट भी खड़ा रहना दूभर हो जाता है। खास कर गर्मी के मौसम में तो स्थिति और भी भयावह हो जाती है। गंदगी को फेंकने और पानी की निकासी का सही इन्तजाम न होने से चारों तरफ बदबू फैल जाती है। पानी की कमी से भी सफाई ठीक से नहीं हो पाती। जानवरों के बेकार अंग फेंकने के लिए पर्याप्त जगह न होने के कारण इन अंगों को आम तौर पर सड़क के किनारे या कूड़े के ढेर पर डाल दिया जाता है। गंदगी और बदबू की वजह से बच्चे उल्टियां कर देते हैं।

जाफराबाद के कई कसाइयों ने आरोप लगाया कि इन इलाकों में जगह-जगह खुले बूचड़खाने के लिए खुद निगम और प्रशासन जिम्मेदार है। इन कसाइयों का कहना था कि मोतियाखान के बूचड़खाने से जमनापार के लिए जो गोश्त सप्लाई होता था वह यहां की आबादी के लिए पर्याप्त था। लेकिन वहां से यहां तक गोश्त लाने के दौरान रोजाना अधिकारियों द्वारा परेशान करने और टैक्स के नाम पर मोटी रकम ऐंठने के विरोध में उन लोगों ने यहीं जानवरों को काटना शुरू कर दिया। पर इन कसाइयों और गोश्त विक्रेताओं का भी यह मानना है कि जानवरों को काटने की वजह से यहां गंदगी बढ़ी है। लेकिन उन्होंने इस आरोप को गलत बताया कि वे जानवरों के खून को नालियों या जमना में बहा देते हैं। हां पानी की कमी की वजह से कभी-कभी ठीक तरीके से सफाई नहीं हो पाती। वैसे यह लोग निगम की ओर से बूचड़खाने के लिए कोई और जगह देने के बदले इस जगह को छोड़ने को तैयार हैं।

सीलमपुर के दर्जनों लोगों का कहना है कि इस समस्या से निजात पाने के लिए जमना पार में एक बूचड़खाने का होना जरूरी है। ताकि सफाई-व्यवस्था पर समुचित ध्यान दिया जा सके। वैसे ये लोग भी मानते हैं कि गंदगी दूर करने के लिए यहां वैध बूचड़खाना होना जरूरी है। कौमी तंजीम पूर्वी दिल्ली ने भी आरोप लगाया कि निगम की उपेक्षा के कारण ही यहां अवैध बूचड़खाने खुले हैं। उन्होंने इस बात पर हैरत जताई कि जमना पार की इतनी बड़ी आबादी के लिए निगम ने एक भी बूचड़खाना खोलना मुनासिब नहीं समझा।

(जनसत्ता १२ अप्रैल)

इस्राइल ने भारत को हथियार बेचने की पेशकश की

नई दिल्ली, ४ अप्रैल (प्रेट्र)। इस्राइल ने भारत को हथियार बेचने की पेशकश की है। साथ ही कश्मीर मसले को शिमला समझौते के तहत हल किए जाने की वकालत की है।

इस्राइल के उप विदेश मंत्री डा० योसी बीलिन ने सोमवार को यहां एक पत्रकार वार्ता में कहा कि भारत और पाकिस्तान के आपसी विवाद में किसी तीसरे देश को नहीं पड़ना चाहिए।

उन्होंने कहा कि उनकी समझ में ऐसा कोई कारण नहीं आता जिसकी वजह से इस्राइल भारत को हथियार न बेचे।

विदेश राज्यमंत्री आर. एल. भाटिया ने बीलिन को भारत में आतंकवाद को पाकिस्तान द्वारा दिए जा रहे समर्थन से भी अवगत कराया।

श्री योसी ने बताया कि आज हुए एक समझौते से भारत और इस्राइल के बीच सीधी उड़ान शुरू हो जाएगी। इस समझौते से दोनों देशों के आपसी रिश्तों में मजबूती आएगी।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये एक बार १५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

सम्पादकीय

थाईलैण्ड में एक मास आर्य समाज का प्रचार-कार्य

भारत के पूर्व में बर्मा से लगा हुआ एक ७ करोड़ की आबादी का लघु बौद्ध देश है जिसका पुरातन नाम स्याम देश है आज भी वहां की जनता को थायी जाति कहते हैं। किसी समय में महात्मा बुद्ध का सन्देश पूर्व देशों में पहुंचा और रूस, चीन, जापान, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, बर्मा आदि देश बुद्ध के सन्देश से प्रभावित होकर बौद्ध देश बने। आज भी बुद्ध के सन्देश में विकृति आ जाने के बाद भी वहां महात्मा बुद्ध के भक्त श्रद्धा के साथ जुड़े हैं।

यदि आज अच्छे विद्वान इन देशो में अहिंसा परमो धर्म: का सन्देश विवेक पूर्ण ढंग से दें। तो बुद्ध के देश को भारतीय संस्कृति सभ्यता के अति समीप लाने मे कोई कठिनाई नहीं आड़े आयेगी।

स्याम देश में आर्य हिन्दू—

स्याम देश की राजधानी बैंकाक है सात करोड़ की आबादी वाले देश में राजधानी में दो करोड़ की जनता बसती है। इसमें २५-३० हजार की संख्या में हिन्दू, सिक्ख है और इसाई मुसलमानों की गिनती इनसे भिन्न है और यह भी अपनी सुरक्षा में काफी सशक्त है।

आज से ७४ वर्ष पूर्व भारत से गये आर्य-हिन्दुओं ने आर्य समाज व विष्णु मन्दिर की स्थापना पास-पास ही की। अपने-अपने प्रचार प्रसार में दोनो ही सफल हैं। एक मन्दिर-देव स्थान-पंजाब से गये भाइयों ने विशाल स्तर पर बनाया है। विष्णु मन्दिर व आर्य समाज की स्थापना में पूर्वी उत्तर के देवरिया, गोरखपुर, बिहार के प्रवासी भाइयों का अच्छा योगदान है।

भारत से समय-समय पर गये विद्वानों का नाम सभी भारतीयों से उठाया श्री महता जैमिनी, पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय, स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती, डा० सत्य प्रकाश व आनन्द स्वामी सरस्वती आदि के अतिरिक्त श्री कुं० जोरावर सिंह जी अपनी धर्म पत्नी श्रीमती प्रभावती के साथ गये और इन सभी का अच्छा धार्मिक-सामाजिक दृष्टि से अच्छा योगदान रहा।

पांच पंचों में—एक मैं भी—

आज के बैंकाक-आर्य समाज की छवि को सुन्दर बनाने में श्री पं० राम पलट पाण्डेय अग्रणी हैं सभी वर्गों में आपकी अपनी पहुंच है। सामंजस्य की भावना से नामधारी सिखो, सनातन धर्मी जैनता से सम्पर्क कर अपनी आवाज उन तक पहुंचाने में सदा ही सचेष्ट रहते हैं। आपसे मेरा सम्पर्क हुआ और आपके निर्देश पर ही मुझे बैंकाक जाने का सुअवसर मिला।

श्री रामपलट पाण्डेय प्रधान आ० स० से फोन पर अविलम्ब पधारने का आदेश-निर्देश ने मुझे अपने भारतीय भाइयो के मध्य पहुंचने का सुअवसर दिया और मैं शिव रात्रि से पूर्व वहां पहुंच गया।

शिव रात्रि पर्व आर्य समाज मन्दिर मे हवन-भजन-व्याख्यान के साथ मनाया गया भारतीय दूतावास के प्रतिनिधि भी हमारे कार्यों में विशेष रुचि लेते हैं। मेरा भाषण आर्य समाज की स्थापना और उसका कार्य व महत्व पर हुआ इसके बाद—

विष्णु मन्दिर मे दो भाषण और देव स्थान में तीन भाषण कराये गये। अपनी बात अपने ढंग से कही, इसका सभी जनता पर अच्छा प्रभाव रहा।

भारतीय पर्वों की अपनी महत्ता है होली का पर्व सभी जन बड़े धूमधाम से मनाते हैं। अब थाई देश के लोग सृष्टि सम्वत बैसाखी पर्व के दिन होली पर्व का रंगारंग कार्यक्रम उत्साह पूर्वक मनाते हैं-सभी विद्वानों के प्रचार की गति में मेरा भी एक नाम जुड़ गया। समय-समय पर विचार हुआ कि अगले ७५ वें वर्ष पर अमृती समारोह धूमधाम से मनाया जाय और इसे प्रचार-प्रसार की दृष्टि से पूर्वी ऐशिया का महत्वपूर्ण आयोजन बनाया जाय। इसकी तयारी में वह तत्पर हो गये हैं।

थाई भाषा में सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद कराकर वितरित किया गया है। पुरोहित की नियुक्ति की हुई है जो परिवारों में जाकर-जनसम्पर्क करते हैं।

समय थोड़ा था फिर मेरे द्वारा विशिष्ट व्यक्तियों, संस्थाओं के अधिकारियों से सम्पर्क कराया गया। महर्षि दयानन्द और उनके कार्य के प्रति लोगों में श्रद्धा है—फिर भी—

इस जन-जागरण के समय में भी जन मानस-बहुत बहका है। धार्मिक ग्रन्थों, महापुरुषों के प्रति आदर भाव भारत की ही भांति लोगों में समाया हुआ है। थोड़े समय में एक मेरे द्वारा वैचारिक क्रान्ति का जो बीजारोपण किया गया है सम्भवत: आने वाला समय अपने कार्य कलापों से प्रकट करेगा। इस प्रकार एक मास वहां की भूमि पर रहकर विचारों का बीज बखेरता रहा।

आर्य गुरुकुल गोष्ठी उत्साह पूर्ण वातावरण में सम्पन्न

हरिद्वार : सार्वदेशिक विद्यार्य सभा द्वारा बुलाई गई दो दिवसीय आर्य गुरुकुल गोष्ठी का आरम्भ रविवार १० अप्रैल को दोपहर तीन बजे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में हुआ। इसमें २६ गुरुकुलों के ४५ प्रतिनिधियों, ८ सार्व० विद्यार्य सभा के सदस्यों, ४ गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के विभागाध्यक्षों के अतिरिक्त गुरुकुल विद्यालय के प्रधानाचार्य ने तथा महा विद्यालय ज्वालापुर के प्रधानाचार्य ने भाग लिया।

गोष्ठी के तीन सत्र थे। प्रथम सत्र के अध्यक्ष पूज्य पाद स्वामी ओमानन्द जी, दूसरे सत्र के डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मंत्री सार्व० आर्य प्रतिनिधि सभा तथा तीसरे सत्र के डा० रामप्रसाद वेदालंकार, प्रो० वाइस चांसलर गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार के डा० धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय तीनों सत्रों में पधारे तथा सम्बोधित किया।

प्रथम सत्र उद्घाटन सत्र था। यह रविवार १० अप्रैल को तीन बजे आरम्भ हुआ और तीन घण्टे तक चला। गोष्ठी के संयोजक प्रिंसिपल जगदेव, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सभा मंत्री डा० धर्मपाल कुलपति तथा पूज्य पाद स्वामी ओमानन्द जी ने उपस्थित प्रतिनिधियों को सम्बोधित किया और गोष्ठी के लिए निर्धारित विषयों पर विधिवत विचार-विमर्श वेद मंत्रों के उच्चारण से हुआ। तीनों सत्रों की चर्चा में लगभग सभी प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा अपने-अपने विचार रखे। सर्वाधिक विचार गुरुकुलों के संगठन तथा गुरुकुलों में प्रचलित पाठ, विधि और पाठ्यक्रम पर हुआ। सभी ने गुरुकुलों के संगठन के महत्व को स्वीकार किया। इस बात में भी सभी एक मत थे कि गुरुकुलों में महर्षि दयानन्द प्रतिपादित पाठ्य विधि को अक्षुण्ण रखते हुए जो गुरुकुल आधुनिक विषयों को पढ़ाना चाहें, वे उसकी व्यवस्था कर सकते हैं पर प्रधानता महर्षिकृत विषयों को दी जाए।

गम्भीर विचार विमर्श के पश्चात् चार प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुए। प्रथम प्रस्ताव में निश्चय हुआ कि सभी गुरुकुलों का एक संगठन बनाया जाए तथा इसके विधान तथा नियमों के लिए एक उपसमिति गठित की गई। जो शीघ्र ही अपना कार्य पूरा करके संस्तुति देगी। इस प्रस्ताव में सभी गुरुकुलों को गुरुकुल संगठन का सदस्य बनने का अनुरोध किया गया। दूसरे प्रस्ताव में निश्चय हुआ कि सभी गुरुकुलो में कम से कम कक्षा आठ तक का पाठ्यक्रम समान हो। कक्षा १ से सभी कक्षाओं तक का पाठ्यक्रम बनाने के लिए भी एक उपसमिति गठित की गई।

तीसरे प्रस्ताव में गुरुकुलों के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए दिए गए सुझावों को यथा समय गुरुकुलों में लागू करने का निश्चय किया गया। चौथे प्रस्ताव में भी गुरुकुलों द्वारा आर्य समाज के प्रचार तथा प्रसार के लिए अच्छे अच्छे सुझाव दिए गए। इनमें गुरुकुलों में क्षेत्रीय भाषाओं के पठन से उस क्षेत्र मे प्रचार की व्यवस्था करने तथा किसी क्षेत्र की आर्य समाजों द्वारा उस क्षेत्र के गुरुकुल को अपनाने के सुझाव मुख्य थे।

इस सभा में गुरुकुल के अन्तिम सत्र में एक बार फिर सभी प्रस्तावो को पढ़ा गया और स्वीकार किया गया। डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के ओजस्वी तथा प्रेरणा पूर्ण वक्तव्य से सभी उपस्थित व्यक्तियों में नई स्फूर्ति का उदय हुआ। डा० धर्मपाल जी कुलपति ने गोष्ठी को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित करने तथा प्रतिनिधियों के गुरुकुल आने के लिए सब का हार्दिक धन्यवाद किया। गोष्ठी के संयोजक ने भी सभी उपस्थित महानुभावो को धन्यवाद करते हुए कहा कि आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद इतने प्रतिनिधियों ने भाग लेकर गोष्ठी के आयोजकों का उत्साह बढ़ाया है। अन्त में डा० राम प्रसाद जी ने प्रेरणापूर्ण शब्दों में आशा व्यक्त की कि इस गोष्ठी से सभी गुरुकुल एक होकर महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करेंगे।

जगदेव संयोजक, आर्य गुरुकुल गोष्ठी

हिन्दुत्व की अवधारणा और आर्य समाज

प्रो० भवानी लाल भारतीय

नवभारत टाइम्स बम्बई के १७ दिसम्बर १९९३ के अंक में श्री सूर्यकान्त बाली का एक लेख "हिन्दुत्व ईसाई और इस्लामी संस्करणों से परे" शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। लेखक ने हिन्दू शब्द की विवेचना से अपने लेख को आरम्भ करते हुए लिखा है कि मात्र दूसरों का दिया होने से ही इस नाम को अस्वीकार करने मे कोई तुक नहीं है। इस कथन की सिद्धि में लेखक ने जो तर्क दिये हैं वे अधिक वजनदार नहीं हैं जबकि वह कहता है कि मो० क० गांधी को महात्मा का नाम तथा वल्लभ भाई पटेल को सरदार के नाम से दूसरों ने ही पुकारा, तो क्या हम गांधी जी को महात्मा और वल्लभभाई को सरदार कह कर न पुकारे। लेखक ने यह ध्यान नहीं दिया कि महात्मा और सरदार तो आदरास्पद उपाधियां हैं जब कि भारत देश के निवासियों को यदि विदेशी आक्रान्ताओं ने हिन्दू कह कर पुकारा तो इसमें उनका उद्देश्य हमारे गौरव को बढ़ाना नहीं था। मैं इस बहस में भी नहीं पड़ना चाहता कि "हिन्दु" शब्द की उत्पत्ति कैसे हुई और किन परिस्थितियों में वह हमारी पहचान का शब्द मिला। तथापि इस सच्चाई को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है कि विगत एक-डेढ़ हजार वर्षों से यह उन भारतवासियों के लिये प्रयुक्त होता रहा है जो मोटे तौर पर वैदिक धर्म या तदन्तर्गत पूजा उपासना की विभिन्न पद्धतियो को मानते थे। किन्तु पुनः ध्यान दिला दूं कि हमारी पहचान या हमे पुकारने के लिये अन्यों ने या स्वयं हमने भी अपने लिये "हिन्दू" शब्द का भले ही प्रयोग किया हो हमारे धार्मिक, सांस्कृतिक और परम्परागत प्रयोगों और अनुष्ठानो मे हमने इस शब्द को कभी स्वीकार नहीं किया। धार्मिक विधियों के आरम्भ में बोले जाने वाले संकल्प में "जम्बू द्वीपे भारत खण्डे आर्यावर्तान्तर्गते अमुक नगरे" आदि शब्द बोल कर हमने भरतखण्ड और आर्य से सम्बद्ध आर्यावर्त को तो स्मरण किया, किसी हिन्दू या हिन्दुस्तान को नहीं।

लेखक स्वयं स्वीकार करता है कि हिन्दुत्व का प्रयोग हाल का है और इसे वर्तमान राजनैतिक दलों ने अपनी पृथक अर्थवत्ता प्रदान की है। हमारे लिये यह भी बहस का कोई मुद्दा नही है, हालांकि यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में भी दक्षिण के तमिलनाडु राज्य के राजनैतिक कर्णधार हिन्दुत्व को गवारा नहीं करेगे, वे अपनी सांस्कृतिक पहचान को हिन्दु या आर्य की अपेक्षा द्रविड़ के रूप में खोजने का अधिक प्रयास करते हैं। यह दूसरी बात है कि गम्भीर विश्लेषण के उपरान्त उत्तर के आर्यों और दक्षिण के इन तथाकथित द्रविड़ों के धर्म, दर्शन, पूजा पद्धति, आराध्य देवों आदि में भी पूर्ण समानता ही मिलेगी। तथापि आसेतु हिमाचल के लोग हिन्दुत्व को अपनी पहचान मानते ही हों, यह अर्घ सत्य ही है।

इस प्रसग मे लेखक ने हिन्दुत्व को जो भारत का स्वाभाविक और अविभाज्य विचार बताया तथा भारत के राष्ट्र जीवन का पर्याय कहा उस पर भी विशेष बहस करने की आवश्यकता नहीं है। किन्तु आपत्ति वहां उठ खड़ी होती है, जब वह इस विवेचना के बीच हिन्दुओं में पैदा हुए कुछ सुधारकों, कुछ विचारकों तथा उनके आन्दोलनो को लेकर नुक्ताचीनी करना आरम्भ करता है। वह इन सुधार आन्दोलनों को इस्लाम और ईसाइयत की प्रभाव छाया मे उत्पन्न मानता है। यहां पर ही लेखक का इतिहास बोध कुंठित हुआ है। यद्यपि उसने इन सुधारकों या उनसे जुड़े आन्दोलनों का स्पष्ट नामोल्लेख यहां पर नहीं किया (आगे चल कर किया भी है) तथापि उसका आशय ब्रह्म-समाज तथा आर्य समाज से ही है, क्योंकि अकेला यह लेखक ही नहीं अनेक अन्य इतिहासज्ञ भी आर्य समाज जैसे सुधारवादी आन्दोलन को इस्लाम की प्रतिक्रिया से उत्पन्न मानते हैं। स्वयं पं० जवाहर लाल नेहरू ने अपने ग्रन्थ भारत की खोज (Discovery of India) मे आर्य समाज के बारे में एक ऐसी ही धारणा प्रकट की है। किन्तु क्या यह विचार सत्य है? क्या जिस समय राम मोहन राय ने १८२८ में ब्रह्म समाज की स्थापना की थी या स्वामी दयानन्द ने १८७५ में आर्य समाज का प्रवर्तन किया था तो इन महापुरुषों का यह कार्य मात्र ईसाइयत अथवा इस्लाम की प्रभाव छाया को लेकर ही हुआ था? हमें इसी विषय पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे विचार करना है।

हमारा निवेदन है कि यदि सुधारक या सुधार माव को ही प्रतिक्रियामूलक कहा जाये और प्रतिक्रियामूलक होने मात्र से ही उस पर आपत्ति की जाये तो लेखक ने इसी विवेचना में अरब में प्रचलित अन्धविश्वासों की प्रतिक्रिया से उत्पन्न इस्लाम, पुनः वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतिक्रिया में जन्मे बौद्ध और जैन धर्म, पुनः बौद्ध अनीश्वरवाद की प्रतिक्रिया में पनपे न्याय वैशेषिक तथा मुसलमानी अत्याचारों के प्रतिकार में उत्पन्न भक्ति आन्दोलनों का औचित्य क्यों स्वीकार किया। यदि समय और परिस्थिति की मांग से उत्पन्न जैन, बौद्ध, शांकर-वेदान्त तथा उदयनाचार्य का न्यायदर्शन अथवा सूर एवं तुलसी, नानक तथा कबीर का भक्तिमार्ग प्रासंगिक था तो लेखक को आधुनिक सुधारकों-विचारकों-संगठनों द्वारा हिन्दुत्व को एक परिष्कृत रूप देने वाले आर्य समाज तथा उसके समानधर्मी आन्दोलनो को लेकर ही क्यों विरक्ति तथा अस्वस्ति बोध है?

यह सत्य है कि हिन्दुत्व (हम इसे भारत के धार्मिक सामाजिक जीवन की सनातन वैदिक धारा कहना अधिक उपयुक्त समझते हैं) में किसी मसीहा या पैगम्बर की वैसी अवधारणा के लिए कोई स्थान नहीं है जो सैमेटिक मजहबों में चलती आ रही है और जो उनकी आस्थाओं का केन्द्र बिन्दु बनी हुई है। ईसाइयत और इस्लाम आदम से लेकर मसीह तथा हजरत मुहम्मद तक पैगम्बरों की अविच्छिन्न शृंखला को स्वीकार करते हैं, जब कि सनातनी हिन्दुओं के अवतार तो साक्षात परमेश्वर ही माने गये हैं।

हमारी आपत्ति यहां से आरम्भ होती है जब लेखक कहता है कि "हिन्दुत्व चूंकि कोई धर्म नहीं, इसलिये इसमें कोई धर्म ग्रन्थ भी नहीं।" "हिन्दुत्व की जो व्याख्या आज की जा रही है वह कोई धर्म है या नहीं, इस विवाद में न पड़ कर हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि मोटे तौर पर जिसे हिन्दुत्व (वही सनातन वैदिक परिपाटी) कहा जाता है वहां भी धर्म ग्रन्थ या धर्म ग्रन्थों की अवधारणा विद्यमान है, किन्तु यह धारणा किसी बाइबिल या कुरान की नकल पर बनाई गई अवधारणा नहीं है। आप कहेंगे आज के हिन्दुओं के लिए तो वेद, उपनिषद, दर्शन, रामायण, महाभारत, गीता यहां तक कि सत्यनारायण की कथा और हनुमान चालीसा तक के सभी ग्रन्थ धर्म ग्रन्थों की श्रेणी में आते हैं, ये सभी उनके लिए पूज्य तथा मान्य हैं। मैं यह स्वीकार करता हूं किन्तु मेरा निवेदन यह है कि अपनी-अपनी साम्प्रदायिक निष्ठा अथवा विश्वास के कारण आज के हिन्दू चाहे भिन्न-भिन्न ग्रन्थों में अपनी श्रद्धा व्यक्त करें किन्तु उन सभी में मोटे तौर पर यह सहमति पाई जाती है कि वैदिक सनातन मतो में वेद ही सर्वोपरि मान्य तथा प्रामाणिक ग्रन्थ हैं। इन्हें उदाहरण देकर इस प्रकार सिद्ध किया जा सकता है। एक अद्वैतवादी दार्शनिक मनीषी उपनिषद्, वेदान्त सूत्र तथा भगवद्गीता को प्रस्थानत्रयी का नाम देकर उन्हें परम प्रामाणिक मानता है, किन्तु उसके लिये ये ग्रन्थ भी प्रामाण्य इसीलिये हैं, क्योंकि ये वेदानुकूल हैं। इसी प्रकार एक वैष्णव-भगवद गीता, भागवत पुराण, विष्णु पुराण आदि ग्रंथों को पूज्य एवं आदरास्पद मानता है, किन्तु उसका यही मानना है कि ये तीनों ग्रन्थ वेदानुकूल हैं और इनमें व्यक्त विचार वेदानुमोदित हैं। यही बात अन्य शैव, शाक्त, सौर, गाणपत्य, यहां तक कि वैदिक परम्परा से भिन्न तान्त्रिक परम्परा के लिये भी कही जा सकती है। इतना ही नहीं नानक, कबीर, दादू, रैदास आदि सन्त महात्मा जिन्होने शायद वेदो का कभी अध्ययन भी न किया हो, वे भी वेदों की प्रशंसा ही करते हैं। हां इतना अवश्य कह देते हैं कि वेदादि मिथ्या नहीं है, मिथ्या वह है जो उनका सम्यक विचार नहीं करता। वेद कतेब नहीं है झूठे, झूठा जो न विचारे।

(क्रमश)

आवश्यकता है

दयानन्द महाविद्यालय अजमेर में दयानन्द अनुसंधान पीठ के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति हेतु प्रोफेसर ग्रेड ४५००--७३०० में प्रारम्भिक वेतन रु० ७८१५)०० पर दस वर्ष के स्नातकोत्तर अध्यापन के अनुभवी तथा ऋषि दयानन्द के जीवन तथा शिक्षाओं के ज्ञाता की आवश्यकता है जो संस्कृत/हिन्दी में एम० ए० (कम से ५५ प्रतिशत प्राप्तांक तथा पी०एच०डी० हों तथा अनुसंधान छात्रों के मार्गदर्शक रहे हों। आयु ५५ वर्ष से अधिक न हो॥ इच्छुक महानुभाव अपना प्रार्थना पत्र पूर्ण विवरण व बायोडेटा के साथ--प्रधान--सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली के पते पर भेजें।

मन्त्री-सभा

नव सम्वतसर [नव वर्ष]

डा० जयसिंह सरोज काशीपुर (नैनीताल)

चैत्र सुदि प्रतिपदा अर्थात ११ अप्रैल को विश्व नये वर्ष मे प्रवेश कर चुका है परन्तु खेद है कि हमारी पुरानी एव नयी सतति अज्ञानता एव अनभिज्ञता के कारण एक जनवरी को ही नव वर्ष का प्रारम्भिक दिन मानने तथा इष्ट मित्रो, सगे सम्बन्धियों, अपने से उच्च पदो पर पदासीन अधिकारियो को हजारो रुपये के रग बिरगे शुभ कामना कार्ड प्रेषित करने की प्रथा का प्रचलन हमारे भारतीय समाज मे दिनो दिन बढ़ता ही जा रहा है।

एक जनवरी को नव वर्ष दिन स्थापित कराने मे आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा हमारे राष्ट्रीय नेताओ का विशेष योगदान मिल रहा है। ३१ दिसम्बर को रात्रि को "नव वर्ष मानकर दूरदर्शन का विशेष कार्यक्रम आयोजन, एक जनवरी को आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के हर कार्यक्रम से पूर्व नव वर्ष की शुभ कामनायें शब्दो की पुनरावृत्ति तथा इन प्रचार माध्यमो एव समाचार पत्रो के माध्यम से राष्ट्र नेताओ को शुभ कामना सन्देश के उद्घोषण एव प्रसारण से विदित होता है आज भी भारतीय जन आग्ल सस्कृति की मानसिक दासता से ग्रसित है। इन प्राचीन परम्पराओं का परित्याग करने की मनोवृत्ति से ऐसा लगने लगा है कि हमारे राष्ट्रीय नेता एव राष्ट्र के प्रचार माध्यम लार्ड मैकाले के स्वप्न को साकार करने के प्रति कृत सकल्पित है। लार्ड मैकाले ने अपने पिता को लिखा था कि "मैं इन काले भारतीयों की चमड़ी को तो गोरा नहीं कर सकता परन्तु शिक्षा के माध्यम से यह अवश्य गोरे (आग्ल सस्कृति वाले) बन जायेंगे।

कितनी विडम्बना है कि हम लोग सम्वतसर का छोड़कर एक जनवरी को वर्ष का प्रारम्भ मानने की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। ईस्वी सन् मूल रोमन सम्वत है। ईस्वी सन् की गणना ईसा मसीह के जन्म से ३ वर्ष बाद से की जाती है। रोमन सम्राट जूलियस सीजर ने ३६० दिन के बदले ३६५-१/४ दिन का वर्ष प्रचलित किया। छटी शताब्दी मे डायोनिसियस ने इस सन् में पुन सशोधन किया किन्तु फिर भी प्रति वर्ष २७ पल ५५ विपल का अन्तर पड़ता ही रहा। सन् १७२९ मे यह अन्तर बढते बढते ११ दिन का हो गया तब पोप ग्रेगरी ने आज्ञा प्रसारित कि इस वर्ष २ सितम्बर के पश्चात ३ सितम्बर को १४ सितम्बर कहा जाय। जो ईस्वी सन ४ सख्या से विभाजित हो जाय उसका फरवरी मास २९ दिन का हो तथा वर्ष का प्रारम्भ २५ के स्थान पर एक जनवरी से माना जाय। इटली डेन-मार्क होलेण्ड ने इसे स्वीकार कर लिया परन्तु स्विटजरलैण्ड ने सन १७५९ इग्लैण्ड और रूस ने सन् १८०१ मे इसे स्वीकार किया। इस प्रकार सन् १७२९ के बाद से एक जनवरी से वर्ष का प्रचलन चल पड़ा। फिर भी लोग नव वर्ष अप्रैल मे मनाते रहे। इसकारण एक अप्रैल को बेवकूफो का दिन कहा गया। आज भी लोग इस दिन एक दूसरे को बेवकूफ बनाने का यत्न करते हैं। इन सब सशोधन के उपरान्त भी ईस्वी सन् मे सूर्य की गति मे प्रतिवर्ष एक पल का अन्तर आता है। ३६०० वर्ष मे यह अन्तर एक दिन हो जायेगा। गणित की दृष्टि से भी यह वर्ष उचित नहीं है फिर क्या यह चिंतनीय एव विचारणीय विषय नही है कि इस सबके होते भी हम क्यो अग्रेजो के दत्तक बन होते जा रहे है। दिसम्बर शब्द से बोध होता है कि दसवा माह अर्थात आग्ल वर्ष में पहले दस मास ही थे। जनवरी, फरवरी को बाद मे जोड़ा गया।

काल गणना का प्रचलन अति प्राचीन काल से ही होता आया है। समस्त सस्कारो तथा धार्मिक कृत्यो, यज्ञादि मे पुरोहित यजमान से ऋत्विक वरण के समय संकल्प कराते समय सृष्टि सम्वत्, विक्रम सम्वत् अयन ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार तथा नक्षत्र बुलवाता है। काल गणना मे कल्प, मनवन्तर युगादि के पश्चात् सम्वतसर आता है। सम्वत् अनेक राजाओ तथा सम्प्रदाय के आचार्यों के नाम पर भी चलाये गये हैं। भारत मे १६ प्रकार के सम्वतो का प्रचलन है कल्याब्द (१९७२९४९०९५ वर्ष), सृष्टि सम्वत (१९६५८८२०९५ वर्ष), वामन् सम्वत् (१९६०८८१०९५ वर्ष), श्रीराम सम्वत् (१२५६९१९५ वर्ष), श्री श्रीकृष्ण सम्वत् (५२२३ वर्ष) युधिष्ठर सम्वत् (५१०० वर्ष), महात्मा बुद्ध सम्वत् (२५७३ वर्ष) महावीर स्वामी जैन सम्वत् (२५२१ वर्ष), श्री शकराचार्य सम्वत् (२२७१ वर्ष), विक्रम सम्वत् (२०५१ वर्ष), शालिवाहन सम्वत् (१९१६ वर्ष), कलचुरी सम्वत् (१७४९ वर्ष), वल्लभी सम्वत् (१६७७ वर्ष), फसली सम्वत् (१४१७ वर्ष), बगला सम्वत् (१४११ वर्ष) तथा हर्षाब्द सम्वत् (१३९० वर्ष)।

भारतीय सम्वत् की तरह ही विदेशो में विदेशीय सम्वत् भी प्रचलन में है—चीनी सम्वत् (९६०२२९५ वर्ष), खताई सम्वत् (८८८३८३९८ वर्ष), फारसी सम्वत् (१८९९९५० वर्ष), मिश्री सम्वत् (२७६५० वर्ष), तुर्की सम्वत् (७६०४ वर्ष), आदम सम्वत (७३४ वर्ष), ईरानी सम्वत् (५९९२ वर्ष), यहूदी सम्वत् (५७५८ वर्ष), इब्राहीम सम्वत् (४४३६ वर्ष), मूसा सम्वत् (३७०४ वर्ष), यूनानी सम्वत् (३५७० वर्ष), रोमन सम्वत् (२७४८ वर्ष), ब्रह्मा सम्वत् (२५३८ वर्ष), मलयकेतु सम्वत् (२३०१ वर्ष), पार्थियन सम्वत् (२२४४ वर्ष), ईस्वी सम्वत् (१९९४ वर्ष), जावा सम्वत् (१८८३ वर्ष), हिजरी सम्वत् (१४१६ वर्ष)।

इन सम्वत् विवरणो के अवलोकन से स्पष्ट है कि भारतीय सम्वत् अति प्राचीन है तथा गणित की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण उपयोगी एव सुगम है। यो तो वर्ष चार प्रकार के होते हैं—चान्द्र वर्ष, सौर वर्ष नाक्षत्र वर्ष तथा सायन या सम्पात वर्ष। १२ अमावस्याओं या पूर्णिमाओ का चान्द्र वर्ष होता है। सूर्य उदय से दूसरे दिन सूर्य उदय तक के काल को एक 'सौर दिन कहते हैं और ऐसे ३६० दिन का एक सौर वर्ष होता है। किसी एक नक्षत्र से सूर्य चलकर फिर उसी नक्षत्र पर होता है उसे नाक्षत्र वर्ष कहते हैं। बसन्त ऋतु से बसन्त ऋतु तक के समय को सम्पात या सायन वर्ष कहते हैं। सायन वर्ष नाक्षत्र वर्ष से २०.४ मिनट छोटा होता। अतएव सायन वर्ष प्रत्येक दो सहस्त्र वर्ष में एक माह पीछे खिसक जाता है। पृथ्वी का स्थान से चलकर उसी स्थान मे आने का जो समय है वही सच्चा वर्ष है। उसी को सायन वर्ष कहते हैं। जहा से प्रकृति देवी प्रफुल्लित हो उठे और जहा से वृक्षावली में नूतनता आरम्भ हो वहीं से वर्षारम्भ माना जाय। यह बसन्त से आरम्भ होता है। कहा है "मुख वा एतत ऋतूना यद्वसन्त" अर्थात बसन्त ही सब ऋतुओ का मुख है।

विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदानुसार "मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृत (यजु १३/२५) अर्थात मधु (मधुर सुगन्ध युक्त) माधव (मधुर गुणो से युक्त) क्रमश बसन्त ऋतु के प्रथम द्वितीय मास का नाम रखा गया। ज्योतिष विद्या के विकास के साथ ही समय काल की गणना चान्द्र गणना के प्रचलित होने पर मासो के मधु माधव आदि वैदिक नाम बदलकर चैत्र, वैशाख, आदि नाम रखे गये। महामुनि पाणिनी ने अपनी प्रसिद्ध अष्टाध्यायी व्याकरण मे प्रथमा समर्थास्योपमासी विशेष वाचिन सख्यात अस्मिन्निति सप्तम्यों यथा विहित प्रत्ययो भवति' अर्थात जिस पूर्णिमा को जो नक्षत्र होगा उसी नाम की पूर्णिमा कहलायेगी तथा मास का नाम भी उसी नक्षत्र पर होगा यथा चित्र नक्षत्र युक्त पूर्णमासी चैत्री तथा मास चैत्र मास होगा।

ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रन्थ के अनुसार सृष्टि का प्रारम्भ चैत्र सुदी प्रतिपदा को हुआ—

> चैत्रे मास जगद ब्रह्मा ससज प्रथमे अहनि।
> शुक्ल पक्ष समग्रन्तु तथा सूर्योदये सति।

अर्थात चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत की रचना की। इसी प्रकार प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य भास्कराचार्य कृत सिद्धान्त शिरोमणि' मे आया है।

> लङ्का नगर्यामुदयाच्च भानोस्तस्यैव वारे प्रथम बभूव।
> मधो सितादेर्दिन मास वर्ष युगादिकाना युग पत्प्रवृत्ति॥

अर्थात लङ्का नगर सूर्य उदित होने पर उसी के वार अर्थात आदित्यवार मे चैत्र मास शुक्ल पक्ष के आरम्भ मे दिन मास वर्ष युग आदि एक साथ आरम्भ हुए। ब्रह्मादिन सृष्टि सम्वत वैवस्वतादिमन्वन्तरारम्भ, सत युगादि आरम्भ वर्ष चैत्र सुदि प्रतिपदा को ही आरम्भ होता है।

नव सम्वतसर अर्थात नव वर्ष को नव सम्वतरोत्सव या सम्वत सृष्टि के रूप मे उत्साह पूर्वक मनाने तथा इस पावन दिवस के शुभ आगमन पर शुभ कामनायें देने की प्रथा हमारे यहा आदि काल से प्रचलित रही हैं। यजुर्वेद का मन्त्र इसका प्रमाण है—॥ यजु० २६/१४

((शेष पृष्ठ ८ पर)

शानदार शतक

श्री पी० के० दवे, उपराज्यपाल एव मन्त्रिमडल

दिल्ली सरकार के सौ दिन

जो कहा सो किया

सौ नई योजनायें

१०० प्रतिशत वायदे पूरे होंगे

श्री मदन लाल खुराना (मुख्यमन्त्री)

एक स्वप्न... महान भारत देश की महान राजधानी,
"दिल्ली विश्व की सुन्दरतम राजधानी"

इसे यथार्थ में परिणित करने की प्रक्रिया प्रारम्भ। अभी तो केवल १०० दिन ही हुए हैं–
माग बहुत लम्बा औ ठिन है, यह तो केवल श्रीगणेश है।
दिल्ली के समग्र विकास क लिए जो आदर्श सजोया है, जो योजनायें बनायी हैं,
उनको आपक साथ मिलकर पूरा करना है।

सामाजिक न्याय की हमारी परिकल्पना है, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा दिखाया गया मार्ग—

अन्तिम व्यक्ति का उत्थान

इसके लिए आपका सहयोग अपेक्षित है....ताकि कोई कसर न रह जाये और आप भी गर्व से कह सकें कि

हमारी सरकार ने जो कहा सो किया

श्री साहिब सिंह वर्मा
(विकास मंत्री)

श्री सुरेन्द्र पाल रातावाल
(कल्याण मंत्री)

डा० हर्षवर्धन
(स्वास्थ्य मंत्री)

—दिल्ली को सुन्दर बनाने के लिए १० दिसम्बर से १५ जनवरी, १९९४ तक 'राजधानी सौन्दर्यकरण' अभियान का पहला चरण सम्पन्न।

—प्रत्येक विधान सभा क्षेत्र में सड़कों, पथ/प्रकाश, पार्क आदि के सुधार के लिए एक करोड़ रुपए की धन राशि का प्रावधान।

— मैसूर के वृन्दावन उद्यान की तरह दिल्ली में १० संगीत उद्यानों के विकास की योजना।

— यमुना पर "हर की पौड़ी" के समान घाटों का निर्माण।

—बिक्री कर छूट सीमा निर्माताओं के लिए ३० से बढ़ाकर एक लाख तथा व्यापारियों के लिए १ लाख से बढ़ाकर २ ५ लाख रु० तथा कर ढांचे के सरलीकरण के लिए डा० राजा चलैया समिति का गठन।

सम्पत्ति कर में काफी राहत। कर ढांचे का सरलीकरण।

—६०० अनाधिकृत कालोनियों को नियमित करने की प्रक्रिया प्रारम्भ।

—सभी नियमति की जाने वाली कालोनियों को पानी तथा बिजली की सुविधा।

—"यमुना पार विकास बोर्ड' की स्थापना।

—विधान सभा का सत्रारम्भ तथा प्रत्येक स्कूल की प्रात कालीन सभा में राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' अनिवार्य।

—सांसद विजय कुमार मल्होत्रा की अध्यक्षता में समग्र विकास के पर्यवेक्षण हेतु २१ सदस्यीय समिति का गठन।

—३० ६ ८९ से बढ़ाकर ३१ १२ ९३ तक की औद्योगिक तथा व्यापारिक यूनिटों का तदर्थ पंजीकरण।

—प्रदूषण रहित औद्योगिक तथा व्यापारिक इकाइयों के लिए सीमा से अधिक बिजली भार की स्वीकृति गैर औद्योगिक क्षेत्रों में ३० कि वाट और औद्योगिक क्षेत्रों में १०० कि वाट तक।

—सन् १९९७ तक दिल्ली में पूर्ण साक्षरता।

—सभी अनुसूचित रोजगारों में वेतनवृद्धि। न्यूनतम कामगार वेतन ५३ १५ रु०, अर्द्ध-कुशल श्रमिक का वेतन ५९ ५० रु० तथा कुशल श्रमिक का वेतन ६९ ४५ रु० प्रतिदिन।

—पर्याप्त जल आपूर्ति का प्रबन्ध।

—राशनकार्ड प्राप्त करने की पद्धति का सरलीकरण। गृहविहीन पटरीदारों को भी अस्थायी राशन कार्ड उपलब्ध।

— दैनिक तथा एक अंकीय लाटरियां बन्द करने की प्रक्रिया प्रारम्भ।

—स्वास्थ्य सेवाओं की कार्य प्रणाली में सुधार हेतु अस्पताल सलाहकार समिति, राज्य औषधि प्राधिकरण तथा राज्य स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो का गठन।

—दिल्ली आयुर्वेद निदेशालय, आयुर्वेद मेडिकल कालेज, केन्द्रीय औषधि भंडार की स्थापना १९ कालोनी अस्पतालों का सुधार। जहां नहीं हैं वहां औषधालय।

विद्युत शुल्क सरचार्ज दर में कमी एवं सरलीकरण।

— झुग्गी झोपड़ियों में दो पाइंट बिजली।

—देहाती क्षेत्र के विकास के लिए 'मिनी मास्टर प्लान'।

—गावों में ट्यूबवैल कनेक्शन प्राप्त करने की प्रक्रिया का सरलीकरण एवं उदारीकरण।

- तीन नए डिग्री कालेज।

—तम्बुओं में चल रहे स्कूलों के लिए पक्के/अधपक्के स्कूल भवन।

—दिल्ली महिला आयोग की स्थापना।

- तीन कामकाजी महिला होस्टल। एक यमुना पार क्षेत्र में।

—एक नया आई टी आई, दो पोलीटैकनीक, एक महिला पोलीटैकनीक।

—१०० नए व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

प्रो० जगदीश मुखी
(वित्त मंत्री)

श्री हरशरण सिंह बल्ली
(उद्योग मंत्री)

श्री लाल बिहारी तिवारी
(खाद्य मंत्री)

नव सम्वतसर

(पृष्ठ ५ का शेष)

हे विद्वान आपके सत्कारादि व्यवहारादि को वसन्तादि ऋतु विस्तृत करें। आपके होमने योग्य वस्तु की कार्तिक मास रक्षा करें। आपके अन्न को हमारा वर्ष पुष्ट करें। हमारी प्रजा की सब ओर से आप रक्षा करें। युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन्हीं वैदिक मान्यताओं की पुर्नस्थापना हित नव वर्ष के प्रारम्भिक दिन अर्थात चैत्र सुदी प्रतिपदा को ही बम्बई मे आर्य समाज की स्थापना की।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट हो गया कि नव वर्ष का शुभारम्भ एक जनवरी न होकर चैत्र सुदि प्रतिपदा है। यही कारण है कि हमारा वित्तीय वर्ष भी लगभग इसी समय से प्रारम्भ होता है। अतः हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम इसी चैत्र सुदी प्रतिपदा के दिन अपने परिचितो, अपरचितो, इष्ट मित्रों परिवार जनो, सगे सम्बन्धियो को स्वास्थ्य, सुख, समृद्धि, सफलता, दीर्घ आयुष्य, अभ्युदय एवं निःश्रेयस यश कीर्ति युक्त शुभ एवं मंगलमयी कामनायें देवें। तथा शुभ कार्ड भेजें। इस संकल्प से ही हमारी प्राचीनतम् संस्कृति की मान्यताओं की पुर्नस्थापना हो सकेगी। भारतीय सरकार को भी चाहिए कि वह भारत का राष्ट्रीय सम्वत् सृष्टि सम्वत् या विक्रम सम्वत को स्वीकार करें जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही है तथा जिसमें आज तक न कोई अन्तर पड़ा है और न भविष्य मे पड़ने की सम्भावना है। उज्जैन के समय से दिन का निर्धारण हो तथा घंटा मिनट सैकिण्ड के स्थान पर होरा, विहोरा प्रतिहोरा शब्दों का प्रचलन प्रारम्भ कराये। ईश्वर हमें सद्बुद्धि दे।

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें—

सुखद सरस सम्पन्न, आपको नया वर्ष हो।
पग पग पर उत्कर्ष, सफलता तथा हर्ष हो॥

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजी जा रही है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आपसी बैर वितण्डों को करो रोक थाम

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्ली-सभा)

आपसी बैर वितण्डों को करो रोक थाम
बड़ी जिम्मेदारी है मिलकर निभाओ।
बेसुरे तार वीणा के इनको मिलाओ॥
बजे चैन की बांसुरी आठों याम-आपसी बैर…
पतन और उत्थान का ध्यान दीजे।
स्वर्ग की बहारों का आनन्द लीजे॥
मिलना मिलाना ही है सुखधाम-आपसी बैर वितण्डों…
बीती सो बीती उसे भूल जाओ।
झगड़े की मिल करके होली जलाओ॥
मन मे मैल भरा निकालो तमाम आपसी…
देश काल की तरफ भी निहारो।
संगठन-सूक्त मन्त्रों को उचारो॥
हो वातावरण शुद्ध पाओ आराम—आपसी……
नहीं पुरुषार्थ से मुख को मोड़ो :
कपट द्वेष का भीगा वस्त्र निचोड़ो।
करो यज्ञ सध्या जपो ओ३म् नाम।
आपसी बैर वितण्डों की करो रोक थाम॥

आवश्यकता है

एक ट्रस्ट को हिन्दू धर्म का प्रसार करने के लिये लगन से कार्य करने वाले आयु लगभग ४० वर्ष, आर्य समाज के साहित्य पर श्रद्धा रखने वाले जिसने अंग्रेजी माध्यम से बी०ए० पास किया हो ऐसे आकर्षक व्यक्तित्व के युवक की आवश्यकता है। मासिक मानदेय ढ़ाई हजार रुपये या योग्यतानुसार अधिक। आवदेक की दिल्ली में रहने की अपनी व्यवस्था होनी चाहिये। सम्पर्क निम्न पते पर करें।

गंगादेव शर्मा
सी० ११९ सरोजनी नगर
नई दिल्ली-२३

राम नवमी पर विशेष—

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

उत्तम चन्द्र 'शरर'

राम नवमी भारत के उस महापुरुष की स्मृति को पुन ताजा कर पाई है, जो अपने वेदानुकूल आचरण से पुरुषोत्तम की पदवी को प्राप्त कर पाये। सत्य तो यह है कि वेद प्रतिपादित रेखाओ मे जीवन का रग भरकर ससार के सम्मुख श्रीराम ने अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। श्री राम हर दृष्टि से पुरुषोत्तम है। महाकवि तुलसीदास ने उनकी अनुपम विशेषताओ को देखकर उन्हें नर से नारायण बना दिया। कवि की भावनाओ का आवेग यदि इससे आगे जाने की क्षमता रखता तो वे वहा तक भी पहुचते। मैं श्री राम की अनुपम महत्ता के सम्मुख नमन करता हुआ भी उन्हें नर मानने के लिए विवश हू क्योकि यदि उन्हें नारायण मान लू तो उनके सारे गुण अपनी महत्ता को खो देते हैं। एक मनुष्य यदि अकेला हो कर भी एक शक्तिशाली सम्राट को परास्त करे तो यह उसकी महत्ता है। भगवान् यदि किसी सम्राट को धराशायी कर दें तो कौन सी बात हो गई। वह तो क्षण भर मे ससार को धूलि धूसरित कर सकता है?

श्री राम की सबसे बड़ी विशेषता है उनका शील! वे पितृभक्त हैं, अपने पिता के आदेश को सुनकर वे राज्य को ठोकर मार सकते हैं और १४ वर्ष के वनवास को स्वीकार कर लेते हैं। परन्तु राम की महत्ता कुछ और भी है, वे केवल वनवास को स्वीकार ही नहीं करते प्रसन्नवदन स्वीकार करते हैं। बाल्मीकि के शब्दो में—

'आहूतस्याभिषेकाय, विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षित तस्य स्वल्पमपि आकार विभ्रम ।।

राम केवल पिता की आज्ञा का पालन ही नहीं करते, वनवास का आदेश सुनाने वाली कैकेयी का भी पूरा सम्मान करते हैं। जब कैकेयी, चित्रकूट पर्वत पर उन्हें वापस लौटने को कहती है और अपने कृत्य पर पश्चाताप करती कहती है—

युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी,
रघुकुल मे भी थी एक अभागी रानी।

तब विह्वल होकर राम कहते हैं कि माता! तेरे उपकारो को तो मैं भूल नहीं सकता। पूछने पर कवि के शब्दो मे कहते हैं 'सौ बार धन्य वह एक लाल की माई, जिस जननी ने दिया है भरत सा भाई।" श्री राम का भ्रातृ-

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्यसमाज अमेरिका का निर्वाचन

आर्यसमाज अमेरिका का वार्षिक चुनाव रविवार दिनाक २९ जनवरी १९९४ को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अन्तरग सभा के लिये नये सदस्यो का चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान मणिलाल सुबिक
उपप्रधान त्रिभवन साधु
सभामन्त्री पद्मा नन्दकुमार
सहायक-मन्त्री। श्यामकुमारीसिंह
कोषाध्यक्ष देवनाथ सिंह
सहायक कोषाध्यक्ष विष्णु मगरू
समिति के सदस्य रिदोई
लक्ष्मीदत्त फूलमती
सुखनन्दन रमेश सुबिक

हस्ताक्षर पद्मा नन्दकुमार
सभा-मन्त्री, आर्यसमाज अमेरिका
११ १७१०१एवेन्यू रिचमन्ड हिल
न्यूयार्क-११४१९ (अमेरिका)

आवश्यकता

अवैतनिक रूप मे एक रिटायर्ड शिक्षक/रि० प्रिन्सिपल की आवश्यकता है आर्यसमाज वार्जे मालवाडी पूना (महाराष्ट्र) द्वारा खोले जा रहे माडल स्कूल के लिए। प्रार्थी सेवा भावना से विद्यालय को चलाने मे पूर्ण सहयोग करने मे दक्ष हो। कृपया सम्पर्क करें—ले० कर्नल (रिटायर्ड) एस० एन० बक्शी, आर्य समाज वार्जे मालवाडी पुणे—४११०२१

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

(पृष्ठ ९ का शेष)

प्रेम भी अनुपम है। भरत के अनुनय विनय पर भी वे राज्य को स्वीकार नहीं करते और अन्त मे १४ वर्ष तक न राम राज्य करते हैं और न भरत, अपितु राम के खड़ाऊ राज्य करते हैं। विश्व-भर मे इस अनुपम भ्रातृ प्रेम की मिसाल नहीं मिल सकती।

राम का पत्नीव्रत धर्म भी अनुपम है। कहते हैं सीता हरण के पश्चात् रावण ने एक बार कुम्भकरण से पूछा कि सीता किसी प्रकार रावण को स्वीकार कर ले, ऐसा उपाय बताया जाये। कुम्भकरण ने कहा कि यह तो सरल मार्ग है। सीता श्री राम को चाहती है और तुम बहुरूपिये हो, राम का रूप बनाओ और सीता के पास जाओ मार्ग प्रशस्त है रावण ने उत्तर दिया कि मेरी समस्या यह है कि जब जब भी मैं राम का रूप बनाता हू "माता सी दीखत नार पराई" यह राम का चरित्र है जिसकी शत्रु भी प्रशंसा करता है। लक्ष्मण का किष्किन्धा पर्वत पर कहा यह श्लोक तो तत्कालीन संस्कृति की महत्ता का द्योतक है जब उसने आभूषणों को देखकर कहा—

केयूरे नैव जानामि नैव जानामि कुण्डले
नूपरे तु अहं जानामि नित्यं पादाभिवन्दनात् ।'

किस किस रूप को देखें मेरा, राम शत्रु से भी शील का व्यवहार करने में पीछे नहीं। उनका कथन है "मरणान्तानि वैराणि" रावण के जीवन मे भी सन्धि का पूरा प्रयास करते हैं और रावण की मृत्यु के पश्चात् भी सम्मानपूर्वक उसका संस्कार करते हैं।

श्री राम केवल माता पिता तथा भाइयों के लिए आदर और स्नेह के भाजन नहीं, वे प्रजावत्सल भी हैं। अपनी प्रजा के सुख के लिए अपना सर्वस्व लगा सकते हैं। यही कारण है कि राष्ट्र पिता गांधी जी भी स्वराज्य को राम राज्य के रूप में देखना चाहते थे। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है 'जासु राज प्रजा दुखियारी, सो राजा नरक अधिकारी।'

रामनवमी के पावन पर्व पर हम आत्म निरीक्षण करें, राजा भी तथा प्रजा भी, श्री राम का अनुकरण करें और एक बार पुन राम राज्य लाकर न केवल गांधी जी के स्वप्न को पूरा करें अपितु भारत को जगत् गुरु बनने का गौरव प्रदान कर सकें।

सख्ती से कश्मीर समस्या का समाधान

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रार्थना है कि अब वह अप्रिय घटनाओ को भूल जाए। मुख्य मन्त्री ने उत्तेजित होते हुए कहा कि मुझे सबसे ज्यादा दुख इस बात का था कि मासूम लोगो की हत्या करने वाले स्वय को गुरु ग्रन्थ सिंह कहा करते थे जबकि पंच प्यारे अन्याय के खिलाफ लड़े थे न कि अन्याय के पक्ष मे।

इकबाल के शेर से अपने भाषण की शुरुआत करते हुए जगमोहन ने कहा कि हमारी अस्मिता कभी समाप्त नही हो सकती चूकि जब कभी हमारे समाज पर सकट के क्षण आए कोई न कोई महापुरुष अवश्य पैदा हुआ है। महात्मा हसराज ऐसे ही युगदृष्टा थे। उन्होने जिस शिक्षा व्यवस्था की नीव रखी वह मूल्यो पर आधारित है। ये मूल्य हमारी परम्परा व सस्कृति से बधें हैं।

विशिष्ट अतिथि के रूप मे बोलते हुए विदेश राज्य मन्त्री आर० एल० भाटिया ने कहा कि सस्थान को व्यावसायिक शिक्षा की ओर भी ध्यान देना चाहिए। उन्होने कहा कि उपग्रह चैनलो के माध्यम से आज पश्चिम से जो कुछ हमे दिखाया जा रहा है वह हमारी सस्कृति के लिए एक बड़ा खतरा है। इससे निपटने के लिए हमे कोशिश करनी चाहिए।

महात्मा हसराज के जीवन पर सटीक व सारगर्भित टिप्पणी करते हुए दि वि वि के डा वाचस्पति उपाध्याय ने कहा कि महात्मा जी ने राष्ट्रभाषा व लोकसभा के मुद्दे को लेकर समाज मे शिक्षित व अशिक्षित में व्याप्त भेद को मिटाने का कार्य किया। उन्होने सस्कृत भाषा के माध्यम से समाज को आध्यात्मिक व भौतिक ज्ञान प्रदान करने का कार्य भी किया।

इसके अतिरिक्त लगभग ८९ वर्षीय छात्र ने भी महात्मा हसराज के जीवन पर प्रकाश डाला। कुलाची हसराज माडल विद्यालय के विद्यार्थियो ने एक नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत की।

इस अवसर पर डी ए वी शिक्षा सस्थान व आर्य प्रतिनिधि सभा के अग्रणी लोगों को सम्मानित किया गया। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र की १० महिलाओ को सिलाई मशीनें भी वितरित की गई।

सौम्य वातावरण में सपन्न समारोह को डा सर्वदानन्द प्रादेशिक सभा के प्रधान दरबारी लाल तथा रामनाथ सहगल ने भी सबोधित किया।

पद्मपुर नगर मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

उड़ीसा प्रान्त सबलपुर जिल्ला अन्तर्गत पद्मपुर नगर पौराणिको का एक गढ़ है। बहुत दिनो से आचार्य श्री विश्वामित्र जी यहा वैदिक धर्म प्रचारार्थ प्रयत्न कर रहे थे। अब उनका प्रयास सफल हुआ।

गत ६ अप्रैल से १० तारीख तक पचदिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आचार्य श्री के० ब्रह्मत्व मे महा समारोह सपन्न हुआ। बहुसख्यक आबालवृद्ध नरनारी उक्त यज्ञ मे पूज्य आचार्य जी के वेद प्रवचन सुनते रहे। अनेक शिक्षित व्यक्ति प्रभावित होकर पूर्णाहुति के अवसर पर मास मछली, बीड़ी, तम्बाकू त्याग करने की प्रतिज्ञा के साथ आहुति दी।

करमचाद मेहेर मन्त्री
वेद प्रकाशन समिति पद्मपुर

आर्य समाज स्थापना दिवस

बागपत ११ अप्रैल ९४ आर्य समाज बागपत द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस व नव सम्वत्-सर पर मा० सत्य प्रकाश गौड़ के पौरोहित्य मे विशेष यज्ञ किया गया। यज्ञोपरान्त राकेश मोहन व हरिहर स्नेही ने आर्य समाज के कार्यो व महर्षि दयानन्द की महत्ता पर प्रकाश डाला। प्रधान जय प्रकाश वर्मा ने नव वर्ष की शुभकामनाए प्रेषित की। इस अवसर पर प्राइमरी व जूनियर स्तर के छात्रो ने आर्य प्रतियोगिता मे भाग लेकर महर्षि दयानन्द व आर्य समाज का यशोगान किया।

सत्य प्रकाश गौड़
मन्त्री

शहीद-परिवार-फंड वितरण समारोह

९५ परिवारों को ९ लाख ५० हजार रुपये वितरित

हिन्द समाचार पत्र सघ द्वारा सचालित शहीद-परिवार फड का ६४वा सहायता वितरण समारोह दिनाक १० अप्रैल १९९४ को जालधर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आतकवाद से पीड़ित ९५ परिवारो को ९ लाख ५० हजार रुपये यू टी ई बान्ड्स के रूप मे वितरित किये गये। इस समय तक ३ ८९,७१ २१२ रुपये की राशि ३५१४ परिवारों मे वितरित की जा चुकी है।

समारोह की अध्यक्षता हिन्दुस्तान टाइम्स' के सम्पादक श्री एच के दुआ ने की। तथा लेफ्टी कर्नल एस के सिन्हा (अवकाश प्राप्त) समारोह के मुख्य अतिथि थे।

सम्पादक

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज टमकौर का ८२वां वार्षिकोत्सव २३ से २५ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विशाल यज्ञ आचार्य प० उषंबुध के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न होगा। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। २४ अप्रैल को नगर मे भव्य शोभा यात्रा निकाली जायेगी। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर समारोह को सफल बनाय।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४९/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२४-४-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 21-22-4-1994

मुझसे बात करनी है तो अंग्रेजी सीख कर आओ

नई दिल्ली, ४ अप्रैल। "यदि मुझसे बात करनी है तो अंग्रेजी सीख कर आओ।" यह बात सूचना व प्रसारण मंत्रालय के सचिव श्री भास्कर घोष ने मंत्रालय में विभागीय परिषद् की ४२वीं बैठक में कही। बैठक मंत्रालय के सम्मेलन कक्ष में बुलाई गयी थी और इसमें मान्यताप्राप्त यूनियनोंके प्रतिनिधि व उच्च अधिकारी भाग ले रहे थे।

श्री घोष ने उक्त बात तब कही जब चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के प्रतिनिधियों ने कहा कि साहिब आपने अंग्रेजी में कहा वह हमारी समझ में नहीं आया। श्री घोष ने कहा कि हिन्दी मेरी मातृभाषा नहीं है, इसलिए मैं हिन्दी में बात नहीं करूंगा और वह बैठक से उठकर चले गये। इससे चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के मामले पर सुनवाई नहीं हो सकी।

यूनियन के प्रतिनिधियों ने इसे राजभाषा हिन्दी का अपमान बताया है। बैठक में उपस्थित एक सदस्य ने कहा कि आई० ए० एस० अफसरों को हिन्दी सिखाने के लिए जो विशेष कक्षायें लगती हैं, क्या उन पर धन व्यर्थ व्यय किया जा रहा है। इस आशय का समाचार जनसत्ता के ५ अप्रैल के अंक में छपा है।

स्व० आचार्य कर्मवीर जी शास्त्री

धर्मपत्नी (श्रीमती) निरमला कर्मवीर

वाह! आचार्य जी। मेरे पति परमेश्वर! आप तो हमें मंझधार में ही छोड़ गए हैं। जब महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के लिए अपनी लगन व तड़प सिद्ध होने लगी थी तब यह क्या वज्रपात हो गया? आपकी तप, साधना से अभिभूत आपके विशाल आत्मीय कुटुम्बीजनों के संस्मरणों व आत्मीय उद्‌गारों के साथ अनेक संवेदनाएं निरन्तर मिल रही हैं, उन्हें अभी क्या उत्तर दे सकती हू? आपकी महान जीवन ज्योति की मैं एक किरण मात्र हूं। अतः पुनः उसी परम पिता, जिनकी पावन गोद में आप ४४ वर्ष की अल्पायु पाकर असमय पहुंच गए हैं, से हार्दिक प्रार्थना कर रही हूं कि वह ही मुझे शक्ति व सामर्थ्य भी प्रदान करने की कृपा करें, ताकि महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के लिये जीने के आपके शिव संकल्पों को मैं व आपके अबोध लाल चि० बृहस्पति, चि० वाचस्पति पूरा कर सकें। आपकी स्मृति हर समय हमारा मार्ग प्रशस्त करेगी—ऐसा मुझे विश्वास है।

सभी संवेदनाओं के प्रति यही मेरा निवेदन भी है।

आर्य समाज (अनारकली)
मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
फोन : ३१००५९

अनाथ–निराश्रितों के लिए नौकरियों में १० प्रतिशत कोटा आरक्षित करने की मांग

नई दिल्ली ४.४.९४ आर्य बाल गृह, आर्य कन्या सदन, १४८८ पटौदी हाउस, दरियागंज व छात्रावास चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, चन्द्र आश्रय गृह, देसराज परिसर, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली के अधिष्ठाता श्री हमीर सिंह रघुवंशी ने शासन से मांग की है कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व शारीरिक विकलांगों की ही भांति अनाथ-निराश्रित (सामाजिक विकलांग) को भी केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों द्वारा नौकरियों में १० प्रतिशत कोटा आरक्षित किया जाना चाहिए।

विगत दिनों दिल्ली प्रशासन के समाज कल्याण विभाग के निदेशक श्री बारफी द्वारा दिल्ली की समस्त स्वयं सेवी, सामाजिक संस्थाओं की बैठक में विचार विमर्श के दौरान भी आपने यह आवाज उठाई और बताया गया कि कुछ संस्थाओं में ऐसे अनाथ बालक व बालिकायें निवास करते हुए निःशुल्क शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं जिनके बचपन में ही माता-पिता का देहान्त हो गया है, साधन हीन होने के कारण कोई सहारा भी नहीं था, अपना पेट भरने के लिए पार्कों में भीख मांगते हुए ऐसे बच्चों को मोहल्ले के लोगों ने मिल कर इन संस्थाओं में दाखिल कराया, और वे इस सहारे के माध्यम से अपना भविष्य उज्जवल बना रहे हैं, शिक्षा प्राप्ति के बाद भी उनको किन्हीं कारण वश यदि नौकरी नहीं मिलती है तो इन बेचारों का क्या होगा? ऐसे में यह सरकार की जिम्मेवारी हो जाती है कि उनको शासन की तरफ से कोटा आरक्षित किया जाय ताकि वे एक अच्छा नागरिक बनकर समाज व देश की सेवा कर सकें।

आपने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, देश के समस्त सांसदों, न्यायविदों तक यह आवाज पहुंचाने के लिये बुद्धिजीवी पत्रकारों-समाचार पत्रों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से ऐसे बच्चे तथा असहाय-विधवा महिलाओं के उत्थान एवं सर्वांगीण विकास के लिये हिम्मत तथा ताकत देने हेतु प्रेरणा की कामना की है।

हमीर सिंह रघुवंशी
अधिष्ठाता
फोन : ३२७२०८४

सीताष्टमी पर्व

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला मण्डल के तत्वावधान में सीताष्टमी पर्व आर्य समाज गोविन्दपुरी में श्रीमती कान्ता जी सिक्का की अध्यक्षता में बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया। जिसमे दक्षिण दिल्ली की लगभग सभी स्त्री आर्य समाजों के अतिरिक्त दिल्ली की अनेक आर्य समाजों ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया। हाल खचाखच भरा था।

समारोह का प्रारम्भ यज्ञ प्रार्थना से किया गया। ध्वजा रोहण के अनतर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या ने उपग्रह टी. वी. एवं केबल टी. वी. द्वारा हमारे परिवारों की मर्यादाओं पर सीधे आक्रमण की निंदा की।

मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती शकुन्तला दीक्षित ने माता सीता के त्याग और तपस्वी जीवन का उल्लेख करते हुए आज की भोग प्रधान महिला वर्ग की चर्चा की।

इसी शुभावसर पर आर्य समाज गोविन्दपुरी की प्रधाना श्रीमती सुशीला मिश्रा का उनकी सामाजिक सेवाओं को देखते हुए अभिनन्दन किया गया। मंत्री श्रीमती सावित्री शर्मा ने सभी अभ्यागत बहिनों को धन्यवाद किया।

सावित्री शर्मा
मंत्रिणी

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थप्रकाश पढ़ें।
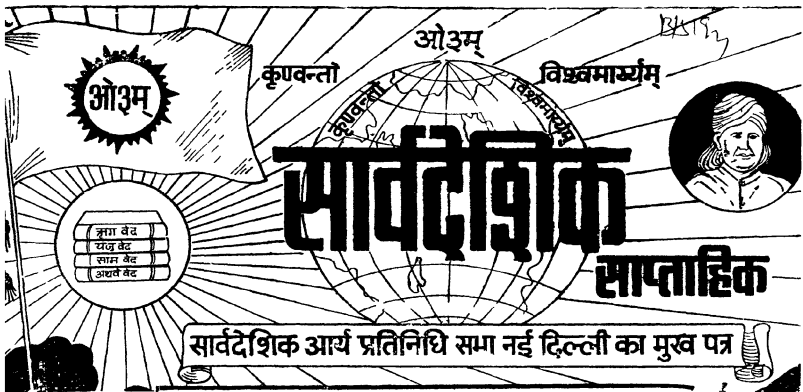
सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : १२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक १२]   दयानन्दाब्द १७०   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५   वैशाख कृ० ८ स० २०५१ १ मई १९९४

आर्य समाज का राजनीति में प्रवेश करने पर विचार होना चाहिये

राजनीतिक सत्ता के बिना सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति असंभव

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली, २४ अप्रैल। आर्य समाज के नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का विचार है कि आर्य समाज का अब राजनीतिकरण कर दिया जाना चाहिए और उसे राजनीतिक सगठन का स्वरूप दिया जाना चाहिए।

चन्द्र विद्यामन्दिर नई दिल्ली मे डा० प्रशान्त वेदालकार की स्मृति मे आयोजित आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि आर्य समाज को राजनीति मे प्रवेश करने पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये। स्वामी जी के विचारो से सम्मेलन मे उपस्थित बुद्धिजीवियो ने सहमति व्यक्त की।

आर्य समाज राजनीतिक कायापलट के लिए आह्वान विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष और दिल्ली प्रदेश जनता दल के अध्यक्ष वीरेश प्रताप चौधरी से राजनीतिक दल बनाने के उनके प्रस्ताव को कार्यान्वित करने का दायित्व खुद सम्भालने का अनुरोध किया। सम्मेलन मे उपस्थित अधिकाश बुद्धिजीवियो ने, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के विचारो से सहमति व्यक्त की। उनका कहना था कि राजनीतिक सत्ता के बिना सामाजिक उद्देश्यो की पूर्ति नही हो सकती। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रस्ताव के बारे मे जब वीरेश प्रताप चौधरी से उनकी प्रतिक्रिया पूछी गयी तो उन्होने तत्काल कोई टिप्पणी करने से इन्कार किया, साथ ही उन्होने यह भी कहा कि वे इस बारे मे विचार करेंगे।

श्री सीताराम आर्य ने कहा कि राजनीतिक दल बनाने का काम बहुत पहले हो जाना चाहिए था। उन्होने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' म तीन सभाओ राजार्य सभा, विद्या सभा और धर्म सभा का उल्लेख किया है। धर्म सभा तो है लेकिन राजार्य सभा और विद्या सभा नहीं है राजार्य सभा के साथ ही विद्या सभा का गठन किया जाना चाहिए ताकि देश की शिक्षा प्रणाली मे एकरूपता हो सके।

जनसघ के अध्यक्ष प्रो० बलराज मधोक ने कहा कि आर्य समाज के तत्वावधान मे जो राजनीतिक पार्टी बने उसका उद्देश्य हिन्दू राष्ट्र भारत को 'हिन्दू राज्य' घोषित करना होना चाहिए। उन्होने स्पष्ट किया कि भारत पहले से ही हिन्दू राष्ट्र है जरूरत है उसे हिन्दू राज्य बनाने की। उन्होने कहा कि इस देश की सबसे बडी समस्या मुस्लिम समस्या है और इस देश के मुस्लिमो को हिन्दुस्तानी बनकर रहना चाहिए, न कि पाकिस्तानी बनकर।

आर्य समाज का सगठन समस्या और समाधान' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए विद्वानो ने सुझाव दिये कि आर्य समाज को मजबूती प्रदान करने के लिए इसके सिद्धान्तो का प्रचार-प्रसार होना चाहिए। दूसरे लोगो मे आर्य समाज का प्रभाव बढाने के लिए आधुनिक तकनीको जैसे वीडियो फिल्म, टेपरिकार्डर इत्यादि का प्रयोग होना चाहिए। आर्य विद्या मन्दिरो मे बाल साहित्य उपलब्ध कराये जाय और युवा लोगो को सगठन मे उत्तरदायित्वपूर्ण पद दिये जाय। इससे पहले आज प्रात दिल्ली विधान सभा के अध्यक्ष श्री चरतीलाल गोयल ने आर्य समाज बुद्धिजीवी सम्मेलन का उद्घाटन

(शेष पृष्ठ ११ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

बूचड़खानों के खिलाफ लम्बी लड़ाई लड़ी जाएगी : मेनका

नई दिल्ली, २४ अप्रैल। श्रीमती मेनका गांधी ने कहा कि बूचड़खानों के कारण दिल्ली का पर्यावरण संतुलन गड़बड़ा गया है। इसके खिलाफ एक लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ेगी।

वह रविवार को यहां भगवान महावीर जयन्ती के अवसर पर आयोजित एक समारोह में बोल रही थीं। समारोह का आयोजन जैन महासभा ने किया।

उन्होंने कहा कि महावीर स्वामी ने भी अहिंसा का प्रचार किया था। हम उन्हीं के सिद्धांतों को आगे बढ़ा रहे हैं। यह लड़ाई देश को बचाने की भावना से जुड़ी हुई है।

इस अवसर पर मुख्यमन्त्री मदनलाल खुराना ने स्पष्ट रूप से कहा कि बूचड़खाना के सम्बन्ध में हम अदालत का फैसला मानेंगे। हम किसी भी हालत में ढाई हजार पशुओं से ज्यादा नहीं कटने देंगे।

उन्होंने घोषणा की कि दिल्ली में १० गोसदन खोले जायेंगे। जिसका आधा खर्च सरकार उठायेगी व शेष खर्च स्वैच्छिक संस्थाएं।

भूतल परिवहन मन्त्री जगदीश टाइटलर ने श्रीमती मेनका गांधी के विचारों से पूर्ण सहमति जताते हुए कहा कि पर्यावरण के सम्बन्ध में लोगों को शिक्षित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि दिल्ली बूचड़ खाने की लड़ाई में मैं मेनका गांधी के साथ हूं, किन्तु यह लड़ाई इतनी आसान नहीं है। कुछ राजनीतिज्ञों के स्वार्थ इसमें निहित हैं।

उन्होंने आश्वासन दिया कि वह लगभग सौ सांसदों के हस्ताक्षरों से युक्त एक ज्ञापन प्रधानमन्त्री को देंगे। जिसमें बूचड़खाने को बन्द करने की मांग उठाई जाएगी।

इस अवसर पर प्रसारित अपने एक सन्देश में राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा ने कहा कि अहिंसा का विचार वस्तुतः व्यक्ति और विश्व के अस्तित्व से सीधे जुड़ा हुआ है। इसमें प्रेम, करुणा, सद्भाव, सेवा स्वतः शामिल हो जाते हैं जो किसी भी युग के लिए आवश्यक थे और आवश्यक रहेंगे। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि भगवान महावीर की जन्मतिथि को अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केन्द्रीय खाद्य मन्त्री कल्पनाथ राय ने कहा कि जानवरों की सुरक्षा करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है। पशु-पक्षियों की हत्या का विरोध करते हुए उन्होंने कहा कि उनकी सुरक्षा के लिए अभियान जारी रखा जाए।

इस अवसर पर संस्था ने प्रधानमन्त्री को एक ज्ञापन देने का निश्चय किया है। जिसमें मांग की गई है कि बूचड़खानों पर प्रतिबन्ध लगे, मांस का निर्यात बन्द हो। पशु हत्या निषेध कानून बने। दूरदर्शन, रेडियो पर अंडे, मांस के प्रचार पर प्रतिबन्ध लगे तथा शाकाहारी भोजन का प्रचार किया जाए।

(दैनिक जागरण, २५ अप्रैल)

क्या आप ईसाईयों की इन गति-विधियों को जानते हैं ?

१. रोमनकैथलिको ने ईसाईयत के प्रचार के लिये भारत को ६३ हिस्सों में बांट रखा है। इस एक-२ क्षेत्र को एक-२ विदेशी राष्ट्र ने अपने अधीन कर रखा है।
२. आज हमारे देश में ४५ देशों के ईसाई प्रचारक कार्य कर रहे हैं। इन विदेशी पादरियों की संख्या ६७२७ है। भारतीय पादरियों की संख्या ५४००० हैं तथा २५००० महिला प्रचारक कार्यरत हैं। ये सब अहर्निश ईसाई बनाने में लगे हैं।
३. आज हमारे देश की २६ हजार वर्गमील भूमि इन पादरियों के प्रभाव में है।
४. नागालैण्ड, मिजोरम जैसे प्रान्तों का शासन बाईबल के अनुसार चल रहा है। कोई हिन्दू प्रचारक वहां बिना अनुमति के प्रचार नहीं कर सकता।
५. मदर टेरेसा के पास एक बड़ा प्रचार विभाग ईसाईयत के प्रचारार्थ है। अरुणाचल में मदर टेरेसा की २५ गाड़ियां प्रचार में संलग्न हैं। बिहार आदि प्रान्तों में भी मदर टेरेसा का मिशन जोर शोर से ईसाई बनाने में संलग्न है।
६. आजादी से पहले लगभग ७० लाख ईसाई थे। आज ३ करोड़ के आस-पास हो गये हैं। इन्हें स्वार्थी राजनैतिक दल भी बड़ा सहयोग दे रहे हैं। बिहार में ईसाई स्कूलों को पूर्ण सरकारी सहायता मिल रही है। इनका संचालन मिशन करता है।
७. १० करोड़ वनवासियों में से २ करोड़ से अधिक ईसाई बन चुके हैं।
८. हमारे देश में लगभग २५ हजार चर्च हैं। इनमें कुनकुरी (रायगढ़) का चर्च सबसे बड़ा है।
९. ईसाईयों द्वारा सचालित संस्थाओं की संख्या इस प्रकार है।

अनाथालय	६८८
अस्पताल	११८६
छात्रावास	६५२
कालेज	१०२
हाईस्कूल	१२६८
मिडिल स्कूल	१७३९
प्राथमिक स्कूल	७३१९

इन संस्थाओं के द्वारा हमारे भोलेभाले बन्धुओं को ईसाई बनाने का कार्य पूरी ताकत से वे लोग कर रहे हैं और हम कबूतर की तरह आंखें बन्द करके बैठे हैं। क्या आने वाला समय हमें क्षमा करेगा। वैदिक धर्म को नष्ट करने का चारों ओर से पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। आईये हम भी इसे बचाने का सकल्प लें।

—धर्मानन्द सरस्वती

गुरुकुल करतारपुर मे प्रवेश आरम्भ

(कोई मासिक शुल्क नहीं)

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालधर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) में नये छात्रों का प्रवेश १५ मई-१९९४ से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलों में पढाये जाने वाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, समाज शास्त्र आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढाई जाती है। निःशुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन दूध व आवास बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषता हैं। छात्रों की प्रवेश योग्यता कम से कम कक्षा ६ तथा अधिकतम कक्षा ८ उत्तीर्ण हो। प्रवेश हेतु शीघ्र मिलें अथवा पत्राचार करें। स्थान सीमित है।

आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल
करतारपुर—१४४८०१ (जिला-जालधर) पंजाब

नैपाल में केन्द्रीय अधिवेशन

नैपाल आर्य समाज के अध्यक्ष श्री गोकुल प्रसाद पोखरेल ने काठमाण्डू में बताया कि आर्य समाज के माध्यम से समाज सुधार अभियान को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से अक्टूबर ९४ में काठमाण्डू में केन्द्रीय अधिवेशन बुलाया जायेगा। उन्होंने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से भी इस विषय में सपर्क करते हुए सस्था में सामाजिक परिमार्जन और आर्य समाज के प्रतिस्पर्द्धात्मक नेतृत्व के विकास के लिए केन्द्रीय सम्मेलन की वहां बड़ी आवश्यकता पर बल दिया है। उन्होंने नैपाल आर्य समाज द्वारा नैपाली भाषा में सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित किया है।

अध्यक्ष महोदय ने बताया कि अधिवेशन में भारत तथा अन्य देशों से विशिष्ट विद्वानों, समाज सेवियों और आर्य समाज के अग्रणीय नेताओं को विशेष रूप से आमंत्रित किया जायेगा। अधिवेशन के आयोजन के लिए उन्होंने आर्थिक सहयोग की भी अपील की है।

गांधी पर वैचारिक हमला एक अंतरराष्ट्रीय साजिश

—चन्द्रशेखर

भारत यात्रा केन्द्र (हरियाणा), १७ अप्रैल। पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर का कहना है कि भारत को तोड़ने की अन्तर्राष्ट्रीय साजिश के तहत महात्मा गांधी पर वैचारिक हमला शुरू किया गया है। इस साजिश के ओर-छोर और रूपरंग की ओर वे संकेत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैं नहीं जानता कि इस साजिश को कांशीराम और उनके बड़बोले सहयोगी समझ रहे हैं या नहीं। पर इतना साफ है कि विदेशी मीडिया जिस तरह से इनके बयानों को उछाल रहा है, उसे साजिश का प्रमाण माना जाना चाहिए।

एक पखवाड़े पहले चन्द्रशेखर बसपा नेताओं की महात्मा गांधी पर टिप्पणियों को बकवास मानते थे। आज वे इसे उपेक्षा लायक नहीं मानते। यहां तक कि वे उपेक्षा करना भूल समझते हैं। बृहत्तर राजनीति को पूरे सन्दर्भ में समझने वालों में चन्द्रशेखर की गणना होती रही है। इस सवाल को भी एक पखवाड़े में ही उन्होंने पूरे सन्दर्भ में समझा है। हो सकता है उन्हें कुरुक्षेत्र ने आत्मबोध दिया हो। तेरह अप्रैल को यहीं से उन्होंने अपनी जनजागरण यात्रा शुरू की। पंजाब की यात्रा पूरी कर चन्द्रशेखर कल दिल्ली लौटे। भुवनेश्वरी क्षेत्र के भारत यात्रा केन्द्र में उन्होंने आज ६७वें साल में कदम रखा। अपने जन्मदिन पर सुबह से ही सैकड़ों लोगों से मिलने और फोन सुनने के बावजूद वे सहज भाव से बोलने के लिए तैयार थे।

नक्सलियों ने भी एक दौर में महात्मागांधी पर हल्ला बोला था। स्वयंभू क्रांतिकारियों के हमले से भिन्न यह मौजूदा संदर्भ है। उसका चन्द्रशेखर जिक्र नहीं करते। भारत को तोड़ने की अन्तर्राष्ट्रीय साजिश को समझाने के लिए उन्होंने सोवियत संघ का प्रासंगिक सन्दर्भ सुनाया। शुरुआत में वहां भी पहले मार्क्स और लेनिन पर हमले हुए। गोर्बाचोव ने उसकी उपेक्षा कर दी। उन्हें लोकतन्त्र की आहट सुनाई पड़ रही थी। आखिरकार गोर्बाचोव देश को टूटने से नहीं बचा सके। अब येल्तसिन कहने लगे हैं कि हम ठगे गये। सोवियत संघ की जनता ही अपने देश को बचा सकेगी। चन्द्रशेखर ने सवाल किया कि क्या भारत के ९० करोड़ लोग इससे सबक सीखेंगे?

चन्द्रशेखर की निगाह में महात्मा गांधी भारत की एकता विलक्षणता, स्वाभिमान और स्वदेशी के प्रतीक हैं। उन पर हमला इन मूल्यों को ध्वस्त करने की साजिश है। उन्होंने कांशीराम का जिक्र किये बगैर कहा कि १९३०-१९३२ वाली गोलमेज कांफ्रेंस से पूनापैक्ट के दौरान जो साजिश सफल नहीं हो सकी उसे फिर से जिंदा किया जा रहा है। गोलमेज परिषद में डा० अम्बेडकर ने दलित समाज के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र की मांग रखी थी। ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री रेमजे मेकडोनल्ड ने मान भी लिया था। महात्मा गांधी ने आमरण अनशन कर हिन्दू समाज को तोड़ने की साजिश को नाकाम कर दिया। पूनापैक्ट उसका ही दस्तावेज है। चन्द्रशेखर आजादी की लड़ाई के इस प्रसंग का हवाला देकर कहते हैं कि उस राजनीति को ये हमारे दोस्त १९९४ में जिन्दा करना चाहते हैं। अलग निर्वाचन क्षेत्र की राजनीति को बढ़ावा देना भारत को तोड़ने की साजिश का हिस्सा है।

उनसे सवाल था कि क्या कांशीराम अनजाने में यह सब कर रहे हैं? पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर ने कहा कि हो सकता है वे जानकारी के बगैर कर रहे हों। पर उनके इस तरह के बयानों को विदेशी मीडिया यों ही हवा नहीं दे रहा है। उसमें साजिश की बू आती है। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी को नीचा दिखाने के किसी प्रयास को मैं उस देश के गौरवमय इतिहास पर कालिख पोतने की साजिश समझता हूं। उन्होंने याद दिलाया कि महात्मा गांधी को दुनिया किस रूप में देखती रही है। सारी दुनिया बम को ताकत मानती थी। महात्मा गांधी ने नैतिक बल की पुन: स्थापना की। नानक और बुद्ध की परम्परा को बढ़ाया। महात्मा गांधी के निधन पर स्टालिन के सोवियत संघ के अलावा संयुक्त राष्ट्र समेत पूरी दुनिया के झंडे झुके। चन्द्रशेखर इसे याद दिलाकर कहते हैं कि महात्मा गांधी पर हमला कर हम उसे झुठलाना चाहते हैं। ऐसी कोशिश किसी राजनीतिक संस्कृति का हिस्सा नहीं हो सकती। वे उसे दूरगामी विकृति वाली साजिश का खेल मानते हैं।

ऐसी साजिश की बुनियाद उस विचार में होती है जब यह कहा जाता है कि हमारा अतीत काला है। चन्द्रशेखर पीड़ा से बोलते हैं कि हमारे इतिहास का उजाला पक्ष भी है। उनको गहरी पीड़ा इतिहास के साथ किये जा रहे खिलवाड़ से है। संसद में कोई नादान कांग्रेसी जब मनमोहन सिंह का पांच हजार साल में अकेला उदाहरण बताता है तो उनकी पीड़ा छलक पड़ती है। उन्होंने इस तस्वीर के दूसरे पहलू को उजागर किया। मनमोहन सिंह कह चुके हैं कि स्वदेशी ढोंग है। इस विचार को बीज से पौधा बनने से पहले उखाड़ दिया जाना चाहिए। चन्द्रशेखर इसका हवाला देकर कहते हैं कि मनमोहन सिंह ऐसा बोलकर साजिश को ताकत देते हैं। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने इन बातों को बखूबी समझा था।

चन्द्रशेखर ऐसी काली ताकतों से लड़ने का इरादा बना चुके हैं। उन्होंने आज दोहराया कि इन ताकतों से लड़ना होगा। महात्मा गांधी के खिलाफ लगातार निंदा अभियान को भी वे साजिश का हिस्सा मानते हैं। ऐसे लोगों के साथ मुलायमसिंह की सांठगांठ पर उन्हें हैरानी है। उनके शब्द हैं--इनके (बसपा) साथ मिलकर सरकार चलाना राजनीतिक बाजीगरी है। पता नहीं, वह बाजीगर कब तार पर अपना सन्तुलन खो बैठे। नतीजा सबको मालूम है। भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियां कहां पैर जमाना चाहती हैं? गैट करार के सन्दर्भ में चन्द्रशेखर ने यह सवाल उठाकर नई दृष्टि दी। उनका कहना है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियां सामरिक महत्व के क्षेत्रों में व्यापार या कारोबार के बहाने देश को तोड़ने में भी लगेंगी। उन्होंने खुलासा नहीं किया। सूत्र वाक्य यह है कि भावी ताकतों को भी वे (यानी साजिश के सूत्रधार) समाप्त कर देना चाहते हैं। इससे रास्ता साफ रहेगा।

इन सवालों पर एक जुटता की प्रतीक्षा में चन्द्रशेखर बैठे नहीं रहेंगे। वे एक मई से भारत की यात्रा पर निकल रहे हैं। यह दूसरा चरण होगा। इसमें वे दिल्ली से गुवाहाटी तक अलख जगायेंगे। यही सिलसिला देश के हर हिस्से में चलाया जाना है। उनके इस तेवर पर वरिष्ठ पत्रकार दीनानाथ मिश्र अभिभूत थे। उन्होंने टिप्पणी की कि चन्द्रशेखर में लड़ाई लड़ने और नेतृत्व करने का माद्दा अभी भी कायम है जबकि विश्वनाथ प्रतापसिंह चुका बैठे हैं।

गैट करार के खिलाफ देशव्यापी जनरोष को एकजुट प्रयास से बड़ी धारा बनाने के बारे में चन्द्रशेखर को गांधीजन से उम्मीद है। वे उनके प्रयास को एक सहयोगी के नाते बढ़ाना चाहते हैं। नेतृत्व का सवाल नहीं है। उनका यह भी कहना है कि आंदोलन अपनी शक्ति से नायक बना लेता है। इस बारे में पूछे गए सवालों पर उनकी राय है कि मौजूदा लड़ाई को हमें राजनीतिक परिधि में नहीं देखना चाहिए। पहली दफे भारत में बाहरी हस्तक्षेप हो रहा है। इस कारण यह लड़ाई जटिल होगी।

गैट करार पर विश्वनाथ प्रतापसिंह की पहली प्रतिक्रिया पर उन्हें आश्चर्य है। उन्होंने कहा कि मैं नहीं समझ पाया कि वे ऐसा क्यों कह रहे हैं? संसद से इस्तीफे के सवाल पर चन्द्रशेखर का दृष्टिकोण है कि वह लड़ाई का तार्किक नतीजा तो हो सकता है। उसे प्रस्थान बिन्दु बनाना गलती होगी। संसद आखिरकार इस लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्रतिनिधि संस्था है।

वेदों का ज्ञान मानव जाति के लिए प्रेरणा का स्रोत है

श्री अर्जुन सिंह

नई दिल्ली, २१ अप्रैल। वेदों का ज्ञान समस्त मानव जाति के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वेदों में मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों का वर्णन है। वह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। ये विचार मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह ने वेद प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित सम्मान समारोह के अवसर पर व्यक्त किए।

वेद प्रतिष्ठान की तरफ से श्री सिंह को वेदों के अंग्रेजी अनुवाद का सैट भेंट किया गया। इस अवसर पर प्रतिष्ठान के अध्यक्ष ब्रिटेन में भारत के राजदूत डा० लक्ष्मीमल सिंघवी ने कहा—'वेद की दृष्टि मानवता की दृष्टि है उसमें मानव संस्कृति की संवेदना के सभी सूत्र समाहित हैं।

भारतीय साहित्य व हिन्दू धर्म पर विश्वकोश

गणेश कौशिक

भारतीय साहित्य और हिन्दू धर्म पर दो अलग-अलग विशालकाय विश्वकोश तैयार हो रहे हैं। 'भारतीय साहित्य का विश्वकोश' और 'हिन्दू जगत का विश्वकोश' नामक ये कोश क्रमशः सोलह और चालीस खंडों में पूरे होंगे। साहित्य पर विश्वकोश के आठ खंड और हिन्दू जगत पर विश्वकोश के तीन खंड प्रकाशित हो चुके हैं तथा कुछ खंड प्रकाशनाधीन हैं। इस सदी के अन्त तक पूरे होने वाले कठिन परिश्रम साध्य इन विश्वकोशों की रचना के महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट को अंजाम दे रहे हैं—प्रख्यात विद्वान और साहित्य तथा हिन्दू धर्म एवं दर्शन के मर्मज्ञ डा. गंगाराम गर्ग। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के भूतपूर्व कुलपति श्री गर्ग आजकल हरिद्वार के ज्वालापुर स्थित वानप्रस्थ आश्रम में जीवन व्यतीत करने के साथ ही साहित्य साधना एवं उसके संवर्धन में अनवरत लगे हुए हैं। उत्तर वर्ष की आयु में भी साहित्य के प्रति उनका समर्पण भाव, लगन और स्फूर्ति अनोखी है।

साहित्य पर विश्वकोश के प्रकाशित पहले खंड में संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य का समावेश है, जबकि प्रकाशित अन्य सात खंड क्रमशः तमिल, असमी, कन्नड़, तेलुगू, मलयालम, उर्दू और सिंधी साहित्य पर हैं। इनमें इन भाषाओं के प्रमुख कवियों, नाटककारों, उपन्यासकारों, लेखकों, निबन्धकारों, आलोचकों और उनकी रचनाओं का समावेश किया गया है। इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि इन साहित्यों के शुरुआत से लेकर अद्यतन साहित्य का इन खंडों में समावेश हो जाये। उर्दू साहित्य वाले खंड में पाकिस्तान के रचनाकारों को भी सम्मिलित किया गया है।

श्री गर्ग के अनुसार इन विश्वकोशों की रचना में विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं के विद्वानों से सहयोग एवं सुझाव लिये जा रहे हैं। ये विश्वकोश कालेजों, विश्वविद्यालयों अन्य शिक्षा संस्थानों, अकादमियों और शोधार्थियों के लिए उपयोगी होंगे। जहां ये भाषाएं पढ़ी और पढ़ायी जा रही हैं, वहां तो ये उपयोगी होंगे ही, वहां भी उपयोगी सिद्ध होंगे, जहां आधुनिक भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है।

हिन्दी साहित्य, भारतीय साहित्य और स्वामी दयानन्द सरस्वती पर अनेक ग्रन्थों के लेखक श्री गर्ग 'हिन्दू जगत का विश्वकोश' के सन्दर्भ में कहते हैं कि इस व्यापक प्रोजेक्ट पर काम करने का मुख्य उद्देश्य उस खाई को पूरा करना है, जो हिन्दू धर्म के बारे में अभी तक मौजूद है। दुनिया के लगभग सभी प्रमुख धर्मों का विश्वकोश है लेकिन हिन्दू धर्म का ऐसा कोई कोश नहीं होने से ही इस दिशा में काम करने की प्रेरणा मिली। वैसे प्रकाशक नौरंग राय ने १९८२ में मेरे एक ग्रन्थ के विमोचन के अवसर पर यह सुझाव दिया था कि मैं 'हिन्दू विश्व कोश' तैयार करूं, लेकिन तब मैंने इसे गंभीरता से नहीं लिया। वर्ष १९८३ में स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण शताब्दी के अवसर पर स्वामी जी पर एक ग्रन्थ 'वर्ल्ड परस्पेक्टिव्स आन स्वामी दयानन्द सरस्वती' तैयार करते समय स्वामी जी के उस कथन की ओर मेरा ध्यान गया कि 'वह नहीं चाहते कि वह भी ब्राह्म समाज' की तरह हिन्दू समाज से कट जाये बल्कि समाज के अन्दर रहकर ही सुधार का कार्य करें। इसी कथन से स्फूर्त होकर मैंने हिन्दू धर्म पर लिखने का निर्णय किया।

श्री गर्ग का यह भी कहना है कि डा० सर्वपल्ली राधा कृष्णन, सी० राजगोपालाचारी और महात्मा गांधी ने भी हिन्दू धर्म पर लिखा और उसे एक नया अर्थ और नयी दृष्टि दी। हिन्दू जगत का विश्वकोश भी इस दिशा में एक प्रयास है।

विभिन्न धर्मों के विश्वकोशों का योगदान, धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन में होता है और यह अध्ययन धर्मों के बारे में व्यापक दृष्टिकोण के स्वस्थ विकास में सहायक होता है। यही विचार कर ही मैंने प्रकाशक को अपनी स्वीकृति दी कि मैं इस विश्वकोश पर काम करने और आगे बढ़ने के लिए तैयार हूं। इस प्रकार अपने आपको मानसिक तौर पर तैयार करने में मुझे तीन-चार साल लग गये।

इस विश्वकोश के नामकरण के सम्बन्ध में श्री गर्ग का कथन है कि यह भी एक समस्या थी। सुझाव था कि इसका नाम 'हिन्दू धर्म का विश्वकोश' रखा जाये। चूंकि विश्वकोश का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है और इस अकेले 'हिन्दू धर्म' नाम से इसका अर्थ पूरा नहीं होता, इसलिए इसका नाम 'हिन्दू जगत का विश्वकोश' रखा गया।

इसे किस प्रकार तैयार किया जाये, यह भी एक प्रश्न था। देश-विदेश के स्कालरों से विचार-विमर्श किया गया। कुछ का सुझाव था कि हर खंड कुछ सीमित विषयों को लेकर तैयार किया जाये, जो अपने आप में पूर्ण हो। लेकिन अन्ततः तय किया गया कि इसे अंग्रेजी वर्णमाला के क्रम से तैयार किया जाये। बड़े पैमाने पर तैयार होने वाला यह विश्वकोश अपने तरह का अकेला है। इसमें लगभग एक लाख प्रविष्टियां होंगी।

नवभारत टाइम्स, ३.३.१९९४ से आभार

अहिंसा के संदेशवाहक और मूक पशुओं के रक्षक

मुनि सुशीलकुमार जी के निधन से राष्ट्र को अपूर्णीय क्षति

जैन समाज के प्रसिद्ध सन्त मुनि सुशील कुमार जी के निधन पर सार्वदेशिक सभा में प्रातः यज्ञोपरान्त आयोजित शोक सभा में सभा प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—राष्ट्र ने आज अहिंसा का संदेशवाहक और मूक पशुओं का रक्षक खो दिया है। राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के लिए भी मुनि जी का महान योगदान रहा है। आर्य समाज के साथ उनके प्रगाढ़ संबंध थे. गोरक्षा आन्दोलन और समाज से रूढ़िवादिता को हटाने के लिए उन्होंने आर्य समाज के साथ मिलकर कार्य किया था। स्वामी जी ने कहा—पिछले दिनों ही उनके नेतृत्व में आयोजित धार्मिक नेताओं की सर्वदलीय बैठक में आन्ध्र प्रदेश के अलकबीर बूचड़खाने को बन्द कराने के लिए राष्ट्रव्यापी आन्दोलन चलाने का निर्णय हुआ था। अहिंसा और शान्ति की स्थापना के लिए उन्होंने विश्व के अनेक देशों का भ्रमण किया था और संयुक्त राष्ट्र संघ से भी उन्हें विशेष सम्मान प्राप्त हुआ था। शोकसभा में प्रस्ताव पारित करते हुए स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने देशवासियों से अपील की कि गरीबों की सेवा, मूक पशुओं की रक्षा और आंध्र प्रदेश के अलकबीर बूचड़खाने को बन्द कराने का संकल्प लेकर मुनि सुशील जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने में सहयोग करें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

'नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा 'नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये एक बार ३५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—व्यवस्थापक

अंग्रेजी मात्र ०.५४ प्रतिशत की मातृभाषा

१० मार्च, १९९४ के दैनिक जागरण में छपे समाचार के अनुसार राज्यसभा में एक प्रश्न के उत्तर में गृह राज्यमंत्री श्री पी. एम. सईद ने सूचित किया कि १९८१ की जनगणना के अनुसार भारत में मात्र ०.५४ प्रतिशत लोगों की मातृभाषा अंग्रेजी है। १९९१ की जनगणना के आंकड़े अभी तैयार किए जा रहे हैं।

उपरोक्त से पाठक स्वयं विचार करें कि अंग्रेजी का शिक्षा और प्रशासन में प्रयोग का कहां तक औचित्य है।

जगन्नाथ

संयोजक, राजभाषा कार्य

क्या आर्य बाहर से आए थे ?

एक अघटित को इतिहास बनाने का छल

सूर्यकान्त बाली

जिस देश के इतिहास की किताब का पहला अध्याय यह कहता हो कि जिस देश में आप रहते हैं, वह देश आपका नहीं तो उस किताब के बारे में आपकी क्या राय बनेगी ? भारत के इतिहास की किताबों का यही हाल है। भारत का जो इतिहास हम इस देश के बच्चों और नौजवानों को स्कूलों और कालेजों में पढ़ा रहे हैं, उस इतिहास का पहला अध्याय यह कहता है कि भारत में रहने वाले लोग आर्य हैं, जो भारत में बाहर से आए, और यहां आकर उन्होंने द्रविड़ों को, जो यहां के मूल निवासी थे, मार भगाया और खुद उनके इलाकों पर काबिज हो गए। हम लोग आर्य हैं या नहीं यानि आर्य कोई जाति थी या नहीं, इस पर फिर कभी। कथित आर्यों और कथित द्रविड़ों में कोई संघर्ष हुआ या नहीं हुआ, इस पर भी किसी अगली कड़ी का हमें इन्तजार करना होगा। पर हम जो भी हैं, उस देश के नहीं हैं, हम कहीं बाहर से आए और इस देश पर काबिज हो गए, इस सारे तामझाम के बारे में, जिसे हम छल कहना चाहते हैं, क्या राय बनती है ? थोड़ा छानबीन कर ली जाए।

इतिहास लिखने की दो शैलियां हैं। एक भारत की शैली है जिसमें उन सब पात्रों और घटनाओं का कथात्मक और गाथात्मक विवरण दिया जाता है जो हमारी जातीय स्मृतियों में अंकित है, वह अपनी जगह कहीं गहरे तक बना चुकी है। एक शैली पश्चिम की है जिसमें तथ्यों और घटनाओं का सिलसिलेवार विवरण दिया जाता है और उस सिलसिले में अगर कहीं कोई छिद्र हो तो उसे भरने की जोड़-तोड़ कोशिश की जाती है जिसे अनुसंधान कहा जाता है। इसलिए भारतीय शैली में जहां उस जन का महत्व है जिसने पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनी जातीय स्मृतियों को आगे-आगे संजोया है, उसे जिया है और उसे अनुभव किया है, वहां पश्चिमी शैली में साहित्य, शिलालेखों, खुदाइयों, ताम्रपत्र जैसे राजकीय रिकार्डों का महत्व होता है, जहां घटनाएं लिखी पड़ी होती हैं। जहां भारतीय शैली में वही स्मृति इतिहास का दर्जा पा सकती है जो काल के दुर्निवार थपेड़े को लांघकर जन-जन में व्याप्त हो, जन-जन की ज्ञात है। वहां पश्चिमी शैली में इतिहास वह है जो किताब में दर्ज है। परिणाम क्या है ? जहां भारतीय शैली में पला-पुसा हर भारतवासी इतिहास को हर वक्त अपने हृदय में रखता है उसके साथ जीता है, मरता है, वहां पश्चिमी शैली में पले-पुसे को इतिहास पढ़ने के लिए किताब खरीदनी पड़ती है, या फिर उसे पुस्तकालय जाना पड़ता है।

शैली कौन-सी बेहतर है, यह बताना हमारा उद्देश्य यहां नहीं है। पर यह देश हमारा नहीं, हम कहीं बाहर से आए, यह तथाकथित इतिहास, जो छलपूर्वक हमें परोसा गया है किस शैली के आधार पर इतिहास साबित होता है ? पहले भारतीय शैली की बात करें। हमारी स्मृति में मनु तो हैं, जिन्होंने मानव जाति को मानव बनाया, हमारी स्मृति में प्रलय भी है, जिसमें से मनु ने हमारी जाति को उबारा, हमारी स्मृति में पृथु भी हैं जिनके नाम पर इस धरती का नाम पृथ्वी पड़ा, हमारी स्मृति में प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भरत भी हैं, जिनके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। हमारे जहन में इतनी सारी प्राचीनतम स्मृतियां हैं, पर हम किसी और देश से, बाहर से अपने देश भारतवर्ष में आए, यह हमारी स्मृति में कहीं नहीं है। हमारी स्मृति में देव भी हैं, हमारी स्मृति में असुर भी हैं, हमारी स्मृति में देवासुर संग्राम भी है, हमारी स्मृति में यक्ष भी हैं, किन्नर भी हैं और गंधर्व भी हैं। पर हमारी संस्कृति में वे आर्य नहीं हैं, जो कहीं बाहर से यहां आक्रमणकारी के रूप में आए बताए जा रहे हैं और हमें जिनकी संतान बताया जा रहा है। हमारी स्मृति में श्रेष्ठ के अर्थ में आर्य शब्द है, दुराचारी के अर्थ में अनार्य शब्द भी है, हमारी स्मृति में पति अथ देने वाला आर्यपुत्र शब्द भी है, पर आर्यजाति वाचक आर्य शब्द हमारी स्मृति में कहीं है नहीं, जो आर्य हमारे पूर्वज और कहीं बाहर से आए बताए जा रहे हैं। वेद हों या ब्राह्मण ग्रन्थ हों, आरण्यक ग्रन्थ हों या उपनिषदें हों, रामायण और महाभारत जैसे प्रबन्ध काव्य हों या अठारह पुराण और अठारह उपपुराण हों, तमाम वैज्ञानिक साहित्य हो, तमाम शास्त्रीय ग्रन्थ हों या ललित साहित्य हो—संस्कृत के ऐसे किसी भी ग्रन्थ में कोई एक परोक्ष, प्रत्यक्ष की तो बात ही क्या है, सन्दर्भ ऐसा नहीं, जो हमारे बारे में कहता हो कि हम बाहर से आए। ब्राह्मण परम्परा के तमाम ग्रन्थ हों या श्रमण अर्थात जैन और बौद्ध परम्परा के कोई ग्रन्थ हों ऐसी कोई स्मृति कहीं अंकित नहीं। भारत का पालि, प्राकृत, अपभ्रंश या आधुनिक भारतीय भाषाओं में लिखा साहित्य हो, हमारी भाषाओं का कोई मुहावरा हो, हमारे देश के किसी भी कोने में गाया जाने वाला कोई लोकगीत हो, यहां तक कि नाचने गाने वाला कोई लोकनृत्य हो, कोई झूठी—सच्ची अफवाह, कोरी गप्प या कोई बकवास हो, कहीं भी यह अंकित नहीं कि यह देश हमारा नहीं और हम कहीं बाहर से आए हैं।

तो फिर पश्चिमी शैली में इतिहास लिखने वालों को कहां से मालूम पड़ गया कि हम बाहर से आए हैं ? कहीं से नहीं। वे तो जन परम्परा को कोई महत्व नहीं देते। पर वे जिन प्रमाणों को प्रमाण मानते हैं वहां भी तो ऐसा कोई उल्लेख नहीं। उन्हें पुरातात्त्विक प्रमाणों पर ज्यादा भरोसा है, पर पुरातत्व का कोई ऐसा प्रमाण नहीं, जहां से साबित हुआ हो कि हम बाहर से आए। जिन खुदाइयों पर उन्हें बड़ी श्रद्धा है उन हड़प्पा मुअन जोदड़ो से और वैसी दूसरी खुदाइयों से भी साबित नहीं होता कि हम कहीं बाहर से आए। संस्कृत साहित्य को तो वे कुछ मानते नहीं, पर अलबेरूनी, ह्वेनसांग, फाह्यान सरीखे यात्रियों के वृतान्तों और जिन मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकारों पर वे फिदा हैं उनकी किताबों में भी कहीं कोई संकेत तक नहीं कि इस देश के बाशिन्दे कहीं बाहर से आए हैं। जिन ताम्रपत्रों, सिक्कों, शिलालेखों आदि को वे देवता की तरह पूजते हैं, उनमें से कहीं भी इस [illegible] का उल्लेख, संकेत या इशारा भर भी नहीं कि इस देश के लोग कहीं बाहर से आए हैं।

यानी इतिहास लिखने की भारत की कालजयी शैली हो या पश्चिम की प्रमाण आधारित पुस्तक शैली हो, दोनों में किसी भी शैली में कोई भूले से भी संकेत नहीं मिलता कि हम भारतीयों का असली देश भारत से कहीं बाहर

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पुस्तक समीक्षा

सामवेद संहिता

(पूर्वार्चिक व उत्तरार्चिक)

पृष्ठ—९२०, मूल्य—४००) रु०

भाष्यकार—आचार्य प्रवर-वैदिक विद्वान-

श्री पं० रामनाथ जी वेदालंकार

प्रकाशक—समर्पण शोध संस्थान

४/४२ से० ५, राजेन्द्रनगर,

साहिबाबाद, जि० गाजियाबाद (उ० प्र०)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से पूर्व और पश्चात अनेक विद्वानों ने वेदों पर अपनी योग्यता क्षमता के अनुसार मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किए हैं किन्तु सामवेद पर किसी वेदों में ऋग्वेद का मन्त्र भाग माना है अपना अस्तित्व कम! तब प्रश्न है कि फिर साम- प्रकरण क्या है और ऋषियों ने पृथक साम० का अस्तित्व क्यों स्वीकार किया है। आज मेरे सामने विद्वद्वर्य पं० रामनाथ जी वेदालंकार का साम० भाष्य प्रस्तुत है।

मैं अपने को वेदों का अधिकृत विद्वान विश्लेषक नहीं मानता हूं परन्तु अध्ययन पर आधारित चिन्तन अवश्य है इसी आधार पर दो शब्द लिखने पर विवश हूं।

वेद आर्य जाति के प्राण हैं। वेदों में 'परमं चक्षुः' यह उपनिषद वाक्य कितना सार्थक है। महर्षि दयानन्द के शब्दों में—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है जिसमें सत्य विद्या और पदार्थ विद्या को मानव हितार्थ देने में आदि मूल परमेश्वर है। फिर प्रभु ने जिन ऋषियों को मूल तत्व दिया वह ऋषियों के नाम से यह अनन्त ज्ञान—

तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानिजज्ञिरे।

इस प्रकार अपना ज्ञान उन ऋषियों को दिया। आर्ष परम्परा में ऋग्वेद से विज्ञान, यजु० में कर्म, साम० में उपासना, अथर्व० में ज्ञान दिया।

विद्वानों की शृंखला में भाष्यकारों की कमी नहीं। परन्तु इस भाष्य की अपनी विशेषता है, महर्षि दयानन्द की शैली आर्ष भाषा में विश्लेषण किया स्वरांकन पद्धति, पदपाठ, इसका स्वरूप, विवेचन पठनीय है : स्वर विषयक जानकारी छन्द, ऋषि, देवता का सप्रमाण पुष्ट किया है।

सामगान प्रक्रिया का विश्लेषण कितना सार्थक एवं महत्वपूर्ण है वेदों का प्रतिपाद्य विषय, चारो वेदों और उनकी शाखाओं द्वारा साम० का परिचय, सामगान का स्वर उसके प्रयुक्त अष्टभाव—साम की भक्तियां छान्दोग्य के अनुसार—हिंकार-प्रस्ताव, उद्गीथ प्रतिहार निधन है यही आगे सात विध भक्तियां मानी गई हैं।

इस प्रसिद्ध साम को योनि ऋचाओं की ताण्ड्य महाब्राह्मण के सप्तम अष्टम अध्यायों में प्रशंसा की गई है।

अभी तक व्याख्या भाग में बड़े-२ विद्वानों ने लेट लकार का प्रयोग कहां है इसका प्रयोग कैसे है भाष्य पंडित जी ने लिङ् के अर्थ में या उपसंवाद व आशंका के अर्थों में किया है। यह भाष्य ग्रन्थ के अध्ययन से भली भांति जाना जा सकेगा। पुस्तक की टिप्पणी भाग में—विशेष ज्ञान पढ़ने को मिलेगा।

व्याकरण सम्मत ह्रस्व-दीर्घ विधान-प्रकृतिभाव के स्थल, अनुनासिक विसर्ग व लोप दिखाकर व्याकरण के नियमों का भी परिचय कराया है।

सामवेद के तीन भाष्यकार उल्लेखनीय हैं—

माधव, भरत स्वामी और सायण प्राप्त हैं, आज के विद्वानों में चतुर्वेद-भाष्यकार प० जयदेव शर्मा, स्वामी ब्रह्ममुनि जी पं० विश्वनाथ जी, प० दामोदर सातवलेकर पं० वैद्यनाथ जी शास्त्री, पं० तुलसीराम जी जो अब दिवंगत हो चुके हैं। सामवेद पर अपनी लेखनी चलाई है। परन्तु आपकी अपनी शैली इन सबसे भिन्न है। मुझे क्या कहना है इसके लिए आप स्वयं विद्वान पंडित जी के विशद विवेचन को पढ़ें और समझने का प्रयास करें।

भाष्य कैसा है यह आपके विवेक पर आश्रित है।

धन्यवादार्ह, माननीय संन्यासी श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज हैं जो फकीर की भांति गांवे घूम घूम कर, 'समर्पण शोध संस्थान' नाम के क्षेत्र में उत्तम भाव पैदा कर लोगों का कल्याण ज्ञान बांटने का प्रयास करते हैं।

लेखक का विशेष प्रकाशक का गौरव तभी सम्भव है जब हम सभी इसके शोध में विशेष योगदान करेंगे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

एक अनोखी प्रतियोगिता

घर बैठे विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एवं उस पर आधारित प्रश्न पत्र प्राप्त करें और छः मास के भीतर उत्तर भेजकर निम्न पुरस्कार प्राप्त करें।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
३०००) रु०	२०००) रु०	१०००) रु०

पूर्ण विवरण प्रश्न-पत्र एवं प्रवेश शुल्क आदि के लिए मात्र तीस रुपए मनीआर्डर द्वारा—रजिस्ट्रार परीक्षा विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०), ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ को भेजें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

क्या आर्य बाहर से आए थे?

(पृष्ठ ७ का शेष)

है और हम वहां से भटकते हुए भारत आए और बस, फिर यहां आकर बस गए। जब कोई ऐसी घटना घटी ही नहीं, ऐसा वाकया हुआ ही नहीं, ऐसी हलचल कभी महसूस ही नहीं हुई फिर एक अघटित को हमारे इतिहास की पुस्तक का पहला अध्याय बनाने की कोशिश क्यों हुई? क्यों इस देश के साथ हमारे शरीर और आत्मा के, हृदय और बुद्धि के, राम और मोहब्बत के, माता और पिता के, भाई और बहिन के रिश्तों को जड़ से काटकर रख देने की कोशिश इतिहास के नाम पर की गई? इस हद तक की गई कि बाल गंगाधर तिलक जैसे महाराष्ट्रभट विद्वान भी इस फंदे में फंस गए और आर्यों को कहीं बाहर से आया बताने लगे?

इस पर भी तुर्रा क्या है? तुर्रा यह है कि यही इतिहासकार कहते हैं कि वैदिक आर्यों को ऊंट का पता नहीं था, क्योंकि उनके साहित्य में ऊंट का वर्णन नहीं। ये कहते हैं कि ऋग्वेद के ऋषियों को गंगा-यमुना का पता नहीं था, क्योंकि उन नदियों का वे उल्लेख नहीं करते। ये कहते हैं कि तब भारत में कई आर्य वर्ग थे, मसलन मत्स्य, द्रुह्यु, तुर्वसु यदु पुरु आदि क्योंकि वेदों में इनका उल्लेख है। यानी प्राचीन भारतीयों के ज्ञान-अज्ञान, खान-पान, पसन्द-नापसन्द, विजय-पराजय आदि के बारे में वे एक भी ऐसी बात नहीं मानेंगे, जिसका लिखित प्रमाण उन्हें कहीं से न मिल जाए। पर भारत आर्यों अथवा या दोनों का मूल देश नहीं, यह सिद्ध करने के लिए उनके पास कुछ नहीं। पर तुर्रा यह है कि एक अघटना को, झूठ को, एक महा असत्य को उन्होंने एक सच्ची, तथ्यपूर्ण, वास्तव में घटी घटना बता कर उसे हमारे इतिहास का पहला अध्याय बना दिया, हमें हमारे देश से काटकर अलग कर दिया, फिर बाकी इतिहास इस झूठ को बढ़ाते हुए लिखा, नेहरू ने इस आधार पर 'डिस्कवरी आफ इंडिया' लिख कर महान इतिहासकार का खिताब पा लिया, श्याम बेनेगल ने इस पर 'भारत की खोज' सीरियल बनाकर इसे घर घर में परोस दिया। पर झूठ के पांव नहीं होते, इसलिए इस महत प्रयास के बावजूद यह अघटना इतिहास नहीं बन सकी, हमारी जातीय-स्मृति का हिस्सा नहीं बन सकी।

तो क्यों किया गया छल? ताकि सिद्ध किया जा सके कि भारत एक धर्मशाला है। यहां अंग्रेज आए, मुगल आए, तुर्क—अफगान आएं। अरब आए, कुषाण आए, हूण आए। शक आए, यवन आए, आर्य आए। सब बाहर से आए। यह देश किसी का नहीं, जो आता गया, बसता गया। इस देश की अपनी कोई संस्कृति नहीं, कोई इतिहास नहीं, कोई सभ्यता नहीं। बस सब यूं ही चलता रहा है। एक अघटित को इतिहास बनाने का छल इसलिए हुआ। इसे इतिहास कहें या कूटनीति?

—न० भा० टा० १० अप्रैल से साभार

हिन्दुत्व की अवधारणा और आर्य समाज (२)

प्रो० भवानी लाल भारतीय

किन्तु मैं यहां यह अवश्य स्पष्ट कर दू कि वेदो को सर्वोपरि प्रामाण्य समझने या उन्हें प्रमुख धर्मग्रन्थ मानने की अवधारणा न तो बाइबिल या कुरान के अनुकरण पर की गई और न इन दोनो धारणाओं में कोई साम्य ही है। बाइबिल और कुरान तद् तद् मजहब के मान्य पैगम्बर के साथ जुड़ी हैं जबकि वेदो का प्रस्तोता कोई एक व्यक्ति या मसीहा नहीं था। आलोच्य लेख के लेखक ने लिखा है कि एक दौर ऐसा भी आया जब "यस्य निश्वसितं वेदा" कह कर वेदों को ईश्वर की वाणी मान लिया गया। इतना ही नहीं संस्कृत को भी ईश्वरीय वाणी मान लिया गया।" क्षमा करें, वेद को ईश्वर का निश्वास तो कहा गया और संस्कृत को देववाणी भी कहा गया किन्तु ईश्वरीय वाणी नहीं। संस्कृत देववाणी किस अर्थ में है, यह पृथक विचारणीय है। लेखक का यह भ्रम तो शोचनीय है जब वह कहता है कि 'वेदों को ईश्वरीय वाणी मानना किसी सांस्कृतिक आक्रमण से रक्षा के लिए एक सुरक्षा कवच मानने के तुल्य ही था।" अब इसका उत्तर क्या दिया जावे जो वेद प्रामाण्यवाद के उस सिद्धान्त से ही अपरिचित हो जो अत्यन्त प्राचीन समय से सनातन अविच्छिन्न प्रवाह की भांति प्रचलित है। जिस समय वेद प्रामाण्य के सिद्धान्त तथा उसे वैदिक सनातन पद्धति का प्रमुख प्रमाणभूत धर्म ग्रन्थ माना जाना आरम्भ हुआ उस समय इस देश की आर्य जाति को न तो किसी सांस्कृतिक आक्रमण का ही भय था और न ईसाइयत तथा इस्लाम आदि सामी मजहबों का संसार में प्रादुर्भाव ही हुआ था। वेदो को सर्वोपरि प्रामाणिक धर्मग्रन्थ मानना, शास्त्रीय विवेचना का प्रश्न था न कि किसी विदेशी सांस्कृतिक आक्रमण से हिन्दू जाति के बचाव का उपाय।

जब वैशेषिक दर्शन के प्रणेता आचार्य कणाद ने "तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्" कह कर वेदों को ईश्वर वचन स्वीकार किया और उसके प्रामाण्य की घोषणा की तो क्या वे ईसाई आक्रमण से भयभीत होकर वेदो को ऐसी संज्ञा दे रहे थे। जब महर्षि गौतम ने आयुर्वेद की उपमा देकर वेदों को आप्त वाक्य कहा तो क्या वे कुरान की तुलना में वेदों को आर्यों का धर्मग्रन्थ घोषित करना चाहते थे। इसी प्रकार ब्रह्मसूत्रकार ने शास्त्रयोनित्वात् और सांख्य प्रणेता कपिल ने अतएव च नित्यत्वम् कह कर वेदो को ब्रह्म से उद्भूत नित्य ज्ञान बताया तो क्या वे किसी विदेशी आक्रमण से भयभीत होकर वेदों को नित्य धर्म ग्रन्थ की संज्ञा दे रहे थे।

इतना ही नहीं जब शंकराचार्य ने संत वेदान्त सूत्र की व्याख्या करते हुए यह लिखा—"ऋग्वेदादेः शास्त्रस्यानेकविद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत्सर्वार्थावद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनिः कारणं ब्रह्म। नहीदृशस्य शास्त्रस्यर्ग्वेदादिलक्षणस्य सर्वज्ञगुणान्वितस्य सर्वज्ञादन्यतः सम्भवोऽस्ति।' अर्थात् ऋग्वेदादि जो चारों वेद हैं वे अनेक विद्याओं से युक्त हैं, सूर्य के समान सब सत्य अर्थों का प्रकाश करने वाले हैं। उनका बनाने वाला सर्वज्ञादि गुणों से युक्त परब्रह्म है, क्योंकि सर्वज्ञ ब्रह्म से भिन्न कोई अन्य इन सर्वज्ञ गुण युक्त वेदो को बना सके, यह सम्भव नहीं है। तो क्या हम यह मान लें कि शंकर ने ब्रह्मसूत्र भाष्य में जो वेदों को ईश्वर निश्वसित माना तथा ऋग्वेदादि शास्त्रों को सर्वज्ञ ईश्वर प्रणीत कहा तो वह किसी सैमेटिक मजहब के सांस्कृतिक हमले के प्रभाव से बचने और उन्हीं मजहबों में मान्य इलहामी पुस्तकों के तुल्य आर्य हिन्दुओं को भी वेद जैसी इलहामी किताब देने के इरादे से कहा था। अकेले शंकर ही क्यों—रामानुज, मध्व, निम्बार्क, वाचस्पति मिश्र आदि की आचार्य परम्परा से लेकर राममोहन राय, दयानन्द और विवेकानन्द तक के सुधारवादी आचार्यों तक की परम्परा वेदों को ईश्वर निश्वसित मानती है, तो क्या वह केवल किसी तथाकथित सांस्कृतिक आक्रमण के भय से ही उन्होंने ऐसा कहा या माना था। यहां वेद के नित्यत्व और ईश्वर कर्तृत्व अथवा अपौरुषेय होने की सत्यता या असत्यता का प्रश्न हम नहीं उठा रहे हैं। यह एक जुदा सवाल है जिसकी विस्तृत मीमांसा अपेक्षित है। किन्तु यह मीमांसा भी बादरायण, जैमिनि, शंकर, वाचस्पति और उदयन की कोटि के दार्शनिक ही करेंगे समाचार पत्रों के स्तम्भ लेखक नहीं।

लेखक ने यह तर्क दिया है कि वेदो को ईश्वर प्रणीत मानने की धारणा का तब प्रचलन हुआ जब अपनी बात को समझाने के तर्क खत्म हो गये। प्रकारान्तर से वह यह कहना चाहता है कि वेदों को ईश्वरीय ज्ञान फलतः धर्म-ग्रन्थ तभी स्वीकार किया गया जब हमारी तर्क शक्ति कुण्ठित हो गई। अब इस लेखक को आर्य चिन्तन में तर्क का क्या महत्व है या रहा, यह भी बताना होगा। निश्चय ही आर्यों का धार्मिक चिन्तन मताग्रह या अन्ध विश्वासों पर कभी स्थापित नहीं रहा। यहां तो तर्क को ऋषि की संज्ञा दी गई (यास्कीय निरुक्त) और मनु जैसे कट्टर वेदानुयायी स्मृतिकार ने भी स्पष्ट घोषणा की-यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः। जो तर्क के द्वारा धर्म का अनुसंधान करता है वही उसके तत्व को जान पाता है, अन्य नहीं। क्या वेदों को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करने वाले वाचस्पति और उदयन जैसे दार्शनिक कम तार्किक थे। उन्हीं ईश्वरवादी या वेदवादी दार्शनिकों ने अपने प्रबल तर्कों के द्वारा ही वेद विरोधी बौद्धो की युक्तियो का खण्डन कर वैदिक आस्तिकता तथा वेद-प्रामाण्य की सुदृढ़ स्थापना की थी।

भारत के जिन दार्शनिको, विद्वानो, धर्माचार्यों प्रवर्तकों तथा आध्यात्मिक पुरुषो ने वेद को ईश्वर की वाणी कहा, क्या वे अज्ञान और अन्ध विश्वास मे जकड़ी भारत की प्रजा को ठगने वाले थे? भला लेखक की इस बात पर कौन विश्वास करेगा कि कपिल, कणाद जैमिनि, व्यास, पतंजलि और शंकर ने भोली और अन्धविश्वासग्रस्त प्रजा को ठगने और बहकाने के लिये ही वेदो को ईश्वरीय वाणी कह कर प्रचारित किया। लेखक के इस सारे वैचारिक वितण्डावाद का एक मात्र कारण यह है कि वह भारतीय धर्म मे मान्यता प्राप्त वेदो को सामी मजहबो में खुदाई किताब (खुदा का कलाम) समझी जाने वाली कुरान और बाइबिल जैसी कृतियों के समकक्ष रखता है। उसे यह समझना चाहिए कि इन सैमेटिक मजहबो की खुदाई किताब की मान्यता तथा भारतीय वैदिक परम्परा में वेदो को प्राप्त मान्यताओं में मौलिक अन्तर है। इसी तथ्य को न समझने के कारण वह एक और गलती कर बैठता है, जब कहता है कि इस देश में वेद तो क्या किसी भी ग्रन्थ को बाइबिल या कुरान जैसा रुतबा नहीं मिला। लेखक रुतबा मिलने का क्या अर्थ करता है। अगर उसके इसका यह अर्थ है कि हमारे यहां वेदो की अवज्ञा करने वालो को नास्तिक, काफिर तथा धर्मद्रोही कह कर उनकी गरदन काटने या फांसी देने का फतवा जारी नहीं किया गया तब तो इसे स्वीकार करने मे हमें कोई आपत्ति नहीं। ऐसे धर्म ग्रन्थ का लेकर कोई क्या करेगा? (क्रमश)

समस्त फाइलें हिन्दी मे ही प्रस्तुत की जाएं

संयोजक राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत को हिन्दी के प्रयोग के लिए कुछ सुझाव लिखकर भेजे थे। उत्तर में राजस्थान सरकार के भाषा विभाग के निदेशक ने अपने ५ मार्च १९९४ के पत्र संख्या-३(१४) ११-भा वि पर्व १(९३)/ ९१५ द्वारा सूचित किया कि परिषद के सुझाव हिन्दी के पूर्ण प्रयोग की दिशा में अत्यन्त उपयोगी हैं राजस्थान स्थित स्वायत्तशासी संस्थाओ में भी हिन्दी का प्रयोग हो उसके प्रयत्न किये जा रहे हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी ने समस्त शासन सचिवों को भी निर्देश दिए हैं कि उनके पास प्रस्तुत होने वाली समस्त फाइलें हिन्दी मे ही प्रस्तुत की जाए।

धन्यवाद

संयोजक, राजभाषा कार्य

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद

नई दिल्ली—११००२३

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहको की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजी जा रही है। ग्राहक कृपया डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज और शुद्धिकरण

त्रिलोक नाथ बजाज, मेहली गेट फगवाड़ा (पंजाब)

आर्य समाज के रविवारीय सत्संग में यज्ञमय जीवन की महिमा और गरिमा के सम्बन्ध मे वार्तालाप हो रहा था। यज्ञमय जीवन ही श्रेष्ठ होता है। निस्सन्देह यज्ञमय जीवन का निर्माण करने के लिये कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वैदिक संस्कृति, वैदिक धर्म और वैदिक सभ्यता के आदर्शों, सिद्धान्तों, मान्यताओं और विचारों के अनुरूप ही जीवन दृष्टि का निर्माण करना होता है। ऐसे ही महान प्रेरकों में प० लेखराम का नाम उल्लेखनीय और स्मरणीय है जिन्होंने हिन्दुत्व की रक्षा के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दिया।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिये कष्ट सहन कर लेते हैं। कई लोग ऐसे होते हैं जो अपने एवं दूसरों के हितों की रक्षा के लिये तकलीफें सहन कर लेते हैं। कई लोग ऐसे होते हैं जो केवल दूसरों की भलाई के दृष्टिगत मुसीबतों का सामना करते रहते हैं। इन्हीं महान विभूतियों का जीवन यज्ञमय होता है। यही लोग निस्वार्थी होते हैं। प० लेखराम का जीवन चरित्र भी ऐसा ही था। और अनुकरणीय था।

घर मे बच्चा बीमार था। हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन का सन्देश मिला। तत्काल परिवार को उसी स्थिति मे छोड़कर हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये घर से निकल गये। यह था परमार्थ। यह था यज्ञमय जीवन। यह थी हिन्दुत्व की रक्षा मे उनकी भूमिका। उनका योगदान। ये थे स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों के दीवाने इसके विपरीत हम उन कार्यों को प्राथमिकता देते हैं जिसमे हमारा प्राय अपना स्वार्थ हो

ईसाई मिशनरियों ने हिन्दुओं के प्राचीन रीति रिवाजों के विरुद्ध जेहाद छेड़कर कहा था कि वे भारत को अन्धविश्वासों से निकालकर उन्हें सभ्य बनाने के लिये आये हैं। परन्तु भारतीय मनीषी दयानन्द और ऋषि भक्त प० लेखराम के प्रेरणादायक जीवन से प्रेरणा लेकर भारतीय विचलित नहीं हुए। वे हिन्दू समाज को यहूदी और ईसाई संस्कृति में रंग देना चाहते थे परन्तु तत्वदर्शी महर्षि दयानन्द और राष्ट्रनायक प० लेखराम जैसे व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर वैदिक धर्म की विशेषताओं से वंचित न हो सके।

आज धर्म परिवर्तन और शुद्धिकरण का दूसरा रूप परिवर्तित होकर सम्मुख आया है। आज विदेशी शक्तियां भारतवासियों की निर्धनता का, निरक्षरता का, पिछड़ेपन का और उनकी विवशताओं का लाभ उठाकर उन्हें कई प्रकार के प्रलोभन देकर उनका धर्म परिवर्तन कर रही हैं। वर्तमान परिस्थितियों मे हवन आदि करवाकर उनका शुद्धिकरण सम्भव नहीं। इसका उत्तर उसी विधि से दलितों पिछड़ी श्रेणियों को जीवन निर्वाह की सुविधाओं को उपलब्ध करा कर ही दिया जाना एक आदर्श परम्परा को स्थापित करना होगा। वैदिक संस्कृति के रक्षक स्वर्गीय लेखराम के स्वप्नों को इसी विधि से साकार करना होगा। ये काम राजनीतिक दल नहीं करेंगे। हमारे धर्म गुरु शंकराचार्यों के लिये भी बड़ा कठिन होगा। इस कार्य को केवल उपदेशात्मक ढंग से करना सम्भव नहीं होगा। इसको सुधारक रूप से और क्रियात्मक रूप से करने के लिये प्रयासरत और संघर्षरत होना पड़ेगा। यह कार्य आर्यसमाज और समाजसेवी संगठनों को ही करने का बीड़ा उठाना पड़ेगा।

आज सारा देश जातिवाद से चिन्तित है। वर्णव्यवस्था जातिवाद में परिवर्तित हो चुकी है। हिन्दू राष्ट्र का नारा लगाने वालों और मन्दिरों का निर्माण करने वालों मे भी आज अपनी जनजागरण यात्राओं में डा० अम्बेडकर और बिरसा मुंडा के चित्र लगाने का निर्णय लिया है। इस राजनीति के नये अध्याय में निश्चित रूप से मुलायमसिंह यादव और कांशीराम की ताकत का खौफ छिपा हुआ है जातपात मिटाने और समता के साथ ममता का नारा सुरक्षित रखा है ऐसा करना कोई अनुचित तो नहीं है। परन्तु केवल जनजागरण यात्राओं से जातिवाद को समाप्त करने के लक्ष्य को पूरा करना पर्याप्त नहीं होगा। हिन्दू राष्ट्र के नारे लगाने मे भी नहीं होगा।

धर्म मे राजनीति को प्रवेश करने से क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति केवल अस्थायी रूप से हो तो सकती है। परन्तु इसके भयानक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। धार्मिक कट्टरवाद की प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य में ही तमाम अल्पसंख्यक, दलित, पिछड़ वर्ग, दूसरे धार्मिक समुदाय राजनीतिक वर्चस्व प्राप्त करने के लिये सक्रिय हो गये हैं। एक मंच पर एकत्रित होने आरम्भ हो गये हैं। इस राजनीतिक परिवर्तन में हर प्रान्त में सहायक व्यक्तियों की खोज जारी है आज देश की राजनीति ने नया मोड़ ले लिया है। राजनेताओं ने भी इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है तथा अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के लिये वित्तमन्त्री मनमोहनसिंह ने अपने बजट का दान ४३ करोड़ से बढ़ाकर ७६ करोड़ कर दिया है।

आर्य समाज कोई राजनीतिक दल नहीं है। वह तो जातपात को समाप्त करने के लिये और वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिये सामाजिक और धार्मिक उपाय कर सकता है और और पिछड़ी श्रेणियों के जीवन स्तर के उत्थान के लिये प्रयासरत है। ये पग बड़े सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। आर्य समाज ने अनेक जगहों पर पिछड़े और वनजाति क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के अतिरिक्त, पिछड़े वर्ग के उत्थान के अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्यक्रम आरम्भ किए हैं। हरिजनों और कमजोर वर्ग के छात्रों को मुख्यधारा में शामिल करने की घोषित राष्ट्रीय नीति का भी इस संगठन ने परिपालन शुरू किया है। दिल्ली के हंसराज माडल स्कूल मे प्रतिवर्ष ८० विद्यार्थी प्रवेश किए जाते हैं। जिन्हें निशुल्क शिक्षा, परिवहन, पुस्तकें वर्दियां और भोजन दिया जाता है। आगामी पांच वर्षों में कम से कम पचास डी ए वी स्कूलों मे दस हजार विद्यार्थियों को निशुल्क शिक्षा व अन्य सुविधायें प्राप्त हो सकें। यह योजना है।

यह लक्ष्य भी प० लेखराम के आदर्शों सिद्धान्तों को कार्यरूप देने का ही प्रतिबिम्ब है। उपयुक्त अर्थों मे हिन्दुत्व की रक्षा का ही परिपालन है। इन दिनों एक खतरनाक मुहिम चल रही है। ऊपर से देखने में तो दलित बन्धुओं के हित में दिखाई देती है पर वास्तव मे उनके लिए अनिष्टकारी है। पिछले दिनों राज्य सभा मे कुछ नेताओं ने यह मांग की कि जो दलित बन्धु धर्म-परिवर्तन करके ईसाई आदि बन जाते हैं, उन्हें भी आरक्षण का लाभ व सुविधायें मिलनी चाहियें। इस मांग का विरोध करना चाहिये। यदि धर्म परिवर्तन करने वाले लोगों को भी यह सुविधाएं मिल गईं तो वह धर्म-परिवर्तन न करने वाले दलित भाइयों से बहुत अधिक शक्तिशाली और लाभदायक स्थिति मे हो जायेंगे। न केवल आर्य समाज बल्कि अन्य समाजसेवी संगठनों का प्रथम कर्तव्य है कि विदेशी शक्तियों की कुटिल मंशा को समझने का यत्न करें। आज दलितों के नेता भी यह कहने लगे हैं कि उन्हें आरक्षण की आवश्यकता नहीं है। उनके कथनानुसार वे उसी क्षमता और कार्यकुशलता से आगे बढ़ना चाहते हैं जिस प्रकार उच्च वर्गों के लोग बढ़ रहे हैं। बातें तो वे नेता बड़े स्वाभिमान की करते हैं। परन्तु एक बात का अवश्य ध्यान रखना होगा कि देश मे कोई जातीय कटुता पैदा न हो और जिस जातीय संघर्ष की आशंका व्यक्त की जा रही है वह न होने पाये। आर्य समाज ने यदि वर्ण व्यवस्था को स्वीकार किया और सब को समान अधिकार प्रदान करने का आह्वान किया तो जन्म के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर किया है। यदि दलित, पिछड़ी श्रेणियां अपनी योग्यता के अनुसार आगे बढ़ना चाहती हैं तो आर्य समाज के लिये यह हर्षोल्लास का विषय है। आर्य समाज इस विचार धारा का सम्मान करेगा।

मानवता का अमर पुजारी—
पंडित रामचन्द्र देहलवी

—कविरत्न—जगदीश प्रसाद 'एरन' नीमच

'यों तो इस जहां में लाखों ही आये गये।
किन्तु रोशन कर गुलिस्तां देहलवी होकर गये।।

जब सारे भारत वर्ष मे भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था, नीमच मे भी एक महापुरुष ने जन्म लिया। आर्य जगत के इस महान तार्किक शास्त्रार्थ महारथी को पण्डित रामचन्द्र देहलवी के नाम से जाना जाता था। आर्य जगत में ही क्या सारे भारत मे आपकी विद्वता, तार्किक शैली मीठी जुबानी, अथक परिश्रमी व धुन के धनी होने के कारण प्रसिद्धी थी। आप अंग्रेजी हिन्दी संस्कृत अरबी तथा फारसी के पूर्ण विद्वान थे। आपने वैदिक साहित्य के साथ साथ हिन्दू व जैन, सनातनी, मुस्लिम व ईसाई धर्म का भी पूर्ण मन्थन किया था।

इस महान विभूति का जन्म सन १८८१ मे राम नवमी के पवित्र दिन मालवा के हृदयनगर नीमच (म०प्र०) मे हुआ था। आपके पूज्य पिता मुंशी श्री छोटे लाल जी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपकी माता श्रीमती रामदेई दिल्ली की रहने वाली थी। पण्डित रामचन्द्र जी को आर्य समाजी बनाने का श्रेय इन्हीं को है। आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा नीमच मे ही ग्रहण की तथा बाद मे उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु इन्दौर चले गये।

१८ वर्ष की अल्पायु में ही आपका विवाह दिल्ली निवासी श्रीमती कमला देवी नामक, विदुषी कन्या से हुआ। जीविकोपार्जन के लिए आपने नीमच में ही एक प्राइमरी स्कूल में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। किन्तु परमात्मा को जिस विभूति से महान कार्य करवाने हो वह एक जगह कैसे ठहर सकती है। गृह कलह के कारण कुछ दिन बाद आप अपनी ससुराल देहली चले गए।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। फिर भी धर्म प्रचार के लिए जहां कहीं भी जाते तांगा खर्च अपनी जेब से देते थे। धर्म प्रचार की ऐसी लगन थी कि लगातार १५ वर्ष (सन १९१० से १९२५) तक दिल्ली के फव्वारे तथा गांधी ग्राउण्ड पर आप वैदिक धर्म के सत्यस्वरूप को बतलाते रहे। प्रतिदिन हजारो की संख्या मे उपस्थिति रहती। धुन के इतने पक्के थे कि पुत्र तथा पत्नी के देहावसान के दिन भी आपने कथा बन्द न रखी। इस काल मे पण्डित जी की तार्किक शैली, तुरन्त बुद्धि व कार्य प्रणाली का बोलबाला सारे भारत में हो गया।

नीमच के आपके परम मित्र श्री राम निवास जी एरन जिन्हें आलिम

(शेष पृष्ठ १० पर)

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, सैक्टर २२ चण्डीगढ़ का ३१ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ४ से १० अप्रैल ९४ तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर महात्मा आर्य भिक्षु जी द्वारा प्रतिदिन सायंकाल वेद प्रवचन हुआ तथा ९ १० अप्रैल को मुख्य समारोह सम्पन्न हुआ। शनिवार प्रातःकालीन सभा मे आर्य महिला सम्मेलन हुआ। रविवार १०-४-९४ को एक विशाल सम्मेलन 'वेद और विज्ञान' विषय पर हुआ जिसकी अध्यक्षता डा० राम प्रकाश, एम०एल०ए० भू०पू० राज्यमन्त्री, हरियाणा सरकार ने की। इस स मेलन मे आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय, आचार्य रामप्रसाद जी वेदालंकार, प्रो० राम विचार जी, भगवान देव जी चैतन्य ने अपने ओजस्वी व गूढ विचारो से लोगो को आनन्दित किया। इस सम्मेलन का संयोजन डा० विक्रम विवेकी, पंजाब विश्वविद्यालय ने किया था। मध्यान्तर मे एक विशेष गोष्ठी "आज की परिस्थितियो मे आर्य समाज की अनिवार्यता' का आयोजन भी किया गया। चण्डीगढ़ की समस्त आर्य समाजो के सदस्यो एवं सैकड़ो की संख्या में सामान्य जनता ने इसमे भाग लिया। दोनो दिन विशाल ऋषि लंगर का आयोजन किया गया तथा सायंकाल जलपान भी दियागया। इतने विशाल स्तर पर चण्डीगढ़ म कभी भी ऐसा उत्सव पहले नही मनाया गया।

राजेन्द्र सेठी, प्रधान

पण्डित रामचन्द्र देहलवी

(पृष्ठ ९ का शेष)

फाज़िल होने के कारण लोग बाद में मौलवी साहब (लेखक के पूज्य पिता जी) कहने लगे थे इनके साथ बैठकर आपने जामा मस्जिद के एक अपंग मौलवी से बड़ी कठिनाई से उर्दू व कुरान पढ़ी। दोनों ही मित्रों को पूरी कुरान अरबी तथा उर्दू ज़बानी याद हो गई। उस समय कुछ लोग अन्य मतावलम्बियों को कुरान पढ़ने देने के पक्ष में नहीं थे, किन्तु विद्याध्ययन की दोनों ही मित्रों के मन में ऐसी ललक थी कि एक मित्र रात होने पर कन्धे पर बैठा कर उन्हें अपने घर ले जाते। दोनों ही बड़ी श्रद्धा से उन मौलवी के चरणों में बैठकर विद्याध्ययन करते तथा प्रात काल होने से पूर्व दूसरा मित्र फिर मौलवी साहब को कन्धे पर बैठाकर मस्जिद मे छोड़ आता। यह क्रम लगातार दो वर्षों तक चला। इसी प्रकार बड़ी कठिनाई से आपने बाईबिल का व अन्य मतावलम्बियों के ग्रन्थों का अध्ययन किया।

आप जब सस्वर आयत पढ़ते थे तो अच्छे अच्छे मौलवी दांतों तले अंगुली दबा लेते थे। फिरोजपुर के वार्षिकोत्सव पर तो इसी लिए एक पठान लड़की ने आपके सस्वर आयत पढ़ने पर मुग्ध होकर १००) रु० उस समय भेंट किए।

आपका पहला शास्त्रार्थ बाड़ा हिन्दू राव में मुसलमानों से हुआ, जिसके निर्णायक न्यायाधीश रोमऐड मिस्टर जुडाय थे। विजय का सेहरा आपके मस्तक पर बधा। आप वैदिक शास्त्रार्थ समर मे 'ओम नाम से प्रसिद्ध हुए। इसके बाद आपने जीवन भर भारत के प्रत्येक शहर मे घूम घूमकर विविध मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ किए। आपकी सफलता के मुख्य तीन कारण थे--

(१) आपको सभी सिद्धांतो का सही व गम्भीर अध्ययन था।

(२) आप विपक्ष की धार्मिक पुस्तकों, उनके महापुरुषों व औलियों को बड़े सम्मान सूचक शब्दों से सम्बोधित करते थे।

(३) आपने अपने व्यवहारिक जीवन में वैदिक सिद्धांतो के अनुकूल आचरण किया। आप दूसरों के लिए कहते थे स्वय आचरण करते थे।

आपका व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था। गोर वर्ण ऊंचे पूरे कद के कटार छाप मूछे, सर पर सफेद साफा, घुटनों तक की अचकन, चूड़ीदार पायजामा जरीदार जूतियां, आंखों पर सुनहरी फ्रेम की ऐनक, जेब मे रजत चेन की घड़ी व हाथ में मूठदार छड़ी, यही आपकी पहचान थी। आपके चेहरे पर रौनक व मुस्कराहट सदा खेलती रहती, खड़े होते थे तो हजारों में एक ही नजर आते थे। वाणी मे मिठास, ओजस्विता व हृदय में विशालता ईश्वरीय देन थी।

लगभग ८० वर्ष की आयु तक घूम घूम कर सारे भारत में आप धर्म ध्वजा फहराते रहे। हैदराबाद सिन्ध का राष्ट्रीय सत्याग्रह आप ही की देन था। धर्म प्रचार के दौरान ही एक रिक्शा दुर्घटना के कारण आपके हाथ में कम्पन हो गया, तभी से पण्डित जी लगातार कमजोर होते चले गये।

सन १९६७ में आपको सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान प्रधान परिव्राजक श्री आनन्दबोध जी सरस्वती ने देहली अस्पताल मे भरती करवाया। लगातार तीन माह तक मृत्यु से संघर्ष करते रहने के पश्चात २ फरवरी को यह ज्योति दीप बुझ गया। सारे संसार को आकाशवाणी से यह सूचना मिल गई—वैदिक धर्म का प्रबल प्रहरी शास्त्रार्थ केसरी महर्षि दयानन्द का अनन्य भक्त ओ३म् का जाप करता हुआ ओ३म् में विलीन हो गया। निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक पद्धति से उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

आर्यसमाज बैंकाक में शुद्धि-समारोह

मेरा प्रचार कार्य और एक अनुभव

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज बैंकाक को स्थापित हुए ७४ वर्ष पूर्णकर ७५वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। आर्यसमाज के पदाधिकारी अपने संगठन को यथाशक्ति चला रहे हैं। पर्व-यज्ञादि सत्संग होते ही रहते हैं।

विशेष आयोजन

भारतीय दूतावास की दृष्टि में आर्यसमाज की उपयोगिता थाईलैण्ड-दूतावास के प्रथम सचिव माननीय श्री विनोद फोनिया जो यहां से पूर्व इण्डोनेशिया दूतावास में थे।

यहां ही इण्डोनेशियायी कु० आर० ईडा रुकेदा (दांत की डाक्टर) का परिचय हुआ, और दोनों ने परस्पर जीवन साथी बनने का निश्चय किया। उनके माता-पिता भी वैवाहिक सम्बन्धों मे बंधने हेतु तैयार हो गये।

श्री फोनियां जी ने आर्यसमाज बैंकाक के अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित किया। परिणामत: २४ अक्टूबर ९३ को आर्यसमाज मन्दिर में वैदिक रीति से यज्ञ वेदी पर कु० रुकेदा का शुद्धि संस्कार कर नाम करण श्रीमती इन्दिरा फोनिया नाम से विभूषित किया गया। और विवाह संस्कार की विधि पं० मारकण्डेय तिवारी ने सम्पन्न कराई।

आर्यसमाज मन्दिर के विशाल प्रांगण में यह समारोह पूर्ण हुआ जिसमें भारतीय दूतावास के सभी अधिकारी सम्मिलित हुए। डा० बी० एस० सेषाद्रि (कौंसिलर) ने कन्यादान की विधि पूर्ण की।

महामहिम दूतावास-राजदूत श्री ए० एन० राम व श्रीमती राम ने पिता-माता के रूप में वर-वधू को आशीर्वाद व शुभ कामनायें दी।

आर्यसमाज के प्रधान श्री रामपलट पाण्डेय तथा अन्य अधिकारी दूतावास से सम्पर्क रखते हैं।

मेरे प्रवास काल में उनके कार्यालय में तथा दो बार आर्यसमाज मन्दिर में दूतावास के अधिकारी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

शुद्धि संस्कार तथा विवाह कार्य विदेश में अपने में एक अनूठी घटना है। दूतावास के अधिकारी व आर्यसमाज के अधिकारी गणों को सार्वदेशिक सभा की ओर से बधाई दी गई।

लास एंजलस दक्षिणी कैलीफोर्निया में आर्यसमाज स्थापना दिवस

वैदिक धर्म समाज लास एंजलस दक्षिणी कैलीफोर्निया में आर्य समाज स्थापना दिवस तथा नव विक्रमी संवत २०५१ बड़े उत्साहपूर्ण ढग से रविवार १० अप्रैल को प्रात: १०.३० बजे मनाया गया। इस शुभावसर पर महायज्ञ का आयोजन किया गया। प्रो० सत्यपाल शर्मा जी के ब्रह्मत्व में ओ३म् की ध्वनि से यज्ञ आरम्भ हुआ। चारों दिशाओं में बैठे भारतीय वेश भूषा तथा केसरिया पगड़ी धारण किए हुए पंडित/पंडिता ने विशेष वेदमन्त्रों द्वारा यज्ञ में आहुतियां दी। पंडित मदनलाल गुप्ता ने उपस्थित जनता से पुराने वर्ष के भेद भाव भुलाकर नए वर्ष में आपस मे प्रेमपूर्वक मिल जुल कर रहने की प्रार्थना की, इस शुभावसर पर अंग्रेजी भाषा में भी विश्व शान्ति के लिए प्रार्थना की गई, नया वर्ष पूरे विश्व के लिए कल्याणकारी हो। प्रो० सत्यपाल शर्मा वेद शिरोमणी ने आर्य समाज के स्थापना दिवस तथा विक्रमी संवत के विषय मे विशेष जानकारी आर्य जनता को दी। इसी अवसर पर वैदिक धर्म समाज के संस्थापक श्री बालकृष्ण शर्मा जी ने परीक्षार्थियों को रोल न० देकर आशीर्वाद दिया जिन्होंने स्वामी दयानन्द निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लेने का उत्साह प्रगट किया।

छोटे छोटे बच्चों के एक समूह ने गायत्री मन्त्र का पाठ किया, इन सब बच्चों को पुरस्कृत किया गया। डा० यश मनचन्दा जी ने उपस्थित जनता का धन्यवाद किया। गुयाना देश के भारतीयों ने सामूहिक रूप से आरती की। इस अवसर पर बहुत सा वैदिक साहित्य प्रचारार्थ बांटा गया। अन्त में सभी उपस्थित सज्जनों ने ऋषिलंगर में स्वादिष्ट भोजन का प्रसाद प्राप्त किया।

—मदन लाल गुप्ता

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उप-सभा पटपड़गंज दिल्ली के तत्वावधान में

आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह

आर्य समाज खिचड़ीपुर कालोनी द्वारा 'आर्य समाज स्थापना दिवस' आर्य समाज मन्दिर खिचड़ीपुर एवं अम्बेडकर पार्क कल्याणपुरी में बड़े उत्साह-पूर्वक २७ अप्रैल से १ मई तक मनाया जायेगा। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में माननीय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री साहब सिंह वर्मा जी, विकास व शिक्षा मन्त्री, दिल्ली राज्य, श्री बैकुण्ठ लाल शर्मा 'प्रेम' सांसद, श्री एच. के. एल. भगत, पूर्व सांसद, श्री सूर्यदेव जी, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा डा० धर्मपाल, कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय, हरिद्वार और आर्य जगत के प्रसिद्ध महोपदेशक एवं भजनीक पधार रहे हैं। इस अवसर पर २७-२८ अप्रैल को प्रात: प्रभातफेरी तथा २९ व ३० अप्रैल को आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री ओमवीर जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया है। २९-३० अप्रैल को रात्रि में श्री ओमवीर जी शास्त्री द्वारा उपदेश तथा श्री चुन्नीलाल जी द्वारा भजनोपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस समारोह के सभी कार्यक्रमों में सपरिवार तथा इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्म लाभ उठावें।

पतराम त्यागी
मन्त्री
क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उप-सभा पटपड़गंज

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ८७ वां वार्षिकोत्सव राष्ट्र रक्षा, शिक्षा, आर्य, वेद एवं आयुर्वेद एवं कवि सम्मेलन के साथ सम्पन्न हुआ।

इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी देते हुए डा० अजय कौशिक सह कुल-सचिव ने बताया कि राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने की जिसका सफल संयोजन संस्था के प्राचार्य डा० हरिगोपाल शास्त्री ने किया। इस अवसर पर सभी वक्ताओं ने राष्ट्र रक्षा के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत किए।

वेद एवं आयुर्वेद सम्मेलन में वक्ताओं द्वारा वेदों के माध्यम से समाज में एड्स जैसे रोगों से बचने के उपाय बताए। इसी अवसर पर हवन का विशेष आलोच्य विषय रहा। इसका संयोजन प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री ने किया।

शिक्षा सम्मेलन में डा० आर. के. शर्मा, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, डा० पदमसिंह चौहान, आचार्य रामकिशोर, प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री आदि ने शिक्षा को व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का साधन बताया।

समापन समारोह पर संस्था के प्राचार्य डा० हरिगोपाल शास्त्री ने संस्था की उपलब्धियों की जानकारी दी साथ ही संस्था के मुख्याधिष्ठाता डा० यशवन्त सिंह चौहान ने सभी को धन्यवाद दिया।

राजनीति में प्रवेश पर विचार

(पृष्ठ १ का शेष)

भाषण में उन्होंने आजादी की लड़ाई के दौरान और बाद में आर्य समाज द्वारा किये गये सामाजिक और राजनीतिक कार्यकलापों पर प्रकाश डाला। श्री चरतीलाल ने कहा कि जीवित संस्थाओं में हमेशा सुधार की संभावना रहती है। आर्य समाज मे आज जो गतिहीनता की स्थिति पैदा हो गई है। उसे दूर किया जाना चाहिए। इसके लिए आर्य समाजियों को नये उत्साह के साथ देश के निर्माण में आगे आना चाहिए।

(नवभारत टाइम्स २१/४-९४ से उद्धृत)

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज बाजार सीताराम, दिल्ली का ७४ वां वार्षिकोत्सव सोमवार २५ अप्रैल से रविवार १ मई, १९९४ तक आर्य समाज मन्दिर में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। २५ से २९ अप्रैल-९४ तक रात्रि ८-१० से ९-३० बजे तक आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान पं० प्रेमचन्द श्रीधर जी मनोहर वेद कथा करेंगे। कथा से पूर्व सायं ७-४५ से ८-३० बजे तक श्री नरदेव जी आर्य भजनोपदेशक (भरतपुर) एवं संगीताचार्य श्री छोटेलाल जी गुप्त भास्कर (सहारनपुर) द्वारा मधुर भजन होंगे। उत्सव का विशेष कार्यक्रम ३० अप्रैल तथा १ मई, १९९४ को होगा जिसमें राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, संस्कृति सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्यकुमार सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है।

बाबूराम आर्य, मन्त्री

—आर्य समाज आरा का ५ दिवसीय १०२ वां वार्षिकोत्सव वैदिक संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम ७ से ११ अप्रैल तक चला। जिसमें देश के उच्चकोटि के विद्वानों एवं संन्यासियों ने भाग लिया। हजारों की संख्या में श्रोताओं ने बड़ी ही निष्ठा एवं श्रद्धा से आयोजन मे भाग लिया।

५ दिवसीय कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द वेद भिक्षु ने कहा कि हमें यज्ञ की भावनाओं तथा धर्म की विचार धारा को समझने की आवश्यकता है। इसके लिए एकमात्र महर्षि दयानन्द की ओर लौटकर ही ससार का भला किया जा सकता है। स्वामी सत्यानन्द सरस्वती ने धर्म निरपेक्ष नीति को छोड़कर धर्म को जानने की आवश्यकता बतायी। भजनोपदेशक श्री सीताराम ने भजनो के द्वारा आहार शुद्धि तथा विचार शुद्धि के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मनु प्रसाद आर्य तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री कामता प्रसाद आर्य ने किया श्री बद्री प्रसाद ने अतिथियों का स्वागत किया।

—प्रधान, आर्य समाज, आरा

—आर्य समाज जौनपुर का ६४ वा वार्षिकोत्सव दि० ९ से १२ अप्रैल तक मनाया गया जिसमे श्री पं० प्रशस्य मित्र शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत विभाग श्री प० महेन्द्रपाल जी आर्य आलिम फाजिल एवं श्रीमती राजबाला आर्या ठा० इन्द्रदेव सिंह जी, ठा० महिपाल सिंह जी, प० पारसनाथ जी शास्त्री ने भाग लिया दि० १२ अप्रैल को श्रीमती राजबाला आर्या की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन भी हुआ।

—तारानाथ, प्रधान

चारों वेदों, मूल संहिताओं का भव्य प्रकाशन

इस समय चारो वेदो का मूल्य ३२०.०० रुपये है। हम एक जिल्द में चारों वेद केवल २५०.०० रुपये मे देंगे। यह मूल्य लागतमात्र है और ३० जून, १९९४ तक अग्रिम ग्राहक बनने वालों के लिए है। प्रकाशित होने पर मूल्य ३५०.०० होगा। इस ग्रन्थ की विशेषताएं—

१. शुद्धतम प्रकाशन। स्वामी जगदीश्वरानन्द जी द्वारा प्रकाशित वेदो मे भी भयकर अशुद्धियां हैं। अनेक विद्वानों के सहयोग से इसे शुद्धतम छापा जाएगा।
२ आधुनिक लेजर कम्पोजिंग से बहुत बढ़िया टाइप में मुद्रण होगा।
३. बढ़िया कागज, कलापूर्ण मुद्रण, पक्की जिल्द। सभी प्रकार से एक भव्य और नयनाभिराम प्रकाशन होगा।
४. १४ पाइट मे २३×३६/८ मे मुद्रित होगा।

दिसम्बर १९९४ तक यह ग्रन्थ प्रकाशित हो जाएगा।

प्रेषण-व्यय—एक प्रति पर लगभग २०.०० पृथक से देना होगा। जो व्यक्ति दुकान से लेंगे, उन्हें यह राशि नही देनी होगी।

यदि एक-एक समाज ५-५ या १०-१० प्रतियां मंगा ले तो प्रेषण-व्यय बहुत कम आएगा। शीघ्रता कीजिए, आर्यजगत् में इतना भव्य, दिव्य और नयनाभिराम प्रकाशन प्रथम बार हो रहा है।

गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क दिल्ली—६

शिक्षा के साथ स्वास्थ्य आवश्यक

हरिद्वार। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के ८७वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर संस्था के छात्रों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन हुआ। इस सम्बन्ध में जानकारी देते हुए डा० अजय कौशिक सह कुलसचिव ने बताया कि व्यायाम प्रदर्शन में प्रो० दर्शनसिंह सांसद मुख्य अतिथि थे। इस कार्यक्रम का संयोजन प्रमोद शास्त्री ने किया। ब्र० अनिल योगी के निर्देशन में संस्था के छात्रों ने योग और व्यायाम के अनेक चित्ताकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

रात्रि में भजनोपदेशक रणवीर सिंह बेधड़क, मंगलसिंह, वेदपाल आर्य के द्वारा भजनोपदेश प्रस्तुत किये गये। अन्त में डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि हमारी राष्ट्र पताका मे जिन तीन रंगों की परिकल्पना की गई है वह मनु महाराज की वर्ण व्यवस्था से अनुप्राणित है। ब्राह्मण का रंग श्वेत, वैश्य का पीला, क्षत्रिय का लाल एवं शूद्र का रंग नीला है। नीला पीला मिलकर हरा हो जाता है। आर्य समाज के प्रदेन पर भी उन्होंने रोचक और प्रेरक कथाओं के माध्यम से प्रकाश डाला।

आर्य युवक निर्माण शिविर

हरियाणा भर की समस्त डी. ए. वी. तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के ५०० छात्रो का विशाल शिविर दिनाक २०-५-९४ से २६-५-९४ तक डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल टोहाना जिला हिसार में लगाया जा रहा है जिसमें नैतिक शिक्षा, भाषण कला, योगासन, जूडो कराटे, आत्मरक्षा के आधुनिक तरीके और प्राथमिक चिकित्सा तथा आर्य समाज से सम्बन्धित शिक्षाओं का प्रशिक्षण दिया जायेगा। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी संस्था से अधिक से अधिक युवक इस शिविर मे भेजकर पुण्य प्राप्त करें।

सत्य भूषण आर्य मन्त्री
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (प्रथम व द्वितीय भाग)	२०)००
मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (भाग ३-४)	१६)००
लेखक - पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति	
महाराणा प्रताप	१६)००
विषलता अर्थात इस्लाम का फोटो	५)५०
लेखक—धर्मपाल जी, बी० ए०	
स्वामी विवेकानन्द की विचार धारा	४)००
लेखक—स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती	
उपदेश मञ्जरी	२१)
संस्कार चन्द्रिका	मूल्य—१२५ रुपये

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पुस्तक मंगवाते समय २५% धन अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली-२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री | दूरभाष । ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक १३] | दयानन्दाब्द १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ | वैशाख कृ० १३ सं० २०५१ ८ मई १९९४

भूकम्प पीड़ित अनाथ बच्चों के लिये लातूर (महाराष्ट्र) में छात्रावास

सार्वदेशिक सभा से प्रसारित एक विज्ञप्ति मे बताया गया है कि महाराष्ट्र मे आये विनाशकारी भूकम्प से भारी क्षति हुई है तथा हजारो बच्चे अनाथ हो गये हैं। लातूर शहर तो पूरी तरह से नष्ट हो गया है। अनाथ बेसहारा बच्चो के पालन-पोषण शिक्षा तथा उनकी हर प्रकार से सहायता करने के उद्देश्य मे सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने लातूर मे एक वृहद छात्रावास की स्थापना की है। अब तक उसमे काफी सख्या मे अनाथ बच्चे प्रविष्ट किये जा चुके है। इस समय एक किराये का मकान लेकर उसमे छात्रावास चलाया जा रहा है। तथा लातूर मे ही नये वृहद छात्रावास के निर्माण के लिये जमीन खरीदी जा चुकी है।

स्मरणीय है कि महाराष्ट्र मे भूकम्प से प्रभावित अनाथ बच्चो को सार्वदेशिक सभा दिल्ली के आर्य अनाथालय मे अथवा हरिद्वार के गुरुकुल कागडी मे रखना चाहती थी। लेकिन भूकम्प पीडित लोगो ने अपने बच्चो को लातूर से बाहर भजने मे मना कर दिया अन्त लातूर में ही स्थायी छात्रावास बनाने का निर्णय लिया गया। अभी पिछले दिनो सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प० वन्देमातरम् जी तथा अन्य अधिकारी लातूर मे चल रहे अनाथ बच्चों के छात्रावास का निरीक्षण करने हेतु गये थे। स्वामी जी ने छात्रावास तथा वहा हो रहे सेवा कार्यों को देखकर सन्तोष प्रकट किया। उन्होने बताया कि छात्रावास के लिये भवन निर्माण हेतु काफी धन की आवश्यकता है और इस समय तक निराश्रित बच्चो के ऊपर लाखो रुपया व्यय किया जा चुका है। उन्होने दानी महानुभावो से अपील की कि वे लातूर मे चल रहे छात्रावास के भवन निर्माण हेतु दिल खोलकर दान दे जिससे अनाथ बच्चो के भविष्य को सुखमय बनाया जा सके।

महर्षि दयानन्द गोसंवर्द्धन दुग्ध केन्द्र के विकास हेतु

स्त्री आर्य समाज राजेन्द्र नगर द्वारा सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को ३४ हजार की थैली भेंट

दिल्ली ३० अप्रैल। स्त्री आर्य समाज राजेन्द्र नगर (दिल्ली) द्वारा आयोजित चतुर्वेद शतक की पूर्णाहुति और आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को विशेष रूप से आमन्त्रित करके महर्षि दयानन्द गो-सवर्द्धन दुग्ध केन्द्र के लिए ३४,००० चौंतीस हजार रुपये की राशि दान स्वरूप भेंट की। इस राशि से दो गाय क्रय करने और शेष राशि की स्थिर निधि बनाकर गोसवर्द्धन केन्द्र के कार्य मे उसके उपयोग करने का प्रावधान किया गया है। उत्सव की अध्यक्षता श्रीमती सरला मेहता जी ने की और यज्ञ वेद विदुषी डा० उषा शर्मा शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। यज्ञशाला से स्वामी जी को आदर पूर्वक सभा हाल मे उक्त थैली भेंट की गई। श्रीमती सुमेधा जी तथा डा० उषा जी ने भी गाय की महत्ता पर अपने अपने विचार व्यक्त किये।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गो-माता के प्रति श्रद्धा हेतु स्त्री आर्य समाज राजेन्द्रनगर की सभी सदस्याओ का आभार प्रकट किया और उनका धन्यवाद किया।

जगाधरी में भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को ११००० रुपये की राशि भेंट

१ मई १९९४ के जगाधरी मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने नव निर्मित भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन किया। इस अवसर पर जगाधरी की जनता हजारों की सख्या मे

(शेष पृष्ठ २ पर)

इलाहाबाद हाईकोर्ट का दिनांक ४-३-९४ का फैसला उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के पक्ष में

मनमोहन तिवारी, सभा-मन्त्री

Reserved

W. P. No. 492 (MS)/1993,

Kailash Nath Singh .. Vs Asstt. Registrar, Firms,
& Anr. Societies & Chit U. P. & Anr.

Hon'ble S H. A. Raza. j

The controversy raised in the writ petition pertains to the validity of the election held on 27-1-1992, which is apparent from the perusal of the writ petition, in which following relief was prayed for :

(a) A writ in the nature of certiorari or any other writ in the like nature quashing the order of opposite party No. 1 dated 24 2 1993 contained in Annexure-I to the writ petition by recognizing and accepting the fake election of the opposite party No. 2 dated 17.1.1993.

The question of validity or invalidity of the election could be agitated before the Prescribed Authority/Registrar and not before this Court under Art. 226 of the Constitution of India.

The contention of the petitioner that the amendment had been incorporated in the bye-laws of the Society and as the election dated 17.1.1993 was not held inaccordance with the amended bye-laws, if accepted, the same could very well be agitated before the Registrar. The view which I have taken is supported by catena of the decisions of this Court reported in AIR 1990 Allahabad-110 1998 ALJ 583 (587), AIR 1984 Alld 310 (314), 1984 ALJ-251 (295), AIR 1982 Allahabad 172 (175), 1982 UPLBLC-82, 1984 UPLBEC-550.

The authorities which have been cited and the orders which were passed by this Court referred by the petitioner are not germane to the controversy involved in the case for the simple reason that the Committee of Management, the constitution of which was, itself, disputed, could not have applied for the change in the bye-laws to the detriment of the respondent. A perusal of the factual matrix set out in the writ petition appears to be that the petitioners want to manage the affairs of the committee of management to the exclusion of the elected body. In exercise of the jurisdiction under Art. 226 of the Constitution this Court cannot restrain the respondents from functioning, particularly for the reason that the petitioners have the alternative statutory remedy.

In the present writ petition, at the behest of the petitioners, the elected Committee of management recognised by the Registrar has been restrained from functioning. This can not be done for the simple reason that the writ petition was not maintainable. Writ petition is accordingly dismissed.

Sd. H. A. Raza
SEAL 4 3 94

११ हजार रुपए की राशि भेंट

(पृष्ठ १ का शेष)

वहां उपस्थित थी। स्वामी जी ने देश देशांतर मे आर्य समाज की प्रगतियो पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए महाराष्ट्र के भूकम्प प्रभावित क्षेत्रों मे आर्य समाज के सेवा सहायता कार्यों की भी विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने यह भी बताया कि लातूर मे सार्वदेशिक सभा की ओर से एक छात्रावास और आश्रम खोल गया है, जिसमे भूकम्प प्रभावित अनाथ बच्चो के पालन-पोषण शिक्षा-दीक्षा आदि का व्यवस्था सार्वदेशिक सभा की ओर से की जा रही है। दिल्ली मे १२.५ एकड़ भूमि में सार्वदेशिक सभा द्वारा स्थापित महर्षि दयानन्द गो-संवर्द्धन दुग्ध केन्द्र के विषय मे भी उन्होने इसकी अब तक की प्रगतियो के विषय मे विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर जगाधरी आर्य समाज की ओर से स्वामी जी को ११०००) ग्यारह हजार रुपये की राशि महर्षि दयानन्द गोसंवर्द्धन दुग्ध केन्द्र के लिए भेंट की गई। समारोह का आयोजन आर्य कन्या उच्च विद्यालय जगाधरी और आर्य समाज की ओर से किया गया था। यज्ञशाला के उद्घाटन के अवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य देवव्रत जी भी उपस्थित थे उन्होने वेदो मे यज्ञ की महत्ता और धर्म की महिमा पर सारगर्भित प्रवचनों से जनता का मार्ग दर्शन कराया।

स्वामी जी पानीपत से १ मई को प्रातः जगाधरी गये थे। ३० अप्रैल की रात्रि को आर्य समाज खेल बाजार पानीपत के उत्सव में स्वामी जी ने भाग लिया था। इस अवसर पर आर्य समाज के विद्वान पं० उत्तमचन्द शरर और अन्य अनेक गणमान्य महानुभाव भी उपस्थित थे। स्वामी जी ने वहां भी आर्य समाज के रचनात्मक कार्यों की जानकारी देते हुए आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए आर्य समाज का सुदृढ़ संगठन बनाने का आह्वान किया। स्वामी जी ने रात्रि में पानीपत में ही विश्राम किया और प्रातःकाल जगाधरी को रवाना हुए थे।

मुनिवर पं.गुरुदत्तविद्यार्थी जयन्तीसमारोह

आर्य युवक सभा लुधियाना एव वेद प्रचार मंडल द्वारा राष्ट्रीय बाल विद्या मन्दिर हाई स्कूल लुधियाना मे मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी की ११० वीं जयन्ती पर समारोह आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री सी. पी. पाठक रिजनल मैनेजर, सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया ने की। समारोह के मुख्य अतिथि श्री चन्द्रशेखर तलवाड़ ने अपने सम्बोधन में मुनिवर पं० गुरुदत्त के जीवन से शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा दी। आर्य युवक सभा पंजाब के प्रधान श्री रोशन लाल आर्य ने विद्यार्थी जी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होने बताया कि सस्था की ओर से कमजोर वर्ग के मेधावी छात्रो को इस वर्ष ८०,००० रुपए की सहायता प्रदान करने का निश्चय किया गया। अब तक ३५ स्कूलो के लगभग १५० छात्रो को सहायता दी जा चुकी है। इस समारोह मे सात स्कूलो के बच्चो को आर्थिक सहायता प्रदान की गई सभा की ओर से श्रीमति इन्द्र अग्रवाल, श्री दर्शन सिंह जिला लोक सम्पर्क अधिकारी स्कूल के प्रबन्धक श्री बलवन्त सिंह राठो को सम्मानित किया गया। समारोह को सफल बनाने मे श्री आत्म प्रकाश श्री विपिन गुप्ता, श्री कमल किशोर ने सराहनीय योगदान दिया।

रोशन लाल आर्य
प्रधान आर्य युवक सभा पंजाब

वार्षिकोत्सव

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला दिल्ली का ३९वां वार्षिक महोत्सव १६-१७ अप्रैल ९४ को समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ इस अवसर पर ११ से १७अप्रैल तक डा० देवेन्द्रनाथ शास्त्री की अध्यक्षता में ब्रह्मचारणियों ने यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न किया। मुख्य समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा कई नेताओ ने भाग लेकर समारोह को सफल बनाया गुरुकुल की कन्याओं द्वारा सायंकाल को योगासन तथा शस्त्र संचालन का अद्भुत प्रदर्शन किया।

भारत में ईसाई प्रचार की असलियत

अरुण शौरी

इस्लामी कट्टरता से भारत की अखण्डता के सामने एक बहुत बड़ा खतरा है, यह बात तो सब बहुत अच्छी तरह से जानते और समझते हैं। हमारे अपने ही देश के बहावुद्दीन, इमाम साहब और बलीमियां जैसे मुस्लिम नेताओं की इस्लाम के नाम पर राजनीति, पाकिस्तान का लगातार हमला, अरब देशों के पक्ष में अपनी विदेश नीति झुकाने का दबाव और इन सबसे डरते हुए कश्मीर पर अपनी बात कह नहीं पाना। इन सबका देश पर जो प्रभाव पड़ रहा था, उसे समझने के लिए मैंने इस्लाम का अध्ययन किया और इस विषय पर लिखा। अब ईसाई धर्मप्रचारकों पर भी एक पुस्तक लिखी है।

इस विषय पर संयोगवश ही लिखना हो गया। भारत में कैथोलिक चर्च की जो सबसे बड़ी संस्था है, उसका नाम है—कैथोलिक बिशप कान्फ्रेंस आफ इण्डिया। यह संस्था पचास वर्ष पूर्व बनी थी। पचास वर्ष में दूसरी और २५ साल में पहली बार पुणे में इसकी एक चार दिवसीय बैठक हुई थी, जिस में देश भर के सभी पादरियों और ईसाई बुद्धिजीवियों को आमन्त्रित किया गया था-बैठक का विषय था अब तक भारत में चर्च का काम कैसा रहा है और आगे हमें क्या करना चाहिए।

शायद उन्होंने यह विचार किया कि इस बैठक में एक गैर-ईसाई व्यक्ति को भी आमन्त्रित करना चाहिए। और मालूम नहीं कि किस कारण से उन्होंने मुझे बैठक में बुलाया। मैंने इस विषय का इससे पूर्व कोई गहन अध्ययन नहीं किया था। लेकिन चूंकि उस बैठक को सम्बोधित करना था, इसलिए स्वामी विवेकानन्द ने इनके बारे में जो कहा, लिखा गांधीजी की इनके साथ जो विस्तार से बातचीत होती रही थी और इसके विषय में उन्होंने जो लिखा था, सबको पढ़ना शुरू किया। जब इस सबका गहराई से अध्ययन किया तो एक के बाद एक नई बातें मिलती गई और इस सबको आधार बनाते हुए मैंने मिशनरी और चर्च के काम को लेकर १५० वर्ष के इतिहास पर टिप्पणी करते हुए पुस्तक लिख डाली।

व्यापक गतिविधियां

अंग्रेज शासकों की पुरानी नीतियां जिन्हें हम भूल चुके हैं क्या थीं, नीतियों के निर्धारण और क्रियान्वयन में चर्च की भूमिका क्या थी, बुद्धिजीवियों की भूमिका उस समय क्या थी यहां से शुरू करते हुए आज उत्तर पूर्व भारत में अमरीकी बेपटिस्ट चर्च क्या कर रहा है, आदि विषयों का इस पुस्तक में विश्लेषण किया है। कार्य का क्षेत्र चुनने से लेकर इनकी कार्य की पद्धति, फिर इसके माध्यम से लोगों को गुमराह करना, धर्म परिवर्तन कराना कारखण्ड, दलित आन्दोलन जैसे विघटनवादी आन्दोलनों को प्रायोजित करना, उन्हें बढ़ावा देना और विदेशी पृथकतावादियों को समर्थन देना, इस तरह भारत में ईसाई मिशनरी की गतिविधियां बहुत व्यापक हैं।

अराष्ट्रीयकरण में चर्च की क्या भूमिका रही है? इस सम्बन्ध में इस पुस्तक में पर्याप्त जानकारी है। आप देखेंगे कि अंग्रेजों की नीतियों के तीन मुख्य आधार थे। पहला, वे जनता के बीच अलगाव का बीज बोते थे। इसके लिए वे एक वर्ग विशेष को चुन लेते थे और उनको बरगलाते थे कि तुम बाकी सबसे भिन्न हो। दूसरा, वे ऐसे नेताओं को उभारते, बढ़ावा देते और मदद देते थे जिनकी राजनीति इसी अलगाववादी विचार के इर्द गिर्द घूमती थी। तीसरा, वे उस वर्ग के सामने, जिसे वे अलगाववाद की भाषा पढ़ाते थे, कुछ लुभावनी सुविधाएं रखते थे और उन्हें बताते थे कि ये सुविधाएं वे तभी पा सकते हैं जबकि अन्य समाज से अपने को अलग कर लेंगे। इस सम्बन्ध में अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं।

१९वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मिशनरी ने दो समुदायों को चुना था-पहला जनजातीय समाज और दूसरा तथाकथित अस्पृश्य वर्ग।

जनगणना हुई तो कहा गया कि जनजातियों का धर्म 'प्रकृति पूजक' माना जाएगा, हिन्दू नहीं। १८८० से लेकर १९३१ तक की जनगणना आप उठाकर देख लीजिए-जनगणना अधिकारी स्वयं स्वीकार करते हैं कि भेद की रेखा खींचना कहीं सम्भव ही नहीं, क्योंकि सारे हिन्दू प्रकृतिपूजक हैं और प्रकृति पूजक हिन्दू हैं। लेकिन अंग्रेजों ने यह किया।

इसी तरह सिखों में भी विभाजन का बीज बोया गया था। पंजाब से सेना में बहुत अधिक लोग भर्ती होने जाते थे। अतः अंग्रेजों ने सेना में सिखों के लिए अमृत चखने जैसी क्रियाएं शुरू करवा दी ताकि ये सैनिक जब अपने गांवों में वापस जाएं तो अलगाव की यह प्रवृत्ति वे वहां भी अपने साथ ले जाएं।

भारत के विभाजन पर अब तक जो सबसे अच्छी पुस्तक लिखी गई है, सम्भवतः श्री एच०वी० शेषाद्रि जी की है—द ट्रैजिक स्टोरी आफ पार्टीशन। उसमें उन्होंने लिखा है कि १९०६ में मुसलमानों का एक प्रतिनिधि मण्डल लार्ड मिंटो के पास गया। इस प्रतिनिधि मण्डल ने जो मांग पत्र लार्ड मिंटो को दिया, वह और किसी ने नहीं, वायसराय के कर्मचारियों ने तैयार किया था। इसमें पहली ही मांग मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र बनाने की थी। इस मांग का परिणाम क्या निकला? यह आज हमारे सामने है।

ठीक यही राजनीति इन्होंने तथाकथित अस्पृश्यों के साथ खेली। पहले यह दुष्प्रचार किया कि यह वर्ग हिन्दू समाज का अंग नहीं है, हिन्दू इन्हें अपने समाज से बाहर कर चुका है। फिर गोलमेज कान्फ्रेंस में तथाकथित अस्पृश्य नेताओं के साथ समझौता करके गांधी जी को बिना कुछ बताए अंग्रेजों ने उनके लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र घोषित कर दिया।

यह सारा निर्णय अंग्रेज सरकार लेती थी और इसके साथ साथ बौद्धिक स्तर पर कार्य चलता था जो हमें मानसिक रूप में अलगाववाद के लिए तैयार करता था। ईसाई मिशनरी भी उसी वर्ग को अपना निशाना बनाते थे, उसी वर्ग में काम करते थे जिसे अंग्रेज सरकार अलगाववाद की भाषा पढ़ाती थी। इस तरह अंग्रेज सरकार, बुद्धिजीवियों और मिशनरी ने अपने-अपने लिए कार्य बांट रखे थे परन्तु लक्ष्य सबका एक ही था। १९५० के मध्य तक यह ऐसे ही चलता रहा। बाद में चर्च के हाथ से राजनीतिक सत्ता छिन जाने तथा विज्ञान और तर्कवाद के विस्तार से ईसाइयत बहुत कमजोर हो गई। इस वजह से चर्च की भूमिका में कुछ बदलाव आया।

चर्च, इस्लाम और मार्क्सवाद में एक समानता है। ये सभी यही कहते हैं कि सब बंधनों से मुक्त होने, आजाद होने या 'मोक्ष' प्राप्त करने का मार्ग एक ही है। यह मार्ग एक ही व्यक्ति को बताया गया है—ईसा मसीह को, मोहम्मद साहब को कार्ल मार्क्स को। उन्होंने उसे एक किताब में रखा है, वह किताब बहुत कठिन है जिसे आम लोग समझ नहीं सकते। इसलिए चर्च, अल अजहर, मुल्लाह कम्युनिस्ट पार्टी के लिए उसे समझाना अनिवार्य है। इसलिए आप उसकी बात मानो। उसका फर्ज है कि वह आपको समझाएगा। अगर समझाने पर भी आप नहीं समझेंगे तो इसका मतलब यह हुआ कि आप गाड की आज्ञा मानने से इनकार कर रहे हो अल्लाह का रास्ता रोक रहे हो इसलिए आपको परिवर्तित करना या आपका कत्ल करना या आपका इतना दमन करना कि आप हार कर मत परिवर्तन को विवश हो जाएं उनका फर्ज बनता है। इसी आधार पर हम पर जजिया लगाया जाता था, इसी आधार पर वामपंथी खूनी क्रांति का समर्थन करते हैं और इसी आधार पर चर्च मत परिवर्तन का समर्थन करता है। हालांकि अब चर्च यह स्वीकार करने लगा है कि अन्य पन्थों से भी मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। यदि ऐसा है तो मत परिवर्तन का कोई आधार नहीं रह जाता, बावजूद इसके आज भी मत परिवर्तन कराना चर्च का मुख्य व्यवसाय बना हुआ है।

१९५० के बाद यद्यपि चर्च की अनेक नीतियों में बदलाव आया है वहीं बहुत सी नीतियां आज भी पूर्ववत चली आ रही हैं। अब चर्च को सत्ता का समर्थन प्राप्त नहीं है, इसलिए उनकी भाषा एकदम बदल गई है। १९५० के मध्य तक आप 'चर्च' के पर्चे देखिए, उनमें भारतीय देवी-देवताओं के लिए बहुत अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया जाता था। अब चर्च के पर्चों में कहीं भी आक्रामक भाषा का प्रयोग नहीं मिलता।

यूरोप के विरुद्ध इस्लामी जेहाद

आतंकवाद और गैर परम्परागत युद्ध की बात इस्लामी देशों की गतिविधियों की जांच करने वाली अमरीका की लोकसभा की रिपब्लिकन रिसर्च कमेटी ने यह बताया है कि पाकिस्तान की सरकार भारत के विरुद्ध बहुमत नरमी कर रही है परन्तु अब यह सुनने में आया है कि वह योगोस्लाविया के बोस्नीया में एक ऐसे केन्द्र की स्थापना का प्रयत्न कर रहा है—जिसका उद्देश्य योरुप में जिहाद करना बताया गया है तुर्की और ईरान के साथ इसने भारी संख्या में असला व गोला बारूद भेजा है ताकि ऐसा दल बनाया जा सके जो इस्के पैमाने पर योरुप में जेहाद कर सके। यह भी सुना गया है कि इन्होंने योरुप में कई स्थानो पर भारी संख्या में गोला बारूद और अन्य हथियार छुपा रखे हैं--कहा जा रहा है कि इन हथियारो से भरे हुए कई ट्रक सप्ट और राजकाकी बन्दरगाहो से अपने निश्चित स्थान को चल दिए हैं—यह दोनों स्थान कुरु-शिया मे स्थित है इसके साथ ही पश्चिमी यूरोप में भी दहशत फैलाने और अन्य गतिविधियां भी आरम्भ कर दी है—ट्युनिस, अलजेरिया, फ्रांस, बेल-जियम इत्यादि देशो से आए हुए मुसलमानों को सुडान में फौजी शिक्षा दी जा रही है—इस प्रकार योरुप में इस्लामी संघर्ष का परिणाम यह हो रहा है कि योरुप के अनेक देशो मे इस्लामी आतंक को बढ़ावा मिल रहा है--फ्रांस में सिमाली अफ्रीका से आए हुए लोगों को भारी संख्या में अलजीरिया के इस्ला-मिक साल्वेशन फ्रंट की हिमायत करतो है--हकीकत हाल यह है कि अलजी-रिया मे इस्लामिक सालवेशन फ्रंट के खिलाफ वहां की सरकार से मदद करने का बदला लेने के लिए फ्रांस के किसी शहरों में बाकायदा मुस्लिम शहरी खुफिया सरगर्मियों में व्यस्त है और ऐसा नजर आता है कि यह लोग शीघ्र ही अपनी कार्यवाही प्रारम्भ कर देंगे—

जांच रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि भिन्न भिन्न शहरों में अस्त-उल्ला संस्थाएं फ्रंट की तैयारियो में आतंकवादी संस्थाओ की सहायता कर रही है—बोस्नीना, दुनिया में मुसलमानों पर जो जुल्म हुए है इनका बदला लेने के लिए खुले आम योरुप की शक्तियो के विरुद्ध अपील की जा रही है। इन संस्थाओ की मदद के लिए योरुप में इस्लामिक यूनाईटिड ब्रिगेड की स्था-पना भी हो गयी है—सुडान के फौज के ब्रिगेडियर श्री हुसैन इन लोगो को फौजी ट्रेनिंग दे रहे हैं। जिन देशों पर पहला वार होना है इनमें फ्रांस, बेल-जियम, हालैंड और इंगलिस्तान प्रथम नम्बर पर हैं—

नवम्बर १९९१ में १६ ट्यूनेशी उग्रवादी पैरिस और ट्यूनिस के लिए रवाना हुए। फरवरी १९९२ के बाद कई दोगर दस्ते मगर्बी युरुप के देशों में घुस चुके हैं इस प्रकार कई आतंकवादी संस्थाएं शाम और ईरान की सर-परस्ती में फिर से आतंकवादी गतिविधियों के लिए तैयार हो गयी हैं ये लोग युरुप के भिन्न २ स्थानों पर छिपे हुए हैं इनको हथियार और गोला बारूद भी मिल सकेगा। इनके पास कई मोटर गाड़ियां हैं जिनमें बम्ब लगे हुए हैं। इनके पास प्लेट नम्बर और लाइसेंस सब सच्चे हैं इन गाड़ियों को अलग-२ यूरोप के कई स्थानो पर रखा गया है इनकी तैयारियों का कन्ट्रोल सबसे अधिक ईरान के हाथ मे है। भिन्न-२ देशों में उग्रवादियों की गतिविधियों की स्थानीय संस्थाएं है जो इनकी सहायता कर रही हैं। इस तरह योरुप के अलग देशों में मुस्लिम संस्थाएं गतिशील हो रही हैं ताकि योरुप के ईसाई देशों ने बोस्नीना के मुसलमानो पर जो अत्याचार किए उनका बदला लिया जा सके।

—के० नरेन्द्र

(प्रताप २१-४-९४ के सौजन्य से)

धर्मेन्द्रसिंह का भ्रष्टाचरण

अपने को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मन्त्री लिख कर उत्तर प्रदेश के आर्य संगठनों को अपने भ्रष्टाचरण से भंग करने तथा लूटने वाले धर्मेन्द्र सिंह ने मुंसिफ मैनपुरी के न्यायालय में विचाराधीन वाद सं०१८१/९१, आर्य समाज मैनपुरी बनाम आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० में बकालतन उपस्थित होकर अपने आपत्ति पत्र में लिखा कि आर्य समाज मैनपुरी के वैध प्रधान ठा० महावीर सिंह जी हैं तथा सरताज बहादुर अपनी बदनियती से आर्य समाज की सम्पत्ति को हड़पना चाहता है। यही नहीं, उन्होंने अपने उक्त आपत्ति-पत्र के समर्थन में अपने भ्रष्ट सहयोगी जगदीश चरण द्वारा एक शपथ-पत्र भी दिलाया और आगे चलकर इन्हीं धर्मेन्द्र सिंह ने आर्य समाज मैनपुरी की उक्त वैध अन्तरंग सभा के भंग किए जाने सम्बन्धी एक निष्प्रभावी आदेश द्वारा उक्त सरताज बहादुर को ही आर्य समाज मैनपुरी का प्रशासक बना दिया और तीन किराएदारों से बलपूर्वक किराया वसूल करवाकर उक्त तथाकथित प्रशासक से १०,००० रु० ठग कर ले गए।

आर्यो विचार करो कि 'सत्य' पर आधारित ऋषि दयानन्द के आर्य समाज में क्या ऐसे भ्रष्ट तत्वों के लिए कोई स्थान है? यदि नहीं तो आप सब इस भ्रष्ट धर्मेन्द्र सिंह को क्यो स्वीकार कर रहे हैं?

—कुं० ध्रुवपाल सिंह 'अटल'

मुख्य निरीक्षक आ० प्रति० सभा, उ० प्र०

आर्य समाज का राज्य में नशामुक्ति अभियान

अजमेर ४ अप्रैल (नि. सं.)। आर्य समाज ने पन्द्रह अप्रैल से राज्य भर में नशा मुक्ति अभियान छेड़ दिया है। इसके पहले चरण में आर्य समाज के प्रचारकों ने ग्रामीण इलाकों मे सभी प्रकार के नशों के खिलाफ लोगों को जाग्रत किया।

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने सोमवार को यहां यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि रविवार को स्थानीय ऋषि उद्यान में हुई सभा में प्रांत भर के प्रमुख प्रतिनिधियों की एक विशेष बैठक में नशा मुक्ति अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। बैठक में सभी प्रतिनिधियो का कहना था कि राजस्थान में लोगों में नशे का व्यसन अत्यधिक बढ़ गया है। ग्रामीण लोगों में यह व्यसन अधिक है इसलिए आर्य समाज को समाज हित में नशे से होने वाले विभिन्न प्रकार के दुष्परिणाम से लोगों को अवगत कराकर इससे मुक्ति दिलाने का अभियान छेड़ना चाहिए। स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने बताया कि सभा नशा मुक्ति अभियान के तहत जन-सम्पर्क के कार्यक्रम पर अधिक ध्यान देगी। आर्य समाज के प्रचारक अपनी भजन मंडलियों सहित हर शराब के ठेकों में जायेंगे और लोगों को नशे के भयावह खतरों से अवगत करायेंगे। उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत नशा विरोध साहित्य का प्रकाशन भी किया जायेगा। इसके लिये परोपकारी सभा के संयुक्त मन्त्री डा० धर्मवीर के संयोजन में एक समिति बनाई गई है।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (प्रथम व द्वितीय भाग)	९०)००
मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (भाग ३-४)	१६)००
लेखक—पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति	
महाराणा प्रताप	१६)००
विचलता अर्थात इस्लाम का फोटो	५)५०
लेखक—धर्मपाल जी, बी० ए०	
स्वामी विवेकानन्द की विचार धारा	४)००
लेखक—स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती	
उपदेश मञ्जरी	२१)
संस्कार चन्द्रिका	मूल्य—१२५ रुपये

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पुस्तक मंगवाते समय २५% धन अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली-२

महर्षि दयानन्द से महान् बनने की साध

सूर्या कुमारी व्याकरणाचार्या

ज्ञान विस्तार के विभिन्न प्रकार हैं उन सभी में लेखन का बड़ा गुरुतर स्थान है। वर्तमान समय में प्रतियोगिता स्तर पर पुस्तकों का लेखन हो रहा है, बड़ी अच्छी बात है विद्या का प्रचार-प्रसार होना ही चाहिये, परन्तु हमारा लेखन अथवा कोई भी अभिव्यक्ति मौलिक होने के साथ-साथ वेदादि शास्त्र प्रमाणानुकूल हो तथा युक्तिसिद्ध हो यह परम अनिवार्य है। मौलिकता मात्र अहंकार का ढकोसला न बन जाये यह सावधानी रखना भी आवश्यक है। अभी हाल में "वेद और परमात्मा" नाम्नी लघुपुस्तिका "श्री चन्द्र गुप्त योग-मुनि" वैदिक साधना लोक: ३२२-ए गली-४ श्रीनगर कालोनी दिल्ली-३४ ने प्रकाशित की है। अपनी इस पुस्तिका में लेखक ने परमात्मा के पूर्ण स्वरूप को बताना तो दूर परमात्मा के विराट् प्रभुत्व को प्रकट करने वाले सर्वविदित सर्वव्यापक गुण को ही तिरोहित करने का असफल प्रयास किया है जो एक वेद. लिप्सु दम्भधनी के लिए ऐसा करना उचित ही है। सुना है लेखक साम-वेद का भाष्य भी कर रहे हैं, अब देखना है उसमें कौनसा विषवमन करते हैं। लेखक प्रच्छन्न पौराणिक तथा अहंवादिता से जकड़े हुये हैं। महर्षि दयानन्द से बढ़कर परमात्म द्रष्टा बनना चाहते हैं इसी साध में उपरोक्त पुस्तिका में ऋषिवर के प्रति अनर्गल एवं उद्वेलित करने वाले वाक्य लिखे हैं, यथा—(१) "उन्हें भी अर्ध सत्य को अपनाया जाना उपयुक्त ही समझना पड़ा" (२) सब आत्माओं का पिता परमधाम का निवासी है स्वामी दयानन्द को भी सर्व-व्यापक स्वीकार करना पड़ा · · इसलिये परमात्मा को अर्धसत्य के रूप में प्रस्तुत किया गया (३) · · इस मन्त्र को भी पूर्णतया न समझ कर परमात्मा को सर्वव्यापक मान लिया। (४) · · इस मन्त्र पर विचार किये बिना ही परमात्मा को सर्वव्यापक मानने लगे। (५) · · इस अर्थ को न समझकर परमात्मा को कण-२ में कह दिया (६) इस श्रेष्ठ सन्देश की अवहेलना कर परमात्मा को सर्वव्यापक बता दिया। (७) इस शुभ विचार को छोड़ परमात्मा को सर्वव्यापक कह सूअर एवं कीड़े मकोड़े में भी बता डाला। कितनी ग्लानि उस परमपिता की कर डाली। (८) · इस भावना को छोड़ हमने उसे सर्व-व्यापक बना दिया।

लेखक को आदित्य ब्रह्मचारी परमात्म-द्रष्टा महर्षि दयानन्द पर 'अर्ध सत्य ग्रहण करने" का आरोप लगाने से पूर्व वेद उपनिषद् स्मृति आदि शास्त्रों का अवश्य आलोडन करना था क्योंकि परमेश्वर के स्वरूप दर्शन हेतु लेखक ने जिन वेदों के मन्त्रों को प्रस्तुत किया है उन्हीं वेदों में परमेश्वर को सर्व-व्यापक भी प्रतिपादित किया गया है। सर्वव्यापक विषयक अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। मोटे तौर पर निम्न प्रमाण प्रस्तुत हैं—

(१) तदन्तरस्य सर्वस्य । यजु० ४०।५

(२) ईशावास्यमिदं सर्वंयत्किञ्च जगत्यां जगत । यजु ४०।१

(३) एको देव: सर्वभूतेषु गूढ: सर्वव्यापी सर्व भूतान्तरात्मा ।

श्वेता० ६।११

(४) सर्वभूतमयोऽचिन्त्य:······ । मनु० १।७

यहां "तदन्तरस्य" "ईशावास्यम्" पदों से वेद में परमात्मा को सर्वव्यापक ही बताया गया है। उपनिषद का 'सर्वव्यापी' शब्द स्पष्ट है। मनुस्मृति का "सर्वभूतमय:" पद भी पुकार-पुकार कर सर्वव्यापक सिद्ध कर रहा है। पुन: उपरोक्त पदों का सर्वव्यापक अर्थ न करके लेखक कौनसा नया अर्थ करेंगे ? तथा जिस सामवेद का लेखक भाष्य कर रहे हैं उसी वेद में आये "सहस्र-शीर्षा ·····सभूमि सर्वतो वृत्वा ·· · । सा० ६१७ इस मन्त्र के "भूमि सर्वतो वृत्वा' पदों का सर्वव्यापक अर्थ न करके कौनसा नया भाष्य लिखेंगे ?

परमेश्वर को सर्वव्यापक मानने पर मान्य लेखक को यह जो बहुत बड़ा भय है कि 'कीड़े-मकोड़े, सूअर आदि में भी "परमात्मा व्यापक माना जायेगा तो वह दूषित हो जायेगा" यहां मेरा कहना है कि कीड़े मकोड़े की ही क्या बात है मानव शरीर तो और भी राग द्वेषादि, विष्ठादि मलिनताओं का पिटारा है वहां तो और भी कलुषित हो जायेगा अत: परमात्मा का मानव शरीर में भी वास उचित नहीं है फिर तो "अंगुष्ठमात्र: पुरुष: मध्य आत्मनि तिष्ठति" (कठोपनिषद् ४।१२) इस वचन को ताक में रखकर यहां ईंटपत्थरों के बने अद्भुत से अद्भुत मूर्तियां स्थापित हैं वहीं परमात्मा का वास मानना आपकी दृष्टि में उपयुक्त है। वाह रे ! मूर्तिपूजा की पुष्टि की कला।

क्या कभी जो सूर्य, मकान, पर्वत, पहाड़, नदी, नाले, विष्ठा, पङ्कादि को समान भाव से प्रकाशित कर रहा है वह मलिन होते देखा या सुना है ? पुन: उस सूर्य का नियन्ता प्रभु कैसे मलिन हो जायेगा ? वह निराकार, अजन्मा आदि होते हुये भी सर्वत्र व्यापक है और व्यापक होते हुये भी उन सबसे लिप्त नहीं होता है, यथा—

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्य दोषै: ।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोक दु:खेन बाह्य: ॥

कठो० ५।११

अर्थात् जैसे सूर्य सम्पूर्ण लोक लोकान्तरों का प्रकाशक है सबका नेत्र है परन्तु सभी लोकों की मलिनताओं से मलिन नहीं होता है वैसे ईश्वर भी संसार के सभी प्राणियों की अन्तरात्मा में होते हुये भी प्राणियों के दु:खों से, मलिनताओं से दूषित नहीं होता है।

और जो गीता की दुहाई देते हुये लेखक ने कुछ भिन्न क्रम से "तेषु अह ते मयि न सन्ति" "अहं तेषु न अवस्थित:" गीता ७।१२, ९।४ के उत्तरार्ध के आधे वाक्य प्रस्तुत किये हैं उनके पूर्व भाग को भी नहीं भूलना चाहिये, जहां परमात्मा को भूतों में स्थित बताया है यथा—"मत्स्थानि सर्वभूतानि" गीता ९।४ मत्तएवेति तान् विद्धि" गीता ७।१२।। तथा समोहं ,सर्वभूतेषु ·· मयि ते तेषु चाप्यहम् ।। गीता ९।२९।।

यहां तो स्पष्ट शब्दों में कहा है सभी भूत मुझ में हैं मैं भी उनमें हूं। इस प्रकार परमात्मा को सभी वेद तथा वेदानुकूल शास्त्रों में निराकार अजन्मा अभोक्ता आदि के साथ-साथ सर्वव्यापक भी बताया है, पुन: जिस महर्षिने परमात्माकी सत्ता को ही नहीं स्थित किया किन्तु दृष्टि अगोचर परमा-त्मा का प्रत्यक्ष भी किया है जिसका संकेत महर्षि ने आर्याभिविनय, अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों में बड़े दृढ़ शब्दों में किया है जिसे पढ़कर कोई भी अर्धसत्य स्वीकार करने का आरोप लगाने का साहस ही नहीं कर सकता है। महर्षि दयानन्द ही एक ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने वेदादि शास्त्रोक्त बात ही लिखी है और कही है। उनके प्रति ऐसे अयथार्थ हास्यास्पद आरोप लगाने वेदादि शास्त्रों का अपमान करना है तथा परमात्मा की सत्ता को ही नकारना है। यदि उसे सर्वव्यापक नहीं मानेंगे तो वह अमन्नियन्ता कोठे बन्द ताले बन्द ही तो सिद्ध होगा।

लेखक ने परमेश्वर को निराकारादि बताने के लिये जिन मन्त्रों को उद्धृत किया है वैसे मन्त्र महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में भरे पड़े हैं, उन्हें ज्ञात होना चाहिये परमेश्वर को सर्वव्यापक नहीं मानेंगे तो परमात्मा एक देशी हो जायेगा और सर्वशक्तिमान भी नहीं रहेगा, पुन. वह कैसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का कर्ता-धर्ता बन सकता है ? जो सर्वव्यापक होगा वही सर्वशक्तिमान सर्वज्ञादि विशेषणों से कहे जाने योग्य हो सकता है।

परमेश्वर को सर्वव्यापक मानने पर ही अभोक्ता जन्म मरण से रहित निराकारादि नामों से कहे जाने वाले परमात्मा की अनुभूति भी कर पायेंगे, अन्यथा मात्र शब्द जाल ही पल्ले पड़ेगा, अत. वेदादि प्रमाण विरुद्ध बातें लिख कर जनसाधारण को भरमाना बहुत बड़ा अपराध है। ऋषि महर्षियों की जांच करने से पूर्व अपने ज्ञान की थाह अवश्य करनी चाहिए। अपने अपूर्ण ज्ञान को इदमित्थम् सिद्ध करना अपनी ज्ञान लिप्सा को सिद्ध करना है।

स्नातिका—पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी-१०

इस्लामी कट्टरवाद का फतवा और पाबंदी

विज्ञान स्वरूप गोयल

अभी हाल ही मे बांग्ला देश की साहित्यकार तसलीमा नसीरन का सर कलम करने वालो को वहा के मुल्ला मौलवियो ने ५० हजार रुपये इनाम देने का एलान किया। वजह सिर्फ इतनी है कि नसीरन ने एक छोटा सा उपन्यास लिखा है 'लज्जा''।

उपन्यास मे मूलत छ दिसम्बर १९९२के बाद की घटनाओका चित्रण है लेकिन लक्ष्य विभाजन के बाद की बांग्लादेश की वास्तविक स्थितियो को उकेरना ही है। नसीरन का कहना है कि आज से नही विभाजन के बाद से ही बांग्ला देश मे हिन्दुओ की स्थिति दूसरे दर्जे के नागरिको जैसी है। तथ्यो, आकडो और राजनैतिक घटनाक्रमो के हवाले से नसीरन जोर देकर कहती है कि मुल्क मे अल्पसख्यको, (हिन्दुओ) के अधिकारो को बराबर रौंदा कुचला और दबाया जाता रहा है। बांग्लादेश मे हिन्दुओ की सख्या दो करोड से ज्यादा है और विडम्बना यह है कि उस देश के अल्पसख्यको के कुचले जाने पर कोई अतर्राष्ट्रीय सगठन या मानवाधिकार समूह यहा तक कि भारत भी कोई आवाज नहीं उठाता।

लज्जा उपन्यास मे एक ऐसे युवक की कहानी है जो बांग्लादेश को अपना देश मानता है। जिसके लिए वह मुल्क मुस्लिम या गैर मुस्लिम मुल्क नही बल्कि अपनी ही जमीन है। उसकी जिन्दगी अपने दोस्तो ज्यादातर मित्र मुसलमान से घुल मिलकर एकाकार हो गयी है। लेकिन एक घटना के बाद उसे महसूस होता है कि समाज बदल चुका है और उसकी सोच अप्रसागिक हो चुकी है। एक राष्ट्रवादी युवक के सकीर्ण और साप्रदायिक हो जाने का जिम्मा समाज के कर्णधारो को सौपतें हुए नसीरन ने उपन्यास मे ऐसी तीखी आलोचक बातें कि बांग्लादेश का कठमुल्ला वर्ग तिलमिला उठा और उसने देश व्यापी हड़ताल शुरू कर दी।

आप को याद होगा कि गत वर्ष छ दिसम्बर को अयोध्या में उत्साही लोगो की भीड़ के द्वारा विवादित ढाचा गिराए जाने के बाद भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश मे जगह २ दगे हुए थे। कथित प्रगतिशील लोग हिन्दू मानस को कोसने के लिए चाहे जैसे तथ्यों को तोड़ते मरोड़ते रहें, असलियत यह है कि दगो की शुरूआत कट्टर पथियो की ओर से हुई थी जिससे बांग्लादेश मे ३५० मन्दिर, १३०० घर और २७० दुकानें हिन्दुओ की जला दी गयी। ऐसे मतान्ध कट्टरपथीयो की इस्लाम मे भरमार है लज्जा' उपन्यास बांग्लादेश की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है इसलिए कथानक में मुस्लिम समाज के आक्रामक लोगो का चित्रण होना स्वाभाविक ही है।

इकतीस वर्षीय नसीरन एक अस्पताल में यौन रोगो की चिकित्सक है, उनके पास महिला रोगियो के केस ज्यादा आते है। नसीरन ने पाया कि आसपास के समाज मे स्त्रियो की दशा शोचनीय है पुरुषों के लिए वह भोग्या और जड़वस्तु से ज्यादा कुछ नही है। दो-ढाई साल पहले तक लोग नसीरन को एक मामूली कवि के रूप में जानते थे, स्वभाव से कवि हृदय ने इस समस्या को गहराई से अनुभव किया और पाया कि इसकी जड़ें मुस्लिम समाज में अधिक गहरी है क्योकि यह सीधे इस्लामी मत की मान्यताओ और रूढ़िवादी रिवाजो से सम्बन्ध रखती है।

१९९० से पुरुषो द्वारा नारी उत्पीड़न के विषय मे उन्होने मुस्लिम समाज को ही ज्यादा फोकस किया। उनके अनुसार जिस समाज मे आप रह रहे हो उसके आसपास की स्थिति को उजागर करना उचित ही नहीं अनिवार्य भी था। उनकी टिप्पणिया और सस्मरण कुछ समय बाद 'निर्वाचित कलाम' के नाम से छपे और छपते ही हाथो-हाथ बिक गए। इस सकलन में आए विवरण स्त्री के प्रति मुस्लिम सोच को ही नहीं पुरुष के सोच को भी उजागर करते है।

इन प्रसगो मे उन्होने कुरान की आयतो और हदीस की हिदायतो को जगह-जगह उद्धृत किया है। सूरा अलहुब को उद्धृत करते हुए नसीरन ने लिखा है कि इस्लाम ने औरत को घर की चारदीवारीमे ही रहने की हिदायत दी है, घर से बाहर निकलने की सख्त मनाही है, साथ ही यह भी निर्देश है कि वे सज धज कर रहे ताकि मर्दो का मन रमा रहे।

"सूरा अल इमरान" आयत का हवाला देते हुए नसीरन ने लिखा है कि औरतों को इन्सान का दर्जा नहीं दिया गया है। वे सिर्फ मन बहलाव की चीजें है। औरतों, बच्चों, सोने-चांदी के जेवरातों, जानवरों, खेतो और जायदाद जैसी तमाम चीजो को एक ही पात में रखा गया है। 'सूरा अल इमरान'' में तो साफ लिखा है कि 'तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती है। इसलिए तुम जब भी चाहो इनका इस्तेमाल कर सकते हो।'

''निर्वाचित कलाम'' में नसीरन ने एक जगह लिखा है कि लड़कियो के लिए अच्छे कपड़े पहन कर स्कूल कालेज जाना दुश्वार है। एक मदरसे में किस तरह एक छात्र ने अपनी सहपाठी छात्रा से बलात्कार किया अथवा इमाम ने कैसे मस्जिद मे एक लड़की की अस्मत लूटी या कैसे एक बूढ़े आदमी ने अपनी पोती जैसी लड़की को बर्बाद किया और किसी का कुछ नहीं बिगड़ा धार्मिक जगत मे उनकी प्रतिष्ठा आज भी बरकरार है।

इस सम्बन्ध मे धर्म की पुस्तको का हवाला देते हुए उन्होने लिखा है कि हमारा मत औरतो को हर हाल मे आदमी की हवस पूरी करने की आज्ञा देता है। कहता है कि चाहे वह खाना पका रही हो, कपड़े धो रही हो, नहा रही हो, या चाहे बिमार हो उसका खाविन्द जब हम बिस्तर होने के लिए कहे तो उसे तुरन्त हाजिर होना चाहिए। जो औरत अपने खाविंद की हवस पूरी करने के लिए हर घड़ी तैयार रहती है वह अल्लाह की नजरो में 'शहीद'' का दर्जा पाती है।

इस्लाम के मुताबिक मर्द अपनी बीवी को चार कारणो से पीट सकता है एक उनके कहने पर वह सजधज कर मर्द के पास न आए, दूसरे पति के कहने पर वह हम बिस्तर न हो। तीसरे वह सभोग के बाद नहाने से इकार कर दे और चौथे वह पति से इजाजत लिए बिना दूसरे घरो में जाए। 'निर्वाचित कलाम'' मे नसीरन ने लिखा है कि यह किसी और ने नहीं बल्कि स्वय हजरत मोहम्मद ने कहा है हदीस इस का प्रमाण है।

निर्वाचित कलाम' ने ही मुस्लिम कट्टरपथीयो के होश उड़ा दिए थे, इसी बीच फरवरी १९९३ मे उनका विस्फोटक उपन्यास 'लज्जा'' प्रकाशित हुआ। मुल्लाओ न नसीरन का सर काट देने का फतवा दिया और नौ अक्तूबर को नसीरन के खिलाफ देश व्यापी हड़ताल की गई। माहौल में भर दी गई उत्तेजना को ध्यान मे रखते हुए नसीरन ने सरकार से सुरक्षा की मांग की, लेकिन सरकार ने कोई सुनवाई नहीं की। गृह मत्रालय ने सिर्फ इतना कह कर अपना पल्ला झाड़ लिया कि सरकार किसी को कानून हाथ में नहीं लेने देगी। कोई सुरक्षा उपाय करने के बजाय बांग्लादेश सरकार ने भी कट्टरपथियो के आगे घुटने टेक कर, प्रकाशित होने के सात महीने के बाद

(शेष पृष्ठ ८ पर)

हिन्दुत्व की अवधारणा और आर्य समाज (३)

प्रो० भवानी लाल भारतीय

जिन धर्मग्रन्थों या खुदाई किताबों के मानने वालों ने यह तर्क देकर नालन्दा और विक्रमशिला जैसे पुस्तकालयों को भस्मीभूत कर दिया कि इन ग्रन्थागारों में विद्यमान ग्रन्थ यदि कुरान के खिलाफ है तो उन्हें नष्ट करने में कोई हानि नहीं और यदि उनमें लिखित बातें कुरान के अनुकूल है तब भी उन्हें नष्ट कर देने में कोई हानि नहीं और यदि उनमें लिखित बातें कुरान के अनुकूल हैं तब भी उनकी कोई आवश्यकता नही, क्योंकि ये बातें तो पहले से ही कुरान में मौजूद हैं। अतः हर हालत में इन पुस्तकों को नष्ट कर देना ही उचित है। तर्कशास्त्र में वर्णित इस प्रकार के हेत्वाभासों का प्रयोग कर यदि धर्मग्रन्थ के नाम पर ही ज्ञान के अटूट खजाने को नष्ट किया जाता है, तब तो सचमुच ऐसे धर्मग्रन्थ और उनके रुतबे से हमें तोबा ही करनी होगी। और यदि लेखक वेदों का रुतबा ही देखना चाहे तो संस्कृत के समस्त शास्त्रीय वाङ्मय को देखे जिसमें वेदों की सर्वोपरि प्रामाणिकता को पदे पदे स्वीकार किया गया है। अधिक क्या, सिक्खों के मान्य गुरु ग्रन्थ साहब में भी जिसे सम्मान का दर्जा दिया गया, यहा तक कि नवजागरण के सूत्राधार तथा धार्मिक सुधारों के प्रवर्त्तक राजा राम मोहनराय तथा दयानन्द सरस्वती ने जिन्हें धर्मालोचन एवं धर्म मीमांसा में स्वत. प्रमाण माना है। यह सब होने पर भी वेदों को धर्म ग्रन्थ मानने वालों ने इनकी मान्यता को लेकर कभी असहिष्णुता का परिचय नहीं दिया। चाहे जैन बौद्ध तथा चार्वाक परम्परा ने वेदों को अस्वीकार किया, किन्तु किसी वेदमतानुयायी ने इसी बात पर उनका सिर कलम करने का फतवा कभी नही दिया।

लेखक की यह विवेचना कितनी हास्यास्पद, तथ्यहीन तथा अनैतिहासिक है जब वह यह कहता है कि अंग्रेजों ने एक ब्राह्मण धर्म की कल्पना कर ली और अपने हिसाब से रामायण, महाभारत और पुराणों को धर्मशास्त्र मान लिया। लीजिये साहब, अब हमने रामायण, महाभारत और पुराणों को भी अंग्रेजों के कहने से धर्मग्रन्थ माना है। जिन भागवतादि पुराणों की कथा शताब्दियों से धर्मग्रन्थ माने जाने के कारण बृहत्तर हिन्दू समाज में कथा व्यास लोग करते आये हैं, रामायण की कथा पर आधृत तुलसीदास के रामचरित मानस को असंख्य जन धर्मशास्त्र के तुल्य सम्मान देता है, मृतक के पीछे की जाने वाली और्ध्व दैहिक क्रिया के रूप में जिस गरुड़-पुराण का पाठ किया जाता है, स्कन्दपुराण के नाम पर प्रणीत तथाकथित सत्यनारायण की कथा का प्रति पूर्णिमा करोड़ों भारतीय पाठ करते हैं, लेखक के अनुसार यह सब हम अंग्रेजों के कहने से कर रहे हैं। इससे अधिक सत्य का अपलाप और क्या हो सकता है?

अब लेखक आर्यसमाज की ओर आता है। वह लिखता है—'आर्य समाज ने और कुछ विदेशी विद्वानों ने वैदिक धर्म की कल्पना कर ली और वेदों को धर्म ग्रन्थ मान लिया।' क्या वैदिक धर्म की कल्पना मात्र आर्य समाज ने ही की। क्यों वेदों को धर्मग्रन्थ आर्य समाज ने ही माना, सनातनियों ने नहीं, अजी महाराज, वेदों को धर्मग्रन्थ मानने वाले ८५ करोड़ भारतवासी हिन्दू तो हैं ही, मोरीशस, फीजी, अफ्रीका तथा अन्य विदेशों में बसे लाखों करोड़ों प्रवासी हिन्दू भी वेदों को अपना धर्मग्रन्थ मानते है। फिर यह बताये वे कौन से विदेशी विद्वान थे जिन्होंने वैदिक धर्म की कल्पना की। हमने तो यह पढ़ा है कि आद्य शंकर ने वैदिक धर्म की रक्षा के लिए दिग्विजय यात्रा की और वेदेतर शैव, शाक्त, पाशुपत, कापालिक, सौगत, आर्हत आदि मतों का प्रत्याख्यान किया। इसी प्रकार आचार्य रामानुज की धर्मयात्रा भी वैदिक धर्म के प्रचारार्थ ही हुई थी। जब व्यास से लेकर राममोहन राय तथा दयानन्द पर्यन्त धर्माचार्य वैदिक धर्म के प्रति आस्था व्यक्त करते हैं तो आपको यह ख्वाब कैसे आया कि वैदिकधर्म की कल्पना कुछ विदेशी विद्वानों ने की है।

गीता की पुस्तक पर हाथ रखकर अदालतों में किसी गवाह को कसम उठवाने को आप बुद्धिहीनता कहें या कुछ किन्तु क्या आप यह इन्कार कर सकते हैं कि जन सामान्य में गीता के प्रति महान आदर है और यह गीता तो स्वयं वेदों और उपनिषदों का सार ही है। इस चर्चा को आगे बढ़ाने से पहले मैं लेखक से यह पूछना चाहता हूं कि यदि वेद धर्म ग्रन्थ नहीं है तो वे किस विषय के ग्रन्थ हैं? क्या उन्हें इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र अथवा किसी अन्य ज्ञान-विज्ञान के ग्रन्थ होने की एकान्ततः संज्ञा दी जा सकती है। वस्तुतः वे धर्मग्रन्थ ही हैं, क्योंकि उनमें मनुष्य मात्र के लिए आचरणीय धर्म-वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक यहा तक कि राष्ट्रीय एवं वैश्विक धर्मों का प्रवचन किया गया है। वेदों में वर्णित सार्वजनिक भावों को सभी वेदाभ्यासियों ने स्वीकार किया है।

लेखक का कथन कि 'जो विचार या दर्शन रामायण, महाभारत पुराण तथा गीता में अभिव्यक्त हुआ है वही त्रिपिटक, जैन पुराण तथा गुरु ग्रन्थ साहब में भी हुआ है।' यह कथन भी अर्ध सत्य ही है। कारण कि बौद्धों और जैनों का श्रमण चिन्तन वैदिक चिन्तन से नितान्त भिन्न है। इन दोनों धाराओं का दर्शन, उपासना प्रणाली, तथा कर्मकाण्ड भी दो भिन्न-भिन्न सीमा रेखाओं पर खड़े हैं। इसलिए त्रिपिटकों और जैन साहित्य को रामायण, महाभारत की विचार धारा से जोड़ना मात्र कल्पना क्रीड़ा ही है। क्या लेखक यह भूल गया कि दशरथ जातक जैसे बौद्ध ग्रन्थों में रामायण कथा को जिस विकृत रूप में (सीता को रावण की पुत्री तथा राम की बहिन बताना) पेश किया गया है उसके रहते कोई राम भक्त हिन्दू इस ग्रन्थ के प्रति आदर भाव रखेगा। शायद ही किसी सामान्य हिन्दू ने त्रिपिटकों या जैन पुराणों का नाम सुना हो। गुरु ग्रन्थ साहब तथा कबीर, तुलसी और मीरा आदि सन्तों की वाणी के प्रति हिन्दुओं का जो आदर भाव है, उसका कारण भी यही है कि ये ग्रन्थ तथा ये सन्त भारत की अनादि काल से चली आने वाली वैदिक चिन्तनधारा से येन केन प्रकारेण जुड़े हुए हैं जबकि त्रिपिटक आदि से कोई व्यक्ति दूर का भी परिचय नही रखता।

लेखक की इस बात से तो हम सहमत है कि रामायण, महाभारत, पुराण, गीता तथा सन्तों की वाणी इनमें से कोई अकेला हिन्दुओं का एकमात्र धर्मग्रन्थ नहीं हो सकता, किन्तु यह बात वेदों के लिए नही कही जा सकती। वेदों के प्रति सम्मान और आदर भाव तो रामायण, महाभारत, पुराण, गीता आदि सभी ग्रन्थ प्रकट करते हैं, साथ ही भारत की सन्त परम्परा ने भी उन्हें वैसा ही आदर दिया है। केवल श्रमण धर्मों को छोड़कर समग्र वैदिक परम्परा वेदों को एकमेव धर्म ग्रन्थ का पद देती आई है।

अपने इस प्रकार के मन कल्पित विवेचन के आधार पर लेखक यह निष्कर्ष निकालता है कि—

(१) हिन्दू धर्म का कोई निश्चित पैगम्बर नहीं।

(२) उसका कोई एक (कुरान बाइबिल की भांति) धर्म ग्रन्थ नहीं।

(३) वह कोई सुपरिभाषित पक्तिबद्ध धर्म नहीं।

(४) इसलिए वह प्रसारवादी नही हो सकता।

लेखक प्रसारवाद का क्या अर्थ लेता है, यह तो वही जाने। शायद उसका अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार ईसाईमत में अपने प्रचारकों को अन्य देश में भेजकर तत्रस्थ लोगों को ईसाई मत में प्रविष्ट कराने का धार्मिक उत्साह होता है या जैसे इस्लाम में तबलीग के द्वारा अन्य मत वालों को मुसलमान बनाने का जुनून होता है वैसा हिन्दुओं में नहीं है, नहीं हो सकता है, नहीं होना चाहिए। (क्रमश.)

दिवंगत स्वामी सत्यदेव परिव्राट्

– डा० वीरदेव विष्ट एम०ए० पी०एच०डी०

दक्षिण अफ्रीका के प्रमुख आर्य नेता श्री स्वामी सत्यदेव परिव्राट् का लम्बी बीमारी के बाद ६६ वर्ष की अवस्था मे १२ मार्च १९९४ को स्टेन्गर, डरबन मे निधन हो गया।

गतवर्ष १४ मार्च १९९२ को श्री धनन्द सत्यदेव ने गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी (मेरठ) मे श्री स्वामी दीक्षानन्द जी से सन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर 'स्वामी सत्यदेव परिव्राट्'' नाम ग्रहण किया था।

आर्य समाज के सस्कार उन्हे अपने स्वर्गीय पिता डी० जी० सत्यदेव से विरासत मे मिले थे। जिन्होंने नगर पालिका के एक सामान्य लिपिक पद से अपने सामाजिक जीवन की शुरुआत करके अन्यो के साथ मिलकर आज की विकसित महान् सस्था आर्य अनाथाश्रम'' की स्थापना सन् १९२१ मे की थी। बाद मे वे आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका के भी वर्षों तक सयुक्त सचिव रहे।

श्री स्वामी सत्यदेव परिव्राट् बाल्यावस्था से ही धार्मिक नव-जागरण के वातावरण मे पले पोसे और बडे हुए। एक सद्गृहस्थी के रूप मे व्यापार के क्षेत्र मे प्रविष्ट होकर उन्होने प्रचुर मात्रा मे धन भी कमाया तथा इस धन को धर्म सस्कृति व मानवता की सेवा मे दान देकर यश के भागी भी बने।

अपनी युवावस्था मे ही वे आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की सभी गतिविधियो मे सक्रिय भाग लेने लगे थे। वेद निकेतन आदि इसके अगों मे सहयोग देते रहे। बाद मे वर्षो तक सभा के सयुक्त सचिव व गतवर्ष सन्यासी बनने से पूर्व तक इसके उपाध्यक्ष भी रहे। सभा की मुख-पत्रिका वेदज्योति' लगभग नगण्य मूल्य लेकर और कभी कभी नि शुल्क भी अनेक वर्ष तक अपने प्रिंटिग प्रेस से छापते रहे।

"पवित्र वेद" (चारो वेदो के चुने हुए मन्त्रो का अग्रेजी मे सार) सहित दर्जनो वैदिक साहित्य की पुस्तकें (अग्रेजी मे) छपवाकर उन्होने इस प्रचार साहित्य के माध्यम से आर्य समाज की महती सेवा की।

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार के लिये उन्होंने सन् १९९२ में 'आर्य मिशन वेद ट्रस्ट'' की स्थापना की। इसके लिये २५०००) रैण्ड (लगभग २५ लाख रुपये) की राशि तथा लगभग इतने मूल्य बराबर का ८ हन्ट्री एवेन्यु एशर-डरबन स्थित 'आर्यकिला' नाम से प्रसिद्ध अपना पैतृक घर भी इस सद्‌देश्य के लिये समर्पित कर दिया इस समय इस ट्रस्ट के अन्तर्गत भारत से आये दो वैदिक मिशनरी प्रचार कार्य मे सलग्न हैं। प्रभु की कृपा से उनके एकमात्र सुपुत्र युवा उद्योगपति श्री दयाप्रकाश सत्यदेव भी अपने स्व० पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए इस ट्रस्ट की उत्तरोत्तर प्रगति के लिये कटिबद्ध, दृढ़प्रतिज्ञ तथा सक्रिय हैं। वे आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका के सयुक्त सचिव भी हैं।

उनकी आय जगत् की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सेवा को देखते हुए महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी, अजमेर मे उन्हे 'आर्य रत्न' की मानद उपाधि से अलकृत किया गया था।

१४ मार्च १९९७ को आर्यनहाल, डरबन से चली इनकी शवयात्रा मे हजारो की भीड थी। इससे पहले सम्पन्न एक शोकसभा मे अनेकों वक्ताओ ने इनके शव पर पुष्पाञ्जलि अर्पित करते हुए इन्हे भाव-भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की थी। सभा के सभी पण्डित पण्डिताओं द्वारा परम्परा अनुसार 'गार्ड आफ आनर'' दिया गया।

अन्तिम सस्कार वैदिक विद्वान् प्राचार्य डा० वीरदेव विष्ट द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से सुसम्पन्न हुआ।

स्वर्गीय स्वामी जी को हमारी अनन्त श्रद्धाञ्जलियां समर्पित हैं।

१५ मार्च १९९४ —प्राचार्य कालेज आफ वैदिक स्टडीज,
डरबन दक्षिण अफ्रीका

एक अनोखी प्रतियोगिता

घर बैठे विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एव उस पर आधारित प्रश्न पत्र प्राप्त करें और छ. मास के भीतर उत्तर भेजकर निम्न पुरस्कार प्राप्त करे।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
३०००) रु०	२०००) रु०	१०००) रु०

पूर्ण विवरण प्रश्न-पत्र एव प्रवेश शुल्क आदि के लिए मात्र तीस रुपए मनीआर्डर द्वारा—रजिस्ट्रार परीक्षा विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०), ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ को भेजें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

इस्लामी कट्टरवाद

(पृष्ठ ६ का शेष)

"लज्जा" उपन्यास पर यह कहकर पाबदी लगा दी कि इससे साम्प्रदायिक दगे भड़कने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

दुनिया भर के लेखको ने मुल्ला मौलवियो के फतवे और सरकार के फैसले का विरोध किया है। विरोध का आधार लेखक की आजादी पर हमला बताया गया है। इसी प्रकार सलमान रशदी ने जो पुस्तक 'द सैटनिक वर्सेज'' लिखी है उसके सदर्भ में ईरान के शाह "खुमैनी" ने जो फतवा दिया हुआ है जिंदा या मुर्दा उसको पकड कर लाएगा उसे ६ लाख पाउण्ड इनाम स्वरूप दिया जाएगा। खुमैनी की मृत्यु के पश्चात इसके पुत्र ने इस इनाम की राशि को दुगना १२ लाख कर दिया है। किन्तु आज मुस्लिम (अरब के) बुद्धिजीवीयों ने इस फतवे के खिलाफ माग की है कि इस फतवे को वापस लिया जाए किन्तु इस्लामी कट्टरवाद पूरे विश्व मे ज्यो का त्यो कायम है।

आज के इस विज्ञान युग मे जबकि दुनिया सिमटकर छोटी हो गयी है और हम कुछ ही घण्टों मे हजारो मील की यात्रा कर सकते है। मुस्लिम बुद्धिजीवी कुरान और इस्लाम मे बहुत कुछ ऐसा पाता है जो इसके गले से नीचे नहीं उतरता है। किन्तु कट्टरवाद के डर के कारण अपना मुह बन्द किए हुए है। इसका ताजा उदाहरण हमारे भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने तो इसे बिना पढ ही इस पर पाबन्दी लगा दी थी। कुछ मुस्लिम बुद्धिजीवियो ने इसका विरोध भी किया है जैसे दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के प्रो० कुरेशी ने इस कट्टरवाद पर कुछ टिप्पणी की तो उस पर इन कट्टरपथियो ने हमला बोल दिया।

अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि या तो यह कट्टरवाद पुरी तरह समाप्त हो जाएगा या फिर आने वाले सन् २००० तक इस्लामी कट्टरवाद के कारण ससार की दो तिहाई जनसख्या युद्ध की आग मे समाप्त हो जाएगी।

—३११४, बैक स्ट्रीट, करोल बाग, नई दिल्ली-५

पुस्तक समीक्षा

वेदों की वैज्ञानिक अवधारणा

पृष्ठ संख्या २६४ मूल्य १०० रुपये
लेखक—श्री शिवनारायण उपाध्याय
७३ शास्त्री नगर, दादाबाड़ी कोटा, राजस्थान

वेद—परमपिता परमात्मा का वह शाश्वत ज्ञान है जिसे पाकर मानव का सर्वांगीण विकास होता है। आत्मिक-शारीरिक-मानसिक विविध प्रकार की उन्नति होती है। किन्तु समय-समय पर वेदों के विषय मे जो अनर्गल प्रलाप किया गया है उसका परिणाम हुआ कि पश्चात्य लोगों ने वेदों को प्रभु का ज्ञान न कहकर गडरियों के गीत बताया। ऐसी स्थितिमें महर्षि दयानन्द ने "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" महान्-ग्रन्थ लिखकर वेदों की वैज्ञानिक महनीयता सिद्ध की है। वेदों में क्या है? यह बताते हुए—

सृष्टि का आविर्भाव मुक्ति पुनर्जन्म से लेकर धर्म का स्वरूप लिखा है वहीं पर नौका विमानादि गृहनक्षत्र विद्या आयुर्वेद सभी सत्य विद्याओं को स्पष्ट लिखकर वेद के भेद को स्पष्ट कर विश्व के वैज्ञानिकों को आश्चर्य युक्त कर दिया। दुनियां में नाना वेद आदि पुस्तक विश्व के पुस्तकालय में विद्यमान है। समय-समय पर विद्वानों ने वेदों पर लेखनी चलाई है।

आज "वेदों की वैज्ञानिक अवधारणा" नामक शोध ग्रन्थ लिखकर श्री उपाध्याय जी ने गम्भीर प्रश्नों के उत्तर खोजकर दिये हैं। वेदों के उपवेद क्या हैं—इसका निरूपण करके उनमें गुरुत्वाकर्षण प्राणि विज्ञान गणित शरीर विज्ञान विद्युत तार धातुशोधन जैसे गम्भीर विषयों पर वेद-मन्त्रों की खोजकर विविध विषयों पर अन्वेषण किया है जो कि अपने में महत्त्वपूर्ण है।

रामायण काल से महाभारत तक का समय कितना उन्नत था इस पर नाना प्रकार मतभेदों को महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है—यह सिद्ध करते हुए यह विद्वत्ता पूर्ण अन्वेषण वैज्ञानिक चिन्तन महत्त्वपूर्ण शोध प्रबन्ध है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की भांति यह ग्रन्थ मनीषियों को विचारने का अवसर प्रदान करेगा साथ ही अनुसन्धान के लिये नई दिशा भी देगा। लेखक का प्रयास तभी स्तुत्य होगा। जब इसे पढ़कर ग्रन्थ का लाभ उठायेंगे। प्रकाशक भी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने ग्रन्थ को मानव हितार्थ प्रकाशित किया।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

वैदिक धर्म में प्रवेश

आर्य समाज मस्जिद मोठ के तत्वावधान में कु० मिस्मा फेरनेण्डर, निवासिनी ए-२ हिल् विव् आपार्टमैन्ट बसन्त विहार, नई दिल्ली-५७ को वैदिक मन्त्रोच्चारण एवं यज्ञ के साथ शुद्ध कर वैदिक धर्म की (हिन्दू धर्म) दीक्षा दी गई। तत्पश्चात् नाम परिवर्तन कर मिस्मा कृष्णा रखा गया। वैदिक रीति से आशीर्वाद प्रदान कर उसके लिये मंगल कामना की गई। यह संस्कार २४-२-९४ को विधिवत सम्पन्न हुआ।

वार्षिक निर्वाचन

पौढ़ी गढ़वाल, १० अप्रैल। बीरोखाल आर्य समाज सावली आदि पचपुरी गढ़वाल का वार्षिक निर्वाचन वर्ष १९९४ के लिए श्री रामपाल सिंह आर्य पीसोलीत की अध्यक्षता मे निम्नवत सम्पन्न हुआ—

१—प्रधान-श्री चन्द्रमणि, ग्राम-बैरामल्ला गढ़वाल। २—उपप्रधान-श्री भगतराम आर्य ग्राम-कोलावरिया। ३—मन्त्री-वासुदेव विमल, ग्राम बैरामल्ला। ४—उपमन्त्री-श्री भगाप्रसाद कोहली, ग्राम-कफलसार। ५—कोषाध्यक्ष-श्री आलम सिंह आर्य ग्राम-मासों। ६—पुस्तकाध्यक्ष-श्री प्रदीप कुमार, ग्राम-खिलाधू। ७—पुरोहित एवं भजनोपदेशक-श्री बच्चीराम आर्य ग्राम बरकण्डाई बाद। ८—लेखा निरीक्षक-श्री धीरजसिंह आर्य, ग्राम-धनाढतला।

वासुदेव विमल'
मन्त्री आ स पचपुरी

शुद्धि एव विवाह सस्कार

आर्य समाज, अल्मोड़ा मे २१ अप्रैल १९९४ को कुमारी शारला डेनियल ब्रिट ने स्वेच्छा से ईसाई मत छोड़कर वैदिक धर्म ग्रहण किया। शुद्धि सस्कार के पश्चात् उसका नाम सरला रखा गया। तदन्तर उसका विवाह सस्कार श्री सजयकुमार कपूर, नारायण तेवाड़ी देवाल, अल्मोड़ा के साथ डा० जयदत्त शास्त्री के आचार्यत्व मे वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री सजयकुमार के यहा समस्त पारिवारिक जन उपस्थित थे, वहा उक्त कन्या की माता भी कन्यादान करने के लिए सुदूर अपने घर—ओकलेड, कैलीफोर्निया अमेरिका से पधारीं थीं और उन्होने भाव विभोर होकर उक्त दम्पती को शुभाशीर्वाद प्रदान किया। —प्रधान

आर्यसमाजो के निर्वाचन

—आर्य समाज सुन्दर नगर कालोनी, प्रधान श्री कृष्णचन्द्र आर्य मन्त्री, श्री रामफल सिंह आर्य कोषाध्यक्ष श्री कुलदीप कुमार मेहता।

—आर्य समाज रावली आदि पचपुरी प्रधान श्री चन्द्रमणि, ग्राम डेरा मल्ला गढ़वाल। मन्त्री वासुदेव विमल ग्राम डेरामल्ला गढ़वाल। कोषाध्यक्ष, श्री बालमसिंह आर्य ग्राम मार्सों गढ़वाल।

—आर्य समाज हैवी इलैक्ट्रिकल्स, पिपलानी भोपाल (म० प्र०) प्रधान-श्री रेवाशकर चौधरी, मन्त्री श्री नरेन्द्र कुमार आय कोषाध्यक्ष श्री विवेक कुमार बाबचा।

—आर्य समाज कठुआ (जम्मू कश्मीर) प्रधान श्री भारत भूषण महाजन एडवोकेट, मन्त्री श्री मदन लाल रैना, कोषाध्यक्ष श्री बुई लाल।

अतिथिशाला के लिए दान

परोपकारिणी सभा द्वारा अजमेर पुष्कर मार्ग पर अनासागर के तट पर स्थित महर्षि उद्यान मे अतिथिशाला का निर्माण कार्य प्रगति पर है। आठ कमरों का निर्माण पूरा हो चुका है। तथा दूसरे चरण मे आठ कमरों का निर्माण चल रहा है। इस कार्य के लिए आर्य जनता का निरन्तर सहयोग प्राप्त हो रहा है। इस अतिथिशाला मे एक कक्ष के निर्माण के लिए सुश्री उर्मिला राजोतिया सेवानिवृत प्रधानाचार्या ने अपनी पूज्या माता जी श्रीमती सुशीलादेवी जो धर्मपत्नि प० बृजलाल शर्मा अजमेर निवासी की पुण्य स्मृति मे इक्यावन हजार रुपये प्रदान किए हैं।

इसी प्रकार जयपुर निवासिनी श्रीमती कृष्णाकुमारी कोठारी ने अपने पति स्व० सरदारसिंह जी कोठारी (सुपुत्र स्व० मोतीसिंह जी कोठारी एव स्व०रूपकवर जी कोठारी)की पुण्य स्मृतिमे एक कमरे के निर्माण के लिए इक्यावन हजार रुपयेका सात्विक दान प्रदान किया।

आशा है जनता के सहयोग से यह कार्य शीघ्र पूर्ण हो सकेगा। दानदाताओं का हार्दिक धन्यवाद। —मन्त्री

परोपकारिणी सभा अजमेर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री जी का बैंकाक में प्रवास

—रामपलट पाण्डेय, प्रधान

वर्तमान समय में आर्य समाज बैंकाक की शिथिलताओं को देखते हुए मैंने अपने सहयोगियों से विचार विमर्श करने के उपरान्त दिल्ली (भारत) से किसी विद्वान व्यक्ति को आमन्त्रित करने का विचार बनाया और सबकी इच्छानुसार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री से पत्र तथा टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित किया तथा उनकी स्वीकृति प्राप्त होने पर ऋषि बोधोत्सव पर्व से पूर्व पहुंचने का निवेदन किया। श्री शास्त्री जी ने हमारी प्रार्थना को स्वीकार किया और वे ९ मार्च को रात्रि ७-३० पर बैंकाक हवाई अड्डे पर उतरे। श्री शास्त्री जी को ससम्मान आर्य समाज मन्दिर लाया गया। उनके पधारने से मुझे तथा हमारे सहयोगियों को अपार प्रसन्नता हुई।

ऋषि बोधोत्सव पर्व

१० मार्च को प्रातः आर्य समाज बैंकाक के अनेको प्रमुख व्यक्तियों से श्री शास्त्री जी का साक्षात्कार हुआ तथा सायं काल को उनके ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ रात्रि में ऋषिबोधोत्सव का कार्यक्रम निश्चित था। उक्त कार्यक्रम का शुभारम्भ बैंकाक आर्य समाज के मन्त्री श्री लाल बहादुर सिंह जी ने ईश्वर प्रार्थना के साथ किया तत्पश्चात आदरणीय शास्त्री जी का वैदिक मंत्रोच्चारण से पुष्पहार समर्पित कर हार्दिक स्वागत किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री रामपलट पाण्डेय ने उपस्थित जनसमूह को पर्व परिचय देते हुए बताया कि आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री इस शुभ अवसर पर पधारे हुए हैं और यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है अतः समय नष्ट न करते हुए हमें उनके विचारों से लाभ उठाना चाहिए। श्री शास्त्री जी के विद्वतापूर्ण विचार सुनने के लिए उनको पूरा समय प्रदान किया गया। श्री शास्त्री जी ने लगभग ६० मिनट के समय मे आर्य सिद्धान्तों, उपासना के शाब्दिक अर्थों की व्याख्या करते हुए वैदिक धर्म पर वृहद प्रकाश डाला। आपने ऋषिबोध पर्व का परिचय देते हुए ऋषि के जीवन पर विशेष प्रकाश डाला। आपकी उपस्थिति से ऋषिबोधोत्सव काकार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

आप के व्याख्यानों की व्यवस्था हिन्दू धर्म सभा विष्णु मन्दिर एवं हिन्दू समाज देव मन्दिर में भी की गयी। सभी स्थानों पर आप के विद्वतापूर्ण व्याख्यान वैदिक धर्म पर समयानुसार होते रहे जिनका श्रोताओं पर विशेष प्रभाव पड़ा।

"वार्षिकोत्सव तथा होली पर्व"

२८ मार्च, आर्य समाज बैंकाक के ७४वें वार्षिकोत्सव एवं होलिकोत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उक्त कार्यक्रम में श्री शास्त्री जी का मुख्य अतिथि के रूप मे भव्य स्वागत किया गया तथा आर्य समाज बैंकाक के अधिकारियों तथा प्रमुख व्यक्तियों ने उनका वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ पुष्प मालाओं से स्वागत किया। इससे पूर्व प्रातः ९-३० बजे श्री शास्त्री जी की देखरेख में वृहद यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महामहिम भारतीय राजदूत के प्रतिनिधि के रूप में डा० बी. एस. शेषाद्री कौंसलर के. डी. महाजन आदि प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने अपने प्रभावशाली भाषण में आर्य समाज के कार्यों पर विशेष प्रकाश डालते हुए वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा व जागरूक होने के लिए प्रेरित किया। अनेको अन्य आयोजनों के साथ वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

श्री शास्त्री जी बैंकाक में स्थित दर्शनीय स्थलो को देखने भी गये। उनके बैंकाक आगमन से यहां की आर्य जनता में उत्साह की नयी लहर पैदा हुई है। तथा उनके निर्देशानुसार यहां के क्रिया कलापों मे नवीन जागृति पैदा होना सुनिश्चित है।

श्री शास्त्री जी ने अपने तीन सप्ताह के छोटे से प्रवास मे यहां की जनता का मन मोह लिया लेकिन कार्य अधिकता के कारण उन्हें भारत वापस लौटना भी आवश्यक था अत. ३० मार्च को भारतीय वायुयान द्वारा उन्होंने भारत के लिये प्रस्थान किया। बैंकाक हवाई अड्डे पर आपकी विदायी के लिये आर्य समाज बैंकाक के अधिकारी गण तथा यहां के पुरोहित उपस्थित थे जिन्होंने पुष्पहार समर्पित कर स्वदेश वापसी की मंगल मय कामना के साथ आपको विदा किया।

सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज (रामस्वरूप हाल) आर्य पुरा सब्जी मण्डी दिल्ली के ९२वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में सामवेद पारायण महायज्ञ का २५ अप्रैल से १ मई तक विशेष आयोजन किया गया। डा० राजसिंह आर्य के ब्रह्मत्व में प्रतिदिन प्रातः ६ बजे से ९ बजे तक होने वाले यज्ञ में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर लाभ उठाया। इस अवसर पर रात्रि में सम्पूर्ण आर्य पुरा क्षेत्र में नुक्कड़ सभाओं का आयोजन भी किया गया। १ मई को पूर्णाहुति के अवसर पर स्वामी सत्यपति जी महाराज द्वारा यजमानों को आशीर्वाद प्रदान किया गया। इस अवसर पर डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० धर्मपाल जी श्री हरीकृष्ण (विधायक) तथा मुख्य अतिथि श्री बैकुण्ठलाल शर्मा (सांसद) ने उपस्थित होकर समारोह को सफल बनाया। कार्यक्रम के पश्चात ऋषिलंगर की भी व्यवस्था की गई थी।

आर्य वीर दल मध्यप्रदेश का—

सम्भागीय प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल मध्यप्रदेश का (जबलपुर संभाग) सम्भागीय प्रशिक्षण शिविर आर्य कन्या विद्यालय नेपियर टाउन जबलपुर में ८ मई से १५ मई तक लगाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य वीर दल के प्रान्तीय अधिकारी भी पधारेंगे। आर्य वीरों की आयु १२ वर्ष से २० वर्ष रखी गई है तथा शिविर शुल्क मात्र २० रुपये रखा गया है प्रशिक्षणार्थियों को ८ मई ९४ तक शिविर स्थल पर पहुंच जाना चाहिये। शिविर को सफल बनाने हेतु अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करें।

आर्य वीर दल एवं योग शिविर

आर्ष गुरुकुल खानपुर पो० मण्ढाणा त० नारनौल में २७ मई से ५ जून ९४ तक आर्य वीर दल एवं योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है। योग शिविर का वास्तविक उद्देश्य योग के वास्तविक स्वरूप का प्रचार प्रसार करना है। दोनों शिविरों के संचालन की व्यवस्था पृथक-पृथक रहेगी आर्य वीर दल शिविर का प्रवेश शुल्क मात्र ५० रुपये तथा योग शिविर का प्रवेश शुल्क १५० रुपये रखा गया है। आवश्यक सामान साथ लाना होगा। शिविर का समापन ५ जून को समारोह पूर्वक किया जायेगा।

स्वामी नारायण सरस्वती जी का आंखों का आपरेशन हुआ

हैदराबाद : दक्षिण भारत के महान तपस्वी स्वामी नारायण सरस्वती जी का गत माह हैदराबाद के एक नर्सिंग होम में आंखों का सफल आपरेशन हुआ। अप्रैल में ही स्वामी जी के सहयोग तथा सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री वन्देमातरम राम-चन्द्र-राव जी के नेतृत्व में तमिलनाडू आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की गई थी, इस कार्यक्रम के बाद श्री वन्देमातरम जी स्वामी जी की आंखों की अस्वस्थता देख कर उन्हें हैदराबाद ले आए।

हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि पूज्य स्वामी जी को शीघ्र ही स्वस्थ नेत्र लाभ हो और कुछ दिन आराम के बाद वे पुनः दक्षिण भारत में वैदिक प्रचार में जुट सकें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० (एस०) ११०४१/९४   सार्वदेशिक साप्ताहिक   (८-५-१९९४)   बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९३
R. N- 626/57   Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on   5-6-5-1994

हिन्दी माध्यम से एम. डी.

डा० मनोहर भण्डारी ने अपने स्नातकोत्तर अध्ययन के तहत (एम. डी - शरीर क्रिया विज्ञान) प्रस्तुत किए जाने वाले "लघु शोध प्रबन्ध" को हिन्दी में लिखा था और एम.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। प्रसन्नता की बात यह भी है कि इनकी शोध निदेशक डा. (श्रीमती) एस. बोस हिन्दीतर भाषी थीं। डा. भण्डारी ने खिलाड़ियों में होने वाली रक्ताल्पता पर शोध किया है और शोध-पत्र हिन्दी में ही प्रस्तुत किया है। डा. भण्डारी पिछले छ. वर्षों से चिकित्सा विज्ञान पर देश की हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहे हैं। विश्वास है कि अन्य सभी तकनीकी विषयों के शोधकर्ता उनसे प्रेरणा लेंगे।

जगन्नाथ संयोजक, राजभाषा कार्य

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, दीक्षान्त समारोह

हरिद्वार (१५.४.९४) श्री अर्जुनसिंह की अनुपस्थिति में यू. जी. सी. के सचिव श्री इन्द्रजीत खन्ना ने श्री अर्जुनसिंह का दीक्षान्त भाषण पढ़ कर सुनाया। श्री अर्जुन सिंह ने अपने संदेश में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल की स्थापना पूरब और पश्चिम को प्राच्य विद्याओं के साथ आधुनिक ज्ञान विज्ञान को, अध्यात्म के साथ भौतिक यथार्थ को तथा व्यक्ति निर्माण के साथ राष्ट्रोन्नति के लक्ष्य को एकाकार करने की चेष्टा को और उसे मूर्त रूप देने के लिए की।

श्री अर्जुन सिंह ने कहा कि स्वामी जी का यह साहस पूर्ण कार्य था कि उन्होंने हिन्दी भाषा के माध्यम से आधुनिकतम विषयों की शिक्षा व्यवस्था की।

उन्होंने छात्रों से कहा कि वे उनके जीवन से त्याग बलिदान, देश सेवा, धर्मनिरपेक्षता जातीय सद्भाव तथा हिन्दू मुस्लिम सिख एकता की प्रेरणा लें। उन्होंने कहा कि बिखरते हुए देश को एक जुट होकर संगठित करें तथा अध्यात्म के साथ आधुनिक तकनीकी ज्ञान को जोड़कर देश के करोड़ों निर्धन, असहाय तथा ग्रामीण परिवेश में पिछड़ा जीवन जी रहे लोगों को समृद्धि सुख और शान्ति का जीवन पाने के अवसर प्रदान करें। उन्होंने छात्रों से अपेक्षा की कि वे मानव समाज की सेवा का लक्ष्य जीवन में सर्वोपरि मानेंगे। पुस्तकीय ज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह हमारे व्यवहार का अंग हो। छात्रों में शिक्षा को ग्रामोत्थान से लेकर विश्वबन्धुत्व तक जोड़ना है। श्री अर्जुन सिंह ने कहा कि यू.जी.सी. ने व्यावसायिक शिक्षा के सम्बन्ध में निर्णय लिया है कि १९९४-९५ के सत्र से देश के कुछ विद्यालयों/कालेजों में डिग्री कोर्स में व्यावसायिक शिक्षा प्रारम्भ करेंगे।

कुलपति डा० धर्मपाल ने स्वागत भाषण में सर्वप्रथम नव स्नातकों से विश्वविद्यालय के कीर्तिमान स्नातकों का स्मरण करते हुए कहा कि आप लोग विश्वविद्यालय की श्रेष्ठ परम्परा को आगे बढ़ाएं।

आर्य बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए उन्होंने बताया कि यद्यपि आर्थिक विषमता इस विश्वविद्यालय में भी व्याप्त है तथापि हमने समस्त सकटों को लांघते हुए विश्वविद्यालय को प्रगति पथ पर ला खड़ा किया है। उन्होंने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न प्राच्य तथा आधुनिक विषयों की प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया।

उन्होंने नव स्नातकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जिन शाश्वत मूल्यों की रक्षा, राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, चरित्र, धार्मिक सद्भावना की रक्षा के लिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति उत्पन्न हुई और जीवित है, वे ही जीवनमूल्य आप लोगों के जीवन में हों और आप उन्नति करें।

समारोह में पी.एच.डी. की १६, एम.ए. ४०, अलंकार २६, एम.एस.सी २१ बी.एस.सी. को ६७ डिग्रीयां वितरित की गई। ८ छात्रों को स्वर्ण पदक से विभूषित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेर सिंह जी ने की।

दीक्षान्तोत्सव के अवसर पर डा० त्रिलोक चन्द्र तथा आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति की पुस्तक का विमोचन किया गया। इसके अतिरिक्त पत्रकारिता विभाग की ओर से प्रकाशित प्रायोगिक पत्र सत्पथ तथा जन सम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित अलंकार समाचार पत्र का विमोचन मुख्य अतिथि द्वारा किया गया।

'नया गीत हो, शुभ संगीत'

राधेश्याम आर्य 'विद्यावाचस्पति'
'मुसाफिर खाना, सुलतानपुर'

सुमन सुखों का खिले नवल,
बिखरे रवि की रश्मि धवल।
मिटे कालिमा अनाचार की,
हो चरित्र मानव का उज्ज्वल।
जगे मनुज में मानवता की,
प्रेम समन्वित विमल विवेक।
जन-जन हो गरिमा से युक्त,
बन्धन से अविकल हों मुक्त।
वातावरण महीतल का हो,
स्वच्छ सुशीतल व उपयुक्त।
शुभ गुणों का वसुधा पर हो,
सतत सुमगल सा अभिषेक।
नया गीत हो, शुभ संगीत,
नई सुभाषा हो अभिनीत।
मानवता पर रहे समर्पित,
मानव का समुदाय विनीत।
टूटे हुए हृदय जन-जन के,
पुन: धरणि पर अब हों एक॥

बूचड़खाने का विरोध

आर्य समाज कुरुक्षेत्र के साप्ताहिक सत्संग में आज दिनांक १७.४.९४ को डेराबसी में प्रस्तावित बूचड़खाना जो पंजाब मीटस लिमिटेड के नाम से बनाए जाने की योजना है, पर घोर चिन्ता प्रकट की गई। इस अवसर पर आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त कुरुक्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं विशेषकर हरियाणा सामाजिक एव पर्यावरण मोर्चे के सदस्य भी शामिल थे। श्री बीरु राम आर्य ने प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा कि पंजाब-हरियाणा की सांस्कृतिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमि, जहां दस गुरुओं ने अपना संदेश दिया हो, वे मांग करती है कि इस प्रकार का बूचड़खाना जनता की भावनाओं के सर्वथा विरुद्ध है। स्थानीय डा० रामप्रकाश ने इस बात के लिए सचेत किया कि इस बूचड़खाने से वहां किन्हीं विशेष उद्योगपतियों को लाभ हो सकता है वहां कृषि प्रधान हरियाणा और पंजाब के पशुधन को पूर्णत: समाप्त कर दिया जाएगा जिस से इस क्षेत्र में एक ओर जहां दूध की कमी हो जाएगी वहीं दूसरी ओर कृषि एवं बोझी आदि के माल ढोने के लिए भैंसा आदि पशुओं की कमी भी हो जाएगी।

अत: सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ कि ये बूचड़खाना न केवल इस क्षेत्र की जनता की धार्मिक भावनाओं के विरुद्ध है बल्कि आर्थिक आधार पर भी इस क्षेत्र के लिए हानिकारक है प्रदेश के विशुद्ध पर्यावरण को भी यह बूचड़खाना प्रदूषित करेगा। अत: प्रस्ताव द्वारा मांग की गई है कि इस बूचड़खाने को बन्द किया जाए।

राजेन्द्र विद्यालंकार मन्त्री
आर्य समाज कुरुक्षेत्र

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री   दूरभाष । ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक १४]   दयानन्दाब्द १७०   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५   वैशाख कृ० ५ सं० २०५१ १५ मई १९९४

भारतीय भाषाओं के सम्मान की रक्षा के लिए व्यापक आन्दोलन

पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और श्री देवीलाल द्वारा धरने पर बैठने की घोषणा

अंग्रेजी हटाओ भारतीय भाषायें लाओ आन्दोलन को व्यापक समर्थन

दिल्ली १० मई। भारतीय अस्मिता की रक्षा के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करावे तथा भारतीय भाषाओं को परीक्षा का माध्यम बनवाने की मांग को लेकर १२ मई १९९४ को संघ लोक सेवा आयोग के समक्ष भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और श्री देवीलाल ने धरने पर बैठने की घोषणा करते हुए अंग्रेजी हटाओ और भारतीय भाषायें लाओ आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप दे दिया है। धरने में उक्त नेताओं के अतिरिक्त पूर्व राज्यपाल श्री वीरेन्द्र वर्मा, श्री यज्ञदत्त शर्मा, सांसद श्री सोमपाल तथा श्री सैफूद्दीन चौधरी, अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन के महासचिव श्री राजकरण सिह, अनुसूचित जाति जनजाति के अध्यक्ष श्री रामधन, जनता दल के नेता श्री शरद यादव, भाजपा के श्री विजय कुमार मल्होत्रा सजपा के सांसद श्री दिग्विजयसिंह, कांग्रेस में कानूनी सैल के संयोजक श्री जगदीप धनखड, समाजवादी पार्टी के रघु ठाकुर और पूर्व सांसद श्री कल्याणसिह जैन ने भी इस आन्दोलन को समर्थन और धरने पर बैठने की घोषणा की है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आर्यसमाज के उद्देश्यों में राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा और इसकी संस्कृति का विकास महत्वपूर्ण कार्य हैं। राष्ट्रहित के लिए आर्यसमाज ने हमेशा अग्रणीय भूमिका का निर्वाह किया है। विगत २-३ वर्षों से देशभर में भारतीय भाषाओं के विकास और अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन के अन्तर्गत आर्य समाज की ओर से अब तक हैदराबाद, दिल्ली, पटना तथा कलकत्ता में कई सम्मेलनों का आयोजन हो चुका है।

स्वामी जी ने समस्त आर्य समाज संगठनो से भी अपील की है कि इस आन्दोलन को सफल बनाने मे पूरा सहयोग करें।

उन्होने कहा दुनियां के कई राष्ट्रों ने अपनी भाषाओं की प्रतिष्ठा के लिए अंग्रेजी के वर्चस्व के विरुद्ध आवाज उठाई है, जिसमें फ्रांस सरकार ने तो जुर्माने का भी प्रावधान किया है। भारत के बलिदानी महापुरुषों ने अंग्रेजियत को जिन्दा रखने के लिए नही बल्कि देश की एकता, अखण्डता और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए बलिदान दिये थे। इसलिए आर्य समाज उन महापुरुषो के बलिदान को गुलाम मानसिकता के लिए बलि नहीं चढ़ने देगा। देश से अंग्रेजियत को समाप्त करने के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा अत्यन्त आवश्यक है, जिसके लिए आर्य समाज हर प्रकार से संघर्ष के लिए तैयार रहेगा।

विदेश समाचार

आर्यसमाज लंडन की फरवरी मास की गतिविधियां

साप्ताहिक सत्संगो का आयोजन नियमित रूप से किया गया। उनमे श्रीमती प्रेमलता कपूर, डा० वीरेन्द्र शर्मा (वेल्स), श्री अविनाश कपिला और श्रीमती लज्जा कपूर आदि यजमान बने और प्रो० एस. एन. भारद्वाज, पं० विनय कुमार जी एवं डा० तानाजी आचार्य ने यजमान परिवारो को आशीर्वाद दिया।

सत्संगो मे श्री लेखराम, श्रीमती सुमन चोपड़ा, सुरक्षा वर्मा, नलिनी गुरुदयाल, शशीपाल एव कु० नलिनी आयंगर ने अपने मधुर भजनों से श्रद्धालुओ का हृदय आकृष्ट कर लिया।

वेद-सुधा के कार्यक्रम में प्रो० एस. एन. भारद्वाज, डा० तानाजी आचार्य, श्री मदनमोहन मेहता और डा० यज्ञमित्र ने वेद के मन्त्रों की सरल व्याख्या की।

इसके अतिरिक्त इस माह में श्री जे. एम. कौशल, सम्पादक 'अमरदीप' ने प० मदनमोहन मालवीय के जीवन पर प्रकाश डाला श्री खैरातीलाल शर्मा ने बसन्त पचमी के शुभावसर पर अपना कविता पाठ कर इस पर्व की महत्ता को संक्षेप में बताया।

श्री वीरेन्द्र वीर वर्मा ने बी.बी.सी. दूरदर्शन पर दिखाये गये कार्यक्रम "भाजी आन द बीच' के आक्षेपार्य दृश्यो की श्रोताओ को जानकारी दी और अपना रोष प्रकट किया। आर्य समाज लंडन द्वारा उसका लेखी विरोध प्रदर्शित किया गया।

डा० ताना जी आचार्य ने डा० राजेन्द्र प्रसाद के जीवन और कार्यो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने ही सोमनाथ के मन्दिर का उसके पुनरोंद्धार के अवसर पर उदघाटन किया था।

मासिक सांस्कृतिक युवा कार्यक्रम मे बसन्त पंचमी एव अमर बलिदानी वीर हकीकत राय की पुण्यतिथि मनाई गई। इस कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती कैलाश अमीन ने किया था। आरती, शान्तिपाठ और प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुए। —मन्त्री, आर्य समाज लंडन

जंग ए आजादी के रहनुमा चन्द्र सिंह गढ़वाली पर डाक टिकट का उद्‌घाटन

सहारनपुर नामानिगार। आज यहा उत्तर प्रदेश विधान परिषद के कार्यकारी प्रधान श्रीमान सत्यानन्द स्वामी ने अपील की कि हर एक को ऊंच नीच वर्ण जात पात और अन्य मतभेदो को भुलाकर देश की आजादी एकता तथा अखण्डता की रक्षा करे।

माननीय स्वामी जी आज सहारनपुर मे वीर सिपाही श्री चन्द्रसिंह गढ़वाली की स्मृति मे डाकटिकट का उद्‌घाटन कर रहे थे। भारत सरकार के डाक विभाग की तरफ से जारी एक रुपये कीमत के इस रंगीन टिकट पर चन्द्रसिंह गढ़वाली का चित्र भी है डाक टिकटो का एक ऐलबम उत्तर प्रदेश डाक विभाग के चीफ पोस्ट मास्टर जनरल श्री बी. बी. कपूर ने मुख्य अतिथि श्री स्वामी को भेंट किया इस अवसर पर श्रीगढ़वाली जी की जीवनी पर डाक विभाग की तरफ से जारी किया गया—इस अवसर पर वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली की कुर्बानियो को याद करते हुए उनके मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी गयी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय मन्त्री श्री विनोद पड़ताल ने की। गढ़वाल सभा भवन नवीन नगर में इस सभा के संयोजक श्री प्रकाश बटोला ने गढ़वाली जी को मानवता के लिए समर्पित भारत का सच्चा सपूत बताया। इस अवसर परएम. एल सी श्री कवरदयाल सिंह तथा भूतपूर्व एम.-एल.-ए. सुलतान सिंह भण्डारी, सुरेन्द्र कपिल, प्रेमनाथ गर्ग और श्री तारा चन्द समेत अनेक नेतागणो ने अपने-अपने विचार रखे।

प्रताप के सौजन्य से

वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर

यह सूचना देते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज रानीबाग, दिल्ली में वनवासी वैचारिक क्रांति शिविर का आयोजन १५ से २९ मई १९९४ तक माता प्रेमलता जी अन्ना (धर्म पत्नी-स्व० पृथ्वीराज शास्त्री) की देखरेख में किया जा रहा है। शिविर का कार्यक्रम अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत आता है जो कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का अंग है।

आर्य समाज रानी बाग, शकूरबस्ती दिल्ली की ओर से इससे पूर्व भी ग्रीष्मावकाश में अनेक बार इस प्रकार के शिविरो का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया है। इस कार्य के लिए आर्य समाज रानीबाग मेन बाजार, शकूरबस्ती दिल्ली ३४ की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। आर्य समाज के समस्त सदस्यो के सहयोग से ही इस पुनीत कार्य में बराबर सफलता मिल रही जिसके लिए सभी सदस्य महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं।

—वेदव्रत महता, महामन्त्री--अ०भा०द०से० संघ, न. दिल्ली

आर्य समाज के वयोवृद्ध विद्वान दत्तात्रेय बावले का रांची में अभिनन्दन

रांची, १० अप्रैल : छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा रांची के तत्वावधान में आज आर्य समाज के प्रख्यात चिंतक विचारक और विद्वान प्रोफेसर दत्तात्रेय बावले का स्थानीय आर्य समाज मन्दिर मे अभिनन्दन किया गया।

श्रद्धानन्द रोड स्थित आर्य समाज मन्दिर सभागार में आयोजित अपने अभिनन्दन, समारोह मे प्रोफेसर बावले ने जनता से स्वामी दयानन्द द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलने और उनके सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतारने पर बल दिया।

छोटानागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा रांची के मन्त्री दया राम पोद्दार ने प्रोफेसर बावले का परिचय देते हुए बताया कि ऐसी विभूतियां विश्व में उंगली पर गिनने योग्य हैं, ८५ वर्षीय आचार्य बावले दर्जनो सामाजिकसंगठनों सेजुड़ेहैं प्रोफेसर बावले वैदिक धर्म एव भारतीय संस्कृति पर विश्वके कई देशों में व्याख्यान दे चुके हैं। इस उम्र में भी वह आर्य समाज से सबद्ध १५ संस्थाओं की देखरेख कर रहे हैं। प्रख्यात शिक्षाविद प्रोफेसर बावले अब तक चार ग्रन्थ लिख चुके हैं। पिछले ६० वर्षों से लगातार आर्य समाज से जुड़े रह कर उन्होने दो दर्जन से ज्यादा संस्थाओ के उच्च पदो को सुशोभित किया। आज भी आर्य पुनर्गठन पाक्षिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं।

आयोजन स्थल पर उनका भव्य स्वागत किया गया। डी.ए.वी. नन्दराज पब्लिक स्कूल की शिक्षिकाओ ने स्वागत गान गाया। इस अवसर पर पंडित जयमंगल शर्मा ने प्रोफेसर बावले को अभिनन्दन पत्र भेंट किया कार्यक्रम का सचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन दया राम पोद्दार ने किया।

नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा कैम्प

आर्य समाज मन्दिर दयानन्द मार्ग जम्मू के तत्वावधान मे वीर रामचन्द्र शहीदी मेला तथा फ्री आई आप्रेशन कैम्प १० अप्रैल को बरैहरा ग्राम में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। आई कैम्प के संयोजक श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता जी ने सफलता के साथ इस परोपकार के कार्य को इंग्लैण्ड में रहने वाले भारतीय डाक्टरो के सात्विक दान ५० हजार के योगदान से सम्पन्न कराया। ४० वृद्ध स्त्री पुरुषो के मोतिया बिन्दु के फ्री आप्रेशन किये गये इन सबके लिए रहने का, खाने का, फ्री प्रबन्ध किया गया। १० अप्रैल को वीर रामचन्द्र की स्मृति मे विशाल मेला लगा जिसमे मरीजो को मुफ्त एनकें तथा ४० दिन के लिए दवाई बांटी गई। आप्रेशन डा० दिनेश मल्होत्रा व राजदीप सूद ने किये। आस पास की जनता पर आर्य समाज का काफी प्रभाव पड़ा।

—डा० योगेन्द्र कुमार शास्त्री

हिन्दुत्व की अवधारणा और आर्य समाज (४)

प्रो० भवानी लाल भारतीय

इस कथन में इतनी ही सच्चाई है कि हिन्दू धर्मप्रचारकों ने छल बल से, प्रलोभन से या भय और आतंक दिखाकर कभी अन्य लोगों को अपने धर्म में प्रविष्ट नहीं कराया, किन्तु यदि इतिहास को देखें तो पता लगेगा कि किसी युग में हिन्दू धर्म भारत की सीमाओं का अतिक्रमण कर दक्षिणी पूर्वी एशिया के अनेक देशों में पहुंच चुका था। इण्डोचायना, श्याम तथा इण्डोनेशिया आदि देशों में पाया जाने वाला पुरातात्विक अवशेष, जावा, सुमात्रा तथा बोर्नियो आदि द्वीपों में रामायण-महाभारत की कथाओं का प्रचलन और वहां की आज की हिन्दू आबादी क्या यह सिद्ध नहीं करती कि हिन्दू धर्म भी कभी प्रसारवादी था। लेखक ने प्रसारवाद को बुरे अर्थ में लिया है और इसे इस्लाम के विस्तारवाद (एक हाथ में कुरान और दूसरे हाथ में तलवार) का समकक्ष बताया है। यह प्रकारान्तर से ठीक है, किन्तु क्या हिन्दुओं ने अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विजय का परचम अन्य देशों में नहीं फहराया ? और यदि आर्य समाज को भी शुद्धि का आन्दोलन आरम्भ करना पड़ा तो वह इसलिए कि ईसाइयत तो हिन्दू समाज के दलित वर्ग को अपने टोले में मिला ही रही थी, हसन निजामी जैसे इस्लाम के दीवाने अच्छे या बुरे सभी साधन अपना कर इस्लाम के अनुयायियों की संख्या बढ़ाने में लगे थे। लेखक यह क्यों भूल जाता है कि स्वामी श्रद्धानन्द ने तो एक बार महात्मा गांधी को यहां तक आश्वासन दे दिया था कि यदि मुसलमान लोग तबलीग का काम बन्द कर दें तो वे भी शुद्धि आन्दोलन को वापस ले लेंगे।

चलिये, लेखक को हिन्दुओं के शुद्धि आन्दोलन से शिकायत हो सकती है, वह उन्हें प्रसारवाद के कलंक से भी मुक्त रखना चाहता है किन्तु वह अन्तर्राष्ट्रीय कृष्ण चेतना संघ तथा तत्सदृश उन सब हिन्दू आन्दोलनों को क्या कहेगा जिनके धर्मगुरुओं तथा उनके द्वारा प्रचारित उपदेशों से आकर्षित होकर पाश्चात्य देशों के हजारों निवासी शिरोमुण्डन कराते हैं, लम्बी शिखायें धारण करते हैं, भागवत गीता आदि वैष्णव ग्रन्थों का पाठ करते हैं। शाकाहार का व्रत लेते हैं तथा करताल और मृदंग बजाते हुए गौरांगदेव की भांति कृष्ण नाम के संकीर्तन में लगे रहते हैं। यह सब प्रसारवाद है या क्या ? वस्तुतः अपने तत्व की सच्चाई से दूसरों को परिचित कराना और स्वेच्छा से यदि कोई आपके मत में आना चाहे तो उसे ग्रहण करना न तो प्रसारवाद है और न अनुचित। यह ठीक है कि जोर जबरदस्ती से या धन, स्त्री, नौकरी आदि के प्रलोभन से किसी को अपने मत में दीक्षित करना औचित्यपूर्ण नहीं है, इसे ही प्रसारवाद कह सकते हैं।

अब लेखक का आर्य समाज पर शायद आखिरी आरोप यह है कि उसने चर्च की भांति आर्य समाज मन्दिर में रविवार को आने और सामूहिक हवन कराने की प्रथा चलाई। प्राचीन वैदिकों में सामूहिक उपासना थी या नहीं, इसे जानने के लिए तो पुरावृत्त को टटोलना पड़ेगा, परन्तु यह निश्चित है कि वेदों में सामूहिक भावना के द्योतक अनेक मन्त्र मिलते हैं। संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥ आदि ऋग्वेदीय मन्त्रों तथा सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥" आदि उपनिषदों में पठित मंगलपाठ से यह निश्चित ध्वनि निकलती है कि अत्यन्त पुरातनकाल में भी धार्मिक मामलों में मिल जुल कर बैठने, सामूहिक संध्या वंदन करने आदि की प्रथा प्रचलित थी। राजा जनक द्वारा आयोजित ज्ञान गोष्ठियों में सहस्त्रों ब्रह्मवेत्ता एकत्र होते थे और तत्व चर्चा करते थे। ऋग्वेद का एक अन्य मन्त्र आदेश देता है कि आओ, मिलकर बैठो तथा इन्द्र परमात्मा का स्तुति गान करो- आत्वेता निषीदत इन्द्रमभि प्रगायत (ऋग्वेद १। ५। १) क्या यह सामूहिक उपासना नहीं है। पुराणों में आता है कि नैमिषारण्य में ८८ हजार ऋषि मुनि एकत्र हुए। क्या इस प्रकार की धार्मिक संगोष्ठियां वैदिक हिन्दुओं में सामूहिक पूजा उपासना के भावों को पुष्ट नहीं करते। पुनः कुम्भ आदि पर्वों में लाखों मनुष्यों का एकत्र होकर धार्मिक कृत्यों का सम्पादन क्या उन्हें सामूहिक उपासना के निकट नहीं ले जाता।

तब लेखक का यह आक्रोश आर्य समाज और उसकी रविवारीय उपासना पर ही क्यों ? आर्य समाज से तो पहले उसके पूर्ववर्ती ब्रह्मसमाज ने साप्ताहिक उपासना की विधि चलाई थी। १८२८ में जब कलकत्ते के जोड़ा सांको मुहल्ले में चीतपुर रोड पर एक किराये के मकान में ब्रह्म समाज की स्थापना हुई तब उसका अधिवेशन प्रति शनिवार सांय ७ से ९ बजे तक होता था। इसमें दक्षिणी ब्राह्मणों के द्वारा वेद व्याख्या, वेद पाठ तथा उपनिषद पाठ आदि का कार्यक्रम होता था। यदि आर्य समाज ने साप्ताहिक सत्संग में किसी का अनुकरण किया भी है तो वह अपने बड़े भाई (आयु में) के तुल्य ब्रह्म समाज से, न कि किसी ईसाई चर्च की सण्डे सर्विस से। फिर यदि कोई अच्छी बात हम ईसाइयों से भी सीखें तो इसमें अनुचित क्या है ? वस्तुतः संध्यावंदन तथा हवन आदि के लिए एकत्र होना किसी की नकल नहीं है। जैसे दैनिक अग्निहोत्र वैदिकों के लिए कर्तव्य माना गया है, इसी प्रकार दर्श और पौर्णमास (पाक्षिक इष्टियां जो अमावस्या एवं पूर्णिमा के दिन की जाती हैं) यज्ञ भी नियत दिन ही होते हैं। इसी प्रकार आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में किये जाने वाले यज्ञों को ईसाई उपासना की नकल कैसे कहा जाता है।

निष्कर्षतः लेखक कहना चाहता है कि हिन्दुत्व को संगठित करने का प्रयास कोई सुधारक या संस्था करती है तो वह हिन्दुत्व को उसके स्वभाव के विरुद्ध दिशा में धकेलने के तुल्य है। अर्थापत्ति से वह कहना चाहता है कि राममोहन राय तथा दयानन्द जैसे सुधारकों के सारे प्रयास ईसाइयों की नकल में ही किये गये—इन्होंने सैमेटिकों में मान्य एकमेव धर्मग्रन्थ के तुल्य ही वेदों को प्रतिष्ठित किया, साप्ताहिक उपासना प्रणाली चलाई आदि आदि। किन्तु उसके पास इस बात का कोई उत्तर नहीं है कि स्वामी दयानन्द को तो इस्लाम या इसके विचारों को पढ़ने समझने का अवसर बहुत बाद में मिला था, जब कि उनके वेद विषयक विचारों का मूल उत्स तो उनके उसी परिवेश में देखा जाना चाहिए जो समग्रतः भारतीय परम्पराओं और इसी देश की धार्मिक मान्यताओं से ओत प्रोत था। शायद ही कोई इतिहासकार तथा धर्म समीक्षक इस बात से सहमत हो कि दयानन्द द्वारा वेदों को धर्म ग्रन्थ के रूप में स्वीकार की जाने की धारणा अकेले उनके द्वारा ही आविष्कृत की अथवा वह ईसाइयत और इस्लाम में मान्य बाइबिल अथवा कुरान की अवधारणा के अनुकरण पर बनाई गई।

लेखक को एक बात और समझ लेनी चाहिए कि सुधारवादी आन्दोलनों ने तो कभी यह प्रयास नहीं किया कि हिन्दुत्व (इस शब्द का प्रयोग न तो राम मोहन राय ने किया और न दयानन्द ने) को इस्लाम या ईसाइयत के समकक्ष एक मजहब या रिलीजन बनाया जाये। यह कार्य आज की किसी राजनैतिक पार्टी का भले हो, दयानन्द तथा उनकी कोटि के सुधारकों ने तो भारतीय वैदिक धर्म की चिन्तन धारा (इसे ही लेखक हिन्दुत्व कहता है।) को विश्व मानव धर्म का समानार्थ माना और इसीलिए दयानन्द हो चाहे विवेकानन्द, उन्होंने जिस वेद धर्म या वेदान्त धर्म की बात की, वह निखिल मानव जाति के हित और कल्याण का ही प्रतीक बना। लेखक का तर्क घोड़े के आगे गाड़ी को जोड़ने जैसा है और उसकी यह धारणा इसलिए बनी कि शायद दयानन्द तथा आर्य समाज ने ईसाइयों और मुसलमानों की नकल पर ही वेद को हिन्दुओं का एकमेव धर्म ग्रन्थ घोषित किया, उन्हीं के अनुकरण पर साप्ताहिक सामूहिक उपासना चलाई, उनकी प्रतिक्रिया में ही शुद्धि का चक्र चलाया और इस प्रकार विशाल हिन्दुत्व को संकुचित कर डाला। इस भ्रम का मूल कारण दयानन्द तथा उसके आर्य समाज आन्दोलन के वैचारिक धरातल के सम्यक अनुशीलन का अभाव ही है। वस्तुतः लेखक में सही इतिहास बोध का ही अभाव है।

८/४२३ नन्दनवन जोधपुर।

पाकिस्तान में हिन्दू युवतियों के सशस्त्र अपहरण व धर्मान्तरण को पुलिस व प्रशासन का पूर्ण संरक्षण

पाकिस्तान में हिन्दू युवतियों के अपहरण एवं जबरन धर्मान्तरण के मामले प्रकाश में आए हैं। हाल ही में पाकिस्तान की राष्ट्रीय एवं प्रांतीय असेम्बली के तीन सदस्यों किशन चन्द फेरवानी, सेहूमल बगवानी तथा बादू मल जीवन द्वारा जबरी धर्मान्तरण की सुनियोजित वारदातों पर कार्रवाई न किये जाने पर असेम्बली से त्यागपत्र देने की धमकी दिये जाने तथा अल्पसंख्यक समुदाय के घटित घटनाक्रमों की रिपोर्ट सीमा पार से भारत में पहुंचने पर संघ परिवार में गहन चिन्ता जताई गई। पता चला है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक रज्जू भैया, भाजपा नेताओं श्री लालकृष्ण आडवाणी, डा० मुरली मनोहर जोशी और विहिप के श्री अशोक सिंघल ने पिछले दिनों मिली इन शिकायतों पर चिन्ता जताई जबकि सिंधी समुदाय द्वारा इस सम्बन्ध में एक ज्ञापन भी भारत स्थित पाक दूतावास को भेजा गया। सिंध प्रांत में इन वारदातों की बाढ़-सी आई हुई है स्थानीय पीड़ित परिवारों का आरोप है कि प्रशासन व पुलिस इन तत्वों को दबाने में विफल रहा है क्योंकि समस्या की जड़ें स्थानीय कट्टरपंथियों के जनून से जुड़ी है। यद्यपि पाकिस्तान के राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री के नाम भी शिकायतें भेजी गई गई हैं किन्तु उन्हें अभी तक न्याय नही मिला है। सिंध पीड़ितों के जो रिश्तेदार दिल्ली व बम्बई में रहते हैं उनका आग्रह है कि भारत सरकार इस मामले पर गौर करे। विहिप व भाजपा नेताओं के माध्यम से भी इस मामले को उठवाने के प्रयास शुरू हो गए हैं। सिंधी समाज के एक नेता एच. आर. वरमानी ने आरोप लगाया है कि भारत के मानवाधिकार संगठन इस मामले में चुप्पी साधे हुए हैं जबकि भारत में कोई एक हादसा होने पर बावेला मचा दिया जाता है। पाकिस्तान में अल्पसंख्यको के जबरन धर्मान्तरण के मामले में दिल्ली प्रादेशिक श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मनोहर लाल, सनातन धर्म युवक परिषद के श्री प्रदीप कपूर तथा धार्मिक अनुष्ठान के प्रधान श्री अनिल मित्तल ने कुछ सबूत जुटाए हैं, जिन्हें विहिप मुख्यालय भेजा गया है।

बताया गया है कि लड़काना के डोकरी कालेज के प्रोफेसर गुरमुखी की बेटी का, उनके घर से चार सशस्त्र लोगों ने अपहरण किया। तीन अपहर्ता बाद मे पकड़े गए। भगवती का अपहरण गत ५ फरवरी को हुआ। इस घटना पर स्थानीय हिन्दू पंचायत ने जब आन्दोलन की धमकी दी तब पुलिस ने तीन अपहर्ताओं को भगवती की बरामदगी के साथ पकड़ लिया। किन्तु असली सरगना को कट्टरपंथियों के दबाव में पुलिस पकड़ नहीं पाई। उसमें भी भगवती की ओर से इस्लाम अंगीकार करने का बयान दर्ज करके भगवती को नारी निकेतन भेजने अथवा अभिभावकों से मुलाकात कराने की मांग प्रशासन ने ठुकरा दी।

इसी तरह की एक वारदात का दुहरकी थाना क्षेत्र निवासी चन्दूराम को शिकार होना पड़ा। तीन सशस्त्र लोगों ने चन्दूराम का द्वार खटखटाया। द्वार खुलते ही चाकू की नोक पर उसकी अल्पवयस्का पुत्री दया को उठा ले गये। चन्दू राम ने अपहरणकर्ताओं को पहचान लिया तथा प्रथम सूचना रपट में उनके खिलाफ रिपोर्ट लिखवाई। एक पखवाड़े के बाद बरामद दया को उसके अभिभावकों से मिलने की अनुमति नहीं दी गयी। इस पर करीब एक हजार हिन्दू सिन्धियों ने डिप्टी कमिश्नर के यहां प्रदर्शन किया। डिप्टी कमिश्नर ने उस समय दया को मुख्य अभियुक्त अपहर्ता को सौंपते हुए ऐलान कर दिया कि दया ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया है।

ऐसी ही वारदातें जब दो ईसाई युवतियों के धर्मान्तरण की हुई तब पाकिस्तान के न्याय व शांति समिति के दो नेताओं डा० जयपाल छाबड़िया और फादर अर्नाल्ड हेरेडिया ने इस पर एतराज उठाया और सामूहिक रूप से इल्जाम लगाया कि पाकिस्तान में हिन्दू व ईसाई समुदाय के साथ अन्याय हो रहा है। स्थानीय सरकार के नाम दिये ज्ञापन में इन अल्पसंख्यक नेताओं ने रहस्योद्घाटन किया कि जबरी धर्मान्तरण का तरीका योजनाबद्ध बनाया गया है। पहले अल्पसंख्यक परिवारों की युवतियों का सशस्त्र अपहरण किया जाता है फिर कुछ दिन उसे बन्द कमरे में कैद रखकर घोषणा की जाती है कि उसने धर्मान्तरण कर लिया है। पुलिस व प्रशासन भी इस मामले में कट्टरपंथियों को संरक्षण दे रहा है। सीमा पार से आई शिकायतों में ६ दिसम्बर कांड के बाद से अकेले सिंध में १७० से अधिक युवतियों के जबरन अपहरण हुए जिनकी रिपोर्ट तक दर्ज नहीं की गई। अन्य प्रांतों में भी ऐसी वारदातों से अल्पसंख्यकों में आतंक बना हुआ है।

(पंजाब केसरी ११-४-९४)

जामा मसजिद से बाबरी मसजिद के दस्तावेज चोरी

नई दिल्ली, ३ मई। मंगलवार की सुबह जामा मस्जिद के एक कक्ष का ताला तोड़कर बाबरी मसजिद से सम्बन्धित दस्तावेज और एक बड़ी रकम चुरा लिये जाने का समाचार मिला है। यह दस्तावेज नायब इमाम अहमद बुखारी के कार्यालय मे रखा हुआ था।

श्री बुखारी ने बताया कि इस दफ्तर में दो जलती मोमबत्तियां पड़ी मिली। चारो तरफ कागजात बिखरे हुए थे जिससे जाहिर होता है कि चोरों को कुछ खास दस्तावेज की तलाश थी। यहां से चार फाइलें चोरी गई हैं जिनमे से एक बाबरी मस्जिद से सम्बन्धित थी। यही नहीं मसजिद के कर्मचारियों की तनख्वाह जो करीब ७० हजार थी उसे भी चोर अलमारी से निकाल ले गये।

इस बारे में पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर ली है। श्री बुखारी ने कहा कि जामा मसजिद की सुरक्षा के लिए कई बार दिल्ली प्रशासन और गृह मन्त्रालय को पत्र लिखे गए पर इस बारे में कोई कदम नहीं उठाया गया। नतीजतन आज चोरी हो गई।

(दैनिक जागरण ४-५-९४)

मुस्लिम महिलाओं ने प्रदर्शन किया

नई दिल्ली, ३ मई। मुस्लिम समुदाय के लोगों द्वारा तलाक शब्द का गलत इस्तेमाल किये जाने के विरोध में आज काफी संख्या में महिलाओं ने जामा मस्जिद के समक्ष जोरदार प्रदर्शन किया व धरना दिया।

प्रदर्शनकारी महिलाओं का कहना था कि समाज में फैली अज्ञानता और इस्लामी कानून के प्रति अनभिज्ञता के कारण तलाक का इस्तेमाल रिमोट कन्ट्रोल की तरह से किया जा रहा है। तलाक के कारण हजारों घर प्रति वर्ष टूट जाते हैं। तलाक देने की रीति के दुरुपयोग के कारण मां बहन और बेटियों के ऊपर खतरे की तलवार लटकी रहती है। इस प्रदर्शन का आयोजन सोसायटी फार सोशल रिफार्मर्स संस्था द्वारा किया गया था।

संस्था के महासचिव श्री यासीन अरफात ने इस सम्बन्ध में इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा दिये गये फैसले का स्वागत किया जिसके तहत तीन बार तलाक शब्द के कहने को मुस्लिम महिलाओं के साथ शोषण करने वाला बताया है। संस्था ने तीन बार तलाक कहकर दम्पत्ति द्वारा एक दूसरे से सम्बन्ध विच्छेद कर लेने की शर्त पर तत्काल पाबन्दी लगाने की मांग की है।

(हिन्दुस्तान ४-५-९४)

भारत में ईसाई प्रचार की असलियत (२)

अरुण शौरी

एक बदलाव यह है कि पहले वे सारे हिन्दुस्तान में मत परिवर्तन के लिए प्रयासरत थे, लेकिन अब उनके रवैये से लगता है जनजातीय क्षेत्रों और उत्तर पूर्व में जोर लगा रहे हैं। इसके पीछे भावना यही है कि वहां ऐसे क्षेत्र आसानी से बनाए जा सकते हैं जहां ईसाई बहुसंख्या में हों अथवा सरकारें ऐसी हों, जो चर्च के कहने पर चलें।

तीसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ है कि चर्च का रोजमर्रा का अभ्यास है, उसका बहुत हद तक भारतीयकरण कर दिया गया है। वेश-भूषा, भाषा, यीशु की तस्वीरें आदि बनाने में भारतीयकरण पर जोर दिया गया है। यदि चर्च यह परिवर्तन नहीं करता तो इससे उसे नुकसान होता। जो चर्च स्थानीय परिस्थितियों से सामंजस्य नहीं बैठाता, वह विदेशी चर्च कहलाता है और राष्ट्रवाद के उभार के कारण विदेशी चर्च की स्वीकार्यता कम हो जाती है। चर्च के सामने फिलहाल यह एक बहुत बड़ी समस्या है। इन परिवर्तनों के कारण भी कई दुविधाएं उसके सामने खड़ी हो गई हैं।

मैक्समूलर को वेदों का बहुत बड़ा ज्ञाता कहा जाता है जब कि उसने वैदिक आस्था को जड़ से उखाड़ने का प्रयास किया था। मैं मैक्समूलर को 'स्काउट मिशनरी' (टोह लेने वाला पादरी) मानता हूं। मेरी पुस्तक में एक अध्याय है 'टू एनसर्किल, अन्डरमाइन एण्ड फाइनली स्टार्म द स्ट्रोंग फोर्ट्रेस आफ ब्राह्मणिज्म' घेराबन्दी, सेंध लगाना और ब्राह्मणवाद दुर्ग पर धावा बोल देना)। मैक्समूलर का यही लक्ष्य था।

संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान प्रो॰ मोनियर विलियम्स और मैक्समूलर की लिखी हुई सामग्री से मैंने ऐसे उद्धरण लिए हैं जिनको पढ़ने से आपको इनके असली इरादों का पता चल जाएगा। बहुत स्पष्ट रूप से इन्होंने अपने लक्ष्य निर्धारित किए हुए थे। ये मानते थे कि "ईसाइयत अन्य मतों में एक पवित्र युद्ध रहा है। इस युद्ध में ईसाइयत को ही जिताना है और अन्ततः वही जीतेगी भी। हमारा सारा अध्ययन, सारी विद्वत्ता इसी पवित्र युद्ध का अंग है।' कल्पना कीजिए कि यदि ऐसा ही लक्ष्य लेकर कोई हिन्दू विद्वान अपने लेखों में यह सब कुछ लिखे तो उस विद्वान के प्रति हमारे सेकुलर कैसा रवैया अपनायेंगे? लेकिन मैक्समूलर जब खुद कहता है तो यह हमारे सेकुलरों के ध्यान में नहीं आता।

हममें से बहुत से लोगों को यह जान कर आश्चर्य हो सकता है कि मैक्समूलर और प्रो॰ विलियम्स जैसे अनेक विद्वान, जिनकी किताबें हम आज तक पढ़ते हैं, के घोषित उद्देश्य क्या थे और हिन्दुत्व के बारे में इनकी कितनी घृणित राय थी। मैक्समूलर के जो उद्धरण मैंने दिए हैं उनमें 'हिन्दू डेयटीज' (हिन्दू देवी-देवता) नामक भाग पढ़िए तो आपको बहुत गहरा धक्का लगेगा।

इन लोगों ने यह जान लिया था कि हिन्दुओं में अपने धर्म के प्रति आस्था है, प्रेम है, अपने देवी-देवताओं के लिए, अपने पुराने ग्रन्थों के लिए आदर है। और इस परम्परा के वाहक ब्राह्मण हैं। इसीलिए इन्होंने तय किया कि घेराबन्दी, सेंध लगाकर धावा और किसी पर नहीं, ब्राह्मणों पर या जैसा वे कहते हैं ब्राह्मणवाद पर बोला जाए। १९वीं शताब्दी के मध्यसे इन्होंने यही करना शुरू किया जो आज तक चल रहा है। आप बुरा न मानें तो यह सच है कि इसी नीति के तहत इन्होंने डा॰ अम्बेडकर को ऊपर उठाया और इसी के तहत रामास्वामी नायकर जैसे व्यक्ति को जस्टिस पार्टी का समर्थन दिलाया गया।

इस अध्याय के माध्यम से मैंने यही प्रयास किया है कि इन विद्वानों की असलियत भी हमारे सेकुलर पहचानें और उन्हें भी उसी कसौटी पर कसें, जिस पर इस तरह का लिखने वाले किसी हिन्दू विद्वान को कसते हैं। ऐसा नहीं होता, इसीलिए मैं मानता हूं कि बौद्धिक स्तर पर हमारे सामने आज भी वही खतरे खड़े हुए हैं जो ब्रिटिश राज में थे।

चर्च का खतरा

वर्तमान समय में चर्च की ओर से हमें दो प्रमुख खतरे हैं। एक खतरा तो यह है कि १९वीं और २०वीं शताब्दी के प्रारम्भ में चर्च ने जो धारणाएं फैलाईं, वे हमारे मन में बहुत गहराई तक बैठ चुकी हैं। और ये धारणाएं सेकुलरों की आंख पर चश्मे की तरह चढ़ी हुई हैं। इसीलिए वे भारतीय परम्पराओं और भारत में घटने वाले प्रत्येक घटनाक्रम को बिना इस चश्मे के देख ही नहीं सकते। १९वीं शताब्दी में जिस तरह के शब्दों का प्रयोग करके चर्च हमें कोसता था, ठीक उन्हीं शब्दों का प्रयोग हमारे आज के सेकुलर करते हैं। मैं यदि आपको १९वीं शताब्दी की चर्च की लिखित सामग्री और हमारे आज के सेकुलरों की लेखनी एक साथ दिखाऊं तो आप यह पता नहीं लगा पायेंगे कि कौन-सी बात किसकी लिखी हुई है। जिन शब्दों का प्रयोग पहले चर्च ने किया, उन्हीं शब्दों को बाद में मार्क्सवादियों ने अपनाया और अब सेकुलर उनका इस्तेमाल कर रहे हैं।

दूसरा खतरा झारखण्ड और ऐसे ही आन्दोलनों को समर्थन एवं चर्च की उन गतिविधियों से है जो उत्तर पूर्व, मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में चल रही हैं। आगे चलकर ये हमारे लिए बहुत समस्याएं पैदा कर सकती हैं। उत्तर पूर्व में बहुत खतरनाक परिस्थितियां बनती जा रही हैं। गुप्तचर विभाग और सेना के खुफिया विभाग की रपटों के आधार पर मैं आपको बता रहा हूं कि कहते हैं उत्तर पूर्व में देश के लिए यह एक बहुत बड़ा खतरा बन चुका है। अपनी पुस्तक में मैंने ऐसे दस्तावेज उद्धृत किए। जिनमें यह बताया गया है कि आज फलां आदमी की फलां आदमी से मुलाकात होगी और विकास के नाम पर इतने डालर दिये जायेंगे और उस दिन ऐसा हुआ भी दस्तावेजों में स्पष्ट रूप से यह लिखा कि फिलीपीन्स से इतने डालर देने का सौदा तय हुआ यह पैसा किस मार्ग से आएगा, कैसे आएगा, इसका तो वर्णन नहीं है। इन दस्तावेजों को प्रस्तुत करने में मैंने नेताओं, चर्च से जुड़े व्यक्तियों और स्थान आदि के नाम नहीं दिए हैं। मगर इन दस्तावेजों के आधार पर मैं यह बात बता रहा हूं कि उत्तर पूर्व में खतरा आगे नहीं खड़ा होगा, वह आज खड़ा है।

(क्रमशः)

इदं दयानन्दाय इदन्न मम

लेखक—डा० महेश विद्यालंकार

ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना संसार में व्याप्त अज्ञान, अन्धकार, अधर्म, असत्य एवं पाखण्ड को मिटाने के लिये की थी। उनका स्वप्न था लोक-लोकान्तरों में देश-देशान्तरों में एवं जनमानस में सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना करना। उन्होंने संसार में कोई नया पन्थ व मजहब नहीं चलाया अपितु वैदिक धर्म के ऊपर जो भ्रान्तियां तथा अज्ञानता की राख जम गई थी, उसे ज्ञान-विचार, तर्क, प्रमाण, युक्ति आदि से आलोकित व उद्घाटित किया है। उन्होंने जो भी कार्य किये, वे सभी सृष्टि और मानवता के कल्याण के लिए हैं। उनकी लोकमंगल की भावना बहुजनहिताय बहुजन-सुखाय की भावना से अनुप्राणित है। उनकी दृष्टि सदा समष्टिपरक रही है। उन्होंने कभी न अपने लिए लिखा, न किया न सोचा, इसीलिए उनकी संसार के महानपुरुषों में अलग पहिचान है। वे आर्य समाज को संगठित आदर्श प्रेरणा भावनायुक्त तथा समाज के पथप्रदर्शक के रूप में देखना चाहते थे। किन्तु आज हमारी त्रासदी व बदकिस्मती यह है कि उस पुण्यात्मा की धरोहर को वसीयत को और योगदान को संभाल नहीं पा रहे हैं।

आज सब जगह अलग-अलग संगठन, सभाएं, संस्थाएं व संस्थान बनते जा रहे हैं। अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग गाया जा रहा है। न कोई किसी की सुनता है और न मानता है। सब अपने-अपने पद, अहंकार, अधिकार और स्वार्थ में दौड़े जा रहे हैं। सर्वत्र रिक्तता, अराजकता, निराशा तथा अकर्मण्यता फैलती जा रही है। इससे आर्य समाज की शक्ति, संगठन, प्रभाव व एकरूपता व अनुशासन पर घातक प्रभाव पड़ रहा है। जनबल और धनबल दोनों घट रहे हैं। दयानन्द को भी लोग अपनी-अपनी नजर से बांटने लगे हैं। ऋषि का प्रयोग और उपयोग अपने-अपने ढंग से करने लगे हैं। इस से सामूहिक एकता का प्रभाव क्षीण हो रहा है। आज आर्य समाज की सभी प्रकार की शक्ति मूल से हटकर व्यर्थ के कार्यों में विभक्त हो रही है।

ईंट, पत्थर, प्रदर्शन, दिखावटी, बनावटी और विवादों के कार्य तेजी से बढ़ रहे हैं। असली कार्य मानव निर्माण व समाज सुधार का गौण होता जा रहा है।

जो भी उठता है नया संगठन, सभा, संस्था, संस्थान, मंच, आश्रम आदि बना लेता है। आजीवन उसका सर्वेसर्वा बन बैठता है जनबल व धनबल की जोड़-तोड़ में खेमे बनाने लगता है। जनता को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए सिद्धांतों, विचारों आदर्शों एवं मूल्यों में मनमाने ढंग से परिवर्तन का यत्न होने लगता है। दुर्भाग्य है कि ऐसा हो रहा है। कुछ लोग ऐसे भी हैं-जिन्होंने वर्तमान सत्ता में साझीदारी न मिलने के कारण, पदलिप्सा की महत्त्वाकांक्षा पूरी न होने के कारण, जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जुड़े थे, वह पूरी न होने के कारण और धनोपार्जन की कामना पूरी न होने के कारण अलग से संगठन संस्था व संस्थान बना लिए हैं। जो चाहे काला-सफेद करें कोई रोकने-टोकने वाला नहीं है। जैसा कि नियम है कि व्यक्ति की माया और वृक्ष की छाया दोनों उसके साथ चली जाती हैं। जब तक व्यक्ति जीवित रहता है तब तक तो जैसे तैसे लड़खड़ाते वे सभा, संस्थाएं व संगठन चलते भी हैं बाद को इन्हें सम्भालने वाला भी नहीं मिलता है। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। कई गुरुकुल संगठन व ट्रस्ट हैं जिनकी अब दशा व स्थिति शोचनीय हो रही है।

आज कोई भी एक झण्डे, एक उद्देश्य व एक बैनर के नीचे संगठित होकर कार्य करने के लिए राजी नहीं हो रहा। सभी को महत्त्व, पद व सम्मान चाहिए। सभी ऊपर बैठना चाहते हैं, फिर दरियां कौन बिछाए। इससे आर्य समाज की शक्ति कमजोर हो रही है। संगठन बिखर रहा है। सामूहिक प्रभाव घट रहा है। उसकी धड़कनों में दुर्बलता आ रही है उसका स्वरूप बिगाड़ा जा रहा है। आर्य समाज व उसके संस्थापक के नाम पर धन्धों का ढेर एकत्र किया जा रहा है। किन्तु कार्य उसकी इच्छा के विरुद्ध हो रहे हैं। उस महापुरुष ने कभी अपना नाम किसी संगठन में नहीं जोड़ा उन्होंने कभी व्यक्तिगत अपने नाम को महत्त्व नहीं दिया। दस नियमों में कहीं भी उन्होंने अपने नाम को नहीं आने दिया। उन्होंने कभी व्यक्तिवाद व व्यक्तिपूजा को महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने संसार को प्रत्येक क्षेत्र में सीधा-सच्चा एवं सरल मार्ग दिखाया। वे संसार में वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना की सदभावना लेकर आए थे।

आर्य समाज के अतीत का इतिहास साक्षी है कि दयानन्द की इच्छा पूर्ति के लिए अनेक महापुरुषों ने अपना तन-मन-धन न्यौछावर कर दिया। प्राणपण लगाकर ऋषि के कार्य को आगे बढ़ाया। उस दिव्यात्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित होकर न जाने कितने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के दीवाने हो गए। आज फिर जरूरत है—आर्य समाज को दीवानों की, जनून वालों की, मस्तानों की जो उच्चास्वर से पुकार-पुकार कर कह सकें—"इदं दयानन्दाय इदं न मम" तभी कुछ बात बन सकेगी। तभी सभा संगठनों व संस्थाओं में नवचेतना का संचार हो सकेगा। जरूरत है जनजागृति की। वे तब होगी जब हम जनता के पास जायेंगे, अपनी बात उनसे कहेंगे। दयानन्द और आर्य समाज एक विचारधारा है। जीवन प्रक्रिया है। वैचारिक चिन्तन है। दुनिया अच्छे विचारों की दृष्टि से दरिद्र हो रही है। बुरे विचार तो सब जगह दिखाई देते हैं। अच्छे प्रेरक व जीवनदायक विचार कहीं कहीं मिलते हैं। वैदिक विचारधारा के पास श्रेष्ठ, मंगलकारी तथा सर्वहितकारी चिन्तन है, किन्तु जो उसके प्रचारक, प्रसारक व्यक्ति मन्दिर, सभा-संगठन संस्थाएं आदि हैं वे अपने मूल उद्देश्य से हट और कट रही हैं। उसका परिणाम सामने है कि निर्माण, गुणवत्ता और रचनात्मक दृष्टि से हमारा स्थान पीछे होता जा रहा है।

आज आवश्यकता है आर्य समाज से जुड़े हुए अधिकारियों, व्यक्तियों, सभा, संगठनों एवं संस्थाओं को सिंहावलोकन, पुनर्मूल्यांकन और आत्म विश्लेषण करने की। सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों को, राग-द्वेष को, पद व अधिकारों को भूलकर, मिल-बैठ कर सोचने-समझने और कुछ करने की सोच पैदा करने के लिए आगे आना होगा। मन में श्रद्धा भक्ति त्याग भावना जाग्रत करके संकल्प लेना होगा—इदं दयानन्दाय इदं न मम। तभी गुरुवर दयानन्द का वह स्वप्न 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' पूरा हो सकेगा।

गाय से हमें क्या उपलब्ध है ?

गाय से कृषि के लिए बैलों की शाश्वत अमरबेली को हमने पाया है। स्वास्थ्य के लिए गोदुग्ध, दही, मक्खन, मट्ठा एवं खोआ, मिठाई आदि का स्रोत उपलब्ध किया है। गोबर की जैविक खाद से धरती की उर्वरा शक्ति को कायम किया है। गाय खाद का खजाना है। गोबरगैस, गोबर-बिजली, ईंधन, और प्रकाश की फैक्टरी है। गोमूत्र से बनी हुई कई दवाइयां पेस्टेसाईड एवं पशु-रक्ष से बचने का यह आधार है। उसके चमड़ों, हड्डियों, आंतों, सींगो, बालों इत्यादि से भारतीय जीवन को संवारा है। समृद्ध किया है। 'परस्परंभावयंत:' की भावना से स्वतन्त्रता, समानता व भ्रातृभाव का बीज बोया है। गोरक्षा-गोपालन से ही एकता, अखंडितता अब तक बनी हुई है। गाय जीवंत शिक्षा-प्रणाली है। वह करुणामूर्ति है। सर्वांगीण जीवन-शिक्षा गोपालन गोरक्षा से ही शक्य और संभव है।

व्यष्टि और समष्टि जीवन के हर पहलू में अर्थ, राज, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज, न्याय, नीति, धर्म इत्यादि हर तन्त्र में गाय का ही संयोजन है। हमारी सर्वांगीण उन्नति में गाय का ही पूरा पूरा योगदान निहित है।

इसी सत्य को लेकर भारतीय संविधान में सर्वसम्मति से गोसंरक्षण का प्रश्न आदेशित और निर्देशित किया गया है। किन्तु भारतीय शासकों ने गोरक्षा वाले गांधी विनोबा के--सर्वोदय विचार को अप्रस्तुत एवं संविधान को छोड़ इसके विपरीत मार्ग प्रशस्त कर लिया है।

और अपनी ठानी हुई सिद्धि के लिए गोरक्षा के बजाय गोवध के लिए २८०० बूचड़खाने खुलवा दिये हैं। ३६०० बूचड़खाने बनाने की योजनाएं बनी हैं। सारे भारत को विदेशों के लिए 'मटन मार्केट' बनाया जा रहा है।

टनों बन्द मांस का निर्यात प्रतिवर्ष हो रहा है। इसमें और बढ़ोतरी की योजनाएं बनाई गई हैं। मनुष्य के लिए मांसाहार त्याज्य होने पर भी निरामिषों को आमिषाहारी बनने को बाध्य किया जा रहा है। मांसाहार को चालना-प्रोत्साहन दिया जा रहा है। अन्न फलादि सात्विक आहार का निर्यात करके तामस-राजस-आहार द्वारा जनता के स्वास्थ्य को बिगाड़ा जा रहा है।

गोवध की वजह से जैविक खाद नहीं मिलने से, रासायनिक खाद एवं पेस्टेसाईडों से, बैल-कृषि के बजाय ट्रेक्टर कृषि को चौपट किया जा रहा है। औद्योगिक, हरित श्वेत एवं नील क्रांति के जरिए आकाश, वायु, तेज जल और पृथ्वी का पर्यावरण बिगाड़ा जा रहा है। और इसी को 'प्रगति' माना जा रहा है। जीव जगत का जीना दुश्वार बन गया है। फिर भी यह 'प्रगति' ही है!?

किन्तु—

—लोकतन्त्र के ही जरिए लोकसंस्कृति की जड़ें उखाड़ फेंकना यह 'सत्य' हो सकता है क्या ?

—लोगों की सारी आजीविकाओं की बुनियाद गोवंश को कत्ल करना एवं मांस का निर्यात करना यह 'सत्य' हो सकता है क्या ?

—अगर बड़े-बड़े यन्त्रोद्योगों से गरीबी, बेकारी, विषमताएं और महंगाई न टली, तो फिर गृह-ग्राम, लघु कुटीर उद्योगों को आवश्यक बढ़ावा न देना यह 'सत्य' हो सकता है क्या ?

—राज्य एवं अर्थतन्त्र के जरिए लोगों को कायम गरीब और दाने दाने का मोहताज, पराधीन बनाये रखना लोकशाही में 'सत्य' हो सकता है क्या ?

—पक्षीय चुनाव प्रणाली से लोगों में फूटडालकर १०% के कोरम से संसद एवं विधानसभा में गोवंश कत्ल-बन्दी के बदले निहित हित के ५ नून पारित करा लेना यह 'सत्य' हो सकता है क्या ?

—प्रजातन्त्र में सत्ता, सम्पत्ति और दंड की मिली भगत से प्रजा को डरा-धमकाकर कायम वश में रखने का षड्यन्त्र बनाना यह 'सत्य' बन सकता है क्या ?

—राष्ट्र की अन्तिम बुनियादी इकाई 'ग्राम' को, केन्द्र और राज्य के एवं संसद और विधान सभा के अधिकार न देना यह 'सत्य' हो सकता है क्या ?

—बस, इन असत्यों के सामने हमारा एतराज है।

और यही वजह है आज देवनार गोरक्षा सत्याग्रह बम्बई में बारह सालों से विनोबा जी के आदेश से श्री अच्युतभाई देशपांडे के संचालन में सौम्य, आध्यात्मिक अहिंसक, असाम्प्रदायिक एवं अराजनैतिक तरीके से निरन्तर चल रहा है। जो हर रोज सर्वधर्म प्रार्थना के साथ अपने लक्षित ध्येय को उद्घोषित करता रहता है —

"हमारा मन्त्र जय जगत, हमारा तन्त्र ग्राम स्वराज, हमारा लक्ष्य विश्व-शांति।" और "गाय बचेगी दूध मिलेगा, बैल बचेगा अन्न मिलेगा, गाय-बैल बचेंगे, देश बचेगा।"

परन्तु —

गोभक्षकों को संरक्षण है। गोरक्षकों को गिरफ्तारी, जेल है। तो क्या गोरक्षा सत्याग्रह राष्ट्र-अपराध है ?

हमारी आजाद भारतीय सरकारों को चाहिए कि अपनी भारतीय संस्कृति को विस्मृत न करें। सत्याग्रही प्रह्लाद की कथा को निरन्तर याद करें। उसे सुना अनसुना न करें। गोवंश कत्लबन्दी के लिए देवनार गोरक्षा सत्याग्रह के चलते उसके तथ्य, ध्येय और लक्ष्य को जानें और उसे गौर से देखें। देखा अनदेखा न करें। उसकी मांगें, जो देश एवं मानव-जाति के लिये उपकारक और उत्कर्षक हैं, पूरा करें। और बुरे दिन देखने से पहले भारतीय संविधान एवं संसद में किये गये वादों का ईमानदारी से पालन करें।

—मोहनभाई जी, कोलड़िया

['गोरक्षा सत्याग्रह' पारेखवाड़ो, सावरकुंडला (सौराष्ट्र)

त्रिभाषा फार्मूले से संस्कृत हटाई गई तो आंदोलन

लखनऊ, ५ मई। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ ने प्रदेश सरकार को चेतावनी दी है कि यदि त्रिभाषा फार्मूले हिंदी पाठ्यक्रम से संस्कृत को अलग किया गया तो प्रदेश व्यापी आंदोलन छेड़ा जाएगा।

संघ के अध्यक्ष ओम प्रकाश शर्मा ने आज यहां कहा कि संस्कृत हिंदी की रीढ़ है इस रीढ़ को कमजोर करने की कोशिश बर्दाश्त नहीं की जा सकती। बिना भाषाविदों की राय के प्रशासनिक स्तर पर नासमझी भरा कदम उठवाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि उर्दू पढ़ाई जाए इसका वह स्वागत करते हैं लेकिन त्रिभाषा फार्मूले एवं हिन्दी के पाठ्यक्रम से संस्कृत को हटा कर नहीं। उर्दू मात्र लिपि है भाषा नहीं। उर्दू, हिंदी अरबी व फारसी के शब्दों से बनी है। वह चाहते हैं कि उर्दू को उचित स्थान मिले एवं उसका विकास हो।

शासन जिस तरह से उर्दू को पढ़ाने की बात कर रहा है वह नासमझी भरी योजना है। प्रशासनिक स्तर पर सारी योजनाएं बनायी जा रही हैं। इनके दिमाग में न तो कोई ठोस योजना है न प्रस्ताव।

(दैनिक जागरण से साभार)

'अग्नि' से अमरीकी नौसैनिक बेड़े और पाकिस्तान दोनों को खतरा !

वाशिंगटन, ५ मई (भाषा)। भारत ने अगर 'अग्नि' प्रक्षेपास्त्र को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की ठान ली तो उससे हिन्द महासागर स्थित अमरीकी नौसैनिक बेड़े और पाकिस्तान दोनों के लिए खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

एक अमरीकी अधिकारी ने कल यहां भारत-अमरीकी सम्बन्धों के भविष्य के बारे में विचार व्यक्त करते हुए यह बात कही। वुडरो विल्सन सेंटर के वरिष्ठ विचारक पाल क्रिस्चर्स ने कहा कि इस बात पर हमें विचार नहीं करना है कि भारत और अमरीका के बीच कभी युद्ध छिड़ जाए तो क्या होगा? असली मुद्दा यह है कि क्या भारत हिन्द महासागर में मौजूद अमरीकी नौसैनिक बेड़े पर हमला करने की सामर्थ्य रखता है अथवा नहीं। उन्होंने कहा कि नौसैनिकों को किसी भी देश की इस क्षमता से सतर्क रहना होता है।

श्री क्रिस्चर्स ने पूरे विश्व से परमाणु हथियार नष्ट करने के राजीव गांधी फार्मूले से मतभेद रखते हुए कहा कि ऐसे मामलों की शुरुआत विश्व-स्तर से नहीं क्षेत्रीय स्तर पर की जानी चाहिए। (पंजाब केसरी से साभार)

भारतीय संविधान और शरीयत का तलाक

विमल वधावन, एडवोकेट, मुख्य सम्पादक कानूनी पत्रिका

उत्तर प्रदेश सीलिंग अधिनियम के अनुसार यदि किसी व्यक्ति की जमीन एक निश्चित सीमा से अधिक हो तो सरकार उस अतिरिक्त भूमि का अधिग्रहण कर सकती है। गोंडा के रहमत उल्लाह के साथ भी ऐसा ही हुआ। सरकार ने जब भूमि अधिग्रहण की कार्यवाही प्रारम्भ की तो रहमत उल्लाह ने कहा कि उसका अपनी पत्नी से तलाक हो चुका है अतः उन दोनों को अलग-अलग माना जाए। इस प्रकार दोनों में जब जमीन का बंटवारा होता है तो दोनो उक्त अधिग्रहण कार्यवाही से बच सकते हैं। अधिग्रहण का मामला जब अदालत में पहुचा तो स्वाभाविक था कि अदालत तलाक की कानूनी वैधता की जांच करती। निचली अदालतों ने तो इस मुद्दे की तरफ ध्यान नहीं दिया परन्तु इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में कहा कि तीन बार तलाक कहने और उसके बाद पति-पत्नी की लिखित सहमति से एक पत्र तैयार करने से तलाक को मान्यता नहीं प्राप्त हो सकती।

न्यायमूर्ति श्री हरिनाथ तिवारी के इस निर्णय से मुस्लिम वर्ग के नेताओं की जो प्रतिक्रिया हुई उसे समस्त समाचार पत्रों ने प्रमुखता दी। इन मुस्लिम नेताओं का कहना है कि यह निर्णय शरीयत के नियमो की अवहेलना करता है। अभी दो माह पूर्व भी तलाक के मसले पर बहुत जबरदस्त बहस छिड़ी थी। 'कानूनी पत्रिका" में हमने मुस्लिम बहनों के सिर पर लटकी इस तलाक रूपी तलवार के सम्बन्ध में बहुत से विचार प्रकाशित किये थे। आइए देखें तलाक के विषय मे शरीयत में क्या व्यवस्था उपलब्ध है—

कुरान ने एक साथ तीन बार तलाक कहने की बात को अच्छा नहीं माना है। शरीयत में व्यवस्था है कि तलाक के पूर्व पति को अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश करनी चाहिए।

दूसरा पति द्वारा रूठने का बहाना करे पत्नी को सचेत करना चाहिए।

तीसरा पत्नी को डांटकर समझाना चाहिए।

चौथा पत्नी के रिश्तेदारों से बात करनी चाहिए।

पांचवा उक्त किसी प्रकार से स्थिति न बदले तो एक-एक महीने के अन्तराल पर (तीन माह तक) तीन बार तलाक कहा जाना और इस दौरान पति-पत्नी के बीच शारीरिक सम्पर्क नहीं होना चाहिये।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उक्त निर्णय में तलाक को कानूनी रूप से अवैध ठहरा कर कोई अनुचित कार्य नहीं किया गया। अनुचित तो मुस्लिम नेताओं का यह रवैया है जो धर्म की आड़ में इस प्रकार हर कानून से बचने और गलत व्यवस्थाएं बनाने को तत्पर रहता है।

विवाह और तलाक मानवीय जीवन के दो अहम विषय हैं जिनका समाज की सुख, शांति, अमन, चैन पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। कोई भी सभ्य समाज हल्के तरीके से इन पर विचार करने या आचरण करने की अनुमति नहीं दे सकता। समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को इन विषयों पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

केवल कागज पर दोनों पक्षों की लिखित सहमति से न तो तलाक हो सकता है और न शादियां रचाई जा सकती हैं। भारत में भारतीय संस्कृति ही चलेगी अमरीका, इंगलैण्ड या अरब देशों की नहीं। भारतीय संस्कृति में विवाह को एक पवित्र बन्धन माना गया है जबकि यूरोप तथा अरब देशों में वह एक साधारण व्यापारिक समझौते से अधिक नहीं है जहां जब चाहा कागज पर लिखकर विवाह कर लिया और जब चाहा व्यापार बन्द करने की भांति कागज पर लिखकर तलाक कर लिया।

व्यक्ति चाहे हिन्दू समाज का हो मुस्लिम, ईसाई या किसी अन्य धर्म का उसे भारतीय संस्कृति को बदलने का कोई अधिकार नहीं दिया जा सकता। संविधान के मूल ढांचे के बाहर कोई भी कानून नहीं आ सकता चाहे वह संसद द्वारा पारित हो या धार्मिक व्यवस्थाओं पर आधारित। यह प्रश्न समस्त बहनो को समान दर्जा दिलाने का है। समानता का अधिकार संविधान द्वारा दिया गया मूल अधिकार है। भारत की धरती पर इस मूल अधिकार को दुनिया की कोई ताकत छीन नहीं सकती।

उच्च न्यायालय के इस निर्णय को किसी भी मुस्लिम संगठन या स्वयं रहमत उल्लाह द्वारा उच्चतम न्यायालय में यदि चुनौती दी जाती है तो इस कदम का भी स्वागत होगा क्योंकि हमें पूरी आशा और विश्वास है कि भारतीय उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्तिगण किसी भी कीमत पर भारतीय संविधान की किसी मान्यता या आदर्श की अवहेलना बर्दाश्त नहीं करेंगे।

वेद ज्ञान के समक्ष आधुनिक विज्ञान तुच्छ है

गाजियाबाद, ५ मई। डा० नरेन्द्र वाक्यान ने कहा कि आधुनिक विज्ञान वेद ज्ञान के सामने तुच्छ है। विज्ञान विश्व को विनाश की ओर ले जा रहा है जबकि वेद के माध्यम से मनुष्य सुख शांति व समृद्धि सहित मोक्ष की प्राप्त कर सकता है।

डा० वाक्यान भारतीय वेद ज्योतिष विज्ञान संस्थान द्वारा आयोजित एक गोष्ठी में बोल रहे थे। उन्होंने बताया कि संस्था ने वेदो की ऋचाओं द्वारा ज्योतिष के अनेक विषयों को सिद्ध कर जटिल समस्याओं का समाधान करने में सफलता प्राप्त की है। संस्था में हृदय रोग पर शोध कर यह सिद्ध कर दिया है कि जिस हृदय रोगी को आज का चिकित्सा विज्ञान दो घंटे पूर्व नहीं मालूम कर सकता उसे मनुष्य की जन्म कुण्डली द्वारा वर्षों पूर्व मालूम किया जा सकता है। यही नहीं इस रोग के निवारण के लिए ग्रहों की उपाय और आयुर्वेदिक औषधियों के उपचार से इस रोग से मुक्ति भी पाई जा सकती है।

गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए डा० कैलाशनाथ तिवारी ने मनुष्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा कि सर्वप्रथम एक ऊर्जा के गोले की उत्पत्ति हुई और फिर उस घूमते हुए गोले पर अपकारी बलों के टुकड़े बनने से पृथ्वीसहित अन्य ग्रहों का निर्माण हुआ तत्पश्चात सौर मण्डल का बनना शुरू हुआ। इसी क्रम में जीव मनुष्य योनि में आया।

पंडित श्याम सुन्दर वत्स ने कहा कि मन्त्रों के माध्यम से ग्रहों की शांति की जा सकती है मनुष्य यह भी मालूम कर सकता है कि वह किस ग्रह के प्रकोप से पीड़ित है। तत्पश्चात वह उस ग्रह की शान्ति मन्त्रों से कर सकता है।

श्री बापूभाई पी आचार्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि ग्रहों के उपाय करने योग से एवं मां भगवती की शरण में आने से भी सारे कष्टों का निवारण किया जा सकता है। श्री आचार्य आगामी १ जून को प्रस्तावित गोष्ठी में ग्रहों के निवारण का प्रदर्शन करेंगे। इसी क्रम में महंत नारायण जी ने वेदों की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सत्य धर्म से ही मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है। उन्होंने बताया कि सबसे प्राचीनतम संस्कृति वेद संस्कृति है। अब बाहर के देश में भी इसे अपनाया जा रहा है।

गोष्ठी मे निर्णय लिया गया कि वेद और ज्योतिष विषय के प्रचार व प्रसार हेतु प्रत्येक माह आयुर्विज्ञान वेद तथा ज्योतिष पर एक गोष्ठी आयोजित की जाए। इस निर्णय के अनुसार अगली मासिक गोष्ठी आगामी १ जून को भी दूधेश्वर नाथ मन्दिर में आयोजित की जाएगी।

(दैनिक जागरण ६.५.९४)

गुरुकुल अयोध्या में नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में आस्था एवं विश्वास रखने वाले आर्य परिवारों को सूचित किया जाता है कि पारिवारिक जीवन से सन्तुष्ट होकर षष्ठ कक्षा—९वीं पास विद्यार्थियों के प्रवेश के लिए १५ जून से १५ जुलाई तक आवेदन करने की सूचना दी जाती है। कृपया अपना आवेदन पत्र कार्यालय को समय से पूर्व भेजें। धन्यवाद।

सत्यबोधानन्द अध्यक्ष
निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय
अयोध्या, फैजाबाद

। ओ३म् ।।

सत्यार्थ-प्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

वर्ष-१९९४

"घर बैठे प्रश्न पत्र व पुस्तक प्राप्त करें और छः मास के भीतर प्रश्नों के उत्तर भेजकर पुरस्कार प्राप्त करें।"

एक अखिल भारतीय प्रतियोगिता

अधिकतम सौ पृष्ठों में

विषय :

महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश

योग्यताएं—निम्नलिखित वर्गों में प्रतियोगिता हेतु प्रविष्टियां केवल हिन्दी अथवा अंग्रेजी में स्वीकार की जायेगी।

(क) कक्षा १० से १२ तक (ख) स्नातक स्नातकोत्तर विद्यार्थी

(ग) शोध छात्र-छात्रा (घ) सामान्य वर्ग

वर्ग, क, ख, ग, के समस्त प्रतियोगी, प्रतियोगिता हेतु अपनी उत्तर पुस्तिकाएं अपनी संस्था के प्रमुख विभागाध्यक्षों के अग्रसारण पत्र के साथ भेजें। सामान्य वर्ग की प्रविष्टियां सीधे तौर पर भेजी जानी चाहिए।

पुरस्कार----

प्रत्येक वर्ग यानि क, ख, ग, घ से निम्नांकित पुरस्कार होंगे–

प्रथम पुरस्कार ३००० रुपए

द्वितीय पुरस्कार २०००) तृतीय पुरस्कार १०००)

सान्त्वना पुरस्कार प्रत्येक वर्ग समूह के लिए----

समस्त विजेताओं को एक प्रशस्ति/प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा।

प्रवेश—प्रश्न पत्र, अनुक्रमांक तथा अन्य विवरण के लिए मात्र ३०) रुपये (तीस रु०) का मनीआर्डर दिनांक ३१-८-९४ तक द्वारा रजिस्ट्रार परीक्षा विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५, आसफअली रोड, नई दिल्ली-२ को भेजें। उत्तर पुस्तिकाएं भेजने की अन्तिम तिथि ३०-१०-९४ है। सत्यार्थ प्रकाश की पुस्तक यदि पुस्तकालयों पुस्तक विक्रेताओं अथवा स्थानीय आर्यसमाज कार्यालयों से उपलब्ध न हो तो ३०) हिन्दी संस्करण के लिए तथा ७०) अंग्रेजी संस्करण के लिए भेजकर डाक द्वारा मंगवा सकते है।

डा० ए. बी. आर्य
रजिस्ट्रार

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

सार्वदेशिक आर्य वीर दल

शिविरो की सूची वर्ष १९९४ ई०

उत्तर प्रदेश (१) २१ मई से ३० मई तक जसराना फिरोजाबाद (उ० प्र०)
(२) ३ से ११ जून तक आर्य समाज बलिया (उ०प्र०)
(३) २५ मई से १ जून तक आर्य समाज मऊ (मऊनाथ भजन) उ० प्र०

हरयाणा (१) २५ मई से ५ जून तक गुरुकुल खानपुर महेन्द्रगढ़ (हरि०
(२) ३ से १० जून तक आर्य समाज भिवानी (हर०)
(३) १३ से २१ मई तक पानीपत (हर०)
(४) ५ से १२ जून तक जींद (हर०)
(५) ६ से १२ जून तक करनाल (हर०)

राजस्थान २९ से ७ जून तक आर्य समाज चिड़ावा (नारनौल बहरोड़ रोड पर)

उडीसा १ से ७ जून तक गुरुकुल आश्रम आमसेना (उडीसा)

बिहार २६ मई से ७ जून सिम्डगा बिहार

दिल्ली २१ से २६ मई तक रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेन्डरी स्कूल कनाट प्लेस

पंजाब : (१) २ से १२ जून दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब)
(२) १५ से २५ जून तक अबोहर क्षेत्र (पंजाब)

मध्यप्रदेश : (१) २१ से २७ अप्रैल त० गुरुकुल सलखिया रायगढ़ (म० प्र०)
(२) १ से १० मई तक सुकुल भटनी रायगढ़ (म० प्र०)
(३) १० से १८ मई शक्ति बिलासपुर (म० प्र०)
(४) १९ से २५ मई तक वघौल बिलासपुर (म०प्र०)
(५) २ से ८ मई नन्द्रा खरगोन (म० प्र०)
(६) ८ से १५ मई तक आर्य कन्या नेपीयर टाऊन स्कूल जबलपुर (म० प्र०)
(७) १८से २१मई तक गुरुकुल होशगाबाद प्रातीय शिविर (म० प्र०)
(८) ८ से १६ मई तक वीरागना शिविर आर्यसमाज महू (म० प्र०)

राष्ट्रीय शिविर : ५ से ११ जून तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हर०)
मार्ग—दिल्ली से पीपली (बस द्वारा) पीपली से युनिवर्सटी तीसरा (III) गेट कुरुक्षेत्र बस द्वारा या स्कूटर द्वारा पहुंचे।

कार्यकर्ता शिविर २१ जून से २ जौलाई तक गुरुकुल कण्वाश्रम कोटद्वार (उ० प्र०)

हरिसिंह आर्य कार्यालयमन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल
नई दिल्ली-२

आर्य समाज बालको नगर की भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन

कोरबा (म० प्र०) आर्य समाज बालको नगर कोरबा (म० प्र०) का १२वां वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक दिनांक ३० मार्च से १ अप्रैल ६४ तक मनाया गया। हरिद्वार से महात्मा आर्य भिक्षु जी तथा गुरुकुल आमसेना (उड़ीसा) से स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी के वेदों पर ज्ञान वर्द्धक तथा विचारोत्तेजक उपदेश हुए। आर्य भिक्षु जी ने बताया कि वेदों पर केवल हिन्दुओं का ही अधिकार नहीं है अपितु ईश्वर प्रदत्त आचार संहिता का नाम वेद है। ३१ अप्रैल को सायं ५ बजे उन्होंने ज्ञान दीप के साथ यज्ञशाला मे प्रवेश करके यज्ञ के साथ इसका उद्घाटन किया। इस मन्दिर की आधार शिला सन् १६८८ मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अपने कर कमलों से की थी।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने बढ़ते पाखंडों पर चिन्ता व्यक्त की तथा गायत्री परिवार द्वारा किये जा रहे अश्वमेध यज्ञों का खण्डन किया।

प्रवचन के अतिरिक्त भजनोपदेशक द्वय ओ३म कुमार आर्य तथा वेदपाल जी के मधुर भजनों का भी श्रोताओं ने आनन्द उठाया। कार्यक्रम के अन्त मे समाज के मन्त्री जितेन्द्रपाल खुल्लर ने सभी का आभार तथा धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर श्री ओ३म् मुनि भी उपस्थित थे।

—श्रीपाल सिंह आर्य

आर्यसमाजों के निर्वाचन

—आर्य समाज भिण्ड, श्री महावीर प्रसाद प्रधान, श्री महेन्द्र प्रताप सिंह मन्त्री श्री मोती सिंह कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज नरेला, श्री लायक राम जी प्रधान, मा० पूर्णसिंह आर्य मन्त्री, श्री ओमप्रकाश वागेश्वर कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज अरुण विहार नोएडा, कर्नल एम पी कोहली प्रधान, श्री आर एस सिसोदिया मन्त्री, श्री डी एस भाटी कोषा०।

—आर्य समाज खुर्जा म ज, श्री रामदेव आर्य प्रधान, श्री वीरेन्द्र कुमार गुप्ता मन्त्री, श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज श्रृगार नगर लखनऊ, श्री रूपचन्द दीपक प्रधान श्री विज्ञान सिंह गग मन्त्री, श्रीमती रश्मि भारद्वाज कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज रसूलपुर कला, श्री ध्योदान सिंह प्रधान, श्री ज्ञानदेवार्य मन्त्री, डा० होरीलाल आर्य कोषा०।

—आर्य समाज वीर भाव टिटौरा बुलन्द शहर, श्री रणजीत सिंह प्रधान, श्री कुशलसिंह मन्त्री, डा० लोकेन्द्र सिंह कोषाध्यक्ष।

—जिला आर्य उप प्र० सभा बुलन्दशहर, श्री कुशलपाल सिंह प्रधान, डा० लोकेन्द्र सिंह मन्त्री, श्री निवास सिंह कोषा०।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर, श्री सीताराम आर्य प्रधान, श्री राम जी आर्य मन्त्री, श्री सत्यनारायण प्रसाद कोषाध्यक्ष।

विशेष वेद सप्ताह

स्थानीय आर्य समाज, नया नगल मे विशेष वेद प्रचार सप्ताह आर्य समाज के ११६ वें स्थापना दिवस से रामनवमी अर्थात ११ से २० अप्रैल ६४ तक बड़ी धूम धाम से मनाया गया, नया नगल एव नगल निवासियो ने ज्ञान वर्धक प्रवचनो से लाभ उठाया इस वेद सप्ताह के मुख्य प्रवक्ता श्री प० ओ३म् प्रकाश आर्य जी, करनाल थे, हवन यज्ञ आर्य समाज नया नगल के योग्य पुरोहित जी के सहारत्व में सम्पन्न हुआ।

प्रति प्रात आर्य समाज में एव प्रति साय अलग अलग घरो मे पारिवारिक सत्सग मे हवन यज्ञ भजनो एव प्रवचनो का कार्यक्रम चलता रहा। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

गुमान चन्द तालूजा (मन्त्री)
आ स नया नगल

शुभ विवाह

'सार्वदेशिक आर्य वीर दल आर्य नगर मगरा पूजला के सरक्षक श्रीमान हितेन्द्र परिहार सुपुत्र श्री जयनारायण जी परिहार का पाणिग्रहण संस्कार दि० १४-४-६४ को सौभाग्यवती इन्दिरा कुमारी सुपुत्री श्री बाबूलाल सांखला निवासी ब्यावर, अजमेर (राज०) के साथ पूर्ण वैदिक रीति से बिना किसी दहेज के मात्र पांच व्यक्तियो की बारात ले जाकर सम्पन्न हुआ।

यह निर्णय अपने आर्य वीर ने स्वात्म प्रेरणा से लेकर सार्वदेशिक आर्य वीर दल ही नहीं अपितु समस्त आर्य समाज को गौरवान्वित किया है।

—प्रधान

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४१/६७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१३-५-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९३
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 12-13-5-1994

पुस्तक-समीक्षा

वैदिक राजनीति शास्त्र

पृष्ठ-२०० मूल्य-७५

लेखक श्री शिवनारायण उपाध्याय

आर्य विद्यालय प्रकाशन रेतवाली कोटा (राजस्थान)

वैदिक-संशोधन एवं पुरातात्विक-उत्खनन या शोध पूर्ण कार्य हेतु विद्वान समय पर अपनी-प्रतिभा का प्रदर्शन करके विषयों पर ग्रन्थों की रचना करते ही रहते हैं।

वैदिक-राजनीति की धारा में इस युग में युगान्तकारी महापुरुष महर्षि दयानन्द ही हुए। जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का छठा समुल्लास लिखकर वेदों में राजनीतिक तत्वों का अन्वेषण किया और हमें बताया कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है? स्पष्ट करके मौलिक चिन्तन धारा बढ़ाई।

इसके पश्चात् वैदिक शोध विभिन्न प्रकार से विद्वानों द्वारा प्रारम्भ हो गया। विगत वर्षों में वैदिक राजनीति पर एक विशद ग्रन्थ श्रद्धेय-आचार्य-पं० प्रियव्रत-वेद वाचस्पति जी ने तीन भागों में लिखकर अपने विवेक का विशद परिचय दिया।

आज जिस ग्रन्थ पर मैं दो शब्द लिखने जा रहा हूं वह भी अपने में अद्भुत एवं शोध प्रबन्ध है। मान्य विद्वान् का एक ग्रन्थ 'वेदों की वैज्ञानिक अवधारणा" आर्य जनता के समक्ष प्रस्तुत किया जा चुका है। उसी शृंखला में यह वैदिक राजनीति पर शोध परक लघु ग्रन्थ-प्रस्तुत किया है।

वैदिक प्रक्रिया को यदि विकृत किया है तो उसके भी दोषी हम हैं और यदि विद्वानों ने अपनी बुद्धि का वैभव दिखाया है तो वेदों का सत्य स्वरूप भी बुद्धि के विवेक से ही किया गया है।

राज्य की उत्पत्ति के सिद्धान्त के विषय में वेद स्पष्ट रूप से सामाजिक समझौते को मान्यता देता है।

वेदों का शासक तानाशाह न होकर वैदिक परम्पराओं के अनुसार सार्वभौमिकता का मूल तन्त्र प्रजा में बसता है।

राज्य की रक्षा एवं सम्वर्धन ही वैदिक मान्यता है। साथ ही राजा या राष्ट्रपति सभाधीन सभा और सभाधीन राजा प्रजा के सुख सम्वर्धन में कर्तव्य रत रहता है।

ऋग्वेद का अन्तिम संगठन सूक्त इसका आधार है जो कि लेखक की अपनी मान्यता है। वेदों का राष्ट्रीय आधार ही "आ. ब्रह्मन्-ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्' यह वेद मन्त्र ही राष्ट्र की अभिवृद्धि का अश्वमेध यज्ञ है। स्व. देवी श्रीमती इन्दिरागांधी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में संगठन सूक्त के 'समानी मन्त्र समिति ०" मन्त्रों का उद्घोष कर वैदिक राजनीति पर अपने विचार देकर वैदिक श्रुति का महत्व दर्शाया था।

मान्य विद्वान ने इस ग्रन्थ में भी राज्य की उत्पत्ति, मूल तत्व, स्वराज्य निर्देशन गणतन्त्रात्मक पद्धति, शासन व्यवस्था राजा या राष्ट्रपति, राजा प्रजा के सम्बन्ध, राज्य के उद्योग, सुरक्षा व्यवस्था आदि विषयों पर वेद मन्त्रों को खोजकर पुस्तक में एकत्र करके राजनीति पर अच्छा विश्लेषण किया है। शासन-शासक प्रजा के अधिकार पुरातन वैदिक राजनीति की व्यवस्था पर अच्छा प्रकाश डाला है।

अन्त में राष्ट्र की मंगल कामना करते हुए ग्रन्थ को विराम दिया है। लेखक विद्वान् प्रतिभाशाली व्यक्ति है उनकी उपयोगिता इसी में है कि उनके उपयोगी ग्रन्थों का अनुशीलन हो। गुणों का आधान गुणी में है उसे गुणवान ही पा सकता है।

प्रकाशन का श्रेय अन्य को न देकर आर्य विद्यालय ही इसका प्रकाशन करें—इसके लिए प्रकाशक का अतिशय धन्यवाद।

डा. सच्चिदानन्द शास्त्री

योग एवं नैतिक शिक्षा शिविर

प्रथम दिल्ली राज्यीय योग एवं नैतिक शिक्षा शिविर १९९४ का आयोजन, आर्य वीर दल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में १७ अप्रैल ९४ से २४ अप्रैल ९४ तक रतनदेवी आर्य कन्या उ०मा०वि०, कृष्ण नगर, दिल्ली में आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि श्री बैकुण्ठ लाल शर्मा 'प्रेम' सांसद ने समय पर पहुंचकर सभी को प्रोत्साहित किया। शिविर में ३६ छात्राओं तथा ४० छात्रों ने विभिन्न वर्गों में भाग लिया। २४ अप्रैल ९४ को पुरस्कार वितरण किया गया।

—ब्रह्मपाल (संयोजक)

वैदिक सत्संग का आयोजन व वैदिक प्याऊ का शुभारम्भ

आर्य समाज, कोटा ज० द्वारा ३१ मार्च से ४ अप्रैल ९४ तक विभिन्न आर्य परिवारों में वैदिक सत्संगों का आयोजन किया गया। जिनमें आचार्य वेद प्रिय शास्त्री गुरुकुल सोता बाड़ी, पं० रामस्वरूप रक्षक, अजमेर तथा पं० सत्यपाल सरल, भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, अजमेर तथा पं० सत्य पाल सरल, भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के भजन व प्रवचन हुए जिनका क्षेत्र के आम लोगों पर एक अच्छा प्रभाव पड़ा।

साथ ही इसी मध्य १ अप्रैल से आर्य समाज द्वारा वैदिक प्याऊ का शुभारम्भ आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री लक्ष्मीकान्त गुप्त के करकमलों द्वारा शर्बत पिलाकर किया गया।

राजेन्द्र कुमार आर्य

वार्षिकोत्सव

भारत आश्रम (वेद मन्दिर) राम नगर कालोनी, वृन्दावन (मथुरा) उ० प्र० का चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं तृतीय वार्षिकोत्सव दिनांक ९ जून गुरुवार (अमावस्या) से प्रारम्भ होकर दिनांक २३ जून गुरुवार (पूर्णिमा तक) सम्पन्न होगा।

इस अवसर पर संत, महात्मा, विद्वान, ब्रह्मचारी, वेदपाठी, ब्रह्मचारिणी, उपदेशक उपदेशिका, भजन उपदेशक व साध्वी महिलायें भी अपनी पवित्र वाणी से वेदों के द्वारा ज्ञान की वर्षा करेंगे। अतः सभी महानुभाव व सभी माता-बहिनें इस शुभ अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में पधार कर यज्ञ, प्रवचन आदि का लाभ उठायें तथा इस पवित्र कार्य में दान देकर यज्ञ को सफल बनायें।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज कवि नगर, (स्थित, ई--ब्लाक, कविनगर गाजियाबाद को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो वैदिक रीति से यज्ञ, संस्कार आदि करा सके। वेदमन्त्रों की व्याख्या आदि में विज्ञ, सद व्यवहारी वानप्रस्थी भजनोपदेशक को वरीयता।

आवास की समाज में ही व्यवस्था है। पूर्ण विवरण के साथ तुरन्त लिखें—

—इन्द्र पाल गुप्ता
मन्त्री, आर्य समाज कविनगर
के० बी० १२८ कविनगर, गाजियाबाद २०१००२
फोन ८--४३२४१

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक १६]   दयानन्दाब्द १७०   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५   ज्येष्ठ कृ० ५ सं० २०५१ ९ मई १९९४

दक्षिण भारत में आर्यसमाज की सराहनीय प्रगति

तमिलनाडु में प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव द्वारा दिया गया सारगर्भित उद्बोधन

मदुरै, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की अध्यक्षता मे आर्यसमाज मदुरै के सत्सग भवन मे तमिलनाडु के लगभग १३ आर्य समाजो से आये प्रतिनिधियो और सदस्यो की एक बैठक आयोजित की गई जिसमे तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा का विधिवत गठन किया गया। तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम प्रधान श्री जी० आर० गोपाल राव सर्व सम्मति से चुने गये। इनके अतिरिक्त दो उपप्रधान, एक मन्त्री एक उपमन्त्री एक कोषाध्यक्ष तथा एक सहायक कोषाध्यक्ष और ८ अन्तरग सभासद् चुने गये। सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा के लिए भी ६ प्रतिनिधियो का चयन करके उनके नाम सार्वदेशिक सभा को भेजे जा रहे हैं।

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने इस ऐतिहासिक कार्य से पूर्व लगभग १० दिन तक दक्षिण भारत के तमिलनाडु महाराष्ट्र तथा आ० प्र० के विभिन्न हिस्सो का दौरा किया। तथा आर्य समाज की गतिविधियो मे तेजी लाने पर स्थानीय नेताओ से विचार-विमर्श भी किया। इस दौरे मे श्री वन्देमातरम् जी ने कई जन सभाओं को भी सम्बोधित किया। पण्डित जी के प्रवचनो का दक्षिण भारत की धार्मिक जनता पर व्यापक असर हुआ। सैकडो व्यक्तियो ने पण्डित जी के समक्ष पाखण्ड इत्यादि को त्यागने और सत्य सनातन धर्म के अनुसार जीवन यापन करने का सकल्प लिया।

श्री वन्देमातरम् जी ने अपने प्रवचनो मे दक्षिण भारत की जनता को समझाते हुए कहा कि—द्रविण शब्द किसी भी अवस्था मे अपनी अलग अनुवाशिक पहचान का सूचक नहीं है बल्कि वास्तव में यह सस्कृत का एक शब्द है जिसका अर्थ है (द्र) अर्थात् दृष्टा। पण्डित दृष्टा और विद—अर्थात् वेद या ज्ञान, जिससे अभिप्राय बनता है "ज्ञान के दृष्टा"। पण्डित जी ने आगे समझाते हुए कहा कि पुरातन आर्य आप ही हैं क्योकि आपके पूर्वज ही वेद मन्त्रों के महान दृष्टा रहे हैं अत पूर्वजो के बताये मार्ग पर चलते हुए स्वामी दयानन्द द्वारा प्रदर्शित आर्य समाज के सिद्धान्तो को अपनायें।

श्री वन्देमातरम जी ने मीनाक्षीपुरम मे दयानन्द विद्यालय के एक परिसर का भी उद्घाटन किया। यह पाठशाला सार्वदेशिक सभा द्वारा ही निर्मित कराई गई है। [शेष पृष्ठ २ पर]

तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियो की सूची

१५ अप्रल १९९४ को सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान पण्डित वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी की अध्यक्षता मे आर्य समाज मदुरै के सत्सग भवन मे तमिलनाडु के आर्य समाजो के प्रतिनिधियों की बैठक हुई जिसमे विधिवत तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की गई। सर्व सम्मति से प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियो और कार्यकारिणी सदस्यो का चयन निम्न प्रकार हुआ —

श्री जी० आर० गोपाल राव	प्रधान
श्री के०एस० अनन्तराम शेषन	वरिष्ठ उपप्रधान
श्री आर०एन० लिगम	उपप्रधान
श्री के० मसिलामणि	मन्त्री
श्री ए० आनन्द सैन	उपमन्त्री
श्री एस० वकटेशम्	कोषाध्यक्ष
श्री राजा सीतारामा	सहायक कोषाध्यक्ष

इनके अतिरिक्त ८ अन्तरग सदस्यों और सार्वदेशिक सभा के लिए ६ प्रतिनिधियों का भी चयन किया गया।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

कश्मीर के विदेशी आतंकवादी

अब यह बात कोई राज नहीं रह गयी कि किसी मुस्लिम देशों से आतंकवादी कश्मीर मे पहुंच कर वहा ऊधम मचा रहे हैं फोजी और अन्य सुरक्षा अधिकारी इस बात पर चिन्तित है कि इन लोगो के पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र होते हैं—बताया जा रहा है कि जिस दिन यह जम्मू से श्रीनगर गया उसी दिन सुरक्षा अधिकारियो ने जला से धरती तक मार करने वाले राकेट का पता लगा लिया जो सरकारी हैड क्वाटंर पर दागा जाने वाला था यह राकेट तो एक हथियार है जो इन आतकवादियो के पास है इसके अतिरिक्त अन्द प्रकार के मिसाईल और विदेशी इस्लाह है जो यह आतकवादी कश्मीर में स्मगल कर रहे हैं—आज कश्मीर में इतने विदेशी आतंकवादी आ गये हैं कि विरोधी पार्टियों पर भी इनका आधिपत्य हो गया है—यह लोग भाड़े के टट्टू हैं और इनको कश्मीर से जजबाती लगाव जरा सा भी नहीं है एक मामूली अन्दाजे के अनुसार कश्मीर में एक हजार पाकिस्तानी और पांच सो अफगान हैं—इनके अतिरिक्त सुडान सऊदीअरब और पश्चिमी एशिया के दूसरे देशों के अनेक नवयुवक सक्रीय हैं और यह सब पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई-एस-आई के इशारों पर नाचते हैं एक आतंकवादी नेता चोधरी औरंगजेब ने इन्हीं दिनों गिरफ्तारी के बाद बताया कि पाकिस्तानी कश्मीर के प्रधानमंत्री सरदार अबदुलाकयूमखा कश्मीर में इन्हीं दिनों सरगर्म होने वाले नये आंतकवादियों की संस्था को स्वयम कन्ट्रोल करते हैं चोधरी औरगंजेब ने यह बताया कि अफगान आंतकवादियों को अफगानिस्तान में शिक्षित किया जाता है—इसने यह भी बताया कि अब जबकि गरमिया आरम्भ हो गयी है पहाड़ों की बर्फ पिघलेगी इस प्रकार आंतकवादियों के लिए भारतीय कश्मीर में घुसना सरल हो जाएगा—इस तरह भारतीय रक्षा दस्ते जितने आतंकवादियों को मारते हैं उतने ही कुछ दिनो मे बाहर से आ जाते हैं कुछ अफगान बेरोजगारी से तग आकर और कुछ जिहाद के नाम पर आंतकवादियो की संस्थाओ में सम्मिलित हो गये हैं—इनके पास भी नवीनतम हथियार हैं एक और अफगान आतकवादी जमालुद्दीन ने बताया कि भारतीय फौज से कही अधिक अफगान कश्मीर में है—उसका कहना है कि इनकी संख्या कई हजार है पिछले कुछ महीनो में १२० विदेशी आतकवादी मारे जा चुके हैं और ८० क लगभग पकड़े गये हैं इनमें अलजेरायी-सुडानी और मिसरी शामिल हैं यूनान का भी एक आतकवादी इनमे शामिल है इसका नाम महमूद फैदालेश है इसने बताया कि इसने पलागू जिला में ५०० कश्मीरी नोजवानों को दहशतगर्दी के कार्य की ट्रेनिंग दी है इसका कहना है कि एक अरबी भी इसका नजर में आया है यह भी उसने स्वीकार किया कि कश्मीरी बहुत ही भोले लोग हैं और यह आंतकवादी नेता इन्हें गुमराह कर रहे हैं इसने यह भी बताया कि सुरक्षा अधिकारियो का कहना है कि यह विदेशी अच्छा लड़ना जानते हैं और आसानी से अपने हथियार नही डालते—इसने आगे बताया कि इस समय सबसे अधिक शक्तिशाली संस्था हरकत अलानासार है यह संस्था हरकत इस्लामी और हरकत अलाओदीन के मिश्रित सहयोग से बनी है इसका एक नेता मुहमदमसूद अजरा को इन्हीं दिनो गिरफ्तार किया गया है और इसने यह भी बताया कि कितने विदेशी आतंकवादी कश्मीर में आ चुके हैं इन लोगों को मगरबी एशिया के देशों से धन बड़ा बढ़ आ रहा है और पाकिस्तान ऐसे नवयुवको को सैनिक शिक्षण देकर कश्मीर में घुसेड़ रहा है इस तरह सुरक्षा फोर्स की दिक्कतो का अन्दाजा हो सकता है।

के० नरेन्द्र
के सहयोग से प्रताप २१-५-९४

तमिलनाडु में प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन

[पृष्ठ १ का शेष[

१९ फरवरी १९८१ को मदुर (तमिलनाडु) से १८० किलोमीटर दूर मीनाक्षीपुरम् नामक गांव को अरब पैट्रो डालर के बल पर षड़यन्त्र करके मुसलमानों ने पूरे गांव का लोभ-लालच से इस्लामीकरण कर दिया था। यह कार्यक्रम एक वृहद समारोह के साथ किया गया था जिसमें सऊदी अरब के ईमाम और केरल के बड़े-बड़े मौलवियों ने भी भाग लिया। षड़यन्त्र के लिए कोलम्बों में केन्द्र बनाया गया था। पता चला है कि लगभग ७ हजार मुसलमान उस कार्यक्रम में उपस्थित थे। धर्मान्तरण का यह समाचार जब सार्वदेशिक सभा को मिला तो इस घटना की सभा द्वारा जांच प्रारम्भ हुई।

सभा के तत्कालीन मन्त्री स्व० ओम प्रकाश त्यागी ने सभा की अन्तरंग बैठक में इस विषय को विचार के लिये रखा। गम्भीर विचार विमर्श के बाद इस्लामी षडयन्त्रों को रोकने के लिए सभा द्वारा 'धर्म रक्षा महाभियान' नामक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया गया। सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले (वर्तमान नाम स्वामी आनन्दबोध सरस्वती) ने तत्काल इस घटना की जानकारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी दी। सभा का एक शिष्ट मण्डल सभा प्रधान के नेतृत्व में सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पंडित वन्देमातरम रामचन्द्रराव, सभा-मन्त्री ओमप्रकाश त्यागी और आर्य प्रतिनिधि सभा आ०प्र० के अधिकारियों के साथ मीनाक्षीपुरम पहुंचा। घटना का सम्पूर्ण विवरण तैयार करके सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले मीनाक्षीपुरम के हिन्दुओं के एक शिष्टमंडल के साथ प्रधानमन्त्री से मिले और उन लोगों ने उक्त घटना का आंखों देखा हाल उन्हें सुनाया। प्रधानमन्त्री जी ने बहुत गम्भीरता से इस विवरण को सुना और भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं को रोकने का आश्वासन दिया था।

सार्वदेशिक सभा के नेताओं ने ५ बार मीनाक्षीपुरम का दौरा किया, उसके बाद १४,१५ और १६ जुलाई १९८१ को मीनाक्षीपुरम में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में भारत के कोने-कोने से हजारों आर्य नर-नारियों ने भाग लिया था। कार्यक्रम का प्रारम्भ वृहद यज्ञ के साथ किया गया। जिसमें महात्मा दयानन्द पं० राजगुरू शर्मा, आदि प्रमुख विद्वानों ने वेद मन्त्रों की व्याख्या करते हुए वैदिक धर्म की विशेषताओं पर प्रकाश डाला, जिसका तमिल भाषा में दक्षिण भारत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री एम० नारायण स्वामी ने अनुवाद जनता को पढ़कर सुनाया। इस यज्ञ में मीनाक्षीपुरम् गांव के सभी नर-नारियों तथा बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इन सबको यज्ञोपवीत पहनाकर पुनः वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई। इस अवसर पर पानपोली से मीनाक्षीपुरम तक एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गई थी। इस सम्मेलन का पूरे दक्षिण भारत में व्यापक प्रभाव पड़ा और सम्पूर्ण भारत में इस्लामीकरण के षडयन्त्रों को गहरा धक्का लगा।

दक्षिण भारत में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए श्री एम० नारायण स्वामी के नेतृत्व में मदुरै में आर्य समाज का केन्द्र उसी समय से खोला गया था। मीनाक्षीपुरम मे दयानन्द विद्यालय की भी स्थापना की गई। विद्यालय के भवन के लिए एक बड़ा भूखण्ड भी क्रय किया गया था, जहां अब विद्यालय भवन और यज्ञशाला का विधिवत निर्माण हो चुका है। श्री एम० नारायण स्वामी के संयोजकत्व मे तबसे तमिलनाडु के विभिन्न जिलों में बड़ी संख्या में आर्य समाजो का विधिवत गठन होते जा रहा है। इसी का सुपरिणाम है कि आज तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा का संगठन बनाने में सार्वदेशिक सभा को महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है और तमिलनाडु में आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाया जा सका है।

सम्पादकीय

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में डा. अम्बेडकर क्या थे?

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में जिन महापुरुषों का योगदान रहा उनमें डा० अम्बेडकर का कहीं भी न नाम है और न योगदान रहा। भारतीय संविधान के नाम पर डा० अम्बेडकर का नाम विशेषतौर पर लिया जाता है कि उन्होंने संविधान बनाया। संविधान के निर्माता भी ५-७ व्यक्ति विशेष थे, उनमें एक डा० अम्बेडकर भी पांच घुड़सवारों में थे।

समय की मांग थी हरिजनों को प्रसन्न करना था तो हम लोगों ने डा० जगजीवन राम जैसे तपे हुए व्यक्ति को पीछे धकेल कर डा० अम्बेडकर को महत्व देकर आगे बढ़ाया। विश्व ने यह समझा क्रान्ति के अग्रणी नेता यही थे। बड़ा भारी भ्रम पैदा किया गया। सवर्ण, अवर्ण के नाम पर डा० अम्बेडकर ने जो विवाद पैदा किया वही आज काशीराम--मायावती पैदा कर रहे हैं।

भारत मे ही नहीं विश्व में सभी जाति बिरादियो मे वर्णवाद-जातिवाद है। इस जातीय विद्वेष को दूर करने में सर्वप्रथम संघर्ष किया महर्षि दयानन्द सरस्वती ने। उसके पश्चात इस भेदभाव को मिटाने का दृढ़ संकल्प लिया म० गांधी ने जिन्होंने अंग्रेजी राज देखा ही नहीं। उस जमाने में दलितों के शोषण और उन पर होने वाले अत्याचार तथा छुआछूत को दूर करने के लिए म० गांधी ने घोर संघर्ष किया। और हरिजन जैसा सम्मान जनक शब्द प्रयोग किया क्योंकि उस वर्ग विशेष को जाति या कर्म सूचक नाम से पुकारने से जो आत्म सम्मान को ठेस पहुंचती थी वह न लगे।

डा० अम्बेडकर के अनुयायी गांधी जी द्वारा प्रयुक्त हरिजन शब्द को निन्दनीय मान रहे हैं। उन्हें जानकारी होनी चाहिए कि भारतीय परतन्त्र युग में हरिजनों पर क्या बीतती थी।

पूरे स्वतन्त्रता आन्दोलन ने दलित अछूत के विरुद्ध पूंजीपति और सवर्णों से संघर्ष किस प्रकार किया और हम सभी को समान स्थान देकर सम्मान दिया। आज वर्ग संघर्ष के नाम पर समाज में विघटन की प्रवृत्ति पैदा की जा रही है। परिणामतः आज म० गांधी को काशीराम मायावती जिन्हें प्रथम बोलना-सीखना चाहिए कि शिष्टाचार क्या है। डा० अम्बेडकर तो पूरे हरिजन समाज के नेता भी नहीं थे यदि होते तो केवल महारों के साथ ही बौद्ध धर्म क्यों स्वीकार करते बौद्ध धर्म की दीक्षा के समय उन्होंने अन्य वर्गों को साथ क्यों नहीं लिया। अंग्रेज कुछ ऐसे व्यक्ति चाहते थे जो आजादी के बीच रोड़ा अटकाने का काम करें। उस समय हरिजनों में डा० अम्बेडकर मुसलमानों में जिन्ना और सिखों में मा० तारासिंह को नेता के रूप में खड़ा किया और कहा कि भारत की पूरी जनता आजादी के पक्ष में नहीं है यह उनकी फूट डालो--राज करो की नीति का अंग था। स्वामी दयानन्द के आर्य समाज द्वारा स्थापित गुरुकुलों में सभी को समान स्थान प्राप्त था और है--परन्तु लोक सभा विधानसभा सरकारी सर्विसों में प्राप्त होने वाली नौकरियों हेतु जातिवाद को बढ़ावा मिला। जो लोग दलित पिछड़े वर्ग के लोग हैं उन्हें आगे लाकर समाज को ऊंचा उठाना है।

भारत के संविधान निर्माण में भी अम्बेडकर का नाम इसलिए जोड़ा गया है ताकि हरिजनों को यह महसूस न हो कि सवर्णों ने जबरदस्ती अपना संविधान उन पर थोप दिया। डा० अम्बेडकर भी संविधान निर्माता बन गये। आज समाज में व्यक्ति पूजा न करके समाज की पूजा करनी चाहिए। म० गांधी ने पिछड़े वर्ग को नैतिक दृष्टि से ऊपर उठाकर सम्मान पूर्वक जीने की कला सिखाई।

परन्तु अभिशप्त समाज वहीं का वहीं ही रहा, निम्न स्तर से जिन्हें उच्च शिक्षा दिलाकर विद्वान बनाया। वे अपने को हरिजन वर्ग विशेष मानने में गौरव अनुभव करते हैं।

चाहिये तो यह था—

कि जब काशीराम और मायावती छोटे मुंह बड़ी बात बोल रहे थे म० गान्धी पर गंदे लाञ्छन लगा रहे थे सभी पार्टी के दलित अछूत हरिजन एम. पी., एम. एल. ए., एक साथ मंच बनाकर उद्घोष कर वर्ग विद्वेष को जन्म देने वालों का विरोध कर उत्तर देते। साथ ही म० गांधी के हरिजन शब्द की सही व्याख्या कर समाज का नेतृत्व करते। समाज में अपने कर्मों से ही व्यक्ति छोटा बड़ा बनता है। जन्म के साथ सभी शूद्र उत्पन्न होते हैं जिस मनु० की मनुस्मृति को जलाना फाड़ना इसलिए धर्म समझते हैं कि इसमें वर्णवाद, जातिवाद के नाम पर शूद्रों के विपरीत विषवमन किया है। उन्होंने यह नहीं पढ़ा—

जन्मना जायते शूद्रः संस्कार्णद्विज उच्यते ।।

संस्कारवान जाति द्विज, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य कहे जाते हैं। सभी को योग्यता के आधार पर द्विज बनने का अधिकार है आज वर्ग विद्वेष की भावना को उत्पन्न न कर मानव को मानवता का सही बोध कराया जाय। ऐसे लोग खून की होली खेलकर नेता गिरी करना चाहते हैं उनका पर्दाफाश करना चाहिए।

डा० अम्बेडकर जैसे बुद्धिजीवी व्यक्ति को समझा जाय और उनका सही अनुगमन किया जाय। आग लगाना बुरा नहीं, आग बुझाने की भी बुद्धि होनी चाहिए।

राष्ट्रपिता या राष्ट्रपति बनने का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को है उनकी तरह तप-त्याग पूर्ण जीवन जीने की कला भी सीखनी चाहिए।

अनर्गल प्रलाप करने से मानवता नष्ट होगी इतिहास भ्रष्ट होगा, गन्दा उग्रवाद पनपेगा तब किस पर शासन करोगे, शासन करने के लिए अनुशासन भी आना चाहिए।

क्या भौतिक विज्ञान भी आत्मा और ईश्वर की सत्ता को मानेगा ?

विवेकभूषण दर्शनाचार्य

आज के भौतिक विज्ञान (Physics) ने अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। हम भौतिक वैज्ञानिकों (Scientists) के परिश्रम की प्रशंसा करते हैं, कि उनके प्रयासों से आज मानव को मशीन युग में अनेक प्रकार की सुविधाएं प्राप्त हुई हैं और अनेक कष्ट दूर हुए हैं। यद्यपि यह सर्वसम्मत बात है (Universal Law है) कि प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति की प्रत्येक चेष्टा का उद्देश्य 'दुःख से छूटना और सुख की प्राप्त करना' होता है। आधुनिक विज्ञान के प्रयास = (नये-२ आविष्कार) भी इस नियम का अपवाद नहीं हैं। अर्थात् वैज्ञानिकों के प्रयत्न भी मानव-समाज को 'दुःख से छुड़ाने और सुख की प्राप्ति कराने के लिए' ही हैं। फिर भी आज भौतिक विज्ञान इतना उन्नत हो जाने पर भी क्या कारण है कि मानव दुःखों से पूर्णतया छूट नहीं पा रहा और पूर्ण और स्थाई सुख को प्राप्त नहीं कर पा रहा ? हमें इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करना होगा।

हमारी दृष्टि में इसका कारण है—वैज्ञानिकों द्वारा 'आत्मा' और 'ईश्वर' नाम के द्रव्यों की सत्ता को स्वीकार न करना और इन द्रव्यों के गुण-कर्म-स्वभाव को न जानना। भौतिक वैज्ञानिकों की दृष्टि में जगत् का मूल तत्त्व ऊर्जा (Energy) माना जाता है। उसी से आगे चलकर क्वार्क्स (Quarks), फिर इलैक्ट्रान, प्रोटोन, न्यूट्रान आदि बनते हैं और सम्पूर्ण जगत् का विस्तार हो जाता है।

हम यहां वैज्ञानिकों से कुछ प्रश्न करना चाहेंगे। इन प्रश्नों का उद्देश्य है-सत्य की खोज करना (जो कि विज्ञान का भी उद्देश्य है)। परन्तु प्रश्न उठाने से पूर्व कुछ उन नियमों का उल्लेख कर देना आवश्यक प्रतीत होता है, जिन्हें भौतिक विज्ञान आज भी स्वीकार करता है। जैसे कि—

(१)—इस संसार का मूल तत्त्व ऊर्जा = (Energy) है। जो कि जड़ = (Non Intellect) है।

(२)—मूल तत्त्वों की विशेषताओं में परिवर्तन नहीं किया जा सकता। यदि परिवर्तन हो जाये, तो उन्हें मूलतत्त्व नहीं माना जा सकेगा।

(३)—भौतिक विज्ञान केवल उन्हीं तत्त्वों की सत्ता को स्वीकार करता है, जिन्हें आंखों से या यन्त्रों से देखा जा सके अथवा बुद्धि से स्वीकार किया जा सके।

(४)—अभाव (Absence) से भाव = (Presence) नहीं हो सकता। इत्यादि। (उपर्युक्त नियम श्री प्रो० सत्यदेव वर्मा जी ने, वैज्ञानिकों की ओर से स्वीकार किये। प्रो० वर्मा जी गुजरात विश्वविद्यालय के एक प्रबुद्ध वैज्ञानिक हैं और विश्वविद्यालय में भौतिकी विभाग के अध्यक्ष तथा विज्ञान विभाग के निदेशक हैं)।

अब हम सत्य की खोज के उद्देश्य से भौतिक वैज्ञानिकों के समक्ष कुछ प्रश्न उपस्थित करते हैं।

१. प्रश्न—भौतिक विज्ञान उन तत्त्वों की सत्ता को भी स्वीकार करता है, जो बुद्धि से जाने जा सकते हैं, भले ही आंखों या यन्त्रों से न भी देखे जा सकें। जैसे कि- ऊर्जा, पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति, आदि 'क्वार्क्स' नामक सूक्ष्म द्रव्य भी अभी तक किन्हीं भी यन्त्रों के माध्यम से देखे नहीं जा सके हैं। फिर भी विज्ञान इनकी सत्ता को स्वीकार करता है। अर्थात् पत्थर आदि भारी पदार्थ पृथ्वी की ओर आकर्षित होते हैं इस 'आकर्षण' रूपी कार्य के आधार पर पृथ्वी में 'गुरुत्वाकर्षण' के नाम से एक शक्ति की सत्ता स्वीकार की गई। ठीक इसी प्रकार से हम-आप सब सोचते-विचारते हैं। अनेक प्रकार विद्याओं को सीखकर विद्वान् हो जाते हैं। तो यहां प्रश्न होता है कि—इन विद्याओं को सीखने वाला द्रव्य कौन-सा है ? भौतिक विज्ञान के अनुसार तो मूल तत्त्व ज्ञान से रहित है। और मूल तत्त्वों की विशेषताओं में परिवर्तन भी नहीं हो सकता, जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि जड़ = (ज्ञान रहित) मूल तत्त्व से विद्याओं को सीखने वाले चेतन = (ज्ञान सहित) द्रव्य की उत्पत्ति हो गई। जब हमें विद्याओं को सीखने वाला, सोचने समझने वाला तत्त्व व्यवहार में मनुष्य आदि के रूप में उपलब्ध है, तो एक चेतन = (ज्ञानवान्) तत्त्व भी हमें 'मूल तत्त्व' के रूप में अवश्य ही स्वीकार करना होगा, जोकि विचारपूर्वक कार्य करता है, मोटर, रेल, बस आदि बनाता है और अपने अनेक प्रयोजन सिद्ध करता है। 'ऊर्जा' नाम मूलतत्त्व में ऐसी क्षमता सिद्ध नहीं होती और न ही वैज्ञानिक ऊर्जा में ऐसी क्षमता मानने को तैयार हैं। हम इस ऊर्जा से भिन्न चेतन मूल तत्त्व को 'आत्मा' = (Soul) कहते हैं।

१. श्री प्रो० वर्मा जी से हमारी बातचीत १० अगस्त १९९२ को काशीराम भवन, अहमदाबाद में हुई, जिसमें अन्य अनेक सज्जन भी उपस्थित थे।

२. प्रश्न = इसी प्रकार से ब्रह्माण्ड (Universe) में हम देखते हैं, तो सभी जगह = (परमाणु में, सौर-मण्डल आदि में) हमें व्यवस्था दिखाई देती है। ब्रह्माण्ड का मूल तत्त्व ऊर्जा' तो जड़ = (ज्ञान से रहित) है। वह तो ऐसी व्यवस्था और नियम बना नहीं सकता। इन नियमों और व्यवस्थित रचनाओं के लिए किसी बुद्धिमान = (ज्ञानवान्) तत्त्व को स्वीकार करना ही होगा, जो ऊर्जा क्वार्क्स और इलैक्ट्रान आदि द्रव्यों को परमाणुओं तथा रासायनिक द्रव्यों = (हीलियम, आक्सीजन, हाइड्रोजन आदि) के रूप में व्यवस्थित कर सके। यदि इस कार्य के लिए हम यह सोचें कि मनुष्य के रूप में उपलब्ध ज्ञानवान् पदार्थ आत्मा' ने यह व्यवस्था बनाई होगी, तो यह भी ठीक नहीं है। क्योंकि किसी भी मनुष्य का ऐसा सामर्थ्य नहीं दीखता, जो अरबों आकाश-गंगाओं (Galaxies) तक फैले विशाल ब्रह्माण्ड की व्यवस्था कर सके। परिणामस्वरूप हमें एक ऐसे अन्य चेतन = (ज्ञानवान्) मूल तत्त्व की सत्ता माननी होगी, जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना और व्यवस्था कर सके। ऐसे शक्तिशाली मूलतत्त्व को हम 'ईश्वर' (God) कहते हैं। इसकी सत्ता को स्वीकार किये बिना सृष्टि-की रचना का प्रश्न सुलझ नहीं पाएगा।

कोई भी जड़ वस्तु स्वयं ज्ञानपूर्वक गतिशील होकर किसी कार्य पदार्थ के रूप में उपस्थित नहीं हो जाती। जैसे कि वृक्ष से लकड़ी के टुकड़े स्वयं कट-कर और बुद्धिपूर्वक जुड़कर मेज-कुर्सी के रूप में नहीं आ जाते। उन्हें मेज-कुर्सी के रूप में लाने के लिए चेतन कर्ता—(बढ़ई = Carpenter) की आवश्यकता होती है। ठीक इसी प्रकार से इस ब्रह्माण्ड के मूल तत्त्व ऊर्जा क्वार्क्स आदि ज्ञानशून्य होने से स्वयं बुद्धिपूर्वक मिलकर इलैक्ट्रान, प्रोटोन आदि के रूप में उपस्थित नहीं हो सकते। उनको इस स्थिति में लाने के लिए भी बढ़ई के समान एक ज्ञानवान् तत्त्व की आवश्यकता होगी। और वह भी एक मूलतत्त्व ही होगा। क्योंकि उसकी विशेषताएं ऊर्जा और आत्मा से भिन्न हैं। उसी मूल तत्त्व को हम 'ईश्वर' कहते हैं। यदि ईश्वर की सत्ता को न माना जाये, तो हमारा प्रश्न है कि—ऊर्जा से क्वार्क्स तथा इलैक्ट्रान, प्रोटोन आदि पदार्थ किसने बनाये ? जबकि सभी वैज्ञानिक मानते हैं कि सृष्टि की रचना बुद्धिपूर्वक है और ऊर्जा आदि मूल तत्त्व बुद्धि से शून्य = (ज्ञानरहित) हैं।

विश्व की समस्याओं को सुलझाने के लिए हमें विश्व के सम्पूर्ण तत्त्वों का अध्ययन करना ही होगा। विश्व के सम्पूर्ण तत्त्व उपर्युक्त विवेचन के अनुसार तीन सिद्ध होते हैं। इन तीनों का विस्तृत विवरण वेद और वैदिक साहित्य—(भारतीय वैदिक दर्शनों एवं उपनिषद् आदि ग्रन्थों) में उपलब्ध होता है। इन ग्रन्थों में इन तीन तत्त्वों के नाम हैं—'ईश्वर' आत्मा और 'प्रकृति'। वैज्ञानिक लोग भौतिक विज्ञान में केवल 'प्रकृति' नामक एक ही मूल तत्त्व का अध्ययन करते हैं। परन्तु शेष दो तत्त्वों की उपेक्षा कर देने से हम यह समझते हैं कि जीवन की सभी समस्याओं का समाधान नहीं हो पाएगा। मनुष्य की जो स्वभाविक इच्छा है कि—"मैं दुःखों से पूर्णतया छूटकर स्थाई और पूर्ण सुख की प्राप्ति कर सकूं", इसकी पूर्ति के लिए हमें अवश्य ही 'ईश्वर और आत्मा' के बारे में जानना होगा। क्या भौतिक वैज्ञानिक लोग इन दो तत्त्वों के सम्बन्ध में जानने के लिए भारतीय वैदिक साहित्य का

(शेष पृष्ठ १० पर)

यज्ञ ही क्यों ?

— श्रीमुनि वसिष्ठ आर्य

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः (वेद)

संसार के ऐ अमृत पुत्रो ! सुनिये —

समाज मे तीन प्रकार के व्यक्ति रहते हैं। एक जो ज्ञान कर्म और अनुभव मे अपने से अधिक है, दूसरे वह जो ज्ञान, कर्म अनुभव मे अपने बराबर है, और तीसरे वह जो इन तीनों मे अपने से कम है। इनसे व्यवहार कैसा हो वह यज्ञ सिखाता है। यज्ञ का अर्थ देवपूजा संगतिकरण और दान है। समाज के जो लोग अपने से अधिक है, वे दिया करते हैं, सिखाया करते हैं। पशुपक्षी की विशेषता यह होती है कि उनका बच्चा जन्म से भाषा बोलता है। परन्तु मनुष्य के बच्चे के कानो में यदि कोई शब्द न पड़े, वह कुछ भी न सुने, तो वह कदापि नहीं बोलेगा। माता-पिता तथा मानव समाज की यह महती कृपा है कि उन्होने हमें बोलना, चलना, खाना, पीना, पहनना सिखाया, अपने जीवन मे सार्थकता जिन ज्येष्ठो ने दी, उनके प्रति आदर रखना चाहिए। जो लोग ज्ञान कर्म अनुभव मे समान है, उनसे समानता का व्यवहार करे और जो इन तीनो में कम है, छोटे हैं, उन्हें हमे देते चलना चाहिए दान करना चाहिए। दान और आदान की परम्परा से ही हमारा जीवन बना। यही यज्ञ की बात है। देव वह है जो लेता कम है किन्तु सहस्र गुना देने के लिये। असुर वह है जो देता कम है पर सहस्रगुना लेने के लिए। परोपकार में देव जीवन है। हाथ जो देव है, भोजन ले देता है, उपयोगी बनाकर मुख को समर्पित कर देता हैं। मुख भी देव है, उसका भी कर्तव्य दान करने का है, मुख ग्रास को चबाकर, सार बनाकर, उपयोगी बनाकर उसे पेट को दे देता है पेट भी यह सम्पदा अपने पास नहीं रखता, अग्राह्य को शरीर से बाहर फेंक देता है, उससे ममत्व नहीं रखता। यदि पेट उस अग्राह्य का त्याग न करे तो शरीर रूपी राष्ट्र बीमार हो जाएगा, राष्ट्र समर्थ नहीं बनेगा, और विपरीत परिणाम होगा। इसलिये अग्राह्य को त्यागता है और जो ग्राह्य है उसे अधिक उपयोगी बनाकर शरीर को दे देता है। पेट सच्चा वैश्य है, जहा पर अभाव है उसकी पूर्ति करता है। सम्पूर्ण राष्ट्र में शिर बाहु पाद का भी स्थान हैं। न दिया तो वे कमजोर होगे, पेट उन्हें भी प्रदान करता है जिससे राष्ट्र की शक्ति समर्थता बनी रहे। बाहु शरीर रूपी राष्ट्र को विपत्ति से बचाता है और पैर चलन, स्थिरता और प्रगति करता है। हरेक अवयव त्याग करता है। वही राष्ट्र प्रबल होता है जिसमें त्यागी व्यक्तियों का समाज होता है, त्याग ही यज्ञ की भावना है।

सूर्य प्रकाश देता है वह देव है, सम्पूर्ण पृथ्वी सूर्य के ताप से तपती है। तप्त पृथ्वी की अवस्था मे वर्षा होती है। तपन युक्त धरी, पृथ्वी ने जल को ग्रहण किया और जरूरत से ज्यादा जल नदियों के माध्यम से समुद्र को दे दिया। बादल जल देता है जो देते हैं सहस्रगुना वे देव हैं, मेघ देव हैं, पृथ्वी अन्न पैदा करके देती है, वह भी देव है समुद्र भी देव है, देता है। समाज में देवत्व की भावना लाये है तो देने के लिए। हम चाहें तो भी जिसका फल केवल हम तक नही रह सके, वह यज्ञ है। यही यज्ञ की भावना है।

यज्ञ को होम हवन कहते हैं, परन्तु यज्ञ शब्द अधिक व्यापक है। चारो वेदो में यज्ञ शब्द ११८४ बार आया है, ऋग्वेद में ५८० बार, यजुर्वेद में २४३ बार, सामवेद मे ६१ बार और अथर्ववेद मे २८ बार आया है। निघण्टु-नुसार यज्ञ को वेद, अध्वर, मेध, विमद, सवनम अग्निहोत्र, देवता, मख, विष्णु, इन्द्र, धर्म, प्रजापति आदि नामो से पुकारा जाता है। अग्नि को पुरोहित बना के हव्य को अन्य स्थानों से पहुचाने वाला यज्ञ होता है। चार प्रकार के पदार्थों से हव्य बनता है। १) सुगन्धित २) आरोग्यदायक ३) पुष्टिकारक ४) मिष्ट। शतपथ ब्राह्मण में कहा है—यज्ञो वै विष्णु। यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्मः। यजुर्वेद में पूछा कि, पृच्छामि त्वा परो अन्त पृथिव्या :—पृथ्वी का परला अन्त क्या है ? उत्तर में कहा है इयं वेदि-परो अन्तः पृथिव्या—पृथ्वी का परला अन्त यज्ञ वेदि ही है। पृथ्वी गोल है—(ध्यान रहे बाइबिल और कुरान शरीफ मानने वाले इसे आज भी चपटी समझते हैं) प्रश्न है—इस गोल भूगोल का केन्द्र कौन सा है ? उत्तर है कि अयं यज्ञ भुवनस्य नाभिः। यह यज्ञ ही भुवन की नाभि/केन्द्र है। संसार के समस्त श्रेष्ठ कर्म यज्ञ है जैसे इष्ट और पूर्त कार्य। इष्ट यज्ञ में परिवार का भरण पोषण, संतानो को शिक्षा दीक्षा द कर्म आते है, पूर्त मे कुआ खोदना, प्याऊ लगाना, दवाखाना खोलना, शाला का प्रबन्ध करना, गरीब अनाथो की सहायता करना आदि कर्म आते हैं। यह सब श्रेष्ठ कर्म तो है ही, फिर यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म क्यो कहा गया ? इसीलिए कि संसार मे जितने भी श्रेष्ठ कर्म हैं, उन सबमें यह यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है, कारण इसका फल केवल आप तक सीमित न रहता है अपितु संसार के अन्य मनुष्य एव अन्य प्राणिमात्र का उपकार इस यज्ञ से होता है। इसी कारण जो जानते हैं, वे यज्ञ करते रहते हैं। बहुत कम लोग दैनिक अग्निहोत्र करते है, कोई पौर्णिमा और अमावस्या को यज्ञ करते हैं कोई ऋतु परिवर्तन पर दो मास मे यज्ञ करते हैं, कोई संस्कारादि और पर्वादि पर यज्ञ करते हैं। परन्तु यज्ञ करना बहुत आवश्यक है। अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यंत के सभी यज्ञ होते हैं। इन सबमे पंच महायज्ञ हैं जो प्रत्येक गृहस्थ को करना नितान्त आवश्यक है। वे इस प्रकार हैं—१ ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या और ऋषिप्रणित आर्ष ग्रन्थो का स्वाध्याय) २. देवयज्ञ (अग्निहोत्रादि हवन) ३. पितृयज्ञ (जीवित माता पिता की सेवा) ४ बलिवैश्वदेव यज्ञ (पशु पक्षी कीट पतंगादि के लिए) ५. अतिथि यज्ञ (वेद विद्वान, पण्डित, योगी, महात्मा, सन्यासी आदि का सत्कार) आदि।

परमपिता परमात्मा की वेद वाणी मे कहा है, प्राणो यज्ञेन कल्पताम्। वायुः यज्ञेन कल्पताम्। अर्थात अपने जीवन को यज्ञमय बनाये। गीता मे कहा है—

> अन्नाद भवन्ति भूतानि, पर्जन्यात् अन्न संभव।
>
> यज्ञात् भवति पर्जन्यो, यज्ञ कर्म समुद्भवः॥

यज्ञ को प्रजापति कहा गया है। ३३ कोटि देवताओं में यज्ञ भी १ देवता है। इतना महत्वपूर्ण यज्ञ है। यज्ञ से जो वायुशुद्धि, जलशुद्धि होती है उससे अन्नशुद्ध होता है, और ऐसे रजवीर्य से जो सन्तान पैदा होगी वह निश्चय ही सुसतान ही होगी। गृहस्थधर्म तभी सफल होता है जब दम्पति संसार मे सुसंतान निर्माण करते हैं, चोर, डाकू, लुटेरे, व्यभिचारी, भ्रष्टाचारी अनाचारी संतानों से तो संसार मे दुख ही बढ़ेगा। दीर्घायु, सुदृढ सुसंस्कारित संतान निर्माण करने में ही गृहस्थ धर्म है, तब उसका उपाय यज्ञ ही है। अतः यज्ञ का महत्व ध्यान देने योग्य है।

आज के प्रदूषण के ऊपर यदि कोई प्रभावी उपाय है तो वह यज्ञ ही है। ग्राम पचायत नगर परिषद, महापालिकाओ ने जलशुद्धि की योजनायें तैयार की हैं, अन्न पदार्थों में मिलावट न होवे इसके लिए शासन प्रयत्नशील है किन्तु वायु शुद्धि, विचार आचार की शुद्धि के लिए उनके पास कोई उपाय दिखाई नहीं पड़ता, परन्तु यज्ञ ही उनके उपायो का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। एक ही क्रिया से वायु, जल, अन्न की शुद्धिया, मन की पवित्रता, आत्मिक उन्नति आदि सब कार्य यज्ञ से पूर्ण होते हैं। अग्निहोत्र पर विदेशो में बहुत संशोधन किये जा रहे हैं। पुणे में इस पर संशोधन कर रहे हैं, अम्बाजोगाई मे तीन बच्चों पर इसका परिणाम बुद्धि की तीव्रता, सुदृढ़ता मे पाया गया है। मद्रास के सैनिटरी कमिश्नर डा० कर्नलकिंग उनके कालेज के विद्यार्थियो को शिक्षा देते थे कि अग्नि मे घी, चावल और खांड जलाने से रोगाणु नष्ट होते हैं, फ्रांस के प्रो. टिलवर्ट ने बताया कि अग्नि में खांड के जलाने से निकलने वाली वायु क्षय, चेचक इसका विष नष्ट करती है, डा० टाटलिटस कहते हैं अग्नि में मुनक्का जलाने से टाईफाइड के कृमि नष्ट होते हैं, डा० हाफकिन ने कहा कि अग्नि मे घी जलाने से रोग कृमि नष्ट होते हैं।

(क्रमश)

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की गतिविधियां

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में कार्यरत अ०भा० दयानन्द सेवाश्रम संघ की गतिविधियों की जानकारी सार्वदेशिक पत्रिका के माध्यम से समय-समय पर आर्य सज्जनों, सहयोगियों व हितैषियों को दी जाती रही है। इसी सन्दर्भ में संस्था के महामंत्री श्री वेदव्रत महता, उपमंत्री श्रीमती ईश्वर रानी व मैं १६-४-९४ से ३०-४-९४ तक देश के पूर्वोत्तर आंचल में संस्था द्वारा संचालित आश्रमों व विद्यालयों के निरीक्षण हेतु गये। जो कार्य कलाप व कार्यक्रम वहां चल रहे हैं, उन सबका विवरण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करना अपना नैतिक कर्तव्य समझता हूं।

हम सब साथी दिल्ली से १६ अप्रैल ९४ को चलकर १९-४-९४ की प्रातः बोकाजान (आसाम) आश्रम में पहुंचे तथा २७-४-९४ तक इसी आश्रम में रहे। जहां श्री लीला बोरा संघ के संचालक व कर्मठ कार्यकर्ता हैं। वहां यह देखकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि वहां पर संघ द्वारा संचालित सभी आश्रमों व विद्यालयों की दिनचर्या ईश प्रार्थना व सन्ध्योपासना से प्रारम्भ होती है। आश्रमों का वर्णन, जैसाकि मैंने देखा व अनुभव किया है, इस प्रकार है।

पूर्वोत्तर आंचल के सभी आश्रमों का मुख्यालय बोकाजान आश्रम है। इस आश्रम में लगभग १०० छात्र व छात्रायें निवास करते हैं। प्रतिदिन सन्ध्योपासना के अतिरिक्त प्रत्येक रविवार को वहां निर्मित यज्ञशाला में यज्ञ का आयोजन भी किया जाता है। अपने नौ दिनों के आवास के समय में वहां के छात्रों के सन्ध्या और हवन मन्त्रों का अभ्यास कराया गया और प्रतिदिन प्रातः व सायं व्यायाम व खेल इत्यादि का भी प्रशिक्षण दिया गया। कुछ छात्रों को विशेष प्रशिक्षण देकर उन्हें अन्य विद्यार्थियों को प्रशिक्षण करने हेतु तैयार किया गया।

इस क्षेत्र के कुछ विद्यार्थियों व शिक्षकों/व्यवस्थापकों को पिछले वर्ष जुलाई में गुवाहटी आर्य समाज में शिविर लगाकर प्रशिक्षण भी दिया गया था। जिसके उत्साहवर्धक परिणाम देखने को मिले। गुवाहटी में आर्य समाज के शिविर को आयोजन करने का श्रेय वहां के डा० नारायणदास जी को पहुंचता है। डा० साहब एक कर्मठ व समर्पित कार्यकर्ता हैं और आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी हैं। आप तन, मन और धन सब प्रकार से सेवा में सदा तत्पर रहते हैं। यह संस्था आदरणीय डा० जी के प्रति आभार प्रकट करती है और उनके शतायु की कामना करती है। इसी शृंखला को जारी रखते हुए इस वर्ष भी जुलाई मास में शिविर लगाने का प्रयास किया जा रहा है। इसमें भी कुछ छात्रों व शिक्षकों को प्रशिक्षण देने का कार्यक्रम है।

बोकाजान आश्रम के अन्तर्गत झापराजान, व डीफू आश्रम भी उपरोक्त कार्यक्रम के अनुसार यथा संभव कार्य को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। एक छात्रावास (नागालैण्ड) दीमापुर में भी स्थापित है। वहां पर रहने वाले सभी छात्र ईसाई मत के अनुयायी हैं। श्री वेदव्रत महता जी ने मुझे बताया कि पिछली बार जब वे वहां गये थे तो रसोई से मांस की गन्ध आ रही थी और उन्होंने वहां रहने वाले छात्रों को मांस त्यागने के लिये प्रेरित किया। इस बार जब हम अचानक वहां पहुंचे तो यह देखकर प्रसन्नता हुई कि पाकशाला साफ सुथरी थी। पूछने पर पता चला कि वहां पर मांस आदि बनाना बन्द कर दिया गया है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का चित्र दिखाते हुए वहां के व्यवस्थापक ने बताया कि गुरु जी वहां पर हैं तो मांस नहीं बनेगा। इसी प्रकार एक छात्रावास लकजनार में भी पिछले दो वर्षों से चल रहा है। इसमें अभी थोड़े छात्र हैं। इसको बढ़ाने के लिए उचित ढंग से व्यवस्था करने के लिए वहां व्यवस्थापक श्री कमल जी वर्मा प्रयत्नशील हैं। इसी प्रकार दीमापुर, बोकाजान व लकजनार में दयानन्द विद्यानिकेतन के नाम से विद्यालय चल रहे हैं। जिनके माध्यम से हिन्दी पढ़ाने व नैतिक शिक्षा देने का प्रयास किया जा रहा है।

२२ अप्रैल ९४ को जब हम डीफू पहुंचे तो वहां के डी०ए०वी० स्कूल भी गये। वहां के प्रधानाचार्य ने हमारा स्वागत किया और एक संक्षिप्त समारोह का आयोजन कर हमें छात्रों को सम्बोधन करने का अवसर प्रदान किया। हम तीनों ने भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था रखते हुए व विदेशी कुचक्रों से सावधान रहकर देश की अखण्डता को बनाये रखने पर बल दिया। इस स्कूल में हायर सैकेण्डरी तक शिक्षा दी जाती है और लगभग १२०० छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यह विद्यालय पिछले २५ वर्षों से यहां की जनता की सेवा कर रहा है।

एक समाज सेवी सज्जन श्री चरणसिंह जी चौधरी के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति वार्धा (महाराष्ट्र) के तत्वावधान में इसी नाम से संचालित विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री एन० बी० तेमजन के निमंत्रण पर उपरोक्त विद्यालय में भी गये। इस विद्यालय में नागालैण्ड के कोने-कोने से आये ईसाई मतावलम्बी छात्र हिन्दी की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वहां पर भी हमारा स्वागत किया गया। यहां भी हम तीनों ने देश भक्ति व भारतीय संस्कृति की बात की। श्री तेमजन ने आर्य संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करने व प्रशिक्षण प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। जिसके लिए उनसे पत्रव्यवहार द्वारा कार्यक्रम निश्चित करके, उचित प्रबन्ध करने का प्रयास किया जा रहा है।

माननीय पाठकगण। यह संस्था पिछड़े व वनवासी क्षेत्रों में आर्य संस्कृति व भारतीयता व नैतिक शिक्षा के प्रसार में कार्यरत है। इसके आर्थिक साधन सीमित हैं। उपरोक्त आश्रमों (छात्रावासों) व मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा उड़ीसा में चल रहे छात्रावासों व विद्यालयों/बालवाड़ियों के भवनों के निर्माणार्थ, तथा बने हुए छात्रावासों में शौचालय, स्नानघर आदि व पीने के पानी की व्यवस्था हेतु धन की नितान्त आवश्यकता है। जो सज्जन सहयोग कर रहे हैं और जो सहयोग हेतु अपने योगदान की भावना रखते हैं, हम उन सबके आभारी हैं। कृपया अपना योगदान "अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ" के नाम चैक/ड्राफ्ट् व धनादेश द्वारा भेजकर अनुगृहीत करें। इसी संदर्भ में यह भी निवेदन है कि जब हम पूर्वोत्तर क्षेत्र से लौट रहे थे तो गाड़ी में लाजपत नगर (दिल्ली) निवासी श्री रमेश कुमार वर्मा से भेंट हुई। संस्था की गतिविधियों से प्रसन्न होकर उन्होंने संघ को प्रतिमास एक सौ रुपये देने का संकल्प किया है और उसी समय अप्रैल माह की राशि दे दी। संघ उनकी इस सेवा भावना के प्रति भी आभार व्यक्त करता है।

वेद रतन आर्य
अन्तरंग सदस्य
अ० भा० दयानन्द सेवाश्रम संघ, महर्षि दयानन्द
भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में ज्योतिष और ग्रह

(श्री पं. वेदप्रकाश शास्त्री, एम.ए., फाजिलका, पंजाब)

वेद की प्रवृत्ति यज्ञ के लिए है और यज्ञ का विधान विशिष्ट समयों की अपेक्षा रखता है। कुछ विधान ऐसे हैं, जिनका सम्बन्ध संवत्सर एवं ऋतु से है। अतः नक्षत्र, तिथि, पक्ष, मास, ऋतु तथा संवत्सर आदि का ज्ञान ज्योतिष से ही हो सकता है। अतः ज्योतिष वेदांगों में मूर्धस्थानीय है—

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदांग शास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम्॥

वेदांगज्योतिष-४

जिस प्रकार मयूर की शिखा उसके सिर पर रहती है, सर्पों का मणि उनके मस्तक पर रहता है उसी प्रकार षड्ङ्गों में ज्योतिष को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है।

ज्योतिष वेद-पुरुष का चक्षु है। जिस प्रकार चक्षुविहीन पुरुष अपने कार्य सम्पादन में असमर्थ रहता है उसी प्रकार ज्योतिष ज्ञान से रहित पुरुष वैदिक कार्यों में सर्वथा अन्धा होता है—

ज्योतिषामयनं चक्षुः॥

पाणिनीय शिक्षा

इसी बात को लक्ष्य में रखकर महर्षि ने ज्योतिष शास्त्र के पठन-पाठन को भी आवश्यक ठहराया है वह लिखते हैं—

ज्योतिः शास्त्र सूर्यसिद्धान्तादि, जिसमें बीजगणित, अंकगणित, भूगोल, खगोल और भूगर्भ-विद्या है, इसको यथावत् सीखें। परन्तु जितने ग्रह, नक्षत्र जन्मपत्र, राशि मुहूर्त आदि के फल के विधायक ग्रन्थ हैं उनको झूठ समझ के कभी न पढ़ें न पढ़ावें।

स प्र. तृ. समु.

ज्योतिष में शीघ्रबोध मुहूर्तचिन्तामणि आदि परित्याग योग्य ग्रन्थ हैं।

एक अन्य स्थान पर उनका कहना है—

एक वर्ष में सूर्यसिद्धान्तादि में से कोई एक सिद्धान्त से गणित विद्या जिस में बीज गणित, रेखा गणित और पाटीगणित जिसको अंकगणित भी कहते हैं, पढ़ें।

संस्कार विधि वेदारम्भ संस्कार महर्षि दयानन्द की दृष्टि में ज्योतिष शास्त्र का अर्थ अत्यन्त विस्तृत है। इसके अन्तर्गत अंक, बीज, रेखागणित, भूगोल, खगोल, भूगर्भविद्या आदि सभी का समावेश है। जब कि आजकल इनका अलग-२ विषयों के रूप से अध्ययन किया जाता है।

ज्योतिष का विभाजन दो रूपों में किया गया है-एक अंक ज्योतिष दूसरा-फलित ज्योतिष।

अंकगणित या ज्योतिष की गणना बिल्कुल सत्य होती है जैसे गणना द्वारा यह निश्चय करना कि अमुक ग्रह अमुक राशि में कब प्रवेश करेगा अथवा सूर्य चन्द्र ग्रहण कब लगेंगे? पूर्ण ग्रहण होगा या आंशिक। इस प्रकार की गणना करके की गई भविष्यवाणी सत्य होती है। परन्तु फलित ज्योतिष द्वारा की गई गणना अनुमान पर अधिक आधारित होती है। इसलिये भविष्य-वक्ता द्वारा की गई भविष्यवाणीयां कभी-कभी ही सत्य होती हैं और अधिकांश रूप में असत्य।

वास्तव में ग्रहों का फल वैसा नहीं होता जैसा ज्योतिषी जी कहते हैं क्योंकि ये सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुधादि ग्रह जड़ हैं फिर ये कैसे हानिकारक हो सकते हैं? इस विषय में महर्षि दयानन्द कहते हैं।

जैसी यह पृथिवी जड़ है वैसे ही सूर्यादि लोक हैं। वे ताप और प्रकाश से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते। क्या ये चेतन हैं जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होके सुख दे सकें।

प्रश्न—क्या जो यह संसार में राजा प्रजा सुखी दुःखी हो रहे हैं यह ग्रहों का फल नहीं है?

उत्तर—नहीं, ये सब पाप पुण्यों के फल हैं।

प्रश्न—तो क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है?

उत्तर—नहीं, जो उसमें अंक, बीज, रेखा गणित है वह सब सच्ची, जो फल की लीला है वह सब झूठी है।

प्रश्न—क्या जो यह जन्मपत्र है सो निष्फल है?

उत्तर—हां, यह जन्मपत्र नहीं किन्तु उसका नाम 'शोकपत्र' रखना चाहिए। क्योंकि जब सन्तान का जन्म होता है तब सबको आनन्द होता है परन्तु वह आनन्द तब तक होता है, कि जब तक जन्मपत्र बन के ग्रहों का फल न सुनें। जब पुरोहित जन्मपत्र बनाने को कहता है तब उसके माता पिता पुरोहित से कहते हैं 'महाराज! आप बहुत अच्छा जन्मपत्र बनाइए।' जो धनाढ्य हो तो बहुत सी लाल पीली रेखाओं से चित्र विचित्र और निर्धन हो तो साधारण रीति से जन्मपत्र बना के सुनाने को आता है। ज्योतिषी बोलता है 'यह ग्रह तो बहुत अच्छे हैं परन्तु ये ग्रह क्रूर हैं अर्थात फलाने-२ ग्रह के योग से इसका मृत्यु योग है।' इसको सुन के माता पितादि पुत्र के जन्म के आनन्द को छोड़ के शोक सागर में डूबकर ज्योतिषी जी से कहते हैं कि 'महाराज जी! अब हम क्या करें?' तब ज्योतिषी जी कहते हैं 'उपाय करो।' 'ऐसा-२ दान करो। ग्रह के मन्त्र का जाप कराओ और नित्य ब्राह्मणों को भोजन कराओगे तो अनुमान है कि नवग्रहों के विघ्न हट जाएं।' अनुमान शब्द इसलिए है कि जो मर जायेगा तो कहेंगे हम क्या करें? परमेश्वर के ऊपर कोई नहीं है हमने तो बहुत सा यत्न किया और तुमने कराया उसके कर्म ही ऐसे थे। जो बच जाय तो कहते हैं कि देखो, हमारे मन्त्र, देवता और ब्राह्मणों की कैसी शक्ति है? तुम्हारे लड़के को बचा दिया।

स प्र. द्वि. समु.

एक अन्य स्थान पर ऋषि लिखते हैं—

प्रश्न—ग्रहों का फल होता है वा नहीं?

उत्तर—जैसा पोपलीला का है वैसा नहीं। किन्तु जैसा सूर्य चन्द्रमा की किरणों द्वारा उष्णता शीतता अथवा ऋतुवत्कालचक्र के सम्बन्ध मात्र से अपनी प्रकृति के अनुकूल प्रतिकूल सुख दुःख के निमित्त होते हैं। परन्तु जो पोपलीला वाले कहते हैं "सुनो महाराज सेठ जी! यजमानो! तुम्हारे आज आठवां चन्द्र सूर्यादि क्रूर घर में आए हैं अढ़ाई वर्ष का शनैश्चर पग में आया है। तुमको बड़ा विघ्न होगा। घर द्वार छुड़ा कर परदेश में घुमावेगा। परन्तु जो तुम ग्रहों का दान, जप, पाठ, पूजा कराओगे तो दुःख से बचोगे।"

इनसे कहना चाहिए कि सुनो पोप जी! तुम्हारा और ग्रहों का क्या सम्बन्ध?

जब तुमको ग्रहदान न देवे, जिस पर ग्रह हैं वही दान को भोगे तो क्या मिलता है? जो तुम कहो कि नहीं, हम ही को देने से वे प्रसन्न होते हैं अन्य को देने से नहीं, तो क्या तुमने ग्रहों का ठेका लिया है? जो ठेका लिया हो तो सूर्यादि को अपने घर में बुला के जल मरो।

सच तो यह है कि सूर्यादि लोक जड़ हैं। वे न किसी को दुःख और न सुख देने की चेष्टा कर सकते हैं। किन्तु जितने तुम ग्रह उपजीवी हो सब तुम ग्रहों की मूर्तियां हो। क्योंकि ग्रह शब्द का अर्थ भी तुम में ही घटित होता है।

ये गृह्णन्ति ते ग्रहाः।

जो ग्रहण करते हैं उनका नाम ग्रह है। जब तक तुम्हारे चरण राजा, रईस, सेठ, साहूकार और दरिद्र के पास नहीं पहुंचते, तब तक किसी को नवग्रह का स्मरण भी नहीं होता। जब तुम साक्षात सूर्य शनैश्चरादि मूर्तिमान, क्रूर रूप ग्रह उन पर जा चढ़ते हो तब बिना ग्रहण किए उनको कभी नहीं छोड़ते और जो कोई तुम्हारे ग्रास में न आवे उसकी निन्दा नास्तिकादि शब्दों से करते फिरते हो।

पोप जी—देखो, ज्योतिष का प्रत्यक्ष फल। आकाश में रहने वाले सूर्य चन्द्र और राहू केतु का संयोग रूप ग्रहण को पहले ही कह देते हैं। जैसा प्रत्यक्ष होता है वैसा ग्रहों का भी फल प्रत्यक्ष हो जाता है। देखो धनाढ्य, दरिद्र, राजा, रंक, सुखी, दुःखी ग्रहों से ही होते हैं।

सत्यवादी-जो यह ग्रहणरूप प्रत्यक्ष फल है सो गणितविद्या का है, फलित का नहीं। जो गणितविद्या है वह सच्ची और फलितविद्या स्वाभाविक सम्बन्ध जन्य को छोड़ के झूठी है। जैसे अनुलोम, प्रतिलोम, घूमने वाले पृथ्वी और चन्द्र के गणित से स्पष्ट विदित होता है कि अमुक समय, अमुक देश, अमुक अवयव में सूर्य वा चन्द्र ग्रहण होगा। (शेष पृष्ठ १० पर)

संतति-निग्रह (२)

प्राकृतिक एवं कृत्रिम साधनों का तुलनात्मक अध्ययन

डा० एस. के. भटनागर

एम. टी. पी. गर्भपात भी खतरे से युक्त है। रक्त स्राव से कमजोरी, एनीमिया होता है। टुकड़ा रह जाने पर सेप्टिक की संभावना रहती है। इसके बाद एंटीबायोटिक्स का दुष्प्रभाव पड़ता है।

यदि हमने पृथ्वी को स्वर्ग बनाना है तो अपने पूर्वजों के दिखाये गये मार्ग पर चलना होगा। हमें प्राकृतिक साधनों का सहारा लेना पड़ेगा। महात्मा गांधी ने संतति निग्रह के सम्बन्ध में कहा था कि 'कृत्रिम उपायों के प्रचार से संयम व धर्म लोप हो जाने का भय पैदा होगा। इस रत्न को बेचकर चाहे जैसा तात्कालिक लाभ मिले तो यह सौदा करने योग्य नहीं है। कृत्रिम साधनों की सलाह देना मानों बुराई का हौसला बढ़ाना है। उससे पुरुष और उच्छृंखल बन जाते हैं। कृत्रिम साधनों का अवलम्बन कुफल, नपुंसकता एवं वीर्यक्षीणता होगा। यह दवा मर्ज से ज्यादा बदतर साबित हुए बिना न रहेगी"।

हमारे भूतपूर्व जनरल के. एम. करियप्पा का कथन भी इस सम्बन्ध में बड़ा सटीक है—"कृत्रिम उपाय बहुत प्रभावकारी हो सकते थे परन्तु क्या हमारे देश की करोड़ों अशिक्षित जनता उन्हें उपयोगी पायेगी? मेरा उत्तर है-नहीं। पति उन सभी चीजों के विरुद्ध है जिनसे पत्नी प्रजनन में अक्षम बन जाये। यदि औरत का भय जाता रहेगा तब वह व्याभिचार की शरण लेगी। निश्चय ही यह पति को अस्वीकार होगा"।

प्राकृतिक संतति निग्रह :

"अथर्ववेद में ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत"

ब्रह्मचर्य पालन द्वारा मृत्यु को जीतने की बात कही गयी है। जिनके साक्षात उदाहरण महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महावीर स्वामी, भीष्म, हनुमान इत्यादि हैं। आगे चलकर यही बात माल्थस एवं टालस्टाय ने कही है। उनके अनुसार भी संतति निग्रह का बहुत उम्र साधन पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन बताया गया है। इसका पालन कठिन अवश्य है। पर असंभव नहीं जीवन में सन्तुलन बनाने पर यह सम्भव है। ब्रह्मचर्य का धारण विवाह के बाद ही सम्भव है। केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए वीर्य का उपयोग कर, उसे यत्नपूर्वक क्षय से बचाना ही गृहस्थी का ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य धारण करके उत्पन्न की गयी सन्तान विद्वान, धीर, वीर, ओजस्वी, पराक्रमी शील, गुण-सम्पन्न होती है। शिव संहिता में 'मरणं बिन्दु पातेन जीवनं बिन्दु धारणात्" अर्थात वीर्य की एक बूंद भी नष्ट होना ही मृत्यु के समान कष्टकारी है। धातु के नाश से रक्त कमजोर हो जाता है। फिर अग्नि मन्द होकर भूख कम हो जाती है। तथा मनुष्य उदास रहने लगता है। वीर्य की एक-एक बून्द का धारण करना ही जीवन कहलाता है तभी तो कहा है—

"जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है।
मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं॥

स्त्रियों का मासिक धर्म हारमोन एव प्राकृतिक जीवन से नियन्त्रित होता है। साधारणत: २८ दिन के अन्तराल के बाद स्वस्थ स्त्रियो में मासिक स्राव होता है। अस्वस्थ स्त्रियों में यह समय निश्चित नहीं होता। अप्राकृतिक जीवन यापन से यह चक्र २०-२० दिन अथवा २-४ मास में बदल जाता है।

मासिक स्राव की व्यावहारिक जानकारी हेतु सतर्कता आवश्यक है। उसके लिए प्रत्येक मासिक स्राव को डायरी में लिखने पर ८-९ महीने बाद हमे ज्ञात हो जायेगा कि क्या यह चक्र निश्चित समय पर होता है अथवा उसमें कुछ अनियमितता है। इस जानकारी से हमें आगामी स्राव की तिथि का तथा मनचाहे समय में गर्भधारण करने की पूर्व तैयारी का अवसर भी मिलता है। ६ वर्ष तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हजारों स्त्रियों पर किये गये अन्वेषणों के आधार पर ज्ञात हुआ है कि आने वाले मासिक स्राव के १५ दिन पूर्व ही गर्भ कीटाणु आते हैं १६वें एवं १७वें दिन पुरुष के शुक्रकीट स्त्री की योनि में दो दिन तक जीवित रह सकते हैं। इन तीन दिनों में मैथुन करने पर १००%. इसके एक दिन पूर्व अथवा पश्चात ७५%. की आशा की जाती है। फिर एक दिन पूर्व या पश्चात ५०%. फिर एक दिन पूर्व या पश्चात से २५%. गर्भ की आशा रहती है। इसके आगे पीछे के ९ दिन गर्भधारण के नहीं होते। प्रकृति के नियमों की जानकारी एवं उसकी शक्तियों के प्रयोग का ढंग जानकर सुगमतापूर्वक संतति निग्रह किया जा सकता है।

स्कूलों में नैतिक शिक्षा तथा सैक्स एजुकेशन पर विशेष ध्यान दिया जाये तथा सभी के लिए समय-समय पर इस सम्बन्ध में गोष्ठियो का आयोजन किया जाए तथा सभी के लिए रिफ्रेशर कोर्स चलाए जाएं। सरकार सभी वर्गों के लिए समान कानून बनाकर कम सन्तानोत्पत्ति को प्रोत्साहन दें तथा अधिक सन्तानोत्पत्ति पर अधिभार लगाए।

आहार-विहार ठीक होने पर मस्तिष्क सन्तुलित रहता है। क्षणिक उत्तेजना न होने से संयमी जीवन में विघ्न नहीं आता। सादा जीवन उच्च विचार के साथ-साथ मूलाधार चक्र के जागृत होने पर सहवास की इच्छा में कमी लाई जा सकती है। यह जानकारी भी जनता को समय-समय पर दी जाए।

एक स्थूल अनुमान के आधार पर आज भी प्राकृतिक निग्रह को स्वीकार करने वाले ५०%. कृत्रिम निग्रह हेतु, अस्थायी साधन अपनाने वाले ४०%. तथा स्थायी साधन अपनाने वाले केवल १०%. व्यक्ति हैं।

प्राकृतिक संतति निग्रह से मानवजाति का सर्वांगीण विकास होगा किन्तु उसकी ओर न सरकार का और न ही जनमानस का ध्यान गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से हम प्राकृतिक संतति निग्रह को बढ़ावा मिले ऐसी शुभकामना करते हैं। यदि यह संभव हो सका तब वह दिन दूर नहीं जब हम इस धरती को स्वर्ग कह सकेंगे—

"अगर फिरदौस बर रुये जमी अस्त,
ई अस्त, ई अस्त ई अस्त।

मुख्य चिकित्सक हैल्थ होम
२, दयानन्द ब्लाक,
टेलीफोन नं० : २२४६५७८, २२२६९४४ शकरपुर, दिल्ली—९२

गढ़वा (बिहार) का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज गढ़वा नगर (बिहार) का साठवां वार्षिकोत्सव ७ अप्रैल से १६ अप्रैल ९४ तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया । प्रात काल प्रतिदिन योग प्रशिक्षण शिविर लगाया गया तथा यज्ञ (हवन) व्याख्यान व भजनोपदेश होते रहे ।

७ अप्रैल ९४ को नगर के मुख्य मार्गों से विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसका जगह जगह जनता द्वारा भव्य स्वागत किया गया ।

इस अवसर पर स्त्री शिक्षा, राष्ट्र रक्षा, दलितोद्धार, पाखण्ड खण्डन व वेद सम्मेलनो का आयोजन किया गया ।

इस उत्सव में स्वामी ओमानन्द सरस्वती, वैदिक आश्रम बैढ़वा (मप्र) श्री सुन्दरलाल शास्त्री चकोचढ, श्री सोहनलाल पथिक पलवल श्री नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक ग्राम बहीन (फरीदाबाद) श्रीमती विद्यावती आर्या भजनोपदेशिका ग्राम गोनपुरा (पटना) ने अपने व्याख्यानो व भजनो से श्रोताओं को लाभान्वित किया । कई विद्वानो के उपदेशो से प्रभावित होकर कई नवयुवको ने धूम्रपान व शराब छोड़ने तथा आर्य समाज को पूर्ण सहयोग देने की शपथ ली ।

जीवन चन्द आजाद
मन्त्री, आर्य समाज गढ़वा नगर (बिहार)

पुरस्कार वितरण समारोह

लैंसडौन । डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल कालागढ़ी का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह यहा पर भारी हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, समारोह में स्कूल के बालक-बालिकाए उनके अभिभाव तथा आर्य समाज लैंसडौन के पदाधिकारी एव प्रबन्ध कमेटी के सभी सदस्य मौजूद थे ।

सर्वप्रथम यज्ञ-हवन से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ वैदिक शिक्षा से ही नैतिक चरित्र का विकास सम्भव हैं तथा 'महर्षि दयानन्द सरस्वती की देन' विषय पर वक्ताओ ने अपने विचार प्रकट किए ।

श्रीमती पार्वती देवी आर्या के करकमलो द्वारा अपनी कक्षाओ मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले बच्चो तथा अन्य क्रीडा, सांस्कृतिक प्रतियोगिताओ में प्रथम आने वाले प्रतियोगियो को पुरस्कार वितरण हुआ ।

कुमारी भगवतीआर्या ने विद्यालय की वार्षिक प्रगति की रिपोर्ट प्रस्तुतकी तथा प्रबन्धक द्वारा आभार व्यक्त किया गया । शान्तिपाठ के पश्चात कार्यक्रम सम्पन्न हो गया ।

स्वामी दयानन्द सरस्वतीप्रतियोगिता

श्री शान्तिस्वरूप नन्दा द्वारा आयोजित स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रतियोगिता मे हिस्सा लेने के लिए सभी आमन्त्रित हैं । इस प्रतियोगिता के नियम इस प्रकार हैं —

—स्वामी जी के जीवन की दस' अविस्मरणीय घटनाओं का उल्लेख दो दो पंक्तियों मे किया जाए । कुल मिलाकर शब्द सामा एक पृष्ठ से अधिक न हो ।

२—एक प्रतियोगी एक ही प्रतियोगिता-पत्र भेज सकता है ।

३—प्रतियोगिता पत्र पहुचने को अन्तिम अतिम तिथि १५ जून १९९५ है ।

४—प्रथम तीन विजेताओं को निम्नलिखित राशि के पुरुस्कार दिये जायेंगे ।

(i) प्रथम पुरुस्कार ३५० रु०
(ii) द्वितीय पुरुस्कार २५० रु०
(iii) तृतीय पुरुस्कार १५० रु०

इनके अतिरिक्त,दस सात्वना पुरुस्कार भी हैं । पुरुस्कार विजेताओ को पत्र द्वारा सूचित किया जायेगा । अत अपना पता अवश्य लिखिए ।

भवदीय
श्री शान्तिस्वरूप नन्दा

पता
१०३, राजागार्डन
नई दिल्ली-११००१५
दूरभाष ५०२३८०,५४१०१७

ज्योतिष और ग्रह

(पृष्ठ ७ का शेष)
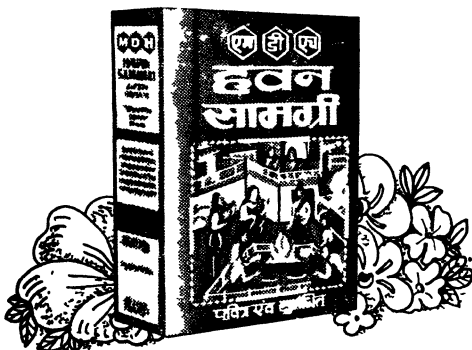
जब सूर्य भूमि के मध्य मे चन्द्रमा आता है तब सूर्य ग्रहण और जब सूर्य और चन्द्र के बीच मे भूमि आती है तब चन्द्र ग्रहण होता है अर्थात चन्द्रमा की छाया भूमि पर और भूमि की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है। सूर्य प्रकाश स्वरूप होने से उसके सम्मुख छाया किसी की नही पड़ती।

जो धनाढ्य प्रजा, राजा, रंक, दरिद्र होते हैं वे अपने कर्मों से होते हैं ग्रहो से नही। बहुत से ज्योतिषी लोग अपने लड़के लड़की का विवाह ग्रहों की गणित विद्या के अनुसार करते हैं पुन उनमे विरोध व विधवा अथवा मृतस्त्रीक पुरुष हो जाता है। जो फल सच्चा होता तो ऐसा क्यो होता? इसलिये कर्म की गति सच्ची और ग्रहो की गति सुख दुख भोग मे कारण नहीं। भला ग्रह आकाश मे और पृथ्वी भी आकाश मे बहुत दूरी पर है। इनका सम्बन्ध कर्ता और कार्यों के साथ साक्षात नही। कर्म और कर्म के फल कर्ता भोक्ता जीव और कर्मों के फल भोगाने हारा परमात्मा है। जो तुम ग्रहो का फल मानो तो इसका उत्तर देओ कि जिस क्षण मे एक मनुष्य का जन्म होता है। जिसको तुम ध्रुवान्तृटि मानकर जन्मपत्र बनाते हो उसी समय मे भूगोल पर दूसरे का जन्म होता है या नहीं? जो कहो नहीं तो झूठ और जो कहो होता है तो एक चक्रवर्ती के सदृश भूगोल मे दूसरा चक्रवर्ती राजा क्यो नहीं होता? हां, इतना तुम कह सकते हो कि यह लीला हमारे उदर भरने की है तो कोई मान भी लेवे।

स प्र सम् ॥

नवग्रह के सम्बन्ध मे महर्षि लिखते हैं—

अल्पबुद्धि मनुष्यो ने 'आकृष्णो रजसा' इत्यादि मन्त्रो का सूर्यादि ग्रह पीडा की शान्ति के लिए ग्रहण किया है सो उनको केवल भ्रममात्र हुआ है। मूल अर्थ से कुछ सम्बन्ध नही। क्योकि उन मन्त्रो में ग्रहपीडा निवारण करना यह अर्थ ही नही है।

ऋग्वेदादि भू भ प्रा　　(समाप्त)

आर्यसमाज मंगोलपुरी का छठवां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मंगोलपुरी का छठवा वार्षिकोत्सव दिनांक १० से १२ जून १९९४ को आयोजित किया जा रहा है जिसमें यज्ञ, भजनोपदेश, कथा कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। समारोह मे मुख्य उपदेशक, महाशय आचार्य तथा भजनोपदेशक चुन्नीलाल जी होंगे। आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

चमन लाल आर्य, मन्त्री

आत्मा और ईश्वर की सत्ता

(पृष्ठ ४ का शेष)

अध्ययन करेंगे? और क्या ससार के अन्य लोगो को भी वैदिक साहित्य का अध्ययन करने का परामर्श देंगे? ऐसा करने से मानवता का बहुत बड़ा हित होगा। आशा है, वैज्ञानिक लोग उक्त प्रश्नो पर गम्भीरता से विचार करेंगे। और जो अपने विचार हमे भेजना चाहें उनके विचार निम्नलिखित पते पर सादर आमन्त्रित हैं।

—दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन विकास क्षेत्र
रोजड सागपुर, जि साबरकाठा-गुजरात-३८३३०७

चुनाव आयोग राज्य का चौथा अंग

—क्रान्ति कुमार कोरटकर-प्रधान, आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा

हैदराबाद की एक सामाजिक सुधार तथा कानून अनुसंधान संस्थान द्वारा ३० अप्रैल ९४ को एक सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विद्वानों ने "भारतीय संविधान के अतर्गत चुनाव कानून" विषय पर अपने विचार रखे। इस सम्मेलन में आर्य समाज के वरिष्ठ अन्तर्राष्ट्रीय नेता तथा वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव को भी आमन्त्रित किया गया था।

श्री वन्देमातरम् जी ने भारतीय संविधान के अन्तर्गत चुनाव कानूनों की अवस्था तथा उसके औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत ने अपनी व्यवस्था चलाने के लिए लोकतन्त्र का सहारा लिया। भारतीय संविधान की उद्देशिका इस बात का स्पष्ट प्रमाण है। यह भारत के लोगों के उस संकल्प को बताता है जिसमें भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, निरपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने की बात कही गई है। लोकतंत्र में विधायिका ही सरकार का नियंत्रण करती है और सच्ची लोकतांत्रिक व्यवस्था मे ऐसा होना भी चाहिए। विधायको को ऐसा करने की ताकत लोगों द्वारा चुनी गई संसद से ही प्राप्त होती है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद ३२४ एक ऐसी व्यवस्था का प्रावधान है जिससे लोगो की इच्छानुसार सरकार का निर्माण संभव हो सके। लोकतांत्रिक व्यवस्था मे यही प्रावधान लोगों की मांगों के लिए तथा लोगों द्वारा चलाई गई सरकार का होना सुनिश्चित करता है। सच्ची लोकतांत्रिक व्यवस्था मे लोगों की इच्छा सर्वोपरि होती है। उक्त व्यवस्था को हमारा संविधान चुनाव आयोग के नाम से जानता है। चुनावों के निर्देशन, नियंत्रण और अधीक्षण का कार्य इसी व्यवस्था के अन्तर्गत रहता है।

निर्देशन से अभिप्राय चुनाव आयोग के समस्त कार्यों आदि का अधिकार पूर्वक संचालन करना है।

नियंत्रण से अभिप्राय इस आयोग के समस्त कार्यों के सुचारू संचालन के लिए उचित अंकुश आदि लगाना है।

अधीक्षण से अभिप्राय चुनाव प्रक्रिया की देखभाल तथा प्रबन्ध करना है।

चुनाव आयोग को उक्त अधिकार यह सुनिश्चित कराने के लिए दिये है कि चुनाव निष्पक्ष तथा बिना किसी अनुचित प्रभाव के सम्पन्न हों। यह एक भारी जिम्मेदारी है जिस पर ९० करोड़ भारतवासियों का भविष्य निर्भर करता है।

यदि चुनाव आयोग ईमानदारी तथा बिना किसी डर और पक्षपात के इन कर्तव्यों का पालन करता है, तभी यह आशा की जा सकती है कि जो सरकार बनेगी वह सच्चे अर्थों में लोगों का भला चाहने वाली होगी।

चूंकि लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोगों की इच्छा के निर्धारण के लिए चुनाव व्यवस्था अत्यावश्यक है इसलिए चुनाव आयोग नामक इस व्यवस्था तथा इसको चलाने वाले व्यक्तियों की तरफ विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

यदि ऐसा न हुआ तो लोकतन्त्र की मूल अवधारणा पर भारी आघात लगेगा। चुनाव आयोग को पवित्र तथा अभेद्य माना जाना चाहिए तथा जो लोग इसे चला रहे हों, उन्हें उसी प्रकार का सम्मान दिया जाना चाहिए।

न्याय पालिका, विधायिका तथा कार्यपालिका हमारी राज्य व्यवस्था के तीन प्रमुख अंग है। मेरे विचार में इस चुनाव तन्त्र को चौथा अंग माना जाना चाहिए।

हमारे संविधान के अनुसार मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति हमारे राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।

अनुच्छेद ३२४ में मुख्य चुनाव आयुक्त के अतिरिक्त अन्य निर्वाचन आयुक्तों यदि कोई हों, की नियुक्ति भी राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। हमारे विचार में भारतीय संविधान में इस आशय का एक परिवर्तन किया जाना चाहिए जिससे राष्ट्रपति अन्य चुनाव आयुक्तो की नियुक्ति मुख्य चुनाव आयुक्त की सलाह पर ही करें।

चुनावों में भ्रष्टाचार

लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम १९५१ का भाग ७ चुनावो मे उम्मीदवारों द्वारा भ्रष्टाचार से सम्बन्धित है, इस अधिनियम की धारा १२३ मुख्य प्रावधान है। चुनावों को निष्पक्ष तथा मुक्त रूप मे करवाने के लिए यह प्रावधान अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिसके तहत यदि चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार अथवा उसकी स्वीकृति से उसके किसी व्यक्ति द्वारा कोई भ्रष्टाचार साबित होवे पर उन्हें सजा भी दी जा सकती है। परन्तु इस प्रावधान में भी ऐसी परिस्थिति के लिए कोई व्यवस्था नहीं है जब किसी प्रतिष्ठित पदासीन व्यक्ति के उम्मीदवार होने पर उसे किसी लाभ की कामना से कोई व्यक्ति या व्यापारिक औद्योगिक संस्थान आदि चुनावें में उसकी मदद करते हों। उक्त कानून में इन परिस्थितियों को भी लिया जाना चाहिए तथा दोषी पाये जाने पर भारी जुर्माना या लाइसेंस आदि रद्द करने की सजा रखी जानी चाहिए। यदि कोई सरकारी नौकरी वाला व्यक्ति चुनाव में अपने पद आदि का इस्तेमाल करते हुए किसी उम्मीदवार की मदद करते पाया जाये तो उसे ६ माह तक की सजा का प्रावधान है, तो यही सजा उन औद्योगिक या व्यापारिक प्रतिष्ठानों के लिए क्यों न हो?

जीते हुए उम्मीदवार के चुनाव को अदालत में चुनाव याचिका के जरिये चुनौती देना एक अच्छा कदम है परन्तु अदालतो द्वारा आवश्यकता से अधिक समय लिया जाना अच्छा नहीं है। अतः हमारा सुझाव है कि अदालतों को भी चुनाव सम्बन्धी याचिकाओं पर पूर्ण निर्णय एक वर्ष भीतर दे देना चाहिए।

लाटरी का धन्धा फांसी का फन्दा

कौन है, जो रातों रात लखपती बनने का स्वप्न दिखाकर आपके कपड़े तक उतारता जा रहा है? दिन का चैन और रात की नींद उड़ा रहा है? घर की शान्ति छीन रहा है? मानसिक तनाव और कुंठाओं से ग्रस्त कर रहा है? पाप और अपराध की दुनियां में फंसा रहा है? अन्दर से तोड़कर आपको आत्म-हत्या तक के लिए विवश कर रहा है?

नहीं पहचाना?

भाइयों और बहनों! यही 'लाटरी' है। चारों ओर इसका शोर है। गली-गली में जोर है। सावधान! यह 'चोर' है। बहुत ही चालाक चोर।

सब कुछ लूटकर ले जाएगी आपका। कंगाल बनाकर छोड़ेगी। लखपति तो नहीं भिखारी अवश्य बना देगी। हाथ में कटोरा पकड़ा कर गली-गली घुमा देगी दर-दर की ठोकरें खिला देगी। आपका जीवन नरक बना देगी।

अतः सतर्क रहो। चोर को घर में मत घुसने दो।

लाटरी 'जुआ' है। वही जुआ जिसने पाण्डवों को राजमहल से निकाल कर बनवासी बना दिया था। राजा से भिखारी बना दिया था।

लाटरी से घर उजड़ रहे हैं। लोग उखड़ रहे हैं। एक जाल है—'लाटरी' जो आपको फांसने के लिए भ्रष्ट सरकारों और धूर्त व्यापारियों ने बुना है।

इस जाल में मत फंसो मेरे भाई। इसे काट कर फेंक दो। जाओ लाटरी का व्यापार बन्द कराने के लिए आर्य समाज एक प्रचण्ड जन आन्दोलन का शुभारम्भ कर रहा है। इसमें खुलकर भाग लो। पूरा सहयोग दो।

ध्यान रखो! लाटरी का धन्धा तुम्हारे लिए फांसी का फन्दा है।

आर्य समाज महानगर कार्यालय—आर्यसमाज,
बिहारीपुर, बरेली

पास्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एस० ११०४६/६४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२६-५-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९३
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 26-27-5-1994

महाराणा प्रताप जयन्ती १२ जून को आर्यसमाज देहरादून में

देहरादून, राष्ट्रकुल दिवाकर भारतीय संस्कृति के गौरव मेवाड़ सम्राट प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रताप की जयन्ती १२ जून १९९४ को आर्य समाज देहरादून मे समारोह से आयोजित की गई है।

समारोह के मुख्य अतिथि आर्य समाज के गौरव माननीय स्वामी आनन्द-बोध जी सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली), विशिष्ठ अतिथि माननीय विद्वान डा० सच्चिदानन्द शास्त्री जी एवं अध्यक्ष गढ़वाल के गौरव श्री होरा सिंह विष्ट (पूर्व विधायक) होंगे।

समारोह का आरम्भ प्रातः ९ बजे राष्ट्ररक्षा यज्ञ के शुभारम्भ से होगा। जयन्ती कार्यक्रम १० बजे आरम्भ होगा।

आनन्द सुमन सिंह
संयोजक
महाराणा प्रताप जयन्ती कार्यक्रम
आर्य समाज देहरादून

टेहरी में आर्य समाज मन्दिर शीघ्र बनेगा

गत १५ मई १९९४ को सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री टिहरी गढ़वाल के दौरे पर गए थे। वहां उन्होंने टिहरी के पुराने आर्य समाजी नेता श्री महावीर प्रसाद जी गैरोला, एडवोकेट से भेंट की और पुरानी टिहरी में स्थित आर्य समाज को नई टिहरी में स्थानान्तरित करने के विषय मे विचार विमर्श किया। ये दोनो महानुभाव टिहरी बांध निगम के प्रमुख अधिकारी श्री डी० के० गुप्ता से मिले। श्री गुप्ता जी उसी दिन डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री को अपने साथ पुरानी टिहरी आर्य समाज मे ले गए और वहां की जमीन की नाप और निर्माण का विवरण तैयार किया गया। श्री गुप्ता जी ने कहा यदि आर्य समाज का स्कूल भी होता तो नई टिहरी में उसके लिए भी जगह दे दी जाती। उन्होंने शास्त्री जी को आश्वासन दिया कि नई टिहरी में अच्छे स्थान पर आर्य समाज मन्दिर के लिए जगह दी जायेगी और शीघ्र उसका निर्माण भी करा दिया जाएगा।

प्रान्तीय आर्य वीर दल दिल्ली का ग्रीष्म कालीन प्रशिक्षण शिविर

स्थान—रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल कनाट प्लेस, नई दिल्ली-१
दिनाक २७-५-९४ से ५-६-९४ तक।
समापन समारोह—दिनाक ५-६-९४।
समय—प्रातः ९ बजे से १२ बजे तक।
ऋषिलंगर—५ ६-९४ को १२ बजे।
समापन समारोह की अध्यक्षता डा० धर्मपाल जी, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार।
मुख्य अतिथि—स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती।
श्री सूर्य देव।
अपील—दानी महानुभावो से निवेदन है कि शिविर को सफल बनाने के लिए सहयोग प्रदान करें।

—मन्त्री, आर्य वीर दल दिल्ली

अमृतसर में गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज नवाकोट, अमृतसर मे आर्य युवक सभा तथा आर्य स्त्री सभा नवां कोट के तत्वावधान मे गायत्री महायज्ञ का आयोजन २३ मई सोमवार से २९ मई रविवार तक किया जा रहा है। इसमें पूज्यपाद प० सत्यपाल जी पथिक, हवन, यज्ञ भजन व प्रवचन से लोगो को धर्म लाभ पहुचायेंगे। सभी आर्य भाई बहिन इस महायज्ञ में आमन्त्रित हैं। २९ मई रविवार को पूर्णाहुति होगी। तत्पश्चात बच्चों को ईनाम वितरण, कार्यक्रम आरम्भ हो जायेगा।

कार्यक्रम प्रतिदिन प्रातः ६-३० से आरम्भ होकर प्रातः ८ बजे तक चला करेगा। प्रतिदिन शाम को ४ बजे से ६ बजे तक पारिवारिक सत्संग हुआ करेंगे। अमृतसर वासियों के लिए सुनहरी मौका है कि इस गायत्री महायज्ञ में अपनी आहुति अवश्य डालें।

—पं० बनारसी लाल आर्य रत्न

मुस्लिम तुष्टिकरण को ... भाजपा भी अपना रही है

देहरादून, २० मई। सहकारिता मन्त्री मोहम्मद आजम खां ने कहा कि अब भाजपा भी मुस्लिम वोटों के लिये अब्दुल्ला बुखारी को रथपर बैठाकर चलेगी।

वह यहा पत्रकारों से अनौपचारिक वार्ता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा और अन्य राजनीतिक दल यह महसूस करने लगे हैं कि पिछड़ों, दलितो एव अल्पसंख्यको को साथ में लिए बगैर वह सरकार नहीं बना सकते इसलिये भाजपा भी अब मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति अपना रही है। सभी पार्टियां इस कोशिश मे हैं कि मुसलमानों का मन जीते बिना वह प्रदेश या केन्द्र मे सरकार नहीं बना सकते। उन्होने कहा कि भाजपा ने राष्ट्रपिता म० गांधी को राष्ट्रपिता मानने से मनाकर दिया था। अब गांधी जी की प्रतिमा को रथ मे घुमाने का कार्य करेगी। भाजपा के लोग दलितों व पिछड़ों का वोट लेने के लिये डा० भीमराव अम्बेडकर को भी मान देने लगे हैं। भाजपाई अब बुखारी को भी रथ मे बैठाकर घुमाएंगे ताकि मुसलमानों के वोट बटोर सकें। दिल्ली की सरकार भी बुखारी से आशीर्वाद ले रही है।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में उन्होने कहा कि बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी कानून के दायरे मे रहकर कार्य कर रही है। सहकारिता मन्त्री ने एक प्रश्न के जवाब में कहा कि सहकारी बैंक किसी भी बकायेदार को ऋण नहीं देगा। उन्होंने बताया कि बैंकों से फर्जी नाम से करोड़ो रु० के ऋण लिये गये हैं। इनकी जाच का कार्य पूर्ण होने के बाद ही वस्तुस्थिति सामने आएगी।

खां ने बताया कि फर्जी सोसायटियो की जाच के आदेश दे दिये गये हैं। विभाग ही इसकी जाच कर रहा है। गन्ना समितियों के चुनाव स्थगित किये जाने पर उन्होने कहा कि पूरे प्रदेश में सहकारी समितियो के चुनाव हो रहे हैं। संभवतया उस समय गन्ना समितियो के चुनाव नहीं करा पाएं। वास्तविक कारण के बारे मे पूछें जाने पर उन्होने कहा कि इससे वह अनभिज्ञ हैं।

उन्होंने बताया कि सहकारी समितियो के अन्तर्गत चिकन, जरदारी और हस्तशिल्पियो के कार्य करने वालो में भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इनके कारीगरों को ऋण देने की भी व्यवस्था की गई है। रजा टैक्सटाइल मिल के बन्द किये जाने के बारे में मोहम्मद खां ने कहा कि भाजपा की रजामंदी के कारण मालिक ने मिल बंद की, उनकी योजना उसे खोलने की है।

(अमर उजाला २१-५-९४)

कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर फिरोजपुर छावनी में दि० १८ से २४-४-९४ तक 'राम नवमी' का पवित्र त्योहार बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिनमें आचार्य प्रणव प्रकाश जी दिल्ली से पधारे तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी की विभिन्न मर्यादाओं पर प्रकाश डालते हुए सभी को अपने अपने जीवन को मर्यादा में चलने का आह्वान किया।

इसके साथ साथ आचार्य जी ने आर्य युवकों को प्रातः योगाभ्यास, प्राणायाम और ध्यान की विभिन्न प्रक्रियाएं समझाई। श्री विजय आनन्द के सुमधुर भजनों का सभी ने रसास्वादन किया।

मनोज आर्य, मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र　दूरभाष । ३२७४७७१　वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक १७]　दयानन्दाब्द १७०　सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५　ज्येष्ठ कृ० १२ सं० २०५१ ५ जून १९९४

राष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने बलगारिया में हिन्दी में भाषण देकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाया

भारत के राष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा ने बलगारिया, रोमानियां आदि देशों की राजकीय यात्रा में. बलगारिया में अपने सम्मान में आयोजित सभा में राष्ट्रभाषा हिन्दी में भाषण देकर बलगारिया निवासियों को अपनत्व की भावना में बांध दिया। बलगारिया के निवासियों ने उनके भाषण को प्रेम से सुनते हुए बहुत प्रशंसा की। वास्तव में डा० शर्मा भारत के पहले राष्ट्रपति हैं, जिन्होंने विदेशों में पहली बार हिन्दी में भाषण देकर राष्ट्र के गौरव और राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्मान को जीवंत आधार दिया है। राष्ट्रपति जी के इस प्रयास की पूरा भारत मुक्त कंठ से प्रशंसा करता है। राष्ट्रपति जी का भाषण निम्न प्रकार है:—

"महामहिम राष्ट्रपति जेलेव, मदाम जेलेवा महामहिमगण तथा विशिष्ट अतिथिगण आपके हार्दिक आतिथ्य सत्कार तथा मेरे देश के प्रति व्यक्त की गई आपकी भावनाओं से हम अभिभूत हैं। हम एशिया से आए हैं, जिसके बालकन क्षेत्र से दो हजार वर्ष पुराने सम्पर्कों की विरासत रही है। हमें इस बात का एहसास है कि हम ऐसी धरती पर पहुंचे है जहां स्लोवोमो सभ्यता जन्मी थी।"

उपरोक्त शब्द हैं भारत के राष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा के जो उन्होंने बलगारिया की राजधानी सोफियां में वहां के राष्ट्रपति जेलेव द्वारा दिए गए रात्रि भोज के अवसर पर व्यक्त किए। हिन्दी में दिए गए उनके भाषण का एक-एक शब्द कानों में अमृत बूंद के समान पड़ रहा था। बलगारिया में हर जगह हर अवसर पर वे अपनी ही भाषा का प्रयोग करते हैं। बलगारिया के राष्ट्रपति ने अपना भाषण अपनी भाषा में दिया। ऐसे परिवेश मे जब अपने महामहिम राष्ट्रपति ने बलगारिया के राष्ट्रपति के लिए 'महामहिम' शब्द से अपना भाषण शुरू किया तो उस परिवेश में अपनत्व और मधुरता घुली मिली लगी। प्रतिनिधिमण्डल के हर सदस्य को इस बात से सन्तोष हुआ कि अपनी राष्ट्रभाषा को उचित सम्मान देकर राष्ट्रपति ने राष्ट्र की गरिमा बढ़ा दी। वरन. अनेक देशों की यह धारणा रही है कि एक विदेशी भाषा (अंग्रेजी) के चंगुल से हम अपने को मुक्त नहीं कर सकते। हमारा मानना है कि राष्ट्रभाषा और भारतीय संस्कृति को आगे रखे बिना हम विदेशों मे अपना सिर ऊंचा नहीं रख सकते। राष्ट्रपति डा० शर्मा अपने पद के कारण ही नहीं, अपने व्यक्तित्व की शालीनता विद्वता और भारतीयता के कारण सदा याद किये जायेंगे।

२७मई १९९४ को बलगारिया की राष्ट्रीय असेम्बली को सम्बोधित करते हुए डा०शर्मा ने कहा लोकतंत्र के आवश्यक तत्व इसकी भावना, अवधारणाएं, प्रणाली, प्रथाएं एव परम्पराओं का प्राचीन काल से ही भारत में विकास किया गया है। दूसरों के विचारों और मान्यताओं के प्रति सम्मान तथा विभिन्न समुदायों के सह अस्तित्व के प्रति वचनवद्धता हमारी राष्ट्रीय विरासत के अंग हैं।

किसी जमाने में बलगारिया सोवियत संघ का प्रवेश द्वार था। आज भी वह प्रभाव परिलक्षितहै। वहां की भाषाको आज भी जानने-समझने वालों की कमी नहीं है। जिस 'वोयाना' में राष्ट्रपति जी को ठहराया गया वह कभी साम्यवादी देशों का केन्द्रीय विचारस्थल था। यहां पालिट ब्यूरो के सदस्यों के अलग-अलग सूट बने हुए थे तथा सोवियत संघ के नेताओं का आवगमन रहता था। यूरोप के अनेक देशोंमें साम्यवाद के विरुद्ध जनजागरण तथा सोवियतसंघ का विघटन कुछ ऐसी बातें रहीं,जिसने बलगारिया को भी झटका दिया तथा यहां भी बदलाव आया। मुद्रास्फीति की दर यहां ७००प्र०तक चली गयी। लोकतन्त्रीय प्रणाली मे आस्था का संचार हुआ। सरकारी खेती की असफलता के कारण भूमि सुधारों के लिए नए कानून बने। उदारीकरण और निजीकरण को यहां भी प्रोत्साहन मिला। भारत ने इस नब्ज को पकड़ा तथा इन देशों के साथ व्यापारिक तथा मैत्री के सूत्र और प्रगाढ़ करने की दिशा में पहल की।

सोफिया से डा० शंकरदयालसिंह जी लिखते हैं—

बात की शुरुआत हुई थी 'महामहिम' से और उसके मूल में हिन्दी की चर्चा हुई। मेरी बगल में बैठी बलगारिया की एक सांसद धीरे से टूटी-फूटी अंग्रेजी मे बुदबुदाती है—आपके महामहिम राष्ट्रपति ने हिन्दुस्तानी भाषा मे बोलकर बहुत अच्छा काम किया। हमारे लिए तो अंग्रेजी भी अपरिचित है। हम बलगारियन से समझेंगे।

मेरे कानो मे रह-रहकर राष्ट्रपति डा० शर्मा का एक-एक वाक्य मूर्तिमान हो रहा था—मैं यहां ऋग्वेद की संस्कृत में कुछ पंक्तियां उद्धृत करना चाहूंगा, जो मानव जाति का प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य है। ये पंक्तियां प्रतिनिधिक संस्थानों के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक हैं तथा हमारी साझी विरासत है। (शेष पृष्ठ १२ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्य समाज और राजनीति

—कान्ति कुमार कोरटकर

सत्यार्थ प्रकाश के छटे समुल्लास के अन्त मे महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि—

'परमात्मा हमे यह आशीर्वाद दे कि हम इस सृष्टि पर राज्य करने के योग्य बनें। परमात्मा हमारे मे यह ताकत दे कि हम ईश्वरीय कानूनो के अनुसार अपने पर राज्य कर सकें"

जब कोई जहाज डूबने लगता है तो उसमे बैठा प्रत्येक व्यक्ति सहायता के लिए चिल्लाता है और सहायता न मिलने पर वह स्वय ही उसे बचाने का प्रयत्न करता है।

हमारे भारत मे भी कुछ लोग पूर्ण निष्ठा और लगन से हमारी राज्य व्यवस्था के डूबते हुए जहाज को बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसके विपरीत कुछ ऐसे लोग भी हैं जो इस बढ़ते हुए खतरे से लाभान्वित होना चाहते हैं। राजनीतिक पार्टियो की सख्या कुकरमुत्ते की तरह बढ़ रही है। राजनीतिक दलो के गठन तथा उनके सचालन के लिए यह लोग कहा से इतना धन एकत्र कर पाते हैं यह एक न सुलझने वाली पहेली है। परन्तु उनके पास निरन्तर धन आता रहा है और उसके साथ ताकत भी। हमारे राष्ट्र के दुश्मनो को मदद करने के पूरे प्रयत्न किये जाते हैं, यह भी इन दलो द्वारा धनोपार्जन का एक तरीका है, इससे भी इकार नहीं किया जा सकता। आज यह एकत्रित खुला रहस्य है।

लोकतान्त्रिक व्यवस्था मे राजनीतिक दलो को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है। भारत के पास भी अपने राजनीतिक दल हैं। यह एक सामान्य ज्ञान की बात है कि आज समस्त राजनीतिक दल अपने कर्तव्य भावना को भूलकर चुनावो के माध्यम से सत्ता हथियाने की होड मे लगे हुए हैं।

सन् १९२० के लगभग माननीय श्री राजगोपालाचार्य जी ने चुनावो पर टिप्पणी करते हुए कहा कि 'चुनाव उनका भ्रष्टाचार, अन्याय तथा धन, बल की ताकत और उसका घिनोना खेल यह सब मिलकर जीवन को नर्क बना देंगे।'

यह सत्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था, ७० साल पूर्व राजा जी का वह विवेचन आज पूर्णत सत्य सिद्ध हो गया है।

चुनाव जीतने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि राजनीतिक दल और उनके उम्मीदवार येन केन-प्रकारेण धन एकत्र करें। इन लोगो को धन कहा से प्राप्त होता है, कोई भी राजनीतिक दल इस सत्य को उजागर करने के लिए तैयार नहीं होता क्योकि वे सब स्वय इसमे शामिल हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने लगभग १ वर्ष पूर्व अपने समाज सुधार के कार्यक्रमो के साथ लोगो को उचित जीवन पथ के मार्ग पर ले जाने के उद्देश्य से राजनीतिक गतिविधियो मे भाग लेने के लिए विचार किया था, परन्तु आर्य समाज की यह अन्तर्राष्ट्रीय सस्था जिसके पीछे लाखो, करोडो व्यक्तियो का नैतिक बल भी है चुनाव के लिए स्वय को तैयार न कर पाई, जिसका बड़ा सामान्य कारण था कि आर्य नेता धन बल के दुष्प्रभाव का सामना करने के लिए तैयार न थे जो कि अक्सर चुनावो मे देखने को मिलता था।

मैं अपने आर्य समाज के नेताओ और भाईयो से अनुरोध करता हूं कि वे इन तथ्यो को इनकी नग्नावस्था मे देखें। आर्य समाज को सत्यार्थ प्रकाश के छटे समुल्लास, जो कि राज्य व्यवस्था से सम्बन्धित है की टिप्पणियो पर भी विचार करना चाहिए जिसमे स्वामी जी ने लोगो के राज्य के विषय में कहा है—सच्ची लोकतान्त्रिक व्यवस्था ने इसे अपनाया भी है। परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती इससे भी आगे ईश्वरीय नियमो पर आधारित राज्य व्यवस्था की बात कहते हैं। आर्य समाज को राजनीति के दल दल मे खड़ा करने की कल्पना करने वाले कुछ अवसरवादी लोग उन ईश्वरीय नियमो की कल्पना भी नहीं कर सकते। इससे कुछ लोगो को व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति तो बेशक हो जाये, परन्तु स्वामी दयानन्द के इस पवित्र आन्दोलन को एक जबरदस्त आघात अवश्य लगेगा।

प्रधान, आन्ध्र प्रदेश आर्य प्र० सभा, हैदराबाद

आर्य समाज बैंकाक (थाईलैंड) के अग्रणीय नेता श्री प्रेमशरणसिंह—दिवंगत

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती एव आर्य समाज के प्रति असीम निष्ठावान श्री प्रेमशरण सिंह जी अपनी आयु के ७७वें वर्ष को पूर्ण कर इस नश्वर शरीर को छोड चले हैं।

५ मार्च १९१७ मे गोरखपुर जिलान्तर्गत ग्राम-डेरवा मे उनका जन्म हुआ था। भारत मे उच्च शिक्षा प्राप्त कर थाइलैण्ड मे भी स्नातक की शिक्षा प्राप्त किये वहा की भाषा (थाईभाषा) का भी ज्ञान सीखा था।

भारत मे दशको अध्यापन करने के पश्चात आप १९६० के दशक मे थाइलेंड आये और यहा पर अन्तर्राष्ट्रीय सवाददाता के रूप मे स्थानीय अंग्रेजी के समाचार पत्र बेंकाक पोस्ट, दि वाईस आफ द नेशन तथा मासिक पत्रिका थाइडिया एव हायकाम से प्रकाशित द इण्डियन के लिए कार्य करते रहे। भारत मे हिन्दी अर्धमासिक धर्मयुग, आज समाचार पत्र तथा अन्य अनेक समाचार पत्रो मे लेख तथा सवाद देते रहे।

व्यस्तताओ के बावजूद भी आप आर्य समाज के प्रति अपनी आस्था मे कमी नहीं आने देते। समयानुसार आर्य समाज के कार्यों मे अपना सहयोग देते रहे।

इधर दो-तीन वर्षों से आपका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा वर्ष १९९२ के अत में आप स्वदेश भारत लौटे और वहा अपने ग्राम-डरवा मे २८ मार्च १९९४ को इस नश्वर शरीर छोड दिये।

आपके निधन का समाचार आर्य समाज बेंकाक के सभासद अतिशोक के साथ सुने। समाज ने शोक सभा कर दिवगत आत्मा की शाति के लिए तथा अपने पीछे छोड गये पत्नी व परिजनो तथा मित्रो मे साहस के साथ इस वियोग को सहन करने की शक्ति के लिए ईश्वर से मौन प्रार्थना की।

रामपलट पाण्डेय प्रधान
आर्य समाज बेंकाक
जी० पी० ओ० बोक्स-७९९ बेंकाक थाइलैण्ड

सम्पादकीय

टिहरी-गढ़वाल में आर्य समाज

एक युग बीता, पर्वतीय अञ्चलों में भी आर्य समाज ने अपने कार्य का विस्तार किया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ से सम्बन्धित आर्य समाजें एक सौ से ऊपर अंकित हैं। आर्य समाज का व्यापक प्रभाव था अच्छे-अच्छे कार्यकर्ता समाज के उत्थान में लग गये। प्रचार का व्यापक प्रभाव पड़ा। महर्षि दयानन्द सरस्वती इस टिहरी नगर में अपनी यात्रा के दौरान ठहरे थे उनकी अन्य यात्राओं में टिहरी नगर भी स्मृति चिन्ह है।

नैनीताल के रामगढ़ क्षेत्र में म० नारायण स्वामी जी के प्रभाव से उस क्षेत्र में सुधार हुआ। दयानन्द भारती बलदेव सिंह आर्य बिहारीलाल-ब्र० बालकराम प्रज्ञाचक्षु पं० तोताराम कुलश्रेष्ठ जैसे अनेको कार्यकर्ता आर्यसमाज के कार्य में लग गये।

इसी प्रकार टिहरी क्षेत्र में स्व० पं० गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज जब टिहरी पहुंचे, तो टिहरी नगर में आर्य समाज की स्थापना की, भवन भी बनाया गया। राजनीति की हवा ने सबका ध्यान धर्म प्रचार से हटाकर मंत्री सत्ता के व्यामोह में फंसा दिया। जिसका दुष्प्रभाव पर्वतीय-अञ्चल पर भी पड़ा। आज आर्य समाज इस अञ्चल में मन्द गति से जीवन जी रहा है।

टिहरी-प्रदेश में आर्य समाज

बीते युग की बात छोड़कर आज के परिप्रेक्ष्य में टिहरी में भागीरथी स्थल पर जल विद्युत परियोजना हेतु कार्य हो रहा है उस स्थान से सभी जन-समुदाय को हटाकर नया टिहरी नगर बसाया जा रहा है। सभी नागरिकों को भवन निर्माणार्थ भूमि दी जा रही है धार्मिक मन्दिर विद्यालयों को भूमि व भवन सरकार बनाकर दे रही है।

आर्य समाज टिहरी के प्रबुद्ध आर्य श्री महावीर प्रसाद बैरोला एडवोकेट ने सार्वदेशिक सभा को पत्र से सूचना दी। कि आर्य समाज के भवन निर्माणार्थ सभा सरकार से बात करें। अतः सभा मन्त्री के रूप में मैं वहां चौ० लक्ष्मीचन्द्र जी के साथ गया साप्ताहिक सत्संग चल रहा था जो विद्वान् स्नातक श्री सुखदेवशास्त्री विद्या भास्कर एम० ए० पं० राधाराम जी विद्या-भास्कर श्री बैरोला जी के साथ यज्ञ कर रहे थे। १५ को दोपहर से १६ तक सरकारी अधिकारियों से बात करते रहे। अन्त में १६-५-९४ को श्री डी. के. गुप्त प्रबन्धक टिहरी नगर से साक्षात्कार उनके कार्यालय में हुआ। हमने अपनी आर्य समाज के भवन निर्माण की समस्या बतायी। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि आर्य समाज रह कैसे गया। हमारे पत्रक देखकर अपने कार्यालय के साथ आर्य समाज स्थल को देखने गये। उनकी तत्परता देखने योग्य थी। बोले, जो काम करना है तुरन्त करना है। भवन को देखकर नाप पैमाइश की। और आश्वासन दिया कि आर्य समाज का भवन अच्छी जगह पर निर्माण कराया जाएगा।

आर्य समाज के शिष्ट मण्डल ने विद्यालय चलाने हेतु भवन निर्माण की मांग भी रखी। उन्होंने कहा कि भूमि आप देख लें हम उसकी भी व्यवस्था करेंगे। अतः कार्य का प्रारूप बन चुका है। भवन भी बनेगा। हमारी यात्रा के दो दिन टिहरी परियोजना को देखने समझने में लगे। जनता में पक्ष विपक्ष के लोग हैं, देखो इस परियोजना का क्या बनेगा। बनने के बाद ५० मील लम्बी झील दर्शनीय होगी। रमणीक स्थल बन जायेगा। सरकार ने सभी मत पन्थों के धार्मिक जनों को स्थान भवन बनाकर दिये हैं मेरी यात्रा का मन्दिर-निर्माण मुख्य कार्यक्रम रहा।

पिछड़ा प्रदेश जिसमें ५० साल के बाद भी गरीबी-बेरोजगारी साधनहीन समाज आज भी देखने को मिलते हैं।

रूढ़िवादिता-अन्ध श्रद्धा पहले से अधिक है गरीबी चरम सीमा पर है वहां उद्योगों की स्थापना होनी चाहिए। पेट भरा हो तो भगवान भी याद आते हैं। यहां की स्थिति में आर्य समाज ने बड़ा काम किया जिसकी आज भी आवश्यकता है।

श्री महावीर प्रसाद बैरोला वृद्ध होने पर भी क्रियाशील हैं, जिनकी तत्परता प्रशंसनीय है—आर्य समाज का कार्य आगे बढ़े—यही कामना है।

धन्यवाद

है धन्यवाद वेअन्तसिंह जीवन बहुमूल्य तुम्हारा।
है हुआ आपके प्रबन्ध से आह्लादित हृदय हमारा॥
इसी भांति सर्वदा सत्य,
सब नेतागण अपनाते।
नहीं तुच्छ स्वार्थ के लिए कभी,
यदि जनता को बहकाते।
तो क्यों? भारत की जनता का जीवन दूभर होता सारा।
है धन्यवाद वेअन्तसिंह जीवन बहुमूल्य तुम्हारा॥१॥
एक सौ तेईस गुरुद्वारे,
एक सौ तीस में किए नष्ट।
किये अपने उग्रवादियों ने,
कश्मीरी सिख स्थान भ्रष्ट।
इसके विरुद्ध क्यों नहीं लगता सब अलगेवारों का नारा।
है धन्यवाद वेअन्तसिंह जीवन बहुमूल्य तुम्हारा॥२॥
सन् उन्नीस सौ सैंतालीस में,
जब हुआ देश का बंटवारा।
तब पाकिस्तानी गुण्डों ने,
क्या नहीं सिक्खों को था मारा।
फिर भी क्यों तुम्हें सुहाती है दुखप्रद पाकिस्तानी धारा।
है धन्यवाद वेअन्तसिंह जीवन बहुमूल्य तुम्हारा॥३॥
आपकी बात सर्वथा सत्य,
ये होते हैं उससे नियुक्त।
उसकी इच्छानुसार चलते,
उसके ही ये बन गये भक्त।
इसलिए उसी की भांति चाहते होमलैण्ड अपना न्यारा।
है धन्यवाद वेअन्तसिंह जीवन बहुमूल्य तुम्हारा॥४॥
हिन्दू के हित के लिए लड़े,
बच्चों का भी बलिदान किया।
श्री गोविन्द सिंह की आत्मा का,
इनने कितना सम्मान किया।
इनसे आपको बचाना है अपना पंजाब प्रान्त प्यारा।
है धन्यवाद वेअन्तसिंह जीवन बहुमूल्य तुम्हारा॥५॥

आचार्य रामकिशोर शर्मा
श्री राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय, खुरजा (उ. प्र.)

धर्म परिवर्तन का एक और षडयन्त्र असफल

१५ मई १९९४ को भोपाल मे शंकराचार्य जयन्ती के अवसर पर भारत की धर्म निरपेक्षता की आड़ में ठीक इसी दिन राष्ट्र विरोधी संगठनो ने ५० हजार दलित हिन्दुओं को बौद्ध धर्म में दीक्षित कराने की घोषणा की थी। इस समाचार पर आर्य समाज और अन्य राष्ट्रवादी हिन्दू संगठनों ने सक्रिय होकर इस षडयन्त्र को असफल करने के लिए व्यक्तिगत संपर्क करके धर्म परिवर्तन करने वाले लोगो को समझा बुझाकर इस समारोह में भाग न लेने की प्रेरणा की। आर्य समाज की संस्थाओं आर्य नेताओं और विभिन्न हिन्दू संगठनों के प्रयास का परिणाम यह रहा कि धर्म परिवर्तन का वृहद समारोह असफल रहा। धर्म परिवर्तन हेतु वहां कोई नहीं पहुंचा। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस षडयन्त्र को असफल करने में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का विशेष रूप से धन्यवाद प्रकट किया है।

जिसकी बहुसंख्या उसका देश फिर भी हिन्दू अपनी जनसंख्या घटा रहे हैं

लेखक -: पं० इन्द्रसेन शर्मा, शुद्धि रत्न, प्र०भा० हिन्दू महासभा

आत्मरक्षा सबसे बड़ा धर्म है और हम हिन्दुओं की रक्षा हिन्दू समाज की रक्षा में छुपी है। आज जनगणना भी एक विज्ञान है, इसके अनुसार जितना-जितना मनुष्यों का एक समूह पिछड़ा हुआ है और बुरी प्रथाओं से घिरा है, एवं वह समूह महिलाओं को पूरा सम्मान नहीं देता उतने-उतने उस समूह में बच्चे अधिक पैदा होते हैं। अर्थात् उसका वृद्धिदर अधिक होता है। इसके विपरीत जितना-जितना एक सामाजिक समूह अधिक उन्नत होता है और अधिक उच्च मानव मूल्यों पर आधारित होता है एवं वह समूह अपनी महिलाओं का अधिक सम्मान करता है उसमें सन्तानें कम जन्म लेती हैं। हिन्दुओं और मुसलमानों में १३७३ वर्ष हुये जब से इस्लाम का जन्म हुआ है और जब से इस्लाम हिन्दुस्तान में आया है यह भेद विद्यमान है। जनगणना के आंकड़ों से स्पष्ट है कि मुसलमानों का जन्मदर सदा सभ्य हिन्दुओं से अधिक रहा है। विदेशी अंग्रेज सरकार ने वर्ष १८८१ में हिन्दुस्तान की पहली जनगणना की और इसके लिए एक जनगणना आयोग स्थापित किया गया। पश्चात् प्रति १० वर्ष के अन्तर से जनगणना होती रही और इसके आंकड़े प्रकाशित होते रहे। वर्ष १८८१ की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार हिन्दुस्तान में हिन्दुओं की जनसंख्या ७५.०९ प्रतिशत थी और मुसलमान १९.९७ प्रतिशत थे। ६० वर्षों के पश्चात् १९४१ की जनगणना के अनुसार हिन्दू ५.६१ प्रतिशत घटकर ६९.४६ प्रतिशत हो गए और मुसलमान बढ़कर २४.२८ प्रतिशत हो गए। इस प्रकार मुस्लिम जनसंख्या हिन्दुओं के पीछे से ९.९४ प्रतिशत आगे बढ़ गई और हिन्दुस्तान के उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम के बहुत बड़े क्षेत्रों में मुसलमानों की बहुसंख्या हो गई। मुसलमानों ने मुस्लिम लीग के नेतृत्व में आन्दोलन आरम्भ कर दिया कि हम काफिर हिन्दुओं के साथ इकट्ठे नहीं रह सकते। हमें इस देश का विभाजन कर अलग देश दिया जाये, जिसका नाम उन्होंने पाकिस्तान रखा। दूसरे बड़े विश्व युद्ध के कारण अंग्रेज बहुत निर्बल हो गये थे और हिन्दुस्तान छोड़कर जाना चाहते थे। उन्होंने प्रयास किया कि इस देश की एकता बनी रहे किन्तु मुसलमानों ने इसे स्वीकार नहीं किया। अतः १४ अगस्त १९४७ को इस प्राचीन देश का हिन्दू और मुस्लिम बहुसंख्या क्षेत्रों के आधार पर दुखद विभाजन हुआ। देश के सबसे बड़े राजनैतिक दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने विभाजन को स्वीकार किया। विभाजन के कारण बहुत बड़े स्तर पर हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए। लाखों निरपराध हिन्दू और मुसलमान दोनों मारे गए। एक करोड़ मुसलमानों को भारत से पाकिस्तान जाना पड़ा और इस्लामी पाकिस्तान से लगभग सब हिन्दुओं को निकाल दिया गया। बचे हुए हिन्दुस्तान से भी यदि सारे मुसलमान पाकिस्तान भेज दिये जाते तो मुसलमान आपस में लड़-लड़कर मर जाते। कांग्रेसी नेताओं ने ऐसा नहीं होने दिया और लगभग ३ करोड़ मुसलमान पाकिस्तान नहीं जाने दिए गए। उन्होंने फिर ज्यादा बच्चे पैदा करो, बंगलादेश से लाखों निर्धन मुसलमानों को ले आओ और अरब देशों से आये हुए धन से निर्धन हिन्दुओं को मुसलमान बनाओ और हिन्दुओं में फूट डालो। इस नीति का प्रयोग कर अपनी जनसंख्या लगभग १२ करोड़ तक बढ़ा ली है। वर्ष १९८१ की जनगणना के आंकड़े प्रकाशित होने में अभी कुछ समय लगेगा। अभी तक इस खण्डित भारत में चार-चार जनगणना हो चुकी है। वर्ष १९५१ की जनगणना के अनुसार भारत में हिन्दू ८४.९८ प्रतिशत थे और मुसलमानों की जनसंख्या ९.९१ प्रतिशत थी। वर्ष १९८१ की जनगणना के अनुसार हिन्दू जनसंख्या ८२.६४ प्रतिशत हो गई और मुस्लिम जनसंख्या बढ़कर ११.३५ प्रतिशत हो गई। अर्थात् हिन्दू जनसंख्या २.३४ प्रतिशत घटी और मुस्लिम जनसंख्या १.४४ प्रतिशत बढ़ गई। अर्थात् हिन्दू जनसंख्या २.३४ प्रतिशत घटी और मुस्लिम जनसंख्या १.४४ प्रतिशत बढ़ गई। इस प्रकार १९५१ से १९८१ के ३० वर्षों में मुस्लिम जनसंख्या हिन्दुओं के पीछे से ३.७८ प्रतिशत बढ़ गई।

मुस्लिम जनसंख्या की अधिक वृद्धि के कारण ऊपर दिए हैं। साधारण-तथा राजकीय परिणामों के अनुसार मुसलमानों का परिवार नियोजन में भाग सदा सबसे न्यून रहा है। इस तथ्य को समझकर भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने वर्ष १९७६ में अपनी सरकार की जो जनगणना नीति घोषित की थी उसमें परिवार नियोजन भारत की सब सन्तान उत्पत्ति योग्य जनता पर किसी भेदभाव के बिना समान रूप से लागू करने की आवश्यकता को सिद्धांत रूप में स्वीकार किया था और ऐसी विधि महाराष्ट्र विधानसभा ने पारित की थी। किन्तु उस समय के राष्ट्राध्यक्ष श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने इस पर हस्ताक्षर नहीं किये थे। अतः यह आवश्यक है कि सब हिन्दू संस्थायें भारत सरकार से बलपूर्वक मांग करें कि समान नागरिक विधि और परिवार नियोजन सब पर समान रूप से लागू करने के लिए दो विधियां शीघ्र पारित की जावें।

हिन्दू चाहे वह किसी दल में हों और चाहे किसी पंथ से सम्बन्धित हों उन सबके हित समान हैं। अतः हमें विश्वास है कि सब हिन्दू संस्थायें हमारी मांग का बलपूर्वक समर्थन करेंगी। मैंने, इसी संबंध में, भारत के प्रधानमंत्री को पत्र लिखा है। मैंने उसमें स्पष्ट लिखा है कि जैसे-जैसे इस खंडित भारत में मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ेगी, इस देश की एकता, अखण्डता और शांति नष्ट हो जावेगी।

गोभक्त श्री कृष्ण और महर्षि दयानन्द की भूमि पर गोवंश की हत्या क्यों ?

(हरबंस लाल शर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब)

गोधन हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति है जिसकी सुरक्षा व संवर्धन इस राष्ट्र का परम कर्त्तव्य है। अति प्राचीन काल से गोवंश का हमारे धार्मिक-सामाजिक व आर्थिक जीवन मे विशेष महत्व रहा है। आज भी हमारे राष्ट्रीय जीवन में गोवंश की महत्ता यथावत बनी हुई है। भारत के लगभग ७० प्रतिशत किसान निर्धन है, जिनके पास २ हैक्टेयर से भी कम भूमि है। कृषि के यन्त्रीकरण का लाभ केवल धनी किसानों को ही पहुचा है जबकि इस देश के अधिकांश किसान आज भी अपनी कृषि सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिए गोवंश तथा अन्य पशुओ पर निर्भर हैं। आर्थिक दृष्टि से एक निर्धन किसान के लिए कृषि के यन्त्रीकरण की अपेक्षा पशुधन पर आधारित परम्परागत कृषि ही अधिक उपयुक्त हैं। अर्थात गोवंश आज भी हमारी अर्थ व्यवस्था का आधार है। गोवंश से जहा दूध घी, अनाज अन्य खाद्य सामग्रिया खाद, ईधन, सिचाई तथा यातायात के साधन प्राप्त होते है वही पर्यावरण की भी सुरक्षा होती है। गाय केवल हिन्दुओ की ही माता नही बल्कि पूरे मानव समाज के लिए माता तुल्य पूजनीय है। वैसे तो किसी भी निरपराध जीव की हत्या प्रत्येक दृष्टि से निंदनीय है लेकिन जो पशु अपना अमृत तुल्य दुग्ध प्रदान करके हमारा पालन पोषण करे उसकी हत्या तो पाप है। महर्षि दयानन्द जी ने अपने राष्ट्रीय पुनरुत्थान कार्यक्रम में गो रक्षा को विशेष महत्व दिया था। महर्षि के अनुसार एक गाय की हत्या करके एक समय में केवल २० व्यक्तियो को भोजन दिया जा सकता है जबकि वही गाय अपने पूरे जीवन काल मे कम से कम बीस हजार लोगो को अपना अमृत तुल्य दुग्ध प्रदान कर सकती है। गोहत्या घोर पाप ही नहीं कृतघ्नता है। मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने गो हत्या पर प्रतिबन्ध लगाकर गो हत्यारे के हाथ काट लेने की सजा निश्चित की थी। दुर्भाग्य से स्वतन्त्रता प्राप्ति के ४७ साल बाद भी अहिंसा के पुजारी इस देश में गो हत्या बन्द नहीं हुई। सरकार की गलत नीतियो व लापरवाहियो के चलते गोवंश के विनाश से इस राष्ट्र को जो हानि हो रही है उसे पूरा कर पाना असम्भव दिखाई देता है।

एक अनुमान के अनुसार सभी कायदे कानूनो को ताक पर रखकर प्रतिवर्ष लगभग दो करोड़ गाय, बैल, बछड़े बछिया इत्यादि देश के विभिन्न कत्लखानो म बड़ी निर्ममता के साथ मौत के घाट उतार दिये जाते हैं। इस समय देश में साढ़े तीन हजार से अधिक पशु कत्लखाने हैं जहा प्रतिदिन तीस हजार से अधिक पशु काटे जाते हैं। प्रत्येक मिनट मे लगभग बीस हत्याए होती हैं। वध करने से पहले इन निरपराध पशुओं पर अमानवीय अत्याचार किया जाता है। कुछ की टांगे तोड़ दी जाती हैं या आख फोड़ दी जाती है और कहीं कही काटने से पहले इनकी गरदन पर तेजाब डाला जाता है। मनुष्य अपनी मनुष्यता छोड कर ऐसी पाशविक क्रूरता भी कर सकता है यह सोचकर बड़ी शर्म और ग्लानि अनुभव होती है। मनुष्य की अन्धी स्वार्थपरता तथा भोग विलास की लालसा ने उसे एक अत्यन्त संवेदनहीन प्राणी बना दिया है। क्या इन बेजुबान निरपराध पशुओ को जीने का कोई हक नहीं ? क्या इनकी वहशियाना हत्या हत्या नहीं ? क्या इन पशुओं के अपने कोई अधिकार नही ? दिल्ली का ईदगाह मेडक आन्ध्र प्रदेश का अलकबीर, मुम्बई का देवनार तथा कलकत्ता का टेंगरा, पशु कत्लखाना पशुधन के विनाश के लिए कुख्यात हैं। पश्चिमी बगाल तथा केरल राज्यो में गोवंश की हत्या की खुली छूट है हमारी सरकार नये यान्त्रिक कत्लखानों के लिए करोड़ो रुपए अनुदान के रूप में खर्च करती है। गोवंश का ऐसा विध्वंस संविधान की धारा ४८ का खुला उल्लंघन है। हमारी अदूरदर्शिता से देश मे गोवंश की सख्या बड़ी तेजी से घटती जा रही है। १९५१ में जहां भारत में प्रति हजार व्यक्तियों के पीछे साढे चार सौ के करीब गाय बैल थे, १९८१ में उनकी सख्या घट कर मात्र लगभग अढ़ाई सौ रह गई। १९९४ में गोवंश की सख्या घटकर प्रति हजार व्यक्ति सौ सवा सौ रह जाने की आशंका है। अर्जेन्टीना में यह सख्या प्रति हजार व्यक्ति २०८९ कोलम्बिया ९११ तथा ब्राजील में ७२८ है। अब जबकि अमेरिका तथा अन्य पश्चिमी राष्ट्र गोधन के महत्व को स्वीकार करने लगे हैं हमारी अदूरदर्शी सरकार न जाने किस आत्मघाती नीति के तहत गोवंश का विध्वंस करवाकर इस राष्ट्र का विनाश करने पर तुली है। हमारी सरकार को गोमांस निर्यात करके विदेशी मुद्रा कमाने की चिन्ता है, लेकिन गोधन के विनाश के परिणाम स्वरूप इस राष्ट्र को हो रही गम्भीर हानि उसे दिखाई नहीं देती।

इस देश की प्राचीन परम्पराओ एव आदर्शों का अनुशीलन करते हुए तथा इसके व्यापक आर्थिक व सामाजिक हितो को ध्यान में रखते हुए गोवंश की हत्या पूरे देश मे पूरी तरह तुरन्त बन्द होनी चाहिए। गाय को रक्षणीय पशु घोषित करके इसकी सुरक्षा व संवर्धन की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। गाय की रक्षा के लिए संवैधानिक व्यवस्था होनी चाहिए। जब सन्त विनोबा भावे ने गोवध बन्दी के लिए अनशन रखा था तो सत्ताधारियों ने उन्हें देश में पूर्ण गो-वध बन्दी का आश्वासन दिया था। दुर्भाग्य से हमारे नैतिक बलहीन राजनीतिज्ञो ने इस संकल्प को पूरा करने में दृढ़ता नहीं दिखाई। लगता है कि अब इस देश की जनता को ही इस महान राष्ट्रीय महत्व के कार्य को पूरा करने के लिए सत्याग्रह करना पड़ेगा जनता को चाहिए कि वह विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से सरकार को पूर्ण गो-वध बन्दी लागू करने के लिए विवश करे। देश में चल रहे कत्लखानों को बन्द करवाने के लिए संघर्ष करे तथा नए कत्लखानो को स्थापित न होने दे। राष्ट्र हित के इस पावन कार्य मे प्रत्येक भारतवासी का सहयोग अपेक्षित है। गो वध के कलंक को इस देश से यथा शीघ्र मिटा दिया जाना चाहिए। इसी में इस राष्ट्र का हित है।

यज्ञ ही क्यों ? (२)

—श्रीमुनि वसिष्ठ आर्य

आज भी यह कार्य सम्पन्न कर भोपाल में विषैली वायु से बचने के लिए दि० ३ दिसम्बर १९८४ की रात्रि में दो परिवारों ने भागदौड़ कर अपने ही गृह में अग्निहोत्र प्रारम्भ कर अपने परिवार को बचाया है। श्री एल. एस. कुशवाह जो अध्यापक हैं, रात्रि १।। बजे उनकी पत्नी ३६ वर्षीय त्रिवेणी को उलटियां, कै होने लगी, उन्होंने बाहर देखा सब ओर दौड़ धूप मची है, कारण का पता लगा तो उन्होंने कमरा बन्द करके अग्निहोत्र प्रारम्भ किया। बीस मिनट में घर का सब वायु शुद्ध हुआ, सब बच गये। इस प्रकार रेलवे क्षेत्र में जहां सबसे अधिक मृत्यु पाये गये थे, श्री एम. एल. राठौड़ की पत्नी, मां, भाई और ४ बच्चे सचेत रहते थे, जो ५ वर्षों से अग्निहोत्र करते थे, उन्होंने तुरन्त अग्निहोत्र किया और उनका सब परिवार मृत्यु के कराल मुख में रहते हुए भी बच गया। युनियन कार्बाइड गैस रिसने से भोपाल में जहां ३-३।। हजार लोग कुछ मिनटों में मौत का ग्रास बने, वहां यह दो परिवार सुख रूप बच गये। यह है अग्निहोत्र और यज्ञ का प्रताप। मित्रो ! आपको और सचेत कर देता हूं कि अभी प्रक्षेपास्त्र, अणुअस्त्र, आदि का जमाना है, तो विपत्ति में अपने गृह को गाय के गोबर से लीप दिया करें, उन बमों से निकलने वाली किरणें आपके गृह पर गाय के गोबर के लिपापोती से शून्य हो जायेंगी तब अग्निहोत्र भी करे। बन्धुओ ! कितने वर्षों पहले ऋषि मुनियों ने इस यज्ञ विज्ञान को जाना, जो आज भी सौ प्रतिशत लाभकारी है, उपकारी है, पर हम जो ऐसे हैं उसे जानकर भी कर नहीं पा रहे हैं। अमरीका में अग्निहोत्र विश्वविद्यालय है वाशिंगटन, बाल्टीमोर, मेरीलैंड, वर्जीनिया के मेडीसन में इसका प्रयोग बराबर हो रहा है चिलीके ओडेंस पर्वत में एक अग्नि मन्दिर की स्थापना हुई है। पोलैंड में १७ स्थानों पर अग्निहोत्र हो रहा है जिसमें २०० वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं। पश्चिम जर्मनी में तो अग्निहोत्र अत्यन्त लोकप्रिय है, वहां अग्निहोत्र की राख से फसलों में वृद्धि का संशोधन हुआ है। अस्तु। मित्रो ! अपने पास सब कुछ है, पर दुख है कि हमने अपने पूर्वजों की संस्कृति से, वेद शिक्षा से किनारा किया है जिसका फल हम आज भोग रहे हैं। इस प्रकार यज्ञ अग्निहोत्र का प्रतिपादन तो हुआ किन्तु फिर भी कुछ शंकायें हैं उन पर अब विचार करें।

प्रश्न १—इतना मंहगा घी खाने के बजाय अग्नि में व्यर्थ ही स्वाहा करके नष्ट करें, यह कहां की बुद्धिमानी है ? उत्तर—इस विज्ञान युग में रहने वाले अभी समझे ही नहीं कि वस्तु पदार्थ जलने से उसका रूप अन्य विद्यमान होता है, घी जलने के बाद अत्यन्त सूक्ष्म रूप में रहता है जो आपके न जानते हुए भी बहुत प्राणीमात्र पर उपकार करता है। खाने में तो मात्र दो-चार का पेट भरेगा किन्तु यज्ञ द्वारा सैंकड़ों का लाभ करना उससे अधिक उपयुक्त है। प्रश्न २—जब सूर्य जलवायु की शुद्धि करता है तो हम यज्ञ-हवन क्यों करे ? उत्तर—निसर्ग ने खाने के लिये बहुत सी वस्तुएं, पदार्थ बनाये हैं, फिर भी मनुष्य खेती करता है, निसर्गत कुछ बिमारियां कासरा जैसी आती है तब जैसे औषधी करने की जरूरत पड़ती है, उसी प्रकार यज्ञ हवन की भी आवश्यकता है। प्रश्न ३—धूप भी जाने से पुष्ट होती है, इतर, तेल फुलेल से सुगन्ध होती है, तब आग में जलाने का क्या लाभ ? उत्तर—तेल, फुलेल गंध वायु को बाहर निकाल नहीं सकते और बाहर की वायु को शुद्ध नहीं कर सकते। अग्नि में उष्णता है, वायु को उड़ा देने की शक्ति है, इतर तेल फुलेल नहीं पहुंचता वहां यज्ञ हवन की वायु पहुंचती है।

प्रश्न ४—यज्ञ हवन बहुत खर्चीला काम है, सामान्य जन यह कर नहीं सकते ? उत्तर—क्या आप अपने दुर्व्यसनों पर ध्यान देंगे जिस पर आप इतना अधिक खर्च करते हो कि यज्ञ हवन का खर्चा उसके सामने कुछ भी नहीं। वहां याज्ञवल्क्य और जनक की कथा हम देते हैं। जनक ने पूछा यदि घी न रहे तो कैसा यज्ञ करें ? याज्ञवल्क्य—दूध से करें। जनक—दूध न हो तो ? याज्ञ—जौ और चावल से यज्ञ करें। जनक—यदि वह भी न हो तो ? याज्ञ—औषधी वनस्पतियों से यज्ञ करें। जनक—यदि वे भी न हों तो ? याज्ञ—जल से करें। जनक—यदि जल भी न हो तो ? याज्ञ—श्रद्धा की अग्नि से सत्य की आहुति देवें। अहाहा, क्या केवल सत्य से और श्रद्धाग्नि से भी यज्ञ हो सकता है ? हां, हो सकता है। तब विचार करियेगा।

प्रश्न ५—लकड़ी जलाने से कार्बनडाय आक्साइड निकलेगा, शुद्धि की बजाय अशुद्धि होगी ? उत्तर—लकड़ी जलाने से फार्मिक आल्डीहाइड गैस निकलती है जो रोग नाशक है बाजार में फार्मेलिन जो मिलता है वह इस वायु से तैयार होता है, पर ध्यान रहे वह बदबूदार है और हवन का वायु सुगन्धित और रोगनाशक भी। दूसरा ऐसा कि प्रज्वलित अग्नि पर ही सजीव समिधाओं की आहुति देने का विधान है ताकि अग्नि उसे एकदम जलाकर उड़ा दे, तीसरे इतने पर भी यदि थोड़ा दर्द वायु रहेगी तो यज्ञ के चारों तरफ जल सिंचन होता है, आम के पत्ते, कर्दली पत्ते आदि लगाते हैं वे उसे शोषण कर लेंगे, फिर भी कुछ बच ही गया तो आप जैसे सोडा लेमन में पीते हो, उतनी मात्रा हानिकारक नहीं।

प्रश्न ६—इन्जक्शन सीधा रक्त में पहुंचता है, तुरन्त लाभ मिलता है, तब हवन की क्या जरूरत ? उत्तर—दीर्घ रोगी का शरीर इन्जक्शन से छलनी बनता है, और यदि इन्जक्शन फेल हो जाये, तो लेने के देने पड़ जाते हैं। इससे तो शुद्ध वायु फेफड़ों में जाकर रक्त शुद्ध करती रहे तो लाभ अधिक आसान होगा, कष्ट न होगा और धोका भी न रहेगा।

प्रश्न ७—क्या यह श्रेष्ठ कार्य सभी कर सकते हैं ? उत्तर—यज्ञोपवीत धारण कर सभी स्त्री पुरुष इसे कर सकते हैं। वचन अनुसार जन्म से तो सभी शूद्र हैं, संस्कार से योग्यता प्राप्त होती है, मन आचरण शुद्ध पवित्र हैं तो कोई भी इस कार्य को कर सकता है। स्त्रियां भी इससे वंचित नहीं हैं, यह तो महान परोपकारी पुण्य कार्य है। अस्तु। यज्ञ में किसी भी प्रकार की हिंसा की अनुमति नहीं है, गोमेध से गोहत्या, अश्वमेध से घोड़े की हत्या, नरमेध से नरबलि यह तो एक काल था जब यज्ञ में बलिप्रथा वाममार्गियों ने प्रारम्भ की, निरपराध पशु, मनुष्यों का वध किया गया तब तो महात्मा गौतम बुद्ध ने कहा, यदि यही वेद वाणी है तो, मैं ऐसे वेद को नहीं मानता और यदि ईश्वर का यही आदेश है तो, मैं ऐसे ईश्वर को नहीं मानता। मित्रो ! बात ऐसी नहीं है, भारत के पतन का काल था। गोड को डोग GOD को DOG उल्टा समझा गया। इसी प्रकार यज्ञ के लिए भी हुआ था कारण यज्ञ में हिंसा करना एक भी वेद मन्त्र में लिखा नहीं है। वेद मन्त्र बोलकर आहुतियां देते हैं, वही यज्ञ है, ना गीता श्लोक से ना रामायण की चौपाइयों से यज्ञ होता है।

व्यवहार उधार से नगद करना अच्छा होता है, यदि धरती में बीज बोया तो ३-४ माह में फल, अन्न प्राप्त होगा, यदि जल में बीज बोये तो भी ३-४ मास में फल प्राप्ति होगी, परन्तु अग्नि ही ऐसी वस्तु है कि जिसमें अभी आहुति दो और अभी लौटती डाक से तुरन्त उसका फल प्राप्त करो, और अग्नि में यह गुण है कि वह डाली हुई वस्तु की शक्ति सहस्र गुना कर देती है। जरा एक मिर्च डालकर देख लीजिए। जो अभी दिया और अभी सहस्र गुना प्राप्त किया इतना उच्च कार्य अन्य कहीं नहीं मिलेगा, धन्य हो, ऐ ऋषियो ! आपने एक ही समय वायु शुद्धि का, जल शुद्धि का, अन्न शुद्धि का मन शुद्धि का और आत्मा के उन्नति का मार्ग इस यज्ञ द्वारा हमें बताया है, क्या इस मार्ग को अपनाना अपना कर्तव्य नहीं है ? मित्रो ! मनुष्य जीवन की आधारशिला तप और त्याग है। हमारे पूर्वजों ने ऐश, आराम, खाने पीने की मौज मनाने को जीवन की आधारशिला नहीं बनाया। यज्ञ ही तप और त्याग का प्रतीक है।

एक बार कहोड ऋषि जनक जी के राजमहल में गये। जनक जी ने उनसे तीन प्रश्न पूछे, यज्ञ का प्राण क्या है, यज्ञ की आत्मा क्या है और यज्ञ का सार क्या है ? कहोड ऋषि ने उत्तर में बताया कि यज्ञ का प्राण इद न मम है। यज्ञ की आत्मा स्वाहा है, और यज्ञ का सार सुगन्धि है। जीवन में ममत्व की, लोभ लालच को जो दुखों की जड़ है उसे त्यागो तब इद न मम बनेगा।

(शेष पृष्ठ १० पर)

भारतीय साहित्य व हिन्दू धर्म पर विश्वकोश

- गणेश कौशिक

भारतीय साहित्य और हिन्दू धर्म पर दो अलग-अलग विशालकाय विश्व कोश तैयार हो रहे हैं। 'भारतीय साहित्य का विश्वकोश' और 'हिन्दू जगत का विश्वकोश' नामक ये कोश क्रमशः सोलह और चालीस खंडों में पूरे होंगे। साहित्य पर विश्वकोश के आठ खंड और हिन्दू जगत पर विश्वकोश के तीन खंड प्रकाशित हो चुके हैं तथा कुछ खंड प्रकाशनाधीन हैं। इस सदी के अंत तक पूरे होने वाले कठिन परिश्रम साध्य इन विश्वकोशों की रचना के महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट को अंजाम दे रहे हैं। प्रख्यात विद्वान और साहित्य तथा हिन्दू धर्म एवं दर्शन के मर्मज्ञ डा० गंगाराम गर्ग। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के भूतपूर्व कुलपति श्री गर्ग आजकल हरिद्वार के ज्वालापुर स्थित वानप्रस्थ आश्रम में जीवन व्यतीत करने के साथ ही साहित्य साधना एवं उसके संवर्धन में अनवरत लगे हुए हैं। सत्तर वर्ष की आयु में भी साहित्य के प्रति उनका समर्पण भाव, लगन और स्फूर्ति अनोखी है।

साहित्य पर विश्वकोश के प्रकाशित पहले खंड में संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य का समावेश है, जबकि प्रकाशित अन्य सात खंड क्रमशः तमिल, असमी, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, उर्दू और सिंधी साहित्य पर हैं। इनमें इन भाषाओं के प्रमुख कवियों, नाटककारों, उपन्यासकारों, लेखकों, निबन्धकारों, आलोचकों और उनकी रचनाओं का समावेश किया गया है। इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है। कि इन साहित्यों के शुरुआत से लेकर अद्यतन साहित्य का इन खंडों में समावेश हो जाये। उर्दू साहित्य वाले खंड में पाकिस्तान के रचनाकारों को भी सम्मिलित किया गया है।

श्री गर्ग के अनुसार इन विश्वकोशों की रचना में विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं के विद्वानों से सहयोग एवं सुझाव लिये जा रहे हैं। ये विश्वकोश कालेजों, विश्वविद्यालयों अन्य शिक्षा संस्थानों, अकादमियों और शोधार्थियों के लिये उपयोगी होंगे। जहां ये भाषाएं पढ़ी और पढ़ायी जा रही हैं, वहां तो ये उपयोगी होंगे ही, वहां भी उपयोगी सिद्ध होंगे, जहां आधुनिक भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है।

हिन्दी साहित्य, भारतीय साहित्य और स्वामी दयानन्द सरस्वती पर अनेक ग्रन्थों के लेखक श्री गर्ग 'हिन्दू जगत का विश्वकोश' के सन्दर्भ में कहते हैं कि इस व्यापक प्रोजेक्ट पर काम करने का मुख्य उद्देश्य उस खाई को पूरा करना है, जो हिन्दू धर्म के बारे में अभी तक मौजूद है। दुनिया के लगभग सभी प्रमुख धर्मों का विश्वकोश है, लेकिन हिन्दू धर्म का ऐसा कोई कोश नहीं होने से ही इस दिशा में काम करने की प्रेरणा मिली। वैसे प्रकाशक गौरंग राय ने १९८२ में मेरे एक ग्रन्थ के विमोचन के अवसर पर यह सुझाव दिया था कि मैं 'हिन्दू विश्व कोश' तैयार करूं, लेकिन तब मैंने इसे गंभीरता से नहीं लिया। वर्ष १९८३ में स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण शताब्दी के अवसर पर स्वामीजी पर एक ग्रन्थ 'वर्ल्ड परस्पेक्टिव्ज आन स्वामी दयानन्द' तैयार करते समय स्वामी जी के उस कथन की ओर मेरा ध्यान गया कि 'वह नहीं चाहते कि वह भी 'ब्राह्म समाज' की तरह हिन्दू समाज से कट जायें, बल्कि समाज के अन्दर रहकर ही सुधार का कार्य करें। इसी कथन से स्फूर्त होकर मैंने हिन्दू धर्म पर लिखने का निर्णय लिया।

श्री गर्ग का यह भी कहना है कि डा० सर्वपल्ली राधा कृष्णन, सी. राजगोपालाचारी और महात्मा गांधी ने भी हिन्दू धर्म पर लिखा और उसे एक नया अर्थ और नई दृष्टि दी। हिन्दू जगत का विश्वकोश भी इस दिशा में एक प्रयास है।

विभिन्न धर्मों के विश्वकोशों का योगदान, धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन में होता है और यह अध्ययन धर्मों के बारे में व्यापक दृष्टिकोण के स्वस्थ विकास में सहायक होता है। यही विचार कर ही मैंने प्रकाशक को अपनी स्वीकृति दी कि मैं इस विश्वकोश पर काम करने और आगे बढ़ने के लिए तैयार हूं। इस प्रकार अपने आपको मानसिक तौर पर तैयार करने में मुझे तीन-चार साल लग गये।

इस विश्वकोश के नामकरण के सम्बन्ध में श्री गर्ग का कथन है कि यह भी एक समस्या थी। सुझाव था कि इसका नाम 'हिन्दू धर्म का विश्वकोश' रखा जाये। चूंकि विश्वकोश का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है और इस अकेले 'हिन्दू धर्म' नाम से इसका अर्थ पूरा नहीं होता, इस लिए इसका नाम 'हिन्दू जगत का विश्वकोश' रखा गया।

इसे किस प्रकार तैयार किया जाये, यह भी एक प्रश्न था। देश-विदेश के स्कालरों से विचार-विमर्श किया गया। कुछ का सुझाव था कि हर खंड कुछ सीमित विषयों को लेकर तैयार किया जाये, जो अपने आप में पूर्ण हो। लेकिन अन्ततः तय किया गया कि इसे अंग्रेजी वर्णमाला के क्रम से तैयार किया जाये। बड़े पैमाने पर तैयार होने वाला यह विश्वकोश अपने तरह का अकेला है। इसमें लगभग एक लाख प्रविष्टियां होंगी।

धर्म शिक्षक की आवश्यकता

दयानन्द बाल मन्दिर शाहगंज जौनपुर मे कक्षा १ से ८ तक धर्म शिक्षा पढ़ाने के लिये योग्य एवं अनुभवी अध्यापक की आवश्यकता है। जो आर्य समाज के सिद्धांतों में आस्था रखते हों। गुरुकुल के स्नातकों को वरीयता दी जायेगी।

पता—

प्रबन्धक दयानन्द बाल मन्दिर शाहगंज जौनपुर (उ. प्र.)

भक्ति में शक्ति

ले०—महात्मा प्रेम प्रकाश जी, वानप्रस्थ आर्य कुटिया, धूरी (पंजाब)

मानव जब कृत्रिमता, शृंगार, पाप असत्य, भय, चटक-मटक आदि संसारिक व्यवहारों से ऊब जाता है, तो प्रभु के आंचल की शरण चाहता है। क्योंकि उसकी शरण में आने से शरीर को 'सुख' मन को 'शांति' और आत्मा को 'आनन्द' की अनुभूति होती है, जैसे बहरा कान का, गूंगा वाणी का अंधा आंख का मूल्यांकन करता है तथा जीवन को श्रेष्ठतम और शांतिमय बनाने का सबसे सुन्दर और पवित्र उपाय 'प्रभु भक्ति' ही है।

२. भक्ति एक प्रकार का अध्यात्मिक विवाह है, जैसे विवाह का अधिकार ब्रह्मचारी को ही है, व्यभिचारी को नहीं, ठीक यही बात भक्त पर लागू होती है, क्योंकि प्रभो भक्ति ब्रह्मचारी ही कर सकता है। विवाह का हेतु सन्तान है, इसीलिए भक्त कहता है कि, 'सत्य मेरी माता', 'ज्ञान मेरा पिता', 'धर्म मेरा भाई' 'दया मेरा मित्र', 'शांति मेरी पत्नी', 'क्षमा मेरा पुत्र' और पितामह: ईश्वर है। यह सारा परिवार नहीं तो और क्या है? परन्तु अब उसका कर्तव्य परिवार पूजा नहीं, ईश्वर और उसके प्राणियों की पूजा (सेवा) है।

३. ईश्वर पूजा के स्थान पर मूर्ति पूजा भी बहुत लोग करते हैं, जैसे 'मूर्ति और पूजा' का कोई भी विरोधी नहीं, परन्तु जब मूर्ति और पूजा में से 'और' निकाल दिया जाए और दोनों को मिला दिया जाए तो सभी विरोधी हो जाते हैं। जैसे दूध और पानी अलग-अलग दोनों ठीक है, परन्तु यदि 'और' निकाल दिया जाये और इन दोनों को मिला दिया जाए तो विरोध होना स्वाभाविक है। इसका विरोध जगत गुरु शंकराचार्य, रहीम, कबीर, गुरु नानक देव जी और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किया, नहीं-नहीं? हम सभी करते हैं, कौन कहता है? कि मिलावट अच्छी है।

मूर्ति ही यदि ईश्वर होती तो हमारे ऋषि धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा प्रभो दर्शन का उपदेश न देते और न ही इतने संयमी बनने का कष्ट उठाते। यदि इन्द्रियां ही ईश्वर को जान सकती होती तो कभी के प्रभु दर्शन हो चुके होते। प्रभो दर्शन न होने का कारण हमारा मार्ग चयन गलत है। क्योंकि ईश्वर का विषय—अध्यात्मिक है, भौतिक नहीं और इन्द्रियों के विषय भौतिक है—अध्यात्मिक नहीं, अतः स्पष्ट हो गया कि ईश्वर इन्द्रियों से नहीं आत्मा से ही जाना जाता है।

५. भक्त का आदर्श भगवान् है, आदर्श का अर्थ है, उसके गुण, कर्म और स्वभाव को जानना और धारण करना। भगवान् दयालु, कृपालु, रक्षक, पालक, पोषक और प्रेरक हैं, अर्थात उसके गुण अनन्त हैं, उसकी शक्ति अनन्त है, उसका ज्ञान अनन्त है, उसका धन अनन्त है, उसका दान अनन्त है, उसके प्राणी अनन्त हैं, अर्थात् अनन्त का सब कुछ अनन्त है। अतः गुणी के गुणों को जीवन में उतारना ही भक्ति है। जो केवल भाण्ड के समान परमेश्वर का कीर्तन करता चला जाता है और अपने जीवन को नही सुधारता, उसकी भक्ति व्यर्थ चली जाती है।

६. भक्ति करने के लिए आहार, व्यवहार, विचार और आचार की शुद्धि रखनी परमावश्यक है। संयमी रहकर परिश्रम करना ही 'तप' कहा गया है, परन्तु कई पंच अग्नि तप भी करते हैं, वे चारों ओर उपलों की अग्नि जलाकर सूर्य की धूप मे बैठते है, वास्तव में वह तप नहीं है, अपितु पंच अग्नि तप का अभिप्राय काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी पांच अग्नियां सब मे जल रही हैं, जो इनमें रहता हुआ भी, नहीं जलता अर्थात् प्रभावित नहीं होता, वही सच्चा 'तपस्वी' है। केवल यही भाव है।

७. प्रायः लोग समझे बैठे हैं, कि भक्त की भक्ति से भगवान् प्रसन्न होते हैं, अर्थात् भगवान् खुशामदी हैं किन्तु उन्हें समझ लेना चाहिए कि ईश्वर ऐश्वर्यों का दाता व निर्माता है, यह ऐश्वर्य मनुष्य को शरीर के लिए 'सुख' मन के लिए 'शांति' और आत्मा के लिए 'आनन्द' के रूप में प्राप्त होते रहते हैं तथा भगवान् ज्योति स्वरूप है, इसीलिए भक्त कहता है, (तमसो मा ज्योतिर्गमय) अर्थात् मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। ध्यान देने योग्य बात यह है कि सूर्य कभी इच्छा नहीं करता कि आप उसके प्रकाश से अवश्य लाभ उठाएं। यदि आप द्वार बन्द करके बैठेंगे, तो सूर्य का कुछ नहीं बिगड़ेगा, क्योंकि लाभ पहुंचाना सूर्य की इच्छा नहीं, स्वभाव है। जल का स्वभाव जीवन देना है, न कि इच्छा करना, कि लोग मुझे पिएं। ऐसे ही भगवान् स्वभाव से ही अकारण कृपालु हैं। अतः भक्ति करेंगे तो 'भक्ति' का रस हमें प्राप्त होगा क्योंकि उसकी दया एवं प्रेरणा के भण्डारे चल रहे हैं।

८. भक्त अन्याय, अत्याचार, व्यभिचार अर्थात् अधर्म का विरोध करता है, क्योंकि प्रभो भक्ति ने बना दिया है, 'कुन्दन' उसको। अब उसके गुण, कर्म, स्वभाव भगवान् से प्रेरणा लिए हुए हैं। अतः वह अपने में पवित्र 'आत्म बल' को अनुभव करता है, क्योंकि 'भक्ति में शक्ति' होती है, बलवान ही पापियों और पाखण्डियों के विरुद्ध आवाज उठा सकता है, कमजोर तो बोल भी नहीं सकता, बोले तो सुनता है कौन? सचमुच 'ऋषि दयानन्द' की सच्ची और तीव्र पुकार ने संसार को हिला दिया था। कई समझते हैं भक्त को कर्म नहीं करने चाहिए परन्तु जब भक्त का जीवन आदर्श है, भगवान् स्वयं क्रियावान हैं, तो वह कैसे निकम्मे या आलसी बने रह सकते हैं? भक्त के कर्म और कर्तव्य इतने बढ़ जाते हैं कि उसे प्रभो का विशाल परिवार का निर्माण और सुधार करना होता है। भक्त का मार्ग दर्शन भगवान स्वयं करते हैं, क्योंकि भक्त का भगवान् ही 'सहारा' और किनारा होता है, अतः भक्त सत्य मार्ग पर चलता ही जाता है, जबकि सत्य मार्ग में महान विघ्न आते हैं, प्रभो प्रेरणा से वह कल्याण मार्ग का पथिक बन जाता है। भक्ति अर्थ केवल अपना कल्याण नहीं, अपितु प्रभु से शक्ति पाकर जनहित कार्य करना है। ईश्वर भक्ति में यदि समाज सेवा का भाव नहीं, तो वह साधना अधूरी है। इसका प्रमाण गुरु नानक देव जी, महर्षि दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी तथा आनन्द स्वामी जी आदि के रूप में हमारे सामने है। प्रभो से प्राप्त की हुई शक्ति को बांटों! बांटों!! बांटों!!! क्योंकि भगवान् के जल ने किसी को जीवन देने से इंकार नहीं किया, भगवान् की धरती ने किसी को अन्न देने से इंकार नहीं किया और भगवान् के सूर्य ने किसी को प्रकाश देने से इंकार नहीं किया।

९. भक्त की पहचान बड़ी सरल है, उसकी आकृति में आभा, प्रसन्न मुद्रा, तेजस्विता, करुणा, नम्रता की सी मूर्ति इत्यादि गुण उसमें अवश्य होवे, क्योंकि भगवान् के यह गुण हैं जो संगति के प्रभाव से आ जाते हैं। जब एक आस्तिक भक्त प्रेमियों को मस्त विभोर देखता है, तो उसे भी भक्ति की मस्ती चढ़ जाती है, प्रभु भक्ति का मस्ताना गा-गाकर सम्पूर्ण संसार संगीतमय बना देता है, वह सब कुछ भूल जाता है, 'आनन्द' भी इसी लिए आता है प्रभु भक्त! जहां तू सब कुछ भूला है, वहां अपने आपको भी भूल जा। भृकुटि में जहां तिलक या टीका लगाते हैं, वहां प्राणों को स्थापन करके 'ओ३म् की ध्वनि में ध्यान लगा, क्योंकि प्राणायाम से प्राण वश में हो जाने से मन वश में हो जाता है, ऐसा करते रहने से एक समय ऐसा आता है कि प्राण, मन और आत्मा एक पंक्ति मे आ जाते हैं तथा ध्यान स्वतः ही ब्रह्मरंध्र में चला जाता है जिसे समाधि कहते हैं, तब हृदय पटल पर 'ज्ञान' और 'आनन्द' की वृष्टि हुआ करती है।

१०. भक्ति में विचित्र शक्ति है। भक्त का मनोबल इतना बढ़ जाता है कि भक्त जलती हुई आग में कूद सकता है, समुद्र में छलांग मार सकता है। भक्त निर्भय होकर रावण राज्य को 'राम राज्य' बना सकता है, भारत को महाभारत बना सकता है, संसार को वेद मार्ग दिखाने के लिए स्वयं विष पीकर संसार को अमृत पिला सकता है! बन्धुओं! भक्त की शक्ति में बहुत कुछ छुपा है, पा जाओ तो बहुत अच्छा है।

आर्य समाज नोएडा के तत्वावधान में—

अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता एवं आर्ष गुरुकुल

आर्य समाज नोएडा के तत्वावधान में एक अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। आयु, लिंग, योग्यता, मजहब आदि का कोई बन्धन नहीं है, इच्छुक प्रतियोगी बी०-६ सैक्टर-१२, नोएडा स्थित आर्य समाज कार्यालय से मात्र दस रुपए मनीआर्डर द्वारा भेजकर प्रवेश पत्र एवं कहानियों की एक लघु पुस्तिका प्राप्त कर सकते हैं। प्रतियोगियों को लघु पुस्तिका में दी कहानियों दृष्टान्तों आदि का अच्छी तरह अध्ययन कर प्रत्येक द्वारा दी गई शिक्षाओं को अपने शब्दों मे लिखकर ३१ अगस्त तक कार्यालय में भेजना होगा। पुरस्कार इस प्रकार होंगे—प्रथम ११००/- रु० द्वितीय ५०१/- रु०, तृतीय २५१/- रु०।

आर्य गुरुकुल नोएडा

आर्य समाज नोएडा के ही तत्वावधान में एक आर्ष गुरुकुल प्रारम्भ करने की योजना है जिसमें प्राचीन अष्टाध्यायी पद्धति से कुछ बच्चो को विद्वान एव राष्ट्र समर्पित बनाने का विचार है। इस हेतु एक योग्य विरक्त आचार्य की तुरन्त आवश्यकता है। गुरुकुल में प्रवेश हेतु बच्चे अपने अभिभावकों सहित शीघ्र सम्पर्क करे—

डा० ए. बी. आर्य, प्रधान आर्य समाज नोएडा
बी०-६, सैक्टर-१२ नोएडा-२०१३०१,
दूरभाष : ८५५१४६७

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहको से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वत. ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

'नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा 'नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये बार एक १५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

आर्य समाजें भ्रमित न हों

सार्वदेशिक साप्ताहिक दिनांक ८५९४ मे श्री ध्रुवपाल सिंह (अटल) द्वारा अपने को मुख्य निरीक्षक आ प्र सभा (उ० प्र०) दिखाकर एव समाचार देकर आर्य समाजों को भ्रम में डालने का प्रयास किया है। यह आर्य नियमानुकूल नहीं है। श्री अटल सभा के वर्तमान मे कोई मुख्य निरीक्षक नहीं हैं उनको आर्य प्रति सभा एव मैनपुरी आर्य समाज ने समाज के संगठन से ६ वर्षों के लिए निकाल दिया है। अत उनको अपने को निरीक्षक दिखाना गलत है।

बृजभूषण सिंह
प्रधान

सवा लाख गायत्री मंत्र से यज्ञ

श्री शान्ति स्वरूप मल्हा जी ने अपने निवास स्थान १७३—राजा गार्डन नई दिल्ली-१५ मे सवा लाख गायत्री मन्त्र से विशाल यज्ञ का आयोजन किया है। २२ से २४ जून तक होने वाले इस यज्ञ में अनेकों विद्वान पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर इस यज्ञ को सफल बनावें।

यज्ञ ही क्यों ?

(पृष्ठ ६ का शेष)

वही श्रद्धा अन्त:करण से समर्पण करते हुए स्वाहा कहो, जो अपने पास है, उसे परोपकारार्थ देते रहो तब स्वाहा का सार्थक बनेगा, जब इस प्रकार जीवन बनाओगे तो आपके जीवन से यज्ञ सार सुगन्धि आवेगी सारे संसार में आपकी कीर्ति तो होगी ही पर आत्मिक उन्नति से आप स्वर्ग के भागी बनोगे। यज्ञ करने वाला स्वर्ग लाभ करता है—अग्निहोत्र जुहुयात स्वर्ग काम:।

अब गोपथ ब्राह्मण की एक आलंकारिक कहानी देता हूं। एक मनुष्य की मृत्यु हो गई परमात्मा के सामने उपस्थित हुआ। परमात्मा ने देखा बड़ा सुन्दर पुरुष है, धर्मात्मा भी है, अपने जीवन में बड़ा अच्छा दान पुण्य किया है। यह मनुष्य श्रेष्ठ आयु भोग योगी का अधिकारी है। अत: इसे सर्वोत्तम मनुष्य शरीर पुन. प्रदान किया जावे। इतने में एक देवता हाथ जोड़कर खड़े हुए। परमात्मा ने पूछा आप क्या चाहते हो ? उत्तर में कहा—मेरा नाम वायु है, यह मनुष्य बड़ा शौकीन था, इतर, पुष्प सुगन्ध से सुवासित करके मुझे काम में लाता था, परन्तु जब मुझे त्यागता था तो अत्यन्त दुर्गन्धित, बदबूदार, स्वयं भी नाक दबाता, पड़ोसी भी दुखी होते, अत. यह मेरा कर्जदार है। जितना गंदा मुझे किया है उतना स्वच्छ करा दीजिये। परमात्मा ने पूछा—क्या यह ठीक है ? मनुष्य-बिल्कुल ठीक है, कभी कभी वायु निकल जाती ही थी। परमात्मा--अच्छा तो आप जाइये, इस देवता का कर्ज चुकाइये। मनुष्य--कैसे चुकाऊं। परमात्मा -वायु शुद्ध करने वाले जानवर, बिच्छू, सांप, कनखोजर, कानखजाई आदि हैं, इनमें जन्म लो, जब वायु शुद्ध कर लो वापस लौटकर आओगे तो उच्च मनुष्य जन्म मिलेगा। मनुष्य कुछ समय के बाद लौटा, तो दूसरा देवता खड़ा हुआ। परमात्मा—आप क्या चाहते हो ? देवता—मेरा नाम जल देवता है, मुझे यह खूब सुगन्धित बनाकर पीता रहा, गुलाब, केवड़ा, बर्फ डालकर। परन्तु जब त्यागता तो बहुत दुर्गन्ध युक्त होता था, जिसका इसे स्वयं भी अनुभव है। मूत्र त्यागने से यह मेरा ऋणी है, इससे मेरा ऋण दिलवा दीजिये। परमात्मा—क्या यह सत्य है, मनुष्य—हां महाराज, बिल्कुल सत्य है। परमात्मा-.जाओ, इसका ऋण चुकाओ, जितना पानी तुमने गंदा किया, उतना मछली, कछुआ आदि जलजीव बनकर शुद्ध करो, तब पुन: मनुष्य शरीर मिलेगा। कुछ समय के उपरान्त जब वह लौटा तो तीसरा देवता खड़ा हुआ। परमात्मा—आप क्या चाहते हो ? देवता-मेरा नाम अन्न देवता है, मुझे यह मनुष्य नाना प्रकार से प्रयोग में लाता था, ५६ प्रकार के भोग लगाता था, परन्तु त्यागने के बाद इसने सफाई का प्रबन्ध नहीं किया, अत: यह मेरा कर्जदार है, इससे सफाई करा दीजिये। परमात्मा—क्या यह मंजूर है, मनुष्य—हां महाराज, ऐसा तो होता था, मुझे स्वीकार है, जैसी आज्ञा हो सफाई कर दूंगा। यह अलंकारिक कहानी है। यदि आप अग्नि में हव्य पदार्थ डालते तो वायु, जल, अन्न की शुद्धि हो जाती, आत्मा प्रसन्न होती और इन नीच योनियों से बच जाते, अत: कथित गोपथेन- यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म:। यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है, तब सभी मनुष्यों को इसे करना आवश्यक है।

यज्ञ ही से विश्व का कल्याण होता है, अत यज्ञ का प्रचार प्रसार करें और अखिल मानव मात्र को यज्ञशील बनने की प्रेरणा करें, कारण अयज्ञियो हतवर्चा भवति। यज्ञहीन व्यक्ति का तेज नष्ट हो जाता है। इतिशम्।

बसन्तवाड़ी, जामगांव, महाराष्ट्र-४४४३०२

विदेश समाचार

लास एंजलस में मातृ दिवस समारोह सम्पन्न

वैदिक [illegible] लास एंजलस में ८ मई रविवार को 'मदर डे' बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सभी माताओं देवियों, बहनों ने भारतीय वेशभूषा के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि समस्त कार्यक्रम माताओं द्वारा किया गया। यज्ञ ठीक प्रातः १०.३० पर आरम्भ हुआ। श्रीमती कमला शर्मा पंडिता जी ने ब्रह्मा का आसन ग्रहण किया तथा वेद मन्त्रो की मधुर ध्वनि से माताओं ने यज्ञ में आहुतियां दिलवाईं। उपस्थित जनता को पुष्प वर्षा करके आशीर्वाद दिया। उन्होंने अपने भजन तथा संक्षिप्त उपदेश के माध्यम से आजकल की नई पीढ़ी के बच्चो को माता के प्रति उनके कर्तव्य की याद दिलाई। भारतीय परिवारों के प्रति बीस वर्ष से भी अधिक सेवाओं की सराहना करते हुए लास एंजलस के पुरुष वर्ग की ओर से वैदिक धर्म समाज के पुरोहित मदन लाल गुप्ता ने तालियों की गड़गड़ाहट में स्वदेशी साड़ी उढ़ाकर, महर्षि दयानन्द चरित की एक प्रति पंडिता कमला शर्मा को भेंट करके सम्मानित किया। माताओं तथा छोटी-छोटी पुत्रियों ने सुरीले भजन गाकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। इस शुभावसर पर दस माताओं को एक एक साड़ी दे करके सम्मानित किया गया। माताओं ने आरती तथा शान्तिपाठ गान किया। महर्षि के जयकारे के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

मदन लाल गुप्ता — वैदिक धर्म समाज लासएंजलस

संस्था समाचार एवं चुनाव

आर्य समाज रेवड़ा जि० दरभंगा का चतुर्थ वार्षिकोत्सव १० से १२ मई तक धूम धाम से सम्पन्न हुआ। बंगाल और बिहार के प्रसिद्ध आर्य विद्वानों ने इसमे भाग लिया और नैपाल आर्य समाज के भी अनेक नेता और कार्यकर्ता यहा पधारे थे। इस समारोह से वहां को जनता और युवको पर अच्छा प्रभाव पड़ा। गुरुकुल आर्य समस्तीपुर के ब्रह्मचारियो के योगासन के कार्यक्रम को भी लोगो ने खूब सराहा।

आर्य समाज शिवगंज जि० सिरोही राज० का निर्वाचन २७-३-९४ को सम्पन्न हुआ—प्रधान : श्री मगनलाल आर्य, मन्त्री ओमप्रकाश शर्मा और कोषाध्यक्ष श्री दिनेश कुमार जी गांधी तथा अन्य उक्त पदाधिकारी व कार्यकारिणी सदस्य सर्वसम्मति से चुने गए। निर्वाचन श्री भीष्म देव आर्य (वानप्रस्थी) की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज मन्दिर (गुरुकुल विभाग) फिरोजपुर छावनी का निर्वाचन—प्रधान श्री द्वारका नाथ वर्मा, मन्त्री श्री मनोज आर्य और कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र गुप्त।

—सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर कानपुर मे श्री देवीदास आर्य के संरक्षण मे ५ से १२ जून १९९४ आर्य कन्या इन्टर कालेज गोविन्द नगर मे सम्पन्न होगा।

—आर्य समाज गंगा का वार्षिकोत्सव एव आर्य वीर दल शिविर का आयोजन १ जून १९९४ से ८ जून १९९४ तक सम्पन्न होगा।

—आर्य समाज रुड़की का वार्षिक निर्वाचन ७-५-९४ को सम्पन्न हुआ प्रधान श्री कृष्ण लाल मदान, मन्त्री श्री सत्यप्रकाश गुप्त और कोषाध्य श्री हरी नारायण महेरोत्रा, निर्वाचन सर्वसम्मति से हुआ।

—आर्य समाज दरियागंज दिल्ली मे २७ मई १९९४ को धर्म शान्ति पुस्तकालय की स्थापना की गई है। पुस्तकालय के लिये सम्पूर्ण राशि की व्यवस्था एंव मुनिपरिवार की ओर से की गई है।

प्रेरक प्रसंग—

महाराणा प्रताप से गोस्वामी तुलसीदास की ऐतिहासिक भेंट

एक बार गोस्वामी तुलसीदास अपने शिष्य वेणीमाधव के साथ वाराणसी के पावन गंगा तट स्थित अपने आश्रम मे टहल रहे थे। एकाएक उन्होंने अपने शिष्य से कहा—"आज देश की संस्कृति, धर्म और स्वाधीनता खतरे में है। इसलिये महाराणा प्रताप ही ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने राष्ट्रीयता की मशाल जला रखी है। मैं इस आजादी के समर में क्या योगदान दूं। यही विचार कर रहा हूं।" फिर उन्होंने दृढ़ संकल्प करके महाराणा प्रताप से मिलने की अपनी ऐतिहासिक यात्रा प्रारम्भ की। राजा टोडर मल के द्वारा दिया हुआ उनके पास एक अनमोल हीरा था। मार्ग की सारी बाधाओं को झेलते हुए गोस्वामी तुलसीदास अरावली की ओर चल पड़े। लगभग दो महीने के पश्चात वे उस स्थान पर पहुंच गये जहां महाराणा प्रताप अपने परिवार के साथ भीलों के पहरे में रहते थे। उन्होंने सैनिकों को अपने बारे में समझाया और तब एक सैनिक भीतर जाकर बोला—'महाराज एक व्यक्ति जो अपना नाम महाकवि तुलसी दास बताता है वह बाहर खड़ा है।" इतने में ही महाराणा प्रताप अपनी महारानी व अमरसिंह के साथ उस युग के महान कवि तुलसीदास के दर्शन करने को दौड़ गए और बाहर उनके चरणों में गिर गये। फिर गोस्वामी जी ने उन्हें अपनी छाती से लगाते हुए कहा, "आपके इस राष्ट्रीय महासमर में मेरा क्या योगदान हो सकता है!" महाराणा ने उन्हें प्रणाम करके आसन पर बैठाया और उनके चरण पखारे। महारानी वीरमदे ने उनका पूजन किया और उनके सुपुत्र अमरसिंह ने श्रद्धा से शीतल जल और फल अर्पित किया। तब गोस्वामी तुलसीदास ने छिपा हुआ वह हीरा निकालकर महाराणा को अर्पित करते हुए कहा—"महाराणा मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार करो। इसके बदले में कुछ हथियार तो आपको निश्चित ही मिल सकते हैं।" यह सुनना था कि सारी दिशाएं उल्लसित हो उठीं। महाराणा धन्य हो गये। फिर महारानी के निवेदन पर दूसरे दिन उन्होंने रामचरित मानस का पाठ सुनाया। राम भरत के मिलन की कथा भी उन्होंने बड़े प्रभावी ढंग से सुनाई। फिर उन्होंने विभीषण एवं सुग्रीव की वह बात बताई जब इस दृश्य को देखकर उनकी आंखों में आंसू बह रहे थे। लेकिन वे आंसू पश्चात्ताप के थे जो उन्होंने बन्धुद्रोह के कारण किया था। इस पर महाराणा ने गोस्वामी जी के चरण पकड़कर कहा—"महाराज आपने मेरी आंख खोल दी। अब मेरा यह भाला मानसिंह के विरुद्ध कभी नहीं उठेगा।' गोस्वामी जी भी यही चाहते थे। दसवें दिन महाराणा से विदा लेकर वे आगरा चले गये। वहां उन्होने रहीम जी के अनुरोध पर पुनः रामकथा कही। मानसिंह भी उस कथा मे आए और उन्होने भी यह प्रण किया कि अब उनकी तलवार किसी भी जाति बन्धु पर नहीं उठेगी। बस गोस्वामी तुलसीदास का यह लक्ष्य पूर्ण हो गया और राष्ट्रीयता के इतिहास में यह प्रसग स्वर्णिम अक्षरो मे जुड़ गया।

दरबारी लाल आर्य प्रादेशिक सभा के पुनःप्रधान बने

नई दिल्ली, २९ मई। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित साधारण सभा की बैठक मे राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिक्षाविद तथा डी.वी.ए. कालेज प्रबन्धकर्ता समिति, नई दिल्ली के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल पुनः अगले वर्ष के लिए सर्व सम्मति से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित किए गए। उनके नाम का प्रस्ताव डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्ती समिति के प्रधान श्री जी० पी० चोपड़ा ने किया-जिसे सब सम्मति से स्वीकृति प्रदान की गई।

अपने अध्यक्ष पद के निर्वाचित होने पर आभार प्रकट करते हुए श्री दरबारी लाल ने कहा, कि वे स्वामी दयानन्द के एक समर्पित सिपाही हैं तथा उनके आदर्शों, सिद्धांतों तथा विचारों को जन-जन तक पहुंचाना ही उनके जीवनका प्रमुख लक्ष्य रहा है। मन्त्री पद पर श्री रामनाथ सहगल भी पुनः निर्विरोध चुने गए।

इस साधारण अधिवेशन को सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, उप प्रधान श्री सत्यानन्द मुंजाल आदि अनेक महानुभावो ने भी संबोधित किया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४९/६४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (५-६-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C) ९३
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O on 2-3-6-1994

पुस्तक समीक्षा

वेदों में आयुर्वेद

लेखक--'पद्मश्री' डा० कपिलदेव द्विवेदी एवं डा० भारतेन्दु द्विवेदी

पृष्ठ संख्या—२६६+१६

मूल्य—१२०)०० (एक सौ बीस रुपये) पेपरबैक--६०) रु०

प्रकाशक—विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी) २२१३०४

वेद विश्व संस्कृति के आधार स्तम्भ है। आदिकाल से ही वेद मानव जगत के लिये प्रकाश स्तम्भ रहे हैं। वेदों में ज्ञान और विज्ञान का अनन्त भण्डार विद्यमान है। वेदों में आयुर्वेद के सम्बन्ध में विस्तृत सामग्री उपलब्ध होती है।

आयुर्वेद मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। इसका साक्षात सम्बन्ध मनुष्य के जीवन और मरण से है। आयुर्वेद को 'आयुषो वेद.' अर्थात मनुष्य की आयु से सम्बद्ध विषयों का वर्णन करने वाला वेद है। मनुष्य का सुख और दुःख उसकी आयु पर निर्भर है। जो मनुष्य जितना दीर्घायु होगा वह उतना ही जीवन को उपयोगी बना सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में दीर्घायु के साधनों का विस्तार से वर्णन है। इसमें शरीर को स्वस्थ और नीरोग रखने की विधि का वर्णन है।

प्रस्तुत ग्रन्थ डा० द्विवेदी के दीर्घकालीन वेदाभ्यास और उनकी अनुसंधान वृत्ति का परिचायक है। इस ग्रन्थ में चारों वेदों में उपलब्ध आयुर्वेद से सम्बद्ध समस्त सामग्री का संकलन किया गया है। साथ ही चरक, सुश्रुत और अष्टांग हृदय आदि आयुर्वेद के प्रामाणिक ग्रन्थों से बहुमूल्य सामग्री का भी संकलन है।

शल्य चिकित्सा अति प्राचीन समाज में प्रचलित कायाकल्प विधि, टूटे हुए अंगों का जोड़ना और मृतप्राय को जीवित करने की विधि का वर्णन है। ग्रन्थ के अन्त में चारों वेदों में प्राप्त २८६ औषधियों का विस्तृत वर्णन है। साथ ही शरीर के किन विभिन्न रोगों के लिये ये उपयोगी है इसका भी विस्तार से वर्णन किया गया है।

आयुर्वेद से सम्बद्ध विभिन्न पक्षों की जानकारी के लिये प्रस्तुत ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। इस पुस्तक की भाषा शैली अत्यन्त सरल और उपयोगी है। प्रत्येक विषय का अति सरल भाषा में सुरुचिपूर्ण वर्णन किया गया है, आयुर्वेद से सम्बद्ध सभी विषय एक स्थान पर संकलित करके महत्वपूर्ण कार्य किया है। यह ग्रन्थ जहां सामान्यजनों के लिए उपयोगी है वहीं चिकित्सकों वेदों में रुचि रखने वाले विशेषतः अनुसंधान कार्य में प्रवृत्त विद्वानों के लिए बहुत सहायक होगी।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

राष्ट्रपति का हिन्दी भाषण

(पृष्ठ १ का शेष)

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
समानो मन्त्र समितिः समानी समानं मनः सह चित्तम एषाम्।
समानं मन्त्रम् अभि मंत्रये वः, समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः समानम् अस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

(एक साथ बैठो एक साथ वार्ता करो, एक जैसा सोचो। तुम्हारे उद्देश्य समान हो, समिति समान हो, चिन्तन समान हो। मैं आपको शुभ कामनाएं देता हूं। इस सम्माननीय असेंबली को सम्बोधित करने का जो सम्मान आपने मुझे दिया, उसके लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं।)

भारतीयता से ओत प्रोत और हृदय से निकले हिन्दी तथा संस्कृत के इन शब्दों को यदि कोई अंग्रेजी में प्रकट करना चाहता तो क्या वह सम्भव था

बाबूराम शर्मा को भ्रातृ शोक

दिल्ली। सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दिल्ली के वरिष्ठ कर्मचारी श्री बाबूराम शर्मा के बड़े भाई श्री फूलचन्द शर्मा का ७७ वर्ष की आयु में अपने पैतृक गांव कबैसा फारुखाबाद में २४ मई १९९४ को स्वर्गवास हो गया। उनका दाह संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे तथा पारिवारिक जनों को इस महान दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

शोक एवं श्रद्धांजली सभा

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी के कमठ कार्यकर्ता, हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सेनानी एवं प्रतिष्ठित नागरिक श्री ईश्वरचन्द्र आर्य तथा वयोवृद्ध पत्रकार रामनारायण दादा पूर्व अध्यक्ष काशी पत्रकार संघ के दुःखद निधन पर एक शोक सभा का आयोजन १५-५-९४ को आर्यसमाज लल्लापुरा के सभाकक्ष में श्री मेवालाल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। शोक सभा में श्री बुद्धदेव आर्य, रामगोपाल आर्य, लक्ष्मी नारायण आर्य ज्वाला प्रसाद आर्य, श्री विजय कुमार आर्य, नन्दलाल आर्य, राजेन्द्र सिंह आर्य, सत्यप्रकाश आर्य एवं अनन्त लाल आर्य आदि आर्यजनों ने ईश्वर चन्द्र के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बतलाया कि महर्षि दयानन्द के सिद्धातों एवं मन्तव्यों में ईश्वर चन्द्र की पूर्ण निष्ठा थी, एक समर्पित कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने लगभग ५ पांच दशक तक आर्य समाज की जो सेवा की है उसे भुलाया नहीं जा सकता है।

शोक सभा में एक शोक प्रस्ताव पारित कर दो मिनट का मौन धारण किया गया तथा परम पिता परमेश्वर से दिवंगत आत्माओं को शांति तथा शोक पूरित सम्बन्धित परिवारों के सदस्यों को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गयी।

शांति पाठ के उपरान्त कार्यवाही समाप्त हुई।

रामगोपाल आर्य, मन्त्री

वेदज्ञान यज्ञ का समापन समारोह

आर्य समाज अचरवा में दिनांक ८-५-९४ इतवार को वेदज्ञान यज्ञ का समापन कार्यक्रम स्वामी शारदानन्द सरस्वती वेदकुल डाहपुरा जयपुर राजस्थान की अध्यक्षता में प० अमृतलाल जी आचार्य गुरुकुल होशंगाबाद के सानिध्य में चल रहे वेदज्ञान यज्ञ का समापन कार्यक्रम हुआ कार्यक्रम का संचालन मन्त्री लक्ष्मीनारायण भावन ने किया। आचार्य पंडित अमृतलाल जी ने सारगर्भित व्याख्यान में धर्म के दस लक्षणों पर योग के आठ अंगों के साथ उनका अनुशीलन करते हुए विशेष विवेचना की स्वामी शारदानन्द जी के ओजस्वी विचारों की काफी सराहना की गई। कार्यक्रम दिनांक १-५-९४ से आरम्भ हुआ था अचरवा नगर के सैकड़ों बन्धुओं ने लाभ लिया। आभार श्री कृष्णलाल आर्य प्रधान जी ने माना।

लक्ष्मीनारायण भावन
मन्त्री
आर्य समाज, अचरवा

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक २०] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ आषाढ कृ० १ स० २०५१ २६ जून १९९४
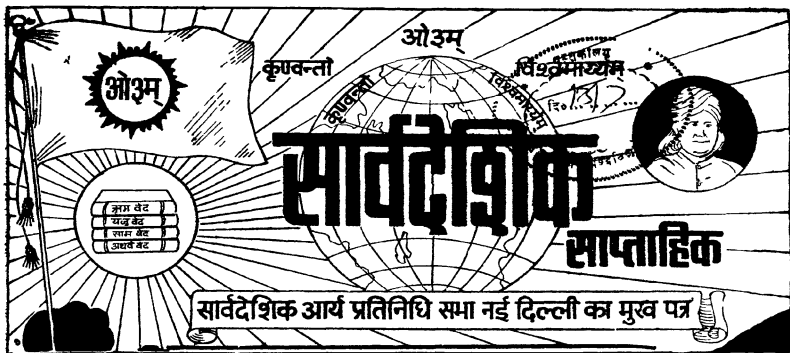
तसलीमा का साथ देने बुद्धिजीवी आगे आये

ढाका, १९ जून । बांग्लादेश की मुख्य विपक्षी पार्टी आवामी लीग, देश के प्रमुख बुद्धिजीवियों और जाने-माने पत्रकारों ने ३० जून को आहूत आम हड़ताल का विरोध किया है। यह हड़ताल विवादास्पद लेखिका तसलीमा नसरीन को गिरफ्तार कर सजा दिये जाने की मांग को लेकर कट्टरपन्थियों ने आयोजित की है। बुद्धिजीवियों और उदारवादी ताकतों ने इस प्रस्तावित हड़ताल के खिलाफ मोर्चाबन्दी का आह्वान किया है।

अवामी लीग के प्रमुख नेता आमिर हुसैन अमू ने ३० जून की हड़ताल के खिलाफ मोर्चा लेने वाली किसी भी पहल का समर्थन करते हुए कहा—हम इस हड़ताल की मुखालफत करने वाली ताकतों के साथ हैं। श्री हुसैन ने यह बात बांग्लादेश के अखबार मालिकों के सगठन 'सबवाद पत्र परिषद्' द्वारा आयोजित एक विचार गोष्ठी में की। उन्होंने कहा कि स्वातन्त्र्य विरोधी साम्प्रदायिकताकतो द्वारा छेड़ा गया 'जेहाद' न केवल महिला मुक्ति और प्रेस की आजादी के खिलाफ है, बल्कि यह देश की अखण्डता पर भी आघात है।

कट्टरपन्थियों की इस मुहिम का विरोध करने वाले बुद्धिजीवियों का कहना है कि ये लोग बांग्लादेश को एक और पाकिस्तान देना चाहते हैं। बांग्लादेश के समाचार पत्र मालिकों की सस्था 'बांग्लादेश सवाद पत्र परिषद' के एक धड़ द्वारा आयोजित एक विचार गोष्ठी में मशहूर कवि शमसुर रहमान ने इस बात के लिए सरकार की निन्दा की कि उसने तसलीमा को खत्म करने पर एक लाख के इनाम की घोषणा करने वाले व्यक्ति के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की है।

३० जून की हड़ताल का आह्वान देश की प्रमुख कट्टरपन्थी पार्टी जमायत-ए इस्लामी और नवगठित इस्लाम बचाओ मोर्चा ने किया है। श्री रहमान ने कहा—यदि तसलीमा ने कहीं कुछ गलत किया है या लिखा है तो इसका विरोध किया जाना चाहिए या लोगों को उनकी पुस्तक को नहीं पढ़ना चाहिए। लेकिन किसी व्यक्ति को उनके सिर पर इनाम घोषित करने का कोई हक नहीं है।

(नवभारत टाइम्स २० जून से)

पाक मे शिया-सुन्नी दंगा

कराची, १४ जून (एएफपी)। शिया और सुन्नी सम्प्रदाय के बीच आज यहां हुए सघर्ष में दो और व्यक्ति मारे गये। कराची में सेना के जवानों को गश्त पर लगा दिया गया है। दोनों सम्प्रदायों के बीच कराची के उत्तरी इलाके में गोलीबारी हुई जहां पिछले दो दिनों से सघर्ष में ६ व्यक्ति मारे जा चुके हैं। शहर के अनेक संवेदनशील क्षेत्रों को सेना के हवाले कर दिया गया है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा में ५ से १९ जून १९९४ तक किया गया जिसमें आर्य वीरदल के २०० आर्यवीरों को प्रशिक्षित किया गया। १९ जून को इस राष्ट्रीय शिविर के समापन समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।

स्वामी जी ने आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह कुरुक्षेत्र का वही पवित्र स्थान है जहां पर आज से ५ हजार वर्ष पूर्व भारत की किस्मत का फैसला महाभारत काल में हुआ था और इसी भूमि पर योगिराज श्रीकृष्ण ने पवित्र गीता का जो उपदेश अर्जुन को दिया था वह आज भी मानव मात्र को अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाने वाला है।

स्वामी जी ने कहा कि जिस प्रकार से साधारण अंकुर से वृक्ष बनता है और आगे चलकर फलता फूलता है। उसी प्रकार से इस प्रशिक्षण शिविर में जिन छोटे बड़े आर्य वीरों को प्रशिक्षित किया गया है, आगे चलकर यही आर्य समाज का भविष्य बनेंगे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को आर्यवीर दल के बिना आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है और हमें आशा है यह नव युवक आगे चलकर सच्चे मन से आर्य समाज की सेवा करेंगे। इस अवसर पर

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

२६ जून स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में विशेष—

स्व. श्री शांतिप्रकाश प्रेम की क्रांति

—विश्वबन्धु भास्कर

'आर्य समाज के माध्यम से गढ़वाल मे जो भी सामाजिक तथा धार्मिक कार्य हुए वे सामाजिक उत्पीडन से सतप्त जनता के उत्थान हेतु वरदान सिद्ध हुए। इन कार्यों को बन्द नहीं होना चाहिए। इन्हें हर हालात मे आगे चलते रहना चाहिए। इसके लिए युवकों को आगे आना चाहिए।'

जीवन और मृत्यु से जूझते हुए स्व० श्री शान्तिप्रकाश प्रेम ने २५ जून १९९२ को उक्त शब्द अपने सदेश मे अपनी प्रेम कुटिया मेकहे थे।

पचपुरी आर्य समाज गढ़वाल का मन्दिर उनके सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक कार्यों का केन्द्र रहा था। यहीं से उन्होने सामाजिक विषमता एव विदेशी शासन की क्रूरता के प्रति आवाज उठाकर सामाजिक कुरीतियों की दीवारो को आर्य समाज के माध्यम से भूचाल की तरह झनझना दिया था। पचपुरी एव स्यूसी मन्दिर के प्रत्येक पत्थर पर स्व० श्री शान्तिप्रकाश 'प्रेम' की कुर्बानी और देशभक्ति अ कित है। जो उनके सघर्षपूर्ण जीवन की कीर्ति गाथा को मुखरित कर रहा है। इन्हीं मन्दिरो से उन्होने गढवाल के गांधी एव दयानन्द, स्व० जयानन्द भारतीय की यश कीर्ति कौमन्दीनी एव तस्वीर जनता के हृदय पटल पर अ कित कर, श्री जयानन्द भारतीय कन्या पाठशाला पुस्तकालय, वाचनालय एव औषधालय की स्थापना की तथा स्व० श्री जयानन्द गौरवगान, वीर जयानन्द भारतीय जैसी सुन्दर रचनाओ का सृजन किया। पचपुरी भवन के सामने ही दयानन्द सेवा आश्रम सघ की भूमि को उन्होने समाज के लिए दान मे प्राप्त किया। जिसमे औषधालय एव उपदेशक विद्यालय के अनेक अरमान वे अपने मन मे सजोये हुए थे। रुग्णावस्था में जब वे दिल्ली आयुर्विज्ञान सस्थान आदि मे उपचार करा रहे थे तभी उनको आभास होने लगा था कि अब जीवन यात्रा का रथ मृत्यु के दरवाजे पर पहुचने वाला है। तब उन्होंने अपनी इच्छा प्रकट की थी "मेरी अन्तिम और हार्दिक इच्छा है कि स्यूसी पचपुरी आर्य समाज मन्दिरो एव दयानन्द सेवाश्रम की भूमि के दर्शन कर मेरे प्राणो का अन्त हो।' प्रभु कृपा से उनमे गढ़वाल आने का बल सचित हुआ। उनकी इच्छानुसार उनके प्रिय जन उनको उन तीर्थ स्थानो के दर्शन कराकर उनकी प्रेम कुटी गढवाल मे छोड़ आये थे। वे उन साथियो से भी मिले जिनके साथ वे वर्षों तक सामाजिक विषमता एव विदेशी शासन के प्रति ऊच-नीच, भेद भाव की दीवारो को तोडकर स्वस्थ समाज की रचना के लिये आर्य समाज के माध्यम से जद्दो जहृद किया करते थे। विकास क्षेत्र बीरोखाल ग्राम कुणजोली गढ़वाल के निवासी पिता बिरहीलाल और माता देवकी देवी को १२ दि० १९१४ को एक पुत्र की प्राप्ति हुई थी। इस शिशु का नाम शान्ति कालान्तर मे शान्तिप्रकाश प्रेम विख्यात हुआ। तीन भाई और तीन बहनो मे वे सबसे छोटे थे। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात गुरुकुल भटिण्डा पजाब में प्रविष्ट हुए। उन्होने गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त की तथा १९३५ ई० मे पजाब विश्वविद्यालय से सर्वोच्च परीक्षा हिन्दी प्रभाकर पास की। स्व० श्री प्रेम' जी ने चार वर्षों तक गुरुकुल में अध्यापन कार्य किया। उनका विवाह श्रीमती भीमादेवी से हुआ। १ फरवरी १९३८ में उनकी नियुक्ति उत्तर प्रदेश के ग्राम सुधार विभाग मे आरगेनाइजर के पद पर हुई थी। कांग्रेस के आदेश पर १९४० ई० मे उन्होने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया तथा देश के स्वतन्त्रता सग्राम मे कूद पड़े।

१० जून, १९४१ को स्यूसी नगर गढ़वाल से व्यक्तिगत सत्याग्रह में वे पकड़े गए और जेल भेज दिए गए। सन १९४२ के आन्दोलन मे उनको बरेली जेल मे नजर बन्द किया गया। एक साल की सख्त सजा उनको दी गई। १९४६ ई० में गढ़वाल में एक वृहद एव पहला आर्य महासम्मेलन हुआ था उसके स्वागत मन्त्री स्व० श्री शान्तिप्रकाश 'प्रेम' थे। सम्मेलन के बाद गढ़वाल आर्य इतिहास निर्माण समिति का निर्वाचन हुआ था उसके अध्यक्ष स्व प्रेम' जी एव सचिव स्व श्री बलदेवसिंह आर्य (भू पू. मन्त्री उ०प्र० सरकार) को चुना गया। स्व० श्री 'प्रेम' जन्मना जात पात के कट्टर विरोधी थे। वे सच्चे सिद्धातवादी व्यक्ति थे और बिना किसी भेदभाव से मानव मात्र से प्रेम करते थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने उन स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियो को सरकारी नौकरी पर फिर से लेने का आदेश दिया जिन्होने देश की आजादी के लिए सरकारी नौकरियो से त्याग पत्र दे दिया था किन्तु स्व० प्रेम' ने समाज सेवा मे सक्रिय रहकर इसके लिये इन्कार कर दिया था।

अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म, सेवा सघ ने स्व० ठक्कर बापा के सरक्षण मे स्व० प्रेम जी को कुमायू जौनसार भावर आदि स्थानो में वैदय वृत्ति एव सामाजिक जागृति के लिए १९४६-४७ एव १९५०-५१ मे नियुक्त किया। उन्होने महत्त्वपूर्ण सुधार एव जागृति इन लोगो मे कर समाज सेवा का कीर्तिमान उदाहरण प्रस्तुत किया।

गढ़वाल के शिवई बगारस्यू के पानी के बारे चमोली गुप्तकाशी विश्वनाथ मन्दिर प्रवेश डालोपालकी आन्दोलन, कुञ्ज बवेश्वर मन्दिर कुणजोली आदि स्थानो मे वहा के शिल्पकार आर्यों को उनके धार्मिक सामाजिक एव राजनैतिक अधिकारो को दिलाने निमित्त स्व० 'प्रेम' ने जान की बाजी लगाकर सफलपूर्ण विजय प्राप्त की।

उ० प्र० आर्य उपप्रतिनिधि सभा के स्व० प्रेम जी वर्षों तक अन्तरग सदस्य एव आर्य समाजो के निरीक्षक पर्वतीय प्रदेशो में रहे। आर्यप्रतिनिधि सभा बिजनौर के वे उपाध्यक्ष रहे तथा पर्वतीय प्रदेशों मे जागृति पैदा करते रहे। सतपुली एव पौडी आर्य समाजो की स्थापना तथा युवकों एव छात्रो के वे प्रेरणा के स्रोत रहे। आर्य महासम्मेलनो को पर्वतीय प्रदेशों मे कराकर तथा महान विभूतियो को इनमे आमन्त्रित कर स्व० 'प्रेम' ने कीर्तिमान उदाहरण पेश किया एव जन जन के प्रिय बन गये। सचमुच प्रात स्मरणीय स्व० जयानन्द भारतीय जी अपने पीछे स्व० श्री प्रेम जी को अमूल्य निधि छोड गये थे। सामाजिक धार्मिक नेताओ से उनके अच्छे सम्बन्ध थे।

यह अवश्य सत्य है कि स्व० प्रेम का गृहस्थ जीवन सुखी नहीं रहा तीन पुत्रियां एव १ पुत्र उनके हुए किन्तु वे बाल्यावस्था मे ही प्रभु को प्यारे हो गये थे। वे अटल ईश्वर विश्वासी थे। राष्ट्र ने उनको ताम्र पत्र एव स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी पेंशन देकर सम्मानित किया।

२६ जून, १९९२ को वे चिरनिद्रा में सो गये।

स्व० विभूति कट्टर ईश्वर विश्वासी थे वे जो कुछ करते रहे, मानव सेवा के लिए करते थे। उनकी भावना उनकी कविता की लाइनो से लक्षित होती है

> यही है 'प्रेम' की इच्छा सदा फूलों फलो जग में,
> वह कटक फूल बन जावे बिछ जो आपके पग मे।

हर वर्ष १२ दिसम्बर को उनका जन्म दिन मनाया जाता है। अब उनकी स्मृति शेष रह गई है। उनके अधूरे कार्य, उनके द्वारा लिखी पुस्तकें जन-जन तक पहुचानी, एव उनके अप्रकाशित लेख, कविताओ का सग्रह तथा उनकी विस्तृत, जीवनी को प्रकाशित कराना शेष रह गया है। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

सम्पादकीय

आर्य समाज का तीसरा नियम

आर्यो, आर्य समाज के नियम व उद्देश्य भी हैं क्या ?

महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट मत व्यक्त किया है कि वैदिक वाङ्मय के दो रूप हैं अपौरुषेय और पौरुषेय। फिर पौरुषेय के भी दो रूप हैं। आर्ष और अनार्ष। आर्ष वाङ्मय ब्रह्मा से लेकर जैमिनि ऋषि पर्यन्त और उसके उपरान्त का सम्पूर्ण वाङ्मय आचार्य साहित्य अनार्ष वाङ्मय की श्रेणी में आता है। जिनकी आस्था अपौरुषेय ज्ञान में है उन्हें आस्तिक और शेष सबको नास्तिक कोटि में माना है जो वेद को अपौरुषेय मानता है वह आस्तिक है। इसी से कहा कि वेद सत्य विद्याओं का ज्ञान गम्य तत्व माना है। अतः अविद्या का नाश कैसे होगा केवल सत्य विद्या युक्त वेद के बिना नहीं अतः मुख्य उद्देश्य रहा वेद का प्रचार करना।

इसमें सन्देह नहीं कि परमात्मा का पवित्र ज्ञान वेद संस्कृत में प्राचीनतम ग्रन्थ है वे मनुष्य मात्र की उन्नति के लिए अपनी अद्भुत गरिमा से दिव्य प्रकाश का काम करते हैं। इसी से वेद को सब सत्य विद्याओं का आदि मूल कहा है। महर्षि से पूर्व वेद केवल पुरोहितों की पोथीमात्र या विदेशियों के लिए, गड़रियों के गीतमात्र थे।

महर्षि ने वेद को सत्य विद्याओं की पुस्तक कहकर यह भावना तो बदल दी। वेद में बुद्धि को प्रवेश का अवसर दिया। विद्या-बुद्धि का विषय तो है ही विद्या का अध्ययन अवश्य किया जाएगा और उससे आचार व्यवहार की शिक्षा भी उपलब्ध होगी। उस शिक्षा से संसार तथा परलोक से सम्बन्ध रखने वाले सभी विषयों से काम लिया जायेगा वेद को आर्यों का मन्तव्य ही न बता कर महर्षि दयानन्द ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना परम धर्म निश्चित किया है। तात्पर्य यह है कि विद्वान जन जानते हैं कि आर्य जन वेद के वायु मण्डल में रहकर पुनः अपना यशस्वी जीवन बना सकते हैं।

आर्योद्देश्य रत्नमाला में 'विद्या पुस्तक' के शीर्षक से कि ईश्वरोक्त सनातन समाज के मूल स्रोत चार वेद हैं। उन्हीं को विद्या पुस्तक कहते हैं। इस प्रकार वेदों का महत्व स्वयं बढ़ जाता है। वेदों के आदि प्रकाश कर्ता ईश्वर हैं इसी से वेदों का श्रवण, मनन, अध्ययन करना आर्यों का परम धर्म कहा है।

इस नियम में प्रमुखता दो ही बातों पर दी गई है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है और द्वितीय वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना परम धर्म बताया है। परम धर्म कहकर जिस बात पर बल स्वाध्याय पर परमधर्म कहकर इति की है। मनु ने कहा है कि—

> योऽनधीत्य द्विजोवेद मन्यत्र कुरुतेश्रमम् ।
> स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥२।१६८ मनु०

यह अमृत तत्व आदि सृष्टि में मानव मात्र के कल्याणार्थ किया। वेदाध्ययन का प्रथम समय जो दिया वह है ब्रह्मचर्य आश्रम पर वेद स्वाध्याय ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति के साथ ही समाप्त न होकर जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रवृत्ति है अतः वैदिक ऋषि उपदेश देते हैं—

> सत्यंवद, धर्मंचर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः ॥

वेद का स्वाध्याय देश-काल, वर्ण-जाति, लिंग या रंग के आधार पर सीमित न होकर वेद को मानव मात्र के लिए दिया है।

सत्य विद्याओं की पुस्तक—

वेद संकुचित अर्थ में बाइबिल कुरान आदि की भांति मत प्रतिपादक ग्रन्थ नहीं। संसार की सब विद्यायें वेदों में मूल रूप से विद्यमान हैं और अनुसंधान से प्रकट होती हैं विज्ञान के उच्च से उच्च सिद्धांतों का भी वेदों में समावेश है वेद द्वारा ही हमारे पूर्वजों ने सब वस्तुओं के नाम धरे, इस बात को ध्यान में न रखकर पाश्चात्य विद्वान वेद में भौगोलिक व्यक्तियों, नदियों जातियों, देशों की कल्पना करते हैं यह उनकी वेद विषयक अनभिज्ञता ही है।

वेदों में इतिहास—

वेदों का प्रादुर्भाव सृष्टि के आदि में होने के कारण किसी मनुष्य की संज्ञा व कथा का प्रसंग आदि इतिहास नहीं। वेद के शब्दों में सत्यार्थ एवं विशेषार्थ को न जानकर ऐतिहासिकों ने इसमें व्यर्थ इतिहास निकालने का प्रयत्न किया।

वेदों की सार्वभौमिकता—वेद के उपदेश सार्वभौम हैं वेद एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से जन्म के कारण भेद नहीं करते। नारि जाति को पुरुषों के समान सामाजिक अधिकार भी दिए गए हैं हम अछूत,दलित, आदिवासी जिन्हें शूद्र व जंगली कहते हैं उन्हें भी ज्ञान प्राप्त करने का समान अधिकार है वे ज्ञान पाकर अच्छे कर्म करके उच्च स्थान पा सकते हैं। स्त्रियों शूद्रों को भी ज्ञान पाने का अधिकार है वेद विषयक भ्रम यह कि यह ईश्वर कृत नहीं? वेद में प्रकृति पूजा और देवी देवताओं की पूजा का विधान है। पशुबलि तथा मनुष्यों की बलि वेद प्रतिपादित है जुआ खेलना, शराब पीना, मांस खाना, आर्य लोग बाहर से आए थे ऐसे भ्रामक प्रचार भारतीय नवयुवकों में वेदों के प्रति किये जा रहे हैं जिससे श्रद्धा से अश्रद्धा और घृणा के भाव पैदा होकर वेद के गौरव को घटा रहे हैं तथा वैदिक धर्म की शिक्षाओं को जंगलीपन और ईसाई मत, विकासवाद की श्रेष्ठता प्रकट हो।

वस्तुतः वेदों का सिद्धांत विज्ञान और तत्वज्ञान पर आश्रित है वैदिक ऋषि वेदों के अर्थ दृष्टा व रहस्यवेत्ता थे। वेद में ईश्वर ही एकमात्र पूजनीय है।

वेद स्वतः प्रमाण है।

वेद विद्या, ईश्वर प्रणीत होने से निर्भ्रान्त और स्वतः प्रमाण है इसके भिन्न-२ ग्रन्थ (उपवेद, वेदांग उपांग, ब्राह्मण, आरण्यक उपनिषद आदि) ऋषि प्रणीत होने से परतःप्रमाण है। जहां तक यह ग्रन्थ वेद अनुकूल हैं प्रमाण व मान्य हैं।

वेद सनातन प्रभू की वाणी होने से उतने ही पुराने हैं जितनी सृष्टि की रचना उसका विधान।

इसी आधार पर महर्षि दयानन्द ने वेद को विद्याओं की पुस्तक कहा है इस प्रकार यह भावना बदल दी है कि विद्या बुद्धि का विषय तो है ही, उस शिक्षा से आचार-व्यवहार की शिक्षा भी प्राप्त होगी।

वेद का आदि मूल ईश्वर है अतः पढ़ना-पढ़ाना, सुनना सुनाना परम धर्म है इस प्रकार प्रथम तीन नियमों में परमात्मा के गुण धर्म दिखाकर सत्य विद्या का प्रतिपादन उस सर्वशक्तिमान ईश्वर की सत्ता द्वारा दर्शाया है। इसी से कहा है कि इसका पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना परम धर्म होना चाहिए।

इसीलिए आठवें उद्देश्य में अविद्या का नाश तभी होगा जब विद्या की वृद्धि होगी।

इस्लामी सभ्यता: उज्ज्वल नाम के स्याह पक्ष

अरुण शौरी

उलेमा द्वारा थोपी गयी शरीअत की कट्टरतायें हमारे वक्त तक मुस्लिम विद्वानों में क्षोभ और वेदना का कारण बनती रही है। उदाहरण ही देने हो तो बहुत बड़ी संख्या में दिए जा सकते हैं। समकालीन हताशा और कुंठा की एक झलक भर देने के लिए मैं यह याद करूंगा जो दो विद्वानों ने हमारे अपने वक्त में लिखा है :

आसफ ए. ए. फ़ैज़ी प्रतिष्ठित विद्वान थे, सुप्रसिद्ध पुस्तक आउटलाइन्स आफ मुहम्मडन लॉ (मुहम्मडन कानून की रूपरेखा) के लेखक, जिसके चौथे संस्करण का सातवां प्रिंट पिछले साल आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से छापा था। उनकी सारगर्भित किताब ए मार्डन एप्रोच टु इस्लाम (एशिया १९६३, आक्सफोर्ड १९८१) मुसलमानों को जगाने के आवेग से लबालब है, और उतना ही इस क्षोभ से भी कि उलेमा ने शरीअत का, और इसके माध्यम से मुस्लिम समाज का क्या कर डाला है।

उन्होंने लिखा है, 'यह अवश्य महसूस किया जाना चाहिए कि मजहबी रीति रिवाज बेजान दस्तूर बन चुके हैं, कि बड़ी तादाद में नेक मुसलमानों ने रोजे और नमाज के परम्परागत रूपों में सांत्वना और तसल्ली पाना बन्द कर दिया है कि आधुनिक युग में मजहब पर अच्छी किताबें नहीं लिखी जा रही हैं, कि औरतों के साथ, आर्थिक और नैतिक रूप से बुरा सुलूक किया जाता है और काफी उन्नत देशों में भी उन्हें प्रतिक्रियावादी उलेमा के फतवों द्वारा राजनैतिक अधिकारों से वंचित रखा जाता है, कि मुसलमान उस देश में भी जहां वे बहुसंख्यक हैं, प्राय: आर्थिक रूप से गरीब, शैक्षिक रूप से पिछड़े, आध्यात्मिक रूप से दिवालिए हैं और 'रक्षा के उपायों' का आग्रह करते हैं, कि प्रारम्भिक इस्लाम के फायदेमन्द कानून कई मामलों में वक्त के अनुरूप नहीं रह गये हैं और किसी भी आधुनिक राज्य में इस्लामी धर्मतन्त्र स्थापित करने या जिन्दगी को प्रारम्भिक इस्लाम की तर्ज पर ढालने की निरर्थक कोशिश का नाकाम होना तय है।" और इसलिए "आत्मान्वेषण का वक्त आ चुका है। इस्लाम की पुनर्व्याख्या करनी ही होगी, अन्यथा इसका परम्परागत रूप सुधार से परे नष्ट हो जा सकता है।"

जड़ीभूत होते जाने को, और इस जड़ीभूत हो जाने के दुष्प्रभावों को समझाने के लिए फ़ैज़ी ठीक उन्हीं कानूनों का निकाह और तलाक के कानूनों का उदाहरण देते हैं जिन पर हम विचार कर रहे हैं और जिन्हें मुस्लिम समाज के अलमबरदार इतना पुनीत, पावन समझते हैं।

इस्लाम में औरतों के प्रति आचरण

"इस्लाम में निकाह का कानून, कतिपय महत्वपूर्ण शर्तों के साथ औरतों के लिए फायदेमन्द है, और ऐसा ही उत्तराधिकार का कानून है," उन्होंने लिखा और पूछा, "ऐसा क्या है कि इस्लामी देशों में अमूमन हर जगह प्रथा और दस्तूर द्वारा औरतों को अचल सम्पत्ति पर अधिकार से वंचित रखा गया है? भारत, इंडोनेशिया, मिस्र, फारस और उत्तरी अफ्रीका में ऐसा है। और इससे भी ज्यादा विचलित करने वाली बात यह है कि औरत को उसके कुरान सम्मत अधिकारों से न सिर्फ वंचित रखा जाता है बल्कि उसे आदमी से हेय समझा जाता है और कतिपय राजनैतिक अधिकारों के लायक नहीं माना जाता। मुस्लिम देशों के सफर में यह तकलीफदेह बात सामने आती कि औरत को आदमी का खिलौना समझा जाता है और विरले ही जीवन-साथी, सहकर्मी या सहायक पत्नी यह कहकर इसे दरकिनार करना काफी नहीं है कि यह आचरण गैर-इस्लामी या इस्लाम की भावना के विपरीत है। जरूरी यह है कि तथ्यों का सामना किया जाये, मामले की जड़ तक जाया जाये, अनुचित व्याख्याओं से छुट्टी पा ली जाये, और लोगों को पुनर्शिक्षित किया जाए।" और उन्होंने यह कारगर उदाहरण दिया: "कुरान की आयत (चार की. ३४) औरतों का जिम्मा आदमियों पर है, क्योंकि अल्लाह ने उनमें से एक को दूसरे से श्रेष्ठ होने के लिए बनाया है, की पुनर्व्याख्या इस रूप में की जानी चाहिए कि यह केवल स्थानीय और थोड़े वक्त के लिए उपयुक्त थी। इसके व्यापक प्रयोग पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए, और इसे सामाजिक आचार-विचार के ऐसे नियम के रूप में लेना सम्भव हो सकता है जो पैगम्बर के जमाने में अरब में मौजूद हालात तक सीमित था जो अब आधुनिक जीवन में लागू होने योग्य नहीं रह गया है।"

'आदमी को आधुनिक दुनिया का महानतम उपहार आजादी है," फ़ैज़ी ने लिखा, "सोचने की आजादी, बोलने की आजादी, कर्म की आजादी'" और इसके विपरीत इस्लाम क्या करता है, उन्होंने पूछा, और जवाब दिया, "वह व्याख्या का दरवाजा बन्द कर देता है। वह निर्धारित करता है कि कानूनविदों और न्यायिक सलाहकारों को कतिपय खानों में बांट दिया जाये और विचार की स्वतन्त्रता नहीं दी जाये।" और ठीक इसके ही वाक्य में उन्होंने समस्या की जड़ पर उंगली रखी, वह विषय जिस पर हम लौट कर आयेंगे, 'हाल ही के हिन्दुस्तानी लेखकों में इकबाल और अब्दुर रहीम ने इस धर्मसिद्धांत के खिलाफ विद्रोह कर दिया था, और जिस पर भी कोई उलेमा के कोप का सामना करने की हिम्मत नहीं करता।" लिहाजा, उलेमा का हुक्म चलता है और उनकी हालत क्या है? फ़ैज़ी का जवाब यह है: "कोई दस बरस पहले (यह आलेख १९५९ में लिखा गया था), पाकिस्तान में उपद्रव हुए थे और एक जांच बिठायी गयी थी। पाकिस्तान के मुख्य न्यायाधीश ने अनेक उलेमा से इस्लाम और उसके सारभूत सिद्धांतों के बारे में सवाल किये थे, और उनके विश्लेषण के अनुसार कुछ उलेमा, उनके साथी उलेमा की राय में, नास्तिक थे। इस हद तक हमारे मजहब में जड़ता और निर्जीविता आ गयी है। इस्लाम, अपनी रूढ़ व्याख्या में, वह लोच और लचीलापन खो चुका है जो आधुनिक विचार और आधुनिक जीवन को अपनाने के लिए जरूरी है।"

शरीअत के बदलते प्रावधान

फ़ैज़ी ने उन परिवर्तनों की तरफ ध्यान दिलाया जो उस दिन तक, और एक के बाद एक देशों में, घट रहे थे। उन्होंने बताया कि एक कालावधि के लिए, एक देश के लिए तय किये गए नियम और व्यवस्थायें किस तरह दूसरे काल और स्थान के लिए सर्वथा अनुपयुक्त थे। यह बताते हुए कि शरीअत के प्रावधान विभिन्न देशों में और वर्षों के दौरान कितने तीव्र रूप से बदले गए हैं और आने वाले दशकों में इससे भी ज्यादा आमूलचूल और इससे भी ज्यादा तेज रफ्तार बदलावों की जरूरत पड़ना निश्चित है, उन्होंने जोर देकर कहा, "ऐसे क्रमिक रूपांतरण, यहां तक कि शरई के नियमों के भी, इस्लाम धर्म के सारभूत सत्य को नष्ट नहीं करते। इस विषय में ज्यादा सच्ची और ज्यादा गहरी पड़ताल करने पर पता चलेगा कि शरई के कुछ निश्चित हिस्से केवल ऊपरी छिलके हैं जिनके भीतर उसका बीज, उसका सार-इस्लाम का केन्द्रीय मर्म छिपा है, जो हर युग और सभ्यता के हर दौर में पुनर्व्याख्या और पुनर्कथन के द्वारा ही अक्षुण्ण रखा जा सकता है। वर्तमान में यह नये सिरे से तय करने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर है कि इस्लाम में कौन से तत्व टिकाऊ हैं और कौन से बदलने लायक हैं। उलेमा का परम्परागत धर्मशास्त्र मौजूदा सदी के दृष्टिकोण और विचारों को सन्तुष्ट नहीं करता। इस्लाम के सारभूत सिद्धांतों का पुनर्परीक्षण, पुनर्व्याख्या, पुनर्प्रतिपादन और पुनर्कथन हमारे युग की महती आवश्यकता है।"

इसी के मुताबिक उन्होंने तीन चीजों का आग्रह किया। पहला, उन्होंने आग्रह किया, मुस्लिम कानून के संचयन का, प्रत्येक कानूनी सिद्धांत और नियम के सम्बन्ध में, नीचे उल्लिखित सवाल पूछकर पुनर्परीक्षण करना चाहिए। (१) उस सिद्धांत के सम्बन्ध में इस्लाम से पहले समाज की क्या हालत थी? (२) पैगम्बर ने क्या नियम निर्धारित किया था? आज शरीअत के रूप में जो स्वीकृत है उसमें से बहुत कुछ छांटने-बीनने के लिए यह सवाल अपने आप में अनिवार्य है, (३) ऐसे कानून का नतीजा क्या रहा? (४) आज चौदह शताब्दियों बाद, उन तरह तरह के देशों में इस नियम की व्याख्या किस तरह की जाती है जहां इस्लाम फैला हुआ है? (५) क्या हम, इस्लाम की भावना को हमेशा अपने सामने रखते हुए, कानूनी नियमों को इस तरह नहीं गढ़ सकते जिससे स्वस्थ सुधारों को लागू किया जा सके?

(क्रमश:)

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म

आचार्य विष्णुमित्र आर्य

मानव जीवन की सार्थकता के लिये कर्मशील बनना आवश्यक है। कर्म का यह प्रवाह जीवनपर्यन्त चलते रहना चाहिये। यह कर्मप्रवाह यदि निष्काम भाव से चलता है तो मानव जीवन के लक्ष्य मोक्षानन्द का प्राप्त करना सहज हो जाता है। परमपिता परमात्मा ने अपने अमृतमय वेदवचनों से श्रेष्ठतम कर्म करने को प्रेरित किया है। यह जीवन कर्म भूमि है, इस कर्म भूमि में आकर अतिशय श्रेष्ठ कर्म करना ही श्रेयस्कर है। श्रेष्ठतम कर्म क्या है? जिसे एक व्यक्ति श्रेष्ठतम कर्म कहता है दूसरा उसे निषिद्ध बतलाता है, ऐसे ही जिसे कोई निषिद्ध कर्म कहता है दूसरा उसे विहित कर्म सिद्ध करना चाहता है। ऐसी संशयात्मक स्थिति से मुक्त होने के लिये शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ से शिक्षा मिलती है कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है।

यज्ञ ही श्रेष्ठतम कर्म है यह समाधान प्राप्त होने पर श्रेष्ठतम कर्म की भली भांति मीमांसा करने के लिए यज्ञ का स्वरूप समझ लेना चाहिए। यज्ञ शब्द यज् धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ है देवपूजा, संगतिकरण, दान आदि। देव की पूजा ही देव पूजा होती है। निरुक्तकार आचार्य यास्क का कथन है कि 'देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा, द्योतनाद्वा, द्युस्थानो भवतीति वा'। जिस प्रकार ईश्वर में दान, दीपन, द्योतन व सूर्य आदि के प्रकाशन का स्वाभाविक गुण वर्तमान है उसी प्रकार परमेश्वर की कृपा से मनुष्य व अग्नि आदि चेतन व जड़ दोनों में जितना-जितना जिस-जिसमे दिव्यगुण वर्तमान है उतना-उतना ही उसमें भी देवत्व है। देव बनने के लिये दान का अवलम्बन आवश्यक है। जहां विद्या आदि दानों की भावना है वहां देवत्व है। दान आदि प्रवृत्तियों से ही देव पूज्य पद पर अधिष्ठित होते हैं। पूजा का पात्र व्यक्ति देव ही होना चाहिये, देवत्व के बिना अन्यत्र की गयी पूजा दुर्भिक्ष, मृत्यु व भय आदि का कारण तो बन सकती है श्रेष्ठतम कर्म नहीं। याजक विविध प्रकार के देवों का यथायोग्य उपयोग किस प्रकार करे इसे स्पष्ट करते हुए आचार्य दयानन्द ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखते हैं कि 'इनमें से पृथिव्यादि का देवपन केवल व्यवहार में तथा माता, पिता, आचार्य और अतिथियों का व्यवहार में उपयोग और परमार्थ का प्रकाश करना मात्र ही देवपन है और ऐसे ही मन और इन्द्रियों का उपयोग व्यवहार और परमार्थ करने में होता है। परन्तु सब मनुष्यों को उपासना करने योग्य एक परमेश्वर ही देव है।' महर्षि निर्दिष्ट उपर्युक्त विधि से देवपूजा सम्बन्धी प्रत्येक कर्म यज्ञ है।

यज्ञ का द्वितीय मौलिक तत्त्व दान है। दान के बिना यज्ञ की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जहां जहां दान है वहां वहां यज्ञ है और जहां-जहां दान का अभाव है वहां-वहां यज्ञ का भी अभाव है। देश, काल व पात्र को देखकर ही दान किया जाना चाहिए तभी देवपूजा होती है। दान यज्ञ का ऐसा तत्त्व है जो देव व याजक दोनों मे रहता है। जब देव व याजक दोनो दानी हैं तो देव पूज्य क्यों? याजक पूजक क्यो? यह अन्तर इसलिये है क्योंकि याजक का देना लेने के लिये है जब कि देव का लेना देने के लिये है। जहां याजक की देकर लेने की भावना देव बनने मे बाधक है वहीं लेकर उसे सहस्रगुणित करके देने की भावना देव को पूज्यास्पद बना देती है। याजक जब यज्ञ प्रक्रिया के निरन्तर अभ्यास से स्वार्थ भाव से मुक्त होकर देकर पुनः लेने की भावना छोड़ देता है तब वह भी देव बन जाता है।

संगतिकरण भी यज्ञ का मौलिक तत्त्व है। जो देव व पूजक में संगति बैठा दे, दानादान के माध्यम से हवि को सार्थक कर दे, पूजक का दान देव को तथा देव का आदान पूजक तक पहुंचा दे वही संगतिकरण है। संगतिकरण के बिना देव व याजक का दानादान सम्भव न होने के कारण देवपूजा सम्भव नहीं है। अतः संगतिकरण यज्ञ का महत्तम तत्त्व है।

देवपूजात्मक, संगतिकरणात्मक व दानात्मक प्रत्येक कर्म यज्ञ होने से श्रेष्ठतम है। याजक को श्रेष्ठतम कर्म की परीक्षा के लिये उपर्युक्त विधि से भली भांति देख लेना चाहिए कि अमुक कर्म देवपूजात्मक, संगतिकरणात्मक व दानात्मक है या नहीं, यदि है तो निश्चय से वह कर्म श्रेष्ठतम है। इन देव पूजा आदि तीनों तत्त्वों का जिस-जिस क्षेत्र में सामञ्जस्य हो जाता है वहीं-वहीं क्षेत्र यज्ञमय हो जाता है। 'अग्निहोत्र सर्वस्व' पुस्तक में स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी का यथार्थ कथन है कि 'इन तीनों तत्त्वों का सामञ्जस्य व्यक्ति में दृष्टिगोचर होने पर व्यक्ति भी यज्ञरूप होगा। परिवार में दृष्टिगोचर होने पर परिवार यज्ञरूप कहलाएगा। समाज में दृष्टिगोचर होने पर समाज यज्ञरूप होगा। राष्ट्र में दृष्टिगोचर होने पर राष्ट्र यज्ञरूप होगा। ब्रह्माण्ड को यज्ञ इसलिए कहते हैं कि उसकी हर क्रिया प्रक्रिया में तीनों तत्त्वों का सामञ्जस्य है।

पूजा के तीनों मौलिक तत्त्वों को अपना कर जीवन के विविध क्षेत्रों में सामञ्जस्य पैदा करने के लिए याजक इसका नित्य अभ्यास अवश्य करे। यह अभ्यास अग्निहोत्र के माध्यम से प्रतिदिन होता है। याजक जब अग्निहोत्र करता है तो वह देव पद पर अधिष्ठित अग्नि, संगतिकरण पद पर समिधा तथा दान पद पर आज्य (घृत) को प्रतिदिन प्रत्यक्ष करता है। वह देखता है कि मैंने आज्य के रूप में जो हवि दी है, अग्निदेव उसे सहस्रगुणित करके पुनः लौटा रहे हैं। आज्य व अग्नि का संगतिकरण समिधा किए हुए है, आज्य का अग्निदेव तक पहुंचना तथा उसे सहस्रगुणित करके अग्नि द्वारा पुनः लौटा देना संगतिकरण पद पर अधिष्ठित समिधा के माध्यम से ही सम्भव हो पा रहा है। याजक यह भली भांति समझ लेता है कि यदि अग्निहोत्र करना है तो यज्ञशाला मे देव के प्रतीक अग्नि, संगतिकरण के प्रतीक समिधा व दान के प्रतीक आज्य का उपस्थित होना अतीव आवश्यक है। इस तत्त्वत्रय के बिना कोई भी यज्ञ हो पाना सम्भव नहीं है।

ब्राह्मण ग्रन्थों मे उल्लेख है कि 'जायमानोह वै पुरुषस्त्रिभिर्ऋणैर्ऋणवान् जायते' अर्थात् प्रत्येक मनुष्य तीन ऋणों से ऋणी उत्पन्न होगा। यज्ञ के द्वारा सभी को अपने देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण से मुक्त होना चाहिए। इसीलिए पञ्चमहायज्ञों को अनिवार्य घोषित करते हुए महर्षि मनु सचेत करते हैं कि—

> ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
> नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्तिर्नहापयेत्॥

ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ व पितृयज्ञ अपने पूर्ण सामर्थ्य से नित्यप्रति अवश्य करना चाहिए। प्रत्येक याजक महर्षि दयानन्द प्रणीत पञ्चमहायज्ञविधि के अनुसार पञ्च महायज्ञों से अपने जीवन को महान् बनाने के लिये सतत क्रियाशील रहे। ब्रह्मा से लेकर महर्षि दयानन्द पर्यन्त ऋषियो ने वेदों से खींच खींचकर बड़े-बड़े विभिन्न यज्ञो का वर्णन किया है, परन्तु महायज्ञ केवल दैनिक पञ्चयज्ञों को ही कहा है क्योंकि इन पञ्चमहायज्ञों से ही याजक महान् बनकर अन्य बड़े-बड़े यज्ञ कर सकता है।

परमपिता परमात्मा ने बड़े उत्तम कर्मों के परिणामस्वरूप हमें मानव शरीर प्रदान किया है। इस शरीर से यदि यज्ञ कर्म करें तो यह शरीर दैवी भाव कहलाता है। इस मनुष्य शरीर की सार्थकता तभी है जब हम यज्ञों से इस शरीर को ब्रह्मप्राप्ति का साधन बनाकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि करें।

आदर्श नगर, नजीबाबाद
जनपद—बिजनौर (उ० प्र०)

प्रगति के बढ़ते चरण

शुद्धि यज्ञ

रामचन्द्र शर्मा सीहोर

आर्य समाज के मुख्य लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' की अनेक कड़ियों में एक पुनीत कड़ी छोटी पोलाई जि० शाजापुर म० प्र० में 'शुद्धि यज्ञ' की और जुड़ गई। इतना विशाल एवं भव्य यज्ञ म० प्र० में प्रथम सफलता का सोपान है जिससे अन्य स्थानों पर ऐसे ही पवित्र आयोजनों के लिए दिव्य प्रेरणा मिली है। मध्य भारत क्षेत्र में यह अनूठा आयोजन है।

इस महायज्ञ की तैयारी में मध्य भारत प्रान्त के उपदेशक श्री हीरालाल जी एवं उनकी धर्म पत्नि श्रीमती शांति देवी जी का विशेष योगदान है। पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी, पूर्व प्रधान मध्य भारत आर्य सभा की कठोर तपस्या एवं अथक परिश्रम ने इस आयोजन को भव्यता प्रदान की।

यह पावन यज्ञ आचार्य रामचन्द्र जी शर्मा, सीहोर, आचार्य बूंदीराम जी सुमन, भोपाल एवं आचार्य श्री पीताम्बर लाल जी शर्मा बुन्दी के आचार्यत्व में दि० १ मई को आरम्भ हुआ तथा ३ मई ९४ को पूर्णाहुति के पश्चात समाप्त हुआ। पुरोहित कार्य में श्री गुलजारी लाल शर्मा तथा श्री गणपति लाल वर्मा इन्दौर ने भी अपना सशक्त योगदान दिया। पूर्णाहुति का कार्यक्रम श्री गुलजारी लाल शर्मा तथा श्री कालीराम जी अनल ने सम्पन्न कराया था।

इस शुद्धि महायज्ञ में २४५ शुद्धियां हुईं। यजमानो को शुद्धिमंत्रों के उच्चारण कराने के पश्चात सभी को (स्त्री-पुरुषों) को यज्ञोपवीत धारण कराये गये तथा इनसे शराब, मांस आदि का सेवन न करने की व्रत मन्त्रों से प्रतिज्ञा कराई गई। वैसे इन सभी लोगों ने यज्ञ से पूर्व ही शराब, मांस आदि छोड़ने का अभ्यास पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी, श्री हीरालाल जी एवं उनकी धर्मपत्नि श्रीमती शांति देवी की प्रेरणा एवं सक्रिय सहयोग से आरम्भ कर दिया था। शुद्धि कार्यक्रम के पश्चात १०० स्त्रियों को साड़ियां दी गई तथा सभी पुरुषों को अंगोछे दिये गये। और शेष स्त्रियों को ब्लाउज के कपड़े दिए गए। ये सभी वस्त्र श्रीराम ट्रेक्टर एवं एक सिन्धी परिवार उज्जैन ने दान में दिये थे जिनका वितरण श्री शिवाराम जी पटेल, सभा प्रधान, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सशक्त एवं कर्मठ करों द्वारा किया गया। वस्त्रो के साथ-साथ इन सभी के बौद्धिक विकास तथा सत्यधर्म के ज्ञानवर्धन हेतु एक-एक सत्यार्थ प्रकाश भी दानरूप में दी गई। ये सत्यार्थप्रकाश श्री शरदचन्द्र जी, धार एवं श्री मनुदेव जी 'अभय' इन्दौर द्वारा उपलब्ध कराये गये थे।

इस दिव्य आयोजन के लिए मध्य भारत की विभिन्न समाजों ने आहुति के रूप में अपनी शक्ति अनुसार धनराशि भेंट की थी। आर्य समाज टी०टी० नगर, भोपाल का योगदान सबसे अधिक एवं विशेष रहा। इस समाज के अधिकारी एवं सदस्यो तथा अन्य समाजों के सदस्यो एवं आर्यवीरो ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई थी। श्री जयदेव शर्मा, वरिष्ठ उपमंत्री म० भा० सभा. श्री दलबीर सिंह राघव, पूर्वप्रधान आर्य समाज टी० टी० नगर, श्री जोहरी मन्त्री आर्य समाज टी० टी० नगर, श्री बलदेव बैठा पुस्तकाध्यक्ष आर्य प्रति० सभा, श्री गौरीशंकर कौशल पूर्वप्रधान आर्य प्रति० सभा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अन्य समाजों से भी अनेक सदस्यों ने कार्यक्रम मे भाग लिया था। छोटी पोलाई के पास ग्राम रबाटसुर के आर्यों ने भी इस आयोजन मे विशेष सहयोग धनराशि एवं गेहूं दान के रूप में दिया।

इस यज्ञ की दिव्यता में तब और चार चांद लग गये जब सभी यजमानो ने स्वेच्छा से एवं अपनी आत्मप्रेरणा से अपनी गाढ़ी एवं कठोर श्रम की कमायी में से १५१-१५१ रुपये यज्ञशेष को अर्पण किये। यह सात्विक दान इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि यजमानों के मन मे किंचित मात्र भी लालच की भावना नहीं थी। वे तो अधिकाधिक देने आये थे और लेने आये थे आत्म-उत्थान के लिये ईश्वर की अनन्त कृपा, आचार्यों एवं सन्यासियों का आशीर्वाद एवं जनसमूह की शुभकामनायें।

ग्राम छोटी पोलाई के उत्साही सज्जनों में भी अपनी पूर्ण शक्ति से इस आयोजन में सहयोग दिया। श्री देवीलाल आर्य, श्री भवानन्द शर्मा पूर्व सरपंच एवं श्री धाशीलाल जी आंजना के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। ग्राम के कुछ नवयुवकों ने भी अपूर्व सहयोग दिया।

१ मई ९४ को प्रात. ८ बजे से शुद्धि यज्ञ आरम्भ हुआ जो दोपहर १२ बजे तक चला। शुद्ध हुए स्त्री, पुरुषों, युवक युवतियों के मुख पर जो हार्दिक प्रसन्नता, उत्साह एवं श्रद्धा की छटा दिखाई दे रही थी वह अपूर्व एवं अवर्णनीय है। ऐसा प्रतीत होता था कि वर्षों पूर्व कोई बहुमूल्य और आत्मप्रिय वस्तु जो खो गई थी वह कई गुनी होकर अपने सच्चे शुद्ध रूप में अब उन्हें प्राप्त हो गई है। वे उपदेशों को बहुत रुचि एवं अगाध श्रद्धा से सुनते थे। दिनांक २ तथा ३ मई को यज्ञोपरांत प्रातःकालीन उपदेश भजन आदि हुये तथा रात्रि को ८.३० बजे से भजन उपदेश एवं अन्य उपदेशों का कार्यक्रम रहा।

३ मई को रात्रि में श्रोताओं की अपार भीड़ थी। उपदेशों एवं संगीत भजनों का कार्यक्रम रात के २ बजे तक चलता रहा था। २ बजे भी जनता उठने का नाम नहीं ले रही थी। गुरुकुल सासनी में अध्ययनरत दो कन्याओं ने सस्वर वेद पाठ कर और राष्ट्रभक्ति के गीत गाकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया था।

इस प्रकार अपूर्व हर्षोल्लास के वातावरण में यह शुद्धि यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आवश्यकता है शुद्ध हुये बहनों और बन्धुओं को आत्म-स्नेह, सहयोग देने एवं निरन्तर उन्हें सत्संग आदि के द्वारा संस्कारित करने की। तभी आर्यों का परिवार विकास एवं वृद्धि को प्राप्त हो सकेगा।

पूर्व प्रान्तीय अधिष्ठाता
आर्य वीर दल म० प्र०

पावन पताका ओम् की

रचियता : स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

पावन पताका ओम् की हाथो में थाम लो।
करते हैं जाके दुश्मन वीरान अपना गुलशन,
बढ़ते रहो अगारी न रुकने का नाम लो।
पावन पताका ओम् की हाथों में थाम लो ॥१॥

लंकेश दैत्य रावण सीता न चुरा पाये।
शैतानियत का बदला बन करके राम लो।
पावन पताका ओम् की हाथों में थाम लो ॥२॥

हाथी की भांति घूमो बेधड़क जंगली बन में।
ध्रुव सम अटल दृढ़ व्रत ये कर तमाम लो।
पावन पताका ओम् की हाथों में थाम लो ॥३॥

प्राणो से अधिक प्यारा ये धर्म न बिसारो,
रक्षार्थ को तैयार न पल भी विश्राम लो।
पावन पताका ओम् की हाथों में थाम लो ॥४॥

करो हाथ जोड़ करके सब प्रेम से नमस्ते।
प्रभु का वन्दवत न कोई सलाम लो।
पावन पताका ओम् की हाथों में थाम लो ॥५॥

पढ़कर स्वरूपानन्द के ओजीले काव्य को।
पाओगे फतह निश्चय हिम्मत से काम लो।
मंजिल पै अपनी जाकर पा सुखद धाम लो।
पावन पताका ओम् की हाथों में थाम लो ॥६॥

धर्म और अधर्म (२)

—पं० रामचन्द्र देहलवी

प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित

प्रत्यक्षादि प्रमाण जो आगे आयेंगे, उनकी व्याख्या वहां की जावेगी। यहां केवल यह ध्यान रखना चाहिये कि किसी चीज के लिये परीक्षा का द्वार बन्द नहीं। किसी भी कार्य को खूब सोच-समझ और परीक्षा करके करना चाहिए। यदि हम उन परीक्षाओं में ठीक और यथार्थ उतरें, तो धर्म और यदि न उतरें तो उसे अधर्म (अकर्तव्य) समझना चाहिये। इसलिये कि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का स्वयं उत्तरदाता हो, स्वयं परीक्षा करके ही प्रत्येक कार्य को करने की आज्ञा दी गई है। चाहे रेलवे का प्रबन्ध इञ्जिनियरिंग के अधीन रखा गया है और आदमी दिन-रात लाइन और पुलों की देखभाल करते रहते हैं, पर फिर भी ड्राइवर को सर्चलाइट और अपनी आंखों से देखकर चलने-चलाने की आज्ञा दी जाती है, ताकि उसका वैयक्तिक उत्तरदायित्व उसके कार्य के साथ रहे।

वेदोक्त

'वेद' जो कि "विद् सत्तायाम विद् ज्ञाने, विद् विचारणे" तथा 'विद्लृ लाभे" इन धातुओं से सिद्ध होता है, जिनका अर्थ हुआ कि जो सत्ता ज्ञान, विचार और लाभ के सहित हों अर्थात सर्वप्रथम वेद द्वारा हमें प्रत्येक वस्तु की सत्ता का उपदेश होता है, तत्पश्चात उन वस्तुओं, तथा उनके गुण और व्यवहारादि का ज्ञान होता है। ज्ञान होने के अनन्तर ही हम उसके सूक्ष्म विषयों पर विचार करने में समर्थ हो पाते हैं, अन्त में इसी क्रम से हमें उस ज्ञान और विचार के अनुरूप लाभ की प्राप्ति होती है। इस प्रकार उस वेद से उपदिष्ट कर्मों को जो कि मोटे शब्दों में ज्ञानानुकूल और विचारपूर्वक हों, उन्हें धर्म कहा जाता है। इसीलिये महात्मा मनु ने अपनी स्मृति में··· वेदोऽखिलो धर्म मूलम्, तथा धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाण परमं श्रुतिः' कहा अतएव प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार के वेदोक्त कर्मों को करना ही अपना धर्म समझना और उसका अनुष्ठान करना चाहिये।

अधर्म—जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा को छोड़कर और पक्षपात-सहित अन्यायी होकर बिना परीक्षा करके अपना हित करना है जो अविद्या हठ, अभिमान, क्रूरतादि दोषों से युक्त होने के कारण वेद-विद्या से विरुद्ध हैं, और सब मनुष्यों को छोड़ने के योग्य है। वह अधर्म कहाता है।

यद्यपि किसी विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं, चूंकि धर्म समझ लेने के साथ सिर्फ इतना विशेष याद रखना चाहिए कि जो धर्म से विपरीत अर्थात उल्टा हो, उसे अधर्म कहते हैं। ऋषि दयानन्द ने मत-मतान्तरों को इसी कसौटी पर कस उन्हें मत-मतान्तर के नाम से निर्देश किया, या मजहब बतलाया। चूंकि उन सम्पूर्ण मजहबों में जो कि अपने को धर्म के नाम से पुकारते थे, उपर्युक्त दोष थे, जैसे कोई ईश्वर की सत्ता को ही न मानते थे, अर्थात नास्तिक थे। जब वे ईश्वर ही को न मानते थे तो फिर ईश्वर की आज्ञा को ही कैसे मानते, लिहाजा ऋषि ने उन्हें भी कहा कि तुम्हारा मत धर्म नहीं कहा जा सकता, चूंकि वह धर्म के एक आवश्यक अंग से रहित है, अतः वह मजहब है। इस ही प्रकार जो लोग ईश्वर की सत्ता को मानते थे पर उसकी आज्ञाओं में पक्षपात मानकर, किसी एक देश या जाति के लोगों से पक्षपात या प्रेम, और दूसरों से नफरत प्रकट करते थे, या ईश्वर के नाम पर यज्ञों में, अथवा देवी-देवताओं के सामने, पशु-हत्या आदि करके अपनी क्रूरता और मूर्ति पूजा आदि करके जड़ में चेतन को मानकर, अपनी अविद्या प्रियता का परिचय देते थे, उन्हें तथा जिनके ग्रन्थों में निरी असम्भव और विश्वास न करने लायक बातें भरी पाईं, ऋषि ने कहा कि तुम्हारा मत भी सिर्फ मत यानि मजहब है। वह धर्म का स्थान नहीं ले सकता। इसी लिए वह सम्पूर्ण मनुष्य के लिये मान्य न होकर सिर्फ तुम लोगों ही की स्वार्थ-पूर्ति के लिए हो सकता है। अतः प्रत्येक समझदार मनुष्य को इस प्रकार मजहबों या मत-मतान्तरों को दूर से ही प्रणाम करके छोड़ देना चाहिए जिससे कि उसका जीवन व्यर्थ बरबाद न हो।

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (प्रथम व द्वितीय भाग)	१०)००
मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (भाग ३-४)	१६)००
लेखक—पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति	
महाराणा प्रताप	१६)००
विचलता अर्थात इस्लाम का फोटो	५)५०
लेखक—धर्मपाल जी, बी० ए०	
स्वामी विवेकानन्द की विचार धारा	४)००
लेखक—स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती	
उपदेश मञ्जरी	२१)
संस्कार चन्द्रिका	मूल्य—१२५ रुपये
सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री	

पुस्तक मंगवाते समय २५% धन अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

१/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली-१

सांस्कृतिक कार्यक्रम व संगीत सन्ध्या

आर्य समाज फोर्ट के तत्वावधान में आयोजित "सांस्कृतिक कार्यक्रम एव संगीत संध्या" २१ मई ९४ शाम ४.०० बजे स्थान—पाटकर हाल, बम्बई में श्री शिवबीर शास्त्री द्वारा "प्रार्थना" के साथ प्रारम्भ हुई।

इस अवसर पर समाजसेवी एवं उद्योगपति डा० अनन्तराज आर० आचार्य मुख्य अतिथि थे। जाने माने बार-एट-ला श्री वीरचन्द्र गार्डी ने अध्यक्षता की। गणमान्य लोगों में जय भारत ग्रुप एवं आर्य समाज फोर्ट के प्रधान श्री रामरिछपाल अग्रवाल, श्री झाऊलाल शर्मा, श्री मिठाई लाल सिंह, श्री स्वामी मेधानन्द जी, श्री ओंकारनाथ आर्य—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, बम्बई, श्री के० देवरत्न आर्य—उपप्रधान सार्वदेशिक सभा तथा श्री आचार्य रामीश शर्मा भारी जनसमूह के बीच उपस्थित थे।

"संगीत संध्या एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम" बहुत ही आकर्षण का केन्द्र रहा। समाज के उप-प्रधान श्री जगन्नाथ एन० शेट्टी एवं श्री एस० आर० प्रणम्बुर मंत्री श्री देवेन्द्र बी० शेट्टी, कोषाध्यक्ष श्री कांतिक बी० पंड्या आदि प्रमुख रूप से व्यवस्था आदि सम्भाले हुए थे तथा आतिथ्य कार्य में संलग्न थे।

आर्य समाज फोर्ट बम्बई की स्मारिका १९९४ का भी विमोचन हुआ। कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

देवेन्द्र बी० शेट्टी मंत्री
आर्य समाज फोर्ट बम्बई

सूचना

(१) दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर में छात्रों का प्रवेश आरम्भ है। इच्छुक छात्र मैट्रिक पास हो वे जल्दी ही पत्र व्यवहार कर स्वीकृति ले लेवें। छात्र अनुशासन प्रिय, सच्चरित्र तथा योग्य हो। उन्हीं को प्रवेश दिया जाएगा। इस विद्यालय में शास्त्री आदि का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है।

(२) दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर में एक अध्यापक की आवश्यकता है। जो व्याकरण, साहित्य शास्त्री कक्षा तक पढ़ा सकता हो। आचार्य के साथ पत्र व्यवहार करें। वेतन योग्यतानुसार।

श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय
(निकट लाजीपुर) यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा)

स्वास्थ्य चर्चा—

क्यों आता है गर्मी में नाक से खून

डा० प्रकाशचन्द्र गंगराड़े

नाक पर चोट लगने पर खून निकलने की प्रक्रिया समझ आती है लेकिन गर्मी के दिनों में अक्सर कुछ बच्चों और बड़ों की नाक से एकाएक खून निकलने लगता है। यह साधारण समझी जाने वाली समस्या गम्भीर भी हो सकती है। जहां खून की कुछ बूंदे टपक कर बन्द हो जाना कोई मायने नहीं रखता वहीं कई लीटर खून निकलना प्राणघातक भी हो सकता है। अतः जिन्हें हर दो-चार दिनों में अपने आप नाक से खून निकलने की शिकायत बनी रहती हो वे इसके उपचार में लापरवाही न बरतें।

नाक से खून बहने वाली इस बीमारी को नकसीर, नासा रक्तपित्त या एपिस्टैक्सिस नामों से भी जाना जाता है। आमतौर पर यह रोग चार-पांच वर्ष से छोटी उम्र के बच्चों को बहुत कम होता है लेकिन छह से पन्द्रह वर्ष की आयु वालों को अधिक होते देखा गया है। चालीस वर्ष की आयु के ऊपर के लोगों को अधिकतर उच्च रक्तचाप या जीर्ण वृक्क शोथ के कारण नाक से खून आता है।

विभिन्न प्रकार के आहार विहार से जब पित्त दोष प्रकुपित होकर रक्त धातु को दूषित कर देता है तो इससे अकस्मात रक्तस्राव होने लगता है। आयुर्वेदिक मतानुसार ऐसे रक्तस्राव को ऊर्ध्व रक्तपित्त कहा जाता है। नासागत रक्तस्राव के कारणों में वात, पित्त, कफ (त्रिदोषज) तथा औपद्रविक रोग सम्मिलित होते हैं। सार्वदेहिक में रक्तभाराधिक्य, पाण्डु रोग, तीव्र ज्वर, फ्लू, मासिक स्राव की अनियमितता आदि से रक्तस्राव होता है।

ऊर्ध्व अर्थात् ऊपरी अंग नाक से निकलने वाला रक्तपित्त साध्य होता है जबकि अधोग अर्थात् नीचे शारीरिक अंगों से निकलने वाला रक्तपित्त याप्य है और दोनो ओर से निकलने वाला रक्तपित्त असाध्य माना गया है। बीमारी से कमजोर हुए क्षीण वृद्धो का अतिवेग युक्त रक्तपित्त असाध्य होता है। नाक की विकृति से होने वाला रक्तस्राव मामूली होता है लेकिन सार्वांगिक कारणों से होने वाला नासागत रक्तस्राव अधिक घातक होता है।

कारण

संक्रामक बीमारियो जैसे चेचक, फ्लू, टाइफाइड, खसरा, आमवातिक ज्वर (रूमैटिक फीवर) मे तथा खून की कुछ बीमारियों जैसे ल्यूकीमिया, हीमोफिलिया में वयस्कों में गुर्दे, जिगर और हृदय की बीमारियो के कारण भी नाक से खून आता है। महिलाओं मे कई बार मासिक धर्म में नाक से खून निकलता है।

बहुत अधिक गर्मी या ठंड से भी नाक से खून आने लगता है। कभी-कभी नाक के अन्दर जमी गन्दगी को जबरन खुरचने से नाक से खून निकलना शुरू हो जाता है। जब वातावरण का दबाव अत्यधिक ऊंचाई पर जाने से कम हो जाता है, तब भी नाक से रक्तस्राव होने लगता है। उच्च रक्तचाप के मरीजो की नाक से खून निकलना आम बात है।

अधिक व्यायाम, श्रम, भय, शोक, क्रोध, मैथुन करना, खट्टे चरपरे, नमकीन खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन गर्म औषधियो का सेवन, तेज धूप में में घूमने, नाक व दिमाग मे चोट लगने से भी नाक से खून निकलता है।

लक्षण

नाक के नथुनो में जलन एवं शोथ, कभी-कभी खुजली मालूम पड़ना, सिर मे गर्मी एवं रूक्षता प्रतीत होना, उदरकृमि के कारण बच्चों में यह रोग हो तो बालक बार-बार नाक नोचता है। किसी-किसी को नाक से खून आने के पहले शरीर के अंग टूटने का एहसास होता है, सिरदर्द, चक्कर या सिर में कष्ट का अनुभव होता है। अक्सर धूप में चलने, पान चबाने, हुक्का पीने, नाक खुजाने या छींकने से एकाएक नाक से खून निकलने लगता है। कभी एक नासाछिद्र से तो कभी दोनों नासाछिद्रों से खून गिरता है। जब यही खून नाक से न निकलकर इसके पिछले भाग से बहकर पेट में पहुंच जाता है तो उल्टी होकर मुंह के द्वारा बाहर निकलता है। खून जब नाक से निकलता है तो बून्द-बून्द करके या धार बंध कर बहता है।

सामान्य प्राथमिक उपचार

सबसे पहले धूप, गर्मी या हवा के पास से पीड़ित व्यक्ति को हटा लें फिर उसे सीधा लिटा दें। सिर पर ठंडे पानी का छिड़काव करें। नाक और कपाल पर ठंडे जल की भीगी पट्टी या बरफ की थैली रखें। मरीज को थूकने, छींकने या निगलने न दें। इन उपायों से भी यदि रक्तस्राव न रुके तो चार-पांच मिनट तक मरीज के नथुनों को कस कर दबाएं और उसे मुंह से सांस लेने को कहें। पांवों को गरम पानी में डुबाए रखें। ऐसा करने से खून का बहाव पैरों की तरफ हो जायेगा। साथ ही खून बहना बन्द हो जायेगा।

उच्च रक्तचाप के कारण यदि नाक से खून आ रहा हो तो मरीज को बैठा कर गर्दन आगे करके मुंह से गहरी सांस लेने को कहें। खून अधिक तेजी से निकले तो रुई की सहायता से सोखकर जाली की पट्टी को पैराफिन में भिगो कर नाक के छेदों मे प्रवेश करा कर पैक कर दें। इससे खून बहना शीघ्र ही रुक जायेगा। दो दिन बाद इस पैक को निकाल लें।

रुई के फाहे में टिंचर बेंजाईन कं० या लिकर एड्रीनेलीन क्लोराइड लगा कर नथुनों में रखने से भी सामान्य प्रकार का रक्तस्राव बन्द हो जाता है। यदि उपरोक्त सामान्य उपायों से खून का बहना न रुके तो पास के अस्पताल में ले जाकर तुरन्त डाक्टर को दिखाएं। जहां आस-पास अस्पताल न हो या अस्पताल ले जाने के साधन में विलम्ब होने की संभावना हो वहां विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों में से उपलब्ध सुविधा को आजमा कर लाभ उठाना चाहिए।

आयुर्वेदिक उपचार

आंवले, नीबू, अंगूर, प्याज, गन्ने का रस या मिश्री मिला जल बकरी का कच्चा दूध में से किसी को नाक के नथुनों में डालने से रक्तस्राव कम होकर रुक जाता है। इसी प्रकार तारपीन का तेल या प्याज के छिलके सुंघाने से भी सामान्य प्रकार का नासागत रक्तस्राव रुक जाता है।

अडूसे के पत्ते का रस, शहद और शक्कर बराबर मात्रा में पिलाने से इस प्रकार का रक्तस्राव रुक जाता है।

होम्योपैथिक उपचार

लक्षणों के अनुसार निम्न दवाएं गुणकारी हैं—

मिलीफोलियम ६—यह दवा खून के लाल चमकदार निकलने पर देना फायदेमन्द होगा।

ब्रायोनिया ३०—जब मासिक स्राव बन्द होकर नाक से खून निकलने लगे तब यह दवा गुणकारी होगी।

हेमामेलिस ६—रक्त थक्के जैसा जमकर बाहर निकले तब यह दवा दें।

अर्निका मोंट ३०—चोट, आघात या मार लग कर नाक से खून बहे, खून का रंग काला हो चाहे मार लगी हो या न लगी हो। यह दवा अवश्य लाभ पहुंचायेगी।

एलोपैथिक उपचार

इस चिकित्सा पद्धति के अनुसार विटामिन 'सी', 'के' और कैल्शियम की गोलियां व इन्जेक्शन मरीज की हालत के अनुसार प्रयोग में लाए जाते हैं। ये दवाएं बाजार में विभिन्न कंपनियों द्वारा अनेक प्रकार के ब्रांड नामों से बेची जाती हैं, जिनका प्रयोग डाक्टर की सलाह से किया जाना चाहिए।

पथ्य और अपथ्य आहार-विहार

मरीज को खाने में चावल, मसूर, चना, खिचड़ी, चपाती, सत्तू, तरबूज, अनार, सेब, खजूर, संतरा, अंगूर, नासपाती, किशमिश, मुलेठी, फालसा, साबूदाने की खीर दें। शीतल दूध, जल, गन्ने का रस पीने के लिए दे सकते हैं।

धूप में अधिक चले-फिरे नहीं, आग के पास बैठने और लिखने-पढ़ने से बचें। मांस, मछली, अंडा, गुड़, खटाई, लहसुन, मसालेदार खाने से परहेज करें।

कांशीराम को धन मिल रहा है क्रिश्चियन मिशनरी से : कल्याण

सरदार पटेलनगर (बड़ोदरा), ११ जून उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्य-मन्त्री कल्याणसिंह ने आज यहा आरोप लगाया कि राज्य के मुख्य-मन्त्री मुलायम सिंह को खाडी देशों से तथा बहुजन समाज पार्टी के प्रमुख कांशीराम को क्रिश्चियन मिशनरी से विदेशी धन मिल रहा है।

भाजपा की राष्ट्रीय परिषद् के अधिवेशन मे पार्टी का राज-नीतिक प्रस्ताव पेश करते हुए कल्याण सिंह ने कहा कि विदेशी धन और ताकत इस देश मे फूट डाल रही है, लेकिन भाजपा उनकी इस साजिश को सफल नहीं होने देगी।

उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी देश में जातिवाद और राजनीति के अपराधीकरण को बढ़ावा दे रही है। यह इस बात से सिद्ध होता है कि सारी उत्तेजना के बावजूद कांग्रेस पार्टी उत्तर प्रदेश में सपा-बसपा गठबंधन को समर्थन जारी रखे हुए है।

श्री कल्याणसिंह ने आरोप लगाया कि बम्बई मे पिछले दिनों हुए विस्फोटों के मुख्य अपराधी दाउद इब्राहीम का महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री शरद पवार का सरक्षण मिल रहा है। यही कारण है कि सर-कार इस कांड के अभियुक्त के विरुद्ध कुछ नहीं कर पा रही है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि भाजपा राममन्दिर के निर्माण के बारे में पीछे नहीं हटी है। भाजपा अयोध्या मे मन्दिर निर्माण के लिए कटि-बद्ध है।

श्री कल्याणसिंह ने आरोप लगाया कि सरकार मन्दिर निर्माण और न्यास के गठन को लेकर राजनीतिक चाल चल रही है। उन्होंने देश के मुसलमानो से अपील की कि वे देश की मुख्यधारा से जुड़ें और इस बात को स्वीकार करें कि राम' राष्ट्रीय पहचान है और सदैव राष्ट्रनायक रहे हैं। (हिन्दुस्तान १२-६ ९४)

निर्वाचन

—आर्य समाज मवाना मेरठ, प्रधान श्री ज्ञानेन्द्र प्रकाश, मन्त्री श्री नरेन्द्रसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री देवेन्द्र कुमार।

—आर्य वेदप्रचार मण्डल, मेवात। अध्यक्ष श्री मानीराम मगला पुन्हाना जिला गुड़गांवा। मन्त्री श्री उत्तमचन्द जी आर्य मोवाबा (भरतपुर)। कोषाध्यक्ष श्री शिवचरण दास जी आर्य फिरोजपुर झिरका।

—आर्य समाज भरथना (इटावा) उ० प्र०। प्रधान श्री सत्यदेव आर्य, मन्त्री श्री श्याममोहन आर्य, कोषाध्यक्ष श्री मोतीलाल जी।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वाला-पुर हरिद्वार के लिए सुयोग्यतम कर्मचारियो की तुरन्त आव-श्यकता है। सम्पर्क करे।

आश्रम छात्रावास हेतु सरक्षक-४
योग्यता—कम से कम बी०ए०
भडारी—भडार व्यवस्थापक १
योग्यता—बी०ए०
वेतन योग्यतानुसार
आवास भोजन नि:शुल्क

संरक्षक की आवश्यकता

गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद के लिए एक सरक्षक की आवश्यकता है जो अवकाश प्राप्त हो अथवा ऐसा व्यक्ति जो सस्थाकी सेवा करना चाहता हो। और ४०वर्ष से ऊपर हो। इच्छुक व्यक्ति तत्काल उक्त पते पर प्रार्थना-पत्र भेजे सस्था उनके सम्पूर्ण योगक्षेम का वहन करेगी और दक्षिणा भी देगी।

—डा० रमामित्र शास्त्री, प्राचार्य

ईश्वरचन्द्र जी तीर्थ दिवंगत

अबोहर, ६-६-९४ मे श्री ईश्वरचन्द्र जी तीर्थ अबोहर निवासी का ९२ वर्ष की अवस्था मे देहावसान हो गया है। श्री तीर्थ जी गुरुकुल पोठोहार के प्रथम स्नातक थे। अपने जीवन काल मे उन्होंने गुरुकुलों की पर्याप्त आर्थिक सहायता की है। दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना है।

मीरा कुमार को अंग्रेजी में भाषण नहीं करने दिया

नई दिल्ली, ११जून। कांग्रेस(इ) अधिवेशन मे आज प्रतिनिधियों ने सुश्री मीराकुमार को अंग्रेजी मे भाषण नहीं करने दिया।

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी की ११वी जन्मशती पर पेश प्रस्ताव के लिए अनुमोदन करते हुए सुश्री कुमार ने अपना भाषण अंग्रेजी मे शुरु किया। परन्तु मचके समक्ष बठे प्रतिनिधियों ने तत्काल विरोध करते हुए उनसे भाषण हिन्दीमे करने का आग्रह किया। सुश्री कुमार ने यह अनुरोध तत्काल स्वीकार कर लिया। इससे पूर्व यह प्रस्ताव वयोवृद्ध कांग्रेस नेता विश्वम्भर नाथ पाडे ने पेश किया। उन्होंने पूरा भाषण हिन्दी मे दिया।

निर्वाचन

—आर्य समाज मण्डी बास मुरादाबाद प्रधान श्री रघुवीर शरण सक्सैना, मन्त्री श्री ओमप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण गोपाल।

—आर्य समाज समरूर, प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार, मन्त्री श्री चन्द्र प्रकाश गोयल, खजांची श्री रावेन्द्र आर्य।

—आर्यसमाज सिविल लाइन्स अलीगढ़ प्रधान श्री प० शिवस्वरूप शर्मा, मन्त्री श्री रामविलास गुप्त वेदार्थी कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश शर्मा।

—आर्य समाज पू बला नयापुरा, जोधपुर। प्रधान श्री जगदीश सिंह आर्य, मन्त्री श्री राजेन्द्र प्रसाद वैष्णव, कोषाध्यक्ष मनोहरलाल परिहार।

गुरुकुल ज्वालापुर मे ब्रह्मचारियों का प्रवेश प्रारम्भ

आर्य जनता को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे १ जुलाई से नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश कक्षा ६ से कक्षा ८ तक प्रारम्भ हो रहा है। सुरम्य वातावरण, अनुशासित जीवन दर्शन, वेद-वेदाग के साथ हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, साइन्स के अध्यापन की विशेष व्यवस्था। गुरुकुल परिसर में ही छात्रावासीय व्यवस्था।

सच्चरित्र, होनहार एव विद्वान बनाने हेतु यथाशीघ्र अपने बालकों का महाविद्यालय ज्वालापुर मे प्रवेश करायें।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक सख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वत ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

'नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये बार एक१५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

विदेश समाचार

"सुअर की विष्टावाली खाद"

समाचार-पत्रों से ज्ञात हुआ कि भारत सरकार होलैण्ड से सुअर की खाद का आयात खेती के लिये कर रही है। पढ़कर बड़ा आश्चर्य हुआ कारण अभी होलैण्ड में ३०-१-९४ को T.V. पर खबरों में बताया कि देश में एक प्रान्त जिसको (BRABANT) ब्राबान्ट कहते हैं इस प्रोविंस में ७ व्यवसाईक सुअर पालने के व्यापारिक स्थान या संस्थान हैं जिनमें ३५००० (पैंतीस हजार) सुअर पाले जाते हैं। वहां के स्थानीय लोगों ने ८००० विरोध पत्र सरकार को भेजे कि वहां से सुअरों को हटाया जाये क्योंकि सुअरों के कारण जमीन व वातावरण भी दूषित हो गया है और अधिक दूषित होता जा रहा है। होलैण्ड में सुअर की खाद के उपयोग के कारण वातावरण दूषित होता है इसीलिये सरकार ने देश मे सुअर की खाद का उपयोग करीब-करीब बन्द सा ही हो गया है। संसार मे गन्दगी साफ करने के लिये बड़ा धन व साधन खर्च होते हैं पर यह सुअर की खाद भारत देश में क्यों बिन परिणाम जाने आयात की जा रही है।

जब कि भारत मे केवल गंगा नदी को साफ करने के लिये करोड़ों रुपये का खर्च हो रहा है होलैण्ड देश ने भी गंगा नदी को साफ करने के कार्य में करोड़ों डालर का ठेका लिया हैं।

शुद्धि संस्कार

एम्सटडंम २ जून १९९४ को, आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदरलैण्ड के कोषाध्यक्ष पण्डित एस० शुमधन के आचार्यत्व में एक मुस्लिम परिवार का (जिन्होंने इस्लाम मत छोड़कर वैदिक धर्म ग्रहण किया) जिसमें कुल मिलाकर ७ सदस्य है पति-पत्नि व ५ बच्चे, शुद्धि संस्कार किया। शुद्धि संस्कार के बाद परिवार को आर्य समाज का सदस्य भी बनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित आर्य समाज के सदस्यों ने शुद्ध हुए परिवार का जोरदार स्वागत किया।

अन्त में शुद्ध हुए परिवार के सदस्यों ने कृणवन्तो विश्वमार्यम का शानदार नारा लगाया।

—डा० महेन्द्र स्वरूप, प्रधान
आ० प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड

मस्त सन्त

तू सन्त बड़ा था मस्त-मस्त, तू सन्त बड़ा था मस्त-मस्त।
तुझे देख विरोधियों के हौंसले, हो जाते थे पस्त-पस्त॥

तू जवानी में भरपूर था चेहरे पर तेरे नूर था।
वेद-प्रचार करने की उमंग थी तेरे दिल में जबरदस्त॥
तू सन्त बड़ा था·········

तूने गुरुओं की जान बचाई थी, नारी को शिक्षा दिलवाई थी।
छूआ-छूत का भूत भगाकर, काम किया था जबरदस्त॥
तू सन्त बड़ा था·········

तूने पाखण्ड खंडिनी लहराई, हरिद्वार में जाकर धूम मचाई।
काशी में शास्त्रार्थ करके कर दिया था सबको अपदस्त॥
तू सन्त बड़ा था·········

तूने आर्यसमाज बनाई थी, देश की डूबती नाव बचाई थी।
वैदिक धर्म के आगे सारे, धर्म हो गये अस्त-व्यस्त॥
तू सन्त बड़ा था·········

तेरे उपकार गिनाये नहीं जाते, तेरे बलिदान भुलाये नहीं जाते।
रुहिल तेरे चरणों में ऋषिवर करता है नत मस्त-मस्त॥
तू सन्त बड़ा था···········

—ओमप्रकाश रुहिल उप-प्रधान
आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली-९२

तसलीमा नसरीन

(पृष्ठ १ का शेष)

हरियाणा विधान सभा के अध्यक्ष श्री ईश्वरसिंह, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य देवव्रत जी ने भी आर्यवीरों को सम्बोधित किया।

स्वामी आनन्दबोध जी ने इस अवसर पर गोरक्षा की चर्चा करते हुए कहा कि आगामी १० जुलाई को सार्वदेशिक सभा तथा समस्त आर्य समाज संगठन की ओर से गोरक्षा आन्दोलन की रूपरेखा पर विचार किया जायेगा।

स्वामी जी ने इस अवसर पर कर्नाटक के गोविन्दराव तथा कपिलदेव म० प्र० को प्रशिक्षण शिविर की ओर से सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार एवं पदक प्रदान किया। इस प्रशिक्षण शिविर में ८ ब्रह्मचारियों ने नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहकर आजीवन आर्य समाज की सेवा करने का व्रत लिया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४९/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२६-६-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (C)९३
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 93 Post N.D.P.S.O.on 24-6-1994

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनाक १५ मई ९४ को सत्सग के उपरान्त आर्यसमाज के सभागार मे हुआ। जिसमे वर्ष १९९४-९५ के लिए सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए —

श्री राममूर्ति कैला
प्रधान

श्री वेदव्रत शर्मा
मन्त्री

नवनिर्वाचित प्रधान श्री राममूर्ति कैला तथा नव निर्वाचित मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा को आर्य समाज की कार्यकारिणी, अन्तरग सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि तथा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के लिए प्रतिनिधि चुनने का अधिकार सर्वसम्मति से दिया गया।

श्री भगवानदास को पितृ शोक

श्री हरकेश सिंह का ९४ वर्ष की आयु मे अपने पैतृक निवास स्थान गाव तेड़ा, जि० मेरठ मे १२ जून को साय ७ बजे निधन हो गया। आप आर्य समाज मालवा सराय के पूर्व मन्त्री एव पाक्षिक समाचार के सम्पादक श्री भगवान दास के पिताश्री थे।

उल्लेखनीय है कि लगभग ६० वर्ष पूर्व गाव तेड़ा मे पौराणिकों एव आर्य समाज के विद्वानो मे जबरदस्त एक शास्त्रार्थ हुआ था जिससे प्रभावित होकर श्री हरकेश सिंह अपने गाव के साथियो के साथ आर्य समाज में प्रविष्ट हो गये थे और उसके बाद वे आर्य समाज के दीवाने हो गये।

श्री हरकेश सिंह की अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कर दी गई। अनेक सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने उन्हे अन्तिम श्रद्धाजलि दी। रस्म पगड़ी एव शान्ति यज्ञ गाव तेड़ा में २२ जून को हुआ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत को आत्मा को शान्ति एव परिवार जनो को दुख सहने की शक्ति प्रदान करे।

तंबाकू से हानियां

विश्व में प्रति वर्ष कुल ३० लाख मौतें (विश्व की कुल मौतों का ६ प्रतिशत) तबाकू से होती है जो कि सभी उद्दीपक पदार्थों से होने वाली कुल मौतो से भी अधिक है। इस समय विकसित देशो मे कैंसर के कुल मामलों में से ३० प्रतिशत का कारण धूम्रपान है।

यदि तबाकू के सेवन की आदतें ऐसे ही जारी रहीं तो तबाकू से होने वाली मौतो की दर २०२० के दशक मे एक करोड़ प्रतिवर्ष तक बढ़ जाने का अनुमान है। इनमे से ७० लाख मौतें विकासशील देशो में होगी।

यदि धूम्रपान की आदतो मे कमी नहीं आती तो अब से तीन दशक बाद विकासशील देशों में तबाकू के कारण होने वाली समय पूर्व औसत मृत्यु की सख्या से कहीं अधिक होगी।

भारत में प्रतिदिन करीब २२०० व्यक्ति तबाकूजन्य बीमारियो से मरते हैं। १५ वर्ष से अधिक उम्र के ११४ करोड़ भारतीय तबाकू सेवन के आदी हैं। इनमें से एक तिहाई महिलाए हैं।

भारत मे ३१ प्रतिशत वयस्क पुरुष और १ प्रतिशत वयस्क महिलाए धूम्रपान करते हैं।

भारत में मुख कैंसर के मामलो की सख्या विश्व मे सर्वाधिक है। यदि तबाकू की खपत इसी दर से जारी रही तो वर्ष २००० तक करीब २४ लाख लोग तबाकू से सम्बन्धित कैंसर से पीड़ित होगे।

यदि धूम्रपान की यह प्रवृत्ति जारी रही तो इस समय जीवित ५० करोड़ लोग यानी विश्व की आबादी का ९ प्रतिशत से अधिक हिस्सा तबाकू के कारण मारा जाएगा।

जिन देशों में सिगरेट पीने का प्रचलन है वहां से ८५ प्रतिशत पुराने श्वसनी-शोथ और २० से २५ प्रतिशत दिल की बीमारियों और आघातों का कारण धूम्रपान ही है।

विश्व के सभी भौगोलिक क्षेत्रो मे से एशिया में सिगरेट की खपत सबसे ज्यादा है। १९९० मे एशिया मे २७ हजार करोड़ सिगरेटें फूक दी गई।

विश्व में इस समय करीब एक अरब धूम्रपान प्रेमी है जो प्रतिवर्ष पांच हजार करोड़ से ज्यादा तैयार सिगरेटे फूक देते हैं। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि भारत मे सिगरेट की खपत १९८४ के ९३ अरब सिगरेटो के मुकाबले तेजी से घटकर १९९० में ७० अरब सिगरेट हो गई है। लेकिन बीड़ियो की बिक्री मे वृद्धि हुई है और यह अनुमानत ९०० अरब प्रति वर्ष है।

औद्योगिक देशो मे प्रति व्यक्ति तबाकू की खपत में गिरावट की प्रवृत्ति है १९९२ से २००० के बीच अमरीका और कनाडा में सिगरेट की खपत करीब १५ प्रतिशत तक और उत्तरी यूरोप में दो प्रतिशत से अधिक गिरने की आशा है।

चीन में सिगरेट की खपत विश्व के किसी भी अन्य क्षेत्र के मुकाबले ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। विकसित देशो में यदि सिगरेट की खपत में एक कमी आती है तो चीन में तीन की बढ़त होती है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष । ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक २१   सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९५   आषाढ कृ० १० सं० २०५१ ३ जौलाई १९९४

पौड़ी गढ़वाल के पर्वतीय क्षेत्र में आर्य महासम्मेलन का सफल आयोजन

पहाड़ी क्षेत्रों में पशुबलि बन्द कराने और गोहत्या बन्दी के लिए आर्यसमाज का संकल्प

गढवाल २६ जून । आर्य उप प्रतिनिधि सभा गढवाल एव आर्य समाज पौडो की ओर से डी०ए०वी० इण्टर कालेज पौडो के विशाल मैदान मे २४ से २६ जून १९९४ तक आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का प्रारम्भ २४ जून को साय-काल ४ बजे से एक विशाल जलूस निकालकर किया गया। यह जलूस पौडो नगर के प्रमुख बाजारो से निकाला गया जिसमे पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री स्वामी दीक्षानन्द जी एव श्री सत्यानन्द मुजाल विशेष रूप से सम्मिलित हुए। इस जलूस मे हजारो की सख्या म पहाडी क्षत्रो से आये हुए नर नारियो ने भाग लिया।

२५ जून को प्रात काल ध्वजारोहण करते हुए सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उपस्थित जन समूह का सम्बोधित करते हुए कहा कि यह ओ३म् ध्वज किसी देश विशेष अथवा समुदाय का नही है बल्कि समस्त प्राणी मात्र का है। उन्होने इस अवसर पर सुप्रीम-कोट के उस निणय को भी सुनाया जिसमें हरियाणा के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री जगदेव सिद्धान्ती ने अपना लोक सभा का चुनाव ओ३म् ध्वज लगाकर जीता था जिसके लिए उनके विपक्षी उम्मीदवार ने सुप्रीम कोट मे याचिका दायर की थी कि इन्होने अपने चुनाव प्रचार मे ओ३म् ध्वज का प्रयोग किया है, इस पर सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति श्री गजेन्द्र गडगर ने यही फैसला सुनाया था कि ओ३म् तो परमात्मा का नाम है इसे साम्प्रदायिक नही माना जा सकता, और जगदेव सिद्धान्ती मुकदमा जीत गये। स्वामी जी ने ओ३म् ध्वज के महत्व को समझाते हुए कहा कि इसका भगवा रग त्याग और बलिदान का प्रतीक है तथा इसके बीच मे बना हुआ सूर्य मानव मात्र को अधरे से प्रकाश की ओर प्रेरित करता है और इसमे लिखा हुआ ओ३म् परमात्मा का नाम है इसलिए मानव मात्र को ओ३म् ध्वज से प्रेरणा लेनी चाहिए।

इस आर्य महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए हजारो की सख्या मे आये हुए पहाडी क्षत्रो के नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि आर्य समाज इस आगामी वर्ष मे मुख्य रूप स तीन कार्यक्रमो पर विचार कर रहा है—

(१) पौडी तथा गढवाल क्षेत्रो मे होने वाली पशुबलि को रोकना।

(२) गोहत्या बन्दी।

(३) बूचडखाने बन्द कराने हेतु आन्दोलन करना।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के इन कार्यक्रमो को सफल बनाने के लिए समस्त राष्ट्रवादी जनता को एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि गोहत्याबन्दी के आन्दोलन के लिए आर्य समाज को भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के श्री रज्जू भया सनातन धर्म सभा के श्री प्रमचन्द गुप्ता लद्दाख के लामा लोग्ज जत्थेदार रिछपालसिह, जैनियो के साहू अशोक जैन आदि अनेक प्रमुख नेताओ के आश्वासन मिल चुके हैं जो इस आन्दोलन मे आर्य समाज के पूरा सहयोग करेंगे। श्री ज्ञानी जैलसिह जी ने तो यहा तक कहा है कि इसके लिए वे बलिदान करने एव जेल जाने के लिए भी तैयार हैं। स्वामी जी ने कहा कि सार्वदेशिक सभा की १० जुलाई १९९४ को दिल्ली मे आयोजित होने वाली अन्तरग बैठक मे इन कार्यक्रमो को कार्य रूप देने पर विचार किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि हैदराबाद के निकट चलाये जा रहे अलकबीर नामक बूचडखाने को बन्द कराने के लिए आर्यसमाज की ओर से प्रयास जारी हैं और यदि सम्भव हुआ तो उसके लिए समूचा हिन्दू समाज एकजुट होकर आन्दोलन करेगा

सम्पादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

केन्द्र सरकार की भाषाई चुप्पी

हमारी केन्द्रीय सरकार बड़ी साधु सरकार है। उसे हिन्दुस्तान की भाषाई दुनिया से कुछ लेना-देना नहीं है। बस कुछ खास मौकों पर आशीर्वाद दे देती है। कुछ लोगों को कुछ झुनझुने थमा देती है, शाबास बच्चे, खूब राजभाषा की उन्नति की। पर जहां तक घोषित कार्यक्रमों के भी कार्यान्वयन का प्रश्न आता है, वहां पल्ला झाड़ लेती है—मोहि काहू परा रे भाई (मुझे क्या पड़ी है, भाई)। उसने केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय आज तक नहीं बना के दिया, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का जैसा संचालन कर रहो है, उस पर टिप्पणी न करें, यही अच्छा है। यह संस्थान अभी तक मानक व्याकरण, मानक कोष और मानक साहित्य इतिहास तक नहीं तैयार करा सका। मारीशस में पिछले वर्ष विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ और मारीशस के संस्कृति मन्त्री और भारतीय सरकारी प्रतिनिधि मंडल के नेता के आश्वासनपूर्ण आग्रह पर तत्काल विश्व हिन्दी सम्मेलन की स्थायी समिति नहीं बनी तो आज तक नहीं बनी। भारतीय भाषाओं का विकल्प स्वीकार करने के लिए संसद ने प्रस्ताव पारित किया। विपक्ष के नेताओं ने धरना दिया, पर राजभाषा मन्त्रालय नहीं, कार्मिक मन्त्रालय अड़ गया और लोग मरे-जिये, इससे क्या अंग्रेजी का वर्चस्व रखना है। अंग्रेजी माध्यम के कान्वेंटी स्कूलों के निकले लोगों का वर्चस्व रखना है, ठेठ देसी आदमी को एक तरह से द्वितीय श्रेणी का नागरिक बना के रखना है। अंग्रेजी कहा तो हटा दी जाये, जहां वह विकल्प की भी गुंजाइश देने को तैयार नहीं है।

हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत भी केवल लालसा के कुछ शब्दों से सन्तुष्ट रहने को बाध्य है। तीन वर्षों से एक उच्चाधिकार आयोग के गठन का विवेचन लटका हुआ है, जो केवल संस्कृत ही नहीं, पालि प्राकृत, अरबी, फारसी, प्राचीन तमिल और भोट भारत में प्रभावी सभी क्लासिक भाषाओं के विकास और उनकी सम्भावनाओं के नये अन्वेषण का कार्य करेगा साथ ही इन भाषाओं की पारम्परिक ज्ञान-पद्धतियों का आधुनिक ज्ञान के साथ समन्वय स्थापित करेगा। चूंकि संस्कृत इन भाषाओं में अपने प्रसार और वाङ्मय की विपुलता के कारण शीर्ष पर है और चूंकि संस्कृत आज स्वयं अभिजात के रूप में कठघरे में खड़ी कर दी गयी है, सरकार ने उस प्रश्न से मुंह मोड़ लिया है। सरकार शायद यह सोचती है कि हमारी आर्थिक नीति के कार्यान्वयन में ये भाषाएं और परम्पराएं कुछ बाधक होंगी या शायद यह सोचती हैं कि जनता को हम जैसी पाटी पढ़ायेंगे, वैसी पढ़ेगी, पैसा तो हमारे पास है। इसीलिए वह कोई रुचि नहीं दिखलाती।

अभी अभी समाचार मिला है किसी गश्ती चिट्ठी के बारे में कि कुछ एजेंसियों को चिंता है कि हिन्दी का प्रसार होने से कान्वेंट में पढ़ने वालों का प्रतिशत सेवाओं में कम हो जाएगा। अभी इंजीनियरिंग के तकनीकि संस्थानों में हिन्दी और भारतीय भाषाओं के विकल्प के कारण अंग्रेजी माध्यम से प्रवेश पाने वालों की संख्या में ह्रास हुआ है। अतः बड़े पैमाने पर ऐसी खतरनाक भाषाओं की शक्ति का प्रसार रोकना चाहिए। हम नहीं कहते कि इन एजेंसियों के साथ सरकार की कोई अभिसन्धि है। हम यह भी नहीं मानते कि तैयार है कि सरकार को इनकी जानकारी है, क्योंकि हमारी सरकार जानकारी का काम फुरसत से करती है। परन्तु इतना हमें अवश्य लगता है कि सरकार ऐसी गश्ती चिट्ठी को उसी प्रकार हलके तौर पर लेगी, जैसे वह तमाम विघटनकारी प्रवृत्तियों को लेती रही है। कोई आश्चर्य नहीं, कभी अंग्रेजी मानवाधिकार हनन को आड़ में शरण न मांगने लगे कि दो-दो शताब्दियों से देश की सरस्वती बनी भाषा पर निचले वर्ग के लोग इस तरह के आक्रमण कर रहे हैं और वह आज असहाय है।

इस सबके बाद सोचने को रह जाता है कि सरकार की यह भाषाई चुप्पी क्या जनतन्त्र के स्वस्थ विकास के हित में है, क्या यह चुप्पी असंख्य नवयुवकों की महत्वाकांक्षा के साथ क्रूर उपहास नहीं है और क्या यह उपहास सरकार के लिये आने वालों दिनों में बहुत महंगा नहीं पड़ेगा। दुःख की बात यह है कि भाजपा और जद जैसी पार्टियां भी न जाने किस व्यामोह में अंग्रेजी के दबाव में आती जा रही हैं, वहां भी हिन्दी खतरनाक भाषा होती जा रही है क्या ये राजनैतिक पार्टियां सत्ता के लिए केवल अंग्रेजी को ही सीढ़ी मानकर कुछ कर पायेंगी? समय ही इसका उत्तर देगा।

(नवभारत टाइम्स ११ जून से साभार)

आश्रम में लड़कियों से बलात्कार करने वाला स्वामी रिमांड पर

राजकोट, २१ जून। द्वारका के सनातन सेवा मंडल आश्रम के प्रमुख स्वामी केशवानन्द और उनके निजी सहायक रविन्द्र चौबे को दस दिन की न्यायिक हिरासत में ले लिया गया। उन पर आश्रम के भीतर बच्चियों से बलात्कार का आरोप है। जामनगर के एक मशहूर स्कूल की प्रिंसीपल रक्षाबेन वायदा को भी पकड़ लिया गया है। उनको स्वामी की मदद के आरोप में पकड़ा गया है।

इस रिपोर्ट के मुताबिक स्वामी और उसके सहायक को जब अदालत से लाया जा रहा था तो भीड़ उन पर पत्थर फेंक रही थी।

स्वामी के खिलाफ शिकायत एक डाक्टर ने दर्ज कराई थी। वह स्वामी की हवस का शिकार औरतों के गर्भपात करके उनकी मदद किया करता था। इस पर पुलिस ने कुछ महिलाओं को पूर्ण सुरक्षा का आश्वासन देकर उनकी आपबीती सुनी और उसके आधार पर पूरा मामला बनाया।

पुलिस हरकत में तब आई जब कई महिलाओं और लड़कियों ने स्वामी की शिकायत पर पिछले रविवार को आश्रम पर छापा डाला। स्वामी के कमरे से दो ब्लू फिल्म कैसेट, शेयर सर्टिफिकेट और लाखों रुपये के इन्दिरा विकास पत्र बरामद हुए।

पुलिस सूत्रों के अनुसार स्वामी केशवानन्द के खिलाफ नौ लड़कियों ने बलात्कार और बलात्कार की कोशिश की शिकायत दर्ज कराई थीं। पुलिस सूत्रों ने बताया कि स्वामी पर आश्रम की करीब दो सौ लड़कियों से बलात्कार करने का आरोप है। आश्रम में ही स्वामी एक स्कूल भी चलाता है। इसी आश्रम में राधा-कृष्ण का मशहूर मन्दिर भी है। स्वामी को कल रात पुलिस ने रिमांड पर लिया।

आश्रम से पुलिस ने जो रिकार्ड बरामद किया उसमें स्वामी का आश्रम देखने आने वाले अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सूची भी है। इन अति महत्वपूर्ण लोगों में पूर्व प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई, बाबा आमटे, गुजरात की पूर्व राज्यपाल शारदा मुखर्जी, केन्द्रीय मन्त्री केपी सिंह देव, गुजरात के पूर्व मुख्यमन्त्री अमरसिंह चौधरी, द्वारिका पीठ के स्वामी शंकराचार्य स्वरूपानन्द जी और पूर्व मुख्यमन्त्री स्व० चिमन भाई पटेल भी हैं।

इस मामले को लेकर आज राज्य विधान सभा में भी जबर्दस्त हंगामा हुआ। विपक्ष के भाजपा सदस्यों ने राज्य परिवहन मन्त्री दिलीप परमार से इस्तीफे की मांग की। इन सदस्यों का कहना था कि श्री परमार स्वामी केशवानन्द के साथ मिले हुए हैं। इस पर श्री परमार ने अपना बयान दिया, पर शोर-शराबे के बीच उनकी बात सुनने में नहीं आई।

(२१-६-९४ जनसत्ता से साभार)

एक अनोखी प्रतियोगिता

घर बैठे विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एवं उस पर आधारित प्रश्न पत्र प्राप्त करें और छः मास के भीतर उत्तर भेजकर निम्न पुरस्कार प्राप्त करें।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
३०००) रु०	२०००) रु०	१०००) रु०

पूर्ण विवरण प्रश्न-पत्र एवं प्रवेश शुल्क आदि के लिए मात्र तीस रुपए मनीआर्डर द्वारा—रजिस्ट्रार परीक्षा विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०), ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ को भेजें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

सम्पादकीय

मनु की स्मृति के पीछे क्यों पड़े हो

आर्य समाज के उच्च विद्वान् श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को आर्यसमाज की सदस्यता से पृथक् कर आर्य समाज की वेदी बन्द की गई थी। उन्होंने अपने विचार से कुछ सिद्धान्त बनाकर महर्षि के विचारों से भिन्न मत प्रचारित किया था। इस पर कट्टरपन्थियों ने एक घोषणा की, कि इनकी पुस्तकों को जला दिया जावे। समझदार व्यक्तियों ने कहा कि जलाने से उनके विचार नहीं नष्ट हो जायेंगे। अत: स्वामी जी महाराज पर दबाव डालकर उन पुस्तकों का महर्षि परक संशोधन किया जावे। संशोधन होने पर बीमारी भी दूर हो जायेगी और विचारों में सामञ्जस्य भी बन जायेगा। अन्त में ऐसा ही हुआ।

इस कथन के आधार पर इधर कुछ वर्षों से मनु-स्मृति को चौराहों पर फाड़ा व जलाया जाता रहा है और ब्राह्मण समुदाय को इसका आक्रोश बनाया जाता है। प्रश्न है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सिद्धान्त पक्ष को सबल बनाने हेतु वेदों, ब्राह्मणों, गृह्यसूत्रों के बाद यदि किसी ग्रन्थ को प्रमाण रूप में प्रस्तुत किया है तो वह ग्रन्थ मनु-स्मृति ही है? यदि यह ग्रन्थ भूलों से भरा था तो इस पर महर्षि ने इतना जोर क्यों दिया। इसका तिरस्कार कर प्रमाण कोटि से बाहर रखते?

वस्तुत: बात को न समझने से भ्रम फैलाया गया है और वास्तविकता को छिपाकर समाज में विस्फोटक स्थिति पैदा की जा रही है। मनु-स्मृति को जलाकर इतिहास या ग्रन्थ की उपयोगिता को नहीं मिटाया जा सकता है।

भारतीय वर्णित मन्वन्तरों में वर्तमान काल तक प्रथम स्वायंभुव, द्वितीय स्वारोचिष, तृतीय उत्तम, चतुर्थ तामस, पंचम-रैवत, षष्ठ-चाक्षुष और सप्तम वैवस्वत नाम के सात मनु और सात मन्वन्तर बीत चुके हैं। स्वायम्भुव मनु को मानव का आदि पुरुष राज्य व्यवस्था का प्रथम प्रवर्तक एवं धर्म का प्रथम संस्थापक कहा गया है।

स्वायम्भुव मनु ही प्रथम आर्य नरेश थे जिन्होंने विश्व में मानव स्वभाव के नैसर्गिक भेदों के अनुसार गुण-कर्म स्वभाव के आधार पर वर्णों में सामञ्जस्य के लिए "मनुस्मृति" द्वारा प्रथम प्रवर्तनात्मक वर्ण व्यवस्था की संरचना की। वैवस्वत मनु की मनुस्मृति द्वारा प्रणीत वर्ण व्यवस्था वर्तमान में विकृत होकर अपना हिन्दू या मानव समाज में विद्यमान है।

मनुस्मृति का महत्व ही धर्म शब्द का अर्थ बोधन करने से अर्थ का व्यापक है। अगर हम तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक स्थिति के सन्दर्भ में स्मृतियों का वास्तविक उद्देश्य और मनुस्मृति का तात्पर्य समझ सकें तो अति उत्तम आधार है इन पर चार मूल स्रोतों की चर्चा की है मनु ने लिखा है कि—

वेद-स्मृति सदाचार और स्वात्म. करण—

वैदिक मान्यताओं में धर्म व्यवस्था का स्वरूप धर्म से सम्बन्धित चार मूल स्रोतों का महत्व भी बढ़ जाता है।

देश काल परिस्थिति के अनुसार राज्य व्यवस्था का प्रजा के साथ सामञ्जस्य भाव ही है कोई किसी को सता न सके। इसी कार्य के लिए ही राजा अलौकिक शक्ति से सम्पन्न बनाया गया था शासन के रूप में राजा को अलौकिक दण्ड प्रदान किया गया। किन्तु यह व्यवस्था भी की गई कि राजा के लिये दण्ड का उचित प्रयोग ही श्रेयस्कर है राजा सदा विनयी बना रहे। अनुभवी ब्राह्मणों से सदा शिक्षा ग्रहण करें। इन्द्रियों पर संयम, कामज-क्रोधज व्यसनों से स्वयं की रक्षा करें। परन्तु आज विचारणीय यह है कि मनुस्मृति के और याज्ञवल्क्य स्मृतियों के सिद्धान्त हमारे समाज के वर्तमान सन्दर्भ मे कितने प्रासंगिक है।

याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार स्मृतियों की भाषा लौकिक है स्मृति साहित्य मे मनु के बाद "याज्ञवल्क्य स्मृति" महत्वपूर्ण स्मृति है।

भारतीय साहित्य में मनु प्रोक्त स्मृति का मनुस्मृति, मनुसंहिता, मानव धर्मशास्त्र, मानव शास्त्र आदि कई नामों से उल्लेख आता है। मनुस्मृति भारतीय साहित्य में सर्वाधिक धर्मशास्त्र है—स्मृतियों में इसका उच्च स्थान है यह भौतिक अथवा आध्यात्मिक शिक्षाओं का मिला जुला अनूठा धर्मशास्त्र है। मनु० व्यक्ति और समाज के लिए धर्म शास्त्र एवं आचार शास्त्र है। साथ ही सामाजिक व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से चलाने के लिए संविधान भी है इसकी प्राचीनता एवं वेदानुकूलता भी एक कारण है।

उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि आखिर स्मृतियों का आज के सन्दर्भ मे कहीं न कहीं विशिष्ट स्थान अवश्य ही है आज केवल भारत में ही नहीं विश्व के अन्य देशों में भी अराजकता, आतंकवाद तथा अनेक सामाजिक बुराइयां फैली हैं।

स्मृतियों की रचना जिस समय और जिन परिस्थितियों में हुई, तब तब हम यह मानने में विवश रहे होंगे [illegible] ब्राह्मणों द्वारा संचालित रही होगी। किन्तु आज लोकतन्त्रात्मक प्रणाली होने के कारण हम मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य पाराशरस्मृतियों के मूल सिद्धान्त से विमुख हो चुके हैं। परिणामत: आज इन स्मृतियों में जो गड़बड़ी मिल रही है इससे स्पष्ट है कि स्मृतियां समयानुसार भिन्न हैं और हम उससे पराङ्मुख हैं। अत यह स्मृतियां अप्रासंगिक हो सकती हैं क्योंकि परस्पर में विरोधाभास है।

अत: इस विकृति से परिवर्तन में यह बिल्कुल स्पष्ट है कि समय के परिवर्तन के साथ समाज मे जो परिवर्तन आना स्वाभाविक है परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि हम अपने मूल सिद्धान्तों से हटकर महापुरुषों से प्रतिपादित आचार-धर्म संहिता से ही दूर हो जायें ऐसा कदापि नहीं?

आज की कानूनी अड़चनों से कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि हम अपनी मूल संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं आज के युग मे तथ्यों को तोड़ना, मरोड़ना बहुत आसान है। इसी से आज मनु की स्मृति के हृदयंगम बातों को न समझकर ही मानव स्वभाव विकृत होकर मनु की स्मृति को फाड़कर जला रहा है उसके तथ्यों को समझने का प्रयास नहीं कर रहा मनु के नाम पर विघटन पैदा किया जा रहा है।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती पूर्ण रूप से स्वस्थ

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को जून १९९४ के दूसरे सप्ताह में दिल का हल्का दौरा पड़ा था, जिस कारण उन्हें उपचार के लिए प० त० हस्पताल, नई दिल्ली में भर्ती होना पड़ा। प्रभु कृपा और आर्य जनों की शुभकामनाओं से स्वामी जी लगभग एक सप्ताह अस्पताल में रहने के बाद अब अपने पूर्व निर्धारित सभी कार्यक्रमों में भाग लेने लगे हैं। उनके स्वास्थ्य के विषय में सभा कार्यालय में सैकड़ों लोगों ने पत्र भेजकर जानकारी मांगी है उन सबके पत्रों का अलग अलग उत्तर देना सम्भव नहीं हो रहा है। इसलिए इस विज्ञप्ति के माध्यम से जानकारी देते हुए आप सभी शुभचिन्तकों के प्रति आभारी हूं।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री

उच्चतम न्यायालय द्वारा आत्महत्या का अन्ध समर्थन .

आत्महत्या करें या न करें ?

—विमल वधावन एडवोकेट मुख्य सम्पादक, कानूनी पत्रिका

भारतीय दण्ड संहिता की धारा ३०९ के तहत आत्महत्या का प्रयास एक दण्डनीय अपराध है जिसके लिए एक वर्ष की सजा या जुर्माना अथवा दोनो हो सकते है। भारत के उच्चतम न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसले में इस धारा को असंवैधानिक करार करते हुए सरकार को आदेश दिया कि इस क्रूर और अविवेकपूर्ण प्रावधान को दण्ड की किताब से हटा दिया जाए न्यायमूर्ति सर्वश्री आर० एम० सहाय और बी० एल० हंसारिया के इस फैसले में कहा गया है कि आत्महत्या एक मनोवैज्ञानिक समस्या है अत आत्महत्या के प्रयास से बचे लोगो को मधुर शब्दो और बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह की आवश्यकता होती है न कि मुकदमें की बेदर्द कार्यवाही के बाद जेल स्टाफ के कड़े व्यवहार की।

यहा तक तो हम समझते है कि जजों का दृष्टिकोण मानवीय था, परन्तु जलजाये में हमारे न्यायाधीश आवश्यकता से कुछ अधिक टिप्पणियां आत्महत्या के विषय में कर गये जिन्हें किसी भी दृष्टि से मानवीय तो क्या सामाजिक भी नहीं कहा सकता। न्यायमूर्ति श्री हंसारिया ने जिस प्रकार आत्महत्या रूपी कमजोरी को एक सुशोभित कर्म के रूप में प्रस्तुत किया है वह न्याया जमीन नहीं करता। खण्डपीठ का कहना है कि—

(१) आत्महत्या को धर्म, नैतिकता या सार्वजनिक नीति के खिलाफ नहीं बताया जा सकता।

(२) आत्महत्या की कोशिश समाज के लिए घातक कार्य नहीं कहा जा सकता।

यदि विद्वान न्यायमूर्तियो द्वारा दिये गये उक्त दोनो कारणो पर समाज विश्वास करके तदनुसार आचरण प्रारम्भ कर दे तो देश फिर से २०० वर्ष पुरानी अवस्था में आ जाएगा इसमें कोई दो राय नहीं। यदि आत्महत्या धर्म, नैतिकता या सार्वजनिक नीति के खिलाफ न मानी जाए तो भारतीय समाज फिर सती प्रथा को आज लगभग जड़ से उखाड़ चुका है यदि वह फिर प्रारम्भ होती है तो उसे कैसे रोका जाएगा। कोई भी सामाजिक बुराई धार्मिक उपदेशो और सामाजिक खिलाफत के डर से नहीं अपितु कानून के डर से जल्दी दूर होती है। आत्महत्या भी एक सामाजिक बुराई है। विद्वान न्यायाधीश आत्महत्या के प्रयास से बचे लोगो पर मुकदमों में ढील दे सकते थे, सजा के समय उनके लिए जेल में विशेष व्यवस्था का आदेश दिया जा सकता था उन पर मुकदमा न चलाया जाए जैसा कि धारा ३०९ समाप्त करने से होगा इसमें भी समाज को कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु आत्महत्या की अवांछनीय वकालत या समर्थन जिस प्रकार से न्यायाधीशो ने किया है वह अच्छा नहीं है।

मुकदमों और जेल की पीड़ा को कम करने में उत्सुक न्यायाधीश मानवीयता के लबादे को ओढ़ते-ओढ़ते इतने भावुक हो गये कि उन्होंने पश्चिम की व्यक्तिवादी अवधारणा का इतना अन्ध समर्थन कर दिया कि वे भारतीय संस्कृति में मनुष्य के एक सामाजिक जीव होने की बहुमूल्य अवधारणा को ही भूल गये। यूरोप में हर व्यक्ति अपने आप में स्वतन्त्र है। वहां व्यक्ति अपने परिवार को सारी उम्र नहीं पालता। बच्चों की पढ़ाई का खर्च एक सीमा तक दिया जाता है। स्त्रियां अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए पति की कमाई पर निर्भर नहीं। उन परिस्थितियों में यदि परिवार का एक व्यक्ति आत्महत्या कर भी लेता है तो उसे समाज तो क्या उसके परिवार पर भी कोई असर नहीं होता।

इसके विपरीत भारत मे परिवार और समाज के मिलकर चलने की समाजवादी अवधारणा आज भी काफी मजबूत है। यहां परिवार का मुखिया अपने सारे परिवार को पालता है। लगभग ७० प्रतिशत परिवारों में अब भी महिलाएं अपनी तथा घर की आवश्यकताओं के लिए पति पर निर्भर है, माता-पिता बच्चों के बड़े होने तथा भविष्य में उनके द्वारा घर की व्यवस्था का भार वहन करने की आशा करते है। भारत में लगभग हर व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी न किसी सामाजिक कार्य से जुड़ा है। अत ऐसे व्यक्ति द्वारा आत्महत्या कितने ही लोगो के जीवन तथा कार्यकलापों को प्रभावित करेगी। ऐसे समाज में आत्महत्या को धर्म, नैतिकता और सामाजिकता के विरुद्ध बताना अत्यन्त आवश्यक है। पूरे समाज को अपने पर निर्भर करने के बाद हमारा जीवन एक व्यक्तिगत खेल-तमाशा नहीं रह जाता वह एक सार्वजनिक व्यवस्था है। इसको नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं है।

जीवन एक ताना बाना है जिसमें असंख्य जीव जुड़े है। एकान्तिक जीवन कोई जीवन नहीं है। इस दृष्टि से फैसले का वह हिस्सा जिसमें आत्महत्या का अन्ध समर्थन किया गया है, न्यायाधीशों की व्यक्तिगत राय मात्र है जिसे भारतीय समाज कभी स्वीकार नहीं करेगा।

संस्कृत आगामी दस वर्षों मे विश्वभाषा होगी

संस्कृत भाषा आगामी दस वर्षों मे विश्व भाषा होगी। यह भविष्यवाणी हिन्दी दैनिक नवभारत टाइम्स के मुख्य सम्पादक डा० विद्या निवास मिश्र ने १० दिवसीय अखिल भारतीय संस्कृत व्यवहार शिविर में प्रशिक्षणार्थियो को सम्बोधित करते हुए की। डा० मिश्र ने आगे कहा कि संस्कृत के ग्रन्थ तथा अनूदित ग्रन्थ पूर्ण विश्व में फैले हुए है। यह तर्क पूर्ण भाषा है। अर्थोभिव्यक्ति के लिये अनेक विकल्प है। संस्कृत भाषा की दृष्टि समग्र एवं समष्टिगत है। संस्कृत मे निहित ज्ञान राशि एक मात्र पुण्य वस्तु, रुचि तथा संयोजन है। इसमे सहयोग की भावना है न कि द्वेष और ईर्ष्या की। यह कल्याणकारी भाषा है जो सबको जोड़ती है तोड़ती नही।

दिल्ली सरकार के खाद्य एवं सम्भरण मन्त्री श्री लालबिहारी तिवारी ने भी कल साय शिविर का निरीक्षण किया और प्रशिक्षणार्थियो के साथ रात्रि भोज मे शामिल हुए।

उक्त शिविर विकासपुरी स्थित ममता माडल स्कूल मे १७ जून से चल रहा है। इसका आयोजन दिल्ली सरकार की संस्कृत अकादमी तथा भारत संस्कृति परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान मे किया गया है।

दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव श्री श्रीकृष्ण सेमवाल ने १८ जून को शिविर प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि संस्कृत भाषा सरल भी है और विशिष्ट भी। साहित्य मे एक ओर विद्वानो को भी चमत्कृत करने वाला अंश है तो दूसरी ओर सहज में ही सामान्य जन को सरसता देने वाला साहित्य है। हमारे प्राचीन संस्कृत ग्रन्थो व शास्त्रों में वर्णित गणित आज के विकसित गणित से बहुत आगे है।

श्री हरिबाबू कंसल ने १९ जून को शिविर के प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए इस बात पर बल दिया कि हिन्दी के माध्यम से संस्कृत की प्रगति सम्भव है, इसलिए समस्त काम हिन्दी में ही होना चाहिये।

—डा० विद्या निवास मिश्र

विद्यार्थी और सदाचार

—पं० रामचन्द्र देहलवी

ओ३म् । व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

यजु० १९ । ३० ।।

(व्रतेन) व्रत के द्वारा मनुष्य (दीक्षाम्) अधिकार को (आप्नोति) प्राप्त करता है और (दीक्षया) दीक्षा में (दक्षिणाम्) चतुरता को (आप्नोति) प्राप्त करता है और (दक्षिणा) दक्षिण से (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त करता है तथा (श्रद्धया) श्रद्धा से (सत्यम्) सत्य (आप्यते) प्राप्त किया जाता है ।

आर्य नवयुवको !

इस मन्त्र में एक बड़ी विचार की बात है कि व्रत से दीक्षा प्राप्त होती है । जब कोई भी मनुष्य किसी कार्य को करने के लिए हृदय से तैयार हो जाता है और निरन्तर विघ्न बाधाओं के आने पर भी पीछे नहीं हटता तो उसे दीक्षा प्राप्त होती है, प्रवेश प्राप्त होता है । आजकल बच्चो में पढ़ने की रुचि नहीं है और इसका कारण है कि उन्होंने पढ़ने का व्रत नहीं लिया । यदि व्रत लेते तो पढ़ते और सीखते क्योंकि जिस बात का व्रत ले लेते हैं उसे बिना सिखाये सीख लेते हैं । उदाहरणतः, व्यसनों का कोई स्कूल नहीं और न ही कोई अध्यापक है । इसी प्रकार गाली देना सिखाने का तथा चरस और भङ्ग पीना सिखाने का भी कोई विद्यालय नहीं है, बिना अध्यापक के सीख जाते हैं । हां सिनेमा के लिए तो कह देंगे कि सीख कर आए हैं । परन्तु जितनी जल्दी वे सिनेमा की बातों को सीखते और याद कर लेते हैं, इतनी जल्दी विद्यालय के पाठ को नहीं सीखते । सिनेमा के गाने बहुत शीघ्र याद कर लेते हैं । एक बार रघुनन्दन जी एक विद्यालय में ले गये और एक विद्यार्थी से कहा कि गाना सुनाओ । एक छात्र खड़ा हुआ और गाना प्रारम्भ किया—

'मेरा मन डोले मेरा तन डोले'

मैंने कहा, "यह आप बच्चो को क्या सिखा रहे हैं ?" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं मीठी दवा देकर बलवान बनाना चाहता हूं ।'

यह मीठी दवा नहीं, मीठा विष है । इससे हमारी पीढ़िया नष्ट होती जा रही हैं । लड़को की तो बात ही क्या, अब लड़कियो तक को यह गाना याद है तो इसका अर्थ यह हुआ कि माता पिता और अध्यापक सब अपराधी हैं । स्कूलो और कालेजो में चले जाइये, आपको पता लग जायेगा कि बच्चों की प्रवृत्ति अपने सुधार मे नहीं । परन्तु कुछ बच्चे अपनी उन्नति का ध्यान रखते हैं । यदि ध्यान दिया जाय तो यह प्रवृत्ति उन्नत हो सकती है ।

जब किसी भी कार्य के लिए व्रत लिया जाता है, दृढ़ संकल्प कर लिया जाता है तो उस कार्य में दीक्षा हो जाती है । फिर उस दीक्षा से दक्षिणा प्राप्त होती है । दक्षिणा का अर्थ चरण छूने वाली दक्षिणा नहीं है, अपितु दक्षिणा का अर्थ है कि उसे चतुरता प्राप्त होती है, उस कार्य में उत्साह प्राप्त होता है । दीक्षा से कुछ न कुछ प्राप्त होता है और जब दक्षिणा मिल गई तो श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है । श्रद्धा का अर्थ श्रत्+धा=सत्य का धारण करना, सच्चाई में धारणा—Maintenance in truth Settlement in truth. जब सत्य धारणा हो जाती है तो फिर असत्य भाषण समाप्त हो जाता है । आज विद्यार्थी की सत्य में धारणा नहीं है इस लिए बात बात पर झूठ बोला जाता है । अध्यापक घर के लिए काम देता है । दूसरे दिन पूछता है, "काम कर लिया ?" तो विद्यार्थी उत्तर देते हैं 'हां कर लिया" परन्तु जब अध्यापक एक बच्चे से पूछता है कापी लाये ? तो कहता है "घर भूल गया" अध्यापक कहता है, 'घर से लाओ ।" तो विद्यार्थी तुरन्त बहाना बना देता है, माता जी "घर पर नहीं है ।" सत्य के न होने से विद्यार्थियों मे से सच्चाई और ईमानदारी जाती रही है । इसका परिणाम पतन ही क्या है । सच्चाई को प्राप्त करने का एक ही उपाय है—सत्य में धारणा ।

एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायेगी । एक बच्चा खेलता हुआ लालटेन की चिमनी को हाथ लगाना चाहता है । एक बुद्धिमान व्यक्ति वहां बैठा है । वह जानता है कि बच्चा हाथ लगा देगा तो उसका हाथ जल जायेगा, अतः वह उसे लालटेन के पास से हटा देता है । बच्चा पुन खेलता हुआ हाथ लगाने के लिए वहां पहुच जाता है और हाथ लगाना चाहता है वह व्यक्ति फिर हटा देता है । बच्चा तीसरी बार फिर हाथ लगाने पहुचता है । क्योंकि उसे यह पता नही कि चिमनी को हाथ लगाने से हाथ जल जायेगा । वह चिमनी को हाथ लगा देता है । जब हाथ लगा दिया, तब श्रद्धा हो गई, सत्य मे धारणा हो गई । अब यदि कोई व्यक्ति उस बच्चे का हाथ पकड़कर चिमनी को लगाना चाहे तो वह पीछे हटेगा, क्योंकि अब उसकी सत्य में धारणा हो गई है । परन्तु जहां कोई बच्चा या बड़ा व्यक्ति शारीरिक कष्ट भोग कर मानता है, वह मानना अच्छा नहीं है । जैसा बुद्धिमान बताए उसी प्रकार मान लेना ही श्रेष्ठ है । उदाहरण के लिए एक शराबी से कहें कि शराब पीना अच्छा नहीं, इसके पीने से मुह से दुर्गन्ध आती है, फफड़े खराब हो जाते हैं धन नष्ट होता है, अतः इसका पीना छोड़ दो, तो वह कहता है—छूटती नहीं । उसे शराब की हानियां बताई जाती हैं और समझाया जाता है कि शराब के नशे में ऐसी अवस्था हो जाती है कि शराबी नालियो मे गिर पड़ता है और उसके मुंह को कुत्ते चाटते हैं । तब शराबी कहता है—जब ऐसी अवस्था होगी तो छोड़ देंगे । परन्तु इसको शारीरिक कष्ट भोग कर छोड़ना बुद्धिमानी नहीं ।

इसके साथ ही एक बात और भी स्मरण रखने की है । तुम मे श्रद्धा तो अवश्य होनी चाहिए, श्रद्धा का अर्थ अन्धविश्वास नही है ।

आप कुमार हैं और आपको सदाचार की शिक्षा देनी है । कुमार का अर्थ है कामयते भोगान् इति कुमार.—'जो भोगों की कामना करे उसे कुमार कहते हैं । छोटे बच्चो को, मेरे बाल ठीक हैं या नहीं, कुर्ते के बटन ठीक लगे हैं या नहीं, कपड़े अच्छी प्रकार साफ हैं या नहीं—इत्यादि बातो का विशेष पता नही होता । जब बच्चा बड़ा होकर कुमार बनता है, तो वह बालों की ओर भी ध्यान देता है, उनमे प्रतिदिन कंघी करता है । कपड़ो को भी स्वच्छ रखता है परन्तु आज कुमारों में भी अति हो गई है जो ठीक नहीं क्योंकि Excess of every thing is bed—किसी भी बात में अति का होना बुरा है । आचार मे भी यदि अति हो जाये तो अत्याचार हो जाता है । प्रत्येक कुमार को अपने दांत स्वच्छ रखना चाहिए नाखून भी ठीक हों बढ़े हुए न हो, कपड़े भी स्वच्छ हो, बालों में तेल भी लगा हुआ हो । यह सब कुछ ठीक है क्योंकि कुत्सित मारयति इति कुमार.' जो बुराइयो को मारता है उसका नाम कुमार है । परन्तु ये सब बातें मर्यादा में रहनी चाहिएं ।

अब तो [illegible] जूता, वस्त्र आदि उसकी स्वच्छता का ध्यान रखते हुए सफाई से रहें परन्तु कोई कुत्सित बात नहीं होना चाहिये । आप स्वच्छता से रहें परन्तु स्वच्छता सजावट में नहीं आनी चाहिए अन्यथा गाड़ी का Derailment हो जायेगा—पटड़ी से नीचे उतर जायेगी ।

संसार मे सब अच्छे बनना चाहते हैं परन्तु क्या भलाई स्वाभाविक वस्तु है ? एक व्यक्ति धर्मात्मा है तो इसीलिए कि वह धर्म का आचरण करता है । एक व्यक्ति धनी है तो इसलिये कि उसने धन का संचय किया है । एक व्यक्ति विद्वान तो है इसलिए कि उसने विद्या इकट्ठी की है । ये सभी बातें स्वाभाविक नहीं हैं । यदि ये बातें स्वाभाविक होतीं तो धर्मात्मा व्यक्ति धर्मात्मा कहलाता ही नहीं. जैसे कुत्ता भी स्वामी भक्त है और नौकर भी—परन्तु नौकर का दर्जा कुत्ते की अपेक्षा ऊंचा है क्योंकि कुत्ते में स्वभाव से स्वामिभक्ति है । कुत्ते को डंडा मारो तो वह पूंछ हिलाता हुआ स्वामी के पास आ जाता है परन्तु मनुष्य अविश्वास को रोककर विश्वास को बाहर लाता है इसलिए वह प्रशंसा के योग्य है ।

(क्रमश)

सत्य सनातन वैदिक धर्म

लेखक : रामविलास लखोटिया

विश्व का प्राचीनतम धर्म सनातन धर्म है। जब से धर्म का प्रादुर्भाव इस विश्व में हुआ तब से ही मानव जीवन के मार्गदर्शन हेतु ईश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान को मुनियों ने सुना और जिसे वेदों में लिखा गया, वही धर्म सनातन धर्म के नाम से कहलाता है। सनातन का अर्थ है कि जो प्रारम्भकाल से चला आ रहा है और जो प्राचीनतम है। इसे ही बोलचाल की भाषा में "हिन्दू धर्म" के नाम से भी पुकारते हैं। सनातन धर्म की विस्तृत व्याख्या उपनिषदों और स्मृति ग्रन्थों में ऋषियों द्वारा हुई है। सनातन धर्म के सिद्धांत समस्त प्राणी मात्र के लिए लागू होते हैं। उनमें देश, काल और जाति आदि के अनुसार कोई भी भेदभाव नहीं है। सनातन धर्म किसी विशिष्ट देवता आदि की पूजन-पद्धति पर आधारित नहीं है। इसमें एक तरफ आर्य समाज के व्यक्ति सम्मिलित हैं तो दूसरी ओर शिव, विष्णु, गणेश, सूर्य एवं अन्य देवी-देवता की पूजा करने वाले भी सम्मिलित हैं। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि सनातन धर्म वास्तव में सार्वभौमिक है जबकि कई अन्य धर्म कुछ विशिष्ट व्यक्तियों पर आधारित हैं। प्रस्तुत लेख में कुछ उदाहरणों और उद्धरणों द्वारा यह बताने का प्रयास किया गया है कि सनातन धर्म सार्वभौमिक है और इसके सिद्धांत प्रत्येक जाति और देश के मनुष्यों के लिए समान रूप से लागू होते हैं।

अन्य धर्मों का सम्मान :

सनातन धर्म के सिद्धांत सत्य की खोज के लिए हैं। एक सिद्धांत वेदों में निरूपित है कि सत्य का कोई अन्त नहीं है और वेदों के द्वारा भी सत्य का अन्त नहीं पाया जा सकता। सनातन धर्म यह मानता है कि ईश्वर एक है लेकिन उसे प्राप्त करने के रास्ते विभिन्न हो सकते हैं। वेदों की यह उक्ति कि "एकं सत्य विप्रा बहुधा वदन्ती" इस बात को स्पष्टरूप से बताती है कि सनातन धर्म के अनुसार एक ईश्वर की प्राप्ति के कई मार्ग हो सकते हैं और सभी मार्गों का सम्मान सनातन धर्म के अनुसार होता है और होना चाहिए। सनातन धर्म की व्याख्या करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने भी अपने कई लेखों और भाषणों में बराबर कहा है कि सनातन धर्म उदार है और सार्वभौमिक है।)

यहां तक कि यजुर्वेद २१-१४ में विश्व के चारों तरफ से सभी प्रकार के शुद्ध विचारों का हार्दिक स्वागत निम्न मन्त्र के द्वारा किया गया है :

"आ नोभद्रा: क्रतवो यन्तु, विश्वत:"

सभी जीवों में ब्रह्म :

सनातन धर्म के अनुसार सभी जीवों में एक ही ब्रह्म की दिव्य सत्ता मौजूद है और सभी उस दिव्य पद को प्राप्त कर सकते हैं। इस सिद्धांत के प्रतिपादन से व्यावहारिक जीवन में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को दिव्य मानकर और उसे परमात्मा का [illegible] नहीं सकता। [illegible] प्राणी मात्र को उसी दिव्य ईश्वर का अंश मानकर सभी का आदर करना सनातन धर्म के अनुसार आवश्यक है।

वसुधैव कुटुम्बकं :

सनातन धर्म का एक और प्रमुख सिद्धांत है "वसुधैव कुटुम्बकं" अर्थात् समस्त विश्व ही एक परिवार है। व्यावहारिक जीवन में इसका सीधा-सादा अर्थ यह हुआ कि केवल मनुष्य मात्र ही नहीं बल्कि समस्त प्राणी मात्र अर्थात् जीव-जन्तु, पशु-पक्षी सभी एक बड़े परिवार के अंग हैं। जब यह सिद्धांत सनातन धर्म के अनुसार निरूपित होता है तब इसमें हिंसा का कहीं भी कोई स्थान नहीं रह सकता। इसलिए महर्षि पतंजली के योग सूत्र में जहां उन्होंने ५ यम और ५ नियम का उल्लेख किया है तो उसमें सर्वप्रथम स्थान "अहिंसा" को दिया है। महाभारत में भी "अहिंसा परमोधर्म:, अहिंसा परम तप:, अहिंसा परमं सत्यं, ततो धर्मंप्र वर्तते" का उल्लेख किया गया है। मनुष्य और प्राणी मात्र को एक ही परिवार का अंग मानने से सनातन धर्म का सार्वभौमिक होना अपने आप में ही सिद्ध हो जाता है।

गायत्री मन्त्र

सनातन धर्म का सर्वोच्च मन्त्र है "गायत्री" मन्त्र जिसमें किसी भी विशेष पूजा-पद्धति, देवता या मत आदि का निरूपण नहीं है बल्कि संसार की भलाई के लिए ईश्वर से सद्बुद्धि की ही प्रार्थना की गई है। जैसा कि यजुर्वेद (३६-३) में निम्न गायत्री मन्त्र से यह स्पष्टतया परिलक्षित होता है :

ओ३म् भूर्भुव: स्व: ।
तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो न: प्रचोदयात् ॥"

इसका भावार्थ यह है कि सच्चिदानन्द स्वरूप सर्वव्यापक परमात्मा सूर्य के समान तेज को जिसे देवता धारण करते हैं उसे हम अपनी अन्तर आत्मा में धारण करें और वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करे। ऐसा मन्त्र यदि विश्व का कोई भी व्यक्ति जपे तो वह किसी भी विशिष्ट मत का नहीं गिना जा सकता बल्कि वह सार्वभौमिक विचार वाला ही गिना जाएगा।

साथ-साथ चलना :

ऋग्वेद (१०. १९१.२) में विश्व संगठन सम्बन्धी निम्न मन्त्र आता है :

"सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते :

इसका भावार्थ यह है कि हे सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी पुरुषों। तुम परस्पर मिलकर चलो शालीनता के साथ व्यवहार करो, मिलकर शालीनता के साथ बातचीत करो। ज्ञानी बनकर तुम अपने मनों को भी एक बनाओ, जैसे कि तुमसे पहले विद्वान देव पुरुष सम्यक्, ज्ञानवान और एक मति होकर अपना-अपना कर्तव्य पालन करते रहे हैं।

परिवार में सौमनस्य :

वेदों में बराबर बिना किसी मत या जाति भेदभाव के परिवार में एकता, संगठन और सौमनस्य की बात कही जाती है जैसा कि अथर्व वेद (३-३०-२) के निम्न मन्त्र से स्पष्ट है :

"अनुव्रत: पितु: पुत्रो माता भवतु संमना: ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥"

इसका भावार्थ यह है कि पुत्र पिता के अनुकूल कर्म करने वाला हो और माता के साथ समान मन वाला हो। हर व्यक्ति अपनी पत्नी से मधुर और सुखद वाणी बोले। यह मन्त्र सनातन धर्म की सार्वभौमिकता को दर्शाता है।

सभी का मंगल

सनातन धर्म की प्रार्थनाएं सभी के मंगल के लिए हैं न कि कोई विशिष्ट वर्ग के व्यक्तियों के लिए। जैसे, सनातन धर्म से एक बहुत ही पुरातन प्रार्थना का अंश नीचे उद्धृत है।—

"सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दु:ख भाग्भवेत ॥"

भावार्थ :—सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी ओर सर्वत्र कल्याण को देखें, किसी को कभी दु:ख न हो।

कितना सार्वभौमिक विचार इस मन्त्र में है। सनातन धर्म में कहीं यह नहीं है कि जो सनातन धर्म के विचारों के अनुसार नहीं चलता हो या जो किसी विशेष प्रकार के देवी देवताओं को नहीं मानता हो उसका कल्याण नहीं हो। ऐसा उल्लेख कहीं भी सनातन धर्म में नहीं मिलता। इसलिए सनातन धर्म वास्तविक रूप में सार्वभौमिक है।

सर्वोच्च भावना :

सत्य की खोज, अमृत की प्राप्ति, अंधकार से प्रकाश की ओर जाना यही मूल मन्त्र सनातन धर्म का रहा है। जैसा कि शतपथ ब्राह्मण के निम्न विश्वविख्यात मंत्र में है :

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि सनातन धर्म वास्तविक रूप में सार्वभौमिक

इस्लामी सभ्यता: उज्ज्वल नाम के स्याह पक्ष [२]

अरुण शौरी

भारत में तलाक के हनफी कानून

फैजी ने आगे लिखा "कि समुदाय के सामाजिक जीवन को शासित करने वाले प्राचीन सिद्धांतों पर आधारित तमाम वैयक्तिक और निजी कानून या तो समाप्त हो जायेंगे या इस तरह रूपांतरित हो जायेंगे कि जिससे उन्हें सभी लोगों पर, फिर चाहे उनका धर्म कुछ भी हो, लागू हो सकने वाले कानूनों की सामान्य रूपरेखा के भीतर लाया जा सके···।" इसी आंकलन से उनका दूसरा प्रस्ताव निकलकर आता है। "जिस बात से हम दो-चार होना है" उन्होंने लिखा, वह यह है कि धर्मनिरपेक्ष या एक आधुनिक राज्य में रहने वाले मुसलमान को नवीन कानूनों का पालन करने की आजादी और स्वतन्त्रता होनी ही चाहिए और ऐसे नये कानूनी प्रतिमानों को सुम्बद्ध करना होगा, फिर वे शरई से सम्बन्धित हों या न हों। यह ज्यादा से ज्यादा स्पष्ट होता जा रहा है कि ऐसा कुछ जो अच्छा और कानूनी है, हो सकता है, वह शरई की हुकूमत से बिलकुल बाहर हो, ठीक उसी तरह जैसे कि आश्चर्यजनक रूप से कुछ नियम जो अन्याय पूर्ण हैं और जिनका बचाव नहीं किया जा सकता हो सकता है, शरई द्वारा स्वीकृत कानूनों की परिधि में आते हों। सीधा-सरल उदाहरण देने के लिए मैं भारत में तलाक के हनफी कानून के कुछ नियमों का जिक्र करता हूं।"

हालांकि अब हम उस एक मामले की देहरी पर आ गये हैं जो इसके तुरन्त बाद लिया जाना है, लेकिन फैजी के तीसरे प्रस्ताव का उल्लेख भी इसी सिलसिले में करना उपयुक्त होगा। "मेरा समाधान" फैजी ने लिखा, 'यह है (अ) कि बीसवीं सदी के विचार की शब्दावली में मजहब और कानून की परिभाषा की जावे, (ब) कि इस्लाम में मजहब और कानून के बीच भेद किया जाए और (स) कि इस आधार पर इस्लाम की व्याख्या की जाए और इस्लामी मजहब को नूतन अर्थ दिया जावे। इस विश्लेषण के द्वारा अगर हमें ऐसे कुछ तत्वों में, जिन्हें हम इस्लाम के सारतत्व का अंग समझते हैं, हेर-फेर करनी पड़े, या उन्हें पूरी तरह तिलांजलि दे देनी पड़े, तो भी हमें इसके नतीजों का सामना करना होगा। दूसरी तरफ अगर अन्तर्भूत धर्म में विश्वास को बचाया और सुदृढ़ किया जा सके, तो ऐसा करना तकलीफदेह होते हुए भी उस रक्तहीन देह में सेहत और उत्साह का संचार करेगा जो मार्गदर्शन करने वाले नवीन आदर्शों के बिना मुरझाती जा रही है।

"यह जोड़ना जरूरी है," फैजी ने बताया, "कि सच्चा इस्लाम हर एक मामले में, हर एक सिद्धांत में, हर एक मताग्रह में विचार की आजादी के बगैर फल-फूल नहीं सकता।" और फिर उन्होंने पते की बात कही, जो सही जानी थी, और लिखी, "इस बात का दृढ़तापूर्वक आग्रह करना ही होगा," उन्होंने लिखा, "फिर उलेमा चाहे जो कुछ भी कहें, कि वह जो ईमानदारी और निश्चय के साथ स्वीकार करता है कि वह मुसलमान है, किसी को उस की आस्था पर सन्देह आरोपित करने का हक नहीं और किसी को उसे बहिष्कृत करने का हक नहीं है। यह भयानक हथियार, तकफीर का फतवा, पुरातत्व की हास्यास्पद वस्तु है। यह पथभ्रष्ट व्यक्ति को समझाए या सुधारे बगैर इसके चलाने वाले को ही धक्का पहुंचाती है। विश्वास अंत:करण का मामला है, और यह ऐसा युग है मजहब के मामलों में अंत:करण की आजादी को मान्यता देता है। समुचित विश्लेषण के बाद यह तो कहा जा सकता है कि इस व्यक्ति के विचार गलत हैं, लेकिन यह नहीं कि 'वह काफिर है।'

एक और उदाहरण

"अन्तिम उदाहरण के तौर पर मैं ताहिर महमूद के एक निबन्ध की बात लिखाऊंगा। अब दिल्ली विश्व विद्यालय में कानून के प्राध्यापक, उन्होंने भी इस्लामी कानून पर एक मानक पुस्तक लिखी है। यह इस्लामी कानून के प्रमुख वर्णनों में से एक का सम्पादन करते हैं। पिछले कुछ सालों में जब भी शाह बानो वगैरह के मामलों में विवाद उभर कर आये तब सरकारों, परम्परावादियों और प्रेस में उनकी बड़ी मांग रही थी।

यह निबन्ध, "मुस्लिम निजी कानून का प्रगतिशील संहिताकरण,' उन्होंने भारतीय विधि संस्था के १९७२ के संकलन इस्लामिक लॉ इन इंडिया (भारत में इस्लामी कानून) में लिखा था। जिस तरीके से मुस्लिम कानून अस्तित्व में आया था उसकी उत्पत्ति की विविध घटनाओं, भिन्न-भिन्न काल और स्थानों के प्रभाव-इसकी पड़ताल करने के बाद महमूद ने टिप्पणी की, "भारत में मुस्लिम कानून के इतने सारे मतवादों की मौजूदगी और उससे भी ज्यादा, इनमें से प्रत्येक मतवाद के अनुयायियों के द्वारा मात्र उनके अपने मतवाद के सिद्धांतों के प्रति वफादार रहने का आग्रह, इस निष्कर्ष तक ले जाता है कि भारत में 'मुस्लिम निजी कानून' के रूप में जो कुछ लागू है, उसे इस्लामी मजहब के प्रकट या प्रेरित सिद्धांतों के बराबर नहीं रखा जा सकता। इसके अधिकांश हिस्से उन विशिष्ट मुस्लिम न्यायवेत्ताओं के फैसलों और अभिमतों पर आधारित थे जो इतिहास के विभिन्न युगों में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में हुए थे।"

इसके अतिरिक्त इन विविध और कालांकित उत्पत्तियों को देखते हुए महमूद ने बलपूर्वक कहा, "यह बात साफ तौर पर बंधने वाली नहीं है कि इन परम्परागत कानूनी सिद्धांतों में से किसी ने भी, यहां तक कि सदियों शताब्दियां बीत जाने के बाद भी, अपने मौलिक तर्काधार और उपयोगिता का अंश मात्र भी खोया नहीं है। इस संभावना को भी खारिज नहीं किया जा सकता कि इनमें से कुछ सिद्धांत अपने प्रकट आधार, अगर कोई था तो, उससे अलगाव में भटक गये हों। तथ्य यह है कि भारत में वर्तमान में प्रचलित मुस्लिम निजी कानून के कतिपय पहलू उनकी उपयोगिता समाप्त होने के बाद भी कायम हैं और पुनर्विचार की मांग करते हैं।" अनेक उदाहरण देते हुए, उन्होंने पूछा, "मुस्लिम निजी कानून की नीचे लिखी किस व्यवस्था के बारे में यह दावा किया जा सकता है कि वह सर्वशक्तिमान कानून देने वाले की मंशाओं पर आधारित है या मौजूदा सामाजिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में श्रेष्ठ है?"

(क्रमश:)

दक्षिण अफ्रीका में आर्यसमाज का सफल प्रचार

दक्षिण अफ्रीका में स्थित अनेक दशकों से अश्वेतों पर जो अत्याचार होते आ रहे थे उनके सतत संघर्षरत रहते, अत्याचारों का सामना करते परन्तु अपने लक्ष्य से मुख न मोड़ने के परिणाम स्वरूप अब वह समाप्त हो गये लगते हैं। यदि आपको विद्वेष और विरोध ने सर न उठाया तो निश्चय ही श्री नेल्सन मण्डेला के नेतृत्व में अश्वेत लोग मानव समझे जायेंगे और श्वेत-अश्वेत के मध्य डाली गई भेदक रेखाएं समाप्त हो जायेंगी। दक्षिण अफ्रीका की इस बदलती स्थिति में वहां श्री नेल्सन मण्डेला और उसके अनुयायी वीरों को श्रेय दिया जा रहा है जो कि सर्वथा उचित है इसके साथ ही महात्मा गांधी और भारत देश का भी आदर से नाम लिया जा रहा है परन्तु वहां के लोगों को अपने स्वरूप का ज्ञान और भान कराने में आर्य समाज ने कितना काम किया और आज भी कर रहा है इसकी चर्चा अवश्य होनी चाहिए थी। हमें खेद है कि इसकी सर्वथा उपेक्षा की गई है। आगे की पंक्तियों में श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने अपनी आत्मकथा 'जीवन चक्र' में सुन्दर ढंग से जो प्रकाश डाला है उसे पाठकों की भेंट किया जाता है।

दक्षिण अफ्रीका मे एक पंजाबी सज्जन थे डा० मोहनचन्द बर्मन। इन पर आर्य समाज के सिद्धांतो का प्रभाव था। इन्होंने महात्मा हंसराज जी प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालेज लाहौर से प्रार्थना की कि एक अच्छा प्रचारक भेजिए। महात्मा जी ने श्री भाई परमानन्द जी को इस काम के लिए नियत किया। भाई जी लाहौर डी० ए० वी० कालेज के प्रतिष्ठित प्रोफेसर थे। वे ५ अगस्त १९०५ ई० को अफ्रीका पधारे और लगभग ६ मास उस प्रदेश में भ्रमण करते रहे। भाई जी उच्च कोटि के विद्वान तथा व्याख्याता थे। उनके व्याख्यानों ने बिजली का काम किया और उन्होंने डर्बन, पीटरमेरिट्ज़बर्ग स्थानों में हिन्दू सभा और हिन्दू युवक समाजों की नींव डाली। यह सभायें किसी न किसी रूप में अब भी चल रही हैं। भाई जी के शुभागमन का सबसे मूल्यवान प्रभाव यह हुआ कि हिन्दुओं का दृष्टिकोण बदल गया। अब वे अपने सुधार की बात सोचने लगे।

—पं० ओमप्रकाश जी आर्य
११६, प्रेम नगर करनाल

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजी जा रही है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

वैदिक यज्ञ : पर्यावरण-परिशोधन विज्ञान

—पं. व्यासनन्दन शास्त्री वैदिक

हमारे चारों ओर वायु, जल और भूमि का आवरण ही पर्यावरण है, जो हमें प्रकृति से प्राप्त हुआ है। सम्प्रति यदि हम विषय की व्यापक चर्चा करें तो पर्यावरण का आशय उन समस्त भौतिक एवं जैविक व्यवस्था से है जिसमें जीवधारी जन्म लेते हैं तथा अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास करते हैं।

हमारा पर्यावरण मुख्यतः तीन भागों में विभक्त है पहला स्थलमण्डल, दूसरा जलमण्डल और तीसरा वायुमण्डल। वे परिस्थितियां जो इनके घटकों में असन्तुलन पैदा कर देती हैं, वहीं से प्रदूषण का जन्म होता है। यानी कहने का आशय यह है कि पर्यावरण के बीच निहित तत्वों में ज्यादा या कमी का हो जाना ही असन्तुलन है और यही अन्ततः प्रदूषण का कारण बनता है।

इस परिप्रेक्ष्य में आज हम वैज्ञानिक अदूरदर्शी आविष्कारोंके कारण पर्यावरण में लाखों टन कोयला, पेट्रोल, मोबिल आयल, चाकलेट के दुर्गन्ध की सहस्रों धाराएं वेग से प्रवाहित कर रहे हैं। लाखों फैक्ट्रियों से दुर्गन्धयुक्त धूम के साथ विषैली गैसों को प्रसारित करके पृथ्वी, जल, वायु वनस्पति, अन्नादि सभी को प्रदूषित व विषाक्त कर रहे हैं और यह निरन्तर उग्र व आक्रामक रूप में उपस्थित होती जा रही है। इन प्रदूषणों से रोग बढ़ रहे हैं। वस्तु, आज भारत ही नहीं समग्र विश्व में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या बनकर सुरसा की भांति मुंह बाए खड़ी है। प्रदूषण का भयंकर राक्षस अपने फौलादी पंजे फैलाकर बढ़ा आ रहा है और भौतिकवादी मानव प्रकृति की उपेक्षा करता हुआ विकास की ओर प्रवृत्त है, किन्तु कल की कथा क्या होगी, इसे नजर अन्दाज करके वह अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है, यह उसके विकास में साधक नहीं अपितु बाधक है। वह इसके साथ जिस स्वर्णिम विहान की कल्पना कर रहा है, वह सर्वथा मिथ्या ही है। अतः इस महती समस्या का ताण्डवनृत्य देखकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में कुहराम मच गया है। इसके लिए सरकारी और गैरसरकारी संस्थानों द्वारा अनेकानेक प्रयास जारी हो चुके हैं, फिर भी समस्या का समुचित निदान न हो सका है। इस विषम परिस्थिति का सरलतम और योग्यतम हल 'वैदिक यज्ञ' है। इस संदर्भ में युग प्रवर्तक वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने डंके की चोट से उद्घोषणा की है—

जो करना आवश्यक है। आर्यवर शिरोमणि, महाशय, ऋषि महर्षि, राजे-महाराजे लोग बहुत सा होम करते और कराते थे। जब तक होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था। अब भी प्रचार हो, तो वैसा ही हो जाए।

(सत्यार्थप्रकाश तृ. स देवयज्ञ प्रकरण)

यही कारण है कि संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ उद्घोष करता है—
अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारंरत्नधातमम्॥ (ऋ॰ १।१।१)
इसी लक्ष्य को लेकर तो कहा गया है—
'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'' शतपथ ब्राह्मण १।७ १।२
'यज्ञो हि श्रेष्ठतमं कर्म'' तैत्तिरीय ब्रा. ३।२।१।४

यज्ञ के हविर्द्रव्यों में 'घृत, ही' प्रधान है। घृत का नाम 'आज्य' है। आज्य का अर्थ है-आ समन्तात् लोकान् अजते अनेन-अर्थात् इसके द्वारा लोक-लोकान्तरों के प्रदूषण रूपी असुर-तत्वों पर, आंधी-तूफानों पर विजय प्राप्त होती है। गोघृत में यह क्षमता है कि भयंकर विष का प्रतिरोधक बन सके। दूसरे, इसमें भेदक शक्ति है। जैसे दूध अम्ल के मिश्रण से फट जाता है वैसे ही गोघृत के आज्य में ऐसी शक्ति है कि जलवायु में मिले विष को फाड़कर पुनः उसे मूलत्व में लीनकर नष्ट कर देती है। थोड़ी मात्रा में रखे दूध को थोड़ा सा अम्ल जैसे फाड़ने का सामर्थ्य रखता है वैसा ही घृत भी अपने से सहस्रगुणा अधिक प्रदूषण को नष्ट कर देता है। घृत में पर्यावरण शोधक शक्ति प्रचुर मात्रा में है। गाय के घृत में ऐसी शक्ति का कारण यही है कि सूर्य रश्मि गाय सबसे अधिक ऊर्जा लेकर अपने दूध में घोल देती है। भैंस आदि या भेड़ बकरी आदि के घृत में ऐसी शक्ति का अभाव है।

घृत का नाम 'अर्चि' भी है। जब वह यज्ञ में प्रयुक्त होकर अन्तरिक्ष में गति करता है तो इसकी गति सर्पाकार बनती है। इसलिये वह हव्यद्रव्य के अंश को उत्सर्पित करके विविध लोकों में ले जाता है।

घृत के अलावा यज्ञ के चार प्रमुख हव्यद्रव्य हैं-(१) सुगन्धित (२) पुष्टि-कारक (३) मिष्ट और (४) रोगनाशक। इन हव्यद्रव्यों के अन्तर्गत 'कस्तूरी, केसर, अगर, तगर, श्वेतचन्दन, इलायची, जायफल, जावित्री, दूध, फल, कन्द, अन्न, चावल, गेहूं, उड़द, शक्कर, शहद, छुहारे, दाख, सोमलता अर्थात् गिलोय आदि औषधियां' व जड़ी-बूटियां हैं, जो जलकर सहस्र गुणा में बंटकर सूक्ष्मातिसूक्ष्म बनकर विश्व पर्यावरण के प्रदूषण को दूर करने में पूर्णतः सफल होती हैं।

यज्ञ में जो गाय के घी प्रधान हव्यद्रव्य के रूप में प्रयुक्त होते हैं, जो चावलों में मिश्रित करके मन्त्रोच्चारण पूर्वक जब अग्निहोत्र में आहुति दी जाती है, तब इस आहुति के जलने से उत्पन्न चार गैसें अभी तक पहचानी जा चुकी हैं- क) एथिलीन आक्साइड, (ख) प्रापिलीन आक्साइड (ग) फार्मल-डिहाइड तथा (घ) बीटा प्रापियो लेक्टोन। आहुति के बाद गोघृत में एसिटि-लीन उत्पन्न होता है। यह एसिटिलीन प्रखर उष्णता की ऊर्जा है जो प्रदूषित वायु को अपनी ओर खींचकर उसे शुद्ध करती है। इसलिए मनुष्यों को चाहिए कि प्रातः सायं यज्ञ प्रतिदिन करें। प्रातःकाल का हवन दिनभर की सफाई रखता है और सायंकाल का हवन रात्रिभर की सफाई रखता है।

यज्ञीय मन्त्रों में अग्नि को 'दूत' (गतिशील) कहा गया है। इससे सिद्ध होता है कि इस सारे ब्रह्माण्ड में अग्नि की सूक्ष्म तरंगें तारे-तारे के साथ निरन्तर प्रवहमान हैं। जो वस्तु स्थूल अग्नि में डाली जाती है उसे वह वाष्प रूप में पहुंचाकर उसके केन्द्र तक पहुंचा देती है। इस हेतु अग्नि को 'दूत' कहा गया है।

अग्निदूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।

(सामवेद अ. १, प्रपाठक १)

यज्ञ से प्रदूषण नाश और ध्वनि प्रदूषण निवारण क्रिया-१

होम में होमे हुए हव्यपदार्थ सुगन्धित, रोगनाशक और पुष्टिप्रदाता होने से उनका घर्षण वायुमण्डल में यज्ञ में बारम्बार आहुति प्रदान करने से सहज में ही होने लगता है। यज्ञाग्नि में आहुति देते ही अन्तरिक्षस्थ वायुमण्डल में घर्षण क्रिया आरम्भ हो जाती है तथा बार-बार आहुति देने से घर्षण अर्थात् मार्जन शोधन-क्रिया का श्रीगणेश स्वतः ही विधान हो जाता है। यज्ञ की समाप्ति पर तापक्रम क्रमशः घटने से पृथिवी की ओर घर्षण-क्रिया होने लगती है। रात्रि और दिवस के तापमानों से भी इस क्रिया को स्वभावतः संरक्षण और बल प्राप्त होता है तथा प्रदूषणों को विशुद्ध करता जाता है।

क्रिया-२

अग्नि में होमा हुआ पदार्थ वायुमण्डल में शीघ्र व्याप्त हो जाता है व्याप्त हो जाने से अन्तरिक्षस्थ ताप एवं विद्युतादि अग्नियों तथा सूर्यरश्मियों द्वारा ताप की तीव्रता, उग्रता एवं ताप की परिवर्तित पदार्थ सूक्ष्म रूप से उत्तरोत्तर ऊपर की ओर गति करता है। तापमान की न्यूनता के कारण नीचे की ओर भी गति करता है। इस तरह की प्रक्रिया ऊपर-नीचे की ओर क्रमशः होने लगती है और एक प्रकार की घर्षण क्रिया वहां भी प्रारम्भ हो जाती है। जिससे प्रदूषणों का निवारण और विनाशकार्य शीघ्र होने लगता है। परिणामतः शन्नो वातः पवताम्''-(यजु. ३६।१०) सुख-कारी वायु बहने लगती है।

ध्वनि-प्रदूषण निवारण —

पूर्वोक्त चार प्रकार के पदार्थों की आहुति से पदार्थजन्य प्रदूषण तो दूर होंगे ही परन्तु ध्वनि प्रदूषण भी आहुति के साथ वेद मन्त्रों के स्वर सहित उच्चारण से दूर होंगे। वेद मन्त्रों की सत्ता पवित्र ही है। जहां वेदमन्त्र-ध्वनि या प्रार्थना। परमात्मा में मन लगाकर की जाती है, वहां शान्ति का वातावरण उत्पन्न हो जाता है। संगीत के रागों का जो समय नियत है, उस समय में उसका प्रभाव होता ही है। वेदमन्त्र भी छन्दों में उच्चारित होते हैं। अतः उनकी पवित्र ध्वनि से, ध्वनि प्रदूषण के दोषों का निवारण होगा। जैसे विकृत राग एवं क्रूर शब्दों से अशान्ति बढ़ती है उसी प्रकार राग एवं शान्तिप्रद शब्दों की ध्वनि से ध्वनि-प्रदूषण भी स्वतः नष्ट होगा। (क्रमशः)

श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ मे प्रवेश आरंभ

महर्षि दयानन्द मनोवांछित देश का सुप्रसिद्ध विद्यालय आपका चिर-परिचित श्री आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़ अरावली की सुन्दर पहाड़ियों में गंभीरी नदी के तट पर एकान्त स्थल पर अवस्थित है। यहां शिक्षा सर्वथा नि:शुल्क है। यहां लगभग सभी प्रान्तों के बालक बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहां की आश्रम प्रणाली सुनियोजित व अनुपम विशेषता सहित उल्लेखनीय है यहां सुयोग्य गुरुओं की देखरेख में बालकों का सर्वांगीण विकास सुचारित होता है। वेद वेदांग, संस्कृत साहित्य, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद आदि की पढ़ाई को प्रमुखता दी जाती है। पहली से आठवीं कक्षा तक सदाचार शिक्षा, व्याकरण व संस्कृत विशेष के साथ अर्वाचीन सभी विषय अंग्रेजी गणित, विज्ञान, सामाजिक, भूगोल, हिन्दी आदि पाठ्यक्रम में समाहित है। गुरुकुल संस्कृत शिक्षा विभाग राजस्थान से मान्यता प्राप्त है।

संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की आर्ष पद्धति पर आधारित व्याकरण, वेद निरुक्त, प्रक्रिया से मध्यमा शास्त्री, व आचार्य कक्षा तक की पढ़ाई की व्यवस्था है। विगत कई वर्षों से परीक्षा परिणाम अति उत्तम रह रहा है।

पढ़ाई एक जुलाई से आरम्भ होती है तथा नवीन बालकों का प्रवेश अधिग्रहण १५ मई से प्रारम्भ होता है। प्रवेश सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें।—मुख्याधिष्ठाता-श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ (राज०)

विदेश समाचार

वेद प्रचार सप्ताह

श्री सत्य सनातन वैदिक प्रकाश (आर्य समाज अमस्टरडम) के तत्वावधान मे व आर्य प्रतिनिधि सभा नीदरलैण्ड के अन्तर्गत त्रिदिवसीय कार्यक्रम 'वेद प्रचार सप्ताह" के रूप मे अत्यन्त उल्लास से सम्पन्न हुआ। दिनांक २७-२८-२९ मई मास के इस कार्यक्रम मे तीनो दिन प० ओमप्रकाश "सामवेदी" द्वारा ईश्वर जीव प्रकृति त्रित अनादि सत्ताओं के सन्दर्भ मे वैदिक प्रवचन हुये। साथ ही द्वितीय दिवस प० विजय प्रकाश शास्त्री का तथा तृतीय दिवस प० देवीप्रसाद भगवानदत्त जी का प्रेरणाप्रद वेदोपदेश हुआ। सत्य सनातन वैदिक प्रकाश की महिलाओं व बच्चों ने भी भजन, यज्ञ, प्रवचन आदि के कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई जिनमे मुख्यतया श्रीमति जयरानी, सीताराम श्रीमति विद्यावती शर्मा और श्रीमति पण्डिता वेदा महेश और श्री सुरेश छोटकन आदि हैं।

सप्ताह के त्रिदिवसीय कार्यक्रम का विधिवत् समापन हुआ व सभापति द्वारा सबका आभार प्रकट किया गया। तीनों दिन २७,२८ व २९ मई को स्त्री समाज, एम्सटर्डम की महिलाओं द्वारा ऋषिलंगर का विशेष प्रबन्ध था।

—डा० महेन्द्रस्वरूप, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, नीदरलैण्ड

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

भजनोपदेशक संगीत विद्यालय

धर्म के प्रचार में संगीत का सदैव अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपदेश और क्रान्ति को जन मन मे बसाने में भी आर्य समाज के सुयोग्य भजनोपदेशकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिन्हें सुनने के लिए जनता का सैलाब उमड़ पड़ता था। ऐसे ही समर्पित और प्रभावी भजनोपदेशक प्रशिक्षित करने के लिए ही यह विद्यालय खोला गया है।

इस वर्ष विद्यालय मे प्रवेश हेतु जिन लोगो ने प्रार्थना कर आवेदन पत्र मगाए थे उनमे से जिनके आवेदन वापिस न्यास मे नही पहुचे हैं, उनको साक्षात्कार के लिए पत्र भेजे जा चुके हैं। वे यदि ३० जून १९९४ तक नहीं पहुचेंगे तो उनका स्थान रिक्त मानकर दूसरे को ले लिया जाएगा। चू कि दो वर्ष का प्रशिक्षण, आवास एवं भोजनादि का व्यय विद्यालय ही वहन करेगा, अत स्थान बहुत कम हैं। फिर अगले वर्ष ही प्रवेश पर विचार हो सकेगा। सूचित रहें।

मन्त्री, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल गुलाब बाग उदयपुर (राजस्थान)

छात्रवृत्तियां

सत्र जुलाई १९९४ से अप्रैल १९९५

श्री बजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से नए सत्र के लिए गुरुकुलो, स्कूलो महाविद्यालयो, व्यवसायिक प्रशिक्षणालयो और अनुसधान सस्थानों के सुयोग्य और सुपात्र छात्र-छात्राओ और स्पर्धात्मक परीक्षाओ के परीक्षार्थियो और परीक्षार्थिनियो को छात्रवृत्तिया देने का कार्यक्रम शुरू हो गया है।

इन छात्रवृत्तियों से लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी ट्रस्ट द्वारा नियत आवेदन पत्र मगवाने के लिए एक टिकट लगा लिफाफा अपना पता लिखकर ट्रस्ट के आनरी सचिव के नाम निम्नलिखित पते पर भेजें।

गत सत्र इस कार्यक्रम पर ४०,००० रुपए व्यय किए गए हैं। इस सत्र के लिए यह राशि बढ़ाकर ५०,००० रुपए कर दी गई है।

ओमेन्द्रनाथ उप्पल, आनरी सचिव
श्री बजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट
सी-३२, अमर कालोनी, लाजपतनगर, नई दिल्ली-२४

प्रवेश सूचना

श्री सर्वदानन्द सस्कृत महाविद्यालय गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ में १ जुलाई से प्रवेश प्रारम्भ है। शहर से दूर एकान्त स्थान कालिन्दी के सुरम्य तट पर सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की प्रथमा से आचार्य पर्यन्त परीक्षा मान्यता, प्राचीन गुरुकुल शिक्षा के अनुसार शिक्षा व्यवस्था इसके साथ ही अग्रेजी, विज्ञान, गणित की शिक्षा व्यवस्था उत्तम भोजन व आवास व्यवस्था, कड़ा अनुशासन। इच्छुक अभिभावक १०) रु० देकर या मनिआर्डर द्वारा भेजकर १५ मई से गुरुकुल की नियमावली प्राचार्य जी से प्राप्त करें।' या १०) रु० मू० एव डाक व्यय के साथ डाक से मगाए।

—डा० बुद्धदेव आचार्य, प्राचार्य

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहको से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक सख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वत: ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत: अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये मात्र एक १५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री को पत्नी शोक

आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वान, राष्ट्रीय सस्कृत सस्थान के पूर्व कुलपति वेदार्थ कल्पद्रुम के लेखक और वेद वेदाग पुरस्कार से सम्मानित आचार्य विशुद्धानन्द जी शास्त्री, कूचापाड़ा, बदायू (उ० प्र०) की धर्मपत्नी श्रीमती निर्मलादेवी जी के १७ जून १९९४ को निधन के समाचार से गहरा आघात पहुचा है।

सार्वदेशिक सभा मे आयोजित शोक सभा मे सभा प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती और सभा मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने दिवगत विदुषी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए उनके निधन को आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति बताया। वह हिन्दी, सस्कृत, अग्रेजी भाषाओ के अतिरिक्त बगला भाषा पर भी पूरा अधिकार रखती थी। वह पार्वती आर्य कन्या इण्टर कालेज बदायू के आचार्य पद से कार्य मुक्त हुई थी। स्व० आचार्य करपात्री कृत वेदार्थ पारिजात ग्रन्थ का उत्तर आचार्य विशुद्धानन्द जी शास्त्री ने श्रीमती निर्मला देवी जी के सहयोग से वेदार्थ कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ लिखकर दिया था।

शोक सभा में दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए आचार्य विशुद्धानन्द जी शास्त्री और शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की गई।

स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रतियोगिता

अन्तिम तिथि में परिवर्तन

श्री शान्ति स्वरूप नन्दा द्वारा आयोजित स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रतियोगिता के लिए प्रतियोगिता पत्र पहुचने की अन्तिम तिथि १५ जून १९९४ से बढ़ाकर १५ जुलाई १९९४ कर दी गयी है। इच्छुक प्रतियोगी उक्त तिथि से पूर्व अपना आवेदन पत्र, श्री शान्ति स्वरूप नन्दा १७३ राजा गार्डन नई दिल्ली १५ को भेज सकते हैं। प्रतियोगिता सम्बन्धी सभी नियम और शर्तें वही हैं जो इस पत्र के २९ मई १९९४ के अक मे प्रकाशित हो चुकी हैं।

पांच वर्षीय पाठ्यक्रम मे प्रवेश प्रारंभ

प्रवेश का समय एक जुलाई ९४ से २२ जुलाई ९४ तक है। पाठ्यक्रम ५ वर्षीय २ विद्याविनोद, ३ अलकार गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय हरिद्वार से सम्बन्धित है। योग्यता मैट्रिक या समकक्ष कक्षा उत्तीर्ण हो। शिक्षा, भोजन, दूध, आवास, पुस्तकें आदि की गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क व्यवस्था है। कोई प्रवेश शुल्क नहीं।

विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के साथ साथ आचार्यकुल का पाठ्यक्रम अनिवार्य है, जिससे छात्र को यज्ञ, सस्कार, प्रवचन आदि की शिक्षा की व्यवस्था भी की गई है। मैट्रिक पास का प्रमाण-पत्र व चरित्र प्रमाण पत्र साथ लाना आवश्यक है। गुरुकुल के नियमो का पालन करना होगा। नियम भग करने पर पृथक भी किया जा सकता है। प्रवेश हेतु शीघ्र मिलें अथवा पत्राचार करें। स्थान सीमित है।

आचार्य, श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर-१४४८०१
(जिला--जालन्धर) पजाब

वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज दीनदयाल नगर (मुगलसराय) का ७६वा उत्सव ७ से ११ मई, ९४ तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। ७ मई को विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। वार्षिकोत्सव में आर्य महिला सम्मेलन, आर्य युवा सम्मेलन, एव गोरक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुए। प्रतिदिन प्रात: यजुर्वेद महायज्ञ मे आर्य महानुभाव श्रद्धापूर्वक आहुति देते रहे।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० (सी०) ११०४९/५७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३ ७ १९९४) बिना टिकट भेजने का आदेश नं० जी (G)९३
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 1-7-1994

इसलाम मे महिलाओ के साथ गुलामों जैसा बरताव : तसलीमा

सिडनी, २१ जून। अपने विचारो के कारण कट्टरपंथियो के आक्रोश का सामना कर रही बाग्लादेश की लेखिका तसलीमा नसरीन ने आज एक टी वी साक्षात्कार मे कहा कि इसलाम महिलाओ के साथ गुलामो जैसा बर्ताव करता है।

आस्ट्रेलियाई ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के विदेशी सवाददाता कार्यक्रम को साक्षात्कार में नसरीन ने कहा कि हमारा धर्म स्त्रियों को मानवीय गरिमा नहीं देता।

महिलाओ को गुलाम समझा जाता है। यह कहा जाता है कि महिलाए पुरुषों की पसली से बनी होती हैं। तसलीमा से साक्षात्कार बगाली मे किया प्रसारण में उपशीर्षक दिये गये थे।

मैं धर्म के खिलाफ लिखती हू क्योंकि अगर किसी महिला को इन्सानों की तरह जीवन बिताना है तो उसे धर्म व इस्लामी कानून के दायरे से बाहर रहना होगा।',

जब तसलीमा से यह पूछा गया कि क्या आप इसलाम पर प्रहार कर रही हैं उन्होंने अंग्रेजी में जवाब दिया—हा, सीधा। साक्षात्कारकर्ता ने तब टिप्पणी की कि आपके कदम या तो बहुत साहस भरे हैं या बेवकूफी पूर्ण। इसका जवाब नसरीन ने फिर अंग्रेजी मे दिया—मैं समझती हू यह बेवकूफी भरा काम नहीं है।

नसरीन एक अखबार मे छपे उस साक्षात्कार के बाद से किसी अज्ञात स्थान पर छिपी हैं जिसमे उन्होंने कथित तौर पर पाक कुरान का व्यापक सशोधन करने की बात कही थी। यह लेख ४ जून को एक भारतीय अखबार में छपा था। बाग्लादेश टाइम्स मे इसके पुनर्प्रकाशन के बाद सरकार ने तस लीमा की गिरफ्तारी के आदेश जारी किये थे। बाग्लादेश मे इसके छपने के बाद कट्टरवादी सगठनो में इसकी उग्र प्रतिक्रिया हुई।

तसलीमा इस बात से इनकार करती हैं कि उन्होंने इस्लाम का अपमान किया। उनका कहना है कि भारतीय अखबार मे मुझे गलत ढग से उदधृत किया गया। उक्त अखबार के रिपोर्टर ने इस बात से इनकार किया कि तसलीमा का बयान गलत ढग से छापा गया।

बाग्लादेश के कट्टरपथी नेता मुफ्ती नअकल इस्लाम ने तसलीमा के सिर पर एक लाख टका का इनाम घोषित किया है। मुफ्ती का मानना है कि तस-लीमा ने इस्लाम के प्रति अक्षम्य अपराध किया है।

आस्ट्रेलियाई ब्राडकास्टिंग कारपो द्वारा पिछले हफ्ते ढाका में रिकार्ड किये गये इस साक्षात्कार मे नसरीन ने कहा, 'मैं सामान्य जिन्दगी नहीं गुजार रही हू। न मैं बाहर जा सकती हू न ही लोगो के बीच नजर आ सकती हू।'

नसरीन ने कहा कि अपने कई समाचार पत्र लेखो मे से एक को मैं सड़ा हुआ मानती हू। क्योंकि यह इस्लामी समाज मे महिलाओ की स्थिति के बारे मे बताता है। मैं ऐसा इसलिये कहती हू कि इस समाज मे महिलाओ को सड़ा हुआ ही माना जाता हैं।

अगर हम प्रगति की बात करें अगर हम समाज के अन्यायपूर्ण नियमो को तोड़ने की कोशिश करे अगर हम मानवीय गरिमा हासिल करने की कोशिश करे और भेदभाव के विरोध मे आवाज उठाए तो हमे सड़ा हुआ ही माना जाता हैं।

तसलीमा ने कट्टरपंथियो के आगे झुकने के लिये बगलादेश सरकार की निन्दा की। उन्होंने कहा कि सरकार इस्लाम का राजनैतिक इस्तेमाल कर रही हैं। सरकार सोचती हैं कि अगर उसने कट्टरपंथियो के खिलाफ कुछ कहा तो वह शासन मे नहीं रहेगी। इसलिये वह खामोश है और कोई कार-वाई नहीं कर रही हैं।

तसलीमा ने बगलादेश ससद के स्पीकर को पत्र लिखकर सरकार से अपनी सुरक्षा सुनिश्चित कराने की माग की है।

(२१ ६-९४ दैनिक जागरण से साभार)

भजन-गीत प्रतियोगिता

आर्योपदेशकों, सगीतज्ञो तथा कवियों से भजन अथवा गीत निम्नलिखित विषयो पर आमन्त्रित किये जाते हैं

विषय—१ प्रभु-भक्ति (वैदिक)
२ महर्षि दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित।
३ आर्य समाज के सिद्धातो पर आधारित।

नियम—१ प्रत्येक रचनाकार उपरोक्त तीनों विषयो पर एक-एक अर्थात तीन भजन गीत भेज सकते हैं
२ भजन गीत मौलिक हो तथा उसका रचनाकाल वर्ष १९९२-९४ के भीतर हो।
३ रचना प्रकाशित अथवा अप्रकाशित हो।
४ रचना टंकित हो अथवा सुलेख हो और कागज के एक तरफ लिखी हुई हो।
५ जो रचनाए चुनी जाएगी, उन पर पारितोषिक भी दिया जाएगा।
६ निर्णायकगण का निर्णय अन्तिम होगा।
७ चयनित भजन गीतो का स्वामित्व आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का होगा।

पुरस्कार—प्रथम पुरस्कार ५०१) रु०
द्वितीय पुरस्कार ३०१) रु०
तृतीय पुरस्कार १५१) रु०

रचनाए भेजने की अन्तिम तिथि ३१ जुलाई, १९९४ है।

वेदव्रत शर्मा
मन्त्री

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (प्रथम व द्वितीय भाग) — ९०)००
मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (भाग ३-४) — १६)००
लेखक प० इन्द्र विद्यावाचस्पति
महाराणा प्रताप — १६)००
रंगीला अर्थात इस्लाम का फोटो — ५)५०
लेखक—धर्मपाल जी, बी० ए०
स्वामी विवेकानन्द की विचार धारा — ४)००
लेखक—स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती
उपदेश मञ्जरी — २१)
सस्कार चन्द्रिका मूल्य—१९५ रुपये
सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
पुस्तक मगाते समय २५% धन अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली-२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री | दूरभाष । ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया

वर्ष ३३ अंक २२ | दयानन्दाब्द १७० | सृष्टि संवत् १९७२९४९०९५ | आषाढ़ शु० २ सं० २०५१ १० जौलाई १९९४

आर्य जगत् के महान विद्वान्, महामहोपाध्याय, वेदमूर्ति—

श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक का देहावसान

फरीदाबाद में वैदिक मन्त्रों से अन्तिम संस्कार सम्पन्न

दिल्ली २९ जून, कल सायंकाल आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री युधिष्ठिर मीमांसक का फरीदाबाद मे निधन हो गया वे ९१वर्ष के थे। श्री मीमांसक जी ने अनेक ग्रन्थो की रचना की थी। वे रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा स्थापित गुरुकुल बहालगढ के संचालक भी थे उन्होंने इसी ट्रस्ट की ओर से अनेक ग्रन्थों को भी प्रकाशित किया। महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो पर लिखी गई उनकी टिप्पणियां बहुत ही महत्वपूर्ण मानी जाती थी। उन्होंने अपना सारा जीवन रामलाल कपूर ट्रस्ट के माध्यम से आर्य समाज की सेवा मे लगा दिया। गत वर्ष उत्तरप्रदेश सरकार की ओर से उन्हे एक लाख रुपये का पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया था।

उनके निधन से आर्य जगत मे एक उच्चकोटि के विद्वान की कमी हो गई है। आज उनका अन्तिम संस्कार फरीदाबाद के सैक्टर २९ के श्मशान घाट मे पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री देवेन्द्र कपूर, पं०सोमदेव, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, स्वामी जगदीश्वरानन्द आदि अनेक प्रमुख महानुभाव उपस्थित थे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने वैदिक मन्त्रो का पाठ करते हुए उनके शव को चिता पर रखा और वैदिक मन्त्रों की ध्वनि के साथ ही उनका शरीर अग्नि की ज्वालाओं मे समा गया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि परमात्मा श्री मीमांसक जी की आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढी उनसे प्रेरणा लेकर उनके पदचिह्नों पर चलकर उनके द्वारा छोडे गये कार्यों को आगे बढाये।

अन्तरंग सभा की बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक १० जुलाई १९९४ को आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड मे प्रातः १०.३० बजे से होगी। इसमे पूर्ण गोहत्या बन्दी, बूचडखाना पर प्रतिबन्ध तथा आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियो पर विचार सहित अनेक अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर विचार विमर्श होगा। कृपया बैठक मे ठीक समय पर उपस्थित होने का कष्ट करें।

१० जुलाई को सार्वजनिक श्रद्धाञ्जलि सभा

आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वान महामहोपाध्याय पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक की स्मृति में आगामी १० जुलाई १९९४ को दिल्ली की समस्त आर्य समाजों व आर्य जनता की ओर से आर्य समाज १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे सार्वजनिक सभा सायंकाल ४ बजे से होगी। कृपया इस अवसर पर अवश्य पधारें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

स्वामीजी ने बताया कि श्री मीमांसक जी की शोक सभा आगामी १० जुलाई १९९४ को सायं ४ बजे आर्य समाज मन्दिर, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे होगी।

फ्रांस में अंग्रेजी शब्दों पर पूर्ण प्रतिबन्ध

पेरिस ३ जुलाई। फ्रांस मे आखिरकार यह कानून पास कर दिया गया और अंग्रेजी शब्दो का प्रयोग करना बिलकुल बन्द कर दिया गया है—अब स्कूलो, इश्तिहारो तथा सरकारी दफ्तरो, बुलडोजर, साफ्ट, सिगम और मारकेटिंग जैसे शब्दो का प्रयोग नही किया जा सकेगा। परसो फ्रांस की कौमी ऐसम्बली ने यह कानून पास कर दिया जिसके अन्तर्गत अंग्रेजी तथा विदेशी भाषाओ के शब्दों के प्रयोग के स्थान पर फ्रांसीसी शब्दो का ही प्रयोग किया जाए। इसकी सूचना तालीमी इदारो मे कारपोरेट दस्तावेज पर होगा। बिल वजीर किशाफत जैकलैम तौबो ने पेश किया था जब कि १९९३ मे कनजरवेटर प्रतिनिधियो ने लोक सभा मे नुमाया बहुमत प्राप्त किया। इस कानून का उद्देश्य है कि फ्रांसीसी शब्दो का ही प्रयोग किया जाए। कानून इसलिए पास हो गया है क्योंकि पारलियामेन्ट मे कन्जरवेटरो का बहुमत है।

(प्रताप से साभार)

सम्पादकीय

आर्य समाज का चौथा नियम

आर्यों के नियम और उद्देश्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने जीवनीय अंशों से "सत्य" पर अधिक जोर दिया है। ईश्वरीय ज्ञान तो सत्य-सनातन सिद्धांत तो है ही, परन्तु सत्य विद्याओं की पुस्तक कहकर इन शब्दों का वास्तविक अर्थ यही है सम्भवतः ऋषि का अभिप्राय किसी आर्य समासद् के हृदय पर अधिक बोझ न डालना हो। केवल मात्र-सत्य विद्या के शब्दों पर बिना नानुकर के ही विचार विमर्श किया जा सकता है।

सत्य के प्रतिपादन पर ऋषि ध्यान देकर मानव को सत्य पर आरूढ़ कर असत्य से दूर रखना चाहते हैं। चतुर्थ नियम है—

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। ईश्वर सत्य एक अटल सिद्धांत है उस सर्व शक्तिमान ईश्वर का परन्तु इस अल्पज्ञ जीव के लिये सत्य का पालन करके अपने जीवन को सार्थक बनाना है। यह नियम आर्य समाज की शोभा है। आर्य समाज को उन सब पन्थों से पृथक करता है जो अपनी साधारण और किन्हीं दशाओं में सर्वथा निरर्थक बात के लिए भी मरने-मारने के लिए तैयार रहते हैं। वेद और उपनिषदों में "ईश्वर" को सत्य कहा है।

ईश्वर-सत्य-क्यों है इसका उत्तर "बृहदारण्यक" ने दिया है "सत्यम्" तीन शब्दों का योग है। (स-ति-यम्) स जीव को कहते हैं ति-ब्रह्माण्ड को, यम्-शासक का नाम है। अतः सत्यम् परमात्मा का नाम इसी से है कि वह जीव और जगत दोनों को नियम में रखता है बृ० ५ अ, ब्रा० ५, क०-१

फिर प्रश्न है कि ऐसे गुरु को कैसे प्राप्त किया जा सकता है। उपनिषद् का उत्तर यही है कि "तद्सत्ये प्रतिष्ठतम् वह ब्रह्म सत्य में प्रतिष्ठितम्" प्रतिष्ठित है। इसलिए सत्य को प्राप्त करने के लिए ही ब्रह्म को प्राप्त कर सकते हैं सत्य से विमुख होना ईश्वर से विमुख होना है।

परन्तु आज मानव का स्वभाव बन गया है कि वह सत्य का आश्रय लेकर झूठ बोलेगा। महाभारत कार का निम्नवाक्य "सत्यस्यवचन श्रेय.' सत्यवाणी श्रेष्ठ है क्योंकि सत्य का प्रयोग हित में बोलो जाए।

नहि सत्यात्परो धर्मः सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। सत्य भी वह परन्तु जो तीनों कालों में एक सा रहें। हमारे मन वचन में झूठ का प्रयोग ही सत्य सिद्धांत है।

धर्मशास्त्रों ने या ऋषि महर्षियों ने सत्य की महिमा प्राचीनतम ग्रन्थों में वर्णित की है या सत्य के समर्थन में जो तत्व हमें दिये हैं उनमें मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण जो बताये हैं इन लक्षणों में सत्य एक प्रमुख लक्षण है जहां सत्य है वहीं धर्म है। "सत्यमेव जयते नानृतम्" विजय सदा सत्य की ही होती है। सत्य धर्म का प्रतिपादक है "यतो धर्मस्ततो जय" "सत्यस्य वचन श्रेय.' सत्य का प्रतिपादन वाणी की श्रेष्ठता है। आचार्य वेद पढ़ाकर ब्रह्मचारी को उपदेश देता है।

"सत्यवद-धर्मचर", सत्य ही बोलें, आचरण में धर्म की मान्यता हो। इस प्रकार जीवन में सत्य का व्यावहारिक जीवन हमारे लिये प्रमुख तत्व है। महर्षि दयानन्द ने चतुर्थ नियम में केवल सत्य की महिमा ही नहीं दर्शायी है।

महर्षि ने सत्य पर जो दृढ़ता जीवन में दर्शायी है वह अनुपम है।

सत्य की सिरोही से सहारे सब असत्य मत—

संकट-विकट मर्दानगी झेला था—दयानन्द अकेला था।

महर्षि सत्यार्थ प्रकाश को लिखते हुए कहते हैं कि मेरा इस सत्य-अर्थ के प्रकाश के बनाने में मुख्य उद्देश्य सत्य-सत्य को अर्थ का प्रयोजन सत्य का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहलाता जो सत्य के स्थान पर मिथ्या और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना-लिखना और मानना सत्य कहलाता है अतः सब मानवों के हितार्थ सत्यासत्य के स्वरूप को निरूपित करना मेरा उद्देश्य है। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका से उद्धृत—

पाकिस्तान को "पृथ्वी" से डर क्यों लगता है

श्री अश्वनी कुमार

आखिर पाकिस्तान को "पृथ्वी" से डर क्यों लगता है "पृथ्वी" एक ऐसा मिसाइल है जो न केवल आकाश, अपितु पृथ्वी तथा समुद्रपर दुश्मनों के छक्के छुड़ा सकता है। ये एक ऐसा हथियार हैं। जो शत्रुओं की सीमाएं पार कर सकता है सैकड़ों मील दूर शत्रुओं के ठिकानों, अड्डों को नष्ट भ्रष्ट कर सकता है। विशेष तौर पर यह पृथ्वी "जो कि आवाज की रफ्तार से भी तेज अनेक प्रकार के बमों से लेस होकर लाहौर से इस्लामाबाद पेशावर और कराची जैसे पाकिस्तान के बड़े-बड़े शहरों को मिन्टों में तहस नहस करने की शक्ति रखता है जिस दिन से 'पृथ्वी" को रस्मी तौर पर भारतीय सेना के शस्त्रागार में सम्मलित कर लिया गया है इस दिन से पाकिस्तानी हिमायती माहौरीन और पाकिस्तानी फौज में भय बैठ गया न सिर्फ पृथ्वी की वजह से पाकिस्तान की फौज और हिमायती हुकूमत अमली कमजोर हो गई है। बल्कि पाकिस्तान के सभी प्रमुख शहर छावनियां न्यूकलर आधारें से और दूसरे सभी हर प्रोजक्ट पृथ्वी के खतरनाक घेरे में आ चुके हैं। पाकिस्तान के हिमायती महारियान के अनुसार चालीस किलोमीटर से दो सौ पच्चास किलोमीटर की रेंज पर मार करने वाले पृथ्वी के सामने पाकिस्तान की पूरी हिमायती व्यवस्था लगड़ी होकर रह गई है। पाकिस्तान के एक हिमायती लेखक ने पिछले दिनों अपने लेख में पाकिस्तान को खतरा में यह लिखा है कि भारत पाक जंग की हालत में भारत की तरफ से छोड़ी गई चार पृथ्वी मिसाईलें पाकिस्तान की फौज को पूरी तरहा नाकारा बनाने में सक्षम है एक और पाकिस्तानी ने लिखा है कि पाकिस्तान के पास इस समय पृथ्वी का जवाब देने के लिए एक भी शक्तिशाली मिसाईल नहीं है इनका यह भी कहना है कि भारत की तरफ से पृथ्वी पाकिस्तान के खिलाफ लगाने के बाद भारतीयों की शक्ति इस कदर बढ़ जाएगी। जिससे सन्तुलन (तवाजन) इस कदर बिगड़ जाएगा कि भारत आने वाले दिनों में अपने पड़ोसी देशों पर जबरदस्त तरह से प्रभावित कर सकेगा इस सिलसिले में पृथ्वी के दागे जाने को लेकर ना सिर्फ पाकिस्तान अपितु अमेरिका ने भी भारत पर संयुक्त राष्ट्र महासभा पर दबाव डाला था पाकिस्तान ने पृथ्वी का मुकाबला करने के लिए अब चीन से एम ११ और एफ २५ मिसाईलें खरीदने का मसौदा तैयार किया है इधर भारतीय हिमायती महोरिन के अनुसार भारत में पूरी तरह से बने पृथ्वी मिसाईल रूसी और अमेरिका की मिसाईल से कहीं बेहतर है। पाकिस्तान भी इस बात को बाखूबी जानता है पाकिस्तानी महोरीन को भी इस बात का पता है कि पृथ्वी के बाद भारत के अगले मिसाईल प्रोग्राम के अन्तरगत जो मिसाईलें बनने जा रही हैं इन की रेंज एक हजार से पच्चीस सौ किलोमीटर के दरमियान होगी।

शायद भारत ने अपना यह प्रोग्राम भी शीघ्र पूरा कर लिया होता अगर रूस अमेरिका के दबाव में आकर भारत को रोकिट ईंजन की तकनीक देने के अपने पुराने वाद से ना मुकरता अब से भारतीय प्रधानमन्त्री श्री नरसिंह राव रूसी दौरे पर जा चुके हैं। वहां भारत में उम्मीद की जाती है कि रूसी राष्ट्रपति श्री बोरिस येल्तसिन भारत को राकेट इन्जन तकनिक देने के इनके पुराने वायदे के लिए शायद रजामंद कर लें। अगर ऐसा न हुआ तब भी भारतीय वैज्ञानिकों के मुताबिक भारत खुद अपने देश में राकेट इंजन बनाने की सलाहियत रखता है। जिस ढंग से पिछले अरसा में आलमी पर मिसाईल और निकोक्लर प्रोग्रामों को लेकर विश्व कोमी प्लेट फार्मों पर वाद-विवाद शुरू हुआ है। इसके तहत भारत के बढ़ते हुए कदमों से पाकिस्तान को डर लगना कुदरती है।

सम्पादक पंजाब केसरी

दिवंगत महामहोपाध्याय श्रीयुत् युधिष्ठिर जी मीमांसक

२८ जून १९९४ को अपराह्न साढ़े तीन बजे फरीदाबाद (हरियाणा) में वेद, वेदांग एवं शास्त्रों के अद्वितीय विद्वान, रामलाल कपूर ट्रस्ट के प्रधान, दर्जनों प्रौढ़ ग्रन्थों के प्रणेता एवं सम्पादक, वेदवाणी मासिक पत्रिका के सम्पादक, अनेक पुरस्कारों तथा उपाधियों से विभूषित और भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित महामहोपाध्याय पण्डित प्रवर श्रीयुत युधिष्ठिर जी मीमांसक दिवंगत हो गए। उनके निधन के साथ ही समाप्त हो गई वह हलचल जो आर्य जगत के

विद्वद्-निकाय में परिलक्षित होती थी। पिचासी वर्ष की परिपक्व अवस्था, नैसर्गिक शरीर वैकल्य और सतत अनारोग्य भी उनके मनोबल को लेश मात्र प्रभावित नहीं कर सके। अंतिम श्वास तक वेद विद्या के समुत्थान और वैदिक वाङ्मय के प्रचार-प्रसार के चिन्तन में ही निमग्न रहा उनका मन। वे वे जिनके विषय में अतिविश्वास पूर्वक कहा जा सकता है—

> सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
> मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ (गीता)

इसमें सन्देह नहीं, उस महान आत्मा में ये गुण उनके पूर्व जन्म या जन्मों में किए हुए कर्मों के कारण विद्यमान थे। जिस प्रकार उनका पालन पोषण एवं प्रशिक्षण हुआ, उससे उनके प्रसुप्त संस्कारों का विकास स्वाभाविक था। २२ सितम्बर १९०९ को श्री गौरी लाल आचार्य जी के घर (महम्मदपुर, तत्कालीन इन्दौर राज्य) पर जन्म लेकर ग्यारह वर्ष के वय तक सम्भवतः निरन्तर ही उनके बाल-कर्ण माता-पिता के मुख से सुनते रहे—'युधिष्ठिर को वेदपाठी ब्राह्मण बनाना है।' पांचवी श्रेणी तक पढ़ाने के पश्चात श्री गौरीलाल जी ने गुरुकुल होशंगाबाद (जहां बालक युधिष्ठिर का उपनयन संस्कार हुआ) गुरुकुल सान्ताक्रूज, बम्बई वर्तमान सूरत), गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल वृन्दावन में बालक युधिष्ठिर के प्रवेशार्थ यथेष्ट प्रयास किए, परन्तु निराशा ही हाथ लगी। अन्ततः विरजानन्द आश्रम, हरदुआगंज (जिला अलीगढ़ उत्तर प्रदेश) में उन्हें प्रवेश की अनुमति मिली। इस प्रकार ३ सितम्बर १९२१ को ब्रह्मचारी युधिष्ठिर गुरुवर पण्डित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के अन्तेवासी बने। विरजानन्द आश्रम हरदुआगंज से अमृतसर (१९२२-२५), काशी (१९२६-२८), अमृतसर (१९२८-३१), लाहौर (१९३५) घूमता रहा और ब्रह्मचारी युधिष्ठिर इस अवधि में विभिन्न शास्त्रज्ञ गुरुओं से विद्योपार्जन करते रहे। अप्रैल १९३६ में उनका समावर्तन संस्कार बड़ी धूमधाम से हुआ जिसमें उन्हें 'वेदवेदांगाचार्य' उपाधि से अलंकृत किया गया।

जून १९३६ में पण्डित युधिष्ठिर जी का पाणिग्रहण संस्कार श्रीमती यशोदा देवी से हुआ। उनके कर्म क्षेत्र का आरम्भ लाहौर में विरजानन्द आश्रम में गुरुवर श्रीयुत जिज्ञासु जी महाराज के वेदभाष्य सहायक एवं अध्यापक के रूप में हुआ। शोध और लेखन की प्रवृत्ति उनमें बाल्यकाल से ही थी। अतः संस्थाओं में कार्य करते हुए निजी रूप से शोध एवं लेखन में वे सदा प्रवृत्त रहे। सन् १९३६ से १९४२ तक लाहौर में कार्य करने के पश्चात सन् १९४२ से १९४५ तक परोपकारिणी सभा अजमेर में कार्यरत रहे। पुनः १९४५ से १९४७ तक गुरुवर श्रीयुत जिज्ञासु जी के सहयोगी रहे। इस काल में पं० भगवद्दत्त जी से विशेष सम्पर्क रहा। भारत विभाजन के पश्चात कुछ समय आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर में कार्य करते रहे मार्च १९५० में रामलाल कपूर ट्रस्ट वाराणसी में श्री गुरुजी के पुनः सहयोगी बने। मई १९५५ में स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण वाराणसी छोड़कर दिल्ली आ गये और पं० भगवद् दत्त जी के सहयोगी बने। सन् १९५९ से १९६२ तक टंकारा ट्रस्ट से सम्बद्ध रहे और उसके पश्चात अजमेर में स्वतन्त्र प्रकाशन व्यवसाय आरम्भ किया। गुरुवर पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के निधन के पश्चात सन् १९६५ से अजमेर रहकर ही रामलाल कपूर ट्रस्ट का कार्य करने लगे।

सन् १९६७ में तीन मास पाणिनि साङ्ग महाविद्यालय, भुवनेश्वर के आचार्य पद पर रहे। जुलाई १९६७ में सोनीपत में रामलाल कपूर ट्रस्ट प्रेस स्थापित किया और जून १९७० से ट्रस्ट की प्रवृत्तियों का संचालन बहालगढ़ (सोनीपत) से करने लगे। जनवरी १९८७ में पत्नि यशोदादेवी के निधन के पश्चात श्री पण्डित जी प्रायः अपने बड़े सुपुत्र श्री बृहस्पति शर्मा के पास फरीदाबाद में रहने लगे। यदा कदा बहालगढ़ जाते थे, पाणिनि महाविद्यालय, बहालगढ़ के छात्रों की सेवा से वे अत्यन्त प्रभावित एवं सन्तुष्ट थे। अतः उन्हें प्रभूत आशीर्वचन वितरित करते थे।

महामहोपाध्याय पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक द्वारा कृत कार्य

१- अध्यापन

१९३६-४२ विरजानन्द आश्रम, लाहौर। १९४३-४५ स्वगृह पर अजमेर, १९४६-४७ विरजानन्द आश्रम, लाहौर। १९४७-५० स्वगृह पर, अजमेर। १९५०-५५ पाणिनि महाविद्यालय, वाराणसी। १९६२-६६ स्वगृह पर, अजमेर। १९६७ भुवनेश्वर। १९७०-७५ बहालगढ़।

२- शोध

१९३० से १९८० तक निरन्तर शोध कार्य में संलग्न रहे।

३- लेख, निबन्ध :

उच्च स्तरीय पत्रिकाओं और अभिनन्दन ग्रन्थों में विशिष्ट शास्त्रीय १६ निबन्ध संस्कृत में और १७ निबन्ध हिन्दी में प्रकाशित।

४- सम्पादन :

वेद-वेदांग तथा दर्शन विषयक २२ ग्रन्थों का सम्पादन जिनमें हिन्दी अनुवाद भी समाविष्ट है।

५- मौलिक रचना :

संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास (तीन भाग, वैदिक स्वर मीमांसा, वैदिक छन्दोमीमांसा, ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास, ऋग्वेद की ऋक्संख्या और श्रौत यज्ञ मीमांसा।

विशिष्ट सम्मान और पुरस्कार

१- विशिष्ट सम्मान :

१	राजस्थान शासन-व्याकरण शोध, तीन हजार रु०	—१९६३ ई०
२	भारत के राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत दस हजार रु०	—१९७७ ई०
३	उत्तर प्रदेश प्रशासन व्याकरण पन्द्रह हजार रु०	—१९७९ ई०
४	हिन्दी साहित्य सम्मेलन-साहित्य वाचस्पति उपाधि	—१९८५ ई०
५	आ० स० सान्ताक्रूज बम्बई-अभिनन्दन ७५ हजार रु०	—१९८५ ई०
६	सं० सं० विश्वविद्यालय वाराणसी, महामहोपाध्याय उपाधि	—१९८९ ई०
७	उ० प्र० संस्कृत अकादमी, विश्व भारती एक लाख रु०	—१९९४ ई०

२- ग्रन्थों पर पुरस्कार :

आठ मौलिक ग्रन्थों पर विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए

३- संस्थाओं द्वारा पुरस्कार :

सात संस्थाओं द्वारा विशिष्ट अवसरों पर पुरस्कृत।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

'नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये बार एक ३५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें। —सम्पादक

संस्कृत के सम्बन्ध में श्री अर्जुन सिंह जी का पत्र

त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत संस्कृत पढ़ाये जाने के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने दिनांक २१-२-९४ को मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह जी को एक विशेष पत्र लिखा था। इस पत्र का उत्तर श्री अर्जुन सिंह जी ने स्वामी जी को भेजा है जो अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

अ०शा०पत्र सं० एफ० २८-१-८९-स्कूल-४ (भाग)
मानव संसाधन विकास मन्त्री, भारत
नई दिल्ली-११०००१
दिनांक ४ जून १९९४

प्रिय श्री स्वामी जी,

त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत संस्कृत पढ़ाए जाने के सम्बन्ध में २१-२-९४ के अपने पत्र को देखने की कृपा करें।

निःसंदेह आप अवश्य जानते होंगे कि पिछले तीन दशकों के दौरान त्रिभाषा सूत्र का राष्ट्रीय शिक्षा नीति, १९६८ और १९८६ के अंग के रूप मे मुख्यमंत्री सम्मेलन, राष्ट्रीय विकास समिति, केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड (केब) और संसद जैसे अनेक उच्च स्तरीय मंचो पर समर्थन किया गया है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि स्कूल स्तर पर भाषा शिक्षण के मामले में यह सूत्र ऐसी राष्ट्रीय सर्वानुमति का प्रतिनिधित्व करता है जो एक लम्बी अवधि में तैयार हुई है और जिसे देश के सभी राज्यो मे लगभग पूर्णतया स्वीकृति मिली हुई है।

त्रिभाषा सूत्र में माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी, अंग्रेजी और एक आधुनिक भारतीय भाषा अधिमानतः किसी एक दक्षिण भारतीय भाषा और गैर-हिन्दी भाषी राज्यो में हिन्दी, अंग्रेजी तथा एक क्षेत्रीय भाषा के शिक्षण का प्रावधान है। त्रिभाषा सूत्र के कार्यान्वयन की जांच करने के लिए १९८८ में एक केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की समिति का गठन किया गया था। इस समिति ने सिफारिश की थी कि उक्त सूत्र के कार्यान्वयन को और अधिक कारगर बनाने की आवश्यकता है। समिति की सलाह को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने सितम्बर, १९८८ मे एक नई योजना अपनाने का प्रस्ताव रखा जिसके अन्तर्गत हिन्दी भाषी क्षेत्रों के छात्रों को हिन्दी और अंग्रेजी के अलावा किसी एक आधुनिक भारतीय भाषा का अध्ययन करना आवश्यक होगा तथा संस्कृत हिन्दी "क" पाठ्यक्रम का अंग होगी जो कक्षा ९ से १० तक के लिए अनिवार्य होगी। इसे संस्कृत के लिए भी लाभकारी समझा गया, क्योंकि जहां पुरानी योजना के अन्तर्गत इसे सिर्फ ३ से ५ वर्ष की अवधि तक पढ़ा जाता है वहीं अब इसे कहीं ज्यादा लम्बी अवधि तक पढ़ा जाएगा। सितम्बर, १९८८ की योजना मे संस्कृत को अतिरिक्त विषय के रूप मे लेने का भी प्रावधान है।

आपको ज्ञात होगा कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने दिनांक १७-३-८९ और १४-१२-८९ के अन्तरिम आदेशों के कारण केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने सितम्बर, १९८८ में उद्घोषित अपनी इस संशोधित योजना को वापस ले लिया। फिलहाल यह मामला न्यायाधीन है। चूंकि सरकार माननीय उच्चतम न्यायालय मे यह पक्ष लेकर एक हलफनामा पहले ही दायर कर चुकी है कि भाषा शिक्षण की संशोधित योजना संस्कृत के अध्ययन को नुकसान पहुंचाए बगैर त्रिभाषा सूत्र के और अधिक कारगर कार्यान्वयन के हित में तैयार की गई है, इसलिए माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्णय का इन्तजार करना सभी सम्बन्धित पक्षकारों के लिये सर्वोत्कृष्ट होगा।

सादर,

आपका,
अर्जुन सिंह

श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती,
अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य लीग,
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली।

संस्कृत की जगह उर्दू लाने की कोशिश को झटका

लखनऊ, १ जुलाई। उत्तर प्रदेश के त्रिभाषा फार्मूले मे संस्कृत की जगह उर्दू को शामिल करने के सरकार के प्रस्ताव को उ० प्र० माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने साफ तौर पर नामंजूर कर दिया है। इससे मुलायम सरकार को भारी झटका लगा है। अब सरकार बोर्ड मे भारी फेरबदल की तैयारी कर रही है।

बोर्ड ने एक महीने पहले हुई अपनी बैठक में सरकार के इस प्रस्ताव पर यह कहते हुए आपत्ति की कि इससे अनावश्यक विवाद खड़ा होगा। बोर्ड के प्रस्ताव मे कहा गया है, 'प्रस्तावित फार्मूला व्यावहारिक नहीं है और मौजूदा फार्मूला तीनो भाषाओ का ज्ञान देने के लिए पर्याप्त है।'

मुख्यमंत्री ने हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत के त्रिभाषा फार्मूले में संस्कृत की जगह पर उर्दू लाने का प्रस्ताव रखा था। सरकार ने उर्दू को हाई स्कूल स्तर पर आवश्यक करने का फैसला किया था। बाद में जब कई विद्वानों और शिक्षा शास्त्रियो ने इसका कड़ा विरोध किया तो मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने ऐसी किसी योजना से जोरदार तरीके से इन्कार किया। उन्होंने अखबार वालों पर सरकारी कदम को गलत तरीके से पेश करने का आरोप लगाया।

मुलायम सिंह ने १६ मई को 'इंडियन एक्सप्रेस' से इन्टरव्यू में कहा कि, 'सरकार ने त्रिभाषा फार्मूले को बदलने के लिए 'कोई फैसला नहीं किया है। सरकार अभी इस मामले पर विचार कर रही है। प्रस्तावित संशोधनों को विस्तार से बताने के लिए, दबाव डालने पर भी यादव इतने उत्तेजित हो गए कि उन्होंने इस बारे में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ व भारतीय जनता पार्टी से सम्पर्क करने की सलाह दे डाली क्योंकि उनके पास कोई जवाब नहीं था।

अब बोर्ड के फैसले के बाद सरकार के पास उर्दू को पाठ्यक्रम में शामिल करने का एक ही रास्ता बचा है। वह है इन्टरमीडिएट एक्ट की धारा ९ (४) में संशोधन करना। लेकिन विभिन्न क्षेत्रों से सरकार के कदम की निन्दा के बाद ऐसा करना मुश्किल होगा। कुछ छात्र संगठनो ने धमकी दी है कि अगर सरकार संस्कृत की जगह पर उर्दू लाने के लिए फैसले पर अड़ी रहती है तो वे आंदोलन करेंगे।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष बीपी खंडेलवाल की अध्यक्षता मे हुई बैठक में उर्दू को नामंजूर करने का फैसला हुआ। इस फैसले से सरकार में घबराहट पैदा हुई है। शिक्षा विभाग की नौकरशाही इस मामले में श्री खंडेलवाल की बलि का बकरा बनाने की कोशिश में है। वह कह रही है कि श्री खंडेलवाल ही सरकारी प्रयास को नाकाम कर रहे हैं। शिक्षा विभाग के एक अधिकारी ने नाम न बताने की शर्त पर कहा कि, 'श्री खंडेलवाल ने त्रिभाषा फार्मूले में संशोधन पर प्रस्ताव पास करते समय सत्तारूढ़ पार्टी की नीतियों की परवाह नहीं की। इसके लिए और किसी को दोषी नहीं ठहराया जा सकता।'

बोर्ड के पथप्रदर्शन की अपनी दिक्कतें हैं। अगर उन्होंने सरकार के प्रस्ताव को पूरी तरह से मान लिया होता तो इसे लागू करने में जो भी दिक्कत आती उसके लिए वे ही दोषी ठहराए जाते। संस्कृत की जगह पर उर्दू लागू करने की जिम्मेदारी सरकार उन पे डाले बढ़ देगी।

उर्दू राजनीति का विषफल

—दीनानाथ मिश्र

अरबी लिपि में लिखी जाने वाली उर्दू विभाजन की भाषा है। यह द्विराष्ट्रवाद का अभिन्न अंग है। पहले इसने भारत विभाजन कराया। और अब फिर से पाकिस्तान के अन्दर विभाजन की मांग को आधार दे रहा है। उत्तर प्रदेश और बिहार से पाकिस्तान गए मुसलमान कराची और आस-पास के क्षेत्रों में रहते हैं। यह करीब एक करोड़ मुसलमान अपना अलग-सूबा चाहते हैं। सिंध को काटने के सवाल पर मुहाजिरों और सिंधियों के बीच संघर्ष चल रहा है। मुहाजिरों ने अपनी अलग पार्टी बना ली है। असल में उर्दू पाकिस्तान की पांच प्रतिशत आबादी की भी भाषा नहीं है। पंजाबी, सिंधी, पख्तों सब अपनी-अपनी भाषा बोलते हैं लिखते भी हैं। उनकी भाषाई संस्कृति मुहाजिरों से अलग है।

करीब डेढ़ सौ साल पहले १९वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक और मुगलकाल के उत्तरार्ध तक सरकारी काम काज की और अदालतों की भाषा पर्शियन थी। हिन्दी के विभिन्न रूपों और पर्शियन की संकर भाषा के रूप में उर्दू का विकास हुआ। उत्तर प्रदेश जन्म-भूमि है। इसे नागरी लिपि में लिखने का आग्रह इस महाद्वीप में इस भाषा को इस्लाम के अभिन्न अंग के रूप में विकसित करता रहा। द्विराष्ट्रवाद के पिता सर सैयद अहमद खां थे। १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब प्रदेश में हिन्दी उर्दू को बराबर का दर्जा दिया गया तो उनका टकराव प्रारम्भ हुआ। पाकिस्तान के जनक मो० अली जिन्ना ने सन् १९२९ में पं० नेहरू को ऐतिहासिक खत लिखा था। उस खत के १४ सूत्रों में एक सूत्र उर्दू का सवाल भी था। भारत विभाजन को धार उर्दू ने प्रदान की। विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के उर्दू भद्रलोक ने विभाजन के बाद इस भद्रलोक का एक अंग पाकिस्तान चला गया। लेकिन पाकिस्तान का समर्थन करने वाले उर्दू के झंडाबरदार लोगों में से बहुत बड़ी संख्या में भारत में ही रहे। पिछले ४७ वर्षों में उर्दू मुसलमानों की मजहबी भाषा बन गई है। देश के सैकड़ों इस्लामी अध्ययन केन्द्र इस दिशा में प्रयासरत हैं। विभाजन के बाद कुछ लोग यह तर्क देते थे कि उर्दू भारतीय भाषा है। इसका जन्म भारत में हुआ है। इसका विकास भी स्थानीय है। इसका मजहब से कोई नाता नहीं।

बहुत से नेता जिसमें मुलायम सिंह के गुरु डा० लोहिया भी थे, उर्दू को नागरी लिपि में लिखने के हिमायती थे। लेकिन इस मुद्दे को कभी मुसलमानों ने स्वीकार नहीं किया। देवनागरी लिपि में लिखे जाने के बाद भी मराठी और गुजराती भाषाएं सुरक्षित ही नहीं हैं, आगे बढ़ रही हैं। जिन शायरों की पुस्तकें देवनागरी में छपती हैं, वह कहीं ज्यादा बिकती हैं। उनका असर भी कहीं अधिक होता है। लेकिन कट्टरपंथी मुसलमानों ने उर्दू को इस देश के इस्लाम से जोड़कर रखा है और वह मानने वाले नहीं हैं। इस्लाम से ही नहीं, उनकी कोशिश तो यह है कि यहां के तमाम मुसलमानों से जोड़कर रखें। और इसीलिए प्रदेश-प्रदेश के मकतबों में उर्दू और इस्लाम की शिक्षा दी जाती है। और एक पृथकतावाद पुख्ता होता जाता है। वरना बंगाल, केरल, कश्मीर में उर्दू का क्या मतलब है?

वोट बैंक की राजनीति में उर्दू पिछले तीन दशकों से सौदाबाजी की खिड़की बनी हुई है। भांति-भांति के राजनैतिक दल उर्दू के नाम पर सौदा करते रहे हैं। और वोट बटोरते रहे हैं। इस बीच उर्दू के हजारों अखबार चालू हो गए, जो उर्दू और मुसलमान वोटों की ठेकेदारी करते हैं। सरकारी विज्ञापन पा सकते हैं। यह उनकी रोजी रोटी है। इस्लामी कट्टरता में एक दूसरे से होड़ लेते हैं। इस जमात के मुस्लिम वोट के खरीददार जहां मुल्ले मौलवियों से सौदेबाजी करते हैं, वहां इन अखबारों के सम्पादकों और मालिकों से भी करते हैं। हेमवती नन्दन बहुगुणा और डा० जगन्नाथ मिश्र ने किस्तों में उर्दू की खिड़की पर सौदेबाजी की। उनके दौर में वही विश्वनाथ प्रताप सिंह ने किया और अब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव भी वही कर रहे हैं। हर चार छह माह बाद उर्दू पर [illegible]। उर्दू अखबारों के अवलोकन से साफ-साफ पता चलता है कि उनके पीछे मुख्य मुद्दे हैं, जो अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी कट्टरता के हैं। व कुछ मुस्लिम देशों में हो रहे परिवर्तनों से भी मुसलमानों को अपरिचित रख रहे हैं। उधर उधर कट्टरता बढ़ रही है और खुलकर सामने आ रही है। और आज यह इस खतरनाक कगार पर पहुंच गई है जहां देश को गम्भीरता से विचार करना होगा।

इसमें कोई शक नहीं उर्दू को एक बड़ी हद तक मुसलमानों की मजहबी भाषा बना दिया गया है। हिन्दुओं से काटने के लिए इसे अरबी लिपि में लिखने का दुराग्रह भी है। यहां तक कि कश्मीर, दक्षिण और पूर्व के राज्यों के मुसलमानों को मकतबों में अब उर्दू की और उर्दू में शिक्षा दी जाती है। अरबी और फारसी भाषा के शब्दों से उर्दू और हिन्दी के प्रगतिशील लेखकों ने हिन्दी को लबालब कर दिया। तस्कर, हाजी मस्तान और दाउद इब्राहिम के पैसे से बनने वाली फिल्मों से इस अभियान में जान डाली गई। फिल्मी कलाकारों का उर्दू उच्चारण सही हो, इसके लिए प्रशिक्षण तक की व्यवस्था है। पैसे ही यह तय करते हैं कि गीत कौन लिखेंगे, संवाद कौन लिखेंगे, पटकथा कौन लिखेंगे, कलाकार कौन होंगे? इन सब-माध्यमों से उर्दू का दबदबा फिल्मी दुनिया में बनता गया। यहां तक कि नीरज और वीरेन्द्र मिश्र जैसे हिन्दी के लोकप्रिय गीतकार भी बम्बई से उखाड़ दिए गए।

हाल में मुलायम सिंह यादव ने त्रिभाषा फार्मूले में उर्दू जोड़ दिया। और हिन्दी और संस्कृत को मिलाकर एक कर दिया। ७० अंक हिन्दी के और ३० अंक संस्कृत के १०० अंक उर्दू के। संस्कृत की कीमत पर उर्दू की यह तरफदारी वोट बैंक की खरीददारी है। यह कीमत है मुस्लिम वोट के समर्थन की। हालांकि वह कहते रहे कि डा० लोहिया उर्दू को नागरी लिपी में लिखने के पक्षपाती थे। डा० लोहिया ने भले ही कुछ भी कहा हो, वोट डा० लोहिया के दर्शन में नहीं था। मुस्लिम वोट के सौदागरों के पास था। सो मुलायम सिंह ने एक साथ तीन कदम उठाए। राज्य सरकार के सभी कार्यालयों में उर्दू अनुवादकों की नियुक्ति त्रिभाषा फार्मूले में स्कूलों में उर्दू की जगह और उर्दू अध्यापकों की नियुक्ति। तकरीबन एक लाख उर्दू जानने वालों की नियुक्ति का क्या अर्थ है? उर्दू को रोजी रोटी और राजनीति से जोड़ना। इसका अर्थ मुस्लिम कट्टरता और पृथकतावाद को बढ़ावा देना भी है।

वोट की राजनीति का असर अर्थ व्यवस्था पर क्या पड़ेगा? मान लिया जाए कि पहिले साल में सिर्फ २५ हजार नियुक्तियां ही होंगी। औसत ढाई हजार रुपये महीने का खर्चा प्रतिव्यक्ति माना जाए तो भी डेढ़ सौ करोड़ रुपये सालाना का खर्च वोट खाते में डाला जाएगा। यह वोट किस भाव पड़ेंगे? अर्थ व्यवस्था पर भी और पृथकतावाद के तापक्रम पर भी इसका असर आम लोगों के हितों के खिलाफ होगा। एक बात उन्होंने और की है। वास्तव मे इससे भी ज्यादा खतरनाक है। उत्तर प्रदेश सरकार ने शांति सुरक्षा बल के नाम पर पांच नई बटालियन भर्ती करने का फैसला किया है। इसमें निर्देश यह है कि २७ प्रतिशत मुसलमानों को भर्ती किया जाये। ऐसा सीधे-सीधे सम्भव नहीं था। इसलिये इस आशय का प्रावधान रखा गया कि हिन्दी के अलावा एक भाषा (उर्दू) जानने वालों को विशेष प्राथमिकता दी जायेगी। सम्प्रदाय के आधार पर होने वाली यह भर्ती समाज के स्तर पर शांति और व्यवस्था कर पाएगी अथवा दंगों को बैरकों तक ले जाएगी। इसे बहुत आसानी से समझा जा सकता है। मिली जुली पीएसी के खिलाफ पिछले पन्द्रह वर्षों से लगातार अभियान चल रहा है। कट्टरपंथी मुसलमानों का यह दावा है कि हिन्दुओं को तो हम पाठ पढ़ा सकते हैं बशर्ते पुलिस और पी० ए० सी० बीच में नहीं पड़ें। और यह बात सही भी है। जगह-जगह संवेदनशील क्षेत्रों में हथियार बन्द मुसलमानों की संख्या और जमा किए गए हथियारों की संख्या बढ़ती जा रही है। जब कभी प्रशासन निरस्त्रीकरण की तरफ बढ़ता है, राजनीति उसे रोक देती है। स्वयं मुलायम सिंह ने इसे अनेक जगहों पर रोका है। और आज तो पाकिस्तान की गुप्तचर व्यवस्था आई० एस० आई० ने उत्तर प्रदेश और बिहार में इतनी तैयारी कर ली है कि कभी अगर कार्रवाई हुई तो सरकार और जनता को करारा झटका लगेगा। और यह सब चल रहा है उर्दू के नाम पर और उर्दू में से पैदा हुए विभाजन की ताकत पर।

भारत में आम तौर पर उर्दू से नफरत नहीं है। बल्कि उर्दू से एक

(शेष पृष्ठ ७ पर)

विद्यार्थी और सदाचार (२)

—पं० रामचन्द्र देहलवी

जीवात्मा में धार्मिकता या विद्वत्ता स्वाभाविक नहीं है। एक और उदाहरण लीजिये। एक व्यक्ति एक सेठ के पास गया और जाकर कुछ रुपये जमा कर दिये कि मैं एक मास के पश्चात् आकर ले लूंगा। एक मास के पश्चात् आकर रुपये वापस मांगे तो सेठ जी ने पूरे रुपये दे दिये। वह व्यक्ति बड़ा प्रसन्न हुआ और सेठ जी की बड़ी प्रशंसा की। दूसरी ओर एक व्यक्ति एक सन्दूक में कुछ रुपये रखता है। कुछ समय के पश्चात उन रुपयों को बाहर निकालता है और जितने रुपये रखे थे उतने ही रुपये पाकर उसकी प्रशंसा करता है तो लोग कहेंगे कि क्या सन्दूक भी बेईमान हो सकती थी और जब वह बेईमान नहीं हो सकती तो ईमानदार भी नहीं हो सकती। सेठ की प्रशंसा हो सकती है क्योंकि वह उन रुपयों को खा सकता था अथवा वह कह सकता था कि मुझे कब दिये थे परन्तु सन्दूक न रुपयों को खा सकता है और न वह कह सकता है कि मुझे रुपये कब दिये थे।

हम भला बनना चाहते हैं परन्तु भलाई स्वाभाविक वस्तु नहीं है अतः जो स्वभाव से विद्वान और धर्मात्मा है। उससे सीखना होगा। वह परमात्मा है जिसको आजकल के कई लोग नहीं मानते। फिर प्रश्न होता है कि जो ईश्वर को नहीं मानते वे धर्मात्मा और विद्वान कहां से हो गए? इसका समाधान यह है कि ईश्वर की ओर से ज्ञान आया है परन्तु उन ज्ञान प्राप्त करने वालों ने बताया नहीं कि धर्म का मूल कारण क्या है। जैसे पिता ने अपने पुत्र को शिक्षा दी परन्तु जिससे उसने सीखी थी, लड़के को उसके दादा का नाम नहीं बताया तो वह दादा को क्या जाने। ठीक इसी प्रकार ज्ञान तो प्रभु से ही आता है परन्तु लोग उसको बताते नहीं इसलिए अन्य लोग उसको नहीं जानते। हमारे अन्दर उत्तम गुण आते हैं, इन गुणों को हम माता-पिता से सीखते हैं—यह बात तो ठीक है परन्तु माता-पिता स्वतन्त्र कारण नहीं है।

मुरादाबाद मे मेरे व्याख्यान हो रहे थे। एक व्याख्यान के प्रधान एक सैशन जज बने। उनका एक शिक्षक था। उसके सामने वे व्याख्यान की चर्चा कर रहे थे। उन शिक्षक महोदय का एक मित्र भी सुन रहा था। वार्तालाप सुनकर उस मित्र ने कहा कि ईश्वर की आवश्यकता ही क्या है? शिक्षक उन्हें मेरे पास ले आया और मुझसे कहा कि "ये हमारे मित्र हैं। ये कहते हैं कि ईश्वर की आवश्यकता ही क्या है?" मैंने भी उन्हें बढ़ावा दिया और कहा, 'कि इस खुदा को पहले दूर कोने में खड़ा कर दो फिर वार्तालाप करेंगे।' इतना बढ़ावा देकर मैंने कहा, 'कि आप बाप से उत्पन्न हुए हैं दादा की तो आवश्यकता ही नहीं है।" वह कुछ लज्जित हुआ। मैंने फिर पूछा, कि "आप कुछ मानते भी हैं।" उन्होंने कहा, "हां, गांधी जी को मानता हूं।" मैंने कहा, "पूरा मानते हो या अधूरा उन्होंने कहा पूरा मानते है मैंने कहा, "गांधी जी तो ईश्वर को मानते थे फिर आप उन्हें पूरा कहां मानते हैं आप उन्हें अधूरा मानते हैं।" मैंने फिर एक और प्रश्न किया कि "आप गांधी जी को क्यों मानते हैं?" उन्होंने कहा, 'वे धर्मात्मा और विद्वान् थे इसलिये।" मैंने कहा, "गांधी जी मे यह बातें स्वाभाविक थीं या किसी से सीखी थीं?" उन्होंने कहा, "गुरु से सीखी थीं।" मैंने कहा, "उनके गुरु पैदा ही ऐसे हुये थे या उन्होंने भी किसी से सीखी थी?" उन्होंने कहा, "उन्होंने भी सीखी थी।" तो मैंने कहा, सृष्टि के आदि में भी कोई होना चाहिये जिससे उन्होंने सीखी थी।" वे कहने लगे, "हां साहब कोई होना तो चाहिये।" मैंने कहा वही धर्म और विद्या का आदि स्रोत है। उसी का नाम ईश्वर है। यदि आपको ईश्वर अच्छा नहीं लगता तो कोई और नाम रख सकते हैं। उन्होंने कहा "जब ईश्वर को स्वीकार ही कर लिया तो नाम बदलने की क्या आवश्यकता है।" मैंने कहा, "तो उस कोने मे खड़े ईश्वर को अब बुला लूं।"

सदाचारी बनने के लिये ईश्वर का मानना आवश्यक है क्योंकि यदि एक व्यक्ति ईश्वर को न माने तो वह विद्वान् हो सकता है परन्तु उसे धर्मात्मा नहीं कह सकते। जो अच्छे मार्ग पर चले और बुरे मार्ग से दूर रहे, उसे धर्मात्मा कहते हैं। ईश्वर-विश्वासी बालक ही सदाचारी और धर्मात्मा हो सकते हैं। 'कुत्सितं मारयति इति कुमारः' अर्थात जो बुरी बातों का नाश करने वाला हो वह कुमार कहाता है।

अब देखना यह है कि बिगाड़ कहां से आरम्भ होता है। बिगाड़ घर से आरम्भ होता है। बच्चों में अपने कर्तव्य को भूल जाने का स्वभाव माता-पिता से आता है। बुरा चाल-चलन बाहर की अपेक्षा घर से अधिक आता है। जैसा घर का वातावरण होता है वैसा ही बच्चों का स्वभाव बन जाता है। माता-पिता का यह विचार कि जिस प्रकार वृक्ष और पौधे अपने-आप बन जाते हैं, इसी प्रकार बच्चे भी अपने-आप बनते हैं—बहुत ही भ्रमपूर्ण है। वृक्ष और पौधे ईश्वर के अधीन हैं बच्चे माता-पिता के अधीन होते हैं! उन्हें ठीक प्रकार शिक्षित करने के लिए कभी-कभी ताड़ना भी दी जानी चाहिये। जिस प्रकार कुम्हार थप्पड़ लगा कर मटके को बनाता है इसी प्रकार सुधार की दृष्टि से कुछ ताड़ना की जावे तो बहुत उत्तम है।

बच्चे के निर्माण के लिए ताड़ना आवश्यक है परन्तु आज यदि अध्यापक बच्चे को धमका दे तो विपत्ति आ जाती है। बिना ताड़ना के बच्चे बनते नहीं अतः बच्चे मास्टर को बनाते हैं। आज अध्यापक घर जाकर यह कहता है 'कि प्रभु का धन्यवाद है कि कुशलतापूर्वक घर आ गये।" आज कल बच्चे अध्यापक के दोष निकालते हैं। परन्तु याद रखो जो गुरुओं का सम्मान नहीं करता उसमे विद्या का अंकुर नहीं उग सकता। अतः सच्चे कुमार बनो।

घर के वातावरण से ही बच्चों में उद्दण्डता आ रही है। जो हर समय 'यह न करो, वह न करो' ही करते हैं वे माता-पिता गलती पर हैं, इसीलिये वातावरण बिगड़ता जा रहा है। आज अवस्था क्या है? एक ठाकुर साहिब लड़ने लगे। किसी बुद्धिमान् व्यक्ति ने कहा—"ठाकुर साहिब, किसी बात पर लड़ा करो।" ठाकुर ने कहा, "बात पर तो बनिया लड़ते हैं, ठाकुर बिना बात के लड़ते हैं।" आज सब ठाकुर बने हुए हैं।

आर्यकुमारो! ठाकुरपन छोड़ कर सच्चे कुमार बनो। आज से संकल्प कर लो—

१. गुरुओं का आदर करेंगे। उनका अपमान और निरादर कभी नहीं करेंगे। उनकी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

२ माता-पिता ने जिस उद्देश्य के लिए स्कूल भेजा है उसे पूरा करेंगे। अपना पाठ प्रतिदिन याद करेंगे। आज उल्टा हो रहा है। आज यदि अध्यापक पाठ पूछता है तो लड़के कहते हैं—पहले अध्यापक तो पूछते नहीं थे, आप तो पूछते हैं। आप आज यह संकल्प कीजिये कि जो पाठ मिलेगा उसे याद करके ले जायेंगे।

३. समय पर विद्यालय में आना और समय पर लौट जाना। विद्यालय से अवकाश होते ही सीधे घर आ जाना चाहिए। न तो मार्ग मे रुको, न व्यर्थ की गप्पबाजी मे समय नष्ट करो और न गाली आदि दो, क्योंकि यदि पढ़े-लिखे भी गाली देंगे तो बाजार के और पढ़ने वाले लड़कों में क्या अन्तर रहेगा? कोई असभ्यतासूचक बात और बकवास नहीं करनी चाहिए। नियम-पूर्वक चलने वाले बनो।

४. जब अध्यापक पढ़ाने लगे तो अध्यापक की ओर पूरा ध्यान दो। एक-एक बात पर ध्यान दो क्योंकि ध्यान देने से ही ज्ञान उभरेगा।

ज्ञान आपके अन्दर है। वेद मे कहा है—

यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

(यजु० ३४।५)

अर्थात् जिस मन में ऋग्वेद—यजुर्वेद—सामवेद और उनके अन्तर्गत होने से अथर्ववेद भी ऐसे प्रतिष्ठित है जैसे रथ की नाभि में अरे, वह मेरा मन शुभ संकल्प करने वाला हो।

इससे पता लगा कि ज्ञान मन के अन्दर विद्यमान है। जब अध्यापक मन के ज्ञान को उभार देता है तो मनुष्य ज्ञानवान् बन जाता है परन्तु यह ज्ञान कब उभरता है? जब ध्यान से सुनें। जब ज्ञान उभर जाता है तो बुद्धि की वासना समाप्त हो जाती है फिर बुरी आदतें छूट जाती है। ज्ञान के उभरने

(शेष पृष्ठ १० पर)

इस्लामी सभ्यता : उज्ज्वल नाम के स्याह पक्ष [३]

अरुण शौरी

यह भारतीय मुसलमानों की बुद्धिमानी नहीं

ताहिर महमूद ने जो उदाहरण दिये उनमें से दो से फिलहाल हमारा सरोकार है"(१)आदमी को पहली बीबी के होते हुए दूसरी शादी की बेलगाम आजादी, इसके बारे में पहली बीबी को बताये बगैर, इस बात का लिहाज किये बिना कि उसे सचमुच दूसरी औरत की जरूरत है या नहीं या वह बहु-पत्नी शौहर से कुरान के द्वारा की गई मांगों को, किसी भी मात्रा में, पूरा करते हुए न्यायसंगत ढंग से बहुपत्नियों की देखभाल कर सकता है या नहीं, अपने वैवाहिक घर को किसी दूसरी औरत के साथ बांटने की अनिच्छुक बीबी को एकमात्र राहत यह हासिल है कि वह अदालत में खुद अपनी शादी खत्म करने की गुजारिश कर सकती है यह साबित करके कि शौहर समान न्याय की कुरान सम्मत आवश्यकता को पूरा करने में असमर्थ है (या उसकी अव हेलना करता है) । (और यह सुराख, हमें जोड़ना चाहिये, औरत को महज उस मुस्लिम विवाह समाप्ति कानू की बदौलत । । है जिसे ब्रितानी भारत के विधान मंडलों ने १९३९ मे था ।) (२) तथाकथित "एक तुम में तीन बार तलाक" न 'तीन बार तलाक देता हू शब्दों के द्वारा उच्चरित या मैं तुम्हें तलाक देता हू के तीन बार दोहराव के द्वारा) यहा तक कि अगर बतलाने मे या आर्थिक प्रलोभन, नशे या दबाव के प्रभावस्वरूप इसका सहारा लिया गया हो तो भी प्रदीर्घ विवाहित जीवन का अचानक समापन, पुनर्विवाह की कोई गुंजाइश न छोड़ते हुए जब तक कि औरत और एक तीसरे व्यक्ति के बीच वैवाहिक सम्बन्ध (वास्तव में, सहवास) को बीच में न डाला जाये।"

"इस्लाम की दुनिया के बड़े हिस्सों मे," ताहिर महमूद ने बताया, निजी कानून और उत्तराधिकार के क्षेत्रो मे जो विस्मयकारी प्रगति दर्ज की गयी है, उसकी तरफ अपनी आंखें बन्द कर लेना भारत के मुसलमानों की बुद्धिमानी नहीं है। निजी स्थिति का एक एकीकृत, संहिताबद्ध और आधुनिकीकृत कानून अब बड़ी सख्या में उन देशो मे आज की सच्चाई है जहा मुसलमान जबदस्त बहुसख्या में है। भारत में मुसलमान प्रभुत्व सपन्न गैर-मुस्लिम बहुसख्यकों के साथ और अन्य सह-अल्पसख्यको के साथ रहते हैं, जिनमें से सभी अब मोटे तौर पर आधुनिकीकृत और संहिताबद्ध निजी कानून से शासित होते हैं। वे भला अपने पुरातन और असंहिताबद्ध निजी कानून के एकदम अबाधित रूप से जारी रहने का आग्रह कैसे कर सकते हैं ? और अगर वे ऐसा करते हैं तो यह उनके लिए कतई नुकसान दायक होगा।'

भारत में प्रचलित मुस्लिम निजी कानून को जस का तस बनाये रखने का आग्रह करना कतिपय कानूनी कट्टरताओ, सामाजिक असमानताओ,अनावश्यक विसंगतियों और अवांछित विपत्तियों को रोके रखने का आग्रह करने के बराबर है, "उन्होंने जोर देकर कहा, और पूछा, क्या ये लक्षण, पूछा जा सकता है, उस महान मजहब के अनुयायियों को शोभा देते हैं जो कि इस्लाम था ?"

'यह दावा किया जाता है कि इस्लाम औरतो का मुक्तिदाता था, 'उन्होंने याद दिलाया। 'इसने हव्वा को आदम के अत्याचार से मुक्ति दिलाई थी और उसे ऐसा कानूनी दर्जा दिया था जिससे इस्लाम पूर्व की सभ्यताओं में वे वंचित थीं। इस्लाम के निजी कानून ने औरतो को सम्पत्ति रखने और उसका निपटारा करने का अधिकार, उत्तराधिकार का अधिकार, स्वतन्त्र वैवाहिक चयन का अधिकार और तलाक देने का अधिकार दिया था। इन्हीं अपूर्व खूबियो की बदौलत मुसलमानो का मजहब नारीवाद का अगुवा होने का दावा करता था। अब जब इस्लाम तेरह सदियो का जीवन पूरा कर चुका है, भूमण्डल के सभी हिस्सों में औरतों के अधिकार और लैंगिक बराबरी के क्षेत्रों मे आगे की प्रगति दर्ज की जा चुकी है और प्रगति की इस राह मे, अलग-अलग हद तक, मुस्लिम के बड़े हिस्सों का प्रतिनिधित्व भी शामिल रहा है। तो फिर भारत का मुसलमान ही आखिर क्यों पिछड़ा है ?"

सांस्कृतिक पहचान की बात

परम्परावादियो के जो आलम दावे हो गये हैं, उनकी महमूद के द्वारा की गयी भर्त्सना सचमुच जोरदार थी। उन्होंने कहा, 'अपने मौजूदा स्वाभाविक स्वरूप में, मुस्लिम निजी कानून को कुरान और हदीस की बराबरी पर रखना, इसे पूरी तरह प्रकट या प्रेषित कानून बताते हुए, और यह कहते हुए कि मौजूदा सिद्धांतों का अ णमात्र भी बदला नहीं जा सकता, इस्लामी मूल्यो, इस्लामी मजहब और इस्लामी न्याय शास्त्र के प्रति केवल अज्ञान को उजागर करना है। मुस्लिम देशों में निजी कानून में हाल के सुधार के बारे मे तथ्यों को तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश कोई भला नहीं कर सकता। जो प्रगतिशील प्रवृत्तियो से ओत-प्रोत है और मुस्लिम निजी कानून के सुधार की चर्चा करते हैं, उन पर कीचड़ उछालने से, या उनकी ईमानदारी और बुद्धिमत्ता के बारे में तिरस्कार पूर्ण टिप्पणियां करने से भी कोई मदद नहीं मिल सकती। सच्चाइयो से आंख चुराने की कोशिश करने की बजाय, मुसलमानों को उनसे आंख मिलाना होगा। अगर दसियो शताब्दियो तक भारत मे अनियन्त्रित ढंग से प्रयुक्त होने के बाद यह मुस्लिम निजी कानून दुरुपयोग का शिकार होता, गलत तरीके से लागू होता और नतीजतन देश को सामाजिक तरक्की में पिछड़ता पाया जाता है तो इसमें शर्मिन्दा होने की कोई बात नही है। इसे लेकर दुराग्रही और हठी होने की बजाय, स्थिति को बाकायदा समझना पड़ेगा, और उसका सदुपयोग करना होगा। यह कोई समझदारी की दलील नहीं है कि मुस्लिम निजी कानून को संहिताबद्ध किया जाता है और सुधारा जाता है—आदमी को मनमाने ढंग से तलाक की घोषणा करने से रोका जाता है, और एक मृत मुसलमान के यतीम पोते पोतियों को उसकी विरासत मे अन्य वारिसों के साथ हिस्सा दे दिया जाता है—तो मुसलमानो की धार्मिक स्वतन्त्रता या सास्कृतिक पहचान भला कैसे प्रभावित होगी ? और पहली बीबी के न चाहते हुए दूसरी शादी करके उसे यतना पहुचा सकता है या नही, या एक बीबी अपने शौहर को विवाहाधिकार अदा करने मे उसकी असमर्थता का फायदा उठाते हुए उसे जीवन भर परेशान कर सकती है या नहीं ? मौजूदा निजी कानून में इन और अन्य कमियो को मुस्लिम संस्कृति का अनिवार्य अवयव नहीं माना जा सकता। इसके विपरीत, वे इस्लामी सभ्यता के उज्ज्वल नाम पर कलंक है।'

बखूबी कही गयी बात, और एकदम खरी। और यह फकत एक उदाहरण है।

किन सिद्धांतो के आधार पर इन सुधारकों ने सुधार का आग्रह किया था ? उनके प्रस्तावो का क्या हुआ ? जो हुआ उससे भविष्य के लिए क्या सबक मिलते हैं। ●

उर्दू राजनीति

(पृष्ठ ५ का शेष)

मोहब्बत है और यह स्वाभाविक भी है। लेकिन उर्दू को विदेशी लिपि मे लिखने का पृथकतावादी आग्रह ही नहीं आकांक्षाओं से जोड़ने वाला आग्रह भी है। मजहबी आग्रह तो है ही। मजहबी अलगाव, कट्टरता और भारतीयता बेगानेपन का आग्रह भी है। आम भाषा मे उर्दू के प्रचलित शब्दो से कोई दुराव नही है। मै यहां जिस भाषा को लिख रहा हू उसमें भी दस प्रतिशत शब्द तो उर्दू मूल के हैं। सच तो यह है कि उर्दू का यह आग्रह और मुलायम सिंह का यह कदम मुसलमानों को इस्लामिक बाड़बंदी है, जो मुसलमानों को न केवल अन्तर्मुखी बनाने की कोशिश है, बल्कि उच्चतर विकास से काटकर मजहबी लड़ाई लड़ने की आमदनी सरीखी कारवाई भी है।

मुलायम सिंह इन दिनो इसका वाचिक खंडन करते घूम रहे हैं। लेकिन उनके सिवा सभी बढ़-चढ़ कर बोल रहे हैं। यहां उनका राजनैतिक चरित्र है। उनका सामाजिक गठबन्धनो का अर्थ नासमझ से नासमझ आदमी भी समझता है। मुलायम सिंह ने जिस भाव से सत्ता खरीदी है वोट बैंक अपनी कीमत अपने सिक्के में वसूल करेगा। और तुष्टिकरण की यह बाढ़ कभी भी खतरे के निशान से ऊपर जा सकती है क्योंकि वोट की दिवानगी के बाद सत्ता का नशा जमीनी सच्चाइयों के प्रति एक अन्धापन पैदा कर रहा है। उर्दू और उर्दू की राजनीति उत्तर प्रदेश में पैदा हुई। इसने देश का और पाकिस्तान का बटवारा किया। अगर इस सिलसिले को कहीं रोका जाना है तो वह उत्तर प्रदेश मे ही रोका जाना है। उत्तर प्रदेश की उर्दू राजनीति का सबसे बड़ा सबक यह है।

वैदिक यज्ञ : पर्यावरण-परिशोधन विज्ञान (२)

पं० व्यासनन्दन शास्त्री, वैदिक

पर्यावरण-परिशोधन यज्ञ —

३ दिसम्बर १९८४ को भोपाल की मृत्युरात्रि से यह स्पष्ट परिणाम प्रकट हो गया है कि हम अपने पर्यावरण को हिंसक प्रवृत्तियों के कारण विषाक्त बना रहे हैं। जबकि ऋग्वेद (७।३५।६)-शन्न इषिरो अभिवातु वातः। अर्थात् वायु में चारों ओर सुखकारी, वायु बहे, इसके लिए भी पर्यावरण-परिशोधक यज्ञ करना विशेष आवश्यक हो जाता है।

सुखकारी वायुमण्डल के लिए और उसमें औषधि तत्वों से युक्त वायुमण्डल के लिए वेद जहां वृक्ष वनस्पतियों के लगाने का उपदेश करता है वहां शन्नु सन्तु यज्ञाः (ऋ० ७।३५।६) कहकर यज्ञ हवन द्वारा सुखकारी वायुमण्डल के निर्माण हेतु नुस्खे भी बताता है। ऐसे यज्ञ में २ किलो आम्र, पीपल, गूलर, पलाश, बिल्व या शमी वृक्ष की छिलका चढ़ी हुई समिधाओं में कपूर तथा घृतादि से अच्छी प्रकार अग्नि को प्रचण्ड करके उस प्रचण्ड अग्नि में १० से २० ग्राम हव्य पदार्थों की आहुति एक-एक मिनट के अन्तर में देवें। द्रव्य पदार्थों में २५० ग्राम तपा हुआ शुद्ध गोघृत प्रति एक किलो हव्य के मान से मिलाना चाहिए। हव्य पदार्थ मोटे मोटे रूप में कूटें बहुत बारीक न करें। हव्य पदार्थ गुग्गुल ५०० ग्राम, राल २०० ग्राम, गिलोय २०० ग्राम, नागरमोथा २०० ग्राम, जावत्री १०० ग्राम, तगर १०० ग्राम जौ १०० ग्राम, गुड़ या चीनी २०० ग्राम, लोबान २०० ग्राम, बेल फल की गरी १०० ग्राम मिलाकर हवन करने से प्रदूषण दूर होने के साथ साथ औषधि युक्त जीवनप्रद पर्यावरण का निर्माण होगा। यजुर्वेद ३।१

'समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् आस्मिन हव्या जुहोतन'

से भेषज वायु से युक्त पर्यावरण परिशोधक यज्ञ का दूसरा नुस्खा बताते हुए कहा है-यज्ञियवृक्षों की छिलका चढ़ी हुई समिधाओं को अग्नि को घृत की आहुतियों से प्रचण्ड करके उसमें हवि पदार्थों की आहुतियां प्रदान करो। इस प्रकार अग्नि के माध्यम से हव्य पदार्थों की आहुतियों की गन्ध एवं धूम्र से वायुमण्डल तैयार होगा। इससे पर्यावरण शुद्ध होगा जीवनप्रद वायु प्राप्त होगी।

अतः स्थान स्थान पर तथा प्रत्येक उद्योग प्रतिष्ठान फैक्टरी, मिल, कारखानों में अनिवार्य रूप से प्रतिदिन प्रातः सायं सूर्योदय और सूर्यास्त समय पर्यावरण शोधक यज्ञ अवश्य करना चाहिए क्योंकि इन्हीं के द्वारा विविध प्रकार के प्रदूषणों की वृद्धि और प्रसार अहर्निश हो रहा है। इसमें प्रति १०० वर्ग मीटर के क्षेत्रफल स्थान के प्रमाण से एक किलो हव्य पदार्थों की हवि देना अनिवार्य होगा। इससे १ से २० किलोमीटर अन्तरिक्ष क्षेत्र को विशेष प्रभावित करेगा।

यज्ञ से कार्बनडाय आक्साइड बढ़ने की शंका।

ऐसे व्यक्तियों की शंका केवल सामान्य अग्नि प्रज्वलन में तो ठीक मानी जा सकती है, परन्तु यज्ञ के लिए भी ऐसा अनुमान करना नितान्त भ्रामक एवं असत्य है।

यज्ञ में जिन वृक्षों की समिधाओं का प्रयोग करने का विधान है। उनसे कम कार्बनडाय-आक्साइड उत्पन्न होता है, अपेक्षाकृत अन्य ईंधन से। यज्ञ में समिधा कम जलाई जाती है और थोड़ी-सी समिधा को घृताहुतियों द्वारा प्रचण्ड रखा जाता है। यज्ञ में से धूम भाग के निकलने के बाद जो अग्निशिखा रहती है, उसमें घृताहुति से अग्निशिखा की स्थिति बनी रहती है जिससे कार्बनडाय आक्साइड की उत्पत्ति अत्यल्प ही होती है और फिर वह विषैला कार्बनडाय आक्साइड नहीं होता, उसमें घृत तथा सामग्री में पड़ी अनेक शोधनात्मक स्थूल औषधियों के अग्नि द्वारा सूक्ष्मीकृत परमाणु भी मिले होते हैं। इसके अलावा जहां यज्ञ होता है वहां कदली स्तम्भों को लगाना आम्र के पल्लव लगाना, इत्यादि का यज्ञशाला में वर्णन इसी हेतु से है कि ये वृक्ष वनस्पति कार्बन को ग्रहण करते हुए आक्सीजन वहां प्रदान करें। इतना होने पर अगर कुछ भी हानिकारक गैस बचता है तो उसे यज्ञ में ईशान-कोण पर स्थापित जल-कलश और जल-ईक्षन-क्रिया शमन कर लेता है क्योंकि Co2 गैस जल में घुलनशील है। अस्तु, यज्ञ से तो कई गुना आक्सीजन बढ़ जाता है पर्यावरण में अधिक आक्सीजन होने से उसमें व्याप्त प्रदूषण को नष्ट करने में काफी मदद मिलने लगती है।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त भारतीय वैज्ञानिक प्रो० सत्यप्रकाश ने २०, २१ एवं २२ मई १९८८ को महबूब नगर, आन्ध्रप्रदेश में एक गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि उचित हव्य सामग्री के प्रयोग से वायु का प्रदूषण दूर हो सकता है। अग्निहोत्र दैनिक कृत्यों में अनिवार्य है।

सन् १९८४ में घटी भोपाल गैस काण्ड की घटना एक ज्वलन्त उदाहरण है कि एक अग्निहोत्री वैदिक परिवार ने अग्निहोत्र (यज्ञ) करके २० मिनट के अन्दर ही एम० आई० सी० गैस के दुष्प्रभाव से अपने को बचाया था। जिसका पूरा ब्योरा 'आरोग्य' पत्रिका, जुलाई १९८५ के अंक में छपा था। लेख का शीर्षक था-'प्रदूषण निवारण की वैदिक विधि"।

यज्ञ की बढ़ती उपयोगिता के कारण विदेशों में भी बहुत से यज्ञ हो रहा है। भौतिकवादी देश अमेरिका के शहर वाशिंगटन में तो 'अग्निहोत्र-विश्वविद्यालय की स्थापना हो गयी। इस विश्वविद्यालय के संचालक स्वामी वसन्त परांजपे हैं। उनका कहना है कि नियमित रूप से यज्ञ करने से वातावरण शुद्ध होता है।

सम्प्रति विज्ञान के नाम पर धर्म के नाम पर, भूत के अभाव के नाम पर अन्धश्रद्धा की पाखण्ड की दुहाई देकर जितने भी प्रच्छन्न यज्ञद्रोही हैं, वे प्रदूषण के संरक्षक हैं। यही कारण है कि आज सारा ब्रह्माण्ड घातक प्रदूषणों से विषाक्त बनता जा रहा है। अगर इसमें कुछ कमी भी हो रही है तो बहुतेरे यज्ञ होने के कारण ही। अतः आवश्यकता इस बात की है कि सभी अनर्गल बातों को तिलांजलि देकर वैदिक यज्ञ प्रक्रिया का प्रचार प्रसार द्रुत गत्या करना होगा घर घर यज्ञ अपनाना होगा, तभी समस्त प्रदूषण का नाश होकर प्राणिमात्र की रक्षा हो सकेगी।

आर्यसमाज राजनीति नहीं, गुणतन्त्र के लिए संघर्ष करे

—जयप्रकाश आर्यबन्धु

आर्य समाज ने स्थापना के उपरान्त बगैर राजनीति में सक्रिय हुए, देश व समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर के उसे निश्चित दिशा प्रदान की। वर्तमान दशा यह है कि समाज व देश की शक्ति केन्द्र बिन्दु तुच्छ राजनीति ही बन चुकी है। राजनीतिज्ञ किसी सिद्धान्तों, आदर्शों के लिए नहीं अपितु सत्ता प्राप्ति के लिए टोपियां तथा दल बदल रहे हैं। चुनाव आदि के लिए ससाधनों को एकत्र करने हेतु राजनीतिज्ञ व राजनैतिक दल आर्थिक अपराधियों विदेशी साम्राज्यवादियों, अन्धता जातिवाद पाखण्ड एवं साम्प्रदायिकता, अन्ध मनोरंजन शराब आदि का प्रयोग अनिवार्यतः करते हैं। कुछ राजनीतिज्ञ जो आर्य समाजी संस्कार से भी रहे हैं उपरोक्त ससाधनों को असैद्धान्तिक समझकर न अपनाते रहे और पिछड़ गए। ऐसे राजनीतिज्ञ बार बार आर्यसमाज को राजनीति में सक्रिय करने के उत्सुक हैं। यदि आर्य समाज राजनीति में हो तो वे अन्यों पर आश्रित न रहकर स्वयं स्वीय राजनीति चला सकेंगे ऐसा उनका विचार है लेकिन हमारी दृष्टि मे यह भ्रम है।

आर्य समाज एक सिद्धान्तवादी सगठन है। वर्तमान राजनैतिक स्थिति व पुन व सिद्धान्तहीन है। आर्य समाज उपरोक्त वर्णित अपवित्र ससाधनों का प्रयोग नहीं कर सकता है। सक्रिय राजनीति में भाग लेकर, आर्य समाज का वर्चस्व भी और अस्थायी व क्षीण हो जाएगा, इस समय भारत मे सत्ता के स्तर पर आमूल-चूल परिवर्तन हो रहे हैं एवं आर्थिक विफलता को ध्यान में रखकर अनेक सार्वजनिक उद्योगों को सरकार निजी हाथों को दे रही है। दूसरी ओर चुनाव प्रणाली की विसगतियों को समाप्त करने के लिए स्वयं मुख्य चुनाव आयुक्त ने राजनीतिज्ञों को कम्पित किया हुआ है। ऐसे में अब समय आ चुका है कि आर्य समाज को भी अपने मूल विषयों पर ध्यान देना होगा अर्थात् शिक्षा एवं समाज सस्कृति कल्याण के शाश्वत विषयों पर सत्ता का नियन्त्रण समाप्त कराकर, व विद्वानों के सीधे नियन्त्रण में लाकर देश व समाज में 'गुणतन्त्र' की सुदृढ़ स्थापना करनी होगी, आर्य समाज राजनैतिक गणतन्त्र में नहीं, गुणतन्त्र में प्रभावी हो सकता है, विशुद्ध 'गुणतन्त्र' की समानान्तर व्यवस्था की स्थापना करके ही हम महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार कर देश व समाज को अशिक्षा, अभाव व अन्याय से मुक्ति दिला सकते हैं। महर्षि मनु की भी शिक्षा है कि केवल गणतन्त्र या केवल गुणतन्त्र

(शेष पृष्ठ १० पर)

पुस्तक परिचय

आर्य समाज एक झलक

पृष्ठ—४८, मूल्य—३ रुपये

ले०—डा० प्रेमचन्द श्रीधर

प्रकाशक—सी–१/३ राणाप्रताप बाग दिल्ली-७

महर्षि दयानन्द के संक्षिप्त जीवन के संस्करण समय-समय पर दृष्टिगत होते हैं सभी अनुपम हैं पर प० प्रेमचन्द्र श्रीधर ने अपनी व्याख्यान शैली पर लघु परिचय छापा है। यह सार्वदेशिक आ प्र नि सभा नई दिल्ली में उपलब्ध है। डा सच्चिदानन्द शास्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पिथौरागढ़ उ० प्र० का बारहवां वार्षिकोत्सव १० से १२ जून ९४ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात तथा सायं यज्ञ तथा भजन प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए। समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

नि:शुल्क योग शिविर

ऋषिकेश आर्य समाज के तत्वावधान में ४ जुलाई से ९ जुलाई ९४ तक आर्य समाज वैदिक आश्रम रेलवे रोड ऋषिकेश में नि शुल्क योग शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रसिद्ध योगाचार्य डा० त्रिलोकचन्द जी स्वामी प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। स्थान सीमित है अत इच्छुक व्यक्ति शीघ्र सम्पर्क करें।

आर्यसमाज गुणतन्त्र के लिए संघर्ष करे

(पृष्ठ ६ का शेष)

नहीं दोनों की दृढ़ स्थिति के समन्वय से मनुष्य जाति का कल्याण सम्भव है। वर्णाश्रम व्यवस्था के भी यही चार सूत्र हैं।

१. गणाद् गुणो गरियान—धन से गुण का दर्जा बड़ा है।

२. वर्ण सहयोगो न तु वर्ण विरोध—वर्ण संघर्ष नहीं वर्ण समन्वय हो,

३ बिना हेतु न निग्रहोनुग्रहो—पूज्यों की अपूजा व अपूज्यों की पूजा न हो।

४. बिना लक्ष्य न विद्या—व्रतहीन को विशेष विद्या नहीं मिले।

अत आर्य नेताओं से अपेक्षा है कि राष्ट्र में महर्षि दयानन्द के दिखाए रास्ते पर ही चलें व गुणतन्त्र की स्थापना कराने के लिए प्रबल आन्दोलन चलाए। और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा सार्थक करें।

पूर्वप्रधान-आर्य समाज बिड़ला लाईन्स, दिल्ली ७

विद्यार्थी और सदाचार

(पृष्ठ ७ का शेष)

पर मनुष्य तुरन्त कह देता है कि अब ऐसा नहीं करूंगा।

मैं रिक्शा मे बैठा हुआ अजमेरी गेट की ओर जा रहा था। रिक्शा वाले ने पूछा, 'एक और बैठा लू।' मैंने कहा बैठा लो' बैठने वाला सज्जन सिगरेट पी रहा था। मैंने पूछा—आपने सिगरेट पीना क्यो आरम्भ किया? उसने कहा 'यू ही'। मैंने कहा—यू ही' भी कोई कारण होता है? मैं आपको धक्का दे दू और कोई पूछे कि आपने धक्का क्यों दिया और मैं कह दू यू ही तो यह कोई बात हुई?' वह सज्जन विचारे लज्जित हुये और भविष्य के लिए धूम्रपान छोड़ने का वचन दिया। इन सबके कहने का तात्पर्य यह है कि आप ध्यानपूर्वक सुनें तो आपके ज्ञान का विकास होगा, बुद्धि तीव्र होकर बुराइयों की ओर न जाकर शुभ मार्ग पर चलेगी।

यह आपके समक्ष कुछ बातें रखी हैं। इनके ऊपर आचरण करेंगे तो आप उन्नति के पथ पर आगे बढ़ेंगे। प्रभु आपको शक्ति दे कि आप सच्चे सदाचारी बन सकें।

छप रही है! छप रही हैं!

कुलियात आर्य मुसाफिर

लेखक अमर हुतात्मा पं० लेखराम आर्य मुसाफिर

कृष्ण जन्माष्टमी तक अग्रिम धन

भेजने पर मात्र १२५ रुपये में।

आपने हमारा उत्साह बढ़ाया संस्कार चन्द्रिका व वैदिक सम्पत्ति के प्रकाशन में, अग्रिम धन देकर सहयोग किया। अब कुलियात आर्य मुसाफिर प्रेस में है। इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या]६०० है तथा मूल्य २०० रखा गया है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक १२५ रुपये अग्रिम भेजने पर दोनों भाग प्राप्त किये जा सकते हैं। डाक व्यय अतिरिक्त होगा।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

लौंग एक गुण अनेक

आयुर्वेदिक चिकित्साशास्त्र में लौंग के गुणों का विस्तृत वर्णन किया गया है। उसके अनुसार लौंग दीपन, पाचन, शीतल, कफ पित्त नाशक होती है। लौंग का प्रभाव पाचन क्रिया पर सबसे अधिक पड़ता है। यदि भोजन में किसी सब्जी में मसाले के रूप में लौंग का उपयोग किया जाए तो भोजन जल्दी हजम हो जाता है। भोजन में भीनी-भीनी महक आती रहती है और स्वादिष्ट भी लगता है। भूख अधिक लगती है।

इसके औषध के रूप में निम्न उपयोग हैं—

—गर्भावस्था के दौरान प्रायः महिलाओं को उल्टियां होने लगती हैं। ऐसे समय में दो-तीन लौंग पीसकर मिश्री मिलाकर खाने से बहुत लाभ मिलता है।

—लौंग चबाने से दांतों के दर्द को आराम मिलता है। लौंग और मिश्री की बराबर मात्रा पीसकर मसूढ़ों और दांतों पर मलने से दर्द दूर हो जाता है।

छोटी उम्र में कई बच्चों को मिट्टी खाने की आदत पड़ जाती है। इससे उनका पेट खराब रहने लगता है और पेट में दर्द रहता है। उन्हें एक दो लौंग घिसकर या उबाल कर मिश्री मिलाकर पिलाएं।

—लौंग को चबाने से मुंह की बदबू दूर हो जाती है। लौंग या इसके तेल को दांतों पर लगाने से दांतों के कई रोगों में फायदा मिलता है। पायरिया रोग में भी इसके प्रयोग से लाभ मिलता है। यदि लौंग को मुंह में रख कर चूसा जाए तो रोग के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

—बार-बार हिचकी आने पर दो-तीन लौंग पानी के साथ निगल लें। इससे मांसपेशियों की सिकुड़न या फैलाव दोनों ही समाप्त हो जाते हैं। खांसी, दमा और श्वास के रोगों में भी इसके सेवन से फायदा होता है।

—लौंग को भूनकर पीस लें एवं शहद के साथ मिलाकर खाने से गले की खराश तथा काली खांसी में बहुत लाभ मिलता है। मुंह में लौंग रखकर चूसने से खांसी का दौरा भी कम हो जाता है।

—गठिया के दर्द में लौंग के तेल को अन्य तेल के साथ मिलाकर मालिश करने से दर्द ठीक हो जाता है।

—आंखों पर छोटी-छोटी फुंसियां निकलने पर लौंग घिसकर लगाने से वह बैठ जाती हैं तथा सूजन भी कम हो जाती है।

—यदि शरीर के किसी भाग पर कोई जहरीला कीड़ा, ततैयां, कीट आदि काट जाए तो काटे हुए स्थान पर लौंग को घिसकर लगा दें।

आभा जैन

जब बच्चों के पेट में कीड़े हो जाएं

नीम की पत्तियों का रस शहद के साथ चाटने अथवा नीम की पत्तियों को अजवाइन के साथ पीसकर प्रातः खाने से पेट के कीड़े समाप्त हो जाते हैं।

—अजवायन का चूर्ण छाछ के साथ देने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

—सुबह खाली पेट लाल टमाटर में नमक और काली मिर्च लगाकर बच्चों को खिलाएं।

—पेट के कीड़ों के लिए करेले का रस एक अचूक औषधि माना गया है। दिन भर में एक चम्मच करेले का रस पर्याप्त रहता है।

—तुलसी के दस पत्ते और एक ग्राम वायविडंग का चूर्ण मिलाकर पीस लें व दो घोंसी पानी के साथ निगल लें। यह प्रयोग ७-८ दिन करने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

—बच्चों को प्याज का रस पिलाने से भी पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

—धर्मकिशोर गुप्ता

बच्चों ने अंग्रेजी के खिलाफ धरना दिया

नई दिल्ली, २७ जून। जब राष्ट्रपति अथवा प्रधानमन्त्री बनने के लिए अंग्रेजी आवश्यक नहीं है तो फिर क्लर्क बनने के लिए अंग्रेजी आवश्यक क्यों है। यह तर्क उन नन्हें-मुन्ने स्कूली बच्चों का है जो अंग्रेजी की अनिवार्यता के विरोध में यू. पी. एस. सी. के समक्ष चल रहे धरने को समर्थन देने वहां आये थे।

मेरठ, मुजफ्फरनगर और दिल्ली के विभिन्न पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले दर्जनों बच्चे आज धरना स्थल पर बैठे। इन बच्चों ने अनुभवी नेताओं की तरह भाषण भी दिया। बच्चों का कहना था कि देश की अस्मिता बचाने के लिए अंग्रेजों का वर्चस्व तोड़ना जरूरी है। विदेशी भाषाओं का ज्ञान होना अलग बात है मगर अपने देश में अपनी ही भाषाओं में सारा कार्य होना चाहिए।

धरने में शामिल सभी बच्चों ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर प्रधानमन्त्री को एक ज्ञापन भेजा है। ज्ञापन में मांग की गई है कि संघ लोक सेवा आयोग की सभी परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त कर भारतीय भाषाओं को तुरन्त लागू किया जाए।

घरेलू उड़ानों में शराब पेश करने पर पूर्ण प्रतिबन्ध

नई दिल्ली, २६ जून। सरकार ने इंडियन एयर लाइंस एवं निजी उड़ान कम्पनियों की सभी घरेलू उड़ानों में शराब पेश किये जाने पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है।

नागरिक उड्डयन मन्त्री गुलाम नबी आजाद ने आज यहां पत्रकारों को बताया कि इस आशय का निर्णय मन्त्रालय के शीर्ष अधिकारियों के साथ दो दिवसीय बैठक के बाद किया गया है और सम्बद्ध अधिसूचना जारी की जा रही है जो तत्काल प्रभाव से लागू होगी।

श्री आजाद ने कहा कि सरकार ने उक्त निर्णय उड़ान के दौरान उन कई घटनाओं के मद्देनजर किया है जिनसे उड़ान के दौरान सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होने के साथ साथ यात्रियों को भी भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा। इस विषय पर संसद में भी व्यापक चर्चा हुई है और उड़ान के दौरान शराब परोसे जाने पर प्रतिबन्ध की मांग की गई है।

(२७-६-८४ दैनिक जागरण)

गुरुकुल कण्वाश्रम में प्रवेश

हिमालय की सुरम्य घाटियों में स्थित गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम में २५ जून से २० जुलाई तक प्रवेश प्रारम्भ है गुरुकुल की प्रमुख विशेषताएं—

१. आधुनिक साधनों से युक्त छात्रावास व्यवस्था।
२. राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
३. अध्यापन के लिए योग्य अनुभवी चरित्रवान अध्यापक।
४. प्राचीन विषयों के साथ अंग्रेजी, गणित, साइंस का पठन-पाठन।
५. स्वास्थ्य परीक्षण हेतु सुयोग्य वैद्य व्यवस्था।
६. आधुनिक एवं प्राचीन व्यायाम व खेल के साधन।
७. बच्चों के मनोरंजन हेतु तरणताल (स्वीमिंग पूल)
८. पर्यटन स्थलों का भ्रमण।
९. पौष्टिक व सात्विक भोजन की व्यवस्था।
१०. दूध के लिए गुरुकुलीय गौशाला की व्यवस्था।

प्रवेश नियम—कमसे कम आयु ९वर्ष, अधिकतम आयु १२वर्ष तथा कक्षा द्वितीय से षष्ठ उत्तीर्ण। कक्षा का चयन परीक्षण द्वारा ही होगा। विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें।

ब्र० विश्वपाल जयन्त (आयुर्वेदिक शीम)
संस्थापक गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम
पो० कालाबाटी, जिला-पौड़ी

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४९/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१०-७-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९१
R. N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on ९-7-1994

पुस्तक समीक्षा

आर्य शिक्षण संस्थाओं का भविष्य

लेखक—दत्तात्रेय बाब्ले आर्य (भूतपूर्व प्रिन्सिपल)
दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अजमेर
मूल्य—५ रुपये, पृष्ठ संख्या—३४

विद्वान लेखक ने अपने अकाट्य तर्कों द्वारा इस पुस्तिका में स्पष्ट किया है कि आर्य शिक्षण संस्थाओं को भी हिन्दू समाज के अन्य अल्पसंख्यक समुदाय जैसे- जैन, सिक्ख और बौद्ध की भांति धार्मिक अल्पमत मानकर संविधान की धारा ३० के विशेष अधिकार मिलने चाहिए। हमारी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना जहां शिक्षा के विस्तार के लिए की गयी है, वहीं उनका एक मुख्य उद्देश्य महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सुधारों का प्रचार-प्रसार करना भी है। आर्य समाज यह मानता है कि केवल वैदिक धर्म ही एक मात्र सत्य धर्म है और इसलिए ईसाई और मुस्लिम धर्मों के समान उसका भी यह अधिकार है कि वह इस सत्य सनातन धर्म का उसके न मानने वालों में प्रचार करें। और उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित करे। जबकि ईसाई, मुसलमान और सिखों को धारा ३० में धार्मिक अल्पमत मानकर उनकी शिक्षण संस्थाओं को धर्म-शिक्षा देने का अधिकार प्राप्त है, वैसा ही अधिकार आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं को क्यों नहीं दिया जाता ?

यह स्पष्ट है कि गैर हिन्दू धार्मिक अल्पसंख्यकों को संविधान की धारा २५, २८, और ३० के अन्तर्गत दिए गए विशेष अधिकार जहां हमारे देश की वास्तविक धर्म-निरपेक्षता के सिद्धांत के प्रतिकूल है वहीं हिन्दू शिक्षण संस्थाओं के साथ भेदभाव और पक्षपात के भी द्योतक हैं।

आर्य समाज के लिए यह एक गम्भीर चुनौती है। उसे अपना स्वतन्त्र और पृथक अस्तित्व बचाए रखने का प्रयत्न करते हुए अपने विशेषाधिकारों के लिए सतत प्रयत्न करना होगा।

सुरेशचन्द्र पाठक
कार्यालय सचिव

तसलीमा ने अमरीका में शरण मांगी

ढाका, २६ जून। बांग्लादेश की विवादास्पद लेखिका तसलीमा नसरीन ने अपने खिलाफ कट्टरपंथियों के विरोध को देखते हुए अमेरिका से शरण देने का आग्रह किया है।

दैनिक 'न्यू नेशन' के अनुसार तसलीमा ने लेखकों के अंतर्राष्ट्रीय संघ पेन क्लब' को महिला समिति को पत्र लिखकर अमरीका में राजनीतिक शरण दिलाने में मदद करने का आग्रह किया है।

समिति के अध्यक्ष मेरेडिथ टैक्स को १३ जून को लिखे पत्र में तसलीमा ने कहा है कि, मुझे बहुत खतरा है। कट्टरपन्थी किसी भी समय मेरी हत्या कर सकते हैं। सरकार भी मेरे विरुद्ध है। मेरे लिए इस खतरनाक स्थिति से निकल पाने की कोई आशा नहीं है।

ढाका स्थित अमरीकी दूतावास के अधिकारी टिप्पणी के लिये उपलब्ध नहीं थे।

तसलीमा द्वारा कलकत्ता के दैनिक स्टेटसमैन मे कथित रूप से कुरान विरोधी वक्तव्य देने के लिए ४ जून को ढाका की एक अदालत ने उसके नाम से गैर जमानती वारण्ट जारी कर दिया था। उसके बाद से वह छिपी हुई है।

(दैनिक जागरण २७-६-९४)

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजी जा रही है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अध्यक्ष
आर्य-गुरुकुल कांगड़ी
हरिद्वार (उ० प्र०)

गोरक्षा व गोसंवर्धन हेतु प्रात...... सम्मेलन

विश्व अहिंसा संघ के तत्वावधान में गोरक्षा व गोसंवर्धन के लिए रविवार १० जुलाई १९९४ सायं ५ बजे फिक्की सभागार मण्डी हाउस के समीप नई दिल्ली में धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं द्वारा प्रतिनिधि सम्मेलन स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न होने जा रहा है आप सादर आमन्त्रित हैं।

इस अवसर पर सेठ चुन्नीलाल जी जयपुरिया, जैन साध्वी डा० साधना जी विश्व अहिंसा संघ बौद्ध नेता लामा लोबंजन जी अध्यक्ष अशोका मिशन, न्यायमूर्ति गुमानमल जी लोढा संसद सदस्य, साहू रमेश चन्द जी जैन, जैन समाज के वरिष्ठ नेता सहित अनेकों अन्य विद्वान पधार रहे हैं।

आर्य समाज नंगल टाउन शिप का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नंगल टाउन शिप का वार्षिकोत्सव २३ से २९-५-९४ तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ इस अवसर पर आचार्य महावीर प्रसाद द्वारा एक सप्ताह तक वेद कथा के कार्यक्रम की सभी ने प्रशंसा की। समारोह में विशेष रूप से पधारे। गुरुकुल कांगड़ी के उप कुलपति श्री रामप्रसाद जी के वेद प्रवचनों से श्रोताओं ने वेद के महत्व को जाना तथा श्री जगत वर्मा के मनोहारी प्रवचनों ने तो समां बांध दिया। अंतिम दिवस ऋषिलंगर का आयोजन भी किया गया।

सम्पर्क करें

अपने कार्यक्रमो को सफल तथा मनोहारी बनाने के लिये आर्य जगत के ख्याति प्राप्त सगीत कलाकार श्री [illegible] सिंह राघव से निम्न पते पर सम्पर्क करें।

एफ २७१-सी, दिलशाद गार्डन दिल्ली-११००९५
फोन—२२७३०६६

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (प्रथम व द्वितीय भाग)	१०)००
मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (भाग ३-४)	१६)००
लेखक – पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति	
महाराणा प्रताप	१६)००
विषलता अर्थात इस्लाम का फोटो	५)५०
लेखक—धर्मपाल जी, बी० ए०	
स्वामी विवेकानन्द की विचार धारा	४)००
लेखक—स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती	
उपदेश मञ्जरी	२१)
संस्कार चन्द्रिका	मूल्य—१२५ रुपये

सम्पादक—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
पुस्तक मंगवाते समय २५% धन अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली-२

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ७०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक २३] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ आषाढ शु० ९ स० २०५१ १७ जौलाई १९९४

गोहत्या पर प्रतिबन्ध के लिए केन्द्रीय कानून बनाने पर बल

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में गौरक्षा सम्मेलन सम्पन्न

नई दिल्ली १० जुलाई । गोहत्या पर प्रतिबन्ध के लिए केन्द्रीय कानून बनाया जाना चाहिए । इस प्रतिबन्ध से इसलाम धर्म को कोई खतरा नही है । दुर्भाग्यवश केन्द्र सरकार सभ्यता व संस्कृति की रक्षा के लिए कटिबद्ध नहीं है ।

यह बात आज यहा गोरक्षा व गोसवधन विषय पर विभिन्न धार्मिक व सामाजिक सस्थाओं की ओर से आयोजित प्रतिनिधि सम्मेलन मे कही गई ।

सम्मेलन म भाग लेने हुए राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सह सरकार्यवाहक सुदशन ने सरकार की जमकर खिचाई करते हुए कहा कि यदि अपने देश की सभ्यता व संस्कृति की रक्षा करनी है तो सबसे पहले सत्ता परिवतन करना होगा । गो हत्या प्रतिबन्ध विषय पर सघ के कायक्रम का हवाला दते हुए उन्होंने कहा कि सघ कार्यकर्ता डढ लाख गावो मे इस मुददे को लेकर जन-जागरण

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न

स्व० सुरेन्द्रनाथ जी के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक दिनाक १० जुलाई १९९४ को सभा-प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड नई दिल्ली म सम्पन्न हुई, जिसमे सभी प्रातो के प्रतिनिधियो ने बडी सख्यामे भाग लिया ।

सभा मे पजाब और हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री सुरेन्द्रनाथ के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया । सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए कहा कि सुरेन्द्रनाथ जी आर्य समाज के प्रमुख नेता महाशय राजपाल के सुपुत्र थे । जिनकी हत्या विधर्मियो ने लाहोर मे चाकू मारकर की थी । सुरेन्द्रनाथ जी योग्य प्रशासनिक अधिकारी तथा मधुर स्वभाव के व्यक्ति थे उनका निधन राष्ट्र और समाज की अपूर्णीय क्षति है । पजाब मे राजनैतिक चनाव और शान्ति का वातावरण स्थापित करने मे उनका योगदान इतिहास के पन्नो मे सदव अकित रहेगा । यह सभा इस दुखद घटना मे उनके परिवार के अन्य सभी सदस्यो के निधन पर भी गहरा शोक प्रकट करती है ।

शोकसभा मे दिवगत आत्माओ की सदगति की कामना करते हुये सतप्त परिवार और श्री सुरेन्द्रनाथ जी के सुपुत्र श्री रणजीत मल्होत्रा के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की गई ।

इस बठक म हिमाचल प्रदेश के समाज कल्याण राज्यमन्त्री प० विद्याधर हैदराबाद से प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव बम्बई से कैप्टन देवरत्न आर्य गुजरात से श्री मालसेन चोपडा म०प्र० से श्री गौरीशकर कौशल राजस्थान से श्री छोटूसिह एडवोकेट उ०प्र० से श्री जय नारायण अरुण बिहार से श्री भगवान सहाय बगाल से श्री बटकृष्ण बमन उडीसा से स्वामी धर्मानन्द सरस्वती हरियाणा से स्वामी ओमानन्द सरस्वती और प्रो० शेरसिह पजाब से प० हर बशलाल शर्मा और अश्विनी कुमार एडवोकेट श्री सत्यानन्द मुजाल दिल्ली से महाशय धर्मपाल बाबू सोमनाथ एडवोकेट श्री सूर्यदेव और गुरुकुल कागडी के कुलपति डा० धर्मपाल आदि प्रमुख महानुभाव उपस्थित थे ।

सभा मे महत्वपूर्ण विषयों पर विचार के बाद निम्न प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किए गये प्रस्ताव पृष्ठ २ पर देखे ।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव—१

देश की सामाजिक, राजनैतिक और प्रशासनिक स्तरो पर बिगड़ती हुई हालत पर आर्य समाजो की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने चिन्ता व्यक्त करते हुए आज अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी की अन्तरग बैठक मे जो प्रस्ताव पारित किया, उसमे कहा गया है कि आज साम्प्रदायिकता जिसने अविभाजित भारत में फूट के बीज बोए थे पुन भारतीय समाज मे अपना सिर उठा रही हैं। आर्य समाज राष्ट्रीय एकता का प्रबल समथक है और वह किसी भी रूप मे राष्ट्र का विघटन या साम्प्रदायिकता के जहर को बर्दाश्त नही कर सकता।

आज देश मे जिस प्रकार अल्प सख्यको की सुरक्षा या उन्हे खुश करने के नाम पर पृथक नागरिक कानून की अनुमति, तथा शैक्षणिक सहायता के लिए उन्हे विशेष सवैधानिक दर्जा देने, या उन्हे आर्थिक रूप से सुदृढ करने के लिए अलग प्रबन्ध किए जा रहे हैं, इन सबका दुरुपयोग वे ऐसी बातो के प्रचार मे कर रहे हैं जिससे उनकी पहचान एक अलग साम्प्रदायिक वग के रूप मे हो सके। हमारा इशारा स्पष्ट रूप से सरकार द्वारा मुस्लिम समुदाय के आर्थिक उत्थान के लिए ५०० करोड़ रुपए के अलग प्रावधान की ओर है। इस प्रकार की नीतियों से भारत मे एक अलग इस्लामी वग के तौर पर उन्हें मान्यता देने का मार्ग बनाया जा रहा है। और इन्ही नीतियो के कारण आज देश के प्रत्येक राज्य में नगर तथा ग्राम स्तर पर एक तनावपूण वातावरण बनता जा रहा है।

अनुसूचित जाति और जनजातियो के मामले मे भी सरकार की नीतिया राष्ट्रहित मे उसकी दूरदृष्टि का परिचय नही देती। सरकार की कमजोर इच्छा शक्ति के कारण ही इन कमजोर वर्गों को बहकाने वाले गुट, दिनो दिन हावी होकर भारतीय समाज मे तनाव उत्पन्न कर रहे हैं।

फूट डाल कर अपना राज्य कायम रखने की जो परम्परा ब्रिटिश शासको ने डाली थी, आज स्वतन्त्र भारत के शासक भी उन्ही का अनुसरण करते प्रतीत हो रहे हैं।

भारत की भोली-भाली धम प्रिय जनता को बेवकूफ बनाया जा रहा है, विशेषतया मुस्लिम और अनुसूचित वग को। सार्वदेशिक सभा समस्त भारत के नागरिको को यह बताना चाहती है कि भारत का भूमि अपने समस्त पुत्रो के लिए माता के समान है, चाहे पुत्र किसी भी रग, जाति या वग के हो।

बहुमत की अवहेलना करके सरकार को किसी भी प्रकार से तुष्टिकरण की नीति पर चलने की अनुमति नही दी जानी चाहिए।

सार्वदेशिक सभा बाहरी शक्तियो से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध, स्वार्थी भावना अथवा राष्ट्रीयता के विरोध के किसी स्वर को बर्दाश्त नही करेगी। आर्य समाज का विश्वास है कि धम किसी विशेष पूजा पाठ आदि का नाम नहीं है। धर्म सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत क्षेत्र मे सामूहिक हित सरक्षण की गतिविधियो का नाम है।

सार्वदेशिक सभा इन विचारो के आधार पर सच्ची राष्ट्रीयता के सिद्धात का प्रचार-प्रसार करने पर बल देगी। इस काय को एक आन्दोलन के रूप मे जारी रखने के लिए सभा द्वारा आय समाज के विद्वानो की एक समिति भी गठित की गई है।

प्रस्ताव—२

आर्य समाज के द्वारा राजनैतिक दल के गठन के सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा ने एक प्रस्ताव पारित करते हुए यह स्पष्ट किया है कि वतमान परि-स्थितियो मे जब देश के समस्त राजनीतिक दल स्वार्थी गतिविधियो मे लिप्त तथा जन प्रतिनिधित्व कानून के समस्त प्रावधानो की धज्जिया उड़ाते हुए केवल मात्र सत्ता प्राप्ति के उद्देश्य से काम कर रहे हैं, आर्य समाज इस प्रकार के वातावरण में राजनैतिक दल के गठन की बात नही सोच सकता। विशेष-तया अपनी धार्मिकता के कारण।

वर्तमान राजनीतिक दलो की धन शक्ति का मुख्य स्रोत क्या है यह किसी से छुपा हुआ नहीं है। चुनावो पर इन दलो को भारी भरकम राशिया खर्च करनी पड़ती है, उसकी पूर्ति कहा से और किस प्रकार होती है, इसे भी सब जानते हैं। परन्तु आर्य समाज चुनावो के लिए धन बल को जुटाने हेतु इन स्रोतो से किसी भी हालत मे साठ गाठ नही कर सकता।

आय समाज चाहता है कि चुनाव आयोग को न्यायपालिका-कार्यपालिका और विधायिका के बाद राज्य के चौथे अग के रूप मे माना जाए तथा चुनावी भ्रष्टाचार की समाप्ति के माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था सुधार की जो किरण श्री टी० एन० शेषन के काय काल में दृष्टिगत हुई है उसका समस्त राष्ट्रवादी जनता द्वारा समर्थन किया जाए।

महामहोपाध्याय पं० युधिष्ठिर मीमांसक के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि

१० जुलाई रविवार सायकाल ४ बजे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० युधिष्ठिर मीमासक के प्रति भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई। श्रद्धाजलि सभा की अध्यक्षता डा० कपिलदेव द्विवेदी ने की।

वक्ताओ मे प्रमुख थ सर्वश्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती प० सत्यानन्द वेदवागीश, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, कैप्टन देवरत्न, डा० धर्मपाल, डा० महेश विद्यालकार, डा० शिवकुमार शास्त्री, आचार्य रामदत्त शर्मा रामलाल कपूर ट्रस्ट के ट्रस्टी आचार्य विजयपाल शास्त्री, श्रीमती शान्तिदेवी।

सभी वक्ताओ ने मीमासक जी के सस्मरण सुनाते हुए उन्हे पद वाक्य प्रमाणज्ञ व्याकरण का सूर्य, उद्भट विद्वान, वैदिक गवेषक विनम्रता की प्रतिमूर्ति, सादगी के पुञ्ज, अद्वितीय लेखक सम्पादक, एव अन्य मतावलम्बियो मे भी अपनी विद्वत्ता की धाक जमाने वाला बताया।

कपूर ट्रस्ट की ओर से विश्वास दिलाया गया कि हम पूर्ववत् विद्वानो का सम्मान करते हुए मीमासक जी के कार्य को आगे बढ़ायेगे।

श्रद्धाजलि सभा का आयोजन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान मे आर्यसमाज हनुमान रोड मे किया गया। इस सभा के सयोजक श्री वेदव्रत शर्मा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

शरीअत और दीन

अरुण शौरी

कुरान की अपनी टीका-कुरान-तफसीर में और अपने अर्नल-तहजीब अल-अखलाक के अनेक अंकों में सर सैयद ने बड़ी मेहनत से तीन चीजों के बीच फर्क रेखांकित किया था—दीन, यानी धर्म, सच्चा और समीचीन, शरीअत, यानी नैतिक और आध्यात्मिक मामलों की आचार संहिता जिसका अनुशासन हमें दीन तक ले जायेगा और साधारण नियम जो आज निजी कानून के रूप में स्वीकृत हैं—जिनका सम्बन्ध महज सांसारिक मामलों से है।

पैगम्बर मुहम्मद पैगम्बरों की मुहर थे, सर सैयद ने निश्चय पूर्वक कहा, यानी वह आखिरी पैगम्बर थे, इस अर्थ में कि दीन के बारे में अन्तिम सत्य और उसका अभिषेक उन्होंने दिया था, बल्कि उन्होंने संप्रेषित किया था। अब पैगम्बर ने शरीअत के सम्बन्ध में ऐसा कुछ नहीं कहा था, जो अन्तिम और अपरिवर्तनीय हो, सर सैयद ने दावे के साथ कहा। और सांसारिक मामलों में किसी को क्या करना चाहिए, यह तय करने के लिए पैगम्बर के कथनों और कर्मों की तरफ देखना पूरी तरह गलत, वस्तुतः हास्यास्पद होगा और ऐसे मामलों में वह खुद जो तरीका अपनाया करते थे, उसका तिरस्कार भी होगा।

इसी के अनुरूप, सर सैयद ने जोर देकर कहा, कुरान में प्रकट आधारभूत सिद्धांतों का तो पालन करना चाहिए, किन्तु उनसे व्युत्पन्न नियमों और विनियमों को, और जिन्हें सामूहिक रूप से शरीअत के रूप में जाना जाने लगा था, महज ऐसे विनियमों की तरह लिया जाना चाहिए, जिन्हें हमारे जैसे और हमारी ही तरह गलती कर सकने वाले, मनुष्यों ने उन समस्याओं और परिस्थितियों से निपटने के लिए सूत्रबद्ध किया था जिनसे वे अपने उस समय और स्थान विशेष में दो-चार हुए थे। सर सैयद ने न सिर्फ यह दिखाया कि कानूनवेत्ताओं की कई व्यवस्थाएं पुरानी और अनुपयुक्त हैं, बल्कि उन्होंने यह भी दिखाया है कि बहुत बड़ी संख्या में वे हदीसें, जिन पर कानूनवेत्ताओं की व्यवस्थाएं आधारित थीं, खुद अंधाधुंध जालसाजियां थीं। लिहाजा यह हर पीढ़ी का अधिकार, वस्तुतः कर्तव्य था कि वह इन नियमों और विनियमों की समीक्षा करें और उन्हें बदलें। वास्तव में ऐसा करने से प्रति उपेक्षा—जैसा कि मुसलमानों ने की थी। का मतलब समुदाय को गतिहीनता और अन्ततः विनाश के हवाले कर देना था। दीन तो एक ही, अकेला सार या मर्म था : कि हम अल्लाह की एकता और एकत्व में विश्वास करते हैं। उन्होंने इस विवेक को खुद कुरान, जो कहती है उस पर आधारित किया : जो कोई भी अपने समूचे स्वभाव को अल्लाह के अधीन और देता है और नेकी करने वाला है—उसे अपने मालिक से इनाम मिलेगा, उनके लिए न कोई डर होगा, न ही उन्हें दुःख उठाना पड़ेगा," (II ११२), और फिर यह भी, 'वे जो आस्तिक हैं (यानी मुसलमान) और यहूदी और ईसाई और सैबियन, जो कोई भी अल्लाह में और कयामत की घड़ी में यकीन करता है और नेकी करता है, उन्हें मालिक से इनाम मिलेगा और वे डर और तकलीफ से मुक्त हो जायेंगे।" सरल और सुबोध निरूपण के लिए बशीर अहमद डर की रिलीजियस थाट आफ सैयद अहमद खान, इन्स्टीट्यूट आफ इस्लामिक कल्चर, लाहौर १९७२, पेज ११६ ७, १५१-२, २४१-३ देखिए।) इस विषय में मौलाना आजाद के सूत्र और भी ज्यादा उपयुक्त और प्रासंगिक हैं। यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि हाल के वक्त में कुरान के अध्ययन पर कम ही किसी ने वैसा असर डाला है, जैसा मौलाना आजाद के ज्ञान ने। और जितने गहरे विद्वान थे वे उतने ही गहरे आस्तिक। उनकी तुर्जमा अल-कुरान ने एक शास्त्रीय पुस्तक का दरजा हासिल कर लिया है। और शरीअत के बारे में, दीन से, सच्चे मजहब से, उसके सम्बन्ध के बारे में, वह क्या कहते हैं?

मौलाना आजाद का ज्ञान

मौलाना आजाद लिखते हैं, "कुरान बताती है कि मजहब की शिक्षा दो-स्तरीय होती है। एक में उसकी आत्मा होती है, दूसरे में उसकी बाहरी अभिव्यक्तियां। पहले का प्राथमिक महत्व है, दूसरे का गौण। पहले को दीन कहा जाता है, दूसरे को शरआ या मिनहाज और नुस्क महज उपासना या 'इबादत का तरीका।" 'कुरान', वह आगे लिखते हैं, "बताती है कि किसी एक मजहब और अन्य मजहबों में जो फर्क या भिन्नताएं होती हैं, वे दीन की, बुनियादी प्रावधान की, भिन्नताएं नहीं होतीं, बल्कि उस पर अमल के तरीके की, या शरआ और मिनहाज की भिन्नताएं होती हैं, मजहब की आत्मा की नहीं, बल्कि उसके बाहरी रूप की भिन्नताएं।" 'यह फर्क या भिन्नता स्वाभाविक ही थी" यह जोर देकर कहते हैं।" मजहब का सारभूत उद्देश्य मानवता का बेहतरी और तरक्की है। लेकिन मनुष्य की अवस्था और परिस्थिति हरेक देश-प्रदेश में और सभी युगों में एक समान नहीं रही है। बौद्धिक और सामाजिक रुझान वक्त-वक्त पर और देश-देश में बदलते रहे हैं जिनसे शरआ और मिनहाज में विविध फर्क और बदलाव आवश्यक हो गये। एक दूसरा से दूसरी में जो फर्क या भिन्नताएं नजर आती हैं, वे इसी कारण से हैं।" और इसके समर्थन में वह कुरान (XXII.६७) की इस उद्घोषणा की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं।

"हरेक लोगों के लिये हमने नियत कर दिये हैं रीति-रिवाज, जिनका वे पालन करते हैं। लिहाजा इस विषय में उन्हें 'तेरे' साथ विवाद मत करने दे, बल्कि उन्हें अपने मालिक (मूलभूत प्रावधान) के पास ले जा, क्योंकि 'तू' सही रास्ते पर है।"

एक दृष्टांत

अपनी बात को समझाने के लिए मौलाना आजाद एक जोरदार दृष्टांत की याद दिलाते हैं। "जब पैगम्बर ने नमाज के वक्त जेरूसलम की ओर मुड़ने की प्रथा त्याग दी और इसके बजाय मक्का में काबा की ओर मुड़ना पसन्द किया, तो यह बदलाव यहूदियों और ईसाइयों के लिये नाराजगी का कारण बन गया" वह याद करते हैं। "बाहरी रूपविधान को इस कदर अहमियत दी जाती थी। रस्मो-रिवाज उनके तईं गलत और सही की और सत्य और असत्य की कसौटी थे। कुरान इस विषय में भिन्न रवैया अपनाती थी वह बाहरी रूप विधान को किसी भी तरह से भीतरी सत्य या मजहब की बुनियाद की कसौटी नहीं मानती थी। हरेक मजहब को अपने वातावरण की जरूरतों के अनुरूप अपने खुद के रस्म-रिवाज विकसित करने पड़ते थे। और फिर उनकी वह केन्द्रीय, प्रमुख बात : 'महत्व जिस चीज का है, वह है अल्लाह के प्रति निष्ठा और सदाचार से परिपूर्ण जीवन-बसर। अतः जो जिन्दगी में सत्य के अनुरूप आचरण करने को उत्सुक है, उसे मुख्यतः सारतत्व पर ध्यान एकाग्र करना होता है और इसे ही हर चीज की परख का मापदण्ड या कसौटी बनाना होता है, जिसके द्वारा वह गलत से सही में या असत्य से सत्य में भेद कर सके।" इसीलिये, वह कुरान (II १४८) की इस उद्घोषणा की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं।

"और हरेक के वास्ते (नमाज के लिए) मुड़ने को एक दिशा। लिहाजा बेहतर है, अच्छे कामों में एक-दूसरे से होड़ करो। अल्लाह तुम सबको एक साथ इकट्ठा कर देगा, क्योंकि अल्लाह को सभी चीजों के ऊपर शक्ति हासिल है।"

और सच्चा मजहब किस चीज से बनता है, वह बताते हैं, यह भी कुरान (II.१७७) में ही स्पष्ट है।

"सदाचारिता यह नहीं है कि तुम अपना मुंह (नमाज के वक्त) पूरब की तरफ करो या पश्चिम की तरफ, बल्कि सदाचारिता यह है, कि अल्लाह में, कयामत की घड़ी में, फरिश्तों में, पवित्र ग्रन्थों में और पैगम्बरों में यकीन करो, और जहां तक अल्लाह का स्नेह है, अपनी वह दौलत वह अपने बन्धु-बान्धवों को देता है और यतीमों को और जरूरतमंदों को और राह-चलतों को, और उसे जो मांगता है और गुलाम की मुक्ति पर अमल करवाने के वास्ते, और जो नमाज अदा करता है और गरीब को दान करता है और उनको है जो अगर वचनों में बंध चुके हों तो उन्हें निभाते हैं, और धीरज के साथ झेलते हैं गरीबी, तकलीफ और संकट के क्षण यही वे हैं जिनको आस्था सच्ची है और यही वे हैं जो सच्चे सदाचारी हैं।" (क्रमशः)

गुरुकुल वृन्दावन की सम्पत्ति कैलाशनाथ सिंह यादव आदि ने श्रीमती साबिरा बेगम के हाथ १५ लाख में बेची

आगरा :--गुरुकुल वृन्दावन जिसका संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. ५-मीराबाई मार्ग से होता है। उसकी बहुमूल्य सम्पत्ति जो आगरा में १/५५ छत्ता बाजार में स्थित है। जिसे कैलाशनाथ सिंह यादव, धर्मेन्द्र सिंह, चन्द्रकिरण शर्मा, वैद्य ओमप्रकाश ने दि० २७ अप्रैल १९९४ को १५ लाख लेकर ४ लाख में रजिस्ट्री कर दी जबकि भवन के जमीन की कीमत डी० एम० आगरा द्वारा निर्धारित ५ लाख रुपए है। जमीन का एरिया २५० वर्ग मीटर है। जिसमें २० कमरे, दुकानें व गोदाम बने हुए है। जैसा कि आर्य जगत को मालूम है कि यह लोग दि० ४ मार्च ९४ को उच्च न्यायालय इलाहाबाद की लखनऊ पीठ के निर्णय द्वारा सभा के अधिकारी नहीं रहे। रजिस्ट्रार फर्म्स सोसाइटीज चिट्स उ० प्र० ने भी इनको मान्यता नहीं दी।

इसके पूर्व भी बीसों लाख की सम्पत्ति आर्य समाज लालापार सहारनपुर की कोठी गुरुद्वारे को बेचने के लिए ५ लाख रुपया अग्रिम प्राप्त कर लिया जबकि इन्हें सभा की सम्पत्ति को बेचने का कोई अधिकार नहीं था।

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि इसी तरह की घटनाएं मुजफ्फरनगर व अन्य शहरों में आर्य समाज की सम्पत्ति मुसलमानों के हाथों बेची जा रही है। इससे संपूर्ण आर्य जगत में रोष व्याप्त है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी, ९-पुराना गणेशगंज लखनऊ फो० २४४१७३ ने प्रदेश की आर्य जनता से निवेदन किया है जहां भी इस प्रकार की सम्पत्ति बेची जा रही हो उसकी सूचना मुझे अथवा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान मन्त्री को दें। श्री तिवारी जी से पूछे जाने पर उन्होंने यह जानकारी दी इस सम्बन्ध में इन सबके विरुद्ध आवश्यक कानूनी कार्यवाही की जा रही है। आयुक्त (कमिश्नर) आगरा द्वारा रजिस्ट्री होने पर रोक लगा दी है। इसी प्रकार सहारनपुर में इनके विरुद्ध स्थगन आदेश प्राप्त कर लिया गया है।

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने बताया, आर्य समाज की बहुमूल्य सम्पत्ति को मुसलमानों एव सिक्खों के हाथ बेचना दुर्भाग्यपूर्ण है। महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रभावित होकर आर्य जनता ने अपनी सम्पत्ति आर्य समाज को इसलिए दान दी थी कि उसकी आय से आर्य समाज का प्रचार कार्य और तेजी से होने लगे। परन्तु आर्य समाज के यह स्वयंभू नेता आर्य समाज की सम्पत्ति उन लोगों के हाथ बेच रहे हैं जिन्होंने आर्य समाज का डटकर विरोध किया।

वेद प्रकाश आर्य
संवाददाता

खेरनार की सराहना

—श्री के० नरेन्द्र

विचित्र बात है कि सारे देश आज में दो व्यक्तियों की प्रशंसा हो रही है। एक हैं चीफ इलेक्शन कमिश्नर श्री टी० एन० शेषन और दूसरे हैं बम्बई के भूतपूर्व डिप्टी म्यूनिस्पल कमिश्नर जी० आर० खेरनार श्री शेषन का नाम जनता की नजरों में काफी समय से है। इसलिए इनकी नीतियों और विचारों को जनता पूर्णतया जान चुकी है परन्तु श्री खेरनार का नाम धीरे-धीरे जनता के सामने आना शुरू हो गया है। आपने बम्बई में ना मालूम तादाद में बेनामी इमारतों को गिराया। यह इमारतें बड़े-बड़े स्मगलरों भ्रष्ट और समाज दुश्मनों के लीडरों की थी। यह लोग सर्वत्र मुख्यमन्त्री श्री शरदपवार का नाम लेकर अपने विरुद्ध कारंवाई को रुकवा लेते थे। श्री खेरनार एक ईश्वर भक्त और ईमानदार व्यक्ति है इसलिए आप ने समाज विरोधी व्यक्तियों की परवाह न करते हुए अपना काम जारी रखा जिन लोगों ने बदमाशी और गुन्डागर्दी को अपना कारोबार बना रखा था। वो श्री खेरनार को अपनी जिम्मेदारियां निभाने से कैसे ना रोकते। जनता को ताज्जुब इस बात पर हुआ कि इनके हौसलामन्दी की सजा प्रदेश के मुख्य-मन्त्री ने दी। श्री शरदपवार यह भूल गए कि ऐसा करते हुए वह जनता की नजरो में किस कदर गिर जाएंगे।

श्री खेरनार ने एलान किया है, अगर उनके खिलाफ सरकार ने कोई कारंवाई की तो इसे अदालत में चेलेंज करेंगे। आपने कहा कि आप की परेशानी यह है कि आपके पास अदालती कारंवाई के लिए पैसे नहीं है। आप के इन शब्दो को पढ़कर देश के प्रसिद्ध वकील श्री एन० ए० पालिकी वाला ने अपना आर्शीवाद भेजा और साथ ही १५ हजार का चैक भी भेज दिया। श्री पालिकीवाला के इस कदम से देश भर के बुद्धिमान श्री खेरनार के हौसले की प्रशंसा करने परविवश हो जाएंगे। श्री पालिकीवाला ने कहा है ये ठीक है कि आप ने कानून तोड़ा है। परन्तु ऐसा करते हुए आपने जनता की जो सेवा की है। इस की प्रशंसा किए बिना नही रहा जा सकता। श्री पालिकी-वाला ने बताया कि जब श्री गांधी पर ब्रिट्रिश कानून को तोड़ने का इलजाम लगा तो उन्होंने खुली अदालत में यह मान लिया कि आपने कानून को भंग की है। और इस के लिए आप सजा भुगतने को तैयार हैं श्री गांधी जी के इस एलान ने उनको जनता में लोकप्रिय बना दिया। श्री पालिकीवाला का कहना है कि श्री खेरनार को भी यह कहना चाहिए कि वो ये मानते हैं कि इन्होंने कानून तोड़ा है।

परन्तु यह कानून वो है जिसकी मदद लेकर मुख्यमन्त्री, आप को नाजायज कारंवाई को बेनाकाब करने से रोकने की कोशिशकर रहे हैं। जिस तरह गांधी जी को सजा हो गई परन्तु जनता ने आपका समर्थन किया इसी तरह खेरनार को सरकार के नियम और कानून तोड़ने के कसूरवार शायद ठहरा दिया जाए। परन्तु आपने जो जनता की सेवा कर दी है और महाराष्ट्र के भ्रष्ट वजीरों और अफसरों का जिस प्रकार भांडा फोड़कर रख दिया है इससे न सिर्फ महाराष्ट्र की जनता ने अपितु पूरे देश की जनता आपकी प्रशंसा करती है।

प्रताप २-७-९४ से
साभार

तुर्की में कुरान के नए भाष्य की तैयारी

अंकारा, २२ जून (एजेंसी)। तुर्की सरकार ने राय जाहिर की है कि नए युग के अनुरूप कुरान शरीफ का नए सिरे से भाष्य होना चाहिए। यह राय अपने आप में बड़ी क्रान्तिकारी है क्योंकि तुर्की कोई साधारण मुसलमान देश नहीं है। वहां की ९९ प्रतिशत आबादी मुसलमान है। इस्लाम के इतिहास से तुर्की का अटूट संबंध है। आखिर ओटोमन साम्राज्य के संस्थापक तुर्क ही तो थे। माना कि तुर्की में एक सेकुलर परम्परा रही है, जिसकी सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति खिलाफत के खात्मे में हुई थी, कमाल पाशा ने डंडे के जोर पर कट्टरपन्थियों और पुरातनपन्थियों का मुंह बन्द कर दिया था और आज भी कमाल पाशा की विरासत के खिलाफ कोई बोलने का साहस नहीं कर सकता। पर इधर कुछ वर्षों से तुर्की में कट्टरपंथियों का प्रभाव बढ़ रहा है।

तुर्की सरकार के धार्मिक मामलों के विभागाध्यक्ष महमूद नूरी इलमाज ने कुरान शरीफ के नए भाष्य की मांग की है। यह विभाग प्रधानमन्त्री के नियंत्रण में है। श्री इलमाज ने कहा है, नए भाष्य का कार्य बिना विलम्ब के होना चाहिए। कुरान हर जमाने पर लागू होनी चाहिए। ५० वर्ष पहले जो भाष्य किया गया था, वह आधुनिक युग की आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता। उनका कहना है कि कुरान शरीफ पर आधारित १४०० साल पुरानी संस्कृति को न तो पूरी तरह अस्वीकार किया जा सकता है और न स्वीकार।

कुरान शरीफ के नए भाष्य की जिम्मेदारी तुर्की के २० विश्वविद्यालयों को सौंपी गई है। इन विश्वविद्यालयों ने कुछ बुनियादी सिद्धांत तय किये हैं, जिनके आधार पर कुरान शरीफ का पुनर्भाष्य किया जाना है।

१९२४ में तुर्की में सेकुलर गणतन्त्र की स्थापना हुई थी। तब से देश में कई बार कुरान शरीफ का भाष्य किया जा चुका है। धर्मशास्त्र संकाय के महमूद हलीपोगलू का कहना है कि कुरान शरीफ के आधुनिक भाष्य की कमी के कारण तुर्की व अन्य इस्लामी देशों में अराजकता पैदा हो रही है।

इसके विपरीत इस्लामी कट्टरपन्थी 'प्रास्परिटी पार्टी' के पूर्व सांसद हसन मजारकी ने कहा कि कुरान शरीफ का नया भाष्य सरकारी भाष्य होगा, अतः लोग उसे स्वीकार नहीं करेंगे। मजारकी को संसद की सदस्यता से इसलिए वंचित कर दिया गया था कि उन्होंने कमाल पाशा की आलोचना की थी। पिछले मार्च में हुए म्युनिसिपल चुनावों में उनकी पार्टी ने महत्वपूर्ण विजय प्राप्त की थी।

मुसलमानों में एक अल्पसंख्यक पंथ अलेविस के प्रमुख प्रतिनिधि प्रो० इज्जतन दोगन ने कहा कि सरकार का यह कदम रचनात्मक है, हालांकि देर से उठाया गया है लेकिन देखना है कि इससे आधुनिक समाज की आवश्यकता कहा तक पूरी होती हैं, क्योंकि सुन्नी वर्ग बहुत रूढ़िवादी है।

व्यंग्य लेखक, ७९ वर्षीय अजीज नेसिन का कहना है कि आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप कुरान शरीफ को ग्राह्य बना पाना असम्भव है क्योंकि पवित्र पुस्तक स्वयं इसकी इजाजत नहीं देती। अपने को नास्तिक बताने वाले अजीज नेसिन का कहना है कि इस्लाम में सुधार असम्भव है। मुसलमान कुरान शरीफ में जो पढ़ते हैं, उसे समझते नहीं। ज्यादातर मुसलमान नए भाष्य को स्वीकार नहीं करेंगे और इससे इस्लामी दुनिया में और दरारें पड़ेंगी।

उल्लेखनीय है, कि अजीज नेसिन ने १९९३ में सलमान रुश्दी के विवादास्पद उपन्यास 'सटेनिक वर्सेज' के अंश तुर्की भाषा में छापे थे। कुछ समय बाद केन्द्रीय तुर्की में सिवास में उस होटल में आग लगा दी गई जिसमें नेसिन रुके हुए थे। इस अग्निकांड में ३७ जानें गई थीं।

कुछ बुद्धिजीवियों का मानना है कि तुर्की सरकार ने कुरान शरीफ के नए भाष्य की जो रूपरेखा तैयार की है उसके पीछे यह भावना है कि कहीं इस्लामी कट्टरपन्थी अपने फायदे के लिए भाष्य न कर डालें। अधिकांश इस्लामी विधान कुरान शरीफ पर आधारित हैं और उनकी संरचना मध्य युग के दौरान हुई थी।

कुरान शरीफ के पुनर्भाष्य के प्रयासों के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि तुर्की में ओटोमेन साम्राज्य के विघटन के बाद उदारवाद की जोरदार आंधी चली, कमाल पाशा ने आदेश जारी कर अरबी लिपि प्रतिबंधित कर दी और तुर्की रोमन लिपि में लिखी जाने लगी। कमाल पाशा ने मुल्लाओं वाली फेज टोपी पहनने पर भी रोक लगा दी। कमाल पाशा के प्रादुर्भाव तक तुर्की का सुल्तान खलीफा भी हुआ करता था, जिसके प्रति पूरी इस्लामी दुनिया श्रद्धा रखती थी। कमाल पाशा ने खिलाफत को खत्म कर दिया, जिसके खिलाफ भारत सहित अनेक देशों के मुसलमानों ने आन्दोलन किया था।

(दैनिक जागरण से साभार)

दवाइयों के लिए भोपाल से पशु रक्त का निर्यात

ओमप्रकाश मेहता

भोपाल, २६ जून। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल अब धीरे-धीरे पशुओं के रक्त की मण्डी बनता जा रहा है। देश भर के पशु रक्त सौदागर यहां डेरा डाले रहते हैं। प्रतिदिन करीब दो सौ लीटर पशु रक्त यहां से बम्बई तथा अन्य प्रमुख नगरों को जाता है। पशु रक्त व्यापारियों का कहना है कि वे पशु रक्त की मांग की पूरी पूर्ति नहीं कर पाते, वैसे एक हजार लीटर प्रति दिन रक्त की मांग है। पशुओं के इस रक्त से देश भर के दवाई कारखानों में गर्भवती महिलाओं के लिए टानिक की गोलियां बनाई जाती है।

भोपाल शहर के मध्य स्थित जहांगीराबाद बूचड़ खाने में भैंसों और पाड़ों की हत्या के बाद खून (हीमोग्लोबिन) का सौदा किया जाता है, जो पिछले चार वर्षों से जारी है। इस बूचड़खाने में प्रतिदिन सौ से डेढ़ सौ भैंसों और पाड़ों को हलाल किया जाता है, जिनके शरीर से निकलने वाला मांस शहर स्थित करीब दो दुकानों से बेचा जाता है। जबकि पशुओं के शरीर से निकलने वाले रक्त को एक बाल्टी में एकत्रित कर उसे फिल्टर किया जाता है और फिल्टर के बाद इसमें मौजूद लाल रक्त कण (हीमोग्लोबिन) को जो करीब दो ड्रम होता है, ट्रेनों के जरिए बम्बई भेजा जाता है।

बूचड़खाने में खून को फिल्टर करने वाले कर्मचारियों का कहना है कि एक लीटर खून में करीब ३० प्रतिशत हीमोग्लोबिन निकल पाता है, जबकि शेष पानी होता है। यह खून बूचड़खानों में ही स्थित एक मशीन से रसायनों की मदद से फिल्टर किया जाता है और ड्रमों में भर लिया जाता है।

इन्हीं कर्मचारियों का कहना है कि बम्बई की दवा कम्पनियों को यह खून भेजा जाता है, जो इसका उपयोग गर्भवती महिलाओं की टानिक तथा दवाइयों में करते हैं।

कर्मचारियों ने बताया कि इसके साथ गत चार माह से भैंसों के मूत्र की थैलियों को भी निर्यात करना शुरू किया गया है। इन थैलियों की की सफाई कर इन्हें दो घण्टे तक सुखाया जाता है। ये थैलियां जर्मनी भेजी जाती हैं, जहां इनका उपयोग रसायनों को भरने या अन्य किसी काम में किया जाता है। इसी प्रकार भैंसों के गले की एक विशेष हड्डी चूसनी का भी अब निर्यात किया जाने लगा है।

कर्मचारियों का कहना है, इस बूचड़खाने में प्रतिदिन करीब दो सौ बकरे भी हलाल किए जाते हैं, उनकी आंतों को साफ करके उन्हें भी बम्बई भेजा जाता है, ये आंतें बैंगलोर भी भेजी जाती हैं। जिनका उपयोग मानव आपरेशन के बाद टांके लगाने के लिए धागों के रूप में किया जाता है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि शासन ने बूचड़खाने में हलाल की जाने वाली भैंसों की उम्र कम से कम बीस साल निर्धारित की है, लेकिन इस नियम का कोई पालन नहीं किया जाता और दो-तीन वर्ष की भैंसों व पाड़ों की हलाली कर दी जाती है।

बूचड़खाने के प्रबन्धकों ने स्वीकार किया कि अब भैंसों का रक्त भोपाल व इंदौर की दवा कम्पनियों को भी भेजा जाने लगा है।

डा० रघुवीर का वह ऐतिहासिक अपमान

स्वर्गीय डा० रघुवीर महान स्वतन्त्रता सेनानी, अनेक देशों के भ्रमणकर्ता और अनेक भाषाओं के प्रसिद्ध विद्वान थे। वे वर्षों तक संसद सदस्य रहे तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव भी थे। --सम्पादक

खड़ी बोली के पुरोधा भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने गुलाम भारत में ही लिखा था, "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल", लेकिन यह देश का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि आजाद होने के बाद भी इस देश की वास्तविक राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी पूरी तरह प्रतिष्ठित नहीं हो पाई।

वास्तव में देखा जाए, तो स्वभाषा की उपेक्षा का अर्थ होता है आत्मघात करना। जैसे अपनी जड़ से कटा वृक्ष शीघ्र ही सूखकर जर्जर हो जाता है वैसे ही अपनी भाषा से कटा राष्ट्र भी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। पिछले दिनों एक पुराने सन्दर्भ को पढ़ते हुए भारत के धुरन्धर विद्वान डा० रघुवीर के ऐतिहासिक अपमान का एक किस्सा जानकारी में आया, जो इस प्रकार है--

'डा० रघुवीर जब भी फ्रांस जाते, वे वहां के पूर्व राज परिवार से सम्बन्धित एक युवा दम्पत्ति के घर ठहरा करते थे। वहां एक बार डा० रघुवीर को भारत से उनके एक घनिष्ठ मित्र का पत्र मिला। पत्र को डाकिये से लेकर डा० रघुवीर को देने हेतु गृहस्वामी की ग्यारह वर्षीय पुत्री उनके पास पहुंची। थोड़ी देर में वह उत्सुकतावश यह जानने के लिए लौट पड़ी कि पत्र किस भाषा में लिखा गया है। पहिले तो डा० रघुवीर ने आनाकानी की, लेकिन लड़की के आग्रह पर उसे वह पत्र खोलकर बताना पड़ा। पत्र देखते ही लड़की बोली, "यह तो अंग्रेजी में है। क्या आपके राष्ट्र की कोई भाषा नहीं है? डा० रघुवीर को सच्चाई सामने रखनी पड़ी। इस पर लड़की उदास होकर चली गयी।

उस दिन भी भोजन के समय सभी लोग साथ-साथ बैठे थे, लेकिन एक अनहूत सन्नाटा छाया रहा। भोजन के बाद गृह-स्वामिनी ने कहा, "डा० रघुवीर, मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि आगे से आप हमारे घर नहीं ठहर सकेंगे। आइंदा आप अपना और कोई ठिकाना कर लें, क्योंकि मुझे मेरी लड़की ने बताया है कि आपकी अपनी कोई राष्ट्र भाषा नहीं है। और जिसकी अपनी कोई भाषा न हो, उसे फ्रेंच लोग बर्बर कहते हैं तथा उससे कोई सम्बन्ध रखना अगौरव की बात समझते हैं।" डा० रघुवीर बहुत लज्जित हुए। गृहस्वामिनी ने पुनः कहा, "हम फ्रेंच लोग आतिथ्य के लिए प्रसिद्ध हैं, इसलिए आपका तिरस्कार करते हुए मुझे दुःख होता है लेकिन भाषा के नाम पर हम कोई समझौता नहीं कर सकते।"

गृहस्वामिनी ने कहा इस सम्बन्ध में मैं अपनी माता का एक उदाहरण आपको देती हूं। वे प्रदेश के ड्यूक की कन्या थीं। प्रथम विश्वयुद्ध के समय वह फ्रेंच भाषी हिस्सा जर्मनी के आधीन था और जर्मन सम्राट ने वहां शिक्षा का माध्यम फ्रेंच के बजाय जर्मन भाषा में रख छोड़ा था। राज्य का सारा काम काज जर्मन भाषा में ही होता था। मेरी मां उस समय ग्यारह वर्ष की थी, और एक श्रेष्ठ कान्वेंट में पढ़ती थीं। एक बार जर्मन साम्राज्ञी उस शाला में पधारी। उनके स्वागत मे अनेक कार्यक्रम बच्चों ने पेश किये—एक से एक आकर्षक और मनोहारी। इसके बाद साम्राज्ञी ने पूछा 'क्या कोई छात्र जर्मन राष्ट्रगान भी सुना सकता है?"

यहां मैं प्रसंगवश बता दूं कि मेरी मां न केवल अतीव सुन्दरी थी, बल्कि वे अति कुशाग्र बुद्धि भी थीं। साम्राज्ञी का आग्रह सुनकर मेरी मां उठ खड़ी हुई और उन्होंने इतनी शुद्ध जर्मन भाषा में राष्ट्रगान गाकर सुनाया कि साम्राज्ञी भाव विभोर हो गई। इतनी अच्छी और शुद्ध भाषा में तो कोई जर्मन छात्र भी राष्ट्रगान नहीं सुना सकता था। साम्राज्ञी ने मेरी मां से कोई इनाम मांगने को कहा, लेकिन वो चुप रहीं। एक बार साम्राज्ञी ने पुनः वह मांग दुहरायी। तब मेरी मां ने पूछा, "क्या वह इनाम आप दे सकेंगी, जो मैं आपसे मांगूंगी?"

साम्राज्ञी का चेहरा आवेश में लाल हो उठा उन्होंने कहा, "बच्ची साम्राज्ञी का वचन कभी मिथ्या नहीं हो सकता। तुम जो चाहो, मांग लो।"

और तब मेरी मां ने कहा था, "महारानी जी यदि आप अपने वचनों की धनी हैं, तो आगे से इस प्रदेश में जर्मन भाषा में नहीं, सारी शिक्षा और राजकाज केवल फ्रेंच भाषा मे होना चाहिए।" वातावरण में सन्नाटा छा गया। महारानी बच्ची की मांग पर आश्चर्य चकित थी। वे क्रोध से लाल होकर बोलीं, "लड़की नेपोलियन की सेनाओं ने भी कभी जर्मनी पर ऐसा प्रहार नहीं किया था, जैसा तूने आज किया है।

साम्राज्ञी होने के कारण मेरा वचन तो असत्य नहीं हो सकता, लेकिन तुझ जैसी बच्ची ने मुझे आज जो शिकस्त दी है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूल सकूंगी। जर्मनों ने जिस प्रदेशों को अपने बाहुबल से जीता था, उसे आज तूने अपनी वाणी मात्र से वापस लौटा लिया है। मैं भली भांति जानती हूं कि अब आगे लोरेन प्रदेश अधिक दिनों तक जर्मनों के अधीन नहीं रह सकेगा।' यह कहकर महारानी अति उदास होकर सभा स्थल से लौट गयीं।

गृह-स्वामिनी ने कहा, 'डा० रघुवीर! इस उदाहरण से आप समझ सकते हैं कि मैं किस मां की बेटी हूं। हम फ्रेंच संसार में सबसे अधिक गौरव अपनी मातृभाषा को देते हैं। ऐसा इसलिए कि हमारे लिए राष्ट्रप्रेम और भाषा-प्रेम में कोई अन्तर नहीं है।

डोडा की त्रासदी

—प्रो० बलराज मधोक

काश्मीर घाटी को उसके मूल हिन्दू निवासियों से तलवार की नोक पर खाली करा लेने के बाद समर्पित इस्लामी मुजाहिदों ने अब अपना ध्यान जम्मू क्षेत्र के काश्मीर घाटी के साथ लगने वाले डोडा जिले पर केन्द्रित किया है। इस जिले में लगभग चालीस प्रतिशत हिन्दू और साठ प्रतिशत मुसलमान हैं। मुसलमानों में बहुमत काश्मीर घाटी से आए हुए मुसलमानों का है। पाकिस्तानी एजेन्ट वहां से भी सारे हिन्दुओं को निकाल कर इसे घाटी की तरह विशुद्ध इस्लामी क्षेत्र बनाना चाहते हैं। उनकी योजना डोडा जिले को घाटी के साथ मिलाकर एक विशाल मुस्लिम काश्मीर का निर्माण करने की है।

यह योजना नई नहीं है। इसका जनक शेख अबदुल्ला है। २६ अक्तूबर १९४७ को महाराजा हरिसिंह द्वारा अपनी रियासत के भारत में विलय के बाद पण्डित नेहरू के दबाव के कारण काश्मीर घाटी के अतिरिक्त शेष रियासत की सत्ता भी शेख अबदुल्ला के हाथ में आ गई। वह डोडा क्षेत्र के सामरिक और आर्थिक महत्व तथा इस पर कश्मीरी मुसलमानों के प्रभाव को जानता था। इसलिए वह इसे जम्मू से काट कर प्रशासनिक दृष्टि से काश्मीर घाटी के साथ मिलाना चाहता था। इस दृष्टि से उसने हिन्दू बहुल उधमपुर जिला के उत्तरी भाग को अलग जिला बनाने का फैसला किया और उसका मुख्यालय चिनाब नदी के उत्तर में स्थित डोडा नगर को बनाया। तब से यह सारा इलाका डोडा जिला के नाम से जाना जाने लगा।

शेख अबदुल्ला इस बात को जानता था कि जब पंजाब के सांकेतिक विभाजन के अन्तर्गत पठानकोट पाकिस्तान को दे दिया गया था तब महाराज हरिसिंह ने यह पूछे जाने पर कि अब क्या करोगे क्योंकि भारत के साथ मिलने का तो कोई रास्ता ही नहीं बचा, कहा था कि भद्रवाह से चम्बा तक सड़क बना कर शेष भारत के साथ मिलने का एक और रास्ता खोलूंगा। शेख अबदुल्ला इस रास्ते के खुलने की सम्भावना खत्म करना चाहता था: वह यह भी जानता था कि लेह से जम्मू को सीधा रास्ता इसी क्षेत्र में से होकर जाता है। वह इसे भी अवरुद्ध करना चाहता था। इसीलिए उसने लद्दाख के साथ लगने वाले भाग जनसकार को लद्दाख से काट कर करगिल के साथ मिला दिया था।

मैं इस स्थिति को समझता था। इसलिए मैंने न केवल जम्मू प्रजा परिषद् की ओर से इस फैसले का कड़ा विरोध किया, अपितु दिल्ली जाकर भारत सरकार के गृहमन्त्री सरदार पटेल को भी शेख अबदुल्ला के कुटिल इरादों से अवगत कराने का फैसला किया। मैं सरदार पटेल को ८ मार्च १९४८ को उनके नई दिल्ली स्थित निवास पर मिला। आधा घण्टे तक मेरी बात सुनने के बाद उन्होंने कहा कि आप उस व्यक्ति को समझाने का प्रयत्न कर रहे हो जो सब कुछ जानता है। इससे मुझे लगा कि उनके पास पूरी जानकारी है। उन्होंने मुझसे इस क्षेत्र का मानचित्र और तथ्यात्मक लिखित नोट मांगा जो मैंने उन्हें पहुंचा दिया।

प्रजा परिषद् के विरोध, सरदार पटेल के दबाव और पांचाल पर्वत जो वर्ष में चार महीने हिम से ढका रहता है, की प्राकृतिक रुकावट के कारण शेख अबदुल्ला तब तो अपने इरादे को कार्य रूप न दे सका, परन्तु जब १९७५ में उसके पास दोबारा रियासत की सत्ता आई तो तब उसने योजना बद्ध ढंग से काश्मीर घाटी की तरह डोडा जिले के प्रशासन का भी इस्लामीकरण किया। घाटी के प्रशासन का यह इस्लामी-करण वहां पाक मुजाहिदों का सबसे बड़ा सम्बल सिद्ध हुआ और अब डोडा में भी सिद्ध हो रहा है।

यह दुर्भाग्य का विषय है कि शेष भारत की साधारण जनता ही नहीं, अपितु भारत के अधिकांश राजनेता और नीति निर्धारक भी डोडा जिले की ऐतिहासिक, भौगोलिक पृष्ठभूमि और इसके सामरिक महत्व से अनभिज्ञ हैं। उनकी यह अनभिज्ञता भी स्थिति के लगातार बिगड़ने का एक बड़ा कारण है।

यह इलाका भद्रवाह और किश्तवाड़ नाम के दो हिन्दू राजपूत रजवाड़ों में बंटा हुआ था। १८३० के लगभग महाराजा गुलाबसिंह ने उन्हें अपने जम्मू राज्य के साथ मिलाया और बाद में उन्हें उधमपुर जिला के साथ जोड़ दिया था।

भद्रवाह चिनाब नदी की एक सहायक नदी नीरू नदी की घाटी है। यह चहुं ओर से हिमालय की पर्वत माला से घिरी हुई है। इसी पर्वत माला पर कपनास कुंड है जो तवी नदी का स्रोत है।

भद्रवाह इस घाटी का प्रमुख नगर है। इसकी ऊंचाई समुद्र तल से पांच हजार फुट के लगभग और जलवायु तथा फलफूल के मामले में काश्मीर घाटी के समान है इसी लिए इसे छोटा काश्मीर भी कहा जाता है।

भद्रवाही भाषा वैदिक संस्कृत के अति निकट और देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इसकी आबादी में ठक्कर राजपूत और गूजर अधिक हैं। पदरी दर्रा जो इस घाटी को हिमाचल प्रदेश के चम्बा क्षेत्र से जोड़ता है, भद्रवाह नगर से लगभग बीस मील पर है। इसकी ऊंचाई लगभग ९ हजार फुट है।

किश्तवाड़ भद्रवाह के उत्तर में एक बड़े पठार पर बसा सुन्दर नगर है। इस पठार की ऊंचाई समुद्र तल से लगभग पांच हजार फुट है। चिनाब नदी इसके निकट ही बहती है। यह राज्य उत्तर में पांचाल पर्वत और पूर्व में लद्दाख और सपीती तक फैला हुआ था। महाराजा गुलाबसिंह के विख्यात सेनापति जनरल जोरावरसिंह ने १८३४ में किश्तवाड़ के रास्ते से ही लद्दाख में प्रवेश किया था और लद्दाख और बालस्तिान को विजय करके जम्मू राज्य का अंग बनाया था।

किश्तवाड़ी भाषा भी भद्रवाही की तरह वैदिक संस्कृत के अति निकट है। इसकी जनसंख्या में ठक्कर राजपूत, गूजर गद्दी शामिल हैं।

चिनाब नदी इस क्षेत्र के बीचोबीच बहती है। किश्तवाड़ से रामबन तक के लगभग ५० मील के सफर में यह कई हजार फुट नीचे उतरती है। इस लिए इसमें पन विद्युत-शक्ति के उत्पादन की क्षमता अथाह है। इसमें देवदार के जंगल और नीलम जैसे कीमती पत्थर और खनिज पदार्थ भी बहुत मिलते हैं। इस लिए इसकी आर्थिक क्षमता काश्मीर घाटी से भी अधिक है। पर्यटन की दृष्टि से यह सारा क्षेत्र अभी अछूता है, परन्तु इसकी क्षमता बहुत है।

इस क्षेत्र के राजपूत जम्मू-काश्मीर और भारत की सेना में बड़ी संख्या में भर्ती होते थे। इस लिए वहां पर हजारों भूतपूर्व सैनिक हैं।

यह सारा क्षेत्र विशुद्ध रूप से हिन्दू था। यहां इस्लाम का प्रभाव बहुत कम था। १९वीं शताब्दी के अन्त में काश्मीर घाटी में एक भीषण दुर्भिक्ष पड़ा। इसके कारण हजारों काश्मीरी मुसलमान सिंथन दर्रा के रास्ते पांचाल पर्वत को पार करके इस इलाके में बस गए। गत ६ दशकों में इनकी जनसंख्या तेजी से बढ़ी है। फलस्वरूप अब इस जिले में मुसलमान, जिनमें अधिकांश काश्मीरी मूल के हैं, वे बहु-संख्या में हैं। यही इसके वर्तमान संकट का प्रमुख कारण है।

मैं इस क्षेत्र में पहले पहल १९४२ में गया था। तब यह बड़ा शान्त और हिन्दू बहुल क्षेत्र था। १९६० में मैंने चम्बा से पदरी दर्रा के रास्ते फिर इस क्षेत्र में प्रवेश किया और पैदल चलता हुआ सिंथन दर्रा पार करके काश्मीर घाटी में गया। इस पैदल प्रवास में मुझे भद्रवाह और किश्तवाड़ क्षेत्र का गहराई से अध्ययन करने का अवसर मिला। (शेष पृष्ठ ८ पर)

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में -

वनवासी शिक्षार्थियों का वैचारिक क्रांति शिविर सम्पन्न

पिछले कई वर्षों की भांति इस वर्ष भी एक शिविर का आयोजन आर्य समाज रानीबाग दिल्ली मे १५-५-९४ से २९-५-९४ तक रखा गया था। इस शिविर मे भाग लेने के लिए मध्यप्रदेश के झाबुआ जनपद के थांदला क्षेत्र से २५ प्रशिक्षार्थियो ने भाग लिया।

शिविर में भाग लेने वाले प्रशिक्षार्थियो को वैदिक संध्या व यज्ञ आदि का अभ्यास कराया गया। साथ ही कुरीतियों व रूढ़िवादिता को जड़ से उखाड़ कर दूर करने के बारे में भी प्रेरणा दी गई और इस प्रकार उन्हें प्रशिक्षण के उपरान्त अपने अपने क्षेत्र में प्रचार करने के लिए तैयार किया गया।

ये सब प्रशिक्षार्थी आर्य समाज के सिद्धांतों और कार्यकलापों से प्रभावित हुए और प्राय: सभी ने अपने क्षेत्र में इस दिशा में काम करने का व्रत लिया।

इस शिविर में कुछ ईसाई प्रशिक्षार्थी भी आए हुए थे। इन्होंने अपने गांवो में सुधार लाने का व्रत लिया था। इनको वैदिक धर्म में दीक्षित करके यज्ञोपवीत दिए गए। इनको अपने गांवों में बालवाड़ियां चलाने के लिए सहयोग का आश्वासन भी दिया गया।

प्रशिक्षार्थियों के भोजन आदि की व्यवस्था रानी बाग में बसने वाले कई आर्य परिवारों ने की थी। अ० भा० दयानन्द सेवाश्रम संघ उन सबके प्रति आभार व्यक्त करता है और धन्यवाद देता है।

इस शिविर के आयोजन के लिए संघ की मन्त्री श्रीमती प्रेमलता जी का भी धन्यवाद न किया जावे तो कृतघ्नता होगी। हालांकि उनके घुटने की शल्य चिकित्सा उन्हीं दिनों हुई थी। पीड़ा व कष्ट को सहन करते हुए भी वह शिविर का संचालन करती रहीं। शिविर को चलाने व शिक्षा का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए कई कर्मठ बहनों व भाईयों ने उनका साथ दिया जिनके नाम इस प्रकार हैं—श्रीमती ईश्वर रानी, श्रीमती व श्री वेद रतन जी आर्य, श्रीमती सन्तोष कपूर, श्रीमती लीलावती कालड़ा, इन सबके प्रति भी संघ आभारी है।

इस अवसर पर श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने भी अपना अमूल्य समय देकर प्रशिक्षार्थियो का मार्गदर्शन किया।

आदिवासी क्षेत्रो में बालवाड़ियो में प्रयोग हेतु आर्य स्त्री समाज अशोक विहार, दिल्ली की कर्मठ बहनों में श्रीमती पदमा तलवाड़, श्रीमती कमला कपूर व श्रीमती स्वर्णा गुप्ता ने एक-एक दरी दान रूप मे प्रदान की।

इस सारी प्रक्रिया को देखते हुए ग्रेटर कैलाश से श्रीमती सुशीला आनन्द व श्रीमती सरला गुप्ता भी पधारी और चल रहे प्रयास की सराहना करते हुए सरला गुप्ता ने २०० रुपए प्रतिमाह देने का आश्वासन दिया। एक हजार चार सौ रुपए जून से दिसम्बर ९४ तक की राशि प्राप्त हो चुकी है।

निम्नलिखित सस्थाओ और दानी महानुभावो ने जो नियमित रूप से बालवाड़ियो के लिए सहायता देते आ रहे हैं, सहायता बराबर चालू रखने का आश्वासन दिया। जिनमें—

१. स्त्री आर्यसमाज अशोक विहार-१ दिल्ली, २००) प्रतिमाह, एक वर्ष की राशि आ चुकी है। २. श्रीमती पुष्पा सचदेवा सी०-१००, अशोक विहार-१ दिल्ली, २००) रु० प्रतिमाह। १ वर्ष की राशि जमा। ३. आर्यसमाज अशोक विहार-१ दिल्ली, ४०० रु० प्रतिमाह का आश्वासन मिला है।

शिविर का समापन समारोह २९-५-९४ को सम्पन्न हुआ। इस दिन रानी बाग के डा० चावला जी व श्रद्धेय श्री प्रेमचन्द जी श्रीधर ने प्रशिक्षार्थियो को आशीर्वाद दिया।

दान दाताओं के आर्थिक सहयोग द्वारा इस वर्ष म० प्रदेश में तीन नई बालवाड़ियां और चलाने का निश्चय किया गया है। यह संस्था सब प्रकार से सहयोग के लिए रानीबाग आर्य समाज के पदाधिकारियों सर्वश्री ओम प्रकाश जी मनचन्दा, प्रधान, सुदर्शन मारंग उपप्रधान, अरुण आर्य उपप्रधान, यशदत्त जी मन्त्री और मदन मित्र पुरोहित जी व अन्य सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद करती है।

आर्य महिला आश्रम से श्रीमती सुशीला खन्ना, श्रीमती कृष्णा बढ़ेरा, मन्त्री स्त्री आर्य समाज करोलबाग, ग्रेटर कैलाश-१ में श्रीमती गुणवन्ती सूद व अन्य बहनों ने भी इस शिविर में पधार कर प्रशिक्षार्थियों को आशीर्वाद दिया।

—देवव्रत मेहता, महामन्त्री
अ० भा० दयानन्द सेवाश्रम संघ

डोडा की त्रासदी

(पृष्ठ ७ का शेष)

१९९६ में संसद् की पब्लिक अंडरटेकिंग कमेटी के अध्यक्ष के रूप में मैंने पर्यटन की दृष्टि से इस क्षेत्र के विकास की क्षमता का अध्ययन किया। तब मुझे इसमें बढ़ती हुई साम्प्रदायिक कटुता का पता लगा।

इस प्रवास से लौटने के बाद मैंने भारत सरकार से आग्रह किया कि वह भद्रवाह से पदरी दर्रा तक की सड़क के निर्माण की ओर विशेष ध्यान दे क्योंकि काश्मीर सरकार नहीं चाहती कि यह सड़क बने और साथ ही मैंने इस क्षेत्र में एक सैनिक छावनी और किश्तवाड़ में हवाई अड्डा बनाने का भी सुझाव दिया।

वह सड़क तो बन चुकी है। अब सड़क द्वारा चम्बा से भद्रवाह और किश्तवाड़ जाया जा सकता है परन्तु सैनिक छावनी अभी तक कायम नहीं की गई। यदि वहां छावनी बना दी गई होती तो वहां स्थिति इतनी न बिगड़ती।

डोडा जिले में स्थिति गत दो वर्षों में बहुत बिगड़ी है; परन्तु अभी भी वह काबू से बाहर नहीं हुई। इसका सबसे बड़ा कारण वहां पर हिन्दुओं की पर्याप्त संख्या है।

स्थिति को सम्भालने के लिए आवश्यक है कि इस जिले को कुछ समय के लिए अशान्त क्षेत्र घोषित करके सेना के हवाले किया जाए। इस क्षेत्र में पाकिस्तानी, अफगानी और सूडानी मुजाहिद बड़ी संख्या में आए हैं। वे आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों से लैस हैं। स्थानीय मुस्लिम आबादी से उन्हें प्रश्रय मिलता है। इसलिए सेना को पूर्ण अधिकार देना अनिवार्य है।

साथ ही भद्रवाह में सैनिक छावनी बनाने के फैसले पर तुरन्त अमल होना चाहिए तथा हजारों अवकाश-प्राप्त सैनिकों की लामबंदी करके उनका सहयोग लेना चाहिए।

परन्तु इस क्षेत्र में स्थिति को स्थाई रूप में सुधारने के लिए आवश्यक है कि जम्मू क्षेत्र को प्रशासनिक दृष्टि से काश्मीर घाटी से अलग किया जाए और यहां के प्रशासन में से पाक परस्त तत्वों को निकाला जाए।

यह समाधान का विषय है कि अपने कुछ कार्यकर्त्ताओं, विशेष रूप से भद्रवाह में संघ के प्रचारक की हत्या के बाद भारतीय जनता पार्टी हरकत में आई है और उसने ऊपर दिए कुछ सुझावों को शीघ्र कार्यरूप देने की मांग की है। परन्तु दो सप्ताह के जम्मू में सत्याग्रह से लाभ तभी होगा जब सारे देश की जनता को इस क्षेत्र के सम्बन्ध में ठीक जानकारी मिले और वे इसे बचाने की आवश्यकता को महसूस करें।

इस मामले में समाचारपत्रों पर भी बड़ी जिम्मेदारी आती है। उनका कर्त्तव्य है कि वे इस क्षेत्र के सम्बन्ध में सही जानकारी और वहां के संकट के मूल कारणों के सम्बन्ध में अपने पाठकों को शिक्षित व जाग्रत करें। इस लेख के लिखने के पीछे मेरा यही उद्देश्य है।

जे० १६४, नया राजेन्द्रनगर,
नई दिल्ली-११००६०

आदर्श संस्कार

आर्यसमाज, अल्मोडा मे दिनाक १७-५-९४ को पुणे निवासी डा० हरिश्चन्द्र जी (उपनिदेशक, दि ऑटोमेटिव रिसर्च एसोसियेशन आफ इण्डिया, पुणे) के दो पुत्रो चि० स्वरित्र (७ वर्ष) का उपनयन एव वेदारम्भ सस्कार तथा चि० उद्गाता (३ वर्ष) का चूडाकर्म सस्कार आचार्य रामप्रसाद वेदालकार [उपकुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार] के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ । आचार्य जी ने वेदमन्त्रों के आधार पर सस्कारो की सारगर्भित व्याख्या की और उक्त बालको एव उनके माता पिता को आशीर्वाद प्रदान किया ।

—मन्त्री

अग्नि पीडितो की सहायता

आर्यसमाज पनवाडो सि० लाइन बदायू के उपप्रधान श्री रामचन्द्र आर्य पुरोहित ने अपने पास से दिनाक १४ जून ९४ ई० को ग्राम व पोस्ट नूरपुर थाना कादर चौक जि० बदायू (उ०प्र०) के अग्नि पीडितो को वही के निवासी श्री नत्थूलाल, श्री रामऔतार तथा बदायू नगर निवासी श्री झाजनसिंह आर्य के माध्यम से आठ सौ रुपये नकद, एक धोती कुरता मर्दाना, एक सिल्की चादर जनानी एक लठठे का पीस तथा २१ बडी बोरिया वितरित की । इसी अवसर पर उपरोक्त श्री झाजनसिंह आर्य बदायू नगर निवासी ने भी अपने पास से दो सौ पचासी २८५) रुपये तथा चार बड़ी बोरियाँ भी बाटी ।

इससे पूर्व भी श्री रामचन्द आर्य पुरोहित ने अपने पास से ग्राम जिरोलिया थाना उझियानी जिला बदायू (उ०प्र०) के अग्नि पीडितों को भी वहीं के निवासी श्री जालिमसिंह वर्मा के माध्यम से चार सौ तेंतीस रुपये (४३३) वितरित किये ।

—मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का कार्यकर्त्ता शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता मे २१ जून से २ जुलाई तक गुरुकुल कण्वाश्रम में आयोजित कार्यकर्त्ता शिविर सोत्साह सम्पन्न हुआ इस शिविर में डा० आचार्य के मार्ग दर्शन मे योगाभ्यास साख्य प्रवचन वन भ्रमण तथा व्यायाम प्रशिक्षण दिया गया । दल के बौद्धिकाध्यक्ष आचार्य फूलसिह जी ने सस्कारों का प्रशिक्षण दिया । उपाध्यक्ष प्रो० राजेन्द्र जी ने देश की वर्तमान स्थिति और आर्य वीरों का दायित्व तथा आर्यसमाज के लिये कार्यकर्त्ता का निर्माण करने का आह्वान किया ।

दो युवतियो का शुद्धिकरण

आदर्श विवाह एवम् शुद्धि मन्दिर, भागीरथपुरा, इन्दौर मे २७ ६-९४ को एक मुसलमान युवती सजेदा बी का शुद्धिकरण कर उसका नाम शारदादेवी आर्य रखा गया है । उसका विवाह-सस्कार श्री राजेश कुमार वर्मा के साथ सम्पन्न कराया गया ।

दूसरी युवती कु०स्टेला ईसाई का शुद्धिकरण कर उसका नाम सोनिया आर्या रखा गया । उसका विवाह सस्कार अशोक कुमार वारस्कर के साथ सम्पन्न कराया गया । इसकी सारी व्यवस्था शकरसिह आर्य द्वारा कराई गई । उपस्थित व्यक्तियों ने आशीर्वाद दिया ।

वेदप्रचार शिविर

गगा दशहरा के अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम मे वेद प्रचार शिविर का आयोजन १८ ६ ९४ को समारोह पूर्वक किया गया । इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया । गुरुकुल के बच्चो ने मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी को गदगद कर दिया । समारोह मे आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री इन्द्रराज जी, श्री शोभाराम प्रेमी, श्री गजराजा, तथा तेजपालसिह स्वामी सुरेश्वरनन्द श्रीमती मेलादेवी, श्री रणवीर आर्य तथा स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य ने विभिन्न विषयो पर प्रकाश डाला । कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा ।

गौ सम्बर्धन कोष

आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०) बम्बई ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के तत्वावधान मे चलाए जा रहे गौसवर्धन केन्द्र को सहयोग देने के लिए एक स्थायी कोष का शुभारम्भ अपनी ऐतिहासिक एव स्मरणीय स्वर्ण जयन्ती वर्ष के शुभ अवसर पर किया है।

इस कोष मे अब तक ७५,००० (पचहत्तर हजार) की राशि जमा हो गयी है। निकट भविष्य मे इस कोष को गो भक्त दानी महानुभावों से और अधिक धन राशि मिलने की आशा है। जिसे आर्य समाज सान्ताक्रुज (प०) बम्बई 'गो सवर्धन कोष" के नाम से जाना जायेगा। इसमे अर्जित राशि से प्रति वर्ष का ब्याज शिरोमणि, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को गो सवर्धन हेतु प्रेषित कर दिया जायेगा।

आप सबको विदित ही है कि उक्त स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य मे गत जनवरी मास मे आर्य समाज सान्ताक्रुज ने आठ दिवसीय भव्य समारोह का आयोजन किया था। अनेकों महत्वपूर्ण कार्यों के साथ-साथ गो सवर्धन हेतु स्थाई कोष के शुभारम्भ का एक और चिरस्मरणीय कार्य जुड गया है। किसी भी कार्य के लिये धन की तो आवश्यकता होती ही है। अत इस सदर्भ मे सभी गो भक्त दानी महानुभावो से विनम्र प्रार्थना है कि वे सहृदयता पूर्वक इस कोष मे अधिक से अधिक दान देकर पुण्य एव यश के भागी होवें।

सत्संग समारोह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग रातानाडा जोधपुर मे १७ मई ९४ से २७ मई ९४ तक ११ दिवसीय सत्सग समारोह तथा योग शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तपोवन देहरादून के स्वामी सद्बुद्धानन्द सरस्वती ने प्रतिदिन निरन्तर प्रात. ६ बजे से ७ बजे तक योग साधना, आसन प्राणयाम अभ्यास शिविर चलाया जिसमें लगभग २५ पुरुष स्त्री, बच्चों ने भाग लिया। तथा प्रातः एवं साय वेद प्रवचन व योग साधना विषय पर निरन्तर १७ मई से २७ मई ९४ तक सारगर्भित व्याख्यान दिये।

इसके अलावा शिकोहपुर (मेरठ) के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क के मधुर ओजस्वी भजनोपदेश होते रहे।

—मन्त्री

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य —१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजा जा रही है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

गोहत्या पर प्रतिबन्ध

(पृष्ठ १ का शेष)

अभियान चलायेंगे और ग्रामीण जनता को इस बात के लिए आंदोलित किया जायेगा कि वे इस सरकार को सत्ता से हटाकर ऐसे लोगों को लाएं जो हिन्दू सभ्यता व संस्कृति के पक्षधर हों।

उन्होंने यह भी कहा कि संस्कृति की रक्षा के सवाल पर संविधान में संशोधन नहीं किया गया, इस कारण समाज में एक अनास्था का वातावरण व्याप्त है। इस स्थिति का बुनियादी कारण उन्होंने भारत और इण्डिया मानसिकता के दोहराव को बताया। उनके अनुसार भारत की आम जनता अन्धता की शिकार है और वह इण्डिया को लादे घूम रही है।

इससे पूर्व सम्मेलन में एक नौ सूत्री प्रस्ताव भी पारित किया गया। प्रस्ताव को सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, जैन साध्वी, डा० साधना, किसान नेता रामचन्द्र 'विकल', बख्शी जगदेवसिंह, डा० मंडल मिश्र, रमेशचन्द जैन, जगदेवसिंह, चुन्नीलाल जयपुरिया तथा इकबाल कुरेशी व उपस्थित जनसमूह ने सर्वसम्मति से पारित किया।

प्रस्ताव में मांग की गई है कि गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए केन्द्रीय कानून बने। मांस निर्यात व सुअर की विष्टा के आयात पर पाबन्दी : बांग्लादेश व वियतनाम को भैंसों के निर्यात पर प्रतिबन्ध, मांसाहारी लोगों के लिए वियतनाम से बतखों के आयात पर प्रतिबन्ध। अलकबीर यांत्रिक कत्लखाने को बन्द करने की मांग। कृषि मन्त्रालय द्वारा स्कूली छात्रों को अण्डे खिलाने की योजना को तुरन्त वापस लिया जाए। गौशालाओं पर आयकर व अन्य करों से मुक्ति तथा इसके लिए भूमि व ऋण की व्यवस्था की जाए।

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश इकबाल कुरेशी ने बूचड़खानों के खिलाफ अदालत में दायर अपनी याचिका का हवाला देते हुए कहा कि गोहत्या बन्द करने से इस्लाम धर्म को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचता। दुर्भाग्यवश इस मामले को साम्प्रदायिक बनाया जाता रहा है। उन्होंने आह्वान किया कि इस आन्दोलन में मुसलमानों को जोर-शोर से भाग लेना चाहिए।

दिल्ली नगर निगम पर प्रहार करते हुए उन्होंने रोष व्यक्त किया कि निगम ने ईदगाह बूचड़खाने के रख-रखाव में भारी लापरवाही बरती। निगम में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण पशुओं का कचरा व मांस इत्यादि सड़कों पर फैला रहता था। उन्होंने बूचड़खाने की स्थिति खराब होने का एक और कारण मांस का निर्यात होना बताया। इस सबके बावजूद सरकार यह सब कुछ देखती रही, उन्होंने मांग की कि बांग्लादेश में तस्करी के माध्यम से जाने वाला पशुधन रोका जाये।

हैदराबाद से आए रामचन्द्र वन्देमातरम् ने कहा कि हैदराबाद स्थित अलकबीर यांत्रिक बूचड़खाने के खिलाफ बोलने वाला कोई नहीं है। सरकार इसे बन्द करवाने के मूड में नहीं है और हमारे कानून में भी इस मामले पर कोई स्पष्ट आदेश नहीं है। उन्होंने कहा कि संविधान के नीति निर्देशक सिद्धान्त में गो हत्या बन्द करने की बात कही गई है, किन्तु इन तत्वों को अधिकारी माने यह आवश्यक नहीं है। चूंकि इस सिद्धान्त को अभी तक कानून का दर्जा नहीं मिल पाया है। उन्होंने इस स्थिति पर दुःख व्यक्त किया कि अनेक बार केवल व्यक्तिगत लाभों के लिए संविधान में संशोधन हुए किन्तु पशुरक्षा के नाम पर सरकार केवल तटस्थ भाव अपनाए हुए है। केन्द्र सरकार के पास इच्छा शक्ति का अभाव है।

सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उक्त विचारों से सहमति जताते हुए कहा कि इस मामले पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी प्रस्ताव पारित किया है।

इसके अलावा उन्होंने कहा कि डोडा, जम्मू व कश्मीर से हिन्दुओं का पलायन हो रहा है।

पुस्तक समीक्षा

दयानन्द गुण गायन

(ध्वनि वीर छन्द आल्हा)

रचयिता : पं. ब्रह्मानन्द आर्य वानप्रस्थ, भजनोपदेशक

पृष्ठ—५६, मूल्य—१०) रुपये

पता—ग्राम-कुठिला, पो०—बेहटा गोकुल, हरदोई (उ. प्र.)

महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर गद्य पद्य युक्त परिचय समय-समय पर कवियों, गीतकारों व लेखकों ने विभिन्न प्रकार से लिखा है जनता ने उसे सराहा है।

पं० ब्रह्मानन्द जी वानप्रस्थ ने ऋषि के गुणों का गान वीर-छन्द-आल्हा, में रचकर पुस्तकाकार किया है भारत के एक सम्भाग में आल्हा-वीर-काव्य में गेय रूप में गाया जाता है। साधारण जन भी उसे पसन्द करते हैं।

पंडित जी ने ऋषि गान को आल्हा की तर्ज पर ऋषि गान किया है। वैदिक परम्परा से दूर अन्ध विश्वासों से ग्रसित सम्प्रदायों में विभाजित जाति को ऋषि जीवन के द्वारा समाज में चेतना दी है।

मन्दिर बने मौज मन्दिर, तीरथ व्यापारिन करे दुकान।

ईश्वर पर—

त्याग उसे जड़ पत्थर पूजे ऐसे मत पर अंगार ॥

गीतों में सिद्धांत पक्ष रखकर गुणों का गान किया है। आप पंडित जी के गीतों को पढ़ें और जनमानस में सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार करें।

साहित्य सृजन तभी बढ़ेगा जब जनमानस उसे दृष्टि में रखकर लेखक के कार्य को प्राथमिकता देगा। —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अथर्ववेद पारायण यज्ञ एवं चतुर्थ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक साधना आश्रम भैया चामड़ (अलीगढ़) उत्तर प्रदेश का २४ जून १९९४ से ३० जून तक एक सप्ताह चतुर्थ वार्षिक महोत्सव क्रमशः अथर्ववेद पारायण यज्ञ के साथ पूर्ण हुआ। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद से गत वर्षों में वेद पारायण यज्ञों का आयोजन किया गया। इन यज्ञों के ब्रह्मा स्वामी वेदरक्षानन्द जी आर्ष गुरुकुल कालवा (जींद हरयाणा वाले रहे। आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी आचार्य चन्द्रवेश जी, स्वामी जगत्मुनि जी, स्वामी केवलानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी आदि विद्वानों ने तथा आर्य भजनोपदेशक महाशय चुन्नीलाल जी आर्य, श्री रामवतार जी, आर्य श्री पंच्छी जी आर्य आदि ने वेदोपदेश एवं वैदिक धर्म का प्रचार किया। इस सम्मेलन में गुजरात, पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, बुलन्दशहर, आगरा, मथुरा, अलीगढ़ आदि स्थानों से पधारकर श्रद्धालु महानुभावों ने धर्मलाभ उठाया। यह यज्ञ स्वामी व्रतानन्द जी, महात्मा निर्मलमुनि जी, महात्मा ध्यानमुनि जी के संरक्षकत्व में सोत्साह सम्पन्न हुआ। भैया ग्राम के श्री ओ३म्प्रकाश जी आर्य वकील व चामड़ ग्राम के श्री सुखवीर जी आर्य के परिवारों ने विशेष सहयोग प्रदान किया।

ब्रह्मचारी चेतनदेव
संस्थापक वैदिक साधना आश्रम
भैया चामड़ (अलीगढ़) उत्तर प्रदेश

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये बार एक २५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने। —सम्पादक

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० (सी०) ११०४१/५७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१७-७-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (G)९३
R.N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 14-15-7-1994

सार्वदेशिक सभा की नई उपलब्धि

वृहदाकार-सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित

साईज २०×२६/४

मूल्य—१५०) रुपये, पृष्ठ सं०—६००

जन्माष्टमी तक अग्रिम धन देने पर १२५) रु० में

डाक खर्च पृथक

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

बहुत दिनों बाद प्रकाशित कुछ पुस्तकें

विवाह और विवाहित जीवन—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय। भोगवाद की ओर प्रवृत होते हुए आधुनिक युग में व्यक्ति विवाह के उद्देश्य और उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध मे घने अन्धकार में भटक रहा है। इस पुस्तक में विवाह के सभी पक्षों पर प्रकाश डालते हुए शंकाओ का निवारण किया गया है। मूल्य—१५) रुपये

याज्ञिक आचार संहिता—पं० वीरसेन वेदश्रमी। लेखक ने वर्षों अनुसंधान कर यज्ञ के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का समाधान इस ग्रन्थ मे प्रस्तुत किया है। मूल्य—४५) रुपये

कथा पच्चीसी—स्वामी दर्शनानन्द। ये हृदयग्राही कथाएं स्वामी जी की लेखनी का ऐसा चमत्कार है जो प्रत्येक आयु के पाठक को अच्छे और ऊंचे संस्कार प्रदान करती हैं। मूल्य—८) रुपये

त्यागमयी देवियां—महात्मा आनन्द स्वामी। पार्वती, सीता, पद्मनी की जीवनियों को जो भी पढ़ेगा, मुग्ध होगा। स्वामी जी के कहने का ढंग अनोखा है जो सीधा आत्मा को छू लेता है। मूल्य—८) रुपये

दयानन्द चित्रावली—प० रामगोपाल विद्यालंकार। महर्षि की जीवन घटनाओ से सम्बन्धित चित्रो से सुसज्जित पाठशाला में विद्यार्थियों को पुरस्कार देने योग्य। मूल्य—२५) रुपये

गीत सागर—पं० नन्दलाल वानप्रस्थी। आर्य समाज के अनेक कवियो व भजनोपदेशको की प्रतिनिधि रचनाओ का संकलन। मूल्य—२५) रुपये

वेद भगवान बोले—पं० विष्णु दयाल (मोरीशस): संसार मे जितना ज्ञान-विज्ञान, विद्याएं और कलाए हैं, उनका आदिस्रोत वेद हैं। लेखक के वेदों पर लिखे गये महत्वपूर्ण लेखो का संग्रह। मूल्य—१२) रुपए

कुछ नई पुस्तकें

प्रेरक बोध कथाए—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति। इस सकलन की कथाए जितनी वामन (लघु) हैं, उनका उद्देश्य और प्रभाव उतना ही विराट एव व्यापक है। मूल्य—१५) रुपये

हमारे बाल नायक—उत्सर्ग और कर्मठता को प्रेरित करने वाले किशोर बाल नायको की जीवनिया। मूल्य—८) रुपये

देश के दुलारे—देश की आजादी के लिए अपने जीवन भेंट चढ़ाने वाले वीर-वीर नायकों की कथाएं। मूल्य—८) रुपये

हमारे कर्णधार—राष्ट्र निर्माताओ के पुण्य जीवन की मार्मिक झांकिया। मूल्य—८) रुपये

आदर्श महिलाएं—भारतीय नारियों के तप और त्याग, सतीत्व और वीरत्व, कर्त्तव्य और बलिदान की गाथाएं। मूल्य—८) रुपये

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

उत्तर प्रदेश और हिन्दी

महोदय,

उत्तर प्रदेश में सभी दलों की सरकारों ने समय-समय पर इस बात की घोषणा की है कि उत्तर प्रदेश की राजभाषा हिन्दी है तथा सभी विभागों को आदेश दिए जा रहे हैं कि वे अपना समस्त काम-काज हिन्दी में करें। यह घोषणा मुख्यमंत्री के रूप में श्री मुलायम सिंह ने अपने पहले शासनकाल में की थी, भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में श्री कल्याण सिंह ने की तथा इससे पूर्व कांग्रेसी सरकारों ने भी। अब भी श्री मुलायम सिंह ने ऐसी ही घोषणा की है। प्रश्न यह है कि इन घोषणाओं की आवश्यकता क्यों पड़ती है। स्पष्ट है कि पहले जो कुछ भी कहा गया, उस पर पूरी तरह अमल नहीं हुआ और अभी भी अनेक कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रयोग जारी है।

इसमे कोई संदेह नहीं कि उत्तर प्रदेश में मन्त्रियों की, चाहे वे वर्तमान सरकार के हों अथवा इससे पूर्व सरकारों के, सचमुच यह इच्छा रही है कि शासन का काम-काज हिंदी में हो, किन्तु इच्छा मात्र पर्याप्त नहीं है। आदेशों के कार्यान्वयन की समुचित व्यवस्था भी होनी चाहिए। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि न तो सरकार की ओर से यह देखने के लिए कोई तन्त्र है कि कार्यालय मे काम हिन्दी में हो रहा है या अंग्रेजी में अथवा कितना-कितना। जब कोई हिन्दी संस्था सरकार का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करती है कि अमुक विभाग में हिन्दी की उपेक्षा हो रही है, तो उन [illegible] पर कारंवाई होना तो दूर, उसकी प्राप्ति सूचना तक भी नहीं भेजी जाती है। ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में इस बात की सम्भावना नहीं दिखाई पड़ती कि अंग्रेजी की मानसिकता वाले जो अधिकारी अब तक शासन के आदेशों की अवहेलना करके, अंग्रेजी का प्रयोग करते रहे हैं, अपनी आदत बदलेंगे। यदि सरकार अपनी घोषणा के बारे मे गम्भीर है और सचमुच चाहती है कि शासन का काम हिन्दी में ही हो, तो उन्हें प्रत्येक जिले में हिन्दी समिति बनानी चाहिए जिसमें जिलाधिकारी के साथ-साथ उस क्षेत्र के विधायक तथा संसद सदस्य एवं कुछ हिन्दी प्रेमी जन हों, जो विभिन्न कार्यालयो का समय-समय पर निरीक्षण करके यह देखें कि कहां सरकार की नीति का उल्लघन हो रहा है। शासन का कोई ऐसा विभाग या निदेशालय भी होना चाहिए जो राजभाषा नीति के कार्यान्वयन पर ठीक प्रकार से गौर करें और जिन विभागो में सरकारी आदेशों का उल्लंघन हो रहा हो, वहां उक्त विभाग के माध्यम से दोषी अधिकारियो के विरुद्ध कार्रवाई की जा सके। उत्तर प्रदेश का राज्य बिजली बोर्ड तथा राज्य सरकार के उपक्रम आदि लगातार अंग्रेजी का प्रयोग करते रहे हैं। क्या सरकार इस प्रकार का कोई ठोस कदम उठाएगी या समय-समय पर हिन्दी से सम्बन्धित घोषणाएं केवल घोषणाओं के रूप में होती रहेंगी?

हरिबाबू कंसल, महामन्त्री
हिन्दी व्यवहार संगठन, ई-९/२३, वसन्त विहार, नई दिल्ली-५७

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-१ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र दूरभाष । ३२७७७१ वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १, रुपया
वर्ष ३२ अंक २४] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ श्रावण कृ० २ सं० २०५१ २४ जौलाई १९९४

गोहत्या पर प्रतिबंध के लिए केन्द्रीय कानून की मांग

देशव्यापी आन्दोलन की घोषणा शीघ्र

समस्त आर्य समाजो, गोभक्त संगठनो और अन्य सामाजिक व धार्मिक संस्थाओ के नाम आवश्यक परिपत्र

दिनाक १८ जौलाई १९९४

देश की स्वतन्त्रता के लगभग ५० वर्षों के पश्चात भी बहुसख्यक जनता की भावनाओ और सविधान निर्दिष्ट सिद्धान्तों का सरकार द्वारा पालन नहीं किया गया है और गोरक्षा व गोहत्याबन्दी के लिए आय समाज व गोभक्त जनता की माग का हमेशा से दबाया जाता रहा है। विदेशों को गोमास हड्डी व चमड़ का निर्यात करवे के लिए देशभर मे इस समय छोटे बड तीन हजार बूचडखाने चलाये जा रहे हैं। देश का पशुधन समाप्त किया जा रहा है हमारी सस्कृति और पशुधन की उपयोगिता के महत्व को नजर अन्दाज करके राष्ट्र को पर्यावरण के समुद्र मे ढकेला जा रहा है।

केन्द्रीय कानून द्वारा गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगावे की माग को लेकर अब तक तीन बठक गोभक्त सगठनो की हो चुकी हैं। प्रथम बैठक आचार्य मुनि सुशीलकुमार जी के आश्रम मे ११ अप्रैल १९९४ को हुई थी दूसरी बैठक मेरी अध्यक्षता मे और तीसरी बठक पूव राष्ट्रपति ज्ञानी जलसिह जी के निवास पर हुई थी। उस बठक मे ज्ञानी जी ने गोहत्याबन्दी आन्दोलन के लिए प्रथम उत्सग की घोषणा की है।

१० जुलाई १९९४ को विश्व अहिंसा सघ के तत्वावधान मे नई दिल्ली के पिकी सभागार मे मेरी अध्यक्षता मे प्रतिनिधि सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन मे सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा सनातन धर्म महासभा, विश्व अहिंसा सघ शिरोमणि अकाली दल जन समाज दिगम्बर जन समाज भारत गो सेवक समाज नामधारी सगत राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ बौद्ध समाज प्र तीय आय महिला सगठन तथा अन्य अनेक सगठनो के प्रतिनिधियो ने बडी सख्या मे भाग लिया। पूरे देश मे गोहत्याबन्दी के लिए के द्रीय कानून बनाने के लिए जोरदार माग की गई है। इस सम्ब ध मे शीघ्र ही सभी सगठनों का एक शिष्टमण्डल महामहिम राष्ट्रपति शकरदयाल जी शर्मा प्रधानमन्त्री श्री पी०वी० नरसिहराव और केन्द्रीय कृषिमन्त्री से भट करवे वाला है।

गोहत्याबन्दी और गोरक्षा के लिए आज राष्ट्र की जनता एकजुट हो गई है। अन्तिम निणय की घोषणा शीघ्र की जायेगी।

अत सभी आय समाजो व अन्य सगठनों से अनुरोध है कि गोहत्याबन्दी आन्दोलन के लिए सत्याग्रहियो की सूची बनाना प्रारम्भ कर द। ताकि आवश्यकता पडने पर सत्याग्रहियो को बुलाया जा सके। कृपया जो सूची बनावें उसकी एक प्रतिलिपि इस सभा कार्यालय को भिजवा द।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब मे तदर्थ समिति का गठन

आय प्रतिनिधि सभा पजाब मे स्व० श्री वीरेन्द्र जी के बाद अधिकारियो मे गहरे मतभद पैदा हो गये थे और वहा आय समाज का काय प्राय ठप्प सा हो गया था। १७ जुलाई १९९४ को मैंने पजाब सभा की अ तरग बठक जालन्धर म बुलाकर इस बात की कोशिश की थी कि समस्या का समाधान हो सके परन्तु खद है कि सदस्यो की अनुशासनहीनता आपसी अविश्वास और वाद विवाद के कारण पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के परामश पर मुझ सार्वदेशिक सभ की नियमावली मे प्रदत्त अधिकार (१०-ग) के आधार पर पजाब सभा की वतमान अन्तरग सभा को भग करना पड रहा है। शिकायतो की जाच के लिए एक जाच समिति का भी गठन कर दिया गया है। तदथ समिति के सदस्यो व अधिकारियो की सूची शीघ्र जारी की जावेगी। तब तक आय प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

सपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

आर्य समाज का पंचम नियम और उद्देश्य ?

धर्म के अनुसार जीवन में कार्य करने के लिए सत्य तथा असत्य पर विचार कर करने के लिए महर्षि ने यह नियम दिया है। नियम का आधार क्या शिक्षा देता है कि कर्ता को प्रत्येक कार्य को अपने विवेक पर करना चाहिए। उसे करने से पूर्व उस कार्य के सम्बन्ध मे निश्चय भी कर लेना कि यह धर्म कार्य ही है।

धर्म की परिभाषायें एवं अर्थ भी अनेक हैं। उसमें असत्य का लेशमात्र भी अंश नहीं है। वैदिक साहित्य में सत्य और धर्म पर्यायवाची शब्द हैं। अत. उपनिषद में कहा है कि 'यो वै स धर्मः सत्यं वै तत्तस्मात सत्यं वदन्त-माहुर्धर्मंवदतीति धर्मं वा वदन्त सत्यं वदतीति' अर्थात निश्चय पूर्वक कहा गया जो यह धर्म है वह सत्य है। अतः सत्य वाक्य को धर्म कहा गया है।

(बृहदारण्यक अ० १ ब्रा० ४ क० १४) इस प्रकार यह नियम चाहता है कि अन्ध विश्वास या आंख बन्द करके भिक्षमस्तू बनकर चलना दुनिया से बन्द हो जाय। इस झूठे विश्वास ने सत्य का ह्रास किया है।

धर्म की अनेक की अनेक व्याख्यायें की गई है कि उनमें पड़कर मानव ही नहीं पूर्ण विद्वान भी भटक जाएगा। धर्मानुसार काम करने में सत्य-असत्य का विचार आवश्यक है। वेद स्मृति का आश्रय ही मनु की सच्ची कसौटी है।

प्रथम तीन कसौटियों में ईश्वर की प्रेरणा पूर्वजो का अनुभव संयुक्त है। चौथी कसौटी आत्मा का निर्भीक निर्णय है इन दो तत्वों के सम्बन्ध में श्रद्धा व सतर्कता का सामञ्जस्य होना भी अनिवार्य है।

धर्म की परिभाषा में यदि विचार करें तो जिससे धारण किया जाय वह धर्म है। अग्नि का धर्म दाहकता है, प्रकाश है ऊर्ध्वगामी है।

जल का धर्म शीतलता-अधोगामी है, सूर्य का धर्म प्रकाश, ऊर्जा उष्णता प्रदान करना है। पृथ्वी का धर्म सहिष्णुता है। इससे यह सिद्ध होता है कि धर्म का एक क्षेत्र प्रकृति का नियम है।

परम्परागत अनुभव से धर्म का लाभ उठाना, दास न बनना यही आर्य पुरुष का लक्षण है। वेद बुद्धि के लिए है बुद्धि वेद के लिए है। इसीलिए तर्क को ऋषि कहा है।

जिन गुणो के आधार पर हमारे कर्तव्य एवं आचरण होने चाहिए उन्हें मनु ने धर्म के लक्षणो के रूप मे सर्वोत्तम माना है।

धृति क्षमा दमोऽस्तेयम्० —मनु ने इन गुणो एव लक्षणो से युक्त धर्म कहा है अर्थात जिन कार्यों में उपरोक्त दश गुण विद्यमान हो, वह धर्म है। वस्तुतः हम धर्म की रक्षा करते हैं तथा प्रतिफल स्वरूप धर्म हमारी रक्षा करता है।

"वेदोऽखिलो धर्म मूलम्" त्रयोधर्म स्कन्धाः यज्ञाध्ययन दानमिति। मनु० २-१२।। वेदस्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः' धर्मं एव हतोहन्ति" ८-१५ ॥

धर्म सम्बन्धी उपरोक्त सभी उद्धरणो एवं विवेचन से यह सिद्ध है कि धर्म का अभिप्राय जाति मत ईसाई यवन-सिक्ख हिन्दू आदि नहीं है और न इसका अभिप्राय वैष्णव, शाक्त, शैव, बौद्ध जैन, शिया-सुन्नी, सिख-ईसाई सम्प्रदाय है बल्कि ये सभी सम्प्रदाय अपनी अपनी सीमाओं में व्यक्तियों तक सीमित है। जबकि धर्म का क्षेत्र ऊंच-नीच के भेद-भाव से हटकर समस्त मानव मात्र हेतु है।

धर्म का व्यावहारिक जीवन में उपयोग

तृतीय नियम में सत्य का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग किस तरह कल्याण-कारक है धर्म की केवल सैद्धांतिक विवेचन से सत्य दर्शन का ज्ञान प्राप्त हो सके। धर्म वस्तुतः जीवन की क्रियाओं मे व्यावहारिक पद्धति अपनाने में जीवन को संचालित करने वाली शक्ति है।

भारतीय वैदिक समाज मे कार्य को विभाजित करने हेतु वर्ण की व्यवस्था चार विभागों में विभाजित कर श्रम का प्रतिपादन किया है।

मनु ने—प्रत्येक वर्ण के कार्य निर्धारित किए हैं।

१. ब्राह्मण—विद्या पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना, दान देना-लेना।
२. क्षत्रिय—विद्या, यज्ञ, दान देना, देश रक्षा, राज्य व्यवस्था, प्रजारक्षणादि।
३. वैश्य — कृषि-गोरक्ष वाणिज्यं वैश्य कर्म स्वभावजम्।
४. शूद्र—उपरोक्त गुणों का यदि कोई भी वर्ण आधान न कर सके तो वह सबकी सेवा करे।

आश्रम व्यवस्था—प्रत्येक मानव व्यक्तिगत जीवन को चार भागो में विभाजित किया है :

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थी, संन्यास आश्रम।

श्रम का महत्व चारो आश्रमों में है बिना श्रम के कोई भी आश्रम अपनी मर्यादा का पालन नहीं कर सकता है। अत श्रम साध्य आश्रम व्यवस्था की मर्यादा निभाती है।

जीवन में प्रत्येक मर्यादा का पालन करने में १६ संस्कारों का स्वरूप स्थिर किया है। उसी के अनुसार व्यक्तिगत एवं समाज के समग्र जीवन को संचालित करने का क्रियात्मक स्वरूप है। संस्कारवान होना, वर्ण एवं आश्रम में निर्वहन करना आवश्यक है। पूर्ण जीवन की सफलता दैनिक कार्यों पर निर्भर है।

पंचयज्ञ—संस्कारों के द्वारा व्यक्ति का जीवन पवित्र सद्वृत्ति युक्त व श्रेष्ठ बनाया जाता है। इस प्रकार श्रेष्ठ जीवन वाले व्यक्ति को दैनिक कर्म में पंचमहायज्ञ का आदेश है।

महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि के गृहस्थ प्रकरण में गृहस्थ के गुणों का एवं दैनिक जीवनचर्या का वर्णन किया है। वह धार्मिक व्यक्तियों के लक्षण हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में नैतिकता एवं जीवन के मूल्यों के प्रति प्रयत्न पूर्वक निष्ठावान हो। जीविकोपार्जन में अनुचित साधनों से धनोपार्जन कदापि न करने वाला हो।

उपरोक्त विवेचन से जो व्यक्ति अपना जीवन यापन करेगा वही वस्तुतः धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार कर कार्य करेगा। आर्य समाज के इस नियम का सही अर्थों मे क्रियात्मिक पालन करने वाला होगा।

समझ न आवे माया आपकी प्रभु

हिमाचल तथा पंजाब के राज्यपाल श्री सुरेन्द्रनाथ के परिवार की दर्दनाक मृत्यु

—श्री के० नरेन्द्र

ऐसे लोगों की कमी नहीं जो इस विचार का मजाक उड़ाते हैं कि पिछले जन्म के कर्मों की सजा इस जन्म में मिल सकती है। ऐसे व्यक्तियों से मैं पूछना चाहता हूं कि सुरेन्द्रनाथ ने इस जन्म में कौनसा ऐसा अपराध किया था कि इनके साथ ही लगभग सारा खानदान भी खत्म हो गया। जिन लोगों को सुरेन्द्रनाथ से मिलने का अवसर मिला है वह जानते हैं कि यह कितना शरीफ, पूर्ण ईमानदार प्रभु भक्त और सच्चा व्यक्ति था। आज तक इसने न तो किसी का अपमान किया था न ही किसी को बिना कारण शिकायत का अवसर दिया था। इस सबके बावजूद इसकी ऐसी दर्दनाक मृत्यु हुई है।

आम देशवासियों के लिए वह सुरेन्द्रनाथ होगा। पंजाब और हिमाचल का राज्यपाल होगा। परन्तु मेरे लिये वह सुरेन्द्र था। इसके और हमारे परिवारों का सम्बन्ध ५० वर्ष से भी पुराना था। लाहौर में शहीद हुए महाशय राजपाल जी का सुरेन्द्र चौथा बेटा था। आपकी एक बहन सुमित्रा देवी थी इसका विवाह स्वामी श्रद्धानन्द जी की बेटी के पुत्र वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम विद्यालंकार से हुआ था। सुरेन्द्र के तीन बड़े भाई थे—सबसे बड़ा था प्राणनाथ वह संन्यासी बन गया और यह कहना मुश्किल है कि इन दिनों वह कहां हैं। इसके बाद विश्वनाथ और दीनानाथ हैं। इन दोनों का अपना किताबों को पब्लिश करने का काम है। विश्वनाथ की फर्म का नाम राजपाल एण्ड सन्ज है और दीनानाथ की फर्म का नाम न्यू पाकेट बुक्स है। दोनों ने विश्वव्यापी प्रसिद्धि प्राप्त कर रखी है और अपने निजी कार्य में अत्यन्त सफल है।

मैंने पुराने जन्म के गुनाहों की सजा इस जन्म में मिलने की बात कही है। साधारण हालात में इस सिद्धान्त पर मैं अधिक विश्वास करता या न करता परन्तु ताजो दुर्घटना और इससे पहले के चन्द वाकियात पर जब मैं नजर डालता हूं तो इस प्रकार के प्रश्न उत्पन्न हो जाते हैं। इस दुर्घटना में सुरेन्द्र का बड़ा बेटा बच गया और बाकी सबके सब समाप्त हो गये। सुरेन्द्र की धर्मपत्नी गारगी स्यालकोट (पाकिस्तान) के प्रसिद्ध आर्य समाजी वकील श्री चरणदास पुरी की सुपुत्री थी। इनसे और महाशय राजपाल जी के परिवार से हमारे सम्बन्ध कितने घनिष्ट थे इसका अनुमान इस बात से भी किया जा सकता है कि पूज्य महाशय कृष्ण जी ने सुरेन्द्र का गारगी से विवाह का प्रबन्ध किया था। सच तो यह है कि सुरेन्द्रनाथ की मृत्यु को मैं एक निजी दुर्घटना कह सकता था। परन्तु सुरेन्द्र की मृत्यु से पूर्व कुछ घटनाएं हुई हैं जो समझ में नहीं आईं। आज से तीन मास पूर्व सुरेन्द्र की बहन सुमित्रा की मृत्यु हुई। इससे चार मास पूर्व इसके एक मात्र पुत्र विनोद का देहान्त हो गया। इससे छह मास पूर्व इसके पूज्य पति सत्यकाम का देहान्त हो गया। इसके कुछ समय पश्चात इनके दामाद भी गुजर गए इस प्रकार थोड़े समय में ही इसकी बहन का पूरा खानदान ही समाप्त हो गया श्रीमती सुमित्रा की केवल एक बहिन बाकी बची है जो कि बम्बई में रहती है और सुरेन्द्रनाथ का बड़ा बेटा रणजीत बाकी रह गया है।

कहते हैं कि जब मौत आती है तो उसे कोई टाल नहीं सकता। सुरेन्द्रनाथ की बेटी और इसका पति अमरीका में रह रहे थे। अपने माता-पिता से मिलने आये थे। परन्तु यहां इनकी भी लीला समाप्त हो गयी। इस बात पर कोई दो राय नहीं कि गवर्नर सुरेन्द्रनाथ की मृत्यु का रंज आपके मित्रों तथा सगे सम्बन्धियों तक ही नहीं, सच तो यह है कि पंजाब-हिमाचल की जनता भी दुःख अनुभव कर रही है। सुरेन्द्रनाथ ने जहां-जहां सेवा की वहां के लोग उसे याद कर रहे हैं। दिल्ली में इन्सपेक्टर जनरल आफ पोलीस के रूप में काम किया। १९६४ से लेकर १९७४ तक कश्मीर में काम किया। १९६५ में जब भारत और पाकिस्तान का युद्ध हुआ वह कश्मीर में ला ऐन्ड आर्डर की देख-भाल कर रहा था। इसके पश्चात मिजोरम के चीफ सैक्रेटरी बनाये गये। फिर इन्डस्ट्रियल सुरक्षा के प्रमुख बनाये गये। तत्पश्चात पब्लिक सर्विस कमीशन के सदस्य के रूप में काम किया। इसके बाद पंजाब के राज्यपाल और साथ ही चण्डीगढ़ के इन्चार्ज बना दिये गये इन दिनों हिमाचल प्रदेश के भी गवर्नर थे।

यह हैं सुरेन्द्रनाथ के जीवन की चन्द वाकियात परन्तु सुरेन्द्रनाथ को लोग इसकी सरकारी हैसीयत से इतना याद नहीं करते जितना इसको शराफत और ईमानदारी के लिये याद करते हैं। इतने बड़े उच्चपद को सम्भालने के बावजूद गरूर किस बात का नाम है इसे छू तक नहीं पाया। आज वह अपने पीछे एक बेटा और ९० वर्षीय सास छोड़ गया है। इस बेचारी के मन में क्या गुजरी होगी जब उसे बताया गया होगा कि उसका समूचा खानदान ही स्वर्ग सिधार गया है। इस बात का अनुमान लगाना सरल नहीं है। इसे केवल मात्र इस बात का सन्तोष ही नहीं होना चाहिए कि वह अकेली है जिसे इस दुर्घटना पर दुःख है। देश के लाखों लोग आज सुरेन्द्र की मौत पर तड़प रहे हैं। किसी शायर ने उचित ही कहा है—

"मौत उसकी है जमाना करे जिस पर अफसोस"
वरना मरने के लिए पैदा सभी होते है।

कानून से नहीं इन्सानियत से दूर होगा

बाल मजदूरों का शोषण

बाल मजदूर एक्शन नेटवर्क ने पिछले दिनों यह मांग की है कि बाल मजदूरों पर हो रहे जुल्म-अत्याचार और उनके शोषण की जांच के लिए न्यायिक समिति का गठन किया जाए। औद्योगिक प्रतिष्ठानों के साथ-साथ छोटी-बड़ी दुकानों में उनके साथ अमानवीय कृत्य होता है। यह मांग दिल्ली में हाल में एक बाल मजदूर को जिन्दा जलाये जाने की घटना के बाद की गयी है।

बाल मजदूरों का शोषण न केवल राजधानी, बल्कि देश के तमाम हिस्सों में होता है। ये बाल मजदूर अपनी बुझी हुई आंखों, मुरझाये चेहरों और पीड़ा भरे हृदयों से अपनी विवशता की कहानी हर क्षण कहते हैं लेकिन उनको इस शिकंजे से छुटकारा दिलाने के लिए कोई आगे कदम नहीं बढ़ाता। इन बाल मजदूरों की उम्र छह वर्ष से बारह वर्ष के बीच होती है।

राजधानी दिल्ली सहित देश के छोटे-बड़े शहरों की दुकानों और होटलों में इनकी दशा और भी दयनीय है। सुबह होते ही दुकानों और होटलों के मालिक इन्हें छोटी लकड़ी से कोंच कर उठाते हैं। ऐसा लगता है कि ये इंसान नहीं जानवर हैं। वे हड़बड़ा कर उठ जाते हैं।

उनकी आंखें नींद से भारी रहती हैं लेकिन वे मार के डर से आंखों को नन्ही हथेलियों से मलकर नींद तोड़ने की कोशिश करते हैं और आदेश का पालन करते हैं। कड़ाके की ठण्ड भरी रात हो या गर्मी की आग उगलती दोपहर, इन्हें कम कपड़ों में हमेशा काम में जुटे रहना पड़ता है।

रात देर से सोते हैं लेकिन इन्हें दुकानदार तड़के ही उठा देते हैं। फिर काम में उन्हें जुट जाना पड़ता है। अगर कहीं छुपकर सोने की कोशिश भी करते हैं तो उनकी पिटाई कर दी जाती है। सुबह से देर रात तक इन्हें काम करना पड़ता है—जूठी प्लेटें साफ करना, ग्राहकों को पानी देना, चाय-नाश्ता देना वगैरह···। यह सब कानूनी रूप से गलत है। लेकिन कानून की परवाह ही कौन करता है और अत्याचार करने वाले दुकानदारों को कानून की गिरफ्त में लेता ही कौन है। सवाल यह उठता है कि दुकानों पर काम करने के लिए बच्चे कहां से आते हैं। गरीब मां-बाप जब अपने बच्चों का पालन-पोषण करने में असमर्थ होते हैं, तो इन दुकानदारों के पास जाते हैं और उन्हें नौकरी दिला देते हैं। औद्योगिक कारखानों में भी इन्हें काम दिया जाता है। मां की ममता की छाया से दूर, बाप के स्नेह-दुलार से वंचित हो दुकान मालिकों के अत्याचार की धूप में जलते हुए अपनी जिन्दगी बिताते हैं। ये बाल अपने मां-बाप की गरीबी के दर्द को जानते हैं, इसलिए अपनी व्यथा कथा जान-बूझकर नहीं कहते हैं।

अगर हम इन बच्चों को गौर से देखें, तो उनके चेहरे आम बच्चों की तरह फूल-से खिले हुए नहीं मिलेंगे। उनके चेहरों पर खुश्करेपन की परतें जम जाती हैं। उनकी सर्द और उदास आंखों से दीनता का भाव हमेशा टपकता रहता है। एक ऐसी तरह के बिहार से आये बाल मजदूर ने बताया—'रात में जब नींद आती है तो मालिक उसे पीटता है और कोई गर्म चीज छुआ देता है जिससे उसकी नींद टूट जाती है' वास्तव में, इन दुकानों, होटलों और कारखानों में काम करने वाले बाल मजदूरों की हालत बहुत दयनीय और कारुणिक होती है। न वे सुबह की ताजगी और शाम की सुहावनी हवा अनुभव करते हैं और न वे फूलों सा खिलखिला पाते हैं। बच्चे कसे खेलते हैं, कौन-कौन से बच्चों के खेल होते हैं, उन्हें इस बात का भी पता नहीं होता और उनकी जिन्दगी की सुबह यूं ही गुजर जाती है। उनके हृदय की पीड़ा उनकी खामोश आंखों से झांकती रहती है।

हम भले ही बाल मजदूरों के खिलाफ कानून बनायें। लेकिन कानूनों से न तो कोई सामाजिक परिवर्तन होता है और न मानवीय संवेदना से हमारे मन-प्राण अनुप्राणित होते हैं। कानून की धज्जियां उड़ाते हुए सब कुछ मनमाने ढंग से चलता रहता है। बालकों को मजदूर बनाकर उनका शोषण करने के खिलाफ बनाये गये कानून तभी सफल होंगे, जब हमारे मन में स्वाभाविक रूप से उन बच्चों के लिए प्यार, सहानुभूति और ममत्व हो। लेकिन हमारा ध्यान उस ओर जाता ही नहीं है। हम सभी अपने-अपने तहखानों में दुबके हुए हैं। अपनी जिन्दगी की जरूरतों को पूरा करने के लिए भाग-दौड़ कर रहे हैं। इन्सानी रिश्तों की चीख नहीं सुनायी पड़ती है।

हमने बहुत सारी सामाजिक विद्रूपताओं और विषमताओं के खिलाफ कानून बना रखे हैं—बाल विवाह, दहेज, न्यूनतम मजदूरी आदि। लेकिन कानून केवल आदमी को सन्तोष देते हैं कि सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ने के लिए सरकार प्रयत्नशील है। वास्तव में सामाजिक बुराइयों को दूर करने की क्षमता इन कानूनों में नहीं होती। व्यापक जन समुदाय को इनके खिलाफ मुट्ठियां तानली होंगी, अपने हाथ लहराने होंगे। यह बुराई इन्सानी रिश्ते और संवेदना से ही दूर हो सकती है।

—अमरेन्द्र कुमार

(कानूनी पत्रिका, जून १९९४ से साभार)

प्राचीन आर्य योरपीय नसल के नहीं भारतीय थे

बम्बई, १० जुलाई। प्रसिद्ध विद्वान श्री भगवान दास गिडवानी ने इस ऐतिहासिक दृष्टिकोण की धज्जियां उड़ाने का प्रयत्न किया है कि स्वस्थ तथा सुन्दर आर्याई बाशिन्दे जिन्होंने भारत में उन्नत हड़प्पा तहजीब का न्यूनतम बोध किया वह शिमाली मगरब से आए और इनकी नसल योरपीय थी। श्री गिडवानी ने "आर्यों की वापसी" नाम से एक पुस्तक लिखी है जो अगले मास बम्बई और लन्दन में वितरित होगी। इसमें बताया है कि आर्य स्वयं अपनी मातृभूमि भारतवर्ष से किसी प्रकार बाहर गए ताकि विदेशी देशों में अपना सिक्का जमा सकें और सैनिक शक्ति की भी परीक्षा करलें और फिर अपने देश को लौटे।

विद्वान लेखक महोदय ने तथ्य और दास्तान में साधारण अन्तर रखते हुए यह परिणाम निकाला कि उन्होंने यह तहकीकात कहां से की इसका उत्तर है कि प्राचीन आर्याई गीत जो भारत सहित २० एशियाई देशों, और मर्कजी एशिया मुल्कों के प्रांतोंमें जनता के प्रयोग में है इसके अतिरिक्त इन्होंने प्राचीन सिक्कों को भी एकत्रित किया है। लेखक की प्रशंसा तथा प्रसिद्धि का माध्यम "दी सोर्ड आफ टीपू सुलतान" की वजह से है—जिस पर टी-वी सीरियल बनाया गया। इन्होंने अपनी तहकीकात के सम्बन्ध में कहा है कि इसकी बुनियाद के आधार पर नौआबादी पर दृष्टिकोण विशाल भारतीय संस्कृति के बारे में लिखा जिसके आधार पर यह संस्कृति ६००० वर्ष पूर्व पुरानी है। श्री गिडवानी ने कहा कि मैं दास्तान के तौर पर पेश करूंगा मगर दास्तान झूठ नहीं है और न ही केवल कयास है। यदि मैं एक ऐतिहासिक पुस्तक के तौर पर लिखता तो इसे कोई नहीं पढ़ता। श्री गिडवानी ने एक आर्य की प्रार्थना का विवरण दिया जो ५००३ कायम है, मंगवा लिया। इसमें प्रार्थना की है कि हे ईश्वर मुझे ऐसे वापिस न ला जैसा कि मैं था मुझे घास की पत्ती या शीतल के कतरे और वर्षा की तरह इस रेगिस्तान में ला कि यह फिर सरसब्ज हो जाए। यह गीत प्राचीन मनुष्यों की इस भावना को प्रकट करता है कि बुराईयों से पाक सरजमीन की खोज की जाए। श्री गिडवानी स्वयं कैनेडा में रहते हैं और यहां अभी-अभी भ्रमण में इन्होंने यू-एन-आई के प्रतिनिधि को यह बात बताई--इन्होंने कहा कि आर्य दूर जगह गए परन्तु बाद में वापस लौट आए क्योंकि इन्होंने महसूस किया कि मन्जिल पाना दुश्वार है।

(१०-७-९४ प्रताप के सौजन्य से)

आर्य पर्वों की विशिष्टता आवश्यक

—आचार्य दत्तात्रेय आर्य

ऋषि बोध उत्सव :

आर्य जगत में अभी तक ऋषि दयानन्द के जीवन की उस घटना को उनके जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है जिस दिन शिवरात्रि के दिन उन्हें बोध हुआ था किन्तु अब सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार इस वर्ष ७ मार्च को ऋषि दयानन्द का जन्म दिन मनाए जाने की घोषणा की गई थी जब कि शिवरात्रि १० मार्च, ९४ को थी।

जैसा आर्य समाज अजमेर में आयोजित ऋषि बोध दिवस के अवसर पर मैंने निवेदन किया था कि ७ मार्च को मूलशंकर का जन्म दिवस हो सकता है किन्तु महर्षि दयानन्द का वास्तविक जन्म तो शिवरात्रि पर उनको प्राप्त बोध के परिणामस्वरूप ही हुआ है। ७ मार्च को उनका जन्म दिन मनाया जाय इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है किन्तु उसके कारण बोध दिवस का महत्व और उपादेयता कम न हो इसका ध्यान रखना आवश्यक है। हमारे देश के अनेक महापुरुषों के जन्म दिन मनाये जाते हैं और वे केवल इसलिए कि उस दिन पार्थिव शरीर के रूप में उनका जन्म हुआ। ऐसे अवसरों पर प्राय उनके जीवन और उपलब्धियों की चर्चा होती है। आर्य जगत में ऋषि निर्वाण दिवस, ऋषि बोध उत्सव, आर्य समाज स्थापना दिवस आदि पर्वों पर भी प्राय. यही होता रहा किन्तु मेरा सदा यह आग्रह रहा है कि इन तीनो पर्वों का उपयोग तभी है जब हम उनसे साथ जुड़ी विशेषताओं को उजागर करते रहें।

आर्य पर्वों की भिन्नता :

प्राय: देखा जाता है कि इन तीनो पर्वों पर जो कार्यक्रम होते हैं उनमें कोई अन्तर या भिन्नता नहीं की जाती। हमारे विद्वान वक्ता, भजनोपदेशक और इस कार्यक्रम मे गीतो और भजनो द्वारा भाग लेने वाले छात्र-छात्रायें प्राय: ऋषि दयानन्द के गुणगान तक ही सीमित रहते हैं परिणामस्वरूप प्रश्न उठाया जा सकता है कि जब एक ही जैसा कार्यक्रम किया जाना है तो उसको तीन पर्वों पर पुनरावृत्ति करने की क्या आवश्यकता है ?

प्रत्येक पर्व की अपनी विशेषता :

इस पुनरावृत्ति का एक कारण तो यह प्रतीत होता है कि आर्य जगत के नेतृत्व द्वारा उनके पृथक महत्व के सम्बन्ध में कोई दिशा निर्देश नहीं दिये जाते और दूसरा मुख्य कारण यह है कि उसके आयोजक तथा उसमें भाग लेने वाले व्यक्ति या तो इन तीनों के भिन्न महत्वों से परिचित नहीं है या उनके लिए विशेष जानकारी और तैयारी किये बिना केवल औपचारिकता निभाने का प्रयत्न करते हैं। इन पर्वों की भिन्न-२ विशेषताओं और उन्हें प्रभावकारी बनाने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि इनमें से प्रत्येक पर्व को उसके मुख्य उद्देश्य के अनुरूप मनाने का प्रयत्न किया जाए।

स्थापना दिवस :

उदाहरण के लिए आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक और राजनैतिक क्षेत्रों में आर्य समाज, उसकी संस्थाओं और प्रमुख नेताओं द्वारा किए गये योगदान की चर्चा होनी चाहिए।

निर्वाण दिवस :

इसी प्रकार ऋषि निर्वाण दिवस पर ऋषि दयानन्द के जीवन शिक्षा और आधुनिक भारत के प्राय: सब क्षेत्रों में उनके योगदान को उजागर किया जाना चाहिए।

ऋषि बोध दिवस का महत्व :

जहां तक ऋषि बोध दिवस का प्रश्न है उस अवसर पर मुख्य रूप से एकेश्वरवाद और मूर्तिपूजा जैसी उसकी विकृति का विवेचन होना चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि उपरोक्त तीनों अवसरों पर महर्षि दयानन्द का उल्लेख अनिवार्य है किन्तु प्रश्न यह है कि इनमें से किस अवसर पर उनके जीवन और शिक्षा के आयामों में से किसको उस उत्सव की प्रासंगिकता को ध्यान में रख कर विशेष महत्व दिया जाय। ऋषि बोधोत्सव इस दृष्टि से इन तीनों में इसलिए विशेष महत्व का है कि उस दिन की घटना के परिणाम स्वरूप ही ऋषि दयानन्द के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ जिसने मूलशंकर को महर्षि दयानन्द बना दिया दूसरे शब्दो में मूलशंकर का जन्म ७ मार्च या अन्य किसी भी दिन हुआ हो महर्षि दयानन्द के रूप में उनका जन्म इसी बोधरात्रि को हुआ।

मूर्ति पूजा का राष्ट्रीय अभिशाप :

इधर कुछ वर्षों से आर्य समाज के धार्मिक और सामाजिक व क्रांतिकारी स्वरूप में जो शिथिलता दिखाई देने लगी है उसका एक कारण यह भी है कि मूर्तिपूजा की हानियो जैसी सर्व व्यापक बुराइयों के साथ समझौता नहीं तो नरमी का रुख अपनाया जा रहा है। सर्व धर्म सम्भाव के गलत अर्थ तथा धर्म निरपेक्ष शब्द के नाम पर राजनैतिक नेताओं के स्वार्थ के कारण ही इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिल रहा है। किन्तु मूर्तिपूजा केवल एक पूजा पद्धति मात्र ही नहीं है बल्कि एक ऐसा अभिशाप है जिसके परिणाम स्वरूप प्राय: सब धार्मिक और सामाजिक अन्ध विश्वासो, कुरीतियो और हानिकारक प्रथाओं को संरक्षण और प्रोत्साहन मिलता है।

यहा हिन्दुओ के तथा कथित बहुमत को छोटे-छोटे अल्पमतों में विभाजित करके उनके राष्ट्रीय महत्व को भी निरर्थक करने का उत्तरदायित्व कुछ हद तक मूर्तिपूजा का ही है। प्रत्येक परिवार का अपना अलग देवता या इष्ट देवता या उसकी मूर्ति है इसी प्रकार प्रत्येक जाति के अलग देवता और उनके मन्दिर हैं। भिन्न प्रांतो में इन्हीं देवताओ के पृथक स्वरूप और नाम है जो हिन्दू बहुमत को जातिय और प्रांतीय टुकड़ो में बांटकर उन्हें सशक्त राष्ट्रीय शक्ति बनाने से रोकते हैं।

दासता का कारण

हमारे देश की लम्बी राजनैतिक दासता और पराधीनता का भी एक प्रमुख कारण मूर्ति पूजा ही रहा है। मुसलमानो द्वारा बार-२ प्राय सब प्रमुख मन्दिरो पर किये आक्रमण, उनमे स्थापित मूर्तियो को भंग करके उनकी खुली अवमानना इस बात के प्रमाण है कि ये तथाकथित चमत्कारी मूर्तिया अपने भक्तों की तो दूर स्वय अपनी रक्षा करने मे असमर्थ सिद्ध हुई और उनको ध्वस्त और अपमानित करने वालो को सदियो तक सारे देश पर राज्य करने का उपहार देकर इन देवी देवताओ तथा उनकी मूर्तियो ने यह भी सिद्ध कर दिया कि स्वय ईश्वर की दृष्टि में उसको अनेक कृत विकृत मूर्तिया बनाकर उन्हें एक ईश्वर के स्थान में अनेक प्रतिस्पर्धियो के रूप में प्रस्तुत करने वाले मूर्तिपूजक वास्तव में ईश्वर के भक्त न होकर उसके निन्दक अर्थात नास्तिक है जबकि दूसरी ओर मूर्ति भंजक आक्रामक उसके एकेश्वर वाद के सच्चे समर्थक और अनुयायी हैं, दूसरे शब्दो मे न केवल हमारी धार्मिक और सामाजिक अवनति अपितु देश के राष्ट्रीय और राजनैतिक पतन का भी एक मुख्य कारण मूर्तिपूजा ही है। सम्भवत इसीलिए महर्षि दयानन्द ने जीवन भर इस प्रथा के साथ किसी भी प्रकार का समझौता करने के स्थान में निरन्तर उसका निराकरण और विरोध करने में अपना अधिकांश समय और शक्ति लगाई।

काशी शास्त्रार्थ और मूर्तिपूजा :

ऋषि दयानन्द द्वारा आज से १२५ वर्ष पूर्व मूर्तिपूजा के गढ़ काशी में १८६९ में किया गया शास्त्रार्थ धार्मिक जगत में एक बड़ी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है, मूर्तिपूजा विरोध में उनसे पूर्व भी अनेक सुधारकों और सन्तों ने आवाज उठाई थी किन्तु "न तस्य प्रतिमा अस्ति" इस मन्त्र द्वारा यजुर्वेद में मूर्तिपूजा का निषेध किया गया है, दयानन्द की यह घोषणा काशी के पंडितों के लिए चकित कर देने वाली एक चुनौती थी। इससे पूर्व किसी वैदिक विद्वान ने ऐसा करने का साहस नहीं किया था और न आज तक कोई वेद का पंडित वेदों में मूर्तिपूजा सिद्ध कर सका है।

ऋषि दयानन्द और मूर्ति पूजा :

आधुनिक भारत में राजा राममोहन राय आदि जिन धार्मिक और सामाजिक सुधारको ने मूर्ति पूजा का निषेध किया है उनमे ऋषि दयानन्द का एक

(शेष पृष्ठ ८ पर)

बालक-बालिका का यज्ञोपवीत धारण वैदिक आस्था है

स्नातक सुरेश चन्द्र वेद, मन्त्री आर्य समाज, हाथरस

भारत वर्ष में यज्ञोपवीत, जनेऊ की आस्था आदि काल से प्रत्येक आर्य हिन्दू के लिए अनिवार्य रूप से रही है। सिद्धान्ततः आज भी यह आस्था उसी रूप में स्वीकार है, परन्तु इस पवित्र जनेऊ के लिए व्यवहारिकता ना के बराबर रह गई है। वैदिक क्रम में जनेऊ के इन तीन धागों को ब्रह्म सूत्र व यज्ञ सूत्र के नाम से कहा जाता है। यह यज्ञोपवीत ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य के प्रत्येक बालक को "अष्टमे वर्षे ब्राह्मणं उपनयेत्, एकादशे क्षत्रियं, द्वादशे वैश्यम् क्रमशः आठवें, ग्यारहवें तथा बारहवें वर्ष में विद्वान आचार्य उपनयन संस्कार के अवसर पर एक विशेष श्रद्धा के साथ धारण कराता था। और जिस आर्य बालक का यह जनेऊ या उपनयन संस्कार नहीं होता था, "अत ऊर्ध्वं पतित सावित्री का भवान्ति" पतित कहा जाता था। उपनयन संस्कार में विद्यारम्भ के दिन ही आचार्य व गुरु पारस्कर गृह्य सूत्र की विशेष विधि के साथ यज्ञ करते हुए बालक के बाएं कन्धे पर से दाहिने हाथ के नीचे यह पवित्र जनेऊ धारण कराते हुए यह मन्त्र बोलता था कि—"ओ३म्। यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥"

अर्थात् यह जनेऊ (परमं पवित्रं) परम पवित्र है, (पुरस्तात् प्रजापतेः) प्रजापति के साथ ही आदि काल से वर्तमान् है। यह यज्ञ सूत्र (आयुष्य) आयु का देने वाला है, (अग्र्यं) जीवन को ब्रह्मचर्य गृहस्थ व वानप्रस्थ उस प्रकार उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने वाला है। प्रतिमुञ्च कन्धे पर धारण करने पर (शुभ्रं) निर्मल पवित्र है, (बलं) बल और (तेजः) तेज को देने वाला (अस्तु) है।

इस जनेऊ की पवित्रता, गुणवत्ता, ईश्वरीय आज्ञा और अनिवार्य वैधता ही एक महत्ता है, जिस कारण वैदिक धर्म से अन्य धर्मों में भी यह प्रभावी हुई। पारसियों में इस जनेऊ को 'कुस्ती' कहते हैं। "कुस्ती" का मन्त्र भी पूर्ण रूप से इस वैदिक मन्त्र के ही अक्षरशः अनुरूप है।

"फाते मज्दाओ अरत् पोरवनीम् एयार्ग्गो यानिमस्ते हुद-पाये संपेम मेन्युतस्तेम् अंघुहिम् दैवनीम् मज्दयास्नाम्।"

इसका अर्थ इस प्रकार है कि ऐ डोरा तू बहुत बड़ा है, उज्ज्वला है, (परमं पवित्र) आयु तथा बल का देने वाला है, (आयुष्यमग्र्यं, बलमस्तु), तुझे मज्दाओने आरोपित किया है, (प्रजापतेर्यत् सहज) मैं तुझे पहनता हूं।

वैदिक धर्म में यह उपनयन संस्कार न कराने वाले को 'सावित्री-पतित' कहा है। ठीक इसी प्रकार पारसियों के भगवान अहुर मज्दा ने अपने पैगम्बर स्पितमजरथुस्त्र् को कहा कि जो इस Saered Thrad 'कुस्ती' का धारण नहीं करता, उसे मृत्युदण्ड दिया जाना चाहिए। पारसियों में यह 'कुस्ती' सात सालकी उम्र में आज भी धारण कराया जाता है।

मुसलमानों में उपनयन को 'बिस्मिल्ला' पढ़ना कहते हैं। उनके यहां ४ साल ४ महीने ४ दिन ४ घड़ी और ४ पल का हो जाने पर बालक को बिस्मिल्ला सुनाकर पढ़ने को बिठाया जाता है। बिस्मिल्ला पढ़ते समय उसे 'बिस्मिल्ला उर्र रहमान उर्र हीम्।' पढ़ने को कहा जाता है। जैसे वैदिक धर्म में आचार्य गायत्री मन्त्र का उपदेश करता है।

ईसाईयों में बच्चे को 'बपतिस्मा' देते हैं। यह भी उपनयन का ही एक स्वरूप है। यह 'बैप्टिज्म एन्साइक्लो पीडिया आफ रिलीजन- के अनुसार यूनानी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ पुनरुत्पत्ति (Regenertlon) है। यही पुनरुत्पत्ति वैदिक धर्म में 'द्विज' शब्द से अभिव्यक्त होती है। वैदिक आस्था में 'द्विज' उसी को कहते हैं, जिसका उपनयन संस्कार और समावर्तन से संस्कार हो जाता है।

द्विजका अर्थ है दो जन्मों का होना। माता-पिता से पहला जन्म होता है। इस जन्म के बाद जब बालक संस्कृति और ज्ञान की भट्टी में पड़कर नव-मानव होने की प्रक्रिया में पड़कर आचार्य से अपनी शिक्षा की दीक्षा प्राप्त करता है, तो, यह उसका दूसरा जन्म होता है और तब 'द्विज' कहलाता है। मनु महाराज के शब्दों में 'जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते" जन्म से शूद्र पैदा होते हैं, संस्कारों से ही मनुष्य 'द्विज' बनता है। मनुष्य को वैदिक शृंखला में आने के लिए जन्म से पूर्व ही संस्कारों की विभिन्न श्रेणियां पास करनी होती हैं। यह कितना स्पष्ट सत्य है कि आयुर्वेद में मारक संखिया जैसे अनेकों विषों को मारकर और पचपुटों में संस्कारित कर अमृततुल्य जीवन रक्षक बना दिया जाता है।

जीवन का यह 'उपनयन' जैसा संस्कार विद्या मन्दिर में, आचार्य के गुरुकुल में संदीपन आश्रम में सम्पन्न होता था। इस अवसर पर जीवन के आरम्भ में सात-आठ वर्ष की आयु में धारण कराये गये यज्ञोपवीत के ये तीन धागे जीवन पर्यन्त मानवीय तीन ऋणों से सतत उऋण होने के लिए सजग प्रहरी का काम करते हैं। क्योंकि जनेऊ के तीन धागों में निहित जीवन के तीन ऋणों से मुक्ति आवश्यक थी। ये तीन ऋण हैं।

(१) ऋषि ऋण, (२) पितृ ऋण और (३) देव ऋण। प्रथम ऋण ब्रह्मचर्य धारण कर वेद विद्या के अध्ययन व ज्ञानार्जन कर, द्वितीय ऋण धर्म पूर्वक गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर सन्तानोत्पत्ति और धर्मार्थ धनार्जन तथा तृतीय ऋण गृहस्थाश्रम से अलग हो देश और समाज सेवा के लिए अर्पण करने से मुक्ति मिलती थी। इसीलिए ये तीन धागे जीवन के तीन ऋणोन्मुक्ति हेतु ब्रह्मचर्य गृहस्थ और वानप्रस्थ इन तीनों आश्रमों से गुजरने के सूचक हैं। यही कारण है कि जब व्यक्ति इन तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है। अर्थात तीनों आश्रमों को पार जाता है। तब उस पवित्र जनेऊ को विधान के अनुसार यज्ञ की अग्नि में समर्पित कर सन्यासाश्रम में प्रवेश करने की सुन्दर व्यवस्था थी।

यही उस यज्ञोपवीत को जीवन के तीन आश्रम में धारण करने की परम पावन अनिवार्यता है। बिना इस जनेऊ को धारण किए आज भी यज्ञ में वेदी पर बैठने का अधिकारन हो है। अब भी विवाह से पूर्व इस जनेऊ धारण की अनिवार्यता केवल रस्म अदायगी तक ही रह गई है। आर्य समाजों द्वारा सम्पन्न छोटे और बड़े यज्ञों में वेदी पर बैठने वालों को यह जनेऊ मन्त्र के साथ धारण कराया जाता है। इसको अब उतारा नहीं जायेगा यह कहा भी जाता है। पर बाल्यारम्भ से अनभ्यस्त यह यज्ञ सूत्र कंधे पर नहीं ही रह पाता है। यद्यपि उपनयन संस्कार और जनेऊ पहनने की यह अनिवार्य आस्था आज नहीं पाई जाती। सिद्धांत और आस्था तो हर हिन्दू में आज भी है। पर क्रियान्वयन में विश्वास नहीं है। पर देश में आरम्भ से लेकर बहुत समय तक जनेऊ धारण में अनिवार्य आस्था और तदनुकूल ऋणोन्मुक्ति में विश्वास बालक और बालिका दोनों में ही था। कादम्बरी महाकाव्य में महाकवि भट्ट ने जो ७वीं शताब्दी में ऐतिहासिक राजा हर्षवर्धन की सभा के रत्न थे महाश्वेता का वर्णन करते हुए लिखा है कि—"ब्रह्मसूत्रेण पवित्री कृत कायाम्" अर्थात जिसका शरीर ब्रह्मसूत्र के धारण के कारण पवित्र था। ब्रह्मसूत्र यज्ञोपवीत का ही दूसरा नाम है।

इस प्रकार आज हर हिन्दू के लिए विशेष कर आर्य के लिए इस जनेऊ की अनिवार्य आस्था क्रियान्वयन की है। यह यज्ञोपवीत हमारे आस्तिक भाव का, वेदानुगामी होने का पवित्र अलंकरण है। एक बार महर्षि दयानन्द सरस्वती से यह प्रश्न किया गया कि "यदि यज्ञोपवीत न हो तो क्या हानि है। श्री स्वामी जी ने उत्तर दिया कि "ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य का उपनयन संस्कार होना आवश्यक है क्योंकि जब तक उपनयन संस्कार नहीं होता, मनुष्य को वैदिक कर्म करने का अधिकार नहीं होता। पुनः प्रश्न "एक व्यक्ति उपनयन संस्कार तो करा ले, पर शुभकर्म न करे। और दूसरा उपनयन संस्कार न करावे, और सत्य भाषणादि अच्छे कर्मों में सदा तत्पर रहेंगे। इन दोनों में कौन श्रेष्ठ है?" श्री स्वामी जी ने उत्तर दिया कि "श्रेष्ठवह है जो उत्तम कर्म करता है। परन्तु संस्कार होना आवश्यक है, क्योंकि संस्कार न होना वेद शास्त्रों के विरुद्ध है। और जो वेद शास्त्रों के विपरीत करता है। वह ईश्वरीय आज्ञा को नहीं मानता और ईश्वराज्ञा को न मानना मानो नास्तिक होने का लक्षण है। संक्षेप में इन सभी आस्थाओं में आज हिन्दू बालिका और बालक मात्र के लिए यह जनेऊ धारण अत्यधिक आवश्यक है। आर्य बन्धुओं से यही प्रार्थना है।

शरीअत और दीन (२)

अरुण शौरी

कर्मकाण्ड मजहब नहीं

मैदा (कुरान की पाँचवीं सूरा) अध्याय में, मौलाना बताते हैं, विभिन्न धार्मिक, सामाजिक व्यवस्थाओं का जिक्र किया गया है। एक के बाद एक मोसेस, जीसस और इस्लाम के पैगम्बर का जिक्र करने के बाद कुरान (V.४८), मौलाना आजाद बताते हैं, बयान करती है।

"तुममें से हरेक के लिए नियत कर दिया है हमने एक कानून और एक खुला रास्ता। अगर अल्लाह चाहता तो उसने तुम सबको एक ही नमूने का बना दिया होता, लेकिन वह तुम्हें परखेगा तो उसी के मुताबिक जो उसने प्रत्येक को दिया है। इसलिए अभिलाषी बनो तो अच्छे कामों के।"

"ऊपर उल्लिखित उद्धरण को सावधानीपूर्वक पढ़ो और इसके हरेक शब्द पर मनन करो, "मौलाना आजाद सलाह देते हैं।" जब कुरान के उपदेश दिये गये थे, उस वक्त प्रचलित मजहबों के अनुयायी मजहब के बाहरी रूपविधानों को ही मजहब समझ लेते थे, और मजहब के प्रति सारा उत्साह लिहाजा कर्मकांड पर खर्च हो जाता था। मजहब कर्मकांड के आधार पर हरेक समूह ने हर दूसरे समूह को मोक्ष या मुक्ति के अधिकार से वंचित कर दिया था। लेकिन कर्मकांड मजहब नहीं थे, कुरान ने कहा, न ही सत्य की कसौटी। ये मजहब का महज एक बाहरी पहलू थे। उसकी भावना इससे ऊपर और श्रेष्ठ थी, और केवल वही दीन या धर्म थी।" "दीन" वह आगे कहते हैं, "असलियत में सदाचार से परिपूर्ण जीवन बसर के माध्यम से अल्लाह के प्रति निष्ठा था, और लोगों के किसी एक समूह की अनन्य विरासत नहीं था। दूसरी तरफ यह समूची मानव जाति की साझा विरासत था, और किसी परिवर्तन से वाकिफ नहीं था। कर्मकांड और दस्तूर उसके लिए गौण और अप्रधान हैं। वे वक्त-वक्त पर बदल चुके हैं और बदले जा सकते हैं और समय और परिस्थिति की माँग के तहत एक देश से दूसरे देश में भिन्न-भिन्न हैं। एक मजहब में दूसरे मजहब से जो फर्क या भिन्नताएं देखी जा सकती हैं, वे खास तौर पर जीवन के इसी पक्ष से जुड़ी हैं।"

"इस वाक्य को देखो, तुम में से हरेक (तुम्हारे समूहों) के लिए नियत कर दिया है हमने एक कानून (शरआ) और एक खुला रास्ता (मिनहाज), "मौलाना आजाद कहते हैं। "गौर करो कि जो शब्द यहां इस्तेमाल हुआ है वह दीन नहीं है जो कि हर एक के लिये एक-समान होना चाहिए। वह कोई भिन्नता मंजूर नहीं करता। शरआ और मिनहाज चीजों की प्रकृति से ही सभी के लिए एकरूप और एक समान नहीं हो सकते। लिहाजा यह अनिवार्य था कि ये विभिन्न युगों और विभिन्न देशों के लिए अलग-अलग हों। इस प्रकार के फर्क वास्तव में मजहब की बुनियाद के फर्क नहीं हैं। ये सिर्फ उसकी अनुपूरक चीजों के ही फर्क हैं।"

यही वह सत्य है, "मौलाना आजाद आग्रह करते हैं, "जिस पर कुरान जोर देने का प्रयत्न करती है जब वह बयान करती है, 'अगर अल्लाह चाहता तो उसने तुम सबको एक ही नमूने का बना दिया होता।' यह कथन विभिन्न देशों में रहने वाले मानव जाति के विभिन्न तबकों की व्यवस्थाओं के फर्क और भिन्नताओं को ध्यान में रखकर किया गया है, जिनके नतीजतन आचार-व्यवहारों, रीति-रिवाजों और रहन सहन के तरीकों में फर्क आ जाता है। लेकिन इस प्रकार की भिन्नताएं मनुष्य के स्वभाव का ही अनुषंग हैं और सत्य और असत्य की कसौटी नहीं बनना चाहिए और परस्पर नफरत और शत्रुताओं का कारण नहीं होना चाहिए। महज की सिर्फ बुनियाद के साथ छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए, अर्थात् एक अल्लाह के प्रति निष्ठा और सदाचार से परिपूर्ण जीवन-बसर के साथ। यही कारण है कि कुरान सहिष्णुता की जरूरत पर इतना जोर देती है।"

इस्लाम में विवाह

सदाचारी जीवन के माध्यम से अल्लाह के प्रति निष्ठा मात्र से बना दीन केवल यही वह मर्म है, यही वह सारतत्व है जिसका उल्लंघन नहीं होता है. जिसे बदला नहीं जाता है। शरीअत, नियम-विनियम, मिनहाज, सुनिश्चित मार्ग जिस पर चलना है, यह समय, काल, परिस्थिति पर निर्भर करता है—यह उतना ही बदलने योग्य, है जितना समय और परिस्थिति बदलती है।

इस विशिष्टता, इस फर्क को एक प्रभावशाली हदीस से समझाया जाता है। पैगम्बर जब मदीना में थे तो उन्होंने लोगों को एक खास तरह से खजूर के पेड़ उगाते देखा। उन्होंने उनसे पूछा कि वे ऐसा क्यों कर रहे थे। "यह एक पुराना दस्तूर है" उन्होंने कहा। उन्होंने सलाह दी कि अगर वे ऐसा नहीं करें, तो ज्यादा पैदावार हो सकती है। उन्होंने उनकी सलाह मान ली। पेड़ों में कम फल लगे। जब उन्होंने उनसे शिकायत की, तो उन्होंने कहा, "मैं एक मनुष्य से ज्यादा कुछ नहीं हूं, जब मैं मजहब के मुताल्लिक तुम्हें कोई आदेश देता हूं तो उसे ग्रहण करो, और जब मैं इस दुनिया के मामलों के संबन्ध में आदेश देता हूं, तो मैं मनुष्य से ज्यादा कुछ भी नहीं हूं।"

खास तौर पर इस्लाम में, शादी और उसके बाद की तमाम चीजें—तलाक सरीखी—सर्वाधिक निश्चित रूप से "इस दुनिया के मामले" हैं। क्योंकि इस्लाम में शादी जैसा कि वह ईसाइयों या हिन्दुओं में है—संस्कार नहीं है। यह एक दीवानी इकरारनामा है। "तीन बार तलाक" को निकाल देने का एक तरीका, जिसका आग्रह अनेक अधिकारी विद्वान न्यायमूर्ति फैज बदरुद्दीन तैयब जी से लेकर आज के विद्वान तक करते रहे हैं, यह है कि शादी के इकरारनामे में एक धारा जोड़ दी जाये कि शौहर इस पद्धति से अपनी बीवी को तलाक नहीं देगा। हाल ही का एक उदाहरण लें, बीस साल पहले लिखे गये एक निबन्ध में जिसका जिक्र पहले भी किया गया था, डेनियल लतीफी ने माँग की थी कि शादी के एक मानक इकरारनामे को संविधि के द्वारा कानून का रूप दे दिया जाना चाहिए। इस

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शरीअत और दीन

(पृष्ठ ७ का शेष)

इकरारनामे को संविधि के द्वारा कानून का रूप दे दिया जाना चाहिए। इस इकरारनामें में, जिस पर बीवी और शौहर दस्तखत करें और जिससे बंधे हों, कुछ इस किस्म की शर्तें होनी चाहिए।

"(अ) कि शौहर द्विपत्नी विवाह नहीं करेगा।"

(ब) कि वह बीवी के काम-धन्धों में दखलंदाजी नहीं करेगा, न ही उसे उसकी इच्छा के खिलाफ परदे में रखेगा, न ही उस पर बल प्रयोग करेगा।

(स) कि वह विवाद को मध्यस्थों के पास भेजे बगैर बीवी को तलाक नहीं देगा।

(द) कि समुचित आधारों पर शादी को खत्म करने का समान अधिकार बीवी को भी होगा। और

(इ) शौहर-बीवी में से प्रत्येक की अपने कारोबार, व्यवसाय या काम-धन्धे से होने वाली कुल आमदनी का आधा परस्पर एक-दूसरे का होगा।"

और लतीफी ने मार्मिक ढंग से यह भी जोड़ा था, 'यह उल्लेखनीय है कि मुस्लिम शादी के दीवानी इकरारनामा होने के नाते, उसके प्रसंगों और घटनाओं को कानून बनाकर विनियमित करने को धार्मिक अधिकारों पर हमला नहीं माना जा सकता, क्योंकि प्रभावित रिश्ता धार्मिक नहीं बल्कि सिविल और धर्म निरपेक्ष है।"

इस्लाम पर हमला क्यों ?

अधिकारी विद्वानों ने एक दूसरा तरीका भी बताया है। यह सुविदित है कि इस्लामी कानून के लगभग १९ स्कूल हैं, जिनमें से चार का भारत मे प्रमुख है। जहां अधिकांश भारतीय मुसलमान हनफी स्कूल का अनुसरण करते हैं, वहीं ऐसा कोई पक्का और कठोर सिद्धान्त नहीं है जो तय करता हो कि एक व्यक्ति अमुक स्कूल के सिद्धान्तो के द्वारा ही अपने मामलों का निपटारा करेगा, और न ही कोई ऐसा नियम है जो एक व्यक्ति को हमेशा एक ही स्कूल का पालन करने को बाध्य करता हो। दरअसल, बिलकुल आरम्भ से ही यह उचित ठहराया जाता रहा है कि किसी निश्चित मामले में किसी एक स्कूल द्वारा स्वीकृत नियम अगर विपत्ति या अन्याय का कारण बनने वाला हो, तो उसकी एवज में किसी दूसरे स्कूल का नियम चुना जा सकता है, वास्तव में सिफारिश की जाती है कि चुना जाना चाहिए। अब "तीन बार तलाक" को शियाओं के द्वारा वैध नहीं माना जाता, न ही इसे शाफी सरीखे सुन्नी सुन्नी स्कूलों के द्वारा वैध माना जाता है (सर सैयद अहमद अली सरीखे अनेक अधिकारी विद्वानों ने इसीलिए मांग की थी कि जहां मामले के पक्षकार संयोग से हनफी स्कूल (वह स्कूल जो "तीन बार तलाक" को वैध और अपरिवर्तनीय ठहराता है) के हों, वहां शाफी कानून न कि हनफी कानून, लागू होना चाहिए, यही नियम, मिसाल के लिए १९३९ के मुसलिम विवाह विच्छेद कानून का आधार बना था। हनफी कानून जिसे अधिकांश भारतीय मुसलमान मंजूर करते हैं, शौहर को बीवी को निकाल बाहर करने का परम अधिकार देता है, वह ऐसे किसी आधार को मान्यता नहीं देता, जिसकी बिना पर एक परेशानहाल बीवी मुक्ति का रास्ता खोज सके। इसने १९३९ मे उस विधेयक के मुसलिम प्रवर्तकों ने बयान किया, अनगिनत औरतों को अकथनीय तकलीफ पहुंचायी थी। इसलिये विधानमंडल को ऐसा कानून बनाना चाहिये कि जिससे वे, हनफी होते हुवे भी, विवाह विच्छेद के लिए उन कारणों व आधारों का अनुसरण कर सकें जिन्हें मालिकी स्कूल के द्वारा वैध माना जाता है। और इसलिए ऐसा किया गया था। अगर अभी १९३९ में संविधि के द्वारा ऐसा एक आधारभूत परिवर्तन करना बिल्कुल ठीक था, तो आज ऐसा करना इस्लाम पर हमला क्यों है? अगर वह संविधि इसलिए स्वीकार्य थी कि उसे इस्लामी कानून के किसी अन्य स्कूल की शर्तों पर न्यायोचित ठहराया जा सकता था, तो आज एक संविधि क्यों नहीं, जो तलाक के संबन्ध में शाफी कानून पर टिकी हो?

संक्षेप में, इस दानवीय अधिकार को समाप्त कर देने के लिए कुरान में इसका आधार और औचित्य है, पैगम्बर की सुन्ना में इसका आधार और औचित्य है, केवल आधार और औचित्य ही नहीं, रचनात्मक इच्छा आग्रह और मांग है—कानून के और उतना ही मजहब के सर्वाधिक आधिकारिक और धर्मनिष्ठा टिप्पणीकारों की ओर से। तिस पर भी उनके एक सौ साल के प्रयत्नों का, उनके कारणों और उद्धरणों को सामने रखने का कुल नतीजा क्या है? न सिर्फ शौहरों के हाथ में यह अधिकार कायम है, न सिर्फ लाखों औरतें इसके कारण प्रतिदिन आतंक में जीती हैं, बल्कि महज हल्का-सा इशारा भर होता है कि यह अधिकार शौहरों से छीन लिया जाना चाहिए और चीख पुकार तेज हो जाती है, "इस्लाम पर हमला"!

तो भला सबक क्या है? और इससे निकलने का तरीका क्या है?

आर्य पर्वों की विशिष्टता

(पृष्ठ ५ का शेष)

विशेष स्थान है। स्वामी जी ने धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु राष्ट्रीय आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भी मूर्तिपूजा की अनेक हानियां बताई है।

मूर्तिपूजा के बारे में समझौता नहीं :

यही कारण है कि अजमेर में उनके भक्त राव बहादुर मूलशंकर जी ने जब उनसे निवेदन किया कि यदि वे मूर्तिपूजा का विरोध छोड़ दें तो उनकी अन्य शिक्षाओं को लोग प्रसन्नता से स्वीकार करेंगे और उनके अनुयायियों और प्रशंसकों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो जाएगी। स्वामी जी ने अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए उत्तर दिया कि मूर्तिपूजा जैसी वेद विरुद्ध और वास्तविक अर्थों में ईश्वर विरोधी मान्यता के सम्बन्ध में समझौता करूं तो मुझे अपने अन्य उन सिद्धांतों और मान्यताओं के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार का समझौता करना पड़ेगा। दूसरे शब्दों में स्वयं महर्षि दयानन्द जी यह समझते थे कि मूर्तिपूजा हमारी प्रायः सब धार्मिक और सामाजिक कुरीतियों और अन्य विपदाओं का मूल कारण है और उसके निराकरण के बिना अन्य किसी क्षेत्रों के सुधार की ओर यहां तक कि राष्ट्रीय और राजनैतिक प्रगति की भी संभावना नहीं है।

स्पष्ट है कि यदि ऋषि बोध उत्सव के स्थान में हमने किसी अन्य दिन स्वामी दयानन्द के जन्म दिन को महत्व दिया तो उसका एक स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि मूर्तिपूजा के वेद विरुद्ध ही नहीं ईश्वर विरुद्ध होने सम्बन्धी जो चमत्कारिक और दूरगामी बोध उन्हें हुआ उसका महत्व कम हो जायेगा और परिणामस्वरूप ऋषि दयानन्द के जीवन और शिक्षाओं का सबसे प्रमुख आधार ही नीचे खिसक जायेगा।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये एक बार रु०१५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

सरकारों की हिचकिचाहट से कश्मीर की हालत बिगड़ी

—जगमोहन

नई दिल्ली, सरकार दर-सरकार कमजोर नीतियों, फैसले लेने मे हिचकिचाहट और समस्याए खत्म करने के लिए ठोस कदम उठाने की इच्छा के अभाव से कश्मीर की हालत बदतर हुई है।

राज्यसभा सासद और जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल जगमोहन ने गुरुवार को कश्मीर की हालत पर यह टिप्पणी की। जगमोहन 'कश्मीर समस्या—सही नजरिया' विषय पर हुए सेमिनार मे बोल रहे थे। विटठल भाई पटेल भवन मे हुए इस सेमिनार का आयोजन भारतीय जनता युवा मोर्चा के विचार मच ने किया।

जगमोहन ने कश्मीर की समस्याओ को नकारात्मक ताकतो की पैदाइश बताया। और कहा कि ऐसी ताकतें लम्बे समय से भारत को तोडने के लिए देश मे काम कर रही है जगमोहन ने दुख जताया कि मुद्दो को गम्भीरता से न लेने और कृत्रिम तरीके की जिन्दगी अपनाने की वजह से भ्रष्टाचार को बढावा मिलना है। इस जीवन शैली को अपनाने की वजह से ही समाज मे आतकवाद जैसी बुराइया पनप रही हैं।

जगमोहन ने कहा कि हम किसी भी सकट के सामने खडे होने का साहस नहीं जुटाते। हम सुविधाओ के आगे सिद्धान्तों की बलि चढाने मे भी नहीं हिचकते। उन्होने इस हालात से उबरने की अपील की। उन्होंने कश्मीर समस्या की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का जिक्र किया। और बताया कि १९५३ मे कई वर्गों की ओर से कश्मीर को स्वतन्त्र घोषित करने की माग को तत्कालीन सरकार ने अनसुना कर दिया और सविधान मे धारा ३७ को जोडकर कश्मीर को अलग सविधान और विशेष व्यवस्था का दर्जा दे दिया।

जगमोहन ने कहा कि इसके बाद १९७२ मे कश्मीर समस्या सुलझाने का मोका आया, पर वह भी हमने खो दिया। उसके बाद शेख अब्दुल्ला को मशा और नीयत भापने के बावजूद सरकार ने उन्हें बढावा दिया। जगमोहन ने कहा कि १९८४ मे जब वे गवर्नर बनकर वहा गए तो वहां आतकवाद उभरने की कोशिश मे था। तब उन्होंने केन्द्र को चेताया था कि अफगानिस्तान के रास्ते कश्मीर

(शेष पृष्ठ १० पर)

संस्कृत सम्भाषण कक्षा का संचालन

आर्य हिन्दु संस्कृत गुरुकुल सस्थान बम्बई ८२ द्वारा दिनाक २७-५-९४ से ५ ६ ९४ तक आर्य समाज मुलुण्ड कालोनी बम्बई मे ३२ बच्चो को सरल तरीके से संस्कृत बोलने का प्रशिक्षण दिया गया। दि ५-६ ९४ को समापन समारोह मे बच्चो को नकद तथा पुस्तक रूप में पुरस्कार एव प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। समारोह में बम्बई नगर के गण्य मान्य महानुभावो ने संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार पर बल देते हुए अपने विचार रखे।

डा० प्रकाश चन्द्र वेदालकार ने संस्कृत भाषा एव साहित्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए भारत भर के सभी स्कूलो मे संस्कृत को बनिवाय पत्र के रूप में पढ़ाने की माग की।

प्रशिक्षणार्थी बच्चों ने संस्कृत मे भाषण तथा वार्तालाप द्वारा उपस्थित लोगो को मन्त्रमुग्ध कर दिया। बच्चो को प्रशिक्षण प्राध्यापिका श्रीमती कान्ति विद्यालकार ने दिया।

गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज मन्दिर सुन्दर नगर कालोनी में दि० १ से ३ ७ ९४ तक गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। सुबह शाम चलने वाले इस यज्ञ में आम लोगों ने उपस्थित होकर बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। यज्ञ श्री हरिश्चन्द्र आर्य, सार्वदेशिक द्वारा सम्पन्न कराया गया।

प्रभुभक्ति देशभक्ति साधना शिविर सम्पन्न

आचार्य आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता की अध्यक्षता में उद्‌गीथ साधना स्थली हिमाचल में २६ मई १९९४ से १९ जून १९९४ तक तीन शिविरों का आयोजन हुआ जिसमें हिमाचल हरियाणा, उत्तर-प्रदेश, दिल्ली, गुजरात, बम्बई महाराष्ट्र, चण्डीगढ़ एवं पंजाब के युवा एवं प्रौढ साधक साधिकाओं ने भाग लिया जिनकी संख्या लगभग २५०-३०० थी।

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान संन्यासी पूज्य स्वामी दीक्षानन्द डा० कुसुमलता वनस्थली विद्यापीठ, डा० दीक्षा व्याख्याता दिल्ली विश्वविद्यालय, वेद वक्ता चन्द्रप्रभा शास्त्री, श्री आर्य वीर रामफल व्यायाम शिक्षक ने साधकों की ज्ञान वृद्धि की।

—रोशनलाल आर्य संरक्षक

राजापुर नेपाल का वार्षिकोत्सव

नेपाल आर्यसमाज शाखा राजापुर का १६वां वार्षिकोत्सव २२ से २५ अप्रैल १९९४ तक मनायागया। जिसमें स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, वेदभिक्षु चन्दौसी (मुरादाबाद) बहन राजबाला पलवल (हरियाणा) तथा उदयवीरसिंह आर्य भजनोपदेशक तथा मैजिक लालटेन प्रवर्तक (मथुरा) के वेद उपनिषद, दर्शन पर आधारित प्रवचन हुए तथा सत्यार्थप्रकाश पर आधारित आर्य समाज के सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा भजन हुए तथा उपदेशों के द्वारा जन जागरण कराया गया तथा वैदिक साहित्य वितरित किया गया। गायत्री यज्ञ मे काफी संख्या में लोगों उपस्थित होकर अपनी श्रद्धा का परिचय दिया। तथा कार्यक्रम की काफी प्रशंसा की। कार्यक्रम प्रशंसनीय एवं सफल रहा।

—घनश्यामदास आर्य मन्त्री

कश्मीर की हालत बिगड़ी

(पृष्ठ ६ का शेष)

में हथियार आ रहे हैं। पर कुछ नही हुआ। बाद में स्थिति और बिगड़ी। १९८९ में १६०० हिंसक वारदातें हुईं। तब प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि यह पाकिस्तान बन गया है। पर इसके बाद भी ठोस कदम नहीं उठाए गए। बाद में जब वे दोबारा कश्मीर के राज्यपाल बनकर वहां हालात सुधारने गए तो नकारात्मक ताकते सक्रिय हो गईं। मानवाधिकारों की दुहाई के नाम पर जबरदस्त मुखालफत शुरू हो गई।

जगमोहन ने कहा कि आजादी के बाद के भारत में एक प्रवृत्ति साफ देखने में आई कि सरकारों ने व्यवहारिक कदम उठाया ही नहीं। उन्होंने वहां मौजूद नौजवानों से कहा जल्द ही तुम्हारा टेलीफोन विदेशी हाथों में होगा, तुम्हें बिजली उन्हीं कंपनियों की बदौलत मिलेगी। और सवाल दागा कि किस तरह का देश आप चाहते हैं? ऐसा देश जो लगातार टूट रहा है और जो कर्ज में डूबा है और जिसकी बाहर विदेशों में कहीं कद्र नहीं है?

भारत के महान् वैदिक विद्वान् —

कीर्तिशेष पं. युधिष्ठिर मीमांसक

डा० भवानीलाल भारतीय

सम्भवतः राजस्थान वासियों को भी यह पता नहीं होगा कि विगत २८ जून को फरीदाबाद में दिवंगत महा महोपाध्याय पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक इस वीर प्रसू धरती के ही लाल थे। ८५ वर्ष की आयु पाने वाले युधिष्ठिर जी का जन्म अजमेर जिले के विरकच्यावास ग्राम में एक साधारण ब्राह्मण कुल,में १९०९ ई०में हुआ। उनके पिता गौरीलाल आचार्य होलकर राज्य में मामूली अध्यापक थे। बालक युधिष्ठिर को बचपन में ही संस्कृत पढ़ने तथा वैदिक शास्त्रों में निपुणता प्राप्त करने की रुचि हुई। कुछ अधिक आयु हो जाने के कारण स्वामी श्रद्धानन्द ने उन्हें गुरुकुल कांगड़ी में तो प्रवेश नहीं दिया किन्तु वे अलीगढ़ जिले के सर्वदानन्द साधु आश्रम में व्याकरण के अद्वितीय विद्वान् पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु पाणिनीय अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य का अध्ययन करते रहे। कालान्तर,में उन्हें विद्या की नगरी काशी में रहकर व्याकरण के प्रकाण्ड पं० देवनारायण तिवारी तथा मीमांसा के उद्भट ज्ञाता म०म० चिन्न स्वामी तथा पं० पट्टाभिराम शास्त्री जैसे गुरुजनों के सान्निध्य में रहने और इन शास्त्रों के तलस्पर्शी अध्ययन करने का अवसर मिला।

संस्कृत और वैदिक साहित्य में असाधारण पाण्डित्य प्राप्त करने के अनन्तर युधिष्ठिर जी ग्रन्थ लेखन शोध तथा अध्यापन जैसे कार्यों से जुड़े। लाहौर, अमृतसर, वाराणसी, अजमेर और बहालगढ़ (जिला सोनीपत) में रहकर लगभग साठ-सत्तर वर्षों तक वे निरन्तर वैदिक साहित्य का पठन-पाठन और शोध कार्य करते रहे। इस बीच उनके लगभग पचास उत्कृष्ट ग्रन्थ प्रकाशित हुए और उन्हें इसके लिये अनेक बार पुरस्कृत भी किया गया। वैदिक साहित्य पर किये गये कार्य में ऋषि दयानन्द के ऋग्वेद भाष्य का सम्पादन, माध्यन्दिन संहिता के पद पाठ का तुलनात्मक अध्ययन तथा यजुर्वेद का सम्पादन प्रमुख है। उन्होंने शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त आदि वेद के प्रमुख छः अंगों पर महत्त्वपूर्ण कार्य किया। वैदिक स्वर मीमांसा, वैदिक छन्दों मीमांसा, आपिशलि, पाणिनि, चन्द्रगोमिन आदि प्राचीन आचार्यों द्वारा रचित शिक्षा सूत्रों का सम्पादन, आचार्यवर रुचि के निरुक्त समुच्चय का सम्पादन आदि उल्लेखनीय शोध कार्य इसी अवधि में किये गये'। उनके द्वारा तीन खण्डों में लिखित संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास तो अपने विषय का अद्वितीय मानक ग्रन्थ है जिसमें पाणिनि पूर्व से लेकर वर्तमान तक के सभी प्रमुख वैयाकरणों तथा उनकी कृतियों का ऐतिहासिक विवरण सकलित है। क्षीरतरंगिणी, दशपादी उणादि वृत्ति, काशकृत्स्न धातु व्याख्यान आदि उनके प्रमुख व्याकरण विषयक सम्पादित ग्रन्थ हैं।

पातञ्जल महाभाष्य की व्याख्या लिखना मीमांसक जी का महत्तम साहित्यिक कार्य था। इसी प्रकार आचार्य जैमिनि रचित पूर्व मीमांसा के शाबर भाष्य पर विस्तृत व्याख्या लिखकर उन्होंने क्लिष्ट दर्शन को भी सुगम कर दिया। मीमांसक जी के सभी प्रमुख ग्रन्थ विभिन्न संस्थाओं तथा सरकारों द्वारा पुरस्कृत हुए। उन्हें महामहोपाध्याय की उपाधि से सम्मानित करने के लिये काशी की विद्वन्मण्डली उनके दुर्बल स्वास्थ्य का ध्यान में रख कर स्वयं बहालगढ़ आई थी। विगत २९ मई (देहान्त से एक मास पूर्व) को उत्तर प्रदेश संस्कृत परिषद् ने उन्हें एक लाख रुपये के विश्वभारती पुरस्कार से सम्मानित किया। इस अवसर पर जो आयोजन हुआ वह भी बहालगढ़ (सोनीपत) में ही रक्खा गया। डा० विद्यानिवास मिश्र ने अपने सुललित संस्कृत भाषण में मीमांसक जी की संस्कृत सेवा तथा विद्या व्यासंग की भूरि-भूरि प्रशंसा की। संस्कृत के राष्ट्रीय स्तर के विद्वान् के रूप में वे भारत के राष्ट्रपति द्वारा पहले ही सम्मानित किये जा चुके थे। राजस्थान ही नहीं सम्पूर्ण भारत मीमांसक जी जैसे मनीषी विद्वान् पर गर्व करे, यह उचित ही है।

महामहोपाध्याय स्व० पं० युधिष्ठिर मीमांसक जी को श्रद्धांजलि

पद्मश्री डा. कपिलदेव द्विवेदी

(१)

विद्या-विभा-विभव-भासित-मानसान्तः
सद्धर्मधीः श्रुति-परायण-भावितोऽसौ।
मीमांसको विविध-शास्त्र-विदाकरोऽयं
यातो दिवं भुवि विराजत एव कीर्त्या॥

विद्या की ज्योति के प्रकाश से जिनका अन्तःकरण प्रकाशित था, जिनकी बुद्धि धर्म में संलग्न थी, जो वेदार्थ-चिन्तन में सदा मग्न रहते थे, शास्त्रों के ज्ञाता एवं और विविध शास्त्रों के मर्मज्ञ, श्री युधिष्ठिर मीमांसक दिवंगत होकर भी अपनी कीर्ति से संसार में विराजमान हैं।

(२)

युद्धे स्थिरः स्थिरमतिश्च युधिष्ठिरोऽसौ
ज्ञानाग्निना सतत-पूत मति-प्रदीप्तः।
वाग्देवता-सतत-पूजन-लब्ध-कीर्तिः
विद्वद्वरो गुणवरैरमरो विभातु॥

जीवन-संघर्ष में जो सदा स्थिर बुद्धि रहे, ज्ञानरूपी अग्नि से जिनकी बुद्धि पवित्र थी, जो उदारचरित थे और वाग्देवी की निरन्तर पूजा से जिन्हें सुयश प्राप्त हुआ, ऐसे विद्वद्वर श्री युधिष्ठिर मीमांसक अपने गुणों से सदा अमर रहेंगे।

(३)

वेदादि-शास्त्र-निवहान् अवगाह्य सर्वं
सर्वात्मना सततमित्र्मतिसुमरेभ्यः।
आर्यं समाजमुपकृत्य श्रुतौ प्रतिष्ठः
विश्वा सृतिं भजतु विश्वकलेवरोऽयम्॥

जिन्होंने वेद आदि शास्त्रों का अवगाहन किया था, जिनकी बुद्धि सर्वथा संयत थी, जो विद्वानों में मूर्धन्य थे, जिन्होंने आर्य समाज को उपकृत किया और जो वेदों के कार्य में संलग्न रहे, ऐसे श्री युधिष्ठिर मीमांसक विश्व और भारत के मार्ग का आश्रय लें।

(४)

ऋषेर्दयानन्दवरस्य शिष्यः
ज्ञानार्थ-स्वस्व-निज-जीवन रारिरेवः।
प्राणार्पणेन कृत-वेद-विद्या-वितानः
सोऽयं युधिष्ठिर वरो भुवि भातु शश्वत्।

जो महर्षि दयानन्द के भक्त थे, वेद विद्या के प्रचार के लिए जिन्होंने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था प्राणपण से जिन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार किया। ऐसे श्री युधिष्ठिर मीमांसक की कीर्ति संसार में सदा बनी रहे।

निदेशक-विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर (वाराणसी

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४९/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२४ ७-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (G)९३
R N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 21-22-7-1994

बबासीर का रोग मिटाओ

(१)

भारत मे है बढ़ गया, बबासीर का रोग।
नर नारी इस रोग का, भोग रहे हैं भोग ॥
भोग रहे भोग, लाल मिर्चों को छोड़ो।
मद्य, मांस को तजो, दुःख से नाता तोड़ो ॥
कब्ज करे जो खाद्य-पदार्थ उन्हें मत खाओ।
शाकाहारी बनो, दीर्घायु तुम पाओ ॥

(२)

बबासीर खूनी अगर, मत घबराओ आप।
औषधि ये सेवन करो, मत पाओ सन्ताप ॥
मत पाओ सन्ताप नारियल जटा जलाओ।
एक पाव मे एक पाव ही खाण्ड मिलाओ ॥
रोजाना दस ग्राम, आप लो फकी जल से।
बच जाओगे आप, साथियो रोग प्रबल से ॥

(३)

एक पाव गो दुग्ध मे, आधा नीबू डाल।
खूब हिलाकर पी जाइए, प्रतिदिन प्रातःकाल ॥
प्रतिदिन प्रातःकाल, तजो चिन्ता हे भाई।
तीन माह तक सुनो, चलेगी यही दवाई ॥
गरिष्ठ पदार्थ कभी भूल करके मत खाना।
बबासीर का रोग मिटेगा, मौज उड़ाना ॥

(४)

बबासीर से दोस्तो, पाते हो तुम कष्ट।
करो दवाई आप ये हो जाएगा नष्ट ॥
हो [illegible] का कुछ रस लो।
प्याज अर्क में इसे, बराबर आप मिला दो ॥
[illegible] शाम, सबेरे रोज, दवाई लो दो तोला।
हो जाओगे ठीक, मजब का समझो पोला ॥

(५)

मूली मे गुण हैं बहुत, सुनो लगा कर ध्यान।
मूली नित सेवन करो बालक, वृद्ध, जवान ॥
बालक, वृद्ध, जवान, जगत के सब नर-नारी।
बबासीर को नष्ट करेगी मूली प्यारी ॥
नमक लगाकर रोज सबेरे मूली खाओ।
बनो वीर हनुमान, जगत मे आदर पाओ ॥

(६)

बबासीर से हो दुखी अगर आप श्रीमान।
औषधि यह सेवन करो चाहो यदि कल्याण ॥
चाहो यदि कल्याण, करेला अर्क निकालो।
एक पाव मे आध पाव तुम मिश्री डालो ॥
शाम, सबेरे एक-एक तोला लो प्रतिदिन।
तीन मास प्रयोग करो, बेशक सब सज्जन ॥

—प० नन्दलाल निर्भय, वैद्य विशारद
ग्राम-पोस्ट-बहीन, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजी जा रही है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आगम स्वाध्याय, प्रवचन और व्यवहार से ही जीवन सफल

वैदिक शिक्षा प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत तृतीय एवं चतुर्थ दिवस आर्य गुरुकुल होशंगाबाद के अधिष्ठाता प० अमृतलाल शर्मा ने कहा कि—

महर्षि दयानन्द जी ने शिक्षा की परिभाषा इस प्रकार दी है—जिससे विद्या सभ्यता, जितेन्द्रियता, लोक धार्मिकता की वृद्धि तथा अविद्यादि दोष छूटे, उसे शिक्षा कहते हैं।"

आज मानव समाज मे शिक्षा शब्द से तात्पर्य मात्र कुछ पुस्तकों को पढ़ना, लिखना व बोलना ही माना जा रहा है जबकि यह मात्र शिक्षा का एक भाग है। शिक्षा की सत्ता चार वर्गो के द्वारा परिणित ज्ञान को दी जाती है।

इस शिविर में डा० सूर्यकांत बोहरी, समाजसेवी श्री तरुण कुमार नागदा मानव समिति के संयोजक श्री सूर्य प्रकाश मेहता शिक्षण समिति में सचिव श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल, प० रामचन्द्र आर्य ने भी वैदिक शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किए।

आर्य समाज किथूर की स्थापना

अलवर जिले के किथूर ग्राम मे डा० सोमनाथ जी के विशेष प्रयत्नों से एक नवीन आर्य समाज की स्थापना की गयी है ग्रामवासियों मे आर्य समाज के प्रति काफी उत्साह है अब तक ६० से अधिक व्यक्ति आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण कर चुके हैं। आर्य समाज का भवन न होने के कारण साप्ताहिक सत्संग बारी बारी से व्यक्तियो के घरो में उत्साह पूर्वक सम्पन्न हो रहा है। नवीन आर्य समाज की कार्यकारिणी का गठन निम्न प्रकार किया गया।

डा० सोमनाथ प्रधान, श्रीमती लीलादेवी उपप्रधाना, श्री धर्मवीर आर्य मन्त्री, श्री सत्यपाल आर्य उपमन्त्री, तथा श्री सोहन लाल कोषाध्यक्ष निर्वाचित किए गए। श्री सेवाराम जी आर्य को संरक्षक नियुक्त किया गया।

श्रद्धानन्द आश्रम की तीन कन्याओं का विवाह

देहरादून। श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम की तीन निराश्रित बालिकाओं का विवाह गत सप्ताह आश्रम मे वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। यह आश्रम आर्य समाज देहरादून द्वारा संचालित है और इसमें इस समय ६५ अनाथ बालक तथा बालिकाओं का पालन पोषण तथा शिक्षण होता है।

बालिका सुनीता का विवाह नजीबाबाद निवासी सतीश से, सोनिया का ऋषिकेश-निवासी राजीव से तथा प्रभा का खुड़बड़ा मोहल्ला देहरादून निवासी सुभाष के साथ धूमधाम से सम्पन्न हुआ। तीनों वर बैंड-बाजे के साथ बरात लेकर आश्रम मे आए। नगर के गण मान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर आशीर्वाद प्रदान किया और उपहार दिए। आर्य-समाज देहरादून द्वारा भोज दिया गया।

यह आश्रम १९२४ मे श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की प्रेरणा से स्थापित किया गया और आज तक सैकड़ो अनाथ बालक-बालिकाओं के जीवनों की रक्षा इसके द्वारा हो चुकी है। नगर की जनता का भरपूर सहयोग इसे प्राप्त है।

—श्रीमती सुशीला शर्मा

सार्वदेशिक प्रेस पाटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मेंबर मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सम्पादक . डा० सच्चिदानन्द शास्त्री — दूरभाष । ३३०४७७१ — वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक २५] — दयानन्दाब्द १७० — सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ — श्रावण कृ० ८ स० २०५१ ३१ जौलाई १९९४

ज्ञानी जैलसिंह अलकबीर बूचड़खाने को देखेंगे

हैदराबाद में आर्यसमाज और आन्ध्र प्रदेश हिन्दी प्रचार सभा का तीन दिवसीय कार्यक्रम

दिल्ली । भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी हैदराबाद मे आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा और आन्ध्र प्रदेश हिन्दी प्रचार सभा के तीन दिवसीय समारोह का उद्घाटन करने के लिए २९ जौलाई को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ हवाई जहाज से हैदराबाद पहुच रहे हैं ।

हैदराबाद मे आन्ध्र प्रदेश हिन्दी प्रचार सभा विगत कई वर्षों से दक्षिण भारत मे हिन्दी के प्रचार का शानदार कार्य कर रही है । आर्य समाज की ओर से अब तक देश के कई भागो मे भारतीय भाषा सम्मेलनों का शानदार आयोजन किया जा चुका है । इन सबका उद्देश्य यही है कि समस्त भारतीय भाषाओ का विकास हो और भाषा के मामले मे उत्तर और दक्षिण की दूरिया कम हो और देशवासी एक दूसरे को समझ सके और मिल-जुलकर राष्ट्रीय एकता मे अपना योगदान कर सके ।

इस अवसर पर आयोजित भारतीय भाषा सम्मेलन, भारतीय संविधान और धर्म निरपेक्षता सम्मेलन गोरक्षा सम्मेलन, आदि विभिन्न सम्मेलनों की अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे । यह विदित रहे कि पिछले दिनों दिल्ली मे विश्व अहिंसा सघ द्वारा आयोजित सम्मेलन के अवसर पर सनातन धर्म महासभा आर्यसमाज विश्व अहिंसा सघ, शिरोमणि अकाली दल जन समाज, भारत गो-

(शेष पृष्ठ ११ पर)

शंकराचार्य कपिलेश्वरानन्द को आर्यसमाज की ओर से शास्त्रार्थ की चुनौती

दिल्ली २५ जुलाई सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने शकराचार्य कपिलेश्वरानन्द के इस वक्तव्य पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है जिसमे उन्होने कहा है कि— "वेदपाठ करने से महिलाओ के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है और वेदपाठ करने से महिलाओं का गर्भाशय प्रभावित होता है ।"

स्वामी जी ने कहा कि आज देश मे हजारो शकराचार्य बन गये है, हर व्यक्ति अपने नाम के साथ शकराचार्य लगाकर अनर्गल और लज्जा जनक वक्तव्य देकर जनता को भ्रमित करने का प्रयास करना चाहता है । 'उन्होने कहा कि इन शकराचार्य ने तो एक नये विज्ञान का आविष्कार किया है इसके लिए उन्हे भारत सरकार से पुरस्कार मिलना चाहिए । ' स्वामी जी ने कहा कि हम शकराचार्य से पूछना

(शेष पृष्ठ २ पर)

वैदिक परम्परा के बिना भारत की मर्यादा असुरक्षित

—अर्जुनसिंह

वेद रक्षा सभी का दायित्व

नई दिल्ली, २२ जुलाई। वैदिक परम्परा और साहित्य ज्ञान भारत का वह आभूषण है जिसके बगैर भारत की मर्यादा सुरक्षित नहीं है इसलिए वेद विद्या का प्रचार प्रसार निरन्तर होते रहना चाहिए। यह उद्‌गार मानव संसाधन विकास मन्त्री अर्जुनसिंह ने वैदिक सम्मेलन के उद्घाटन समारोह मे व्यक्त किया।

इस तीन दिवसीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान और सकर विद्या केन्द्र ने सयुक्त रूप से किया है। इस सम्मेलन में उत्तर भारत के लगभग सौ वैदिक विद्वान भाग लेने आये हैं। आधुनिक काल में वेद का महत्व व प्रासंगिकता, वाजसनेयी शाखा की विशिष्टता, वैदिक दृष्टि में ब्राह्मण मन्त्रो के महत्व आदि विषय पर सम्मेलन में विस्तार से चर्चा की गयी।

मानव संसाधन मन्त्री ने कहा कि कांग्रेस सरकार हमेशा वेदों के प्रचार प्रसार के लिए कार्य करती रही है। इसी प्रयास के तहत इन्दिरा गांधी ने वेद विद्या प्रतिष्ठान की स्थापना की थी। इसी परम्परा को जारी रखते हुए प्रधानमन्त्री पी. वी. नरसिंह राव इस केन्द्र का विकास कर रहे हैं।

शंकराचार्य श्री भारतीतीर्थ ने कहा कि हमारी संस्कृति में वेदो का असाधारण महत्व है। इसकी रक्षा करना सबका फर्ज बनता है। जगद्‌गुरु ने कहा कि विद्वान अपने पुत्रो को वेद की शिक्षा नही देते। उन्होंने विद्वानों से आग्रह किया कि वे सबसे पहले अपने-अपने पुत्रों को वैदिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये भेजेंगे। उन्होने कहा कि अगर ऐसा नहीं किया गया तो इस परम्परा की रक्षा नहीं हो सकती।

वेद शास्त्रियो की जीविका पर चर्चा करते हुए उन्होने कहा कि पहले वेद शिक्षा की रक्षा करना राजा अपना कर्तव्य मानते थे। अब यह दायित्व सरकार निभा रही है। उन्होने कहा कि धर्म मनुष्य के जीवन का एक अविभाज्य अंग है और धर्म वही है जो वेदो मे वर्णित है। इसलिए वेदो की रक्षा करना लोगो का दायित्व है।'

सम्मेलन की शुरुआत वेदपाठ से हुई। चारो वेदो का पाठ किया गया। डा० मदन मिश्र ने स्वागत किया और सकर विद्या केन्द्र के बारे में बताया। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति ने वेद विद्या केन्द्र के बारे में विस्तार से बताया। केन्द्र के सचिव वी. आर. सुब्रह्मण्यम ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

शंकराचार्य कपिलेश्वरानन्द को आर्यसमाज की ओर से शास्त्रार्थ की चुनौती

(पृष्ठ १ का शेष)

चाहते हैं कि केवल वेदपाठ से ही स्त्रियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है या बाईबिल, कुरान, फारसी, अरबी, रामायण, गीता आदि सभी पढ़ने से उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है?

स्वामी आनन्दबोधजी ने कहा कि हम शंकराचार्य को बताना चाहते हैं कि प्राचीनकाल से ही स्त्रियों को वेदपाठ अथवा शास्त्रार्थ करने की खुली छूट थी। महाराज जनक के दरबार मे गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी और कात्यायनी जैसी महान् विदुषियां महर्षि याज्ञवल्क्य जी से खुले दरबार में शास्त्रार्थ किया करती थीं, यदि उन्हें वेदपाठ का अधिकार नहीं था तो वे शास्त्रार्थ कैसे कर सकती थीं। उन्होंने कहा कि यदि शंकराचार्य बाल्मीकि रामायण को खोलकर पढ़ें तो उन्हें पढ़ने को मिलेगा कि जब भगवान राम बन जाते समय माता कौशल्या से मिलने गये तो वे वेद मन्त्रों से यज्ञ कर रही थीं, और यदि वेदपाठ करने से स्त्रियों का गर्भाशय प्रभावित हो जाता है तो माता कौशल्या ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम जैसे तेजस्वी पुत्र को कैसे जन्म दिया?

स्वामी जी ने बताया कि आर्य समाज में पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी की प्राचार्या बहन प्रज्ञादेवी के अतिरिक्त कई ऐसी विदुषी देवियां हैं जो इन शंकराचार्य से शास्त्रार्थ करने के लिए हर समय तैयार हैं, यदि शंकराचार्य मे हिम्मत है तो वे आर्य समाज की इन विदुषी देवियों के चैलेंज को स्वीकार करें और शास्त्रार्थ के लिए आगे आयें।

उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने—"यथे माम् वाचं कल्याणीं" वेद के इस मन्त्र द्वारा स्त्री पुरुष एवं सभी मानव मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार दिया है, और आज के शंकराचार्य इसके विरुद्ध अनर्गल सिद्धान्त का प्रचार कर रहे हैं। ●

आचार्य मित्र जीवन नहीं रहे

आचार्य मित्र जीवन जिन्होंने १९८१ में अपने परिवार के साथ इस्लाम धर्म त्याग कर वैदिक धर्म में प्रवेश किया था, उनका निधन २६-७-९४ को बम्बई में उनके दामाद श्री नरेन्द्र वेदालंकार (संसार साहित्य मण्डल के मालिक) के घर हो गया है।

मित्र जीवन जी बाईबिल कुर्रान और वैदिक धर्म के उच्चकोटि के विद्वान थे, उन्होंने गदा और गांडीव नामक पुस्तक लिखी थी जिसे सार्वदेशिक सभा ने प्रकाशित किया था।

वह स्वाध्यायशील और स्वाभिमानी व्यक्ति थे। सार्वदेशिक सभा दिवंगत आत्मा को सद्‌गति की कामना करते हुए संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करती है।

आचार्या डा० प्रज्ञादेवी जी को मातृशोक

वाराणसी। अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि पाणिनि कन्या महाविद्यालय की संस्थापिका सुश्री डा० प्रज्ञादेवी जी की पूज्या माता श्रीमती हरदेवी आर्या का निधन दिनांक १४ जुलाई को सायं ६। बजे हो गया। वे ८५ वर्ष की थीं एवं विगत तीन मास से गम्भीर अस्वस्थ चल रही थीं। कष्टसहिष्णुता, कर्मठता अटूट ईश्वरभक्ति, महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के प्रति अनन्य आस्था पूज्या माता जी के विशेष गुण थे।

पूज्या माता जी की अन्तिमयात्रा दिनांक १५ को विशिष्ट जन समुदाय की उपस्थिति मे निकाली गई। पाणिनि कन्या महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियों के सतत वेद मन्त्रोच्चार के साथ काशी के हरिश्चन्द्र घाट पर वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार की क्रिया सम्पन्न हुई। १६ जुलाई को शान्तियज्ञ के पश्चात् भावभीनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की गई।

पूज्या माता जी अपने पीछे डा० प्रज्ञादेवी जी, पं० मेधादेवी जी, श्रीमती कुन्ती आर्या। श्रीमती मैत्रेयी आर्या, श्रीमती ज्योत्स्ना आर्या इन पांच सुयोग्य पुत्रियों तथा सुपुत्र डा० सुखमनाचार्य जी का भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई है।

निवेदयित्री

प्रियंवदा शास्त्रिकी स्नातिका

सम्पादकीय

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है

संसार का उपकार करना कितने उदात्त विचार है व्यक्ति अपने से ऊंचे उठकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्" का बोध लेकर समग्र विश्व को परिवार मानकर सुबोध शब्दों में अपनी व्याख्या स्वयं कह रहा है। नियम के आर्यों को समष्टि के प्रति कर्तव्य बताया है। शारीरिक आत्मिक और-सामाजिक उन्नति करके ही संसार का कल्याण होगा। शारीरिक[उन्नति की परमौषधि ब्रह्मचर्य नियम अरवीर्य रक्षा है फिर गृहस्थ धर्म में भी संयम कराता है।

'युक्ताहार-विहारस्य" ठीक भोजन सही उपचार-शारीरिक उन्नति का साधन है। वेद भक्त महर्षि ने वेद का सन्देश "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" संसार को श्रेष्ठ बनाओ। इस प्रकार सामञ्जस्य के साथ जनकर संसार के उपकार करने के आदेश को मुख्य उद्देश्य का असाधारण महत्व दिया है।

उपकार के क्षेत्र में शारीरिक उन्नति प्रथम है संसार के उपकार के महत्व को प्रान्तियता-अस्पष्ट समझ विशृंखलित न हो जावे, इस दृष्टि से इस नियम में संसार के उपकार करने से कौन-२ पक्ष कार्यक्षेत्र में आते हैं। ये पक्ष है संसार की उन्नति यहां के निवासियों पर निर्भर है।

१. शारीरिक उन्नति करना २. आध्यात्मिक उन्नति करना, तथा ३. उसके युक्त सामाजिक उन्नति करना।

यह तीन प्रकार से मानव मात्र की उन्नति का तात्पर्य उपकार से है।

इन तीन प्रकार की उन्नति करने हेतु आवश्यक-ज्ञान, योग्यता, क्षमता, इच्छा एवं समुचित साधन-उन्नति चाहने वाले व्यक्ति में होने चाहिये।

कोई व्यक्ति अन्यों की शारीरिक उन्नति का प्रयत्न करे, उसे सर्वप्रथम अपना शरीर उन्नत करें, एक निर्बल, रोगी, दुश्चरित्र व्यक्ति से क्या आशा की जाय कि वह दूसरों की उन्नति शारीरिक उन्नति कर सकेगा। शरीर ही सम्पूर्ण धर्म कार्य सम्पन्न करने का साधन है। इसी से कहा है—

"शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्" शरीर रहित आत्मा-धर्म कर्म में प्रवृत्त नहीं हो सकती। "नायमात्मा-बलहीनेनलभ्यः" शक्ति हीन शरीर से युक्त आत्मा सफलता नहीं प्राप्त कर सकती है। अपनी शारीरिक उन्नति के पश्चात् परिवार अन्य ग्राम-नगर वासियों के स्वास्थ्य का सुधार करना चाहिये। इस उन्नति के साधन व्यापक बनाते हुए सबकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिये।

उपकार का द्वितीय स्थान है आत्मिक उन्नति—

संसार की सार्थकं मुक्ति है आत्मिक उन्नति। इस एक शब्द में आत्मा की सत्ता पुनर्जन्म तथा-मुक्ति-इन तीन सिद्धान्तों का समावेश मिलता है।

आध्यात्मिक ज्ञान वृद्धि को सामर्थ्य प्रदान करना है जिससे पांच ज्ञानेन्द्रियां पांच कर्मेन्द्रियां दस घोड़ों वाले रथ की लगाम बुद्धि रूपी सारथी के हाथों में रहे। तब आत्मा रूपी सवार मोक्ष के लक्ष्य तक पहुंच सकता है। इन्द्रियों के नियन्त्रण में रहने से शारीरिक बल का दुरुपयोग न होकर सदुपयोग हो।

समाज व देश में सुस्थिरता निर्भय व्यवस्था स्थापित होकर भ्रष्टाचार दुराचार अराजकता का नाश होकर रामराज्य स्थापित हो। यही सभी कार्य शारीरिक बल की परोक्ष रूप से अपेक्षा रखते हैं। शारीरिक बल व्यक्ति एवं समाज के अभ्युदय की बुनियाद है। यह नियन्त्रण आत्मिक बल की उन्नति से ही सम्भव है। आत्मिक बल की उन्नति के लिए आस्तिकता सर्वशक्ति युक्त प्रभु में विश्वास चाहिये। आत्मिक शक्ति सम्पन्न व्यक्तित्व के कुछ नाम अंकित कर रहा हूं।

म० बुद्ध महावीर स्वामी आचार्य शंकर, महर्षि दयानन्द म० गांधी आदि इस नियम का नियम सन्देश है कि हम अपनी व मानव संसार की आध्यात्मिक शक्ति विकसित कर सकें।

३-उपकार क्षेत्र का तृतीय चरण है सामाजिक उन्नति—

मानव सामाजिक प्राणी है समाज के संगठन के द्वारा व्यक्ति की निजी शक्ति मानव की शक्ति कई गुना अधिक हो जाती है। इस सामाजिक जीवन के माध्यम से हमारी संस्कृति साहित्य सभ्यता तथा गौरवपूर्ण इतिहास पर हमें गौरव है उसमें अभिवृद्धि एवं उन्नयन कर सकते हैं। सामाजिक संगठन के द्वारा अपने दोषों त्रुटियों को दूरकर समाज को अवनति से बचा सकते हैं।

विचार यह करना है कि महर्षि दयानन्द ने इन तीनों क्षेत्रों में उन्नति के लिए व्यावहारिक रूप से प्रमुख कार्य किया है।

आत्मिक उन्नति के साथ सामाजिक क्षेत्र में जो महान सा कार्य किया है। उसकी तुलना न कर समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान पाया है। महर्षि दयानन्द के प्रादुर्भाव से पूर्व भारतीय समाज विभिन्न कुरीतियों का पर्याय बन चुका था। हम लोगों से अपनी परम्परा-मर्यादा-पूर्वक नाम से आर्य ही माने जाते थे मुगलकाल में हिन्दू शब्द से प्रचलित किए गए। हमारे वेद शास्त्रों में हिन्दू शब्द कहीं नहीं, केवल अरबी में काला चोर डाकू राहजन लुटेरा गुलाम, चोर-डाकू राहजन की उपाधियों से विभूषित किया। हम उसी नाम से चिपके हुए हैं जन्मना जाति ने प्याज के छिलकों की भांति समाज को विभाजित किया। इसका विरोध आर्यसमाज ने किया। आर्य-समाज ने सामाजिक सुधार का जो अभियान चलाया, उस पर विशाल ग्रन्थ लिखा जा सकता है और लिख भी गये हैं।

बाल विवाह पर शारदा एक्ट बनाया, विधवा उद्धार, अनमेल विवाह, हिन्दू में छुआछूत कोढ़ की भांति सता रहा था। विधर्मी भाइयों को वापस लेने हेतु शुद्धि आन्दोलन चलाया। खेद इस बात का है कि आज भी रूढ़िवादी लोग अपनी बीमारी से दूर नहीं हो पा रहे हैं।

वर्णाश्रम व्यवस्था आश्रम व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त कर सामाजिक दृष्टि से महायज्ञों वैदिक संस्कारों की परिपाटी पुनः प्रारम्भ की।

इस प्रकार संक्षिप्त विवरण एवं विवेचन से तात्पर्य यह है कि आर्यसमाज का छठा नियम सबको व्यक्तिगत और समष्टिगत शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति एवं उपकार का संदेश वाहक है।

यह निर्विवाद सत्य इस नियम को सदा ही जीवित रखना है इससे समाज में प्रेरणा ही मिलेगी। अतः इस नियम के पालन में सदा ही दत्तचित्त एवं क्रियाशील रहकर संसार का उपकार कर अपने जीवन को सफल बनावें।

जायज लेकिन नापसंदीदा 'तलाक'

—सगीर किरमानी

कुरआन और हदीस में तलाक के बारे में दिये आदेश और निर्देशों का सार यह है कि तलाक बहुत ही मजबूरी में और जब कोई चारा न रह जाए तभी दिया जाए। हजरत मोहम्मद ने इसे तमाम जायज कामों में सबसे नापसन्दीदा जायज काम कहा है। फिर बार बार कहा गया है कि बहुत मजबूरी में अगर तलाक की नौबत आ ही जाए तो पति-पत्नी दोनों इज्जत और शराफत से अलग हो जाए, एक दूसरे को अपमानित करने और सहारा छीनने की कोशिश न करें।

शादी के वक्त गहरी भावनाए होती हैं कि विवाहित जोड़ा जीवन भर साथ निभाएगा, जिन्दगी में एक दूसरे का पूरक बनेगा। इस भावना को स्वीकार करने के बावजूद इस्लाम ने शादी को एक समझौते या अनुबन्ध की शक्ल दी है। फिर यह अनुबन्ध कोई सादा अनुबन्ध नही है, बल्कि धार्मिक रूप देकर इसे पवित्र बनाया गया है। इस अनुबन्ध से मुक्त होने की प्रक्रिया को 'तलाक' का नाम दिया गया है।

इस्लाम से पहले अरबों में तलाक का बहुत ज्यादा रिवाज था। औरत की कोई कदर नहीं थी और न ही निकाह के अनुबन्ध को कोई महत्व दिया जाता था। जब चाहा तलाक दे दिया और जब चाहा बीवी को वापस बुला लिया। इस्लाम ने तलाक के इस चलन को नियमित किया और उसे एक सतुलित रूप दिया। कुरआन ने कहा, 'तलाक दो बार है। फिर या तो सामान्य नियम के अनुसार औरत को रोक लेना चाहिए या अच्छे तरीके से उसे विदा कर देना चाहिए।' (बकर २२९)

हजरत मुहम्मद से एक व्यक्ति ने पूछा कि कुरआन की इस आयत में 'दो बार' का जिक्र किया गया है, फिर 'तीसरी बार' क्या है? पैगम्बर ने कहा कि एहसास (सद्भाव) के साथ विदा करना यही तीसरा है।

कुरआन और हदीस की इस बारे में मूल भावना यही है कि तलाक उत्तेजना में न दिया जाए यानी 'तलाक तलाक तलाक' कहकर एक झटके में मामला खत्म न कर दिया जाए बल्कि सही तरीका यह है कि तलाक की प्रक्रिया तीन महीने की मुद्दत में पूरी की जाए। ये तीन तलाकें भी उन मासिक अन्तरालों में दी जाती हैं, जब औरत मासिक धर्म से नहीं होती है। तलाक देने वाले को चाहिए कि वह दो अलग अलग 'तुहर' (मासिक धर्म के अलावा स्वच्छता का अंतराल) में दो बार तलाक दे और फिर तीसरे 'तुहर' में या तो तलाक वापस ले ले और नहीं तो तीसरी बार तलाक देकर बीवी को इज्जत के साथ विदा कर दे।

मासिक धर्म की हालत में तलाक नहीं होती। हजरत इब्ने उमर ने मासिक धर्म की हालत में अपनी बीवी को तलाक दिया तो हजरत मुहम्मद बहुत नाराज हुए और कहा कि यह तलाक नहीं है, बीवी को वापस बुलाओ। तीन 'तुहर' में तलाक देने का तरीका इसलिए बनाया गया कि अगर पति आवेश में आकर तलाक दे रहा है तो महीने दो महीने या तीन महीने में वह आवेश अपने आप खत्म हो जाएगा। उसे मौका मिल जाएगा कि उत्तेजित होकर किये गये फैसले पर फिर गौर कर सके। तीन महीने का यानी 'इद्दत' का वक्त देने का एक उद्देश्य यह भी है कि अगर औरत गर्भवती है तो इस अरसे में उसका गर्भ जाहिर हो जाएगा। इसका एक स्वाभाविक परिणाम यह भी हो सकता है कि पति के दिल में पत्नी के लिए फिर प्रेम उमड़ आए और वह उसे दोबारा अपना ले।

तलाक की व्यवस्था बताने के साथ साथ कुरान में कहा है कि जिस तरह मर्दों के अधिकार औरतों पर हैं उसी तरह औरतों के भी अधिकार मर्दों पर हैं (बकर. २२८)। यह इस लिए कहा गया है कि औरतों के मामले में मर्द निरकुंश न हो जाए और तलाक को हंसी खेल न बना ले।

अरब में ऐसा अक्सर होता था कि लोग बीवियों को बार बार तलाक देते थे और फिर दोबारा बीवी बना लेते थे। तिरमिजी (हदीस) में एक ऐसे आदमी का जिक्र है जिसने अपनी बीवी को हजार बार तलाक दिया। इस खेल तमाशे को रोकने और विवाह की पवित्रता बरकरार रखने के लिए कहा गया कि तलाक सिर्फ दो बार है तीसरी बार तो बीवी को विदा ही करना पड़ेगा।

तलाक के इस तरीके के बारे में सभी इस्लामी विद्वानों और सम्प्रदायों में आम सहमति है। लेकिन एक ऐसा तरीका भी चल निकला जिसमें एक ही बार में तीन बार तलाक कहकर विवाह तोड़ दिया जाता है। तीन अलग-अलग 'तुहरों' में तलाक देने के तरीके को 'तलाके-रजई' कहा गया और एक ही बार में तीन तलाकें देने के तरीके को तलाके-बाइन। दूसरी तरह के तलाक मे पति न तो 'इद्दत' के वक्त में तलाक वापस ले सकता है जैसी कि सूरः बकर की २२८ वीं आयत की व्यवस्था है और न 'इद्दत' के बाद पत्नी को दोबारा अपने निकाह में ले सकता है जैसी कि इसी सूर. की २४२ वी आयत की मंशा है। कुछ 'फुकह' (इस्लामी तरीकों के व्याख्याकारों) ने तलाक के इस दूसरे तरीके को मान्यता तो दी, पर इस किस्म के तलाक को 'बाइन' और 'बिदत' कहकर जाहिर भी किया कि यह कोई अच्छा तरीका नहीं है, जबकि कुछ व्याख्याकारों ने इसे एक दम हराम ठहराया। यही विवाद का वह बिन्दु है, जिसे लेकर आजकल भारत में एक बहस छिड़ी हुई है।

अबू दाऊद, तिरमिजी और इब्ने माजा की हदीस है कि एक साहब (रुकाना) हजरत मुहम्मद के पास आए और कहा कि मैंने अपनी बीवी को तलाक दे दिया है। पैगम्बर ने पूछा कि तेरा इरादा क्या था? उन्होंने जवाब दिया कि मेरा इरादा एक ही तलाक देने का था। इस पर हजरत मुहम्मद ने तलाक वापस लेने की इजाजत दे दी। हदीस में है कि हजरत मुहम्मद को बताया गया कि किसी व्यक्ति ने अपनी बीवी को तीन बार इकट्ठा तलाक दे दिया है। इस पर पैगम्बर बहुत नाराज हुए और उठकर खड़े हो गए। उन्होंने नाराजगी से कहा कि अल्लाह की किताब के साथ मजाक की जाती है, जबकि अभी मैं तुम लोगों के बीच मौजूद हूं (निसाई)। इससे जाहिर होता है कि एक ही बार में इकट्ठी तलाक देना हजरत मुहम्मद को पसन्द नहीं था।

एक ही बार में तीन तलाकों के पक्ष में जो सबूत दिए जाते हैं उनमें इस्लामी राज्य के दूसरे खलीफा हजरत उमर से सम्बन्धित एक घटना अक्सर बयान की जाती है। इब्ने-अब्बास कहते हैं कि पैगम्बर और पहले खलीफा हजरत अबूबक्र के जमाने में और हजरत उमर की खिलाफत के पहले दो साल में तीन तलाकों को एक ही तलाक समझा जाता था। लोगों ने इसका गलत इस्तेमाल शुरू कर दिया और अपनी बीवियों को एक तलाक देकर अधर में छोड़ देने लगे। इस समस्या से निकलने के लिए हजरत उमर ने कहा कि निर्णायक तलाक दो और मामला खत्म करो। बाद मे हजरत उमर का बताया यह तरीका इतना प्रचलित हुआ कि मुसलमानों का एक बहुत बड़ा वर्ग इसी पर अमल करने लगा।

व्याख्याकारों का एक वर्ग मानता है कि तलाक वास्तव मे एक ही है चाहे दो बार कहे या तीन बार, भले ही हर महीने या हर दिन कहें। इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता। हां जब पहली बार तलाक का शब्द मुंह से निकला तब से इद्दत शुरू हो जाती है बशर्ते कि मासिक धर्म की हालत में तलाक न दिया गया हो।

तलाक के वक्त औरत को महर की रकम अदा करना जरूरी है, जो निकाह के अनुबन्ध के समय तय की जाती है। बेहतर तो यही है कि यह रकम फौरन अदा कर दी जाए किसी वजह से इसकी अदायगी न की गई तो बाद में या तलाक के वक्त इसे जरूर अदा किया जाए। अगर महर तय नहीं हुआ हो तो भी हुक्म यह है कि तलाक के वक्त औरत को कुछ न कुछ रकम दी जाए। इस रकम को 'महर' नहीं 'मताअ' कहते हैं।

तलाक के बाद औरत के 'गुजारे' की जिम्मेदारी उसके मां-बाप या उसके वालों पर आ जाती है, कुछ परिस्थितियों को छोड़कर पूर्वपति पर इसकी जिम्मेदारी नहीं है। इसका एक कारण शायद यह है कि इस्लाम में विरासत का जो कानून है उसमें औरत को खानदानी जायदाद में हिस्सेदार बनाया गया है। दूसरी व्यवस्था यह है कि तलाकशुदा औरत के भरणपोषण की जिम्मेदारी राज्य पर डाली गई है। इस किस्म की जिम्मेदारी प्रायः इस्लामी कानून व्यवस्था वाले राज्य (दारुल इस्लाम) ही निभाते हैं। जिन राज्यों में—

(शेष पृष्ठ १० पर)

"गायत्री चारों वेदों का सांझा मन्त्र"

—धर्मसिंह शास्त्री, डबल एम० ए०

गायत्री मन्त्र के जप तथा उसकी साधना के अधिकारी सब मनुष्यमात्र हैं। वेद तथा शास्त्रों में पांच देवताओं की पूजा लिखी गई है—माता, पिता, आचार्य, अतिथि एवं अमूर्तिमान देवता परमपिता परमात्मा। सर्वप्रथम पूजनीय देवता माता को ही बताया गया है। गायत्री की जो महिमा तथा उसका महत्व शास्त्रों में ऋषियों, मुनियों अनेकानेक विद्वानों और महानुभावों ने बतलाया है उसे सुन-पढ़कर यह प्रश्न सामने आता कि गायत्री में यह कौन सी अनोखी बात है कि जिससे इस मन्त्र को गुरुमन्त्र की उपमा दी गई। पहली बात यह है कि जिससे गायत्री वेदमाता है और वेद की जननी के लिए सारे आस्तिकों का आदर किया जाता है। गायत्री में ईश्वर से केवल एक प्रार्थना की गई है कि हे ईश्वर, आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो, आप हमारी बुद्धियों में प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें क्योंकि संसार में बुद्धि ही एक सर्व प्रधान शक्ति है। बुद्धि के बल पर ही हर कार्य सफल काम और कर्म होते रहते हैं। गायत्री मन्त्र का जिस प्रकार संगठन हुआ है कि गुरुवाणी द्वारा उसके उच्चारण से मानव का हृदय ही नहीं अपितु सारे शरीर के मज्जकों की तन्त्रिकाएं झंकृत हो जाती हैं और शरीर के बुद्धिस्थल, हृदयस्थल तथा ब्रह्मरन्ध्र पर एक वैज्ञानिक प्रभाव डालती हैं अर्थात गायत्री मन्त्र के जप से हृदय रूपी कमल विकसित हो जाता है। हर मनुष्य यही चाहता है कि उसकी आयु लम्बी हो, वह स्वस्थ जीवन व्यतीत करे, उसकी सन्तान अच्छी, सुखदायक व सुशिक्षित हो धन-ऐश्वर्य से सुसम्पन्न हो उसका यश और कीर्ति चारों ओर बढ़े। वेद कहता है कि यह सभी गायत्री मन्त्र की साधना से ही प्राप्त होता है और यही तो हमारी और संसार की सम्पूर्ण सम्पत्ति है।

कुछ विद्वानों तथा महान व्यक्तियों ने गायत्री मन्त्र के विषय में अपने अपने विचार प्रकट किए—कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा कि भारत को जगाने वाला सरल मन्त्र गायत्री मन्त्र है। डा० सर राधाकृष्णन का कथन है कि गायत्री मनुष्य मात्र में पुन: नए जीवन का स्रोत पैदा करने वाली प्रार्थना है जो अत्यन्त ही लाभकारी सिद्ध होती है। लोकमान्य तिलक ने कहा कि कुमार्ग को छोड़कर श्रेष्ठ सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा गायत्री मन्त्र में विद्यमान है। पूज्य बापू जी ने कहा था कि गायत्री मन्त्र का स्थिर चित्त और शान्त हृदय से किया हुआ जप आपत्ति काल के संकटों से दूर करने में सहायक सिद्ध होता है। स्वामी रामतीर्थ जी का कहना था कि जिसकी बुद्धि पवित्र होगी वह बुद्धि को काम रुचि से राम को प्राप्त करने का काम भी कर सकेगा। प० महामना मदनमोहन मालवीय जी का यह कथन है कि गायत्री के जप से ईश्वर परायणता के भाव उत्पन्न करने की शक्ति है।

स्वामी विवेकानन्द जी का कथन है कि गायत्री सद्बुद्धि का मन्त्र है। सद्बुद्धि से सन्मार्ग मिलते हैं और सत्कर्म होते हैं जब मनुष्य धर्म के रास्ते पर चलता है, तभी सुखों की वर्षा होती है। जगत गुरु शंकराचार्य जी का कथन है कि गायत्री की महिमा का वर्णन करना मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है फिर भी बुद्धि का शुद्ध होना ही सबसे बड़ी साधना है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने गायत्री जप के सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश में उल्लेख किया है कि जंगल में या एकान्त शुद्ध स्थान में जल के समीप स्थिर होकर नित्य कर्म करता हुआ गायत्री मन्त्र का उच्चारण, अर्थ ज्ञान और उसके अनुसार अपने चरित्र को बनावें। ऋषि याज्ञवल्क्य जी यह आदेश देते हैं कि गायत्री वेदों की जननी है और सर्व बुराइयों को दूर करने वाली है। अथर्ववेद कांड-१९ सूक्त ७१वें के प्रथम मन्त्र का अर्थ है कि "द्विजों को पवित्र करने वाली वर देने वाली, वेद रूपी माता गायत्री की हम स्तुति करते हैं। उसका विस्तार करो प्रचार करो। आयु प्राण, प्रजा, पशु कीर्ति, धन और ब्रह्मतेज हमको देकर ब्रह्मलोक को पहुंचाओ।" बृहदारण्यक उपनिषद-५-१४-१ का यह आदेश है जिसमें गायत्री का कितना ऊंचा पद स्थान बतलाया गया है —

भूमि अन्तरिक्ष द्यौ इत्यष्टौ अक्षराणि अष्टाक्षर

ह्वा एक गायत्र्ये पदमेतदु हैवास्या एतत् स यावदेषु

त्रिषु लोकेषु तावद् जयति योऽस्याएतदेवं पद वेद।

अर्थात भूमि, अन्तरिक्ष, द्यौ ये तीनों गायत्री के प्रथम पाद के आठ अक्षरों के बराबर हैं। अत जो गायत्री के पहले पाद को जान लेता है, वह त्रिलोकविजयी होता है।

गायत्र्येव तपो योग साधन ध्यानमुच्यते।

सिद्धीनाम्मता माता नातः किंचिद् बृहत्तरम्॥

गायत्री तप है योग है साधन है, सिद्धियों और वेदों की माता है। इससे बढ़कर अन्य कुछ नहीं है।

जिस प्रकार गायत्री मन्त्र में स्तुति-प्रार्थना और भक्ति के तीनों अंग विद्यमान हैं और गायत्री चारों वेदों का सांझा मन्त्र है अतः भक्ति के साथ दृढ़ विश्वासी बनकर इसकी साधना करनी चाहिए। गायत्री अनुष्ठान का प्रयोजन एक सौ एक हजार एक पांच हजार एक दस हजार एक या जितना हो सके गायत्री जप का व्रत किया जावे और उसे सामर्थ्यानुसार निश्चित समय में पूर्ण करने का संकल्प किया जावे।

महामन्त्र जितने जग माहीं कोऊ गायत्री सम नाहीं।

सुमिरन हिय में ज्ञान प्रकाशै आलस पाप अविद्या नाशै॥

रामसरनदास पुनः महामन्त्री निर्वाचित

श्री रामसरन दास आर्य-महामन्त्री

श्री प्रकाश चन्द गुप्त-प्रधान

—दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के हो वार्षिक चुनाव में ११ ६ ६७ को निम्न पदाधिकारी चुने गये। संरक्षक सर्वश्री लाला हंस नारायण सखी राम कटारिया, कृष्णलाल सूरी न्यायमूर्ति श्री रावेन्द्र लाल मित्तल प० मदन मोहन शास्त्री, श्री वजबहादुर ग्रोवर, कृष्ण कुमार वर्मा प्रधान श्री प्रकाश चन्द गुप्त, उपप्रधान-पं० राम किशन, श्रीमती सुशीला त्यागी, श्री सुन्दर लाल, श्री राजकुमार सिंघल महामन्त्री श्री राम सरन दास, मन्त्री श्री सुखलाल सिंह, श्री राजकिशोर, श्री हरबंसलाल सेठी कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र नाथ सहगल लेखा निरीक्षक श्री चन्द्र लाल विद्यार्थी।

धारयते इति धर्मः

भगवान देव "चैतन्य" एम. ए.,

आज हमारे समक्ष धर्म का जो तथाकथित रूप नजर आता है, यदि उसे ही हम धर्म मान लें तो मैं समझता हूं कि इससे बड़ा अधर्म कोई और नहीं हो सकता है। आज समूचे राष्ट्र और विश्व में धर्म के नाम पर जो खून की नदियां बह रही हैं, उसका कारण धर्म की यह विकृति है। आज गलती से लोग मत या मजहब को ही धर्म का नाम देने लगे हैं। यही कारण है कि लोग धर्म के वास्तविक स्वरूप को भुलाकर अपने अपने दायरों में घिरना आरम्भ हो गए हैं। तथाकथित धार्मिक गुरुओं और मसीहों का काम भी अपनी अपनी टोली का विस्तार करना ही रह गया है। समूची मानवता के सुख और चैन की किसी को भी चिन्ता नहीं है। यदि धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझकर उसका कार्यान्वयन करें तो आज धर्म के नाम पर जो अधर्म हो रहा है उससे मुक्ति मिल सकती है। हमने आज अपने अपने स्वार्थों के लिए धर्म की हत्या कर दी है। उसे बांट दिया है। अब वह मारा गया धर्म अर्थात बिगड़े हुए धर्म का स्वरूप ही हमें मार रहा है। मनु महाराज की यह उक्ति कदम कदम पर चरितार्थ हो रही है—"धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः' अर्थात मारा हुआ धर्म मार देता है और रक्षा किया हुआ धर्म रक्षा करता है। हमने अपने अपने दायरों, मत एवं मजहबों में बंटकर वास्तविक धर्म की मानो हत्या कर दी है और यही कारण है कि आज यह मारा हुआ धर्म साम्प्रदायिक दंगों के रूप में हमें मार रहा है।

आज का मानव पाप कर्म करके भी उससे सहजता से छूटने के नए नए उपाय खोज रहा है। इस सस्ती खोज ने ही धर्म को विकृत करना आरम्भ कर दिया है। घर-घर में नए से नए गुरु हो गए हैं, जो अपनी सस्ती दुकानों में पापों से मुक्त होने के आश्वासन दे रहे हैं। कोई अपने गुरु को पकड़ कर बैठ गया है, तो कोई अपने ग्रन्थ आदि को लेकर उससे ही चिपट गया है। इस प्रकार अपने अपने लिए मानो सबने अन्तिम सत्य की खोज कर ली है। इस जड़ता ने मनुष्य से उसकी चिन्तन शक्ति ही छीन ली है। अन्यथा जो जानकर पाप कर्म करके किसी गुरु की शरण में जाकर, किसी पैगम्बर और मसीहा की शरण में जाकर, किसी नदी विशेष व स्थान विशेष में जाकर, या किसी ग्रन्थ विशेष की शरण में जाकर अपने पापों से मुक्ति की आस्था पाल-कर और अधिक नरक का सामान इकट्ठा न करता। यदि इस ढंग से पापों से मुक्ति मिलना सम्भव है तो दुनिया से न तो पापी ही समाप्त होंगे और न ही पाप। बल्कि दुगने-चौगुने उत्साह से लोग अधर्म करने में लग जायेंगे क्योंकि उसके फल से बचने का सस्ता नुस्खा जो उनके हाथ लग गया है।

इसके विपरीत धर्म के यदि वास्तविक स्वरूप को हमने देखना हो तो सबसे पहले इस शब्द पर विचार करना होगा। धर्म संस्कृत भाषा का शब्द है जो कि धारण अर्थ वाली 'धृ' धातु से बनता है अतः—"धारयते इति धर्मः।' अर्थात जो धारण करने योग्य या जिसे धारण किया जाए वह धर्म है। दूसरे शब्दों में कहें तो धर्म आचरण में ढालने की वस्तु है। किसी पोथी या गुरु के पास जाकर इसका मर्म तो मिल सकता है मगर इसका कार्यान्वयन मनुष्य को स्वयं करना होगा अन्यथा वह कभी भी धार्मिक नहीं बन सकता है। धर्म व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत थाती है, जो जितना आचरण में लाएगा वह उतना ही लाभ भी उठायेगा। धर्म एक जीवन पद्धति है। लेकिन अब सोचने की बात यह है कि हम क्या धारण करें? क्या बाहरी कुछ विशेष चिन्हों आदि को धारण करके धार्मिक बना जा सकता है? नहीं नहीं, क्योंकि कहा गया है—

'न लिंग धर्म कारणम्" अर्थात मात्र बाहरी चिन्ह धारण करने से कोई धार्मिक नहीं बन जाता है बल्कि कहा तो यह गया है—"आचारः परमो धर्मः।" अर्थात सदाचार ही परम धर्म है। यदि व्यक्ति सदाचारी नहीं है तो उसे कभी भी धार्मिक नहीं माना जा सकता है। इसलिए हमारे वेदादि सत्य शास्त्रों में आचरण पर अत्यधिक बल दिया गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कहा है—"पक्षपात रहित न्यायाचरण, सत्य भाषणादि युक्त जो ईश्वर आज्ञा वेदों से अविरुद्ध है, उसको धर्म मानता हूं। इसी बात को दूसरे ढंग से और अधिक स्पष्ट करते हुए उन्होंने आगे लिखा है—'जो पक्षपात रहित न्याय सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्याग रूप आचार है उसी का नाम धर्म और उससे विपरीत का नाम अधर्म है।' धर्म की इस परिभाषा का जो गहराई से चिन्तन, मनन और आचरण करेगा। वही धर्म के असली स्वरूप को जानकर अपने लिये सुख रूपी स्वर्ग का निर्माण कर सकता है अन्यथा धर्म की मात्र दुहाई देने से कोई लाभ नहीं है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का केवल एक सुनीत कार्यक्रम था—व्यक्ति का सुनिर्माण करना। इसी का विकास उन्होंने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अर्थात सारे विश्व को आर्य बनाने के रूप में देखा था। आर्यकरण से उनका भाव यही था कि एक ऐसे विश्व का निर्माण जो मत, मजहब और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मानव मात्र की भलाई का स्वप्न लेकर 'जीओ और जीने दो" के नारे को सार्थक कर सके। धर्म के वास्तविक स्वरूप को आचरण में ढाल देने से ही आज धर्म के नाम पर जो खून खराबा हो रहा है, वह रुक सकता है। अन्यथा मत मजहब और सम्प्रदाय के पोषण से मानव मानव के बीच खाईयां और भी अधिक गहरी होती चली जाएंगी।

जैमिनी मुनि ने अपने मीमांसा दर्शन में एक सूत्र दिया है—"चोदना लक्षणोऽर्थो धर्मः" अर्थात लोक परलोक के सुखों की सिद्धि हेतु गुणों और कर्मों में प्रवृत्ति की प्रेरणा धर्म का लक्षण है। इससे और वैशेषिक दर्शन के यतोऽभ्यु-दय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः" अर्थात इस लोक और परलोक की जिससे सिद्धि हो सके वह धर्म है, सूत्रों से आज के मानव को धर्म और उसके रहस्यों को समझने में आसानी हो सकती है। यही नहीं इन सूत्रों में निहित प्रेरणा को कार्यरूप देने से हम भौतिक और आध्यात्म का समन्वय करके अपने मानव जीवन को सार्थक कर सकते हैं। कुछ लोगों ने इस जन्म को सुखमय बनाने तक ही धर्म को अपना लक्ष्य बना लिया है और कुछ ने केवल परलोक को बनाने के लिए ही इस जीवन को नरक मय बना लिया है।

दर्शन शास्त्र के उपरोक्त सूत्रों से हमें मालूम होता है कि धर्म मात्र आडम्बर और अन्ध विश्वासों का नाम नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवन पद्धति का नाम है जिससे हम इस जन्म को सुख से बिता सकें और परलोक के लिए भी सुकर्मों का संचय कर सकें। इसीलिए धर्म की वास्तविकता को महा-भारतकार ने इस ढंग से आंका है कि जैसा आचरण हम दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं, वैसा ही व्यवहार हम दूसरों से करें, यही धर्म का सबसे उत्कृष्ट और व्यवहारिक रूप है। जब प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार से सोचने समझने और करने लगेगा तो सभी प्रकार के पापाचार समाप्त होकर इस धरा पर स्वर्ग का निर्माण हो सकेगा। फिर धर्म के नाम पर खून की नदियां नहीं बहेंगी और न ही कोई किसी का घर उजाड़ेगा। फिर तो हर कोई हर किसी की भलाई ही चाहेगा। तुलसीदास जी का दोहा भी इसी बात को चरितार्थ करता हुआ दिखाई देगा—

परहित सरस धर्म नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहीं अधमाई॥

मगर इस प्रकार का मन और मस्तिष्क बनाने के लिए हमें किसी मत या मजहब की सस्ती दुकान पर जाने की आवश्यकता नहीं और न ही किसी तथाकथित गुरु के पास जाकर स्वयं को विकास की इस स्थिति तक पहुंचाया जा सकेगा। इन स्थानों पर तो मनुष्य की बुद्धि विकसित होने के स्थान पर और भी अधिक कुण्ठित होने लग जाती है क्योंकि ऐसे लोगों को अपने मत-मजहब या गुरु आदि से आगे और कोई दुनिया दिखाई ही नहीं देती है। उनके स्वतन्त्र एवं विकास शील चिन्तन को कुण्ठित होने का रोग लग जाता है।

यदि व्यक्ति वास्तव में ही अपना निर्माण करना चाहता है तो उसे वर्ड

(शेष पृष्ठ ९ पर)

॥ ओ३म् ॥

सत्यार्थ-प्रकाश पत्राचार प्रतियोगिता

वर्ष-१९९४

"घर बैठे प्रश्न पत्र व पुस्तक प्राप्त करें और छः मास के भीतर प्रश्नों के उत्तर भेजकर पुरस्कार प्राप्त करें।"

एक अखिल भारतीय प्रतियोगिता
अधिकतम सौ पृष्ठों में

विषय :

महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश

योग्यताएं—निम्नलिखित वर्गों में प्रतियोगिता हेतु प्रविष्टियां केवल हिन्दी अथवा अंग्रेजी में स्वीकार की जायेंगी।

(क) कक्षा १ से १२ तक　　(ख) स्नातक स्नातकोत्तर विद्यार्थी

(ग) शोध छात्र-छात्रा　　(घ) सामान्य वर्ग

वर्ग, क, ख, ग, के समस्त प्रतियोगी, प्रतियोगिता हेतु अपनी उत्तर पुस्तिकाएं अपनी संस्था के प्रमुख विभागाध्यक्षों के अग्रसारण पत्र के साथ भेजें।
सामान्य वर्ग की प्रविष्टियां सीधे तौर पर भेजी जानी चाहिए।

पुरस्कार—

प्रत्येक वर्ग यानि क, ख, ग, घ से निम्नांकित पुरस्कार होंगे—

प्रथम पुरस्कार ३००० रुपए

द्वितीय पुरस्कार २०००) तृतीय पुरस्कार १०००)

सान्त्वना पुरस्कार प्रत्येक वर्ग समूह के लिए—

समस्त विजेताओं को एक प्रशस्ति/प्रमाण पत्र प्रदान किया जावेगा।

प्रवेश—प्रश्न पत्र, अनुक्रमांक तथा अन्य विवरण के लिए मात्र ३०) रुपये (तीस रु०) का मनीआर्डर दिनांक ३१-८-९४ तक द्वारा रजिस्ट्रार परीक्षा विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ को भेजें। उत्तर पुस्तिकाएं भेजने की अन्तिम तिथि ३०-११-९४ है। सत्यार्थ प्रकाश की पुस्तक यदि पुस्तकालयों पुस्तक विक्रेताओं अथवा स्थानीय आर्यसमाज कार्यालयों से उपलब्ध न हो तो ३०) हिन्दी संस्करण के लिए तथा ७०) अंग्रेजी संस्करण के लिए भेजकर डाक द्वारा मंगवा सकते हैं।

डा. ए. बी. आर्य
रजिस्ट्रार

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

धारयते इति धर्मः

(पृष्ठ ७ का शेष)

की सही सही परिभाषा को जानना होगा और उस पर मन वचन और कर्म से आचरण करना होगा। आज अधिकतर लोग एक बिमारी के शिकार हो गए हैं और वह बीमारी है "धार्मिक दिखने की" बीमारी। इस दिखावे के जीवन को जब तक छोड़ा नहीं जाएगा, तब तक मानव न तो धर्म को पहचान पाएगा और न ही अपना निर्माण कर सकेगा। केवल दिखावे भर के लिए धार्मिक बनने वाले हम लोगो ने धर्म को ही बदनाम कर दिया है। ऐसे ही मरे हुए और आडम्बरों से परिपूर्ण धर्म को अफीम आदि की संज्ञा दी गई है। नई पीढ़ी इस दोगली नीति को देखकर ही भ्रमित और धर्म विमुख हो रही है। आज जो नास्तिकवाद फैल रहा है उसके मूल कारण में धर्म का यह विकृत रूप ही तो है। किसी शायर के शब्दों में यदि कहें तो—

खुदा के बन्दों को देखकर ही, खुदा से मुनिकर हुई है दुनिया।
कि जिस खुदा के ऐसे बन्दे हैं, वह कोई अच्छा खुदा नहीं॥

इसीलिए धर्म को व्यवहार और आचार में बदलने की आवश्यकता है। धार्मिक दिखने भर से काम नहीं चलेगा बल्कि धार्मिक बनना होगा। धार्मिक बनने के लिए यम, नियम, दान, पुण्य, यज्ञ ज्ञान, उपासना आदि अनेक उपाय हैं। अपने जीवन और व्यवहार में इनका विकास करके ही हम धर्म के वास्तविक स्वरूप तक पहुंच सकते हैं। धर्म—हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई या ऊंच नीच आदि से ऊपर है। इसीलिए ईश्वरकृत सर्वोत्तम धार्मिक ग्रन्थ वेद के अन्दर इस प्रकार के मत या जाति आदि से सम्बन्धित नाम नहीं है। वहां तो केवल मात्र मानवता की ही बात की गई है। इसीलिए वैदिक धर्म ही 'सार्वभौमिक धर्म' है। मनु महाराज ने अपने ग्रन्थ में धर्म के जो लक्षण बताए हैं उसमें हमें इसी सार्वभौमिक धर्म के सूत्र दिखाई देते हैं। इन्हीं लक्षणों की कसौटी पर परखकर हम अपने आप को परख सकते हैं कि हम कहां तक धार्मिक हैं। इस कसौटी पर यदि कोई नहीं उतरता है तो वह किसी भी दृष्टि से धार्मिक कहलाने का हकदार नहीं है। ये दस लक्षण इस प्रकार हैं

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥

अर्थात धैर्यशीलता, क्षमाशीलता, दृढ़ता, किसी की चोरी न करना, भीतर बाहर की पवित्रता, इन्द्रियों का संयम, बुद्धिमत्ता, ज्ञानशीलता, सत्यता और अक्रोधी होना ये दस धर्म के अंग हैं। इन पर आचरण करने से निश्चित रूप से व्यक्ति का यह लोक और परलोक सुधर सकता है। ऐसा व्यक्ति ही अपने और अपने परिवार, राष्ट्र तथा विश्व का भला सोच और कर सकता है। यही वे सूत्र हैं जो आज भी सिसकती हुई मानवता के आंसु पोंछ सकते हैं तथा मत-मजहब और सम्प्रदाय के खूनी पंजों से हमें मुक्त कर सकते हैं।

१९०/एल-३ सुन्दरनगर-१७४४०२ (हि प्र)

मुस्लिम युवक का वैदिक धर्म में प्रवेश

(शुद्धि-संस्कार)

उत्तर भारत से आये श्री महमूद नामक युवक ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। शुद्धि संस्कार प० श्री नरेन्द्र-कुमार जी शास्त्री ने आर्यसमाज भगूर मे सम्पन्न कराया। २८ जून १९९४ को। इस अवसर पर नासिक, देवलाली कैम्प, ओझर और स्थानीय भगूर आर्यसमाज ने उत्साह के साथ भाग लिया। एव इस कार्यक्रम मे सनातन वैदिक संस्कार समिति के प्रमुख श्री बांकेलाल जी चतुर्वेदी श्री बाबा फड़के, हिन्दू एकजुट के प्रमुख नासिक जिला, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के प्रमुख कार्य-कर्ता और हिन्दु धर्म प्रेमी परि-वार के सम्माननीय और गण-मान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस शुद्धि संस्कार का कार्य आर्य समाज के श्री भगवन्तसिंह श्री सुरेश जी कापसे और श्री काळे प्रधान आय समाज भगूर इनके अथक परिश्रम के साथ सनातन वैदिक संस्कार समिति नासिक के एकत्रित कार्य करने से सम्पन्न हुआ। नवयुवक ने आचार्य श्री नरेन्द्र कुमार जी शास्त्री का दिया नाम 'रामशरण आर्य' आनन्दपूर्वक और प्रसन्न हृदय से स्वीकार किया। और स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शाये मार्ग पर चलने की शपथ ग्रहण की।

पुस्तक समीक्षा

वेदाञ्जलि (वैदिक विनय)

रचनाकार—स्व० आचार्य अभयदेव जी विद्यालंकार

प्रकाशक—मधुर प्रकाशन, आर्य समाज सीताराम बाजार, दिल्ली-६

पृष्ठ—३८४ मूल्य सजिल्द—८०) रुपए

वैदिक ज्ञान की गंगा में प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त मे प्रभु से विनय पूर्वक प्रार्थना करने हेतु ३६५ मन्त्रों पर विवेचन इस वैदिक विनय (वेदाञ्जलि) ग्रन्थ में विद्वान आचार्य ने किया है। शब्दार्थ और फिर विवेचनात्मक विनय के साथ मन्त्र पर मुख्य रूप से विषय का प्रतिपादन किया है।

भक्त अपनी विनय बड़ चिन्तन मनन एव श्रद्धा के साथ करता है। इस भावना के साथ—

'त्वमेव माता च पिता त्वमेव'। भगवन हम भक्त सदा आपके समीप रहें और आपके तत्व को धारण करें, आपने हमें सब कुछ प्रदान किया है, बुद्धि भी दी है, हम भक्त मांगते कुछ नही हां केवल यह इच्छा है कि आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर चलाते रहें। यह याचना प्रभू के अतिरिक्त किसी से नही की जा सकती है।

प्रार्थना से मन को शान्ति व आत्मा को तृप्ति होती है। विनय पूर्वक की गई सात्विक प्रार्थना फलवती होती है। प्रार्थना करने वाला कमजोर होता है जिससे प्रार्थना की जाती है वह सामर्थ्यवान होता है।

भगवान भक्त की भावना को समझ कर ही अपना आशीर्वाद देता है किन्तु भक्त भटकता फिरता है।

काशी मे कोई कहता है काब म कोई कहता है
हम कहते हैं भटको न कहीं भगवान यहा ही रहते है।

भक्त भगवान से जो मांगता है वह जिसके पास है वही दे सकता है मानव मन उस प्रभु की शक्ति को न समझकर दर दर की ठोकर खाता है। प्रभु भक्त से कहते हैं कि—

पास रहता हु तेरे सदा मैं अरे तु नही देख पाये तो मैं क्या करू।

मन्त्रो में त्रुटिपूर्ण प्रार्थना नही है भगवान तुम उसका सत्यानाश कर दो, प्रार्थना म हम सन्मार्ग पर चले। यह भावना विद्यमान है।

ऐसे अनुभूत मन्त्रो की व्याख्या से स्वाध्याय शील मन सदा से ज्ञान की गंगा मे भाव विभोर होकर स्नान करता है।—वैदिक विनय विद्वान विवेचक की अमर कृति है जिसने पढा है उसन सदा सराहा है।

मधुर प्रकाशन के प० राजपाल शास्त्री बधाई के पात्र हैं जिन्होंने इस अदभुत ग्रन्थ का अनुशीलन सम्पादन आचार्य प० हरिदेव जी एम ए से कराकर जनता जनार्दन के हाथो मे दिया है।

आर्यजन इस प्रतिभापूर्ण ग्रन्थ का स्वाध्याय चिन्तन मनन कर जीवन को सार्थक बनायेंगे।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वामी समर्पणानन्द जी के ६९वें स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में

लोकार्पण समारोह

प्रति वर्ष की भांति समर्पण शोध संस्थान के तत्वावधान मे प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती) द्वारा लिखित यजुर्वेद भाष्य (२ अध्याय) एव अथर्ववेद भाष्य (२५ सूक्त) एव श्री रामनाथ जी वेदालंकार द्वारा लिखित सामवेद भाष्य (संस्कृत-हिन्दी) उत्तरार्चिक का लोकार्पण समारोह डा० कर्णसिंह जी द्वारा सोमवार १अगस्त ९४ को साय ४-३०से ७ बजे तक विठ्ठलभाई पटेल भवन (स्पीकर हाउस) मे सम्पन्न होगा, जिसकी अध्यक्षता आचार्य प्रियव्रत जी भूतपूर्व आचार्य एव कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय, हरिद्वार करेंगे। आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

दीक्षानन्द सरस्वती
अध्यक्ष समर्पण शोध संस्थान
राजेन्द्रनगर, साहिबाबाद, उ०प्र०

ज्ञानी जैलसिंह

(पृष्ठ १ का शेष)

सेवक समाज, नामधारी राष्ट्रीय संगत, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, बौद्ध समाज, आदि सभी संगठनों ने गोहत्या पर प्रतिबन्ध के लिए केन्द्रीय कानून की मांग करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना था।

स्वामी जी ज्ञानी जैलसिंह जी के साथ हैदराबाद के अलकबीर यांत्रिक बूचड़खाने को भी देखने जायेंगे और उसे बन्द कराने के उपायो पर विचार करके गोहत्याबन्दी आन्दोलन के लिए भावी कार्यक्रम का निर्णय करेंगे। ●

वेदकथा एवं भजन प्रवचन

आर्यसमाज मन्दिर त्रिकुटानगर से० १ जम्मू मे दिनांक ४ ५, ६ जौलाई को त्रिदिवसीय वेदकथा एव भजन प्रवचन का कार्यक्रम बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस समारोह मे आर्य जगत के विख्यात योगी स्वामी सत्यपति जी महाराज आर्यवन गुजरात से पधारे थे। वर्षों से स्वामी जी को देखने एव प्रवचन सुनने के लिए जनता लालायित थी। प्रात काल ५ से ८ ३० बजे तक कियात्मक योग एव प्रवचन रिहाड़ी आर्य समाज मे हुआ करता था। सायं ६ से ८ बजे तक आर्य समाज त्रिकुटानगर मे प्रवचन होता था। आर्यसमाज का सत्संग भवन खचा-खच भरा था। इसमे प० कालिदास एव देवीदास जी का सराहनीय प्रयत्न रहा। महामन्त्री श्री अरुण आर्य ने अवि-स्मरणीय सहयोग दिया है। समाज के पुरोहित श्री वीरेन्द्र कुमार शास्त्री ने घर-घर जाकर माताओं को प्रेरित किया। स्वामी जी ने माताओं को विशेष रूप से ईश्वरोपासना की विधि बतायी एव सचेत किया कि माताओ! तुम्हारे सो जाने से देश फिर से परतन्त्र हो सकता है इसलिए आप अपनी शक्ति को जगाओ। बाद मे प्रधाना विमला धवन ने धन्यवाद किया। जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

—प्रो० नरेन्द्रकुमार सहगल

प्रवेश सूचना

श्रीमद् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय गाजीपुर जि० यमुना नगर में छात्रो का प्रवेश आरम्भ हो गया है। जो छात्र सदाचारी, संयमी, अनुशासन प्रिय तथा नियम में रहने वाले हो वे जल्दी से जल्दी प्रवेश ले लेवें। आठवीं नौवीं दसवीं के छात्रो का प्रवेश हो सकेगा। प्रवेश का समय २० जौलाई से १० जौलाई तक नियत है। जो प्रवेश के इच्छुक शीघ्रातिशीघ्र आचार्य से पत्र व्यवहार करके प्रवेश की अनुमति ले लेवें।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४९/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३१-७-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (G)९३
R N- 626/57 Licensed to post without prepayment licence No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 28-29-7-1994

आर्य सभा मोरिशस का निर्वाचन

आर्य सभा मोरिशस की कार्य कारिणी समिति का गठन सन् १९९४-१९९५ ई० के लिए निम्न प्रकार हुआ है:—

लीडर—श्री मोहनलाल मोहित जी

प्रधान श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन, उपप्रधान श्री जसकरण मोहित, आर्य भूषण, श्री देवऋषि बुधेल, ओ. एस. के., आर्य भूषण, मन्त्री श्री मूलशकर रामधनी, एम बी. ई., उपमन्त्री श्री सत्यदेव प्रीतम बी.ए ,ओ एस के , श्रीमती धनवन्ती रामचरण एम.एस.के , कोषाध्यक्ष श्री चन्द्रमणि रामधनी, एम.बी ई. उपकोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्रप्रसाद धामजी, श्री सन्तोष जगन्नाथ, पुस्तकाध्यक्ष श्री शीतलप्रसाद प्रोआग

सदस्य श्री विद्यानन्द देवकरण, डा० हरिदत्त घूरा, आर्य भूषण डा० लक्ष्मी जाधन, श्री सुधीरचन्द्र कन्हाई, श्री जगदीश मकुनलाल, माननीय डा० रुद्रसेन नीऊर, एम०पी० श्री बिनयदत्त रामकिसुन श्री प्रेमहस श्रोकिसुन।

—मूलशकर रामधनी एम.बी.ई मन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सीतामढ़ी का वार्षिकोत्सव स्थानीय गांधी मैदान मे १-५-९४ से २-५-९४ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशको ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया। इस अवसर पर देश मे सम्पूर्ण गोहत्या बन्दी को लेकर एक प्रस्ताव पास किया गया तथा बिहार सरकार को भेजा गया। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

—आर्य समाज अम्बहुटा का वार्षिकोत्सव १ से ३ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह मे आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान तथा भजनोपदेशको ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया। वार्षिकोत्सव का कार्य नव निर्मित मन्च पर सम्पन्न किया गया।

—आर्य समाज उसावा का वार्षिकोत्सव २७ से २९ जून को महायज्ञ के साथ समारोह पूर्वक सम्पन्न किया गया। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने पधार कर उपस्थित जनसमूह को लाभान्वित किया।

पिंपरी में प्रचार दौरा

आर्य समाज पिम्परी की ओर से पिंपरी पुणे क्षेत्र मे पू० श्री मुनि वशिष्ठ जी आर्य वानप्रस्थी का प्रचार दौरा २५ मई से २५ जून तक विभिन्न ग्रामो में सफलता पूर्वक आयोजित किया गया। इसके अतिरिक्त पिंपरी नगर में पारिवारिक सत्सगो तथा महिला सत्सगो का भी आयोजन किया गया। महिला पुरोहितो का निर्माण करने के उद्देश्य से महिलाओ का एक सप्ताह का शिविर भी लगाया गया इन समस्त कार्यों से पुणे मे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार से लोगो मे नयी जागृति का समावेश हुआ।

पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई के तत्वावधान मे जुलाई ९४ से न्याय और वैशेषिक दर्शन पर सेवती बाई मंगली की स्मृति मे स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। पाठ्यक्रम के संचालक डा० सोमदेव शास्त्री ने पत्राचार पाठ्यक्रम मे अधिक से अधिक सम्मलित होने का आग्रह किया। वार्षिक सहायता शुल्क २५ रुपये में भेजकर सदस्यता ग्रहण करें। विस्तृत जानकारी के लिए निम्न पता पर सम्पर्क करें।

सोमदेव शास्त्री, डी-१०२ मिल्टन अपार्टमेंट
जावाद रोड जुहू कोलिवाड़ा बम्बई-५४

शोक समाचार

बस्ती जनपद के उत्तरांचल भाग मे वैदिक धर्म प्रचार की भावना लेकर विश्वामदास आर्य निरन्तर कार्य करते रहे। बस्ती मे आपने एक विद्यालय खोलकर शिक्षा क्षेत्र में भी काम किया उनका निधन दिनांक २-६-९४ ई. दिन बृहस्पतिवार को हुआ उनकी अंत्येष्टि सरयू के तट पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुई जिसमे अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। एक समर्पित कार्यकर्ता के रूप मे उन्होने लगभग (छ:) दशक तक आर्य समाज की जो सेवा की है उसे भुलाया नहीं जा सकता है।

शोक समाचार

स्त्री आर्य समाज अशोक विहार फेज-१ दिल्ली की प्रधाना श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र के पति श्री वेदप्रकाश जी महेन्द्र का निधन १५-७-१९९४ को हो गया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ दिवंगत आत्मा को सद्गति की कामना करते हुए शोक संतप्त परिवार और श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं।

—वेदव्रत महत्ता महामन्त्री
अ० भा० द० सेवाश्रम संघ

—स्व० श्री देसराज चौधरी के ज्येष्ठ पुत्र श्री योगेन्द्र मोहन चौधरी का अचानक हृदय गति अवरुद्ध होने से बम्बई मे ११ जुलाई १९९४ को देहावसान हो गया है। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ व प्रार्थना का आयोजन देसराज परिसर, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर सी ब्लाक, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली-६५ में रविवार १७ जुलाई १९९४ को प्रात: १०.३० बजे किया गया। इस अवसर पर अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

—बड़े दु:ख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि हमारे पूज्य पिता जी श्री भिकारोलाल जी का स्वर्गवास दिनांक ७-७-९४ दिन बृहस्पतिवार को हो गया है। प्रभु की ऐसी ही इच्छा थी।

रस्म पगड़ी (तेरहवीं) दिनांक १८-७-९४ रविवार को सायं तीन बजे स्थान-स्टेशन रोड, कोटद्वार में हुई। —सत्यप्रकाश

आर्यसमाज बटवा [illegible] मिर्जापुर जनपद हरदोई के पूर्व प्रधान व समाज के सक्रिय सभासद श्री सुभाष चन्द्र आर्य की धर्मपत्नी का स्वर्गवास दिनांक २७-५-९४ को प्रात: ४ बजे हो गया।

दिनांक २७-५-९४ को ही दोपहर १ बजे अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ तत्पश्चात दिवगत आत्मा की शांति के लिए उनके आवास पर यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें समाज के सभी सदस्य व गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

रामकुमार मन्त्री
आर्य समाज बटवा [illegible] मिर्जापुर हरदोई

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख-पत्र   दूरभाष । ११७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ११ अंक २७]   दयानन्दाब्द १७०   सृष्टि ० ० १९७२९४९०९५   श्रावण शु० ८ स० २०११ १४ अगस्त १९९४

वेद पढ़ने का अधिकार समस्त मानव मात्र को है

कांची के शंकराचार्य को करारा जवाब

वैदिक काल मे वेद-विदुषी नारियां

क्या स्त्रियों को वेद पढने का हक है ? यह प्रश्न आजकल फिर उठाया जा रहा है । स्त्रियों के साथ साथ तथाकथित निम्न जातियो को भी वेद पढने से रोका जाना है । प्रमाण के तौर पर यह सस्कृत वाक्य उद्धृत किया जाता है । स्त्रीशूद्रो नाधीय नमिति श्रुते । इसका अर्थ है । स्त्री और शूद्र न पढें—यह श्रुति है । लेकिन यह वाक्य कपोल-कल्पित है, किसी प्रामाणिक ग्रन्थ का नहीं । सब मनुष्यो के वेदादि शास्त्र पढने-सुनने के अधिकार का प्रमाण यजर्वेद के छब्बीसवें अध्याय मे दूसरा मन्त्र है —

> यथेमां वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य ।
> ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ॥
> (यजु० २६।२११)

परमेश्वर कहता है कि (यथा) जेसे मैं (जनेभ्या) सब मनुष्यो के लिए (इमाम) इस (कल्याणोम्) कल्याण अर्थात् ससार और मुक्ति के सुख देने हारो (वाचम) ऋग्वेदादि चारो वेदों को वाणो का (आ वदानि) उपदेश करता हू वैसे तुम भी किया करो ।

वस्तुत चारो वेदो के २०४१६ मन्त्रो मे कहो भी तो नारी को वेद पढने की मनाही नहीं है अपितु समस्त वैदिक साहित्य मे ऐसे सूत्र और प्रसग हैं, जो नारी को महिमामण्डित करने के लिए प्रतिपादित किये गये हैं । वैदिक साहित्य पुरुष और स्त्र' के अधिकारो मे भद नहीं करता । नारी को वे समस्त अधिकार हैं, जो पुरुष को है । अथर्ववेद मे कहा है —

> ब्रह्मचर्येण कन्या युवान विन्दते पतिम । अथर्व० ११।५।१८)

जैसे लडके ब्रह्मचर्य से पूर्व विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होकर अपने सदृश विदुषी स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं, वैसे (कन्या) कुमारी (ब्रह्मचर्येण) ब्रह्मचय सेवन से वेदादि शास्त्रो को पढ पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त कर पूण युवावस्था मे अपने सदृश (युवानम्) पूर्ण युवावस्थायुक्त विद्वान पुरुष को (विन्दते) प्राप्त होवे ।

श्रौत सूत्रादि में भी विधान है । इम मन्त्र पत्नी पठत । (स्त्री यज्ञ मे इस मन्त्र को पढें । यदि उसे वेद पाठ का अधिकार ही न हो तो कैसे पढेगी) ।

वेद पत्नये प्रदाय वाचयेत् (आश्वलायन श्रौ १।११) प नी को वेद देकर उससे बचवाये ।

इति वेद पत्नी वाचयति (शखायन श्रो, १।१५।१३)
पत्नी वेद बांचती है ।
वेदे पत्नी वाचयति 'वेदोसि बितिरसि इति (बोधायन श्रौ, ३।३०)
वेद मे पत्नी बांचती है वेदोसि ' इत्यादि ।

इसके अलावा गार्गी याज्ञवल्क्य सवाद है जिसका वर्णन शतपथ ब्राह्मण (खण्ड १४) और बृहदारण्यक उपनिषद् (३-८-१ १२) में किया गया है ।

राजा जनक की सभा मे महर्षि याज्ञवल्क्य के साथ जिनका शास्त्रार्थ हुआ उनमे महान् विदुषी गार्गी भी थी । जब सभी विद्वान परास्त हो रहे थे तब गार्गी ने कहा—"अथ गार्गी वाचक्नव्युवाच-ब्राह्मणा भगवन्तो हन्ताहमिम द्वौ प्रश्यामि तौ चेन्मे वक्ष्यति न वै जातु युष्माकमिम कश्चिद ब्रह्मोद्य जेतेति" अर्थात् वाचक्नवी गार्गी ने कहा—हे पूज्य ब्राह्मणो ! मैं इससे दो प्रश्न पूछूगी । यदि मुझ उनका उत्तर देगा, तो आप मे मे कोई इस ब्रह्मवादी को न जीत सकेगा । इसके पश्चात गार्गी और याज्ञवल्क्य का सवाद (शास्त्रार्थ) हुआ । गार्गी याज्ञवल्क्य के उत्तरों से सन्तुष्ट हुई और उसने पुनः कहा—ब्राह्मण भगवन्त । तदेव बहु मन्यध्व यदस्मान्नमस्कारेण मुच्येध्व न वै जातु युष्माकमिम कश्चिद् ब्रह्मोद्य जेता इति अर्थात् ब्राह्मण महाराजो ! अर्थात् इसी को बहुत समझो कि तुम नमस्कार करके इससे छूट जाओ । तुम मे से कोई इस ब्रह्मवादी को जीत न सकेगा ।

उर्वशी—पुरुरवा सवाद

(शास्त्रार्थ) भी साक्षी हैं कि वैदिक काल मे नारियां पुरुषों के तुल्य वेद विद्या की ज्ञाता हुई हैं । आदि शकर के मण्डन मिश्र की पत्नी भारती से शास्त्रार्थ का ज्ञान तो इन शकराचार्यों को अवश्य ही होगा । यदि भारती को वेद ज्ञान न होता तो आदि शकर को कैसे निरुत्तर कर देती ?

वस्तुस्थिति तो यह है कि अकेले ऋग्वेद की २० मन्त्रदृष्टा ऋषिकायें थी ।

आचार्या पदवी का उपयोग नारी

आचार्य के लिए होता था जब कि आचाय की पत्नी आचार्याणी कहलाती थी (शेष पृष्ठ १२ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

स्वातन्त्र्य गौरवम्

---पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी

निदेशक विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी)

(१)

स्वतन्त्रताऽस्तिरेषा सदा सौख्यदात्री
भयानां प्रहर्त्री गुणानां प्रदात्री।
त्वमेवासि लोके सदा मानदात्री,
सदा कीर्तिदात्री सदा मोददात्री ॥ स्वतन्त्रता० ॥

अनुवाद—देश की स्वतन्त्रता सदा सुख देने वाली है। यह संकट को दूर करती है और गुणों की वृद्धि करती है, इससे ही संसार में सम्मान होता है। यह यश और प्रसन्नता देने वाली है।

(२)

न त्वत्तः परं मानवं लोकमध्ये,
न त्वत्तः पर सौख्यदं किंचिदस्ति।
त्वमेवासि लोकस्य चैतन्य-दात्री,
सदा प्रेरयामुः सदा शक्ति-स्रोतः ॥ स्व० ॥

इस स्वतन्त्रता से बढ़कर संसार में और कोई वस्तु सम्मान देने वाली नहीं है और न इसके अतिरिक्त कोई सुख देने वाला है। यह स्वतन्त्रता ही देश में चेतना भरती है, देशवासियों को प्रेरणा देती है और सदा शक्ति का स्रोत है।

(३)

बिना त्वां नृणां जीवनं मोघमेव,
बिना त्वां गतिः सर्वदा दुःखदैव।
बिना त्वां स्थिरत्वः सदा मृत्युरेव,
बिना त्वां विकासो न हर्षोऽस्तिरेवा ॥ स्व० ॥

स्वाधीनता के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है। इसके बिना मनुष्य की दुःखद गति होती है। इसके अभाव में मृत्यु सदा सिर पर सवार रहती है। इसके बिना न विकास हो पाता है और न जनता में हर्ष होता है।

(४)

न यत्रास्ति ते दीप्तिः सौख्यमूला
न यत्रास्ति ते श्रीः सदा कीर्तिशीला।
न राष्ट्रं न देशः प्रदेशो विशेषो,
बिना त्वा श्रितः कीर्तिमिष्टां श्रियं वा ॥स्व०॥

जहाँ स्वतन्त्रता की सुखद किरणें नहीं होती हैं और कीर्ति देने वाली श्री नहीं होती है वह राष्ट्र वह देश और वह प्रदेश कभी अभीष्ट कीर्ति प्राप्त नहीं कर सकता।

(५)

त्वमेवासि सौख्यस्य मूलं समन्तात्,
त्वमेवासि कीर्त्यादिमूलं पुरस्तात्।
त्वमेवासि मानस्य शक्तेश्च हेतुः,
त्वमेवासि शस्त्रं त्वमेवासि हेतिः ॥ स्व० ॥

स्वतन्त्रता ही सब सुखों का मूल है। यही देश की कीर्ति का आधार है। यही देश के सम्मान और शक्ति का साधन है। यही देश के लिए महान शस्त्र और अस्त्र है।

(६)

त्वदीये पदाब्जे मुदा देशभक्ताः,
बलिं दत्तवन्तो मुदं प्राप्तवन्तः।
त्वदर्चापरा ये नरा मातृ-भक्ताः,
सदा स्वात्सु तेषां यशो राजतेऽत्र ॥ स्व० ॥

स्वतन्त्रता के लिए देशभक्तों ने प्रसन्नता के साथ अपने जीवन की आहुति दी और प्रसन्नचित्त हुए। मातृभूमि की पूजा में जो न्योछावर हुए हैं, उनका यश संसार में सदा अमर रहेगा।

(७)

त्वमेवासि दुर्गा, त्वमेवासि सम्या,
अपूर्व्या त्वमेवासि दुर्धर्षरूपा।
सदा स्नेह-स्रोतः, सदा शक्तिस्रोतः,
त्वदीयां कृपां याचते सर्वलोकः ॥स्व०॥

यह स्वाधीनता अजेय है। यही प्राप्य है। यही अधर्षणीय है और उग्र-रूप है। यह प्रेम और शक्ति का स्रोत है। सारा संसार इस स्वाधीनता की कृपा दृष्टि चाहता है।

(८)

सदा भारते ते कृपा संतता स्यात्,
त्वदर्चापरा भारतीया भवेयुः।
विहाय स्वकं स्वार्थजातं जघन्यं,
मुदा जीवनं तेऽर्पयेयुः पदाब्जे ॥ स्व० ॥

यह स्वाधीनता भारतभूमि में सदा विद्यमान रहे। सभी भारतीय इस स्वाधीनता की पूजा करें। वे अपने तुच्छ स्वार्थभाव को छोड़कर प्रसन्नता-पूर्वक स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपना जीवन अर्पण कर दें।

सम्पादक के नाम पत्र

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक द्वारा हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की उपेक्षा

महोदय,

मैंने "म० द० विश्वविद्यालय, रोहतक के रिसर्च जर्नल में छपने हेतु अपना शोधपत्र अंग्रेजी के कारण हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की भारी क्षति हुई है"—भेजा था इसमें ११५ शोध सन्दर्भ हैं। विश्वविद्यालय ने यह कहकर छापने से इन्कार कर दिया कि यह विश्वविद्यालय के शोध से बाहर है (पत्र सं० एम० डी-यू०/आर० जे० आर्टस/९१/२०६, तारीख १८-७-९१)।

मैंने सम्पादक मंडल से पुनः निवेदन किया किन्तु फिर भी यही उत्तर मिला कि यह जर्नल के स्कोप-शोध क्षेत्र से बाहर है (पत्र सं० एम० डी-यू०/आर० जे०/आर्ट्स/९१/२३८/ता० २०-९-९१) जबकि केरल विश्वविद्यालय से १९७८ में मर्सी अब्राहम का इसी प्रकार का पी०एच०डी० का शोध प्रबन्ध स्वीकार किया था। शीर्षक था—फैक्टर्स रिलेटिंग टु अंडर अचीवमेंट इन इंगलिश इन दा स्कूल्स आफ केरला।' क्या महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय एक शोधपत्र भी स्वीकार नहीं कर सकता?

फिर यह विश्वविद्यालय महर्षि दयानन्द के नाम पर जिन्होंने वेदों का भाष्य हिन्दी में किया, वैदिक धर्म का प्रचार हिन्दी में किया, हिन्दी को आर्य भाषा का नाम दिया यद्यपि वे स्वयं गुजराती थे।

लगता है हम पर अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। आजादी के इतने वर्ष बाद भी हम अंग्रेजी की दासता से मुक्त नहीं हो पाए हैं। भाषा के रूप में अंग्रेजी का विरोध नहीं है किन्तु प्रश्न तो राष्ट्रभाषा तथा भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा का है? संघ लोक सेवा आयोग के बाहर पिछले छः वर्ष से धरना जारी है किन्तु आयोग अंग्रेजी का वर्चस्व समाप्त करने को तैयार नहीं? रोहतक विश्वविद्यालय भी इसका अपवाद नहीं।

—प्रो० चन्द्र प्रकाश आर्य
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
दयालसिंह कालेज, करनाल (हरियाणा) १३२००१

आभार व्यक्त

'संततिनिग्रह' भाग (१), (२) के सम्बन्ध में आर्य बन्धुओं के अनेक पत्र प्राप्त हुए। लेख-सामग्री अच्छी लगी, धन्यवाद। अनेक मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई भाईयों को निरामिष भोजन द्वारा असाध्य रोगों से ठीक करके ऋषि दयानन्द व आर्य समाज का कार्य डाक्टरी के माध्यम से कर रहे हैं। आपका आशीर्वाद चाहिए।

—डा० एस० के० भटनागर, हैल्थ होम
२ दयानन्द ब्लाक, शकरपुर-९२

सम्पादकीय

विद्या की वृद्धि करनी चाहिये

महर्षि की स्पष्ट घोषणा

इस नियम में अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि बताया है। योग दर्शन के अनुसार महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम् समुल्लास के प्रारम्भ में ही—

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते। यजु० ४०-१४ ॥
अविद्या का लक्षण अनित्याशुचि दुःखानात्मसु
नित्यशुचि सुखात्मख्यातिर विद्या ॥ यो०द० साधन-५

अविद्या का तात्पर्य है अनित्य को नित्य मानना, अपवित्र को पवित्र, दुःख को सुख और अनात्मा को आत्मा समझना। विद्या इसके विपरीत सत्य ज्ञान का नाम है। इस प्रकार की विद्या पुस्तकों से नहीं किन्तु जीवन भर के शुभ संस्कारों से प्राप्त होती है।

अविद्या का स्वरूप क्या है ? विद्या और अविद्या के विषय में

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्याᳬरताः ॥ यजु० ४०-९

जो लोग परमात्मा को छोड़कर अनादि अनुत्पन्न, सत्व, रज, तम मय प्रकृति के जड़ रूप की उपासना करते हैं और महत्तत्व स्वरूपादि परिणाम को प्राप्त सृष्टि में रमते हैं। वह उससे अधिक विद्या रूप अन्धकार को प्राप्त करते है। साथ ही

विद्या और अविद्या दोनों को एक साथ जानता है अर्थात् ज्ञान और कर्म का उपयोग साधना में लाता है व ज्ञान पूर्वक कर्म करता है वह कर्तव्य से कर्म से मृत्यु से हटकर विद्या से मोक्ष को प्राप्त करता है ऐसा यजु० के ४०।१४वें मन्त्र से स्पष्ट प्रकट होता है।

उपर्युक्त प्रकरण से स्पष्ट है कि विद्या एवं अविद्या का महत्त्व किस प्रकार से प्रकट किया गया है। उपासना आराधना से दूर कर्महीन, कोरी परा विद्या तथा अविद्या से आशय है उपासना से दूर, पदार्थ विज्ञान के कर्म यानि अपरा विद्या।

लौकिक अर्थ में विद्या को ज्ञान प्राप्ति तथा अविद्या के अनुभव से रहित समझना।

छान्दोग्य उपनिषद् में धर्म के त्रयो धर्मस्कन्धाः। अर्थात्—

यज्ञ-अध्ययन दान। अर्थात् प्रथमस्कन्ध है तप, द्वितीय है आचार्य कुल में रहकर वेदाध्ययन करे और ब्रह्मचर्य पालन करे। फिर तीसरी बात है मानव जीवन के भी चार पुरुषार्थ धर्म अर्थ काम मोक्ष बनाये हैं। हम इस पर यदि मनन करें तो इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि चारों पुरुषार्थों और तीन स्कन्धों का ज्ञान निश्चित रूप से जीवन को प्रभावित करते हैं। इनकी पूर्ति हेतु विद्या का ज्ञान परमावश्यक है।

जीवन के पुरुषार्थ मानव जीवन के आवश्यक अंग यही चार तत्व है धर्म के दस लक्षण मनु० महाराज ने बताये है। उनमें विद्या भी एक है विद्या-बिना धर्म का ज्ञान, उसकी क्रियाये, धर्म-अधर्म का भेद जाना नहीं जा सकता है। सभी में विद्या का होना आवश्यक है। अर्थ के उपार्जन हेतु धर्म पूर्वक धन कमाना और धर्म पूर्वक ही उसका उपयोग करना उद्देश्य होना चाहिये।

अर्थ की आवश्यकता काम के ऊपर निर्भर है काम जीवन का अत्यन्त अनिवार्य तत्व है, कल्याण कारक सृष्टि मानव की स्थिति हेतु सक्षम है। जीवन पर्यन्त कामजयी होने में महात्मा बुद्ध महावीर स्वामी और महर्षि दयानन्द जैसे महापुरुष युगों में जन्म लेते हैं। धर्म एवं विधि पूर्वक काम को वशीभूत रखने वाला महान् चमत्कारों का अनुभव कर सकता है।

बन्धन से छुटकारा पाना ही मोक्ष है धर्म सहित अर्थ और काम को वशीभूत कर मोक्ष पाना है धर्म और मोक्ष के मध्य अर्थ और काम बाधक है। इन पर प्रतिबन्ध न लगाकर मोक्ष पाना असम्भव है। मोक्ष ऐसी दुर्लभ वस्तु है जिसकी उपलब्धि से मानव को अनेक जन्मों तक घोर प्रयास करने पर ही है। जो वस्तु सुगमता से प्राप्त हो उसका महत्त्व ही क्या रह जायेगा। यह सब कुछ अविद्या व अविद्या जन्य अज्ञान से प्राप्त है।

व्यक्ति के जीवन में विद्या के महत्त्व उपरिलिखित विवेचन से प्रकट होता है। कि प्राचीन भारत में बालक की आयु विद्या प्राप्ति के होते ही गुरुकुल में भेज दिया जाता था जहां माया-मोह से दूर रहकर विद्या का उपार्जन करना है। हमारे देश में स्वतन्त्रता के पश्चात विद्या की वृद्धि में अनुपाततः वृद्धि तो हुई है वह अक्षर ज्ञान ? जिसे विवेकपूर्ण विद्या कहना चाहिये, उसका नितान्त अभाव ही समझना चाहिये। महर्षि दयानन्द से पूर्व देश में जनता में ज्ञान की स्थिति निराशाजनक थी। महर्षि ने मानव समाज में फैली अविद्या जन्य, धर्म के नाम पर चलने वाले पाखण्डों व अन्य प्रकार की बुराइयों में एक अविद्या मुख्य कारण थी। स्वामी जी ने द्वितीय समुल्लास में माता-पिता के बालक के प्रति कर्तव्य विद्या वृद्धि के क्या है और तृतीय समुल्लास में आचार्य का नैतिक दायित्व बोध कराने में क्या है। महर्षि ने अपने प्रवचनों में विद्या प्रसार पर सदैव बल दिया है। प्राचीन पद्धति गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिये अत्यन्त जोर दिया है। आर्य समाज के क्षेत्र में शिक्षा प्रणाली पर अधिक ध्यान दिया गया। विद्या दान को महादान मानकर महर्षि के पश्चात् डी०ए०वी० ,कालिजों की स्थापना तथा गुरुकुलों (जिनमें बालक-बालिकायें पृथक्-पृथक् अध्ययन करें। संस्कृत महाविद्यालयों की स्थापना-अनाथ आश्रम, दलितों के विद्यालय, रात्रि पाठशालायें, उपदेशक विद्यालय खोले। परिणामतः सरकार के पश्चात शिक्षा क्षेत्र में द्वितीय स्थान रखता है। इस नियम के अनुसार आर्यों को कर्त्तव्य पालन में पूर्ववत् हो दृढ़संकल्प वाला होना चाहिये।

अविद्या अज्ञान को दूर करने में विद्या की वृद्धि के बिना मानव का कल्याण नहीं हो सकता है। अतः स्वामी जी महाराज ने इस नियम पर अधिक जोर दिया है। यह नियम अविद्या (विपरीत ज्ञान) रूप अन्धकार को दूर करके यथार्थ ज्ञान रूपी प्रकाश से संसार के मानवों को प्रकाशमान बनाने की शिक्षा देता है। इसी से कहा है कि—"तमसो मा ज्योतिगमय"

अन्धकार से प्रकाश की ओर चलो।

चीन से सावधान

—रामचन्द्र शर्मा, से० नि० प्राचार्य, सीहोर

चीन के प्रतिनिधि मण्डल आजकल बहुतायत से भारत आ रहे हैं तथा भारत के भी चीन जा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान में चीन भारत से मित्रता करने में अधिक उत्सुकता एवं आतुरता दिखा रहा है. इधर भारत की भी आतुरता कम दृष्टिगोचर नहीं हो रही है। यदि बहुत बारीकी एवं कूटनीतिक दृष्टि से देखा जावे तो चीन ऐसी किसी वचनबद्धता या घोषणा को सावधानी से टाल रहा है जिसमें भारत का हित परिलक्षित हो। इतना ही नहीं, वह भारत के उचित कार्य एवं दृष्टिकोण को अपनी सहमति नहीं दे रहा है। अभी कुछ दिन पूर्व चीन के उपप्रधान मन्त्री एवं विदेश मन्त्री छियेन छिछेन ने अपनी पत्रकार वार्ता में भारत में सिक्किम के विलय को स्वीकार करने की घोषणा से इन्कार कर दिया। इससे यह बिल्कुल स्पष्ट है कि चीन सिक्किम के भारत में विलय को मान्यता नहीं दे रहा है यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि चीन अरुणाचल प्रदेश को भी भारत का भाग मानने को तैयार नहीं है। यह आश्चर्य की बात है कि विश्व में चीन ही केवल एक-मात्र देश है जो सिक्किम के भारत में विलय को मान्यता नहीं दे रहा है। ऊपर से भारत से मीठी मीठी बातें करके यहां के नेताओं को बहलाने फुसलाने का प्रयत्न शुद्ध अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए कर रहा है। वर्तमान में चीन की आर्थिक दशा खराब है, वह भारत से आयात तथा निर्यात करके अपनी आर्थिक दशा सुधारने हेतु भारत के सहयोग का इच्छुक है। इस आयात एवं निर्यात में भी तस्करी के द्वारा क्या गुल खिलेंगे यह भी पूर्ण शंकास्पद है। भारत को चीन से व्यापार में अत्यधिक सतर्कता बरतनी होगी।

पिछले दिनों बैंकाक में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संगठन अर्थात 'आसियान' के १७ देशों के सुरक्षा मंच की प्रथम बैठक सम्पन्न हुई। इसमें यह निर्णय हुआ कि सीमा सम्बन्धी विवादों को आपसी बात-चीत के द्वारा सुलझाया जावे जिससे यह विवाद युद्ध का रूप धारण न करले। चीन ने द्विराष्ट्रों के समझौतों का विरोध किया और अपने द्वारा प्रगट विचारों में चीन ने इस मच को 'सुरक्षा मंच' न बताते हुए केवल आपसी बातचीत का संगठन बताया। उल्लेखनीय है कि 'आसियान' की इस बैठक में क्षेत्रिय सहयोग, परमाणु अप्रसार तथा समुद्री विषयों पर भी विचार किया गया। चीन ने स्वयं भी पचशील' का नारा पुनः लगाना शुरू कर दिया है किन्तु यह सब ऊपरी दिखावा मात्र है अन्यथा चीन विरोध न करके 'आसियान' के शान्ति, सहयोग आदि विचारों का समर्थन करता। इससे यह स्पष्ट है कि चीन परस्पर राष्ट्रों में शान्ति, सहयोग परमाणु अप्रसार आदि नहीं चाहता समुद्र पर एकाधिकार चाहता है।

चीन 'आसियान' देशों पर अपना प्रभुत्व चाहता है, वह भी शान्ति, सहयोगादि के बल पर नहीं अपितु शुद्ध अपने आतंक के बल पर, इसीलिए वह 'आसियान' को सुरक्षामंच मानने के लिए तैयार नहीं है। वह ऐसे किसी भी संगठन का विरोध करेगा जो अन्य एशिया के राष्ट्रों को सुरक्षा प्रदान करे क्योंकि ऐसा मच चीन की विस्तारवादी योजना के विरुद्ध होगा। वह नहीं चाहता कि एशिया में ऐसी शक्ति खड़ी हो, जो उसके विरुद्ध हो अमेरिका विश्व का दादा बन गया है, चीन एशिया का दादा हो नहीं बनाना चाहता वह एशिया पर अपना एक छत्र राज्य चाहता है। चीन की इस दुर्गन्ध को सूंघ कर ही जापान भी 'आसियान' का सदस्य बन गया है और सम्भवतः उसी की पहल पर अमरीका, कनाडा तथा योरोपीय समुदाय भी 'आसियान' के सदस्य बन गए हैं। इस क्षेत्रीय सुरक्षा मंच में जापान, दक्षिण कोरिया, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलेंड का सदस्य बनना तो उचित है किन्तु अमरीका, कनाडा आदि का सम्मिलित होना बड़ा आश्चर्य की बात है यहां किसी बड़ी कूटनीतिक योजना की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। अब लाओस, वियतनाम तथा पापुआ न्यूगिनी को भी सदस्य बनने हेतु आमन्त्रित किया जा रहा है। चिन्ता एवं दुःख की बात यह है कि भारत इसका अभी तक सदस्य नहीं बना है तथा भारत के हितों की रक्षा करने वाला भी यहां कोई नहीं है। समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ है कि 'आसियान' मंच ने भारत को प्रेक्षक के रूपमें या अतिथि रूपमें तीन बार अपने सम्मेलनों में शामिल होने का निमन्त्रण दिया था किन्तु भारत ने इसकी सम्भवतः इसलिए उपेक्षा कर दी कि उसे सदस्य बनाने के लिए कोई सन्देशा न देकर, प्रेक्षक के रूप में (सदस्य के रूप में नहीं) आमन्त्रित किया गया था। यहां भारत से कूटनीतिक भूल हुई है जिसे सुधारना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। यह उल्लेखनीय है कि एशिया-प्रशान्त क्षेत्र के १८ राष्ट्र इस क्षेत्र को आर्थिक संगठन के रूप में भी विकसित करना चाहते हैं अतः वे भारत को भी इसमें शामिल करने का प्रयत्न करेंगे। भारत को हर हाल में इसमें शामिल हो जाना चाहिए इसी में इसका आर्थिक एवं सुरक्षा सम्बन्धी भी हित निहित है। इतना ही नहीं, सम्पूर्ण राष्ट्रीय हित की दृष्टि से यह अनिवार्य है।

चीन ने नवीन रूप से 'पंचशील' का नारा लगाना आरम्भ कर दिया है, वह केवल भारत को दिखाने और लुभाने के लिए। वह जानता है कि भारत में आज भी महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी तथा गांधी जी के सिद्धांतों को

(शेष पृष्ठ ११ पर)

॥ ओ३म् ॥

सिंगापुर बैंकाक की विदेश यात्रा

आर्य भाई-बहिनों की प्रेरणा से दिनांक २६-९-९४ की रात्रि को चलेंगे और ४-१०-९४ की रात्रि को वापिस आयेंगे। जाने आने का By Air, रहने के लिये होटल, भ्रमण के लिये बस। साइड सीन देखना, नाश्ता डिनी और लंच शामिल है। दिल्ली Air port Tax और बीमा भी शामिल है।

कुल सारा खर्च २८००० रु० प्रति सवारी होगा।

सीट बुक कराने के लिये ५००० रु० एडवान्स देने होंगे।

Air port जाने के लिये आर्य समाज मन्दिर मार्ग से बस चलेगी।

बाहर से आने वाले आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी पहाड़ गंज और आर्य समाज मन्दिर, अनारकली मन्दिर मार्ग पर ठहर सकेंगे।

बाकी पैसे १५ दिन पहले देने होंगे।

कार्यक्रम

२६.९.९४ रात्रि दिल्ली से बैंकाक।

२७.९.९४ प्रातः बैंकाक से पाटिया।

२८.९.९४ पाटिया से बैंकाक १.१०.९४ तक।

२.१०.९४ बैंकाक से सिंगापुर ४.१०.९४ तक।

सवारी अपना पास पोर्ट, दूरभाष नं० और Address अवश्य भेजे।

सीट बुक कराने के लिये Draft or Cheque संयोजक के नाम भेजें।

नोट : सीट बुक के लिए सम्पर्क एवम् जानकारी हेतु

संयोजक : शाम दास सचदेव, मन्त्री आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-५५ दूरभाष : (७५२६१२८) घर का

घर का पता २६१३, मस्तसिंह गली नं० ९, चूना मण्डी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-५५

श्री मालवीया जी, आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१ दूरभाष नं० ३४३७१८, ३१२११०

संयोजक : शाम दास सचदेव, फो. : ७५२६१२८ घर का, ७३८५०४ पी. पी.

अगर भारत सरकार ने किराया बढ़ा दिया तो वह देना पड़ेगा।

नोट : नये पासपोर्ट बनाने वाले ध्यान दें :—

फोटो ६ Date of Birth Certificate राशन कार्ड की कापी तथा फार्म लेकर संयोजक के पास पहुंच जायें, उनकी पूरी-पूरी सहायता की जायेगी।

मूर्ति पूजा की तार्किक समीक्षा [२]

डा० भवानीलाल भारतीय

सुधारकों द्वारा मूर्तिपूजा का खण्डन

उन्नीसवीं शताब्दी में जब राजा राममोहन राय तथा स्वामी दयानन्द जैसे धार्मिक नवजागरण के ज्योतिर्धर महापुरुषों ने मूर्तिपूजा को अवैदिक, आर्य उपासनाविधि के प्रतिकूल तथा आडम्बर, पाखण्ड, भ्रष्टाचार एवं दुराचार का पोषक तथा वर्द्धक बताया तो मूर्तिपूजा के समर्थन में भी इस युग के कतिपय धर्माचार्यों का स्वर फूट पड़ा। सर्वप्रथम रामकृष्ण परमहंस ने स्वकल्पित दृष्टान्तों, नाना रूपकों और अलंकारों द्वारा मूर्तिपूजा का समर्थन किया किन्तु उनके द्वारा मूर्तिपूजा के समर्थन में प्रस्तुत किये गये अधिकांश हेतु, हेतु न होकर मात्र हेत्वाभास ही थे। शास्त्र ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण परमहंस जी ने मूर्तिपूजा की आर्ष (हिन्दू) शास्त्रों के अनुसार आलोचना करने की आवश्यकता ही अनुभव नहीं की।

परमहंस जी की ही विचार सरणि का अनुवर्तन करते हुए उनके विश्वविख्यात शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने भी मूर्तिपूजा के समर्थन में अनेक मनः कल्पित युक्तियां एवं हेतु प्रस्तुत किये यद्यपि उनमें से भी अधिकांश तो शब्दाडम्बर पूर्ण-घटाटोप युक्त हेत्वाभास ही थे। तथापि स्वामी विवेकानन्द ने मूर्तिपूजा की निस्सारता को अनुभव किया था तथा राष्ट्र को जड़ता से ग्रस्त, पराधीन, परावलम्बी एवं पूर्ण निःसत्व बनाने में इस विधान की महती भूमिका को भी समझा था। फलतः उन्होंने अपने लेखन में अनेकत्र मूर्तिपूजा का प्रबल खण्डन भी किया। इस प्रकार कहीं समर्थन और अन्यत्र खण्डन कर विवेकानन्द ने खुद ही अपने मूर्तिपूजा विषयक विचारों को, वदतोव्याघात के दोष से दूषित कर दिया।

रामकृष्ण और विवेकानन्द की सरणि का ही अनुसरण करते हुए इस शताब्दी में कुछ ऐसे धार्मिक चिन्तक और प्रचारक उभरे हैं जो अपनी आकर्षक भाषा, अनेक प्रकार की आकर्षक युक्तियों, अलंकार योजना तथा विचारों के घटाटोप का निर्माण कर मूर्तिपूजा के समर्थन में तत्पर हुए हैं शास्त्रों से अनभिज्ञ अथवा अंग्रेजी भाषा और मुहावरों के प्रयोग से आक्रान्त नवशिक्षित समुदाय को सहज में आकर्षित करने वाली बातों से मुग्ध व्यक्ति इन लोगों के विचारों का सहज ही अनुगामी बन जाता है मूर्तिपूजा के ऐसे ही समर्थन तथा प्रचारक श्री पाण्डुरंग शास्त्री आठवले नामक एक महाराष्ट्रदेशीय सज्जन हैं, जिन्होंने स्वाध्याय के नाम से अपना एक नया सम्प्रदाय खड़ा किया है। वे देश विदेश में भ्रमण कर अपने विचारों का प्रचार करते हैं तथा जिनके अनुयायियों ने उन्हें साक्षात ईश्वर का अवतार तथा जग का सिरजनहार मान लिया है।

आठवले शास्त्री द्वारा मूर्तिपूजा का समर्थन

आठवले शास्त्री जी के विचारों का संकलन उनके अनुयायियों द्वारा किया जाकर सद्विचार दर्शन ट्रस्ट बम्बई के द्वारा विभिन्न पुस्तकों में प्रकाशित किया गया है। मूर्तिपूजा विषयक उनके ऐसे ही विचार इसी शीर्षक से, २०४२ वि० में प्रकाशित हुए हैं। हम आगे आठवले शास्त्री जी के इन्हीं विचारों की समीक्षा करेंगे। अपनी विवेचना के आरम्भ में ही आठवले शास्त्री जी ने मूर्तिपूजा को वैदिक ऋषियों की मनुष्य को प्रदत्त एक अनुपम भेंट कहा। ऐसा लगता है कि उन्हें कभी वेदों के दर्शन करने का भी अवसर नहीं मिला अन्यथा वे वैदिक ऋषियों पर मूर्तिपूजा का लांछन नहीं लगाते। वेद के सभी अध्येता चाहे वे एतद्देशीय हैं या अन्य देशस्थ, इस बात से सहमत हैं कि वैदिक संहिताओं में मूर्तिपूजा का विधान कहीं भी नहीं है। वेदों ने तो परमात्मा को शुक्र, अकाय, अव्रण, अस्नाविर, स्वयंभू, जैसे विशेषणों से सम्बोधित कर स्पष्ट घोषणा की है कि महान यश वाले उस परमपिता की कोई प्रतिमा, प्रतिकृति, अनुकृति अथवा प्रतीक नहीं है। शास्त्री जी इसी क्रम में मूर्तिपूजा को एक पूर्ण शास्त्र कहते हैं। पता नहीं वे शास्त्र किसे कहते या मानते हैं।

वैदिक शास्त्रों में तो हमें कहीं भी मूर्ति पूजा का विधान दृष्टिगोचर नहीं होता। वे मूर्तिपूजा को मोक्ष प्राप्त कराने वाला कहते हैं जबकि वेद शास्त्र तो ज्ञान भक्ति, उपासना, योगसाधना आदि को मोक्ष-प्राप्ति का साधन बताते हैं। पुराणों को छोड़कर किसी शास्त्र ने मूर्तिपूजा को मोक्ष का प्रापक नहीं कहा। यदि मूर्तिपूजा ही मोक्ष का साधन होती तो 'ऋतेज्ञानान्न मुक्तिः' (सांख्य ४/११) जैसे वाक्यों का प्रचलन क्यों होता जो स्पष्ट ही ज्ञान को मुक्ति का हेतु मानते हैं। इसी भांति विद्ययामृतमश्नुते (यजु० ४०/१४) तथा "तमेव विदित्वा अतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय" (यजु० ३१/१८) आदि वैदिक वाक्य इस तथ्य की तारस्वर से घोषणा करते हैं कि परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को जानकर ही मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकेगी और अध्यात्म विद्या के द्वारा ही अमृतत्व को पाया जा सकता है।

शास्त्री जी की मूर्तिपूजा विषयक युक्तियों का खण्डन

वस्तुतः आठवले शास्त्री जी द्वारा मूर्तिपूजा के समर्थन में जो युक्तियां अथवा तर्क प्रस्तुत किये हैं वे सर्वथा निस्सार ही हैं। यथा वे कहते हैं कि मूर्तिपूजा की सफलता करने वाले मनुष्य की समझदारी एवं कौशल पर निर्भर करती है। यहां विचारने की बात है कि समझदारी से या बुद्धिविवेक मूर्तिपूजा करने की तो बात ही व्यर्थ है, अधिकांशः मूर्तिपूजक तो गतानुगति या अन्धश्रद्धापूर्वक ही इस कृत्य में लिप्त रहते हैं। वे न तो यह जानते हैं कि हम जिस वस्तु की पूजा कर रहे हैं, वह जड़ है और न उन्हें यही पता रहता है कि यह स्थूल मानव-निर्मित प्रतिमा हमारी अभिलाषाओं, आकांक्षाओं तथा मनोरथों को पूरा करने में सर्वथा असमर्थ है। मूर्तिपूजा तो मात्र भेड़चाल है। आज से चालीस-पचास वर्ष पूर्व वैष्णो देवी के मन्दिर में दर्शनार्थ जाने वाले भक्तों की संख्या कुछ हजार ही थी किन्तु अब यह लाखों तक पहुंच गई है, तो इसका कारण यह नहीं है कि ये भक्तगण कुछ समझ बूझकर या मूर्तिपूजा की तार्किक समीक्षा कर इसी कर्म में प्रवृत्त हुए हैं। यह मात्र अंधानुकरण ही है। शास्त्री जी ने यह दावा किया है कि मूर्तिपूजा जीवन के विकास में आदि से अन्त तक हमारे साथ ही रहती है। यह उक्ति भी सर्वथा मिथ्या ही है क्योंकि मूर्तिपूजा को न अपनाकर अपितु उसका प्रबल विरोध करके भी नानक, दादू, सुन्दरदास, रदास, दयानन्द, राममोहन राय आदि सहस्रों महापुरुषों ने अपने आध्यात्मिक जीवन का विकास किया है।

सैमेटिक मतों में जड़पूजा

शास्त्री जी के चिन्तन में विचित्र विरोधाभास के दर्शन होते हैं। वे भारतीय धर्म सुधारकों द्वारा किये गये मूर्तिपूजा विरोध से तो अप्रसन्नता अनुभव करते हैं जबकि सैमेटिक मतों में किये गये मूर्तिपूजा विरोध को सह लेते हैं। यथा, वे लिखते हैं—सैमेटिक धर्म के लोगों का मूर्तिपूजा विरोध थोड़ा तार्किक है। उनके तर्क समझने लायक है तथा उनका तर्क तर्कसंगत है। किन्तु शास्त्री जी को यह पता नहीं कि ईसाइयत या इस्लाम ने मूर्तिपूजा का शाब्दिक विरोध भले ही किया हो व्यवहारतः वे हिन्दुओं से भी अधिक मूर्तिपूजक हैं। कैथोलिक ईसाइयों में तो मूर्तिपूजा उसी प्रकार प्रचलित है जिस प्रकार हिन्दुओं के विभिन्न पौराणिक समुदायों में। उनके उपासना-गृहों में मेरी तथा ईसा की प्रस्तर निर्मित प्रतिमाओं के समक्ष दीप जलाये जाते हैं। धूप जलाया जाता है। आरती की भांति घंटानाद पूर्वक मूर्ति के समक्ष प्रणिपात करते हुए भजन गाये जाते हैं। यह कैथोलिक कर्मकांड किसी भी हिन्दू मन्दिर में किये जाने वाले आडम्बरयुक्त क्रिया-कलाप से भिन्न नहीं है। उसी प्रकार इस्लाम में भी मक्का के काबा स्थित संगे असवद को चूमना, पीरों की दरगाह में जाकर कब्रों पर चादर चढ़ाना, धूप-बत्ती जलाना, पुष्प अर्पित करना तथा मकबरों में बड़े मुर्दों के जड़ स्मारकों के आगे सिजदा करना मूर्तिपूजा से भी बदतर है। तथापि शास्त्री जी में यह साहस नहीं कि वे सैमेटिक मजहबों की मूर्तिपूजा की आलोचना करें। वे तो इतना मात्र ही करते हैं कि इन सैमेटिक मतवालों को मूर्तिपूजा का शास्त्रीय रहस्य कोई नहीं बताता। मैं उनसे पूछता हूं मूर्ति-पूजा का शास्त्रीय रहस्य आखिर है क्या, और उसे हिन्दुओं के किस शास्त्र में लिखा गया है। वस्तुतः वेद, उपनिषद, स्मृति, सूत्र आदि जिन ग्रन्थों को हम शास्त्र कहते हैं उनमें तो कहीं भी मूर्तिपूजा का उल्लेख या उसकी सामान्य चर्चा भी नहीं है, उसका रहस्य बताना तो दूर रहा। यदि पुराणों को भी हम शास्त्रों में गिन लें तो वहां भी मूर्तिपूजा को अल्प बुद्धि वालों के लिए ही विधेय कहा गया है और उसमें किसी प्रकार के रहस्य होने की बात नहीं कही गई है। पुनः यदि चालितोष न्याय से हम मूर्तिपूजा के किसी शास्त्रीय रहस्य को मान भी लें तो उसे ईसाई, मुसलमान आदि कब मानने के लिये तैयार होंगे।

(क्रमशः)

हालैण्ड में भारतीयों की स्थिति [२]

डा० महेन्द्र स्वरूप

१५ वर्ष तक के बच्चों का स्कूल खर्च किताबों इत्यादि का, अगर ४५० गिल्डर से अधिक है तो जिन माता-पिता की सालाना आय १९,१७० गिल्डर तक है वे मुनिसपैल्टी या कोरपोरेशन से अतिरिक्त धन १२५ गिल्डर से ३०० गिल्डर तक पा सकते हैं। बासिस (माध्यमिक) स्कूल के बाद विद्यार्थी अपनी वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार आगे पढ़ते हैं अर्थात् योग्यता के अनुसार आगे पढ़ते हैं। जिन विद्यार्थियों की रिपोर्ट अच्छी नहीं है अर्थात् पढ़ने में तेज नहीं हैं वे उन स्कूलों में जाते हैं जहां पढ़ाई के साथ काम भी सिखाते हैं और बाकी विद्यार्थी अन्य स्कूलों में केवल विद्या अध्ययन करते हैं। इस प्रकार हर बच्चे को १५ वर्ष की अवस्था तक स्कूल जाना जरूरी है। १८ वर्ष के बाद सब विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए जो सरकार से धन मिलता है, २७ वर्ष की अवस्था तक, तो इस धन का एक निश्चित भाग हर विद्यार्थी को जब वह पढ़ाई के बाद कमाना प्रारम्भ करता है तो वापस करना पड़ता है परिस्थिति के अनुसार।

सामाजिक सुरक्षा

प्रत्येक परिवार केवल पति और पत्नी, जिनकी अवस्था ६५ वर्ष से कम है तथा दोनों काम नहीं करते हैं तो सरकार की तरफ से प्रतिमाह १७६० गिल्डर ३१ सेन्ट मिलते हैं व इसके अतिरिक्त ९६ गिल्डर २६ सेन्ट हर माह छुट्टी में घूमने का भत्ता या पैसा मिलता है।

६५ वर्ष से अधिक के व्यक्तियों को (केवल पति+पत्नी) हर महीने १५८४ गिल्डर २८ सेन्ट व ८६ गिल्डर ६३ सेन्ट मिलते हैं।

२७ वर्ष या ऊपर के स्त्री व पुरुष को जो अकेले रहते हैं, को हर माह खर्च के लिए १२३१.११ गिल्डर मिलते हैं, और ६७.३८ घूमने के लिए यात्रा इत्यादि के मिलते हैं। पर २७ वर्ष से कम अवस्था के लोगों (स्त्री या पुरुष) को उनकी परिस्थिति यानी पढ़ते हैं या काम करते हैं के अनुसार हर महीने सरकारी नियमानुसार पैसा मिलता है जो लोग काम करते हैं उन्हें अपनी सालाना आमदनी के अनुसार आयकर भरना पड़ता है।

ऊपर की, सामाजिक सुरक्षा के अन्तर्गत जो मदद के रूप में सरकार से धन मिलता है वह धन सबके बेंक के खाते या पोस्ट बेंक के खाते में हर महीने भेज दिया जाता है।

मकान के लिए सरकारी मदद

ह्यूर-सबसिडी अर्थात् जिन लोगों की आमदनी एक निश्चित सीमा तक है उन्हें सरकार से हर महीने मकान का किराया भरने के लिए मदद मिलती है पर इसके लिए एक शर्त है कि (१) जब कि सालाना आमदनी एक निश्चित सीमा से अधिक न हो। (२) मकान का किराया भी एक निश्चित सीमा के भीतर ही हो जैसे २५० गिल्डर से ८५० गिल्डर प्रति माह तक हो अर्थात् अगर मकान का किराया २५० गिल्डर तक है तथा ८५० गिल्डर से अधिक है तब सरकार से कोई मदद मकान के किराये के लिए नहीं मिलेगी। इस प्रकार २५० से ८५० गिल्डर प्रतिमाह किराये के मकान वाले ही मकान के किराये के लिए मदद पाने के अधिकारी हैं मकान का किराया भी होलेण्ड में हर साल महंगाई के अनुसार सरकारी नियमानुसार बढ़ता है जो हर वर्ष ३ से ५ प्रतिशत तक हो सकता है। इस प्रकार मकान भी सरकार की तरफ से व्यक्तिगत व परिवार की स्थिति देखकर दिया जाता है। पति-पत्नी के लिए कम से कम २ कमरे व रसोई इत्यादि के साथ मकान होना चाहिए तथा बच्चों के आधार पर उतने ही कमरे और होना चाहिए। उदाहरण के लिए अगर किसी परिवार में २ लड़के एक लड़की है तो इस ५ सदस्यों के परिवार के लिए कम से कम ४ कमरे का मकान होना चाहिए अर्थात् ३ सोने के लिए कमरे व एक बैठक होनी चाहिए। बूढ़े लोगों को सरकार नीचे की मंजिल के मकान देती है।

वर्तमान स्थिति

इधर कुछ वर्षों से देश में शरणार्थी अधिक आ रहे हैं व अब सरकार विदेशियों को अधिक नहीं आने देना चाहती हैं इसलिए सरकार ने एक नया कानून बनाया है कि जो अब १-६-१९९४ से लागू है कि अगर होलेण्ड में कोई ३ महीने से अधिक के लिये आना चाहता है तो उसे अपने देश से ही ३ महीने से अधिक का वीसा लेकर आना चाहिए अन्यथा अपने देश वापस जाना पड़ेगा। वैसे सरकार जानती है कि देश में चोरी से अर्थात् बिना वीसा या अनुमति के ५० हजार से अधिक विदेशी रहते हैं।

अब अगर कोई एक विदेशी स्त्री या पुरुष से शादी करना चाहे तो अब शादी के विभाग में जब शादी लिखाने जायेंगे तो देश के नियमानुसार लड़का-लड़की एक साथ, एक साल तक बिना शादी किये साथ रह सकते हैं। १ जून १९९४ से पहले लोग शादी के विभाग में लिखवाकर कि साथ-साथ रहते हैं, देश में रह सकते थे व बाद में एक साल के भीतर शादी भी कर सकते थे। परन्तु अब नये कानून के कारण शादी कराने का विभाग साथ रहने वालों या शादी करने वालों के बारे में अगर पति या पत्नी में कोई विदेशी है पहले स्थानीय पुलिस से जानकारी या अनुमति लेते हैं और अगर पुलिस ने अनुमति नहीं दी तो वह लड़के या लड़की की, जो विदेशी है, शादी नहीं कर सकता है:

पहले अगर कोई पुरुष किसी विदेशी स्त्री या लड़की से शादी करना चाहे तो चाहे काम करता हो या केवल सरकारी सहायता पाता हो तब भी शादी हो जाती थी और शादी के बाद दोनों को सरकारी सामाजिक सहायता हर महीने मिलती थी, पर यह सुविधा स्त्रियों के लिए नहीं थी। ९ या १० साल पहले से केवल वही स्त्री किसी विदेशी व्यक्ति से शादी कर सकती थी जिसकी आमदनी नियमानुसार राष्ट्रीय आमदनी से ऊपर होनी चाहिए तथा दो व्यक्तियों के लिए रहने की अपनी जगह भी होनी चाहिए तभी शादी करके होलेण्ड में अपने पति को रख सकती थी अन्यथा शादी के बाद अपने पति को होलेण्ड में नहीं रख सकती थी। अब सरकार ने एक नया कानून लागू कर दिया है जिसके अनुसार देश में रहने वाले को ५,००० गिल्डर दण्ड देना पड़ेगा। मार्च १९९४ में होलेण्ड में मुनिसिपैलिटी या कोरपोरेशन तथा प्रोविन्स की एसेम्बली तथा पार्लियामेन्ट के चुनाव हुए इन चुनावों में विशेष या विचारणीय बात यह हुई कि सारे देश में कोई भी हिन्दू चुनाव में नहीं जीता है जब कि १९९४ के पहले पार्लियामेन्ट या मुनिसिपैलिटी में कई जगह हिन्दू लोग चुने गये थे। पर इस बार सब हार गये जब कि कई शहरों में मुनिसिपैलिटी, प्रोविन्स तथा पार्लियामेन्ट में तुर्की से आकर बसे हुए लोगों व मोरक्को से आकर बसे हुए लोगों में से होलेण्ड की राष्ट्रीय पार्लियामेन्ट मे एक तुर्की व एक मोरक्को का सदस्य चुना गया व प्रोविन्स और कोरपोरेशन में भी काफी संख्या में चुनाव जीते हैं। होलेण्ड में हिन्दू करीब एक लाख पचास हजार हैं अगर इतने वोट एक हो जायें तो इतने वोटों के आधार पर राष्ट्रीय पार्लियामेन्ट में ६ सीटें तो वैसे ही मिल जायें। भारत के बाहर कई मिलियन भारतीय या भारतीय वंश के लोग हैं पर इनका कोई अन्तर्राष्ट्रीय संगठन समाज सेवा या राजनैतिक जागरण के लिये नहीं है।

हर एक को जो १२ वर्ष से ऊपर है सबको एक परिचय-पत्र जो कि मुनिसिपैलिटी में बनता है, रखना पड़ेगा। पर ये परिचय-पत्र उन्हीं लोगों के लिये आवश्यक है जिनके पास पासपोर्ट ड्राईविंग लाईसेंस या टूरिस्ट कार्ड नहीं है। पुलिस या समय आने पर अगर परिचय-पत्र नहीं तो इसके लिये एक महीने की सजा दी जाती है।

सिर पर चोटी रखना वैज्ञानिक है

विश्वनाथ प्रसाद, विद्यावाचस्पति

चोटी या शिखा आर्यों का जाति सूचक चिन्ह है। यह धर्म ध्वजा है। आर्यों ने एक दिन में निर्णय नहीं लिया कि सिर पर चोटी रखी जाए किन्तु इस महत्वपूर्ण शुरुआत के लिए कई वर्षों तक बुद्धिमत्ता पूर्ण वैज्ञानिक आधार की खोज होती रही।

लाखों वर्ष पूर्व जिस वैज्ञानिक आधार पर चोटी रखने की पद्धति आरम्भ की गई, उसके विषय में सर्वसाधारण को कोई जानकारी नहीं। बगैर समझे बूझे लकीर के फकीर की तरह इस रीति का अनुसरण किया जा रहा है। लोगों को चोटी रखने से लाभ तो मिलता ही है किन्तु वह लाभ क्यों और कैसे प्राप्त होता है, इसकी इनको कोई जानकारी नहीं। इधर विश्व के अनेक विद्वानों और वैज्ञानिकों ने इस पर खोज किया, चोटी की वैज्ञानिकता सिद्ध की। आइये ऐसे कुछ वैज्ञानिकों के लेखों को पढ़कर लाभ उठायें—

सर चार्ल्स पालिल्यूकस--

"चोटी का शरीर के उस आवश्यक अंग से बहुत सम्बन्ध है जिससे ज्ञान-वृद्धि और शरीर के सम्पूर्ण अंगों का संचालन होता है। जब से मैं चोटी के वैज्ञानिक महत्व को समझा हूं तब से मैं स्वयं भी चोटी रखता हूं।"

(सरस्वती सन १९१४ अंक ७)

डा० हृयमन--

"मैंने कई वर्ष भारत में रहकर भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया है। यहां के निवासी बहुत काल से सिर पर चोटी रखते हैं, जिसका जिक्र वेदों में भी पाया जाता है। दक्षिण में तो आधे सिर पर गोखुर के समान चोटी रखते हैं। उनकी बुद्धि विलक्षणता देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। अवश्य ही बौद्धिक विकास में चोटी बड़ी भारी सहायता देती है। सिर पर चोटी या बड़े बाल रखना लाभदायक है। यूरोप का कोई भी देश ऐसा नहीं जो सिर पर बड़े बाल न रखता हो। मेरा तो हिन्दू धर्म में अगाध विश्वास है। मैं स्वयं भी चोटी रखने का कायल हो गया हूं।

डा० आई. ई. क्लार्क एम. एम. डी--

"मैं जब चीन में भ्रमण करने गया, तो मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि चीनी लोग भी भारतवासियों की तरह आधे से अधिक सिर पर बड़े बाल रखते हैं। मैंने जबसे इस विज्ञान की खोज की है तब से मुझे विश्वास हो गया कि आर्य लोगों का प्रत्येक नियम या कार्य विज्ञान से ओत-प्रोत है और चोटी रखना आर्य लोगों का धर्म ही नहीं है अपितु सुषुम्ना के केन्द्रों की रक्षा के लिए ऋषि मुनियों की खोज का विलक्षण चमत्कार है।

मि. अर्लथामसन--

सुषुम्ना की रक्षा आर्य लोग चोटी रखकर करते हैं और यूरोप के वासी सिर पर बड़े बाल रखकर। इन दोनों में से विज्ञान की दृष्टि से चोटी रखना अधिक उपयोगी समझता हू क्योंकि यह ठीक उसी स्थान की रक्षा करती है जिसका मनुष्य जीवन के लिए सबसे अधिक महत्व है।

प्रो० मैक्समूलर ने भी लिखा था--

शिखा (चोटी) द्वारा मानव मस्तिष्क सुगमता से इस ओज शक्ति को धारण कर लेता है। श्री हाव्सन ने भारत भ्रमण के पश्चात एक लेख में आर्य पत्रिका नं० २५८ में लिखा था 'भारत में कई वर्षों तक रहकर मैंने भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं का अध्ययन किया। दक्षिण भारत में आधे सिर तक बाल रखने की प्रथा है। उन मनुष्यों की बौद्धिक विलक्षणता से मैं प्रभावित हुआ। निश्चित रूप से शिखा बौद्धिक उन्नति में बहुत सहायक है। मेरा तो हिन्दू धर्म में अगाध विश्वास है और अब मैं चोटी धारण करने का कायल हो गया हूं।

इसी प्रकार वैज्ञानिक सरक्यूकस ने लिखा है--

शिखा का शरीर के अंगों से प्रधान सम्बन्ध है। उसके द्वारा शरीर की वृद्धि तथा उसके तमाम अंगों का संचालन होता है। जबसे मैंने इस वैज्ञानिक तथ्य का अन्वेषण किया है। मैं स्वयं शिखा रखने लगा हूं।

जिस स्थान पर सिर पर शिखा रखी जाती है उसे पीनियल संधि कहते हैं। उस के नीचे एक ग्रन्थि होती है। जिसे पीयूष ग्रन्थि कहते हैं। इससे एक रस बनता है जो सम्पूर्ण शरीर व बुद्धि को तेज सम्पन्न तथा स्वस्थ एवं चिरंजीवी बनाता है। इसकी कार्य शक्ति चोटी के बड़े बालों व सूर्य की प्रतिक्रिया पर निर्भर करती है। मूलाधार से लेकर समस्त मेरु मण्डल में व्याप्त सुषुम्ना नाड़ी एक मात्र ब्रह्मरन्ध्र(बुद्धि केन्द्र)में खुलती है। इसमें से तेज (विद्युत) का निगर्मन होता रहता है। शिखा बन्धन द्वारा वह रुका रहता है। इसी कारण शास्त्रकारों ने शिखा में गांठ लगाकर रखने का विधान किया है।

डा० क्लार्क ने लिखा है—मुझे विश्वास हो गया है कि हिन्दुओं का हर एक नियम विज्ञान से भरा है। चोटी रखना हिन्दुओं का धार्मिक चिन्ह ही नहीं बल्कि सुषुम्ना की रक्षा के लिए ऋषियों की खोज का विलक्षण चमत्कार है।

मानवी बच्चा जब पैदा होता है तो सृष्टि नियम द्वारा वह सब देशों में सिर पर बाल लेकर ही आता है। शिखा स्थान पर भी। नौमास तक कम से कम सब मानवी बालक सब सभ्य देशों में जरूर ही बाल रखते हैं। बिना इसके कोमल सिर की रक्षा नहीं हो सकती। अत: सिर पर जो सब अंगों की अपेक्षा परम प्राणदाता, कोमल तथा जीवनोपयोगी है सृष्टि ने उसकी हड्डियों का दृढ़ ढक्कन दिया है और यत: यह विद्युत पुंज भी है, अत: उस पर बाल रूपी ऊन जो Non Condnctor (अचालक) है प्रदान की। ये बाल सिर को सदैव आग से जलने तथा चोटों से बचाते और गर्मी-सर्दी वर्षा के प्रकोप से भी रक्षा करते हैं। यही नहीं वरन सिर रूपी विद्युत यन्त्र को विद्युत पर वह काम करते हैं जो रेशम, सन या ऊन बिजली तारों की विद्युत को धारण व रक्षण करने में करता है। यदि बिजली के तार पर हम ऊन या रेशम या बाल या रबड़ न लपेटें तो बिजली भाग जायेगी और तार बिजली विहीन होने से प्रकाश शक्ति देना आदि कुछ भी काम न कर सकेंगे। इसलिए सिर पर बालों का होना ओज या बल वीर्य रक्षण की दृष्टि से प्रत्येक विद्वान समझ सकता है (स्व० मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी की लेखमाला से उद्धृत)।

अभी आपने चोटी रखने के वैज्ञानिक विचारों का अध्ययन किया। अब धार्मिक आदेशों की जानकारी भी प्राप्त करें। शिखा रखने का आदेश वेद और कात्यायन स्मृति से उद्धृत किये जा रहे हैं।

वेद में शिखा धारण करने का विधान कई स्थानों पर मिलता है—

"शिखिभ्य. स्वाहा (अथर्ववेद १९-२२-१५)"

चोटी धारण करने वालों का कल्याण हो।

"यशसे श्रियै शिखा" (यजुर्वेद १९-९२)

यश और लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए सिर पर शिखा धारण करें।

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्ध शिखेन च।
विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम्॥

(कात्यायन स्मृति १/१४)

सदा यज्ञोपवीत धारी और शिखा बद्ध रहना चाहिए। शिखा हीन और यज्ञोपवीत रहित मनुष्य जो कर्म करता है वह अकृत्य ही है।

याज्ञिकैर्गौर्णि मार्जनि गोक्षुरंच्य शिखा यजुर्वेदीय कठशाखा।

अर्थात सिर पर यज्ञाधिकार प्राप्त को गौ के खुर के बराबर स्थान में चोटी रखनी चाहिए। गौ के खुर प्रमाण से तात्पर्य है गाय के पैदा होने के समय बछड़े के खुर के बराबर स्थान पर सिर पर चोटी धारण करें।

मनुष्य जब किसी विषम समस्या या ईश्वर पर ध्यान चिंतन करता है तब ओजशक्ति उसकी ओर आती है किन्तु शिखा के मार्ग से ही वह शरीर के अन्दर प्रवेश करती है। यही ओज शक्ति मनुष्य की आयु, बल, बुद्धि, तेज आदि का कारण होती है।

सृष्टि से लेकर आज से पांच सहस्त्र वर्ष पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। राजनैतिक शासन के साथ उन अवनों के निवासी प्रसन्नता से सोलह संस्कारों का पालन

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सिर पर चोटी

(पृष्ठ ७ का शेष)

करते थे। उनका रहन सहन खान पान सब आर्यों की तरह ही होता था। उनके सिर पर नियमानुसार चोटी और कंधे पर यज्ञोपवीत होता था। महाभारत के विनाशकारी युद्ध के पश्चात भारत का यह विशाल सर्वोपरि राज्य स्थायी नहीं रह सका। विदेश से सम्पर्क टूट जाने के कारण, ये राज्य छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटकर स्वतन्त्र हो गये। भारत विश्व गुरु के ऊंचे शिखर से नीचे गिर गया। धीरे-धीरे ये क्षेत्र समय के प्रवाह में बहते गये और लाभकारी संस्कारों को त्यागकर उन्होंने चोटी और यज्ञोपवीत (जनेऊ) को सदैव के लिए छोड़ दिया।

सिर पर चोटी की स्थापना एक संस्कार के द्वारा की जाती है। इस संस्कार का नाम है मुण्डन या चूड़ाकर्म संस्कार। यह एक साल की आयु में या तीसरे वर्ष होता है। इसमें बच्चे के केश (बाल) निकलवाये जाते हैं। यह उस समय होता है जब बच्चे की खोपड़ी कड़ी हो जाती है। इसके पश्चात चोटी रखी जाती है जिसे शिखा कहते हैं और जो आर्यों का जाति चिन्ह है। प्रत्येक शिखाधारी का कर्तव्य होता है कि वह वैदिक संस्कृति सभ्यता की रक्षा में अपना तन मन धन लगा दें।

चोटी में गांठ लगाना आवश्यक है। बिना चोटी बांधे हम कोई भी धार्मिक कार्य सम्पन्न नहीं कर सकते। शिखा-सूत्र पुस्तक में शिखा की महत्व बताते हुए लिखा है कि संध्या करते समय गायत्री मन्त्र द्वारा शिखा में गांठ दी जाती है। उस समय अनेक सूक्ष्म तत्व आकर्षित होकर अपने अन्दर स्थिर होते हैं। वे मस्तिष्क केन्द्र से बाहर न चले जाएं और हम अपनी साधना के लाभ से ही वंचित न हो जाएं, इसलिए शिखा में गांठ लगाई जाती है। सदा ग्रन्थि लगाये रहने से मानसिक शक्तियों का बहुत सा अपव्यय बच जाता है। यह बाहर से विचार और शक्ति को ग्रहण तो करती है परन्तु भीतर के तत्वों का अपव्यय नहीं होने देती। शिखा के नीचे बुद्धि का स्थान है। शिखा-बन्धन द्वारा बुद्धि को सचेत किया जाता है कि वह परमात्मा में लग जाये। प्रभु भक्ति में आत्मा और परमात्मा का योग आवश्यक है, इसलिए मानो आत्मा और बुद्धि का गठ जोड़ किया जाता है।

चोटी रखने के इतने सारे लाभों को समझकर ही मुसलमान शासन काल में अपने प्राणों को बलिदान करने वाले गुरुओं की गाथाएं हम भूल गये। जिस कठिन परिस्थिति में वे गुजरे वह हमारे लिए स्मरणीय होनी थी किन्तु आज के चमक दमक में हमें उन घटनाओं पर तनिक भी विचार करने के लिए समय नहीं और यही मुख्य कारण है कि हिन्दू समाज दिन-प्रति दिन गिरता जा रहा है। वीर हकीकत राय ने गर्दन कटाना अच्छा समझा किन्तु किसी भी दशा में इस्लाम कबूल नहीं किया।

मुसलमान धार्मिक आदेश और निर्देश का पालन कर दाढ़ी रखता है। इसी प्रकार ईसाई गले में महात्मा ईसा का लाकेट (तावीज) लटकाकर अपने को भाग्यवान समझता है किन्तु हिन्दू सिर पर चोटी रखना घोर अपराध समझता है। हिन्दू में हीन भावना है, इसी कारण चोटी जैसी वैज्ञानिक वस्तु से उसे उदासीनता है। वह समझता है कि यदि सिर पर चोटी से स्थान दे दिया तो वह बाबा आदम के समय का माना जाएगा। आज के नवीन, शौकीन समाज में उसका कोई स्थान नहीं रहेगा और अनेक लोग उसे पिछड़ा मानेंगे।

हम हिन्दू कुम्भकरणी नींद में सो रहे हैं। ऐसी गहरी नींद में जो कभी भी हमको जगने के पश्चात होश में न आने देगी। दूसरे मतावलम्बी लोग, होश और पूरी शक्ति से सक्रिय हैं। पीर सदरदीन ने सबसे पहिले कोटड़ा ग्राम में मुकाम किया और हिन्दुओं को मुसलमान बनाया, तथा वहीं पर लोहाणों को खोजा बनाया। इन आने वाले इस्लाम प्रचारकों की मौज के उस समय पीर सदरदीन गुरु थे। उन पीर सदरदीन ने अपने तीन नाम रखे थे। सदरदीन, सहदेव और हरिचंद। पीर सदरदीन की गद्दी पर आजकल बम्बई निवासी हिज हाईनेस आगाखां विराजमान हैं।

इन्होंने इस्लाम धर्म के प्रचार करने के लिए जो ग्रन्थ रचना की है और हिन्दू बनकर जिस प्रकार हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का प्रयत्न किया है, उसका हम यहां थोड़ा सा नमूना दिखाते हैं। इनके एक ग्रन्थ में आगाखां आदि गुरुओं के लिए मुहम्मद शाह ने लिखा है कि—

पुस्तक समीक्षा

बुद्धि चमत्कार की सत्य घटनायें

लेखक : धर्मपाल शास्त्री

पृष्ठ १६८, मूल्य १० रुपये

प्रकाशक : किताब घर, बाजार गांधीनगर, दिल्ली-१

परमात्मा ने मनुष्य जीवन की सार्थकता के लिये सारे साधन दिये, उनमें बुद्धि नामक तत्व प्रमुख है सब कुछ होते हुए यदि यह छीन ली जाय तो पागलों का टोला मारा-मारा फिरेगा।

बुद्धि अपने में स्वयं एक चमत्कार है। जीता-जागता कम्प्यूटर है। बुद्धि के समक्ष प्रश्न उपस्थित होते ही मस्तिष्क के तन्तु समाधान ढूंढ़ने में संघर्षरत हो जाते हैं।

इसीलिये कहा है कि—

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतोबलम्।

बुद्धि का ही बल है विवेक शून्य व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है। प्रस्तुत पुस्तक में "जड़ मति होत सुजान। बुद्धि बड़ी या भालू" इसी को पुराने लोग कहते थे "अकल बड़ी या भैंस"।

"चन्द्रगुप्त का बुद्धि चमत्कार" एकाग्रबुद्धि का चमत्कार 'ज्ञान बुद्धि का चमत्कार" "जैसे को तैसा" आदि बुद्धि वैचित्र्य की अद्भुत कहानियों का संकलन पढ़ने पर बुद्धि को प्रकाश मिलता है।

शिवा जी महाराज को माता-जीजाबाई का दिया ज्ञान, स्वामी दयानन्द को चूहे से प्राप्त ज्ञान से शिक्षा मिलती ही है। विवेक से भ्रष्ट व्यक्ति का भी वैचित्र्य है आग-पानी का भी मेल है। एक भारतीय ने स्व विवेक के द्वारा आग और पानी से हुक्का बनाया तो दूसरी ओर इसी आग व पानी से रेल का इञ्जन बना दिया। यह है बुद्धि का चमत्कार—

बुद्धिकणों में भी उत्तम, मध्यम, मन्द बुद्धि। उत्तम बुद्धि को मेधा कहा है जिन्होंने अपनी प्रतिभा से समस्याओं के चमत्कारिक उपाय निकाले हैं।

इस पुस्तक का यथा नाम तथा गुण के आधार पर भरपूर मनोरंजनयुक्त घटनायें दी हैं जिन्हे पढ़कर पंच-तन्त्र व हितोपदेश की कथायें तथा दृष्टान्तसागर जैसे आख्यान स्मरण हो जाते हैं।

पुस्तक अपने में घटना प्रधान है बुद्धिगम्य है परिवारों में पठनीय व संग्रहणीय है। जहां लेखक का पुरुषार्थ सराहनीय है वहीं प्रकाशक जिन्होंने इसे प्रकाशित कर उपकृत किया है। अब यह कथा संग्रह आपके हाथों में है पढ़ें और आत्म-कल्याण के भाव जगायें। धन्यवाद

—डा॰ सच्चिदानन्द शास्त्री, सम्पादक

वीरे कृष्ण पहेरता पीताम्बर धोती।
वीरे आज कलि में कबी ने टोपी॥
वीरे कृष्ण धारता टिसरी चाड़ी।
वीरे आज कलि में बढ़ाई दाढ़ी॥

अर्थात जहां कृष्ण पीताम्बर पहिनते थे, वहां आज कलियुग में गुरु की टोपी पहिनते हैं और जहां कृष्ण टिसरी संवारते थे, वहां आज कलियुग में गुरु की दाढ़ी रखते हैं। इसी तरह हजरत मुहम्मद के लिये लिखा है कि—

वीरे भाई रे आज कलयुग मां ईश्वर आदम नाम धराया।
गुरु ब्रह्मा ने रचो मुहम्मद कहाव्या ही वीरे भाई,
वीरे भाई रे गुरु उत्तम विष्णु जी अली रूप नाम धराया।

अर्थात कलियुग में परमेश्वर ने अपना नाम आदम रखा, ब्रह्मा मुहम्मद कहलाये और विष्णु अली नाम से प्रसिद्ध हुए।

इस प्रकार ऊट पटांग साहित्य रचकर हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा है। आज के हिन्दुओं में यदि अब भी आर्यों का खून है तो सचेत होकर इसका डटकर मुकाबला करें नहीं तो संसार से समाप्त हो जायेंगे और कोई नाम लेने वाला भी न बचेगा।

—एस. ई. ५४ विद्युत कालोनी, कोरबा (म. प्र.)

शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विश्व में फैले अज्ञानान्धकार को दूर करने, मानव मात्र को समान अधिकार दिलाने, पाखण्डवाद में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने तथा झोंपड़ो से महल तक वेदो के ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिये आर्य समाज रूपी सस्था की स्थापना की।

रायपुर मे सुमेर पीठ काशी के जगद्गुरु शकराचार्य श्री कपिलेश्वरानन्द जी सरस्वती ने जो महिलाओं को वेद पाठ करने से उनके शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने व गर्भाशय के भी प्रभावित होने की मन घड़न्त बात कही है उनके इस कथन को अवैदिक व अवैज्ञानिक तथा असवैधानिक सिद्ध करने के लिये आर्य समाज नीमच के माध्यम से जावरा से पधारे श्री शोभाराम जी शास्त्री ने स्वामी शकराचार्य जी को शास्त्रार्थ की चुनौती दी है।

आपने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि जिस देश मे चारों वेदो की पण्डिता मैत्रेयी, मदालसा, अनसूया, गार्गी जैसी विदुषी नारियां हुई हों वहीं आज नारी को वेद जैसे पवित्र व कल्याणकारी ज्ञान से वंचित रखने का प्रयत्न किया जा रहा है।

श्री शास्त्री जी ने मानव मात्र से वेदों का पठन पाठन व श्रवण करने की अपील की है। आपने बताया कि 'माता निर्माता भवति' के कथनानुसार जब तक स्त्री जाति सुशिक्षित व विद्वान नहीं बनेगी उन्नत राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता।

—मन्त्री

आर्यसमाज गाजियाबाद (नगर)

शताब्दी समारोह

२१,२२ व २३ अक्तूबर १९९४ को मनाया जायेगा

आर्यसमाज गाजियाबाद नगर को स्थापित हुए एक सौ वर्ष हो चुके हैं। इस उपलक्ष्य मे इसका स्थापना शताब्दी समारोह २१, २२ व २३ अक्तूबर १९९४ को अग्रसेन भवन लोहियानगर में बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर कई आर्य सन्यासी, विद्वान तथा भारतीय स्तर के आर्य नेतागण पधारेंगे। इस समारोह मे देश की ज्वलन्त समस्याओ पर गम्भीरता से विचार किया जायेगा। इसके अतिरिक्त शिक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन और आर्य वीर सम्मेलन का भी आयोजन होगा।

—घनश्यामसिंह आर्य मन्त्री

प्रवेश सूचना

गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर

विगत वर्षों की श्लाघनीय उपलब्धियों के साथ 'गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर'' का नवीन शिक्षा सत्र ८ जुलाई १९९४ से प्रारम्भ हो गया है। पुराकालीन आश्रम पद्धति के अनुसार समग्र व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान देने वाली यह सस्था उत्तरप्रदेश शासन से प्रथम श्रेणी मे वर्गीकृत तथा अनुदानित है। सुविधा की दृष्टि से अध्यापन क्रम विभिन्न वर्गों मे विभक्त किया गया है।

सभी परीक्षाए राजकीय विभागों में नियुक्ति, प्रशिक्षण एव तकनीकी सस्थाओं मे प्रवेश हेतु मान्य हैं।

बच्चे की अन्तर्निहित प्रतिभा को उद्दीप्त करके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास भारतीय सस्कृत के प्रति रुचि, अनुराग स्वाभिमान एव स्वावलम्बन की भावना मुखरित करना गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की मौलिक विशेषता है।

प्रथम प्रवेश शुल्क ४००) तथा प्रतिमास भोजनशुल्क १५०) है। घृत, दुग्ध, तेल, साबुन एव पाठ्य पुस्तको पर व्यय बच्चे की निजी आवश्यकता एन क्षमता के अनुसार पृथक् से देय होगा। विद्युत् चालित उपकरणो से युक्त गुरुकुल का एकान्त शान्त, सुरम्य वातावरण अध्यापन मनन के लिए नितान्त उपादेय है। प्रवेशार्थी सघ, सम्पर्क स्थापित करें।

प्राचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर
तिलहर, शाहजहापुर (उ०प्र०)
पि० २४२३०७

मन्दिर का चबूतरा पुलिस ने गिराया

आन्दोलन की चेतावनी

कानपुर—आर्य समाज मन्दिर गोविन्दनगर की एक सभा श्री देवीदास आर्य प्रधान, केन्द्रीय आर्य सभा की अध्यक्षता में हुई जिसमें एक प्रस्ताव पारित कर जूही पुलिस की इस हरकत की कड़ी निन्दा की गयी। जिसमें एक धनवान महिला के इशारे पर आर्य समाज जूही का चबूतरा गिरा दिया है। प्रस्ताव में मांग की गई है कि पुलिस पुनः इस चबूतरे को बनवा दे वरना नगर की समस्त आर्य समाजें पुलिस के विरुद्ध आन्दोलन करेगीं।

वक्ताओं ने यह बताया कि यह चबूतरा बहुत जीर्ण-शीर्ण था उस पर यज्ञ व कथा सत्संग होते थे उस चबूतरे की मरम्मत कराने पर पड़ौस की महिला ने जिसने स्वयं अपने चबूतरे पर, शिव मन्दिर बना रखा है के इशारे पर पुलिस ने आर्य समाज का चबूतरा गिरा दिया है।

सभा में सर्वश्री देवीदास आर्य, बालगोविन्द आर्य, जगन्नाथ शास्त्री कैलाश मोंगा, जगेश्वरमुनि आदि के भाषण हुये।

—मन्त्री

शोक समाचार

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज के कार्यकर्ता और आर्य वीर दल के पुरानी पीढ़ी के शिक्षक राणा रामसिंह जी का २२ जुलाई १९९४ को इनके निवास स्थान १४५ आर्य निवास छत्तरपुर में निधन हो गया है। समस्त आर्य जगत् दिवंगत आत्मा की सद्गति की कामना करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

वार्षिक निर्वाचन

—आर्यसमाज सवाई माधोपुर में श्री सुरेशचन्द्र दरगड़ प्रधान, श्री रामजीलाल आर्य मन्त्री, श्री राधेश्याम मीना कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज मुरली में श्री जगदीश शर्मा आर्य प्रधान, श्री सुरेश पण्डित मन्त्री चुने गये।

—आर्य समाज कलकत्ता में श्री श्रीनाथ दास गुप्त प्रधान, श्री राजेन्द्रप्रसाद जायसवाल मन्त्री, श्री बिन्देश्वरीप्रसाद जायसवाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ में डा० वीरेन्द्र बहादुरसिंह प्रधान, इं० सत्यदेव सैनी मन्त्री, श्री आनन्दकुमार भंडारी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद में श्री सुखवीरसिंह आर्य प्रधान, श्री जयप्रकाश त्यागी मन्त्री, श्री दामोदर दास आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

शहीद परिवार सहायता फंड वितरण समारोह सम्पन्न

हिन्द समाचार ग्रुप जलन्धर (पंजाब) द्वारा संचालित 'शहीद परिवार सहायता फंड' का ६६वां वितरण समारोह दिनांक ३१ जुलाई १९९४ को जालन्धर में सम्पन्न हुआ जिसमें आतंकवाद से पीड़ित १०५ परिवारों में १० लाख ५० हजार रु० की राशि यू० टी० आई० बान्डस के रूप में वितरित की गयी। इस समय तक फण्ड में कुल जमा राशि लगभग ५ करोड़ रुपये में से ४०६७६,२३२ रुपये ३७१४ परिवारों में वितरित किये जा चुके हैं।

इस अवसर पर प्रसिद्ध पत्रकार श्री अरुण शौरी मुख्य अतिथि थे।

—सम्पादक

चीन से सावधान

(पृष्ठ ४ का शेष)

पूरा होनी है अतः पहले के समान पुनः भारत को भुलाया जा सकता है। इसलिए उसने पुनः भेड़ की खाल ओढ़ली है किन्तु इसके अन्दर भेड़िए का खूंखार रूप छिपा हुआ है। वह १९६२ के युद्ध में भारत से हड़पी भूमि का एक इंच भी भारत को देने के लिए तैयार नहीं है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि चीन ने आशा के विपरीत, १९६२ में बड़ी निर्दयता से आक्रमण किया था तथा भारतीय सेना का नरसंहार करके २० हजार वर्गमील भूमि पर कब्जा किया था। यदि अमरीका के राष्ट्रपति जान कनैडी भारत की सहायता न करते और अमरीका का छठा बेड़ा जो परमाणु आयुधों से लैस था बंगाल की खाड़ी में चीन पर प्रत्याक्रमण के लिए न आ जाता तो चीन अपनी ओर से एकतरफा युद्धविराम न करता। हम युद्ध के लिए तैयार नहीं थे न हमारे पास आधुनिक अस्त्र ही थे हम तो पंचशील एवं हिन्दी चीनी भाई भाई का नारा लगा रहे थे। चीन के लिए युद्ध नीति के अनुसार यह हम पर आक्रमण करने का सुअवसर था जिसका पूर्ण लाभ उसने उठाया। हमने इसी बात पर सन्तोष कर लिया कि चीन ने हम पर आक्रमण करना बन्द करके युद्ध विराम कर दिया अतः हमने भी युद्ध बन्द कर दिया युद्ध-कौशल की दृष्टि से यह भी हमारी भयंकर भूल थी। भारत को उस समय युद्ध की घोषणा कर देनी चाहिए थी जैसा कि श्री कनैडी ने भारत को परामर्श दिया था। अस्त्र शस्त्र (आधुनिकतम)की पूर्ति करने का दायित्व अमेरिका ने ले लिया था, मानव शक्ति से पूर्ण ससार की कुशलतम सेना हमारे पास थी। चीन उस समय अणुशक्ति सम्पन्न देश भी नहीं बना था और अणु आयुधों से लैस अमरीका का छठा बेड़ा बंगाल की खाड़ी में तैनात ही इसीलिए किया गया था जिससे चीन पर सफलता पूर्वक आक्रमण हो सके। यदि भारत युद्ध विराम स्वीकार न करके युद्ध लड़ता तो भारत का सम्पूर्ण भाग उसके पास वापस आ जाता तथा तिब्बत भी स्वतन्त्र हो जाता।

तिब्बत पर चीन का प्रभुत्व स्वीकार करके (१९५४ में) भारत ने भयंकर भूल की थी उसी का परिणाम चीन का भारत पर आक्रमण था। तिब्बत संसार का सर्वोच्च पठार है जहां चीन ने अपने अणु आयुध तैनात कर रखे हैं। चीन पाकिस्तान के आतंकवादियों को आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों की पूर्ति कर रहा है। चीन ने पाकिस्तान को आधुनिक लड़ाकू विमान भी देने का वायदा किया है। भारत के विरुद्ध चीन सभी प्रकार के आतंकवादियों को शस्त्रों की पूर्ति कर रहा है। वह चाहता है कि भारत में अराजकता हो, उसी समय पाकिस्तान की ओर से भारत पर आक्रमण करे। ध्यान रहे कि चीन ही भारत पर आक्रमण की पहल करेगा। भारत, पाकिस्तान तथा चीन का यह युद्ध विश्वयुद्ध का आरम्भ होगा, यह पूर्ण रूप से सम्भावित है।

अनमोल धरोहर है आजादी

स्वतन्त्रता का पाठ-पढावें, स्वतन्त्रता का पर्व है आया।
जिसकी खातिर वीर शहीदों ने अपना था खून बहाया।।
बाप्पा, रावल, राणा सांगा ने जीवन भर विपदा झेली।
लड़ मुसलमानों से निर्भय' शोणित की थी होली खेली।।
रानी दुर्गावती वास्तव में थी देशभक्त अलबेली।
अकबर की लाखों सेना से, वीरांगना थी लडी अकेली।।
जिसकी देख वीरता रण में, अकबर था थर थर थर्राया।
स्वतन्त्रता का पाठ पढावें, स्वतन्त्रता का पर्व है आया।।

महाराणा प्रताप, शिवाजी, अन्य वीर वन्दा वैरागी।
आजादी के लिए लड़े थे, देशभक्त योद्धा थे त्यागी।।
उन वीरों की देख वीरता दुश्मन फौज युद्ध से भागी।
सिंह गर्जना सुन वीरों की, सोई भारत जनता जागी।।
दुर्गादास ने, छत्रसाल ने, मुगलों का था राज्य हिलाया।
स्वतन्त्रता का पाठ पढावें, स्वतन्त्रता का पर्व है आया।।

नाना साहिब, वीर कुंवरसिंह तात्या टोपे, लक्ष्मी बाई।
मंगल पाण्डे, तुलाराम थे अद्भुत देशभक्त बलदाई।।
अंग्रेजों से आजादी की, बलवानों ने लड़ी लड़ाई।
जिनके बल से कांप उठी थी, गोरों की सेना अन्याई।।
देशद्रोही लोगों के कारण, इन सबने धोखा खाया।
स्वतन्त्रता का पाठ पढावें, स्वतन्त्रता का पर्व है आया।।

बिस्मिल, शेखर, भगतसिंह, आजादी के थे परवाने।
जिये देशहित, मरे देशहित, थे वे देशभक्त मरदाने।।
फांसी के फन्दों को चूमा, गाये आजादी के गाने।
स्वतन्त्रता की भेंट चढ़ा दी भरी जवानी थे मस्ताने।।
वीरों के बलिदानों से ही हमने ये स्वराज्य है पाया।
स्वतन्त्रता का पाठ पढावें, स्वतन्त्रता का पर्व है आया।।

प्यारे वीर शहीदों की अनमोल धरोहर है आजादी।
कभी नहीं होवे देंगे हम, प्यारे भारत की बर्बादी।।
जो भारत के पक्के दुश्मन, जिन्हें नहीं है भारत प्यारा।
इनका वंश मिटा देंगे हम, आज यही है प्रण हमारा।।
कायरता से जग में जीना, हमको नहीं कभी भी भाया।
स्वतन्त्रता का पाठ पढावें, स्वतन्त्रता का पर्व है आया।।

—प० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक

जय भारत जय भारत

वन्देमातरम्

भारत माता की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन समस्त वीर शहीदों की स्मृति में शत् शत् प्रणाम।

अपने राष्ट्र भारत की एकता, अखण्डता एवं प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए हम सब एक होकर तन मन और धन से देश सेवा का व्रत लें।

आज के इस ४८वें स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रवासियों को हम अपनी हार्दिक शुभ कामनायें देते हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

राज तिलक नैय्यर, प० अशोककुमार, सुभाष गुप्ता, भगतराम आर्य, बीरेन्द्र खट्टर, वैद्य महेन्द्रपाल, मंजुलता, माता हंस, रामकृष्ण सतीजा नरेशचन्द्र पुरी, साखदेव मेहता, तिलकराज चोपड़ा विक्रम कपूर

मानव विकास परिषद् दिल्ली के सौजन्य से

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४१/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१४-८-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (O)९३
R N- 626/57 licensed to post without prepayment licence No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 11-12-8 1994

अश्लीलता की नदी खतरे के निशान से ऊपर

दिल्ली पत्रिका स्टालों पर इस वक्त लगभग एक ... मासिक पत्रिकाएं मानवता, भारतीय संस्कृति और ... तमाम सिद्धान्तों पर पानी फेरते हुए भारत की मातृ ... लड़कियों और औरतों को पूर्ण नग्न तस्वीरें प्रकाशित क... भविष्य को सेक्स के अन्ध मार्ग पर ले जाने का प्रयत्न क... जो काम रजनीश अपने जीवन काल में पूरा न कर सका उसका काम ये पत्रिकाएं पूरा करती जान पड़ रही हैं। विडम्बना यह है कि कुछ समय पूर्व एक अदालत ने भी इस प्रकार की पत्रिका में प्रकाशित सामग्री को गलत न मानते हुए पत्रिका के हक में फैसला दिया था। धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय महत्व की सामग्री को जनता तक पहुंचाने वाली पत्रिकाओं को हमारे युवा अत्यन्त अल्प मूल्य में भी चाहें न खरीदें परन्तु इस प्रकार की अश्लील पत्रिकाओं को ३०) से लेकर १००) तक भी वे खरीदने को तैयार रहते हैं और बड़ी उत्सुकता से बाजार में नए अंक के आने का इन्तजार करते हैं।

जरा सोचिए

इन पत्रिकाओं में प्रकाशित तस्वीरें भारत के ही किसी परिवार की मां, बहन, बेटी या पत्नी की है। यदि इस प्रकार की पत्रिकाओं के प्रचलन को प्रोत्साहन दिया गया तो किसी वक्त हम में से भी किसी परिवार की मां, बहन, बेटी या पत्नी इन प्रकाशकों के चंगुल में फंस कर इस अश्लीलता की नदी में सदा-सदा के लिए डूब सकती है। सरकार, पुलिस और अदालतों ने भी यदि समय रहते इस दिशा में ठोस ...त्मक कदम न उठाए तो भविष्य में समाज को कानून के अनु... में रखना अत्यन्त कठिन हो जायेगा।

—विमल वधावन, एडवोकेट

स्व० पं० वीरसेनजी वेदश्रमी वेदविज्ञानाचार्य द्वारा वेदों के महत्वपूर्ण सस्वर ध्वनिपूरित्त कैसेट्स

वेद पढ़ने का अधिकार

(पृष्ठ १ का शेष)

यों भी यदि हम प्राचीन काल की दिनचर्या पर दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि वन के लिए प्रस्थान करने से पहले जब भगवान राम माता कौशल्या के दर्शन करने गये तो उन्हें दैनिक अग्निहोत्र करते पाया (बाल्मीकि रामायण श्लो० १५ अध्याय २०)। यदि माता कौशल्या वेद विद्या विहीन होती तो अग्निहोत्र कैसे करती? यज्ञ में पति पत्नी के बैठने का विधान है। यदि पत्नी वेदपाठी (मन्त्रपाठी) न हो तो क्या उसे केवल यों ही बिठाया जाये?

अतः नारी ही नहीं, वेद पठन-पाठन का अधिकार तो भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग अपितु समस्त विश्व के मानव-मात्र को है।

-- जे० एस० यादव

आर्यसमाज अशोक बिहार फेस-I का निर्वाचन

रविवार ११-७-९४ को सर्व सम्मति से निर्वाचन सम्पन्न हुआ श्री दरबारीलाल प्रधान, श्री आनन्दप्रकाश आर्य कार्यकर्त्ता प्रधान, श्री कुलभूषण साहनी मन्त्री, श्री रामप्रकाश सक्सेना कोषाध्यक्ष, श्री वेदप्रकाश भगत उपमन्त्री चुने गये।

संस्कृत महा कुम्भ, संवत् २०५१

भारत की राजधानी दिल्ली के लालकिला मैदान में संस्कृत महासम्मेलन का महान आयोजन

(२१, २२, २३ अक्तूबर १९९४)

देश के कोने कोने से विद्वानों का समागम
संस्कृत सेवा-संस्कृत रक्षा-संस्कृत प्रतिष्ठा के लिए
कुल संस्कृत प्रेमियों को सम्मेलन में उपस्थित होने की प्रार्थना
कृपया आज ही पूर्ण ब्योरे सहित स्वीकृति भेजे

प्रमुख कार्यक्रम

संस्कृत रक्षा सम्मेलन
विश्व शान्ति महायज्ञ, संगीत सम्मेलन
संस्कृत नाटक, संस्कृत कवि सम्मेलन

नोट—(१) सम्मेलनार्थ पधारे महानुभावों के लिए दिल्ली में रहने, खाने की निःशुल्क व्यवस्था होगी।
(२) अपने नगर से आगन्तुकों की संख्या लिखें।
(३) इच्छुक सज्जन १००) भेजकर स्वागत समिति के सदस्य बनें।

संयोजक
विमलदेव भारद्वाज
संस्कृत भवन, १२५ रामबिहार दिल्ली-११००९२
दूरभाष : २२२२४३०
अखिल भारत संस्कृत महासम्मेलन

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा डा० सच्चिदानन्द शास्त्री के लिए मुद्रक और प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन दिल्ली-२ से प्रकाशित।
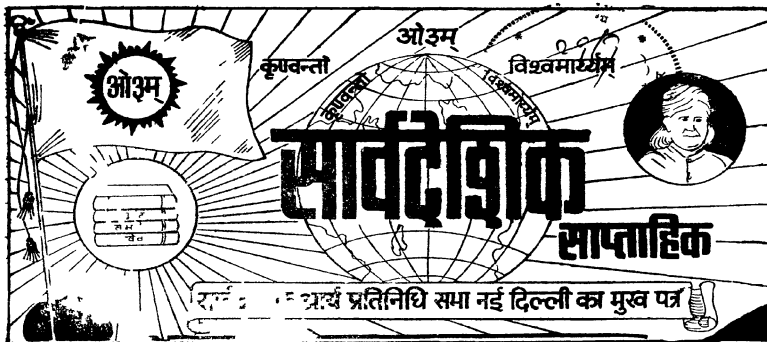
सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष १९ अंक २१] | दयानन्दाब्द १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ | भाद्रपद कृ० ७ सं० २०५१ २८ अगस्त १९९४

संगठित और चरित्रवान लोग ही देश और समाज की रक्षा कर सकते हैं

आर्यसमाज बांकीपुर (पटना) में श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का ओजस्वी भाषण

पटना २१ अगस्त। आज यहां आर्यसमाज बांकीपुर पटना के रक्षा बन्धन एवं श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने भाषण में कहा कि इस पाटलिपुत्र (पटना) ने इतिहास की कई कड़ियों को देखा है और समय आने पर उन्हें बदलने का भी सद्प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि जब राजा नन्द के विलासी जीवन के कारण भारत का साम्राज्य खतरे में पड़ गया था उस समय इसी पाटलिपुत्र में मौर्य साम्राज्य के संस्थापक सम्राट चन्द्रगुप्त ने जन्म लिया था और अपनी चढ़ती जवानी में चन्द्रगुप्त ने आचार्य चाणक्य के चरणों की रज को माथे पर लगाकर भारत के कोने-कोने से चुनकर विदेशियों को बाहर निकालने का अभियान चलाया था और उनका यह अभियान बहुत ही सफल रहा जिससे प्रभावित होकर विदेशी सम्राट के प्रधानमन्त्री सल्यूकस को अपनी बेटी हेलना का विवाह सम्राट चन्द्रगुप्त के साथ करना पड़ा। उस समय भारत का पुराना वैभव फिर लौट आया था और आर्य साम्राज्य की ध्वजा अटक से कटक तक फहराई गई थी।

स्वामी जी ने कहा कि बिहार की वीर भूमि ने सदैव ही देश को हीन अवस्था से उठाने का प्रयास किया है। यदि गांधी जी चम्पारण न आते तो शायद उन्हें यह ख्याति प्राप्त न होती जो आज उन्हें देश में मिली हुई है। गांधी जी जब चम्पारण आये तो यहां की जनता ने उन्हें हाथों में उठा लिया था और यहां से उन्हें जो सम्मान मिला वह एक इतिहास बन गया। इसी प्रकार बिहार ने अनेक रत्नों को जन्म दिया है।

नवाखाली (पूर्व बंगाल) के हत्याकांड का बदला बिहार के वीरों

(शेष पृष्ठ ११ पर)

ईसाई महिलाओं का हश्र भी शाहबानो जैसा होगा?

क्या केरल में शाहबानो प्रकरण दुहराया जाएगा और राज्य सरकार को ईसाई महिलाओं के पैतृक संपत्ति में समान अधिकार की गारंटी करने वाले उच्चतम न्यायालय का निर्णय उलटने की अनुमति दी जाएगी? ये सवाल १ अगस्त को भारत के राष्ट्रपति के सामने रख गये हैं और उनसे मांग की गई है कि वे उच्चतम न्यायालय का निर्णय नकारने वाले किसी बिल या अध्यादेश को स्वीकृति नहीं दें और इस प्रकार ईसाई समुदाय के सकीर्ण कठमुल्लावादी तत्वों के दबावों पर राज्य सरकार के असंवैधानिक प्रस्तावों पर रोक लगाएं।

केरल की ईसाई महिलाएं राज्य सरकार के इस कदम के विरोध में एकजुट हो रही हैं और हाल के इतिहास में पहली बार अपने गिरजाघर और पादरी और राज्य सरकार से टकरा रही हैं। सीरियन ईसाई समुदाय (कैथोलिक चर्च, आर्थोडाक्स चर्च, जैकोबाईट चर्च, मारथोमा चर्च आदि) से सम्बन्धित हर प्रकार के महिला संगठनों ने 'महिला अधिकारों के लिए ईसाई महिलाओं का फोरम' बनाया है।

फोरम की ओर से रचेल मैथ्यू, अनम्मा जोसफ मोसी, पाथोज और शालिना ज्वाइंट भारतीय जनवादी महिला एसोसिएशन की वृंदा करात, आई इन्सुलिन की सूसू प्रदीप और साथ सुशीला गोपालन के प्रतिनिधि-मंडल ने राष्ट्रपति से मिलकर उन्हें अपना ज्ञापन दिया है क्योंकि इस विधेयक पर राष्ट्रपति की स्वीकृति अनिवार्य है। जब राज्य सरकार ईसाई महिलाओं के संगठन फोरम और अन्य महिला संगठनों की बात सुनने के लिए भी तैयार नहीं है तब राष्ट्रपति से अपील करना ही एक रास्ता बच जाता है।

भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम के अनुसार पत्नी अपने पति की संपत्ति के एक तिहाई हिस्से की अधिकारी होगी और बाकी दो तिहाई हिस्सा बेटा बेटी में बराबर बराबर बांटे जाएंगे। पर ईसाई समुदाय और काफी हद तक नियन्त्रित करने वाले पादरी और बिरादरी त्रावणकोर और कोचीन उत्तराधिकार अधिनियम पर अमल करते रहे। यहां तक केरल उच्च न्यायालय ने इसे वैध ठहराया और ईसाइयों के व्यक्तिगत पारिवारिक कानून के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादकीय

सामाजिक उन्नति क्यों?

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात एक व्यक्ति मुझे मिला और कहने लगा कि यह कैसी आजादी है मैंने कहा क्यों क्या बात है—वह बोला-आजादी में मेरे हाथ में तलवार होती और दुश्मन का सर-धड़ से अलग कर देता। पर ऐसा नहीं है। मैंने कहा कि भाई वह भी यही चाहता है कि मेरे हाथ में तलवार हो और दुश्मन की गर्दन मैं काट दूं। यह तो हुई स्वार्थ परता की बात—

समाज मे तथा व्यक्ति के अधिकारो का सीमा बन्धन किया गया है समाज का सदस्य होने के नाते मनुष्य कहां तक स्वतन्त्रता को छोड़ता है इस बृहत्तत्व को एक सूत्र में कह दिया गया है। समाज का शासन वहीं तक होना चाहिये जहां तक समूचे हित या अहित का प्रश्न हो।

वैयक्तिक हित साधन में प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र है समाज का हित और व्यक्ति का हित परस्पर से पृथक नहीं है। व्यक्ति समाज के हित का ध्यान रखे अपनी प्रत्येक क्रिया में समाज की भलाई पर दृष्टि रखे और समाज व्यक्तियों के अधिकारों का रक्षक हो समाज शास्त्र का तत्व यही दो सूत्र है।

व्यक्तियो की उन्नति के माध्यम से समाज की उन्नति एवं समाज की उन्नति के माध्यम से व्यक्ति की उन्नति को दो विचारधाराओं के ऊपर अभिमत किया है। अपनी उन्नति करो परन्तु अपने से सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति से सन्तुष्ट रहे।

दशम नियम का आदेश है एक व्यक्ति से बढ़कर समाज की उन्नति, सामाजिक व्यवहार, सामाजिक संगठन एवं समाज के विभिन्न व्यक्तियो के पारस्परिक सम्बन्धों से है वहां व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर समाज हित के नियन्त्रण का अंकुश लगाया गया है।

सामाजिक बन्धन

मानव सामान्य तथा प्राकृतिक प्रवृत्तियों की प्रेरणा से सदा बन्धन रहित स्वतन्त्र ही नहीं स्वेच्छाचारी रहना चाहता है—अपनी इच्छा अनिच्छा पसन्द नापसन्द को मनमाने तरीके से स्वसामर्थ्य व स्वसाधनों को उपयोग में लेकर अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति करना चाहता है यदि इस प्रकार सभी को सब कार्यों के लिए स्वतन्त्रता दे दी जावे तो मनुष्य पशु से भी निम्न कोटि का प्राणि रह जायेगा। मानव अपने सारे ज्ञान अन्य गुण व बुद्धि उन्नति को समाप्त कर अस्तित्व के निकृष्ट धरातल पर आ जावेगा।

व्यक्ति के हित में समाज—मानव सामाजिक प्राणी है समाज में रहकर जीवनोपयोगी सेवाओ के आदान-प्रदान से जितना सुखी हो सका है जितना आज है अपने परिवार की सभी आवश्यकताओं हेतु समाज के अन्य व्यक्तियों की नहीं!

प्रत्येक देश काल के समाज की कतिपय मान्यतायें होती हैं उस समाज के साहित्य विधि-निषेध-रीति रिवाज, आचार-व्यवहार सामाजिक विशेषताओ को मिलाकर "संस्कृति" नाम दिया है यह संस्कृति समाज की पीढ़ी को विरासत में दी गई है।

सामाजिक परिवर्तन

समय-समय पर महापुरुषों का प्रादुर्भाव ही समाज की विकृत मान्यताओं को धारा में बहने से इन्कार कर देते हैं और वैचारिक एवं क्रियात्मक क्रान्ति से प्रशस्त परिमार्जित मार्ग प्रशस्त करते हैं साथ ही महामानवों के प्रयत्न स्वरूप सामाजिक भावनाओं में परिवर्तन लाते हैं।

नियमों के बन्धन

आर्यसमाज का दशम नियम सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्रता का बन्धन सामान्य जन के लिये निर्देशित है। सामाजिक नियम के नाम पर उच्छृंखलता-अराजकता न होने पावे। व्यक्ति को प्रत्येक स्वहितकारी नियम के पालने में स्वतन्त्रता प्रदान की गई है सामाजिक हित की परतन्त्रता में जो स्वतन्त्रता प्रदान की गई है। आज नैतिक और सामाजिक मूल्यों का भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जो अवमूल्यन ह्रास हुआ है तथा-भौतिकवाद ने जो भयंकर प्रभाव नवोदित पीढ़ी पर डाला है जिससे व्यक्ति उचित-अनुचित-साधनों का ध्यान रखे बिना-बुद्धिजीवी उपाधि लेना चाहता है व्यापारी-तस्करी मिलावट-चोरी-आदि साधनों से धनी बनना चाहता है यह सब प्रत्येक हितकारी कार्य सामाजिक हित के मूल्यों पर कुठाराघात है। प्रसिद्ध अंग्रेज तत्ववेत्ता स्टुअर्ट मिल ने जो स्वामी दयानन्द के समकालीन थे लिबर्टी नामक पुस्तक प्रकाशित की थी उस पुस्तक में जो लिखा है वह दसवें नियम की विशद् व्याख्या है।

आर्यसमाज का दशम नियम एक प्रेरणा एव शिक्षा बोध देता है यह उस महर्षि दयानन्द की भावना की ज्योति को आलोकित करते हुए आर्य जनों से अपेक्षा करता है कि महर्षि के बताये व निर्धारित नियमों को जीवन में क्रियान्वित करें। प्रभु कृपा करें कि हम—

ज्ञान-श्रद्धा, दृढ़ता-निष्ठा हममें ऐसी प्रदान करें कि हम अपने जीवन को सबकी उन्नति में लगाकर अपने आप सन्तुष्ट हो सकें।

महाराज श्रीकृष्ण का संदेश

भगवान कृष्ण के जन्माष्टमी के दिन यदि हम उनके दैवी और आसुरी सम्पद के सन्देश को मानकर चलें तो हमारी बहुत-सी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

दैवी सम्पद् विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव॥

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार आवश्यक पदार्थ माने गए हैं। हमारा जीवन धर्म से प्रारम्भ होता है और मोक्ष इसकी अन्तिम श्रेणी है। दूसरे शब्दों में जिस वृक्ष का मूल धर्म है उसका फल मोक्ष है।

धर्म से ही अर्थ की प्राप्ति हो सकती है वा अर्थ वही कल्याणप्रद होता है जो धर्मपूर्वक कमाया जाय। अर्थ की धर्म पूर्वक प्राप्ति पर धर्म पूर्वक काम का उपयोग किया जाना चाहिए।

आज हमारे जीवन मे चार पदार्थों के स्थान में दो पदार्थ रह गये हैं—अर्थात अर्थ और काम। सुख की सामग्री जुटाओ चाहे धर्म से या अधर्म से और सुख भोगो। यही आज जग की रीति बनी हुई है। श्रीकृष्ण ने इसी को आसुरी सम्पद कहा है इसका फल बन्धन है। मोक्ष नहीं। मोक्ष के लिए दैवी सम्पद का ही दूसरा नाम धर्म है।

व्यक्ति के जीवन में सामाजिक जीवन में, नैतिक जीवन में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में सबमें दैवी सम्पद् की कमी है परिणामतः एक बन्धन को काटते हैं तो दस नए उत्पन्न हो जाते हैं।

दम्भोदर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्॥

सर्वत्र पाखण्ड दर्प अभिमान और अज्ञान का साम्राज्य है। जिसे हम धार्मिक जीवन कहते हैं उसकी पाखण्ड सीमा का अतिक्रमण करता हुआ देख पड़ता है। क्या पाखण्डी दुकानदार धर्म की वास्तविक उपलब्धि कर सकता है?

क्या पाखण्डी राजा राज्य का समुचित रीति से संचालन कर सकता है। क्या पाखण्डी ब्राह्मण आत्मिक उन्नति कर सकता है? क्या हमारे सुधारक और उपदेशक इस आसुरी सम्पद् मे वृद्धि नहीं करते?

आगे श्री कृष्ण ने १६-१०३ में दैवी सम्पद् की संज्ञा दी है वह निम्न प्रकार है।

अभयं सत्त्वं सत्त्व संशुद्धि ज्ञान योग व्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥
अहिंसा सत्य मक्रोधर-स्त्यागः शान्तिर पैशुनम्।
दया भूतेष्व लोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीर चापलम्॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नाति मानिता।
भवन्ति सम्पद दैवीमभिजातस्य भारत॥

यही दैवी सम्पद् के गुण मनु के धर्म के दस लक्षणो में प्रायः समाविष्ट हैं। बिना इस दैवी सम्पद् के धारण किये हम धर्म के किसी भी विभाग में उन्नति नहीं कर सकते।

हमें उचित है कि हम दैवी सम्पद् को धारण करें और आसुरी सम्पद् से बचे रहें। —सम्पादक

श्रीकृष्ण के जीवन पर एक दृष्टि

ले० श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

हिन्दू जगत में श्रीराम और श्रीकृष्ण के समान आदर का पात्र कदाचित ही कोई दूसरा व्यक्ति होगा। हिन्दू समाज की रक्षा की उपमा इन्हीं दोनों महापुरुषों के नाम पर दी जाती हैं। इन दोनों में भगवान कृष्ण अधिक उच्च समझे जाते हैं। इसका कारण यह बतलाया जाता है कि महात्मा राम ने संसार में कर्त्तव्य और सदाचार को प्रतिष्ठित किया परन्तु कोई युगान्तकारी कार्य उनके हाथों से नहीं हुआ।

अवश्य ही उन्होंने अपने आचरण से संसार को कर्त्तव्य मार्ग दिखाकर धर्म राज्य की संस्थापना की थी। परन्तु श्री कृष्ण जी के समान उनकी सर्वांगीणता पूरी नहीं उतरी। श्रीकृष्ण ने धर्म राज्य और धर्मक्षेत्र की स्थापना की थी। उन्होंने राज्यक्रान्ति के साथ-साथ धर्म और समाज में भी क्रान्ति की। राम राजपुत्र थे और कृष्ण कारागृह में उत्पन्न हुए एक सरदार के पुत्र थे। जिस वातावरण में वे पले, वह बिल्कुल सीधा सादा और ग्रामीण जनों का था। उन्होंने अनेक राज्य क्रान्तियां कराई फिर भी स्वयं राजा नहीं हुए। सर्वत्र व्यवस्था निर्माण में लगे रहे।

भगवद्गीता के उपदेश द्वारा उन्होंने ज्ञान और कर्म का ऐसा उदात्त रूप प्रस्तुत किया है जिसकी गौरव गरिमा आज से हजारों वर्ष बीत जाने पर भी आज अक्षुण बनी हुई हैं और न मालूम कब तक बनी रहेगी गीता में जिस निष्काम कर्म और यज्ञमय जीवन का प्रतिपादन किया गया है, महाराज कृष्ण उसके साक्षात प्रतिबिम्ब थे।

योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन और जीवन के लक्ष्य को भली-भांति समझने के लिए हमे उनके समय की राजनैतिक और सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना चाहिये। उस समय भारतवर्ष बहुत से स्वतन्त्र राज्यों में विभक्त था। इन राज्यों को एकत्व में बांधने और उनको नियन्त्रण में रखने के लिये कोई चक्रवर्ती राजा न था। यही कारण था कि बहुत से राजा स्वेच्छाचारी और विलासी बन गये थे और अपनी प्रजा को दु:खी रखते थे।

मथुरा मे राजा कंस और मगध के राजा जरासंध के अत्याचार तो जगत प्रसिद्ध है ही। कंस तो अपने अत्याचारों मे यहां तक बढ़ गया था कि उसने अपने देवता स्वरूप पिता राजा उग्रसेन को भी बन्दीगृह मे डाल दिया था। उधर जरासंध ने बहुत से छोटे-छोटे राजाओं को भी कारागृह में डाला हुआ था। कौरवों और पांडवों मे गृह कलह छिड़ा हुआ था। राज शक्ति पर ब्राह्मणों की शक्ति का प्रभाव नाम मात्र को था। धार्मिक प्रवृत्ति के लोगो का एक पृथक समुदाय बन गया था जो निवृति मार्ग के पथिक बनकर ससार से उदासीन रहने मे सुख मानते थे। ब्राह्मण वर्ग के घोर निवृतिवादी होने से राजसूत्र ऊल-जलूल ढग पर उद्देश्य रहित घूमता था। प्रजा खाने-पीने आदि की दृष्टि से सुखी होने के कारण विलासी बन गई थी। इस निरुद्देश्य राजसूत्र के कारण राजाओ का विलासी और अत्याचारी तथा प्रजा का पतित होना अवश्यम्भावी था।

सामाजिक स्थिति खराब होने लग गईथी। यद्यपि वैदिक व्यवस्था का पूर्णतया लोप नहीं हुआ था। तथापि इसका ह्रास अवश्य होने लग गया था। उन दिनों 'क्षात्रधर्म' का प्राधान्य हो गया था। हम देखते हैं कि द्रोणाचार्य कृपाचार्य ब्राह्मणों ने ब्राह्मणवृति को छोड़कर अधिकतर क्षात्रवृति ग्रहण कर ली थी। यादव वंश वाले क्षत्रिय प्रवृति को छोड़कर गोपालन आदि वैश्यों का धन्धा करते थे और समाज उन्हें शूद्र समझने लग गया था। वर्ण व्यवस्था में प्राय: जन्म का प्राबल्य माना जाने लगा था। हम महाभारत' में पढ़ते हैं एकलव्य नामक एक व्यक्ति को द्रोणाचार्य के चरणों मे बैठकर धनुर्विद्या के

भगवद्गीता के उपदेश द्वारा उन्होंने ज्ञान और कर्म का ऐसा उदात्त रूप प्रस्तुत किया है जिसकी गौरव गरिमा आज से हजारों वर्ष बीत जाने पर भी आज अक्षुण बनी हुई है और न मालूम कब तक बनी रहेगी, गीता में जिस निष्काम कर्म और यज्ञमय जीवन का प्रतिपादन किया गया है, महाराज कृष्ण उसके साक्षात् प्रतिबिम्ब थे।

सीखने का इसलिये सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका था कि वह शूद्र समझा जाता था।

अवश्य उन दिनों स्त्रियों में गिरावट प्रारम्भ नही हुई थी। उदाहरणार्थ कौरवों की माता गन्धारी को लीजिये। अपने पति जन्मान्ध महाराज धृतराष्ट्र के प्रति उन्होंने जिस निष्ठा का परिचय दिया वह सब जानते हैं।

एक शब्द में उस समय राजसूत्र अत्याचारी और आततायी राजाओं के हाथ में था स्त्री, शूद्र और वैश्यों के लिये ज्ञान-मार्ग का द्वार बन्द सा हो गया था। वर्ण व्यवस्था का रूप विकृत होने लग गया था। धर्मजीवी व्यक्तियों का एक पृथक समाज बन गया था वह समाज निवृति मार्ग का पथिक था। दूसरी ओर अधर्म का प्राबल्य हो रहा था जो धर्म जीवी सज्जन धर्म से प्रेम रखते और सांसारिक कार्यों में भी प्रेम रखते थे अत्याचारी राजाओं के क्रीतदास बन गये थे। फिर अधर्म के नाश और धर्म की प्रतिष्ठा का सुयोग किस प्रकार सम्भव था। उस समय धर्म की प्रतिष्ठा और अधर्म विध्वंस की परम आवश्यकता थी। उसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए श्री कृष्ण का प्रादुर्भाव हुआ था, ऐसा कहेंगे तो अत्युक्ति न होगी। महाराज कृष्ण का सबसे पहला कार्य कंस जरासंध आदि आततायी राजाओं का वध समझा जाता है। उन्होंने इन राजाओं को नष्ट करके प्रजा को उनके अत्याचारों से मुक्त किया। विशेषता यह है कि इन राज्यों को सदाचारी और सुयोग्य उत्तराधिकारियों को ही सौंपा वे स्वयं राजा न बने।

इन छोटे-मोटे राज्यो की व्यवस्था ठीक करके उन्होंने युधिष्ठिर को चक्रवर्ती सम्राट बनाने का उद्योग प्रारम्भ किया। अपने इस कार्य में वे सफल भी हुए परन्तु दुष्ट दुर्योधन के कपट जाल से विलम्ब हुआ और अन्त मे शान्ति स्थापना का भरसक यत्न करने के पश्चात् इस कार्य की पूर्ति और उसके लिए 'धर्म राज्य की स्थापना के लिये उन्हे महाभारत संग्राम का पांडवों द्वारा सूत्रपात कराना पड़ा !!

महाभारत से भारत का सर्वनाश हुआ ऐसा समझदार देशवासी मानते हैं और उनकी धारणा ठीक भी है परन्तु महाभारत के द्वारा हुए सर्वनाश के लिये भी कोई भी महाराज कृष्ण को दोषी नहीं ठहराता। महाभारत की समाप्ति पर केवल १० व्यक्ति शेष बचे थे। अखिल भारत का राज्य युधिष्ठिर को प्राप्त हुआ था। दु:ख है कि ऐसे महापुरुष के उदात्त जीवन को विलासी और कलुषित बनाने और प्रस्तुत करने में हमारे हिन्दू समाज को लज्जा नहीं आती। श्री कृष्ण शूरवीर थे, तेजस्वी और यशस्वी थे। व्यभिचार का उनके मत्थे दोषारोपण करना उनका अपमान करना है। सबसे बड़ा दु:ख यह है कि हिन्दी साहित्य ने जितना इस महापुरुष के चरित्र के साथ अन्याय किया है उतना और किसी के साथ नहीं किया। आज की राजनैतिक और सामाजिक स्थितियों की श्री कृष्ण के काल की इन

(शेष पृष्ठ १० पर)

श्रीकृष्ण विषयक आर्यसमाज की मान्यता

धर्मवीर शास्त्री विद्यावाचस्पति, जीतपुर, मेरठ

कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि आर्यसमाज एक नास्तिक संगठन है, क्योंकि आर्य समाज उनके विचार से न तो श्रीकृष्ण जी को और न भगवान रामचन्द्र जी को मानता है परन्तु वे यह नहीं जानते कि वे स्वयं एक भ्रान्त धारणा के शिकार हैं। जहां तक नास्तिकता का प्रश्न है तो नास्तिक तो वह कहलाता है जो ईश्वर को न माने धर्म कर्म को न माने परन्तु हम देखते हैं कि आर्यसमाज सन्ध्या हवन और उपासना आदि को मानता है स्वयं मानता ही नहीं बल्कि सन्ध्या ईश्वरोपासना स्वयं करता तथा उसका प्रचार भी करता है। आर्य समाज मन्दिरों में प्रतिदिन प्रातः और सायं सन्ध्या और हवन किया जाता है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी आर्य समाज के संस्थापक थे वे कितने पक्के आस्तिक थे यह सर्वविदित बात है वे ही प्रतिदिन योगाभ्यास करते थे तथा उन्होंने प्रत्येक आर्य के लिए योगाभ्यास का विधान किया है इसके अतिरिक्त एक बात और वह यह है कि मनु जी महाराज के अनुसार 'नास्तिकोवेद निन्दकः" नास्तिक वह है जो वेद की निन्दा करता है परन्तु यह सभी लोग जानते हैं कि महर्षि दयानन्द तथा उन द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने वेदों के प्रचार का कितना काम किया है? दूसरे शब्दों में तो आर्यों का परम धर्म-ग्रन्थ वेद है। वेद के प्रति आर्य समाज की मान्यता है कि ये ईश्वर प्रणीत ग्रन्थ हैं, स्वामी जी महाराज ने वेदों का भाष्य किया यह अलग बात है कि वे पूरे वेदों का भाष्य असमय में देहावसान हो जाने से न कर पाये। यदि वे अधिक जीवित रहते तो पूरे वेदों पर अद्भुतपूर्व भाष्य करते जैसा कि उन्होंने यजुर्वेद तथा ऋग्वेद के कुछ मण्डलों का भाष्य किया है। स्वामी जी महाराज ने आर्य समाज के दस नियमों में एक नियम यह भी बनाया "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

उपरोक्त सभी बातों से यह बात सिद्ध होती है कि महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की विचारधारा वेदानुकूल है। तथा वेद की प्रशंसक है। "नास्तिको वेद निन्दकः" वाली जो बात है उसके अनुसार तो आर्यसमाज नास्तिक नहीं बल्कि पक्का आस्तिक संगठन है। जहां तक भगवान रामचन्द्र जी तथा भगवान श्रीकृष्ण जी महाराज के न मानने वाली बात है वो भी गलत है क्योंकि यदि आर्यसमाज श्री रामचन्द्र जी महाराज और श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज को न मानता तो रामनवमी तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी जैसे धार्मिक पर्वों को बड़ी धूमधाम के साथ बिल्कुल न मनाता परन्तु यह सभी लोग जानते हैं कि आर्य समाज में ये दोनों ही पर्व बड़ी खुशी के साथ तथा उत्साह के साथ मनाये जाते हैं हां इतनी बात अवश्य है कि आर्य समाज श्री कृष्ण जी व श्री रामचन्द्र जी महाराज को सृष्टि का कर्त्ताधर्ता अर्थात ईश्वर न मानकर महापुरुष के रूप में स्वीकार करता है।

आर्य समाज के सिद्धान्तानुसार अवतारवाद वेद प्रतिपादित न होकर अवैदिक व पौराणिक कल्पना है तथा वेद विरुद्ध बात है आर्यसमाज उसे स्वीकार नहीं करता, दूसरे शब्दों में अगर हम कहें तो यों कह सकते हैं कि आर्य समाज इन महान पुरुषों के चित्र की नहीं बल्कि चरित्र की पूजा करना बतलाता है, उस चरित्र की जिसके होने से वे महापुरुष कहलाये उस चरित्र को अपने अन्दर धारण करने की बात कहता है अगर महापुरुषों में चारित्रिक गुणों की कमी होती तो वे आज संसार में कभी न माने जाते। अतः उपरोक्त शंका तो स्वतः निर्मूल हो जाती है।

श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज के बारे में आर्यसमाज की क्या मान्यता है इस सम्बन्ध में विचार करने से पूर्व आज जिस रूप में श्रीकृष्ण जी को माना जा रहा है इस पर संक्षेप में विचार करते हैं।

आज श्रीकृष्ण जी का पूरा सच्चा स्वरूप ही बिगाड़ कर रख दिया गया है और इसका कारण है पुराणों का धार्मिक दृष्टि से पठन-पाठन करना आदि। पुराणों के अनुसार आज श्रीकृष्ण जी को भगवान (ईश्वर) माना जा रहा है। उनकी बालपन की लीलाएं बड़े विचित्र ढंग से पेश की जाती हैं और युवावस्था तो उनकी ऐसे ढंग से प्रस्तुत की जाती है कि उन कथाओं को कोई भला आदमी सुनने में तथा कहने में बड़ी शर्म महसूस करता है इतने चारित्रिक दोष श्रीकृष्ण जी महाराज पर लगाये गये हैं संभवतः ही किसी पर लगाये गये हों।

आज हमारे ही घरों में लड़कियां अपने मां बाप के सामने ही ऐसे गाने गीत गाती हैं जिन्हें कोई समझदार व्यक्ति तो अच्छा समझेगा नहीं सिर्फ श्रीकृष्ण जी का नाम जोड़ दिया जाता है, इसलिए माता-पिता भी कुछ नहीं कहते। कोई सभ्य समाज इसकी इजाजत नहीं दे सकता, सुख सागर प्रेम सागर जैसी रसिक पुस्तकों को पढ़ना ही धर्म समझ लिया गया है इन ग्रन्थों में श्रीकृष्ण को बहुत दुश्चरित्रशील बताया गया है।

अब आप देखें कि आर्यसमाज श्रीकृष्ण को किस रूप में मानता है आर्य समाज पुराणों में वर्णित श्रीकृष्ण जी के ऊपर वर्णित किसी भी स्वरूप को पसन्द नहीं करता बल्कि वह तो महाभारत के उस इतिहास प्रसिद्ध चरित्र नायक श्री कृष्ण को मानता है जो मुरलीधर, बंसीधर न होकर अजितधर गदाधर, सुदर्शन चक्रधारी था, जिसने कंस जैसे दुष्टों का बड़ी वीरता से वध किया, तथा जनता के दुःखों को दूर किया जिसने जरासन्ध जैसे राजाओं को जो ऋषि-कन्याओं, देवताओं को कष्ट देने वाले थे, बड़े क्रूर थे ऐसे अत्याचारी राजाओं को मारकर उनकी कद से अनेक राजाओं को मुक्त कराया। पाण्डवों का साथ देकर धर्म की रक्षा की अनेक राक्षसों को मारकर गरीबों के दुःखों को दूर कर जन जन के नेता बने जो धर्मोद्धारक, योगीराज, नीति निपुण महान सदाचारी, जिसने १२ वर्षों तक गृहस्थ में रहकर भी ब्रह्मचर्य व्रत का स्वयं पालन कर रुक्मणि से भी संयम कर प्रद्युम्न जैसे सुयोग्य पुत्र को उत्पन्न कर जनता के सामने सदाचार का महान आदर्श रखा जिसने सुदामा जैसे गरीब मित्र की भी पूर्ण सहायता की तथा दरिद्रता हरी। एक मित्र का उदाहरण सामने रखा। जिसने पाण्डवों का दूत बनकर पाण्डव व कौरवों में समझौता कराने का पूरा प्रयास किया, जिसने बहन द्रोपदी की लाज बचाकर राखी का वायदा निभाया। ऐसे श्रीकृष्ण को आर्यसमाज मानता है तथा उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा देता है।

श्री कृष्ण जी नीति के तो इतने पक्के थे कि उनकी नीति की वजह से ही पाण्डवों की विजय हुई। युद्ध से पूर्व समझौते का प्रयास किया उसमें कामयाब न होने पर कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन का रथ दोनों सेनाओं के मध्य ले जाकर खड़ा कर दिया। अर्जुन के मोह में पड़ जाने पर उसे समझाया और कहा—"हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चयः॥ गीता० ॥ अर्थात हे अर्जुन युद्ध कर, यदि युद्ध में मर गया तो स्वर्ग प्राप्त करेगा और यदि विजय प्राप्त करेगा तो राज्य सुख भोगेगा "क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ: नैतत्त्वय्युपपद्यते" नपुंसक मत बन (कायर मत बन) वीरोचित मार्ग का सहारा लेकर युद्ध कर। ये तेरे भाई बन्धु नहीं है जो तेरी जान के दुश्मन हैं पता नहीं कितने जन्मों में ये तुम्हारे या तुम इनके क्या-२ रहे हो? आत्मा मरता नहीं, शरीर की मृत्यु होती है आत्मा की नहीं। शरीर तो बार बार मिलते रहते हैं अपने कर्तव्य का पालन कर इस तरह उपदेश देकर अर्जुन को युद्ध के लिए तैयार किया। कौरव दल में बड़े २ महारथी थे जैसे भीष्म गुरु द्रोण, कर्ण आदि उन्हें बड़ी नीति से समाप्त करा दिया यह था कृष्ण का असली रूप जिसे आर्य समाज मानता है। श्री कृष्ण के विचार से अनुसार पापी को मारना हिंसा नहीं धर्म है और कौरव पाप में प्रवृत्त थे उन्हें मरवा देना अनुचित ही था फिर चाहे वे विद्वान हों, सम्बन्धी हों व कोई हो।

श्री कृष्ण जी के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द की श्रद्धांजलि हम सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उद्धृत करना चाहेंगे उन्होंने लिखा—

"देखो श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है, उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं,

(शेष पृष्ठ ११ पर)

कृष्ण और अर्जुन बनना होगा (२)

भगवान देव "चैतन्य"

महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज के नियमों में एक स्थान पर शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की बात कही है। हम यदि श्री कृष्ण महाराज के जीवन पर समग्र दृष्टि डालें तो उनका समूचा जीवन इन्हीं तीन आदर्शों पर आधारित रहा है। वे शरीर से इतने अधिक बलवान थे कि उस समय में उनके मुकाबले का कोई और योद्धा नहीं था। वे बचपन से ही बहुत बलशाली थे। कालिया नाग, पूतना और पागल हाथी की जीवन लीला उन्होंने समाप्त कर दी थी। यही नहीं युवावस्था में कंस तथा उसके बलवान पहलवानों चाणूर एवं मुष्टिक को धराशाई करना कोई साधारण बात नहीं थी। जब शिशुपाल ने भरी सभा में उन्हें अपशब्द कहे तो उसका भी उन्होंने काम तमाम कर दिया। यही नहीं यदि हम महाभारत के युद्ध पर दृष्टिपात करें तो देखने में आता है कि यदि श्री कृष्ण जी नहीं होते तो पाण्डवों को यह धर्मयुद्ध जीतना भी असम्भव हो जाता। भीष्मपितामह, आचार्य द्रोण, जयद्रथ और कर्ण तथा दुर्योधन जैसे योद्धाओं का काम तमाम करने के पीछे केवल और केवल मात्र श्री कृष्ण जी महाराज का ही हाथ दिखाई देता है। यदि पाण्डव उनकी युक्तियों के अनुसार न चले होते तो कभी भी विजय उनके साथ नहीं हो सकती थी। इन सब घटनाओं में श्री कृष्ण जी का ही हाथ दिखाई देता है। इन सब घटनाओं में श्री कृष्ण का बाहुबल भी दृष्टिगोचर होता है। पूरे महाभारत में श्री कृष्ण के ओजस्वी और बलशाली व्यक्तित्व का प्रभाव दिखाई देता है। विरोधी पक्ष बराबर उनका लोहा मानते हुए दिखाई देते हैं।

श्री कृष्ण जी महाराज शारीरिक रूप से जितने बलशाली थे। उनकी आत्मा भी उतनी ही प्रबल और सशक्त थी। बचपन से लेकर मरण पर्यन्त वे निरन्तर कठिन से कठिन परिस्थितियों में से गुजरे मगर उनकी आत्मा कभी भी डांवाडोल नहीं हुई। इसका कारण था उनकी ईश्वर भक्ति। सन्ध्या हवन आदि में उनकी पूरी आस्था थी। ब्रह्मचर्य बल से वे परिपूर्ण थे। तप और स्वाध्याय उनके जीवन के अंग संग था। गायत्री और ओ३म् के वे उपासक थे। इसीलिए उन्होंने योग की उच्चावस्था प्राप्त कर रखी थी। वे स्थितप्रज्ञ थे। सांसारिक कार्यकलाप करते हुए भी किस प्रकार से निष्काम रहा जा सकता है। यह उनके जीवन में कदम-कदम पर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। गीता जैसा उपदेश देने की सामर्थ्य उनमें तभी थी क्योंकि वे स्वयं सोलह कला सम्पूर्ण थे। उन्होंने गीता में निष्काम का सूत्र देकर सारे विश्व को उपकृत किया है। वे वेदों के ज्ञाता थे तभी तो वे गीता जैसा ग्रन्थ दुनियां को दे सके। उनके इस आत्मिक उत्थान के कारण ही युधिष्ठिर के यज्ञ में उन्हें अग्रपूज्य माना गया था।

श्री कृष्ण जी शारीरिक और आत्मिक बल के भण्डार थे। उन्होंने इस शक्ति का प्रयोग किसी प्रकार के विध्वंस के लिए नहीं बल्कि सृजन के लिए किया। वे अपने स्वार्थों से एकदम ऊपर उठे हुए थे। उनका जो भी काम होता था उसमें सामाजिक उत्थान ही मुख्य होता था। अपने बाल्यकाल और विशेषरूप से अपनी युवावस्था से ही उन्होंने समाज सुधार के कार्य आरम्भ कर दिए थे। गोवर्धन पर्वत पर अतिवृष्टि के समय पूरे गांव और गांववासियों की रक्षा, कालिया नाग और पूतना का वध, कंस तथा शिशुपाल का उनके साथियों सहित वध, गीता का ज्ञान और महाभारत का भयंकर युद्ध इन सबके पीछे उनका अपना कोई भी स्वार्थ नहीं था बल्कि समाज और राष्ट्र की जनता को वे प्रसन्न, सम्पन्न और खुशहाल देखना चाहते थे। सज्जन पुरुषों की कसौटी ही यह होती है कि वे किसी को भी दुःखी नहीं देख पाते हैं तथा प्राणीमात्र को किसी भी प्रकार के कष्ट में देखकर अपनी सुख सुविधाओं को एक ओर रखकर उनके उद्धार के लिए प्रस्तुत हो जाते हैं। श्री कृष्ण के अन्दर भी हमें यही गुण दिखाई देता है। उन्होंने स्वयं ऐसे आदर्शों की स्थापना की जिनसे अन्य लोग भी प्रेरणा ग्रहण कर सकें। कुछ लोग महाभारत जैसे विनाशकारी युद्ध का दोष उस महामानव पर लगाते हैं मगर ऐसे लोग तथ्यों से परिचित नहीं हैं। वास्तविकता यह है कि उन्होंने इस युद्ध को टालने के भरसक प्रयास किए। अन्तिम दम तक पाण्डवों और कौरवों में समझौता कराने के प्रयास किए। स्वयं दूत बनकर दुर्योधन के पास गए। उसे मात्र पांच गांव तक देने के लिए मनाते रहे। यही नहीं कर्ण को यह भेद बताया कि तुम पांडवों के बड़े भ्राता हो अतः आप यदि दुर्योधन को समझाएं तो पाण्डवों को समझाने का दायित्व मेरा है तथा इस प्रकार से यह विनाशकारी युद्ध टल सकता है मगर उनके ये सभी प्रयास सफल नहीं हो सके और महाभारत का युद्ध अनिवार्य हो गया। उनका इस युद्ध के पीछे भी अपना कोई स्वार्थ नहीं था मगर राजनैतिक और सामाजिक सुधार के लिए यह प्रयास परम आवश्यक था।

देश-विदेश में प्रतिवर्ष इस महामानव का जन्मदिवस मनाया जाता है। कुछ लोग तो इस दिवस को भी इतने अश्लील और भद्दे ढंग से मनाते हैं कि उनके ऊपर तरस ही खाया जा सकता है। रासलीलाएं, अश्लीलकीर्तन, रात-रात भर का जागरण तथा झूले आदि डालकर बच्चों जैसी हरकतें करने से हमें भला क्या उपलब्ध हो सकता है, यह तो ऐसे कृत्य करने वाले ही बता सकते हैं मगर यदि इस प्रकार के व्यक्तित्व का जन्मदिवस वास्तव में ही मनाना हो तो उनके जीवन चरित्र गुणों को अपने भीतर धारण करने की आवश्यकता है। श्री कृष्ण, हरे कृष्ण चिल्लाने मात्र से राष्ट्र या समाज का उद्धार नहीं हो सकेगा। आज यदि हम राम और कृष्ण जैसे महापुरुष पैदा करना चाहते हैं तो उस प्रकार के गृहस्थ बनाने पड़ेंगे। उस प्रकार के मां-बाप बनना पड़ेगा और उस प्रकार के वातावरण का सृजन करना पड़ेगा। आज हम चाहते तो हैं कि राम और कृष्ण जैसे महापुरुषों की "संस्कृति जीवित हो जाए मगर उसके लिए प्रयास जरा सा भी नहीं करते हैं। हम यदि आज भी अपनी संस्कृति को जीवित रखना चाहते हैं तो श्री कृष्ण के उपदेशों और गुणों को धारण करना पड़ेगा। घर घर में यज्ञ और वेदों के स्वाध्याय का प्रचलन करना होगा। अपने बच्चों को मांस और अण्डों का सेवन नहीं बल्कि माखन और गोदुग्ध खिलाना-पिलाना होगा। इसके लिए गोपालन के महत्व को भी समझना होगा।

आज पूरा राष्ट्र ही विघटन और साम्प्रदायिकता की आग में जल रहा है। जिस ओर भी देखो एक विध्वंस और आतंक का बोलबाला है। अलगाववाद का अजगर आपसी भाईचारे और सौहार्द को डस रहा है। ऐसे में न तो कहीं कोई अर्जुन दिखाई देता है और न ही श्रीकृष्ण जैसा व्यक्तित्व। अतः उनके जन्म दिवस को यदि सही ढंग से मनाना है तो हमें श्रीकृष्ण भी बनना होगा और अर्जुन का निर्माण भी करना होगा। तभी इस राष्ट्र और समाज को हम दिशा दे सकते हैं अन्यथा विनाश का सिलसिला चला है यह हमारी आर्य संस्कृति को ऐसी दलदली में लाकर छोड़ देना चाहते हैं पुनः वैदिक धर्म की स्थापना करने के लिए पता नहीं कितने ही गुरु अब आयेंगे और कितने ही बलिदानों की आवश्यकता पड़ेगी।

पुस्तक समीक्षा

महर्षि स्वामी दयानन्द

पृष्ठ १६० मूल्य २० रुपये
लेखक—डा० नरेन्द्र विद्यालंकार
प्रकाशक—मधुर प्रकाशन
१८०४ आर्य समाज सीताराम बाजार दिल्ली-६

समय-समय पर लेखक, कवि, वक्ता, महानुभाव महर्षि दयानन्द जैसे युग द्रष्टा के विषय में नाना विध पक्षों से अपनी-अपनी मानसिकता को आर्य जनता के सामने रखते हैं ऐसा ही पक्ष उपस्थित किया है लेखक डा० नरेन्द्रकुमार विद्यालंकारने।

लेखक कलम के धनी हैं अल्पायु में विकास मति से अपने विचार जनता को देते हैं आज उनकी यह अमर ऋषि की अमर कहानी संक्षिप्त स्वरूप में प्रस्तुत है।

विवाद ग्रस्त विषयों को लेखक ने संक्षेप से चर्चा का विषय बनाया है। विवादास्पद विषयों से बचने का भी प्रयास किया है।

महर्षि का जीवन नानाविध घटनाओं से पूर्ण है। पाठकगण स्वयं अध्ययन कर अपने हृदय मन्दिर में बसाने का प्रयास करेंगे।

जीवनीय घटनाक्रम विशाल है फिर भी संक्षेप से लघु पुस्तिका के माध्यम से भरने का प्रयास स्तुत्य है।

स्वाध्यायशील जन इस श्रावणी पर्व पर ऋषि के जीवन को पढ़े और मिशन की सेवा का व्रत लें। —डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

वर्तमान परिस्थितियां

(पृष्ठ ६ का शेष)

(हरियाणा) में अयोध्या काण्ड के बाद जिन मुस्लिम नेताओं के इशारे पर वहां हिन्दुओं पर अत्याचार कराये गए उसकी पूरी जानकारी हमने मुख्यमन्त्री और केन्द्रीय मन्त्रियों को दी थी, परन्तु उसका कुछ नहीं हुआ इससे मेवात के हिन्दू आज बड़ी संख्या में वहां से पलायन करने पर मजबूर हो रहे हैं। इसका सीधा सा अर्थ है कि भारत के अन्दर मिनी पाकिस्तान के निर्माण का गहरा षड़यन्त्र चल रहा है।

(क्रमशः)

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये बार एक१५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

दिल्ली के स्थानीय विक्रेता

(१) म० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर, ३७७ चांदनी चौक, (२) मै० गोपाल स्टोर १७१७ गुरुद्वारा रोड, कोटला मुबारकपुर नई दिल्ली (३) मै० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा, मेन बाजार पहाड़गंज (४) मै० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी गड़ोदिया रोड, आनन्द पर्वत (५) मै० प्रभात कैमिकल कम्पनी गली बताशा, खारी बावली (६) मै० ईश्वर दास किशन लाल, मेन बाजार मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री, ५३७ लाजपतराय मार्किट (८) दि सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य मदनलाल १-शंकर मार्किट दिल्ली।

शाखा कार्यालय :—
६३, गली राजा केदार नाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली
फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

विदेश प्रचार

गोहत्याबन्दी आन्दोलन में विदेश की आर्यसमाजें सहयोग करेंगी

वैदिक धर्म समाज साउथ एक्टन, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की घोषणा का स्वागत करती है, तथा अन्य सभी संस्थाओं का भी धन्यवाद करती है जिन्होंने स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की अध्यक्षता में देशव्यापी आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया है। पूज्य स्वामी जी ने अपने सांसद काल में भी स्वर्गीय नेहरू जी का ध्यान कई बार गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने की ओर दिलाया था तथा आन्दोलन भी किया था। अब ऐसा समय आता जा रहा है जबकि अमरीका के नागरिक भी शाकाहारी बनने पर विचार कर रहे हैं तथा बनते जा रहे हैं। मेरा विचार है कि भगवान कृष्ण के जन्म दिवस जन्माष्टमी पर सभी संगठन मिलकर राष्ट्रपति तथा प्रधानमन्त्री से इस विषय में भेंट करें। भगवान कृष्ण गौओं से विशेष प्रेम करते थे और वह स्वयं कई हजार/लाख गौओं के स्वामी थे। भारत सरकार से कोई ठोस आश्वासन न मिलने पर स्वामी जी की अध्यक्षता में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने के लिए एक देश व्यापी आन्दोलन चलाया जाये। आर्यसमाज ने समय-समय पर आन्दोलन चला कर बलिदान दिया है तथा भारत सरकार का ध्यान आकर्षित किया है। मुझे पूरी आशा है अब फिर समय आने पर आर्यसमाज अग्रणी बनकर गोमाता की रक्षा का दायित्व निभायेगा। इस शुभ कार्य में विदेश की आर्य समाजें भी आपके साथ पूर्णतया सहमत हैं। स्वामी दयानन्द की जय।

मदनलाल गुप्ता
पुरोहित वैदिक धर्म समाज

आर्यसमाज लंदन-जून-९४ की गतिविधियां

इस मास के साप्ताहिक सत्संगों में डा० तानाजी आचार्य के पौरोहित्य में सन्ध्या-यज्ञादि सम्पन्न हुए। यजमान के रूप में श्री राजेन्द्र ओबराय, श्रीमती उषा ओबराय, संजय, श्री सत्काम आर्य, श्रीमती अमिता आर्या, और आर्य परिवारों ने भाग लेकर सत्संग की शोभा बढ़ाई। भक्ति संगीत के कार्यक्रम में श्रीमती सावित्री छाबड़ा, कैलाश मलीन, स्वर्ण शर्मा, प्रेमा कहेर सुरक्षा शर्मा, सत्यपाल, नलिनी गुरदत्त, आशा सहगल सुमन चोपड़ा, श्री लेखराम और प्रो० सुभाष आनन्द ने अपने मधुर भजनों से ईश्वर गुण संकीर्तन किया।

वेद सुधा के क्रम में प्रो० एस० एन० भारद्वाज डा० तानाजी आचार्य डा० सत्यपाल शर्मा वेदशिरोमणी (अमेरिका) और श्रीमती कैलाश मलीन ने वेद मन्त्रों की सरल और सोदाहरण व्याख्या की।

इसके अतिरिक्त विविध सत्संगों में कुछ कार्यक्रम इस प्रकार हुए—

(१) पूज्य स्वामी विष्णु पुरीजी महाराज, कलकत्ता ने भारतीय इतिहास की गरिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत में सभी नागरिकों के लिए एक शिक्षा, एक न्याय और एक दण्ड विधान लागू होना चाहिए। बांगला देश से आये हुए अवैध लाखों घुसपैठी लोगों से शासन का व्यवहार, धर्म निरपेक्षता के नाम पर धर्मसापेक्षता का व्यवहार आदि को यथाशीघ्र रोकने की आवश्यकता को दोहराया।

(२) हिन्दू स्वराज् शाही के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज के जयन्ति के उपलक्ष्य में बोलते हुए डा० तानाजी आचार्य ने शिवाजी महाराज के चरित्र, समाजनीति और राजनीति का विश्लेषण किया। शिवाजी महाराज की समयसूचकता, शक्ति, युक्ति, त्याग, बलिदान, राष्ट्रप्रेम और समाज प्रेम का अनूठा संयोग आज भी भारतीयों को अनुकरणीय है। उनकी नीति आज भी समय की मांग है।

(३) श्री जगदीश कौशल, सम्पादक, अमरदीप ने भारतीय जनसंघ के संस्थापक श्यामाप्रसाद मुकर्जी के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला। जम्मू और काश्मीर को भारत के अन्य प्रान्तों के समान भारत का अविभाज्य अंग बनाने में मुकर्जी के स्वप्न की प्रासंगिकता को संक्षेप में कहा।

(४) श्री जगदीश कपिल जी ने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यसमाज के त्याग और बलिदान का स्मरण दिलाया।

(५) श्री यशपाल गुप्ता ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के जीवन पर कविता वाचन किया।

इस प्रकार आरती, शान्तिपाठ और प्रीतिभोजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

—राजेन्द्र कुमार चोपड़ा, मन्त्री

युग पुरुष श्रीकृष्ण

जरूरत है समय की आज फिर युक्तात्मा आये।
धरा पर, युग पुरुष श्रीकृष्ण जैसी आत्मा आये॥
मिटायें कंस की अनुवृत्तियां क्रूर अनुशासन,
करें निर्माण नव युग का धरा पर धर्म संस्थापन,
हटें जो कालिया बन जगत् में शान्ति की काया,
खड़े यमुना के तट पर दिखावें आसुरी माया,
घृणा-विद्वेष फैलायें न वे दुष्टात्मा आयें।
धरा पर युग पुरुष श्रीकृष्ण जैसी आत्मा आयें॥
बनायें ग्वाल बालों को करायें बन्द वध शाला,
समूची सृष्टि पर भी दृष्टि में आये न मधुशाला,
वही प्राचीन गुरुकुल प्रणाली से परीक्षा हो,
रहे संकल्प कृतकारी न खाली आज दीक्षा हो,
बनें फिर शिष्य शिष्टाचार की दिव्यात्मा आयें।
धरा पर युग पुरुष श्रीकृष्ण जैसी आत्मा आयें॥
कहीं शिशुपाल के शिशु गालियां बकते न मिल पायें,
दुःशासन द्रोपदी के चीर को तकते न मिल पायें,
भगा दें कूच कर जाये सदा को कीचकों का दल,
रहें वे बन्द कारागार में शकुनी करें जो छल,
बनें जो भार भूतल पर न वे पापात्मा आयें।
धरा पर युग पुरुष श्रीकृष्ण जैसी आत्मा आयें॥
कहीं अपलोभता के राह पर चलने न पाये हों,
किसी का देखकर वैभव कहीं जलने न पाये हों,
उपेक्षित और उत्पीड़ित सुदामा हैं तेरे जग में,
उठायें प्रेम से मिलकर सखा बनकर उन्हें मग में,
सुदर्शन चक्र लेकर का यहें वीरात्मा आये।
धरा पर युग पुरुष श्रीकृष्ण जैसी आत्मा आयें॥
हटायें मोह अर्जुन का सखे जगमीत को झांकी,
विखण्डित हो रहा भारत कसर अब और क्या बाकी,
पछाड़ें दुरित दुर्योधन रचायें सद्गुणों के जय,
गदा-गाण्डीव से काटें कुटिल आतंकवादी पर,
कहें कुरुक्षेत्र की गीता प्रबल प्रशात्मा आयें।
धरा पर युग पुरुष श्रीकृष्ण जैसी आत्मा आये॥

—सत्यव्रत सिंह चौहान सिद्धान्त शास्त्री
आर्यसमाज मन्त्री पुड़ी

श्रीकृष्ण के जीवन पर

(पृष्ठ ३ का शेष)

स्थितियों के साथ तुलना की जाए तो जमीन और आकाश का अन्तर दिखना पड़ेगा आज संसार में आसुरी प्रवृत्तियों का बोलबाला है और प्रजा नाना प्रकार के कष्टों और बन्धनों से पीड़ित हैं आज का राजसूत्र भी प्रकृति वादियों के हाथ में हैं और लक्ष्यहीन गति से चल रहा है। आज भी प्रकृति और निवृत्ति वाद के समन्वय पूर्वक राजसूत्र के संचालन और धर्म राज्य की स्थापना की परम आवश्यकता है, वर्तमान महासंग्राम के पश्चात् एटलांटिक चार्टरों आदि के द्वारा संसार को सुखधाम बनाए जाने की योजनाएं प्रकाश में आ रही हैं। अब इनका क्या फल होता है। परन्तु इस समय तो लक्षण शुभ नहीं देख पड़ते हैं। आज संसार को श्रीकृष्ण के सन्देश को सुनने और क्रिया में लाने की आवश्यकता है। उनका सन्देश यही है कि अधर्म का नाश और धर्म का प्रसार करो इसी में व्यक्ति और समष्टि का कल्याण है।

सार्वदेशिक सभा की नई उपलब्धि

वृहदाकार-सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित

सार्वदेशिक सभा ने २०×२६/४ के वृहद् आकार में सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन किया है। यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है तथा कम दृष्टि रखने वाले व्यक्ति भी इसे आसानी से पढ़ सकते हैं। आर्य समाज मन्दिरों में नित्य पाठ एवं कथा आदि के लिये अत्यन्त उत्तम, बड़े अक्षरों में छपे सत्यार्थ प्रकाश में कुल ६०० पृष्ठ हैं तथा इसका मूल्य मात्र १५०) रुपये रखा गया है। डाक खर्च ग्राहक को देना होगा। प्राप्ति स्थानः—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

वर की आवश्यकता

सुन्दर, सुशील, गृह कार्य में दक्ष उम्र २५ वर्ष ऊंचाई १६० सेंटीमीटर, पं० राजपूत (क्षत्रिय स्वर्णकार) शिक्षा एम०ए०बी०एड० कन्या हेतु अविवाहित, निःसन्तान विधुर अथवा तलाक शुदा योग्य वर चाहिए सम्पर्क करें।

प्रभात कुमार वर्मा,
C/o मानसरोवर बोटलिंग कम्पनी
प्रा०लि०, कोतवाली रोड,
बिजनौर (उ०प्र०) पिन २४६७६२

प्रान्तीय महिला सभा का निर्वाचन

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन दिनांक २५-७-९४ को श्रीमती चांदरानी अरोड़ा की अध्यक्षता मे सौहार्द पूर्ण वातावरण के मध्य दीवान हाल में सम्पन्न हुआ।

सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारणीं निर्वाचित हुईं।—

प्रधाना श्रीमती प्रकाश आर्या महामन्त्री श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, उपप्रधाना सर्व श्रीमती शकुन्तला आर्या, सुशीला जी आनन्द, सरला जी महता, प्रमशील महिन्द्रू, शान्ती जी मलिक, कृष्णा जी चड्ढा, रामचमेली जी, मन्त्री श्रीमती चन्द्रकला राजपाल, उपमन्त्री सर्वश्रीमती कृष्णा जी बसन्त, राजपांडे जी, चांदरानी जी, कान्ता सिकरी, कृष्णा जी खेड़ा, विकावती जी मरवाह कोषाध्यक्ष श्रीमती तारा बैद, सहकोषाध्यक्ष विमला बधवा।

संगठित और चरित्रवान लोग

(पृष्ठ १ का शेष)

ने ही लिया था, जिससे पण्डित जवाहरलाल नेहरू का सिंहासन भी कम्पायमान हो गया था। किन्तु हमारे दुर्दिन अभी समाप्त नहीं हुए थे कि इसी बिहार में जन्म लेने वाले श्री जयप्रकाश नारायण ने बरौनी के रेलवे स्टेशन पर १९ ब्राह्मणों के यज्ञोपवीत तोड़ दिये। उस समय आर्यसमाज मैदान में आया और मैंने सार्वदेशिक सभा के मन्त्री होने के नाते श्री जयप्रकाश नारायण को खुला चैलेंज आर्य समाज की ओर से किया। इस समाचार का समाचार पत्रों में जोरदार प्रचार हुआ।

श्री जयप्रकाश नारायण जब दिल्ली आये तो उन्होंने हमें मिलने के लिए गांधी प्रतिष्ठान में बुलाया, उनके बुलाने पर जब मैं उनसे मिलने गया तो उन्होंने हम से शिकायत की कि आप हमारा विरोध आर्यसमाज की ओर से क्यों कर रहे हैं, तो मैंने उत्तर दिया कि आपने बरौनी रेलवे स्टेशन पर १९ ब्राह्मणों के यज्ञोपवीत क्यों तुड़वाये। इस पर श्री जयप्रकाश नारायण जी बोले मैं समग्र क्रान्ति करना चाहता हू। मैंने उनसे कहा कि आपकी इस क्रान्ति में मुसलमान शामिल हैं या नहीं, मुसलमानों को तो चार चार शादियां करने की छूट है, इस पर वे बोले कि मुसलमानों की बात मत करो। तब मैंने जवाब दिया कि भारत के नेताओं की इसी कमी के कारण पाकिस्तान बना है।

स्वामी जी ने अपना भाषण आगे जारी रखते हुए कहा कि यह ओ३म् ध्वजा किसी जाति विशेष अथवा समुदाय मात्र की नहीं है यह तो समस्त मानव मात्र के लिए है आज रक्षा बन्धन के दिन इसे घर-घर पर लहराओ और बहनों तथा बेटियों की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करो।

स्वामी जी ने कहा कि रक्षा के इन दो धागो मे बहुत बड़ी ताकत है। विपत्ति आने पर इन्ही दो धागो को भेजकर चित्तौड़ की रानी ने मोहम्मद खिलजी को सहायता के लिए मजबूर कर दिया था।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप सभी लोग संगठित होकर बिहार मे आर्य समाज का कार्य करे, सारा देश आपकी तरफ देख रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बिहार के आर्य जन यहा के पुराने इतिहास को कायम रखेंगे ऐसा हमे विश्वास है। अपने इस सम्बोधन के पश्चात् स्वामी जी ने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया।

ईसाई महिलाओं का हश्र

(पृष्ठ १ का शेष)

रूप में स्वीकृत किया। इस प्रकार १९५१ से १९८६, यानि ३६ सालो तक व्यक्तिगत, पारिवारिक कानून के नाम पर न जाने कितनी ईसाई महिलाओ को पैतृक संपत्ति मे समान अधिकार से वंचित किया जाता रहा।

अब राज्य सरकार का कहना है कि उच्चतम न्यायालय के निर्णय से १९५१ से १९८६ के बीच के उत्तराधिकार के सारे मामले, पैतृक संपत्ति की खरीद-बिक्री, असमान विभाजन, सब अवैध हो गये हैं। यह मुश्किल स्थिति है जिससे ईसाई परिवार टूट जायेंगे। इसलिए राज्य मे उत्तराधिकार संबन्धी नया विधेयक लाया गया है पर महिला संगठनो का कहना है कि राज्य सरकार वास्तव में पुराने असमान और गैरकानूनी उत्तराधिकार व्यवहार जारी रख रही है। साथ ही ईसाई परिवारो के विघटन की बात झूठी है। क्योंकि पुराने संपत्ति बटवारो को चुनौती देने वाली महिलाओं की संख्या बेहद कम है। १९८६-९३ के दौरान राज्य के न्यायालयों मे ऐसे केवल २१ मामले आए हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि ईसाई महिलाओ और उनके फोरम ने अन्य महिला संगठनों, समूहों के साथ मिलकर विधेयक के विरोध में आन्दोलन के कई कार्यक्रम बनाए हैं। (नवभारत टाइम्स २२ अगस्त से साभार)

आर्य समाज की मान्यता

(पृष्ठ ४ का शेष)

दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम परस्त्रियों से रास मण्डल क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी पर लगाये हैं इसके पढ़-पढ़ा-सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत ही निन्दा करते हैं, जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्ण के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती ?

—सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास

आपने देखा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जो आर्य समाज के संस्थापक थे उनकी श्री कृष्ण के बारे मे कितनी सुन्दर राय है जब स्वामी जी की यह राय है तो उन द्वारा स्थापित आर्य समाज की राय में श्री कृष्ण क्या होंगे यह कहने की आवश्यकता नहीं है। अतः आर्य समाज श्री कृष्ण को महापुरुष तथा उच्चादर्श रूप में स्वीकार करता है। आयें हम भी आज यह व्रत लें कि श्री कृष्ण के समान मित्र भावना वाले वीरता वाले नीति वाले ईश्वर के उपासक सदाचार के धनी हम भी बनें, कुर्सी के भूखे नहीं बल्कि विद्वानो के चरण धोने जैसा सेवा का कार्य करने मे अपमान न समझें।

॥ ओ३म् ॥

सिंगापुर बैंकाक की विदेश यात्रा

से आर्य भाई-बहिनो की प्रेरणा से दिनांक २६-९-९४ की रात्रि को चलेंगे और ४-१०-९४ की रात्रि को वापिस आयेंगे। आने जाने का By Air, रहने के लिये होटल, भ्रमण के लिये बस। साइट सीन देखना, नाश्ता डिनर और लंच शामिल है। दिल्ली Air port Tax और वीजा भी शामिल है।

कुल सारा खर्च २८००० रु० प्रति सवारी होगा।

सीट बुक कराने के लिये ५००० रु० एडवान्स देने होंगे।

Air port जाने के लिये आर्य समाज मन्दिर मार्ग से बस चलेगी।

बाहर से आने वाले आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी, पहाड़ गंज और आर्य समाज मन्दिर, अनारकली मन्दिर मार्ग पर ठहर सकेंगे।

बाकी पैसे १५ दिन पहले देने होंगे।

कार्यक्रम

२६.९.९४ रात्रि दिल्ली से बैंकाक।

२७.९.९४ प्रात. बैंकाक से पाटिया।

२८.९.९४ पाटिया से बैंकाक १.१०.९४ तक।

२.१०.९४ बैंकाक से सिंगापुर ४.१०.९४ तक।

सवारी अपना पास पोट, दूरभाष न० और Address अवश्य भेजे।

सीट बुक कराने के लिये Draft or Cheque संयोजक के नाम भेजें।

नोट . सीट बुक के लिए सम्पर्क एवम् जानकारी हेतु

संयोजक : श्याम दास सचदेव, मन्त्री आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-५५ दूरभाष : (७५२६१२८) घर का
घर का पता २६१३ भगतसिंह गली न० ९, चूना मण्डी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-५५
श्री मालवीया जी, आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१ दूरभाष न० ३४३७१८, ३१२११०

संयोजक . श्याम दास सचदेव, फो. : ७५२६१२८ घर का, ७३८५०४ पी. पी.

अगर भारत सरकार ने किराया बढ़ा दिया तो वह देना पड़ेगा।

नोट : नये पासपोर्ट बनाने वाले ध्यान दें :—

फोटो ६ Date of Birth Certificate राशन कार्ड की कापी तथा फार्म लेकर संयोजक के पास पहुच जायें, उनकी पूरी-पूरी सहायता की जायेगी।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४९/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२८ ८-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C)93
R N- 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 25-26-8-1994

हरियाणा सभा द्वारा शराबबन्दी आन्दोलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक ७ अगस्त ९४ में हरियाणा भर से आर्य समाज तथा शराबबन्दी कार्यकर्ता उपस्थित थे। सभा ने सर्वसम्मति से सांगवान खाप पंचायत की शराबबन्दी कार्यक्रम की सराहना की है कि इस खाप के किसी भी ग्राम में शराब का ठेका नहीं है। इस शराबबन्दी के परोपकारी निर्णय को लागू करवाने के लिए सांगवान खाप के प्रधान कप्तान विशालसिंह से सभा ने अनुरोध किया है कि अन्य खापों की सम्मिलित बैठक आमन्त्रित करके शराबबन्दी का निर्णय करावें, जिससे हरियाणा प्रदेश होने वाले सर्वनाश से बच सके।

सभा ने यह भी निश्चय किया है कि शराबबन्दी कार्यक्रम को सफल करने तथा जागृति होने के लिए महिलाओं का एक संगठन बनाकर पैदल यात्रायें निकाली जायें। सारे हरयाणा में शराबबन्दी कैम्प, ट्रैक्ट तथा शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया जावे। १४ अगस्त को ११ बजे हरयाणा भर की आर्य महिलाओं की बैठक दयानन्दमठ रोहतक में बुलाई गई है।

सभा ने श्री भजनलाल द्वारा शराबबन्दी की बजाये धुरकाना में शराब की फैक्ट्री खोलने पर उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर भी करने की घोषणा की।

इस शराब के कारखाने के गन्दे पानी से आसपास के क्षेत्र में पर्यावरण दूषित हो रहा है और बीमारी फैल रही है।

सभा में हरियाणा की जनता से अपील की है कि बहुत जल्दी शराब से होने वाले सर्वनाश से बचाने के लिए शराबबन्दी के जनकल्याण कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का हर प्रकार का सहयोग दें। —सभा-मन्त्री

हैदराबाद मे स्वतन्त्रता दिवस पर पाकिस्तानी झण्डे फहराए गए

हैदराबाद से प्रकाशित तेलगू दैनिक ''उदयाम'' के १६ ८ ९४ के अंक में यह समाचार प्रकाशित हुआ है कि स्वतन्त्रता दिवस पर हैदराबाद के बनेसारा तालाब कट्टा, सन्तोष नगर, बाबानगर तिरुमलकुण्टा और पुराने शहर के रियासत नगर आदि ६ स्थानों पर एम०आई०एम० पार्टी समर्थकों ने पाकिस्तानी झण्डे फहराये हैं।

उपरोक्त समाचार के विषय में आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश से जानकारी प्राप्त की जा रही है।—सम्पादक

मधुर यादे कन्हैया तेरी

भगतो के हितकारी मोहन, भारत में फिर आजइयो।
जन्म भूमि मधुपुरी पधारो—फिर बृज की दशा निहारो॥
माखन मिश्री खाने वाले, बिस्कुट चाय उड़ाजइयो॥ १॥
पीताम्बर पट पीत न पाओ—कोट पेन्ट टाई लटकाओ।
फिल्मी गाने सुन-सुनकर अपना मन बहला जइयो॥ २॥
हे मधु सूदन कृष्ण कन्हैया—मनु चरैया बसी बजैया।
वृन्दावन मे आओ ऐसी बंसी मधुर बजाइजइयो॥ ३॥
तेरे भक्त जन रास रचावें—राधा तेरे साथ नचावें।
हे रुकमणि पति मनिवर आकर के समझा जइयो॥ ४॥
दीन सुदामा द्वारे आया—बड़े प्रेम से कंठ लगाया।
बना सुदामा पुरी भामनी के मन को हरषा जइयो॥ ५॥
मोह ग्रस्त जब हुआ धनंजय कर उपदेश बनाया निर्भय।
वही ज्ञान गीता का फिर पावन उपदेश सुना जइयो॥ ६॥
मुर्दो कारण मछली पालन—कूबे यहां पर है मद सालन।
बधे हुए कुत्ते घर घर द्वारे प, आकर भगत बना जइयो॥ ७॥
हे नद नदन असुर निकदन—अब सब मगन मन-जन रंजन।
ग्वाल बाल सग लेकर के मधुवन मे धेनु चराय जइयो॥ ८॥

रचयिता—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

कुछ लोग वेदों के नाम पर पाखण्ड फैला रहे हैं

ग्रेटर नोएडा, १८ अगस्त। सूरजपुर के आर्य समाज मन्दिर के पुरोहित रामचन्द्र आर्य का कहना है कि आर्य जाति का प्राचीनतम विधि विधान शास्त्र है परन्तु कुछ लोग वेद मन्त्रों के अर्थों को बदलकर वेदों के नाम पर पाखण्ड फैला रहे हैं।

उन्होंने कहा कि इन पाखण्डियों ने वर्णों के अर्थ गलत करके जन्म से वर्णों को जातियां बना दी हैं जिसके कारण मानव जाति भटक कर रह गई है। चारों वर्णों के बारे में पुरोहित जी ने कहा कि जिस प्रकार विद्यालयों में बच्चों की परीक्षाएं होती हैं, उसी प्रकार वेदानुकूल राजनीति व आर्य पद्धति के समय में वर्णों की परीक्षाएं होती थीं। इसके अनुसार ब्रह्म विद्या का पाठ्यक्रम पूरा करने वाला ब्राह्मण क्षत्रिय का पाठ्यक्रम पूरा करने वाला क्षत्रिय समझा जाता था। उन्होंने कहा कि मनु चारों वर्णों को श्रेष्ठ मानते थे।

सर्व प्रचार समिति की नोएडा शाखा के अध्यक्ष राकेश शर्मा ने अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमिगृह पर राम मन्दिर के निर्माण के लिए 'श्रीराम जन्म-भूमि न्यास' को न सौंपे जाने पर रोष प्रकट किया है।

प्रधानमन्त्री को लिखे गये पत्र में कहा है कि सरकार की उदासीनता के कारण आचार्य धर्मेन्द्र देव को आमरण अनशन का कदम उठाना पड़ा है। उन्होंने माग की है कि जन्म भूमि तुरन्त न्यास को सौंपी जाए और आचार्य धर्मेन्द्र के जीवन की रक्षा की जाए।

(दैनिक जागरण १९-८-९४)

श्री सुरेशचन्द्र पाठक को पत्नि शोक

अत्यन्त दुख के साथ सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक सभा के कार्यालय सचिव श्री सुरेश चन्द्र पाठक की पत्नि श्रीमती गायत्री देवी पाठक का हृदयगति रुक जाने से ६१ साल की आयु में कुछ दिन पूर्व देहान्त हो गया है। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से उनके पुत्रों द्वारा दयानन्द घाट नई दिल्ली में की गई थी। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री और कार्यालय के कर्मचारी गण भी उपस्थित थे। दि० २०-८ ९४ को आर्य समाज सेक्टर-९ नई दिल्ली में शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक परिवार दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

—सम्पादक

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य —१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजा जा रही है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

८ वैदिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३१ अंक ३०] | दयानन्दाब्द १७० | सृष्टि सम्वत् : १९७२९४९०९५ | भाद्रपद कृ० ७सं० २०५१ ४ सितम्बर १९९४

राष्ट्र की सुरक्षा के लिए भारत को परमाणु बम बनाना चाहिए

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की मांग

दिल्ली २१ अगस्त। योगीराज श्री कृष्ण का जन्मोत्सव पूरे हिन्दू समाज की ओर से श्रद्धा पूर्वक धूमधाम से मनाया गया। आर्य समाजों की ओर से भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव अनेक स्थानों पर कार्यक्रम पूर्वक सम्पन्न हुआ।

दिल्ली की आर्य समाजों द्वारा आर्य समाज दीवानहाल मे आयोजित श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा—भगवान कृष्ण योगी और योद्धा दोनो गुणों मे सम्पन्न महामानव थे। उन्होंने अन्यायियों, और अधर्मियों को सर्वप्रथम इन दुर्गुणों को त्याग कर सद् कर्म करने की प्रेरणा की। यदि दुष्टों द्वारा इन नीतियों का पालन नहीं किया गया तो उन्होंने इन लोगो के विरुद्ध अस्त्र उठाने मे भी संकोच नहीं किया था।

स्वामी जी ने कहा—भारत युग पुरुष योगीराज श्री कृष्ण मर्यादा पुरुषोत्तम राम ऋषियों और मुनियो की पवित्र जन्म भूमि रही है।

स्वामी जी ने पाकिस्तान के पास परमाणु बम होने की खबर पर आर्य समाज की ओर से भारत सरकार से जोरदार मांग की कि अब समय आ गया है कि भारत को अपना परमाणु बम बनाकर पाकिस्तान को अपने परमाणु कार्यक्रमो पर पुनर्विचार करने के लिए विवश कर देना चाहिए। पाकिस्तान भारत की अखण्डता, एकता और शांति स्थापना मे हमेशा बाधा खड़ी करता आ रहा है। भारत के साथ वर्षों से आतंकवाद के माध्यम से अघोषित युद्ध कर रहा है। उसके इस कार्य मे उसे अपने मित्र राष्ट्रों का भी नैतिक समर्थन मिल रहा है।

स्वामी जी ने कहा—भारत की संस्कृति धैर्य और संयम से काम करने की ही रही है परन्तु अब समय आ गया है हमे भगवान कृष्ण की तरह शक्ति से शत्रु के दमन की तैयारी करनी चाहिए यही आज के समय मे राष्ट्रवासियों को आवश्यकता है।

उक्त समारोह मे प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता प्रो० बलराज मधोक ने आर्य समाज को खुली राजनीति मे भाग लेकर वर्तमान मे व्याप्त तुष्टीकरण की राजनीति को समाप्त करने का आह्वान किया। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, प० श्रीधर और प०श्यामसुन्दर स्नातक आदि अनेक विद्वानो ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किये।

मेमन परिवार के ६ अन्य सदस्य गिरफ्तार

अदालत ने सभी को दो सप्ताह के रिमांड पर दिया

नई दिल्ली २९ अगस्त। बम्बई बम कांड के सिलसिले मे केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने मेमन परिवार को दो महिलाओं सहित छह अन्य सदस्यो को गिरफ्तार कर एक बड़ी सफलता हासिल की है।

ज्ञातव्य है कि ब्यूरो के अधिकारियों ने गत पांच अगस्त को बम्बई बम कांड के प्रमुख अभियुक्त टाइगर मेमन के भाई याकूब अब्दुल रज्जाक मेमन को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार किया था। उससे पूछताछ करने पर बम कांड से जुड़ कई मामलों का पर्दाफाश हुआ है।

केन्द्रीय जांच ब्यूरो के प्रवक्ता के अनुसार गिरफ्तार किए गए मेमन परिवार के सदस्यों मे अब्दुल रज्जाक मेमन उसकी पत्नी हनीफा रज्जाक मेमन युसुफ अब्दुल रज्जाक मेमन सुलेमान अब्दुल रज्जाक मेमन उसकी पत्नी रुबीना सुलेमान मेमन और इस्सा रज्जाक मेमन शामिल हैं।

हनीफा और रुबीना को पकड़ने के लिए २५ ५५ हजार रुपए तथा अन्य चार व्यक्तियो की गिरफ्तारी के लिए एक एक लाख रुपए का इनाम घोषित था।

मेमन परिवार के गिरफ्तार किए गए सभी सदस्यो को पटियाला हाउस स्थित मेट्रोपालीटन मजिस्ट्रेट श्री बी०के० जैन की अदालत मे पेश किया गया था। अदालत के बन्द कमरे मे हुई इस कार्यवाही के दौरान गिरफ्तार लोगो को आगामी २ सप्ताह के लिए केन्द्रीय जांच ब्यूरो की हिरासत मे भेज दिया गया है।

शिक्षा सचिव ने कहा—गुरुकुल वृन्दावन विश्वविद्यालय फर्जी है

लखनऊ, ८ मई। उत्तर प्रदेश में कुछ फर्जी विश्वविद्यालयों को लेकर विवाद गहराता जा रहा है। राज्य सरकार आर्य समाजी नेताओं की यह बात मानने को तैयार नहीं है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन फर्जी नहीं है और गुरुकुल से जुड़े पदाधिकारियों ने चेतावनी दी है कि यदि गुरुकुल विश्वविद्यालय को फर्जी कहा गया तो वे आंदोलन करेंगे।

प्रदेश के उच्च शिक्षा सचिव सुबोधनाथ झा "आगरज" ने इस सम्बन्ध में फिर से जानकारी की तो उन्होंने कहा कि जब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उन्हें (गुरुकुल) विश्वविद्यालय नहीं माना और प्रदेश सचिवालय ने भी उनके विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय होने का प्रमाण पत्र नहीं दिया है। तो गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन फर्जी ही समझा जायेगा।

मान्यता नहीं

श्री झा गुरुकुल के पदाधिकारियों के इस कथन से सहमत नहीं हैं कि चूंकि कई शिक्षण संस्थाओं ने उनकी कुछ डिग्रियों को मान्यता दे दी है और तमाम महापुरुष गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन पधार चुके हैं इसलिए उनका विश्वविद्यालय अधिकृत है। उनका कहना है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम के अन्तर्गत प्रावधानों को पूरा करने वाले विश्वविद्यालयों को ही मान्यता मिलती है। गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन के पदाधिकारियों को यह बताना चाहिये कि क्या उनका विश्वविद्यालय इन प्रावधानों को पूरा करता है और अनुदान आयोग ने उनके विश्वविद्यालय को मान्यता दी है या नहीं।

धोखाधड़ी

उच्च शिक्षा सचिव ने बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा राज्य में चल रहे फर्जी विश्वविद्यालयों की सूची दिये जाने तथा इस पर गहरी चिन्ता व्यक्त किये जाने के बाद ही कार्रवाई शुरू की। और अनुदान आयोग ने अपनी रिपोर्ट में राज्य सरकार से जनता को सतर्क करने का अनुरोध किया है जिससे लोगों के साथ धोखाधड़ी न हो सके।

श्री झा के अनुसार कुछ फर्जी विश्वविद्यालय खुला विश्वविद्यालय पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में परीक्षा कार्य कर रही है और फर्जी डिग्रीधारियों ने नौकरियां भी प्राप्त कर ली हैं। कुछ प्रकरणों को बैंकों ने राज्य सरकार के पास भेजा है।

पं० नरदेव विद्यालंकार दक्षिण अफ्रीका दिवंगत

दक्षिण अफ्रीका में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख स्तम्भ सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान डा० नरदेव वेदालंकार का निधन डरबन में मंगलवार दिनांक २३ अगस्त १९९४ को प्रातः ११-०० बजे हो गया।

आप गुजरात प्रान्त के निवासी और गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक थे। स्नातक होने के बाद पण्डित नरदेव जी वेदालंकार सूरत हिन्दू एजूकेशन सोसायटी के निमन्त्रण पर २४ नवम्बर १९४७ को गुजराती व हिन्दी के अध्यापक के रूप में दक्षिण अफ्रीका के डरबन नगर में पधारे। उन्हें धार्मिक शिक्षा के प्रसार का भी कार्यभार सौंपा गया। उन्होंने २७ वर्ष तक इस संस्था की सेवा की, इसके अतिरिक्त उन्होंने आर्य समाज और हिन्दी भाषा के प्रचार व प्रसार का कार्य किया। इनके पहले कोई भी हिन्दू उपदेशक इतने लम्बे समय तक दक्षिण अफ्रीका में न रह सका। इन्होंने वैदिक धर्म व संस्कृति की यहां पर एक अमिट छवि बनाई।

श्री पंडित नरदेव जी विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी की अद्भुत और विलक्षण देन थे, इन्होंने हिन्दी भाषा का सूरत व डर्बन में सराहनीय योगदान दिया है। दक्षिण अफ्रीका में आकर हिन्दी के प्रचार प्रसार के महत्व को समझा। और दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा की सहायता से हिन्दी शिक्षा संघ की स्थापना की थी। यह इस संघ के २५ वर्ष तक अध्यक्ष रहे। और इतने समय में हिन्दी की अच्छी उन्नति की थी, यह आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के साथ तन मन से जुड़े रहे और एक दार्शनिक व मार्ग दर्शक बने रहे। यह वैदिक पुरोहित मण्डल के भी अध्यक्ष रहे। इन्होंने वैदिक संस्कारों के माध्यम से पुरोहितों को पूर्णतया प्रशिक्षित किया, यह वैदिक निकेतन के भी अध्यक्ष थे। इस संस्था ने वैदिक धर्म पर मासिक लघु पुस्तिकायें छाप कर प्रचारार्थ वितरित की। और वैदिक धर्म की परीक्षाओं की जो इसी संस्थान से पं० जी की अध्यक्षता में प्रभावशाली कार्य किया। इसके लिए पं० जी ने उपयुक्त पुस्तकें लिखी। इनके द्वारा चलाई गई परीक्षा पद्धति को दूसरे देशों ने भी अपनाया। पं० जी एक प्रभाव शाली वक्ता व लेखक थे। इन्होंने कई धार्मिक पुस्तकें लिखी, जिनमें दक्षिण अफ्रीका में धार्मिक जागरूकता, आर्य प्रार्थना, हिन्दुत्व के मूल सिद्धान्त २ भाग हिन्दी व्याकरण, २ भाग धर्म शिक्षा पाठावलि-३ भाग मुख्य हैं।

पं० जी ने अपने आपको वैदिक धर्म और हिन्दी भाषा के लिये समर्पित किया हुआ था वह भारतीय जनमानस के प्रतिष्ठित सदस्य थे। पं० जी समय समय पर आर्य महा सम्मेलनों में भारत, तथा मोरिशस, लन्दन, पूर्वी अफ्रीका आदि स्थानों में भी पधार कर अपने विचारों द्वारा जन मानस को प्रभावित करते रहे।

इधर कुछ समय से आप अस्वस्थ चल रहे थे काफी औषधि उपचार के पश्चात २३ अगस्त ९४ को आपने अपना नश्वर शरीर त्यागकर प्रभु को प्यारे हो गये। आप पुरानी पीढ़ी के स्नातक थे। और आपने इस वाक्य को पूर्णतया निभाया, जिसमें लोग यह कहा करते थे।

"आयेंगे सत अरब में जिनसे लिखा यह होगा।
गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है।

आपने जीवन पर्यन्त ऋषि मिशन के प्रति समर्पण भाव से जीवन यापन किया, आज आप हमारे मध्य नहीं हैं। प्रभु आपकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें और परिवार तथा इष्ट मित्रों को सान्त्वना दें।

वर्तमान परिस्थितियां आर्यसमाज के लिए चुनौतीपूर्ण

सामना करने का संकल्प लें

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

आर्य समाज का स्वरूप "आंदोलनात्मक" है, इसलिए मानव जाति का हित और कल्याण जिस कार्य के करने से हो सकता है, उसे अवश्य पूरा करना चाहिए। आर्य समाज और आर्य समाजी की पहचान यही है कि वह जो कहे, उसे पूरा करे।

देशवासियों की नींद अब भी नहीं खुली तो कल को उनकी भावी संतान को यह कहने का अधिकार भी नहीं रहेगा कि वे हिन्दू हैं। अथवा वेद और गीता उनके पवित्र ग्रन्थ हैं। भगवान राम और कृष्ण का नाम लेते हुए भी उन्हें भय हो जायेगा।

इस तरह की अनेक समस्याओं को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है। सार्वदेशिक सभा की बैठकों में कई बार गंभीरता से इन सब मामलों पर विचार हुआ है। परन्तु अन्तरंग द्वारा पारित निर्णयों को आर्य समाजों व आर्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा कड़ाई से लागू नहीं किया गया है। आर्यसमाज का स्वरूप "आंदोलनात्मक" है, इसलिए मानव जाति का हित और कल्याण जिस कार्य के करने से हो सकता है, उसे अवश्य पूरा करना चाहिए। आर्य-समाज और आर्य समाजी की पहचान यही है कि वह जो कहे, उसे पूरा करे। आर्य समाजी का व्यक्तित्व इतना साफ और सुथरा हो कि दूसरा उस पर अंगुली न उठा सके। हमारी निष्ठा और ईमानदारी का कुछ न्यायालयों ने भी सम्मान किया है। कुछ समय पूर्व दिल्ली हाईकोर्ट में आर्य समाज बनाम मण्डी बाहदरा का केस चल रहा था, जज महोदय ने निर्णय करने के लिए वह केस मेरे पास भिजवाया था। उसी प्रकार यह कहने में भी मुझे संकोच नहीं है कि कुछ अदालतों में आर्य समाज के नेताओं की गवाही को ही प्रमाण मानकर फैसले हुए हैं। इतना प्रभाव था आर्य समाज और उसके कार्यकर्ताओं का। सर्वत्र उनके चरित्र की प्रशंसा होती थी, जनता में जागृत विश्वास ही समाज की सजीव शक्ति थी।

> **मनुष्यों में न कोई बड़ा है और न कोई छोटा। ये सब आपस में बराबर हैं। वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि महाराजा दशरथ के अश्वमेध यज्ञ में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, तपस्वी और शूद्र प्रतिदिन सब मिलकर भोजन करते थे। गुण कर्म और स्वभाव से वर्ण बने हैं। आज भी चाहे कोई जन्मना ब्राह्मण क्यों न हों, उसके गुण कर्म और स्वभाव के अनुसार ही उसका वर्ण बदल जाता है। किसी भी प्रकार के काम करने से कोई छोटा बड़ा नहीं होता है, कालान्तर में जन्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था की जो परिपाटी चल पड़ी थी, उसी के कारण हिन्दू जाति की अपूर्णीय क्षति हुई है।**

अब वर्तमान परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में समस्त आर्य समाज संगठनों और आर्य प्रतिनिधि सभाओं को आर्य समाज के आन्दोलनात्मक स्वरूप और उसकी गतिविधियों के सम्बन्ध में अपने-अपने क्षेत्र में जन जागृति का पुनः सञ्चार करना होगा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्णयों और आदेशों का पालन करने के लिए पूरे आर्य समाज संगठन और उसके कार्य-कर्ताओं को अनुशासन का पालन करके दूसरों के लिए भी एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए, तभी यह देश, इसकी संस्कृति, जाति और धर्म सुरक्षित रह सकेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य समाजों को आवश्यक निर्देश

१. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ११ मार्च १९९४ की अंतरंग बैठक में निर्णय हुआ था कि प्रचलित जन्म मूलक जातपात की कड़ियों और प्रतिबन्धों का विच्छेद करके वैदिक वर्णव्यवस्था को मानने वाले महानुभावों को ही आर्य समाजों से प्रांतीय सभाओं और सार्वदेशिक सभा में प्रतिनिधि भेजा जाये।

इसके लिए समस्त आर्य समाजों को निम्न कार्यक्रमों को अपनी शक्ति के अनुसार क्रियान्वित करना चाहिए—

१. (अ) प्रत्येक आर्य समाज में १० आर्य सभासदों में कम से कम एक सभासद् हरिजन अथवा पिछड़े वर्ग का होना चाहिए।

(ब) वर्ष में सब सभासद् दो या तीन बार आर्य समाज मन्दिर अथवा किसी पार्क में सहभोज और मंगलमिलन का कार्यक्रम रखें। इस मंगल मिलन में सदस्यों के परिवार भी साथ में और अपने पास पड़ोस के हरिजनों अथवा पिछड़े वर्ग के लोगों को भी बुलावें और उन्हें आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रति प्रेरित करें। उसके बाद सामूहिक भोज करें। वहां पर किसी भी प्रकार के जातिगत भेदभाव को प्रश्रय न दें।

(स) भोजन बनाने की व्यवस्था सब महिलायें मिलकर करें, सब पर सबका हाथ लगना अनिवार्य है।

(द) जिन समाजों में हरिजन सभासदों की संख्या अधिक हो वहां १० पर कम से कम एक सवर्ण सभासद् अवश्य हो, जहां तक हो सके, जन्मगत जात-पात नाम के आगे प्रयोग न करें।

(य) प्रत्येक आर्य समाज छुआ-छूत उन्मूलन, मंगल मिलन और सहभोज कार्यक्रम के चयन के लिए दो सदस्यों की एक टोली आर्य समाज के निर्वाचन के समय ही नियुक्त कर दें। यह टोली जनसम्पर्क का कार्य करेगी। लोगों के घर-घर जाकर सम्पर्क करके उन्हें आर्य समाज के सिद्धांतों और जाति तथा धर्म रक्षा की प्रेरणा करेगी और सहभोज, मंगलमिलन आदि का निर्धारण करेगी।

(र) इन आयोजनों का व्यय सदस्य मिलकर करें ताकि किसी एक पर बोझ न पड़े।

(ल) मंगल मिलन कार्यक्रम में सब लोग साफ कपड़े पहन कर आवें। प्रसाद, भोजन अथवा जलपान के बाद योग्य विद्वान अथवा पुरोहित द्वारा सबको बताया जावे—

मनुष्यों में न कोई बड़ा है और न कोई छोटा। ये सब आपस में बराबर हैं। वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि महाराजा दशरथ के अश्वमेध यज्ञ में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, तपस्वी और शूद्र प्रतिदिन सब मिलकर भोजन करते थे। गुण और स्वभाव से वर्ण बने हैं। आज भी चाहे कोई जन्मना ब्राह्मण क्यों न हो, उसके गुण कर्म और स्वभाव के अनुसार ही उसका वर्ण बदल जाता है। किसी भी प्रकार के काम करने से कोई छोटा बड़ा नहीं होता है, कालान्तर में जन्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था की जो परिपाटी चल पड़ी थी, उसी के कारण हिन्दू जाति की अपूर्णीय क्षति हुई है, सबको इस कुप्रथा और रूढ़िवाद को समाप्त करने का संकल्प लेना चाहिए।

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य जनता-सावधान

प्राइमरी पाठशाला गुरुकुल वृन्दावन का कुलपति दर्जा चार पास

तथा कथित आचार्य भगवानदेव की जाली-अपील

राजपालसिंह शास्त्री सम्पादक "मधुर लोक"

आज इस प्रकार के धोखेबाज—लोगों के द्वारा गुरुकुल विश्व विद्यालय-वृन्दावन जिसकी कीर्ति दिक् दिगन्त में व्याप्त थी यशस्वी स्नातक निकले, उसकी छवि भी, धूमिल हो रही है।

फर्जी-धोखेबाज अधिकारियों ने महामहिम श्री मोतीलाल जी वोरा राज्यपाल उ०प्र० से सम्पर्क कर उन्हें गुरुकुल में आमन्त्रित किया इस सूचना पर कुछ लोगों ने महामहिम श्री वोरा जी को गुरुकुल की स्थिति का ज्ञान कराया। महामहिम जी ने डी०एम० मथुरा के द्वारा जांच कराई और गुरुकुल वृन्दावन का कार्यक्रम स्थगित कर दिया। जिसकी सूचना तथा कथित जाली-आचार्य जी को भी दे दी गई।

गुरुकुल के कुलाधिपति श्री कैलाशनाथ सिंह यादव फर्स्ट क्लास की यात्रा कर फर्स्ट क्लास के किराये प्राप्त करने पर आर्य समाज की सदस्यता से ही पृथक कर दिये गये। इसकी जांच दिल्ली के जस्टिस हरकिशन मलिक के द्वारा कराई गई और वह सच निकली। इसकी जांच कराने वाले धर्मेन्द्र सिंह आर्य तथा चन्द्रकिरण शर्मा थे जो आज भी कैलाशनाथ यादव की झोली मे बैठे हैं।

नम्बर-२-का तथा कथित प्राइमरी पास आचार्य भगवानदेव शर्मा की राजस्थान सभा ने आर्य समाज की मेंबरी बन्द की हुई है।

चन्द्रकिरण शर्मा पर खादी ग्रामोद्योग का ५ लाख रुपये के गबन पर कोर्ट केस चला है। आज वृन्दावन गुरुकुल की भूमि जो १५ लाख की थी ४ लाख में बेच दी गई है जिसकी जानकारी सार्वदेशिक पत्र में प्रकाशित की जा चुकी है। श्री मनमोहन तिवारी जी मन्त्री सभा ने कानून से रुकवादी है।

आज एक अपील इन्ही नामी व्यक्तियों के द्वारा निकाली गई है कि १५ लाख रुपये चाहिये—एक-एक हजार के १५ हजार व्यक्ति धन देने वाले चाहिये। अब क्या है आगे पीछे का चल गया धन्धा। लेकिन महामहिम की जांच से और उनके कार्यक्रम स्थगित हो जाने से इनकी योजनाओं पर तुषारापात हो गया।

भ्रष्ट अधिकारियों के कार्यकलापो के कारण गुरुकुल वृन्दावन की उपाधियों की मान्यता तक समाप्त हो गई है और अब उन उपाधियों को विगत वर्षों के नाम पर बेचकर पैसा कमाया जा रहा है।

जिन लोगो ने त्याग तपस्या के बल पर गुरुकुल की स्थापना की और उसकी चल-अचल सम्पत्ति बनाई। आज गुरुकुल की भूमि को चन्द्रकिरण शर्मा कैलाशनाथ यादव भूमि बेचकर अपना घर भर रहे हैं मुस्लिम महिला के हाथो ४ लाख में बेची है—इन चोर-बेइमानों के कार्यकलापों को जनता देखती। फिर कौन दान देगा।

चोरी और सीना जोरी—

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री का रिहायशी मकान जो आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ के कैम्पस मे है—इन धूर्तों ने सारा सामान ताला तोड़कर चुरा लिया। नैतिकता की हद है आज इस सामान की जांच लखनऊ पुलिस के अधिकारी कर रहे हैं। इन पर चोरी-डकैती का केस चलना चाहिये।

भ्रष्टाचार का बोलबाला है तथा कथित आचार्य से पूछो—तुमने कहां से आचार्य पास किया है तो मूर्खता का उत्तर है, कि स्वामी दयानन्द ने कौनसी आचार्य परीक्षा पास की है।

कहां राजा राऊ—कहां गांगू तेली—

महर्षि के समान अपने को समझना मूर्खता की पराकाष्ठा है। आज सबके सब चोर-एकत्रित हो गये हैं स्थान-स्थान पर आर्य समाज में सम्पत्तियों को हड़पने कब्जा करने पर झगड़े चल रहे हैं।

तुम्हारा क्या बिगड़ेगा पर भर लोगों पर महर्षि और उनकी स्थापित आर्य समाज का क्या बनेगा समय-समय पर आये दिन इन अति भ्रष्ट फर्जी आर्यों के फर्जी कारनामों को सुना जा सकता है। आर्यों सावधान—१५ लाख की यह फर्जी अपील पर फर्जी दलालो के नाम से अखबारों में सूचनायें आ रही हैं। आपसे मैं अपील करता हू इन धोखेबाजों से बचें और आर्य समाज को बचायें। यह आर्य समाज से निष्कासित कैलाशनाथ सिंह यादव हाई कोर्ट से भी हार चुके हैं इसके विपरीत जजमेन्ट पर स्टे मांगा वह भी नहीं मिला, फिर (स्टेटसको) २९ जुलाई तक मिला, वह भी समाप्त हो गया।

आश्चर्य इस बात का है दो वर्ष में आर्य प्रतिनिधि सभा का ६-७ लाख रुपया पानी की तरह आन्दोलनो में व्यय कर दिया।

अब किराया भवन का जो लेते थे श्रीमनमोहन तिवारी सभा मन्त्री ने वह भी रुकवा दिया। तो अब क्या करें—अब आर्य समाज की सम्पत्ति बेच कर पेट भरने का रास्ता अपनाया है। इसीलिये आवश्यकता प्रतीत हुई कि इन धोखेबाजों से जनता को सावधान किया जाय।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के यह अधिकारी नहीं हैं ?

१. अब से कुछ वर्ष पूर्व कैलाशनाथ यादव ने सभा पर अधिकार जबर्दस्ती कर लिया था उस समय श्री वीर बहादुर सिंह मुख्यमन्त्री उ० प्र० के थे। उनको जब सत्य बात की जानकारी दी गई तो उन्होंने कैलाशनाथ यादव पार्टी को चार दिन मे सभा भवन से बाहर कर श्री मनमोहन तिवारी को अधिकृत किया।

२. इसके पश्चात् पुन. सभा भवन पर अधिकार किया। तब श्री मुलायम सिंह जी मुख्यमन्त्री थे। उनको जब सभा मन्त्री व प्रधान आदि ने मिलकर वस्तु स्थिति से अवगत कराया। तो श्री मुलायम सिंह जी ने श्री कैलाशनाथ यादव को २ घटे मे सभा भवन से बाहर कर श्री तिवारी जी को पुन: कार्यालय सुपुर्द किया।

३ परन्तु इतना होने के बाद—

उत्तर प्रदेश में (बी०जे०पी०) की सरकार बन गई और श्री कल्याण सिंह मुख्यमन्त्री बने। मुख्य मन्त्री महोदय पर किसका ने दबाव पड़ा और कल्याण सिंह जी ने कैलाशनाथ यादव को जबर्दस्ती अधिकृत कर सभा कार्यालय दिलवा दिया। आश्चर्य यह था कि दोनों पार्टियों में कोई तालमेल नहीं। एक जनता दल दूसरी भारतीय जनता पार्टी।

वैधानिक व्यक्ति श्री मनमोहन तिवारी, ने श्री अटल जी, श्री आडवाणी जी से मिलकर वस्तुस्थिति समझाई। इन दोनों महानुभावों ने श्री कल्याण सिंह से फोन पर तथा लिखित आदेश दिया। हम उस सभा को मान्यता देंगे जिसे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी मान्यता देंगे। परन्तु कल्याण सिंह बहरे हो गये। श्री सुषमा जी ने कहा—पर कोई असर नहीं हुआ और अनधिकृत व्यक्ति जो जबरन से सभा पर अधिकार पा गये। ६ लाख रुपया भी जो किराये का रुका था शासन ने वह भी कैलाशनाथ यादव को दिलवा दिया।

श्री मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री ने उस समय श्री अटल जी के कहने पर बी०जे०पी० की सदस्यता ले ली। उस समय हमने तिवारी जी से कहा था कि आप बेमौत मारे जाओगे, वही उनके साथ हुआ। किसी बी०जे०पी० के नेता की नहीं चली और निष्कासित व्यक्ति कैलाशनाथ यादव सभा उ०प्र० के अनधिकृत अधिकारी बन गये।

अब स्थिति यह है कि लखनऊ हाई कोर्ट के (फीस्ता) जज ने भी इनके विरुद्ध निर्णय दे दिया। श्री रजिस्ट्रार महोदय ने भी श्री मनमोहन तिवारी के निर्वाचन को वैधता प्रदान कर दी। आज इस प्रकार उ०प्र० का आर्य समाज अनधिकृत लोगो के हाथों में पड़ा बिलख रहा है। स्थान-स्थान पर झगड़े हो रहे हैं सम्पत्तियां बिक रही हैं और चन्द्रकिरण जैसे चोरों की बन रही है।

इसीलिये कहा है आर्यसमाज उ०प्र० की आर्य जनता इन धोखेबाज अपील कर्ताओं से सावधान हो और इनको किसी भी तरह की मदद न करे।

विश्व का सबसे अधिक मुस्लिम आबादी वाला

इण्डोनेशिया आज भी संस्कृति से हिन्दू है

७० लाख हिन्दू जनसंख्या के इस देश में ११००० हिन्दू मन्दिर हैं

श्री बसन्तलाल झा

श्री बसंतलाल झा के इस यात्रावृत्त में आप पढ़ेंगे कि १५ करोड़ मुस्लिम जनसंख्या वाले इण्डोनेशिया में अब भी ७० लाख हिन्दू अपने ११,००० हिन्दू मन्दिरों में अपनी परम्परागत पूजा-अर्चना विधिवत् किया करते हैं। उपासना की दृष्टि से इस्लाम मत के अनुयायी बने हुए इस मुस्लिम बहुल देश का मुसलमान आज भी रामायण-महाभारत के पात्रों का अनुभव करता है। वहां का मुस्लिम समाज इस बात को दृढ़ता से कहता है कि उपासना पद्धति बदलने से पूर्वज कैसे बदल सकते है? इसी मान्यता के कारण इण्डोनेशिया विश्व का एकमात्र मुस्लिम देश है जहां सभी धर्मों के अनुयायियों को अपनी-अपनी मान्यता के अनुसार धर्मपालन की स्वतन्त्रता है। सर्वधर्म समभाव का आदर्श है—इण्डोनेशिया! —सम्पादक

मैंने जावा में और विशेषकर बाली में विस्तृत भ्रमण किया वहां के परिषद् के अधिकारियों से मिला तथा कई बैठकों/सभाओं में बोला। वहां के हिन्दू समुदाय के बीच रहा तथा अनेक धार्मिक स्थलों की भी यात्रा की। मुझे लगा कि बाली और जावा दोनों क्षेत्रों में हिन्दुओं में धार्मिक भावना अच्छी खासी है। धर्म के प्रति लोगों में केवल निष्ठा ही नहीं, पर्याप्त उत्साह भी है। हर हिन्दू देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण से उऋण होने के लिए बहुत कुछ दान, पुण्य करता है। यहां के हिन्दू अपनी आय का काफी अंश दान-पुण्य के काम में खर्च करते हैं क्योंकि उनका विश्वास है कि इससे उनके सुख और स्वास्थ्य में वृद्धि होगी। यह ज्ञातव्य है कि बाली निवासियों की प्रति व्यक्ति औसत आय (भले ही वह Tourism की वजह से हो) पूरे इण्डोनेशिया में सबसे अधिक है। पर्वों उत्सवों के समय मन्दिरों में काफी भीड़ रहती है। हिन्दुओं की कोई बैठक या सभा प्रारम्भ होने के पहले आसन, प्राणायाम का आयोजन किया जाता है। तत्पश्चात् गायत्री मन्त्र तथा नारायणोपनिषत् के कुछ मन्त्र, शिव स्तोत्र गम्भीरता से पढ़ते हैं। ओ३म् शान्ति: शान्ति: शान्ति: के साथ इसका समापन होता है। यहां की परिषद् हिन्दू धर्म ने इन मन्त्रों का चयन किया है तथा इनका प्रचार-प्रसार करके इनको सारे हिन्दुओं के बीच सर्वव्यापी बना दिया है। सारे मन्त्र संस्कृत में हैं। हालांकि इन मन्त्रों का उच्चारण वे अपने ढंग से करते हैं, तब भी प्रार्थना के समय सभी लोगों की निष्ठा, गम्भीरता और उनका अनुशासन देखने और अनुभव करने की चीज होती है। मन्दिरों में बहुत अधिक भीड़ होने के बावजूद (विशेष अवसरों पर) लोग धक्कापेल या शोरगुल नहीं करते। मन्दिर के प्रांगण में जगह न होने पर लोग बाहर खड़े रहकर धैर्यपूर्वक अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं।

यहां के मन्दिरों में कोई मूर्ति नहीं होती। केवल ऊंची वेदिकाएं जिनमें पत्थर का सुन्दर शिखर होता है तथा जो अक्सर ब्रह्मा, विष्णु और मध्य में शिव के लिए निर्धारित होती हैं तथा जिन्हें पद्मासन कहा जाता है, खुले प्रांगण में स्थित होती हैं। इनके सामने जमीन पर खुले में लोग बैठते हैं और पूजा करते हैं। कोई भी व्यक्ति अपने स्थान से उठकर वेदिकाओं (मन्दिरों) के पास नहीं जाता। अर्चक और उसकी पत्नी ही पूजा सामग्री चढ़ाते हैं, दर्शनार्थियों को पवित्र जल देते हैं (आचमन तथा अभिसिंचन के लिए)। मुख्य पुजारी अलग एक ऊंचे स्थान पर बैठकर दूर से ही पूजा करता है। मन्त्र बोलने पर सभी लोग एक साथ पुष्प चढ़ाते हैं और प्रणाम करते हैं। सब लोग बैठकर पूजा-प्रार्थना करते हैं। बालीनीज् वाद्य संगीत की धुन बजती रहती है।

प्रायः प्रत्येक हिन्दू के घर में देवता, ऋषि और पितरों के लिए वेदिकाएं बनी होती हैं जिनमें रोज फल-फूल चढ़ाये जाते हैं। उनकी श्रद्धा और उनका अनुशासन हम लोगों के लिए अनुकरणीय हैं।

अधिकांश हिन्दू शैव सिद्धान्त को मानने वाले हैं। लेकिन इन पर शाक्त-मत, पितृ-पूजा और बौद्ध मत का प्रभाव भी दिखाई देता है। पूजा में अर्चक द्वारा ओ३म् (जिसका उच्चारण "ओंग" जैसा किया जाता है) ह्रीं क्लीं आदि बीज मन्त्र भी बोले जाते हैं, इससे इन पर तन्त्रवाद का स्पष्ट प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है।

यहां के अधिकांश हिन्दू शिव को ही परमेश्वर मानते हैं (Supreme Personality of Godhead), राम-कृष्ण इत्यादि को देवता (Demigods) माना जाता है। हालांकि यहां के सभी हिन्दू रामायण और महाभारत की कथाएं जानते हैं, पर राम-कृष्ण को परमेश्वर नहीं माना जाता। साथ ही यद्यपि ब्रह्मा, विष्णु, शिव सभी की वेदिकाएं होतीं हैं और सभी की पूजा भी होती है पर परम शिव को ही परमेश्वर माना जाता है और उन्हें सांग ह्यांग विधि कहा जाता है। यहां ब्रह्मा के लिए भी वेदिका होती है जब कि हमारे यहां ब्रह्मा की पूजा नहीं की जाती।

यहां के प्रायः सभी हिन्दू आमिष-भोजी हैं। फल-फूल के साथ देवता को अण्डा-मांस भी चढ़ाया जाता है। बाली के करंगासम जिले के पहाड़ी क्षेत्र में लंपुंयांग लुहुर नाम की पहाड़ी पर शिवजी का मन्दिर है। कठिन चढ़ाई है। वहां मैंने देखा कि अण्डे के साथ शिवजी को मदिरा भी चढ़ाई गयी। मुर्गी का अण्डा भी हालांकि चढ़ाया जाता है पर बत्तख (जिसे हंस कहा जाता है) का अण्डा अधिक शुभ माना जाता है। पितरों को मांस अर्पण किया जाता है। (क्रमशः)

क्या संस्कृत भाषा की यह उपेक्षा जारी रहेगी ?

हमारे देशवासियों विशेषतः आर्य समाजियों के समक्ष यह अत्यधिक विचारणीय प्रश्न है कि क्या भारत में देववाणी संस्कृत की इसी तरह दुर्दशा होती रहेगी ? इस विषय में एक ओर तो सरकार का रवैया संस्कृत विरोधी है क्योंकि शिक्षा के स्तर पर त्रिभाषा फार्मूले को लागू करने के नाम पर सभी पाठ्यक्रमों से संस्कृत को निष्कासित कर दिया गया और दूसरी ओर छात्रों के अभिभावकों में भी उपेक्षा का भाव दिखाई दे रहा है क्योंकि वे इसके लिए आवाज नहीं उठा रहे हैं।

भारत की अधिकांश भाषाओं की जननी संस्कृत की इस उपेक्षा का प्रभाव उन भाषाओं पर भी पड़ना स्वाभाविक है जो संस्कृत स्रोत से शब्दावली ग्रहण करती हैं। इसके अतिरिक्त संस्कृत भाषा में जो विशाल सांस्कृतिक धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक और सामाजिक निधि संचित है धीरे-धीरे हम उसके लाभ से वंचित होते चले जाएंगे।

संस्कृत हमारी भाषा है। इसके माध्यम से हमें ऐसी विरासत मिली है जिसका यदि हम सैकड़ों वर्ष तक मनोयोग से अध्ययन करते रहें तो भी इसका पार नहीं पा सकते। परन्तु बड़े खेद की बात है कि भारत में चन्द संस्कृत विद्वानों को छोड़कर इसके विकास और प्रसार की किसी को चिन्ता नहीं है। इस दिशा में यूरोपीय विद्वानों ने जो योगदान किया है वह श्लाघ्य है। संस्कृत भाषा के अध्ययन-अध्यापन के लिए व्याकरण ग्रन्थों की रचना तथा वेद, गीता, उपनिषद आदि की व्याख्यात्मक सामग्री उन्होंने अपनी सीमाओं में रहते हुए प्रस्तुत की है। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ विद्वानों ने यह कार्य पक्षपात पूर्ण ढंग से और भारतीय ज्ञान-विज्ञान और अस्मिता को नीचा दिखाने के लिए किया। परन्तु फिर भी हमें उनके इस कार्य के महत्व को स्वीकार करना होगा। इस विषय में विलियम जोन्स, मोनियर विलियम्स, मैक्समूलर, विंटरनिट्ज, मैकडोनल्ड, कीथ, स्वारनहार, विहटनी आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस क्षेत्र में भारत में देववाणी के उत्थान के लिए जो कार्य महर्षि दयानन्द ने किया वह बेमिसाल है। महर्षि ने केवल संस्कृत भाषा के उत्थान का ही प्रयास नहीं किया अपितु उसे एक नई दिशा भी प्रदान की। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने आर्यसमाज के नियमों में वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को इतना महत्व दिया। आज हमारी आर्यसमाजों की जो स्थिति है, उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि हम अपने लक्ष्य से भटक गए हैं। हम मात्र आर्यसमाज के सत्संगों में भाग लेकर अपने कार्य की इति श्री समझ लेते हैं। हमें अपनी उस अमूल्य निधि की चिंता नहीं जिसे ऋषियों, मुनियों ने हमारे लिए संजो कर रखा है।

वेदालंकार के छात्रों के लिए छात्रवृत्तियां

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में वेदालंकार कक्षा के प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने वाले छात्रों को रु. ५०० रु. मासिक की छात्रवृत्ति आर्य विद्या सभा की ओर से दी जायेगी। आर्य समाज के सिद्धांतों में निष्ठा रखने वाले तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार की भावना वाले तथा संस्कृत विषय लेकर इन्टरमीडियेट अथवा समकक्ष परीक्षा उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण छात्रों को यह छात्रवृत्ति दी जायेगी। ऐसे सुयोग्य छात्रों को वेदालंकार करने के पश्चात समुचित वेतनमान में धर्माचार्य/धर्मशिक्षक अथवा उपदेशक आदि पदों पर नियुक्त किया जायेगा। छात्रों की संख्या अधिक होने पर एक इसी प्रकार की छात्रवृत्ति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से भी दी जायेगी।

छात्रवृत्ति के लिए अर्हता प्राप्त छात्रों से निवेदन है कि वे अपने आवेदन पत्र आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, अध्यक्ष वेद विभाग एवं उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के नाम भेजें। उनकी संस्तुति पर ही ये छात्रवृत्ति दी जायेगी।

सूर्यदेव
प्रधान, आर्य विद्या सभा

डा० धर्मपाल
कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता

दिल्ली में डा० अनिल विद्यालंकार और डा. भारत भूषण विद्यालंकार ने 'संधान' नामक संस्था के माध्यम से देश के सांस्कृतिक उत्थान और संस्कृत भाषा के प्रचार एवं प्रसार के कार्य को आरम्भ किया है। इसके अंतर्गत भारतीय संस्कृति की वाहिका संस्कृत को सिखाने के लिए योजना बद्ध रूप में पत्राचार द्वारा संस्कृत प्रवेश पाठ्यक्रम आरम्भ किया है इसमें पहले ही वर्ष विभिन्न क्षेत्रों से लगभग सौ छात्रों ने प्रवेश लिया। इस पाठ्यक्रम का लाभ दिल्ली की दो आर्य समाजों के लगभग १५ छात्र उठा रहे हैं इसके अतिरिक्त २०-२५ जापानी विद्यार्थी भी हैं। वस्तुतः यह पाठ्यक्रम जापानी बुद्धिजीवियों के अनुरोध पर उन्हें संस्कृत सिखाने के लिए ही आरम्भ किया गया था। इसलिए इसे हिन्दी और अंग्रेजी के साथ जापानी माध्यम से भी संचालित किया जा रहा है। इस संस्था के द्वारा विभिन्न आर्य समाजों में, जहां १५-२० छात्र हों वहां साप्ताहिक कक्षा चलाने तक की भी व्यवस्था है।

इसके अतिरिक्त 'संधान' की गीता, वेद, उपनिषद और दर्शनों के सांस्कृतिक पक्ष से भारतीय जनमानस को परिचित कराने के लिए इनके सार प्रकाशित करने की भी योजना है। इसके अंतर्गत 'गीतासार' के दो संस्करण निकल चुके हैं। विदेशों में इसकी मांग को देखते हुए इसका अंग्रेजी अनुवाद भी शीघ्र प्रकाशित हो जाएगा। इसी वर्ष वेद-सार भी प्रकाशनार्थ प्रेस को भेजा जा रहा है। ये प्रकाशन देश के नागरिकों में भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता को जागृत करने का कार्य करेंगे।

आज जब हमारी शिक्षा संस्थाओं में संस्कृत भाषा के अध्ययन-अध्यापन की कोई व्यवस्था नहीं है तो स्वैच्छिक संस्थाओं को संस्कृत प्रशिक्षण के इस दायित्व को उठाना होगा। इसी दायित्व के लिए संधान ने यह कार्यक्रम आरम्भ किया है। आइए हम 'संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन' के कार्य को अपने हाथ में लें। प्रत्येक आर्य परिवार में से कम से कम एक सदस्य संस्कृत अध्ययन अवश्य करे। तभी हम संस्कृत भाषा के प्रचार और उत्थान में योगदान कर सकेंगे।

भारत भूषण विद्यालंकार
जे-५६, साकेत, नई दिल्ली-१७

पत्राचार द्वारा संस्कृत प्रवेश पाठ्यक्रम

घर बैठे संस्कृत सीखिए

संधान ने आपके लिए २० पाठों का सेट तैयार किया है। इनका मुद्रण कंप्यूटर द्वारा किया गयाहै। आर्यसमाज साकेत और जनकपुरी में साप्ताहिक कक्षाओं की भी व्यवस्था है। पूरे पाठ्यक्रम का शुल्क है :—

हिंदी माध्यम-१०० रु.

अंग्रेजी माध्यम-२०० रु.

विदेशों में १२५ डालर या समकक्ष

न्यूनतम पांच व्यक्तियों द्वारा एक पते पर मांगने पर ७५ रु.

सम्पर्क करें : डा. भारत भूषण विद्यालंकार
संयुक्त निदेशक, 'संधान, जे-५६, साकेत, नई दिल्ली-१७

मूर्ति पूजा की तार्किक समीक्षा [५]

डा० भवानीलाल भारतीय

इसी प्रकार उन्होंने इदं विष्णुर्विचक्रमे (ऋग्वेद २२२-१७) इस विष्णु देवता के मन्त्र का जो अर्थ किया है उससे भी मूर्तिपूजा की कोई ध्वनि नहीं निकलती। मनुस्मृति में जो देवतागार (९-२८०) तथा प्रतिमा (९-२८५) शब्द आये हैं वे भी विष्णु, शिव आदि की देवमूर्तियों की पूजा के विधायक नहीं हैं। कारण कि देवतागार यज्ञशाला का वाचक है जबकि प्रतिमा वस्तु को तोलने के बाट के लिए प्रयुक्त हुआ है। यदि मनु के युग में मूर्तिपूजा का प्रचलन होता तो मूर्तियों को तोड़ने वाले उस युग में कहां से पैदा हो गये थे जिनको दण्डित करने के लिए इस श्लोक में 'प्रतिमाना च भेदक' कहा गया वस्तुत. मूर्ति भंजक इस्लाम का उदय तो आज से १५०० वर्ष पहले हुआ जबकि मनु का काल उससे बहुत प्राचीन है। अतः मूर्तिपूजा को मनु से सिद्ध करना गलत है।

योगदर्शन में मूर्ति पूजा नहीं

इसे दुस्साहस ही कहा जायेगा कि वैदिक संहिताओं तथा मनुस्मृति से कुछ शब्दों एवं श्लोकों को मनमाने ढंग से उद्धृत कर तथा उसके कपोल कल्पित अर्थ कर शास्त्री जी ने मूर्तिपूजा सिद्ध करने का असफल प्रयास किया। अब वे पातंजल योगदर्शन के द्वारा मूर्तिपूजा सिद्ध करने के लिए उतारू हुए। सम्पूर्ण १०४ सूत्रों में उन्हें केवल एक सूत्र 'देशबन्ध चित्तस्य धारणा' (३/१) ही ऐसा मिला, जिसे उन्होंने अपने पक्ष के समर्थन में प्रस्तुत किया और बिना इस बात का विचार किये कि 'धारणा' नामक योगांग की परिभाषा देने वाले इस सूत्र का मूर्तिपूजा से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है, वह लिख बैठे योगदर्शन में मूर्तिपूजा की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। उन्होंने देशबन्ध का अर्थ मूर्ति पूजा कैसे किया, इस पर ही हमें आश्चर्य होता है। योगसूत्र पर व्यास का भाष्य है, भोजराज की वृत्ति है तथा वाचस्पति मिश्र की टीका भी है। इसके अतिरिक्त सैकड़ों विद्वानों ने योगसूत्रों की व्याख्यायें लिखी हैं किन्तु किसी ने उक्त सूत्र को मूर्तिपूजा का विधायक नहीं बताया।

मनोवैज्ञानिक मूर्ति पूजा का समर्थक नहीं

आगे शास्त्री जी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मूर्तिपूजा की आवश्यकता बताते हैं। वे कहते हैं कि भगवान का आकार (अवतार) लेना यदि हम मान्य करते हैं तो वे मनुष्य का ही आकार लेते हैं। उनका यह कथन भी अवतारवाद के पौराणिक सिद्धांत के प्रतिकूल है। जिन पुराणों में ईश्वर के शरीरधारी होकर आकार ग्रहण करने की बात की है, उन्होंने उसकी कल्पना केवल मनुष्य के आकार में ही नहीं की। हिन्दुओं के इन तथाकथित शास्त्रों में तो ईश्वर का मछली के रूप में (मीनावतार), कछुए के रूप में (कूर्मावतार), सूअर के रूप में (शूकरावतार), पशु के रूप में (वराह अवतार) आधे पशु तथा आधे मनुष्य के रूप में (नृसिंह अवतार) तथा अन्तत: परिपूर्ण के रूप में (राम, कृष्ण, बुद्धादि के रूप में) अवतरित होना बताया है। शास्त्री जी यह क्यों भूल जाते हैं कि भारत में तो वराह तथा नृसिंह के मन्दिर भी बने हुए हैं और वहां पशु और मानव आकार वाले भगवान की मूर्तियों की भी पूजा होती है।

अत. शास्त्री मनोविज्ञान के आधार पर अपना मूर्तिपूजा का समर्थन व्यर्थ है। वे योगदर्शन के उस सूत्र का गलत अर्थ करते हैं जिसमें ईश्वर की परिभाषा देते हुए उसे क्लेश, कर्म, विपाक तथा आशय से सर्वथा पृथक पुरुष बताया है। पुरुष विशेष का 'आकार प्रभु' अर्थ उन्होंने कैसे कर लिया। दर्शन कार का अभिप्राय तो शरीर रूपी पुरी वर्ग में रहने वाले जीवात्मा पुरुष से ब्रह्माण्ड रूपी पुरी में निवास करने वाले विशिष्ट तथा परम पुरुष परमात्मा का पार्थक्य बताना ही है, क्योंकि शरीरधारी पुरुष सदा क्लेश, कर्म, कर्मफल तथा उनसे उत्पन्न संस्कारों से संश्लिष्ट रहते हैं वहीं परम पुरुष या विशेष पुरुष परमात्मा इनसे सर्वथा पृथक ही है। यही तत्त्वदर्शि की अभिप्रेत था।

मूर्ति से चित्त की एकाग्रता नहीं

इसी प्रकरण में अनेक अप्रासंगिक बातें लिखने के पश्चात शास्त्री जी पुन: लिखते हैं कि जीवन विकास के लिए मन की शुद्धि आवश्यक है, उसके लिए चित्त की एकाग्रता के लिए मूर्तिपूजा की आवश्यकता है। किन्तु शास्त्री जी यह तर्कसरणी भी मन-कल्पित ही है क्योंकि मूर्तिपूजा से चित्त का विकेन्द्रित हो जाना, इधर-उधर भटकना तो संभव है, उसकी एकाग्रता तो कदापि नहीं आती जब मूर्ति पूजने वाला कभी प्रतिमा को स्नान करावे, कभी उसे पाद्य, अर्घ्य, आचमन, नैवेद्य आदि अर्पित करने में ही लगा रहेगा तो उसके चित्त की एकाग्रता कैसी होगी। जो लोग वैष्णव मूर्तियों पर मिष्ठान्न का प्रसाद चढ़ाते हैं, शिव प्रतिमा पर बिल्व पत्र, आक और धतूरे जैसे विषैले वृक्षों के फल-फूल अर्पित करते हैं और भैरव तथा काली की मूर्ति के आगे पशुओं की बलि चढ़ाकर रक्त की धारा बहाते हैं अथवा उसे मदिरा पान कराते हैं तो क्या वे यह सब चित्त की एकाग्रता के लिए करते हैं। क्या शास्त्री जी में इतना साहस है कि वे मूर्तिपूजा के वैष्णवाचार, शैवाचार तथा वामाचार की इन उपर्युक्त विधियों का खण्डन करें क्योंकि ये सभी विधान उन तथाकथित शास्त्रों में ही उल्लिखित हैं जिनके आधार पर वे स्वयं मूर्तिपूजा के विधान को स्वीकार करते हैं। पुराण-वर्णित मूर्तिपूजा का चित्त की एकाग्रता से कोई सम्बन्ध नहीं है।

शास्त्री जी का एक अन्य तर्क यह है कि जिस प्रकार सुषुप्तावस्था में मनुष्य आत्मनिष्ठ होने के कारण परम सुख या आनन्द की अनुभूति करता है, वैसा ही सुख और आनन्द जागृतावस्था में उसे मूर्तिपूजा से आता है। किन्तु यह तर्क नहीं अपितु तर्काभास है। योगदर्शन में तो समाधि अवस्था में पूर्णानन्द की उपलब्धि कही गई है न कि मूर्तिपूजा करते समय। तथ्य तो यह है कि मूर्तिपूजा से तो चित्त में विभ्रम, विक्षेप तथा भटकाव की ही स्थिति पैदा होती है क्योंकि मूर्ति और उसके उपकरण सभी बाह्य और भौतिक होते हैं। अत: चेतन जीवात्मा को इनसे सुखोपलब्धि नहीं हो सकती।

इसी प्रकार की अन्य मनमानी युक्तियां प्रस्तुत करने के क्रम में वे लिखते हैं कि ध्यान के लिए मानव आकार की मूर्ति को स्वीकार किया गया। यह मूर्ति भी मानवाकार में सुन्दर, आकर्षक, आत्मीय लगने वाली होनी चाहिए। ऐसा लगता है कि शास्त्री जी की इस मूर्तिपूजा विवेचना का हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों तथा तत् प्रतिपादित मूर्तिपूजा विधान से कोई लेना-देना नहीं है। यह सब तो उनका अपना वाग्जाल तथा स्वयं के द्वारा प्रसारित वाग्जालम्बर है क्योंकि हिन्दू पौराणिक धर्म में मानवेतर मूर्तियों की पूजा भी प्रचलित है तथा वक्रतुण्ड महाकाय लम्बोदर गणपति मुण्डमाल धारणकर्ता शिव की दिगम्बर मूर्ति, काली और भैरव की डरावनी, भयदायक मूर्तियों की पूजा का भी विधान किया गया है। अत: सुन्दर, आकर्षक और आत्मीय लगने वाली मूर्तियों की पूजा को ही हिन्दू शास्त्रानुकूल बताना मात्र विडम्बना है। काली, भैरव, शीतला तथा अन्य ग्राम देवताओं की भयावनी और विकराल मूर्तियां भला किसी को कैसे आत्मीय लग सकती हैं। यदि शास्त्री जी सुन्दर, आकर्षक और आत्मीय लगने वाली राम, कृष्ण आदि की सौम्य मूर्तियों की ही पूजा की वकालत करते हैं तो उन्हें अब कर काली, भैरव आदि की भयोत्पादक मूर्तियों की पूजा का खण्डन करने के लिये आगे आना चाहिए। किन्तु हम जानते हैं कि ऐसा करना उनके लिए कठिन है।

(क्रमश:)

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वत: ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत: अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर समाचार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये मात्र एक १५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—प्रबन्धक

पाखण्डी गुरू ने अपनी ही बेटी से मुंह काला किया

दिल्ली ३ अगस्त। यहां एक पाखण्डी गुरु रामअवतार शास्त्री पर अपनी ही जवान बेटी से मुंह काला करने का इल्जाम लगाया गया है। पुलिस के अनुसार विगत ७ जुलाई को मुल्जिम ने अपनी १४ वर्षीय बेटी को दूध में नींद लाने वाला पाउडर पिला दिया और उसके साथ मुंह काला किया। आधी रात को जब उसकी नींद खुली तो वह बिल्कुल नग्न अवस्था में पड़ी थी। डाक्टरी जांच होने पर हमबिस्तरी की बात साबित हो गई। पुलिस ने लड़की को धोखे से ले जाने का भी अभियुक्त के खिलाफ एक केस दर्ज किया है। क्योंकि ८ जुलाई को जब लड़की से चितरंजन पार्क थाने में अपने पिता के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाने के लिए कहा गया तबसे वह लापता है। यह पाखंडी गुरु अपनी उम्र के ५० वर्ष पूरे कर चुका है। इसकी जमानत की अर्जी दो बार रद्द की जा चुकी है। लड़की ने बताया कि उसे डरा धमका कर खामोश किया जा रहा था ताकि वह इस रहस्य को खोल न दे। क्योंकि दो वर्ष से उसके साथ मुंह काला किया जा रहा था और अभियुक्त पिछले दो वर्ष से अपनी इसी बेटी के साथ सोता था।

उ० प्र० के फर्रुखाबाद जिले में जबरदस्ती व्यभिचार और गैर कानूनी हरकतों में यह व्यक्ति अनेक पापों में लिप्त है। यह लड़की तो लापता है जबकि इसकी मां अपने दूसरे बच्चों को साथ लेकर फर्रुखाबाद अपने गांव को चली गई है।

ख्याल रहे कि अभियुक्त ने इन्दिरा गांधी के कत्ल केस की भी पैरवी की थी जो अक्टूबर ८४ में कत्ल साबित हुई। इसकी पुलिस इसे विरोधी मुहिम स्वीकार करती है। पता चला है कि वह अपनी अमीरों वाली जिन्दगी बसर कर रहा था और नवादिजी में इसके २ कोठी अरजन प्लौट भी हैं। वह एक सवर्णी राष्ट्रीय चेतना का भी प्रधान था।

छप रही है! छप रही है!

कुलियात आर्य मुसाफिर

लेखक अमर हुतात्मा पं० लेखराम आर्य मुसाफिर

कृष्ण जन्माष्टमी तक अग्रिम धन भेजने पर मात्र १२५ रुपये में।

आपने हमारा उत्साह बढ़ाया संस्कार चन्द्रिका व वैदिक सम्पत्ति के प्रकाशन में, अग्रिम धन देकर सहयोग किया। अब कुलियात आर्य मुसाफिर प्रेस में है। इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या ८०० है तथा मूल्य २०० रखा गया है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक १२५ रुपये अग्रिम भेजने पर दोनों भाग प्राप्त किये जा सकते हैं। डाक व्यय अतिरिक्त होगा।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

स्व० निर्मला देवी मिश्रा-एक आदर्श आर्य विदुषी की साहित्य साधना

डा० जयदत्त शास्त्री, तल्ला थपालिया, अल्मोड़ा (उ०प्र०)

आर्यसमाज का इतिहास जहां उच्चकोटि के विद्वान् संन्यासी, महात्माओं, लेखकों, कवियों, साहित्यकारों तथा शास्त्रार्थ महारथियों से परिपूरित है, वहीं कतिपय विदुषी आर्य ललनाओं का योगदान भी संस्मरणीय है। आर्य देवियों ने चाहे वेद-वेदांगादिविषयक सर्वोच्च शैक्षिक उपाधि का अर्जन हो, चाहे लेखन और साहित्य सर्जन का कार्य हो, चाहे यज्ञादि के आयोजन का कार्य रहा हो और चाहे समाज सुधार और धर्म-प्रचार का कार्य रहा हो, उन सबमें पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर ज्ञानयज्ञ और धर्म यज्ञ को आगे बढ़ाया है और आज भी आगे बढ़ा रही हैं।

ऐसी ही विदुषियों में अन्यतम थी, स्वर्गीया श्रीमती निर्मला देवी मिश्रा, जो बदायूं (उ०प्र०) निवासी आर्य रत्न आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र जी की सहधर्मचारिणी थीं। विगत जून मास में आपका आकस्मिक निधन हो गया और अपने आदर्श पति एवं पुत्रादि परिवार को रोते बिलखते और सूना सा बनाकर छोड़ गयीं। आपके वैदुष्य का स्मरण करते ही महाकवि श्रीहर्ष के नैषधीय चरित महाकाव्य का यह श्लोक सहसा स्मरण हो जाता है:—

वाग्जन्मवैफल्यमसह्य शल्यं गुणाद्भुते वस्तुनि मौनिता चेत्।'

आप अपनी कुलपरम्परा के अनुरूप संस्कृत की सुयोग्य विदुषी थीं। एम०ए० द्वय (संस्कृत एवं दर्शन), आचार्यद्वय (साहित्य एवं पुराणेतिहास), साहित्य रत्न, एल०टी० इन शैक्षिक उपाधियों को अर्जित करने के अनन्तर आप अध्यापन क्षेत्र में पहुंची और सुदीर्घ काल तक आर्य कन्या महाविद्यालय, बदायूं की प्रधानाचार्या पद को सुशोभित करती रहीं।

आपके पूज्य नाना जी गुरु पं० द्वारिका प्रसाद जी पाठक उन भाग्यशाली पुरुषों में से थे, जिन्होंने अपने हाथों से स्वयं स्वामी दयानन्द सरस्वती के चरण धोये और उनकी सेवा करने का सुअवसर प्राप्त किया। ऐसे वन्दनीय मातामह से बाल्यावस्था में ही आपको वैदिक संस्कार और विचार मिले और उनकी प्रेरणा से ही आप संस्कृत तथा वैदिक वाङ्मय के अध्ययन में प्रवृत्त हुईं।

सौभाग्य से आपका विवाह भी अनुरूप गुणों से युक्त परिवार में आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री के साथ हुआ। अब ये दोनों दम्पती पारस्परिक संवाद-सम्भाषण देववाणी (संस्कृत) में ही करते थे। फलतः आपके पुत्र-पुत्रियों को भी मातृभाषा के रूप में संस्कृत भाषा में बोलने में स्वत एव कुशलता प्राप्त हो गई, जो आज तक यथावत् है। दोनों संस्कृतज्ञ दम्पती की बच्चों के साथ संस्कृत-सम्भाषण प्रियता बच्चों के स्वाभाविक संस्कृत भाषण-पटुता का हेतु बना थी, एक स्पृहणीय दिनचर्या थी। अनेक लोग तो इस दृश्य को देखकर आश्चर्य चकित हो जाते थे। यद्यपि पं० विशुद्धानन्द जी तथा श्रीमती निर्मला जी हिन्दी भाषी परिसर की रहीं, तथापि अपने ज्ञान और श्रद्धा के अनुरूप संस्कृत भाषा को व्यावहारिक स्तर पर अवतरित करने के प्रयास की मिश्र-दम्पती की कितनी भी प्रशंसा की जावे कम है।

जिस महनीय कार्य के कारण आचार्य विशुद्धानन्द जी और स्व० निर्मला जी ने विशेष यश और कीर्ति अर्जित की है, वह है आर्यभाषा (हिन्दी) रूपान्तर के साथ लिखे गये और अभी तक दो भागों में (एक सहस्र पृष्ठ से अधिक) प्रकाशित वेदार्थ-कल्पद्रुम नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ, जो कि स्वामी करपात्री के विशाल ग्रन्थ वेदार्थ पारिजात के प्रत्युत्तर में प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रन्थ का अत्यन्त वैदुष्यपूर्ण संस्कृत भाग स्वयं आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र द्वारा रचा गया है और उसका आर्यभाषा (हिन्दी) अनुवाद स्व० श्रीमती निर्मला मिश्रा ने बड़ी ही योग्यता के साथ लिखा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका से जिन-जिन प्रसंगों पर वेदार्थ पारिजातकार ने आक्षेप उठाये हैं, उनका युक्तिप्रमाण-समन्वित उत्तर वेदार्थकल्पद्रुम द्वारा जिस योग्यता और शालीनता से किया गया है, उसको संस्कृत न जानने वाले पाठक श्रीमती निर्मला मिश्रा के हिन्दी अनुवाद को पढ़कर भलीभांति समझ सकते हैं।

स्व० निर्मला जी द्वारा किया गया वेदार्थ कल्पद्रुम का हिन्दी अनुवाद न केवल असंस्कृतज्ञों के लिये उपयोगी है, अपितु संस्कृतज्ञों के लिये भी उतना ही लाभकारी है। क्योंकि मूल संस्कृत अंश जहां कहीं पूर्वापर प्रसंग की संगति लगाने मे विचार के लिये कुछ क्षणों की अपेक्षा रखता है, वहां हिन्दी अनुवाद झटिति उस वक्तव्य को स्पष्टतः हृदयंगम करा देता है।

इतना ही नहीं वेदार्थ और वैदिक सिद्धान्तों के सात्विक ज्ञान में और संस्कृत भाषा में श्लोक रचना में दोनों सिद्धहस्त लगते हैं। हमें विशुद्धानन्द जी की संस्कृत कविताप्रणयन दक्षता का परिचय तो उनके अनेक ग्रन्थों से विदित ही था परन्तु उनकी विदुषी धर्मपत्नी भी संस्कृत श्लोक रचना में प्रवीण थीं, इसका परिज्ञान इन पंक्तियों के लेखक को वेदार्थ कल्पद्रुम के कतिपय पृष्ठों को देखने से हुआ। उदाहरणार्थ द्रष्टव्य है "निर्मलोक्तिः सत्येह घटते—

करीरेण वसन्तेऽपि दलं नैवोपलभ्यते :
तथाद्यो स्फुरति प्रज्ञा प्रमाणेषु बहुष्वपि ॥
चन्द्रिका नव चौराय, रोचते हि यथा तथा।
मिथ्याग्रहगृहीताय सत्य नो पक्षपातिने ॥

अर्थात् बसन्त में भी करीर पर पत्ते नहीं आते, उसी प्रकार बहुत से प्रमाणों से भी आज की (वेदार्थ पारिजात के लेखकों की) प्रज्ञा में स्फुरण नहीं होता। जिस प्रकार चोर को चांदनी अच्छी नहीं लगती, उसी प्रकार मिथ्या आग्रह से गृहीत पक्षपाती को सत्य नहीं रुचता ?
(वेदार्थकल्पद्रुम, भाग २, पृष्ठ ३१)

"अत एषा निर्मलोक्तिः सगच्छते—प्रमाणैस्तर्कसंयुक्तैः
पर्येक्षिषि पुनः पुनः।
वेदत्वं ब्राह्मणानां वै नैव सिध्यति कर्हिचित् ॥

अर्थात् तर्कयुक्त प्रमाणों से मैंने बहुत विचार कर लिया है। किन्तु ब्राह्मणग्रन्थों का वेदत्व कदापि सिद्ध नहीं होता।" (वही, पृष्ठ ८४)। इन श्लोकों तथा इसी प्रकार के अन्य कतिपय श्लोकों से स्व० निर्मला देवी की अपने पति के समान ही संस्कृतभाषा में सुन्दर छन्दों में श्लोक रचना की योग्यता परिलक्षित एवं परिस्फुट होती है। उनकी इस विविध योग्यता से प्रभावित होकर तथा उनके वैदिक धर्म के प्रचार में महान् योगदान को देखते हुए आर्यसमाज, फुलेरा (जयपुर) ने ऋषिमेला १९९० ई० के अवसर पर उनका अभिनन्दन कर प्रशंसनीय ही कार्य किया। वस्तुतः वे सर्वथा सम्मानार्ह थीं।

ऐसी कीर्तिशेष आर्य विदुषी को हमारा शत शत नमन है ॥

वर्तमान परिस्थितियां

(पृष्ठ २ का शेष)

(य) परावर्तन कार्य आर्य समाज का प्रमुख कार्यक्रम है। सन् १९३७ से कुछ वर्ष पूर्व की बात है कि इस्लाम के विद्वान मौलाना वैदिक धर्म में प्रविष्ट होकर पं० शान्ति स्वरूप के नाम से प्रसिद्ध हुए। एम०एल०ए० के चुनाव में वह एक तालुकेदार के मुकाबले मे गैर मुस्लिम क्षेत्र से खड़े हुए और चुनाव जीत गए तो तालुकेदार ने मुकदमा इस आधार पर चला दिया कि पण्डित जी जन्म के हिन्दू नहीं हैं, इसलिए गैर मुस्लिम क्षेत्र से वह चुनाव नहीं लड़ सकते हैं। इस मुकदमे में पण्डित जी की विजय हुई थी। इसका सबसे बड़ा परिणाम यह हुआ कि आर्य समाज के शुद्धि कार्य की कानूनी विजय हुई।

(भ) इसलिए समस्त आर्य समाजों को जो ईसाई बहुल क्षेत्रों में स्थापित हैं, ईसाई धर्म के प्रचार को रोकने के लिए दो सदस्यों की एक टीम नियुक्त करें। वे लोग अपने क्षेत्र में लोगों में अपने धर्म का प्रचार करते हुए ईसाइयत के बढ़ते खतरों से जनता को सावधान करेंगे।

(म) सार्वदेशिक सभा ने रांची, हजारी बाग, कालाहाण्डी, सम्बलपुर, बालंगीर, अकोला, रायगढ़, रायपुर, सलखिया आदि क्षेत्रों में वनवासी आर्य महासम्मेलनों के माध्यम् से हजारों की संख्या में आदिवासी ईसाईयों को वैदिक धर्म में दीक्षित किया है, इसका विवरण समय-समय पर सार्वदेशिक व अन्य आर्य पत्रों में प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त भारत के अन्य क्षेत्रों तथा भारत से बाहर के देशों में शुद्धि का कार्यक्रम जारी है।

(य) इसलिए आर्य समाजें शुद्धि के कार्यक्रम को आन्दोलनात्मक रूप में गम्भीरता से लें। सभी आर्य समाजें शुद्धि अथवा धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत जो भी उनके द्वारा कार्य हुआ हो, उसका ब्योरा प्रत्येक ६ महीने में अपनी आर्य प्रतिनिधि सभा को दें। आर्य प्रतिनिधि सभा इनका पूरा विवरण बनाकर सार्वदेशिक सभा को भेजें। तभी आर्य समाज के संगठनात्मक गतिविधियों की पूरी जानकारी इस सार्वदेशिक सभा को मिल सकेगी।

(र) आर्य समाज अन्तर्जातीय विवाहों को भी प्रोत्साहन दें। ताकि जातिगत भावनाओं से उत्पीड़ित युवतियों को मुसलमानों के चंगुल में फंसने का अवसर न मिले।

मुझे आशा है, आर्य समाजें उक्त सभी बातों पर गम्भीरता से विचार करके देश, जाति और धर्म के रक्षा कार्यों को अपने-अपने क्षेत्र में यथाशक्ति क्रियान्वित करके आर्य समाज संगठन के गौरव को बढ़ायेंगे।

[समाप्त]

शोक समाचार

आर्यसमाज पीपाड़ शहर के वयोवृद्ध कार्यकर्ता कवि श्री किस्तूरचन्द जी धनसार का दिनांक ११-७-९४ को बिलाड़ा में आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे दो पुत्र व चार पुत्रियां छोड़ कर गये। उनके स्वर्गवास से आर्य जगत की महान् हानि हुई है।

श्री धनसार जी ने सौ से अधिक पुस्तकें लिखीं। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में 'धनसार भजनमाला' 'मानस मोती' 'मोसर नहीं मौत' 'ललित लूर' 'ओम-गायत्री शतक' 'नारी का महत्व' एवं 'मां बेटी' की गोष्ठी प्रमुख हैं।

आर्य जगत दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता है।

—चम्पालाल आर्य, मन्त्री

—आर्य समाज कोटद्वार के भूतपूर्व प्रधान एवं वरिष्ठ सदस्य श्री भिकारी लाल जी का दिनांक ७-७-९४ को प्रातः १०-३० बजे हृदय गति रुकने से अचानक निधन पर समाज के १०-७-९४ के साप्ताहिक सत्संग मे दो मिनट मौन रखकर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी। इससे पूर्व ७-७-९४ को लाला जी का अन्तिम संस्कार हरिद्वार में भीम गोड़ा शव दाह गृह पर गंगा के किनारे पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

आनन्द प्रकाश
मन्त्री

महामहिम राज्यपाल उ०प्र० को पत्र और उनका उत्तर

महामहिम श्री मोतीलाल बोरा का गुरुकुल वृन्दावन का कार्यक्रम स्थगित

सेवा में,

महामहिम,

श्री मोतीलाल बोरा,

राज्यपाल, उ० प्र०, लखनऊ

विषय—२२ अगस्त १९९४ को गुरुकुल वृन्दावन में आने के सम्बन्ध में--

आदरणीय महोदय,

सादर नमस्ते,

मुझे आज यह जानकारी मिली है कि आप गुरुकुल वृन्दावन दिनांक २२ अगस्त १९९४ को आ रहे हैं कृपया आने से पूर्व निम्नलिखित बातों पर अवश्य ही ध्यान दें।

(१) उ० प्र० सरकार ने गुरुकुल वृन्दावन को फर्जी विश्वविद्यालय घोषित किया हुआ है (देखें समाचार पत्र की फोटो प्रति)

(२) इस संस्था के कुलपति जो हंसराज जी हैं जो आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान हैं (देखें उच्च न्यायालय इलाहाबाद लखनऊ बेन्च के आदेश की फोटोप्रति तथा रजिस्ट्रार फर्म्स सोसाइटीज एवं चिट् उ० प्र० द्वारा प्रमाणित अधिकारियों की सूची)

(३) यह फर्जी लोग इस पवित्र संस्था पर जबरदस्ती कब्जा किए हुए हैं और इस संस्था की बहुमूल्य सम्पत्ति मुसलमानों के हाथों बेच रहे हैं जिसे छिपाने के लिए तथा अधिकारियों पर रोब गांठने के लिए आपको आमन्त्रित किया है (देखें रजिस्ट्री की फोटो प्रति तथा आगरे के कमिश्नर द्वारा रोके जाने के आदेश की फोटो प्रति)

अत: आपसे अनुरोध है आप इन सभी बातों की छानबीन कराने के उपरान्त ही अपना कार्यक्रम बनायें।

हम सभी आपके आभारी रहेंगे, धन्यवाद।

आपका
मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

महामहिम राज्यपाल का उत्तर

पत्रांक २५८/एडीसी (III)

राज भवन
लख ३
५-८-९४

सेवा में,

श्री आचार्य भगवान देव
पूर्व सांसद
गुरुकुल विश्वविद्यालय
वृन्दावन, मथुरा

महोदय,

कृपया इस कार्यालय के पत्र संख्या--२५४ ए० डी० सी० (१) का सन्दर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें।

अवगत कराना है कि महामहिम राज्यपाल उ० प्र० ने दिनांक २२ अगस्त ९४ को प्रात: ९ बजे आयोजित होने वाले आवणी पर्व पर वेदारम्भ संस्कार समारोह महात्मा नारायण स्वामी आरोग्य मन्दिर तथा राष्ट्रीय (महर्षि चरक) वनस्पति औषधि उद्यान का उद्घाटन कर पाने में असमर्थता व्यक्त की है।

भवदीय
सदीप सासंके
श्री राज्यपाल के परिसहायक
(उ० प्र०)

॥ ओ३म् ॥

सिंगापुर बैंकाक की विदेश यात्रा

से आर्य भाई-बहिनों की प्रेरणा से दिनांक २६-९-९४ की रात्रि को चलेंगे और ४-१०-९४ की रात्रि को वापिस आयेंगे। जाने आने का By Air, रहने के लिये होटल, भ्रमण के लिये बस। साइट सीन देखना, नाश्ता देवी और लंच शामिल है। दिल्ली Air port Tax और वीसा भी शामिल है।

कुल सारा खर्च २८००० रु० प्रति सवारी होगा।

सीट बुक कराने के लिये ५००० रु० एडवान्स देने होंगे।

Air port जाने के लिये आर्य समाज मन्दिर मार्ग से बस चलेगी।

बाहर से आने वाले आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी पहाड़ गंज और आर्य समाज मन्दिर, अनारकली मन्दिर मार्ग पर ठहर सकेंगे।

बाकी पैसे १५ दिन पहले देने होंगे।

कार्यक्रम

२६.९.९४ रात्रि दिल्ली से बैंकाक।
२७.९.९४ प्रात: बैंकाक से पाटिया।
२८.९.९४ पाटिया से बैंकाक १.१०.९४ तक।
२.१०.९४ बैंकाक से सिंगापुर ४.१०.९४ तक।

सवारी अपना पास पोर्ट, दूरभाष नं० और Address अवश्य भेजें।

सीट बुक कराने के लिये Draft or Cheque संयोजक के नाम भेजें।

नोट : सीट बुक के लिए सम्पर्क एवम् जानकारी हेतु

संयोजक : शाम दास सचदेव, मन्त्री आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-५५ दूरभाष : (७५२६१२८) घर का

घर का पता २६१३, भगतसिंह गली नं० ९, चूना मण्डी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-५५

श्री मालबोधा जी, आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१ दूरभाष नं० ३४३७१८, ३१२१२१०

संयोजक : शाम दास सचदेव, फो. : ७५२६१२८ घर का, ७३८५०४ पी. पी.

अगर भारत सरकार ने किराया बढ़ा दिया तो वह देना पड़ेगा।

नोट : नये पासपोर्ट बनाने वाले ध्यान दें :—

फोटो ६ Date of Birth Certificate राशन कार्ड की कापी तथा फार्म लेकर संयोजक के पास पहुंच जायें, उनकी पूरी-पूरी सहायता की जायेगी।

सार्वदेशिक सभा की नई उपलब्धि

वृहदाकार-सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित

सार्वदेशिक सभा ने २०×२६/४ के बृहद् आकार में सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन किया है। यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है तथा कम दृष्टि रखने वाले व्यक्ति भी इसे आसानी से पढ़ सकते हैं। आर्य समाज मन्दिरों में नित्य पाठ एवं कथा आदि के लिये अत्यन्त उत्तम, बड़े अक्षरों में छपे सत्यार्थ प्रकाश में कुल ६०० पृष्ठ हैं तथा इसका मूल्य मात्र १५०) रुपये रखा गया है। डाक खर्च ग्राहक को देना होगा। प्राप्ति स्थान:—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४९/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (४-९-१९९७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी)९३
R N- 626/57 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 1-2-9-1994

नेपाल में आर्यसमाज प्रगति पथ पर

विदित होवे कि आर्य समाज गौतमपुर सुनसरी द्वारा संचालित आर्य वैदिक सत्सग प्रत्येक पूर्णिमा के अवसर पर नियमित रूप से करीब पाँच वर्षों से हम लोग चला रहे हैं । यह सत्सग जिल्ला के चिमड़ी, मध्यहरूसाही, देवानगंज एवं कप्तानगंज ग्राम तक मे हो रहा है जहाँ हम लोग सबसे पहले यज्ञ एवं उसके उपरान्त प्रवचन आदि कार्यक्रम रखते हैं । प्रत्येक कार्यक्रम में नवीन शास्त्री बनावे हेतु प्रशिक्षण की भी व्यवस्था किया करते हैं ।

आर्य समाज गौतमपुर एक प्रस्ताव पारित कर आगामी मार्च में एक बृहद आर्य सम्मेलन करवे का भी निश्चय किया है इसके साथ एक वेद मन्दिर बनावे के लिए तत्काल १९०००) उन्नीस हजार बराबर की लागत मे यहाँ के दान दाताओं द्वारा लगभग ६॥ डर कठ्ठा जमीन भी उपलब्ध हो चुका है जिसका शिलान्यास सम्मेलन के अवसर पर होवे का निश्चय हुआ है ।

हमारी समाज को अगाड़ी बढ़ावे मे उल्लेखनीय देन बिहार समस्तीपुर के पण्डित भुवेश्वरसिंह शास्त्री एवं बिहार सहरसा बेलही के शास्त्री रामरूप जी हैं जिनके निर्देश पर हमारी समाज प्रगति की पथ पर आगे बढ रही हैं ।

सचिव
जगदेव प्रसाद आर्य
आर्यसमाज गौतमपुर, सुनसरी

आर्य समाज की सफलता

झड़ौदा कलां नई दिल्ली—७२ मे बाबा हरिदास [illegible] मण्डल की ओर से ७ से १३ अगस्त १९९४ तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ । यह झड़ौदा गांव पौराणिकता से प्रभावित है । [illegible] आर्य समाज की ओर से वैदिक यज्ञ समिति का गठन हुआ है, वह [illegible] चार वर्षों से क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद से यज्ञ करवा रही है । इस यज्ञ समिति से प्रभावित होकर बाबा हरिदास लोक सेवा मण्डल ने आर्य समाज विद्वानों से इस वर्ष चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराने का निश्चय किया । पहले ऋग्वेद और यजुर्वेद से यज्ञ हो चुका है । ७ अगस्त से १३ अगस्त तक सामवेद पारायण यज्ञ स्वामी वेदरक्षानन्द जी आर्य गुरुकुल कालवा जीन्द हरियाणा और आचार्य चेतनदेव जी वैश्वानर वैदिक साधना आश्रम मेरठ—रामगढ़ अलीगढ़ उत्तर प्रदेश के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ । लगभग सभी यज्ञ इन्हीं के द्वारा सम्पन्न हुये हैं । इस ग्राम मे श्री रामधन जी आर्य ने चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराया । श्री सतीश जी आर्य ने यजुर्वेद और सामवेद से यज्ञ कराया । श्री रमेश जी आर्य, श्री नरेश जी आर्य श्री अशोक जी आर्य, श्री तारीफ सिंह जी आर्य एक-एक वेद से यज्ञ करवा चुके हैं । इन सभी यज्ञों में लोगों ने बीड़ी, सिग्रेट, हुक्का, शराब, मांसादि त्यागने की प्रतिज्ञा की । विशेष उल्लेखनीय यह है कि महात्मा हरिदास जी के परिवारस्थ सदस्य श्री राजेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री रतन सिंह जी साथ वे आर्य समाज के इन कार्यक्रमों से प्रभावित होकर यज्ञोपवीत ग्रहण किया । इस सामवेद पारायण यज्ञ में श्री बालूराम, श्री राजेन्द्र सिंह, प० ओमदत्त, चौ० जीतराम, श्री लखमी चन्द सूबेदार, प० सत्यप्रकाश, चौ० कृष्ण सिंह, श्री राजेन्द्र कुमार आदि प्रबुद्ध महानुभावों ने सभी बुराइयों को छोड़ने की आहुतियां प्रदान कीं । इस गांव मे यज्ञ समिति की ओर से पारिवारिक यज्ञ, सत्सग का कार्यक्रम चालू है । इस प्रकार यहां आर्य समाज का कार्य सफलतापूर्वक चल रहा है ।

भक्त जीवाराम आर्य
गोपी भवन, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली—७२

वर की आवश्यकता

शुद्धिकृत माता की सुपुत्री उम्र १८॥ वर्ष योग्यता इण्टरमीडिएट, ऊंचाई ५ फुट, ४ इञ्च, रग गेंहुआ, सौम्य, सुन्दर कन्या के लिए कार्यरत आर्य परिवार के उपयुक्त वर की आवश्यकता है । लिखें— बौक्स १०५ सार्वदेशिक पत्र ३।५ आसफअली रोड, नई दिल्ली-२

हरितृतीया पर्व

प्रान्तीय आर्य महिला सभा के तत्वावधान मे दिनांक १३.८.९४ को 'हरितृतीया" का पर्व श्रीमती शकुन्तला आर्या जी की अध्यक्षता में "बुद्ध जयन्ती पार्क मे बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया । जिसमें दिल्ली की सभी महिला आर्य समाज की बहनों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया । यज्ञ तथा प्रसाद का प्रबन्ध महिला आर्य समाज राजेन्द्र नगर की ओर से हुआ । श्रद्धा पूर्वक यज्ञ करने के पश्चात 'बहनों ने त्योहार के अनुरूप ही भजनों गीतों तथा चुटकलों का रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया । कृष्ण रहेजा जी की ओर से कार्यक्रम मे भाग लेने वाली बहनों को पारितोषिक भी दिए गए ।

शकुन्तला दीक्षित, महामन्त्री

निःशुल्क होम्योपैथिक चिकित्सालय का शुभारम्भ

यहां स्थित आर्य समाज मन्दिर पिपलानी के तत्वावधान में स्वतन्त्रता दिवस के पावन पर्व पर एक निःशुल्क होम्यो० चिकित्सालय का शुभारम्भ संस्था द्वारा किया गया है । चिकित्सालय का उद्घाटन होम्योपैथिक मेडीकल कालेज भोपाल के संस्थापक डा. के. बी. श्री वास्तव जी द्वारा किया गया । कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित कर किया गया । कार्यक्रम का संचालन संस्था के मन्त्री नरेन्द्र आर्य द्वारा किया गया। संस्था द्वारा खोले गये चिकित्सालय की सर्वत्र सराहना की गई । इसके संचालक डा० जयदेवजी विद्यावाचस्पति होंगे ।

नरेन्द्र आर्य मन्त्री

आर्य समाज खण्डवा का एक स्तम्भ ढह गया

खण्डवा आर्य समाज के प्रधान श्री कृष्णलाल आर्य एवं मन्त्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने जानकारी दी कि आर्य समाज के स्तम्भ एक समर्पित कार्यकर्ता उद्योगपति श्री कन्हैयालाल खण्डेलवाल का हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया, वे आर्य समाज में काकाजी के रूप में जाने जाते थे कुछ दिन पहले शताब्दी समारोह मे उन्होंने ५ एकड़ जमीन आर्य समाज को दान देने की बात कही थी, सैकड़ों व्यक्तियों ने शोक सभा में मौन श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत की शान्ति हेतु प्रार्थना की तथा परिवार के ऊपर आये संकट को सहन करने की शक्ति परमात्मा प्रदान करें ऐसी प्रार्थना की गई ।

लक्ष्मीनारायण भार्गव,

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

दिनांक १८-८-९४ को आर्य समाज इन्द्रप्रस्थ विस्तार दिल्ली-९२ की साप्ताहिक सत्संग के पश्चात एक सभा हुई । जिसकी अध्यक्षता क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा के महामन्त्री श्री पतराम स्वामी जी ने की । इसमें आर्य समाज की स्थापना की विधिवत घोषणा की गई जिन के पदाधिकारियों के नाम निम्न प्रकार है ।

संरक्षक : श्री एस. के अग्रवाल श्री अमर नाथ जी, श्री पी. डी. शास्त्री

प्रधान : श्री मुकेश मित्तल

उपप्रधान : श्रीमती कमलकोधी जी, श्री विपिनचन्द्र गुप्ता, श्री पुरुषोत्तम लाल खरीन

महामन्त्री : श्री ओम प्रकाश कपूर मन्त्री : श्री बलराज जी कोचर

उपमन्त्री : श्रीमती मुटानी जी, श्री रामविलास गुप्ता

कोषाध्यक्ष : श्री रामसिंह शर्मा जी । ओमप्रकाश कपूर, महामन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष । ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १ रुपया
वर्ष ३२ अंक ३१] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३ भाद्रपद शु० ६ स० २०५१ ११ सितम्बर १९९४

लखनऊ अदालत ने भी सार्वदेशिक आर्य प्रति० सभा की सर्वोच्च अधिकारिता को वैध माना

लखनऊ ११-८ ९४ । लखनऊ की एक स्थानीय आय समाज गणेशगज के प्रधान श्री महेश्वर पाण्डय तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के नियन्त्रण मे सुचारू रूप से चल रही कार्य कारिणी को कैलाशनाथसिंह ने अपने एक आदेश के द्वारा भग करके आर्यसमाज के ही एक तटस्थ व्यक्ति भुवन तिवारी को प्रशासक नियुक्त कर दिया था । इस आदेश को लखनऊ की स्थानीय अदालत मे चुनौती दी गई । लखनऊ के माननीय न्यायाधीश श्री जयप्रकाश नागर ने दोनो पक्षों की ओर से प्रस्तुत किए गये शपथ-पत्र तथा मुद्दो को सुनने के पश्चात् यह निर्णय दिया कि—

इस देश मे आर्य समाज के सदर्भ मे तीन सभाये क्रमश देश-प्रदेश एव छोटी यूनिटों के रूप मे है और सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली है । उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के सन्दर्भ मे सर्वोच्च सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने अपने आदेश दिनाक २१-१ ९३ से पण्डित इन्द्रराज एव मनमोहन तिवारी की समिति को कार्य करने की अनुमति दी और कैलाशनाथ सिंह को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्य करने से रोका है और ऐसे अधिकार इस नियमावली की धारा १० ग के आधार पर प्रदत्त है । इस सदर्भ मे वादी के योग्य अधिवक्ता के इस तर्क से मैं सहमत नहीं हू कि सर्वोच्च आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली को इस सदभ मे कोई आदेश अथवा हस्तक्षेप पारित करने का अधिकार नहीं है और जहा तक इस बात का प्रश्न है कि कैलाशनाथसिंह द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की नियमावली मे सशोधन कर दिया है यह विवाद माननीय उच्च न्यायालय मे विचाराधीन है परन्तु जो आर्य समाज गणेशगज लखनऊ की मूल नियमावली की धारा ४० है इसमे स्पष्टतया उल्लेख है कि कोई भी वाद आर्य सभा के अध्यक्ष उसके सचिव द्वारा किया जा सकता है । उपलब्ध प्रमाणो मे स्वयमेव स्पष्ट है कि इस सन्दर्भ मे जो नियमावली मे सशोधन किये जाने का प्रश्न है वह अन्तिम रूप से स्वीकार नहीं माना जा सकता है चू कि कैलाशनाथ सिंह वाली समिति का चुनाव ही जब माननीय न्यायालय के समक्ष विचाराधीन है तो ऐसी स्थिति मे नियमावली सशोधन को भी अन्तिम रूप से स्वीकार नही माना जा सकता है और इस सदर्भ मे मूल नियमावली का ही देखना होगा । जो स्वयमेव वाद घोषित करने के सन्दभ मे स्पष्ट है ।

न्यायाधीश ने कहा कि—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सदभ मे सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने कैलाशनाथ सिंह एव धर्मेन्द्र सिंह की समिति को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को कार्य करने पर रोक लगाने का आदेश पारित किया है तथा पण्डित इन्द्रराज एव मनमोहन तिवारी वाली समिति को कार्य करने को निर्देश दिया है तथा इस सन्दभ मे यह कमेटी दिनाक १७-१ ९४ के चनाव के आधार पर काय कर रही है तथा आयसमाज लखनऊ गणेशगज की मूल नियमावलो के आधार पर वाद मात्र अध्यक्ष एव सचिव द्वारा ही योजित किया जा सकता है और ऐसी स्थिति मे भुवन तिवारी चू कि न तो आर्य सभा गणेश गज लखनऊ के अध्यक्ष और न सचिव है वे वाद को तदनुसार प्रगतिशील करने के लिए सक्षम नही है । तदनुसार वाद आय समाज गणेश गज के अध्यक्ष अथवा सचिव द्वारा हो प्रगतिशील किया जा सकता है और चू कि महेश्वर पाण्डय को प्रथमतया आर्यसमाज लखनऊ गणेशगज का अध्यक्ष होना स्पष्ट हैं और उसको मान्यता सर्वोच्च सभा सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने जो दी है तदनुसार प्रार्थी महेश्वर पाण्डय आय समाज गणेश गज की ओर से वाद प्रगतिशील करने के अधिकारी हैं ।

इस निर्णय के विरुद्ध कैलाशनाथ सिंह गुट ने उच्च न्यायालय से एक स्थगन आदेश प्राप्त करने के लिए प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया । परन्तु उच्च न्यायालय के दो माननीय न्यायाधीशो ने भी इस निर्णय के विरुद्ध स्थगन आदेश देने से इन्कार कर दिया है ।

स्वास्थ्य चर्चा—

मीठा जहर है नमक और चीनी

लेखक : सुदर्शन कुमार सरीन

मन्त्री, उत्तरी-पूर्वी जिला भारतीय योग संस्थान (पंजी॰) दिल्ली

हमारी सारी प्रवृत्तियों के दो छोर हैं, एक राग और दूसरा द्वेष। एक प्रियता दूसरी अप्रियता। कोई भी प्रवृत्ति होती है वह राग या द्वेष से शुरू होती है और राग और द्वेष में ही समाप्त होती है। आदि और अन्त मे दोनो बिन्दु हैं साधक इन दोनो छोरो के बीच नहीं रहता इससे परे हो जाता है।

नमक, चीनी और चिकनाई यह तीनों भोजन के अनिवार्य अंग बने हुए हैं। इसके कारण अनेक रोग भी उत्पन्न होते हैं। यह बात सब लोग नहीं जानते। हृदय की बीमारी के लिए तीनों निषिद्ध माने जाते हैं। चीनी और चिकनाई का बहुत प्रयोग नहीं करना चाहिए और नमक का प्रयोग यदि बिल्कुल न हो तो बहुत अच्छा है। नमक का तो हमारे शरीर के लिए कोई उपयोग ही नहीं है। वह नमक जो खनिज है, कृत्रिम है, इसका कोई उपयोग नहीं है। नमक शरीर के लिए उपयोगी होता है किन्तु वह नमक जो साग, सब्जी व फलों में मिलता है। वह प्राकृतिक लवण है। वह शरीर में घुल जाता है। यह कृत्रिम नमक उपयोगी नहीं होता। यह शरीर में विकार पैदा करता है। उच्च रक्तचाप नमक से होता है और भी अनेक बीमारियां नमक के कारण से होती हैं। किन्तु आजकल लोग इस बात को समझते नहीं और कहते हैं कि बिना नमक भी कोई भोजन है। भोजन का मतलब ही नमक है। अनिवार्य मान लिया गया कि यदि भोजन है तो नमक होना ही चाहिए। लोग तो ऊपर से और नमक भी डालते हैं। रसोई बनाने वाला तो नमक डालता ही है, खाने वाला ऊपर से और नमक डालता है।

यदि नमक का प्रयोग बन्द हो जाय तो दस-बीस प्रतिशत बीमारियां भी कम हो जाएं। नमक के कारण लोग अधिक खाते हैं। गर्मी के दिन फिर भी लोग चटपटी मसालेदार नमकीन चीजें खाते हैं। जीभ को स्वाद मिलता है, डाक्टरों को संरक्षण मिलता है उनका धंधा चलता है और बीमारियां भी अच्छी प्रकार से पनपती हैं।

साधना का प्रयोग करें। यदि पूरे सप्ताह में सात दिन नमक न छोड़ सकें तो एक दिन, दो दिन या तीन दिन छोड़कर देखें और बिना नमक का भोजन करें। यह प्रयोग होगा संकल्प शक्ति का प्रियता और अप्रियता से बचने का। स्वास्थ्य का प्रयोग होगा। हृदय रोग से बचने का प्रयोग। कैंसर की संभावना कम होगी। उत्तेजना कम होगी। मानसिक शान्ति में सहयोग मिलेगा।

कुछ दार्शनिक या धार्मिक प्रवृत्ति के साधक मानते हैं कि नमक खाने वाले को मोक्ष नहीं मिलता। इससे हमें यह समझना चाहिए कि नमक का प्रयोग साधना के लिए वर्जित है और स्वास्थ्य के लिए विघ्न है।

डाक्टरों के अनुसार नमक शरीर के लिए आवश्यक है क्योंकि बिना नमक लवण के शरीर में विष अधिक हो जाता है। किन्तु ध्यान रखना चाहिए कि खनिज लवण आवश्यक नहीं है। साग सब्जी और फलों में स्वाभाविक रूप से प्राप्त नमक उपयोगी है। वह नमक घुल जाता है। कृत्रिम नमक घुलता नहीं। नमक को शरीर से बाहर निकालने के लिए गुर्दों को बहुत काम करना पड़ता है और वह खराब हो जाता है।

जैसे शरीर के लिए नमक आवश्यक होता है वैसे ही शक्ति के लिए चीनी आवश्यक होती है। किन्तु यह सफेद चीनी नहीं। चीनी तो सहज ही प्राप्त होती है। दूध में चीनी होती है फिर दूसरी चीनी की जरूरत क्या है? अधिक चीनी से अम्लता बन जाती है। अधिक चीनी के सेवन से बड़ी हानियां और बीमारियां होती हैं। अत: चीनी का प्रयोग छोड़ा जा सकता है या कम किया जा सकता है।

अब नमक वर्जन और चीनी वर्जन। तब क्या करें? अस्वाद का प्रयोग करें। दूध में चीनी नहीं—रोटी में नमक नहीं। प्रयोग करके देखें। जो हमें प्रिय होता है उस प्रिय का वर्जन करें, त्याग करें। यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग होगा। अस्वाद का प्रयोग होगा। यह स्थिति बन जाय कि नमक का वर्जन किया—भोजन में कोई फर्क नहीं पड़ा, खाने मे कोई फर्क नहीं पड़ा, खाने में कोई अन्तर नहीं आया। यह अस्वाद का प्रयोग है जिसमें चीनी न हो और जिसमें नमक न हो कभी चीनी को छोड़ें और कभी नमक को और कभी अलग-अलग खायें। कभी साग खायें और कभी केवल रोटी। बिना साग के रोटी खाने से पता चलेगा कि गेहूं कितना मीठा होता है। चीनी से भी ज्यादा मीठा।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वत: ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत: अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये बार एक११० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

अग्निवेश का आर्यसमाज में कोई स्थान नहीं

आनन्द सुवर्णसिंह, देहरादून

समाचार पत्रों में यह समाचार प्रमुखता से प्रकाशित हुआ है कि श्री अग्निवेश द्वारा २८, २९ मई को आयोजित तथाकथित राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन में आर्यसमाज के वरिष्ठ नेता तपस्वी विद्वान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी को आर्यसमाज से निष्कासित कर दिया है एवं उन्हें आर्य समाज की वेदी के प्रयोग से वंचित कर दिया है। इस विषय में कुछ उल्लेखनीय तथ्य निम्न प्रकार हैं।

श्री अग्निवेश वर्ष १९७८ से आर्य समाज की सामान्य सदस्यता से निष्कासित हैं तथा वे किसी भी समाज के सभासद या सभा के प्रतिनिधि नहीं हैं। यदि हैं तो उसका कोई प्रमाण होना चाहिए क्योंकि अग्निवेश आरम्भ से ही अपने प्रचार-प्रसार के लिए छद्म रूप धारण करते रहे हैं। आर्य समाज से निष्कासन के पश्चात उन्होंने बंधुआ मुक्ति मोर्चा के नाम पर विदेशों से करोड़ों रुपये की वसूली की। भारत मैंडल पैसे का उन्होंने क्या किया, कोई नहीं जानता। अग्निवेश समय-समय पर अनेक नाटकों के सूत्रधार के रूप में दिखाई देते रहे हैं। कभी शबाना आजमी के साथ महिला मुक्ति करते हैं तो कभी शंकराचार्य को शास्त्रार्थ की चुनौती देकर रफूचक्कर हो जाते हैं, कभी पूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर के विरुद्ध जनता पार्टी के अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ते हैं तो कभी श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के साथ मण्डल कमीशन की वकालत करते हैं। यह वही अग्निवेश हैं जो आर्य समाज का दम भरते हैं किन्तु आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश की आलोचना करते हैं। जब कोई काम-धाम नहीं मिलता तो मनु स्मृति के रचयिता महान सन्त भगवान मनु द्वारा रचित मनु स्मृति के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। (ज्ञातव्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ में मनु स्मृति के सूत्रों का सर्वाधिक प्रयोग किया है।) अब यह विचारणीय विषय है कि जो व्यक्ति महर्षि दयानन्द सरस्वती का नहीं हो सका वह किसका होगा। भगवा चोला पहनने से कोई पाखण्डी सन्त नहीं बन सकता। जिस प्रकार की बगुला भगत की कथा प्रचलित है। अग्निवेश का एकमात्र उद्देश्य इस प्रकार की नौटंकी कर केवल अपने को समाचार पत्रों में प्रकाशित कराने से है। चाहे उसके लिए उन्हें अपने गुरु का अपमान ही क्यों न करना पड़े। १९७५ में अग्निवेश ने आर्यसभा के नाम से एक राजनैतिक दल का गठन किया। उस दल का उद्देश्य था—वेदों में वर्णित आर्य राष्ट्र की स्थापना करना और भोले-भाले हरियाणा वासियों ने अग्निवेश को विधानसभा में पहुंचा दिया और उचित मौका देखकर अग्निवेश बरसाती मेंढक की तरह कूदकर जनता पार्टी में चले गए, फिर उन्हें आर्य राष्ट्र की याद नहीं सतायी, क्योंकि अपना उल्लू तो सीधा कर चुके थे (हरियाणा के उप शिक्षा मन्त्री बन चुके थे)। यह वही अग्निवेश हैं जो महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित एवं स्वामी श्रद्धानन्द की बहादुरी की प्रतीक शुद्धिकरण योजना को गलत मानते हैं। यज्ञ करने को गलत मानते हैं। जब बन्धुआ मुक्ति का ड्रामा नहीं चला तो इन्होंने इण्डो चाइना मैत्री समिति बना डाली और कहा कि मैं तो लेनिन का भक्त हूं। जब कम्युनिस्टों ने भी लात मार दी, चन्द्रशेखर जी व विश्वनाथ प्रताप सिंह ने भी घास डालनी छोड़ दी तो फिर आर्य समाज की याद सताने लगी और फटाफट एक राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन किया। स्वामी इन्द्रवेश को अध्यक्ष बनाया और स्वयं मन्त्री बन बैठे। इनसे पूछा जाए कि तुम्हारी सभा में कितने आर्यसमाजी हैं, कितने प्रतिनिधि हैं, क्या कार्यकारिणी है। वही ढाक के तीन पात, यह वर्ग जो विगत ४० वर्षों से आर्य समाज के संगठनात्मक ढांचे में किसी पद तक नहीं पहुंच पाया, जो वर्ग सदैव कुंठाओं से ग्रस्त रहा, वही वर्ग अग्निवेश को अपना गुरु मानता होगा। विश्व के ४० देशों में आर्य प्रतिनिधि सभाएं हैं, किन्तु कोई भी अग्निवेश को आर्य मानने को तैयार नहीं है। आखिर ऐसा क्यों है।

इन्हीं अग्निवेश ने २८, २९ मई को जो ड्रामा दिल्ली में आयोजित किया, जिसमें कुछ ऐसे व्यक्ति जो आर्य समाज संगठन से किसी कारण से नाराज रहे हैं, ने भाग लिया (जबकि भारत में आर्य समाज की सदस्य संख्या करोड़ों में है)। उक्त ड्रामे में इन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (कुछ ही दिनों पूर्व श्री अग्निवेश ने श्री कैलाश नाथ सिंह की अध्यक्षता में एक फर्जी सार्वदेशिक का गठन किया था जिसे उच्चतम न्यायालय नई दिल्ली ने मानने से इन्कार कर दिया), के विधिवत निर्वाचित प्रधान को निष्कासित कर आर्य समाज को एक राजनैतिक दल का रूप दे दिया। आखिर अग्निवेश ये बताएं कि जब वे आर्य समाज के सदस्य ही नहीं हैं तो वह आर्यसमाज को किस अधिकार से राजनैतिक दल का रूप दे सकते हैं। क्या इस विषय में उन्होंने चुनाव प्रक्रिया द्वारा चुनकर आए आर्य प्रतिनिधियों से विचार-विमर्श किया है, क्या भारत के किसी भी प्रान्त की प्रतिनिधि सभा ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। यदि नहीं तो अग्निवेश कौन होते हैं आर्यसमाज को राजनीतिक दल का रूप देने वाले।

मैं आर्यसमाज के समस्त सभासदों, प्रतिनिधियों, विद्वानों एवं नेताओं से यह प्रार्थना करता हूं कि वे जो भ्रम फैलाया जा रहा है उन लोगों द्वारा जिनका अपना न कोई चरित्र है न कोई व्यक्तित्व, जो न आर्य हैं और न जिनकी आर्यसमाज में आस्था है, ऐसे षड्यंत्रकारी क्षुद्र राजनैतिक इच्छापूर्ति की भावना रखने वाले व्यक्तियों से सावधान हों। ऐसे धूर्त एवं लम्पट लोगों को आर्य समाज की वेदी से दूर रखा जाए तथा इनके द्वारा प्रचारित अनर्गल वक्तव्य पर ध्यान न दिया जाए। आर्यसमाज महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रहरी है तथा भगवान मनु द्वारा रचित मनु स्मृति का अनुगामी है। अतः जो भी व्यक्ति वैदिक धर्म या मनु स्मृति के विपरीत आचरण करता है, आर्य समाज उसे अपना सदस्य व शुभचिन्तक नहीं मान सकता है।

वेदों में समभाव

डा० कृष्णलाल

'समानता में सुख है। समानता में ही सबका कल्याण है। समभाव ही योग कहलाता है।" इत्यादि वाक्यों में समानता की महिमा बताई गई है। परन्तु यह समभाव है क्या? समानरूपता ही समभाव है। यह इस प्रश्न का सरलतम उत्तर है। परन्तु विचारणीय बात यह है कि क्या इस सृष्टि में सर्वत्र समभाव दिखाई देता है? न तो सभी पर्वतों की ऊंचाई एक-सी है और न ही सभी नक्षत्रों का तेज एक-सा है। और तो और हाथ की पांच अंगुलियां भी तो एक समान नहीं हैं। तो फिर समता की प्रशंसा क्यों करते हैं? उस-की अभिलाषा क्यों करते हैं? सचता तो यह है कि प्रकृति की यह विषमता ही 'सुषमा नामक सौन्दर्य को जन्म देती है। वस्तुतः विषमता से 'सुषमा' (सु-समा) की उत्पत्ति अत्यन्त आश्चर्यजनक है। परन्तु सत्य भी यही है। स्रष्टा का यही नियम है और यदि इस नियम में कोई विकृति उत्पन्न करता है तो वह किसी प्रकार उचित नहीं। कल्पना कीजिये कि यदि हाथ की पांचों अंगुलियों को कांट-छांट कर बराबर कर दिया जाये तो क्या परिणाम हो? तब हाथ की कोई क्रिया सम्भव न होगी। इसलिये समभाव का अर्थ संगति लेना पड़ेगा-सब स्थानों पर परस्पर संगति। और इसीलिये परमेश्वर की बनाई हुई सुषमाजनक विषमता के अतिरिक्त मनुष्य के द्वारा बनाई गई कृत्रिम विषमता तनिक भी अपेक्षित नहीं। वह तो निन्दनीय है। प्रकृति में विषमता देखते हुए भी हम उसकी मूलभूत एकता का अनुभव करते हैं और उसी से सर्वत्र सुषमा दिखाई देती है। इसीलिये निम्नलिखित वेदमन्त्र में कहा गया है कि परमेश्वर ने विविध रूप की प्रजा और विविध पदार्थों की सृष्टि की परन्तु वहां भी मूल में सभी शक्तियों का एक ही प्राणभूत परमात्मतत्व विद्यमान है—

'देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपं पुपोष प्रजाः पुरुधा जजान। इमा च विश्वा भुवनान्यस्य महद् देवानामसुरत्वमेकम्॥ (ऋ० ३।५५।१९)

इस मूलभूत एकता के आधार पर ही जगत की सम्यक् स्थिति है। परन्तु जब इस एकता को भुलाकर मनुष्य समाज में स्वयं कृत्रिम विषमता उत्पन्न करता है, तभी कष्ट और व्याकुलता उत्पन्न होते हैं। इसी से अन्याय बढ़ता है और बन्धुओं में असन्तोष फैलता है। इस स्थिति को हम संस्कार अथवा संस्कृति नहीं कह सकते। कार्य के अनुसार या पद के अनुसार किसी का महत्त्व अथवा सम्मान हो सकता है। परन्तु इसका यह अभिप्राय कदापि नहीं कि एक मनुष्य दूसरे को मनुष्य ही न समझे और उसकी मूलभूत आवश्यकताओं की भी चिन्ता न करे। जब इस पृथ्वी पर एक जैसे जन्म में सब मनुष्य ईश्वरप्रदत्त एक-सा, एक-से अवयवों वाला शरीर प्राप्त करते हैं तो उनका परस्पर भेद होने का कोई कारण नहीं। एक समान गर्भ की अवधि में माता के उदर में सबका विकास होता है, एक ही प्रकार से सबका जन्म होता है, तो फिर विभेद का क्या कारण? कोई कारण नहीं कि मनुष्यों के एक वर्ग-विशेष को अस्पृश्य माना जावे।

वेद तो न केवल मनुष्यों को अपितु सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने का संकल्प व्यक्त करता है—

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
(यजुः ३६।१८)

वास्तव में कुछ लोग प्रसिद्ध पुरुष सूक्त के 'पद्भ्यां शूद्रो अजायत' (पांवों से शूद्र उत्पन्न हुआ) (ऋ० १०।९०।१२) इस मन्त्रांश को अशुद्ध अर्थों में समझकर यह मानने लगते हैं कि शूद्रों का स्थान पांवों में है, इसीलिये वे नीच हैं, और यह सोचकर उनका अपमान करते हैं, तिरस्कार करते हैं। वास्तव में इस मन्त्र में बताया गया है कि शरीर में जिस प्रकार विभिन्न अवयवों की उपयोगिता होती है, प्रत्येक अंग का अपना-अपना कार्य एवं महत्त्व होता है, उसी प्रकार समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी अंगों की उपयोगिता है। उनके अपने-अपने कार्य हैं और समाज में सबका महत्त्व है। इसी क्रम से शूद्रों का स्थान पांव बताया गया है। यहां प्रश्न यह है कि पांव निकृष्ट हैं, या अनावश्यक हैं, या महत्त्वहीन हैं? उपासना स्थल पर बैठते समय क्या हम पांवों को कहीं और रख देते हैं? या फिर भोजन करते हुए हम पांवों को कहीं और छोड़ आते हैं? सत्य तो यह है कि पांव शरीर का आधार हैं। उसी प्रकार शूद्र समाज के आधार हैं, किसी प्रकार भी महत्त्वहीन नहीं। वे समाज की आधारभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं, वे सबके लिये विविध उपकरण बनाते हैं और स्वच्छता रखते हैं, जिससे सब नीरोग होकर सुखपूर्वक जीवनयापन कर सकें। इसीलिये गीता में भी जन्म को महत्त्व न देकर कर्म को ही महत्त्व प्रदान किया गया है—

'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः' (गुणों और कर्मों के आधार पर मैंने चार वर्णों की सृष्टि की है।) कोई भी व्यक्ति किसी भी विशेष वर्ण में जन्म लेकर अपने कर्म के आधार पर किसी भी वर्ण में जाने में समर्थ है। वेद के अनुसार न तो कोई बड़ा है और न ही कोई छोटा—

"अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय" (ऋ० ५।६०।५)

समाज में सभी व्यक्ति भाइयों के समान एक-सा लक्ष्य सामने रख कर उसके प्रति अग्रसर होते हैं।

इसीलिये वेद में एक और स्थान पर कहा गया है कि सबका मार्ग या जीवन मार्ग समान है। उस मार्ग पर चलने का सबका समान अधिकार है—

'समानो अध्वा प्रवतामनुष्यदे।' (ऋ० २।१३।२)

इस समान मार्ग पर जैसे कोई आर्य या उच्चपदस्थ व्यक्ति अपनी इच्छानुसार चल सकता है, उसी प्रकार शूद्र भी चलने में स्वतन्त्र है। समाज का कर्तव्य है कि वह देखे कि वर्ण का विचार किये बिना सबका ही प्रिय हो—

'प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये।
(अथर्व० १९।६२।१

वेद में परमेश्वर से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र-सबमें समान रूप से शोभा या दीप्ति का आधान करने की प्रार्थना की गई है, जिससे सबका समान कल्याण हो और कोई भी अपमानित न हो—

'रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नस्कृधि।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्। (यजु० १८।४८

जब सबकी समान समृद्धि होगी, तभी समाज और राष्ट्र की उन्नति है, और किसी प्रकार नहीं। समाजरूपी पुरुष के ये सभी अंग हैं। इनके स्वस्थ रहने पर ही समाज रूप पुरुष सामुदायिक रूप सब कार्यों को ठीक-ठीक सुविधा पूर्वक सम्पन्न कर सकता है इसीलिये वेद में समान गति और समान चिन्तन तथा समान आचरण की प्रेरणा दी गई है—

'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।'
(ऋ. १०।१९१।२) इसी प्रकार-'समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।' (ऋ० १०।१९१।४)

सबके सब राष्ट्रोन्नति के समान लक्ष्य को सामने रखकर एक-सा चिन्तन करें, जिससे पारस्परिक सहयोग बढ़े और यह हमारा राष्ट्र समृद्धि को प्राप्त हो। राष्ट्र में अपने-अपने कार्य को उत्साह से करते हुए हम राष्ट्रोन्नति के लिए जागरूक रहें और अग्रसर होते जायें-

'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः' (यजु. ९।२३)

विश्व का सबसे अधिक मुस्लिम आबादी वाला

इण्डोनेशिया आज भी संस्कृति से हिन्दू है (२)

७० लाख हिन्दू जनसंख्या के इस देश में ११००० हिन्दू मन्दिर हैं

श्री वसन्तलाल झा

देव-पूजा के साथ-साथ दुष्ट शक्तियों की भी पूजा की जाती है। उन्हें मांस और शराब अन्न का भोग लगाया जाता है जिससे वे प्रसन्न रहें और कोई अहित न करें।

पूजा और उत्सवों में स्त्री-पुरुष विशेष परिधान पहनते हैं। कमर में लुंगी लपेटी जाती है जिसे सरंग या गामोन (Gamon) कहा जाता है। ऊपर आधी बांह का छोटा कुर्तानुमा वस्त्र पहना जाता है। लुंगी के ऊपर एक (Sash) कमरबन्द सुनहरा या जरी का काम किया हुआ लपेटा जाता है। सिर पर सिली सिलाई पगड़ीनुमा टोपी जिस पर शिव लिंग का प्रतीक होता है, पहनी जाती है बालीनीज (Balinese) शिरोवस्त्र या टोपियां ऊपर से खुली होती हैं। लेकिन इण्डोनेशियायी टोपियां ऊपर से बन्द होती हैं। इनको "पस्तर"-कहते हैं। ये सफेद भी होती हैं और रंग-बिरंगी भी होती हैं। High Priest (मुख्य अर्चक) मुकुट पहनते हैं। रुद्राक्ष की लम्बी माला पहनते हैं। काला Sash कमर और बायें कंधे से लपेटते हैं। स्त्रियां अपने जूड़े में सफेद, काले या गहरे लाल रंग के फूलों या पत्तों को तिकोने आकार में बनाकर जूड़े में खोंसती हैं। यह ब्रह्मा, विष्णु और शिव का प्रतीक माना जाता है और इसे 'कल्पिका' कहा जाता है। वहां पूजा की सजावट का, शिल्प का, पूजा का प्रायः सभी वस्तुओं का शिव-शक्ति से संबन्ध प्रतीत होता है। मुझे बताया गया कि अर्चक की चोटी और कल्पिका का जूड़ा भी शिव और शक्ति के प्रतीक होते हैं और लिंग और योनि के आकार में बनाये जाते हैं।

कुछ लोगों ने ISKON (इस्कान) तथा सत्यसाई बाबा के प्रभाव में आकर मांस-भक्षण का परित्याग कर दिया है, परन्तु ऐसे लोगों की संख्या नगण्य है। ऐसे करीब एक-डेढ़ हजार साईं समिति के अनुयायी तथा ३००-४०० इस्कान के लोग होंगे। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वहां के हिन्दुओं ने इस्कान पर सरकार से कहकर प्रतिबन्ध लगवा दिया था क्योंकि वे शिव के बदले कृष्ण भक्ति का प्रचार कर रहे थे और मांस भक्षण का पूर्ण-तया परित्याग करने की बात कहते थे। देनपसार में सत्यसाईं अनुयायियों की अच्छी संख्या है। जावा में राधा स्वामी सैन्ट ब्रह्मकुमारी और आनन्द मार्ग आदि भी सक्रिय हैं। जकार्ता में एक सिख टेंपल भी है।

रामायण और महाभारत की कथाएं प्राचीन जावानी कावी भाषा में लोंतार (ताड़ पत्रों की पुस्तक) पर लिखी हुई गांव-गांव में पायी जाती है। लोंतार को एक खूबसूरत सुनहरे रंग की लम्बी, पतली काष्ट पेटिका में रखा जाता है। उसे ऊंचे आसन पर रखा जाता है। पढ़ने से पहले उसकी श्रद्धा से पूजा की जाती है। कावी भाषा जानने वाला एक व्यक्ति उसका एक-एक पद गाता है। दूसरा व्यक्ति बाली भाषा में उसका अर्थ बताता है। (रामायण-महाभारत की कथाएं अब मुद्रित भी होने लगी हैं) रामायण के रचयिता अंपु (ऋषि) योगेश्वर माने जाते हैं। रचनाकाल ११वीं माना जाता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि रामायण के रचयिता एक नहीं पांच व्यक्ति थे तथा यह कि योगेश्वर एक नाम न होकर उपनाम (Psendonym) था। महाभारत के सभी पर्व नहीं, कुछ पर्व पुरानी जावानी भाषा में गद्य में लिखे गये हैं। महाभारत की रचना पूर्वी जावा के प्रसिद्ध हिन्दू सम्राट श्री धर्मवंश तगुह अनंत विक्रमादित्य देव के शासन काल में ११वीं ईसवी सदी में हुई। वे साहित्यिक नामक विद्वन्मण्डली के संरक्षक थे, जिसका गठन इस ग्रन्थ के लिखने के लिए किया गया था। रामायण महाभारत की कथा सब जानते हैं। घटोत्कच उनका एक प्रिय पात्र है क्योंकि अर्जुन को बचाने के लिए उसने आत्माहुति दी। टी०वी० में आजकल हमारे भारत के रामायण-महाभारत के सीरियल दिखाये जाते हैं। ये बहुत लोकप्रिय साबित हो रहे हैं। मुसलमान भी ये सीरियल देखते हैं। इनकी Dubbing Christians ने की है और गाने की Dubbing की है। गानों की आवाज तक मिलती-जुलती बनाई है।

बाली में बहुत कम मस्जिदें और गिरजाघर हैं क्योंकि यहां की २७ लाख की जनसंख्या में २४ लाख से ऊपर लोग हिन्दू हैं यहां १० हजार से ऊपर मन्दिर हैं।

यहां प्रत्येक विद्यार्थी को पूर्व-प्राथमिक से लेकर सेकेण्डरी स्तर तक उसके धर्म की शिक्षा दी जाती है। इसकी परीक्षा उत्तीर्ण करना, अगली कक्षा में जाने के लिए जरूरी होता है। हर हिन्दू बालक त्रिसन्ध्या जानता है और करता है। स्कूल प्रारम्भ होने से पहले अलग-अलग कमरों में अलग-अलग धर्मों के बच्चे इकट्ठे होते हैं और अपने-अपने धर्म की प्रार्थना करते हैं। इसके बाद कक्षाएं प्रारम्भ होती हैं। स्कूलों में धर्म-शिक्षक नियुक्त किये गये हैं जो बच्चों को उनके धर्म की शिक्षा देते हैं।

मुझे लगा कि सीधे-सीधे परावर्तन करना यहां मुश्किल होगा। परिषद हिन्दू धर्म, इंडोनेशिया के अधिकारियों इंडोनेशिया प्रशासन के Department of Religions के हिन्दू अधिकारियों तथा श्री रमेश वासवानी आदि से बात करने से मुझे पता चला कि चूंकि इंडोनेशिया में मुसलमानों की संख्या सबसे अधिक है, और यह दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम देश भी है। इसलिए वहां के मुल्ला-मौलवी दूसरे कट्टर मुसलमान और यहां का प्रशासन भी यह नहीं चाहता कि कोई मुसलमानों का धर्म परिवर्तन करके उन्हें दूसरे धर्मों में दीक्षित करें। यहां के मुल्ला-मौलवी और कट्टर मुसलमान क्रिश्चियन मिशन-रियों से बहुत नाराज रहते हैं। क्योंकि उनका (मिशनरियों का) रूख Attitude उन्हें आक्रमक aggressive लगता है। वे हिन्दुओं से अप्रसन्न नहीं हैं क्योंकि वे हिन्दुओं को आक्रमक Aggressive नहीं मानते। यह भी पता चला कि यहां के क्रिश्चियन और (चीनी) बौद्ध, मुसलमानों की अपेक्षा अधिक कट्टर हैं। यहां के बालीनीज या जावानी बौद्ध उतने कट्टर नहीं हैं। इंडो-नेशियन बौद्धों और हिन्दुओं की परस्पर प्रायः वही स्थिति है जो कुछ साल पहले तक हिन्दुओं और सिखों के बीच भारत में थी। यहां तक कि यदि कोई हिन्दू अर्चक उपलब्ध नहीं होता तो बाली के हिन्दू बौद्ध अर्चकों को ही घर पर बुलाकर छोटी-मोटी पूजा करवा लेते हैं। मैंने देखा कि हिन्दू कान्फ्रेन्स में काम करने वाले सहयोग देने वाले कार्यकर्ता जावानी/बालीनी बौद्ध लोग भी थे। लेकिन यह भी पता चला कि चीनी बौद्ध अपनी पहचान अलग बनाये रखना चाहते हैं।

यहां का मुसलमान भारत, बांग्लादेश या पाकिस्तान के मुसलमानों की अपेक्षा अभी भी अधिक उदार है। यहां का स्वतन्त्रता-दिवस १७ अगस्त को मनाया जाता है। इसके दो दिन पहले यानी १५ अगस्त को राष्ट्रपति सुहार्तो ने सेना के कुछ अधिकारियों को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए अलंकरण प्रदान किये। यह सब टी०वी० में आ रहा था। मैंने देखा कि अलंकरण समारोह के बाद उन्होंने जो भाषण दिये उसके अन्त में कहा "ओम शान्तिः शान्तिः" और यह उपस्थित सभी लोगों ने दुहराया "ओम शान्तिः शान्तिः"। यहां के हिन्दू कान्फ्रेन्स का उद्घाटन यहां के उपराष्ट्रपति ने किया जिसमें दो मन्त्री भी उपस्थित थे जो मुस्लिम थे। जनरल सुहार्तो हज कर आये हैं, लेकिन कहा तो यह जाता है कि वे हाजी होने के बावजूद भी विष्णु भक्त हैं। जकार्ता नगर के केन्द्र में रथारूढ़ श्रीकृष्ण-अर्जुन की मूर्ति है। हमारे यहां की तथा कथित धर्मनिरपेक्ष सरकार भारत में यह करने की हिम्मत नहीं करेगी। यह सब होने के बावजूद पेट्रोडालर और पाकिस्तान जैसे मुस्लिम देशों के प्रभाव के कारण यहां भी मुस्लिम कट्टरवाद कुछ बढ़ा है। पहले यहां अरब की कथाएं टी०वी० में नहीं चलाई जाती थी। अब सप्ताह में एक दिन अरबी की कथा भी चलती है। पहले जकार्ता में बहुत कम मस्जिदें थी, ऐसा मुझे बताया गया। अब पेट्रोडालर के प्रभाव से यहां सैकड़ों मस्जिदें हैं और कुछ तो वाकई बहुत भव्य हैं। (क्रमशः)

स्वामी दयानन्द का प्रिय आर्यावर्त्त

सत्यानन्द आर्य

उन्नीसवीं शती में उत्पन्न हुये दयानन्द जैसे महामानव इस धरा पर कम ही जन्म लेते हैं। जिस प्रकार वे अभूतपूर्व प्रतिभा के व्यक्ति थे उसी के अनुरूप उन द्वारा रचित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और सत्यार्थ प्रकाश उनके अद्भुत ग्रन्थ हैं। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास तथा सभी दिशाओं में उनके पथप्रदर्शन का कार्य करते हैं। जहां एक ओर इन ग्रन्थों में आध्यात्मिक ज्ञान की गंगा को महसूस किया जा सकता है वहीं दूसरी ओर महर्षि जी ने इतिहास और देश गौरव की बातें बड़े सहज व स्वाभाविक रूप से वर्णित की हैं। देश के प्रति समर्पित महर्षि की देश वन्दना बहुत सरल हृदय से लिखी गई है। कहीं कोई पक्षपात छलकपट या तुष्टिकरण की गन्ध नहीं आती है। इन ग्रन्थों में बिखरे हुए आर्यावर्त्त शब्द सम्बन्धित वाक्यों को पढ़कर महर्षि के राष्ट्रस्नेह व देश वन्दना का पक्ष हमारे सामने अद्भुत प्रेरणा प्रदान करते हैं।

"यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इस लिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है"।(सत्यार्थप्रकाश)पृष्ठ २५६

"इससे आर्यों के बसने से पूर्व इस देश का नाम कोई भी नहीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे।" (स०प्र०) पृ० स० २१२

"एक अरब छियान्वे करोड़ कई लाख और कई सहस्र वर्ष जगत की उत्पत्ति और वेदों के प्रकाश होने में हुए हैं। १९६०८५२९७६ वर्ष वेदों की और जगत की उत्पत्ति को हो गये हैं)।"(स०प्र०२१४ एवं ऋ०भा०भू०)

"सृष्टि से लेके पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। (स०प्र०) पृ.सं. २५९.

"आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहेरूप विदेशी छूमने के साथ ही स्वर्ण अर्थात धनाढ्य हो जाते हैं।

(स०प्र०) पृ० सं० २५९.

"जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।" (स०प्र०) पृ० सं० २५१.

"आपस की फूट से कौरव-पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया परन्तु अब तक वही रोग पीछे लगा है।"(स.प्र.) पृ.सं. २५१

"वेदों की अप्रवृत्ति होने का कारण महाभारत युद्ध हुआ इनकी अप्रवृत्ति से अविद्या-अंधकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्य की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया।" (स०प्र०) पृ.स. २५६

संसार की स्वाभाविक

"इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता।" स. प्र. (पृ.स. २५०

"संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि बहुत धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य पुरुषार्थ रहित ईर्ष्या द्वेष विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है।" (स०प्र०) पृ. सं. २६०

"धर्म हमारे आत्मा और कर्तव्य के साथ है जब हम अच्छे काम करते हैं तो हमको देशदेशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर जाने में कुछ भी दोष नहीं लग सकता दोष तो पाप के करने से लगते हैं।" (स०प्र०) पृ. सं, २४६

"क्या बिना देशदेशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में राज्य व्यापार किये स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है। (स०प्र०) पृ. सं. २४६

"आर्यावर्त्त देशीय लोग व्यापार राजकार्य और भ्रमण के लिए सब भूगोल में घूमते थे।" (स०प्र०) पृ. सं. २२८

"देश-देशान्तर के अनेक विधि मनुष्यों के समागम रीति भांति देखने अपना राज्य और व्यवहार बढ़ाने से निर्भय शूरवीर होने लगते हैं और अच्छे व्यवहार का ग्रहण, बुरी बातों के छोड़ने में तत्पर होके बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।" स०प्र० (पृ. सं. २४९

"जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है। (स०प्र०) पृ. सं. २६२

"कलियुग नाम काल का है। काल निष्क्रिय होने से कुछ धर्माधर्म करने में साधक-बाधक नहीं। (स० प्र०) पृ. सं. ३६६

"जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।" (स०प्र०) पृ. स. ३६१

"तीन प्रकार की गणित विद्या आर्यों ने वेदों से ही सिद्ध की है। और इसी आर्यावर्त्त देश से सर्वत्र भूगोल में गई है।" ऋ.भा.भू., पृ.सं. ३३८

"किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहां के जंगलियों से लड़कर, जय पाके, निकालकर इस देश के राजा हुए।" (स० प्र०) पृ. सं. २११

"इक्ष्वाकु से लेकर कौरव-पाण्डव तक सर्वभूगोल में आर्यों का राज्य और वेदों का थोड़ा-थोड़ा प्रचार आर्यावर्त्त से भिन्न देशों में भी रहा है।"

(स० प्र०) पृ. सं. २१२

"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। (स० प्र०) पृ. सं. २११

"यह आर्यावर्त्त कितना सुन्दर है, कितना सुशील है, जो जलवायु भी यहां का कितना उत्कृष्ट है इसमें छहों ऋतु क्रम से आते रहते हैं।

(पूना प्रवचन)

"जब जब इसी देश का अन्न जल खाया पीया अब भी खाते पीते हैं तब अपने माता-पिता पितामहादि के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना इंगलिश भाषा पढ़के अभिमानी होकर बुद्धिमत्ता का काम क्यों कर हो सकता है।" (स.प्र.)

आर्यावर्त्त आर्यराज्य व राजधर्म से सम्बन्धित महर्षि के उपरोक्त मन्तव्यों का सन्देश जो एक बद्ध करने का प्रयास किया है। ताकि गलत धारणाओं व भ्रान्तियों को छिन्न-भिन्न कर हम लोग महर्षि जी के आदेश व उपदेश अनुसार अपने को ढाल सकें तथा देश गौरव राष्ट्र स्नेह व निज संस्कृति के कार्यों के प्रति समर्पित हो सकें। जिसकी आज के समय में नितान्त आवश्यकता है।

टिप्पणी—पृष्ठ संख्या दयानन्द ग्रन्थमाला के दिये गये हैं।

(स.प्र.) सत्यार्थ प्रकाश, (ऋ. भा. भू.) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका।

राष्ट्रीय स्वाधीनता सार्वभौमिकता-अखण्डता का आधार वैदिक संस्कृति

—डा० धर्मपाल

स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त १९९४ पर ध्वजारोहण करने के पश्चात् अपने सम्बोधन में कुलपति तथा मुख्याधिष्ठाता डा० धर्मपाल जी ने कहा, कि ऐतिहासिक संघर्ष, त्याग बलिदान के फलस्वरूप प्राप्त की गई राष्ट्रीय स्वाधीनता, अखण्डता, सार्वभौमिकता एवं मौलिकता की सुरक्षा का एक मात्र आधार वैदिक संस्कृति ही है।

कुलपति जी ने आगे बोलते हुए कहा कि स्वाधीनता संग्राम में गुरुकुलों की महती भूमिका रही है। गुरुकुल-नियमित एवं अनुशासित जीवन-शिक्षा राष्ट्र भक्ति, प्रेम संस्कार के केन्द्र हैं।

इस राष्ट्रीय पर्व को घनघोर मूसलाधार वर्षा में भी हर्ष-उल्लास से मनाया गया। विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने राष्ट्रभक्ति के रोमांचकारी प्रेरक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

—महेन्द्रकुमार सहायक मुख्याधिष्ठाता

आर्य साधुओं को आवश्यक सूचना

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली में १७-१८ सितम्बर १९९४ को ऋषि दयानन्द सिद्धान्त रक्षिणी सभा (रजि०) बालसमन्द रोड हिसार के निर्देशानुसार हो रहे साधु सम्मेलन में अवश्य भाग लें। जिसमें हम अपने साधुओं को जहां ठोस कार्यक्रम देंगे। वहीं उनकी सुख-सुविधाओं व शिक्षा की ओर भी ध्यान देंगे। आर्य समाज के प्रचार व प्रसार को बढ़ाने के लिए जो प्रस्ताव पास किये जायेंगे पूरे छः महीने के अन्दर-अन्दर हम उन प्रस्तावों को कार्यान्वित करने में लग जायेंगे। आर्य समाज के दूसरे घटकों का भी सम्मेलन बुलायेंगे इस तरह आर्य समाज के प्रत्येक अंगों को सक्रिय किया जाएगा। मुझे इन सभी आयोजनों का संयोजक बनाया गया है।

सीताराम आर्य प्रधान महर्षि दयानन्द सिद्धान्त रक्षिणी सभा को जो अपने घर से निवृत होकर आर्य समाज के लिए समर्पित हो चुके हैं। इन सभी आयोजनों के लिए उन्हीं से सम्पर्क करें।

सीताराम आर्य हिसार (हरियाणा)

प्रधानाचार्य की आवश्यकता

योग्यता व्याकरणाचार्य (प्राचीन) जो शास्त्री कक्षा तक अष्टाध्यायी पद्धति से व्याकरण पढ़ा सके। अपने प्रमाण-पत्रों की प्रतिलिपि प्रार्थना-पत्र के साथ २१ दिन में भिजवायें अथवा स्वयं मिलें। वेतन योग्यतानुसार गुरुकुल स्नातक को वरीयता। अवकाश प्राप्त विद्वान् भी सादर आमन्त्रित हैं।

शास्त्री आचार्य के छात्रों के लिए

॥ स्वर्णिम अवसर ॥

गंगा किनारे गढ़ मुक्तेश्वर के निकट पूठ गुरुकुल में शास्त्री आचार्य की कक्षा में छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ है। उन छात्रों को विशेष छात्रवृत्ति की विशेष योजना है तथा स्नातक होने पर नौकरी की सुरक्षा तथा विदेश भेजने की योजना भी शामिल है। स्थान सीमित है शीघ्र सम्पर्क करें।

धर्मपाल आचार्य संचालक
गुरुकुल पूठ पो० बहादुरगढ़
जिला गाजियाबाद (उ० प्र०)

शोक समाचार

मेरी पुत्रवधू प्रिय उमारानी धर्मपत्नी डा० रामकृष्ण आर्य का निधन दिनांक १०-९-९४ को श्री गोविन्द वल्लभ पन्त हास्पिटल देहलीमें हृदय रोगमें हो गया है। वह बड़ी धार्मिक विदुषी पुत्री थीं तथा एम.एड. व संस्कृत अंग्रेजी में भी एम.ए. थीं, आर्य परिवार में ही ब्याही थीं।

विष्णुचन्द्र आर्य, अलीगढ़

गौशाला पुनरुद्धार

गुरुकुल कांगड़ी की अनेक वर्षों से उपेक्षित गौशाला की पुनरुद्धार योजना के अन्तर्गत ब्रह्मचारियों को शुद्ध पौष्टिक, दूध सेवन कराने के उद्देश्य से नवीन खरीदी गई उत्तम नस्ल की दुधारु गायों के शुभागमन पर गौशाला में यज्ञ आयोजित किया गया।

गुरुकुल आचार्य ब्रह्मचारियों के साथ-साथ गोधन के महत्व पर सर्वश्री महेन्द्रकुमार सहायक मुख्याधिष्ठाता, कुलसचिव डा० जयदेव वेदालंकार आदि ने विचार प्रकट करते हुए इस पुनीत कार्य की सराहना की।

कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता डा० धर्मपाल जी ने गौ-दुग्ध सेवन से सात्विक सत्य सदविचारक, सदाचारी, सत्कर्मी ब्रह्मचारियों के निर्माण के लिए ब्रह्मचारियों को नई खरीदी गई गऊएं अर्पित करते हुए अपने समस्त सहयोगी अधिकारियों, कर्मचारियों के प्रयासों को सराहते हुए शुभ कामनायें दीं।

गायों के शुद्ध दूध से बनी खीर को यज्ञशेष के रूप में वितरित किया गया।

महेन्द्रकुमार
सहायक मुख्याधिष्ठाता

वेद प्रचार अभियान एवं सामवेद पारायण यज्ञ

वेदों के प्रचार-प्रसार हेतु आर्यसमाज बागपत दिनांक ६-६-८४ से ६-६-८४ तक वेद प्रचार अभियान चला रहा है। जिसमें गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी तथा भारत के सुप्रसिद्ध सौम्य मधुर उपदेशक श्री नरदेव आर्य पधारेंगे तथा भारतीय समाज में फैली कुत्सित कुरीतियों पर प्रहार करके सच्चे ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग बतायेंगे, जो मार्ग ईश्वर ने वेदों के माध्यम से मानव को बताया है। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर समारोह को सफल बनायें।

वेद प्रचारार्थ कार्यक्रम

आर्यसमाज स्वामी श्रद्धानन्द मार्ग हिवरखेड़ अकोला में दिनांक १०-८-८४ से दिनांक ६-६-८४ तक श्रीमान श्रीमुनि वशिष्ठ आर्य "वानप्रस्थ" बी०ए०बी०टी० विशारद (निवृत प्रकल्प अधिकारी) के द्वारा यज्ञ प्रवचनादि होंगे।

मंगलवार ६-६-८४ को दोपहर ४ बजे आर्यसमाज मन्दिर में शिक्षक दिवस श्रीमान श्रीमुनि वशिष्ठ "वानप्रस्थ" की अध्यक्षता में मनाया जायेगा प्रमुख उपस्थिति श्रीमान भाऊ देवरावजी निम्बे प्रशासक ग्राम प० हिवरखेड रहेंगे।

श्रीमान बाबुराव जी मधुकरराव जी गोमासे शिक्षक बी०ए०बी० एड० रामटेकपुरा आकोट के निवास पर दि० ६-६-८४ मंगलवार को रात्रि ८ बजे पारिवारिक सत्संग तथा शिक्षक दिन निमित्त सहभोज का कार्यक्रम होगा।

सब आर्य भाइयों से प्रार्थना है कि सभी कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में मित्र परिवार सहित पधारने की कृपा करें।

ईश्वर–उपासना

क्यों और कैसे ?

लेखक :
डा० वेद प्रकाश
प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग
मेरठ कालिज, मेरठ
पृष्ठ-संख्या--२८०

प्रकाशक :
वैदिक प्रकाशन
एल एच—१७, पल्लवपुरम-२
मेरठ (उ० प्र०)-२५०११०
दूरभाष : ५७०६५७

(तृतीय संशोधित संस्करण)

ग्रन्थ का मूल्य—पचास रुपये मात्र (विदेश में ३ अमरीकी डालर)

परन्तु धर्म-प्रेमियों के विशेष आग्रह पर—३१ सितम्बर, १९९४ तक विशेष छूट दी जा रही है—

१. एक से दस ग्रन्थों के लिए	—४५ रु० प्रति ग्रन्थ
२ दस से पचास ग्रन्थों के लिए	—४० रु० प्रति ग्रन्थ
३. पचास से एक सौ ग्रन्थों के लिए	—३५ रु० प्रति ग्रन्थ

विशेष—१. डाक-व्यय प्रकाशन ही वहन करेगा (मात्र भारत में)

२. सम्पूर्ण मूल्य, ३१ सितम्बर, १९९४ तक वैदिक प्रकाशन के पते पर केवल बैंकड्राफ्ट या मनिआर्डर द्वारा ही भेजें।

३. वी. पी. पी. की व्यवस्था नहीं. ४. अपना पता पूर्ण व स्पष्ट लिखें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धांतों के अनुसार विरचित तथा अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, दुःख और दुर्गुणों को मिटाकर पाठक को सच्चा ईश्वर-उपासक बनाने वाला यह ग्रन्थ छपकर आपकी सेवा में प्रस्तुत है, जिसके विषय की एक झलक इस प्रकार है—

१ मानव जीवन का रहस्य—मैं कौन हूं ? आत्मा का अस्तित्व आत्म-दर्शन क्यों ?, आत्म-दर्शन कैसे ?, आत्मा का स्वरूप, मैं कहां से आया हूं ? मैं क्यों आया हूं, मैं कहां जाऊंगा ?

२. ईश्वर का सर्वोत्तम नाम क्या ?—'ओ३म्' की विस्तृत व्याख्या।

३. ईश्वर का अस्तित्व एवं स्वरूप—ईश्वर है अथवा नहीं ?, है तो दिखाई क्यों नहीं देता ? ईश्वर कैसा और कहां है ? ईश्वर कैसे दिखाई देता है ?, क्या ईश्वर की मूर्ति होती है ? ईश्वर साकार है या निराकार ?'

४ संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की दृष्टि में ईश्वर।

५. क्या ईश्वर अवतार लेता है ?

६. अवतारों की कथाओं का सत्य—पुराणों में वर्णित २४ अवतारों की कथाओं की समीक्षा।

७. उपासना मूर्ति की या ईश्वर की?—मूर्ति-पूजा की आड़ में फैले पाखण्ड का भण्डाफोड़।

८. मूर्ति-पूजा वेद विरुद्ध है।

९. ईश्वर उपासना क्यों ?

१०. ईश्वर-उपासना कौन कर सकता है ?

११. ईश्वर उपासना करने का फल।

१२. ईश्वर उपासना न करने का फल।

१३. उपासना के विविध रूपों की सच्चाई—१. देवी-देवता की मूर्ति-पूजा, २ शोभायात्रा, ३. तीर्थ यात्रा का भ्रम, ४. वैष्णोदेवी की यात्रा-एक धोखा, ५. भूखा रहना (उपवास रखना) कैसी भक्ति ?, ६. सत्य-नारायण की कथा, ७. अन्ध विश्वास का एक और रूप : कांवड़ लाना, ८. धर्म के नाम पर गुरुओं का आडम्बर, ९. भगवती जागरण की झूठी महिमा, १० कब्र पूजा से सावधान, ११. पेड़-पौधों की पूजा, १२ रामचरित-मानस का अखण्ड पाठ, १३. पौराणिक कीर्तन का पाखण्ड, १४. मूर्तियों पर बलि चढ़ाना : घोर पाप, १५. नग्न नर नारियों द्वारा देवी की पूजा, १६. निराकार ईश्वर की उपासना।

१४. ईश्वर उपासना कैसे करे ?—उपासना की तैयारी, योग का अर्थ, योग के आठ अंग—(१. यम, २. नियम, ३. आसन, ४ प्राणायाम, ५. प्रत्याहार, ६. धारणा, ७ ध्यान, ८. समाधि), ईश्वर उपासना के विघ्न, मन की एकाग्रता, उपासना अवश्य करें ?—(१. ओ३म् की ही उपासना करें, २. प्रातः साय उपासना अवश्य करें, ३. अशिक्षित व्यक्ति उपासना कैसे करें?, ४. शेष समय क्या करे, ५. विवशता में क्या करें ?, ६. गृहस्थ पञ्चयज्ञ अवश्य करें, ७. अन्त समय क्या करे ?

वेद कथा एवं सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज मन्दिर, बी एन. पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली में वेद कथा और यज्ञ का आयोजन ५ से ११ सितम्बर १९९४ तक किया गया है आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित धर्म लाभार्थ सादर आमन्त्रित है।

यज्ञ के ब्रह्मा और वेदोपदेशक—वैदिक विद्वान आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय तथा भजन—प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री गुलाब सिंह राघव द्वारा होंगे। ११ सितम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर श्री वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय, श्री जैमिनी शास्त्री, डा० महेश विद्यालंकार एवं डा० शिवकुमार शास्त्री के प्रवचन होंगे।

पिलखुवा में वार्षिकोत्सव

'सार्वदेशिक आर्य वीर दल" शाखा पिलखुवा अपने 'वार्षिकोत्सव' के अवसर पर वेद प्रचार का आयोजन करने जा रहा है।

अतः आप अपने परिवार एवं इष्ट मित्रों सहित कार्यक्रमानुसार सम्मिलित होकर धर्मलाभ उठायें व आर्य वीरों का मार्गदर्शन करें। इस अवसर पर १. आचार्य डा० सत्यव्रत राजेश (हरिद्वार) २. प नरेश दत्त आर्य, भजनोपदेशक (बिजनौर) ३. आचार्य धर्मपाल जी शास्त्री ४. स्वामी ओमानन्द जी महाराज ५. स्वामी शिवानन्द जी (गाजियाबाद) पधार रहे हैं। १७ सितम्बर से १९ सितम्बर ९४ तक होने वाले इस कार्यक्रम में यज्ञ, भजन प्रवचन सहित अनेकों अन्य सम्मेलन भी आयोजित किए गए हैं।

१९ सितम्बर को आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन का कार्यक्रम भी रखा गया है।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०२१/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (११-९-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी)९३
R N- 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O on 8 9 9 1994

आर्य समाज शकरपुर दिल्ली में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मन्दिर शकरपुर दिल्ली-९२ में वेद प्रचार सप्ताह तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व २७ अगस्त से २९ अगस्त तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान श्री कृष्ण चन्द्र जी शर्मा के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। तीन दिन चलने वाले इस यज्ञ की पूर्णाहुति २९ अगस्त को सम्पन्न हुई। मुख्य समारोह श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व के रूप में मनाया गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध संगीताचार्य श्री पुष्किन अरोड़ा तथा उनकी पार्टी के मनोहर भजनों को श्रोताओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। समारोह में दिल्ली सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में, श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा सहित अनेकों विद्वानों ने योगिराज श्री कृष्ण के चरित्र का बखान तथा इस पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला। आर्य समाज शकरपुर के संरक्षक श्री ओमप्रकाश कौशिक की अध्यक्षता में हुए इस समारोह का संचालन क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उप सभा के मन्त्री श्री परशुराम त्यागी तथा आर्य समाज शकरपुर के उप प्रधान श्री ओमप्रकाश कश्यप ने संयुक्त रूप से किया। समारोह को सफल बनाने में आर्य समाज शकरपुर के प्रधान श्री मिश्रीलाल जी तथा मन्त्री श्री राम निवास कश्यप ने अथक प्रयत्न किया। समारोह की सफलता के लिए सभी ने उनका धन्यवाद किया।

रेल दावा अधिकरण मे हिन्दी के प्रयोग की अनुमति हुई

रेल दावा अधिकरण (ट्रिब्यूनल) मे अभी तक केवल अंग्रेजी में कार्रवाई की जा सकती थी। किन्तु अब सम्बन्धित पार्टियों को यह विकल्प उपलब्ध होगा कि दावा अधिकारियों के समक्ष वे अपने अपने मामलो की पैरवी हिन्दी अथवा अंग्रेजी में करें। दावा अधिकरण के विकल्प पर अधिकरण के सभी आदेश और निर्णय हिन्दी अथवा अंग्रेजी मे होंगे। यह अधिसूचना रेल मन्त्रालय (रेलवे बोर्ड) द्वारा १५ जून, १९९४ के असाधारण भारत के राजपत्र के भाग-२, खण्ड-३, उपखण्ड-१, संख्या-२४८ में प्रकाशित की गई है, जो कि देश के सभी भागो मे लागू होती है।

अनुरोध है कि उक्त घोषणा का व्यापक प्रचार किया जाए और भारत के निगमों आदि सहित सभी कार्यालयों, हिन्दी भाषी राज्यों के सरकारी कार्यालयों और उद्योगपतियों तथा व्यापारियों को प्रेरित किया जाए कि वे अपने-अपने मामलो मे पैरवी हिन्दी मे करें।

जगन्नाथ
संयोजक, राजभाषा कार्य,
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
सरोजनी नगर, नई दिल्ली-११००२३

सामवेद का विमोचन

आज २१ अगस्त १९९४ को 'श्रावणी पर्व' की पावन वेला में ईश्वर की अनुकम्पा से सामवेद के जो मौलिक ८४ मन्त्र अपने है, और बाकी अथर्ववेद तथा ऋग्वेद के हैं उनका भाष्य स्वर्गीय स्वामी विद्यानन्द जी विदेह ने 'सामवेद का अध्ययन" नामक पुस्तक मे किया था।

उसका असमीया भाषा मे भाष्य, गोहाटी विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्राध्यापक डा० ज्ञानेश्वर शर्मा ने किया है इसका विमोचन विधि पूर्वक डा० विश्वनारायण शास्त्री भूतपूर्व एम०पी० द्वारा कराया गया है।

उपस्थित जन समूह ने इसे बहुत बड़ा कार्य बताया तथा अधिकारियों को बधाई दी।

यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न

११ ७-९४ दरभंगा, कादिराबाद निवासी श्री इन्द्रदेव ठाकुर जी के तृतीय सुपुत्र चि० पंकज कुमार का यज्ञोपवीत संस्कार प० रामसखा शास्त्री के आचार्यत्व में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

राजकुमार पूर्व मन्त्री
आर्य समाज कवैरिया

आदर्श वैदिक विवाह सम्पन्न

दरभंगा, १३-७-९४ चि० जीवन कुमार सुपुत्र श्री इन्द्रदेव ठाकुर जी, मु०+पो०—कादिराबाद (दरभंगा) का विवाह मु०+पो०—वीरसिंहपुर (समस्तीपुर) निवासी श्री सुनील कुमार ठाकुर जी की तृतीय सुपुत्री आयुष्मती कुमारी सीमा बी०ए० के साथ प० राम सखा शास्त्री के आचार्यत्व मे वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। आगत अतिथियो व ग्रामीणो ने पुष्प वर्षा कर वर-वधू को को आशीर्वाद दिया। उपस्थित जनता ने वैदिक विवाह की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

वेद सप्ताह (राष्ट्र भृत यज्ञ)

राजपुरा टाउन, आर्य समाज मन्दिर मे "राष्ट्रभृत यज्ञ' दिनांक १ से ७ ८-९४ तक स्वामी दीक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक प० सत्यपाल जी पथिक' ने अपने मधुर भजनो से आर्य भक्तो को आनन्दित किया। गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो ने सस्वर वेदपाठ किया।

श्री श्रद्धानन्द जी को भ्रातृ शोक

आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद के मन्त्री व आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के प्रधान श्री श्रद्धानन्द के बड़े भाई श्री शिवानन्द शर्मा का ७४ वर्ष की आयु मे हृदय गति रुक जाने से २८ अगस्त को देहान्त हो गया। वे अपने क्षेत्र के विख्यात समाजसेवी थे। बहुत वर्षों तक लोलाना विकास खण्ड के प्रमुख रहने के साथ-साथ मेरठ और गाजियाबाद संयुक्त जिले की जिला परिषद मे निर्माण व शिक्षा समिति के अध्यक्ष रहे। आप कई शिक्षा संस्थाओ के संस्थापक थे। आर्य समाज राजनगर में शोक प्रस्ताव पारित करके दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

अरविन्द कुमार त्यागी उपमन्त्री

नव निर्वाचन

अ० भा० दयानन्द सेवाश्रम संघ नई दिल्ली से सम्बद्ध प राजगुरु शर्मा वनवासी विकास समिति बरखेड़ा (कल्याणपुरा) की साधारण बैठक दि० ३१-७ ९४ को शंकर मंदिर कल्याणपुरा मे हुई जिसमें सर्वसम्मति से निर्वाचन सम्पन्न हुआ।

अध्यक्ष-श्री डा० जगदीश प्रसाद व्यास,,उपाध्यक्ष-श्री प्रवीण कुमार सुराना, महासचिव-श्री प आर्येन्द्र कुमार वैदिक, कोषाध्यक्ष-श्री लक्ष्मीलाल चौहान',सचिव-श्री नाहर सिंह चौहान।

समिति के संरक्षक-श्री रमेश चन्द्र ललवानी (मेघनगर) श्री जामसिंह अमलियार (खेड़ा),श्री रामकृष्ण बजाज (थान्दला)।

कार्य कारिणी सदस्य-श्री अनिल कुमार सिंह राठौर,, श्री रमणलाल चौहान,, श्री मूलचन्द बामनिया,, श्री रमेशचन्द्र आर्य (कुआपुरा थान्दला)

प्रतिष्ठित सदस्य-श्री प्रकाश चन्द्र आर्य एडवोकेट (महू), कु० सुनीता शर्मा-एडवोकेट (महू)। महामन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिकआर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष । ३६३७७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ३२]   दयानन्दाब्द १७०   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५   भाद्रपद शु० १४ सं० २०५१ १८ सितम्बर १९९४

हिन्दी समूचे देश को एक सूत्र में जोड़ती है

सरकारी काम-काज और निजी व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग करें

दिल्ली १४ सितम्बर। हिन्दी दिवस के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देशवासियों के नाम एक सन्देश में कहा है—हिन्दी पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने वाली कड़ी है। उत्तर से दक्षिण पूर्व से पश्चिम जहाँ भी जायें देखा जाता है कि हिन्दी के माध्यम से ही एक दूसरे से सम्पर्क किया जाता है।

स्वामी जी ने कहा भारत की संविधान सभा ने १४ सितम्बर १९४९ को निर्णय लिया था कि देश के विभिन्न राज्यों की राजभाषा उनके विधान मण्डलों के निर्णयानुसार प्रादेशिक भाषायें या हिन्दी होगी परन्तु केन्द्रीय संघ की राजभाषा हिन्दी होगी। राजभाषा अधिनियम १९६३ के कुछ अंशों में १९६७ में भी संशोधन किया गया था जो निम्न प्रकार हैं—

(क) यह बात दोहराई गई कि संविधान के अनुच्छेद ३४३ के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी रहेगी।

(ख) हिन्दी भाषा की प्रसार वृद्धि करना और उसका विकास करना संघ का कर्त्तव्य है।

(ग) भारत सरकार पर यह उत्तरदायित्व डाला गया है कि वह हिन्दी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने के लिए तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए उसका उत्तरोत्तर प्रयोग बढ़ाने के लिए अधिक महन और व्यापक कार्यक्रम तैयार करती रहे।

(घ) कार्यक्रम बना देना ही काफी नहीं होगा, उसे कार्यान्वित भी किया जाएगा।

(ङ] कार्यक्रम के बनाने और उसे कार्यान्वित करने का काम सरकारी कार्यालयों की रूटीन कार्यवाही के समान नहीं होगा अपितु किए जाने वाले उपायों एवं उनकी प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद को प्रस्तुत की जाएगी और सभी राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।

स्वामी जी ने कहा यह दुर्भाग्य की बात है कि इन संकल्पों के क्रियान्वयन में अंग्रेजी के कारण रुकावटें पड़ती रही हैं। आज भी सरकारी नौकरी हेतु परीक्षाओं के माध्यम के लिये संघर्ष चल रहा है। संघ लोक सेवा आयोग के बाहर वर्षों से धरने दिये जा रहे हैं, जिसमें भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह पूर्व प्रधानमन्त्री आदि अनेक नेता भी शामिल हुये हैं। परन्तु आज भी अंग्रेजी जानने वाले २ प्रतिशत लोगों का शासन भाषा व उसके व्यवहार के मामले में ९० करोड़ देशवासियों पर चल रहा है।

आर्य समाज ने राष्ट्र भाषा हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के विकास और संविधान के अन्तर्गत उनके विकास और उपयोग की जो व्यवस्थायें दी हुई है उनके क्रियान्वयन हेतु पूरे देश में जन-जागृति के लिए हैदराबाद, पटना, कलकत्ता, दिल्ली भोपाल आदि कई नगरों में भारतीय भाषा सम्मेलनों के आयोजन किये हैं।

आज हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में समस्त देशवासियों के प्रति अपनी शुभ कामना प्रकट करते हुए अनुरोध करता हूं कि अंग्रेजी का मोह छोड़कर राष्ट्र भाषा हिन्दी का व्यवहार सरकारी काम-काज व निजी व्यवहार में अवश्य करें। यही राष्ट्रीय संस्कृति है, इसी से भारतीय होने का गर्व अनुभव होगा।

सत्यार्थप्रकाश बनाने का प्रयोजन

मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान मे असत्य और असत्य के स्थान मे सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहाता है।

जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने मे प्रवृत्त होता है, इसलिये वह सत्य मत को प्राप्त नही हो सकता।

इसीलिए विद्वान् आप्तो का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वय अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द मे रहे।

;—महर्षि दयानन्द सरस्वती

वैदिक साहित्य प्रकाशन में नया ग्रन्थ
कुल्यात आर्य मुसाफिर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने १९७३ ई० से साहित्य प्रकाशन में आर्य समाज स्थापना शताब्दी वर्ष पर रुचि ली। परिणामत: इस समय सार्व० सभा द्वारा लाखों रुपए का वैदिक साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है जो भारत तथा भारत से बाहर के देशों मे अभिरुचि के साथ मंगाकर पढ़ा जा रहा है। मैं अभिमान के साथ कह सकता हूं इस साहित्य मे—

चारो वेदो का भाष्य--सबसे अधिक बिक्री हो रहा है—

स्थानाभाव तथा अर्थाभाव के कारण सभा अन्य कई उपयोगी ग्रन्थ प्रकाशित करने में असमर्थ है फिर भी—

दो उपयोगी ग्रन्थ (१) संस्कार चन्द्रिका व (२) वैदिक सम्पत्ति सभा द्वारा प्रकाशित किए गए। सभा की अपील पर धन भी छपने से पूर्व ही प्राप्त हो गया। यह आर्यों के साहित्य के प्रति विशेष प्रबल इच्छा शक्ति का प्रमाण है—

परन्तु अमर शहीद पं० लेखराम जी द्वारा लिखित जब हमने "कुल्यात-आर्य मुसाफिर" ग्रन्थ के प्रकाशन की घोषणा की और लिखा कि "कृष्ण जन्माष्टमी" तक १२५ रु० में दी जाएगी। आर्यों ने इच्छा शक्ति तो दिखाई पर वह प्रबल वेग जो संस्कार चन्द्रिका व वैदिक सम्पत्ति के लेने में था वह इच्छा, उत्साह अमर शहीद प० लेखराम की लिखित पुस्तक के प्रति थोड़ा हल्का रुझान मिला।

अब मेरी प्रार्थना है कि इस अमर ग्रन्थ के प्रति जो एक अमर शहीद की शहीदी निशानी है। क्या आप इसके प्रकाशन में कुछ सहयोग करेंगे—यदि 'हां' तो शीघ्र ही अग्रिम धन १२५ रु० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम भेज कर पुस्तक प्राप्ति में आप भी अपना नाम अंकित कराकर यश के भागी बने

पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रही है हम ग्रन्थ प्रकाशित तो करेंगे ही परन्तु आपका सहयोग मिल जाय और ग्रन्थ छप जाय इससे जहां हमारा उत्साह वर्धन होगा वहा आपके द्वारा उपलब्धि यश प्राप्ति भी होगी।

अमर शहीद पं० लेखराम ने कहा था कि आर्य समाज के मंच से तहरीर और तकरीर का काम बन्द नहीं होना चाहिए। यदि आप उस हुतात्मा की आवाज पर प्रेरणा ले सके तो "कुल्यात आर्य मुसाफिर" को अग्रिम धन भेज-कर पुस्तक प्राप्ति में तत्परता दिखायें।

—सम्पादक

राष्ट्रे वयं जागृयामः पुरोहिताः

आज भारत में एक जातीयता की गम्भीर लहर विष बेल की तरह फलाई जा रही है। जिस जाति-बिरादरी की खाई को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाट दिया था और उस मानव बिरादरी की शृंखला में राष्ट्र को उदबोधन किया था और उस ऋषि की आवाज पर सोया राष्ट्र अंगड़ाई लेकर खड़ा हो गया। 'सैकड़ों वर्षों की गुलामी की जंजीर तोड़कर स्वतन्त्र भारत में सही श्वास ले रहा है परन्तु—

कुछ राजनीतिज्ञों ने जातिवाद की बीमारी पैदाकर अपनी कुर्सी सुरक्षित करने का प्रयास किया है। परिणामतः इसकी देन है—मण्डल आयोग

अन्ततः आज कांशीराम और मायावती के नाम से ब्राह्मण विरोध को प्रकट कर राष्ट्र में नयी आग लगाई है यह ठीक है कि तुम्हारी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की पूर्ति हो जाएगी। पर राष्ट्र का क्या बनेगा।

ब्राह्मण सावधान ?

राष्ट्र पर जब-जब संकट की काली घटायें छायी तब तब म०बुद्ध, महावीर स्वामी, आचार्य शंकर, कुमारिल भट्ट, मण्डन मिश्र ने शास्त्रार्थ कर जातिवाद के विष वृक्ष को जड़ से काट दिया था।

सैंकड़ों वर्षों में प्रबुद्ध सन्त-फकीर-योद्धा पैदा हुए जिन्होंने जातिवाद की आग को बुझाकर वास्तिकता का जल छिड़ककर मानवता की रक्षा की।

बीसवीं सदी के प्रारम्भ से पूर्व—राजाराम मोहनराय, केशवचन्द्र सेन पूर्व में दक्षिण में गोविन्द रानाडे, तिलक, गोखले ने राष्ट्र को प्राणवान किया था पश्चिम में सिक्खों की प्रबल परम्परा में नव जागरण हुआ। देश बदला और दक्षिण में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने एक हुंकार दी, जिससे देश ने करवट ली और आर्य समाज के नाम से एक सबल आन्दोलन चला और रूढ़िवाद, जातिवाद, अन्धविश्वास के जाल से कराहती मानवता को नयी चेतना दी।

परन्तु जिस ब्राह्मण द्विज ने राष्ट्रीयता को बचाया आज उसी पर प्रबल जातिवाद के नाम पर आक्रमण किया जा रहा है। कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर ने लिखा था—

ये क्या कर रहे हो, किधर जा रहे हो,
अंधेरे में क्यों ठोकरें खा रहे हो।
कहो क्या यही काम है ब्राह्मणो के,
कि दुनियां को अपने से बहका रहे हो।

फिर चेतना लाओ और अपनी मानवता को बचाओ—

अय कौम के पुरोहितो, कब होश में आओगे,
और होश मे आए तो कब जोश में आओगे।
मानी न अगर बात तुमने इस मुसाफिर की,
पछताओगे रोओगे और अश्रु बहाओगे।

—सम्पादक

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत: अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये बार रु०१५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

सार्वदेशिक सभा की नई उपलब्धि
वृहदाकार-सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित

सार्वदेशिक सभा ने २०×२६/४ के बृहद् आकार में सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन किया है। यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है तथा कम दृष्टि रखने वाले व्यक्ति भी इसे आसानी से पढ़ सकते हैं। आर्य समाज मन्दिरों मे नित्य पाठ एवं कथा आदि के लिये अत्यन्त उत्तम, बड़े अक्षरों म छपे सत्यार्थ प्रकाश में कुल ६०० पृष्ठ हैं तथा इसका मूल्य मात्र १५०) रुपये रखा गया है। डाक खर्च ग्राहक को देना होगा। प्राप्ति स्थान:—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

ओ३म् ध्वनि की महत्ता

राजेन्द्र राजन

परमात्मा का प्रधान नाम है "ओ३म्"। ईश्वर को अनेक नाम से पुकारा जाता है। विभिन्न भाषाओं और सम्प्रदायों में उसके अनेक नाम हैं। इन नामों में "ओ३म्" को प्रधान इसलिए माना है कि प्रकृति की संचालक सूक्ष्म शक्तिविधियों को अपने योग बल से देखने वाले ऋषियों ने समाधि अवस्था में देखा है कि प्रकृति के अन्तराल में प्रतिक्षण एक ध्वनि उत्पन्न होती है जो "ओ३म्" शब्द से मिलती जुलती है इसीलिए प्रकृति एवं ईश्वर का नाम "ओ३म्" रखा गया है इसलिए महर्षि पातंजलि ने कहा है कि "यदि तुम ईश्वर को पुकारना चाहते हो तो 'ओ३म्' नाम से पुकारो। यदि ओ३म् का उच्चारण विधिवत किया जाए तो प्रकृति मनुष्य के पराधीन हो जाती है। वह रोग व बुढ़ापे से मुक्त हो जाता है और मृत्यु उसकी पराधीन हो जाती है। फलस्वरूप उस व्यक्ति के द्वारा नाना प्रकार के चमत्कार होने लगते हैं और फिर उन्हें महामानव, महापुरुष व भगवान आदि की उपाधि से विभूषित करते हैं अर्थात उसकी कुण्डलिनी शक्ति का जागरण हो जाता है।

एक्यूपंचर सिद्धांत के अनुसार शरीर में प्राण ऊर्जा वर्तुलाकार (सर्किट) घूमती रहती है जब वह ऊर्जा आहार-विहार और विचार आदि की गड़बड़ी के कारण किन्हीं स्थानों में रुक जाती है और उसके गतिमान होने में रुकावट आ जाती है तो शरीर रोगी हो जाता है। ऐसे लगभग ७०० बिन्दु अथवा केन्द्र खोज निकाले गये हैं जहां ऊर्जा अवरुद्ध हो जाती है इसके निवारणार्थ एक्यूपंचर (सुई चुभोकर) एवं एक्यूप्रेशर (दबाव) द्वारा ऊर्जा के प्रवाह को, गतिमान कर देते हैं और मनुष्य रोग मुक्त हो जाता है। महर्षि पातंजलि भी एक्यूपंचर एक्यूप्रेशर के सिद्धांत से सहमत थे मगर वह सुई चुभोकर व दबाव देकर ऊर्जा का प्रवाह करने में सहमत नहीं थे। पातंजलि ने योग के द्वारा इसके निराकरण का उपाय खोज निकाला है उन्होंने कहा कि किसी ध्यान मुद्रा की अवस्था में जब 'ओ३म्' का जप किया जाता है और साथ-साथ उसके अर्थ की भावना की जाती है तब प्राण ऊर्जा और देह ऊर्जा दोनों एक दूसरे के विपरीत घूमने के कारण आपस में रगड़ कर विद्युत उत्पन्न करती है। यह विद्युत प्रवाह सारे रोगों को नष्ट करके शरीर को स्वस्थ व निरोग बनाने के बाद मस्तिष्क में प्रवेश करती है और ज्ञान कोषों को खोल देती है। दीर्घ काल के अभ्यास से साधक परम लक्ष्य तक पहुंचने में समर्थ हो जाता है।

'ओ३म्' शब्द में तीन अक्षर होते हैं—ओ, उ तथा म्। "ओ" अक्षर के उच्चारण से ओज (शक्ति) की वृद्धि होती है क्योंकि उच्चारण करते समय मूलबन्ध (गुदा मार्ग को सिकोड़ना) लगता है जिससे वीर्य का ऊर्ध्वरेता (शक्ति के रूप में परिवर्तन) स्वयं होता रहता है। लम्बे समय के अभ्यास से मूलाधार चक्र प्रवाहित होता है। "उ" अक्षर के उच्चारण से उदर शक्ति का विकास, उड्डियान बन्ध (पेट को अन्दर सिकोड़ना) के लगने से होता है जिससे उदर (पेट) सम्बन्धी रोग धीरे-धीरे स्वतः समाप्त हो जाते हैं। कुछ समय के अभ्यास से मणिपूरक चक्र प्रभावित होता है। "म्" अक्षर के उच्चारण से मस्तिष्क की शक्तियों का विकास होता है क्योंकि उस समय मस्तिष्क में भौंरे की तरह गुनगुनाहट सुनाई देती है जिसे भ्रामरी प्राणायाम कहते हैं जिसके कारण मस्तिष्क में एक विशेष प्रकार की तरंग (वेव्ज) उत्पन्न होती हैं जिससे मस्तिष्क में कोई विकार बाहर ही नहीं निकलते हैं बल्कि सुप्त पड़े अवयव भी कार्य करने लगते हैं। फलस्वरूप मस्तिष्क की स्मरण शक्ति अपने आप बढ़ने लगती है। "म्" अक्षर के उच्चारण से सहस्रार चक्र प्रवाहित होता है जब मूलाधार, मणिपूरक व सहस्रार चक्र "ओ३म्" शब्द के कई बार के उच्चारण से एक साथ प्रवाहित होते हैं तो कुण्डलिनी शक्ति का जागरण होता है जिससे उपरोक्त उपलब्धियां स्वतः प्राप्त होने लगती हैं।

"ओ३म्" शब्द के विधिवत उच्चारण से किसी कम्बल या जमीन पर बिछे हुये कम्बल अथवा गद्दे पर किसी सुखासन में, जिसमें देर तक रीढ़ की हड्डी को सीधा रख सके, बैठ जाये। यदि आप जमीन पर घुटने मोड़कर न बैठ सकें तो रीढ़ की हड्डी को सीधी रखकर कुर्सी पर बैठ सकते हैं पर यह ध्यान रखें कि पैर कुचालक पर ही रखें जैसे—कम्बल, या लकड़ी का पटरा आदि। जिससे प्राप्त ऊर्जा जमीन में न चली जाये। इसके बाद बांए हथेली पर दांए हथेली रखकर दोनों हाथ गोद में रखें। जिससे ऊर्जा उंगली से न निकलकर शरीर के अन्दर वर्तुलाकार (सर्किट) में घूमें। फिर आंख बन्द करके सांस को भरे, श्वास भरते समय एक बात का ध्यान रखे कि पेट फूले अर्थात बाहर आये इसके बाद होठों को खोलकर 'ओ' अक्षर का उच्चारण करें और मन के द्वारा गुदा मार्ग की मांस पेशियों को अन्दर की ओर खींचती जाएगी। अर्थात मूलबन्ध लगता है। इसी प्रकार "उ" के उच्चारण में होठों को कम खोलकर मन के द्वारा पेट को अन्दर खींचता हुआ अनुभव करते हैं अर्थात उड्डियान बन्ध लगता है। अन्त में "म्" का उच्चारण करते समय होठ को बन्द कर लेते हैं और मस्तिष्क में मन को लगाकर भ्रामरी प्राणायाम की अनुभूति करते हैं। यह पूरा क्रम एक श्वास में पूरा करते हैं। "ओ" में ज्यादा समय देते हैं उससे कम "उ" में, उससे कम "म" में समय देते हैं। बाकी अपनी रुचि के अनुसार जिस शक्ति को अधिक बढ़ाना चाहते हो उस शक्ति के अनुसार अक्षर के उच्चारण में अधिक समय दे।

(वैदिक जागरण से साभार)

मदुराई (तमिलनाडु) में हरिजनों का धर्मान्तरण नहीं हुआ

८ अगस्त १९९४ के टाइम्स आफ इंडिया में यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि मदुरै कुराकुर नामक गांव में सैकड़ो हरिजनों का इस्लामी करण समारोह पूर्वक किया गया। इस समाचार की जांच के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से दक्षिण भारत में सार्वदेशिक सभा के प्रचार संयोजक श्री स्वामी एम० नारायण सरस्वती को सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की ओर से निर्देश दिया गया। एम० नारायण सरस्वती ने अपने २४-८-९४ के पत्र द्वारा जो जानकारी भेजी वह इस प्रकार है: "मैं १४-८-९४ को प्रातः अपने दो साथियों के साथ उस स्थान पर पहुंचा था, जहां पर धर्मान्तरण होने का समाचार था। हमने वहां के नेताओं से पूछताछ किया। उन लोगों का कहना था कि वहां १०-१२ वर्ष पूर्व कुछ लोग मुस्लिम बन गये थे, अब ऐसी कोई परिस्थिति नहीं है। यह केवल धमकी है। क्योंकि कुछ दिन पूर्व पुलिस आयुक्त स्वयं वहां गये थे और उन्होंने वहां दोनों पक्षों में समझौता करा दिया था। अतः न तो वहां कोई धर्म परिवर्तन हुआ है और न संभावित तिथि १५-८-९४ को होगा। इस प्रकार की बात वहां के हरिजन नेता एवं ग्राम अधिकारी ने बताई। उसके बाद हम पुलिस स्टेशन गये और उसके इंचार्ज से भी मिले थे, उन्होंने भी उपरोक्त बयान का समर्थन किया था। फिर हम डी० एस० पी० से मिले। उन्होंने भी यही कहा कि कुछ दिन पूर्व पुलिस आयुक्त महोदय यहां आकर दोनो पक्षों का समझौता करा गए हैं। अतः धर्मान्तरण की कोई घटना नहीं होगी।

उसके बाद हम फिर २२-८-९४ को वहां गये और वहां के हरिजन नेता एवं अन्य लोगों से मिले तो पता चला कि वहां कोई धर्मान्तरण १५-८-९४ को भी नहीं हुआ - हम पुलिस स्टेशन भी गए उन लोगों ने भी यही बात की। पुलिस इंस्पेक्टर महोदय ने हमें आश्वासन दिया कि भविष्य में यदि कोई ऐसी बात होगी तो स्वयं हमारे पास आकर जानकारी देंगे।

रामानाथ पुरम के चित्तूर ग्राम में धर्मान्तरण के लिए वहां का जिलाधीश जिम्मेदार है। उसका वहां से तबादला कराना बहुत अत्यावश्यक है। वहां जो ४४ लोग मुसलमान बन गए हैं, उन्हें पुनः वैदिक धर्म में वापस लाने का प्रयत्न हो रहा है। हमारे कार्यकर्ताओं ने वहां प्रतिज्ञा की है कि भविष्य में वहां और धर्मान्तरण नहीं होने दिया जायेगा।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री

इण्डोनेशिया आज भी संस्कृति से हिन्दू है [३]

श्री बसन्तलाल झा

फिर भी मुझे लगा कि शायद इंडोनेशिया के आदिवासियों के बीच कुछ काम किया जा सकता है। इनमें से बहुत से लोग क्रिश्चियन बना लिये गये हैं। सुमात्रा में बहुत से आदिवासी मुस्लिम हो गये हैं। पापुआ-न्यूगिनी के लोग जो (Negroid) हैं या बोर्नियो (जिसे अब कालिमंतान कहा जाता है) के आदिवासी अबतक भी नरभक्षी थे। करंगासम के पास पहाड़ियों पर एक आदिम प्रजाति रहती है। उनके बहुत से लोगों को मिशनरियों ने क्रिश्चियन बना लिया था। लेकिन परिषद हिन्दू धर्म के लोग उनमें से अधिकांश को प्रयत्नपूर्वक हिन्दू धर्म में ले आये। लेकिन मिशनरियों के प्रयत्न अभी भी जारी हैं।

वहां Protestant और Roman Catholics दोनों मिशनरी हैं। मुझे यह बताया गया कि जावा में समुद्र के किनारे, खासकर मध्य जावा में ऐसे लाखों लोग हैं जिन्होंने अपने Identity Cards में अपने को मुस्लिम लिखाया हुआ है। लेकिन पूजा-पाठ, पितरों की पूजा इत्यादि अभी भी हिन्दुओं की तरह करते हैं। ऐसे भी हजारों लोग हैं जो शुक्रवार की नमाज में भी शरीक हो जाते हैं और घर में हिन्दुओं की तरह पूजा-पाठ भी करते हैं। ऐसे लोगों को कैसे हिन्दू लिखाया जाय, क्योंकि अगर ऐसा किया गया तो वहां की सरकार के कान खड़े हो जायेंगे। अगर ऐसे लोगों को भी हिन्दुओं में शरीक कर लिया जाय तो वहां हिन्दू धर्मावलम्बियों की संख्या प्रायः सवा करोड़ हो जायेगी। ज्ञातव्य है कि चार सौ-पांच सौ साल पहले गुजरात से आये हुए मुसलमान व्यापारियों ने वहां के राजाओं को मुसलमान बना लिया। उनके अनुकरण में उनकी प्रजा भी मुसलमान बन गयी। रोज नई उठती हुई मस्जिदों को देखकर, अजान की आवाज सुनकर और यह जानकर दुःख होता है कि इन सबके पूर्वज कभी हिन्दू या बौद्ध थे। तथा यह कि इनको मुसलमान बनाने वाले भारत के ही लोग थे। वहां की परिषद हिन्दू धर्म ने हिन्दू धर्म का प्रचार-प्रसार करने के लिए कुछ धर्मदूत भी नियुक्त किये हैं लेकिन उन्हें कोई नियमित वेतन देना वहां की परिषद के लिए संभव नहीं है। इसलिए ये धर्मदूत अपना स्वयं का कोई काम करते हुए तथा केवल यात्रा-व्यय तथा साधारण पारश्रमिक लेकर धर्मप्रचार का कार्य करते हैं और बिना किसी शोर-शराबे के अपना काम करते हैं। पूर्वी जावा के हिन्दुओं तथा परिषद के अधिकारियों ने मुझसे कहा कि हिन्दू धर्म के विभिन्न पहलुओं पर track पुस्तिकाएं इत्यादि छपवाकर वहां मुफ्त वितरण के लिए भेजी जानी चाहिएं और इसका पूरा खर्च भारत के हिन्दुओं को उठाना चाहिए। साथ ही वहां के हिन्दू भारतीयों से तथा इंडोनेशिया में रह रहे भारतीयों से बहुत सहयोग की अपेक्षा रखते हैं। उनकी शिकायत थी कि वहां बस रहे भारतीय अपने बालाभी बालीनी हिन्दू भाइयों से कोई सम्पर्क नहीं रखते।

वहां की परिस्थितियों को जैसा मैंने देखा और समझा, उसके आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि वहां भारत की तरह सीधे-सीधे अपने धर्म का प्रचार करने की गुंजाइश नहीं है और न ही यह वांछनीय होगा। वहां के बहुसंख्यक मुसलमान यह कभी सहन नहीं करेंगे, हालांकि इन सबके पूर्वज आज से ४००-५०० साल पहले या तो हिन्दू थे या बौद्ध थे। यह भी विचित्र बात है कि वहां के बहुत से मुसलमान अपने को युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन की संतान भी कहते हैं और यह भी कहते हैं कि मोहम्मद साहब ही हमारे नबी हैं, साथ ही यह भी कि नबी तो ठीक थे, लेकिन अरब लोग जाहिल और धर्मान्ध ही होते हैं। तब भी वे इस्लाम को नहीं छोड़ना चाहते। मुझे यह भी पता चला कि जिस तरह भारत में मुसलमानों के तुष्टीकरण की नीति अपनायी जाती है उसी तरह इंडोनेशिया में क्रिश्चियनों के तुष्टिकरण की नीति अपनायी जाती है। वहां की सरकार में कई क्रिश्चियन मन्त्री हैं लेकिन एक भी हिन्दू मन्त्री नहीं है। वहां चीनी लोगों की भी अच्छी संख्या है। ये वहां सर्वाधिक सम्पन्न हैं। अधिकांश चीनी बौद्ध हैं, कुछ क्रिश्चियन भी हो गये हैं। Protestant और रोमन कैथोलिक्स की अपेक्षा अधिक Aggressive माने जाते हैं। परिषद हिन्दू धर्म बिना किसी शोर-शराबे के अपना काम कर रही है। परिषद एक मासिक पत्रिका hindu dharma निकालती है। छः हिन्दू धर्म इन्स्टीट्यूट्स तथा २० शिक्षण संस्थाएं (प्राइमरी से सेकेण्डरी लेवल तक) परिषद द्वारा चलाई जा रही हैं। लेकिन इन्स्टीट्यूट्स की हालत खस्ता हो चुकी है क्योंकि वहां से उत्तीर्ण विद्यार्थी को नौकरी मिलना मुश्किल होता है इसलिए इन्स्टीट्यूट्स में पढ़ने अब बहुत ही कम विद्यार्थी आते हैं। धर्मदूतों को भी वहां की परिषद नियमित वेतन देने की स्थिति में नहीं है।

मूर्ति पूजा की तार्किक समीक्षा [७]

डा० भवानीलाल भारतीय

आठवले शास्त्री जी के इस मूर्तिपूजा प्रतिपादन में पुनरुक्ति दोष पदे-पदे लक्षित होता है। वे अनेकत्र यह लिख चुके हैं कि मूर्ति सर्वगुण सम्पन्न मंगल कर्तृत्व पूर्ण, भाव प्रधान आकर्षक तथा श्रेष्ठ विकास की ओर ले जाने वाली होनी चाहिए। हमारा निवेदन है कि मूर्ति जड़ होने से न तो सर्वगुण सम्पन्न होती है और न उसमें अपने पूजने वालों का मंगल करने की शक्ति होती है। वह उन रागात्मक भावों की अभिव्यक्ति तो यत् किंचित, सीमित मात्रा में कर सकती है जो उसके रचयिता शिल्पी ने अपनी कलात्मक प्रतिभा के द्वारा उसके मुख पर अंकित किए हैं। किन्तु भाव परिवर्तन करना उसके लिए सम्भव नहीं है। वह आकर्षक भी हो सकती है। तो जुगुप्सा जनक भी हो सकती है जैसे कि काली, भैरव आदि की भयानक मूर्तियों से सिद्ध है। शास्त्री जी का भोलापन यहाँ पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है जब वह मूर्ति को कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं सर्वथा समर्थ कहते हैं। कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं की शक्ति चैतन्य प्राणी में ही होती है, जड़ प्रतिमा में ये गुण या शक्ति नहीं होती। यदि मूर्ति कर्तुं अकर्तुं होती तो वह अपनी पूजा के लिए पुजारी पर निर्भर नहीं होती। वह अपना दैनन्दिन कार्य स्वयं ही कर लेती और स्नानादि कार्यों तथा नैवेद्य, शयन आदि के लिए पुजारी की अपेक्षा नहीं रखती।

खेद की बात तो यह है कि आठवले शास्त्री ने मूर्तिपूजा की सिद्धि के लिए जब-तब गीता को उद्धृत किया जबकि गीता के ७०० श्लोकों में एक भी श्लोक ऐसा नहीं है जो मूर्तिपूजा का उल्लेख करता हो। ऐसी स्थिति में मन के निग्रह के लिए कृष्ण के द्वारा बताये गये अभ्यास और वैराग्य जैसे साधनों को मूर्तिपूजा के साथ कैसे जोड़ा जा सकता है। योगदर्शन में भी अभ्यास का उल्लेख हुआ तथा उसके नैरन्तर्य पर जोर दिया गया किन्तु इस अभ्यासरूपी साधना का मूर्तिपूजा से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। मन के ऊर्ध्वीकरण के लिए वे शास्त्रीय मूर्तिपूजा को एक साधन बताते हैं किन्तु यह स्पष्ट नहीं करते कि शास्त्रीय मूर्तिपूजा का क्या अर्थ है। वैदिक और आर्ष शास्त्रों में तो मूर्तिपूजा की कहीं भी चर्चा ही नहीं है।

शास्त्रीजी चित्त की स्थिरता के लिए तीन बातों में विश्वास की आवश्यकता मानते हैं—(१) भगवान हैं, (२) वे सर्वगुण सम्पन्न हैं, (३) वे मूर्ति में हैं। पहली दो बातें तो ठीक हैं किन्तु सर्वगुण सम्पन्न परमात्मा मात्र एक स्थान में रखी मूर्ति में कैसे सीमित हो गये यह सिद्ध करना कठिन है, वस्तुतः परमात्मा के सर्वगुण सम्पन्न होने, सर्वशक्तिमान होने तथा सर्वव्यापक होने का औचित्य भी तभी है जब उन्हें सर्वत्र परिपूर्ण, सर्वदेशी कहा जाए। सीमित स्थान घेरने वाली मूर्ति में परमात्मा को सीमित करना चित्त की एकाग्रता का साधन नहीं हो सकता। इसी क्रम में वे आत्मविश्वास बनाये रखने के लिए भी मूर्तिपूजा को आवश्यक ठहराते हैं। यह कथन भी अनुचित है क्योंकि आत्मविश्वास बनाये रखने के लिए ईश्वर विश्वासी होना चाहिए। मनुष्य निश्चित मूर्तिपूजा से आत्मविश्वास की स्थिति नहीं रहती है। आत्मविश्वास को जननी आस्तिकता है, जड़ पूजा नहीं।

शास्त्री जी के अनुसार मनुष्याकार भगवान् में चित्त को एकाग्र करने के लिए मूर्ति पूजा सहाय कारक है। उनका यह वाक्य वदतोव्याघात दोषयुक्त है। भगवान् न तो मनुष्याकार ही है और न ही किसी सहायकारक द्वारा उन्हें प्राप्त किया जा सकता है। शास्त्रों में सर्वत्र परमात्मा को निराकार तथा किसी भी आकृति से रहित बताया गया है। परमात्मा को अन्तःकरण में ही देखा और जाना जाता है। उसके लिए उपनिषद् में स्पष्ट कहा गया है। कि धीर पुरुष उस परमात्मा को आत्मा के भीतर ही देखते हैं। तात्पर्य ये उपर्युक्त शीर्षकः वैदिक अध्यात्म शास्त्रों में जहाँ-जहाँ परमात्मा की प्राप्ति के साधनों या उपायों की चर्चा हुई है वहाँ कहीं भी मूर्तिपूजा जैसे सहायकारक का उल्लेख नहीं हुआ। शास्त्री जी ने अपने मत की पुष्टि में एक अन्य योग-सूत्र "यथाभिमत ध्यानाद्वा" को भी उद्धृत किया किन्तु इस पातञ्जल सूत्र से भी मूर्तिपूजा की औचित्य सिद्धि नहीं होती क्योंकि योगदर्शन के किसी भी भाष्यकार या टीकाकार ने इस सूत्र को मूर्तिपूजा का विधायक नहीं माना। सूत्र का सीधा सा अर्थ तो यही है कि ध्यान हेतु साधक अपने मन को स्थिर करने के लिए शरीर के किसी भी स्थान में स्थिर कर सकता है।

शास्त्री जी आध्यात्मिक विषयों को भी भौतिक मानदण्डों से नापते हैं। तभी तो वे लिखते हैं कि जिस प्रकार दृश्य-श्रव्य साधनों से किसी विषय की शिक्षा देना अधिक सुगम हो जाता है उसी प्रकार भगवान् की सुन्दर आकर्षक और नयनमनोहारी मूर्ति के द्वारा मनुष्य का मन केन्द्रित हो जाता है। उनकी इस तुलना के बारे में क्या कहा जाए? सांसारिक विषयों को दृश्य श्रव्य (Audio Visual aids) साधनों से भले ही स्पष्ट किया जा सकता हो किन्तु जो अदृश्य-अश्रव्य, अस्पृश्य, मन वाणी से अगोचर तथा इन्द्रियातीत हो; उसकी सुन्दर, आकर्षक और नयनमनोहारी मूर्ति बनाना क्या सम्भव भी अतः ऐसे सस्ते फार्मूलों से मूर्तिपूजा की सिद्धि करना सर्वथा अनुचित है। शास्त्री जी तो परमात्मा का शृंगार करना चाहते हैं। कभी उसे पीताम्बर-धारी बनाते हैं और कभी कौपीनधारी, किन्तु सर्वदिशायें ही जिसका वस्त्र है, वह व्यापक प्रभु न तो पीताम्बरधारी है और न ही कौपीनधारी। अखिल सृष्टि का शृंगार करने वाले परम सुन्दर काम आप क्या खाक शृंगार करेंगे।

आठवले शास्त्री जी की कुछ अन्य युक्तियों की परीक्षा करें। वे लिखते हैं—"मन ही मूर्ति का आकार देता है'''मन ही मूर्ति खड़ी करता है।" यह वाक्य अर्थहीन है। मूर्ति को कारीगर बनाता है, उसका मन से कोई सम्बन्ध नहीं है। पुनः उनका कथन है, "मन और बुद्धि को प्रभावी करने के लिए मूर्तिपूजा आवश्यक है। मूर्तिपूजा कोई बचपना नहीं है। यह भगवान् की खुशामद नहीं है आदि" मूर्तिपूजा से मन और बुद्धि का कोई विकास नहीं होता। जिन लोगों ने मूर्तिपूजा की, उनका सारा जन्म इस बाह्याडम्बर पूर्ण व्यर्थ का आचरण करने में ही समाप्त हो गया। मन और बुद्धि को विकसित करने तथा अधिक प्रभावी बनाने के लिए सत्संग, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान, अभ्यास आदि के साधन शास्त्रों ने बताये हैं, मूर्तिपूजा के लिए वहां कोई स्थान नहीं है। शास्त्री जी कहते हैं कि मूर्तिपूजा कोई बचपना नहीं है, किन्तु तनिक गम्भीरता से विचार करें तो मूर्तिपूजा से बढ़कर खिलवाड़ कहीं भी दिखाई नहीं देता। जिस प्रकार छोटी बालिकायें गुड़ियों का ब्याह रचा कर अपने मन को खुश करती हैं, उसी प्रकार यह मूर्तिपूजक भी अपनी कल्पनी दुनिया में रहकर परमात्मा को मूर्ति के बहाने कभी स्नान कराता है तो कभी उसे वस्त्र पहनाता है, कभी भोजन कराता है तो कभी शयन कराता है। जो सांसारिक इतिकर्तव्य संसारी प्राणियों के साथ जुड़े हैं उनको निर्लेप, निरंजन परमात्मा से जोड़ना क्या बालपना नहीं है। मूर्तिपूजा भगवान् की निकृष्टतम खुशामद ही नहीं उसकी सर्वशक्तिमानता का उपहास भी है क्योंकि हम जगदाधार को आसन देने की हिमाकत करते हैं, विश्वम्भर को भोजन कराते हैं और सर्व प्रकाशक का दीपदान करते हैं।

स्थूल उपकरण ईश्वर प्राप्ति के साधक नहीं

मूर्तिपूजा के उपकरण धूप, दीप, अगरबत्ती, चन्दन आदि को एकत्र करने को शास्त्रीजी मन के स्थिर करने के साधन या तैयारी बताते हैं। किन्तु उपनिषदादि वैदिक अध्यात्म ग्रन्थों में इन भौतिक उपकरणों को मन के स्थिरीकरण का उपाय कहीं नहीं बताया गया। वहां तो यम नियमादि के पालन, अभ्यास, वैराग्य पर वम्पत्ति आदि को ही मन एकाग्रता का उपाय बताया गया है। ध्यान, योगदर्शन का एक पारिभाषिक शब्द है जो एक विशिष्ट साधन क्रिया का वाचक है। उसकी विधि तथा स्वरूप योगसूत्रों मे विस्तार से वर्णित है, किन्तु आठवले शास्त्रीजी किसी वृक्ष के तले खड़े मुरलीधर कृष्ण के चिन्तन को ही जब शास्त्रीय ध्यान कहते हैं तो हमें उनके इस अज्ञान पर हंसी आती है। वे भक्ति और उपासना को भिन्न अर्थ में प्रयुक्त करते हैं जब कि वस्तुतः ये दोनों शब्द हो एक भाव के द्योतक हैं। ईश्वर के प्रति परानुरक्ति को भक्ति कहा गया है जब कि ईश्वर की सर्वव्यापकता को अनुभव कर उसका आत्मिक दृष्टि से सामीप्य लाभ करना उपासना है। वैदिक साहित्य में उपासना का ही प्रयोग होता रहा जब कि परवर्ती ग्रन्थों में भक्ति का भूरिशः प्रयोग हुआ है। निष्कर्षतः आठवले जी द्वारा प्रयुक्त शास्त्रीय मूर्तिपूजा अपने आप में अर्थहीन है क्योंकि वैदिक शास्त्रों से मूर्तिपूजा की सिद्धि सम्भव ही नहीं है।

निर्भय बनो—वीर बनो

—श्री आर० जयजयराम, नीदरलैंड

भय मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। यह मनुष्य की उन्नति में बाधक है। यह मनुष्य की शान्ति को भंग करके उसकी शक्ति को समाप्त कर देता है। यह शरीर पर बुरा प्रभाव डालकर निर्बलता उत्पन्न करता है।

भय है क्या? भय चित्त की एक वृत्ति है जो अज्ञान के कारण उत्पन्न होती है। यह हमारी आत्मा का गुण नहीं है, आत्मा तो अजर और अमर है। वेद कहता है—

'वायुर निलम मृतम थेदम ॥ यजु० ४० १५ ॥

आत्मा अलौकिक और अमर है। इसी तथ्य को गीता में इस प्रकार प्रकट किया गया है—

न जायते म्रियते वा कदा चिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥
गीता १८-२० ॥

यह आत्मा न उत्पन्न होता है और न कभी मरता है। यह होकर फिर न रहेगा। यदि ऐसा कहा जाय, तो यह भी ठीक नहीं। यह तो सदा रहेगा। यह आत्मा जो अमर है, कभी जन्म ग्रहण नहीं करती तथा पुरातन है। शरीर के नाश होने पर जो इस रहस्य को जान लेता है, जिसे आत्मा की अमरता का बोध हो जाता है फिर उसे भय कहां? आत्मा की अमरता का बोध हुआ था आत्म-बलिदानी वीर 'हकीकत' को। उसने हंसते-२ धर्म पर अपने शरीर की बलि दे दी। कहते हैं जब नवाब समझाने लगा, जो हकीकत मान जा मेरा कहना, तू मुसलमा हो जा—मैं तुम्हें आधा राज, किला तथा तेरा विवाह भी कर दूंगा। मान ले बेटा मान ले इसी में तेरी भलाई है।

उत्तर अर्थात् तड़पकर वीर हकीकत ने कहा—

आधा राज क्या मुझे ? सब का राज मिले, जो मिले किला सोने का, तो भी अपना धर्म न छोड़ूं, नहीं तुर्क होने का।

हंसते-हंसते बलिदान हो गया पर अपना वैदिक धर्म नहीं छोड़ा।

आत्मा की अमरता को जानकर ही तो महर्षि दयानन्द जी भी निर्भय बने थे। जब राव कर्णसिंह महर्षि दयानन्द पर तलवार लेकर झपटा तब स्वामी जी तनिक भी कम्पित नहीं हुए। उन्होंने तलवार को हाथ में पकड़ उसके दो टुकड़े कर दिये थे है यह निर्भयता।

कठिनाइयों, आपत्तियों और विघ्न बाधाओं से डरो मत

'कठिनाइयां, हमारे साथ विशेष उपकार करती हैं। वे हमारे अन्दर साहस भरती हैं और हमें सब प्रकार से योग्य बनाती हैं। अतएव मित्रो! इनसे डरो नहीं, इन्हें प्रसन्नता से गले लगाओ। चाहे आकाश सिर पर गिर पड़े, चाहे पहाड़ मार्ग रोककर खड़ा हो जाये, चाहे मृत्यु सामने खड़ जाए, परन्तु फिर भी 'माबिभेः" मत डरो।

जिस प्रकार समुद्र के किनारे खड़ी हुई चट्टान पर समुद्र की लहरों का तनिक भी प्रभाव नहीं होता, इसी प्रकार से साहसी मनुष्य भी संसार के झंझावातों आंधियों और तूफानों से तनिक भी भयभीत नहीं होता। वह आपत्तियों और कष्टों में चट्टान की भांति अडिग और दृढ़ होकर खड़ा रहता है तथा अन्त में विजय प्राप्त करता है।

भय का एक बड़ा कारण है अविद्या, बाल्यकाल में माता-पिता भूत-प्रेत आदि के कुसंस्कार बच्चों में डाल देते हैं। बड़े होने पर भी वे संस्कार भय का कारण बने ही रहते हैं। अविद्या को दूर करके विद्या (ज्ञान) उपार्जन कीजिये। आपके काल्पनिक भय दूर भाग जायेंगे।

मनुष्य जैसा सोचता है वैसा बन जाता है। आप महापुरुषों के जीवन का अवलोकन कीजिए। 'भीष्म पितामह' के वीरता पूर्ण कार्यों पर दृष्टि डालिए। 'मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण और महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन का अध्ययन कीजिए। आपके जीवन में भी निर्भयता का संचार होगा। किसी का कहना है कि पूर्ण निर्भयता प्राप्त नहीं की जा सकती। हां, कम पर विजय प्राप्त करने के लिए कुछ प्रयत्न अवश्य किये जा सकते हैं। 'परन्तु यह बात ठीक नहीं है। उपनिषद् डिण्डिम घोष के साथ कहते हैं—

अभयं वै ब्रह्माभयं हि वै ब्रह्म भवति य एवं वेद ॥ बृ० ४-४-२५)

निश्चय ही ब्रह्म निर्भय है, जो उस ब्रह्म को जान लेता है वह ब्रह्म के समान ही निर्भय हो जाता है।

जो ओ३म् की शरण में आ गया, जो ओ३म् को आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण, चहुं ओर, दसों दिशाओं में सर्वदा, सर्वथा अपने संरक्षक जानता है, जो प्रभु को अपने नीचे का बिस्तर और ऊपर ओढ़ना समझता है, उसे डर और भय कैसा?

जीवधारियो! अपनी शक्ति को पहचानो! तुम शरीर नहीं आत्मा हो, आत्मा! तुम तो अमृत पुत्र हो। फिर भय कैसा? "जिस प्रकार सूर्य और चन्द्र, द्यौ और पृथ्वी, रात्री और दिन न डरते हैं और न कांपते हैं, इसी प्रकार हे मेरे प्राण! तू भी मत कांप।" ऐसी भावना बनाइये।

वेद माता तुम्हें कैसा सुन्दर सन्देश दे रही है—
"मा भेर्मा संविक्था ऊर्जं धत्स्व ॥ यजु० ६-३५ ॥
मत डर, मत कांप। बल पराक्रम और साहस धारण कर।

विद्यार्य सभा द्वारा संस्कृत दिवस का आयोजन

संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा ने २८-८-९४ रविवार को आर्यसमाज राजेन्द्र नगर मे संस्कृत दिवस समारोह का आयोजन किया। इसके संयोजक श्री जगदेव जी तथा अध्यक्ष डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा थे। इसमे दिल्ली विश्व विद्यालय के संस्कृत विद्वानो डा० कृष्णलाल जो अध्यक्ष वेद विभाग, डा० महावीर जी अध्यक्ष संस्कृत विभाग, शिवाजी कालिज, डा० श्रीमति शशिप्रभा कुमार अध्यक्ष संस्कृत विभाग मैत्रेयी कालिजके अतिरिक्त, प्रो० बलराज मधोक, डा० रविकृष्ण शास्त्री, श्री वेमराज आर्य प्रधान, आर्यसमाज राजेन्द्रनगर तथा श्रीमति सरला चौधरी सम्पादिका "वेद सविता" ने भाग लिया और अपने विचार रखे।

संयोजक महोदय ने संस्कृत के महत्व, उसके वर्तमान में स्कूलो के पाठ्यक्रम से हटाए जाने तथा इसके विरुद्ध उच्चतम् न्यायालय में दायर याचिका १९-७-९४ की सुनवाई की चर्चा करते हुए बताया कि माननीय न्यायाधीशों ने सरकारी वकील को इस सम्बन्ध में, सरकार द्वारा किए गये फैसले पर पुन विचार करने को कहा—

डा० कृष्णलाल ने सरकार द्वारा संस्कृत के प्रति अपनाई जा रही नीति की आलोचना की। डा० महावीर ने संस्कृत वाङ्मय के अतुल भण्डार का वर्णन करते हुए इससे लोगों को परिचित कराने पर बल दिया। डा० शशिप्रभा कुमार ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के तीसरे नियम में हमारे लिए वेद का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना परम धर्म बताया। उन्होंने प्रत्येक आर्य को वेद पढ़ने हेतु संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी। श्रीमती सरला ने आर्य समाजों मे वेद तथा संस्कृत कक्षाए चलाने की बात कही। समारोह के अध्यक्ष डा० शास्त्री ने प्रत्येक आर्य को संस्कृत पढ़ने तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं मे संस्कृत अनिवार्य रूप से पढ़ाने पर बल दिया।

अन्त में श्री वेमराज के द्वारा रखे प्रस्ताव को पारित कर सरकार से संस्कृत को राष्ट्र भाषा का दर्जा देने संस्कृत को विद्यालयों के पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिलाने की मांग की गई।

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा द्वारा संस्कृत दिवस समारोह के सफल आयोजन ने संस्कृत प्रेमियों का उत्साहवर्द्धन किया।

—जगदेव संयोजक

विदेश समाचार

आर्य समाज लंदन, जुलाई-९४ की गतिविधियां

जुलाई ९४ के साप्ताहिक सत्संगों में श्रीमती अरुणा भारद्वाज, श्री चन्द्र-भान एवं श्रीमती शकुन्तला कहेर, श्री अरुण एवं श्रीमती प्रेमा कहेर, श्री सुमन भडारी, श्री राकेश एवं श्रीमती वनिता शर्मा (जर्मनी) और श्रीमती प्रतिभा कृष्ण एवं आर्य परिवार यजमान बने। डा० उमाकांत आचार्य ने इन अवसरों पर सन्ध्या-यज्ञादि सम्पन्न कर यजमानों को आशीर्वाद दिया। इन सत्संगों में सैकड़ों आर्य जनों ने भाग लेकर सत्संग का लाभ उठाया।

भक्ति संगीत के कार्यक्रमों में श्रीमती सावित्री छाबड़ा, कैलाश अशीन, शकुन्तला कोछड़, स्वर्णा शर्मा, प्रेमा कहेर, सुमन चोपड़ा, सुरक्षा शर्मा सचिपाल त्रिलोचन कौर और गीता छाबड़ा (यू. एस. ए.) ने अपने मधुर भजनों से सज्जनों के मनों को आकृष्ट किया।

इसके अतिरिक्त वेदकथा के क्रम में निम्न विद्वज्जनों ने वेदमन्त्रों की सरल व्याख्या की—प्रो० एस. एन. भारद्वाज, डा० उमाकांत आचार्य श्री बलदेव मोहन मेहता, श्री सौराती लाल शर्मा और श्री देवनारायण आर्य, हालैण्ड।

विभिन्न अवसरों पर अनेक विद्वानों के व्याख्यान हुए जो इस प्रकार हैं—

(१) भारत सेवा आश्रम के आदरणीय स्वामी अमरनाथ नंद ने गीता में श्रीकृष्ण का संदेश और उसकी प्रासंगिकता पर अपने विचार देते हुए कहा कि सज्जनों की रक्षा और दुर्जनों का विनाश करने के लिए जो करना पड़े, अवश्य ही करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है और यही गीता का धर्म है। यही गीता का संदेश है।

(२) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की जयन्ती के अवसर पर उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए डा० उमा जी आचार्य ने बताया कि तिलक जी दृढ़ संकल्प के धनी, राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत, त्याग और बलिदान की मूर्ति थे। गणेशोत्सव आदि के माध्यम से लोगों के रग रग में यह भाव भर दिया कि "स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं उसे पाकर ही दम लूंगा।

(३) श्री नवदेव चन्द्र पाल ने अपनी भारतयात्रा का विवरण देते हुए कहा कि भारत की वर्तमान शासन की तथाकथित धर्म निरपेक्षता की नीति भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा की सुदृढ़ता को गहरी चोट पहुंचा रही है, जो कि राष्ट्र के लिए चिन्ता का विषय बना है।

(४) डा० दीपक छाबड़ा (यू. एस. ए.) ने मानवीय- सम्बन्धों को मधुर बनाने के उपायों पर विस्तार से अपने विचार रखे और बताया कि हमें एक दूसरे के विचार और भावना का विचार कर सहानुभूति पूर्वक व्यवहार करना चाहिए। अहंकार और स्वार्थ युक्त व्यवहार से परस्पर कटुता उत्पन्न होगी। प्रेम और त्यागपूर्ण अथवा उदार व्यवहार से परस्पर में मधुरता का वातावरण बन सकता है।

(५) कुमारी दीप्ति पाल ने अपने भाषण में कहा कि इस समय भारत से बाहर इंग्लैंड में जन्मे और पल रहे नवयुवक और नवयुवतियों की स्थिति त्रिशंकु की तरह चिन्तनीय है। न वे पूर्णरूप से भारतीय संस्कृति को धारण कर पा रहे हैं, न पूर्ण रूप से यहां की सभ्यता को। अतः माता-पिता यदि अपने बच्चों को अपनी भाषा, संस्कृति और परम्पराओं को सिखाने का विशेष प्रयास नहीं करेंगे तो आने वाले दिनों में यह नई पीढ़ी अपनी पहचान खो

वर की आवश्यकता

बुद्धिकुल माता की सुपुत्री उम्र २०॥ वर्ष योग्यता इण्टरमीडिएट, ऊंचाई ५ फुट, ४ इन्च, रंग गेहुंआ, सौम्य, सुन्दर कन्या के लिए कार्यरत आर्य परिवार के उपयुक्त वर की आवश्यकता है। लिखें— बौक्स १०५ सार्वदेशिक पत्र ३/५ आसफअली रोड, नई दिल्ली-२

आर्यसमाज चाहता है

आर्य समाज चाहता है—एक परमात्मा की पूजा, वेदों की प्रतिष्ठा, समाज सेवा, देश भक्ति, विश्वमार्यम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः, सब वर्ण तेजवान हों, शिक्षा सुधार, स्त्री जागरण, विश्व बन्धुत्व, सहअस्तित्व, पाखण्ड तथा अन्ध-विश्वास उन्मूलन, यज्ञ प्रचार, गुरुकुल प्रणाली, योगाभ्यास, आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, सबके प्रति सद्भाव व सम्मान, मूर्ति पूजा, तीर्थ व श्राद्धादि अवैदिक बातों का खण्डन, प्रत्येक व्यक्ति को उन्नति का अवसर मिले।

सभी बहनों की रक्षा का संकल्प लें

कानपुर। आर्यसमाज के तत्वावधान में आर्यसमाज कृष्ण गोविन्द नगर में श्रावणी व रक्षा बन्धन का पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान आर्य नेता श्री देवीदास आर्य ने भाषण देते हुए कहा कि आज रक्षाबन्धन पर सभी भाईयों को अपनी बहन की रक्षा के साथ सभी बहनों की रक्षा का संकल्प लेना चाहिये आज भी नारी समाज सबसे अधिक पिछड़ी व पीड़ित है।

समारोह में सर्वश्री बालगोविन्द आर्य, जगन्नाथ शास्त्री, स्वामी प्रज्ञानन्द, दीवानचन्द्र, शिवकुमार बोहरा और श्रीमती कैलाश मोगा ने भी अपने विचार प्रकट किये।

समारोह के अन्त में पुरोहित व बहनों ने उपस्थित लोगों को रक्षा सूत्र बांधे। —बालगोविन्द आर्य, मन्त्री

शंकराचार्य को चुनौती

सुमेरुपीठ काशी के शंकराचार्य कपिलेश्वर सरस्वती ने २२ जुलाई को रायपुर में कहा है कि "वेदपाठ से महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रति-कूल असर पड़ेगा और उनका गर्भाशय प्रभावित हो सकता है और उनके गर्भस्थ शिशु के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ेगा" जो केवल बकवास के सिवाय कुछ नहीं है।

वेद मे 'यथेमां वाचं कल्याणी मावदानी जनेभ्यः" सबको वेद पढ़ने का अधिकार है पूर्व में मैत्रेयी गार्गी आदि विदुषी महिलाएं वेदज्ञ हुई हैं। बढ़ती हुई शिक्षा काल में इस प्रकार का अनर्गल प्रस्ताव करना एवं महिलाओं को उक्त बात कहकर वेद-पाठ से रोकना आदि को, आर्यसमाज हरजेन्द्रनगर कानपुर शंकराचार्य को चुनौती देती है। —(राम जी आर्य, मन्त्री

सकती है।

(६) युवक सांस्कृतिक कार्यक्रम में लोकमान्य तिलक और चन्द्रशेखर आजाद की जयन्ती और मुन्शी प्रेमचन्द, बंकिमचन्द्र चटर्जी, और शरतचन्द्र चटर्जी की पुण्य तिथि मनाई गई। इसमें युवक युवतियों ने विशेष रूप से भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। श्रीमती कैलाश अशीन ने कार्यक्रम का आयोजन और संचालन किया तथा श्रीमती उमिला चोपड़ा और कृष्णा तनेजा ने उनका सहयोग दिया।

(७) श्री आर. एस. श्रीवास्तव, जिला मजिस्ट्रेट, फैजाबाद (जिसमें अयोध्या है) ने ६ दिसम्बर-९२ को घटना का विवरण दिया। और बताया कि वही स्थान और मन्दिर निश्चित रूप से राम की जन्म भूमि है।

आरती, शान्तिपाठ और प्रीतिभोजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मन्त्री
राजेन्द्र चोपड़ा

स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रतियोगिता

हरेन्द्रराय एड० को प्रथम पुरस्कार

नई दिल्ली सार्वदेशिक स्तर पर होने वाली स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रतियोगिता १९९४ में आगरा नगरी (उ० प्र०) के अधिवक्ता श्री हरेन्द्र राय को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। विगत १५ वर्षों से श्री राय आगरा जनपद उ० प्र० में अधिवक्ता व्यवसाय में संलग्न हैं। तथा सामाजिक धार्मिक और पत्रकारिता से भी जुड़े हैं। आर्य समाज व वैदिक धर्म के कार्यों में सदैव तत्परता से जागरूक होकर प्रयत्नशील रहे हैं। आपको पुस्तक प्रकाशन का भी श्रेष्ठ व दीर्घ अनुभव है। आप लगनशील प्रतिभा के व्यक्तित्व वाले हैं।

भक्ति कथा का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर गांधी नगर दिल्ली-३१ में १२-९-९४ से १७-९-९४ तक प्रतिदिन रात्रि में ८ से १० बजे तक वेदों के प्रकाण्ड विद्वान एवं उच्च कोटि के प्रवक्ता महात्मा आर्य भिक्षु जी महाराज के द्वारा "वेद भगवान और भगवान राम" के सम्बन्ध में भक्ति कथा का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः ६-१५ से ८-१५ तक यज्ञ व उपदेश का कार्यक्रम भी रखा गया है। रविवार १८-९-९४ को प्रातः ७-१५ से १ बजे तक यज्ञ भजन उपदेश एवं भण्डारा होगा। अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर धर्म लाभ उठायें।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बेरला का ८वां वार्षिकोत्सव ३० सितम्बर से ९ अक्तूबर तक दो ब्रह्मचारी राजपाल शास्त्री ऋग्वेद के मन्त्रों का यज्ञ करेंगे यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी ब्रह्मानन्द जी वैदिक मिशनरी मुरादाबाद वाले होंगे। जलसा ७-८-९ अक्तूबर को होगा। ओमदत्त वर्मा, ओमप्रकाश प्रेमी, रामपाल ... सत्यवीर सिंह मथुरा के मनोहर उपदेश व भजन सुनने योग्य होंगे। ९ अक्तूबर को यज्ञ की पूर्ण आहुति होगी और पूज्यपाद स्वामी आनन्द बोध जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा समाज मन्दिर की आधार शिला रखेंगे।

सेवक बख्शी राम आर्य वानप्रस्थी
मन्त्री

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजी जा रही है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा पटना के अन्तरंग सदस्य चम्पारण जिला सभा एवं आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान स्वतन्त्रता सेनानी श्री रामवृक्ष लाल आर्य का निधन ८९ वर्ष की उम्र में १९-८-९४ को हो गया वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गये हैं। उनके सुपुत्र श्री जनार्दन प्र० आर्य वर्तमान में आर्य समाज बेतिया के प्रधान हैं। श्रद्धाञ्जलि यज्ञ में इस चम्पारण जिला के कोने-कोने से आये आर्य बन्धुओं द्वारा पं० बी०डी० शास्त्री के आचार्यत्व एवं पं० ध्रुव जी आर्य जिला प्रचारक के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ २ मिनट तक मौन धारण कर शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज मन्दिर समालखा गांव में ११ सितम्बर १९९४ से १८ सितम्बर १९९४ तक आर्य कन्या गुरुकुल नरेला की छात्राओं द्वारा यजुर्वेद पारायण यज्ञ डा० अन्नपूर्णा आचार्या की निरीक्षता में किया जाएगा। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर लाभ प्राप्त करें।

निवेदक
सेवानन्द सरस्वती

उपराज्यपाल द्वारा नारी शिक्षा के प्रसार में आर्यसमाज के योगदान की सराहना

नई दिल्ली १ सितम्बर। दिल्ली के उपराज्यपाल श्री पी० के० दवे ने आज नारी शिक्षा को समाज विकास की अनिवार्य शर्त बताते हुए कहा कि आदर्श समाज की रचना महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के बिना सम्भव नहीं।

उपराज्यपाल आज दक्षिण दिल्ली के देवराज परिसर मे चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर और इससे सम्बद्ध संस्थाओं के वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप मे भाषण कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ये संस्थायें राजधानी के जाने माने समाज सेवी स्व० देवराज चोपरा का जीता जागता स्मारक हैं जहां आधुनिक परिवेश में गुरुकुलीय वातावरण की अनुभूति होती है।

श्री दवे ने कहा कि जीवन मे मुझे सबसे अधिक खुशी तब होती है जब मैं बच्चो के खिले हुए चेहरे देखता हूं। इस आर्य शिक्षण संस्था का प्रदूषण रहित वातावरण और यहां अनाथ बालिकाओं के चहरे पर प्रसन्नता के भाव देखकर मुझे हार्दिक सन्तोष हुआ है।

दिल्ली सरकार के समाज कल्याण मन्त्री सुरेन्द्र पाल रातावाल ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आज भी सार्थक है यह अनुभूति देवराज परिसर में स्थापित संस्थाओं को देखकर होती है।

उपराज्यपाल ने श्री रातावाल ने नारी शिक्षा के प्रसार में आर्य समाज के योगदान की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

श्री रातावाल ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने लीक से हटकर तार्किक मार्ग अपनाने का जो संदेश दिया वह समकालीन जीवन की समस्यायें हल करने मे बहुत सहायक है। उनके बताए रास्ते पर चलकर हम देश में आदर्श शिक्षा प्रणाली का विकास कर सकते हैं।

उपराज्यपाल की पत्नी श्रीमती शान्ता दवे ने जयदेवी चोपरी स्मृति खेल प्रतियोगिता की सफल छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किये।

संस्थाओं के सचिव श्री वीरेश प्रताप चोपड़ा ने देवराज परिसर मे निर्माणाधीन समाज सेवा की प्रवृत्तियों का विवरण दिया। प्रबन्धक श्री सुशील

प्रकाश ने बताया कि चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर मे तीन सौ अनाथ छात्राओं को निवास और शिक्षण की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा आस पास की बस्तियों से अन्य कन्याएं भी यहां शिक्षा ग्रहण करने आती है, जिनमें अधिकतर गरीब परिवारों की है।

छात्रावास के सचिव श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने धन्यवाद दिया।

अधिष्ठाता श्री रघुवंशी ने बताया कि उपराज्यपाल महोदय, मन्त्री जी तथा आगन्तुक अधिकारी वर्गों को यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि पटौदी हाउस दरियागंज स्थित आर्य बालगृह आर्यकन्या सदन की ही यह शाखा है जो कि सन १९१८ से इन बच्चो का निःशुल्क पालन पोषण कर उनकी रुचि अनुसार शिक्षा प्रदान कर यहां की प्रबन्ध समिति इन्हें आज का एक आदर्श नागरिक बनाती चली आ रही है यहां से निकले अनेक बच्चे उच्च पदों पर आसीन है। अच्छा वर एवं घर ढूंढकर यहां की बालिकाओं की शादी भी संस्था द्वारा की जाती है।

विद्यामन्दिर की छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय एवं भक्तिपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम की गणमान्य नागरिकों सहित सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

एच० एल० रघुवंशी
आनरेरी अधिष्ठाता

गुरुकुल विद्यालय विराटनगर

छात्रावास हेतु प्राप्त दान की सूची

श्री विशनचन्द जी सम (दिल्ली)	५१००० ०० रु
श्री रोशनलाल आर्य (सिलीगुड़ी)	५१००० ०० रु
श्री फूलचन्द आर्य (कलकत्ता)	२१००० ०० रु
श्री दीनदयाल जी कलकत्ता)	२१००० ०० रु
श्री आनन्द जी (चण्डीगढ़)	३ ००० ०० रु
श्री फूलचन्द जी अग्रवाल (दिल्ली)	२१००० ०० रु
श्री सीताराम प्रहलादराय अग्रवाल (विराटनगर नेपाल)	१००० ० ०० रु
श्री रतिराम जी शर्मा (सिलीगुड़ी प बंगाल)	११९०० ०० रु
श्री मनसुख जी भाई (जामनगर गुजरात)	१०००० ०० रु
स्वामी श्रीपति सरस्वती आर्य (वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार)	१०००० ०० रु
प छविलाल पोखरेल (धरान नेपाल)	१०००० ०० रु
श्री ऋषि मोहन ऐमी (विराटनगर नेपाल)	१५००० ०० रु
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (नई दिल्ली)	५१०० ०० रु
श्री हर प्रकाश शर्मा (जालन्धर पंजाब)	१०००० ०० रु
(मासिक सहायता)	
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (नई दिल्ली)	१००० ०० रु
स्वामी सर्वानन्द जी महाराज (पंजाब)	५०० ०० रु
महाशय धर्मपाल जी वानप्रस्थ (दिल्ली)	१५० ०० रु

पीताम्बर शर्मा
प्रधानाचार्य
गुरुकुल विद्यालय विराटनगर

तपोवन (देहरादून) का शरदोत्सव ५ अक्तूबर से

देहरादून ५ सितम्बर। वैदिक साधन आश्रम तपोवन (देहरादून) के अब अप्रैल मे होने वाला ग्रीष्मोत्सव और अक्तूबर मे होने वाला शरदोत्सव अब प्रभूत लोकप्रियता प्राप्त कर चुके हैं और इन अवसरों पर आयोजित बृहद् यज्ञों की पूर्णाहुति वाले दिन तो दूरस्थ स्थानो से आगत श्रद्धालुओं का मेला-सा हो जाया करता है। इनमें फुटकर आने वाले यात्रियों के अतिरिक्त दिल्ली आदि नगरों से बड़े-बड़े यात्री समूह विशेष बसों से भी आते हैं।

इस वर्ष का शरदोत्सव ५ अक्तूबर से आरम्भ होकर ९ अक्तूबर को सम्पन्न होगा। योग साधना-शिविर का निर्देशन पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी करेंगे और यज्ञ के ब्रह्मा भी आप ही होंगे। प्रवचनकर्ताओं में गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० के आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार और डा० सत्यव्रत जी राजेश के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

महोत्सव की तैयारियां श्रद्धा और उत्साह के साथ चल रही हैं

देवदत्त बाली मन्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४९/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१५ ६ १९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी,९३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No. U (C) 93 Post in N.D P.S.O o 15,16 9-1994

सुख में शामिल कर लो भाई !

डा० नरेन्द्र कुमार, गाजियाबाद

संस्कार का जीवन मे बहुत महत्व होता है। माता पिता के संस्कार बच्चो पर पडते हैं। हम जैसा चाहें वैसा समाज रच सकते हैं। हम अच्छाई को जीवन मे धारें तो अपना भला तो होगा ही साथ मे समाज का भी भला होगा। आज हमारी शिकायत यही है कि समाज बिगड़ रहा है वातावरण दूषित हो रहा है क्या करें ? कुछ समझ नहीं आता आदि आदि।

आज हम समाज मे जो कुछ भी देख व सुन रहे हैं उसमे हमारी भी भागीदारी है। हमारी अच्छाई या बुराई उस मे कहीं न कहीं जरूर छिपी है। हम स्वय अच्छा नहीं बनेंगे लेकिन दूसरे से अच्छा बनने की अपेक्षा अवश्य करेंगे। क्यो ? हम जैसा स्वय हैं उसमें परिवर्तन लाए बगैर दूसरो से परिवर्तन की आशा करते है। क्या यह सम्भव है ? नहीं।

महर्षि स्वामी दयानन्द कुम्भ मेले मे वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे थे। एक दिन उनकी आत्मा में एक लहर उठी। प्रवचन के बीच ही उनकी आखें चमकने लगी। प्रवचन समाप्त हुआ तो वह सर्व में पुन स्वाहा का नाद कर उठे। जो कुछ पास में था वह सारा बाट दिया। बोले— आवश्यकताए जितनी कम होगी उतना ही मन हलका रहेगा।

आज हमारी आवश्यकताए अत्यन्त आकाश को छूने लगी है। लेकिन उसकी पूर्ति तो नही होगी। होगा क्या ? वही रोना धोना। मानव समाज ईश्वर रीति-रिवाज को हम कोसेंगे।

इस वातावरण में कौन मजे से सो सकता है। एक की नींद दूसरे ने उड़ा दी है। भला ऐसे मे किसे चैन मिलेगा ?

वेद कहता है—'हे मानव ! सुख को पाकर तू इतरा मत। दुख को पाकर घबरा मत।' पर हम थोड़ीसी आपत्ति आने पर हा हा कार कर उठते हैं। चाहते हैं कि हमारा दुख सभी बाट लें।

लेकिन जैसे ही दुख के बादल छट जाते हैं घर परिवार मे सुख की वर्षा होने लगती है त्योंही हमारा उदार हृदय सकुचित हो जाता है। हमारा सुख हम तक ही सीमित रहे यही हमारी इच्छा रहती है।

वाह ! हम भी क्या हैं ? दुख मे दुनिया को भागीदार बनाना चाहते हैं पर सुख को अपने घर मे कैद कर रखना चाहते हैं। क्यो ? कहां गई मानवता? कहा गई नैतिकता ?

यह प्रश्न कौन सुलझाएगा ? वेद कहता है आओ मेरे पास आओ। मैं तुम्हें दुख को बाटने का रास्ता बताता हू। तुम अपना सुख दूसरों मे बाट दो तो तुम्हारा सुख सार्वजनिक हो जाएगा तुम्हें अपार प्रसन्नता होगी। दुख गायब हो जाएगा।

जिस रोटी को तुम अकेले खाकर नहीं अघाते थे अब उसी को जब दूसरा खा रहा है तब तुम क्या रहे हो प्रसन्न हो रहे हो क्यों ? क्योंकि तुमने अपने सुख को दूसरों की झोली मे डाल दिया है।

भावारिकता के तार में हम सभी झुलस रहे हैं। हर आदमी बीमार है। कोई शरीर से है तो कोई मन से। मन और शरीर से बीमार हम रोगियों का भला केवल तभी होगा जब हम दूसरो को अधिक से अधिक से देने और उनसे कम से कम लगे।

पर दें क्या ? हम दूसरो को दुख भी दे सकते हैं। लेकिन नही, दुख न दो। जब हमारे यहा कोई अतिथि आता है तो हम उसे देख मानकर अच्छी से अच्छी भेट देते हैं इसलिए हम देना ही है तो हम क्यो न दूसरे को अपने सुख का एक अश दे दें।

करना क्या होगा ? यही कि हम अपने सुख मे दूसरो को भी शामिल करें। यह होगा कब ? जब हम संस्कारवान होंगे। आइए, संस्कारवान बनने का विचार पक्का करें। ताकि हम सब सुख के सागर में गोता लगा सकें। इस सुख में परमात्मा को अवश्य शामिल करें। उसे भूले तो गड़बड़ होगी। वही सबसे निकट है। निकट को भूलकर सफलता नहीं मिलती। भगवान को याद रखो।

[illegible] पर्व समारोहपूर्वक [illegible]

देश तथा विदेश की समस्त आर्य समाजों मे वेदप्रचार सप्ताह तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञो का आयोजन किया गया तथा वैदिक विद्वानों ने अपनी अमृतमयी वाणी से श्रोताओ को लाभान्वित किया। सभी आर्य समाजो मे श्रावणी पर्व के अवसर पर नवीन यज्ञोपवीत धारण किये गये तथा हैदराबाद सत्याग्रह के शहीदो को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व के अवसर पर योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज के गुणो का बखान किया गया तथा उनके गुणो को धारण करने की अपील की गई।

बहुत बडी सख्या मे उक्त समारोह मनाने के समाचार निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं अत स्थानाभाव के कारण आर्य समाजों के नाम ही प्रकाशित किये जा रहे हैं।

आर्य समाज मन्दिर सगरूर आर्य समाज बम्बई, आर्य समाज लातूर, आर्य समाज नेमदार गज नवादा, आर्य समाज पिपरी पुण, आर्य समाज चिरनी पोखर आर्य समाज बलिया, आर्य समाज [illegible], आर्य समाज मन्दिर मागल राया दिल्ली आर्य समाज आरा, आर्य समाज महाराजपुर महिला आर्य समाज महाराजपुर आर्य समाज सुन्दरनगर कालोनी (हि० प्र०) आर्य समाज देहरादून आर्य समाज फतहनगर, आर्य समाज सनवाड आर्य समाज राजनगर गाजियाबाद आर्यसमाज [illegible] पहाडगज दिल्ली आर्यसमाज सुल्तानपुर पट्टी [illegible] कन्या सी०उ०मा० विद्यालय आबूरोड राज०, आर्य समाज सूरजमल बिहार दिल्ली, आर्य समाज सरदार पटेल मार्ग खलासी लाइन सहारनपुर गुरुकुल सूपा गुरुकुल कागड़ी हरिद्वार, आर्य समाज देवबन्द आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली, श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर, आर्यसमाज एव दयानन्द आर्य विद्यालय अकोला, आर्य समाज कछोलो चम्पारण जिला आर्य सभा, आर्य समाज ग्रेटर कैलाश दिल्ली, महर्षि दयानन्द सस्कृत गुरुकुल गाजियाबाद, आर्य समाज माडल टाउन लुधियाना, आर्य समाज हल्द्वानी, आर्य समाज चौक प्रयाग, आर्य समाज सरस्वती बिहार दिल्ली।

नवीन आर्य समाज की स्थापना

मुरैना आर्य समाज के उपमन्त्री व 'दयानन्द प्रकाश' समाचार पत्र के प्रधान सम्पादक श्री जगदीश जी भारद्वाज के विशेष प्रयत्नों से दिनाक १२ अगस्त ९४ को मुरना जिले के ब्लाक पहाडगढ मे स्थित आदिवासी ग्राम 'भरा सेदाई' मे एक नवीन आर्य समाज की स्थापना की गई। स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ। नव आर्य समाज की कार्यकारिणी मे प्रधान श्री उमेश भारद्वाज मन्त्री श्रीचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष मदन आर्य तथा प्रतिनिधि श्री अमरीश भारद्वाज है। अब तक ७० से अधिक आदिवासी आर्य समाज की सदस्यता ले चुके हैं।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिकआर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३६ अंक ३३] | दयानन्दाब्द १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९८ | आश्विन कृ० ५ सं० २०५४ २५ सितम्बर १९९७

नेपाल व सिक्किम सहित पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र को ईसाई बनाने की गहरी साजिश

भारत के विरुद्ध मिशनरियों और इसलामी कट्टर पंथियों में गठजोड़

नई दिल्ली, १७ सितम्बर। नेपाल में ईसाई मिशनरियों का प्रभाव इस कदर बढ़ा है कि शाही गुप्तचर सेवा, 'विशेष प्रहरी' ने सरकार को दी गई रिपोर्ट में चिन्ता व्यक्त की है कि अगर इन पर रोक न लगी तो आने वाले दशकों में नेपाल के जनसांख्यकीय स्वरूप में बुनियादी परिवर्तन आ सकते हैं। ईसाई मिशनरियों ने अपने कार्य की जो रूपरेखा बनाई है उसमें नेपाल और सिक्किम सहित भारत के पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र को ईसाई बनाने का लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मिशनरियों के पास बेशुमार दौलत है।

काठमांडो में न सिर्फ ईसाई मिशनरियों बल्कि पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई एस आई ईरानी गुप्तचर सेवा और अमेरिकी खुफिया संगठन सी आई ए का भी गढ़ है। यह भी पता चला है कि बैंक आफ क्रेडिट एण्ड कामर्स इंटरनेशनल के भंडाफोड़ के बाद अब उसका काम नेपाल और पाकिस्तान के कुछ बैंक करने लगे हैं। भारत के मुद्दे पर इसलामी कट्टरपन्थियों और मिशनरियों का रुख एक ही है ये दोनों ताकतें पूर्वोत्तर क्षेत्र में आग लगाए रखना चाहती हैं इनका मानना है कि भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में लगातार आतंकवादी हरकतों और गड़बड़ से गरीबी बढ़ेगी लोग राष्ट्र की

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती अस्वस्थ

आर्य जगत को यह सूचित किया जाता है कि सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती गत एक सप्ताह से अस्वस्थ चल रहे हैं, दिल्ली के प्रसिद्ध हृदयरोग विशेषज्ञ बत्रा हस्पताल में उनका उपचार चल रहा है। बत्रा हस्पताल के मालिक श्री कमवीर बत्रा स्वयं प्रतिदिन अपनी निगरानी में स्वामी जी की देखभाल करा रहे हैं। परमपिता परमात्मा से हमारी प्रार्थना है कि स्वामी जी शीघ्र स्वस्थ होकर सभा कार्यों का संचालन करने में समर्थ हों।

सम्पादक

आर्य साधु सम्मेलन द्वारा महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों को अपनाने का संकल्प

महर्षि दयानन्द सिद्धांतरक्षिणी सभा की ओर से आर्य साधु सम्मेलन का आयोजन १८ सितम्बर १९९४ को आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली में श्री सुमेधानन्द जी महाराज (जयपुर) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के समापन पर साधुओं ने आर्य संस्कृति के प्रचार गोहत्याबन्दी तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों की रक्षा का संकल्प लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य समाज के साधुओं से निवेदन किया कि महर्षि दयानन्द के आदर्शों को पूरा करने के लिए गोहत्याबन्दी राष्ट्रभाषा हिन्दी को समुचित दर्जा दिलाने और हैदराबाद के अलकबीर बूचड़खाने को बन्द कराने के लिए, आर्य समाजियों को सदैव और बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने कहा हमने दयानन्द एंग्लो वैदिक (डी० ए० वी०) की प्रबन्धक कमेटी को सुझाव दिया था कि डी०ए०वी० की जगह हिन्दी में दयानन्द आर्य वैदिक लिखें, लेकिन कमेटी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा जिस दिन डी०ए०वी० वालों की समझ में हमारी सलाह आ जायेगी उस दिन इसके कालेज व विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे करोड़ों छात्रों का कल्याण और राष्ट्र का उद्धार होगा।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

मुस्लिमों का खिलाफत आन्दोलन एक समस्या

विश्व के लगभग ८००० आठ सहस्र मुस्लिमो का एक सम्मेलन ७ अगस्त को "खिलाफत-आन्दोलन" के नाम से लन्दन मे सम्पन्न हुआ। समस्त विश्व के मुस्लिमो की दुर्दशा पर रोना रोया गया।

कुछ कट्टर मुल्लाओं ने यहां तक आवाज लगाई कि सारे जहान को मुस्लिम जमीन को आजाद करवा कर उसे एक शासक के आधीन किया जाय अन्ततः खिलाफत आन्दोलन के नाम पर हजारों फिरकापरस्त मुस्लिमों ने सर्वसम्मति से पांच निर्णय लिए जो कि इस प्रकार से लिए गए।

१—सारे विश्व को इस्लाम के झण्डे के नीचे इस्लामिक राज्य की स्थापना करना है।

२—कुरान के नियमानुसार प्रत्येक मुसलमान की समस्याओं का समाधान करना।

३—खुदा की इच्छानुसार गैर मुस्लिम को मुसलमान बनाना।

४—इजराइल का सर्वनाश तथा संयुक्त राज्य संघ-विश्व बैंक तथा अरब लीग जैसी संस्थाओं की समाप्ति करना है।

इस प्रकार समय समय पर आजादी के पश्चात कुछ गर्म गर्म नारे दिए हो जाते हैं। चौक के माध्य से इस्लाम के विरोधियों को धमकियां दी जाती हैं। यह कोई नयी करामात नहीं हैं आजादी से पूर्व के नारे जो शान्त थे पुनः साम्प्रदायिकता के नाम से उभारा जा रहा है इन उपरोक्त घोषणाओं के लिए क्या क्या व्यवस्थायें वहां पर होनी चाहिए। मुस्लिम शासक के बनने पर शासक कौन बनेगा। उसकी क्या योग्यतायें होंगी।

आश्चर्य इस बात का है कि अपने पड़ोसी मुस्लिम देशों की कई कट्टर मुस्लिम संस्थायें पसन्द नहीं करती हैं, मुस्लिम देशों से घिरे इजराइल के सम्बन्ध जो काफी सुधार पर हैं वह इन घोषणाओं को कैसे पसन्द करेंगे। इजराइल इन घोषणाओं से अवश्य चिन्तित होगा।

कुल मिलाकर इजराइल के विरुद्ध मुस्लिम देशों की तोपें ठण्डी पड़ती जा रही हैं। जो कट्टरपन्थी मुस्लिमो को बर्दाश्त नहीं हो पा रहा है। अतः इन नई घोषणाओं से पुनः वातावरण मे गर्माहट पैदा हो जाएगी।

इस सम्मेलन से पूर्व लन्दन मे यहूदियों के स्थान पर बम विस्फोट हो चुका है कई खुफिया एजेन्सियां खिलाफत आन्दोलन के नाम पर इस सम्मेलन को गैर-मुस्लिमों का कहकर यहूदियों के खिलाफ चलाए जा रहे षडयन्त्र की एक कड़ी बताती है।

सार्व. सभा के वरिष्ठ कानूनी सलाहकार श्री सोमनाथ मरवाह पूर्णतः स्वस्थ

नई दिल्ली १८ सितम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ वेता तथा पूर्व कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह पिछले कुछ दिनो से दमा रोग से ग्रस्त थे। अचानक उनका स्वास्थ्य अधिक खराब हो जाने के कारण उन्हें दिल्ली के एक नर्सिंग होम मे दाखिल करवाया गया। श्री मरवाह लगभग १० दिन नर्सिंग होम में रहने के बाद पूर्णतः स्वस्थ होकर सकुशल घर वापिस लौट आये हैं। वैसे डाक्टरों के अनुसार उन्हें अभी अधिक आराम करने की सलाह दी गयी है।

हस्पताल से लौटने के तुरन्त बाद श्री मरवाह जी सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को अपना हास्पिटल में देखने गये।

उनके अनुसार इस आन्दोलन की शुरुआत इस्लामिक कट्टरपन में हो रही बढ़ोत्तरी का ही परिणाम है।

भारत की कांग्रेस सरकार के सौभाग्य से इस सम्मेलन में 'कश्मीर' की चर्चा आयोजक करनी भूल गये। वैसे विश्व की सारी मुस्लिम संस्थायें हिन्दुस्तान को जम्मू कश्मीर में अवध बताती आई हैं। इस सम्मेलन में यदि कश्मीर की चर्चा होती तो यह प्रलाप फिर किया जाता तो भारत की सरकार कट्टरपंथी मुल्ला मुस्लिमों के चरण चुम्बन की स्थिति में आ जाती।

लन्दन में हुए इस मुस्लिम सम्मेलन से भारत सरकार को अपनी मुस्लिम नीति को फिर से स्पष्टतया देख लेना चाहिए। अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब कट्टर पन्थी मुस्लिम हिन्दुस्तान को 'अखिल विश्व मुस्लिम राज्य'' बनाने में तत्पर होंगे। परिणामतः आजादी से पूर्व का खिलाफत आन्दोलन का स्वरूप ही बनकर रहेगा।

खिलाफत आन्दोलन का स्वरूप कितना घिनौना था जिस पर भारत के नक्शे का विभाजन हुआ। करोड़ों इंसान मारे गये और अरबों की सम्पत्ति नष्ट हुई।

आज पुनः विदेशों में खिलाफत आन्दोलन के नाम से विष वमन किया जा रहा है। यह मात्र शोशा नहीं है जो समय समय पर छोड़ा जाता रहता है आज पुनः फतवे पर फतवे दिए जा रहे हैं। चौक माध्य पर इस्लाम के विरोधियों को धमकियां दी जा रही हैं।

आज उपरोक्त पांच घोषणाओं पर दृष्टिपात करें और पुनः विचार करें कि इन घोषणाओं से आपसी सद्भाव से दूर हटकर मानवता विनाश के कगार पर खड़ी होगी और विश्व ज्वालामुखी पर धू-धू कर जल रहा होगा।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि आज का मुस्लिम जगत गम्भीरता पूर्वक विचार करें कि मुस्लिम जगत की भी अपनी २ समस्यायें हैं रबिन अराफात शान्ति समझौता योजना द्वारा फिलस्तीन की समस्या भी ठण्डी पड़ती जा रही है। जोर्डन इजराइल का समझौता बरसों बाद सीमा खुली है। सीरिया के साथ भी समझौते की उम्मीद है।

कट्टरपन्थी मुस्लिमों का ध्यान इधर नहीं है उन्हें केवल मुस्लिम कट्टरता बाद पर ही दुनिया का इस्लाम दिखाई पड़ता दौड़ रहा है। मुस्लिम परस्त विश्व आज की मिटती मानवता को देखें और फिर मुस्लिम संघ का नारा दें।

आर्य गुरुकुल संस्कृत विद्यालय

आर्य गुरुकुल संगठन के सदस्य बनें

आर्य गुरुकुल गोष्ठी, हरिद्वार मे आर्य गुरुकुल संगठन के निर्माण का निश्चय किया गया था। इस संगठन के संविधान के निर्माण के लिए एक उपसमिति बनाई गयी थी। उस समिति ने ११ जून को अपनी बैठक मे संविधान का जो प्रारूप बनाया था, उसे सार्वदेशिक विद्यार्य सभा ने अपनी ३-९-९४ की बैठक में स्वीकार कर लिया है तथा सार्व० सभा के प्रधान जी ने भी इसकी पुष्टि कर दी है। सभी गुरुकुलो को इस संविधान की प्रतिलिपि भेजकर उन्हें इस संगठन के सदस्य बनने का अनुरोध किया है। मेरी सभी गुरुकुलों के अधिकारियों से यथाशीघ्र इस संगठन के सदस्य बनने का अनुरोध है। साथ ही सभी प्रतिनिधि सभाओ और विद्यार्य सभाओं तथा आर्य समाजों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र के गुरुकुलो को सार्व० आर्य गुरुकुल संगठन का सदस्य बनने की प्रेरणा देकर उन्हें सदस्य बनाएं।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्व० सभा

एक अनोखी प्रतियोगिता

घर बैठे विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एवं उस पर आधारित प्रश्न पत्र प्राप्त करें और छः मास के भीतर उत्तर भेजकर निम्न पुरस्कार प्राप्त करें।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
३०००) रु०	२०००) रु०	१०००) रु०

पूर्ण विवरण प्रश्न-पत्र एवं प्रवेश शुल्क आदि के लिए मात्र तीस रुपए मनीआर्डर द्वारा—रजिस्ट्रार परीक्षा विभाग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०), ३/५, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ को भेजें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-मन्त्री

हिन्दी की द्रोपदी दुःशासन के चंगुल में

बुद्धिप्रकाश आर्य महोपदेशक रामगंज अजमेर

१४ सितम्बर १९४९ को संविधान ने हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकृति दी थी तब से लेकर आज तक हिन्दी भाषा, हिन्दी दिवसों, भाषणों, राजनीतिक विरोधों तथा लज्जा को तिलांजलि दे देने वाले नेताओं व मन्त्रियों के आश्वासनों पर ही सिसकियां भर रही हैं। यह भी कहना अतिशयोक्ति नहीं कि आज हिन्दी भाषा उन लोगों की उपेक्षा का शिकार हो रही है जो हिन्दी की वकालत भाषणों और लेखों में तो करते हैं किन्तु पत्र-व्यवहार और वार्तालाप अंग्रेजी में करते हैं बच्चों को इंगलिश माध्यम के विद्यालयों में भेजते हैं, उनसे गुडमार्निग, गुडनून, टाटा, डैडी, अंकिल तथा थैंक्यू आदि शब्द सुनकर लज्जाविहीन हर्ष का अनुभव करते हैं। सर्वेक्षण किया जाये तो ऐसे तथाकथित हिन्दी प्रेमियों की संख्या २९-१० प्रतिशत तक होगी। इनमें से अधिकांश डाक्टर, इन्जीनियर, प्राध्यापक और वह वर्ग है जिनकी महत्वाकांक्षायें अपने बच्चों को प्रशासनिक सेवाओं में ले जाने के लिये अटकी रहती हैं। इधर सरकार अगर हिन्दी भाषा को प्रोत्साहित करने की घोषणा करती या योजना बनाती है तो एक दम मुट्ठीभर भिन्न सन्तोषी अंग्रेजी में भी अखबारों के माध्यम से उबल पड़ते हैं और "हिन्दी वालों की विजय" शीर्षक से अपनी खीज मिटाने की चेष्टा करते हैं। तुष्टीकरण की नीतियां जो हिन्दी के गले की फांसी बनी हुई है जिसका सारा दोष वोट की राष्ट्र मारक राजनीति को दिया जाना चाहिये। कुर्सी पर जमकर बैठे अधिकारी, नेता, मन्त्री आदि सभी के सामने एक ही चिन्ता है जो उन्हें व्यथित बना रही है वह यह है कि "राष्ट्र जाये भाड़ में, कुर्सी बनी रहे। अथवा प्राण जाये कुर्सी नाहि जाई" इसी स्वार्थ भरी सोच ने हिन्दी भाषा की दुर्गति बना रखी है जिसे हम सभी जाने अनजाने में कह देते रहते हैं क्योंकि हमारी स्मृति इतनी कमजोर हो गई है कि कल हमारे गाल पर किसने थप्पड़ मारा था? किसने हमारी अस्मिता को लूटा था, याद ही नहीं है। प्रजातन्त्र का ही ऐसा वीभत्स रूप बन चुका है। किसे दोष दिया जाये?

आज सभी यह मानते और जानते हैं कि हिन्दी का मुकाबला कोई अन्य भाषा नहीं कर सकती है उसकी वैज्ञानिकता तथा लिपि सौष्ठव अद्वितीय है उसमें अमृत की संजीवनी शक्ति है फिर भी हम "विनाश काले विपरीत बुद्धि" जैसे अभिशाप के कारण इस संजीवनी बूटी का पान न कर पाने का अभिशाप ओढ़े हुये हैं। हिन्दी भाषा की दुर्दशा इन दिनों कुछ ज्यादा ही हो रही है जब कि स्थिति यह है कि हिन्दी भाषा ने अपनी चमत्कारिणी शक्ति से समूचे भारत की आत्मा पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। दक्षिण भारत भी इस सत्यता का अपवाद नहीं रह गया है वहां हिन्दी फिल्मों के गीत, हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने जो लोकप्रियता अर्जित की है वह अभूतपूर्व है। दक्षिण भारत हिन्दू संस्कृति का उद्‌गम स्थल है। शंकराचार्य जैसे वैदिक धर्म (हिन्दू संस्कृति) के संस्थापक की दक्षिण भारत भूमि कर्मस्थली रही है फिर वहां हिन्दी भाषा के न पनपने तथा हिन्दी भाषा भाषी नेता, अभिनेता वहां जाकर प्रसिद्ध तीर्थ मन्दिरों में अपनी आस्था प्रकट करते हैं जिससे उनका सम्पर्क सूत्र दृढ़ तर होता रहा है फिर वहां हिन्दी की समस्या का रोना रोने वालों की या तो कूपमण्डूकता कही जाये अथवा उनके अन्दर छिपी हुई कूटनीति की तुष्टीकरण का विषघूंट पीकर स्वयं व राष्ट्र के पीठ में छुरा घोपने को मूर्खता कर रही है और करती रही है। सच तो यह है कि ऐसे इतलाब व्यक्ति न तो हिन्दी से प्रेम रखते हैं और न राष्ट्र से।

जहां तक हिन्दी की अस्मिता का प्रश्न है वह तो आज द्रोपदी की भांति तुष्टीकरण, कूटनीति तथा वोटार्थी राजनीति के क्रूर पंजों में उलझकर रह गई है। कोई सुदर्शन चक्रधारी कृष्ण ही उसका उद्धार कर सकता है जिसका अब जनता जनार्दन की उद्‌बुद्ध चेतना के रूप में अवतरण हो चुका है आवश्यकता नन्द व यशोदा बनकर उसे कालजयी बनाने की है। तभी प्रजातन्त्र पर लगी अधर्म, भ्रष्टाचार तथा तुष्टीकरण की आग भी समाप्त हो सकेगी।

इन सब आशा निराशा भरे तथ्यों से ऊपर उठने की भी आज महती आवश्यकता है। यह आवश्यकता है संकल्प शक्ति संजोने की, करनी-कथनी में अन्तर रखने वालों को कुर्सियों से उतार फेंकने की तथा राष्ट्रीय संविधान में विद्यमान पक्षपातपूर्ण विसंगतियों को हटाकर समान नियम निर्धारित करने की तभी राष्ट्र भाषा, हिन्दी राष्ट्र की सम्राज्ञी एक रात में बन सकती हैं जिस प्रकार रूसी और चीनी भाषायें स्वतन्त्रता के तुरन्त बाद देश की राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन हो गई थीं। वहां कहीं से किसी विरोधी स्वर ने उन भाषाओं की पवित्रता को कलंकित नहीं किया और न ऐसा करने का किसी ने साहस किया आखिर भारत में ही यह गतिरोध क्यों? मुसलमान वहां भी हैं और भारत में भी संविधान वहां भी है और यहां भी। अधिकार कर्त्तव्यों की सुनिश्चितता चीन व रूस में भी है और भारतीय संविधान में भी। फिर क्या कारण है कि हिन्दी दुःशासनी अभिशाप से उत्पीड़ित हैं, अलगाववाद की ज्वाला में जल रही है? इस तथ्य की सूक्ष्मता से विवेचना की जाये तो स्पष्ट हो जाता है कि यह सारा दोष संविधान निर्माताओं की निर्बलता, आत्महीनता तथा संकल्प शून्यता को दिया जा सकता है। जिसके पीछे वह भय छिपा हुआ है जो उनकी कुर्सियों को धूल धूसरित कर सकता है। हिन्दुओं में व्याप्त जाति व वर्णवाद, धार्मिक विविधता तथा उदारता का अतिशयवाद भी एक बड़ी दुर्बलता है जिसका लाभ उन लोगों को दिया जा रहा है जो सिर से पैर तक धार्मिक उन्माद लिये हुये हैं और भारत को भारत बने रहना पसन्द नहीं करते हैं, तिरंगा झंडा और वन्देमातरम् उनकी धमनी नसों के खून को पानी बना डालता है। फिर भला हिन्दी राष्ट्र भाषा बनकर राष्ट्र में ओजस्विता भर दें इसे वे कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं? वे तो शासकों के माई-बाप बने हुये हैं उन्हें मन्दिर तोड़ने का अधिकार है उनकी इस निरंकुशता पर कोई चूं चपड़ तक नहीं करता और हम यदि एक

(शेष पृष्ठ १० पर)

'लज्जा' नामक उपन्यास की तसलीमा नसरीन

डा० महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज-बरेली

मयमन सिंह, बांगला देश में २५ अगस्त १९६२ को जन्मी तसलीमा नसरीन ने काव्य लेखन से साहित्यिक जीवन का आरम्भ किया। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में स्तम्भ लेखन तथा बेबाक विचारों के कारण पर्याप्त लोकप्रियता इन्हें प्राप्त हुई है। यह आश्चर्य का विषय है कि चिकित्सक होते हुए भी तसलीमा का साहित्यिक रुझान तथा कुरीतियों के निवारण का प्रयास सर्वथा स्तुत्य है। मयमनसिंह मेडिकल कालेज से एम०बी०बी० एस० कर तसलीमा ढाका मेडिकल कालेज में सरकारी डा० नियुक्त हुईं, किन्तु "लज्जा" नामक उपन्यास के प्रकाशन से, इस उपन्यास को प्रतिबन्धित किया गया। पासपोर्ट जब्त होने के बाद तसलीमा ने नौकरी छोड़ दी, किन्तु तदपि अपने पथ से विचलित न हुईं।

तसलीमा की कृतियों में निर्वासित बाहिरे अन्तरे १९८९ आमार किछु जाय आसे ना (१९९०), अतले अंतरीन (१९९०), बालिकार गोल्ला छूट (१९९२) तथा निर्वाचित कविता (१९९३) काव्य संग्रह हैं। अपरपक्ष (१९९२)तथा लज्जा(१९९३)उनके सुप्रसिद्ध उपन्यास हैं 'फेरा'नामक उपन्यास शीघ्र प्रकाश्य है। हाल ही प्रकाशित 'जेनो जाओ जेनो जाओ' नामक कृति भी प्रतिबन्धित हुई है। तसलीमा की ये समस्त कृतियां बंगला में निबद्ध हैं, "निर्वाचित कालम (९२) तथा 'नष्टमेयेर नष्ट गद्य'' (९३) में चुने हुए स्तम्भ लेख निबद्ध हैं। बांगला साहित्य जगत में सुविख्यात 'आनन्द पुरस्कार (९२) से सम्मानित तसलीमा नसरीन मूलत: नारीवादी लेखिका होने के साथ एक निर्भीक विचारक भी हैं जो नारी स्वाधीनता की ही नहीं मानव जाति की स्वाधीनता की पक्षधर हैं।

कट्टरवादी साम्प्रदायिक ताकतों के विरुद्ध लिखा गया 'लज्जा'' नामक उपन्यास हिन्दू विरोधी साम्प्रदायिकता पर प्रहार करता है। 'लज्जा' की मारक शक्ति ने मुस्लिम तथा हिन्दू साम्प्रदायिकता पर इतनी सख्ती से प्रहार किया है कि साम्प्रदायिकता की परतें उघड़ कर अपने असली घृणास्पद रूप में दीखने लगी और लज्जा के आयने में अपनी दानवी मानवी तस्वीर देखकर चीख पड़ी।

'लज्जा'' नामक उपन्यास का आरम्भ ६ दिसम्बर १९९२ को बाबरी मस्जिद तोड़े जाने पर बांगलादेश के मुस्लिम-सम्प्रदाय की आक्रामक प्रतिक्रिया से होता है। इधर अयोध्या में बाबरी मस्जिद के ढांचे का विध्वंस हुआ, जिसकी प्रतिक्रिया स्वरूप बांगला देश के मुसलमान अपने निर्दोष हिन्दू भाइयों पर टूट पड़े और उनके धम स्थलों को नष्ट कर दिया। तसलीमा के अनुसार 'भारत कोई विच्छिन्न जम्बू द्वीप नहीं' भारत मे यदि विस्फोट का जन्म होता है तो उसका दर्द केवल भारत को ही नहीं भोगना पड़ेगा, बल्कि वह दर्द समूची दुनिया में कम से कम पड़ोसी देशों में तो सबसे पहले फैल जाएगा।'' वस्तुत: धर्म और राजनीति के अनुचित परिणयन से ही समाज में बर्बर हिंसा का जन्म होता है।

कट्टरतावाद का अभिशाप न केवल मुट्ठीभर लोगों का अपितु बहुसंख्यकों का जीवन भी प्रदूषित करता है। 'लज्जा" नामक उपन्यास के सुरंजन और परवीन प्रेमी-प्रेमिका हैं, किन्तु मजहबी दीवार के कारण परिणय सूत्र में नहीं बंध सके, यही कारण है कि कुंठित सुरंजन को आज देखते हुए बहुत दुखी होती है। वह विचार करता है कि 'पूरे देश में हिन्दुओं के घर जले हैं, इसी तरह की लपटों में, क्या सिर्फ घर द्वार और मन्दिर ही जले हैं? मनुष्य का मन नहीं जला?" बर्बरतामयी हिंसा से विमुक्ति पाने हेतु सुरंजन ...ताजी से 'इंडिया' चलने का प्रस्ताव रखता है जिस पर सुधामय पुत्र को समझाते हुए कहते हैं "क्या अपना देश छोड़कर भागने में लज्जा नहीं आती? ...स पर सुरंजन अपनी देशभक्ति को ताक बताते हुए समझाता है' देश को ओढ़कर पानी पियेंगे पिताजी? देश ने आपको क्या दिया है? क्या दे रहा है मुझे? "लज्जा'' नामक उपन्यास में सुरंजन के संवाद तार्किकता, से परिपूर्ण हैं," इस देश को जितना प्यार करूंगा, जितना अपना सोचूंगा, वह देश हमें उतना ही दुख पहुंचायेगा। मनुष्य को जितना प्यार करूंगा, उतना ही दरकिनार कर दिया जाऊंगा। इनका कोई भरोसा नहीं है 'पिताजी' उपन्यास का अन्त दुखान्त में होता है, जो अनेक प्रश्नों को उजागर कर मानवीय चेतना को विचार मग्न कर देता है। 'लज्जा' नामक उपन्यास के सभी पात्र प्रतीकात्मक हैं जो अन्याय की पर्तों से ढके हुए सुलगते अंगारे हैं।

मौत के फतवे ऐसे प्रश्न चिन्ह हैं जो सोचने को विवश करते हैं कि क्या व्यक्ति की मृत्यु से विचारों की मृत्यु हो सकती है? मृत्यु शरीर की हो सकती है 'सत्य' की नहीं।

'लज्जा' की लेखिका तसलीमा नसरीन के विरुद्ध मर्कजे-अहले-सुन्नत बरेली शरीफ के मुखपत्र उर्दू मासिक 'आला हजरत' ने उन्हें मृत्यु दंड देने की मांग कर स्वयं को कट्टरवादी घोषित किया है। चूंकि तसलीमा ने इस्लाम की निंदा की है अत: वे इस्लाम विधि के अनुसार उन्हें मृत्यु दंड मिलना न्यायोचित है, ऐसा सम्पादकीय में मौलाना मुहम्मद एजाज अंजुम ने लिखा है। उर्दू मासिक 'आला-हजरत' में तसलीमा नसरीन के प्रेस साक्षात्कार के कुछ उद्धरण देते हुए लिखा है" जुबान दराजी करते हुए बे-बाक अंदाज में इस बदजात फाहिशा (दुष्ट पतित) ने कहा है कि मैं खुदा की मुंकिर (नास्तिक) हूं। मुझे ऐसी मजहबी तालीमात (धार्मिक शिक्षा) से सख्त नफरत है जो हमेशा औरतों के खिलाफ हुई है। मजहबी किताबें पुरानी हो चुकीं, इसलिए उन्हें म्यूजियम में जिगवा देना चाहिए। कुरआन और दूसरी मजहबी किताबों ने काबिले-नफरत कवानीन से (नफरत भरे नियमों से) ख्वातीन (नारियों) को जंजीर मे जकड़ने की कोशिश की है।'

यह सुनिश्चित नहीं कि तसलीमा ने ऐसा कुछ कहा, अथवा नहीं, किन्तु यह निर्विवाद है कि कट्टरवाद के विरुद्ध 'लज्जा' नामक उपन्यास के माध्यम से छेड़ी गई उनकी जेहाद कट्टरपंथियों को रास नहीं आई और उनके जीवन के अधिकार को हनन करने का दुष्प्रयास संचालित किया गया है। किन्तु नसरीन ने आत्मरक्षा हेतु जो विवेक की राह पकड़ी है वह समुचित है। यदि अन्याय होता है, मानवतावाद उसके विरुद्ध आवाज उठाता है, किन्तु जब अन्याय के पक्षधर मौन होकर अन्याय का समर्थन करें, तो दानवता का साम्राज्यवाद समझना चाहिए। वैचारिक अभिव्यक्ति की स्वाधीनता मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है तर्क'' और कुतर्क के मध्य सीमा रेखा निर्धारित करना विवेकियों और बुद्धिजीवियों का प्रथम कर्तव्य है, क्या अब उर्दू में काजी नजरुल इस्लाम जैसी क्रान्तिकारी प्रतिभाओं का अभाव हो गया जो अन्याय सहने की वकालत कर रहे हैं? सत्य का गला घोंटने की वकालत कौन सा मजहब करता है? वह विचारणीय ही नहीं निराकरण की भी अपेक्षा रखता है।

भारतीय उदारतावाद विश्वप्रसिद्ध है यहां की स्मृतियों में बुद्धि प्रदीप की याचना अनन्त काल से की जाती है। तुलसी को किसी ने शोक नायक बताया तो अन्ध विचारधारा ने उन्हें हिन्दू समाज का पथ-भ्रष्टक बता दिया। सभी समस्याओं का समाधान जहां तर्क, बुद्धि और विवेक के आधार पर किया जाता है, वहां मौत के फतवे जारी करना मात्र असहनशीलता और कट्टरता का सूचक है। बिना वाद-विवाद के सच्चाई सम्मुख नहीं आ सकती ऐसे शब्द जो पतन के गर्त में मानवता को ले जायें, वे किसी भी देश और समाज द्वारा प्रयुक्त नहीं होने चाहिए। अन्धानुकरण सदा बुद्धिहीनता का सूचक है, वही पथ अनुकरणीय है जो तर्क संगत तथा मनीषियों द्वारा प्रदर्शित है। अत: तसलीमा नसरीन का तर्कसंगत कार्य निन्दनीय नहीं अपितु प्रेरणास्पद है, जिसमें जन जीवन का कल्याण निहित है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश के चौदह समुल्लासों में पाखण्ड का पर्दाफाश करते हुए सनातन वैदिक धर्म पर आधारित जो ज्ञान का समुद्र सत्यार्थ प्रस्तुत किया है उसकी मुक्त कंठ से सभी बुद्धिजीवियों, मनीषियों व साहित्यकारों ने प्रशंसा की और यह सत्प्रयास भारतीय मनीषा की श्रेष्ठता का सूचक है।

कट्टरपंथियों को समझना चाहिए कि अन्तत: सत्य की विजय और असत्य की पराजय होती है "सत्यमेव जयते" फिर क्यों न अभिव्यक्ति स्वातन्त्र्य का स्वागत करते हुए तसलीमा नसरीन को जीने का अधिकार दिया जाय अस्तु:

(शेष पृष्ठ ६ पर)

मेला चांदापुर-शास्त्रार्थ

महर्षि दयानन्द और शंका समाधान

सत्य धर्म विचार तथा अन्य अनेक विषयों पर विचार

आर्यसमाजियों के लिये विशेष स्वाध्याय हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती से शास्त्रार्थ व शंका-समाधान विषय पर-नयी लेखमाला प्रारम्भ की जा रही है जो पठनीय-मनन के योग्य है। सम्पादक

१९-२० मार्च, १८७७ में (संवत् १९३३ छपे के अनुसार) जिसको मुन्शी बख्तावर सिंह एडीटर आर्यदर्पण ने बोलकर भाषा और उर्दू में वैदिक यन्त्रालय काशी में अपने प्रबन्ध से छापकर प्रकाशित किया था।

धर्मचर्चा ब्रह्मविचार मेला चांदापुर जिसमें बड़े-बड़े विद्वान्

इस धर्मचर्चा में आर्यों की ओर से स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी व मुन्शी इन्द्रमणि जी, ईसाइयों की ओर से पादरी स्काट साहब, पादरी नोबिल साहब, पादरी पार्कर साहब और पादरी जान्सन साहब और मुसलमानों की ओर से मौलवी मोहम्मद कासिम साहब, सैयद अब्दुल मन्सूर साहब विचार के लिये आये थे।

आर्यों ईसाइयों व मुसलमानों की ओर से एक सत्य के निर्णय के लिये इकट्ठे हुए थे, सज्जन पाठकगणों के हितार्थ मुद्रित किया जाता है कि जिससे प्रत्येक मतों का अभिप्राय सब पर प्रकाशित हो जावे। सब सज्जनों को, किसी मत के क्यों न हों, उचित है कि पक्षपात रहित होकर इसको सुहृद्भाव से देखें।

विदित हो कि यह मेला दो दिन रहा। मेले के आरम्भ से पूर्व कई लोगों ने स्वामी जी के समीप आकर कहा कि आर्य मुसलमान मिल के ईसाइयों का खण्डन करें तो अच्छा है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह मेला सत्य और असत्य के निर्णय के लिये किया गया है। इसलिये हम तीनों को उचित है कि पक्षपात छोड़कर प्रीतिपूर्वक सत्य का निश्चय करें। किसी से विरोध करना कदापि योग्य नहीं।

इसके पश्चात विचार का समय नियत किया गया। पादरियों ने कहा कि हम दो दिन से अधिक नहीं ठहर सकते और यही विज्ञापन में भी छापा गया था। इस पर स्वामी जी ने कहा कि हम इस प्रतिज्ञा पर आये थे कि मेला कम से कम पांच और अधिक से अधिक आठ दिन तक रहेगा। क्योंकि इतने दिनों में सब मतों का अभिप्राय अच्छे प्रकार ज्ञात हो सकता है। जब इस पर वे लोग प्रसन्न न हुए तब मुन्शी इन्द्रमणि जी ने कहा कि स्वामी जी! आप निश्चिन्त रहें। सच्चा मत एक दिन में प्रकट हो जावेगा। फिर निम्नलिखित पांच प्रश्नों पर विचार करना सब ने स्वीकार किया।

पहले दिन की सभा

मुन्शी प्यारेलाल साहब ने खड़े होकर सबसे पहले कहा—

'प्रथम ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि जो सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी है। हम लोगों के बड़े भाग्य हैं कि उसने हम सब को ऐसे राज-प्रबन्ध समय में उत्पन्न किया कि जिसमें सब लोग निर्विघ्नता से निर्भय होकर मतमतान्तरों का विचार कर सकते हैं। धन्य है इस आज के दिन को और बड़े भाग्य हैं इस भूमि के कि ऐसे सज्जन पुरुष और ऐसे विद्वान मतमतान्तरों के मानने वाले यहां सुशोभित हुए हैं आशा है कि सब विद्वान अपने-अपने मतों की बातों को कोमल वाणी से कहेंगे कि जिससे सत्य और असत्य का निर्णय होकर मनुष्यों की सत्य मार्ग में प्रवृत्ति हो जावेगी।

इसके पश्चात जब मुसलमानों और ईसाइयों की ओर से पांच-पांच मनुष्य और आर्यों की ओर से स्वामी जी और मुन्शी इन्द्रमणि जी दो ही विचार के लिये नियत किये गये तब मौलवियों और पादरियों ने हठ किया आर्यों की ओर से भी पांच मनुष्य होने चाहिये। इस पर स्वामी जी ने कहा कि आर्यों की ओर से हम दो ही बहुत हैं। तब मौलवियों ने पंडित लक्ष्मण शास्त्री जी का नाम अपने ही आप पादरियों से लिखवाना चाहा। तब स्वामी जी ने उनसे यह कहा कि आप लोगों को अपनी अपनी ओर के मनुष्यों के लिखवाने का अधिकार है, हमारी ओर का कुछ नहीं। और पण्डित से यह कहा कि आप नहीं समझते ये लोग हमारे और तुम्हारे बीच विरोध कराके आप तमाशा देखना चाहते हैं। इस बात के कहने पर भी एक मौलवी ने पंडित जी का हाथ पकड़ के उनसे कहा कि तुम भी अपना नाम लिखवा दो। इनके कहने से क्या होता है। तब पर स्वामी जी ने कहा कि अच्छा जो सब आर्य लोगों की सम्मति हो तो इनका भी नाम लिखवा दो नहीं तो केवल आप लोगों के कहने से इनका नाम नहीं लिखा जावेगा। फिर एक मौलवी उठकर बोले कि सब हिन्दुओं से पूछा जावे कि इन दोनों के नाम लिखाने में सबकी सम्मति है या नहीं। इस पर स्वामी जी ने कहा कि जैसे आपका सिवाय फिर्के सुन्नत जमात के अहलेहदिया आदि फिर्कों से सम्मति करके नहीं बिठलाया और जैसे कि पादरी साहब को रोमन कथोलिक फिर्कों से नियत नहीं किया, ऐसे ही आर्य लोगों में भी बहुत सों की हमारे बिठलाने में सम्मति और बहुत सों की असम्मति होगी। परन्तु आप लोगों को हमारे आप गड़बड़ मचाने का कुछ अधिकार नहीं है। मुन्शी इन्द्रमणि जी ने कहा कि हम सब आर्य लोग वेदादि शास्त्रों को मानते हैं और पण्डित जी भी इन्हीं को मानते हैं। जो किसी का मत आर्य लोगों से वेदादि शास्त्रों के विरुद्ध हो तो चौथा पन्थ नियत करके उसे ही बिठला दीजियेगा।

इन बातों से मौलवियों का यह अभिप्राय था कि ये लोग आपस में झगड़ें तो हम तमाशा देखें। पंडित जी का नाम लिखना आर्य लोगों ने योग्य न समझा। फिर मौलवी लोग नमाज पढ़ने को चले गये और जब लौटकर आये तब उनमें से मौलवी मुहम्मद कासिम साहब ने कहा कि प्रथम मैं एक घण्टे तक उन प्रश्नों के सिवाय और कुछ अपने मत के अनुसार कहना चाहता हूं। उसमें जो किसी को कुछ शंका होगी तो उसका मैं समाधान करूंगा। इसको सबने स्वीकार किया। मौलवी साहब के कथन का तात्पर्य यह है—

मौलवी मुहम्मद कासिम साहब—परमेश्वर की स्तुति के पश्चात् यह कहा कि जिस जिस समय में जो-जो हाकिम हो उसी की सेवा करनी उचित है। जैसे कि इस समय जो गवर्नर है उसी की सेवा करते और उसकी आज्ञा मानते हैं और जिसकी कि आज्ञापालन का समय व्यतीत हो गया न कोई उसकी सेवा करता है और न उसकी आज्ञा को मानता है। और जैसे जब कोई कानून व्यर्थ हो जाता है तो उसके अनुसार कोई नहीं चलता परन्तु जो कानून उसकी जगह नियत किया जाता है उसी के अनुसार सब को चलना होता है तो इन्हीं दृष्टान्तों के समान जो जो अवतार और पैगम्बर पूर्व समय में थे और जो-जो पुस्तकें तोरेत, जबूर, बाइबिल उनके समय में उतरी थीं अब उनके अनुसार न चलना चाहिये। इस समय के सबसे पिछले पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब हैं। इस लिये उनको पैगम्बर मानना चाहिये। और जो ईश्वरवाक्य अर्थात कुरान उनके समय में उतरा है उस पर विश्वास करना चाहिये। और हम श्री राम और श्री कृष्ण आदि और ईसामसीह की निन्दा नहीं करते। क्योंकि वे अपने-अपने समय में अवतार और पैगम्बर थे। परन्तु इस समय तो हजरत मुहम्मद साहब का ही हुकुम चलता है दूसरे का नहीं। जो कोई हमारे मजहब व कुरानशरीफ वा हजरत मुहम्मद साहब को बुरा कहेगा, वह मारे जाने के योग्य है।

पादरी नोबिल साहब—मुहम्मद साहब के पैगम्बर और कुरान के ईश्वरीय वाक्य होने में सन्देह है क्योंकि कुरान में जो-जो बातें लिखी हैं वो-वो बाइबिल की हैं। इसलिये कुरान असल आसमानी पुस्तक नहीं हो सकता। और हजरत ईसामसीह के अवतार होने में कुछ सन्देह नहीं। क्योंकि उसके व्याख्यान से स्पष्ट ज्ञात होता है कि वह सत्यमार्ग बतलाने वाला था। केवल उसके ईमान से ही मनुष्य मुक्ति पा सकता है और उसने चमत्कार भी दिखलाये थे। (क्रमशः)

चुनाव समाचार

आर्य समाज किदवई नगर नई दिल्ली—श्री वेद प्रकाश कुलश्रेष्ठ प्रधान, श्री विनय कुमार शर्मा मन्त्री श्री राजेन्द्र नाथ मलिक कोषाध्यक्ष।

आर्य समाज कैलाश सेंटर कैलाश नई दिल्ली—श्री प्रकाश चन्द्र गुप्ता एड० प्रधान, श्री गणेश दास ग्रोवर मन्त्री श्री अर्जुन नाथ खन्ना कोषाध्यक्ष

आर्य समाज रामपुरा कोटा—श्री कृष्ण शाक्य प्रधान, श्री बनवारी लाल सिंह मन्त्री श्री प्रभुसिंह कोषाध्यक्ष।

आर्य समाज रावतभाटा कोटा—श्रीमती भागवन्ती मेहता प्रधाना, श्री देवेन्द्र कुमार मन्त्री श्री रमेश चन्द्र त्यागी कोषाध्यक्ष।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर—डा० हरपालसिंह प्रधान, डा० आशा रानी मन्त्री श्री प्यारे लाल आर्य कोषाध्यक्ष।

आर्य समाज मोहपुरा न० १ ग्वालियर—श्री के पी गुप्ता एड० प्रधान श्री दीपचन्द्र आर्य मन्त्री श्री राजकुमार गौड़ कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मण्डोर राज०, श्री मनोहर दत्त शास्त्री प्रधान, श्री जस-राज जी मन्त्री, श्री सीताराम जी कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज रेलवे कालोनी कोटा, श्री मुकुन्द लाल गुप्त प्रधान, श्री हरिदत्त शर्मा मन्त्री, प्रेमसिंह परिहार कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज शाहपुरा भीलवाड़ा, श्री मोहन लाल जी शास्त्री प्रधान, श्री रतीलाल जी सोनी मन्त्री, श्री सत्यनारायण कोषाध्यक्ष।

—जिला उपप्रतिनिधि सभा जौनपुर, श्री आर्य मुनि जी वानप्रस्थ प्रधान, श्री राधे मोहन गुप्त मन्त्री, श्री गुलाब राय आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज कपूर, श्रीमती स्वतन्त्रबाला शर्मा प्रधान, श्री [illegible] मन्त्री, श्री सत्यवीर शर्मा कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज खड़गपुर जि० मेदिनीपुर, सुश्री स्वर्णकौर प्रधाना, श्री चन्द्रिका सिन्हा मन्त्री, सुश्री वी० पद्मावती कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज धुर्वा रांची, श्री रमेशचन्द्र प्रधान, श्री कामेश्वरी प्रसाद मन्त्री श्री शिवदीप सिंह कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज शान्ति नगर सोनीपत, श्री ज्ञानचन्द मुन्जाल प्रधान, श्री किशनचन्द गुटानी मन्त्री, श्री ब्रह्मदत्त नारंग कोषाध्यक्ष।

डी० ए० वी० माडल स्कूल सोनीपत, श्री ज्ञानचन्द मुन्जाल प्रधान, श्री हरिश्चन्द्र स्नेही महामन्त्री श्री ब्रह्मदत्त नारंग कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज सिलीगुड़ी, श्री मानव चन्द्र गुप्ता प्रधान, श्री मोहन चन्द्र गुप्त मन्त्री, श्री सुभाषचन्द्र नकी पुरिया कोषाध्यक्ष।

—महिला आर्य समाज केराकत जौनपुर, श्रीमती यशोदा देवी मरहूम प्रधाना, श्रीमती मन्जूदेवी मरहूम मन्त्री, श्रीमती शान्ति देवी मरहूम कोषा०।

—आर्य समाज यमुना विहार, श्री चेतनसिंह वर्मा प्रधान ठाकुर सुरेन्द्र सिंह मन्त्री, श्री रजनीश कुमार अग्रवाल कोषाध्यक्ष।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजीपुर, श्री रामप्रसाद आर्य प्रधान, श्री रामनाथ सिंह मन्त्री, श्री नन्दकिशोर सेठ कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज सैक्टर २२ ए चण्डीगढ़, श्री राजेन्द्र सेठी प्रधान, श्री कृष्ण कुमार जी आर्य मन्त्री, श्री सत्यप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज अमरोहा, श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य प्रधान, श्री प्रेम बिहारी आर्य मन्त्री, श्री रामगुप्त कोषाध्यक्ष।

पुस्तक-समीक्षा

भारत वर्ष का बृहद् इतिहास

ले०—पं० भगवद्दत्त जी वैदिक रिसर्चस्कालर

पृष्ठ—३७६, मूल्य—छ: सौ रुपए

प्रकाशक—प्रणव प्रकाशन

१/२८ ईस्ट पटेल नगर नई दिल्ली ८

आर्य जाति की विराटता और आर्य हिन्दू समाज के संकुचित होने के क्या कारण है ? बुद्धि व शक्ति से हीन और क्या पराभव को प्राप्त होती है। बीसवीं सदी के अन्त तक एक संकुचित धारणा का प्रचार-प्रसार होता रहा है। भारतीय आर्य बाहर से आये, भारत के मूल निवासी नहीं आर्यों का दृष्टिकोण संकुचित था।

वर्तमान में बुद्धिजीवि मूल लेखक ने भारतीय वाङ्मय के इतिहास को क्रमश: तीन भागों में प्रकाशित किया था।

इतिहास एक हृदयग्राही अनुभूति है, प्रमाणकोटि, क्रमबद्ध विवेचन, घटनाक्रमों को यथा स्थान जोड़ना ही मूल प्रक्रिया है। तभी ज्ञान की प्राप्ति हृदयस्पर्शी हो जाती है।

विगत गौरवमय इतिहास की सही उपलब्धि से मानसिक उल्लास देता है। इतिहास ही भावी पीढ़ी को समुन्नत और नई दिशा देकर पथ का प्रदर्शन करता है।

प्रथम भाग में यह चतुर्युगी अवस्थापन के पश्चात आरम्भ होकर मानव-सृष्टि मनु से आरम्भ हुई। बृहद इतिहास में—आकार मात्र, आज की शिक्षा पद्धति, पुनावर्द को प्राप्त नहीं है।

लज्जा नामक उपन्यास

(पृष्ठ ४ का शेष)

सत्कर्म आरम्भ में विघ्नों से अन्त में अमृत समान हो जाते हैं। अत 'लज्जा' की निर्भीक लेखिका तसलीमा नसरीन कट्टरपन्थियों से मानवता की अपेक्षा रखती हैं। मौत के फतवे उनकी वैचारिक ऊर्जा को अवरुद्ध न कर, उलटा और अधिक प्रदीप्त करेंगे।

समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ है कि तसलीमा नसरीन ने निडर होकर कट्टरपंथियों के विरुद्ध लेखन द्वारा संघर्ष करने की घोषणा की है। सच्चाई का साथ अनन्त सत्ता देती है, इसके साथ ही विरोधियों के प्रोत्साहन एवं स्वयं की निष्ठा से सर्वाधिक प्रतिभा को कौन रोक सकता है ?

किन्तु यह भी निर्विवाद है कि युग पुरुषों ने विष पीकर सदैव से संसार को अमृत दिया है। लोक कल्याण के प्रतीक शिव नीलकंठी कहलाते हैं। विषपान केवल शंकर कर सकते हैं, अन्य में इतनी सामर्थ्य कहां। सत्पुरुषों में अनेक उदाहरण हैं जिन्होंने विषपान कर संसार को अमृतमय बनाया जिनमें युगपुरुष महर्षि दयानन्द सर्वोत्कृष्ट हैं जिन्होंने सत्य की प्रतिष्ठा के लिए अनेक बार निर्भयता से विषपान किया और सनातन वैदिक धर्म का अवलम्बन लेकर भ्रमित मानवता को, सुनाकर वैदिक धर्म का अनुसरण करने का आवाहन किया - वेदमेवाभ्यसेत-नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय" अर्थात वैदिक पथ पर चलने वाला कभी नाश को प्राप्त नहीं होता। 'मीरा' ने विषपान करके भी 'कृष्ण' को अपना सर्वस्व और 'प्रियतम' मानना न छोड़ा। चाहे ईसा को सूली मिली हो, या गांधी को गोली, सुकरात को गरल मिला हो, या सलमान रुश्दी को मौत का फतवा, इन सत्पुरुषों ने मृत्यु के भय से असत्य का वरण नहीं किया। तसलीमा नसरीन भी इन्हीं सत्पुरुषों की श्रेणी में है जिसने हर परिस्थिति में सत्य के अनुसरण की बात दोहराई है।

तसलीमा को यदि सत्यार्थ प्रकाश का बंगला संस्करण भारत सरकार या कोई बुद्धिजीवी भेंट करे उन्हें और अधिक बल और सन्तोष प्राप्त होगा क्योंकि क्रान्तिकारी महर्षि दयानन्द सा निर्भय और वैदिक धर्म का उपदेशक अन्य कोई नहीं। "सत्यार्थ प्रकाश" में दयानन्द ने पाखण्ड पर कुठाराघात के साथ अज्ञान पर मानवता से मानव बनने का आग्रह किया। नारी जाति के हित ही नहीं, विश्व के लिए तसलीमा नसरीन एक अनुकरणीय प्रेरणा है, तथा उनकी वैचारिक ऊर्जा विश्व के लिए उपयोगी है।

इस प्रकार के विचार अवश्य नहीं मिले, इसे प्रोत्साहन दिया गया।

जातियों का जीवन-बल बुद्धि पर आश्रित है अन्ध-श्रद्धा व अन्धेपन, धर्मान्धता का त्याग जाति के विनाश का आवाहन करता है। यही आर्यों के साथ हुआ है। आज आवश्यकता है हम आर्यों को अपने बौद्धिक विनाश व शारीरिक दुर्बलता को दूर करने के लिए भूत को जानने व उससे अपने को सक्षम बनाने का। आर्य साम्राज्य क्या था। वेद-वैदिक वाङ्मय वैदिक सभ्यता का संसार पर आधिपत्य था। भारत का अपना स्वरूप पूर्ण रूप है उसके आप स्वामी हैं। उसकी रक्षा करना मौलिक कर्तव्य है—इसे मिटाने हेतु जिसने महान प्रयास किया उसे आगे इतिहास लेखन की योजना में प्रमाणों से सिद्ध करना है। कि यह देश आर्यों का है इसकी परम्परा इतिहास ऐतिह्य, प्रक्रिया, पुरावृत्त, आख्यान गाथा नाराशंसी आदि इतिहास ग्रन्थों से अतीत का सुन्दर वर्णन सुस्पष्ट है इसकी विकृति के क्या कारण है। इस ग्रन्थ मे लेखन में अंग्रेजों से पहले की, इससे पूर्व मुगल काल भी जानते हैं। विद्वान लेखक ने निर्धारित रूप में वैदिक-काल, ब्राह्मण-काल, आरण्यक काल, उपनिषद काल, सभी परस्पर सम्बद्ध आश्रित माने हैं इन प्रकरणों से भूली-बिसरी प्रक्रियाएं आसानी से सुलझ जायेंगी।

विकृति कारों ने ऋग्वेद और वैदिककाल इस सभ्यता से भिन्न हैं उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि आर्यों की विकसित सभ्यता थी, जो दूर देशों तक फैली हुई थी।

इस इतिहास को बृहद रूप देने और तथ्यों को सही स्वरूप दिखाना ही इतिहासकार का कार्य है। पाश्चात्य इतिहासकारों द्वारा जो विकृति उत्पन्न की गई है उसका समग्र प्रमाणों पर आधारित शिलालेख-पुरातत्व मुद्रा, विदेशी यात्रियों के लेख, स्वदेश साहित्य तथा विदेशी साहित्य के उद्धरण पर्याप्त हैं। इनको प्रमाण मानकर ही इस ग्रन्थ का लेखन हुआ है और अब तक उत्पन्न की गई अनुचित धारणाओं का प्रमाण पूर्वक निराकरण किया है। सत्य स्वरूप को प्रकट करने में अन्धानुकरण ही रुकावट रहा है। इस सम्पूर्ण स्रोत का विवेचनात्मक अध्ययन इस ग्रन्थ मे किया गया है।

मूल रचयिता स्व० पं० भगवद्दत्त जी की लेखनी निष्पक्ष है और इसे मानने में आर्य सभ्यता का अतिप्राचीन कलेवर चित्रित किया गया है। महान विद्वान का अनथक परिश्रम का ही परिणाम है।

आज इस ग्रन्थ की जो उपयोगिता इतिहासकारों शिक्षाविदों में है इसका प्रकाशन कर श्री सत्यश्रवा जी ने पूज्य पितृचरण का श्राद्ध ही किया है। पितृचरण परम्परा के अनुसार आर्य संस्कृति पोषक सत्यश्रवा जी का उत्साहवर्धन अपेक्षित है। पितृऋण से उऋण होने की उत्कट अभिलाषा पूर्ण होगी। पाठक गण उपयोगिता को समझकर ग्रन्थ को उपयोगी मान—लाभान्वित होंगे।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

हिन्दी की द्रोपदी

(पृष्ठ २ का शेष)

ढांचे को साफ कर देते हैं तो ये दिल्ली के कर्णधार आसमान सिर पर उठाकर दुनियां भर मे हमे साम्प्रदायिक, कट्टरवादी और धर्म का दुरुपयोग करने वाला घोषित करते और विश्व की निगाह में हमारी उज्ज्वल छवि को धूमिल कर डालते हैं स्वतन्त्र हिन्दोस्तान मे हिन्दू, हिन्दी और हिन्दुत्व का यह अपमान, यह तिरस्कार ? इस कडवे विष घूंट को पीकर सन्तोष पर गर्व करने वाले भारतीय हिन्दुओं की शव जैसी निस्पन्दता कब समाप्त होगी ? क्या यह प्रश्न हमारे हृदयों को कभी कचोटेगा भी या नहीं ? सत्य तो यह है कि हम जब तक सकल्प शक्ति सजोकर हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तान और हिन्दुत्व की रक्षा की सौगन्ध खाकर एक मच पर सगठित एव एकत्रित नहीं होते हैं तब तक हमारे रोवे-रोवे पर ये आस्तीन के सांप, राष्ट्रघाती तत्व, हमारी खिल्ली उडाते रहेंगे और अपनी शक्ति बढाकर एक दिन भारत की स्वतन्त्रता और अखण्डता के लिये क्रूर काल बन जायेंगे। वोट की राजनीति यही सब कुछ करवे जा रही है।

यह भी सत्य है कि देववाणी सस्कृत की आत्मजा हिन्दी का शाश्वत वरदान तथा हमारे मूल्याधारित आदर्श, भले ही स्वार्थ बुद्धिवश हम उन्हें भूल गये हैं, हमारी रक्षा करते रहे हैं और करते रहेंगे। हमारी निस्पंदता में विद्युत तरगें सोई हुई हैं इन्हें समझने और जगाने की आवश्यकता है तभी हम "वयम् राष्ट्रे जागृयाम पुरोहित:" के श्रुति वाक्य पर गर्व करके अखण्ड भारत का स्वप्न पूरा कर सकते हैं। देवभाषा हिन्दी को सूर, तुलसी, कबीर, केशव, जायसी, मीरा, पन्त निराला, महादेवी, मैथिलीशरण, प्रेमचन्द्र शुक्ल, दिनकर, राजर्षि टण्डन जैसी पवित्रात्माओं का वरदान मिला हुआ है अतः दुःशासनी व दुर्योधनी पाप की छाया और माया हिन्दी की द्रोपदी का कुछ भी नहीं बिगाड सकती है वे स्वय ही मिट जायेंगे। इतिहास इसका साक्षी है। "सत्यमेव जयते" की शाश्वतवाणी सदैव अक्षरशः सिद्ध होती रही है। हिन्दी को अवरोधों, विरोधों, बाधाओं तथा छलछिद्रों को पराभूत करती हुई अम्बर की ऊंचाइयों को छूकर रहेगी जिसके अमर फल मर्त्यों के लिये अमरता प्रदान करते रहेंगे, विश्वास रखिये।

प्रभु ! हमें साहस, संकल्प तथा शक्ति दे।

भुवनेश्वर आर्यसमाज का आदर्श कार्यक्रम

ओडिसा की राजधानी भुवनेश्वर में स्थित आर्य समाज में कुछ आदर्श कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये हैं। प्रत्येक सदस्य-सदस्या को वेदाभ्यास हेतु प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इस साल श्रावणी "वेद सप्ताह" में सदस्य-सदस्या अपनी शक्ति अनुसार वेद-व्याख्यान किये। दैनिक यज्ञ, साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त हर महीने के द्वितीय शनिवार को "वैदिक पाठचक्र" प्रारम्भ किया गया है। आर्यसमाज में विवाहादि संस्कार सदस्य-सदस्या के पौरोहित्य मे ही सम्पन्न हो रहा है।

चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

झड़ौदा कलां (दिल्ली) में बाबा हरिदास लोक सेवा मण्डल की कमेटी ने क्रमशः ऋग्वेद, सामवेद अथर्ववेद से पारायण यज्ञ कराया ५ से १५ सितम्बर १९९३ तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ, ८ से १४ जनवरी १९९४ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ, ७ से ११ अगस्त १९९४ तक सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुये। ये सब यज्ञ आचार्य प्रेमदेव जी (अलीगढ़) और स्वामी वेदरक्षानन्द जी गुरुकुल कालवा ने कराये। इन यज्ञों में श्री साहब सिंह वर्मा शिक्षा एवं विकास मन्त्री दिल्ली प्रदेश ने आहुतियां प्रदान की।

ईसाई बनाने की साजिश

(पृष्ठ १ का शेष)

मुख्यधारा से हटेंगे और तब उसका काम आसान हो जाएगा। इन मिशनरियों ने पूर्वोत्तर के आतंकवादियों पर अब तक करोड़ों रुपये खर्च किए हैं और उन्हें बरास्ते काठमांडो विदेश भिजवाया है। अभी इसी महीने नेपाल में एक ऐसी मिशनरी को वापसी हुई है, जिसने ७० के दशक मे सी.आई.ए. की मदद से तिब्बत के खंपा विद्रोहियों को हथियार बांटे थे। विशेष प्रहरी को रिपोर्ट मे आगाह किया गया है कि इन पर अकुश नहीं लगा तो सदी के अन्त तक विश्व के इस इकलौते हिन्दू राष्ट्र का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

एक सूचना इस मायने में और भी खतरनाक है कि ईसाई मिशनरियों ने पाक गुप्तचर संस्था आई.एस.आई. के साथ-साथ विश्व के अन्य कट्टरपंथी मुसलिम संगठनों से भी तालमेल बिठा लिया है। इन मिशनरियों के माध्यम से पूर्वोत्तर के लगभग सभी आतंकवादी गुटों में एका के प्रयास चल रहे हैं। ताकि अलगाव के लिए केन्द्र को एक बार झटका दिया जा सके।

यही नहीं मिशनरियों ने पूर्वोत्तर में आर्थिक आतंकवाद को और भी विस्तार देने की योजना बनाई है। उन्होंने इसके जरिए पूर्वोत्तर की बची-खुची औद्योगिक इकाइयों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को नेस्तनाबूद करने की सोच रखी है। यहां यह बात गौर करने लायक है कि पूर्वोत्तर में अब तक किसी भी ईसाई परियोजना को आतंकवादियों ने छेड़ा नहीं है। चाहे वह परियोजना स्कूल की रही हो या स्वास्थ्य सेवाओं की या फिर चर्च की। इस गणित के आधार पर ईसाई मिशनरियों की सोच यह है कि आतंक की वजह से क्षेत्र जितना हो दरिद्र होगा, धर्म परिवर्तन की दुकान उतनी ही चलेगी। फिर अपने तरीके की राजनीतिक व्यवस्था कायम कर सकेंगे।

नेपाल में पिछले चुनाव में हालत यह थी कि कई क्षत्रों में नेता ईसाईयों के समर्थन से ही संसद में पहुंच पाए। आज ये इनके हितों के लिए 'भोंपू' का काम कर रहे हैं। यही हालत उत्तर-पूर्वी राज्यों और सुदूर सिक्किम में भी है। ऐसी स्थिति को देखकर यह कहा जा सकता है कि 'बृहत्तर हिमालय' के सम्पूर्ण क्षेत्र को "वेटिकन सिटी' को विस्तृत रूप देने की महत्वाकांक्षी योजना मिशनरियों पका रहा है।

पिछले दिनों खाही नेपाल पुलिस और गुप्तचरों की पकड़ में पूर्वोत्तर के दर्जनों उग्रवादी आए। इनमें से कई बैंकाक, कराची व इसलामाबाद से लौट आए थे और कुछ जाने को तैयार थे। इन्हें अलग-अलग समय पर पकड़ा गया था। पकड़े गए लोगों में अल्फा, बोडो के सदस्यों के अलावा नागालैंड का कुख्यात आतंकवादी संगठन 'एन.एस.सी.एन.' (मु०) नेशनल सोशलिस्ट कौंसिल आफ नागालैंड (मुइवा गुट) के आतंकवादी भी थे। पूछताछ मे यह स्पष्ट हुआ था कि इन्हें काठमांडो स्थित पाकिस्तानी दूतावास ने जाली पासपोर्ट और वीसा दिलाने में मदद दी थी और पूर्वोत्तर में काठमांडो लाने तथा धन जुटाने में कुछ मिशनरियों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।

(शेष अगले अंक में)

(दैनिक जागरण १७ सितम्बर से साभार)

आर्यसमाज बागपत द्वारा श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन) सोल्लास सम्पन्न

बागपत—यहां आर्यसमाज मन्दिर बागपत मे श्रावणी उपाकर्म का पर्व विशेष यज्ञ के साथ मनाया गया। मा० सत्यप्रकाश गौड के पौरोहित्य में विशेष आहुतियों के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

समाज के प्रधान श्री जयप्रकाश वर्मा ने रक्षा सूत्र बांधकर वेद प्रचार की प्रतिज्ञा कराई। समाज के मन्त्री मा० सत्यप्रकाश गौड ने नगर के प्रबुद्ध लोगों से वेद मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

सत्यप्रकाश गौड मन्त्री

आर्यसमाज दीवानहाल हेतु अपील

दानी-महानुभावों से नम्र निवेदन है कि आर्यसमाज दीवानहाल के निर्माता धार्मिक दानी स्व. ला. दीवानचन्द्र जी के असीम दान से निर्माण कराया गया था लम्बे समय के बाद आज इस भवन का काया-कल्प किया जा रहा है।

समय-समय पर टूट-फूट मरम्मत का काम तो चलता ही रहता है परन्तु इस समय भवन के हाल में नये पत्थर को लगाकर भव्य रूप दिया जा रहा है। जिसमें धन की अति आवश्यकता है।

इस भवन निर्माण में सहायतार्थ दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि आप अधिक से अधिक धन देकर दीवानहाल की सुरक्षा करें और इस भवन को भव्य रूप दें। धन्यवाद

कटेश्वरदयाल प्रधान
आ. स. दीवानहाल

प्रान्तीय आर्य वीर महा-सम्मेलन

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि आर्यवीर दल रोहतक इस वर्ष आगामी १-२ अक्तूबर को हरयाणा प्रान्त का १७वां आर्यवीर महा-सम्मेलन बालिका बाजार के सामने (हुड्डा काम्पलैक्स) ग्राऊंड में बड़ी धूम-धाम से मनाने जा रहा है। इस समारोह में आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा) स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), डा० देवव्रत जी आचार्य (प्रधान सेनापति आर्यवीर दल), उमेद सिंह शर्मा (प्रान्तीय संचालक), आचार्य देवव्रत जी (गुरुकुल कुरुक्षेत्र), प्रो० उत्तमचन्द जी शरर, डा० रामप्रकाश जी (पूर्व मन्त्री हरियाणा सरकार) तथा कई अन्य वक्तागण, युवा भजनोपदेशक तथा कई राजनैतिक नेताओं को आमन्त्रित किया गया है।

कार्यक्रम—१ अक्तूबर को दोपहर २ बजे विशाल शोभायात्रा। रात्रि ८ बजे आर्य वीर सम्मेलन। २ अक्तूबर प्रातः ५ बजे सामूहिक शाखा प्रातः ८ बजे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन।

विशेष आकर्षण .—व्यायाम प्रदर्शन दोपहर १२ बजे।

अतः सभी आर्यजनों, आर्यसमाज के अधिकारियों एवं सभासदों से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्यों के लिए आप तन-मन धन से सहयोग देवें तथा आगामी आर्य वीर महा सम्मेलन में १ व २ अक्तूबर को बालिका बाजार के सामने (हुड्डा काम्पलैक्स ग्राऊंड) मे पधार कर अनुग्रहीत करें।

सार्वजनिक सभा का आयोजन

गांधी जयन्ती के उपलक्ष में देश की वर्तमान गम्भीर समस्याओं पर एक सार्वजनिक सभा का आयोजन मानव विकास परिषद दिल्ली तथा ग्राम प्रचार समिति के तत्वावधान में दिनांक २ अक्टूबर को आर्यसमाज मन्दिर डी-१ ए जनकपुरी के पार्क में दोपहर २ बजे से ५ बजे तक श्री सत्यपाल आनन्द की अध्यक्षता मे किया गया है। कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष श्री विक्रम जी कपूर होंगे। इस अवसर पर प्रो० बलराज मधोक श्री के. नरेन्द्र श्री सुभाष जी कपूर श्री राजतिलक मेंबर, श्री करणसिंह तवर (विधायक) श्री विनोद कुमार शर्मा विधायक तथा श्री सूरसिंह तवंर आदि पधार रहे हैं। श्री विजय कुमार गुप्ता के संयोजन में होने वाले इस समारोह का संचालन पं० अशोक कुमार जी करेंगे।

वेद सप्ताह समारोह सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर चेम्बूर, बम्बई मे दि. २१-८-९४ से २८-८-९४ तक वेद सप्ताह के उपलक्ष मे "सामवेद पारायण यज्ञ" का आयोजन सौहार्दपूर्ण वातावरण मे आचार्य डा० वागीश जी शर्मा आर्य गुरुकुल एटा (उ० प्र०) के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ।

दिनांक २८-८-९४ को यज्ञ की पूर्णाहुति का कार्यक्रम एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम बड़े धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

समारोह में चेम्बूर के सैकड़ो बन्धुओ ने भाग लिया व काफी लोग कार्यक्रम से प्रभावित हुए व कार्यक्रम की बहुत-बहुत प्रशंसा की।

चन्द्रभूषण जी गिरोत्रा मन्त्री
आर्यसमाज चेम्बूर बम्बई-७४

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०४९/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२५ ९-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी) ९३
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O. on 22,23-9 1994

आर्य साधु सम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

सम्मेलन मे पधारे, हिमाचल प्रदेश के ब्रह्मचारी आर्य नरेश ने कहा - आज आर्य सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्र पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। आर्य समाज के संन्यासियो को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक होकर कार्य करना चाहिए। हमारे प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द सरस्वती हैं, इसलिए किसी प्रकार से भी भयभीत होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि महर्षि के सिद्धांत ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है।

सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने कहा महर्षि दयानन्द के सिद्धांतो को जीवन मे धारण करने से ही हमे वर्तमान चुनौतियो का सामना करने की शक्ति मिलेगी। हिसार के प्रो० रामविचार जी महेन्द्रपाल शास्त्री, आचार्य देवव्रत, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा देश के विभिन्न भागो से पधारे हुए साधु संन्यासियो ने भी अपने अपने विचार रखे।

सम्मेलन के संयोजक श्री सीताराम आर्य ने कहा—आर्य समाज के नाम पर यदि कोई संस्था महर्षि के सिद्धांतों की हत्या करने का प्रयास कर रही हो तो, इसे कदापि सहन नहीं किया जाएगा। इस अवसर पर १७५ संन्यासियो को कम्बल भी वितरित किये गए।

अन्त मे संयोजक महोदय ने इस सम्मेलन में पधारे हुए सभी साधुओ और विद्वानो का आभार प्रकट किया।

वेदप्रचार सप्ताह मनाया

आर्यसमाज मन्दिर भरथना इटावा मे वेद प्रचार सप्ताह उल्लास पूर्वक मनाया गया। उपरोक्त अवसर पर प० महादेव शास्त्री तथा श्री ज्ञानप्रकाश शर्मा वैदिक संगीतज्ञ के मधुर प्रवचन हुए। योगीराज श्रीकृष्ण जी का जन्मोत्सव मनाया गया।

—श्याममोहन आर्य मन्त्री

शोक संदेश

अत्यन्त दु.ख के साथ सूचित किया जा रहा है आर्यसमाज यमलार्जुन (केसर गंज) के उपमंत्री श्री धर्मदेव आर्य की धर्म पत्नी श्रीमती रामावती देवी का स्वर्गवास ४५ वर्ष की आयु मे ५ ९-९४ को हुकम सिंह चिकित्सालय केसर गंज मे हो गया है वे कुछ दिनो से मस्तिष्क ज्वर से पीड़ित थी उनकी अन्त्येष्टी पूर्ण वैदिक रीति से दिनांक ६-९-९४ को सम्पन्न हुई इस अवसर पर आर्य समाज के सभी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज कोटभी कालोनी जम्मू का वेद प्रचार सप्ताह दिनांक २१ अगस्त रविवार से २८ अगस्त १९९४ रविवार तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। २१ अगस्त रविवार को प्रात:काल प्रभात फेरी निकाली गई तदोपरान्त यजुर्वेद पारायण बृहद यज्ञ आरम्भ हुआ जिसके ब्रह्मा पूज्य प० विद्याभानु जी शास्त्री तथा सहायक ब्र० विद्याधर जी थे। सप्ताह भर के इस कार्यक्रम में आर्य भजनोपदेशक प० सतीश कुमार सुमन तथा पूज्या माता शक्ति जी ने अपने मनोहर भजनो तथा प्रवचनो द्वारा वेदानुकूल जीवन बनाने के लिए प्रेरणा की।

बालकृष्ण गुप्ता प्रधान — अरुण आर्य मन्त्री

योग स[illegible]

इस वर्ष ११, १२ १३ नवम्बर को सम्पन्न हो रहे ऋषि मेला के अवसर पर परोपकारिणी सभा की ओर से ऋषि उद्यान पुष्कर रोड, अजमेर मे स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज संचालक योग धाम कनखल के आचार्यत्व मे दिनांक ४ नवम्बर से १३ नवम्बर तक योग साधना शिविर का आयोजन किया गया है।

इस शिविर मे आसन प्राणायाम ध्यान आदि के योग के आठो अंगो का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जाएगा सभी साधको को पूर्ण समय शिविर मे रहना होगा।

यह योग साधना सीखने का सुअवसर है। सभी इच्छुक महानुभाव मंत्री परोपकारिणी सभा से सम्पर्क कर अपना पंजीकरण करा लें।

उपदेशक महाविद्यालय के नए प्राचार्य

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा अन्तर्राष्ट्रीय उप[illegible] महाविद्यालय दिव्य दयानन्द दर्शन चित्रगृह, आर्य साहित्य प्रचार केन्द्र, गो[illegible]संवर्धन केन्द्र (गोशाला) अतिथि गृह, वेद प्रचार आदि [illegible] का [illegible] के प्रसिद्ध विद्वान् लेखक एवं कुशल प्रशासक आचा[illegible] [illegible] प्राचार्य का कार्यभार संभाल लिया है।

पुण्य भूमि में अध्ययन, अध्यापन पुनः प्रारम्भ

समस्त आर्य जनता को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय द्वारा पुन: उसी पुण्य भूमि गंगा के सुरम्य तट पर ग्राम कांगड़ी प्राचीन परिसर से अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ किया जा रहा है।

यहां अध्ययन करने वाले छात्रो से किसी भी प्रकार का व्यय (वस्त्र-भोजन, आवास, शिक्षा आदि शुल्क) नहीं लिया जायेगा। सम्पूर्ण प्रकार की व्यवस्था नि:शुल्क होगी। जो छात्र १० वीं या समकक्ष उत्तीर्ण होंगे और वे विद्या विनोद प्रथम वर्ष इन्टर या समकक्ष उत्तीर्ण छात्र विद्यालंकार एवं वेदालंकार मे प्रवेश ले सकेंगे।

पुण्य भूमि मे अध्ययन छात्रो को आश्रम पद्धति अथवा ब्रह्मचर्यवेश में रहकर शिक्षा ग्रहण करनी होगी। केवल १० छात्रो को ही उपर्युक्त कक्षाओ मे प्रवेश दिया जायेगा।

अत. शीघ्रातिशीघ्र प्रवेशार्थी सम्बन्ध स्थापित करे, तथा उन छात्रों को परीक्षा उत्तीर्ण करने पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से विद्या विनोद तथा वेदालंकार की उपाधि से अलंकृत किया जायेगा।

कटक आकाशवाणी में वैदिक धर्म का प्रसारण

कटक आकाश वाणी केन्द्र से भुवनेश्वर आर्यसमाज की सदस्या श्रीमती सन्नोदेवी गत २८ ८ ९४ को 'वैदिक विवाह का महत्व" विषय पर दस मिनट का व्याख्यान दिया। उसी प्रकार १७-८-९४ को "वैदिक धर्म प्रश्न प्रश्नोत्तरी" कार्यक्रम मे उड़ीसा के विशिष्ट आर्य विद्वान श्री प्रियव्रत जी दास तथा कटक आर्य समाज के सदस्य श्री भगवान जी आचार्य ने भाग लिया।

बेनजीर का पुतला जलाया गया

पश्चिमी दिल्ली की समस्त धार्मिक संस्थाओ की तरफ से दि० ११-९-९४ (रविवार) सायंकाल ५ बजे मेन बाजार राजौरी गार्डन, लाजवन्ती गार्डन में पाकिस्तान द्वारा भारत मे आतंकवादियो के द्वारा जम्मू काश्मीर आदि क्षेत्रो मे अघोषित युद्ध के खिलाफ रोष प्रकट करने के लिए हजारो लोगो ने प्रदर्शन करके पाकिस्तान की प्रधानमन्त्री श्रीमती बेनजीर भुट्टो का पुतला जलाया।

विचार गोष्ठी

२ अक्तूबर ३ से ५ बजे तक डी १ ए जनकपुरी दिल्ली-५८ के पार्क में देश की वर्तमान स्थिति पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष । ३९३७०० वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ३४] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ आश्विन कृ० १२ स० २०५१ २ अक्तूबर १९९४
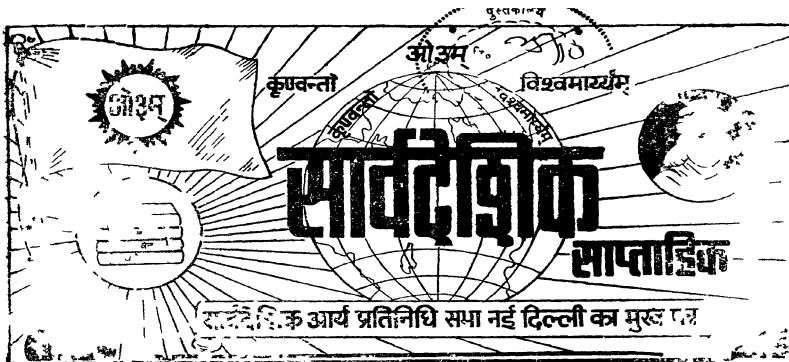
आन्ध्रप्रदेश में आर्यसमाज के विरोध के कारण
निजाम के जन्मदिवस पर पर्यटन सप्ताह कार्यक्रम रद्द

सितम्बर १९९४ के प्रथम सप्ताह मे आन्ध्र प्रदेश सरकार की ओर से समाचार पत्रों मे प्रकाशित समाचार के अनुसार यह घोषणा की गई थी कि आन्ध्र सरकार उस्मानअली खान निजाम के जन्म दिवस पर पर्यटन सप्ताह का उद्घाटन करेगी।

आन्ध्र सरकार की इस घोषणा का आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से कड़ा विरोध किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव और आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कप्तिकुमार जी कोरटकर ने आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री प्रधान सचिव और गृहमन्त्री भारत सरकार को इस विषय मे आर्य समाज की आपत्तियो से अवगत कराया। इसी प्रकार के ज्ञापन पत्र आन्ध्र प्रदेश की समस्त आर्य समाजों द्वारा जिलाधिकारियो को दिये गए जिनमे स्पष्ट किया गया था कि १३ से १७ सितम्बर तक की तिथि । हैदराबाद मुक्ति दिवस के रूप मे मनाई जाती है। इसलिए अच्छा होता कि मुक्ति दिवस पर ही पर्यटन सप्ताह मनाया जाता। परिपत्रो मे यह भी साफ साफ कहा गया कि निजाम एक मर्मान्ध और निरकुश शासक था।

निजाम के अत्याचारो से त्रस्त होकर ही आर्यसमाज को १९३८ ३९मे आर्य सत्याग्रह आन्दोलन चलाना पड़ा था जिसमे कई हजार सत्याग्रही महीनों जेलों मे रहे और दजनो सत्याग्रही जेल यातनाओ मे शहीद हुए थे। निजाम द्वारा सन् १९४७ मे स्वतन्त्र शासक होने की घोषणा करने के बाद भारत के गृहमन्त्री सरदार पटेल के अथक प्रयत्नों से ही हैदराबाद राज्य का भारत मे विलय हो पाया था। श्री बहादुरी-यार-जग को निजाम ने ही अपनी अर्ध सैनिकी विभाग का मुखिया नियुक्त किया था, लेकिन निजाम ने उन्हे इसलिए मरवा दिया था कि बहादुरी यार जग ने उनके सामने एक प्रस्ताव रखा था कि हैदराबाद राज्य स्वतन्त्र राज्य तो रहे पर प्रजातन्त्रात्मक रूप मे रहे और निजाम उसके केवल मुखिया रहे। इसी प्रकार श्री शोयबुल्ला भी राष्ट्रीय विचार रखने वाले पत्रकार थे, उनके लेखो के कारण निजाम ने उन्हे भी मरवा दिया था। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि निजाम मुसलमानो का भी हितैषी नही था। वह क्रूर अभिमानी और स्वार्थी था और केवल अपनी सत्ता चाहता था। इसलिए ऐसे व्यक्ति का महत्व देना और उसके जन्म दिवस पर पर्यटन सप्ताह का उद्घाटन कार्यक्रम देश द्रोहियो को सम्मान देने के बराबर होगा।

आर्य समाज के इस विरोध का प्रसारण रेडियो, समाचार पत्रों और टी०वी० पर भी हुआ था जिस कारण आन्ध्र सरकार ने उक्त निर्णय रद्द करते हुए अब पर्यटन सप्ताह महात्मा गांधी के जन्म-दिवस पर मनाने का निश्चय किया है।

आर्य समाज के विरोध का निर्णय हैदराबाद विमुक्ति दिवस के अवसर पर १७ सितम्बर १९९४ को आर्य समाज की विशाल जन-सभा मे किया गया था।

अलकबीर बूचड़खाना बन्द करने की मांग कर रहे सत्याग्रहियों को अविलम्ब छोड़ा जाये

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आन्ध्र प्रदेश के रुद्रारम स्थित अलकबीर बूचड़खाने की ओर जाते हुए सत्याग्रहियों के साथ पुलिस द्वारा किए गये अमानुषिक व्यवहार एवं गिरफ्तार किए जाने पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए कृषि मन्त्री डा० बलराम जाखड़ को विशेष पत्र लिखा है तथा माग की है कि संविधान की धारा ४८ मे निहित संवैधानिक दिशा निर्देशों के बारे मे सरकार की नीति स्पष्ट की जाए तथा गिरफ्तार हुए सत्याग्रहियो को अविलम्ब रिहा किया जाए। तथा आन्ध्र प्रदेश सरकार को भी आदेश दिया जाए कि भविष्य मे इस प्रकार की घटनायें पुनः न होने दी जायें।

स्वामी जी ने कहा कि शांति अहिंसक सत्याग्रहियो के प्रति इस प्रकार का यातना पूर्ण व्यवहार एक गणतान्त्रिक सरकार के लिए सर्वथा अशोभनीय है। उन्होने कहा कि मुझे मालूम हुआ है कि अलकबीर बूचड़खाने के लिए पशु देश के अन्य राज्यो मे ट्रको द्वारा वहां पहुचाये जा रहे हैं यह प्रक्रिया तुरन्त बन्द होनी चाहिए इसके लिए राज्य सरकारो को निर्देश दिये जायें कि वे अपने क्षेत्र से पशुधन को बाहर न जाने दें।

संपादक डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

मुजफ्फरनगर के कई फौजी अफसर देशद्रोही करार

जहांआरा के अनेक नेताओं व अधिकारियों से संबंध

मुजफ्फरनगर २४ सितम्बर। पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी के एजेंट के रूप में काम करने वाली जहां आरा की गिरफ्तारी के बाद हुई जांच पड़ताल के आधार पर स्थानीय अभिसूचना इकाई द्वारा शासन को भेजी गई एक गोपनीय रिपोर्ट में जिले के लगभग एक दर्जन सैन्य व पुलिस अधिकारियों तथा राजनीतिज्ञों को न सिर्फ देशद्रोही करार दिया गया है बल्कि इनके ऊपर आई. एस. आई को मदद करने का आरोप लगाते हुए अविलम्ब कार्रवाई की अनुशंसा की गई है।

यह जानकारी अभिसूचना इकाई के ही भरोसे के सूत्रों ने दी। सूत्रों ने बताया कि दिल्ली पुलिस द्वारा गिरफ्तार की गई जहांआरा करांची (पाकिस्तान) में फोन नं० ४०६६३६ पर कर्नल मलिक से बात किया करती थी। यह टेलीफोन नम्बर करांची स्थित आई० एस० आई० के ट्रेनिंग सेंटर का बताया जाता है।

सूत्रों ने बताया कि जहांआरा के आई० एस० आई० से सम्बन्ध का खुलासा जनवरी ९४ में ही हो गया था जिस पर तत्कालीन पुलिस अधीक्षक ने तत्कालीन इन्स्पेक्टर एल० आई० यू० को मौखिक रूप से कार्रवाई के लिए कहा परन्तु एक माह तक जब तत्कालीन इंस्पेक्टर एल० आई० यू० सतीश चन्द्र मित्तल ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया तो उन्होंने ९ फरवरी ९४ को लिखित रूप से इस मामले में कार्रवाई के लिए लिखा परन्तु इसके बाद भी जब कोई कार्रवाई नहीं हुई तो डी० आई० जी० एल० आई० यू० को लिखा गया।

सूत्रों ने बताया कि इस सब लिखा पढ़ी में काफी समय बीत गया तथा इन्स्पेक्टर एल० आई० यू० का चार्ज महावीर सिंह के पास आ गया परन्तु फिर भी कुछ नहीं हुआ। इसी बीच डी. आई. जी. एल. आई. यू. के यहां से जवाब तलबी हुई उन्हें यह कहकर टाल दिया गया कि जहांआरा के एल. आई. यू. के अधिकारियों से बड़े अंतरंग संबंध है। वह बदचलन किस्म की महिला है किसी भी मामले में फसवा सकती है इसलिए उस पर हाथ डालना ठीक नहीं। डी० आई० जी० को यह भी बताया गया कि एल० आई० यू० के ही एक अधिकारी ने दिल्ली जाकर जहांआरा को नूरजहां के नाम से पासपोर्ट दिलवाया था इसीलिए जहांआरा ने जब अप्रैल ९४ में पासपोर्ट के लिए आवेदन किया तो एल. आई यू. के मौजूदा ज्येष्ठ उपनिरीक्षक बलराज शर्मा ने उस आवेदन पर शासन को यह रिपोर्ट भेज दी कि इसका एक पासपोर्ट नूरजहां के नाम से बना हुआ है इस लिए पासपोर्ट जारी करना ठीक नहीं है।

सूत्रों ने यह भी बताया कि जहांआरा के आई. एस. आई. एजेंट होने की सूचना पर ही इंटेलीजेंस ब्यूरो का एक अधिकारी किराएदार के रूप में इसके घर में रहा और वहीं से उसने जहांआरा के बारे में सूचनाएं व सुबूत एकत्र किए जिसके आधार पर उसकी गिरफ्तारी सम्भव हो सकी।

विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार पिछले कई वर्षों से आतंकवादियों की गतिविधियों के लिए चर्चित मुजफ्फरनगर में धीरे-धीरे आई. एस. आई., जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट एवं हिजबुल मुजाहिद संगठन ने पूरी तरह पैर पसार कर साम्प्रदायिक जाल बिछा लिया है। पाक खुफिया गतिविधियों के मद्देनजर भारत की खुफिया एजेन्सी सी. बी. आई की मदद से दिल्ली पुलिस ने गत २० सितम्बर को दिल्ली में पाक उच्चायोग के निकट एक विदेशी रिवाल्वर व भारतीय सेना से सम्बंधित गोपनीय दस्तावेजों के साथ पाक जासूस जहांआरा उर्फ गुड्डी को गिरफ्तार कर लिया।

गुड्डी से की गई पूछताछ के बाद सी. बी. आई. के अधिकारियों एवं दिल्ली पुलिस के स्थानीय पुलिस की मदद से मुजफ्फरनगर शहर की बस्ती ७, आदर्शपुरी स्थित जहांआरा के मकान पर २० सितम्बर की रात्रि में ही छापा मारा और पूरे मकान की तलाशी ली।

दैनिक जागरण से साभार

प्लेग

क्या करें, क्या न करें

× अगर प्लेग की आशंका हो, तो छह-छह घण्टों के बाद 'टेट्रासाइक्लिन' (५०० मि.ग्रा.) की गोली पांच दिनों तक लगातार लें। बच्चों और गर्भवती महिलाओं को 'सेप्ट्रान' की गोली दें। बच्चों को यह गोली एक दिन में दो बार दें गर्भवती महिलाएं दिन में दो गोली ही लें। यह दवा पांच दिनों तक लगातार देना आवश्यक है।

× अगर किसी को भी अचानक तेज बुखार, खांसी, रक्त युक्त थूक, बलगम, छाती में दर्द और सांस लेने में कठिनाई होने लगे तो तुरन्त नजदीक के स्वास्थ्य केन्द्र से सम्पर्क करें।

× अगर सूरत या बीड़ (महाराष्ट्र) से कोई मेहमान आने-जाने और घर में किसी को इस प्रकार के लक्षण प्रकट हों, तो सतर्क हो जाना चाहिए।

× घर में अगर अचानक चूहों की मौत होने लगे, तो स्थानीय प्रशासन को तत्काल इसकी सूचना दें।

× अगर प्लेग की आशंका हो, तो हाथ में दस्ताने और पांव में घुटनों तक जुराबें पहनकर जमीन से दो फुट ऊंचे बिस्तर पर ही सोयें।

× निमोनिया वाला प्लेग हवा से फैलता है। इसीलिए प्लेग के रोगी की देखभाल कर रहे सभी लोगों को मुंह पर कपड़ा बांध लेना चाहिए।

× थूक, लार, बलगम लगे रूमाल, तौलिया आदि सभी गन्दे कपड़ों को नष्ट कर देना चाहिए या गर्म पानी में उबाल कर साफ कर लेना चाहिए।

× घर के आस-पास कूड़े-करकट को जमा होने न दें।

× खाने-पीने की चीजों को घर में सड़ने न दें।

× आहार को खुले बरतनों में न रखें।

× जमीन पर न सोयें।

× कोशिश करें कि घर में चूहों का प्रवेश न हो।

\+ चूहों के बिलों में चूहे मारने वाली दवा डालने के बाद बिलों को बन्द न करें।

प्रस्तुति, साम्बे

प्लेग और प्राकृतिक उपचार

प्लेग जैसी घातक बीमारी के लिए तत्काल डाक्टर से सम्पर्क जरूरी है। यदि आपके आस-पास डाक्टर उपलब्ध न हो, तो कुछ प्राकृतिक उपचार भी लाभदायक हो सकता है। काफी पकी हुई एक मुट्ठी इमली तथा चौथाई चम्मच दानेदार हींग एक लीटर पानी में डालकर रात भर भिगोएं। बर्तन ढका हो। सुबह इमली और हींग घुले जल को छान लें। इसे नाश्ते के बाद और दोपहर के भोजन के बाद एक-एक गिलास ले सकते हैं।

प्लेग के दिनों में शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए रोज तुलसी के पांच पत्ते, पांच काली मिर्च और लहसुन के दो पोर नियमित रूप से सेवन करें। बच्चों के लिए इस घरेलू औषधि की मात्रा एक तिहाई ही होनी चाहिए।

उपेन्द्र सूद

त्रिभाषा–सूत्र (३)

भारत की मूल भाषा, संस्कृत बहिष्कृत
देश-विभाजक भाषा, उर्दू तुष्टीकृत
भारत की राष्ट्रभाषा, हिन्दी तिरस्कृत
दासता की भाषा, अंग्रेजी पुरस्कृत

—ब्रह्मदत्त दीक्षित

विशेष संरक्षण प्राप्त जनपद

उत्तर प्रदेश—(१३ जिले)—रामपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बहराइच, गोंडा, गाजियाबाद पीलीभीत, देवरिया, बाराबंकी, बस्ती।

पश्चिम बंगाल—(८ जिले)—मुर्शिदाबाद, माल्दा, दीनाजपुर, बीरभूमि नदिया, चौबीस परगना कूंचबिहार, हावड़ा।

केरल—(५ जिले) मलप्पुरम, कोझीकोड, कन्नौर, पालघाट, ध्यानाद।

बिहार—(३ जिले) पूर्णिया, कटिहार, दरभगा।

हरियाणा—(१ जिला) गुड़गांव

कर्नाटक—(३ जिले) बीदर, गुलबर्गा, बीजापुर

मध्यप्रदेश—(१ जिला) भोपाल

महाराष्ट्र—(२ जिले) बम्बई, औरंगाबाद

आंध्र—(२ जिले) हैदराबाद, कर्नूल

राजस्थान—(१ जिला) जैसलमेर

गुजरात—(१ जिला) कच्छ

"मुस्लिम तुष्टीकरण"

इस प्रकार तुष्टीकरण के तहत उर्दू को विशेष संरक्षण देने के लिए उक्त ४० चालीस जनपदों को तथाकथित मुस्लिम प्रभावी जनपद मानकर उनकी शिक्षा सम्बन्धी रूपरेखा एवं व्यवस्था का प्रबन्ध वह शिक्षा-समिति करेगी जिसमें अलीगढ़, उस्मानिया, श्रीनगर जामिया मिलिया विश्व विद्यालयों के कुलपतियों की होगी। शिक्षा व्यय सरकार देगी।

सन् १९८१ की जनगणना के अनुसार भाषा और धर्म के आधार पर अल्पसंख्यक सम्प्रदायों का प्रतिशत इस प्रकार है—मुस्लिम ११,४२ प्रतिशत, ईसाई २·४२ प्रतिशत, सिक्ख २ प्रतिशत, बौद्ध .७२ प्रतिशत, जन .४२ प्रतिशत। इन्हें अपनी भाषा और धर्म संरक्षण की छूट है। अर्थात् इन पर (तथाकथित) धर्म-निरपेक्षता का सिद्धान्त लागू नहीं है (वे अपने तथाकथित धर्म (सम्प्रदाय) के नाम पर वांछित, अवांछित कार्य शिक्षा के नाम पर कर सकते हैं जैसे केरल में एक स्कूल के छात्र राष्ट्र-ध्वज को नकार सकते हैं और राष्ट्रगीत का अपमान कर सकते हैं।

जबकि

आजाद भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री एवं सर्वप्रिय नेता पं० जवाहरलाल नेहरू ने स्पष्ट कहा था कि "उर्दू की हम तरक्की तो चाहते हैं किन्तु वह राज्य की दूसरी राज्य भाषा नहीं बनाई जा सकती है।" जिसे उत्तर प्रदेश में बना दिया गया है। पं० जवाहर लाल की भी बात कभी मानो कभी न मानो। स्वार्थ जैसा कहे।

और भी

"उर्दू भाषा का गद्य और पद्य यदि उठाकर देखे तो उसमें हिन्दुस्तान की संस्कृति, विशेषता, गौरव कितना ही ढूंढे पर भी नहीं मिलता। इस हालत में हम किस मुंह से कह सकते हैं कि हिन्दुस्तान की भाषा उर्दू है। हमें शर्म आना चाहिए कि इतना समय बीत जाने पर भी और हिन्दुस्तान में रहते हुए भी उसकी विशेषता का नामो निशां भी उर्दू भाषा में नहीं मिलता। उर्दू भाषा में सिर्फ मुसलमानियत है। उर्दू को दिल्ली में रहते हुए भी जमुना के जल से जुदा रखा गया। लखनऊ की गोद में पलते हुए भी गोमती में गोता नहीं लगाने दिया गया। यह भारत में रहते हुए भी जम-जम से जुड़ी रही, कमल के बदले गुलाब के गीत-गाती रही, हंस, मोर, कोयल की आवाज कान में भले ही पड़ती रही पर उसे अनसुनी कर दिया गया, तीतर, बटेर, बुलबुल, की बातें ही पसन्द आती रही, मक्का, मदीना को छोड़ भला वह काशी, गया' प्रयाग, हरिद्वार, की सैर-सफर कैसे कर सकती थी। उर्दू में भारतीयता की बू भी नहीं आ सकी। उर्दू अपने पड़ोसी से भी पर्दा करती रही। उसने अपना दामन देशवासियों से भी इस तरह बचाया कि पराया बनी रही। बड़ी 'बी' और 'बानू' भी और नहिन न बन सकी, न खाला बुआ ही कहला सकी।

उर्दू सत्ता में भी बैठी किन्तु दिलों में न बैठ सकी। हिन्दी की हमजोली होकर भी हेल-मेल न बढ़ा सकी। फिर संस्कृत से तो उसका रिश्ता सीधा, टेढ़ा टेढ़ा, कुछ भी न बैठा उर्दू को सदा यह भय बना रहा कि संस्कृत और संस्कृति का संस्कार उसे छू न ले। संस्कृत के ज्योतिष तत्व ने अरब और यूनान तक अपना असर बढ़ाया, रिश्ते कायम किए, उसके उपहार को स्वीकार किया, उसके शब्दों को अपने में मिला लिया। इसके विपरीत उर्दू तो समीपी होने पर भी बुर्का डालकर बचती रही। संस्कृत की सीमा उर्दू से सौ कदम ही बनी रही। कन्नी काटकर उर्दू काबा, करबला की ओर ताकती रही। यही वजह है कि सैयद बहाउददीन सलीम किस मुंह से कह सके कि उर्दू हिन्दुस्तान की भाषा है। उसमें हिन्दुस्तान का है ही क्या?"

(मौलाना सैयद बहाउद्दीन सलीम, प्रोफेसर उसमानियां कालेज, हैदराबाद)।

किन्तु ५ अप्रैल सन् १९८२ ई० को मुख्यमन्त्री उत्तरप्रदेश—श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने द्वितीय राज्यभाषा संशोधन अध्यादेश जारी कर दिया। ५ वार (पांचबार) अध्यादेश जारी हुए और अन्त में चुनाव समीप देखकर मुख्य मन्त्री नारायणदत्त तिवारी ने मात्र वोट के लालच में उर्दू को सूबे की द्वितीय राज्यभाषा के रूप में ला दिया क्योंकि १ जनवरी ८९ को अखिल भारतीय उर्दू राब्ता कमेटी ने एलान कर दिया था "यदि श्री नारायणदत्त तिवारी ने उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा नहीं बनाया तो आगामी चुनाव में कांग्रेस को इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी" तुष्टीकरण के बढ़ते हुए प्रभाव ने देश की राजनीति को सजा देने की हैसियत प्राप्त कर ली। अतएव त्रिभाषा-सूत्र में उर्दू के तुष्टीकरण का वर्चस्व क्यों न आए।

जब कि किसी राज्य में दूसरी राजभाषा बनाने के लिए उसी राज्य में दूसरी भाषा भाषी लोगों की संख्या कम से कम १० प्रतिशत हो जो उत्तर प्रदेश में नहीं है। यह वैधानिक न्याय कहां गया?

(क्रमशः)

वर्त्तमान प्रचलित शिक्षा से मन की शुद्धि असम्भव

आजकल की शिक्षा से मन शुद्ध वा परिमार्जित हो सके, यह तो लगभग असम्भव ही है। ऐसी शिक्षा जिसका कोई आदर्श वा उद्देश्य नहीं, जिसकी सम्पूर्ण भित्ति अभारतीय (विदेशी) आदर्शों पर खड़ी की गयी हो, जो पाश्चात्य भूमि से संगृहीत वा समानीत हो, जिसके मूल में भारतीयता से दूर ले जाने की भावना सदा तत्पर रही हो। जिसमें इंगलैंड में बैठे व्यक्ति विदेशी वा शासक वर्ग की अपने शासन चलाने मात्र की भावना रही हो। जैसा कि हम पूर्व दर्शा चुके हैं। जिन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता से भारत से, उसके स्वतन्त्र हो जाने पर भी, बहुत बड़ी संख्या में एक भारी ऐसा समुदाय पीछे छोड़ा हो, जो विदेशी शिक्षा से दीक्षित, देखने में भारतीय, परन्तु रुचि-विचार-भाषा में (पर्याप्त अंश तक), और भावों की दृष्टि से शुद्ध अभारतीय हो। जहां मुसलिम राज्य के ६००-७०० वर्षों में घोर अत्याचार और आक्रमण होने पर भी हमारी भारतीयता अक्षुण्ण रही हो, वहां पिछले केवल दो सौ वर्ष के अंग्रेजी राज्य में हमारी भारतीयता एक चौथाई ही रह गयी प्रतीत होती है। देश का दुर्भाग्य है कि भारत स्वतन्त्र हो जाने पर भी देश के वर्तमान नेता वा सञ्चालक निश्चय ही तीन चौथाई अभारतीय भावनाओं से अनुप्राणित हैं, जिन्होंने माता की घुट्टी में ही अभारतीय भावनाओं का दुग्धपान, चाहे विदेशों में वा भारत में किया है, अर्थात् अंग्रेजों के अपने स्वार्थ के लिए चलाये शिक्षाक्रम से ही शिक्षा दीक्षा ली है, वे चाहते हुए भी भारतीय भावना तक नहीं पहुंच सकते। जैसे बाहिर का आगे क्या करेगा जब उनके घरों में विदेशी और केवल विदेशी वस्तुओं का ही साम्राज्य है, वैसे ही ऊपर से भारत भारतीय और भारतीयता का उद्घोष करने वालों के हृदयों में अभारतीयता का बीज ही नहीं, अपितु महान् वृक्ष उत्पन्न हो चुका है, जो इन लोगों की क्रियाओं द्वारा समय-समय पर सामने आता रहता है। देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यही है।

क्या जिसने किसी भारतीय शास्त्र का अध्ययन नहीं किया, जो संस्कृत भाषा समझ तक नहीं सकता जो विदेशी भाषा का ही ज्ञाता हो, जो अभारतीय संस्कृति का उपासक ही नहीं, इस भारत में उसका प्रचारक हो जैसा कि गत ११ वर्ष में रहा, क्या ऐसे व्यक्ति के द्वारा भारत में भारतीय शिक्षा का उद्धार सौ वर्ष में भी हो सकता है!!! यह सब मृगतृष्णा के समान है। ऐसे लोगों के हाथ में शिक्षा का सञ्चालन वा संरक्षण रहा, तो आगे की भगवान जाने। भारतीय शिक्षा का शुद्ध स्वरूप कदापि नहीं बन सकता। जो कुछ यत्न भी हो रहा है, वह पत्तों पर पानी छिड़कने के समान है मूल तक पहुंचने की कुछ भी चिन्ता नहीं ज्ञान नहीं।

क्या ऐसी शिक्षा के प्रभाव से मन शुद्ध और संयत होना तो दूर रहा, यह तो सर्वांश में ही चित्त का विक्षेप करने वाली है क्या इसको भी बतलाने की आवश्यकता है? इसलिए जब तक मन शुद्ध संयत और शासित न हो तब तक उसका सर्वात्मना वा निरन्तर स्वीकार करना कभी श्रेयस्कर नहीं हो सकता। इसी कारण संसार में इतना क्षोभ और विडम्बना फैल रही है। इसी कारण मानव-जीवन या समाज जीवन में बार बार पतन वा स्खलन देखा जाता है, और विचारों में पुनः पुनः भ्रान्ति उत्पन्न होती देखी जाती है। जहां व्यक्ति की यह दशा है, वहां समष्टि-समाज की अवस्था भी यही दृष्टिगोचर होती है, सब रोगों का मूल यही है सर्वविध भ्रष्टाचारों की जननी यही है। जहां दृष्टि डालो, चोरी भ्रष्टाचार का बाजार पूरे यौवन पर है। चोरों की गिनती करना असम्भवप्राय हो रहा है। वर्तमान शिक्षा ही इन सब चोरों वा चोरियों-घूसों-त्रुटियों रूपी रोगों की जननी है। चोर को न मारो, चोर की मां को मारो, अर्थात् वर्तमान शिक्षा की बुराइयों को मूल से उखाड़ना होगा, तभी रोग मूल से जायेगा, अन्यथा रोग बना रहेगा, ऊपर से शरीर भले ही स्वस्थ प्रतीत होता रहे।

हमें इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि सब मनुष्यों का मन शुद्ध वा संयत नहीं हो सकता। सब सक्षम करके कार्यक्षेत्र में नहीं उतर सकते। क्या यह कार्य बिना परिश्रम के यों ही सिद्ध होने वाला है, कदापि नहीं। जिन लोगों का ज्ञान समुन्नत है साधना में भी तत्पर हैं, तपस्या में भी आगे बढ़े हुए हैं जब ऐसे लोग भी एक जन्म में यत्न द्वारा मन को पूर्ण संयत नहीं कर पाते, तो जो मनुष्य प्रकृति और भाषा को छोड़कर शेष सब क्रियाओं में पशु हैं (मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति) वा पशुओं के भी बड़े भाई हैं, जो सदा इन्द्रियों की ताड़ना से व्याकुल वा समाधान की पिपासा से अस्थिरमति हैं, जिनकी मानसिक स्थिति सदा ही डामाडोल अनिश्चित रहा करती है, जिनका उद्देश्य वा स्तर बहुत नीचे वा अपवित्र रहा करता है, जो भूखित से भी भूखित व्यक्तियों के पीछे दौड़ते हैं और उनके परिचय मात्र प्राप्त करने में भी अपने आपको कृत्य कृत्य समझते हैं, भला ऐसे लोग दुर्जेय मन पर कभी विजय प्राप्त कर सकते हैं? यह सब मृगतृष्णा खपुष्पवत् असम्भव ही है, ऐसा समझना चाहिए।

प्रचलित शिक्षा का क्रम हमारे इस ध्येय को पूरा कदापि नहीं कर सकता, यह बात हमको यहां तक समझ लेना है। पत्तों को पानी देने से कुछ न बनेगा। सींचना है तो मूल को ही सींचना होगा। उपाय क्या है इस पर हम आगे विचार करेंगे।

उपाय क्या है?

भारतीय शास्त्र न केवल भारत की ही, अपितु संसार की अपूर्व सम्पत्ति है। शास्त्र की आवश्यकता अनिवार्य है। बिना सिखाये किसी को कुछ भी नहीं आ सकता। ऋषि-मुनि आचार्य वा नेता सब नहीं हो सकते, क्योंकि मन की गति विचित्र है। मन पर ही सारा भरोसा नहीं छोड़ी जा सकती, क्योंकि इससे जीवनरूपी नौका पार लग जायगी, यह आश्वासन कभी नहीं मिल सकता। केवल प्रतिभा भी मार्गदर्शन करने में असमर्थ है। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली तो मन की शुद्धि वा कर्मशुद्धि में साधक हो ही नहीं सकती, बाधक अवश्य है।

ये सब विचार हम पहिले विज्ञ पाठकों के समक्ष सहेतुक रख चुके हैं। अब हम यह बताना चाहते हैं कि उपाय क्या क्या है? जब प्रचलित ज्ञान वा प्रतिभा भी हमारा साथ नहीं देती, तब हमें इससे ऊपर उठकर ही देखना होगा।

यदि यह कहा जावे कि जब मनुष्य के लिए शासित और शुद्ध अन्तःकरण होकर कार्यारम्भ करना साधारणतया असाध्य है, तो कर्म में प्रवृत्त न होकर हम एकदम निष्क्रिय ही क्यों न हो जावें। सो भी ठीक नहीं। संसार का कर्म प्रवाह कभी बन्द होने वाला नहीं। प्रयत्न जीव का स्वाभाविक लक्षण है। स्वाभाविक गुण सदा बना रहता है। सतत क्रियाशील रहना मन का धर्म है। मन तो किसी न किसी क्रिया में संलग्न रहेगा ही। और कुछ नहीं करेगा तो कार्यकलाप सम्बन्धी विचार (चिन्तन) में ही व्यापृत रहेगा। कर्म से कभी विरत रहे सो नहीं। इसलिए मन सन्मार्ग में नहीं चलेगा, तो अवश्य मार्ग में ही चलने लगेगा। शुभ कर्म में प्रवृत्त नहीं होगा तो अशुभ कर्म में ही प्रवृत्त हो जावेगा। जोड़ेगा नहीं, तो फोड़ने ही लग जायगा। स्वर्ग (सुख-विशेष) का मार्ग नहीं पकड़ेगा, तो नरक दुःख विशेष का मार्ग ही ग्रहण कर लेगा।

यदि कोई कहे कि मन की गति ही बन्द कर दी जावेगी, जैसे खूंटे से बंधा बैल चाहे भी तो किसी को मार नहीं सकता, क्या है मारेगा भी कैसे? सो भी नहीं। 'मन को बांधना' यह एक कठिन समूह है, जिसका अब अत्यन्त असाध्य ही समझना चाहिए। यह हम पहले बता चुके हैं कि बड़े से बड़े बांध बांधकर तीव्रगामी बड़ी बड़ी नदियों के वेग को रोका गया देखा जा सकता है जैसा कि भारत में भाखड़ा बांध, उससे बड़े बड़े कार्य सिद्ध किये जा सकते हैं, परन्तु मन के रुकने में संदेह ही बना रहता है। 'न जातु तिष्ठत्यकर्मकृत' मन तो कभी स्थिर नहीं रह सकता। उसको बांध दिया जावे, वह कुछ भी न करे यह तो असम्भव ही है, जैसा कि हमने ऊपर दर्शाया। हां! उसके वेग की दिशा बदल देना सम्भव है निर्दिष्ट स्थान वा उद्देश्य पर पहुंचने का यही एक उपाय है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र को ईसाई बनाने की गहरी साजिश

(गतांक से आगे)

साझा क्षेत्र में नेपाल में छह प्रमुख बैंक हैं जिनमें से तीन बैंकों नेपाल-अरब बैंक, हिमालय बैंक और नेपाल इन्डो स्विस बैंक से मिशनरियों के पैसे की सर्वाधिक निकासी हुई है। यह जांच का विषय है कि हबीब बैंक पाकिस्तान के साझा सहयोग से चल रहे हिमालयन बैंक से मिशनरियों के कितने पैसे कराची इसलामाबाद, लाहौर और बैंकाक जैसी जगहों पर किसे और क्यों ट्रांसफर किए गए। इसी तरह नेपाल-अरब बैंक से भी भारत-नेपाल के सीमाई पट्टियों पर पैसे बांटे गए जो अभी तक जारी है। '९० तक तो मिशनरियों के बजट करोड़ तक ही सीमित थे पर अब किसी-किसी मिशनरी के बजट अरब भी पार करने लगे हैं। अब चूंकि साझा क्षेत्र के बैंकों को अपना व्यवसायिक हित देखना है, इसलिए पैसा आतंकवादियों को जाता है या उन्हें हथियार देने वाली एजेंसियों को उन्हें इससे सरोकार नहीं होता और न ही वे इसे खोलना भी चाहते।

पूर्वोत्तर में गतिविधियां :

आई.एस.आई. और कई कारणों से मिशनरियों की सरपरस्ती के लिए मजबूर है। असम के बरपेटा जिले के तहत मानस अभ्यारण्य बोडो सिक्योरिटी फोर्स (बोसिफो) का गढ़ माना गया है। यह असम में सर्वाधिक हत्याएं करने वाले खूंखार संगठन के रूप मे उभरा है। मानस 'रिजर्व फोरेस्ट' का एक रास्ता नेपाल और दूसरा भूटान की ओर जाता है। इस पर 'बोसिफो जैसे आतंकवादी संगठनों या फिर ईसाई मिशनरियों का अधिपत्य है। देर-सबेर आई एस.आई. की समझ में यह बात आ गई कि बगैर मिशनरियों के यहां से आतंकवादियों की आवाजाही असम्भव है और मिशनरी एक आवरण भी है यह गौरतलब है कि मानस अभयारण्य से ढेकी,अधन्ती,कुआस और कलिमपोंग होते हुए नेपाल जाने के जो दुर्गम मार्ग हैं, वे सभी ईसाई बहुल क्षेत्र समझे जाते हैं। इन क्षेत्रों मे "चर्च आफ स्काटलैंड" की सबसे ज्यादा चलती है। इसका प्रभाव नेपालियों और शेरपा जाति के लोगों पर खूब है।

१९५९-६० के बीच काठमांडो के त्रिभुवन विश्व विद्यालय से समर इंस्टीच्यूट आफ लिंग्विस्टिक (एस.आई.एल.) को सम्बद्ध किया गया। प्रत्यक्ष में लगता था कि यह एक शैक्षणिक संस्था है पर दरअसल यह सी.आई.ए. से सम्बद्ध एक मिशनरी थी। ऐसी मिशनरी जिसने पूर्वी यूरोप में आतंकवाद को पोसने में कई रिकार्ड बनाए थे। इसके माध्यम से सी.आई.ए. ने तिब्बती मूल के खंपा गुरिल्लों को अस्त्र देने शुरू किए। १९६९-७० में खंपा युद्ध शुरू होने और चीन द्वारा विद्रोहियों को कुचलने के दौरान ही यह मिशनरी पर्दे से गायब हो गई। अब फिर इसका पदार्पण हुआ है। जाहिर है इसके उद्देश्य शाकाहारी नहीं होंगे।

नेपाल में विरोध :

वैसे नेपाल की अधिसंख्य जनता नहीं चाहती कि यहां ईसाईयत का विस्तार हो। ऐसे स्वभाव राजशाही तक बरकरार रहे। १९९० के पंचायत-राज तक धर्म परिवर्तन और अन्य आपत्तिजनक मामलों में १० ईसाई जेल में बन्द थे और २०० लोगों पर मुकदमें चल रहे थे। प्रजातन्त्र के आते ही इन सभी को आम माफी दे दी गई।

२० तक नेपाल में एक से १० हजार ईसाई आंके गए थे। पर आज 'धर्मनिरपेक्ष' किए गए डेढ़ वर्ष से ऊपर ईसाई हिन्दू राष्ट्र नेपाल में नमूदार हो चुके हैं। सिर्फ काठमांडो में आज सौ से ऊपर चर्च हैं और सभी ७५ जिलों में चार-चार बड़े चर्च हैं सन दो हजार तक तो सभी गांवों में एक-एक चर्च स्थापित किए जाने की योजना है। चर्चों के कुकुरमुत्ते की तरह फैलने के पीछे नई संवैधानिक व्यवस्था है। इसके तहत प्रार्थना के अधिकार दिए गए हैं। पर धर्म परिवर्तन पर अभी भी प्रतिबन्ध है जिसे अप्रत्यक्ष रूप से मिशनरियों ने खारिज कर दिया है।

वैसे नेपाल और तिब्बत में मिशनरियों की स्थापना के प्रयास १६२६ से ही शुरू हो गए थे तब स्पांग में पहला कैथोलिक चर्च स्थापित हुआ था। यह पश्चिमी तिब्बत में सतलुज के किनारे गूज प्रान्त के पास है। १६२८ मे पूर्वी तिब्बत के शिगात्से में पादरी जान कफावल ने दूसरे चर्च की स्थापना की। इसी दरम्यान बौद्ध लामाओं ने विरोध शुरू किया और १७०२ में कपूचिन मिशनरी जिसे ईसाईयत के प्रचार की जवाबदेही दी गई थी, पलायन कर नेपाल व्यापारियों के सहारे काठमांडो में कदम रखने की चेष्टा करने लगी। इसने १७६० तक काठमांडो के थमेल और भक्तपुर में दो चर्च स्थापित किए। बाद में गोरखों ने इनकी गतिविधियों पर सन्देह करना शुरू किया क्योंकि उसी दरम्यान इयावली पादरी ने मल्ल राजाओं के समर्थन में हस्तक्षेप के लिए ब्रिटिश सरकार से मदद मांगी, बात खुल जाने पर नव नेपाल के निर्माता पृथ्वी नारायण शाह ने १७६९ में कपूचियनों और उनके ५७ अनुयायियों को देश निकाला का आदेश दे दिया। ये सभी सीमा पार बेतिया में बसे। मिशनरियों की गतिविधियां तब भी रुकीं नहीं।

सीमा पर सक्रियता

आज स्थिति यह है कि सीमापार रक्सौल, जोगबनी, भीतनवां, रुपैडीहा, टनकपुर, पिथौरागढ़ और धारचूला जैसे महत्वपूर्ण जगह ईसाई गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र हैं। यह बात ध्यान में रखने की है इन जगहों पर आई एस.आई. ने भी अपने को केन्द्रित कर रखा है। सीमाई पट्टी के इन इलाकों में 'मुसलिम ईसाई, भाई-भाई की भावना को कट्टरपन्थियों और चर्च ने साझे प्रयास से जगाया है। नतीजतन भारत-नेपाल सीमाई पट्टी पर अब अल्पसंख्यक ही हैं। सीमा स्थित सैकड़ों गांवों में मुसलमानों के बीच मिशनरियों की राहत सामग्री क्यों बंटती है इसका 'अर्थशास्त्र' आम आदमी को नहीं पता होता है। नेपाल-अरब बैंक के माध्यम से पिछले साल १ अरब २२ करोड़ नेपाली रुपये बांटे गए। इसमें पेट्रोडालर के साथ-साथ मिशनरियों के भी पैसे थे।

धर्मान्तरण पर जोर का कारण

हिन्दूराष्ट्र नेपाल में धर्मान्तरण के प्रति इतना जोर क्यों है, उसके पीछे १९८७ मे पोप जान पाल द्वितीय द्वारा दी गई वह प्रेरणा काम कर रही है, जिसमें उन्होंने कहा था कि प्रभु यीशू को उनके २ हजार वें जन्म दिवस पर ईसाई आबादी को अद्भुत उपहार भेंट करेंगे। आज नेपाल की गरीबी उनके लक्ष्य को पूरा करने में मददगार साबित हो रही है। यहां पर सक्रिय मिशनरियों का वार्षिक बजट भी काबिलेगौर है। अमेरिका की 'साउदर्न बाप्टिस्ट कंन्वेंशन' का सालाना बजट १८ करोड़ अमेरिकी डालर है। 'कंपस-क्रूसेड फ़ाइस्ट' जिसने नेपाल में धर्मान्तरण के लिए सन् २००० तक विशेष लक्ष्य बताया है, उसका वार्षिक बजट ८ करोड़ अमेरिकी डालर है। इसने १९ हजार पूर्णकालिक सदस्य तैयार किए हैं इसी तरह फोर स्क्वा-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

मेला चांदापुर-शास्त्रार्थ

महर्षि दयानन्द और शंका समाधान (२)

सत्य धर्म विचार तथा अन्य अनेक और विषयों पर विचार

मौलवी मुहम्मद कासिम साहब—हम हजरत ईसा को अवतार तो मानते हैं और बाइबिल को आसमानी पुस्तक भी मानते हैं परन्तु ईसाइयों ने उसमें बहुत कुछ घटत-बढ़त कर दी है इसलिए वह सही मूल नहीं है। और जो कि उसका कुरान ने खण्डन भी कर दिया है इसलिये वह विश्वास के योग्य नहीं रही। और हमारे हजरत पैगम्बर साहब का अवतार सबसे पिछला है, इस लिए हमारा मत सच्चा है।

फिर और मौलवियों ने बाइबिल में से एक आयत पादरी साहब को दिखलाई और कहा कि देखिए आप ही लोगों ने लिखा है कि इस आयत का पता नहीं लगता।

पादरी नोबिल साहब—जिस मनुष्य ने यह लिखा है वह सत्यवादी था। जो उसने लेखक-भूल को प्रसिद्ध कर दिया तो कुछ बुरा नहीं किया। और हम लोग सत्य को चाहते हैं असत्य को नहीं, इसलिए हमारा मत सत्य है।

मौलवी मुहम्मद कासिम—यह तो ठीक है कि कुछ बुरा नहीं किया परन्तु जबकि किसी पुस्तक में वा दस्तावेज में एक भी बात झूठ लिखी हुई विदित हो जावे तो वह पुस्तक कदाचित माननीय नहीं रहती और न वह दस्तावेज ही अदालत में स्वीकार हो सकता है।

पादरी नोबिल साहब—क्या कुरान में लेखकदोष नहीं हो सकता। इस बात पर हठ करना अच्छा नहीं। और जो हम सत्य ही को मानते हैं और सत्य ही की खोज करते हैं इस कारण उस लेखक-भूल को हमने स्वीकार कर लिया और तुम्हारे कुरान में बहुत घटत-बढ़त हुई। जिसके प्रमाण में एक मौलवी ईसाई ने अरबी भाषा में बहुत कुछ कहा और सूरतों के प्रमाण दिए।

मौलवी मुहम्मद कासिम साहब—आप बड़े सत्य के खोजी हैं। (मुस्कराकर) जो आप सत्य ही को स्वीकार करते हैं तो तीन ईश्वर क्यों मानते हो?

पादरी नोबिल साहब—हम तीन ईश्वर नहीं मानते। वे तीनों एक ही हैं अर्थात केवल एक ईश्वर से ही प्रयोजन है। ईसामसीह में मनुष्यता और ईश्वरता दोनों थीं। इस कारण वह दोनों व्यवहारों को करता है। अर्थात मनुष्य के आत्मा से मनुष्यों का व्यवहार और ईश्वर के आत्मा से ईश्वर का व्यवहार अर्थात चमत्कार दिखलाना।

मौलवी मुहम्मद कासिम साहब—वाह वाह! एक घर में दो तलवार क्योंकर रह सकती हैं? यह कहना पादरी साहब का अत्यन्त मिथ्या है। उसने तो कहीं नहीं कहा कि मैं ईश्वर हूं। तुम हठ से उसको ईश्वर बनाते हो।

पादरी नोबिल साहब—एक आयत अंजील को पढ़ो और कहा कि यह एक आयत है जिसमें मसीह ने अपने आपको ईश्वर कहा है और कई एक चमत्कार भी दिखलाये हैं। इससे उसके ईश्वर होने में कोई सन्देह नहीं हो सकता।

मौलवी मुहम्मद कासिम साहब—जो वह ईश्वर था तो अपने आपको फांसी से क्यों न बचा सका?

एक हिन्दुस्तानी पादरी साहब—कुरान में कई एक आयतों का परस्पर विरोध दिखलाया और कहा कि हुक्म का खण्डन हो सकता है, समाचार का नहीं हो सकता। सो आपके कुरान में समाचारों का खंडन है। पहले बैतुल-मुकद्दस की ओर सिर नवाते थे फिर काबे की ओर नवाने लगे। और कई आयतों का अर्थ भी सुनाया और कहा कि ईसामसीह पर विश्वास लाये बिना किसी की मुक्ति नहीं हो सकती और तुम्हारे कुरान में बाइबिल का और ईसा मसीह का मानना लिखा है। तुम लोग क्यों नहीं मानते हो?

ऐसी ही बातों के होते होते सन्ध्या हो गई।

दूसरे दिन की सभा

प्रातःकाल से सूर्य से सात बजे तक फिर आये, और वे पांच प्रश्न कि जो स्वीकार हो चुके थे पढ़े गए। वे पांच प्रश्न ये हैं—

१—सृष्टि को परमेश्वर ने किस चीज से, किस समय और किसलिए बनाया?

२—ईश्वर सबमें व्यापक है या नहीं?

३—ईश्वर न्यायकारी और दयालु किस प्रकार है?

४—वेद, बाइबिल और कुरान के ईश्वरोक्त होने में क्या प्रमाण है?

५—मुक्ति क्या है और किस प्रकार मिल सकती है?

इसके पश्चात कुछ देर तक यह बात आपस में होती रही कि एक दूसरे को कहता था कि पहले वह वर्णन करे। उपरान्त पादरी स्काट साहब ने पहले प्रश्न का उत्तर देना आरम्भ किया और यह भी कहा कि यद्यपि यह प्रश्न किसी काम का नहीं। मेरी समझ में ऐसे प्रश्न का उत्तर देना व्यर्थ है। परन्तु जबकि सबकी सम्मति है तो मैं इसका उत्तर देता हूं—

पादरी स्काट साहब—यद्यपि हम नहीं जानते कि ईश्वर ने यह संसार किस चीज से बनाया है। परन्तु इतना हम जान सकते हैं कि अभाव से भाव में लाया है। क्योंकि पहले सिवाय ईश्वर के दूसरा पदार्थ कुछ न था। उसने अपने हुक्म से सृष्टि को रचा है यद्यपि यह भी हम नहीं जान सकते कि उसने कब इस संसार को रचा परन्तु उसका आदि तो है वर्षों की गणना हमको नहीं जान पड़ती और न सिवाय ईश्वर के कोई जान सकता है। इसलिए इस बात पर अधिक कहना ठीक नहीं।

ईश्वर ने किसलिए इस जगत को रचा। यद्यपि इसका भी उत्तर हम लोग ठीक ठीक नहीं जान सकते परन्तु इतना हम जानते हैं कि संसार के सुख के लिये ईश्वर ने यह सृष्टि की है कि जिसमें हम लोग सुख पावें और सब प्रकार के आनन्द करें।

मौलवी मुहम्मद कासिम साहब—उसने अपने शरीर से प्रकट अर्थात उत्पन्न किया। उससे हम अलग नहीं। जो अलग होते तो उसकी प्रभुता में न होते। कब से यह संसार बना यह कहना व्यर्थ है। यह जगत सृष्टि के लिए रचा गया है, क्योंकि सब पदार्थ मनुष्य के लिए ईश्वर ने रचे हैं। और हमको अपनी भक्ति के लिए ईश्वर ने रचा है। देखो! पृथ्वी हमारे लिए है, हम पृथिवी के लिए नहीं। क्योंकि जो हम न हों तो पृथिवी की कुछ हानि नहीं। परन्तु पृथ्वी के न होने से हमारी बड़ी हानि होती है। ऐसे ही जल, वायु, अग्नि आदि सब पदार्थ मनुष्य के लिये रचे गये हैं। मनुष्य सब सृष्टि में श्रेष्ठ है। उसको बुद्धि भी इसी श्रेष्ठता की परीक्षा के लिए दी है अर्थात मनुष्य को अपनी भक्ति के लिए और इस जगत को मनुष्य के लिए ईश्वर ने रचा है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी—पहले मेरी सब मुसलमानो और ईसाइयों और सुनने वालों से यह प्रार्थना है कि यह मेला केवल सत्य के निर्णय के लिए किया गया है। और यह ही मेला करने वालो का प्रयोजन है कि देखें सब मतों में कौन सा मत सत्य है। जिसको सत्य समझें उसको अंगीकार करें। इसलिए यहां हार और जीत की अभिलाषा किसी को न करनी चाहिए। क्योंकि सज्जनों का यह ही मत होना चाहिए कि सत्य की सर्वदा जीत और असत्य की सर्वदा हार होती रहे। परन्तु जैसे मौलवी लोग कहते हैं कि पादरी साहब ने यह झूठ कही। ऐसे ही ईसाई कहते हैं कि मौलवी साहब ने यह बात झूठी कही ऐसा बार्ता करना उचित नहीं। विद्वानो के बीच यह नियम होना चाहिए कि अपने-अपने ज्ञान और विद्या के अनुसार सत्य का मंडन और असत्य का खंडन कोमल वाणी के साथ करें कि जिससे सब लोग प्रीति से मिलकर सत्य का प्रकाश करें। एक दूसरे की निन्दा करना, बुरे बुरे वचनो से बोलना, द्वेष से कहना कि यह हारा और मैं जीता, ऐसा नियम कदाचित न होना चाहिए। सब प्रकार पक्षपात छोड़कर सत्यभाषण करना सबको उचित है। और एक दूसरे से विरोधभाव करना यह अविद्वानों का स्वभाव है विद्वानों का नहीं। मेरे इस कहने का यह प्रयोजन है कि कोई इस मेले में अथवा और कहीं कठोर वचन का भाषण न करें।

(क्रमशः)

ईसाई बनाने की साजिश

(पृष्ठ ५ का शेष)

यर चर्च, नेपाल क्रिस्तिया, सगति, इंटरनेशनल नेपाल फैलोशिप और नेपाल इवेंजलिस्ट बैंड जैसी बीसियों बड़ी संस्थाएं करोड़ों अमेरिकी डालर के साथ धर्मान्तरण मुहिम मे कूद चुकी हैं।

अन्तरराष्ट्रीय दबाव

आतंकवादी संगठनों का इनसे गठजोड़ के और ठोस कारण इनके माध्यम से विश्व जनमत को अपनी ओर करना तथा अन्तर-राष्ट्रीय दबाव बनाना भी है।

ध्यान में रखने की बात है कि जब लोकतान्त्रिक व्यवस्था नेपाल में बनी तब ब्रितानी सांसद डेविड स्टार्किसन, क्रिश्चियन वोमेन वर्ल्ड आर्गेनाइजेशन (कनाडा) की महासचिव डोरेथ टैप्स, क्रिश्चियन सालिडेरेटी इंटरनेशनल के अध्यक्ष मेरेड सेलेडर क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता और सिद्धान्तकार डा० प्राइस और भारत स्थित ईसाई संगठन के प्रमुख जैक पटनायक ने नेपाल सरकार पर धार्मिक उदारीकरण के लिए सामूहिक दबाव डाला था।

१९९३ मे राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने राम शरण नेपाल उर्फ साइमन पीटर को फोर स्क्वायर चर्च को सक्रिय करने के एवज में विशेष भोज पर वाशिंगटन आमन्त्रित कर सम्मानित किया था।

यही नहीं जून ९१ में अमेरिकी कांग्रेस ने नेपाल की अन्तरिम सरकार को धार्मिक अधिकार के साथ-साथ 'धर्मान्तरण के अधिकार' को भी सुनिश्चित करने को कहा था। इसी तरह की आवाज ब्रिटिश तथा यूरोपीय देशों की संसद में उठी थी।

कट्टरपंथी संगठनों और आई.एस.आई. ने दूरगामी नीति के तहत नेपाल और सीमावर्ती क्षेत्रों स्थित मिशनरियों से नाता जोड़ा है। इन्हें लगता है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में आतंकवाद के दमन के खिलाफ मिशनरियों के माध्यम से पुरजोर आवाज उठेगी। क्योंकि इनके हाथों में पैसा भी है और पश्चिमी देशों की संमद भी।

वैसे भी उत्तर-पूर्वी राज्यों की तासीर ऐसी है कि आई.एस.आई. सीधा घुसपैठ नहीं कर सकती। म्यांमार और बांग्लादेश से अपेक्षित मदद नहीं मिलने और पूर्वोत्तर के आतंकवादी गुटों में तालमेल नहीं बैठने के कारण ही आई.एस.आई. चर्च का सहारा चाहती थी।

(दैनिक जागरण १७ सितम्बर से साभार)

वेद और कुरान की दृष्टि में

नारी जाति का महत्त्व

—उत्तमचन्द्र शरर

संसार की जनसंख्या का आधा भाग नारी जाति का है। यहां यह विचार करना है कि इस जाति के सम्बन्ध में वेद तथा कुरआन का दृष्टिकोण क्या है?

वेदों के अनेक मन्त्रों में नारी जाति का महत्त्व स्पष्ट रूप से वर्णित है। नारी का पुत्री, बहन, पत्नी तथा माता, इनमें कोई भी रूप हो, वह सदा पूज्या है, आदरणीय है। यजुर्वेद का एक मन्त्र देखिये:—

(१) इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति।
एता ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्॥
(य० ८।४३)

वेद में नारी का स्वरूप वैविध्यपूर्ण तथा मनोहर है। इडे=वह स्तुति के योग्य, हव्ये=स्वीकार करने योग्य, चन्द्रे=अत्यन्त आनन्द देने वाली, काम्ये=मनोहर रूपवाली, ज्योते=सुशीलतादि गुणों से प्रकाशित, सरस्वती प्रशंसनीय ज्ञान-विज्ञान से सम्पन्न, महि=पूजनीय विश्रुति=कीर्तिशाली, ऐसी मुझे सुकृतम्=उत्तम उपदेश किया करे। इसी प्रकार एक अन्य मन्त्र देखिए:—

(२) सुमंगली प्रतरणी गृहाणां सुशेवा पत्ये श्वसुराय शम्भूः।
(अथर्व० १४।२।२६)

अर्थात् प्रतरणी=पत्नी गृहस्थ जीवन को नौका की भांति पार करने वाली, पति के लिए कल्याण एवं सुख प्रद और सास-श्वसुर को सुख देने वाली होती है।

वेदों मे स्थान-स्थान पर नारी जाति को महत्त्व दिया गया है। वेद में उषा का वर्णन हो अथवा रात्रि का वर्णन, उनमें उपमा के द्वारा नारी जाति की महिमा का वर्णन मिलता है। वेद को परम प्रमाण मानने वाले महर्षि मनु ने तो नारी का महत्त्व इस प्रकार दर्शाया है—

(३) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों तथा उपदेशों में स्त्री और पुरुष को समानता का दर्जा देकर सम्मान दिया है। वेद और कुरआन के संकलन में नारी के सम्मान विषय पर श्री सुरेन्द्र सिंह कादियाणा ने यह स्वीकार किया है कि नारियों को वेद पढ़ने का अधिकार दयानन्द जी ने ही दिलाया (पृष्ठ ११२) इसी प्रकार भारतीय इतिहास में गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी, कात्यायनी इत्यादि विदुषी नारियों का वर्णन मिलता है, जिन्होंने विद्या के क्षेत्र में विद्वानों को भी शास्त्रार्थ में पराजित किया है। वेदों तथा वैदिक साहित्य में नारी को जो सम्मानित स्थान एवं पूज्य स्थान दिया गया है, विधर्मी भी उसे स्वीकार करते हैं। वैदिक युग की नारी को अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः।" (यजु० ३८।३) अर्थात् दानशीला, ऐश्वर्यवती तथा पगड़ी की भांति उन्नत बताया है।

कुरान की दृष्टि में नारी जाति का स्थान

(१) नारी जाति के लिए परदे का विधान बड़ा बन्धन है। नारी जाति विवाह से पूर्व तथा विवाह के बाद भी बन्धन से छू कर स्वतन्त्र नहीं हो सकती।

(२) तलाक का कानून—विवाह के पश्चात् पुरुष चाहे तो कभी भी तीन बार तलाक का शब्द बोलकर नारी को बेघर बना सकता है। नारी ऐसा नहीं कर सकती। वह यदि पुरुष को छोड़ना चाहे तो न्यायालय में अभियोग चलाना पड़ेगा, उसमें न्यायालय के आश्रित ही रहना पड़ेगा। पुरुष के लिए तो इतना पर्याप्त होता है कि जो रुपया विवाह के समय लिया है, उसको वापस करना पड़ता है। जब कि विवाह का सम्बन्ध केवल मात्र दो शरीरों का ही नहीं होता, बरन् दो आत्माओं का सम्बन्ध होता है।

(३) पुरुष को चार-चार विवाह करने की छूट—कुरआन के अनुसार पुरुष को चार विवाह करने की छूट होती है। और कोई पुरुष नहीं चाहता विवाह सम्बन्ध से बन्धने पर उसकी पत्नी के साथ गैर सम्बन्ध रखने वाला (रकीब) कोई दूसरा पुरुष हो, वैसे ही स्त्री भी सौतिन की डाह को कभी सहन नहीं कर सकती।

(४) कुरान की दृष्टि में स्त्री का क्या स्थान है—देखिये (क) "तुम्हारी स्त्रियां तुम्हारे लिये खेती के समान हैं, तो अपनी खेती में जिस तरह से चाहो जाओ।" (अलबकरा आ० २२३) (ख) "पुरुषों को स्त्रियों पर फजीलत (मस्ता) प्राप्त है।" (आ० २२८) (ग) पुरुष यदि तलाक देकर पुनः सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है तो कुरआन का आदेश है—जब तक यदि वह स्त्री दूसरे पति से विवाह कर ले, और दूसरा पति उसे तलाक दे दे: तो वह पूर्व पति उस स्त्री के साथ आवे में कोई दोष नहीं। (सूरा अलबकरा आ० २३०)

इसकी व्याख्या करना हमें अच्छा नहीं लग रहा है। सीता और सावित्री के देश में रहने वालों के लिए नारी जाति के प्रति इस अन्याय को समझ पाना अतीव दुष्कर है। और मुहम्मद साहिब की दस शादियों का वर्णन इस प्रकार है—"उन्होंने दूसरी शादी कराब की बुढ़िया सौदा से की, चौथी शादी हजरत उमैर की विधवा लड़की हफ्सा से की, पांचवीं शादी उमैर की विधवा लड़की हिन्द से की—दसवीं शादी एक विधवा मैमूनह से की। इस प्रकार मुहम्मद ने शादियां गृहस्थ का ऐश्वर्य भोगने के निमित्त नहीं की थीं, बरन् उनमें से अधिकांश को आश्रय देने के लिए अथवा उनकी तीव्र इच्छा को देखते हुए की गई थीं।" (वेद और कुरआन के संकलन कर्ता मुहम्मद फारूकी, पृ० २३४)

लेख लम्बा न हो जाये, इसलिये लेख को यहीं विराम देता हूं। मुसलमान दोस्त इसे उपयुक्त समझें या अनुपयुक्त, इस विषय में हम क्या कह सकते हैं। तसलीमा नसरीन की बगावत बता रही है कि सचाई पहाड़ों को भी चीर कर निकल आती है।

(इस घटना पर पाठकों का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि यह घटना बंगलादेश की है, जहां पर एक लेखिका तसलीमा नसरीन को वञ्चित कराने के लिए मुस्लिम कट्टरपन्थी गुटों ने एक आन्दोलन चला रखा है।)

महर्षि दयानन्द का त्रैतवाद

(पृष्ठ ७ का शेष)

आत्मसम्मान संसार को सुन्दर आनन्दमय बनाना तो उसके लिये सार्थक है जो इस संसार के अस्तित्व को मानता हो ।

ऋषि दयानन्द ने सार्वभौमिक नियम बनाया कि प्रत्येक को शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिये तत्पर रहना चाहिए । ऋषि का यह नियम बड़ा प्रतीकात्मक है । इस नियम में एक क्रम छिपा है । पहले शारीरिक उन्नति के विषय में कहा । बिना शारीरिक उन्नति किये आत्मिक विकास हो नहीं सकता । जैसे शारीरिक उन्नति आधार है आत्मिक उन्नति का इसी तरह भौतिक विकास भौतिक उन्नति आधार होती है आध्यात्मिक उन्नति की । जब जब तक समाज की भौतिक आवश्यकताएं पूरी नहीं हो जाती उसमें आध्यात्मिकता आ ही नहीं सकती । एक समाज जब तक भूखा है नंगा है कैसे सोच सकता है आत्मा परमात्मा की बातें । अगर एक भूखे आदमी से पूछो कि कितने होते हैं दो और दो । उसका उत्तर होगा चार रोटी । भूखे का भगवान तो चार रोटी ही है । भरा पेट ही आत्मा परमात्मा का चिन्तन कर सकता है ।

ऋषि दयानन्द ने वेदों को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया । ऋषि ने नारा दिया, ओ भारत के लोगो, ओ संसार के लोगो यदि सुख चाहते हो तो वेदों की ओर लौटो । आश्चर्य ! वेद में कहीं निराशा की बातें नहीं । वेद तो कहता है 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः । हे मनुष्य तू कर्म करता हुआ सौ वर्ष जीने की इच्छा कर । यह संसार त्यागना नहीं है बल्कि इसका त्याग पूर्वक उपभोग करना है और ऐसे उत्साह वर्धक सैकड़ो उद्धरण दिये जा सकते हैं वेदों के । पर जगन्मिथ्यावादी के लिए समझना कठिन होगा उसकी सब बातें निराशाजनक होंगी ।

शायद ही कोई ऐसा सन्यासी हुआ हो भारत के इतिहास में, ऋषि दयानन्द का दसवा भाग भी शायद किसी ने प्रयत्न किया हो भारत के आत्मसम्मान को पुनः जीवित करने का । ऋषि के मन्तव्य को जानने के लिए उन जैसी हृदय में अग्नि चाहिए । ऋषि दयानन्द इस अद्वैत के उसी तरह विरोधी थे जैसे सूर्य अन्धकार का । अद्वैत, जगत् मिथ्यावाद केवल तार्किक दृष्टि (तार्किकता) से ही नहीं अपितु अनैतिक भी है । अद्वैतवाद तार्किकता कैसे गलत है इसका विशद वर्णन सत्यार्थ प्रकाश में बड़े ही रोचक ढंग से किया है । ऋषि इसे किस रूप में अनैतिक मानते थे, क्यों मिथ्यावाद को समाप्त करने का विशेष पुरुषार्थ किया इस लेख से कुछ स्पष्ट करने का प्रयास किया है ।

समय के अनुसार कुछ समन्वय करना पड़ता पर कुछ विषय सामान्य दिखते हुए भी बड़े चमत्कारी होते हैं । ऋषि की सूक्ष्मेक्षिका की हम यूं ही उपेक्षा नहीं कर सकते । स्वामी दयानन्द द्वारा एक युगद्रष्टा द्वारा प्रतिपादित वेदों का सिद्धांत बड़े गहरे अर्थों को लिये हुए है । ऋषि कहता है—ब्रह्म भी सत्य है, जीव भी सत्य है, और संसार भी सत्य है । जब सत्य है तो अपना विकास अर्थात् आत्म विकास होना चाहिए । यह संसार भी सत्य है अतः इसे सुन्दर बनाने का प्रयास होना चाहिए तथा ब्रह्मानन्द की प्राप्ति के लिए प्रयत्न हो । त्रिकालत्रयी से ही जीवन की सार्थकता है । यही है ऋषि का त्रैतवाद ।

बागपत में वेद प्रचार अभियान एवं सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज बागपत द्वारा आयोजित वेद प्रचार अभियान के अन्तर्गत सामवेद पारायण यज्ञ ६ से ८ सितम्बर १९९४ तक सम्पन्न हुआ, जिसमें गुरुकुल प्रभात आश्रम के पारंगत श्री प्रवीणकुमार शास्त्री ब्रह्मा रहे तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरदेव आर्य ने अपनी विशिष्ट शैली से वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए वेदों का महत्व बताया, श्री जगवीरसिंह एडवोकेट, राकेश मोहन शर्मा ने वेदों की महत्ता पर प्रकाश डाला । स्व० मा० मुरारी-लाल जी की वैदिक महिमा तथा वैदिक महिमा तथा वैदिक महिमा तथा वैदिक धर्म स्तम्भ व सार्वदेशिक साहित्य जनता में निःशुल्क वितरित किया ।

—सत्यप्रकाश गौड़ मन्त्री

विदेश समाचार

अमरीका में चतुर्थ आर्य महा सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा अमरीका द्वारा आयोजित चतुर्थ आर्य महा सम्मेलन १९, २०, २१ अगस्त १९९४ को बड़ी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर न्यू जरसी के ऐतिहासिक नगर मोरिस टाउन के मेयर ने इन तीन दिनों को आर्य सम्मेलन घोषित करते हुए टाऊन हाल की पुस्तिका में दर्ज किया जिसकी प्रति सम्मेलन अध्यक्ष डा० राजेन्द्र गांधी को भेंट की।

पूर्व विघोषित तथा पञ्जीकृत २५० प्रतिनिधियों ने समवेत स्वर से आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान में सभी आर्य संस्थाओं के एकीकरण तथा उत्तरी अमेरिका में सत्य वैदिक प्रचार को तीव्रता देने हेतु संकल्प लिया।

१९ अगस्त को हैडक्वाटर होटल के सभागार में अमेरिका, कैनेडा के विविध भागों के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा कीनिया, आर्य प्र० सभा साउथ अफ्रीका तथा आर्य प्रतिनिधि सभा ट्रिनीडाड के प्रतिनिधियों का स्वागत तथा परिचय कार्यक्रम का संचालन डा० अजय गुप्ता तथा डा० प्रताप सिंघल ने किया। विभिन्न संस्थाओं तथा प्रतिनिधियों ने अपनी शुभकामनाएँ सम्मेलन के लिए प्रस्तुत की।

२० अगस्त को प्रातः ७ बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा प० रामलाल ने सन्ध्या ज्ञान तथा यज्ञ द्वारा सर्वकल्याण की प्रार्थना की। न्यू जर्सी के समृद्ध स्थान मोरिस टाउन के पांच सितारा होटल के भव्य सुसज्जित हाल 'टेरेस बाल रूम" में यज्ञ का आयोजन एक विशिष्ट घटना थी।

९ बजे उद्घाटन कार्यक्रम का संयोजन सम्मेलन अध्यक्ष डा० राजेन्द्र गांधी ने किया। प० धर्मजित जिज्ञासु द्वारा संगठन सूक्त तथा राष्ट्रीय प्रार्थना के पश्चात प० रामलाल ने स्वागत भाषण दिया। स्वामी ब्रह्मानन्द आनन्द आश्रम की गौरांग शिष्याओं के सस्वर 'पुरुष सूक्त गायन ने सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। ट्रिनीडाड की प्रथम सम्मानित पंडिता इन्द्राणी रामप्रसाद ने अपने ओजस्वी भाषण में महर्षि का सन्देश तथा सूरीनाम, गयाना तथा ट्रिनीडाड में आर्य समाज के विविध कार्यकलापों पर प्रकाश डालते हुए सम्भावित योजनाओं हेतु आकड़े प्रस्तुत किए। पेनसलवेनिया स्थित "आर्ष गुरुकुलम' के आचार्य स्वामी दयानन्द ने महर्षि दयानन्द को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वैदिक संस्कृति पर प्रकाश डाला। संयुक्त राष्ट्र संघ में नेपाल के राजदूत श्री जयराज आचार्य ने कहा कि २१ वीं शताब्दी के बहुदूषित वातावरण को केवल वैदिक संस्कृति ही बचा सकती है। आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के मन्त्री श्री गिरीश चन्द्र खोसला ने सभा द्वारा वेदप्रचार कार्यक्रम की जानकारी दी।

मध्याह्न का प्रथम अधिवेशन अत्यन्त ही महत्वपूर्ण था। जिसमें प्रख्यात वैज्ञानिकों, चिकित्सकों तथा बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैज्ञानिक डा० आदर्श दीपक ने की। साउथ केलिफोर्निया मेडिकल स्कूल के डीन तथा न्यूरालाजी के प्रोफेसर डा० श्रीकान्त मिश्रा ने अपना सारगर्भित भाषण "बुद्धि तथा शरीर पर वैदिक प्रभाव" पर दिया। कोर्टलैण्ड विश्वविद्यालय न्यूयार्क में भौतिकी के प्रोफेसर डा० रामचौधरी ने हिन्दी की उपादेयिता पर बल दिया। प्रख्यात आयुर्वेद चिकित्सक डा० वीरेन्द्र सोढ़ी ने अमेरिका में आयुर्वेद पर भाषण दिया तथा समाज सेवा के निर्देशक डा० भरत मोटवानी ने अपने विद्वतापूर्ण भाषण में कहा कि भारत वर्ष ही आर्यों की मूल भूमि है।

दूसरे अधिवेशन में वर्तमान समय में आर्य समाज की भूमिका व महत्व पर जिन प्रतिनिधि वक्ताओं ने अपने विचार रखे उनके नाम इस प्रकार है—श्री चमन लाल गुप्ता (आर्य समाज मिशीगन) मूल राज सेठी (आर्य समाज टोरान्टो कैनेडा) डी. डी. शर्मा (आर्य प्रतिनिधि सभा केनिया) प० सुरेश सुधीर (न्यू जर्सी आर्य समाज), आर. के. सहगल (आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई), त्रिभूवन साहु (आर्य समाज यू. एस ए. न्यूयार्क), डा० सालाराम (आर्य समाज होस्टन), विजय कपूर (ईस्ट-वेस्ट कलचरल सोसाइटी), विजय गोस्वामी (आर्य समाज न्यूयार्क), जय भगवान (आर्यसमाज सेगिन मिशीगन) सुभाष चन्द्र (डी. ए. वी. कालेज जलन्धर भारत) सभी वक्ताओं ने आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों की सराहना करते हुए पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम के अध्यक्ष डा० वीरेन्द्र सेठी थे जिसमें युव प्रतिनिधि आनन्द गान्धी, विक्रम गांधी, मनीष चड्ढा तथा दीपा ने संध्या पाठ बिना किसी पुस्तक के पढ़कर किया। अमेरिका में जन्मे तथा पोषित बच्चों के शुद्ध उच्चारण तथा मधुर स्वर ने सबको सम्मोहित कर दिया। अवधी सूपर तथा दीपा शर्मा आदि ने सुमधुर भजन गाए तथा ऋषि दयानन्द पर गीतिका प्रस्तुत की। कु० गीता चन्द्रन ने आकर्षक भारत नाट्यम प्रस्तुत किया।

२१ अगस्त को प्रातः श्रावणी तथा रक्षा बन्धन के अवसर पर यज्ञोपरान्त सबने यज्ञोपवीत बदले तथा बहनों ने रक्षा बन्धन बांधे। देश विदेश से पधारे आर्य बहिन भाईयों का यह अभूतपूर्व मिलन सबको भावमय कर गया। तत्पश्चात प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता श्री सुधीर बंसल ने की जिसमें श्री धर्मजित जिज्ञासु का यज्ञ पर प्रवचन हुआ, स्टीवन्स इन्स्टीयूट के डा० प्रसाद, सिटी यूनीवर्सिटी के डा० वेद ब्यात्रा ने अपने विचार रखे।

दूसरे अधिवेशन के अध्यक्ष डा० रमेश गुप्ता थे। विषय था 'वैदिक प्रचार तथा क्रियान्वयन" सभी वक्ताओं ने अपने अनुभवों के आधार पर वैदिक शिक्षा का प्रसार आधुनिक माध्यम से किस प्रकार हो अपने विचार रखें।

इस वर्ष का प्रमुख आकर्षण आर्य युवा सम्मेलन था जिसके संयोजक आनन्द गांधी व विक्रम गांधी थे। यह युवा सम्मेलन इतना रोचक रहा कि विद्वान, अनुभवी डाक्टरों ने युवाओं से बातचीत की, उनकी समस्याएं सुनी तथा उचित मार्ग दर्शन किया।

इस अवसर पर नन्हें मुन्नों को व्यस्त रखने तथा ऋषि गाथा भजन, मन्त्र आदि सिखाने का भार डा० अञ्जुली गुप्ता ने लिए। अत्यन्त ही मधुर वाणी में सौम्यतापूर्ण तरीके से बच्चों में संस्कार डाले गए तथा वैदिक ज्ञान दिया गया।

डा० राजेन्द्र गांधी (सम्मेलन अध्यक्ष), गिरीश चन्द्र खोसला (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा) ने सभी वक्ताओं, प्रतिनिधियों तथा कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया तथा सम्मान पत्र से विभूषित किया।

इस अवसर पर एक आकर्षक स्मारिका का प्रकाशन किया गया जिसका सम्पादन, व्यवस्थापन डा० प्रताप सिंघल, डा० अजय गुप्ता, लव शर्मा तथा विद्याभूषण गुप्ता ने किया।

अगला आर्य महासम्मेलन ४-५-६ अगस्त १९९५ को Lansing Michigan में होना निश्चित हुआ।

दिल्ली की आर्य समाजों के लिए प्रकाशन व्यवस्था

सार्वदेशिक प्रकाशन आर्य समाज की प्रमुख प्रकाशन संस्था है जिसका अपना प्रेस १४८८ पटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली में स्थित है। गत लगभग ५० वर्षों से यह प्रेस आर्य जगत की सेवा कर रहा है।

दिल्ली तथा आस-पास की आर्य समाजों से निवेदन है कि वे अपने छोटे-बड़े परचे, लेटर-पैड, विजिटिंग कार्ड, रसीद बुक इत्यादि सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागंज दिल्ली से ही छपवाएं।

लगभग सभी आर्य नेताओं, सन्यासियों इत्यादि के फोटो ब्लाक बिना किसी अतिरिक्त लागत के उपलब्ध करायें जायेंगे।

—विमल वधावन एडवोकेट
निदेशक, सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड
फोन निवास : ७२२४०६०

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४९/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२ १०-१९९७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (G)९३
R,N. 626/57 Licensed to post without prepayment licence No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 29,30 9 1994

वानप्रस्थ की दीक्षा ली

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री पं० शिवधर जी आर्य ने गत ११-९-९४ रविवार को बृहद्यज्ञ के साथ समारोह पूर्वक गुरुकुल के पवित्र यज्ञशाला में कुलाधिपति श्रद्धेय स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती (प्रधान) उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के करकमलों से वानप्रस्थ की दीक्षा ली। बिहार के पटना जिलान्तर्गत ब्यापुर निवासी ६३ वर्षीय श्री शिवधर जी गत ४४ वर्षों से सर्वतोमना समाज के प्रति समर्पित आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, बंगाल मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द के पावन सिद्धान्तों का प्रचार भजन एवं प्रवचन के माध्यम से उल्लेखनीय सेवा किये हैं। इसके अलावा उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, दार्जिलिंग तथा नेपाल में भी वैदिक धर्म का डंका बजाये हैं। दीक्षा समारोह में समुपस्थित गणमान्य महानुभावों मे श्री व्रतानन्द जी सरस्वती, श्री सुधानन्द जी सरस्वती, श्री मुरलीधर जी वानप्रस्थी, श्री कुंजदेव जी नैष्ठिक, पीताम्बर जी आर्य का नाम उल्लेखनीय है।

कर्मवीर शास्त्री

आर्यसमाज गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज संभाजीनगर द्वारा श्रावणी वेद सप्ताह निमित्त से महर्षि दयानन्द भवन में गायत्री महायज्ञ का आयोजन दिनांक २१-८-९४ से प्रारम्भ किया था हरिद्वार के पं० शंकरमित्र आर्य के प्रवचन हुये व प्रतिदिन सायं पिछड़े हुए हिन्दू समाज की बस्तियों मे यज्ञ का आयोजन किया गया था।

म० बालमीक समाज की बस्ती गौवीनगर के हनुमान मन्दिर तथा साबंगी ग्राम में भी कार्यक्रम हनुमान मन्दिर मे सम्पन्न हुआ। दिनांक २८ को गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई हिन्दू संगठनों के प्रमुख कार्यकर्ताओं के होते पूर्णाहुति हुई।

हिन्दी दिवस सम्पन्न

फतेहपुर स्थानीय महर्षि दयानन्द उच्च प्राथमिक विद्यालय में हिन्दी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुश्री अन्नपूर्णा भट्ट ने की। कार्यक्रम के संचालन कर्ता श्री महेन्द्र आर्य ने अपने भाषण के दौरान बताया कि हमें अपनी मातृभाषा हिन्दी का ही प्रयोग करना चाहिये। महर्षि दयानन्द टैगोर व गांधी इस बात से सहमत थे कि बच्चों की बुनियादी शिक्षा मातृभाषा मे ही होनी चाहिए आर्य ने बोलते हुए आगे कहा कि हिन्दी दिवस का प्रमुख सन्देश यह होना चाहिये कि हिन्दी के शिक्षाविद् हिन्दी के साहित्य की रचना करें। अन्त में अध्यक्षीय भाषण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर फिरोजपुर छावनी का वार्षिकोत्सव दिनांक ९-११-९४ से ११-११-९४ तक समाज मन्दिर में बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है। जिसमे आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान महात्मा आर्य भिक्षु वानप्रस्थी (ज्वालापुर) ब्र० आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता तथा आर्य भजनोपदेशक पं० सत्यपाल जी पथिक आदि विद्वान पधार रहे हैं। कार्यक्रम में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

दमा निवारण शिविर

शास्त्री बाल विद्या मन्दिर निरपुड़ा मेरठ में १८,१९,२० अक्तूबर १९९४ में सामवेदीय यज्ञ के साथ दमा निवारण शिविर और युवा मातृ तथा सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन का आयोजन कर रही है। इस अवसर पर आप अधिक से अधिक संख्या में पधार कर लाभ उठायें।

आचार्य युधिष्ठिर मीमांसक को श्रद्धाञ्जलि

सर्वोदय डिग्री कालेज घोसी जनपद मऊ (उ० प्र०) के संस्कृत विभाग के छात्रों ने नवीन सत्र प्रारम्भ होने पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् महामहोपाध्याय आचार्य युधिष्ठिर मीमांसक को श्रद्धाञ्जलि समर्पित की। इसके पहले विभाग के प्राध्यापक डा० सुमेधामित्र वेदालंकार ने दिवंगत आचार्य के जीवन एवं कार्य पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज आनन्द विहार दिल्ली में

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज आनन्द विहार दिल्ली ९२ में दिनांक २६ सितम्बर से २ अक्तूबर तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा० प्रेमचन्द श्रीधर का प्रतिदिन प्रातः में ९ बजे से १० बजे तक प्रवचन होगा तथा रात्रि ८ बजे से ९ बजे तक प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री गुलाबसिंह राघव द्वारा मनोहारी भजन होंगे। मुख्य कार्यक्रम २ अक्टूबर रविवार को सम्पन्न होगा। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दूरभाष । ११ ० | वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १ रुपया
वर्ष ३२ अंक ३५] | दयानन्दाब्द १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ | आश्विन शु० ५ स० २०५१ ९ अक्तूबर १९९४

प्लेग से छुटकारा पाने के लिए स्थान-स्थान तथा घर-घर में यज्ञ किये जावें

समस्त आर्य समाजों को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का निर्देश

दिल्ली ४ अक्तूबर। पूरा राष्ट्र इस समय प्लेग जैसी भयंकर बीमारी से आतंकित है इस समस्या के निदान के लिए पूरे देश में घर-घर यज्ञों का आयोजन करना आवश्यक है यह विचार प्रकट करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने समूचे आर्य जगत को आह्वान किया है कि आर्य समाजों की ओर से घर घर गली मोहल्ले और सार्वजनिक स्थलों पर सामूहिक यज्ञों के आयोजन किये जावें। यज्ञ में प्रयोग की जाने वाली सामग्री में तुलसी तथा नीम के पत्ते भी मिलाये जावें। अग्नि प्रज्वलित करने के लिए कपूर का ही प्रयोग किया जावे। दैनिक यज्ञ के मन्त्रों के अतिरिक्त गायत्री मन्त्र का भी उच्चारण करके आहुतियां डाली जावें क्योंकि गायत्री मन्त्र का उच्चारण साधारण जनता के लिए रुचिकर रहता है।

स्वामी जी ने कहा वर्तमान समय में औद्योगीकरण की बढ़ती रफ्तार के कारण समूचा वायुमण्डल प्रदूषित हो चुका है और प्लेग के कीटाणु इधर उधर वायुमण्डल में फैल रहे हैं इसलिए वायुमण्डल की शुद्धि की आवश्यकता है। यह कार्य सामूहिक यज्ञों तथा बृहद यज्ञों से ही सम्भव हो सकता है। स्वामी जी ने कहा प्लेग के नाम पर पाकिस्तान आदि देशों ने भारत की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति को मलिन करने का प्रयत्न किया है इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि राष्ट्र की जनता अपनी प्राचीन वैदिक यज्ञ परम्परा का आयोजन करके विश्व को यह दिखा दे कि यज्ञों से असाध्य रोग दूर ही नहीं भागते हैं अपितु पूरा वायुमण्डल भी प्रदूषण मुक्त होता है।

स्वामी आनन्दबोध जी अस्वस्थ

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती बत्रा हस्पताल से उपचार के बाद सभा कार्यालय में आ गये हैं बहुत सारे आर्य जनों और शुभ चिन्तकों ने उनके स्वास्थ्य के विषय में पत्र व तार भेजकर जानकारी चाही है इसलिए सभी आर्य जनों और शुभ चिन्तकों को सूचित किया जाता है कि स्वामी जी का स्वास्थ्य अभी ठीक नहीं है और शारीरिक कमजोरी बहुत अधिक है। उपचार पूरी तरह चल रहा है हम सब उनके स्वास्थ्य लाभ की परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक १६-१०-९४ को होगी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आगामी अन्तरंग बैठक १६-१०-९४ को प्रातः ११ बजे से आर्य समाज दीवानहाल, दिल्ली में होने जा रही है। अन्तरंग सदस्यों के आवास व भोजन की व्यवस्था वहीं पर रहेगी।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

आरक्षण विरोधियों पर गोली काण्ड की निन्दा

दिल्ली। उत्तरप्रदेश के पर्वतीय जिलों से दिल्ली में आयोजित आरक्षण विरोधी रैली में भाग लेने आ रहे निहत्थे लोगों पर मुजफ्फर नगर के पास पुलिस ने गोलियों से जो निर्मम हत्यायें की और औरतों तथा बच्चों के साथ जो दुर्व्यवहार किया है उससे पूरे राष्ट्र का सिर शर्म से झुक गया है। इस घटना ने जलियांवाला बाग की याद को ताजा कर दिया है।

इस घटना की सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कड़े शब्दों में निन्दा करते हुए केन्द्र सरकार से मांग की है कि वह इस अन्याय और बर्बरता पूर्ण कार्य के लिए जिम्मेदार लोगों को पकड़वाकर उन्हें कड़ा से कड़ा दण्ड देने की व्यवस्था करे। स्वामी जी ने शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हुए मांग की है कि प्रभावित परिवारों को उचित मुआवजे की व्यवस्था की जावे।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सम्पादकीय

प्लेग से लड़िए

महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में अपना असर दिखाने के बाद प्लेग अब गुजरात के सूरत शहर और उसके आसपास के कस्बों में आ फैला है। चूंकि प्लेग हवा से फैलता है इसलिए इसका रोकथाम दूसरी महामारियों की अपेक्षा कहीं ज्यादा मुश्किल हो जाती है। प्लेग होने के बाद जल्द ही यह संक्रामक भी हो जाता है इसलिए इसकी रोकथाम डाक्टरों के लिए एक हिमालय जैसा कठिन बेशक असाध्य नहीं काम हो जाता है। जब प्राकृतिक आपदा फैलती है तो उस वक्त मनुष्य के श्रेष्ठतम प्रयत्न भी अगर असफल रहे हों तो मनुष्य को बहुत ज्यादा दोषी करार देकर हम कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। लेकिन बताना फिर भी पड़ेगा कि प्लेग के फैलाव को जिस गंभीरतापूर्वक लोगों के बीच चेतावनी के साथ बताया जाना चाहिए था उसमें कहीं न कहीं कोताही जरूर हुई है। शुरू में यहां तक कह दिया गया कि महाराष्ट्र में जो फैला है वह प्लेग नहीं था जबकि हम सब जानते हैं कि वहां के डाक्टर अपनी पूरी लड़ाई प्लेग के खिलाफ ही लड़ रहे थे और अब सूरत में १००से अधिक लोगों के मर जाने की भीषण दुर्घटना के बाद यह कहना संभव नहीं रहा कि यह प्लेग नहीं है। परन्तु अभी भी कहीं न कहीं इसके प्लेग न होने की बात लोगों के बीच कही जा रही है। हो सकता है कि उद्देश्य यह हो कि लोगों के बीच आतंक न फैले और उनमें अपने घर छोड़ने की भगदड़ पैदा न हो। जाहिर है कि जब गलियों में लोग प्लेग से मर रहे होंगे, तो वह मौत उस सरकारी सूचना से, जो कहती है कि यह प्लेग नहीं है कहीं ज्यादा और भयानक जानकारी हर व्यक्ति को दे जाती है। इसलिए महाराष्ट्र और गुजरात सरकारों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि लोगों को बतायें कि जो महामारी फैल रही है, वह प्लेग है, इसके विषाणु हवा से फैलते हैं और होने के शीघ्र बाद यह रोग संक्रामक बन जाता है इसलिए लोग जहां हैं वहीं निरोधक दवाइयां लेकर इसका सामना करें और उसे खत्म करें क्योंकि उसके भागने से न केवल प्लेग उनका पीछा नहीं छोड़ेगा बल्कि उपचार में भी कठिनाइयां पैदा होंगी।

निश्चित ही प्लेग असाध्य या दुःसाध्य नहीं है बेशक थोड़ा समय इसे खत्म करने में जरूर लग सकता है। जिस तादाद में दवाइयों की गोलियां और कैप्सूल गुजरात और महाराष्ट्र के प्लेगग्रस्त इलाकों में भेजे गए हैं उससे लोगों में भरोसा पैदा होना चाहिए कि उनका यह देश स्वास्थ्य विज्ञान के मामले में इतनी तरक्की कर चुका है कि वह बड़ी से बड़ी महामारियों को भी ज्यादा फैलने से पूर्व ही जड़ से उखाड़ दे। डाक्टरों का यह कहना कि मनुष्यों में प्लेग पर नियन्त्रण पा लिया गया था किन्तु चूहों आदि पर नहीं वर्तमान समस्या के बारे में सोचने के नये आयाम पेश करता है क्योंकि जिन चूहों के कारण यह फैलता है उन्हीं में से उसका समूल उन्मूलन नहीं किया गया था, तो यह कहना कि प्लेग को खत्म कर दिया गया है थोड़ा अतिरंजित दावा माना जायेगा। बात यहीं उभर कर सामने आती है कि वर्तमान में फैल रहे प्लेग को उन्हीं इलाकों में दबा कर फिर जल्दी ऐसे डाक्टरी कदमों पर विचार किया जाये जिससे यह महामारी फिर न फैलने का नाम न ले।

वर्तमान परिस्थितियों में सबसे महत्वपूर्ण कार्य घर-घर में गली गली में यज्ञ करना है। इस प्रदूषित वातावरण को दूर करने के लिए और किसी भी महामारी से निपटने के लिए इससे अच्छा कार्य और कोई नहीं हो सकता अतः आप सभी आर्य बन्धुओं तथा नागरिकों से निवेदन है कि अपने अपने क्षेत्र में यज्ञों का आयोजन कर वातावरण को शुद्ध करें तथा अन्य लोगों को इस कार्य के लिए प्रेरित करें।

आर्यसमाज रीवा द्वारा वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज रीवा द्वारा श्रावणी पर्व दि० २१-८-९४ से २९-८-९४ तक बड़े उत्साह के साथ भजनोपदेश एवं वेद व्याख्यान आयोजित कर मनाया गया। प्रातः प्रतिदिन प्रातः ८ से १०.३० बजे तक यज्ञ हवन भजनोपदेश एवं वेद व्याख्यान आर्य समाज, घोघर, रीवा में हुए। सायं ६.३० से ८.३० बजे तक धर्मोपदेश एवं वेद व्याख्यान सिरमौर चौराहा, बिरहुला एवं मानस भवन में आयोजित हुए। दूर से पधारे आर्य विद्वान श्री सत्यदेव शास्त्री के वेद व्याख्यान बहुत आकर्षक रहे।

प्लेग की रोकथाम के लिए दिल्ली में आर्य समाजों द्वारा विशेष यज्ञों का आयोजन

दिल्ली ४ अक्तूबर। आर्य समाज दीवानहाल के मन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने आज एक प्रेस वक्तव्य में बताया है कि दिल्ली में प्लेग की रोक थाम के लिए पूरी दिल्ली में आर्य समाजों द्वारा विशेष यज्ञों का आयोजन किया जा रहा है।

आर्यसमाज दीवान हाल की ओर से चांदनीचौक घण्टाघर पर २-१०-९४ से बृहद यज्ञ प्रारम्भ हो गया है। इस यज्ञ में आयुर्वेदिक औषधि युक्त सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है ताकि दिल्ली तथा उसके आस-पास वायुमण्डल के पर्यावरण को शुद्ध करके लोगों को प्लेग के आतंक से मुक्त किया जा सके। यज्ञ का कार्यक्रम अभी निरन्तर चलते रहेगा और पूर्णाहुति के अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से इसमें आहुतियां दी जायेंगी।

आर्य समाजों के लिए सुखमय सूचना

आर्य बन्धुओ !

पशुधन विशेषकर गऊएं प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक रही हैं। गाय को माता के समान पूज्य माना गया है। गाय भारत की जीवन पद्धति से तबसे जुड़ी है जबसे लिखित इतिहास भी शुरू नहीं हुआ था। प्राचीन समय से ही दुग्धाक नन्दनी एवं कामधेनु जैसी गायों की अपनी अलग कीर्तिगाथा रही है। राजकुमार वसुदेव के पुत्र श्री कृष्ण का नाम तो गऊओं के साथ जुड़ गया जिससे उन्हें गोपाल कृष्ण समवाचक नाम से जाना जाता है।

स्वामी दयानन्द तथा महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने गाय को अर्थतन्त्र की रीढ़ बताया था। ग्रामीण जीवन का तो मुख्य आधार ही गाय है। आर्य समाज ने गोवध बन्द के अनेक सफल आन्दोलन किए और प्रत्येक जयघोष के साथ गऊमाता की जय बोलते हैं और गऊओं की रक्षा व पालन का व्रत दोहराते हैं। लेकिन गोरक्षा आज एक कठिन समस्या बनी हुई है। गाय का आदर विशिष्ट गुणों के आधार पर होना चाहिए।

गाय के प्रति अपनी इसी आस्था को मूतरूप देने के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से देश की राजधानी दिल्ली के पूर्वी क्षेत्र गाजीपुर गांव के १२.५ एकड़ विशाल भूखण्ड पर वर्ष १९९२ के जनवरी माह में महर्षि दयानन्द गोसंवर्धन दुग्ध केन्द्र की स्थापना की जा चुकी है जहां पर सम्प्रति ११० पशु, गाय, बछिया, बछड़े अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं। जिनकी देखभाल पालन कार्य यथावत अनुभवी व्यक्ति कर रहे हैं। आप भी अगर इस अभियान में योगदान देना चाहते हैं तो आप अपनी समाज के लिए गऊशाला में उपस्थित एक गऊ को गोद ले सकते हैं। अपने द्वारा सुझाए विचारे नाम का वैदिक संस्कृति के अनुसार नामकरण संस्कार करके गऊ को गोद लेकर गऊ रक्षा के कोवत पूरा करें। आप गऊशाला में दूरभाष २४१६२२० पर सम्पर्क करके अपना यथावत सहयोग कर अपनी अन्तरात्मा को पवित्र कीजिए।

इसके अलावा अगर कोई आर्य परिवार अपने परिवार के लिए किसी गाय को गोद लेना चाहता है तो ले सकता है। आप सप्ताह दस दिन में आकर अपनी गाय का निरीक्षण आवश्यक सुझाव पालन एवं देखभाल सम्बन्धित व्यवस्था अपने छोटे नन्हे मुन्नों के साथ अपनी गोद की गाय और उसके शिशु के साथ खेल कूदकर मनोरंजन कर सकते हैं। आपका उचित सुझाव सर्वोपरि मान्य होगा। आशा है आप इस गोरक्षा अभियान यज्ञ में अपनी यथाशक्ति आहुति देकर कृतार्थ करेंगे। धन्यवाद,

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

अपराध बोध से बचें

डा० जयवीर सिंह

अपराध-बोध वह भावना है जिसने मानव सभ्यता को जकड़कर सताया है। सारी नकारात्मक भावनाओं में यह सबसे अधिक खतरनाक है। अपराध-बोध का भाव मन में कब कुण्डली मारकर बैठ जाये, कहना मुश्किल है और जब एक बार मनोजगत में घुस तो जाये, फिर तो वह पसरकर बैठा ही रहता है। कुछ विशेषज्ञ तो इसे मनोविज्ञान का घुन कहते हैं, अन्दर ही अन्दर व्यक्ति को खोखला कर देने वाला घुन।

अपराध-बोध पैदा कैसे होता है—जब कोई व्यक्ति ऐसा कार्य कर जाता है जो समाज या स्व के स्थापित मानदण्डों के प्रतिकूल होता है तो व्यक्ति अपराध बोध से भर उठता है। जब व्यक्ति को यह भान होता है कि उसकी निष्फलता उसी के द्वारा आमन्त्रित है तो वह मनस्ताप की अग्नि में सुलगने लगता है क्योंकि वह जानता है—काश! उसने ध्यान दिया होता, कदाचित उसने कुछ और मेहनत की होती तो उसे यह दिन देखना ही क्यों पड़ता? मनोवैज्ञानिक अपराध-बोध को स्व-दण्ड प्रक्रिया का एक रूप मानते हैं। अपने हेय कार्य, ओछे विचार या निष्फलता से उत्पन्न आवेग अपराध का स्वरूप धारण करता है क्योंकि व्यक्ति अपने आपको दण्ड देकर अभाव की पूर्ति करना चाहता है। इसी क्षति-पूर्ति का उदाहरण कहा जा सकता है।

अपराध बोध का सामाजिक पहलू—निःसन्देह देखिए, अपराध-बोध से पीड़ित तो व्यक्ति विशेष होता है किन्तु इसे उत्पन्न करने की उर्वरा भूमि समाज होती है। समाज भी कौन सा? अपने चहेतों, अपने प्रेमियों का समाज। अपने घर के लोग माता-पिता, भाई-बहिन, पति-पत्नी या अन्य सगे सम्बन्धी जब दुत्कार देते हैं तो व्यक्ति के मन में अपराध-बोध का बीज आरोपित हो जाता है। अभिन्न मित्र, प्रेमी-प्रेमिका, अध्यापक गुरु कोई भी हो सकता है जो आपके मन में अपराध-बोध जगाये। सच तो यह है कि हमारे आसपास के लोग हमारा मन समझने लगें तो हमें यह व्याधि हो ही नहीं।

आपसी सम्बन्ध जब ठेस पहुंचाये—जब माता-पिता ही बच्चों से कहें—'तुम्हें हम प्यार क्यों दें? तुम बेकार हो, निकम्मे हो। तुमसे भला कुत्ता...।' जब पत्नी ही पति को दुत्कारे और उसे निर्धनता का मर्म छिद्र करने पर उतारू हो जाये या पति भरी खोटी सुना सुनाकर पत्नी को हेठी कहे तब अपराध-बोध होने का खतरा हो सकता है। जिसे हम दिल से चाहें वहीं जब बार-बार चोट दिखाने पर आमादा हो जाये तो ठेस लगेगी ही। यदि यह ठेस नकारात्मक पक्ष की ओर मुड़ जाये तो यह अपराध-बोध की जबरदस्त अख्तियार कर लेती है। कभी-कभी ठेस सकारात्मक पक्ष की ओर भी हो जाती है, इस सूरत में व्यक्ति को स्वअस्तित्व का ज्ञान, आत्म का भान रहता है और तब वह अपराध-बोध के पास फटकने भी नहीं देता है। ऐसे विरले व्यक्ति अपने क्षेत्र में अनूठे कीर्तिमान बनाते हैं।

धर्म की भूमिका—प्रायः प्रत्येक धर्म में प्रायश्चित और सुधार की सीख दी जाती है। वस्तुतः धर्म की भूमिका मानव के लिए सकारात्मक मन तैयार करती है किन्तु धर्म के ठेकेदार, तथाकथित गुरु और त्रुटिपूर्ण विश्लेषक वगैरह इस पहलू को तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं। परिणाम यह होता है कि धर्मभीरु व्यक्ति अपराध-बोध के फेर में पड़ जाता है आनन्द, सुख प्रसन्नता, उपलब्धि यहां तक कि शिक्षा-ज्ञान, अपना शरीर, मन हर वस्तु उन्हें गन्दी, विकृत व अवांछित दिखने लगती है। ऐसे भोले-भाले धर्मभीरु व्यक्ति अवांछित होंगे जो धार्मिक उपदेशों में वर्णित उच्च आदर्शों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते और तब अपराध-बोध से ग्रसित होने को बाध्य होते हैं।

अपराध-बोध आत्मबोध नहीं है—तथाकथित धार्मिक और विज्ञान वर्ग के लोग आत्मबोध से अपराध-बोध की व्याख्या उस ढंग रूप से करते हैं मानो ये दोनों एक हैं। आत्मबोध में स्व के विश्लेषण की प्रखरता व्यक्तित्व निर्माण की आकांक्षा और प्रगति का सन्देश निहित रहता है। आत्मबोध प्रगति का अनूप ऊंचा किन्तु व्यावहारिक सोपान है जबकि अपराध-बोध 'कुछ' को भी 'कुछ नहीं' में बदलकर व्यक्ति को नगण्य व तिरस्कृत करता है। अपराध-बोध एक भंवर है जिसमें पड़कर व्यक्ति कीड़े-मकोड़े का जीवन जीने को बाध्य होता है जबकि आत्मबोध वह उज्ज्वल प्रकाश है जिससे मानवता अनन्त काल से प्रकाशित है।

अपराध-बोध का साया जब घर से जाता—जी हां, यह साया एक बार पड़ जाये तो तन-मन विकल हो जाता है। अधिकतर अपराध-बोध से व्यक्ति भयंकर तनाव में रहता है। तनाव से अनेक मानसिक और दैहिक रोग उत्पन्न होते हैं। ऐसे व्यक्ति की कार्यकुशलता का क्षरण हो जाता है। उसका मन उखड़ा-उखड़ा रहता है। किसी कार्य में ध्यान नहीं लग पाता। रोग से भी घनेरे होते हैं होते हैं तो ठीक होने में काफी समय लगा देते हैं। इन तथ्यों के वैज्ञानिक आधार हैं कि जिस मनुष्य की काया पर अपराध बोध का साया हो जाये वह निरोगी रह नहीं सकता।

समस्या का निवारण—अपराध बोध मन में न आ सके, इसके लिए कुछ उपक्रम आवश्यक हैं यदि इन पर ध्यान दिया जाये तो इस समस्या से मुक्त रहा जा सकता है।

—हौंसला हमेशा बनाये रखें। कोई त्रुटि, भूल, निष्फलता, हानि हो भी गयी हो तो जाने दीजिए, अपना बहुमूल्य 'आत्मविश्वास' क्यों खोते हैं?

—अपने दुर्गुणों, दुर्बलता, कमी को ही न देखें, अपने गुणों को भी तो जानिये? अपनी कीमत और अपनी ताकत जो व्यक्ति नहीं जानते वे ही अपराध बोध का शिकार होते हैं। अतः अपनी शक्ति को पहचानिए।

—अपना विश्लेषण करें, त्रुटि देखें लेकिन साथ ही अपने सुधार के लिए योजना भी तो बनायें। मानव-जीवन की सार्थकता सुधार में है, निर्माण में है, न कि विनाश में।

त्रिभाषा—सूत्र (४)

भारत की मूल भाषा, संस्कृत बहिष्कृत — देश-विभाजक भाषा, उर्दू तुष्टीकृत

भारत की राष्ट्रभाषा, हिन्दी तिरस्कृत — दासता की भाषा, अंग्रेजी पुरस्कृत

—ब्रह्मदत्त दीक्षित

संस्कृत जैसी सक्षम और पुरातन भाषा

"संस्कृत जैसी सक्षम और पुरातन भाषा विश्व में नहीं। प्राचीनतम शब्द आज तक ज्यों के त्यों हैं। पुराने शब्द कायम रहे उनमें नए अर्थ भरते रहे। पुराने शब्द की शक्ति और नए अर्थ की मधुरता दोनों मिलकर भारत की कितनी ही क्रान्तियां पार कर ली गईं। संस्कृत के शब्द सदा बोलते रहे। शब्द प्राणवान बनते रहे यहां के शब्द यहां की धरती, मन, मस्तिष्क से जुड़े रहे। शब्द-शक्ति उत्थान की ओर रही। यही तो संस्कृत की जीवन्तता का गौरव है।"

शिक्षा नीति के अन्य अंशों को छोड़कर यदि मात्र 'त्रिभाषा-सूत्र' पर ही सतही तौर पर विचार किया जाय तो निम्नांकित तथ्य स्पष्ट होकर सामने आ जाते हैं जो देश के अभ्युदय के लिए बाधक तत्त्व हैं।
१—देश चतुर्दिक रूप से खण्डित होता है जब कि एकता और अखण्डता का (झूठा) नारा दिन रात लगाया जाता है।

हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी

२—हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी—अंग्रेजी परस्त अखबारों और चालाक राजनीतिज्ञों ने हिन्दी-बैल्ट (पट्टी) अहिन्दी बेल्ट (पट्टी) का प्रचार जोर-शोर से प्रारम्भ कर दिया है देश के मानस को भ्रमित करने के लिए। जिससे जन-मानस में हिन्दी-भारत और अहिन्दी भारत सम्बन्धी पृथकता की भावना अंकुरित हो जाय जिसका लाभ भविष्य में पुनः देश-विभाजन के रूप में उठाया जा सके। अंग्रेजियत की मूल भावना में इस प्रवृत्ति के बीज सदा से विद्यमान रहे हैं।

३—मुस्लिम प्रभावी क्षेत्र की दुष्कल्पना—एक समुदाय विशेष को समाज की समान नागरिकता से अलग करके तथा एक अलग नया साम्प्रदायिक समानान्तर समुदाय निर्मित करके देश की राष्ट्रीय एकता और अखण्डता में पुनः विभाजन को उकसाना एवं अन्य ऐसे ही बनावटी सम्प्रदायों को खड़ा होने के लिए अवसर प्रदान करना क्या किसी भयावह पृथकता सूचक प्रवृत्ति का द्योतक नहीं है? जब कि तथाकथित सम्प्रदाय इसी देश की जनता में उपजा और सैकड़ों वर्षों से साथ-साथ रहता आया है। साथ-साथ गरीबी अमीरी देखी और जीवन के सारे कार्यकलापों में परस्परावलम्बन की भूमिका अबोध-रूप से निभाते आ रहे हैं, इसमें राजनीतिज्ञों की उस दुरभि संधि की दुर्गन्ध आती मालूम होती है जिसे बिखराव के विचार में उनकी कुर्सी की भूख पूरी होती है। बिना दो को लड़ाए सत्ता, सम्पत्ति का राज कैसे मिलेगा?

नया उभारा हुआ अंग्रेजी परस्त क्षेत्र

४—नया उभारा हुआ अंग्रेजी-परस्त क्षेत्र—भारत के उत्तर-पूर्वी सीमा पर तथा दूर दक्षिण-पश्चिमी कोने में अत्यन्त छोटे-छोटे जन समूहों को समानान्तर राज्यों की संज्ञा देकर उभारना और उन्हें विदेशों से आयातित धर्म, सम्प्रदाय, रहन-सहन, भाषा, भेष आदि से सजाना तथा भारत देश की मूल धारा से विलग करना योजना बद्ध होकर—क्या किसी विकृत स्वार्थ विशेष का सीधा लक्षण नहीं है? क्या स्वार्थ प्रेरित ये विकट रचनाएं भविष्य में किसी बड़े संकट को प्रस्तुत करने में समर्थ नहीं होंगी जब उनके साम्प्रदायिक प्रभावों का नियन्त्रण किसी विदेशी बहुसंख्यक धार्मिक वर्ग या मठ से जुड़ा होगा? क्योंकि अपनी मातृभाषा अंग्रेजी बताकर विदेशी भाषा को त्रिकाल तक इस देश में टिकाए रखने का कारण नहीं बनेंगी तथा दूसरी ओर विदेशी परवशता के षड्यन्त्र का वाहक नहीं बनेंगी? इस भयावह दूरगामी षड्यन्त्र की रचना क्यों?

अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक

५—अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक—नामों का विकृत निर्धारण—संसार के किसी देश ने इन नामों के द्वारा अपनी आबादी का विभाजन नहीं किया है जब कि सभी देशों में सर्वत्र मुसलमान, ईसाई, यहूदी हिन्दू, सिक्ख, बौद्ध, जैन, आदि नाना प्रकार के सम्प्रदाय अभी भी रह रहे हैं और देश की समान धारा में समान नागरिक अधिकारों के समान भागीदार होते हैं। सबकी सभ्यता, संस्कृति राष्ट्रभाषा देश की अस्मिता से जुड़ी रहती है। किन्तु भारत जैसा दुखदायी विभाजन कहीं नहीं मिलेगा। यहां तो गरीबी, अमीरी भी राजनीतिज्ञों ने हजारों तथाकथित जातियों में बांट रखी है। नाना प्रकार के पेशों को ही जाति-संज्ञा दे बैठे मात्र सत्ता प्राप्ति के लिए ये नकली जातिगत प्रमाद को बढ़ावा मिलता है। जनतन्त्र का आधार 'समान नागरिकता समान अवसर' कुण्ठित हो रहा है। मानवीय संविधान का लक्ष्य क्या इस दुष्प्रवृत्ति से कलंकित नहीं होता है?

त्रिभाषा सूत्र की अस्पष्टता

६—इस सूत्र की अस्पष्टता—इस सूत्र में कई प्रकार के चातुर्य-कौशल छिपे पड़े हैं। प्रथम विकल्प में मातृभाषा का उल्लेख है। भारत के कितने ही प्रदेश ऐसे हैं जहां पर मातृ भाषाएं भिन्न-भिन्न हैं। यदि कहीं बौद्धिक विचार-संघर्ष पैदा हो गया तो मातृभाषा क्या क्षेत्रीय भाषा का स्थान निर्णय भी एक घोर एवं कटु विवाद का गम्भीर विषय बन जायेगा। स्मरण रहे भारत में एक राजनैतिक दल ऐसा ही विचार संघर्ष पैदा कर चुका है। उसका प्रत्यावर्तन होते देर न लगेगी क्योंकि यह संघर्ष किसी विशेष स्वार्थ का सम्बल होगा। क्या वर्तमान सत्ताधीश ऐसे ही नाना प्रकार के झमेले पैदा करके समस्याओं को लम्बायमान करके 'अंग्रेजी एवं अंग्रेजियत को अधिकाधिक टिकाए रखकर उसे स्थायी बनाने का इरादा पुष्ट नहीं किए जा रहे हैं और इस प्रकार के विकृत विकल्प देकर भोले जनमानस को दीर्घजीवी झूले में झुला कर अपने स्वार्थी उद्देश्य की पूर्ति करने में व्यस्त नहीं है? अंग्रेजी एवं अंग्रेजियत से आखिर इतना व्यामोह क्यों? आज भी आजादी के ४७ वर्ष बीत जाने पर भी भारतवासी की रोजी-रोटी (अच्छी) मात्र अंग्रेजी ज्ञान की खूंटी पर ही टिकी हुई है। आज भी श्री रुद्र प्रसाद पाठक जैसे कितने ही भारतीय संतति के युवा निर्माताओं को मरणकारी अनशन का संकल्प लेकर बैठना पड़ रहा है केवल इसलिए कि वे अपनी राष्ट्रभाषा द्वारा शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं। आजादी और उसमें यह त्रासदी क्या मेल खाता है?

(क्रमशः)

मेला चांदापुर-शास्त्रार्थ

महर्षि दयानन्द और शंका समाधान (२)

सत्य धर्म विचार तथा अन्य अनेक और विषयों पर विचार

अब मैं पहले प्रश्न का उत्तर कि "ईश्वर ने जगत् को किस वस्तु से और किस समय और किस लिये रचा है" अपनी छोटी सी बुद्धि और विद्या के अनुसार देता हूं—

परमात्मा ने सब संसार को प्रकृति से अर्थात् जिसको अव्यक्त अव्याकृत और परमाणु नामों से कहते हैं, रचा है। सो यह ही जगत् का उपादान कारण है। जिसका वेदादि शास्त्रों में नित्य करके निर्णय किया है और यह सनातन है। जैसे ईश्वर अनादि हैं वैसे ही सब जगत् का कारण भी अनादि है। जैसे ईश्वर का आदि और अन्त नहीं वैसे ही इस जगत् के कारण का भी आदि अन्त नहीं है। जितने इस जगत् में पदार्थ दीखते हैं उनके कारण से एक परमाणु भी अधिक वा न्यून कभी नहीं होता। जब ईश्वर इस जगत् को रचता है तब कारण से कार्य रचता है। सो जैसा कि यह कार्य जगत् दीखता है वैसा ही इसका कारण है। सूक्ष्म द्रव्यों को मिलाकर स्थूल द्रव्यों को रचता है तब स्थूल द्रव्य होकर देखने और व्यवहार के योग्य होते हैं। और यह जो अनेक प्रकार का जगत् दीखता है उसको इसी कारण से ईश्वर ने रचा है। जब प्रलय करता है तब इस स्थूल जगत् के पदार्थों के परमाणुओं को पृथक्-पृथक् कर देता है। क्योंकि जो-जो स्थूल से सूक्ष्म होता है वह आंखों से दीखने में नहीं आता। तब बालबुद्धि लोग ऐसा समझते हैं कि वह द्रव्य नहीं रहा। परन्तु वह सूक्ष्म होकर आकाश में ही रहता है क्योंकि कारण का नाश कभी नहीं होता और नाश अदर्शन को कहते हैं अर्थात् वह देखने में न आवे। जब एक-एक परमाणु पृथक्-पृथक् हो जाते हैं तब उनका दर्शन नहीं होता। फिर जब वे ही परमाणु मिलकर स्थूल द्रव्य होते हैं तब दृष्टि में आते हैं। यह नाश और उत्पत्ति की व्यवस्था ईश्वर सदा से करता आया है और ऐसे ही सदा करता जायेगा। इसकी संख्या नहीं कि कितनी वार ईश्वर ने सृष्टि उत्पन्न की और कितनी वार कर सकेगा। इस बात को कोई नहीं कह सकता।

अब इस विषय को जानना चाहिये कि जो लोग 'नास्ति' अर्थात् अभाव से अस्ति' अर्थात् भाव मानते हैं और शब्द से जगत् की उत्पत्ति जानते हैं उनका कहना किसी प्रकार से ठीक नहीं हो सकता क्योंकि अभाव से भाव का होना सर्वथा असम्भव है। जैसे कोई कहे कि वन्ध्या के पुत्र का विवाह मैंने आंखों से देखा तो जो उसके पुत्र होता तो वन्ध्या क्यों कहलाती? फिर उसके पुत्र का अभाव होने से उसके पुत्र का विवाह कब हो सकता है? और जैसे कोई कहे कि मैं किसी स्थान में नहीं था और यहां आया हूं अथवा सर्प बिल में न था और निकल भी आया, तो ऐसी बातें विद्वानों की नहीं होतीं। इसमें कोई प्रमाण नहीं क्योंकि जो वस्तु है ही नहीं फिर वह क्योंकर हो सकती है। जैसे कि हम लोग अपने-अपने स्थानों में न होते तो यहां चांदापुर में कभी न आ सकते। देखो शास्त्र में भी लिखा है कि—'नासत आत्मलाभः। न सत आत्महानम्' अर्थात् जो है सो आगे को होता है और जो नहीं है वह कभी नहीं हो सकता। इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि बिना भाव के भाव कभी नहीं हो सकता। क्योंकि इस जगत् में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है कि जिसका कारण कोई न हो।

इससे यह सिद्ध हुआ कि भाव से भाव अर्थात् अस्ति से अस्ति होती है। नास्ति से अस्ति किसी प्रकार नहीं हो सकती। यह "वदतो व्याघात" अर्थात् अपनी बात को आप ही काटने के सदृश बातें हैं। पहले किसी वस्तु का अत्यन्ताभाव कहकर फिर यह कहना कि उसका भाव हो गया। पूर्वापर विरोध है। इसको कोई भी विद्वान् नहीं मान सकता और न किसी प्रमाण से ही सिद्ध कर सकता है कि बिना कारण के कोई कार्य हो सके। इसलिये अभाव से भाव तथा अर्थात् नास्ति से वा हुकुम से जगत् की उत्पत्ति का होना सर्वथा असम्भव है। इससे यह ही जानना चाहिये कि ईश्वर ने जगत् के अनादि उपादान कारण से ही सब संसार को रचा है, अन्यथा नहीं।

यहां दो प्रकार का विचार स्थित होता है। एक यह कि जो जगत् का कारण ईश्वर हो तो ईश्वर ही सारे जगत् का रूप हुआ तो ज्ञान सुख, दुःख, जन्म, मरण, हानि, लाभ, नरक, स्वर्ग, क्षुधा तृषा, ज्वर आदि रोग बन्ध और मोक्ष सब ईश्वर में ही घटते हैं। फिर कुत्ता, बिल्ली, चोर, दुष्ट आदि सब ईश्वर ही बन गये। दूसरा—यह कि जो सामग्री मानें तो ईश्वर कारीगर के समान होता है, तो उत्तर यह है कि कारण तीन प्रकार का होता है। एक उपादान—कि जिसको ग्रहण करके किसी पदार्थ को बनावें। जैसे मट्टी लेकर घड़ा और सोना लेकर गहना और रूई लेकर कपड़ा बनाया जाय। दूसरा निमित्त—जैसे कुम्हार अपनी विद्या और सामर्थ्य के साथ घड़े को बनाता है। तीसरा साधारण—जैसे चाक आदि साधन और दिशा, काल इत्यादि।

अब जो ईश्वर का जगत् का उपादान कारण मानें तो ईश्वर ही जगत् रूप बनता है क्योंकि मट्टी से घड़ा अलग नहीं हो सकता। और जो निमित्त मानें तो जैसे कुम्हार मट्टी के बिना घड़ा नहीं बना सकता और जो साधारण मानें जैसे मट्टी से अपने आप बिना कुम्हार घड़ा नहीं बन सकता। इन दोनों व्यवस्थाओं में वह पराधीन वा जड़ ठहरता है। इसलिये जो यह कहते हैं कि ईश्वर जगत् रूप बन गया है तो उनके कहने से चोर आदि होने का दोष ईश्वर में आता है। इससे ऐसी व्यवस्था माननी चाहिये कि जगत् का कारण अनादि है और नाना प्रकार के जगत् को बनाने वाला परमात्मा है। और इसी प्रकार जीव भी अपने स्वरूप से अनादि हैं और स्थूल कार्य जगत् तथा जीवों के कर्म नित्यप्रवाह से अनादि हैं। ऐसे माने बिना किसी प्रकार से निर्वाह नहीं हो सकता।

अब यह कि ईश्वर ने किस समय जगत् को बनाया अर्थात् संसार को बने कितने वर्ष हो गये। इसका उत्तर दिया जाता है—

सुनो भाइयो! इस प्रश्न का हम लोग तो उत्तर दे सकते हैं आप लोग नहीं दे सकते। क्योंकि जब आप लोगों के मतों में से कोई अठारह सौ वर्ष से, कोई तेरह सौ वर्ष से और कोई पांच सौ वर्ष से उत्पत्ति कहता है तो फिर आप लोगों के मत में इतिहास के वर्षों का ठीक किसी प्रकार नहीं हो सकता। और हम आर्य लोग सदा से हैं कि जब से यह सृष्टि हुई बराबर विद्वान् होते चले आते हैं। देखो! इस देश से और सब देशों में विद्या गई है। इस काल में सब देश देशान्तरों के इतिहासों का प्रमाण है कि आर्यावर्त्त देश से मिस्र देश में और वहां से यूनान और यूनान से योरोप आदि में विद्या फैली है। इसलिये इसका इतिहास किसी दूसरे मत में नहीं हो सकता।

(क्रमशः)

फिर प्लेग का खौफ

—डा० ए. के. अरुण

करीब २७ वर्ष बाद भारत में प्लेग की वापसी निश्चित ही चिन्ता पैदा करने वाली घटना है। महाराष्ट्र के लातूर भूकम्प के बाद गुजरात के सूरत और धीरे-धीरे महाराष्ट्र के बम्बई व अन्य दूसरे क्षेत्रों में तेजी से फैल रही यह महामारी अब अपने पूरे यौवन पर है।

यों तो प्लेग रोडेंट्स (दांतों से कुतरने वाले जन्तुओं) का रोग है लेकिन अब तक करोड़ों लोगों को आक्रांत कर यह इन्सानी तबाही का कारण बन चुका है। रोडेंट्स अर्थात् चूहे से यह रोग पिस्सुओं (चूहे का कीड़ा) द्वारा दूसरे चूहे में फैलता है लेकिन जब प्रभावित चूहे मर जाते हैं तो पिस्सु मरे हुए चूहे को छोड़कर मनुष्यों को काटते हैं जिससे मनुष्य के रक्त में प्लेग के जीवाणु प्रवेश कर जाते हैं और इसका आगे का ताण्डव शुरू हो जाता है।

प्लेग के बैक्टीरियां येरसिनीया पेस्टीस या पाश्चुरेला पेस्टिस के नाम से जाना जाता है। मनुष्य मे यह तीन रूप में हो सकता है—

१—ब्यूबोनिक प्लेग, २—न्यूमोनिक प्लेग तथा ३ सेप्टीसेमिक प्लेग।

ब्यूबोनिक प्लेग सर्वाधिक प्रचलित रूप है। इसमें रोगग्रस्त चूहे मनुष्यों को काटकर या घाव बढ़ाकर प्लेग फैलाते हैं। इसमें एक्सीला (कांख) तथा इंग्वाइनल फोड़ा (जांघ) में गिल्टियां सूज जाती है जबकि न्यूमोनिक प्लेग में प्लेग जीवाणु मनुष्य से मनुष्य में सांस द्वारा फैलता है। सेप्टीसेमिक प्लेग बहुत ही कम देखा जाता है।

प्लेग के निर्धारण के लिये प्रयोगशाला में रोगी के खून की जांच की जाती है। गुल्थियों व गांठों से की गई जांच में प्लेग के जीवाणु का पता चलता है।

रोग के सामान्य लक्षण—प्लेग के सामान्य रोग लक्षणों में लिम्फेटीक ग्लेण्ड में सूजन व दर्द (कांख, जांघ, गला आदि मे ग्लैण्ड का बढ़ना) ब्यूबोनिक प्लेग का मुख्य लक्षण है। इसके साथ तेज बुखार, ठण्ड लगना सिर में चक्कर, उल्टी आना, कब्ज तथा दस्त लगना, कमर मे दर्द रोशनी सहन न होना आदि प्रमुख हैं। न्यूमोनिक प्लेग में खून की उल्टी भी आती है क्योंकि इसमें फेफड़े पर रोगाणु का आक्रमण होता है।

प्लेग के आक्रमण के बाद यदि समय से चिकित्सा उपलब्ध नहीं हुई तो तीन से ८ दिनों में रोगी की मृत्यु हो जाती है।

सेप्टीसेमिक प्लेग यों तो बहुत कम होता है लेकिन यह सबसे घातक है। इसमें रोगी का रक्त ही जहरीला हो जाता है।

चूहों पर प्लेग जीवाणुओं का आक्रमण होते ही अचानक आसपास चूहों की संख्या बढ़ जाती है। ऐसा छिपे चूहों के बाहर आ जाने से होता है। पिस्सुओं से काटने से चूहे प्लेगग्रस्त हो जाते हैं और जल्दी ही मर जाते हैं। मरे चूहों को छोड़कर पिस्सू दूसरे चूहों को आक्रांत करते हैं। इस प्रकार बड़ी संख्या में चूहे मरने लगते हैं। यही पिस्सू मरे चूहे को छोड़कर मनुष्य को भी काटते हैं और उनमें प्लेग के जीवाणु छोड़ देते हैं। फिर तो यह महामारी का रूप ले लेता है।

चिकित्सा ग्रन्थों में ईसा से पूर्व प्लेग होना स्वीकार किया गया है। चूहे से प्लेग' के सम्बन्ध के बारे में हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ 'भागवत पुराण' में चर्चा है। उस समय जैसे ही चूहे के मरने की सूचना मिलती थी लोग घर छोड़कर बहुत दूर चले जाते थे। धीरे-धीरे प्लेग ने महामारी का रूप ले लिया। १४वीं शताब्दी में प्लेग यूरोप में 'ब्लैक डेथ' (भयानक मौत) के रूप में जाना जाता था। भारत में पहली बार जहांगीर के शासन काल में आगरा में १६१२ ई० में प्लेग महामारी का उल्लेख है। १९०७ में प्लेग भारत की तबाही की चरम सीमा पर था। लगभग १३ लाख १६ हजार लोग काल के गाल में समा गये थे।

प्लेग का जीवाणु चिकित्सा विज्ञान की भाषा में एक ग्राम नेगेटिव नान मोटाइल बैक्टीरिया कहा जाता है। यह साधारण वातावरण में तेजी से फैलता है। यह ग्लैण्ड रक्त, प्लीहा, यकृत तथा दूसरे अंगों को शीघ्र प्रभावित करता है। यह चूहे, खरगोश की मांद में तेजी से विकसित होता है।

प्लेग किसी भी उम्र के व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) को कभी भी हो सकता है हां, एक बार किसी को प्लेग हो जाए तो उस व्यक्ति में आजीवन प्रतिरक्षा (इम्यूनिटी) आ जाती है। चूहों के अलावा आम आदमी भी प्लेग के जीवाणु को तेजी से फैलाता है। यातायात के तीव्र साधनों की उपलब्धता से प्लेग रोग से ग्रस्त व्यक्ति हजारों मील के किसी भी व्यक्ति या समुदाय को प्रभावित कर सकता है। अतः प्लेग फैलने की सूचना के यात्रियों के आवागमन पर पूरी नजर रखनी चाहिये। सन्देह की स्थिति मे फौरन जांच करानी चाहिये।

सामान्यतया सितम्बर से मई तक का समय 'प्लेग मौसम' कहलाता है यानी इन महीनों में प्लेग की सम्भावना ज्यादा होती है। हालांकि दक्षिण भारत मे साल भर प्लेग की सम्भावना रह सकती है। १९६६ से प्लेग के बाद से उन्मूलन की खबर के बाद भी हालांकि कुछ संवेदनशील चिकित्सा विज्ञानी आश्वस्त नहीं थे लेकिन तब तक दूसरी जिम्मेदारियों के कारण इस महामारी को नजरंदाज किया गया।

प्लेग विशेषज्ञ तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन में रहे भारतीय डाक्टर एम. सी. सील ने कहा है कि १९६६ के बाद प्लेग का भारत से खात्मा' की घोषणा ही संदिग्ध थी। डा० सील ने गर्व से घोषणा की है प्लेग के टीके को विकसित करने की तकनीक भारत में उपलब्ध है। आवश्यकता है इस पर पूरा तवज्जो देने की।

प्लेग की रोकथाम—प्लेग की रोकथाम के लिए व्यापक जनजागरण की आवश्यकता है। सफाई प्लेग की रोकथाम की महत्वपूर्ण शर्त है। इसमें चूहों व दांत से कुतरने वाले जीव का नियन्त्रण भी अति महत्वपूर्ण पहलू है। प्लेग के फैलने की खबर मिलते ही पिस्सुओं के सफाए या नियन्त्रण की तत्काल व्यवस्था करनी चाहिये। हालांकि पर्यावरणविद डी डी टी तथा एच सी एच को पर्यावरण के लिए हानिकारक बताते हैं लेकिन पिस्सुओं से बचाव के लिए इसका व्यापक छिड़काव जरूरी है। यहां यह बात भी कि पिस्सुओं के नियन्त्रण के लिए यदि दूसरे सुरक्षित कीटनाशक उपलब्ध हो तो सुझाए जायें तो उसे भी महत्व देना चाहिये। घरों में खाने पीने के सामानों को अन्यत्र रख कीटनाशक दवाओं का छिड़काव तथा जमीन से ३ फीट ऊपर तक मकान पर सीमेंट से पक्का प्लास्टर कराना भी ऐहतियातन जरूरी होता है।

घरों तथा इसके आसपास कूड़े के ढेर नहीं रहने चाहिए। चूहे व दूसरे जन्तुओं के बिल या जमीनी गड्ढे को पाटकर बन्द कर देना चाहिए। आसपास ध्यान रखना चाहिए कि कहीं चूहे अधिक संख्या में स्वतः मर तो नहीं रहे।

विभिन्न स्वयंसेवी संगठन अपने स्तर पर लोगों को प्लेग से बचाव के बुनियादी तथ्यों की जानकारी दें तो अच्छी बात है।

टीका—प्लेग का टीका उपलब्ध होने पर इसे सात दिन पर एक टीका के अनुपात मे दो तीन सप्ताह तक लगाया जाना चाहिये। बड़ों को १ मि ली तथा बच्चों को ५ मि ली की मात्रा का टीका लगाने का सुझाव है। छः महीने से कम आयु के बच्चों को टीका नहीं लगाना चाहिए।

दवा—प्लेग के दवा के रूप में एलोपैथिक दवा टेट्रासाइक्लीन तथा इसके प्रभावी न होने पर सल्फोनामाइड्स की सलाह दी जाती है। टेट्रासाइक्लीन १ ग्राम का एक कैपसूल प्रतिदिन लेना चाहिए। यदि टेट्रासाइक्लीन काम न करे तो ऐलोपैथिक चिकित्सकों के अनुसार सल्फोनामाइड्स की २ या ३ ग्राम की खुराक प्रतिदिन सात-आठ दिनों तक लेनी चाहिए।

आम लोगों को दवा की दुकान से सीधे दवा खरीदते समय ध्यान रखना चाहिए कि दवा सही है तथा इसकी वैधता बची है या नहीं?

यदि दवा विक्रेता दवा उपलब्ध होने पर उचित मूल्य पर नहीं न दे तो इसकी सूचना स्थानीय प्रशासन को देनी चाहिए। महामारी फैलने पर संयम और विवेक से कार्य करना चाहिये व्यापक जन शिक्षण, जन सहयोग व एहतियाती तौर पर समय से यदि सचेत रहें तो महामारी का सफलतापूर्वक सामना किया जा सकता है

निश्चलानन्द के वक्तव्य की निन्दा

आर्य स्त्री समाज करोलबाग के वेद प्रचार दिवस में, दिल्ली के अनेक सामाजिक तथा स्वयंसेवी संगठनों से जुड़ी महिलाओं का यह सम्मेलन पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निश्चलानन्द जी के उस वक्तव्य का जोरदार विरोध करता है जिसमे उन्होंने स्त्रियों के वेदपाठ को निषिद्ध ठहराया है। उनके पूर्ववर्ती जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव जी ने विधवा के सती होने का अनुमोदन किया था।

इस सम्मेलन की राय मे बीसवीं शताब्दी मे सृष्टि के आदि मे प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान से संसार की आधी आबादी को वंचित करने की बात करना कट्टर रूढ़िवादी होने के साथ नारी जाति के प्रति घोर अन्याय है और संविधान की प्रस्तावना तथा धारा १४ व २१ का उल्लंघन होने से दण्डनीय अपराध है। इसलिए यह सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि ऐसे व्यक्तियों के विरुद्ध तत्काल आवश्यक कार्यवाही करे। यह सभा तथाकथित गुरुओं को दिल्ली के रामलीला मैदान मे अपने को शास्त्र सम्मत सिद्ध करने की चुनौती देता है, इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती प्रभात शोभा जी ने की।

सम्मेलन मे दिल्ली राज्य की तीन सौ आर्य समाजों से सम्बद्ध स्त्री समाजों का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रान्तीय महिला सभा की महामन्त्री श्रीमती शकुन्तला दीक्षित ने कहा कि हिन्दुओं के अनेक ग्रन्थों में स्त्रियों के लिए वेद पाठ करने का विधान है। यदि स्त्रियों के लिए वेदाध्ययन वर्जित होता तो वेदों के प्रकाण्ड विद्वान आदि शंकराचार्य को भारती देवी शास्त्रार्थ में कैसे पराजित कर देती, और कैसे गार्गी अपने समय के अद्वितीय विद्वान याज्ञवल्क्य को राजा जनक की भरी सभा में शास्त्रार्थ की चुनौती देती। वेदपाठ करने वाली स्त्रियों के या तो सन्तान ही नहीं होती या होती है तो अत्यन्त कष्ट के साथ। यह शंकराचार्य जी की आयुर्वेद तथा शास्त्रों के विरुद्ध कैसी हास्यास्पद कल्पना है। प्रस्ताव का समर्थन श्रीमती शकुन्तला आर्या ने किया। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

लाजपतनगर मे धर्मार्थ औषधालय का उद्घाटन

साहिबाबाद, सिंह। लाजपतनगर स्थित आर्य समाज मन्दिर में एक धर्मार्थ औषधालय खोला गया है। यह अस्पताल आर्य समाज के नेता कमलचन्द नागर के सहयोग से खोला गया है।

औषधालय के संस्थापक लाला अमीर चन्द सिंघल के अनुसार दवा वितरण हेतु वैद्य सहायक वर्मा की नियुक्ति की गयी है। होम्योपैथी तथा एलोपैथिक इलाज के लिए अलग-अलग चिकित्सकों की व्यवस्था की जा रही है।

औषधालय के उद्घाटन के समय आर्य समाज मन्दिर में नागरिकों द्वारा कार सेवा की गई। इससे पूर्व भी लाजपतनगर निवासियों के पेयजल संकट को देखते हुए वहां के आर्य समाजियों ने बेट पम्प तथा प्याऊ की व्यवस्था की थी। कार सेवा करने वालों में प्रमुख रूप से महावीर सिंह आदि, ओम प्रकाश आर्य, चमनलाल सिंह, आनन्द आर्य, पुष्पा सूद, देवराज आर्य, कालूसिंह कटारिया तथा शिवप्रकाश वत्स ने भाग लिया।

दयानन्द छात्रावास लातूर में ३० सितम्बर के भूकम्प के बाद तुरन्त १० अक्तूबर दशहरे के दिन से डा० हाजगुडे के अस्पताल मे तात्कालिक रूप से शुरु कर दिया गया। डा० हाजगुडे अपनी पत्नि तथा छात्रावास के बच्चों के साथ में।

लातूर में सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत स्थापित दयानन्द छात्रावास

महाराष्ट्र में आये विनाशकारी भूकम्प के बाद आर्य समाज के सेवा कार्यों का विस्तृत विवरण समय समय पर सार्वदेशिक पत्र/पत्रिकाओं द्वारा प्रकाशित होता रहा है।

यहां हम सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे और महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की देख-रेख मे भूकम्प पीड़ित बच्चों के लिए स्थापित किये गये छात्रावास के सब बच्चों का विवरण उनके नाम गांव सहित प्रकाशित कर रहे हैं।

१ संजय मोरी काटेचिचोली, २ सहदेव कावळे पेदसाबकी ३ ओदुम्बर करवूरे कार्टेचिली ४ आलोक मलोले सास्तूर, ५ महादेव कांबळे, कवठा, ६ बालाजी बेगम पल्ले मरवडी ७ किसमकरदोरे काटे चिचोली, ८ उमाकान्तपरीत सास्तूर, ९ बाळू सूर्यवंशी किल्लारी १० जीवन बीराजदार काटेचिचोली, ११ शिवाजी बीलसोले सरवडी १२ रामचन्द्र दास वादीकठा, १३ कु० संगीता ननवकर सरवडी, १४ कु० गोकंपा इगवे, सरवडी, १५ कु० केशर पवार, काटेचिचोली १६ कु० सुनीता भोसले काटेचिचोली, १७ अमर हाजगुडे किली, १८ तुकराम भारती कावेगाव १९ खडु काते चिचोली, २० नरेश बीराजदार होली, २१ लक्ष्मण कावळे पेठसांगवी, २२ कल्पना शिंदे नादुर्गा २३ सचिन बिराजदार काटेचिचोली २४ अजित बिराजदार काटेचिचोली, २५ रामेश्वर इगवे मरवडी, २६ तानाजी इटबोने सरवडी, २७ बैताजी इटबोने सरवडी, २८ दिगम्बर कुदळे काटे चिचोली, २९ अर्चना सूर्यवंशी किल्लारी, ३० मोना पवार काटेचिचोली ३१ बाला गोरी काटेचिचोली, ३२ भरत जाहाव किल्लारी ३३ अमन शेंडगे तुगाव, ३४ शिवाजी भुरे सास्तूर, ३५ आबाराव इगवे सरवडी ३६ लखन शिंदे नादुर्गा, ३७ विनोद ननवकर सरवडी ३८ बबू भोसले काटेचिचोरी, ज्ञानेश्वर मुगळे सरवडी, ४० बालमीक गीरी कमलपुर, ४१ अदित्य कोली दाऊलिम्बाका, ४२ अकुश शिंदे नादुंगा, ४३ नोलु मोकरे सरवडी, ४४ राम लोकरे सरवडी ४५ भागवत्त काळे आपचुदा, ४६ विटठल कांबळे चलबुर्गा ४७, राहुल कांबळे कवठा ४८ पांडुरंग बीराजदार होजे।

पुस्तक समीक्षा

THE VEDIC CONCEPT (वैदिक विचार-धारा)

भाषा—अंग्रेजी, लेखक—महाशय रामलाल सचेवा
प्रकाशक—के के सचेवा

४ डी/४७, आनन्द पर्वत औद्योगिक क्षेत्र,
नई रोहतक रोड, नई दिल्ली-११०००५
मूल्य—२६ रुपये, पृष्ठ संख्या—६४)

वेद ईश्वरीय ज्ञान का भंडार है। उनमें निहित उपदेश, शिक्षाएं, विचार मानव-मात्र के कल्याण के लिए हैं। वे सार्वभौम और सर्वकालिक हैं, क्योंकि वे सत्य सनातन हैं। महर्षि दयानन्द ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज के तीसरे नियम में वेद का पढ़ना-पढ़ाना सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म घोषित किया।

महर्षि की इसी भावना से प्रेरित होकर विद्वान लेखक ने कुछ चुने हुए वेद-मन्त्रों का अंग्रेजी में अर्थ एवं व्याख्या की है। वास्तव में यह पुस्तक [illegible], [illegible] में रहने वाले भारतीयों तथा अहिन्दी भाषी लोगों की सुविधा को ध्यान में रखकर लिखी गयी है। [illegible] लेखक ने संस्कृत के साथ-साथ मन्त्रों को रोमन लिपि में भी दिया है, जिससे जिज्ञासु पाठकों को उनके उच्चारण, अर्थ तथा भाव को समझने में आसानी हो।

पुस्तक मे उन मन्त्रों को संकलित किया गया है जो मानव जीवन की प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं और उनका वैदिक समाधान प्रस्तुत करते हैं। आत्मा परमात्मा तथा प्रकृति के पारस्परिक सम्बन्ध, ईश्वर के विभिन्न नाम, ईश्वरोपासना, योगसाधना, आदि अनेक भौतिक एवं आध्यात्मिक विषयों की बहुत ही सरल एवं सुन्दर भाषा में व्याख्या की गयी है।

आशा है पुस्तक वैदिक साहित्य और दर्शन मे रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक की सुन्दर छपाई तथा गठन को देखते हुए मूल्य उचित ही है।

—सुरेश चन्द्र पाठक

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज सरस्वती विहार दिल्ली-३४ का १७वां वार्षिकोत्सव २ अक्तूबर से ९ अक्तूबर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मनोहर भजन एवं व्याख्यानके अतिरिक्त व्यायाम प्रदर्शन भाषण प्रतियोगिता, महिला सम्मेलन एवं कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है। अधिक से अधिक संख्या मे पहुंच कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

गोहत्या व मास निर्यात पर प्रतिबन्ध तथा गौ को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग

दिल्ली २४ ९ ९४ भारत गोसेवक समाज की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की अत्यावश्यक बैठक समाजके केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली मे समाज के राष्ट्रीयाध्यक्ष श्री प्र मचन्द गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

देश भर से पधारे गोभक्त नेताओं ने सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव में केन्द्र सरकार से पुरजोर अनुरोध किया कि वे शीघ्र कानून द्वारा गोवध की हत्या व मांस निर्यात पर प्रतिबन्ध तथा गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जावे।

—राम गोपाल गुप्ता

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज नया नगल का ३४वां वार्षिक महोत्सव ४ अक्तूबर से ९ अक्तूबर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है इस अवसर पर विश्व शान्ति यज्ञ तथा वेद प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया है। ९ अक्तूबर को मुख्य समारोह सम्पन्न होगा। समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा की नई उपलब्धि
वृहदाकार-सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित

सार्वदेशिक सभा ने २०×२६/४ के वृहद् आकार मे सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन किया है। यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है तथा कम दृष्टि रखने वाले व्यक्ति भी इसे आसानी से पढ सकते हैं। आर्य समाज मन्दिरों मे नित्य पाठ एव कथा आदि के लिये अत्यन्त उत्तम, बडे अक्षरों मे छपे सत्यार्थ प्रकाश में कुल ६०० पृष्ठ हैं तथा इसका मूल्य मात्र १५०) रुपये रखा गया है। डाक व्यय ग्राहक को देना होगा। प्राप्ति स्थान:—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ रामलीला मैदान, नई दिल्ली २

आठवा निःशुल्क नेत्र शिविर

आर्य समाज कसबा मण्डी टटीरी (मेरठ) द्वारा आठवां निःशुल्क नेत्र शिविर ८-१०-९४ से १४ १०-९४ तक डी ए वी इन्टर कालेज अग्रवाल मण्डी टटीरी मे सम्पन्न होने जा रहा है। गुजरमल मोदी नेत्र चिकित्सालय के द्वारा आपरेशन किये जायेंगे तथा मरीजों को भोजन दूध दवाई तथा चश्मे मुफ्त प्रदान किये जायेंगे।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सरस्वती विहार दिल्ली का १७वां वार्षिकोत्सव २ अक्तूबर से ९ अक्तूबर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर मनोहर संगीत व्याख्यान वेद मन्त्रों से वृहद यज्ञ महिला सम्मेलन, भव्य कवि सम्मेलन, पर्यावरण एव यज्ञ सम्मेलन आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। समारोह मे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—आर्यसमाज सीतापुर का ९४वां वार्षिकोत्सव ६ से ८ अक्तूबर तक आर्य समाज मन्दिर बालमण्डी सीतापुर मे समारोह मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा नेता पधार रहा हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर समारोह को सफल बनावें।

अचलचित्र-समीक्षा

अमृत-वाणी

मूल्य १५ रु०

प्रकाशक—मधुर प्रकाशन

२८०४ सीताराम बाजार

गली आर्यसमाज दिल्ली ६

समझदार व्यक्ति अपने परिवार को सुन्दर स्वच्छ सुमन वाला यदि बनाना चाहे तो उसे चाहिये कि

अपने घर में सुन्दर वाक्यों से युक्त अच्छे चार्ट व पूर्ण कलेण्डर जिन्हें पढ़ व देखकर आगन्तुक भी सुभावमान हो जाये तो फिर लीजिए मधुर प्रकाशन से अनमोल वचन आकर्षक प्लास्टिक पेपर पर अमृत वाणी प्रभु का पावन सन्देश गायत्री मन्त्र हिन्दी अंग्रेजी के साथ मे संगठन सूक्त के भावपूर्ण विचार सुन्दर भाव आकर्षक आर्यसमाज के नियम तथा उद्देश्य द्वारे अर्जुन को विषादमुक्त गीता सार प्रवचन ऋषि दयानन्द के अनमोल वचन एक-एक (चार्ट) कलेण्डर की शक्ल प्लास्टिक पेपर पर अच्छी साज सज्जा से युक्त जहां टांग दोगे तो घर तो सजेगा ही पर पठनीय मननीय सामग्री भी उपदेश युक्त मिलेगी।

बच्चे सुबोध बनेंगे—अतिथि भी सोचेगा —कि हम भी ऐसे अचल-चित्र लगायेंगे।

घर भी सजेगा—मन भी भरेगा—तब फिर तुरन्त "मधुर प्रकाशन" को याद कीजिए और यह चित्र पट मंगाकर मन-भावन कीजिए। धन्य हो—मधुर-प्रकाशन।

साहित्य से तो ज्ञानवर्धन करते ही हो परन्तु सजीले चार्ट बनाकर—आबाल-वृद्ध का भी ज्ञानवर्धन भी करते हो आर्यजन इसे पढ़कर तुरन्त मंगावें – धन्यवाद

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

आर्यसमाज अजमेर का इतिहास

लेखक—प्रो० बुद्धिप्रकाश आर्य

प्रकाशक—वेदरत्न आर्य

मन्त्री, आर्यसमाज अजमेर

मूल्य-५० रुपये

महर्षि दयानन्द के जीवनकाल मे स्थापित तथा उनके अंतिम दिनों में उपचार तथा अन्त्येष्टि संस्कार का अभी तक अप्रकाशित प्रमाणिक विवरण, इस समाज द्वारा परोपकारिणी सभा तथा वैदिक यन्त्रालय आदि की प्रारम्भिक व्यवस्था स्वर्गीय प० जियालाल जी द्वारा हैदराबाद में सत्याग्रही, स्पेशल ट्रेनें भेजने और अजमेर में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना आदि उपलब्धियों सहित हिन्दी अंग्रेजी में आर्य साहित्य के प्रकाशन का रोचक विवरण।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये बार एक१५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

भारत सरकार हिन्दी विरोधी है

कानपुर। आज केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वावधान मे गोविन्दनगर मे हिन्दी दिवस के अवसर पर सभा प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

सभा के अध्यक्ष श्री आर्य ने भारत सरकार पर आरोप लगाया कि यदि भारत सरकार हिन्दी विरोधी न होती तो देश की आजादी के ४७ वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद आज कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे देश मे हिन्दी का बोलबाला होता और हिन्दी दिवस मनाने की आवश्यकता न होती।

वक्ताओं मे सर्वश्री देवीदास आर्य, बालगोविन्द आर्य श्यामप्रकाश शास्त्री, रामकृष्ण आर्य, रामप्रकाश आदि के नाम उल्लेखनीय है।

वेद प्रचार की धूम

दिनांक १०-९-९४ से १२-९-९४ तक ग्राम अन्तर वेलिया मे प० आर्येन्द्र कुमार वैदिक प्रचारक हर्षवर्धन के० एण्ड मि० लिमिटेड अन्तर वेलिया जि० झाबुआ के प्रयास द्वारा कई स्थानों में परिवारों में हवन, भजन, प्रवचन आदि का कार्यक्रम रखा गया श्री क्षेमचन्द आर्य, श्री प्रेमचन्द आर्य एवं श्रीमती मनीषा वैदिक के प्रभावशाली प्रचार से प्रभावित होकर १० परिवारों ने वैदिक धर्म में प्रवेश किया एवं शराब, दारू, मांसाहार, बीड़ी, तम्बाकू का भी त्याग किया। उल्लेखनीय है कि इस आदिवासी क्षेत्र में ९८ प्रतिशत शराबी मांसाहारी लोग हैं। अतः वेद प्रचार मण्डल की यह बहुत बड़ी सफलता है।

आर्य प्रचारक से लाभ उठायें

मीनाक्षीपुरम् मे इस्लामी षडयन्त्रों के पश्चात् आर्य समाज द्वारा वैदिक धर्म मे दीक्षित किये गये डा० आनन्दसुमन वैदिक प्रवक्ता विगत् चौदह वर्षों से श्रद्धापूर्वक आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगे हैं।

डा० आनन्द सुमन वैदिक साहित्य सहित इस्लाम के भी ज्ञाता हैं ओजस्वी वक्ता है।

आर्य समाजें डा० आनन्द सुमन को अपने उत्सव और कार्यक्रमों में आमन्त्रित कर लाभ उठाये।

उनका पता है—डा० आनन्दसुमन (वैदिक प्रवक्ता)

मानसरोवर—१ शिखर मार्ग (आर्य नगर)

देहरादून-२४८००१ दूरभाष : २९४४८

ेन्द्र राजस्ट्रशन स० डी० एल० ११०८/४७   सार्वदेशिक साप्ताहिक   (६ १०-१९९४)   बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (G)/९३
R N 525 57   Licensed to post without prepayment Licence No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on   6,7 10-1994

आर्य समाज निर्माण विहार का वार्षिकोत्सव

क्षत्रीय आर्य प्रतिनिधि उप सभा (पटपड़ गंज) क्षेत्र के तत्वावधान में आर्य समाज निर्माण विहार का १४ वां वार्षिकोत्सव १४ से २० नवम्बर १९९४ तक सेन्ट्रल पार्क निर्माण विहार में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर १४ से २० नवम्बर तक प्रातः ७ बजे से ८ ३० तक स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में २१ कुण्डीय राष्ट्ररक्षा महायज्ञ का आयोजन किया गया है। प्रतिदिन रात्रि ७ ३० से ८ ३० तक पंडित सत्यपाल पथिक द्वारा भजन तथा ८ ३० से ९ ३० तक स्वामी दीक्षानन्द जी के द्वारा वेदोपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न होगा। रविवार २० नवम्बर को प्रात १० बजे से १ बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

—रवि बहल, मन्त्री

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ का निर्वाचन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मेरठ का वार्षिक अधिवेशन आर्य समाज बागपत में ३ जुलाई ९४ को सम्पन्न हुआ। चौ० माधवसिंह जी की अध्यक्षता में निर्वाचन सम्पन्न हुआ। इसमे अन्तरंग सभा के पदाधिकारी गण निम्नवत निर्वाचित हुए।

अध्यक्ष- चौ० माधवसिंह जी मन्त्री- नगेन्द्र सिंह आर्य उपप्रधान पंडित हंसराज जी, धर्मपाल, अशोक कुमार आर्य, श्रीमती सरोज आर्या, उपमन्त्री- श्रीमती प्रमोद रस्तोगी मा० सत्यप्रकाश गौड़ ठाकुर बलभद्र सिंह ब्रह्मसिंह आर्य एवं कोषाध्यक्ष श्री बदरी पाहुवा जी निर्वाचित हुए।

—नगेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री

आर्य समाज मवाना का निर्वाचन

आर्य समाज मवाना (मेरठ) का वार्षिक अधिवेशन (निर्वाचन) दि० १९ मई ९४ को सम्पन्न हुआ जिसमे श्री ज्ञानेन्द्र प्रकाश, प्रधान व मन्त्री श्री नगेन्द्र सिंह आर्य तीसरी बार निर्वाचित हुए एवं कोषाध्यक्ष श्री देवेन्द्र कुमार रस्तोगी चुने गये।

इसके अतिरिक्त श्री रामकृष्ण यादव व विक्रम सिंह उपप्रधान तथा लेखा निरीक्षक श्री रूमालसिंह जी चुने गये।

—नगेन्द्र सिंह आर्य मन्त्री

निर्वाचन

—आर्य समाज जौनपुर, श्री कुलदीप जी प्रधान श्री यादवेन्द्र दत्त जी मन्त्री, श्री सुरेन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष।

पांच हजार का सात्विक दान

श्रीमती गीता शास्त्री पत्नि श्री सुभाष चन्द्र शास्त्री रोसड़ा ने स्व० प० आचार्य वासुदेव शास्त्री की स्मृति मे वैदिक संस्कार यज्ञवेदी शाला निर्माण स्थिर निधि हेतु ५००० रुपए का सात्विक दान प्रदान किया है। रोसड़ा आर्य समाज उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हुए धन्यवाद प्रदान करता है।

शिक्षा के लिए राशि दुगनी की जाएगी : प्रणव

नई दिल्ली योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री प्रणव मुखर्जी ने कहा कि नौंवी पंचवर्षीय योजना से सकल घरेलू उत्पाद का छह प्रतिशत शिक्षा के लिए आवंटित करने की प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता को ध्यान मे रखते हुए शिक्षा के लिए आवंटित की जाने वाली धनराशि वर्तमान स्तर (२०,७५० करोड़ रुपये) से बढ़कर ५३,००० करोड़ रुपए हो जाएगी। यहां अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप मे अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने घरेलू संसाधनों को जुटाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सचेत किया कि संसाधनों के विवेकपूर्ण और बेहतर इस्तेमाल के बिना मात्र आवंटन मे वृद्धि करना पर्याप्त नही होगा।

श्री मुखर्जी ने कहा कि उदारीकरण की चुनौतियो के परिप्रेक्ष्य में लोगों द्वारा आधुनिक जानकारी और दक्षता को प्राप्त करना आवश्यक हो गया है। उन्होंने कहा कि साक्षरता इस प्रक्रिया की न्यूनतम आवश्यक योग्यता है और इसके बाद दक्षता और ज्ञान में निरन्तर सुधार होना आवश्यक है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री अर्जुन सिंह ने यह निश्चय दोहराया कि देश इस सदी के अंत तक पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त कर लेगा उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय साक्षरता अभियान के अन्तर्गत चलाया जा रहा पूर्ण साक्षरता अभियान २७५ जिलों में चलाया जा रहा है। इस अभियान ने अब एक जन आंदोलन का रूप ले लिया है जिसमें ५० लाख से अधिक स्वयं सेवक जुड़े हुए हैं।

इस अवसर पर नवसाक्षरो द्वारा लिखे गए साक्षरता प्रवेशिकाओ और पत्रो की प्रदर्शनी आयोजित की गई। निबन्ध प्रतियोगिता के विजेताओ को पुरस्कार वितरित किए गए।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिकआर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दूरभाष । ३१०१५० | वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ३६] | दयानन्दाब्द १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ | आश्विन शु० १२ सं० २०५१ १६ अक्तूबर १९९४

राष्ट्र की आत्मा संस्कृत में बसती है

उच्चतम् न्यायालय द्वारा संस्कृत को पाठ्यक्रम में पुनः शामिल करने का आदेश

आर्यसमाज तथा संस्कृत प्रेमियों की भारी विजय

नई दिल्ली, ९ अक्तूबर। उच्चतम न्यायालय ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के कुछ संस्कृत प्रेमियों की याचिकाओं पर सामूहिक सुनवाई के बाद दिये अपने निर्णय में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को यह आदेश दिया है कि वे तीन माह के भीतर संस्कृत को वैकल्पिक भाषा के रूप में शामिल करने के लिये पाठ्यक्रमों में यथोचित परिवर्तन करें। उच्चतम न्यायालय के माननीय न्यायाधीश श्री बी०एल० हंसारिया ने संस्कृत भाषा की उपयोगिता और महत्व का उल्लेख करते हुये कहा कि यदि हमने संस्कृत के अध्ययन को हतोत्साहित किया तो हमारी संस्कृति की नदी सूख जायेगी। संस्कृत की शिक्षा के बिना भारतीय दर्शन की व्याख्या करना सम्भव नहीं होगा क्योंकि हमारी संस्कृति और विरासत का ज्ञान केवल संस्कृत भाषा पर ही आधारित है।

खण्डपीठ ने केन्द्र सरकार के इस तर्क को खारिज कर दिया कि संस्कृत की शिक्षा देने से देश में पंथनिरपेक्षता खतरे में पड़ जायेगी। इस तर्क को भी विद्वान न्यायाधीशों ने स्वीकार नहीं किया कि पंथनिरपेक्ष देश होने के कारण, संस्कृत को वैकल्पिक विषय बनाने के लिये पर फारसी और अरबी की व्यवस्था करना भी आवश्यक हो जायेगा इसी प्रकार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से अतिरिक्त सालिसीटर जनरल के०टी०एस० तुलसी ने तर्क दिया था कि संस्कृत पढ़ाने की मांग स्वीकार करने पर फ्रेंच, जर्मन और लैटिन जैसी भाषाओं के पढ़ाने की मांग भी उठ सकती है। इस खण्डपीठ ने इस तर्क को स्वीकार नहीं किया और कहा कि संस्कृत के साथ इन भाषाओं की बराबरी नहीं की जा सकती है।

निर्णय में यह भी कहा गया है कि भारत सरकार द्वारा स्थापित 'संस्कृत आयोग" द्वारा वर्ष १९५७ में प्रस्तुत रपट में इस भाषा की सामर्थ्य और उपयोगिता का वर्णन है। इसका ज्ञान न केवल भारत, बल्कि एशिया महाद्वीप के एक बड़े हिस्से की विरासत को जानने का माध्यम है।

संस्कृत प्रेमियों की ओर से इस केस को सफल बनाने में डा० [illegible] और मुद्गल एडवोकेट की विशेष भूमिका रही है।

सार्वदेशिक सभा की ओर से १९८१ में स्व० श्री [illegible] एडवोकेट द्वारा याचिका दायर की गई थी। उनके पश्चात अवकाश प्राप्त जज श्री [illegible] की अध्यक्षता और सुप्रीमकोर्ट के वकीलों में सर्वश्री योगेन्द्रपाल महाजन और श्री के०आर० कुमार ने जो योगदान किया वह सराहनीय है।

सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों, सभी अधिवक्ताओं एवं संस्कृत प्रेमियों का धन्यवाद किया है, जिनके प्रयत्नों से देववाणी संस्कृत को पुनः सम्मान मिला है।

वेदामृत

सत्य की अग्नि से शत्रुओं का नाश

तान् सत्यौजाः प्र दहत्वग्नि-
र्वैश्वानरो वृषा। यो नो
दुरस्याद् दिप्साच्च, अथो
यो नो अरातियात्॥

अथर्व० ४ ३६-१

हिन्दी-अर्थ—सत्यरूपी बल [illegible] का हितकारी, सुखों का वर्षक अग्निरूप परमात्मा, उन सभी को जला दे (नष्ट कर दे), जो हमें दुःख देना चाहते हैं, जो हमें हानि पहुंचाना चाहते हैं और हमसे शत्रुवत् व्यवहार करते हैं।

सम्पादक।
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

मेरे पति की मृत्यु

लीलावती शिवजतन, डर्बन दक्षिण अफ्रीका

दिसम्बर १९९२ मे श्री बिजोये कुमार शिवजतन तथा मैं (उनकी पत्नि) दक्षिण अफ्रीका से अपनी मातृभूमि भारत मे भ्रमण करने के लिये आये। कुछ दिन दिल्ली विश्राम के बाद दिनांक २६ दिसम्बर १९९२ को सायं चार बजे राजधानी एक्सप्रेस से बेंग्लोर जाने के लिये हम दोनों पति-पत्नि रेलगाडी मे अपनी आरक्षित सीट पर जा बैठे। सीट पर बैठते ही अचानक हृदयगति रुक जाने के कारण मेरे पति श्री बिजोये कुमार शिवजतन का निधन हो गया। इस दुर्घटना ने मुझे अजब असमंजस की स्थिति में डाल दिया। मेरी स्थिति का आप अंदाजा लगा सकते हैं। लेकिन किसी तरह अन्य यात्रियों की सहायता से मैंने अपने पति के मृत शरीर को गाडी से नीचे उतारा। मैं अकेली, उस पर विदेश का मामला, पुलिस का भ्रष्टाचारी रवैया इन सब दुविधाओं के बीच फसी थी। आप समझ सकते हैं कि मेरी हालत क्या रही होगी।

मृत शरीर को पुलिस ने अपने कब्जे मे ले लिया और पोस्ट-मार्टम के लिये निर्धारित स्थल पर भेज दिया। मैं दिल्ली मे जिस होटल मे रुकी थी बडी लाचार अवस्था मे वापिस वहीं पहुच गई। मैं खुलकर रो भी नहीं सकती थी क्योंकि रोया भी ऐसे व्यक्ति के समक्ष जाता है जिसे कोई हमदर्दी हो। होटल कर्मियो से बात करने पर उन्होंने कहा कि दस पन्द्रह हजार करैन्स (साउथ अफ्रीकी मुद्रा) मे मृत शरीर तथा आपके वापिस अफ्रीका पहुचने का बन्दोबस्त किया जा सकता है। पन्द्रह हजार करैन्स का अर्थ भारतीय मुद्रा मे लगभग डेढ लाख रुपये होते है। मैंने इन परिस्थियों के बीच अपने परिजनों को दक्षिण अफ्रीका मे टेलीफोन द्वारा इस दुर्घटना की सूचना दी। दक्षिण अफ्रीका मे मेरे मामा श्री के० बदल आय प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के मन्त्री हैं। उन्होंने टेलीफोन से ही तत्काल स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (सार्वदेशिक सभा के प्रधान) तथा प० वन्दे-मातरम् रामचन्द्रराव को इस दुघटना की जानकारी देते हुये मेरी मदद करने का आग्रह किया। तब श्री प० वन्देमातरमरामचन्द्र राव ने न्याय सभा के सयोजक श्री विमल वधावन को करोल बाग के उस होटल मे जिसमे मैं ठहरी हुई थी सम्पर्क करने को कहा—श्री वधावन अपनी पत्नी श्रीमती पूनम को लेकर तत्काल मुझसे मिले। मेरी तथा मेरे पति की वापसी टिकट ६ जनवरी के लिये निर्धारित थी। श्री वधावन ने सर्वप्रथम मेरी वापसी टिकट २८ दिसम्बर की करवाई। टिकट २८ दिसम्बर की हो जाने के बाद एक नई बाधा पैदा हो गई कि मृत शरीर को अलग मालवाहक जहाज से भेजा जायेगा। श्री विमल वधावन ने पुन केन्द्रीय मन्त्री श्री सी० के० टी स्वामी के सहयोग से उड्डयन मन्त्री श्री माधवराव सिंधिया से सम्पर्क किया और इस सारी व्यवस्था के लिये कानून के प्रतिकूल होते हुए भी मृत शरीर की मेरे साथ उसी हवाई जहाज मे भेजने की व्यवस्था की। श्री वधावन जी ने मेरी अत्याधिक सहायता की थी अत वापिस जाते समय मैंने श्री वधावन को लगभग ६००० रुपये देने का प्रयत्न किया लेकिन धन्य है आर्यसमाज की विचारधारा। उन्होंने यह कह कर राशि लेने से इन्कार कर दिया कि आर्यसमाज मे मानवता के नाते की गई सेवाओ का मूल्य लेना नहीं सिखाया जाता। श्री वधावन को इस बात ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। मैं वापस दक्षिण अफ्रीका चली गई लेकिन श्री वधावन जैसे व्यक्तित्व का ध्यान मैं सदैव करती रहती हूं जिसने निःस्वार्थ भाव से मेरी इस कठिन समय मे सहायता की थी। मैंने इस घटना का विवरण दक्षिण अफ्रीका के समस्त राष्ट्रीय अखबारो को भेजा और सभी अखबारों ने मोठे अक्षरो में "आर्य समाज का धन्यवाद, आर्य समाजी भाई की मदद का धन्यवाद आदि शीर्षकों से इस घटना को प्रमुखता से छापा।

लगभग डेढ वर्ष बाद मैंने अपने मुह बोले भाई श्री विमल वधावन से पुनः सम्पर्क किया और अपने पति की स्मृति मे एक यज्ञ का आयोजन दिल्ली मे करवाने का प्रस्ताव रखा।

श्री वधावन जी ने १ अक्तूबर १९९४ को सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे यज्ञ की व्यवस्था करायी मैं मेरी बहन मामी तथा मेरी १४ वर्षीय एक मात्र पुत्री भी इस यज्ञ में सम्मलित हुई। इस अवसर पर मैंने अपने पति श्री स्व० बिजोये कुमार शिवजतन की स्मृति मे ८००० रुपये की स्थिर निधि स्थापित करने का प्रस्ताव रखा जिसका ब्याज सस्कृत पढने वाले गुरुकुल के छात्रों की शिक्षा पर व्यय होगा। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने दिवगत आत्मा की शांति के लिये वैदिक प्रवचनों से लाभान्वित किया।

सार्वदेशिक के पाठकों एवं एजेन्टों के लिये आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक के समस्त पाठकों तथा एजेन्टों को सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक साप्ताहिक का दीपावली विशेषाक बडी साज-सज्जा के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। अत दिनांक २३-१०-९४ का अक प्रकाशित नहीं होगा। इसे आप नोट कर लें और ३०-१०-९४ का अक दीपावली विशेषाक के रूप मे आपको प्राप्त होगा।

—सम्पादक

आर्यसमाज शकरपुर के तत्वावधान में प्लेग निवारण सप्ताह

आर्यसमाज मन्दिर शकरपुर के तत्वावधान मे दिनाक १०-१०-९४ से १६-१०-९४ तक प्लेग निवारण सप्ताह समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया है इस अवसर पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया है इस विशेष यज्ञ में औषधि युक्त विशेष सामग्री से आहुतियां डाली जावेगी। प्रतिदिन प्रात. ७ बजे से १० बजे तक होने वाले इस यज्ञ के उपरान्त क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा के मन्त्री श्री पतराम त्यागी का विशेष प्रवचन होगा। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर प्लेग दूर करने तथा वातावरण की शुद्ध करने हेतु सहयोग प्रदान करे। आर्यसमाज शकरपुर के प्रधान श्री मिश्रीलाल गुप्ता तथा मन्त्री श्री रामनिवास कश्यप ने बताया कि १६-१०-९४ को प्रात. ९ बजे इस यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है तथा इस अवसर पर यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला जावेगा।

ऋषि निर्वाणोत्सव

३ नवम्बर, ९४ बृहस्पतिवार

प्रात. ८ से १२ बजे तक रामलीला मैदान, नई दिल्ली में

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान में मनाये जाने वाले ऋषि निर्वाणोत्सव पर आप सब सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित भारी संख्या में पधारने की कृपा करें।

—डा० शिवकुमार शास्त्री,
संयोजक

विजयादशमी पर्व का सांस्कृतिक चिन्तन

डा० महेश विद्यालंकार

भारत कृषि प्रधान देश है। पर्व यहां की संस्कृति, चेतना के आधार रहे हैं। कई पर्व फसलों के साथ, जुड़े हैं तो कई पर्व ऋतु परिवर्तन, ऐतिहासिक घटनाओं और महापुरुषों के जीवनों से जोड़े गए हैं। पर्व जीवन में उत्साह, उल्लास एवं उमंग का संचार करते हैं। इन त्योहारों से जीवन और समाज में मेलजोल व भाईचारा आता है। हमारा देश त्योहारों का देश कहलाता है, यहां कोई न कोई पर्व हर दिन बना ही रहता है। इन पर्वों में देश की धार्मिक सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन की झांकी मिलती है।

विजयादशमी पर्व समूचे देश में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। वैदिक काल से ही इस त्योहार का महत्व व विशेषता रही है। हमारे देश में मुख्य तीन ऋतुएं होती हैं—सर्दी, गर्मी, वर्षा। वर्षा के कारण नदियां बाढ़ से उमड़ पड़ती हैं। चारों ओर पानी ही पानी नजर आता है। आने-जाने के मार्ग बन्द हो जाते हैं। प्राचीन में ऐसा होता था, आजकल तो इतने साधन सुविधाएं उपलब्ध हैं कि वर्षा ऋतु का सामान्य जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। पहले के समय में इतने उन्नत साधन नहीं होते थे। किसान, व्यापारी और यात्री गाड़ी रथ, नौका आदि साधनों से अपना आवागमन का कार्य चलाते थे। वर्षा के दिनों में व्यापार, विजययात्रा तथा दूसरे स्थान पर जाना प्रायः बन्द रहता था। वर्षा के बन्द होते ही शरद ऋतु के आगमन पर व्यापार यात्रा, कृषि कर्म सब कुछ आरम्भ हो जाता था।

वर्षा ऋतु में गाड़ी, रथ व अन्य साधनों में जो जंग व स्थिरता आ जाती थी। उन अस्त्र-शस्त्रों और साधनों को साफ व तेज किया जाता था। घोड़े हाथियों की साज-सामग्री को साफ-सुन्दर बनाया जाता था। यात्रा और व्यापार के लिए वाहनों व साधनों को सुसज्जित करने की तैयारी होने लगी थी। दुकानों व घरों के सामान को साफ-सुथरा बनाकर उपयोग के काबिल किया जाता था। सभी अपने अपने कार्य की तैयारी में लग जाते थे। विजयादशमी के दिन से व्यापार यात्रा तथा विदेशगमन आदि आरम्भ हो जाते थे। लोग व्यापार यात्रा से पूर्व यज्ञ-अनुष्ठान पूजा आदि धार्मिक कार्यों को महत्व देते थे। परस्पर मिलकर मन-मुटाव दूर करके एक दूसरे को सफलता के लिए मंगलकामनाएं देते थे।

विजयादशमी पर्व क्षत्रियों को विजय का त्योहार कहलाता है। यह शक्ति पूजा का विधान शास्त्र सम्मत रहा है—नरसेन रक्षिते राष्ट्रे आत्मवर्चा प्रसंते, जिस राष्ट्र में शौर्य, पराक्रम और वीरता की पूजा होती है, उसी रा में शास्त्रों एवं धर्म ग्रन्थों का पठन-पाठन निर्विघ्न रूप से चलता है। इस पर्व का वैदिक स्वरूप ऐसा ही मिलता है। कालान्तर में अनेक कड़ियां, घटना और किंवदन्तियां जुड़ती गईं। सत्य व यथार्थ प्रेरक रूप छूटता गया।

वर्तमान में जो इस पर्व का रूप स्वरूप दिखाई देता है, उसमें अनेक आडम्बर, विकृतियां कल्पनाएं आदि जुड़ गई हैं। जिससे वास्तविकता का बोध होना कठिन हो गया है। जो जनधारणा और प्रचलित भी है कि विजयादशमी के अवसर पर श्रीराम द्वारा रावण पर विजय की कथा को इस पर्व का मुख्य आधार स्वीकार किया जाता है, किन्तु विद्वानों तथा वाल्मीकि रामायण का इस तिथि पर मतभेद है। श्रीराम का लंका विजय भारत का सबसे बड़ा पराक्रम माना जाता है। शायद उनकी विजय यात्रा इसी दिन आरम्भ हुई हो? इसीलिए हम भारतीयों का यह दिन विजय मुहूर्त बन गया हो? जो भी रहा हो, किन्तु आज लोक प्रचलन चल रहा है, वह बड़ा प्रबल है।

इन दिनों नगर, ग्राम, शहर, देश-विदेश सर्वत्र रामलीलाओं, देवी पूजन, धार्मिक अनुष्ठान आदि की धूम मची होती है। कई दिनों तक रामलीला का मंचन होता है। बाल, युवा, वृद्ध सभी नर नारी हर्षोल्लास के साथ सम्मलित होते हैं। श्रीराम के जीवन चरित्र और कार्यों का गुण-कीर्तन होता है। सभी बड़ी धूम-धाम तथा उत्साह पूर्वक रावण-वध में भाग लेते हैं। ऐसा हर साल होता है। सवाल यह है कि हमने इस पर्व से जीवन, व्यवहार व संसार के लिए कुछ शिक्षा और प्रेरणा ली या नहीं? यदि नहीं ली, तो यह पर्व मात्र रस्म, रिवाज व परम्परा थी, जिसका निर्वाह हो गया? यह आज के मानव तथा समाज की दुःखान्त विडम्बना है कि सभी पर्व, रामलीलाएं, कृष्णलीलाएं, रासलीलाएं, धार्मिक कर्म, तीर्थयात्राएं आदि मेले का रूप लेते जा रहे हैं। लोग खाने पीने घूमने व तमाशा देखने के भाव से इन स्थानों पर जाने लगे हैं? चरित्र-निर्माण, जीवन सुधार और विचार प्राप्ति की भाव-भावना छूटती जा रही है? आगज का रावण हर साल बढ़ता, फलता-फूलता और फैलता जा रहा है? पहले एक रावण था, आज अनेक रावण गली, मोहल्ले और कदम कदम पर मिल जायेंगे? जो घात लगाए बैठे हैं कब सीता मिले और हम उठाकर चुराकर भगाकर तथा फुसलाकर ले उड़ें? इस रावण-वृत्ति पर जब तक हम रामवृत्ति द्वारा विजय प्राप्त नहीं करते, तब तक इस पर्व की भूल चेतना है।

विजयादशमी के साथ नवरात्र के व्रत उपवास पूजा-पाठ अनुष्ठान आदि का सम्बन्ध जोड़ा जाता है। इन क्रियाओं का हमारे जीवन और विचारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जीवन की असद्वृत्ति से सद्वृत्ति की ओर तथा मन-वचन शक्ति की ओर लाने के लिए व्रत, पूजा, सत्संग यज्ञ आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। नवरात्रों के माहात्म्य व फल का पुराण शास्त्रों में विस्तार से चिन्तन किया गया है। मैं यहां पर मात्र आयुर्वेदिक दृष्टि से जो शरीर को निरोगी बनाने में सहायक है, उसका जिक्र कर रहा हूं। इस शरीर में आठ चक्र और नौ द्वारों की स्वच्छता व शुद्धि की प्रेरणा भी इस नवरात्र में छिपी है। नियम यह है कि जहां भी मल रुकता है वहीं रोग उत्पन्न हो जाते हैं। जब भी ऋतु परिवर्तन आता है। तभी रोग आते हैं। यदि शरीर के नौ द्वारों को व्रत, उपवास एव फलाहार आदि से स्वच्छ कर लिया जाय तो आने वाली ऋतु में व्यक्ति निरोगी रह सकता है, जब ऋतु बदलती है, तभी नवरात्र आते हैं। आयुर्वेद यही कहता है--खान-पान, दिनचर्या, रहन-सहन परिवर्तन में आयुपर्यन्त जीवन सुखी व स्वस्थ रह सकता है। इस नवरात्र पर्व का यह वैज्ञानिक, व्यावहारिक व उपयोगी चिन्तन छूट रहा है मात्र बाह्य लोकाचार तथा आडम्बरों तक ही दृष्टि सीमित होती जा रही है।

विजयादशमी पर्व के साथ दुर्गा पूजा का महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। बंगाल प्रांत में दुर्गा पूजा बड़े भव्य स्तर पर होती है। बड़े बड़े

(शेष पृष्ठ १० पर)

मेला चांदापुर-शास्त्रार्थ

महर्षि दयानन्द और शंका समाधान (४)

सत्य धर्म विचार तथा अन्य अनेक और विषयों पर विचार

देखो! हम आर्य लोग संसार की उत्पत्ति और प्रलय विषय में वेद आदि शास्त्रों की रीति से सदा से जानते हैं कि हजार चतुर्युगी का एक ब्राह्मदिन और इतने ही युगों की एक ब्राह्म-रात्रि होती है। अर्थात् जगत् की उत्पत्ति होके जब तक कि वर्तमान होता है उसका नाम ब्राह्मदिन है। और प्रलय होके जब तक हजार चतुर्युगीपर्य्यन्त उत्पत्ति नहीं होती उसका नाम ब्राह्म-रात्रि है। एक कल्प में चौदह मन्वन्तर होते हैं और मूक में मन्वन्तर ७१ चतुर्युगियों का होता है। सो इस समय सातवां वैवस्वत मन्वन्तर वर्तमान हो रहा है। और इससे पहले ये छः मन्वन्तर बीत चुके हैं—स्वायम्भव, स्वारोचिष, औत्तमि, तामस, रैवत और चाक्षुष। अर्थात् १९६०८५२९७६ वर्षों का भोग हो चुका है और अब २३३३२२७०२४ वर्ष इस सृष्टि को भोग करने के बाकी रहे हैं। सो हमारे देश के इतिहास में यथार्थक्रम से सब बातें लिखी हैं। और ज्योतिष शास्त्र में भी मितिवार प्रति संवत् घटाते-बढ़ाते रहे हैं। और ज्योतिष की रीति से जो वर्ष पत्र बनता है उसमें भी यथावत् सबको क्रम से लिखते चले आते हैं। अर्थात् एक एक वर्ष घटाते और एक-एक वर्ष भोगने मे आज तक बढ़ाते आये हैं। इस बात में सब आर्य्यावर्त्त देश के इतिहास एक हैं। किसी में कुछ विरोध नहीं।

फिर जब कि जैन मतवाले और मुसलमान इस देश के इतिहासों को नष्ट करने लगे तब आर्य लोगों ने सृष्टि के इतिहास को कण्ठ कर लिया। सो बालक से लेके वृद्ध तक नित्यप्रति उच्चारण करते हैं कि जिसका सङ्कल्प कहते हैं और वह यह है—

ओ तत्सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीयेप्रहरार्द्धे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे आर्य्यावर्त्तान्तरैकदेशेऽमुकनगरेऽमुकसंवत्सरायनर्तुमासपक्षदिननक्षत्रलग्नमुहूर्त्तेऽत्रदं कार्यं कृतं क्रियते वा।

जो इसको ही विचार लें तो इससे सृष्टि के वर्षों की गणना बराबर जान पड़ती है।

जो कोई यह कहे कि हम इस बात को नहीं मान सकते तो उसको उत्तर यह है कि जो परम्परा से मिति, वार, दिन बढ़ाते चले आते हैं और जब कि इतिहासों और ज्योतिष शास्त्रों मे भी इसी प्रकार लिखा है तो फिर इसको मिथ्या कोई नहीं कह सकता। जैसे कि बहीखाते मे प्रतिदिन मिति वार लिखते हैं और उनको कोई झूठ नहीं कह सकता। और जो यह कहता है उससे भी पूछना चाहिए कि तुम्हारे मत मे सृष्टि की उत्पत्ति को कितने वर्ष हुए हैं? तब वह या तो छः हजार या सात हजार या आठ हजार वर्ष बतलावेगा। तो वह भी अपने पुस्तकों के अनुसार कहता है सो इसी प्रकार उसको भी कोई नही मानेगा क्योंकि यह पुस्तक की बात है।

और देखो भूगर्भविद्या से जो देखा जाता है तो उससे भी यह ही गणना ठीक-ठीक आती है। इसलिए हम लोगों के मत में जो जगत् के वर्षों की गिनती बन सकती है और किसी के मत मे कदाचित् नहीं। इसलिये यह व्यवस्था सृष्टि की उत्पत्ति के वर्षों की सबको ठीक माननी उचित है।

अब यह कि ईश्वर ने किस लिए सृष्टि को उत्पन्न किया? इसका उत्तर दिया जाता है—

जीव और जगत् का कारण स्वरूप से अनादि और जीव के कर्म तथा कार्य जगत् नित्यप्रवाह से अनादि हैं। जब प्रलय होता है तब जीवों के कुछ कर्म शेष रह जाते हैं तो उनके भोग कराने के लिए और फल देने के लिए ईश्वर सृष्टि को रचता है और अपने पक्षपात-रहित न्याय को प्रकाशित करता है। ईश्वर में जो ज्ञान, बल दया आदि और रचने की अत्यन्त शक्ति है उनके सफल करने के लिये और कान सुनने के लिये उसने सृष्टि रची है। जैसे आंख देखने के लिए और कान-सुनने के लिए हैं वैसे रचनाशक्ति रचने के लिये हैं। सो अपनी सामर्थ्य की सफलता करने के लिए ईश्वर ने इस जगत् को रचा है कि सब लोग सब पदार्थों से सुख पावें। धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि के लिए जीवों के नेत्र आदि साधन भी रचे हैं। इसी प्रकार सृष्टि के रचने में और भी अनेक प्रयोजन हैं कि जो समय कम रहने से अब नहीं कहे जा सकते। विद्वान् लोग आप जान लेंगे।

पादरी स्काट साहब—जिसकी सीमा होती है वह अनादि नहीं सकता। जगत् की सीमा का निरूपण है इसलिये वह अनादि नहीं हो सकता। कोई पदार्थ अपने आपको नहीं रच सकता परन्तु ईश्वर ने किस पदार्थ से रचा है और पण्डित जी ने भी नहीं बताया कि किस पदार्थ से जगत् को रचा।

मौलवी मुहम्मद कासिम साहब—जब कि सब पदार्थ सदा से हैं तो ईश्वर को मानना व्यर्थ है। कोई उत्पत्ति का समय नहीं कह सकता।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी—(पादरी साहब के उत्तर में) पादरी साहब मेरे कहने को नहीं समझे। मैं तो केवल जगत् के कारण को ही अनादि कहता हूं और जो कार्य है सो अनादि नहीं होता। जैसे मेरा शरीर साढ़े तीन हाथ का है सो उत्पन्न होने से पहले ऐसा न था और न नाश होने के पश्चात् ही ऐसा रहेगा। पर इसमें जितने परमाणु हैं वे नष्ट नहीं होते। इस शरीर के परमाणु पृथक्-पृथक् होकर आकाश मे बने रहते हैं और उन परमाणुओं में जो संयोग और वियोग की शक्ति है तो वह सदा उनमें रहती है। जैसा मट्टी से घड़ा बनाया जो कि बनाने के पहले नहीं था और नाश होने के पश्चात् भी नहीं रहेगा परन्तु जो मट्टी है वह नष्ट नहीं होती। और जो गुण अर्थात् चिकनापन उसमें है कि जिससे वह पिण्डाकार होता है वह भी मट्टी मे सदा से है। वैसे ही संयोग वियोग होने की योग्यता परमाणुओ मे सदा से है। इससे यह समझना चाहिए कि जिन परमाणु द्रव्यो से यह जगत् बना है वे द्रव्य अनादि हैं, कार्य द्रव्य नहीं। और मैंने यह कब कहा था कि जगत् के पदार्थ स्वयं अपने को बना सकते हैं मेरा कहना तो यह था कि ईश्वर ने उस कारण से जगत् को रचा है। (क्रमशः)

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये बार रु० ११० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

त्रिभाषा-सूत्र (५)

भारत की मूल भाषा, संस्कृत बहिष्कृत देश-विभाजक भाषा, उर्दू तुष्टीकृत
भारत की राष्ट्रभाषा, हिन्दी तिरस्कृत दासता की भाषा, अंग्रेजी पुरस्कृत

—ब्रह्मदत्त दीक्षित

७. राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्र की अस्मिता की अवमानना - प्रत्येक राष्ट्र की एक राष्ट्रभाषा वहीं की होती है जो कि उसकी पहिचान मानी जाती है। शासन, प्रशासन, व्यापार, नीति न्याय, राज-काज आदि सभी कार्यकलाप राष्ट्रभाषा द्वारा ही सचालित होते हैं। वही शिक्षा का माध्यम भी होती है। राष्ट्रभाषा अनिवार्य होती है। ज्ञान, विज्ञान, प्रोद्योगिकी का प्रचार-प्रसार एवं अभिवृद्धि भी उसी स्वाभाविक भाषा द्वारा ही होना न्यायोचित माना जाता है। किन्तु त्रिभाषा सूत्र में राष्ट्रभाषा हिन्दी का नाम तक नहीं और न उसकी अनिवार्यता का जिक्र शिक्षा का वह सर्वत्र माध्यम भी नहीं। विदेशी भाषा के द्वारा प्राप्त ज्ञान, विज्ञान, प्रोद्योगिकी सभी लंगड़ी-विद्या के द्योतक रहेंगे उन क्षेत्रों में मौलिकता का सदा अभाव रहेगा। मौलिक चिन्तन तो सदा अपनी भाषा के द्वारा ही हुआ करता है। सार्वजनिकता उसी से उपजती है। अंग्रेजी के विदेशी महामोह ने हमें कहां पकड़ रक्खा है—अवलोकन करें। हमारी शिक्षा दीक्षा विदेशी, विचार विमर्श विदेशी, ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धि विदेशी, प्रोद्योगिकी का व्यवहार विदेशी, आचरण विदेशी, वार्तालाप विदेशी, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, न्याय शास्त्र, समाज शास्त्र, शासन प्रशासन शास्त्र, व्यापार शास्त्र, का चिन्तन और व्यवहार विदेशी, रहन-सहन, भेष-भूषा, खान-पान (खाद्य-अखाद्य) सभी विदेशाभिमुखी। तात्पर्य यह है कि विदेशी होने के कारण सभी जीवन यापन की परम्परा "उधार" की हो गई है। ४९ वर्ष में हमने अपना जीवन "उधारी' पर दे रक्खा है। हमने अपनापन खो दिया। देशभर का जीवन इस समय उधारी पर टिक गया है। उधारी के उस स्वरूप के हम शिकार हैं जिसके आभास तक का हमें ज्ञान नहीं है। सारे देश का जीवन्त जीवन बिक चुका है। आजादी के प्रथम चरण में ही हम पुनः बिके हुए गुलाम बन गए। यही है न मानसिक गुलामी का परिणाम? फिर देश की अस्मिता कहां? किसी भी देश की अस्मिता तो उसकी मौलिकता में झांकती है? उधार खाऊ तो गुलाम ही होता है।

८—उपरोक्त सभी तथ्यों के अतिरिक्त सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा भयंकर दोष त्रिभाषा-सूत्र से संस्कृत का निष्कासन है जब कि संविधान द्वारा विधि-विहित १५ भाषाओं की अष्टम सूची मे संस्कृत' उल्लिखित है।

सर्वप्रथम उस महामानव की कतिपय उक्तियों का अवलोकन कर लें जिसने सर्वप्रथम स्वतन्त्रता की लड़ाई हजारों वर्षों से पोषित भारतीय संस्कृति में व्याप्त नितान्त बौद्धिक एवं आध्यात्मिक अस्त्र शस्त्रों के द्वारा (सत्य, अहिंसा, प्रेम, सहकार) विदेशी और सार्वभौम्य शक्तिशाली सल्तनत को परास्त करके देश छोड़ जाने का बाध्य कर दिया जिसे देख संसार चकित रह गया। देश ने जिसे राष्ट्रपिता पुकारा जिसके नाम का सहारा लेकर आज आजादी के ४६ वर्षों से देश के अग्रगण्य नेता सुख, सम्पदा का जोवन जी रहे हैं। आजादी का भोग-भोग रहे हैं। उस महान् आत्मा गांधी के सुविचारित शब्दों एव वाक्यों का कितना अनुपालन हुआ है?

शिक्षा नीति के अन्तर्गत संस्कृत का बहिष्कार

१—बड़े गर्व के साथ कहा गया है कि "मेरे हाथ में अब वह कुंजी आ गई है जिसके सहारे मैं समस्त संसार की भाषाओं का रहस्य बतला सकूंगा। यह कुंजी भारत की संस्कृत भाषा है।" लैटिन ग्रीक, अरबी के विद्वान जज कलकत्ता हाईकोर्ट—"विलियम जोन्स (सन् १७८४ ई०)"

इन्हीं का कथन है कि ग्रीक, लैटिन, क्लेटिक, प्राचीन भाषाएं तथा अंग्रेजी फ्रेन्च, जर्मन तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं का आदि स्रोत संस्कृत और प्राचीन वैदिक संस्कृत है। पुराना विश्वास कि यूरोप की भाषाएं हिब्रू से निकली हैं जो प्राचीन बाइबिल की भाषा थी—भ्रम दूर हो गया है। यही नहीं सुमेरियन, बैबलोनियन की प्राचीन सभ्यताएं और संस्कृतियां वैदिक संस्कृति के समीपतम थीं जिनकी भाषाओं में अधिकाधिक साम्य था। इस प्रकार संस्कृत का गौरव व विश्व की प्राचीनम सभ्यताओं और संस्कृतियों से जुड़ा हुआ था जिनका विस्तृत इतिहास लुप्त हो गया है। प्राचीन संस्कृत के आदि शब्द उनको उजागर करने में समर्थ होते देखे जाते हैं चाहे वे नगरों के नाम हों अथवा अन्य वस्तुओं या नदी पर्वत आदि के। संस्कृति सृष्टि की उस समय की पुरातन भाषा हैं जब विविध प्रकार के अनुभव-अन्य शब्दों, स्वरों की रचना हो रही थी।

२—संस्कृत भाषा के अक्षर तथा स्वर-बोध की प्राचीनता उतनी ही पुरानी है जब कि मनुष्य के शारीरिक-अवयवों से निसृत वाणी का प्रस्फुटन सर्वप्रथम हुआ होगा। स्वर-रचना व्यंजन रचना से समन्वित वर्णमाला का विकास स्वयं स्फूर्त भावनाओं विचारों. क्रिया-कलापों का ही परिणाम है। मनुष्य की विविध क्रियाओं ने ही वाणी को मूर्तिमान बनाया होगा। इसीलिए संस्कृत शब्द क्रियाओं मे ही उद्भूत हुए हैं। एक ही क्रिया मे उत्पन्न हुए दर्जनों शब्द बनते हैं जिनके अर्थ विभिन्न होते हैं। शब्द-विधायिका की जितनी शक्ति संस्कृत भाषा में है उतनी किसी भी अन्य भाषा में नहीं है। स्वर और व्यंजनों का योग स्वाभाविक है। प्रत्येक व्यंजन वर्ग शरीर के किसी अंग-विशेष से ही निसृत होता है इससे इसका उच्चारण स्पष्ट एव शुद्धमय का सूचक स्वयमेव बन जाता है। शारीरिक अवयवों की स्वाभाविक गति का योग शब्दों को सदा उत्पन्न होता रहता है। वाणी मानवीय शरीर और शब्दों का अद्भुत यौगिक सेतु है। देवनागरी लिपि ने इस भाषा को उस भव्य स्वरूप से सजाया है कि जो लिखा जाय वही उच्चरित होकर पढा जाए। अन्य भाषाओं की तरह ऐसा नहीं कि लिखा कुछ जाए और पढ़ा कुछ जाय। अपने गठन में पूर्ण, अभिव्यक्ति में स्पष्ट एवं शुद्ध तथा भावबोधकता मे पूर्ण सक्षम एवं लघु से लघुतम नाना प्रकार के कार्यों एवं व्यापारों को व्यक्त करने मे दक्ष—यही उत्तम भाषा के गुण होते हैं। उदाहरणार्थ संस्कृत के महाकवियों मनीषियों ने मानव जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म विचारों एवं भावनाओं को स्पष्टता से व्यक्त करने में कमाल दिखाया है। यह भाषा की ही महत्ता है। आज कि पूर्ण आधुनिकता भरे समाज में महान् विज्ञान वेत्ताओं की सम्मति से राय है कि कम्प्यूटर कार्य के लिए संस्कृत भाषा सर्वोत्तम है। तब इसे मृत भाषा क्यों कहा जाता है। वह तो आदि मे भी सर्वोत्तम रही और अन्त में भी सर्वोत्तम ही मानी जा रही है क्योंकि आज का युग कम्प्यूटर का युग कहा जाता है। फिर संस्कृत भाषा का निष्कासन क्यों? संस्कृत भाषा के अक्षर शारीरिक विज्ञान से जुड़े हुए, लिपि पूर्ण वैज्ञानिक फिर वैज्ञानिक युग मे इसकी उपेक्षा क्यों? (क्रमशः)

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश पर आधारित

अखिल भारतीय पत्राचार प्रतियोगिताएं

(क) सम्पूर्ण सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता :

घर बैठे विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थप्रकाश एवं उस पर आधारित एक प्रश्न पत्र प्राप्त करके ३०-११-९४ तक उत्तर भेजकर पुरस्कार प्राप्त करें। योग्यता के आधार पर प्रतियोगिता चार वर्गों में विभाजित है। १०+२, स्नातक एवं स्नातकोत्तर, शोध छात्र छात्रा एवं सामान्य वर्ग। प्रत्येक वर्ग में ३०००रु०, २०००रु०, १०००रु. एवं कुछ सांत्वना पुरस्कार रखे गए हैं। पूर्ण विवरण प्रश्न पत्र व प्रवेश शुल्क हेतु मात्र ३० रु० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि०), दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ अथवा आर्य समाज कार्यालय, बी-६, सेक्टर १२, नोएडा को भेजें।

(ख) कहानी प्रतियोगिता :

घर बैठें कहानियों की एक लघु-पुस्तिका एवं प्रवेश पत्र प्राप्त करें। ३०-१०-१९९४ तक इन कहानियों की शिक्षाओं को अपने शब्दों में लिखकर भेजें और पुरस्कार प्राप्त करें। प्रथम- ११००/- रु०, द्वितीय- ५०१/- रु०, तृतीय- २५१/- रु०, लघु पुस्तिका एवं प्रवेश पत्र हेतु मात्र दस रुपए आर्य समाज कार्यालय, बी-६, सेक्टर १२, नोएडा-२०१३०१ (उ० प्र०) को शीघ्र भेजें।

(ग) निबन्ध प्रतियोगिता :

सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास पर एक निबन्ध अनुमानतः ११×७ इन्च नाप के आठ पृष्ठों पर लिख कर ३०-१०-९४ तक आर्य समाज कार्यालय बी-६, सेक्टर १२, नोएडा-२०१३०१ (उ०प्र०) को भेजना है। इस प्रतियोगिता हेतु कोई प्रवेश पत्र अथवा प्रवेश शुल्क नहीं है। इच्छुक प्रतियोगियों को मात्र अपने पूर्ण विवरण सहित निबन्ध भेजना है। पुरस्कार इस प्रकार होंगे। प्रथम- १००० रु०, द्वितीय- ५०० रु०, तृतीय-३०० रु०।

नोट—उपरोक्त प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु आयु लिंग, मजहब, योग्यता आदि का कोई बन्धन नहीं है। एक से अधिक प्रतियोगिताओं में भाग लिया जा सकता है। माध्यम हिन्दी अथवा अंग्रेजी। पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश (LIGHT OF TRUTH) यदि स्थानीय पुस्तकालयों व आर्यसमाज कार्यालयों में उपलब्ध न हो तो हमारे मुख्य कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ को ३० रु० रुपए हिन्दी संस्करण के लिए और अस्सी रुपए अंग्रेजी संस्करण के लिए भेजकर मंगाई जा सकती है।

— स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सत्यार्थप्रकाश के बारे में लोग क्या कहते हैं?

- हिन्दू जाति की ठंडी रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे, सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।

—वीर सावरकर

- "मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। इससे तख्ता पलट गया। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से मेरे जीवन के इतिहास में एक नवीन पृष्ठ जोड़ दिया।"

—अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

- यदि सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रुपए होता तो भी उसे सारी सम्पत्ति बेच कर खरीदता।

—पंडित मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए०

- सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन उपरान्त मैं इसके रचियता महर्षि दयानन्द को एक मात्र अपना गुरु माना है।

—लाला लाजपत राय

- सत्यार्थ प्रकाश से न जाने कितने असंख्य लोगों की काया पलट की होगी।

—स्वामी श्रद्धानन्द

- इस महान ग्रन्थ से अकर्मण्यता, जन्मजात जातिवाद जैसी अनेक बुराइयों से लड़ने की प्रेरणा मिलती है।

—भूतपूर्व प्रधानमन्त्री चरण सिंह जी

- सत्यार्थ प्रकाश एक लासानी किताब नफीस (सर्वोत्तम कृति) है।

—मौलाना मोहम्मद अली

- सत्यार्थ प्रकाश ने प्रकाश दिखाकर अंधकार को दूर किया और लोगों को सन्मार्ग दिखाया।

—श्री मोहनलाल मोहित मोरिशस

- सत्यार्थ प्रकाश के महत्व को कम करने का अर्थ है वेदों के बहुमूल्य सार प्रतिष्ठा व मूल्य का कम किया जाना।

—श्री सी० एस० रंगास्वामी अय्यर

- सत्यार्थ प्रकाश के मुताल्या से मेरी जिन्दगी में एक बहुत बड़ा इंकलाब पैदा कर दिया है आपकी बड़ी इनायत होगी अगर पाकिस्तान के हुक्मरानों को इसकी एक-एक जिल्द भेजें।

—एक पाकिस्तानी पत्र से

- आज से कई वर्ष पूर्व एक वृद्ध व्यक्ति मुझे सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति सप्रेम भेंट कर गए थे। इसके अध्ययन से मेरा जीवन के प्रति दृष्टिकोण ही बदल गया है, एक गहरी खाई व गहन अंधकार से निकलने का आभास होता है, उस वृद्ध व्यक्ति का चेहरा व उपकार आजीवन स्मरण रहेगा।

—डा० ए० बी० आर्य, हृदय व छाती रोग विशेषज्ञ

- क्या आप मनुष्य द्वारा रचित विश्व की सबसे क्रांतिकारी पुस्तक पढ़ना चाहते हैं जिसके रचयिता महर्षि दयानन्द ने १८७५ ई० में इस अपूर्व क्रांतिकारी पुस्तक की रचना करके तत्कालीन विश्व के १.५० अरब मनुष्यों को चुनौती दी। एक शताब्दी से भी अधिक वर्षों से यह पुस्तक सभी वैज्ञानिकों एवं बुद्धिजीवियों को चुनौती दे रही है परन्तु कोई भी व्यक्ति आज तक इसके सिद्धांतों को नहीं काट पाया है। यह अपूर्व पुस्तक संसार की कई भाषाओं मे प्रकाशित हो चुकी है लाखों निराश व्यक्ति इस पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" के द्वारा सफलता की उच्च सीढ़ियों पर चढ़ चुके हैं। गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी का कहना है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' ने लाखों मनुष्यों की काया पलट दी है भगतसिंह, राजगुरु, चन्द्रशेखर, रामप्रसाद बिस्मिल ने इसी पुस्तक के द्वारा प्रेरणा प्राप्त करके ही अंग्रेजी सरकार की नाक में नकेल डाली थी। यदि आपकी व्यापारिक राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक या आर्थिक समस्या है तो आप "सत्यार्थ प्रकाश" का अध्ययन करें। विश्व की सभी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, व आर्थिक समस्या का महर्षि दयानन्द ने समाधान दिया है। इस पुस्तक के अध्ययन से अज्ञानी ज्ञानी बन जाता है, ज्ञानी महाविद्वान हो जाता है। इस पुस्तक में बताये प्राणायाम के द्वारा विद्यार्थी कठिन से कठिन विषय तत्काल समझ जाता है। गांधी, नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, जगजीवन राम, सरदार पटेल, लाला लाजपत राय, गोखले इत्यादि सभी महापुरुषों ने इस महान पुस्तक की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है तथा प्रेरणा प्राप्त की। आप भी इस क्रांतिकारी पुस्तक को मंगवाकर अपना तथा अपने परिवार की कायाकल्प करें तथा सफलता के उच्च मानदण्ड प्राप्त करें।

—श्री देवेन्द्र सिंह जी

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री व उपमन्त्री द्वारा थांदला क्षेत्र का १४-९-९४ तक की यात्रा का विवरण

जैसा कि पाठकों को विदित ही है कि म०प्र० के झाबुआ जनपद के थांदला क्षेत्र में अ०भा० दयानन्द सेवाश्रम संघ, नई दिल्ली द्वारा कुछ छात्रावास, बालवाड़ियां व विद्यालय वनवासी जनता के बच्चों की सेवा के लिए चलाई जा रही हैं। इन सबके निरीक्षण हेतु श्री वेदव्रत महता, महामन्त्री श्रीमती प्रेमलता जी खन्ना व श्रीमती ईश्वर रानी (उपमन्त्री) १२-९-९४ को दिल्ली से चलकर १४-९-९४ को प्रातः थांदला पहुंचे। इस क्षेत्र में इस वर्ष आवश्यकता से कहीं अधिक वर्षा हुई और इन दिनों भी होती रही। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में जाना न हो सका। फलतः थांदला आश्रम के छात्रों को ही हम तीनों वैदिक सन्ध्या, यज्ञ, हवन व कहानियों द्वारा नैतिक शिक्षा का बोध कराते रहे। साथ ही अध्यापक व अध्यापिकाओं व आश्रम मे कार्यरत सब व्यक्तियों को भी आर्य सिद्धान्तों आदि का बोध कराते रहे।

छात्राओं के प्रवेश छात्रों की संख्या बढ़ने के कारण वहां पर स्थान की कमी काफी समय से अनुभव की जा रही थी। इस कमी को कुछ हद तक पूरा करने हेतु कुछ दानी व्यक्तियों से श्रीमती ईश्वरानी अरोड़ा व श्रीमती प्रेमलता जी ने बात की और परिणाम-स्वरूप रु० २५००/०० श्रीमती कमला जी सूद, पंचशील पार्क निवासी ने, रु० ५०००-०० श्री सुधीर जी प्रशान्त विहार निवासी ने एक कमरा बनवाने हेतु योगदान दिया व श्रीमती सुशीला खन्ना निवासी महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर ने ५०००-०० का वचन दिया। इसकी रूपरेखा पर विचार करने हेतु थांदला आश्रम की अन्तरंग सभा की बैठक १५-९-९४ को बुलाई गई जिसमे कमरा बनाने का निश्चय पारित हुआ। इस कार्य के लिए अन्तरंग सभा को १५ हजार रुपये की राशि भी दे दी गई। श्रीमती कमला सूद ने इस कार्य के लिए पांच हजार रुपये और देने का भी वचन दिया है।

इसी आश्रम में वन कन्या आश्रम का आरम्भ जनवरी १९९४ मे इस आशय के साथ कि म०प्र० सरकार से सरकारी अनुदान मिलने पर यह आश्रम सुचारू रूप से कार्य करने लगेगा प्रारम्भ किया गया था। परन्तु सरकारी सहायता किन्हीं अज्ञात कारणों से नहीं मिल सकी। येन केन प्रकारेण जन सहयोग से यह आश्रम चल रहा है। परन्तु धनाभाव के कारण अब वन कन्या आश्रम का बन्द करना लगभग निश्चित हो गया था। इसके फलस्वरूप संघ के प्रधान माननीय सोमनाथ जी मरवाह ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती से वन कन्या आश्रम को बन्द न होने देने के लिए देने का अनुरोध किया। स्वामी जी ने तत्काल यह राशि संघ को दे दी है। संघ इसके लिए उनका आभारी है। उपरोक्त दोनों राशियां कुल रु० ५०००-०० का डिमाण्ड ड्राफ्ट उसी अन्तरंग मे अध्यक्ष थांदला आश्रम को महामन्त्री श्री वेदव्रत जी महता ने सौंप दिया। इससे पूर्व भी वन कन्या आश्रम को जीवित रखने के लिए श्रीमती प्रेमलता जी की प्रेरणा से दान रूप में प्राप्त कुल रु० १५ ०००-०० भेजे जा चुके हैं तथा संघ की ओर से भी एक हजार रुपये प्रतिमास भेजे जाते हैं।

इसी प्रचार कड़ी को बल देने के लिए श्री आर्येन्द्र जी (मन्त्री वन कन्या आश्रम बरखेड़ा) ने ग्राम अन्तर्वेलिया मे श्री प्रताप-सिंह जी ठाकुर के गृह पर एक यज्ञ का आयोजन १५-९-९४ को दोपहर में कराया था। यहां पर प्रतिवर्ष पशुबलि देने का प्रचलन है। उन्होंने इस कुरीति को

(शेष पृष्ठ १० पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दूरभाष । ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ३७] | दयानन्दाब्द १७० | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ | कार्तिक कृ० १० स० २०५१ ३० अक्तूबर १९९४

अनेक आंदोलनों के सूत्रधार तथा राष्ट्र के लिए समर्पित अग्रणी नेता

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती नहीं रहे

नई दिल्ली १८ अक्तूबर। आर्य समाज की अन्तर्राष्ट्रीय सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का देहावसान १७ अक्तूबर को अचानक हृदय गति रूक जाने के कारण हो गया। वे ९१ वर्ष के थे। स्वामी जी अन्तिम समय तक आर्य समाज के कार्यों का सचालन सफलतापूर्वक करते रहे। उसी दिन ही प्रात काल गोवश के सरक्षण तथा पशु हिंसा बन्द करवाने के लिए आर्यसमाज के एक शिष्ट मण्डल का नेतृत्व करते हुए स्वामी जी ने कृषिमन्त्री श्री बलराम जाखड से विस्तृत चर्चा की तथा बढती पशुहिंसा के प्रति अपनी चिंता जताई।
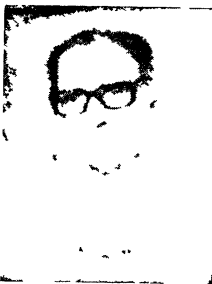
कश्मीर के अनन्तनाग मे जन्मे स्वामी जी मूलत स्वतन्त्रता सेनानी थे। वे १९६७ मे चादनी चौक से लोक सभा के लिए चुने गये थे। १९३६ के गोरक्षा आन्दोलन तथा ऐतिहासिक हिन्दी आन्दोलन और १९३८-३९ के हैदराबाद निजाम के विरुद्ध छिड आर्य सत्याग्रह मे स्वामी जी ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। उनका पूर्व नाम रामगोपाल शालवाले था। राष्ट्रीय आन्दोलनों के दौरान उन्होंने २२ बार जेल यात्रा की। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्वामी जी १९७५ से लगातार आर्य समाज की सर्वोच्च सस्था के निर्विरोध प्रधान चुने जाते रहे हैं। नशाबन्दी, भ्रष्टाचार उन्मूलन, दहेज विरोधी, आन्दोलन, सौन्दर्य प्रतियोगिता विरोधी आन्दोलन सम्मान एव साम्प्रदायिक एकता के प्रयासों के लिए स्वामी जी का योगदान अतुलनीय रहेगा। जीवन के तमाम अनुभवो के बाद तथा वैदिक मान्यताओं का पालन करते हुए स्वामी जी ने १९८६ मे ८२ वर्ष की अवस्था मे सन्यास आश्रम की दीक्षा ली थी, तभी से उन्होने अपना नाम रामगोपाल शालवाले के स्थान पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती अपनाया था।

स्वामी जी ने गौ-सवर्द्धन के लिए राजधानी मे एक ऐतिहासिक केन्द्र की भी स्थापना की। श्रीमती इन्दिरा गाधी और राजीव गाधी के प्रेरणा स्रोत रहे स्वामी जी अपने कट्टर राष्ट्रवादी विचारो के लिए आर्य समाज के लौह स्तम्भ माने जाते थे।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री प० वन्देमातरम राम-चन्द्रराव ने स्वामी जी के देहावसान को राष्ट्र के लिए एक अपूर्णीय क्षति बताया है वे इन दिनो दिल्ली मे ही हैं।

स्वामी जी का पार्थिव शरीर जनता के दर्शनार्थ आर्य समाज दीवानहाल मे रखा गया था।

१९ अक्तूबर को दोपहर २ बजे आर्य समाज दीवानहाल से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की शव यात्रा फूलों से सजी हुई गाडी मे प्रारम्भ हुई। हजारो की सख्या मे स्त्री पुरुष स्वामी जी को अन्तिम विदायी देने के लिये वहां उपस्थित थे। शवयात्रा का विशाल जलूस चादनी चौक रेलवे स्टेशन से होता हुआ निगमबोध घाट पहुचा। रास्ते मे अनेकों स्थानो पर विभिन्न सस्थाओ की ओर से स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी। शव यात्रा मे भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह हरकिशनलाल भगत सहित कई अन्य राष्ट्रीय नेता साधु सन्यासी तथा गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। निगमबोध घाट पर स्वामी सर्वानन्द, स्वामी तत्वबोधानन्द तथा दीक्षानन्द जी की उपस्थिति मे पूर्ण वैदिक रीति से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का अन्तिम सस्कार सम्पन्न किया गया। हजारो व्यक्तियो ने अपने प्रिय नेता को अश्रुपूर्ण नेत्रो से अन्तिम विदायी दी।

सार्वदेशिक सभा के नए प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव कार्यकारी प्रधान श्री सोमनाथ मरवाह

नई दिल्ली १८ अक्तूबर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक आपात कालीन परिस्थिति मे आर्य समाज दीवान हाल म साय ४ बजे बुलाई गई। सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्रराव को आगामी चुनाव तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान चुना गया है तथा साथ ही उनके कार्य सचालन मे सहायता के लिये श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट को कार्यकारी प्रधान नियुक्त किया गया है।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

दिल्ली के तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम में—
देश के अनेक सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक नेताओं ने स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को श्रद्धा सुमन अर्पित किए

दिल्ली २३ अक्तूबर। पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की श्रद्धांजलि सभा आज दिल्ली के तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में श्री प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमे अनेक गणमान्य महानुभावों ने अपने श्रद्धा सुमन स्वामी जी को अर्पित किए।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को राष्ट्रीय एकता अखण्डता का सजग प्रहरी, हिन्दी व सस्कृत का महान प्रचारक, गोवंश की रक्षा का अथक योद्धा एव एक महान त्यागी तपस्वी बताते हुए अनेक सामाजिक धार्मिक, साहित्यिक, राजनैतिक सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

विशेष सम्माननीय व्यक्तियो में—कल्याण मन्त्री श्री सीताराम केसरी, हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल एव कृषिमन्त्री चौ० छत्तरसिंह आर्य, दिल्ली सरकार के उद्योगमन्त्री श्री हरचरणसिंह बल्ली, शिक्षा व विकासमन्त्री श्री साहिब सिंह वर्मा, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री एच०के०एल० भगत, सासद श्री विजय कुमार मल्होत्रा, भारत साधु समाज के स्वामी हरिनारायणानन्द, डा० मण्डन मिश्र, श्री सत्यनारायण बसल, दिल्ली के वित्तमन्त्री श्री जगदीश मुखी, सासद श्री सज्जन कुमार, अखिल भारतीय जनसघ के अध्यक्ष श्री बलराज मधोक, आर्य समाज यति मण्डल के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द, स्वामी दीक्षानन्द, भाजपा के श्री केदारनाथ साहनी, फतेहपुरी के इमाम मोहम्मद मुकर्रम, जैन समाज की ओर से डा० साधना साध्वी जत्थेदार सरदार रछपाल सिंह, अखिल भारतीय सनातन धर्म सम्मेलन की ओर से श्री रमाकान्त गोस्वामी भाषा के सम्पादक डा० वेदप्रताप वैदिक, सनातन धर्म गोरक्षा समिति की ओर से श्री प्रेमचन्द गुप्त, दिल्ली विश्वविद्यालय सस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० वाचस्पति उपाध्याय आदि गणमान्य व्यक्तियो ने स्वामी आनन्दबोध के निधन को समाज राष्ट्र व मानवता की अपूर्णीय क्षति बताया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आर्य समाज स्वामी जी के चरण चिन्हो पर चलते हुए उनके अधूरे कार्यों को पूरा कर समाज व राष्ट्र निर्माण में महत्त्व पूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

इनके अलावा प्रदेशों के अध्यक्ष और श्री अशोक चौहान ने जर्मनी आर्य समाज के समस्त पदाधिकारियो की ओर से स्वामी जी को श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

कुछ गणमान्य एव राष्ट्रीय व्यक्तियो तथा नेताओ के शोक सदेश भी प्राप्त हुए हैं जिनमे श्री शकरदयाल जी शर्मा, राष्ट्रपति भारत गणतन्त्र श्री पी०वी० नरसिंहराव जी प्रधानमन्त्री भारत सरकार, श्री शिवराज पाटिल अध्यक्ष लोकसभा, श्री अर्जुन सिंह मानव ससाधन मन्त्री, श्री बलराम जाखड़ कृषि मन्त्री भारत सरकार, पजाब और हरियाणा के मुख्यमन्त्री आदि प्रमुख हैं। उपरोक्त सभी नेताओ ने स्वामी जी के राष्ट्रीय एकता तथा सामाजिक सुधार के कार्यों की सराहना और उपस्थित जनता में धार्मिक चेतना पैदा करने के विचार प्रस्तुत किए।

श्रद्धाजलि प्रस्ताव श्री सूर्यदेव अध्यक्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रस्तुत किया जिसे विस्तृत करते हुए सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने स्वामी जी की जीवनी पर प्रकाश डाला और महत्वपूर्ण क्षेत्रों से प्रमुख घटनाओं का वर्णन किया।

प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के पदाधिकारी, डॉ० प्र० से श्री कान्तिकुमार कोचटकर, पजाब से अश्विनी कुमार, राजस्थान से छोटूसिंह, हरियाणा से स्वामी ओमानन्द आदि ने स्वामी जी को श्रद्धाजलि दी।

आर्य महिला सभा की ओर से श्रीमती प्रकाश आर्या और श्रीमती उषा मेहता ने स्वामी जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। प्रो० सत्यनारायण बसल ने राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ की ओर से अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

मच सचालन सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने किया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की श्रद्धांजलि सभा में पारित

शोक प्रस्ताव

(रविवार २३-१०-९४)

पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पूर्व नाम लाला रामगोपाल शालवाले के निधनसे अपूरणीय क्षति हुईहै। स्वामी दयानन्द सरस्वती का सच्चा शिष्य हमसे छिन गया है। हमने एक ऐसे महामानव को खो दिया है जिसके जीवन का उद्देश्य था—जाति, रग, धर्म के भेद-भाव से रहित, मानव मात्र का कल्याण। अनथक परिश्रम करने वाले, समाज सेवा की भावना से ओत प्रोत दूरदर्शी त्याग और बलिदान के लिए प्रतिक्षण सन्नद्ध, पूज्य स्वामी जी ने अपने साध्य की प्राप्ति की ओर सभी लोगों के लिए श्रद्धा भाजन तथा यशस्वी बने। समाज सुधार के अनेक आन्दोलनो के सूत्रधार, राष्ट्रीय स्वाधीनता तथा राष्ट्रीय भावात्मकता के लिये समर्पित अग्रणी नेता आज हमारे बीच मे नही है।

ऐसे महान आत्मा स्वामी जी के लिये हम अपने हार्दिक श्रद्धा सुमन विनम्र भाव से इस आशा के साथ अर्पित करते हैं कि हम सभी आज यह शपथ लें कि सम्पूर्ण विश्व को सुख शान्ति और समृद्धि पूर्ण बनाने के लिए तथा सत्य वैदिक धर्म की भावना और वर्चस्व से युक्त करने के लिये सदैव प्रयत्नशील रहेगे।

शोक संवेदना

श्री पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी वर्तमान सदी के साहस, त्याग एव सघर्ष शील अध्याय थे। उनके निधन से आज सम्पूर्ण भारत वर्ष से एक पूर्ण अध्याय समाप्त हो गया जिसकी पूर्ति भविष्य में असम्भव है।

लेकिन स्वामी जी के द्वारा छोड़े गए अधूरे कार्यों को पूरा करना तथा राष्ट्रहित में चिन्तन करते हुए राष्ट्र की एकता हेतु कार्य करना ही स्वामी जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

[—रूपचन्द यादव,

धर्म एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित स्वामी आनन्दबोध

डा० भवानीलाल भारतीय, ८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर

सनातन वैदिक धर्म तथा स्वदेश सेवा में सम्पूर्ण जीवन को एक निष्ठ होकर व्यतीत करने वाले स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (पूर्व आश्रम में लाला रामगोपाल शालवाले) का निधन देश के सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन की अपूरणीय क्षति है। संन्यास ग्रहण से पूर्व दिल्ली के सार्वजनिक जीवन में लाला रामगोपाल शालवाले के नाम से प्रसिद्ध स्वामी आनन्दबोध का जन्म जम्मू कश्मीर के अनन्तनाग शहर में १९०९ में हुआ। मूलतः वे अमृतसर के निवासी थे। १९२७ में लाला रामगोपाल दिल्ली आये और आर्यसमाज के माध्यम से देश, समाज तथा धर्म की सेवा में लगे। सुप्रसिद्ध तार्किक तथा तुलनात्मक धर्मों के प्रसिद्ध अध्येता प० रामचन्द्र देहलवी उनके प्रेरणा स्रोत रहे। लालाजी ने अपनी जीविका एक शाल विक्रेता के यहां साधारण मुनीम के रूप में आरम्भ की, किन्तु अपनी योग्यता, परिश्रम तथा अध्यवसाय के बल पर वे व्यापार के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व उन्नति कर सके।

सार्वजनिक समस्याओं के समाधान के लिए आगे आने तथा सामाजिक—धार्मिक प्रश्नों में उनकी आरम्भ से ही रुचि थी। देश विभाजन के समय उन्होंने पंजाब से आने विस्थापितों की सेवा के लिए धर्मार्थ शिविरों की व्यवस्था की। इससे पूर्व १९३९ में हैदराबाद के निजाम शाही शासन में धार्मिक स्वतन्त्रता का दमन किया गया तो आर्यसमाज ने सभी धर्मावलम्बियों की सहायता एवं सहयोग से धार्मिक सत्याग्रह का आयोजन किया। दिल्ली में सत्याग्रहियों की भर्ती के लिए जो केन्द्र खोला गया उसके अधिष्ठाता लाला रामगोपाल को बनाया गया। सत्याग्रह की सहायता के लिए उन्होंने सेठ जुगल किशोर बिड़ला से २५ हजार की राशि प्राप्त की जिससे सत्याग्रहियों को भोजन तथा यात्रा की सुविधायें उपलब्ध कराई गई।

धीरे-धीरे लाला राम गोपाल का सार्वजनिक जीवन अधिक व्यापक होता गया। अविभाजित पंजाब में जब हिन्दी के हितों का हनन होने लगा तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भाषा स्वातन्त्र्य समिति का गठन किया और हिन्दी भाषी लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिये पंजाब में सत्याग्रह की घोषणा की गई। स्व० प० प्रकाशवीर शास्त्री, प० ओमप्रकाश त्यागी तथा हैदराबाद के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी प० नरेन्द्र के सहयोग से लालाजी ने भाषा स्वतन्त्रता के इस अहिंसात्मक सत्याग्रह का सफल संचालन किया। इसी प्रकार गोरक्षा आन्दोलन में भी लालाजी की भूमिका प्रशंसनीय रही। गोरक्षा को देश की एक ज्वलन्त आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्या का रूप देकर आपने इसका असाम्प्रदायिक रूप बरकरार रखा तथा गोरक्षा आन्दोलन में पुरी के शंकराचार्य एवं स्वामी करपात्री जैसे सनातन धर्म नेताओं का पूर्ण सहयोग प्राप्त किया।

आर्य समाज के तो वे निर्विवाद नेता थे और विगत चार दशकों से आर्य समाज के सार्वभौम संगठन का सूत्र संचालन कर रहे थे। १९७३ में टर्की में जब भगवद्गीता और उपनिषदों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया तो लाला जी ने इसका विरोध किया। तब राष्ट्र मन्त्री सरदार स्वर्णसिंह के माध्यम से टर्की के दूतावास को भारतीयों की गीता तथा उपनिषद् विषयक भावनाओं से अवगत कराया गया। परिणाम में टर्की सरकार ने इन आध्यात्मिक ग्रन्थों पर लगाया प्रतिबन्ध निरस्त कर दिया। इसी प्रकार अरब देशों में किसी आर्यसमाजी द्वारा अपने अध्ययन के लिए स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की प्रति को अपने पास रखने के कारण उसे दण्डित किए जाने का समाचार जब उन्हें मिला तो विदेश विभाग के उच्च सूत्रों से कहकर उन्होंने इसमें हस्तक्षेप करवाया तथा उस व्यक्ति को सकुशल भारत ले आये। कुछ वर्ष पूर्व जर्मनी में विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन स्वामी चिन्मयानन्द जी के द्वारा किया गया तो उन्हें वैदिक धर्म के प्रवक्ता के रूप में आमन्त्रित किया गया।

स्वभाषा और स्वसंस्कृति, संस्कृत और गोसंवर्धन और मांसाहार निषेध जैसे सांस्कृतिक प्रश्नों पर स्वामी आनन्दबोध ने सदा रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया। दिल्ली, पटना, हैदराबाद आदि नगरों में उन्होंने समय-समय पर भारतीय भाषा सम्मेलनों का आयोजन किया और इस बात पर बल दिया कि हिन्दी को भांति संविधान में स्वीकृत अन्य सभी भारतीय भाषाओं की उन्नति में ही राष्ट्र भाषा की समृद्धि निहित है। विदेशी भाषा अंग्रेजी का वर्चस्व तभी समाप्त किया जा सकता है। जब हम समस्त उत्तर एवं दक्षिण भारतीय भाषाओं को प्रतिष्ठित स्थान दिला सकें। शिक्षा की प्राचीन भारतीय आदर्शों के प्रति उनकी अगाध आस्था थी। वे आर्य समाज द्वारा संचालित, गुरुकुलों, संस्कृत महाविद्यालयों तथा महिला शिक्षण संस्थाओं की उन्नति एवं प्रगति के लिए सदा सक्रिय रहे।

विगत दिनों में विदेशों में मांस के अबाध निर्यात को बढ़ावा देने के लिए पंजाब के डेराबस्सी तथा हैदराबाद के निकटवर्ती अल-कबीर में जो यान्त्रिक कत्लखाने खोलने की योजनाओं को सरकार का सहयोग और प्रोत्साहन मिला तो स्वामी जी को असह्य कष्ट हुआ। वे भारत के निर्मम पशु-वध को लेकर बराबर चिन्तित रहे तथा इसे रोकने के लिए उन्होंने केन्द्रीय सरकार से पत्राचार भी किया। धर्म, संस्कृति समाज और राष्ट्रीय जीवन से जुड़ी कोई ऐसी समस्या नहीं थी जिसमें स्वामी आनन्द बोध ने स्वर को बाबद न किया हो, यही कारण है कि आर्य समाज के सर्वमान्य नेता होने पर भी सनातनी, जैन, सिख आदि सभी मतों के धर्माचार्य एवं नेता उनका सम्मान करते थे। यदि वे अपना जीवन राजनीति में लगाते तो सम्भवतः देश मान्य, राजनेता बनते, किन्तु उन्होंने धर्म, संस्कृति और स्वदेश की एक-निष्ठ सेवा को ही अपने जीवन का एक मात्र लक्ष्य बनाया। उनकी पावन स्मृति में शतश: प्रणाम।।

श्री अर्जुनसिंह का शोक सन्देश

मानव संसाधन विकास मन्त्री
भारत
नई दिल्ली-११०००१

प्रिय श्री रामचन्द्र राव,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के निधन का समाचार जानकर सहसा आघात पहुंचा। आर्य जगत के भीष्म-पितामह श्री रामगोपाल शालवाले ने छोटी आयु से ही देश और समाज की सेवा शुरू कर दी थी। उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना अतुलनीय योगदान प्रदान किया। राजनीति उनके लिए मात्र सेवा का एक माध्यम थी। वह सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के प्रति अत्यन्त सजग थे और उन्होंने कभी भी धर्म और राजनीति को मिलाकर इसे निहित स्वार्थ का माध्यम नहीं बनने दिया। मानवता के सच्चे उपासक और स्वामी दयानन्द के आदर्शों को अपने वास्तविक जीवन में उतारने वाले स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के न रहने से पूरे देश को अपूरणीय क्षति हुई है। मैं समझता हूं कि उनका विराट व्यक्तित्व हमें सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

आपका
(अर्जुन सिंह)

श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव
कार्यवाहक अध्यक्ष,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
दयानन्द भवन, रामलीला मैदान,
नई दिल्ली

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

(पूर्व नाम श्री लाला रामगोपाल शालवाले)

जीवन-परिचय

श्री सोमनाथ एडवोकेट, कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक सभा

१९२१ में या उसके आस-पास मुझे ज्ञात हुआ कि ऐसा व्यापारी भी है जो आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर बिना कोई दक्षिणा लिए उत्कृष्ट व्याख्यान देता है।

१०-११ वर्ष की आयु से ही मैं आर्यसमाज के सम्पर्क में रहा हूं। मैं आर्य कुमार सभा जेहलम का सदस्य था। इसके बाद मैं १९३२ में आर्यसमाज कुचली बाट जेहलम का सदस्य बना। लाहौर से अपनी शिक्षा पूरी करने पर १९३३ में मैंने वकालत शुरू की और तभी आर्यसमाज में प्रविष्ट हुआ। १९३४-३५ में मैं इस समाज का मन्त्री निर्वाचित हुआ। परन्तु मेरा अनुभव नाममात्र का था। जब-जब जेहलम में या लाहौर में जबकि मैं डी० ए० वी० स्कूल का या डी० ए० वी० कालेज का छात्र था आर्य समाज का कोई वार्षिकोत्सव या अन्य समारोह होता था तो मैं उनमें अवश्य भाग लेता था। परन्तु आर्य समाज के उपदेशक का काम करने वाला मुझे कोई व्यापारी न मिला था।

दिल्ली में आगमन

देश-विभाजन के बाद १९४७ के नवम्बर के आठ मास में दिल्ली आया। वहां आर्यसमाज मोहनगर के अधिकारियों ने मुझे आर्यसमाज का सदस्य बनने की प्रेरणा की और मैंने तुरन्त उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। अपने निवास स्थान के पास के किसी समाज का सदस्य बनने के लिए मैं स्वयं उत्सुक था। उसी वर्ष आर्यसमाज मोहनगर का वार्षिकोत्सव हुआ। प्रोग्राम में व्याख्यान देने वालों में ला० रामगोपाल शालवाले का नाम भी शामिल था। मेरे लिए यह बात बड़ी आश्चर्यजनक थी कि कोई शालमर्चेन्ट आर्य-समाज के उपदेशक के रूप में कार्य कर सकता है और वह भी वार्षिकोत्सव जैसे महत्वपूर्ण अवसर पर विशाल जनसमूह के समक्ष व्याख्यान देगा।

उत्सव की समस्त कार्यवाही में मैं उपस्थित रहा। मैं ला० रामगोपाल शालवाले को देखने और उनका व्याख्यान सुनने के लिए उत्सुक था। स्व० श्री लालबहादुर शास्त्री के कद वाले उस व्यक्ति के प्रथम दर्शन पर ही, जिसके भीतर एक युवक-हृदय कार्यरत था, मैं आश्चर्य चकित रह गया। जब स्वामी श्रद्धानन्द के पिताजी ने उन्हें बरेली में स्वामी दयानन्द का व्याख्यान सुनने के लिए कहा था तब एकमात्र संस्कृत का ज्ञान रखने वाले महान् सन्यासी (दयानन्द) की योग्यता पर उन्हें सन्देह था। ठीक इसी प्रकार का इस शाल मर्चेन्ट की योग्यता के विषय में मुझे भी सन्देह था। मैं सोचता था कि इस प्रकार का व्यक्ति श्रोताओं को मुख्यतः मेरे जैसी शिक्षा वाले लोगों को जो आर्यसमाज के साथ पिछले कई वर्षों से सम्बद्ध चले आ रहे हैं, क्या दे सकेगा? यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि जब मैंने उनका उपदेश या व्याख्यान सुना तो उन व्याख्यानों में जिनको सुनने का मुझे अवसर मिला था वह सर्वोत्तम था, इसका अर्थ उन व्याख्याताओं का अपमान करना नहीं है जिनके व्याख्यान विभाजन से पहले मैं सुनता रहा था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि वे लोग वे व्यक्ति थे जो उपदेशक की लाइन में माहिर (विख्यात) थे या जिनके विख्यात होने की आशा की जाती थी। परन्तु एक व्यापारी के अनुपम विचारों तथा आर्यसमाज के सन्देश की उपलब्धि वस्तुतः मेरे लिए एक नई चीज थी। उस दिन से ही मैं चोटी के आर्य नेताओं में उनकी गिनती करता आ रहा हूं। उसी दिन से उनके साथ मेरा सामाजिक सम्बन्ध जुड़ा और यह सम्बन्ध बढ़ते-बढ़ते दो परिवारों के परस्पर मिलन में परिणत हो गया।

मूर्ति पूजा का परित्याग

उनके परिवार के अन्य सदस्यों ने पारिवारिक रीति-नीति के अनुसार शिवलिंग पर पानी चढ़ाने के लिये उन्हें मजबूर किया। उन्होंने इसका घोर विरोध किया और शिवलिंग पर लोटा दे मारा जिससे उसका कुछ हिस्सा टूट गया और लोटे में भी कुछ खरोंच आ गई। पाठकगण उनके इस साहसिक कृत्य के परिणामों की सहज ही कल्पना कर सकते हैं। दो साल तक वह परिवार में बहिष्कृत सदस्य के रूप में रहे। यद्यपि उन्हें घर से बाहर नहीं निकाला गया था तथापि घर में ही एक पराये व्यक्ति के समान उनके साथ व्यवहार होता था और उन्हें बहुत घटिया किस्म का खाना दिया जाता था। परन्तु उनकी आस्था अटल रही और वह पक्के आर्यसमाजी बन गए।

लाला राम गोपाल जी की शादी २४ वर्ष की आयु में १९३१ के आस-पास श्रीमती सत्यवती के साथ अमृतसर में हुई। उनके २ पुत्र श्री ओंकारनाथ और प्राणनाथ तथा दो पुत्रियां हुईं। जिन परिस्थितियों में उनकी बड़ी पुत्री की शादी हुई थी, उसका वर्णन यहां नहीं करना चाहता। इस स्थल पर मुझे एक विशेष बात की चर्चा करनी है वह यह कि उनका छोटा पुत्र प्राण जबकि उसकी आयु १९ वर्ष की थी उनके सीताराम बाजार स्थित मकान से बिना बताये चला गया था। इस मकान में अब उनके दामाद श्री सुर्यदेव जी रहते हैं। यह घटना उस समय हुई जबकि आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली का वार्षिक उत्सव हो रहा था। लाला रामगोपाल जी ने चारों दिन उत्सव के काम में भाग लिया और किसी को भी यह पता न दिया कि ४ दिन से उनका का पुत्र गायब है। और जिस ने भी आर्यसमाज के कार्य में तल्लीनता बने रहकर इस पत्थर-दिल एक छोटे कद के मानव ने अपनी पत्नी सहित मन की दृढ़ता का अनूठा परिचय दिया था।

अन्याय का प्रतिरोध-लाला जी की पहली गिरफ्तारी

उनकी पहली गिरफ्तारी १९३६ में हुई थी। वे ब्राह्म मुहूर्त में प्रातः ४ बजे भ्रमण के लिए जाया करते थे। अपने सीताराम स्थित मकान से निकल कर चांदनी चौक स्थित घण्टाघर से (अब वह घण्टाघर टूट चुका है) गुजरा करते थे। एक दिन उन्होंने एक साधु को जिसका नाम बाद में श्याम-पुरी ज्ञात हुआ था तथा महावीर दल के रामप्रसाद नामक एक स्वयंसेवक को घण्टाघर के एक किनारे पर बेहोशी की हालत में देखा। साधु श्यामपुरी

(शेष पृष्ठ ९ पर)

दिल्ली की आर्य समाजों के लिए प्रकाशन व्यवस्था

सार्वदेशिक प्रकाशन आर्य समाज की प्रमुख प्रकाशन संस्था है जिसका अपना प्रेस १४८८ पटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली में स्थित है। गत लगभग ५० वर्षों से यह प्रेस आर्य जगत की सेवा कर रहा है।

दिल्ली तथा आस-पास की आर्य समाजों से निवेदन है कि वे अपने छोटे-बड़े परचे, लैटर-पैड, विजिटिंग कार्ड, रसीद बुक इत्यादि सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली से ही छपवाएं।

लगभग सभी आर्य नेताओं, सन्यासियों इत्यादि के फोटो ब्लाक बिना किसी अतिरिक्त लागत के उपलब्ध कराये जायेंगे।

—विमल वधावन एडवोकेट
निदेशक, सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड
फोन निवास : ७२२६८०९०

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (श्री रामगोपाल शालवाले) के निधन से भारत एक स्वतन्त्रता सेनानी और समाजसेवी से वंचित हो गया है।

९१ वर्ष की आयु होते हुए भी वह बगैर किसी सहारे के चलते फिरते थे, सक्रिय थे। १९६७ मे वह लोक सभा के सदस्य भी चुने गये। कई आन्दोलनों में उन्होंने हिस्सा लिया और नेतृत्व भी किया। राष्ट्रीय आंदोलनों के दौरान उन्होंने कई बार जेल यात्राएं कीं।

१९७५ से वह निरन्तर आर्य समाज के सर्वेसर्वा रहे। नशाबन्दी, भ्रष्टाचार-उन्मूलन, दहेज विरोधी आन्दोलन, नारी सम्मान और साम्प्रदायिक एकता के कार्यों से वे निरन्तर जुड़े रहे। १९८६ में उन्होंने वैदिक परम्पराओं के अनुरूप सन्यास लिया और भगवे वस्त्र धारण कर लिए।

पूज्य पिता लाला जगत नारायण जी और रमेश जी के निधन से पूर्व मैंने उनके दर्शन तो अवश्य किये थे पर उनके साथ खुलकर बातचीत करने का अवसर मुझे नहीं मिला था। १९८५ में जब पंजाब विधान सभा के चुनाव होने वाले थे तो चुनावों से कुछ दिन पहले स्वामी जी अचानक दफ्तर मे आ गए और औपचारिक बातचीत के बाद उन्होंने चुनाव के सम्बन्ध में चर्चा आरम्भ कर दी।

मैंने उनसे पूछा, आप पंजाब में स्वयं आए हैं या आपको इस सिलसिले में किसी ने यहां भेजा है?'

मेरी बात सुनकर वह [illegible] पड़े और बोले कि मुझे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने भेजा है ताकि मैं यहां आकर कांग्रेस की कुछ सहायता करूं।

मैंने कहा, 'चुनाव तो यहां कांग्रेस हार चुकी है। आप बहुत देर से यहां आए हैं और कोई मदद अब आप नहीं कर सकते।'

'वह क्यों?' उन्होंने विस्मय से पूछा।

मैंने कहा कि केन्द्र तो अकालियों को पंजाब में सत्ता सौंपने का निश्चय किए बैठा है, यही विचार यहां के राज्यपाल श्री अर्जुन सिंह का है और यही बात प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी सोचते हैं—आपको तो वैसे ही यहां भेज दिया गया है।

इस बातचीत के बाद उन्होंने यहां का चक्कर लगाया और लौटकर मेरी बात की पुष्टि करते हुए बताया कि मैं अपने सूत्रों से पता लगाकर आया हूं—आपने जो भी कुछ कहा था वह बिल्कुल ठीक था। बातचीत के दौरान उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि प्रधानमन्त्री ने मुझे एक बुलेट प्रूफ जाकेट भी दी है-यह जाकेट उस समय उन्होंने पहनी हुई थी।

स्वामी जी का उस समय कहना यह था कि अगर अकालियों की सरकार पंजाब में बन गई तो तबाही और भी बढ़ेगी। उन्हें इस बात से भी हैरानी थी कि एक तरफ तो उन्हें पंजाब में भेज दिया गया है और दूसरी तरफ प्रधानमन्त्री पंजाब की सत्ता अकालियों को सौंप देना चाहते हैं।

बहरहाल स्वामी जी ने अकाली सरकार बनने से तबाही बढ़ने की जो बात कही थी, वह सच ही था रही थी। अगर उस समय चुनाव न होते और सत्ता अकालियों को न सौंप दी जाती तो शायद पंजाब की त्रासदी इतनी लम्बी न होती।

जिस तरह उन्होंने बगैर किसी लाग लपेट के यह कहा कि उन्हें पंजाब में प्रधान मन्त्री ने भेजा है वह निश्चित ही उनकी स्पष्टवादिता का मुंह बोलता उदाहरण है।

दूसरी बार वह १९८७-८८ में उस समय जालन्धर आए जब पंजाब आतंकवाद की आग में जल रहा था। इस दूसरी यात्रा के दौरान उनके साथ श्री सत्यानन्द और आर्य समाज के कई नेता थे। पंजाब के आर्य समाज में जो झगड़े उन दिनों चल रहे थे उनसे स्वामी जी क्षुब्ध थे और कुछ परिवर्तन करना चाहते थे।

जब मुझे उन्होंने सारी बात बताई तो मैंने कहा कि इस समय पंजाब बहुत कठिन दौर में से गुजर रहा है और वर्तमान परिस्थितियों में यहां आर्य समाज में कोई भी छेड़छाड़ करना हानिकारक सिद्ध होगा। आप इस सिलसिले झगड़े को प्यार से निपटा दें, कोई परिवर्तन न करें। आर्य समाज हर संकट के समय देश के हर क्षेत्र में अगुवा रहा है—इस समय जरूरत इस बात की है कि आप अपने साथियों सहित अमृतसर, बटाला और गुरदासपुर आदि का दौरा करें, आतंकवाद से पीड़ित लोगों की करुण कहानियां सुनें उनकी दुर्दशा अपनी आंखों से देखें और प्रधानमन्त्री के निकट होने के नाते पंजाब की वास्तविक-तस्वीर उन्हें दिखाएं, यहां के लोगों की पीड़ा से उन्हें अवगत करायें। मैंने उनसे कहा कि मैं आपसे उम्र में बहुत छोटा हूं और आपके काम में भी दखल देने का अधिकार मुझे नहीं है—फिर भी जो कुछ मैंने ठीक समझा है वह आपसे कह दिया है।

जवाब में स्वामी जी ने कहा, वास्तव यह समय पंजाब के पीड़ित लोगों तक पहुंचने और उनका दुःख दर्द जानने का ही है।" अपने साथियों के साथ दौरा उन्होंने किया भी और दौरे के बाद जालन्धर में पत्रकार सम्मेलन भी किया तथा दिल्ली में सरकार के साथ बातचीत भी की। उनके साथियों ने दौरे से लौटने पर बताया कि स्वामी जी तो दौरा लम्बा करना चाहते थे मगर सुरक्षा का प्रबन्ध था नहीं और समाजद्रोही तत्त्व उनके पीछे लग गए थे, इस लिए हम बचाकर उन्हें ले आए। भले ही स्वामी जी उस समय थोड़ी दूर ही घूमे मगर इससे साहस और देश के प्रति उनका प्यार स्वतः प्रमाणित हो गया।

जब भी मैं दिल्ली जाता था, वह फोन पर मुझसे कहते थे कि मैं आपसे मिलने आ रहा हूं और मिलने पर पंजाब की स्थिति बताने की बात मुख्य रूप से वह करते थे। एक दो मीटिंगें भी इस सम्बन्ध मे उन्होंने की। जब हालात ज्यादा खराब होने लगे तो उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि आप मुझसे मिलने मत आइये मैं स्वयं आ रहा हूं—और वह मेरे पास स्वयं आते भी रहे।

जब कश्मीर मे परिस्थितियां बिगड़ीं तो मैंने उनसे वहां जाने का अनुरोध किया और वह एकदम कश्मीर चले गये। वहां से लौटकर उन्होंने एक बयान भी दिया और सरकार को भी यह बताया कि किस तरह वहां मन्दिर तोड़े हैं और किस तरह आतंकवादियों के हाथों यातनाएं वहां के लोगों को झेलनी पड़ी हैं।

दिल्ली मे जब भी हमारे परिवार में कोई धार्मिक आयोजन होता था, वह उन्हीं के हाथों से होता था। उनका आशीर्वाद हम पर सदैव बना रहा।

आदरणीय वीरेन्द्र जी के निधन के बाद जब पंजाब के आर्य समाज में एक शून्य पैदा हुआ तो वह दो बार यहां आए और समस्या का हल निकालने का यत्न किया।

उनके साथ मेरी अंतिम भेंट दो अढ़ाई महीने पहले तब हुई जब वह जालन्धर आए थे। गाड़ी पकड़ने से पहले वह मुझसे मिलने के लिए आए। उस समय वह थके हुए मालूम हो रहे थे और बातें करते करते आंखें बन्द कर लेते थे। मैंने उनसे कहा भी कि आप थके हुए हैं, विश्राम कर लें मगर उन्होंने कहा कि कोई बात नहीं है मैं ठीक हूं। पंजाब के आर्य समाज की उन्हें बहुत चिन्ता थी और झगड़े आदि की बातों से उनका मन व्यथित था।

इसके बाद जब मैं पिछले दिनों दिल्ली गया तो मालूम हुआ कि स्वामी जी की तबीयत खराब है। फोन किया तो एक कार्यकर्ता ने बताया कि वह अस्पताल मे हैं। मैंने कहा कि मैं अस्पताल पहुंच रहा हूं मगर थोड़ी देर बाद मुझे फोन मिला कि स्वामी जी कहते हैं कि वह ठीक हैं आप वैसे चले ही जाएं मगर स्वास्थ्य के बारे मे पूछने के लिए न आएं।

स्वामी जी अंतिम श्वांस तक आर्य समाज और देश के लिए समर्पित और सक्रिय रहे। उनके निधन से जो शून्य पैदा हो गया है वह भरा नहीं जा सकता। ऐसे मनुष्य बहुत कम होते हैं जो सब कुछ छोड़कर अपना जीवन देश और समाज के कल्याण और हर प्रकार की बुराई से लड़ने मे लगा दें।

प्रभु उन्हें अपने चरणों मे स्थान दे, उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके साथियों को उनके अधूरे काम को पूरा करने की शक्ति दे। यही हमारी प्रार्थना है।

विजय
मुख्य सम्पादक पंजाब केसरी

आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय मंच की देदीप्यमान ज्योति तिरोहित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के आकस्मिक निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की शोक संवेदना

परिवर्तिनी संसारे मृत को वा न जायते सजातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम।" इस मरण शील जगत मे न जाने कितने लोग प्रतिदिन आते और जाते रहते हैं किन्तु कुछ लोग जो देश-जाति धर्म समाज तथा राष्ट्र की उन्नति के लिये सतत् प्रयासरत रहते हुये महाप्रयाण करते हैं उनकी यह समस्त मानवता, देश और राष्ट्र युगों-युगों तक स्मृतियां संजोये रखता है। पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ऐसी ही एक महान् आत्मा थे। उनके कुशल नेतृत्व एवं मार्ग दर्शन मे आर्य समाज ने सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु विश्व मे संगठन, प्रचार तथा प्रसार की दिशा में नित्य नवीन कीर्तिमान स्थापित करते हुये समग्र विकास का पथ प्रशस्त किया। चाहे आतंकवाद से जूझती मानवता की समस्या रही हो, या लातूर का विनाशकारी भूकम्प, चाहे धर्मान्तरण के विरुद्ध शुद्धि का आन्दोलन रहा हो या कश्मीर समस्या प्रत्येक धर्म समर में स्वामी आनन्दबोध की विजय पताका सदैव फहराती रही। संगठन की वर्तमान विषमताओं मे सभी कार्य कर्त्ताओं के दुःख दर्द एवं मनोभावों को सहृदयता पूर्वक ग्रहण करते हुये सामन्जस्य एवं सौहार्द्य का भाव जागृत करते हुये येन केन प्रकारेण आर्य समाज के व्यापक हित की दिशा मे 'योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं च द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः" के भाव के साथ मित्र ही नहीं दुश्मनों को भी गले लगाते हुये सतत् विकास के पथ पर अग्रसर रहे। स्वामी जी का सदैव यह भाव रहा कि—

फैले उत्तम आर्य सभ्यता ज्योति किरण बनकर जग मे।
बढ़ें उठायें गिरे हुओं को प्रेम भाव से हम जग में॥

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को तो सदैव उनका प्रेम

(शेष पृष्ठ ९ पर)

लाला रामगोपाल शालवाले द्वारा अदालत को दिया गया एक बयान

लाला रामगोपाल शालवाले जिन्होंने संन्यास लेने पर अपना नाम स्वामी आनन्दबोध सरस्वती अपनाया, जो १९६७ में लोकसभा के सदस्य चांदनी चौक क्षेत्र से निर्वाचित हुये थे। लाला जी के विरुद्ध एक चुनाव याचिका दिल्ली उच्च न्यायालय में दाखिल की गयी जिसकी पैरवी में श्री सोमनाथ मरवाह दिल्ली के वरिष्ठ एडवोकेट अदालत के समक्ष पेश हुये थे। लाला जी इस मुकदमे में स्वयं केवल एक बार पेश हुये जब कि उनके बयान लिखे जाने थे। लाला जी का यह बयान उनके तब तक के जीवन की चुनिन्दा घटनाओं का संक्षिप्त रूप है। इस बयान को अक्षरश: यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। —सम्पादक

रामगोपाल शालवाला पुत्र लाला नन्दलाल आयु ५८ प्रतिवादी "मैं दिल्ली में पिछले ४२ वर्ष से हूं। मैं अपने जीवन में कभी भी किसी राजनीतिक पार्टी का सदस्य नहीं रहा। मैं लगभग १५-१६ धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं का पदाधिकारी हूं। मैं १९३१ से १९६०-६१ तक चीराखाना स्थित मकान में रहा हूं। कृष्णनगर में अपना मकान बना लेने पर १९६१ के अन्त में मैं अपने नए मकान में चला गया था। जिस दिन से मैंने चीराखाना का मकान छोड़ा था, उस दिन से ही मेरी पुत्री उसमें रह रही है।

मैं शाल मर्चेण्ट्स एसोसियेशन का प्रधान हूं। मैं हिन्दुस्तान मर्केन्टायल एसोसियेशन का और टंकारा ट्रस्ट की प्रबन्ध समिति का मेम्बर हूं जिसके प्रधान श्री जस्टिस महाजन थे और जो मृत्यु के समय तक उसके प्रधान रहे थे। मैं सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड का एक डाइरेक्टर, सतप्रामा ट्रस्ट का ट्रस्टी, बालगृह और कन्या सदन की प्रबन्ध कर्तृ सभा का सदस्य हूं जिसमें ७००-८०० लड़के और लड़कियां हैं। मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का पहले सेक्रेटरी तथा अब प्रधान हूं जो देश-विदेश के आर्यसमाजों की शिरोमणि सभा है और जिसके साथ प्रान्तीय सभाएं सम्बद्ध हैं। ये प्रान्तीय सभाएं अनेक स्कूल, अन्य शिक्षा संस्थाएं और लोक कल्याण की अनेक संस्थाएं तथा अस्पताल चिकित्सालय आदि चलाती हैं।

मैं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का भी प्रधान रहा हूं जिसके अन्तर्गत दिल्ली की १२१ आर्य समाजें हैं। मैं दीवान हाल आर्यसमाज का भी प्रधान एवं साप्ताहिक सार्वदेशिक का सम्पादक भी रहा हूं। मैं गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की कार्यकारिणी का सदस्य तथा सतप्रावा ट्रस्ट का भी प्रधान हूं। पाकिस्तान से आये विस्थापितों के लिए मैंने १३ शरणार्थी शिविर स्थापित किये थे। श्रीमती सुचेता कृपलानी ४-५ वर्ष पूर्व हमारे काम के साथ सम्बद्ध रही थी। मैंने पूर्वी और पश्चिमी पंजाब की हद तक यात्राएं की थीं और पूर्वी बंगाल से आए हुये विस्थापितों का सेवा सहायता के लिए कलकत्ता तक बहुसंख्यक रक्षा शिविर खोले थे। मैं यहां से खाना और कपड़ा उन कैंपों में भिजवाया करता था। विविध आन्दोलनों के प्रसंग में १६ बार जेल गया हूं। जो समाज के लिए अच्छा कार्य करते हैं मैं उनकी भावनाओं का आदर व सम्मान करता हूं। जब श्री चह्वाण रक्षा-मन्त्री (चीन के आक्रमण के समय) बनकर दिल्ली आये थे तो मैंने उन्हें इकसठ हजार नकद और सोने की एक तलवार एक सार्वजनिक समारोह में भेंट की थी। जब पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया था तो मैंने प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री को ४१,०००) भेंट किये थे। ये राशियां मैंने आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की ओर से जनता द्वारा एकत्र की थी।

आर्यसमाज ने हैदराबाद में सत्याग्रह शुरू किया था क्योंकि वहां धार्मिक स्वतन्त्रता को खतरा था। देहली इत्यादि में सत्याग्रही जत्थों को भजने का कार्य मेरे सुपुर्द था। जब इम्पीरियल होटल में सौन्दर्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था तो मैंने २० हजार लोगों के साथ उसके विरोध में आन्दोलन किया था। मैं गिरफ्तार कर लिया गया, परन्तु लम्बे समय तक दिल्ली में इस प्रतियोगिता का आयोजन न हो सका था। जब डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी काश्मीर में गिरफ्तार किये गये थे तो मुझे लगभग १ मास तक हिरासत में रखा गया था। राजकुमारी को सिकन्दरबख्त के साथ शादी के विरुद्ध मैंने ही आन्दोलन का सूत्रपात किया था। यह शादी न हो पाई थी। मुझे गिरफ्तार किया गया जिस पर दिल्ली में तीन दिन तक हड़ताल रही और मेरे छुटकारे के बाद ही यह खुली थी।

पंजाब के हिन्दी-आन्दोलन में मैंने सक्रिय भाग लिया जो ९ महीने तक चला था। मैंने घोषणा की थी कि यदि पंजाबी-सूबा बना तो मैं आत्मदाह कर लूंगा। तत्कालीन केन्द्रीय गृहमन्त्री गुलजारीलाल नन्दा ने मुझे बुलाया और इस बयान को वापिस लेने की प्रेरणा की।

मैंने गोहत्याबन्दी आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और गिरफ्तार कर लिया गया। इस आन्दोलन में मैं दो बार जेल गया। मैं पुनः ७ नवम्बर १९६७ को जेल में बन्द कर दिया गया था जब कि हम लोग गोरक्षा-आन्दोलन में शहीद हुए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पण करने गये थे। मैंने स्वर्णकारों की सहायता की और स्वर्ण नियन्त्रण कानून के सम्बन्ध में लोकसभा में कुछ प्रश्न भी किये। चांदनी चौक के लोकसभा के क्षेत्र में अधिकांश मतदाता व्यापारी हैं।

मेरी पत्नी भी गोरक्षा आन्दोलन के सम्बन्ध में दिल्ली की सेन्ट्रल जेल में रखी गयी थी और २० जनवरी १९६७ को उनकी रिहाई हुई थी। उस दिन मैं प्रातः १०॥ बजे जेल पहुंचा और ठीक उसी समय मेरी पत्नी मुक्त कर दी गई थी। जेल से बाहर एक अधिकारी से मेरी भेंट हुई जिनका नाम मैं नहीं जानता हूं परन्तु यतः मैं इससे

(शेष पृष्ठ १० पर)

देदीप्यमान ज्योति तिरोहित

(पृष्ठ ६ का शेष)

सौहार्द तथा वरदहस्त प्राप्त रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के विवादों से सदैव उनका निस्पृह एवं निश्चल हृदय हाहाकार करता रहा प्रेम और सौहार्द के किसी भी मार्ग को ग्रहण करने तथा विवादों की समाप्ति की ओर सतत् प्रयत्नशील रहे। हमने सदैव उनका आदेश शिरोधार्य भी किया।

आज स्वामी आनन्दबोध जी हमारे बीच भौतिक रूप में नहीं हैं किन्तु अपने यशस्वी कर्तृत्व एवं कृतित्व से वे सदैव अमर हैं। ईश्वर उनकी महान आत्मा को शान्ति तथा विश्व के आर्य जनों एवं परिजनों को इस महान् कष्ट को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ श्री कतो स्मर! किलबे स्मर' कृतं स्मर! के भाव के साथ उन्हें अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करती है।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ
डा० विजय प्राणाचार्य
उपमन्त्री एवं वेद प्रचार प्रमुख

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ कर्मचारी श्री दानसिंह मेहरा का निधन

दिल्ली, १५ अक्टूबर, प्रसिद्ध समाज सेवी, पत्रकार, साहित्यकार एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आसफअली रोड के कार्यालय प्रबन्धक श्री दानसिंह मेहरा का कार्यालय में १ बजे हृदय गति रुक जाने से ५२वर्ष की अल्पायु में आकस्मिक निधन हो गया। श्री दानसिंह वरिष्ठ पत्रकार श्री एम. एस. मेहरा (सम्पादक हिन्दुस्तान समाचार) के कनिष्ठ भ्राता थे।

श्री दानसिंह के आकस्मिक निधन से समस्त मेहरा परिवार, आर्य प्रतिनिधि सभा तथा गावड़ी विस्तार क्षेत्र के हजारों नागरिक शोक-विह्वल हो गए, निगमबोधघाट पर उनकी अन्त्येष्टि में शोकातुर हजारों की संख्या में नागरिकों ने उन्हें अपनी अन्तिम अश्रुपूर्ण विदाई दी। उनके पुत्र श्री वीरेन्द्र तथा राजेन्द्र ने अपने पिता की चिता को मुखाग्नि दी। उनकी अन्त्येष्टि में आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प. वन्देमातरम् रामचन्द्र राव, श्री सुरेश पाठक कार्यालय सचिव, सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्दशास्त्री, श्री विमलवधावन, सार्वदेशिक प्रेस कर्मियों सहित, सांसद श्री जीवन शर्मा, विधायक श्री एम० एस० पवार, चौ० वीरसिंह, श्री पूरनचन्द्र नैनवाल, श्री अवस्थी व विभिन्न संस्थाओं, समाजों, उत्तराखण्ड सांस्कृतिक मण्डल एवं ग्राम गावड़ी सुधार समिति के लोगों ने उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

श्री दानसिंह का जन्म मेहरखोला (रानखे) अल्मोड़ा में हुआ था। वे मोनीवर यात्रा पर भी गए थे। आजकल वे वंशावली पुस्तक लिख रहे थे।

सार्वदेशिक सभा ने श्री दानसिंह मेहरा के आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी विशेष बैठक में शोक सभा कर शोक प्रस्ताव पारित किया। ग्राम गावड़ी सुधार समिति तथा उत्तराखण्ड सांस्कृतिक समिति जिनकी श्री दानसिंह मेहरा ने ही १९७३-७४ मे स्थापना की थी, ने १६ अक्टूबर को एक शोकसभा में श्री दानसिंह के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए उनके परिवार को शक्ति तथा स्वर्गीय आत्मा को शान्ति देने की ईश्वर से प्रार्थना की।

स्व० दानसिंह मेहरा अपने, पीछे वृद्ध पिता, विधवा पत्नी दो पुत्र और दो पुत्रियों तथा भाइयों को गहरे दुःख में बिलखते छोड़ गए। उनकी १३वीं की रस्म (पोथलपाणी) २६ अक्टूबर को ११-३० बजे, ए-२०१ गावड़ी विस्तार में होगी।

सार्वदेशिक सभा की नई उपलब्धि

बृहदाकार-सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित

सार्वदेशिक सभा ने २०×२६/४ के बृहद् आकार में सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन किया है। यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है तथा कम दृष्टि रखने वाले व्यक्ति भी इसे आसानी से पढ़ सकते हैं। आर्य समाज मन्दिरों में नित्य पाठ एवं कथा आदि के लिये अत्यन्त उत्तम, बड़े अक्षरों में छपे सत्यार्थ प्रकाश में कुल ६०० पृष्ठ हैं तथा इसका मूल्य मात्र १५०) रुपये रखा गया है। डाक खर्च ग्राहक को देना होगा। प्राप्ति स्थान:—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

: स्वामी आनन्दबोध :

धर्म ध्वजा को थाम हाथ में,
चलते चलते थके नहीं तुम।
अनाचार अज्ञान अविद्या,
चलते-चलते चले चले तुम।
दयानन्द से जुड़ा हुआ था,
प्रबल आत्म विश्वास तुम्हारा।
स्वामी श्री आनन्दबोध जी,
जीवन पथ पर अडिग रहे तुम।

सत्यव्रतसिंह चौहान सि० शास्त्री
पुड़री (मैनपुरी उ०प्र०)

अदालत को दिया गया बयान

(पृष्ठ ६ का शेष)

पहले कई बार जेल में बन्द रह चुका था अतः वह अधिकारी मुझे जानता था। उसने मुझसे पूछा, कि मैं क्यों आया हूं। मैंने उन्हें बताया कि मेरी पत्नी जेल से छूटने वाली है। मैंने उनसे पूछा कि क्या कैदियों को मुक्त करने का काम उनके सुपुर्द है? उन्होंने मुझे बताया कि उस दिन कैदियों को मुक्त करने का काम हवासिंह के सुपुर्द था। उसी समय हवासिंह अपने घर से आ गये। मैं उन्हें जानता था। मैंने उनसे प्रार्थना की कि मेरी पत्नी को शीघ्र मुक्त कर दिया जाय क्योंकि मुझे अन्य कई जरूरी काम करने थे। श्री डा० गिरधारीलाल ढल्ला, वैद्य प्रह्लाददत्त जी और ४०-५० व्यक्ति जेल के बाहर मेरे साथ थे जो रिहा होने वाले कैदियों का स्वागत करने के लिये आये थे। मुझे पता नहीं था कि मेरी पत्नी प्रातः साढ़े १० बजे जब कि मैं वहां पहुंच चुका था, मुक्त कर दी गयी थीं। मुझे वहां एक घण्टा और ठहरना पड़ा क्योंकि मुक्त हुये अन्य व्यक्तियों के लिये सवारी का प्रबन्ध करना था।

वहां ही जेल के फाटक पर डा० ढल्ला और अन्य कई भाई मुझ पर लोकसभा के प्रत्याशी का फार्म भरने के लिये जोर डाल रहे थे। मैं, मेरी पत्नी तथा परिवार के अन्य सदस्य—हम सब जेल से लौट कर दीवानहाल पहुंचे। यह बात २०-१-१९६७ की है। मैं चुनाव के दफ्तर में भी गया और वहां से सीधा अपनी पत्नी को साथ लेकर अपने मकान पर पहुंचा। वहां से लौटकर दीवानहाल दोपहर के १ बजे पहुंचा। वहां नामजदगी के पत्र दाखिल करने के लिये मैं विवश कर दिया गया। फलतः हम लगभग २ बजे श्री राजेन्द्र जैन की कोर्ट में पहुंचे। २३-१-६७ से लेकर जिस दिन नामजदगी का पत्र दाखिल किया गया था, चुनाव होने के दिन तक मैंने कार इत्यादि किसी तेज सवारी का प्रयोग नहीं किया। मैं चुनाव क्षेत्र में प्रचार कार्यार्थ रिक्शा साईकिल से जाता था या पैदल घूमता था।

मैं दो या तीन महीने पहले आखरी बार जेल गया था। मुझे ठीक तारीख याद नहीं है। मैं जेल में दो दिन रहा। इससे पहले ७ नवम्बर १९६७ को जेल गया था और वहां ७ दिन तक अण्डर ट्रायल (विचाराधीन) कैदी के रूप में रखा गया था। १९६७ के नवम्बर में मजिस्ट्रेट महोदय स्वयं मेरे कमरे में आये, मेरे केस की सुनवाई की और अदालत के उठने तक की मुझे सजा दी। श्री श्यामाप्रसाद जी मुकर्जी राष्ट्रीय नेता थे, मात्र हिन्दू नेता न थे।

मैं पिछले ८ वर्ष से सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड का डायरेक्टर हूं। मुझे याद नहीं कि जब मैं गांधी हत्या केस के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था कोई एफ०आई०आर० अंकित किया गया था या नहीं। मैं नहीं जानता कि महात्मा गांधी के सम्बन्ध में किसने रिपोर्ट दी थी।

आखो देखा हाल

(पृष्ठ ३ का शेष)

१७ अक्तूबर को प्रात ९ बजे कृषि मन्त्री श्री बलराम जाखड़ से आर्य समाज का एक शिष्ट मण्डल स्वामी जी के नेतृत्व मे मिला। स्वामी जी वहां भी बड़ी चुस्ती से बातें करते रहे। उन्होने कृषि मन्त्री से बढती पशु हिंसा पर रोक लगाने का आग्रह किया मै प्रात १०बजे अदालत जाकर लगभग२ ३० पर सभा वापस पहुचा ३बजे मैं और वन्देमातरम जी प्रेस गए वहां से लगभग ४ १५ पर वापिस लौटते समय रहते यह विचार हुआ कि ५ बजे न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह जी के जन्मदिवस समारोह मे स्वामी जी को छोड़कर हम दोनो चले। परन्तु फिर विचार आया कि हम कार पर नही ले जायगे तो भी वे किसी अन्य कार पर या तिपहिया स्कूटर पर ही चले जायेंगे। अत उचित यही होगा कि इन्हें सभा में स्पष्ट रूप से मना करके जाया जाए। इस प्रकार यदि वे मान गए तो हम जायगे अन्यथा हम भी इस समारोह मे न जाकर उनके पास बठगे। यह कहने के लिए हम जसे ही सभा भवन के दूसरी मंजिल के हाल मे पहुचे। स्वामी जी सामने कुर्सी पर बठ थे। उनके सामने बिहार सभा के पूर्व प्रधान श्री भुवनारायण शास्त्री विराजमान थे। स्वामी जी के बाईं तरफ पण्डित वन्देमातरम जी बठने के लिए गए और बाईं तरफ फोन के साथ मैं बठने के लिए बढा। स्वामी जी ने पहले श्री वन्दे मातरम जी को देखा और फिर मुझ देखा। हमारी निगाह भी स्वामी जी पर भी जसे यह पूछने वाले हो कि प्रेस में सब कार्य ठीक चल रहा है। इतने में ही स्वामी जी को बाईं बाजू कुछ खिची हुई सी लगी और स्वामी जी की गर्दन पीठ कुर्सी पर ही लटक कर रह गई। मैंने तुरन्त सभा के कर्मचारी जयनारायण और विजय की सहायता से स्वामी जी को उठाकर अन्दर बिस्तर पर लिटाया। उनके मुंह मे एक गोली साराबिट्रेट (दिल के दौरे की दवा) की भी डाली गई। मुझ ऐसा लगा जसे स्वामी जी को उठाकर अन्दर लाते समय ही प्राण निकले हो। तत्काल विजय धर्मेन्द्र जयनारायण की सहायता से स्वामी जी को नीचे कार तक ले जाया गया। श्री वन्देमातरम जी आगे बठ मै कार को बहुत तेज चलाकर अस्पताल तक ले गया। अन्दर ले जाने पर डाक्टर ने नब्ज आदि देखी और कहा कि Pract cally H dead (वास्तव मे यह मर चुके हैं) मैंने क्रोधित होकर कहा कि भाई ये आपके क्षेत्र के पुराने सांसद हैं। इस प्रकार बिना सोचे समझ मत बोलो कुछ प्रयत्न करो इस पर डाक्टर उन्हे अन्दर आपातकालीन वार्ड मे ले गया वहां बिजली के करण्ट तथा श्वास की मशीनो द्वारा हृदय की धड़कन पुन प्रारम्भ तो कर दी गई परन्तु मेरे मनमें सान्त्वना देने केलिए कोईठोस बात नजर नही आरही थी फिर भी डाक्टरो के १ प्रतिशत अनुमान और अपनी भावनाओ से मन यह विचार कर रहा था कि शायद स्वामी जी के पुन दर्शन सम्भव हो सके परन्तु रात्रि २ २० पर डाक्टरो ने घोषणा कर दी और आर्य समाज का एक लौह स्तम्भ हिल गया। विदा इसलिए नही कहा जा सकता क्योंकि उनकी आत्मा हमारी प्रेरणा शक्ति सदव बनी रहेगी ऐसा विश्वास है।

प० सत्यमित्र शास्त्री दिवंगत

आर्य समाज के विद्वान उपदेशको के साथ ही शास्त्रार्थ महारथियो की अन्तिम कड़ी मे प० सत्यमित्र शास्त्री का देहावसान २३ सितम्बर को हो गया। शास्त्री जी संस्कृत के विद्वान व्याकरण के आचार्य तथा पुराणो के धुरन्धर पण्डित थे। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश तथा बिहार उनका विशेष कार्यक्षेत्र था उन्होने अपने जीवन में पौराणिक पण्डतो से पचासों शास्त्रार्थ किये। पण्डित सत्यमित्र शास्त्री के निधन से इस शास्त्रार्थ श्रृंखला के अन्तिम स्तम्भ भी अब नहीं रहे।

वार्षिकोत्सव

आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा इटावा का १३ वां वार्षिकोत्सव २७ से ३० अक्तूबर ९४ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। ३० १० ९४ को सायं ५ बजे ब्रह्मचारियो का शक्ति प्रदर्शन होगा समारोह मे यज्ञ उपदेश भजन प्रवचन के अतिरिक्त वेद शिक्षा गोरक्षा नशामुक्ति तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है। अधिक से अधिक संख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाए।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०२४/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (३० १०-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (G)९३
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (G) 93 Post in N.D.P.S.O.on 27,28-10-1994

तपोनिष्ठ आर्यनेता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अन्तिम इच्छा

"मेरी भस्मी को खेतों में बिखेर देना

भस्मी विसर्जन कार्यक्रम

दिनांक : रविवार ३० अक्तूबर १९९४ अपराह्न ३ बजे
स्थान : महर्षि दयानन्द गोदुग्ध संवर्धन केन्द्र
गाजीपुर, विकट टाटा इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-९१
अपराह्न : ३ बजे यज्ञ एवं उपदेश

ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

४ बजे .... भस्मी विसर्जन
४-३० बजे .... प्रसाद वितरण

कृपया समयानुसार पधारकर दिवंगत आर्य नेता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करके कर्तव्य का पालन करें।

निवेदक

सूर्यदेव,	डा० धर्मपाल,	पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव,	डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
प्रधान	महामन्त्री	प्रधान	मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१
दूरभाष : ३१०१५०, ३११२८०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२
दूरभाष : ३२७४७७१, ३२६०९८५

आर्यसमाज बागपत का शोक प्रस्ताव

पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोकप्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें और सभी आर्य बन्धुओं को आर्य समाज की इस अपूर्णीय क्षति से उबरने का अवसर प्रदान करें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रति शोक संवेदनायें

उत्तर प्रदेश

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद

आर्य जगत की शिरोमणि सभा के प्रधान पू० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के आकस्मिक दुखद निधन पर अपनी सम्वेदना व्यक्त करते हुए दिवंगतात्मा की सद्गति को परमात्मा से प्रार्थना करती है। स्वामी जी महान स्वतन्त्रता सेनानी, सुयोग्य आर्य नेता, वेदों के परम भक्त, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए लड़ने वाले अजेय योद्धा तथा राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समता के लिए संघर्ष करने वाले महापुरुष थे। उनके परलोक गमन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। गाजियाबाद की सभी आर्य समाजों की तरफ से उस महामानव को आर्य बन्धुओं की विनम्र श्रद्धांजलि।

डा० वीरपाल विद्यालंकार, महामन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के निधन का समाचार सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ। गुरु. कां. फार्मेसी उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है परमात्मा समस्त आर्यजन को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति दें और दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

डा० राजकुमार रावत एवं समस्त कर्मचारी

आर्य गुरुकुल यज्ञतीर्थ ऐरवा कटरा (इटावा) उ० प्र० विद्यार्थी परिषद

आर्य गुरुकुल 'विद्यार्थी परिषद' की इस आकस्मिक बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान पूज्य आनन्दबोध जी सरस्वती के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया गया।

परमपिता परमात्मा से पूज्य स्वामी जी की सद्गति हेतु प्रार्थना की गई। पूज्य स्वामी जी आर्य जगत के सच्चे मार्ग दर्शक और कर्मठ कार्यकर्ता थे। उनकी क्षति पूर्ति होना असम्भव है।

—मन्त्री

आर्य समाज कंकरखेड़ा, मेरठ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के निधन पर आर्य समाज कंकरखेड़ा, मेरठ के सभी सदस्य अपने इस मूर्धन्य नेता को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। साथ ही परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत महात्मा को शान्ति प्रदान करे और आर्य जगत को इस अपूरणीय क्षति को सहने हेतु संबल दे।

—मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ३८] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ कार्तिक शु० ३ सं० २०५१ ६ नवम्बर १९९४

आर्य समाज आन्दोलन की कोई भौगोलिक सीमा नहीं : रामचन्द्रराव वन्देमातरम्

आर्यसमाज को सशक्त बनाना गुरुतर दायित्व

राजनैतिक तथा सामाजिक जागृति का नया कार्यक्रम

गत १७ अक्तूबर १९९४ को पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के देहावसान के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद का दायित्व सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव के कन्धों पर डाला गया। श्री वन्देमातरम जी गत १० से भी अधिक वर्षों से इस सभा के वरिष्ठ उप प्रधान पद पर कार्य कर रहे थे। वे स्वामी जी के विशेष सहयोगी रहे हैं तथा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों पर स्वामी जी के साथ उन्होंने कई महत्वपूर्ण विचार आर्य समाज को दिये हैं।

प्रधान पद सम्भालने के बाद श्री वन्देमातरम जी ने भाव विह्वल होकर कहा कि स्वामी जी के निधन के बाद ऐसा लगता है जैसे एक युग का अन्त हो गया हो। पण्डित जी के अनुसार स्वामी जी अपने जीवन के अन्तिम दिनों में बहुत ही आशापूर्वक कहा करते थे कि आने वाला समय आर्य समाज के लिए बहुत अच्छा होगा। केवल इस एक विचार का बार बार जिक्र करते हुये उनका कहना है कि यदि इसे लक्ष्य बनाकर इसका मार्ग निर्धारण करने का प्रयत्न किया जाये तो हमें एक बार फिर नये सिरे से आर्य समाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित वैदिक मान्यताओं का चिन्तन करना पड़ेगा।

श्री वन्देमातरम का मानना है कि आर्य समाज की स्थापना के पीछे स्वामी दयानन्द सरस्वती का उद्देश्य एक नये संगठन या संस्था की स्थापना करना नहीं था अपितु आर्य समाज को एक आन्दोलन के रूप में प्रारम्भ किया गया था जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों को परस्पर जोड़ना रचनात्मक जागृति तथा वैदिक आर्यत्व की स्थापना करना था। इस आन्दोलन को किसी भौगोलिक सीमाओं में बांधकर न तो आज तक रखा गया और न ही भविष्य में रखा जाना चाहिए। आर्य समाज एक अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन है प्रत्येक आन्दोलन को सफल करने के लिये उसके साथ संगठित तथा सशक्त जन बल का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए जब तक आर्य समाज नामक संस्था मजबूत तथा विस्तृत नहीं होती तब तक इसके सार्वभौमिक उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित नहीं की जा सकती। श्री वन्देमातरम जी ने सारे विश्व के आर्यों को आह्वान करते हुए कहा है कि अपने व्यक्तिगत स्वार्थों और मतभेदों को छोड़कर संगठन को मजबूत करने पर विचार करें। पण्डित जी का यह दृढ़ विश्वास है कि मनुष्यों को पाखण्ड अन्धविश्वास और कुरीतियों आदि से दूर करने तथा वैदिक मान्यताओं की सर्वोच्चता और वैज्ञानिकता समझाने का कार्य एक सच्चा आर्य ही कर सकता है।

आर्य समाज के सर्वोच्च नेता ने यह भी स्वीकार किया कि आज उन विद्वानों की कमी होती जा रही है जो वैदिक सिद्धान्तों को वैज्ञानिकता की कसौटी पर परखकर आधुनिक समाज के समक्ष रख

(शेष पृष्ठ ११ पर)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की भस्मी खेतों में बिखेरी गयी

वरिष्ठ आर्य नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की भस्मी ... ३० अक्तूबर ... दयानन्द गौ सम्वर्धन दुग्ध केन्द्र ... की उपस्थिति में विसर्जित की गई। इससे पूर्व यहां पर विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया था। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती थे ... कि स्वामीजी की अन्तिम इच्छा थी कि मेरी भस्मी खेतों में विसर्जित कर दी जाये। उनकी इच्छा का सम्मान करते हुये ... कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित जन समूह ने स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुये गौ सम्वर्धन के कार्य को आगे बढ़ाने की शपथ ली। यज्ञ शेष वितरण के पश्चात कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सभा-प्रधान पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् की दीपावली पर्व पर शुभ कामनायें

सभा प्रधान पंडित रामचन्द्रराव वन्देमातरम तथा मन्त्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने दीपावली की शुभकामनायें प्रेषित करते हुए कहा कि—

दीपावली महापर्व सम्पूर्ण आर्य जगत व राष्ट्रवासियों के लिए हर प्रकार से सुखद एवं मंगलमय सिद्ध हो। इसी दिन आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश जाति व धर्म की रक्षा के लिए जीवन भर संघर्ष करते हुए अपना भौतिक शरीर त्यागा था। सब आर्यजनों व राष्ट्रवासियों का यह परम कर्तव्य है कि दीपावली के पर्व व ऋषि के निर्वाण दिवस पर राष्ट्रनिर्माण व समाजोत्थान के कार्यों में संलग्न होकर काम करने का संकल्प लें।

Condolence Message from Prime Minister

I am deeply grieved to learn of the sad demise of Shri Swami Anand Bodh Saraswati President Sarvadeshik Arya Pratinidh Sabha Swami ji will be long remembered for his service for the welfare of the people and for social reforms He made a significant contribution to promoting religious tolerence national cohesiveness mutual understanding and respect for high spritual values among the people

पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी का निधन

हरवंस लाल शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी के आकस्मिक निधन से आर्य जगत में दुख और शोक की एक लहर दौड़ गई है उनके निधन से आर्य समाज को जो गम्भीर क्षति पहुंची उसकी पूर्ति बहुत कठिन दिखाई देती है। अविश्वसनीय लेकिन यह कटु सत्य है कि आज स्वामी जी हमारे बीच में नहीं हैं। देश ने एक सच्चा राष्ट्रभक्त भारतीय सभ्यता संस्कृति का पुजारी तथा प्रखर समाज सेवी खो दिया है। स्वामी जी एक महान स्वतन्त्रता सेनानी थे और स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान वे कई बार जेल गए। स्वामी जी गोरक्षा तथा स्वदेशी के बहुत बड़े समर्थक थे। भारत में गोरक्षा के लिए की गई उनकी सेवाएं अत्यन्त सराहनीय हैं। उनके इस तरह चले जाने से देश में गोरक्षा आंदोलन को बहुत बड़ी क्षति पहुंची है। स्वामी जी ने अपने अथक प्रयास से दिल्ली में एक बहुत बड़ी गोशाला की स्थापना की जिसके लिए सरकार की ओर से उन्हें लगभग ६० एकड़ भूमि उपलब्ध करवाई गई। विभिन्न धार्मिक सामाजिक संस्थाओं तथा दानवीरों के सहयोग से यह गोशाला गोसेवा तथा गोरक्षा का पुनीत कार्य करने के साथ साथ जनता को कम कीमत पर गोदुग्ध उपलब्ध करवा रही है। स्वामी जी ने सुदूर प्रान्तों में जाकर वहां विदेशी तत्वों द्वारा भारतीय नागों के किए जा रहे धर्मान्तरण को सफलता पूर्वक रोकने का प्रयास और वैदिक धर्म का प्रचार किया। उनकी स्पष्टवादिता तथा निर्भीकता सबको प्रभावित करती थी। ८१ वर्ष की वृद्धावस्था में भी वे पूर्ण रूप से सचेष्ट सजग एवं सक्रिय थे। १९६७ में वे लोकसभा के लिए चुने गए थे और उनका बाद का जीवन पूर्णतया आर्य समाज के प्रति समर्पित रहा। स्वामी जी अपनी धुन के बड़े पक्के थे। अपने उद्देश्य के प्रति ऐसी निष्ठा बहुत कम देखने को मिलती है। उन्होंने अत्यन्त सादा सात्विक तथा पवित्र जीवन बिताते हुए आर्य समाज के माध्यम से जो इस राष्ट्र की सेवा की है उसकी कीर्ति सदैव अक्षुण्ण रहेगी।

पिछले कुछ समय से स्वामी जी अस्वस्थ चल रहे थे। जब पिछले माह मैं इंग्लैंड से वापिस आया तो उनसे मिलने मैं बत्रा हास्पिटल गया जहां वे उन दिनों दाखिल थे। बाद में वे पूरी तरह स्वस्थ हो गए थे और बहुत अच्छी तरह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने लगे थे। १६ और १७ अक्तूबर को मैं उनके पास ही था और तब वे पूरी तरह स्वस्थ दिखाई दे रहे थे। आर्य समाज को लेकर वे कुछ चिन्तित अवश्य रहते थे। अपने संघर्षमय जीवन में उन्होंने कई उतार चढ़ाव देखें लेकिन कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वे सदैव अडिग रहे। उनके इरादे पक्के थे और लक्ष्य निर्धारित। उनका इस तरह चले जाना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण एवं दुखदायी है लेकिन सत्य को स्वीकार करने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं।

मानव जीवन नश्वर है लेकिन मानवता अमर है। महापुरुषों की शिक्षाएं एवं उपदेश कभी नहीं मरते बल्कि सदैव व्यक्ति और समाज को अच्छाई एवं प्रगति के लिए अनुप्रेरित करते रहते हैं। आज भारी हृदय तथा नम आंखों से हम उस पवित्रात्मा को नमन करते हैं और अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं इस व्रत के साथ कि हम उनके सपनों के आर्य समाज को उसकी महान परम्पराओं के अनुरूप आगे ले जायेंगे। हम प्राणपण से एकजुट होकर पूरे मनोयोग से उनके द्वारा छोड़ गये अपूर्ण कार्यों को पूरा करने का प्रयास करेंगे। यही उस दिव्यात्मा को सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है। शोक व दुख की इस घड़ी में ईश्वर हमें साहस, शक्ति और सद्बुद्धि प्रदान करे।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति

पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती

रामेश्वर शास्त्री विद्याभास्कर

प्रवक्ता कन्याणवादी इण्टर कालिज बघरा, मुजफ्फरनगर

परमपूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी महाराज आर्य समाज के उज्ज्वल सूर्य थे। आर्य समाज का नेतृत्व अभिनन्दनीय ढंग से करते थे। आर्य समाज के प्राण थे। उनके जीवन के प्रसंग बार बार हृदय में प्रकाश करते हैं, जनपद सहारनपुर के अन्तर्गत देवबन्द नगर है जो मुस्लिम शिक्षा के लिए विश्व विख्यात है। यहीं पर आर्य समाज का विशाल मन्दिर है। इस मन्दिर के पास शराब की दुकान खोली गई जब स्वामी आनन्दबोध जी को इस बात का पता चला तो वे देवबन्द आर्य समाज में आये और अनाज मण्डी में उनका भाषण हुआ उन्होंने निर्भीकता से शराब की दुकान खोले जाने का विरोध किया। उत्तर प्रदेश सरकार को निर्भय होकर ललकारा। उनके व्याख्यान के इस जलसे में कई बड़े बड़े शराब के ठेकेदार आ गये थे किन्तु वे कतई घबराए नहीं। उसी ओजस्वी वाणी में भाषण दिया। उनके इस भाषण से आर्य समाजियों में नयी चेतना, नयी स्फूर्ति आई। फलत आर्य समाज मन्दिर के पास से शराब की दुकान हमेशा के लिए विदा हो गई।

सन १९६० में रामदल संस्कृत महाविद्यालय दरीबा कलां (दिल्ली) में छात्रों को आवास की समस्या थी। जब मैं लाला जी के पास पहुंचा तो उन्होंने छात्रों के निवास की व्यवस्था की। हमारे आचार्य श्री पं० दीनानाथ जी शास्त्री धन्यवाद देने लाला जी के पास गए तब लाला जी ने कहा 'पूज्य पण्डित जी आप कोई और सेवा बताइए यह तो छोटी सी सेवा है।

यद्यपि आचार्य दीनानाथ जी शास्त्री कट्टर सनातन धर्मी थे किन्तु वे लाला रामगोपाल जी शालवाले के खूब प्रशंसक थे और कहा करते थे कि 'ऐसे ही कर्मनिष्ठ आर्य पुरुषों के कारण संस्कृत जीवित रही है।

अन्त में स्वामी जी को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि है तथा शत शत नमन है। परमेश्वर से प्रार्थना है उनका आर्य समाज सदा सर्वदा पुष्पित रहे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को राजनेताओं द्वारा दी गई श्रद्धाञ्जलि

राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा की श्रद्धांजलि

डा० शंकरदयाल शर्मा **राष्ट्रपति, भारत सरकार**

हमारे देश के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन में स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने समाज के विकास के लिए प्रगतिशील जीवन दृष्टि पर, तथा आध्यात्मिक उत्थान के लिए आचरण की शुद्धता पर जोर दिया। वे नैतिक मूल्यों के पक्षधर एवं प्रवक्ता थे। विश्व के सांस्कृतिक मानचित्र पर भारत का रंग गहरा करने के लिए वे याद किये जाते रहेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस सभा में स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

शंकरदयाल शर्मा

पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री बेअन्तसिंह की श्रद्धांजलि

बेअन्त सिंह **मुख्यमन्त्री, पंजाब**

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने अपना पूरा जीवन भारत को सुदृढ़ बनाने विशेष तौर पर समाज को ऊंचा उठाने में बिताया। उन्होंने लोगों को व्यवहारिक रूप में काम करके शिक्षा दी। गर्व की बात है कि देश के सभी वर्गों के लोगों में उनके लिए आदर है क्योंकि वह जाति धर्म भेदभाव से ऊपर उठकर जनसेवा में लगे रहे।

पंजाब में उन्होंने शांति स्थापना के प्रयासों में हमेशा दिलचस्पी दिखाई। वे अक्सर पंजाब आकर लोगों विशेष तौर पर ग्रामीण लोगों के बीच जाकर चेतना पैदा करते रहे। उनके निधन से अपूर्णीय क्षति पहुंची है। मैं पंजाब सरकार की तरफ से एवं अपनी ओर से उनको श्रद्धा सुमन पेश करता हूं।

बेअन्त सिंह

श्री बैकुण्ठ लाल शर्मा 'प्रेम' की श्रद्धांजलि

बैकुण्ठ लाल शर्मा 'प्रेम' **संसद सदस्य**

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी

सादर नमस्कार।

परम पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के स्वर्गवास का सुनकर मुझे बहुत गहरा धक्का लगा। उस दिन मैं दिल्ली से बाहर था। स्वामी जी आधुनिक ऋषि थे। मेरा उनसे पिछले १६ वर्षों से सम्बन्ध था। दिल्ली से बाहर होने के कारण मैं उनकी पार्थिव शरीर की यात्रा में शामिल न हो सका। इसका मुझे खेद है। उनके स्वर्गवास से हिन्दू समाज की अपार क्षति हुई है। इसके लिए मैंने विज्ञप्ति भी जारी की है जिसकी प्रतिलिपि संलग्न है। स्वामी जी अपने जीवन काल में हिन्दू समाज के हितों की रक्षा के लिए प्राण पण से जुटे रहे पूरा हिन्दू जगत उनका सदैव ऋणी रहेगा। परमपिता परमात्मा के चरणों में प्रार्थना है कि उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान हो।

मैं आज भी कुछ बाधाओं के कारण सशरीर सभा कार्यक्रमों में उपस्थित नहीं हो पा रहा हूं। मेरी आत्मा आपके साथ ही है।

आपका भाई

बैकुण्ठलाल शर्मा 'प्रेम'

लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल की श्रद्धांजलि

शिवराज पाटिल **लोकसभा अध्यक्ष**

२२ अक्तूबर १९९४

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूर्व सांसद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जीवनपर्यन्त समाज सेवा एवं जन हित के लिए प्रयत्नशील रहे।

स्वामी जी ने गो रक्षा आन्दोलन, नारी उत्थान, साम्प्रदायिक एकता, हिन्दी रक्षा, नशाबन्दी, भ्रष्टाचार उन्मूलन, समाज सेवा से जुड़ी अनेक संस्थाओं और सांस्कृतिक तथा धार्मिक गतिविधियों में अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक महत्वपूर्ण एवं सक्रिय योगदान दिया। वर्ष १९६७ से १९७१ तक स्वामी जी चांदनी चौक क्षेत्र से लोक सभा के सदस्य रहे। वर्ष १९८६ में संन्यास ग्रहण करने पर अपने सांसारिक नाम राम गोपाल शालवाले का परित्याग कर वह स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नाम से विख्यात हुए।

आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद की प्रतिष्ठा एवं गरिमा को स्वामी जी ने वर्ष १९७५ से लेकर जीवनपर्यन्त बनाये रखा। स्वामी जी के निधन से न केवल आर्य एवं हिन्दू जगत अपितु समूचे देश को अपार क्षति हुई है। हम उनके आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(शिवराज पाटिल)

श्री रामेश्वर ठाकुर की श्रद्धांजलि

रामेश्वर ठाकुर **राज्य मन्त्री**

ग्रामीण विकास एवं संसदीय कार्य

भारत

प्रिय श्री शास्त्री जी

मुझे यह जानकर अत्यन्त दुःख है कि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का दिनांक १८ १०-९४ को देहान्त हो गया। श्री स्वामी जी का समस्त जीवन मानव समाज के कल्याण के लिए समर्पित था। वह दीन-दुखियों के सहायतार्थ सदैव तत्पर रहते थे। अन्तिम समय उन्होंने अपना नेत्रदान करके एक नेत्रहीन को प्रकाश प्रदान कर दिया। उनका जीवन सर्वथा अनुकरणीय था।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे और आप सबको शक्ति दे कि आप इस महान क्षति को सहन कर सकें।

संवेदना सहित, आपका

रामेश्वर ठाकुर

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (२)

(पूर्वनाम श्री लाला रामगोपाल शालवाले)

जीवन-परिचय

श्री सोमनाथ एडवोकेट, कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक सभा

गांधी जी से भेंट

लाला रामगोपाल की पहली भेंट महात्मा गांधी जी के साथ तब हुई थी जबकि वह श्री मथुरादास की दो युवती पुत्रियों को उनके पास ले गये थे और सम्बद्ध दो व्यक्तियों का उन्हें नाम बताया था। वे दोनों कांग्रेस के नेता थे। महात्मा गांधी ने लाला रामगोपाल से पूछा कि वे इस मामले में आगे क्या कार्यवाही करना चाहते हैं। लाला जी ने उत्तर दिया कि हम इन दोनों लड़कियों को पुलिस में ले जाकर अपराधियों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज करायेंगे। इस पर गांधी जी ने लाला रामगोपाल को प्रेरणा की कि वे पुलिस में न जायें। उनकी इससे बदनामी होगी। महात्मा जी ने आश्वासन दिया कि वे स्वयं इस मामले में समुचित कार्यवाही करेंगे। यह पहली भेंट भंगी कालोनी में हुई जो वहां महात्मा जी ठहरे हुए थे। यह कालोनी उस सड़क पर स्थित है जिसका इस समय मन्दिर मार्ग नाम है। एक टेलीग्राम से इस घटना का पता लगा था जिसमें लिखा था कि 'जोधपुर (राजस्थान) के मथुरा दास की दो जवान पुत्रियों का अपहरण किया गया है जिनकी कि उम्र क्रमशः १६ व १७ वर्ष की है। अपहरणकर्ता दीवान चमनलाल, सेठ सुदर्शन और श्री माथुर हैं और सैर के बहाने से ले जाई गई हैं। लाला रामगोपाल यह तार आशुतोष लाहड़ी से लाए थे जो उस समय अखिल भारतीय हिन्दू महा सभा के मन्त्री थे। लाहड़ी जी ने यह तार लाला रामगोपाल को अपहृत लड़कियों का पता लगाने के लिए आवश्यक कार्यवाही के हेतु दिया था। उपर्युक्त तीनों व्यक्ति मथुरादास के मित्र थे। परन्तु दुर्भाग्य से वे लड़कियां किसी निम्न उद्देश्य के लिए उड़ाई गई थीं।

इस तार के आधार पर लाला रामगोपाल ने दीवान चमनलाल से टेलीफोन पर बात की और कहा कि वे दोनों लड़कियों को लौटा दें अन्यथा इसके परिणाम बुरे होंगे। परन्तु दीवान चमनलाल ने कोई ध्यान न दिया। इस पर लाला रामगोपाल ने अपने आर्य वीर दल के स्वयं सेवकों के साथ लड़कियों की खोज शुरू कर दी। एक लड़की पहाड़गंज के एक मकान से बरामद की गई जो ताले में बन्द थी। आर्य वीरों को ताला तोड़ना पड़ा था। इस लड़की से ज्ञात हुआ कि उसकी दूसरी बहिन जी० बी० रोड की बस्ती में पड़ा हुआ है और वस्तुतः वह लड़की वहां से ही बरामद की गई। कांग्रेस के नेताओं का इस प्रकार का आचरण बड़ा शोचनीय है यह बात लाला जी महात्मा गांधी के नोटिस में लाना चाहते थे। महात्मा जी ने जिस कार्यवाही का वचन दिया था अगले दिन के 'हरिजन' में दु:खद घटना का प्रकाशन जिसका शीर्षक था सफेद पोशों पर आरोप। महात्मा जी ने जान-बूझ कर तीनों अपराधी व्यक्तियों तथा सूचना देने वाले का नाम नहीं लिखा। महात्मा जी ने इस अङ्क की एक कापी लाला रामगोपाल के पास भिजवा दी।

श्री चावलेवाले ने लाला राम गोपाल की महात्मा जी से भेंट की व्यवस्था की थी। सौभाग्य से श्री चावलेवाले उस समय दिल्ली में न थे अतः महात्मा जी से भेंट करना सुगम हो गया। आशुतोष लाहड़ी और लड़कियों के साथ लाला जी ने पुनः महात्मा जी से भेंट की।

यह भेंट १६ दिन बाद हुई थी और उस टेलीग्राम से सम्बद्ध थी जो श्री नोबतराम लोहिया को अपने पिता से नगीना (गुड़गांव) से प्राप्त हुआ था। नोबतराम जी इस तार को लेकर लाला रामगोपाल के पास आए और दोनों ने पहले महात्मा जी से भेंट करने का निश्चय किया। नगीना हरियाणा में एक कस्बा है। लगभग १२०० मुस्लिम मेवों ने कस्बे वालों से ५००० रुपये की मांग की और न देने पर कत्ल की धमकी दी। यह तार इसी घटना के सम्बन्ध में था।

लाला रामगोपाल नोबतराय के साथ महात्मा जी से मिलना चाहते थे परन्तु गांधी वाले ने पहले तो भेंट की व्यवस्था करने में असमर्थता प्रकट की। परन्तु जब उन्हें मामले की गम्भीरता बताई गई और यह भी बताया गया कि नगीना के तमाम हिन्दुओं की जान को खतरा है तो उन्होंने भेंट की व्यवस्था कर दी। महात्मा जी को तार दिखाया गया। परन्तु खेद है कि उन्होंने इस मामले में कोई कार्यवाही करने में अपनी असमर्थता बताकर पण्डित नेहरू या सरदार पटेल के पास जाने के लिये कह दिया।

जब वे दोनों निराश होकर कमरे से बाहर निकले तो दैवयोग से सरदार पटेल की कार आती हुई दीख पड़ी। वे महात्माजी से मिलने के लिए आ रहे थे। ला० रामगोपाल कार के आगे हाथ फैलाकर खड़े हो गए और सरदार पटेल के हाथ में तार दिया गया।

सरदार पटेल ने लाला रामगोपाल से मालूम किया कि उन्हें यह तार किसने दिया और किसने उन्हें महात्मा जी के पास भेजा था। लाला रामगोपाल ने बताया कि लाला देशबन्धु गुप्त ने यह कार्य उन्हें सौंपा है। लाला देशबन्धु जी सरदार पटेल के विश्वस्त व्यक्तियों में न थे। देशबन्धु जी को वे हिन्दू विरोधी समझते थे। तुरन्त ही सेना के जवानों से भरे ४ ट्रक एक कमाण्डर के साथ नगीना भेज दिये गये और वह हत्याकाण्ड होने से बच गया। बाद में नगीना में एक बड़ा समारोह हुआ और आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण के लिये उसी समय धन एकत्र कर लिया गया।

यह दूसरी भेंट देश-विभाजन के सन्दर्भ में हुए साम्प्रदायिक दंगों की शुरूआत होने के समय हुई थी।

राष्ट्रपति भवन में मस्जिद का रुकवाना

लाला रामगोपाल की लोकसभा की सदस्यता के काल की एक महत्वपूर्ण घटना का वर्णन समीचीन जान पड़ता है। उन दिनों भारत के राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन थे। उन्होंने राष्ट्रपति भवन में एक मस्जिद के निर्माण की योजना बनाई यह शीघ्र से शीघ्र रात के समय बनाई जाने वाली थी जिससे किसी को भी इसके निर्माण की योजना का पता न लगे।

फिर भी राष्ट्रपति भवन के हिन्दू कर्मचारियों को इसका पता लग गया और उन्होंने लोकसभा के एक हिन्दू सदस्य को यह खबर दे दी और ब्यौरा बता दिया। उन कर्मचारियों ने उन सदस्य महोदय से प्रार्थना की कि वे राष्ट्रपति भवन में इस मस्जिद का निर्माण न होने दें और इसके लिये राष्ट्रपति को मिलकर तैयार करें और उन्हें कहें कि इससे एक बुरी प्रथा पड़ जायेगी। उन सदस्य महोदय ने इस काम को हाथ में लेने से इन्कार करके यह कह दिया कि यदि डा० जाकिर हुसैन ने इरादा पक्का कर लिया है तो वे उनके (लोकसभा सदस्य) अनुरोध को स्वीकार नहीं करेंगे। जब जाकिर साहब बिहार के राज्यपाल थे तब भी उन्होंने ऐसा ही कार्य किया था।

निराश हुए वे कर्मचारी ला० रामगोपाल के पास गये और उन्होंने राष्ट्रपति भवन में मस्जिद के निर्माण की समस्त योजना उन्हें बताई। उन्होंने ला० रामगोपाल से इस निर्माण को रुकवाने की प्रार्थना की और यह भी बता दिया कि वे एक दूसरे हिन्दू सदस्य के पास गये थे और उन्होंने इस कार्य को हाथ में लेने में अपनी असमर्थता प्रकट की थी। सच बात तो यह है कि वे कर्मचारी इस विषय में लाला रामगोपाल की प्रतिक्रिया जानने के हेतु ही उनके पास गये थे। ला० रामगोपाल ने उनसे वायदा किया कि वह राष्ट्रपति भवन में मस्जिद नहीं बनने देंगे और इस प्रकार दूसरे धर्म के राष्ट्रपति के द्वारा मस्जिदों आदि के निर्माण की प्रथा नहीं पड़ने देंगे।

(क्रमशः)

पुण्य संस्मरण

आर्य जगत् का बहुआयामी विराट् व्यक्तित्व

स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती

प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री "हंसराज" एम०ए०

मंगलवार, दिनांक १८ अक्तूबर ९४ को सुबह मैं अपने अध्ययन कक्ष में बैठा टी०वी० पर प्रातःकालीन समाचार सुन रहा था कि उसके चित्रपट पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का चित्र उभरा और उद्घोषणा सुनायी पड़ी कि स्वामी जी का विगत रात्रि में २ बजकर २० मिनट पर देहान्त हो गया। सुनकर दिमाग सन्न से कर गया। आज से ठीक दो महीने पूर्व दि० १६ अगस्त ९४ को उनसे फोन पर लम्बी वार्त्ता हुई थी। उन्होंने अन्त में कहा था कि "देखो, फोन पर लम्बी वार्त्ताएं नहीं हो सकतीं। आप दिल्ली चले आओ। आमने-सामने बैठकर बातें करेंगे।"

उनके आदेशानुसार मैं दिनांक १७ अगस्त ९४ को दिल्ली पहुंचा था। मैंने लपक कर उनके चरण स्पर्श किये। "आओ जी बैठो।" कहते हुए उन्होंने सामने वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। और लगभग ३ घण्टों तक मैं उनके सान्निध्य में रहा। अनेक राष्ट्रीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं पर बातें होती रहीं, फिर बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा पर भी बातें होती रहीं। वे पूछते, सुनते और जहां आवश्यक होता वहां अपने विचार व्यक्त करते। हर प्रसंग में हर मसले पर उनके सुलझे विचारों को सुनकर मैं बड़ा प्रभावित हुआ। स्वामी जी जब बोलते थे तो मन्द, स्पष्ट स्वर में बोलते थे और बीच-बीच में चुप होकर श्रोता की प्रतिक्रिया जानने लगते थे। बातें करते हुए लगभग सवा सात बजे गये थे।

मैंने चरण स्पर्श किये और आशीर्वाद लेता नीचे उतर आया। दूसरे दिन प्रातःकाल ९ बजे मैं स्वामी जी के सामने फिर उपस्थित हुआ। उन्होंने कुछ औपचारिक बातों के बाद कहा—"देखो मैं आजकल बहुत दुःखी रहता हूं। रातों में नींद नहीं आती। राष्ट्र बाहर-भीतर शत्रुओं से घिरा है। भारतीय समाज को अस्तित्व और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए आज आर्य समाज की जितनी जरूरत है, उतनी कभी नहीं रही। पर आर्यसमाज का क्या हाल है? कैसे-कैसे लोग इसमें घुस आये हैं। सभी प्रान्तीय सभाओं में फूट है। अच्छे तत्त्व वहां निर्बल दिखायी पड़ते हैं, दुष्ट तत्त्व सबल! मैं कोई सर्वान्तर्यामी परमात्मा तो नहीं? मैं भी मनुष्य हूं और बहुत थोड़ी शक्तिवाला मनुष्य हूं। चाहता था कि आर्य जगत् एक बार अपने पुराने आर्योचित उत्साह से जाता और सदैव से फिर इस राष्ट्र और भारतीय संस्कृति की रक्षा करता। मैं चाहता हूं कि चरित्रवान विद्वान् आर्य युवकों की समर्पित पीढ़ी सामने आये और इस दायित्व को सम्भाले।"

मैंने देखा कि भावावेश में एक सांस में कहे गये इतने लम्बे वक्तव्य के बाद हल्के से हांफने लगे थे। वे कुछ समय तक लगातार मौन रहे। मैं भी मौन बना रहा। मुझे स्पष्ट लगा कि स्वामी जी शारीरिक तौर पर लगातार दुर्बल होते चले जा रहे हैं और आर्य जगत् कैसे अपने कर्त्तव्य बोध को प्राप्त करेगा, राष्ट्र कैसे सुरक्षित होगा, इसकी दुश्चिन्ता उन्हें भीतर से साले जा रही है।

लगभग १२ बजे चले थे। वे मेरी ओर मुखातिब होकर बोले—"तुम खाना खाओगे? खाना क्या खाओगे? डोसा खाते हो। यहां एक डोसे वाला है—"भज गोविन्दम्?" बहुत भीड़ रहती है वहां। उसके डोसे शुद्ध घी के बने बहुत स्वादिष्ट होते हैं। कभी-कभी मैं भी वहीं खाने में ले लेता हूं। वहीं मंगवा दूं?"

एक बार फिर मैं उनके वात्सल्य प्रेम से भाव-विभोर हो उठा। मैंने सहमति जतायी। उन्होंने फिर किसी को पुकारा और उसे 'भज गोविन्दम्' से एक डोसा लाने को कहा—तभी दूसरे ने आकर सूचना दी—"स्वामी जी, आपका खाना लाकर रखा हुआ है।" वे खाना लिये चले गये। इसके बाद कुछ देर तक लेटकर विश्राम करते रहे। फिर डेढ़ बजते न बजते वहीं उसी कुर्सी पर आ बैठे। सुबह से इस बीच जो भी जन जिस जिज्ञासा के साथ आते रहे, वे उनका तत्काल समाधान करते रहे। फिर पुराने प्रसंगों पर ही रुक-रुक कर बातें चलने लगीं। मुझे लगा कि उनका हृदय अगाध करुणा, दुश्चिंताओं और परेशानियों से भरा-भरा है। वे अपने जीवन के अवसान-काल को स्पष्ट देख रहे हैं।

"देखो, मेरी आयु ९१ वर्ष की हो रही है। स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मैं बहुत दिन अब बचूंगा नहीं। चाहता हूं सुबुद्ध आर्य जन सभी जगह जगें, संगठित हों और स्वामी दयानन्द के मिशन को पूरा करने के लिए आगे आएं। तुम्हें मेरा आशीर्वाद है।"

कुछ देर और ठहर मैंने चरण स्पर्श किये और विदा ली और लगभग ठीक दो महीने बाद आज जब सुबह टी०वी० पर उनके देहान्त का समाचार सुना तो अवाक् और हतप्रभ रह गया। क्या सचमुच स्वामी जी को यह आभास हो गया था कि वे अब ज्यादा दिन जीने वाले नहीं हैं।...दो महीने पूर्व उनके साक्षात्कार एवं उनके साथ हुई वार्त्ता के सारे पहलू किसी 'डाक्युमेण्टरी फिल्म' की तरह मेरी आंखों के आगे नाच गये।

मैं शीघ्र तैयार हुआ और पटने से श्रमजीवी पकड़ कर दिल्ली चला आया। स्नानादि से निवृत्त होकर बुधवार को लगभग १० बजे जब मैं दीवानहाल आर्यसमाज पहुंचा तो दर्शनार्थियों का तांता लगा हुआ था। देश के कोने-कोने से आर्य जन आ रहे थे, आबाल-वृद्ध नर-नारी सभी अपने प्रिय आध्यात्मिक नेता पर अपने श्रद्धा सुमन समर्पित कर रहे थे। आने वालों में अनेक प्रमुख राष्ट्रीय नेता एवं केन्द्रीय मन्त्री थे।

ठीक दो बजे उनकी शव-यात्रा दीवान हाल आर्य समाज से प्रारम्भ हुई। यात्रा में स्थानीय दिल्ली वासी, आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सदस्य-गण, देश के विभिन्न भागों एवं कुछ विदेशों से भी आये प्रतिनिधि आर्य महानुभाव शामिल थे। फूलमालाओं से ढंके, चिर-निद्रालीन स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की ओर निहारते नवनिर्वाचित सार्वदेशिक अध्यक्ष श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी एवं कुछ अन्य आर्य महानुभाव श्रद्धाञ्जलि सामुनयम बैठे थे। करीब दो ढ़ाई घण्टों की यात्रा के पश्चात् निगमबोधघाट पर स्वामी जी का पार्थिव शरीर वैदिक मन्त्रों के मन्त्रोच्चार के बीच चिता को समर्पित कर दिया।

बाद दिनांक २३-१०-९४ को तालकटोरा गार्डन, इनडोर स्टेडियम की श्रद्धाञ्जलि सभा में मैंने भी अपने शोकोद्गार व्यक्त किये। वहां प्रत्येक उपस्थित बन्धु ने ऐसा स्पष्ट अनुभव किया कि आर्य जगत् का एक बहुआयामी विराट् व्यक्तित्व धरा से उठ गया।

आर्य समाज के दृढ़ स्तम्भ

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

आप हमारी सार्वदेशिक सभा के प्रधान ही नहीं, हम सबके प्रेरणास्रोत मार्गदर्शक एवं आर्य जगत के विश्व विख्यात नेता थे। आपका व्यक्तित्व महान था। इस छोटे से शरीर से विलक्षण प्रतिभा अदम्य साहस एवं क्रान्तिकारी विचारधारा की रश्मियां प्रस्फुटित होती थीं। आज के युग में यदि आपको एक कर्मयोगी की संज्ञा दी जाये तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। आपकी कर्मठता निशदिन आर्यजगत की सेवा देश-विदेश में वैदिक शंखनाद फूंकने की लगन बरबस हमारे हृदय में आपके प्रति श्रद्धा का सागर उमड़ने के लिए मजबूर कर देती है।

आपने राष्ट्र और समाज की जो सेवा की है वह किसी से छिपी नहीं है। आपने १९६७ में लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होकर संसद में गोरक्षा, हिन्दी भाषा के विकास एवं मद्य-निषेध के साथ-साथ देश की ज्वलन्त समस्याओं के लिए आवाज उठाई थी। आर्य समाज आपको अपने सर्वोच्च नेता के रूप में मान्यता प्रदान करता है। हिन्दी रक्षा आन्दोलन के प्रणेता गोरक्षा आन्दोलन के सूत्रधार, हैदराबाद सत्याग्रह के क्रान्तिकारी के रूप में आपकी परख हो चुकी है। आर्यसमाज स्थापना शताब्दी, सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी, महर्षि निर्वाण शताब्दी मीनाक्षीपुरम् एवं रामनाथपुरम् सम्मेलन तथा अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन जैसे विश्व प्रसिद्ध कार्यक्रमों के रूप में आपका नेतृत्व सर्वविदित है। आपके कार्यों का उल्लेख समुद्र को मापने के तुल्य है। आपने महर्षि के स्वप्नों को भारत में ही प्रचारित करने का प्रयास नहीं अपितु विश्व के कोने-कोने में महर्षि के सन्देश पहुंचाने का प्रयास किया था। पश्चिमी जर्मनी लन्दन नैरोबी, मारीशस आदि में आपके प्रयास उल्लेखनीय हैं, कुछ वर्ष पूर्व मीनाक्षीपुरम् में विशाल पैमाने पर धर्मान्तरण के समय आप एक सशक्त हिन्दू रक्षक के रूप में उभरे तथा आपने विदेशी षड्यन्त्रकारियों की चुनौतियों का डटकर मुकाबला किया और अपनी जागरूकता से उनको धराशाही कर दिया। आप एक सच्चे देशभक्त थे। आपकी पहचान जनसाधारण के साथ-साथ शासन में भी हुई और समय-समय पर राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए भू॰पू॰ प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी आपका सहयोग एवं परामर्श प्राप्त किया।

पंजाब समस्या के मामले में यद्यपि आप पर उग्रवादियों की निरन्तर कुदृष्टि थी परन्तु आप निर्भीक जागरूक प्रहरी के रूप में जनता के अन्दर साहस का संचार करते रहे।

राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की रक्षा के लिये देश के युवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने भी आपकी प्रतिभा को पहचाना और आपका वरद हस्त मांगा था जिसे आपने स्वीकार करके राष्ट्र के प्रति अपना योगदान प्रदर्शित किया। अब आपका प्रेरक जीवन आपका ही नहीं किन्तु राष्ट्र समाज एवं जन-जन की आत्मा है। हम आज राष्ट्र के प्रति समर्पित होते हुये रचनात्मक एवं क्रान्तिकारी कार्यक्रमों को मूर्त रूप देने का संकल्प लेते हैं।

ये विचार १४ अक्तूबर मंगलवार को स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के दुःखद निधन को जानने के बाद जब प्रभात आश्रम ने शोकाकुल हो शोक सभा का आयोजन किया तब सभी कुलवासियों की ओर से प्रकट किये गये। अन्त में संस्थान के अध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने कहा—"वे आर्यसमाज के अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सेवक सभी कुछ थे क्योंकि उन्होंने इन सभी भावनाओं से आर्य समाज की सेवा की थी। उन्होंने अपना सारा समय आर्य समाज एवं ऋषि दयानन्द को समर्पित कर दिया था। वे सभी स्थलों पर ऋषि दयानन्द एवं आर्य समाज की विचारधारा को जनता के समक्ष निर्भीकता से प्रगट करते थे। अगले दिन उनकी अन्तिम यात्रा जो दीवानहाल से निगमबोध घाट दिल्ली तक गई थी उसमें भी श्री स्वामी विवेकानन्द जी और ब्रह्मचारियों ने शंख ध्वनि एवं वेद पाठ करते हुये भाग लिया।

मेरे पिता स्वामी आनन्द बोध जी

आनन्द सुमन वैदिक प्रवक्ता

यह समाचार आघात पूर्ण है कि आर्य समाज के वयोवृद्ध विद्वान एवं तपस्वी संन्यासी स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी का निधन हो गया है।

मै स्वामी जी के सम्पर्क में १ सितम्बर १९८१ को आया और तब से अब तक निरन्तर उनके सम्पर्क में रहते हुए आर्य समाज के प्रचार व प्रसार में लगा हुआ हूं। आज स्वामी जी हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनकी स्मृति मात्र ही अनेक घटनाओं को पुनः जीवित कर देती है।

प्रथम घटना तब की है जब मुझे वैदिक धर्म स्वीकार किये कुछ ही दिन हुये थे मैं बीकानेर गया हुआ था वहां मेरे भाषण के बीच तत्कालीन सांसद श्री उस्मान आरिफ के पुत्र ने मुझ पर आक्रमण किया यह समाचार आग की तरह फैला, दिल्ली में बैठे हुए स्वामी जी ने एक दम दिल्ली से कुछ लोगों को भेजा और मुझे सुरक्षित दिल्ली बुलवाया दिल्ली आने पर स्वामी जी ने जिस प्रकार से मुझे देखा तथा मेरे पूरे शरीर पर हाथ फेरा उससे निश्चित ही ऐसा लगा कि पिता जैसा स्नेह स्वामी जी ने दिया।

दूसरी घटना अल्मोड़ा से मेरा गिरफ्तारी वारंट जारी होने की है, जब स्वामी जी को यह पता चला कि सुमन की गिरफ्तारी के वारंट जारी हो गये हैं तब उन्होंने आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता चौधरी लक्ष्मीचन्द्र जी को तत्कालीन गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह जी के पास भेजा और तीन घण्टे के अन्दर मेरे वारंट वापस गये।

स्वामी जी वास्तव में एक चलता फिरता आन्दोलन थे उन्हें निरन्तर संगठन कार्यों की ही चिन्ता रहती थी हम सबको भी यदाकदा इसी विषय पर वह डांट दिया करते थे।

आज उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए निश्चय ही ऐसा आभास हो रहा है कि एक योग्य पिता एवं कुशल संगठन कर्ता का साया मेरे सर से उठ गया है।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये एक बार १०० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

राष्ट्रीय आन्दोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि के निर्माण में स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान

प्रो० रासासिंह रावत, लोकसभा सदस्य

उद्भट विद्वान :

स्वामी दयानन्द सरस्वती (१८२४-१८८३) अपने युग की जीवित भाषा थे। युग का स्पन्दन उनकी आत्मा का स्वर बनकर उनके कार्यों में मुखरित हो उठा था। दयानन्द भारतीय परम्परा के उद्भट विद्वान, वेद और संस्कृत के प्रकांड पंडित, प्रखर तार्किक और बुद्धिवाद की साकार प्रतिमा थे। उन्होंने वेद की कसौटी पर बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी, उसका जवाब पौराणिक पंडितों, ईसाई पादरियों और मुस्लिम मौलवियों के पास नहीं था।

राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न पक्ष :

राष्ट्रीय आन्दोलन शून्य मे उत्पन्न नहीं होता है। राष्ट्रवाद के अनेक सन्दर्भ होते हैं, जैसे राजनीतिक आन्दोलन, समाज सुधार आन्दोलन, आर्थिक विकास के लिए सशक्त प्रयास और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद।

स्वामी दयानन्द सरस्वती को इस बात का श्रेय है कि सर्वप्रथम उन्होंने ही भारतीय राष्ट्रवाद की वैचारिक पृष्ठभूमि का निर्माण किया और राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न पक्षों को गति प्रदान की।

सामाजिक क्रान्तिकारी :

दयानन्द न केवल समाज सुधारक थे, बल्कि सामाजिक क्रान्तिकारी भी थे। उन्होंने जाति व्यवस्था का घोर विरोध करते हुए गुण कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था की स्थापना पर बल दिया। विधवा विवाह, स्त्री पुरुष समानता और प्रत्येक व्यक्ति को संस्कृत तथा वेद पढ़ने के अधिकार का समर्थन किया। इस सन्दर्भ में फ्रांसीसी विचारक रोमा रोला ने लिखा है—'सत्य यह है कि भारत के लिए वह दिन युग प्रवर्तक था जिस दिन एक ब्राह्मण ने न केवल यह स्वीकार किया कि वेदो का ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार मनुष्य मात्र का है जिनका पठन पाठन उनसे पूर्व कट्टर ब्राह्मणों ने निषिद्ध कर दिया था, अपितु इस बात पर भी बल दिया कि वेदों का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है।

दयानन्द ने बाल विवाह, वृद्ध विवाह, कन्या वध, सती प्रथा, अस्पृश्यता आदि सामाजिक कुरीतियों का प्रबल खंडन करके भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि का निर्माण किया।

धार्मिक अन्धविश्वासों का विरोध :

मूर्तिपूजा, अवतारवाद, बहुदेववाद, गंगा स्नान से मोक्ष प्राप्ति, श्राद्ध-तर्पण, स्वर्ग-नरक आदि पौराणिक कल्पनाओं का खण्डन करके दयानन्द ने वेदो के आधार पर विशुद्ध धर्म की स्थापना पर बल दिया।

आर्थिक विकास पर बल :

दयानन्द भारत की निर्धनता, बेरोजगारी, औद्योगिक अवनति आदि से अत्यन्त दुःखी थे। भारतीयो को कला कौशल सिखाने के सम्बन्ध मे उन्होने जर्मनी के विद्वान जी. वाइज से पत्र व्यवहार किया। प्रो० जी. वाइज ने स्वामी जी को जून १८८० से लेकर अक्टूबर १८८० की अवधि मे ९ पत्र लिखे जो युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा सम्पादित ऋषि दयानन्द सरस्वती को लिखे गए पत्र और विज्ञापन, तृतीय भाग (१९८२) में संकलित हैं।

स्वामी जी ने अतिरिक्त सहायक कमीश्नर लाला मूलराज को ३० नवम्बर १८८० को एक पत्र में लिखा—"यह अब स्पष्ट है कि बहुत से पढ़े लिखे लोगों को भी नौकरी नहीं मिलती या वे जीवन निर्वाह का प्रबन्ध नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था देखकर मैं एक कला कौशल के स्कूल की आवश्यकता विचारता हूं। प्रत्येक को अपनी आय का १०० वां भाग प्रस्तावित संस्था को देना चाहिए। उस धन से चाहे तो विद्यार्थी कला कौशल सीखने जर्मनी भेजें जावें या वहां से अध्यापक यहां बुलाये जायें (पं० भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन, प्रथम भाग, १९८० पृ० ४५०)।

दयानन्द के आर्थिक चिन्तन ने भारतीय राष्ट्रवाद के आर्थिक पक्ष को उजागर किया।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के सूत्रधार :

रामधारी सिंह दिनकर ने अपने ग्रन्थ "संस्कृति के चार अध्याय" में लिखा है कि—'जैसे राजनीति के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज पहले पहल तिलक में प्रत्यक्ष हुआ, वैसे ही संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द में निखरा। उन्होने अपने प्रख्यात ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे स्वदेश प्रेम, स्वभाषा प्रेम, स्वसंस्कृति प्रेम और स्वधर्म प्रेम का उपदेश देते हुए गौरवशाली अतीत और आर्यों के चक्रवर्ती राज्य का वर्णन किया है।

दयानन्द के समस्त चिन्तन का मूलाधार वेद है। उन्होने आर्य समाज के तृतीय नियम में लिखा है कि—"वेद सब सत्यविद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। उन्होंने वेदों को सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय ज्ञान मानते हुए "वेदों की ओर लौटो" का उद्घोष दिया। वैदिक धर्म की श्रेष्ठता स्थापित करते हुए उन्होंने सिंह गर्जना की—"कृण्वन्तो विश्वमार्यम" (ऋग्वेद ९-६३-५) अर्थात विश्व को आर्य बनाइये।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का तात्पर्य यह है कि राष्ट्र एक मात्र भौगोलिक इकाई नहीं, वरन् एक सूत्र सांस्कृतिक अवधारणा है। दयानन्द ने वैदिक संस्कृति की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुए उसके नवोन्मेष के प्रयास किए। उन्होंने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में वेद की कसौटी पर न केवल पौराणिक सनातन हिन्दू धर्म की मान्यताओं का प्रबल खंडन किया, बल्कि सत्यार्थप्रकाश के १३वें तथा १४वें समुल्लास में बाइबिल और कुरान में भी ऐसे ही दोष दिखला दिए जिनके कारण ईसाई और मुस्लिम मौलवी हिन्दुत्व की निन्दा करते थे। परिणामतः हिन्दू अपनी प्राचीन संस्कृति और वैदिक वाङ्मय के प्रति गौरव का अनुभव करने लगे।

राममोहन और रानाडे के उदारवादी समाज सुधार आन्दोलन के विपरीत दयानन्द ने सांस्कृतिक स्वाभिमान के स्वर में घोषणा की—धर्मच्युत हिन्दू प्रत्येक अवस्था में अपने मूल धर्म में वापस आ सकता है और अहिन्दू भी हिन्दू धर्म में प्रवेश पा सकते हैं। यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी, बल्कि दिनकर के शब्दों में यह जागृत हिन्दुत्व का समरनाद था। स्वामी जी की विरासत के आधार पर ही बाद में आर्य समाज तथा स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय आदि नेताओं ने हिन्दू संगठन तथा शुद्धि आन्दोलन का सूत्रारम्भ किया।

दयानन्द ने वेदों में विज्ञान मानकर विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया। इस सन्दर्भ मे श्री अरविन्द ने अपने लेख "दयानन्द एण्ड द वेद" मे लिखा—'वेदों में केवल धर्म ही नहीं, विज्ञान भी है। दयानन्द के इस विचार से चौंकने की कोई बात नहीं है। मेरा विचार तो यह है कि वेदों मे विज्ञान की ऐसी बातें भी हैं जिनका पता आज के वैज्ञानिको को नहीं चला है।"

दयानन्द ने शिक्षा की प्राचीन गुरुकुल प्रणाली और संस्कृत भाषा के पठन-पाठन पर बल दिया। फ्रेंच दार्शनिक रोमा रोला के शब्दो में—"दयानन्द पर विजय पाना असम्भव था, क्योंकि वे वैदिक वाङ्मय और संस्कृत के अनुपम भंडार थे। ...वे ऋषियों की परम्परा के अंग थे और वीर भावना के साथ प्राचीन भारत के पवित्र ग्रन्थों को साथ लेकर कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण हुए।

स्वराज्य के मन्त्रद्रष्टा :

दयानन्द प्रथम राष्ट्रवादी थे, जिन्होने अ० भा० राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के तीन वर्ष पूर्व ही १८८२ में सत्यार्थ प्रकाश के ८ वें समुल्लास में पूर्ण स्वराज्य का उपदेश देते हुए लिखा—'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-

(शेष पृष्ठ ८ पर)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

महान सन्त केसाथ-साथ सच्चे समाज सुधारक भी थे

पिछले दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं वयोवृद्ध, संन्यासी, त्याग-मूर्ति स्वामी आनन्दबोध सरस्वती,का निधन हो गया। उनका बचपन का नाम लाला रामगोपाल शालवाला था। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का जन्म सन् १९०९ ई० में कश्मीर के अनन्तनाग नगर में हुआ था। परन्तु उनके पूर्वज पंजाब प्रान्त के मूल निवासी थे। सन् १९२७ में उनका सारा परिवार दिल्ली आ गया था। उसके बाद स्वामी जी का आर्यसमाज से नाता जुड़ गया था। और एक सच्चे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के समर्पित सेनानी बन गए। और अधिकतर दिल्ली क्षेत्र में आर्य समाज का प्रचार आरम्भ कर दिया। और अपना सारा जीवन आर्य समाज को अर्पण कर दिया।

स्वामी जी महाराज वैदिक धर्म के अनुसार सत्य का मार्ग अपनाते हुये सच्चे लग्न के साथ आर्य समाज का कार्य करते थे। तथा स्वामी जी हर समय एक ही बात कहा करते थे कि जब तक हम ठोस संगठन नहीं बनायेंगे तब तक आर्य समाज का प्रचार भी नहीं बढ़ सकेगा इसलिये स्वामी जी का एक ही मतलब था कि हम सब एक सूत्र में बधकर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के स्वप्नों को साकार करते हुये उनके अधूरे कार्य हम सब मिलकर पूरा करें। स्वामी जी महाराज को जो भी काम सौंप दिया जाता था उस काम को श्रद्धा से पूरा करते थे। विशेषकर स्वामी जी गौ रक्षा, अनाथ बच्चों का सहयोग, स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान देते थे। सभी नशों का सर्वनाश समाज मे फैली बुराइयों के खिलाफ तथा आर्यसमाज को ऊंचा उठाया जावे पर विशेष बल देते थे।

सामाजिक हित के कार्यों को लेकर स्वामी जी कई बार जेल भी गये थे। स्वामी जी का जीवन बड़ा त्यागमय एवं आदर्श था। स्वामी जी जब भी भाषण देतेथे। हर भाषण मे एक ही बात कहा करते थे। कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अधूरे कार्यों को पूरा करना हमारा सबका नैतिक कर्तव्य बनताहै। इसलिये हमें सच्ची लगन से स्वामीजी का कार्य करना चाहिये। ताकी यह ऋषियों का भारत बर्बाद न होवे पावे। स्वामी जी को राष्ट्र के बारे में बहुत-बहुत चिन्ता रहती थी और स्वामी जी हिन्दुओं के कट्टर समर्थक भी थे। कश्मीर में जो धारा ३७० लगी हुई है इस धारा के स्वामी जी महाराज बहुत विरोधी थे। एक बार धारा ३७० हटाओ का अभियान भी स्वामी जी ने छेड़ा था किन्हीं कारणों से उस अभियान में सफल नहीं हो सके। एक दिन तंग आकर स्वामी जी ने कहा था जब तक हम राजनीति में नहीं घुसेंगे तब तक धारा ३७० सहित कई गैर कानूनी कार्य बन्द नहीं हो सकेंगे। इस विषय को लेकर सन् १९६७ में स्वामी जी ने लोकसभा का चुनाव भी लड़ा और लोक सभा सदस्य भी चुने गये।

हर समय अपने कार्यकाल मे एक ही बात कहा करते थे कि कश्मीर में हो रहे अत्याचार बन्द किये जायें तथा धारा ३७० तुरन्त हटाई जावे। आज हमारे बीच स्वामी जी नहीं हैं। आर्य समाज के साथ-साथ उनकी राजनीति में भी पूरी लगन थी। स्वामी जी के चले जाने पर सारा राष्ट्र ही नहीं बल्कि सारा संसार उनका शोक मना रहा है। और हम परमपिता से प्रार्थना करते हैं कि स्वामी जी की आत्मा को शान्ति दे। तथा हम आर्यों को उनके अधूरे कार्य करने की शक्ति दे। और आगे मैं सभी आर्य मित्रों से एक ही प्रार्थना करता हूं कि स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के कार्यों को पूरा करें। जिससे कि उनकी आत्मा को पीड़ा ना मिले। स्वामी जी आज हमारे से सदा-सदा के लिये विदा हो गये और उनकी सच्ची आत्मा हमारे कार्यों को देखती रहेंगी इसलिये आप सभी आर्य मित्र सच्ची लगन के साथ महर्षि स्वामी दयानन्द के पदचिह्नों पर चलने वाले महान् सन्यासी स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुये प्रतिज्ञा करें कि हम स्वामी जी के कार्यों को पीछे नहीं छोड़ेंगे और उनके कार्य को सफल करेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ

आपका आर्य मित्र

हवासिंह आर्य

आर्य समाज मन्दिर

लोहारू जिला भिवानी (हरि०)

पू० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को श्रद्धाञ्जलि

राम के साथ गोपाल का योग था।
शाल श्रीफल न सम्मान का लोभ था॥
राज-पथ छोड़ जो धर्म-पथ पर चला।
नाम उसका ही स्वामी आनन्दबोध था॥

हैदराबाद सत्याग्रह में की सिंह गर्जना।
गौरक्षा-हिन्दी आन्दोलनों को दी चेतना॥
कुरीतियों से जंग में जो सेनानी बना।
२२ बार बन्दीगृह की सही यातना॥
जिसके तर्कों का संसद में जय-घोष था।
नाम उसका ही स्वामी आनन्दबोध था॥२॥

प्राण प्रिय पत्नी का था चिता पर शयन।
आये परिवार जन अश्रुपूरित नयन॥
बोले तात! कीजिये चल मुखाग्नि की रस्म।
देवी की देह का कीजे अन्त्येष्टि करम।
ऐसा सन्देश पाकर जो निःक्षोभ था।
नाम उसका ही स्वामी आनन्दबोध था॥३॥

आघात गहरा था पर धैर्य का था पहरा।
वाणी में नहीं था कम्पन, था शान्त चेहरा॥
सन्यासी की न पत्नी होती न कोई पुत्रचेरा।
निज धर्म का पालन करो है आदेश मेरा॥
ऐसा उद्घोष कर जिसे परम सन्तोष था।
नाम उसका ही स्वामी आनन्दबोध था॥४॥

आनन्द-बोधि-वृक्ष की छाया में हम।
विधि के विधान को भी भूल बैठे थे हम॥
कोटि-कोटि नयन उनके गम में हैं नम।
विश्व के आर्य जनोंका है शत शत नमन॥
वह महाप्राण आनन्द का अजस्र स्रोत था।
नाम उसका ही स्वामी आनन्दबोध था॥५॥

—नरेन्द्र आर्य "अमर भूषण"
उप अधीक्षक म०प्र० पुलिस (से० नि०)

आर्य संस्थाओं की ओर से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को श्रद्धांजली

जोधपुर २१ अक्तूबर। यहां आर्य संस्थाओं की ओर से सरदारपुरा स्थित आर्यसमाज हाल में एक सभा आयोजित कर सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा आर्य समाज के सर्वोच्च नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

शोक सभा को सम्बोन्धित करते हुये डा० भवानीलाल भारतीय ने स्वामी जी के लोक सेवा के बहुमुखी कार्यों की चर्चा की तथा उन्हें संस्कृति तथा संस्कृत भाषा का प्रबल पोषक बताया। स्वामी आनन्दबोध ने हिन्दी, गोरक्षा, धर्मान्तरण पर रोक जैसे सामाजिक प्रश्नों को राष्ट्रीय परिपेक्ष में हल करने मे जोर दिया। मीनाक्षीपुरम में धर्मान्तरण का प्रश्न हो या पंजाब में हिन्दी का प्रश्न हो, स्वामी जी ने सार्वजनिक सहमति से सभी मत सम्प्रदायों को राष्ट्रीय एकता के साथ जोड़ने का प्रयास किया। सभा को श्रीजयदेव अवस्थी वैद्य ऋषिदेव सोलंकी, वानप्रस्थी मुकन्दराम, डा० आर०पी० माथुर व एच०एन० गौड़ ने भी सम्बोधित किया। पण्डित रामनारायण शास्त्री ने काव्यमयी श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर स्वामी जी को युग पुरुष बताया। सभा का संचालन आर्य समाज सरदारपुरा के मन्त्री व आर्य संस्कृति रक्षा समिति के सचिव सुखदेव गोयल ने किया।

(दैनिक जागरण २४-१०-९४ से)

आर्य रत्न फूलचन्द जी कलकत्ता के निधन पर शोक-सभा

पाणिनि कन्या महाविद्यालय के 'भारती-भवन' में आज १ अक्तूबर को सायं ४ बजे एक शोक-सभा आयोजित हुई, जिसमें कलकत्ते के विशिष्ट उद्योगपति, आर्य रत्न श्रेष्ठिवर्य श्री फूलचन्द जी आर्य के निधन पर गहन शोक प्रकट किया गया। आचार्या डा० प्रज्ञादेवी जी ने भरे हृदय से श्री भाई जी का परिचय देते हुये कहा कि भाई फूलचन्द जी का अभाव हमें सदैव ही खटकता रहेगा। वे एक उच्चकोटि के चिन्तक ही नहीं थे अपितु उन चिन्तनों को आत्मसात् एवं समाहित भी किया था उन्होंने यह उनके जीवन की विशेषता थी।

आत्मा तो अजर और अमर है यह सोच कर सभी पारिवारिक जनों को 'तत्र को मोहः कः शोकः' का पाठ करते हुये अपने आपको शान्त करना ही होगा। वे अक्षय आनन्द को प्राप्त कर सकें बस! हमें तो यही प्रार्थना करनी है।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

संवाददात्री—
नन्दिता शास्त्री
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
वाराणसी-१०

भूल सुधार

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्रिका के १६-१०-९४ के अंक के पृष्ठ ६ पर अखिल भारतीय सेवाश्रम संघ के अधिकारियों की यात्रा का विवरण के लेख मे छपाई में कुछ अशुद्धि रह गई हैं, पाठकों से निवेदन है कि संशोधन करने की कृपा करें।

१—श्रीमती कमला जी सूद से रु० २५०००) (पच्चीस हजार) दान में मिले हैं, जो गलती से रु० २५००) ही छपा है।

२—चोहला आश्रम की अन्तरंग सभा को ५०,०००) रुपये [पचास हजार रुपये) का डिमाण्ड ड्राफ्ट दिया गया, गलती से रु० ५०००) ही छपा है। इन अशुद्धियों के लिये क्षमा प्रार्थी है

—ईश्वर दास उपमन्त्री
अखिल भारतीय
दयानन्द सेवाश्रम संघ

आर्यसमाज को सशक्त बनाना गुरूतर दायित्व

(पृष्ठ १ का शेष)

सकें तथा भौतिकता के युग में भी विश्व को आध्यात्मिकता की रोशनी दिखा सकें। परन्तु श्री वन्देमातरम को आर्य समाज के गुरुकुलों और शिक्षण संस्थाओं से भविष्य में इस कमी को पूरा किये जाने की आशा है।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन को वास्तविकता में अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देने के प्रश्न पर श्री वन्देमातरम् का यह विचार है कि आर्य समाज की समस्त प्रान्तीय तथा विदेशी इकाईयों में समन्वय और नियन्त्रण की कोई नई प्रक्रिया प्रारम्भ की जानी चाहिए। उन्होंने बताया कि आर्य समाज के हर स्तर के कार्यकर्ताओं को समन्वित तरीके से प्रशिक्षित करने की योजना विचाराधीन है।

जातिवाद विषय पर भी पं० रामचन्द्रराव के विचार पूर्णतः स्पष्ट हैं उनके अनुसार आज जिस प्रकार हिन्दू समाज जातियों और उप-जातियों में बटा हुआ दिखाई दे रहा है यह स्वामी दयानन्द की चेतावनी को न मानने का ही परिणाम है। उनका कहना है कि आर्य समाज भी कहीं हिन्दू समाज का एक खण्ड या जाति बनकर न रह जाये इसके लिये हमें ठोस कार्यों द्वारा प्रमाण पूर्वक यह साबित करना होगा कि आर्य समाज एक राष्ट्र और एक संस्कृति को स्थापित करने के लिये वचनबद्ध है। अन्तर्जातीय सम्बन्धों को बढ़ाने में हमें प्रयत्नशील रहना होगा। उनके अनुसार मेल मिलाप और जोड़ने का यही कार्य आर्य समाज को "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के मार्ग पर आगे बढ़ा सकता है।

श्री वन्देमातरम् वर्णाश्रम व्यवस्था की अच्छाइयों को सारे विश्व के समक्ष रखना चाहते हैं उनके अनुसार विश्व में कई सामाजिक व्यवस्थायें पैदा हुई और थोड़े समय में ही उनका अन्त हो गया। क्योंकि सामाजिक एकता स्थापित करने का गुण किसी भी व्यवस्था में नहीं था। जब कि वैदिक मान्यताओं पर आधारित वर्णाश्रम व्यवस्था आज भी इतनी प्रभावशाली है परन्तु कुछ स्वार्थी ताकतों द्वारा इसमें विकृति पैदा करने का प्रयत्न किया जा रहा है। श्री वन्देमातरम् का कहना है कि गुण कर्म और स्वभाव के आधार पर चलने वाली इस व्यवस्था के अतिरिक्त किसी भी प्रकार की अन्य व्यवस्था समाज को एक नहीं बनाये रख सकती।

वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी होने के नाते श्री वन्देमातरम् महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताये राजनैतिक चिन्तन पर भी अपने स्पष्ट विचार व्यक्त करते हैं। उनके अनुसार अंग्रेजों की फूट डाल कर शासन करने की नीति स्वामी दयानन्द के समय पर भी चल रही थी जिसके विरुद्ध स्वामी जी ने आवाज उठाई। आज उसी तर्ज पर मतभाव और जातियों में बटवारे की नीति हमारे अपने राजनीतिज्ञ अपना रहे हैं जिनके कारण देश निरन्तर कमजोर हो रहा है। इन नीतियों का समर्थन अन्तर्राष्ट्रीय ताकतों द्वारा तो किया ही जाता है परन्तु भारतीय संविधान के कुछ अनुच्छेद भी यही कार्य कर रहे हैं। इससे भी बढ़कर वर्तमान आर्थिक उदारीकरण की नीति हमारी संस्कृति को नष्ट भ्रष्ट करने पर तुली है। इन परिस्थितियों में आर्य समाज के कन्धों पर यह प्रमुख गुरुतर दायित्व है कि सामाजिक जागृति के माध्यम से इन षडयन्त्रों के विरुद्ध जनमत तैयार करें। इस सिलसिले में श्री वन्देमातरम् देश में अपने समान विचारों की ताकतों को साथ लेकर इस आंदोलन को प्राथमिकता के आधार पर चलाने की बात करते हैं।

—सम्पादक

सभा-मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री को ५० हजार की राशि स्थिरनिधि के लिए भेंट

श्री खमचन्द चौहान भूतपूर्व प्रधान आर्य समाज शादीपुर खामपुर दिल्ली ८ ने अपने जीवन के ९० वर्ष आनन्दपूर्वक व्यतीत किये हैं। उस प्रभु का धन्यवाद करने हेतु यज्ञ तथा प्रीति भोज का आयोजन दिनांक २३.१०.९४ रविवार को महात्मा धर्मपाल जी प्रधान केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री खमचन्द जी चौहान ने ५० हजार रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री को सभा में स्थिरनिधि के लिये भेंट किये।

दीन-अनाथ विकलांग व दृष्टिहीन मेधावी छात्र-छात्राओं के निमित्त छात्रवृत्ति योजना

श्री ठाकुरसिंह नेगी ने अपनी धर्मपत्नी स्व० सुशीला नेगी की पुण्य स्मृति में शीघ्र ही एक न्यास 'ठाकुरसिंह नेगी एवं सुशीला नेगी ट्रस्ट' की स्थापना की है। इस ट्रस्ट से मेधावी असहाय बच्चों की सहायता की जायेगी। इस ट्रस्ट में श्री ठाकुरसिंह नेगी ने एक लाख रुपया जमा कर दिया है। इस राशि के ब्याज से दीन अनाथ बेसहारा विकलांग तथा मेधावी विद्यार्थियों को जो कि पढ़ना चाहता हो १० रुपया मासिक छात्रवृत्ति के रूप में सहायता दी जायेगी। आवेदक को देहरादून नगर की शिक्षण संस्थाओं का विद्यार्थी होना चाहिये। आवेदन की अन्तिम तिथि ३० नवम्बर १९९४ तक है।

ठाकुरसिंह नेगी मुख्य-न्यासी
१०८/११ धर्मपुर, देहरादून

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०२४/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (६-११-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी)९३
R,N. 626/57 Licensed to post without prepayment licence No: U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 3,4-11-1994

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रति शोक संवेदनायें

स्त्री आर्य समाज, जवाहर नगर (लालकुर्ती)

स्त्री आर्य समाज, जवाहरनगर (लालकुर्ती) मेरठ की समस्त बहनों की ओर से आर्य जगत के सर्वोच्च नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के देहावसान पर दुःखित हृदय से शोक श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं और ईश्वर से दिवंगत नेता को शान्ति एवं शोक संतप्त परिवार जनों को धैर्य के लिए प्रार्थना करती हूं।

(प्रभावती देवी)

प्रधाना स्त्री आर्य समाज, लालकुर्ती, मेरठ

आर्य गुरुकुल सेवा समिति ऐरवा कटरा (इटावा) उ. प्र.

गुरुकुल के कुलपति श्री स्वामी वेदानन्द जी मेधावी की अध्यक्षता में एक आकस्मिक बैठक सम्पन्न हुई जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के निधन पर शोक व्यक्त किया गया। स्वामी जी में महर्षि दयानन्द की विचार धारा पूर्ण रूपेण ओत-प्रोत थी उन्हें गायों से विशेष प्रेम था गोरक्षण हेतु उन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर महर्षि दयानन्द गो सम्वर्धन केन्द्र की स्थापना की थी।

आचार्य राजदेव शर्मा. प्रधानाचार्य

आर्यसमाज, नया आर्य नगर मेरठ रोड गाजियाबाद

आर्य समाज के अधिकारियों एवं सदस्यों को सार्वदेशिक सभा के प्रधान पू० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के आकस्मिक निधन का दुखद समाचार सुनकर गहरी अन्तर्वेदना हुई। आर्य जगत के सभी आर्य बन्धुओं के मार्ग दर्शक का अनायास ही परलोक गमन करना हमारे लिए वज्राघात है। उन्होंने जीवन भर वैदिक रीति-नीति चलाने के लिए संघर्ष किया था। गोरक्षा हिन्दी सत्याग्रह और राष्ट्रभाषा के लिए अपना प्रबल पक्ष सबल राष्ट्र के सामने रखा था। उन्हें हमारा शत् शत् प्रणाम।

डा० वीरपाल विद्यालंकार, मन्त्री

श्रद्धानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय (रजि०) गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उ० प्र०)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के निधन का समाचार सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ। श्रद्धानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। हम परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं—समस्त आर्यजनों को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति दें और दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

डा० राजकुमार रावत एव समस्त स्टाफ

आर्य समाज बम्बई

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के देहावसान की सूचना से हम सभी आर्यजन अत्यन्त दुःखित हैं।

परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को चिरशान्ति प्रदान करें। आर्य समाज की प्रगति के लिए उन्होंने जो कार्य किया उसके लिए आर्यजगत उनका ऋणी रहेगा।

समस्त आर्य समाजें, बा. स. बम्बई

डी. ए. वी. सीनियर सेकेन्डरी स्कूल करनाल

श्रद्धेय पूज्य आनन्दबोध सरस्वती के आकस्मिक निधन का समाचार जानकर हार्दिक शोक हुआ स्वामी जी आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान थे अनेक शिक्षण संस्थाओं के संरक्षक थे, अनेक समाजोत्थान के कार्यों से समाज कृतज्ञ है, जिनसे हम सभी वंचित हो गए हैं।

उनके निधन से समाज व राष्ट्र को अपूर्णीय क्षति हुई है। डी०ए०वी० स्कूल परिवार की ओर से हार्दिक संवेदना स्वीकार करें। ईश्वर दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

महाशय हीरालाल आर्ष गुरुकुल किशनगढ़-घासेड़ा जिला रेवाड़ी (हरियाणा)

अत्यन्त दुःखी हृदय के साथ महाशय हीरालाल आर्ष गुरुकुल किशनगढ़ घासेड़ा शोक प्रस्ताव पास करता है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अध्यक्ष स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के देहावसान से आर्य जगत को एक बहुत बड़ा धक्का लगा है। इनके निधन से जो स्थान खाली हुआ है, उसकी क्षति पूर्ति हो पाना सहज नहीं। उन्होंने बहुत लम्बे समय तक अपने तन-मन-धन से सार्वजनिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में आर्य समाज की खूब सेवा की।

दिवंगत आत्मा के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति और सदगति प्रदान करे।

सूरतसिंह, मन्त्री

राजस्थान

परम आदरणीय श्री स्वामी आनन्दबोध जी के देहावसान के समाचार से हम सबको हार्दिक दुःख हुआ। प्रभु उनकी आत्मा को सदगति प्रदान करें तथा इस अविस्मरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति हम सब आर्यों को दे साथ ही इस वक्त सभी आर्य आपसी मतभेदों को भुलाकर सभा के हित में सोचने का संकल्प लेकर नये प्रधान [illegible] करें।

हनुमान प्रसाद चौधरी, उदयपुर

—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के निधन का समाचार दूरदर्शन पर मिलते ही अजमेर के लोग विशेषकर आर्य समाज से जुड़े लोग शोकाकुल हो गए।

तत्काल प्रात. १०.३० पर समस्त आर्य समाज, आर्य संस्थाओं की वैदिक विद्या मन्दिर स्वामी दयानन्द मार्ग के प्रागण में शोक सभा हुई, जिसमें श्री छोटूसिंह आर्य उपप्रधान सार्वदेशिक सभा व अन्य लोगों ने स्वामीजी के निधन पर प्रकाश डाला तथा २ मिनट तक मौन रखा गया। शोक सभा में अनेकों विशिष्ट व्यक्तियों सहित वैदिक विद्या मन्दिर की ४००० छात्राओं ने भी भाग लिया। इसके बाद सभी शिक्षण संस्थाओं का अन्त्येष्टि तक अवकाश घोषित किया गया।

छोटूसिंह आर्य, प्रधान

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिकआर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ४४] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ कार्तिक शु० ११ सं० २०५१ १३ नवम्बर १९९४

वेद ज्ञान परमाणु बम के समान है

आर्यों को पाश्चात्य संस्कृति का मुकाबला करने का आह्वान

ऋषि निर्वाणोत्सव पर श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव का सम्बोधन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान मे राजधानी का रामलीला मैदान आज ऋषि निर्वाणोत्सव के आयोजन से सुसज्जित रहा। समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र-राव ने कहा कि राष्ट्र की एकता, अखण्डता और वैदिक सिद्धान्तो को आज चारो ओर से मिल रही चुनौतियों का सामना केवल आर्य समाज ही कर सकता है। उन्होने कहा कि एक अन्तर्राष्ट्रीय सशक्त सगठन होने के नाते आर्य समाज वैदिक धर्म के बचाव मे ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय मुस्लिम सगठनो की कूटनीतियो का मुह तोड जवाब भी दे सकता है। आज राष्ट्र को सच्चे और निष्ठावान आर्यों की आवश्यकता है।

श्री वन्देमातरम् ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वैदिक धर्म की सर्वोच्चता को साबित करते हुये कहा कि यह जरूरत नहीं है कि बडी दिखने वाली चीज सदैव ताकतवर हो। परमाणु के अत्यन्त सूक्ष्म होते हुये भी उसकी ताकत से परमाणु बम बनाया जा सकता है। जिसमे विध्वस के साथ-साथ निर्माण शक्ति भी उसी स्तर की है। उसी प्रकार वेदज्ञान भी सूक्ष्म परमाणु के समान हैं जिसके परमाणु बम से सारे विश्व को वैदिक ध्वज के नीचे लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यह सारा कार्य केवल महर्षि दयानन्द द्वारा बताये मार्ग पर चलने से ही सम्भव है।

श्री रामचन्द्रराव ने भारत मे आर्थिक उदारीकरण की नीतियो के परिणामो से आर्य जनता को सतर्क रहने की प्रेरणा देते हुये कहा कि सरकार की इस नई नीति के कारण भारतीय संस्कृति पर व्यापक प्रहार को नजरन्दाज नहीं किया जाना चाहिये। श्री वन्देमातरम् ने आर्यों को "उत्तिष्ठत जागृत" का आह्वान करते हुये कहा कि यदि पाश्चात्य आंधी को आज न रोका गया तो भारत की भावी पीढियों को गर्त मे धकेलने का पाप उनके सिर पर आयेगा।

दक्षिण भारत के चार राज्यो का संयुक्त त्रि-दिवसीय सम्मेलन

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नवीन प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव दक्षिण भारत के चार राज्यों तमिलनाडू कर्नाटक हैदराबाद तथा महाराष्ट्र के आर्य समाज सगठनों का पुनर्गठन तथा समन्वित तरीके से वैदिक प्रचार कार्यों को गति प्रदान करने के उद्देश्य से एक सयुक्त त्रि-दिवमीय सम्मेलन मे भाग लेने हेतु गए हैं वहा से हैदराबाद होते हुए वे २५ नवम्बर को दिल्ली पहुचगे।

१२ से १४ नवम्बर तक चलने वाले इस सम्मेलन मे आत्म निरीक्षण करते हुए चारों राज्यो की आर्य जनता वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की भावी योजनाओं पर विचार करेगी।

समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान एव सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह जी ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण मे उपस्थित जन-समूह को सम्बोधित करते हुये कहा कि आज देश के वर्तमान हालातो को देखते हुए समस्त हिन्दू जनता को महर्षि दयानन्द द्वारा बताये हुये सिद्धान्तो के अनुरूप एक जुट होने की आवश्यकता है आपसी टकराव हमे अपने सन्मार्ग से दूर हटाता जा रहा है। समारोह का प्रारम्भ प्रात यज्ञ एव ध्वजारोहण से किया गया।

इस अवसर पर प्रमुख राष्ट्रवादी नेता प्रो० बलराज मधोक, केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, श्रीरामचन्द्र विकल तथा सभामन्त्री श्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री सहित अनेक नेताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। समारोह का कुशल सचालन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

संस्कृत, सरकार और उच्चतम न्यायालय

इसे देश का दुर्भाग्य नहीं तो और क्या कहेंगे कि यह बताने के लिए कि संस्कृत पढ़ना भारत की विरासत के लिए जरूरी है, उच्चतम न्यायालय को हरकत मे आना पड़ता है। यह समझाने के लिए कि संस्कृत इस देश की तमाम भाषाओं की जननी है और उसके बिना कोई भी भाषा वाक्य रचना अथवा शब्द भंडार की दृष्टि से समृद्ध नहीं हो सकती, उच्चतम न्यायालय को एक फैसला सुनना पड़ता है। लोगों के दिमाग में यह दर्ज करवाने के लिए कि अगर इस देश के दर्शन, साहित्य और तमाम पुराने ज्ञान-विज्ञान को सुरक्षित रखना है, तो उसके लिए संस्कृत भाषा पढ़ो जानी निहायत जरूरी है। उच्चतम न्यायालय को एक फैसला सुनाना पड़ता है। जिस बात को सारी दुनिया न केवल जानती है, बल्कि मान चुकी है, उस बात को इस देश के लोगो को समझाने के लिए देश की सबसे बड़ी अदालत को एक मुकदमे के फैसले के दौरान ये तमाम तर्क दोहराने पड़ते हैं। पर शायद हम थोड़ी गलती कर रहे है, क्योंकि इस देश के लोगो को भी यह सब भली भांति मालूम ही नही हैं, बल्कि वे मानते भी हैं कि संस्कृत इस देश की सबसे पुरानी भाषा है, देश का तमाम प्राचीन ज्ञान इसी की मार्फत हजारो सालों तक व्यक्त होता रहा है, देश का तमाम प्राचीन विज्ञान और शोध इसमें सुरक्षित है और अगर हमें भारत के व्यक्तित्व को बचाये और बनाये रखना है, तो हमें संस्कृत पढ़नी ही चाहिए। परन्तु इस देश का दुर्भाग्य देखिए कि लोगों की प्रतिनिधि कही जाने वाली सरकार को ये सब बातें नहीं मालूम और उसने अपनी किसी धर्मनिरपेक्ष झोंक में आकर एक मूर्खता भरा फैसला कर लिया और संस्कृत को स्कूली पाठ्यक्रम में एक ऐसा घटिया दर्जा दे दिया कि कोई छात्र चाहते हुए भी संस्कृत पढ़ने की जुर्रत न कर सके। और, जब इसके खिलाफ उच्चतम न्यायालय में मुकदमा खड़ा गया, तो जानते हैं आप कि सरकार की दलीलें क्या थी? यह कि संस्कृत पढ़ाने से देश की धर्मनिरपेक्ष छवि को नुकसान होगा, कि अगर संस्कृत पढ़ायी जायेगी, तो अरबी-फारसी पढ़ाना भी अनिवार्य हो जायेगा, कि अगर संस्कृत को पढ़ाने की मांग स्वीकार कर ली गयी, तो फ्रेंच, जर्मन और स्पेनी जैसी भाषाओं को पढ़ने की मांग भी उठ खड़ी होगी और सरकार इतनी सारी भाषाओं को पढ़ाने की व्यवस्था भला कैसे कर पायेगी?

यानि सरकार ऐसा मान कर चलती है कि अगर इस देश में वेद संस्कृत में लिखे गये तो पुराण फारसी में और रामायण-महाभारत अरबी में लिखे गये। अगर बौद्ध-जैन दर्शन पाली प्राकृत के अलावा संस्कृत में व्यक्त हुए, तो वेदान्त और सांख्य फ्रेंच और जर्मन में लिखे गये। यदि कालिदास ने अपना साहित्य संस्कृत में लिखा, तो हमारे जातक ग्रन्थ और समयसार ग्रीक और लैटिन में लिखे गये। यानी सरकार को पता ही नहीं कि इस देश को संस्कृत पढ़ाया जाना अनिवार्य है और जिन कारणो से उसे पढ़ाया जाना अनिवार्य है, उन कारणो से ग्रीक या लैटिन, अरबी या फारसी पढ़ाया जाना कतई जरूरी नहीं है। हां, इन भाषाओं का आदर इससे कम नहीं होगा। परन्तु इन भाषाओं की जरूरत इस देश में उतनी ही है, जितनी किसी विदेशी क्लासिकल भाषा की हो सकती है। जो सरकार इस देश की मिट्टी में से पनपी और पली-पुसी संस्कृत को पढ़ाये जाने से छात्रों को इसलिए रोकती है कि यदि संस्कृत पढ़ायी गयी तो अरबी और फारसी भी पढ़ाई जायेगी और संस्कृत पढ़ाये जाने से धर्मनिरपेक्षता को नुकसान पहुंचने के अंदेशा में डूब जाती है तो हमारा निवेदन है कि साम्प्रदायिकता की पोषक इससे बड़ी कोई दूसरी सरकार हो नहीं सकती। संस्कृत पढ़ाये जाने से साम्प्रदायिकता के उभरने का खतरा वही चालाक दिमाग व्यक्त कर सकता है, जो अंग्रेजी को यह कहकर हम हिन्दुस्तानियो पर थोपे रखने की साजिश से लगा रहता है कि अगर हिन्दी लादी गयी तो देश के टुकड़े हो जायेंगे। संस्कृत पढ़ाये जाने के बारे मे अपना फैसला देकर उच्चतम न्यायालय ने इस देश के चेहरे और चरित्र की रक्षा के प्रयास में एक ऐसा अभिनन्दनीय कार्य किया है, जिसे आने वाली पीढ़ियां कभी नहीं भूलेगी।

(नवभारत ८ अक्तूबर, १९९४ से साभार),

अजमेर में शास्त्रार्थ युग की याद

'अयं त इध्म आत्मा' मन्त्र से प्रथम समिदाधान पर शास्त्रार्थ

१४ तथा १५ नवम्बर

संस्कारविधि: में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस मन्त्र से प्रथम समिदाधान तथा पंच घृताहुतियो का विधान किया।

आज से अनेक वर्षों पूर्व स्वर्गीय पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ने इस पर शंका प्रकट की थी और लेख लिखे थे। तब परोपकारिणी सभा ने एक उपसमिति गठित की थी। उपसमिति के सदस्यों—स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, पं० जयदेव विद्यालंकार चतुर्वेद भाष्यकार तथा प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने संस्कार विधि के हस्तलेखों को देखकर इस मन्त्र से समिदाधान तथा पंचघृताहुति के पक्ष मे निर्णय दिया था।

उपसमिति की पूरी रिपोर्ट तथा संस्कार विधिके हस्तलेख की फोटो कापी भी 'परोपकारी' के जून तथा जुलाई १९९४ के अंक मे प्रकाशित हो गई है। पुनरपि, प० इन्द्रदेव पीलीभीत, प० विद्यादेव त्रिवेदी तथा प० रघुराज शर्मा जैसे तीन चार व्यक्ति नही मान रहे हैं। अत: इनका शास्त्रार्थ इस विषय पर १४ तथा १५ नवम्बर को अजमेर मे ऋषि उद्यान मेले में हो रहा है। इससे शास्त्रार्थ करने वाले पं० उत्तमन्त कुमार शास्त्री हैं और उनके सहयोगी पंडित डा० भवानी लाल भारतीय तथा पण्डित राजवीर शास्त्री सम्पादक 'दयानन्द सन्देश' हैं।

शास्त्रार्थ का सभापतित्व पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज करेंगे। यह शास्त्रार्थ पक्ष-विपक्ष की इच्छा और अनुमति से हो रहा है सार्वदेशिक सभा या परोपकारिणी सभा का इसमे कोई नेतृत्व नहीं है। ऐसी सूचना शास्त्रार्थ के संयोजक पं० धर्मवीर विद्यालंकार, आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) ने दी है।

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहको से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वत: ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अत: अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये मात्र एक१५० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

आर्य कौन हैं ?

योगीराज अरविन्द

> आज वह सभी कुछ हमें उपलब्ध है जो विज्ञान और प्रविधि दे सकते। जीवन की ललित कलाएं, युद्ध और मौत के भयावने उपकरण, युमक्कीय मेघ और रेडियो-आइसोटोप और प्रलयवाही प्रक्षेपास्त्र, प्रतिजैविकी और हृदय प्रति रोपण और नापम बम। फिर भी अपनी इस प्रचण्ड प्राविधिक शक्ति सामर्थ्य की इस मध्याह्न घड़ी में हमें काली रात की अंधेरी का पल-पल भय बना रहता है। जहां क्षमता॰ पौरुष और गरिमा-गौरव की अटूट हिलोरें उठनी थीं वहीं एक निरर्थकता की निरन्तर कचोट है या है रोएं-रोएं में फैली हुई चुनचुनी कि जो भाषा है वह सभी तो बेतुका है, असंगत! बढ़ता हुआ विज्ञान, बढ़ती हुई प्राविधिकी, बढ़ती हुई सिक्कों और नोटों की जुगाड़-व्यवस्था, बढ़ते हुए सामाजिक तनाव और अधिकाधिक बढ़ते हुए पराये-बिरानेपन के भाव आखरश किस ओर कहां लिये जा रहे हैं यह सब हमें ? —अरविन्द

भारतवर्ष का पुरातन नाम आर्यावर्त रहा है। यहां सम्बोधन करते समय आर्य और आर्य पुत्र आदि शब्दों का व्यवहार होता रहा है वेद ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा लगाया है। श्री अरविन्द ने पांडिचेरी से निकलने वाले अपने मासिक-पत्र का नाम आर्य रखा था। आधुनिक यूरोपीय इतिहास वेत्ताओं ने इस नाम को एक विशेष जाति पर चिपका दिया और उसे सत्य मानकर बहुत सारे सिद्धान्त बना डाले। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर भारत की प्रजा में भी आदिम निवासी द्रविड़ और बाहर से आये हुये आर्यों के भेद पैदा किये गये जिसके कारण आज भी बहुत सारी कठिनाइयां पैदा होती हैं। इसी सिद्धान्त की आड़ लेकर हिटलर ने अपने आपको और जर्मनों को आर्य अथवा दुनिया की सर्वश्रेष्ठ जाति माना था।

श्री अरविन्द कहते हैं कि वेदों के अनुसार आर्य लोग वे हैं जो एक विशेष प्रकार की संस्कृति, आत्म-संयम, आन्तरिक और बाह्य आचार, आदर्श तथा अभीप्सा को अपनाते हैं। प्राचीनतम मानव की ऊंची से ऊंची अभीप्साएं उसकी अभिजात धार्मिकता, उसकी आदर्शवादी आकांक्षाएं, उसके उच्च विचार, सब कुछ इस एक छोटे से शब्द में निहित हैं। उसके बाद के काल में "आर्य" शब्द एक विशेष आदर्श का प्रतीक हो गया जो आत्मसंयम, सरलता, शिष्टाचार, भद्रता स्पष्टवादिता, साहस' कोमलता, पवित्रता दया, सहानुभूति, कमजोरों की रक्षा, उदारता, कर्त्तव्य-पालन, ज्ञान प्राप्ति के लिये उत्सुकता, विद्वानों और ज्ञानियों का मान आदि ब्राह्मणों ऋषियों के आदर्शों को सर्वोपरि स्थान देता है। जो भी इस आदर्श से खिसक जाता है, जो भी अभद्रता, नीचता, क्रूरता, छल-कपट असत्य आदि की ओर झुकता वही "अनार्य" कहाता था। सारे संसार में "आर्य शब्द" से बढ़कर कुलीन और अभिजात शब्द कोई नहीं है।

आधुनिक भाषा-शास्त्रियों ने जब शब्दों को तोड़-मरोड़ कर उनमें से इतिहास और पुरातत्व की बातें निकालनी शुरू कीं तो उन्होंने यह खोज कर डाली कि आर्य वह जाति थी जिसने अपने शिकारी पेशे को छोड़कर हल चलाना और खेती करना शुरू किया। यह है तो एकदम कपोल कल्पना, पर श्री अरविन्द इसे भी स्वीकार कर लेते हैं। वे कहते हैं कि आर्य यदि खेती करने वाले को ही कहते हैं तो आर्य वह है जो भगवान की दी हुई आन्तरिक बाह्य भूमि को बंजर नहीं छोड़ता। वह अथक परिश्रम करके दोनों को फलता-फूलता रखता है और उन्हें अधिक से अधिक फलप्रद बनाता है। आर्य शब्द का एक दूसरा अर्थ योद्धा भी किया गया है। श्री अरविन्द इसे भी स्वीकार कर लेते हैं। उनके अनुसार आर्य वह योद्धा है जो परम ज्ञान को पाने के लिए लड़ता है। उस ज्ञान के अन्दर वह विवेक छिपा है जो ज्योतिर्मय, महत् और भागवत तत्वों को जानता है, जो अत्यन्त अशिव और असुन्दर, तिमिरग्रस्त तत्वों में भी भागवत सत्य को देख और पहचान सकता है और उसी को अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है। यह अभिव्यक्ति कोई सरल चीज नहीं है, इसके लिये बहुत संघर्ष करना पड़ता है और आर्य वही योद्धा है जो इस संघर्ष में बड़ी वीरता से भाग लेता है। जो भगवान् की ओर जाने वाली ऊंची चढ़ान पर बिना किसी भय, संकोच, हार से हार माने बिना, सृष्टि की विपुलता से घबराये बिना, ऊंचाइयों से चकराये बिना अपने भगवान् के बल पर आगे बढ़ता ही जाता है वही आर्य है, वही भगवान् का योद्धा है, वही गीता का श्रेष्ठ पुरुष है।

सच्चा आर्य वह है जो अपने अन्दर और बाहर जो कुछ भगवान् के विरुद्ध है, मानव प्रगति में बाधक है उससे लड़े और उस पर विजय प्राप्त करे। आत्मविजय उसका पहला कदम है। वह अपने शरीर और पार्थिव तत्व पर विजय पाता है और साधारण आदमी की तरह साधारण जीवन के तमस और अन्धकारमय परम्परा तथा तामसिक सीमाओं को स्वीकार नहीं करता। वह जीवन और प्राण को और उसकी शक्तियों को वश में रखता है और इच्छाओं तथा लालसाओं का अथवा राजसिक आवेगों का दास होना स्वीकार नहीं करता। वह मन को और उसकी आदतों को वश में करता है। वह अविद्या, पैतृक पक्षपात, व्यावहारिक विचारों, मनपसन्द रायों का दास नहीं होता, वह ढूंढना और चुनना जानता है। वह विशाल बुद्धि और दृढ़ संकल्पवाला होता है। वह हर चीज में सत्य और धर्म को खोजता है, हर जगह ऊंचाई और आजादी चाहता है।

'आर्य' जब आत्म विजय करता है तो आत्म परिपूर्णता की दृष्टि से। वह जिसे जीतता है उसे नष्ट नहीं करता उसे ऊंचा उठाता है। वह जानता है कि शरीर मन और प्राण किसी उच्चतर कार्य के लिए दिये गये हैं, उनकी सीमाओं को लांघ कर, उनकी वासनाओं को त्यागकर ऊंची से ऊंची चोटी पर चढ़ना चाहिये। वह जानता है कि यह ऊंचाई शून्य नहीं है। वह धरती पर भागवत संकल्प, चेतना प्रेम और आनन्द के रूप में प्रकट होती है और जिज्ञासुओं की ओर ग्रहण कर सकने की क्षमता रखने वालों को अपने रंग में रंगती है। वह आर्य उसी उच्च चेतना में सेवक प्रेमी और जिज्ञासु है। वह इसे पाकर अपने काम में प्रेम, आनन्द और ज्ञान उड़ेलता है। एक आर्य कार्यकर्त्ता और योद्धा होना है। वह उच्चतम चेतना तक पहुंचने के प्रयास में अपने मन, प्राण और शरीर को पूरी तरह लगा देता है। वह किसी कठिनाई के आगे नहीं झुकता, किसी प्रकार की थकान को नहीं स्वीकार करता। वह अपने अन्दर और सारी धरती पर भगवान् का राज्य लाने के लिये युद्ध करता है।

आर्य में जब पूर्णता आ जाती है तो वह अर्हत बन जाता है। एक परात्पर चेतना है जो सारी सृष्टि के परे होते हुए भी सारी सृष्टि में व्याप्त है। सृष्टि उसका एक खिलौना है। वह उस चेतना को पाना चाहता है। वह अपने अंह की कैद से निकलकर चराचर जगत् के साथ एकता अनुभव करता है। अपने खेल के लिये निम्नतर चेतना संसार के बन्धनों को स्वीकार करती है। वह अहं को इसीलिये स्वीकार करती है ताकि वह बदलकर भगवान् के कार्य का, भगवान् के खेल का एक स्वतन्त्र केन्द्र बन सके। व्यक्तित्व से परे जाकर खेल के लिये फिर से उसे स्वीकार करना अपने आप में एक बहुत बड़ी आहुति है। सच्चा अर्हत वह है जो निम्न चेतना को ऊपर उठाता है, उच्चतर चेतना को नीचे धरती पर लाता है ताकि उच्चतम चेतना के व्यष्टि समष्टि और परात्पर रूपों को अभिव्यक्त करने में सहायक हो सकें।

महापुरुषों का सम्प्रदायीकरण

डा० भवानीलाल भारतीय

संसार के मनुष्यों को उन्नति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाले महापुरुष किसी देश, वर्ग या जाति की सम्पत्ति नहीं होते और न किसी मनुष्य समूह का उन पर एकाधिकार ही होता है। तथापि मनुष्य का यह स्वभाव होता है कि वह इन महापुरुषों को एक वर्ग या विशिष्ट समूह का ही नेता, मार्गदर्शक अथवा पूज्य मान बैठता है। राम और कृष्ण जैसे लोकोत्तर चरितधारी महापुरुषों पर सम्पूर्ण पृथ्वीवासी गर्व कर सकते हैं। यही कारण है कि भारत में जन्मे इन अवतार कहे जाने वाले दिव्य चरित्र सम्पन्न पुरुषों की जीवन कथा पर आधारित नाटकों का मंचन इण्डोनेशिया जैसे मुस्लिम देश में भी होता है और महाभारत के पात्रों को अपने आदर्श पुरुष मानने में वहां के मुसलमानों को कोई संकोच नहीं होता। महात्मा बुद्ध जैसे बहुजन हिताय तथा बहुजन सुखाय के लक्ष्य के लिये समर्पित महापुरुष को नायक बनाकर एडविन-आर्नाल्ड जैसा कवि 'लाइट आफ एशिया' शीर्षक काव्य की रचना करता है तो श्रीमती एनी बेसेन्ट जैसी महीयसी महिला भगवान् कृष्ण के लोकहित युक्त गीता उपदेश को अंग्रेजी में दि लार्ड्स सांइस शीर्षक से अनुदित करती है।

एशिया में ही जन्मे यीशु मसीह के करुणा, दया और प्रेम के अनुपम सन्देशों से प्रभावित होकर राजा राममोहन राय तथा केशव-चन्द्र जैसे भारतीय नवजागरण के उन्नायकों ने ख्रीस्त मत की नैतिक एवं आचार मूलक शिक्षाओं की प्रशंसा की तथा विवेकानन्द ने ईसा को ईश पुत्र कहा। यों तो सभी मनुष्य ईश्वर के ही पुत्र हैं। हजरत मोहम्मद के एकेश्वरवाद तथा बन्धु भावना की भी सर्वत्र प्रशंसा होती है।

भारत का दर्शन और चिन्तन बिना किसी देश, काल और वर्ग के व्यवधान को स्वीकार किये संसार के सभी महापुरुषों को प्रणम्य, वंदनीय तथा समादरणीय मानता है और उनके आदर्शों की प्रशंसा करता है। इसी तथ्य के वशीभूत होकर महर्षि दयानन्द जैसे मनस्वी पुरुष ने अपने पूना प्रवचनों मे हजारों मील जर्मनी में उत्पन्न धर्म सुधारक मार्टिन लूथर की प्रशंसा की तथा अपने पूर्ववर्ती राजा राम मोहन राय के सुधारों का प्रशस्ति पाठ किया। किन्तु आज की कलुषित राजनीति ने ऐसे महनीय तथा उदात्त चरित्र युक्त महापुरुषों का भी सम्प्रदायी करण कर दिया है। महापुरुषों को किसी जाति या वर्ग के कटघरे में बांधने तथा उस वर्ग विशेष के लिये ही उन्हें परमाराध्य मानने की दुष्प्रवृत्ति प्रायः उन लोगों में पाई जाती है जो स्वयं को किसी जाति या सम्प्रदाय की संकीर्ण कारा में बांध लेते हैं और अपने से भिन्न अन्य जाति या वर्ग के महत्त्व को नकारते हैं। यह मनोवृत्ति अतीत मे भी रही है और आज तो अपने भयकर-तम रूप में दृष्टिगोचर होती है। इसी के वशीभूत होकर महात्मा गांधी जैसे लोकपूज्य महापुरुष की मृत्यु पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते समय पाकिस्तान के संस्थापक मि० जिन्ना ने उन्हें महान् हिन्दू नेता कहा। ऐसा कहते समय वे स्वय यह भूल गये कि वे भी तो सम्पूर्ण भारत के समग्र मुसलमानों के एकमात्र तथा सर्वमान्य नेता तो कभी रहे ही नहीं थे। ऐसी संकुचित दृष्टि रखने वाला व्यक्ति ही महात्मा जी को हिन्दू नेता कहता है।

महापुरुषों का सम्प्रदायीकरण आज की भ्रष्ट और संकुचित दलगत राजनीति का विषम परिणाम है। डा० अम्बेडकर के व्यक्तित्व और विचारों से पढ़ेलिखे भारतीय परिचित हैं। वे उच्च कोटि के विधिवेत्ता, संविधान मर्मज्ञ तथा हिन्दुओं की दलित और शोषित जातियों के हित के लिये संघर्ष करने वाले एक जुझारू नेता थे। यह दूसरी बात है कि स्वयं महाराष्ट्र की एक निम्न समझी जाने वाली महार कौम में जन्म लेने तथा बचपन में ही अस्पृश्यता के घृणित अभिशाप के कुछ कटु फलों को चखने के साथ साथ उन्हें जन्मगत ऊंच-नीच को मानने वाली हिन्दू जाति के 'तथाकथित उच्च वर्ग से अपमान सहन करना पड़ा। इसकी प्रबल प्रतिक्रिया उनके प्रबल बौद्धिक मन पर हुई जो आगे चलकर उन्हें स्वधर्म का परित्याग करने का भी कारण बनी। इसी कारण अम्बेडकर ने हिन्दू समाज के इतिहास में शूद्र और दलित वर्ग की स्थिति का ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यांकन किया और अनेक निष्कर्ष निकाले। आज बहुजन समाज पार्टी के कुछ वड बोले नेताओं ने अम्बेडकर के विषय में अनेक अतिशयोक्ति पूर्ण विचार प्रचलित किये हैं। किन्तु यह एक सर्वविदित तथ्य है कि अम्बेडकर की राजनीति हिन्दुओं की दलित जातियों को उनके राजनैतिक एवं सामाजिक अधिकार दिलाने तक ही सीमित रही थी। एक बार तो उन्होंने अछूतों को हिन्दुओं से पृथक् राजनैतिक घटक मानने तथा विधान परिषदों में उनके लिये सवर्णों से पृथक् स्थानों को आरक्षित कराने के लिये भी अंग्रेज सरकार से आग्रह किया था। भला हो महात्मा गांधी का जिन्होंने आमरण अनशन कर अछूतों को वृहत्तर हिन्दू समाज से पृथक् करने के इस षड्यन्त्र को सफल नहीं होने दिया और पूना पैक्ट के द्वारा अम्बेडकर को यह मानना पड़ा कि अछूतों के राजनैतिक अधिकार हिन्दुओं से भिन्न नहीं हो सकते।

इतिहास के इन सभी तथ्यों की अवगणना कर आज मायावती जैसी गैर जिम्मेदार महिला महात्मा गांधी को शैतान की औलाद कहती है और डा० अम्बेडकर को मसीहा मानती है। भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में डा० अम्बेडकर की भागीदारी कितनी और किस प्रकार की थी, इसे स्पष्ट करने का साहस आज के अम्बेडकर पन्थियों में भी नहीं है। अम्बेडकर एक एकेडेमिशियन तो थे किन्तु गांधी नेहरू और पटेल की भांति अपना सर्वस्व खोकर देश हित के लिये स्वय को न्योछावर करने का भाव उनमें कितनी मात्रा में था, यह अन्वेषणीय और विचारणीय है। उन्होंने इतिहास राजनीति धर्म और समाज पर बहुत कुछ सोचा, पढ़ा और लिखा भी किन्तु विदेशी सत्ता को देश से बाहर निकालने मे उनकी कोई स्पष्ट भूमिका दिखाई नहीं देती। यह तो पं० नेहरू की गुण ग्राहकता ही थी कि उन्होंने अपने मन्त्रिमण्डल मे डा० अम्बेडकर की योग्यता और प्रशासनिक क्षमता को देखकर उन्हें सम्मिलित किया और उनके लिये उपयुक्त न्याय और विधि विभाग का कार्य उन्हें सौंपा।

(क्रमशः)

चण्ड-ज्योति के अन्तिम वचन:—

"प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो"

धर्म जिज्ञासमुनि

प्रसिद्ध है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् १८८३ ई० के कार्तिक मास की अमावस्या (दीपावली के शुभ-पर्व दिन की) सांध्य वेला में, अपने प्राणों का स्वेच्छा से उत्सर्ग करने के पूर्व, निम्नलिखित वाक्य बोला था। प्रकाण्ड विद्वान्, विज्ञान का प्राध्यापक, परन्तु परम नास्तिक, एक तरुण गुरुदत्त विद्यार्थी, जो उस प्रभात वेला में वहां उपस्थित था, ने महर्षि के देदीप्यमान मुख भाल पर दिव्य ज्योति का अनुभव किया, तो दृढ़ आस्थावान्, श्रद्धालु आस्तिक बन गया।

संसार का प्रत्येक प्राणी, शैशव से मृत्यु पर्यन्त, निरन्तर अपने लिए सुख समृद्धि की कामना की पूर्ति में प्रयत्न-शील है। अपनी इस कामनाओं की पूर्ति हेतु परम पिता परमात्मा के सहाय एवं कृपा की कामना करता है।

शैशव में सुन्दर खिलौने, चमकीले रंग-बिरंगे वस्त्र, स्वादिष्ट भोजन के लिए अपने माता-पिता से मचलता है। युवावस्था में नये-नये महंगे, निरर्थक शौकों की पूर्ति का आग्रह करता है। फिर स्वावलम्बी होने के लिए नौकरी पाने की, पा लेने पर निरन्तर उन्नत होने की प्रार्थना प्रभु से करता है। 'अथ वा व्यापारी बन व्यापार को स्थिर एवं उन्नत कर प्रचुर धन सम्पत्ति की याचना करता है! कार्य में बाधक विघ्नों के शमन की प्रार्थना करता है। सफलता पर प्रसन्न तथा असफलता पर कठोर श्रम करता हुआ, पुनः सफल होने की प्रार्थना करता है। सफलता मिलने पर, क्रमशः विविध इच्छाओं के उत्पन्न होने पर उनकी पूर्ति की प्रार्थना करता है। अगर सच्चा-आस्तिक है, तो वह प्रभु का धन्यवाद भी करता है।

घर में चहचहाते नव-जात शिशु की प्राप्ति के लिए, उसको सर्वोत्तम शिक्षा दिला पाने के सामर्थ्य के लिए, उसके विवाह फिर उसकी सन्तान प्राप्ति के लिए, अपने पारिवारिक सुख-सम्पदा, ऐश्वर्य, कीर्ति, आदि सभी कुछ पाने की इच्छा करता है। तब वह हर इच्छा की पूर्ति के लिए प्रार्थना करता है, "प्रभु मेरी इच्छा पूर्ण हो।" यज्ञानुष्ठान के बाद, पुरोहित जब आशीर्वचन कहता है "सफलाः सन्तु यजमानस्य कामाः" (यजमान चक्रवर्ती राज्य प्राप्त करे), तब वह अपार आनन्द अनुभव करता है।

ऐसा कभी नहीं सुना कि किसी ने कहा हो—"प्रभु, तेरी इच्छा पूर्ण हो।" परन्तु एकमात्र दयानन्द ही ऐसा महर्षि हुआ है, जिसने कहा—"प्रभु, तेरी इच्छा पूर्ण हो।"

प्रश्न स्वाभाविक है देव दयानन्द के प्रभु ने अपनी किस इच्छा को पूर्ण किया है।

दन्त कथाओं में सुनते हैं कि देवताओं द्वारा मनुष्यों की इच्छाएं पूर्ण की जाती हैं। महर्षि दयानन्द, लोक-व्यवहार से सर्वथा विपरीत, प्रभु की इच्छा पूर्ण होने की बात कर रहे हैं। प्रभु की वह कौन सी इच्छा थी, यह गम्भीरता से विचारणीय है।

सर्वशक्तिमान्, परमैश्वर्य शाली, सर्वज्ञ, प्रभु जगत् के समस्त प्राणियों को अनन्त सुख-सम्पदा अहर्निश प्रदान कर रहे हैं। प्राणीमात्र की इच्छाओं को पूर्ण कर रहे हैं। उस सकल-सुख दाता प्रभु को महर्षि कह रहे हैं—"प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो।" महत् गम्भीर आश्चर्य है!

महर्षि दयानन्द की, निर्वाण से पूर्व की अवस्था परिस्थितियों का स्मरण करता हूं। आप विगत दो मासों से बीमार हैं। शय्या पर शान्त गम्भीर, धीर मुद्रा में लेटे हैं। चक्रवर्ती अंग्रेजी राज्य के सर्वोत्तम निरीक्षण में श्रेष्ठतम चिकित्सक—सिविल सर्जन द्वारा ही निरन्तर उपचार हो रहा है। जैसे औषधि दी जाती रही, सम्पूर्ण शरीर के अन्दर और बाहिर, फोड़े-फुंसियां छा गए जैसे निरभ्र आकाश में, अमावस्या की रात्रि में नक्षत्र-मण्डल दिखाई देने लगता है। तीव्र वेदना से शरीर एकदम शिथिल हो चुका है। उठकर चलना असम्भव है। मुख, नाक, जिह्वा, के अन्दर प्रगट हुए छालों के कारण, अन्न ग्रहण, श्वास की क्रिया अति कष्टदायी है। उदर, हृदय आदि तथा प्रत्येक नस-नाड़ी क्षत विक्षत है, अपार कष्ट की हम कल्पना कर सकते हैं। अर्ध मूर्छित अवस्था हैं। परन्तु पीड़ा की तीव्रता की तनिक सी झलक, महर्षि के चेहरे पर दिखाई नहीं देती। चेतना की अवस्था में, एकमात्र वेद-मन्त्रों का उच्चारण अथवा "ओ३म्" नाम का जाप सुनाई देता है। जोधपुर से आबू आबू से अजमेर का स्वास्थ्यवर्धक जलवायु का प्रभाव, शरीर के रोग पर लक्षित नहीं हुआ है।

महर्षि को अनेकों बार विष दिया गया। यौगिक क्रियाओं से उसका उपचार स्वयं ही कर लिया गया। विष को बाहिर फेंक, शरीर को शुद्ध और नीरोग कर लिया। आज दो मास हो गए। यौगिक क्रियाओं का कुछ लाभ नहीं हुआ। मात्र पिसा कांच ही तो दिया गया है, जिसे अत्यन्त सुगमता से शरीर से बाहिर किया जा सकता है। चिकित्सा भी एक मात्र सिविल सर्जन अंग्रेजी राज के सर्वोत्कृष्ट, भरोसेमन्द चिकित्सक से कराई जा रही है। और आश्चर्य कि रोग बढ़ता जा रहा है। यह तथ्य विशेष चिन्ताजनक है।

(क्रमशः)

हो गये विदा आनन्दबोध

—प्रो० श्यामनन्दन शास्त्री

देते जग को सत् ज्ञान-बोध!
हो गये विदा आनन्दबोध!

जीवन में पा सब सुख साधन।
तुमने न तनिक विश्राम किया।
सोते-जगते हित का चिन्तन।
जग का, निशि-दिन था काम किया,
तन की सुधि तुमने कभी न ली।
माना न कभी सत् का विरोध!
देते जग को सत् ज्ञान-बोध।
हो गये विदा आनन्दबोध!

जब बने अग्रणी नायक तुम।
हो गई सभा तब धन्य-धन्य।
हर ओर प्रगति की दिशा मुखर।
हर ओर उपलब्धियां अनन्त।
गूंजा हर पल जय-जय का स्वर।
वैदिक प्रज्ञा का गहन शोध!
देते जग को सत् ज्ञान बोध!
हो गये विदा आनन्द-बोध!

कैसा था वह उर अति उदार।
अतिशय करुणामय औ निर्मल।
सुनकर कपटी जन का भी क्रन्दन।
हो जाता था जो सहज तरल।
तुमने था लुटाया सतत प्रेम।
तुम रहे सदा निश्छल सुबोध।
जग को देते सत् ज्ञान-बोध!
हो गये विदा आनन्द-बोध!

कैसे हो राष्ट्र सदा रक्षित।
सुरभाषा-राष्ट्रभाषा सेवित।
वैदिक सुधर्म की ज्योति सप्त।
इस जग को कैसे करे दीपित।
हर घर में हो फिर गोपालन।
हो सभी दिशा में अनय रोध।
जग को देते सत् ज्ञान बोध।
हो गये विदा आनन्द-बोध!

इस जग मे सब आते जाते।
तुम भी आये थे, चले गये।
हम सब थे आशान्वित, मन से।
पर असमय ही सब छले गये।
अब तो तेरा बस नाम-काम।
देता है हम सबको प्रबोध!
देते जग को सत् ज्ञान बोध!
हो गये विदा आनन्दबोध!

(साहित्य सदन, पोस्ट घाट,
टेकारी रोड, पटना-८०००१)

दिल्ली देहात में प्रचार

आर्य समाज भलिकपुर दिल्ली देहात में १३-१०-१९९४ को श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी अधिष्ठाता वेद प्रचार आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अध्यक्षता में प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ। पं० चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक तथा श्री धर्मसिंह जी के सुमधुर भजनों का जनता पर अच्छा प्रभाव रहा। श्री० रघुनाथसिंह ने आर्य समाज भवन बनाने का निश्चय किया। मंच की व्यवस्था श्री पं० वीरेन्द्र शास्त्री ने की प्रचार का ग्रामीण भाईयों पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (३)

(पूर्वनाम श्री लाला रामगोपाल शालवाले)

जीवन-परिचय

श्री सोमनाथ एडवोकेट, कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक सभा

उन कर्मचारियों को यह विश्वास न था कि लाला रामगोपाल अपने वचन का पालन करने के लिए वचनबद्ध होंगे। उन्हें यह पता न था कि लाला रामगोपाल लोकसभा के सदस्यमात्र ही न थे अपितु वे आर्य समाज के एक माने हुए नेता भी थे जो उनकी भली भांति सहायता कर सकते थे।

दूसरे दिन लाला रामगोपाल जालन्धर गये। उन दिनों हिन्द समाचार और पंजाब केसरी समाचार पत्रों के संचालक लाला जगत नारायण राज्य सभा के सदस्य थे। वे लाला रामगोपाल को स्टेशन पर मिले और उन्होंने "राष्ट्रपति भवन में मस्जिद बनने की तैयारी" शीर्षक मोटे अक्षरों में अपने हिन्द समाचार में छपा यह समाचार लाला रामगोपाल को दिखाया। लाला जी ने श्री जगत नारायण जी से पूछा कि 'क्या यह समाचार सत्य है? इस पर उन्होंने कहा कि यह समाचार शत प्रतिशत सही है। उन्होंने लाला रामगोपाल को यह भी बताया कि उनके जालन्धर आने से एक दो दिन पूर्व ही दिल्ली से उन्हें यह खबर मिल गई थी।

दिल्ली लौटने पर लाला जी यह बात श्री मोरार जी देसाई (वर्तमान उपप्रधानमन्त्री) और गुलजारीलाल नन्दा के नोटिस में लिखित रूप में लाए जो उन दिनों भारत सरकार के गृहमन्त्री थे। उन्होंने प्रार्थना की गई कि वे मस्जिद निर्माण के कार्य को रोक दें। लाला जी ने अपने पत्र में जो गृहमन्त्री को भेजा गया था यह भी लिखा था कि उससे पूर्व राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने जन्माष्टमी के दिन राष्ट्रपति भवन में एक छोटा चबूतरा बनवाकर लकड़ी की चौकी पर कृष्ण जी की एक छोटी सी मूर्ति स्थापित की थी तब तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री प० जवाहर लाल नेहरू ने श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद जी को यह कहकर कि राष्ट्रपति भवन में कोई मन्दिर या मस्जिद नहीं बनाई जा सकती—वह मूर्ति हटवा दी थी। पण्डित नेहरू ने डा० साहब को यह भी कहा था कि यदि वे पूजा करना ही चाहते हैं तो बिरला मन्दिर में जाकर कर सकते हैं। लाला जी ने इस परम्परा का अनुसरण करने और मस्जिद निर्माण का कार्य रोक देने पर बल दिया। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के उपर्युक्त दोनों सदस्यों को पृथक पत्र देने के बाद जिनमें एक ही विषय अंकित था लाला रामगोपाल कश्मीर चले गये।

दैवयोग से श्री नन्दलाल हिन्दू लड़की परमेश्वरी के अपहरण के सिलसिले में काश्मीर उसी समय गये और उन्होंने लाला जी को कहा कि उनके पत्र का उत्तर दे दिये चुके हैं जो दिल्ली लौटने पर उन्हें प्राप्त हो जायेगा। जब लाला जी दिल्ली पहुंचे तो उन्हें उक्त दोनों महानुभावों के उत्तर प्राप्त हो गये। उन पत्रों में आश्वासन दिया गया था कि राष्ट्रपति भवन में मस्जिद के निर्माण की केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल द्वारा कोई स्वीकृति नहीं दी गई और प्रस्तावित मस्जिद के निर्माण के सम्बन्ध में झूठा प्रचार किया जा रहा है। न तो इस प्रकार का कोई प्रस्ताव केन्द्रीय मन्त्री मण्डल के समक्ष है और न ही राष्ट्रपति भवन में मस्जिद बनने दी जायेगी। भारत के सभी समाचार पत्रों में यह खबर छपी और इस प्रकार मस्जिद निर्माण की यह योजना रद्द हो गई।

कार्य करने का नया ढंग

लाला रामगोपाल एक ऐसी चाबी थे जो हरेक ताले में लग सकती थी। लाला रामगोपाल आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा के मन्त्री रह चुके थे और इस समयतक उसके प्रधान रहे फिर भी आर्यसमाज दीवानहाल के साप्ताहिक सत्संग में मैंने उन्हें सदैव उस स्थान पर बैठे देखा है जहां जन-साधारण तथा आर्य समाज के साधारण सदस्य जो पदाधिकारी नहीं होते हैं, बैठते हैं। एक बार जब कि वे उक्त समाज के प्रधान थे, उन्होंने यह देखा कि हाल की सफाई नहीं हुई तो उन्होंने सेवकों को लज्जित करने और कर्तव्य के प्रति उन्हें सचेत रखने के उद्देश्य से स्वयं झाड़ू उठाकर सफाई करनी शुरू कर दी। इसका परिणाम सुस्पष्ट था। जब कर्मचारियों ने लाला जी को ऐसा करते हुए देखा तो वे दौड़कर उनके पास गये और उनके हाथ से झाड़ू लेकर स्वयं सफाई करने लग गए। उसके बाद सफाई के लिए कहने का उन्हें दूसरा मौका न मिला।

उच्चकोटि के पाखण्ड विरोधी

लाला रामगोपाल ने विभिन्न विषयों पर अनेक ट्रैक्ट लिखें हैं। १९४७ के देश विभाजन से पूर्व सिन्ध के हैदराबाद नगर में, जो अब पाकिस्तान में है, ओ३म् मण्डली नाम का एक संगठन था। दादा लेखराज इस मण्डली के संस्थापक और सर्वेसर्वा थे। विश्व ख्याति के अंग्रेजी साहित्यकार साधु टी० एल० वास्वानी ने इस ओ३म् मण्डली के विरुद्ध जिहाद छेड़ा जिसके कारण उनकी गिरफ्तारी भी हुई। इस मण्डली के विरुद्ध महिलाओं में बड़ा रोष व्याप्त था। जब दादा लेखराज सिंध छोड़कर भारत में आए तो लाला रामगोपाल ने इस मण्डली के कारनामों की देखभाल के लिए अपने स्वयंसेवक लगाए। तब इसका नाम बदलकर ब्रह्माकुमारी रख दिया गया था। ये ब्रह्माकुमारी धनी परिवारों में जाती और महिलाओं में यह प्रचार किया करती थी यदि वे मुक्ति की इच्छुक हो तो वे घरबार छोड़कर अपने गहने पैसे आदि ब्रह्माकुमारी संस्था को सौंप दें और फिर माऊन्ट आबू स्थित आश्रम में रहने लगें। कुछ अवस्थाओं में कुछ नवयुवतियों ने इस प्रचार से प्रभावित होकर कि जीवन निस्सार है, आत्महत्याएं भी करली थी। १९५५ में मलकागंज के गांधी स्क्वेयर की एक नवयुवती की आत्महत्या का मामला प्रकाश में आया था। इसी स्क्वेयर में इन पंक्तियों के लेखक का निवास स्थान है। इसी बस्ती की एक दूसरी लड़की जो ब्रह्माकुमारी सत्संग में आया करती थी, पागल हो गई थी। इन घटनाओं की जानकारी पुलिस को दी गई और उस किराए के मकान से जिसमें ब्रह्माकुमारी रहती थी, निकाल दी गईं। इतने मात्र से ही खतरे का अन्त नहीं हुआ। दिल्ली के विविध भागों में मुख्यतः कमलानगर, शक्तिनगर, मलकागंज आदि में जहां ब्रह्माकुमारियों ने केन्द्र खोले हुए थे आर्य समाज के लोगों ने विरोधी जलूस निकाले। जनता की मांग उठी कि इस संस्था के सम्बन्ध में कुछ साहित्य प्रकाशित और प्रचारित किया जाय। अन्त में लाला रामगोपाल जी ने जो कुछ मसाला उपलब्ध हुआ उसके आधार पर ब्रह्माकुमारी नामक एक ट्रैक्ट लिखकर छपवाया। यह ट्रैक्ट १९६० में लिखा गया था जबकि लाला जी दीवान हाल आर्य समाज के प्रधान थे। उत्तर देहली वेदप्रचार मण्डल ने १० हजार की संख्या में यह ट्रैक्ट छपवाया था। दिल्ली के विविध भागों तथा भारत के विविध स्थानों से शिकायतें आनी शुरु हो गई कि इस संस्था ने बहुत से घरों को विघटित कर दिया है। कुछ स्त्रियां अपने पतियों तथा घरों को छोड़कर माऊंट आबू के आश्रम में रहने लगी और अपना माल-मत्ता आश्रम को सौंप दिया। इस ट्रैक्ट की प्रतियां प्रान्तीय आर्य समाजों को विशेषतः माऊंट आबू के आर्य समाज को भेजी गई। दिल्ली में कई स्थानों पर सार्वजनिक सभाएं करके यह ट्रैक्ट वितरित किया गया और धर्म के नाम पर खुली दूकान (संस्थान) की गतिविधि से लोगों को अवगत करके इससे सचेत रहने के लिए कहा गया। दादा लेखराज की पुत्री चौराखाना स्थित लाला जी के मकान पर गई और ब्रह्माकुमारियों के विरुद्ध प्रचार न करने की लाला जी से प्रार्थना की। लाला जी ने उसकी बात मानने से इन्कार कर दिया। इतना ही नहीं उन्होंने एक शिक्षित आर्य महिला और एक महिला फोटो ग्राफर की ड्यूटी लगाई कि वे माऊंट आबू जाकर और संस्था में घुल मिलकर पूर्ण जानकारी प्राप्त करें। इन दोनों महिलाओं ने काफी मसाला एकत्र किया। एक फोटो में एक ब्रह्माकुमारी दादा लेखराज की गोद में लेटी दिखाई गई थी। इस सब सामग्री तथा फोटोग्राफ के प्राप्त होने पर उस ट्रैक्ट का दूसरा नवीन संस्करण प्रकाशित किया गया। इसमें वह फोटो भी छपा जिसकी ऊपर चर्चा की गई है।

(क्रमशः)

'वेद-तरंग' कन्नड़ मासिक पत्र का लोकार्पण

आर्यसमाज, विश्वेश्वरपुरम्, बेंगलूर की ओर से एक नूतन मासिक-पत्र 'वेद तरंग' का प्रकाशन शुरु हुआ। इसका विमोचन बेंगलूर के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक "विक्रम" के सम्पादक श्रीमान बे०सु० ना० मल्याजी के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। उन्होंने अपने वक्तव्य में सुन्दर मुद्रण, आकर्षक ढंग और सर्वजनोपयोगी सामग्रीयुक्त इस पत्र को निकालने के लिये आर्यसमाज विश्वेश्वर पुरम की सराहा और तन, मन, धन से इस वैदिक पत्र को बढ़ाने के लिये लोगों से अपील की। —सत्यव्रत

स्नातक को स्वर्ण पदक

गुरुकुल प्रभात आश्रम के स्नातक श्री संजयकुमार शास्त्री ने एम०ए० संस्कृत में सर्वाधिक अंक प्राप्त करके मेरठ विश्वविद्यालय से वर्ष ८६ का स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। जिससे निश्चय ही गुरुकुल एवं आर्य समाज का गौरव बढ़ा है। इस शुभावसर पर स्नातक परिषद हार्दिक बधाई देता हुआ उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

दयानन्द मठ चम्बा द्वारा शोक व्यक्त

सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के निधन के समाचार से अत्यधिक दुःख हुआ उनके निधन से उत्पन्न रिक्तता देर तक अनुभव की जायेगी प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा आर्यों को संगठित होकर कार्य करने की शक्ति दे।

—स्वामी सुमेधानन्द

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

सम्पूर्ण वेद भाष्य १० खण्ड ९ जिल्दों में	७८५)
ऋग्वेद प्रथम भाग से पांच भाग तक	३२०)
यजुर्वेद भाग—६	६०)
सामवेद भाग—७	७५)
अथर्ववेद भाग—८	७५)
अथर्ववेद भाग—९+१०	१२५)

सम्पूर्ण वेद भाष्य का सैट मूल्य ६७५) रुपये

अलग-अलग जिल्द लेने पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५, दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

दिल्ली के स्थानीय विक्रेता

(१) म० इन्द्रप्रस्थ आयुर्वेदिक स्टोर, ३७७ चांदनी चौक, (२) मै० गोपाल स्टोर १७१७ गुरुद्वारा रोड, कोटला मुबारकपुर नई दिल्ली (३) मै० गोपाल कृष्ण भजनामल चड्ढा, मेन बाजार पहाड़गंज (४) मै० शर्मा आयुर्वेदिक फार्मेसी गड़ोदिया रोड, आनन्द पर्वत (५) मै० प्रभात केमिकल कम्पनी गली बताशा, खारी बावली (६) मै० ईश्वर दास किशन लाल, मेन बाजार मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसेन शास्त्री, ५३७ लाजपतराय मार्किट (८) दि सुपर बाजार, कनाट सर्कस, (९) श्री वैद्य मदन लाल १-शंकर मार्किट दिल्ली।

शाखा कार्यालय :—

६३, गली राजा केदार नाथ चावड़ी बाजार, दिल्ली

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ

चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

विरोध प्रस्ताव

दिनांक १५-९-९४ को आर्य समाज जनकपुरी सहारनपुर की यह सभा अलकबीर पशु हत्या केन्द्र (बूचड़खाना) को बन्द कराने के लिए एक प्रस्ताव पारित कर विरोध प्रकट करती है कि जिसमें हमारे दुधारू पशुओं गोवंश सहित को बड़ी निर्दयता से काट कर उनके मांस को विदेशों को निर्यात किया जा रहा है जिससे प्रायः गोवंश एवं दुधारू पशु देश से समाप्त होते जा रहे हैं। यह सभा भारत सरकार के राष्ट्रपति व प्रधानमन्त्री से निवेदन करती है कि हमारा देश सदैव से सत्य एवं अहिंसा का पुजारी रहा है एवं सम्पूर्ण विश्व में हमारे देश का सत्य एवं अहिंसा के लिए नाम है। और उसी देश में विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए हमारे पशुओं (दुधारू) पशुओं का वध कर उनके मांस को निर्यात किया जा रहा है।

अतः यह सभा भारत सरकार के राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री से अनुरोध करती है कि अलकबीर पशु हत्या केन्द्र (बूचड़खाना) को तुरन्त बन्द कराकर दैनिक कत्ल हो रहे हमारे दुधारू पशुओं (गोवंश सहित) को बचाया जा सके।

ध्यान योग शिविर

योग धाम आर्य नगर ज्वालापुर में १० अक्तूबर से २६ अक्तूबर तक ध्यान योग शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा ध्यान आदि अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया। २२ अक्तूबर को वार्षिक सम्मेलन हुआ। २३ अक्तूबर को ब्रह्मविद्या के लाभ विषय पर संगोष्ठी हुई।

आर्य समाज निर्माण विहार का वार्षिकोत्सव

१४ नवम्बर से २० नवम्बर

क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उप सभा (पटपड़गंज) क्षेत्र के तत्वावधान में आर्य समाज निर्माण विहार का १४ वां वार्षिकोत्सव १४ से २० नवम्बर १९९४ तक सेन्ट्रल पार्क निर्माण विहार में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर १४ से २० नवम्बर तक प्रातः ७ बजे से ८-३० तक स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में विशाल राष्ट्ररक्षा महायज्ञ का आयोजन किया गया है। प्रतिदिन रात्रि ७-३० से ८-३० तक पण्डित सत्यपाल पथिक द्वारा भजन तथा ८-३० से ९-३० तक स्वामी दीक्षानन्द जी के द्वारा वेदोपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न होगा। रविवार २० नवम्बर को प्रातः १० बजे से १ बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। —रवि बहल मन्त्री

शकरपुर दिल्ली में प्लेग निवारण सप्ताह सम्पन्न

नई दिल्ली १६-१०-९४ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार दिल्ली की सभी आर्य समाजों ने प्लेग निवारण सप्ताह का आयोजन किया गया। इसी के तहत आर्य समाज मन्दिर शकरपुर ने भी विशेष औषधियों से युक्त सामग्री द्वारा यज्ञ करके प्लेग निवारण सप्ताह मनाने का निर्णय लिया। यह विशेष यज्ञ दिनांक १०-१०-९४ से १६-१०-९४ तक कराया गया। आर्य समाज शकरपुर के सभी सदस्यों के अलावा वहां की जनता ने विशेष उत्साह दिखाया। क्षेत्रीय आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री पतराम त्यागी तथा श्री ओमप्रकाश रूहिल ने पूरे सप्ताह तक प्रवचन तथा भजनों के द्वारा यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डाला।

यज्ञ की पूर्ण आहुति १६-१०-९४ को हुई जिनमें आर्यसमाज मन्दिर मार्ग के पुरोहित डा० रामसुमग सिंह ने यज्ञ की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुये औषध विज्ञान के महत्व को समझाते हुये प्राचीन कालीन यज्ञीय चिकित्सा प्रणाली का बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया। इसी अवसर पर एक अन्य चिकित्सक डा० सुबोध भटनागर ने यज्ञ और योग पर विशेष व्याख्यान दिया जिसमें शारीरिक कार्यप्रणाली से लेकर यज्ञ एवं औषध का शरीर पर प्रभाव को विस्तार से समझाया। इस आयोजन को जनता ने बहुत सराहा और आर्यसमाज के प्रधान श्री मिश्रीलाल गुप्ता से आग्रह किया कि ऐसे आयोजन आर्यसमाज द्वारा होते रहने चाहिये।

रामनिवास कश्यप
मन्त्री

आवश्यकता

आवश्यकता है गुरुकुल कांगड़ी के वरिष्ठ माध्यमिक (इन्टरमीडिएट) विभाग के लिए एक प्रधानाचार्य की।

योग्यता—एम०ए० प्रथम श्रेणी बी०एड०+८ वर्ष का शिक्षण तथा प्रशासनिक अनुभव। उ०प्र० शासन द्वारा देय वेतनमान। वैदिक संस्कार युक्त-सात्विक शाकाहारी।

आवेदन की तिथि—५ दिसम्बर १९९४। आवेदन-पत्र के साथ एक स्वयं पता लिखित रजिस्टर्ड टिकट वाला लिफाफा सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के नाम ५०) रु० के बैंक ड्राफ्ट के साथ भेजें।

(महेन्द्र कुमार)
सहायक मुख्याधिष्ठाता

प्रियव्रतदास को महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार

१९९४ के महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार के लिये ओडिशा के वैदिक विद्वान श्री प्रियव्रत जी दास का नाम घोषित किया गया है। दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधिन्यास, आर्यसमाज फुलेरा के द्वारा स्थापित यह पुरस्कार श्री प्रियव्रतजी को ऋषिमेला के अवसर पर अजमेर में दिया जायेगा। दस हजार रुपये, दयानन्द स्वर्ण पदक, उत्तरीय, प्रशस्ति पत्र से उन्हें सम्मानित किया जायेगा। श्री दास उड़ीया भाषा में अड़तीस पुस्तकें वैदिक धर्म पर लिखे हैं और विगत पेंतीस साल से आर्यसमाज के प्रति समर्पित हैं, इस साल बाम्बे सान्ताक्रुज आर्यसमाज से मेघजी भाई पुरस्कार द्वारा आपको सम्मानित किया गया था।

—वीरेन्द्रकर
आर्यसमाज, प्रचारमन्त्री भुवनेश्वर

श्रद्धाञ्जलि सभा का आयोजन

आर्य समाज मयूर विहार फेस-२ नई दिल्ली-९१ के साप्ताहिक सत्संग में आर्य शिरोमणी वीतराग स्वतन्त्रता सेनानी आर्य जगत के नेता जिन्होंने समस्त जीवन समाज की सेवा में व्यतीत किया था और वैदिक मर्यादानुसार सन्यास आश्रम में दीक्षित होकर आर्य जनों के लिए एक ज्योति प्रज्ज्वलित की थी ऐसे श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के निधन पर माननीय स्वामी सच्चिदानन्द जी जगाधरी वाले की अध्यक्षता में विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें भिन्न-भिन्न वक्ताओं ने श्रद्धापूर्वक श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

चन्द्रप्रकाश आर्य
मन्त्री

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज सम्बलपुर के वार्षिक महोत्सव के अवसर पर १९ अक्तूबर को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का नया निर्वाचन श्री इञ्जीनियर प्रियव्रत दास की अध्यक्षता में उल्लासमय वातावरण में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। इसमें निम्न अधिकारी चुने गये:—

१. प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, गुरुकुलआश्रम आमसेना नवापारा
२. उपप्रधान श्री व्रजबन्धु पण्डा, पुरी
३. उपप्रधान श्री वेदव्रत वानप्रस्थी, गंजाम
४ महामन्त्री श्री बिसोकेशन शास्त्री, बरगड़
५. मन्त्री श्री वीरेन्द्र कर, भुवनेश्वर
६. मन्त्री श्री सामदत्त शास्त्री, बलांगीर
७. कोषाध्यक्ष श्री गोपाल दास रावल, सम्बलपुर

इसी अवसर पर नव अन्तरंग सदस्य एवं सार्वदेशिक सभा के लिए ६ प्रतिनिधि भी चुने गये। आगे प्रचार के लिए भी कई नये प्रतिनिधि बनाये गये।

व्रतानन्द सरस्वती

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजा जा रही है। ग्राहक महानुभाव डाक से पुस्तक छुड़ा लें। धन्यवाद,

प्रकाशक
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०२४/९७ सार्वदेशिक साप्ताहिक (११ ११-१९९७) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० यू (सी)९३
R N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 10,11 11-1994

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रति शोक संवेदनायें

हिन्दू रक्षा दल

मैं अपनी ओर से, हिन्दू महासभा और हिन्दू रक्षा दल की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, महान आर्य नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी महाराज के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता हूं। स्वामी जी ने आर्य समाज का नेतृत्व किया एवं हिन्दू समाज के हितों की रक्षा के लिए सदा संघर्ष किया। हम उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

इन्द्रसेन शर्मा, प्रधान

आर्य अनाथालय पटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के दु:खद निधन पर आर्य अनाथालय, चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट व उससे सम्बन्धित संस्थाओं के समस्त कर्मचारी एवं बालक बालिकाओं की ओर से हार्दिक सम्वेदना प्रगट की गई। शान्ति यज्ञ द्वारा उनकी आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई।

संस्थाओं के मुख्य अधिष्ठाता श्री वीरेन्द्र प्रताप चौधरी जी ने सब परिवार दीवानहाल जाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किये। अधिष्ठाता श्री रघुवंशी ने बताया कि आर्य समाज के प्रकाण्ड पण्डित व संस्थाओं के सचिव श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री जी के नेतृत्व में ब्रह्मचारियों की टोम ने दीवानहाल में अखण्ड शान्ति पाठ किया।

हमीर सिंह रघुवंशी, अधिष्ठाता

सनातन धर्म महा सभा दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सभापति स्वामी आनन्दबोध जी के देहावसान पर अखिल भारत वर्षीय सनातन धर्म महासभा के संरक्षक सेठ चुन्नीलाल जयपुरिया ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पूज्य स्वामी जी गोरक्षा के प्रबल समर्थक थे। आजीवन स्वामी जी ने गोहत्या के कलंक को मिटाने में सक्रिय योगदान दिया।

स्वामी जी के दिवंगत होने से गोरक्षा आन्दोलन को अपूर्णीय क्षति पहुंची है। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—प्रदीप कुमार

भारत गोसेवक समाज, ३ सदर थाना रोड दिल्ली-६

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सभापति स्वामी आनन्दबोध जी के देहावसान पर भारत सेवक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सनातन धर्मी नेता श्री प्रेमचन्द जी गुप्ता ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पूज्य स्वामी जी युवा अवस्था से ही हिन्दी, हिन्दू व हिन्दुस्तान के लिए संघर्ष करते रहे।

स्वामी जी के दिवंगत होने से जहां आर्य समाज को अपूर्णीय क्षति पहुंची है। वहां गोरक्षा आन्दोलन को भी धक्का लगा है। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

विश्व हिन्दू परिषद

पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के आकस्मिक निधन का समाचार पाकर हम सभी शोकाकुल हैं। पूज्य स्वामी जी आर्य संस्कृति के अनन्य उपासक व स्वतन्त्रता सेनानी तथा लोकहित के सभी कार्यों में अग्रसर रहने वाले थे, उनकी सेवायें समाज कभी नहीं भूल सकेगा श्री परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शाश्वत शान्ति प्रदान करे।

शोकाकुल अशोक सिंघल

आर्य समाज, दयापुर

सार्वदेशिक सभा के पूज्य प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी के आकस्मिक निधन से आर्य जनता अपने को अनाथ सा महसूस कर रही है।

स्वामी जी सदा आर्य समाज एवं वेद प्रचार के लिए तन मन धन से समर्पित रहें

हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे एवं आर्य जनता को उनके अधूरे कार्यों को करने की शक्ति दे।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की आत्मा को परमात्मा में पूर्ण रूप से मिलन का समाचार सुनकर बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी सदस्य गण दुखित एवं अत्यन्त चिन्तित हो उठे। यह सभा उनकी आत्मा अमर रहे, की कामना प्रकट करती है।

इस असहनीय गम्भीर दु:ख को सहन करने की शक्ति परम पिता परमेश्वर उनके सम्पूर्ण सार्वदेशिक परिवार को प्रदान करें यही हमारी भावनाएं हैं।

विश्वनाथ सिंह आर्य, प्रधान

दयानन्द आर्य वैदिक मध्य उच्च विद्यालय, हजारीबाग

दि० १८ १०-९४ को दूरदर्शन पर पूज्य स्वामी जी के निधन का समाचार सुनकर मैं अवाक रह गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी के चले जाने से आर्य समाज के आन्दोलन को एवं वैदिक प्रचार को अपूर्णीय क्षति हुई है।

विद्यालय के कर्मचारी एवं छात्रों में शोक व्याप्त हो गया। दो दिनों के लिए विद्यालय का शिक्षण कार्य, को बन्द कर दिया गया।

मैं एवं विद्यालय परिवार भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

योगेन्द्र प्रसाद सिंह, सचिव

योग शिविर

स्वामी देवबन्धु जी महाराज के द्वारा दिनांक १० नवम्बर ९४ से २० नवम्बर ९४ तक आर्य समाज हरजेन्द्र नगर में एक योग शिविर का आयोजन किया गया है। स्वामी जी द्वारा प्राणायाम और ध्यान योग के आध्यात्मिक चेतना पर उपदेश व अपने अनुभव से आत्मिक अनुभूति करायी जाएगी। अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर आत्मिक लाभ प्राप्त करे।

रामजी आर्य, मन्त्री

सम्पर्क करें —

आर्य समाजों में वैदिक धर्म प्रचार प्रसार वार्षिक उत्सवों में प्रवचन, भजनोपदेश एवं सभी संस्कार कराने हेतु निम्न लिखित पते पर पुरोहित्य के लिए सम्पर्क एवं विशेष जानकारी हेतु पूर्णतः पत्राचार करें —

वेद आश्रम, प० युगलकिशोर आर्य (प्रचारक)
द्वारा प० सकल प्र० आर्य (मन्त्री)
मु० पो० —बामरा, थाना- सोनो
जिला-जमुई (बिहार)

आर्य समाजों के निर्वाचन

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा मेरठ, चौ० माधवसिंह प्रधान, श्री नगेन्द्र सिंह आर्य मन्त्री, श्री अश्विनी कुमार कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज मवाना मेरठ श्री ज्ञानेन्द्र प्रकाश प्रधान, श्री नगेन्द्र सिंह आर्य मन्त्री, श्री देवेन्द्र कुमार रस्तोगी कोषा०।

—आर्य समाज पिम्परी पुणे, श्री कृष्णचन्द्र जी आर्य, श्री हरिगुण लाल मन्त्री, श्री रमेश वाधवानी कोषाध्यक्ष।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दूरभाष : ३२७४७७१ | वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३३ अंक ४० | दयानन्दाब्द १७० | सृष्टि संवत् १९७२९४९०९५ | मार्गशीर्ष कृ० २ सं० २०५१ २० नवम्बर १९९४

खामपुर में बूचड़खाने के बजाय गोसदन बनेगा

मुख्यमन्त्री मदनलाल खुराना की घोषणा

हरेवली, १० नवम्बर। मुख्यमन्त्री मदनलाल खुराना ने कहा कि अलीपुर के समीप खामपुर गांव मे पूर्व प्रस्तावित बूचड़खाने की जमीन पर अब गोसदन बनाया जाएगा।

श्री खुराना ने उक्त घोषणा आज हरेवली गांव स्थित गोसदन में मनाए गए गोपाष्टमी महोत्सव मे की। उन्होंने कहा कि उक्त निर्णय स्थानीय लोगों की भावना को देखते हुए लिया गया है। इसके साथ ही सरकार ने दिल्ली मे एक भी बूचड़खाना न खोले जाने का भी निर्णय किया है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष दिल्ली मे १० गोसदन खोले जायेंगे।

मुख्यमन्त्री ने बताया कि दिल्ली पहला राज्य है जहां गोरक्षा बिल लाया गया। अब यह बिल राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद कानून बन गया है और दिल्ली मे इस कानून को पूरी तरह लागू कर दिया गया है। उन्होंने महोत्सव में सन्त महात्माओं को विश्वास दिलाया कि दिल्ली सरकार उनके बताए मार्ग पर चल कर दिल्ली को पुरातन गौरव प्रदान करेगी।

शहर मे गाय रखने वाले लोगों को सचेत करते हुए श्री खुराना ने कहा कि वे अपनी गायों को बाहर घूमने के लिए न छोड़े यदि किसी व्यक्ति की गाय बाहर घूमती हुई पाई गई तो एक बार तो उसे उसके मालिक को वापस कर दिया जायेगा। मगर दोबारा ऐसा होने पर उस गाय को गोसदन में भेज दिया जायेगा।

दिल्ली विधान सभा अध्यक्ष चरती लाल गोयल ने कहा कि गाय पूज्य तो है ही साथ ही हमारी प्राचीन अर्थव्यवस्था की रीढ़ के रूप मे मान्य रही है। देश में गाय की सुरक्षा के लिए विशेष व्यवस्था की जानी चाहिए।

विकासमन्त्री श्री साहबसिंह वर्मा ने बताया कि आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति मे गो मूत्र से १०८ बीमारियों के इलाज का उल्लेख है इसलिए यहां पर गो मूत्र अनुसंधान केन्द्र की स्थापना भी की जायेगी।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के बाद शिक्षा शास्त्री आचार्य प्रियव्रतजी दिवंगत

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व आचार्य कुलपति परिद्रष्टा वेद मनीषी आचार्य प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति का ४ नवम्बर को प्रातः ८ बजे निधन हो गया। आप ९४ वर्ष के थे। आपका आर्य समाज और वेदों से अटूट सम्बन्ध था। जीवन पर्यन्त आप वेद गुरुकुल और मानवता की सेवा मे लगे रहे।

पानीपत के समीप भाडपुर नामक ग्राम मे सम्वत १९५८ मे जन्मे आचार्य प्रियव्रत जी ने प्रत्येक परीक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा चार स्वर्ण पदक प्राप्त किये। आपकी वैदिक संस्कृति और साहित्य की विशिष्ट सेवाओं को देखते हुये गुरुकुल विश्वविद्यालय ने १९७६ में अपनी सर्वोच्च उपाधि मार्तण्ड मानद रूप से प्रदान करके आपको वेद मार्तण्ड उपाधि से सम्मानित किया। आपने वेदोद्यान के चुने हुये फूल, वेद का राष्ट्रीय गीत, मेरा धर्म, समाज का कायाकल्प आदि अनेक अमर ग्रन्थ राष्ट्र को प्रदान किये। उनके निधन से आर्य जगत की अपार क्षति हुई है। सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे सम्पन्न शोक सभा मे महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने आचार्य प्रियव्रत जी को अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुये उनकी आत्मा की सद्गति तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से कामना की।

स्मृति दिवस

स्व० श्रीमती सरला रानी छाबड़ा की स्मृति मे आयोजन

स्व० श्रीमती कौशल्या देवी पाहवा एवं स्व० श्री रामलुभाया पाहवा की सुपुत्री स्व० श्रीमती सरला रानी छाबड़ा की पुण्य स्मृति मे यज्ञ एवं उनके मरणोपरान्त श्री प० इन्द्रराज जी द्वारा लिखित पुस्तक जीवन पथ (दिन मास) का विमोचन डा० सच्चिदानन्द शास्त्री महामन्त्री- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के द्वारा सम्पन्न हुआ।

विशेष वक्ता डा० निरूपण जी विद्यालंकार ने पुस्तक पर विशेष विचार व्यक्त किए। अन्त में श्री शास्त्री जी के ओजस्वी भाषण के उपरान्त सभा विसर्जित की गई।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

विदेश समाचार

आर्यसमाज लंडन सितम्बर-९४ की गतिविधियां

साप्ताहिक सत्संगों का आयोजन नियमित रूप से किया गया जिसमें सन्ध्या, हवन भजनादि का कार्यक्रम रहा। इनमें श्री अरुण और श्रीमती प्रेमा कहेर [प्रीति कहेर और शरद भदवार के विवाह के उपलक्ष्य में], श्रीमती इन्दिरा खन्ना एवं परिवार यजमान बनें। उन्होंने यजमानों को आशीर्वाद दिया।

वेद-सुधा के सत्र में प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज श्री बलदेव मोहन मेहता और डा० ताना जी आचार्य ने वेद-मन्त्रों की सरस सोदाहरण व्याख्या की।

श्रीमती बासन्ती दशमथ, अंशु प्रकाश, सावित्री छाबड़ा और कैलाश भसीन ने समय-समय पर मधुर भजनों का गायन किया।

श्री श्रीकान्त जावडेकर, दुबे, भारत ने मानवीय सम्बन्धों के मूलभूत तत्वों पर बोलते हुए कहा कि आत्म-विकास के माध्यम से एक अच्छे व्यक्ति बनकर ही हम अपना और दूसरों का भला कर सकते हैं। समाज और हमारे आपसी सम्बन्ध हमारे ही मानसिक मधुरता और कटुता का परिणाम होता है।

दिनांक १८ सितम्बर को हिन्दी दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इसमें निम्न वक्ताओं ने अपने विचार रखे—प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, डा० रघुवीरसिंह बक्षी, डा० ऋषि अग्रवाल (हिन्दू सेंटर लंडन), श्री अश्विन गलोरिया [हिन्दू कौंसिल, ब्रेंट] डा० दाऊजी गुप्ता [भाजीमेयर, लखनऊ], श्री जगन खरबन्दा, सोहन शाही, श्रीमती शोभा कौशल (अमरदीप) श्री गौतम सचदेव [बी० बी० सी० हिन्दी सेवा] इत्यादि। सभी वक्ताओं ने इस बात पर विशेष बल दिया कि हिन्दी भाषा का प्रयोग रेडियो, टेलिविजन चित्र-पट पत्र-पत्रिका आदि में विशेष आग्रह पूर्वक किया जाना चाहिए, भारतीयों के लिए हिन्दी यह एक भाषामात्र नहीं अपितु उनकी संस्कृति है, उनकी पहचान है, उनका गौरव है, उनकी राष्ट्रभाषा है। संस्कृत और प्रान्तीय भाषाओं के आधार पर उसे समृद्ध किया जाना चाहिए। क्योंकि हिन्दी ही सारे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो सकती है। विदेशियों ने भारत पर अपनी-अपनी भाषा थोपने का प्रयास किया है। स्वदेश और स्वसंस्कृति के स्वाभिमान और प्यार को समाप्त करने का यह षड्यन्त्र यथासमय समाप्त करना होगा।

इस कार्यक्रम के मुख्य-अतिथि डा० सुरेन्द्रकुमार अरोरा, हिन्दी-अधिकारी भारत भवन, लंडन ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिन्दी प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का भूमिका अह है। १८७५ से पूर्व महर्षि दयानन्द ने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा का स्थान देकर अपने सम्पूर्ण साहित्य और प्रचार का माध्यम हिन्दी बनाया।

इस अवसर पर हिन्दी की G.C.S.E. और A Levelकी परीक्षाओं में A ग्रेड मे उत्तीर्ण होने वाले छात्रों और छात्राओं को भारत-भवन के सौजन्य से प्राप्त पुस्तकें मुख्य अतिथि डा० सुरेन्द्र अरोरा के कर-कमलों से पुरस्कार के रूप में दी गई। जिनमें निम्न छात्र और छात्राएं थीं—मनीष साहनी, वन्दना सहगपाल, कुमुद शर्मा, सुवेशा शर्मा, नरेन्द्र रावत, राजेन्द्र रावत, रीता कपिला, सुखविन्दरसिंह और मनमोहन सिंह।

इस कार्यक्रम का आयोजन और संचालन श्री राजेन्द्र चोपड़ा, मन्त्री ने सफलतापूर्वक किया।

आरती, जलपान, शान्तिपाठ और प्रीति-भोजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

महान नेता : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

उनका रहता है अमर सदा जगत में नाम।
जो मानव संसार में करते हैं शुभ काम॥
करते हैं, शुभ काम, भाग्य शाली होते हैं।
सुख पाते हैं बीज, धर्म के जो बोते हैं॥
देव पुरुष वे अमर, विश्व मे हो जाते हैं।
उनके यश के गीत, सदा सज्जन गाते हैं॥१॥

स्वामी आनन्दबोध जी छोड़ गए संसार।
उनके जीवन पर करो, मित्रो जरा विचार॥
मित्रो जरा विचार, निराले वे थे नेता।
मानवता के पुंज, बहादुर, वीर विजेता॥
स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने लड़ी लड़ाई।
दानवदल से लड़े, सदा योद्धा बलदाई॥२॥

साहस के सागर महा, ईश्वर-भक्त महान्।
स्वामी जी के दिव्य गुण, कब तक करू बखान॥
कब तक करूं बखान, परोपकारी थे स्वामी।
अबला, दीन, अनाथ, जनों के रक्षक नामी॥
हिन्दी-सत्याग्रह, गऊ रक्षा आन्दोलन।
सबमें अग्रणी रहे, बताते हैं नेतागण॥३॥

निजाम हैदराबाद का, पूरा था खूंखार।
हिन्दुओं पर जुल्म जो, करता था मक्कार॥
करता था मक्कार, पाप, पापी था भारी।
जिससे भयभीत, बहुत हिन्दु नर-नारी॥
अभिमानी वह चाल, नित्य चलता था मन्दी।
हिन्दुओं पर वह दुष्ट, लगाता था पाबन्दी॥४॥

स्वामी आनन्दबोध जी, ने था किया कमाल।
फेंक दिया था काटकर, अन्यायी का जाल॥
अन्यायी का जाल, नष्ट करके दिखलाया।
आर्यों का रण देख, नीच भारी घबराया॥
होकर के मजबूर, दुष्ट ने माफी मांगी।
आर्यों की हो गई, विजय सब जनता जागी॥५॥

आर्यों की शिरोमणी सभा के थे वे प्रधान।
काम किया था रात-दिन सुनो सभी विद्वान॥
सुनो सभी विद्वान दुराग्रह को अब छोड़ो।
करो वेद प्रचार, ढोंगियों के मुख मोड़ो॥
बिन वैदिक प्रचार, दुखी है दुनियां सारी।
हरो विश्व सन्ताप, बनो त्यागी-तप धारी॥६॥

—पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री भजनोपदेशक

वेदों के मूर्धन्य विद्वान आचार्य प्रियव्रत जी अब नहीं रहे

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व आचार्य, कुलपति, परिद्रष्टा वेदमनीषी आचार्य प्रियव्रतजी वेदवाचस्पति ४ नवम्बर को प्रातः ८.०० बजे भौतिक शरीर को त्यागकर परमात्मा की गोद में चले गये।

आचार्य प्रियव्रत जी का गुरुकुल कांगड़ी, आर्य समाज और वेद से अटूट सम्बन्ध था, वे जीवन पर्यन्त वेद, गुरुकुल और मानवता की सेवा में लगे रहे, आज जब हम उनके चरणों में अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर रहे हैं तो उनके कार्य, उनकी विद्वत्ता और वेद सेवा, गुरुकुल सेवा, मोहक व्यक्तित्व याद आते हैं।

पानीपत के समीप मालपुर नामक ग्राम में संवत् १९५८ में जन्म लेने वाले जिस बालक को पिता श्री विजयसिंह ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के चरणों में अध्ययन के लिये समर्पित किया था, उस समय कौन जानता था कि यही बालक अपने आचार्यों के सपनों को साकार करने के लिये सम्पूर्ण जीवन कुलमाता को अर्पित करेगा। आपने प्रत्येक परीक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त करते हुये विद्यालंकार परीक्षा में चार स्वर्ण पदक प्राप्त किये और इस विश्वविद्यालय की उपाधि वेद वाचस्पति प्राप्त की। आगे चलकर आपकी वैदिक संस्कृति और साहित्य की विशिष्ट सेवाओं को देखते हुए गुरुकुल विश्वविद्यालय ने सन् १९७६ में अपनी सर्वोच्च उपाधि "मार्तण्ड" मानद रूप में प्रदान करके आपको "वेद मार्तण्ड उपाधि से सम्मानित किया।

आपने सन् १९२८ में दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय लाहौर में उपाध्याय के रूप मे अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया और फिर कभी पीछे लौटकर नहीं देखा आगे ही आगे बढ़ते रहे। १९४१ में गुरुकुल कांगड़ी के प्रधानाचार्य नियुक्त होकर आपने अपनी कर्मस्थली हरिद्वार को बना लिया। २४ वर्ष तक आचार्य के रूप में कार्य करने के पश्चात् कुलपति पद पर कार्य करके १९७१ में आपने अवकाश ग्रहण किया।

गुरुकुल कांगड़ी वि०वि० के इस दीर्घकाल मे उच्च कक्षाओं को वैदिक वाङ्मय के अध्यापन के साथ-साथ संस्था के प्रायः सभी महत्वपूर्ण पदों पर आपने निस्स्वार्थ कार्य किया।

प्रशासनिक कार्य करते हुए भी आपकी लेखनी विद्वत जगत को निरन्तर नये-नये वैदिक ग्रन्थ प्रदान करती रही। आपकी अनवरत श्रुति साधना ने वरुण की नौका, वेदोद्यान के चुने हुए फूल, वेद का राष्ट्रीय गीत, मेरा धर्म, समाज का कायाकल्प, वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त, वेद और उसकी वैज्ञानिकता आदि अमर ग्रन्थ राष्ट्र को प्रदान किये। ये ऐसी अमर कृतियां हैं जिनको पढ़कर न जाने कितने जिज्ञासुओं ने वेदों के रहस्य को समझा। आपके इन ग्रन्थों की देश की मूर्धन्य मनीषियों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। आपके वैदिक लेख भारतवर्ष की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं की गरिमा बढ़ाते रहे। आचार्य श्री ने न केवल साहित्य सृजना से अपितु अपने विद्वतापूर्ण ओजस्वी व्याख्यानों से भी राष्ट्र की सेवा की आर्यसमाज के बड़े-बड़े सम्मेलनों और उत्सवों मे जब आचार्य जी व्याख्यान के लिये आते थे तो आर्य जनता सुनने के लिये उमड़ पड़ती थी। प्रभु ने आपको लेखनी और वाणी दोनों का महारथी बनाया था। वि०वि० से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात आपका लेखन कार्य चलता रहा।

आचार्य प्रियव्रत जी के चरणों में बैठकर विद्या प्राप्त करने वाले हजारों स्नातक आज देश के प्रत्येक भाग मे राष्ट्र सेवा मे लगे हुये हैं। इस गुरुकुल के कण-कण में उनकी स्मृति व्याप्त है। विश्वास नहीं होता कि वे हमे छोड़कर चले गये।

किन्तु ईश्वरीय व्यवस्था के समक्ष सभी को नतमस्तक होना पड़ता है। आचार्य श्री ९४ वर्ष का यशस्वी जीवन पूर्ण कर नया शरीर धारण करने चले गये हैं। शेष है उनकी स्मृतियां, प्रेरणायें एवं साहित्य। ऐसे गुरुवर आचार्य प्रियव्रत जी के चरणों मे मेरा शत् शत् प्रणाम।

दुःख के इन क्षणों मे गुरुकुल विश्वविद्यालय परिवार के हम सभी सदस्य आचार्य प्रियव्रत जी के चरणों में अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना करते हैं। तथा उनके शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करें, को परमेश्वर से याचना करते हैं।

रामप्रसाद वेदालंकार उपकुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

यात: सोऽद्य दिवं विहाय बत न: आनन्दबोधो यति:

—धर्मवीर शास्त्री

नेता नीतिविदां समस्तविपदां मध्यात् प्रणेताऽध्वनः।
छेत्ता विद्विषतां छलस्य सततं भेत्ताऽनुगन्तुर्भियः॥
वेत्ता वैदिक जीवनस्य सरणेः सेक्ताऽऽर्य-निष्ठा-तरोः,
यात: सोऽद्य दिवं विहाय बत नः 'आनन्द बोधो यतिः॥

अर्थ—नीतिज्ञों के नेता समस्त विपत्तियों के बीच से रास्ता खोज लेने वाले, विरोधियों के छल-छिद्र को छिन्न करने में समर्थ, अपने अनुयायियों के भय को दूर करने वाले, वैदिक जीवन-पद्धति के विशेषज्ञ, तथा आर्यों के विश्वास रूपी वृक्ष को हरा-भरा रखने वाले पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दुःख है कि हमको छोड़कर स्वर्ग चले गये॥१॥

क्षीणः सन्नपि वर्ष्मणाऽऽत्मनि बलवान् यश्चाऽऽत्मनाऽऽसीद् भृशं,
सत्यात् तैक्ष्ण्यमभूद् यदीय वचने चित्तेऽन्यथा यो मृदुः।
अद्रिर्यो दृढनिश्चये, न तु गते, कार्येष्वभावेऽपि वै,
यात :सोऽद्य दिवं विहाय बत नः 'आनन्द बोधो यतिः' ॥

अर्थ—जो शरीर से दुर्बल होते हुए भी आत्मा से अत्यन्त सबल, सत्य निष्ठता के कारण वाणी में प्रखर किन्तु हृदय में अत्यन्त मृदु तथा दृढ़ निश्चय में पर्वत के तुल्य (कार्यों में गति के अभाव में नहीं) थे, ऐसे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती—अत्यन्त दुःख है कि हमें (आर्यों को) छोड़कर दिवंगत हो गये॥२॥

बाह्यान्तस्तमसां क्षणेन हरणे धत्ते स्म योऽर्कद्युतिं।
वेदा वैदिक संस्कृतिश्च सुरगीर्यज्जीवने निर्भयाः।
सिद्धान्त प्रतिरक्षणेऽतिनिपुणो योऽभूत् सतर्कः सदा,
यातः सोऽद्य दिवं विहाय बत नः 'आनन्द बोधो यतिः॥

अर्थ—जो बाहरी एवं भीतरी अन्धकार को दूर करने में सूर्य की प्रभा के समान थे, जिनके जीते-जी वेद, वैदिक संस्कृति तथा संस्कृत को कोई भय नहीं था, तथा जो सिद्धान्तों की रक्षा में सदा सतर्क रहते थे वह स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दुःख है कि हमको छोड़कर स्वर्ग चले गये॥३॥

मरणं निश्चितं तस्मात् प्रभो ! धैर्यं प्रदेहि नः।
दिवं याताय तस्मै च नित्यां शान्तिं महात्मने॥

अर्थ—प्राणियों की मृत्यु निश्चित है, अतः हे प्रभु, हमें (कष्ट सहने का) धैर्य तथा स्वर्गीय आत्मा को शाश्वत शान्ति प्रदान करो।

बी० १/५१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

महापुरुषों का सम्प्रदायीकरण (२)

डा० भवानीलाल भारतीय

१९५६ में वे दिवंगत हुए और इतिहास पुरुषों की श्रेणी में आ गये। अब कुछ वर्ष पूर्व ही कतिपय राजनेताओं तथा दलित वर्ग के कुछ व्यक्तियों को यह अहसास हुआ कि अम्बेडकर तो भारत के महत्तम नेता हैं, इतना ही नहीं अछूतों के वे एक मात्र उद्धारक तथा त्राण कर्ता वे ही हैं। फलत पहले तो नवबौद्धों ने उन्हें अवतार तुल्य पूजना आरम्भ किया और बाद में विश्वनाथ प्रतापसिंह की तथा-कथित सामाजिक न्याय की राजनीति ने उन्हें एक राजनैतिक मसीहा का स्थान दे दिया। फलतः इन सबके लिये अम्बेडकर का नाम और काम राजनैतिक स्वार्थों को भुनाने का पर्याय बन गया। अब तो उनकी समग्र ग्रन्थावली का राज्य सरकारों द्वारा प्रकाशन होता है, संसद केन्द्रीय कक्ष में उनका चित्र लगाया जाता है, उनके चित्र से अंकित सिक्के निकाले जाते हैं, उनके जन्म दिवस को अवकाश घोषित किया जाता है और बात बात मे अम्बेडकर के नाम का जप किया जाता है, इस सबका मौलिक औचित्य होने पर भी इससे कौन इन्कार करेगा कि यह सब उनके नाम को अपने दलगत स्वार्थ के लिये भुनाने से भिन्न कुछ भी नहीं है। जहां तक उनके सम्प्रदायी-करण का प्रश्न है कि अनेक प्रान्तों के गांवों, कस्बों और नगरों में उनकी प्रतिमायें स्थापित हुई हैं। दलित बस्तियों मे उनकी टाई और सूट वाली मूर्तियां तो यत्र तत्र वैसी ही हैं जैसी गांवों में शिव या हनुमान की प्रतिमायें स्थापित कर दी जाती हैं। कोई आश्चर्य नहीं यदि ये अशिक्षित दलित थोड़े दिन में उनकी मूर्तियों को अन्य देव प्रतिमाओं की भांति पूजने लग जायें। अम्बेडकर के नाम पर विश्व-विद्यालयों की स्थापना तो एक जुनून की सी स्थिति प्राप्त कर चुकी है और किसी विश्वविद्यालय के नाम के साथ बाबा साहब के नाम को जोड़ना या न जोड़ना दंगों को आग लगा देता है। महापुरुषों का यही तो सम्प्रदायीकरण है। बात सीधी सी है, आज उन्हें सम्पूर्ण भारतवासियों में समग्र रूप से प्रतिष्ठा न दिलाकर मात्र कुछ दलित, पिछड़ी एवं शोषित जातियों का ही हितैषी और त्राणकर्ता मानने के लिये आग्रह किया जा रहा है।

महापुरुषों के सम्प्रदायीकरण की प्रवृत्ति को सिद्ध करने के लिये एक दो अन्य उदाहरण देना भी आवश्यक है। रामायण के रचयिता महर्षि बाल्मीकि के नाम से कौन सा भारतवासी अपरिचित होगा? मर्यादा पुरुषोत्तम राम के अनुपम जीवन को काव्यबद्ध कर उन्होंने जिस लोकोत्तर कृति की रचना की, उसने स्वयं कवि की कीर्ति का भी अमर बना दिया। तभी तो रामायण के बारे मे प्रसिद्ध है—

> यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
> तावद्रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

जब तक इस धरती पर पर्वत और नदियां रहेंगी तब तक रामा-यण की कथा का भी लोक में सर्वत्र प्रचार रहेगा। बाल्मीकि के इतिहास के बारे में इदं इत्थं कहना कठिन है तथापि अनेक पुराणों में यत्र तत्र उनका जीवन वृत्त आया है। उन्हें रामायण कथा का अमर गायक ऋषि तो सर्वत्र ही कहा गया है किन्तु उनके जीवन के आरम्भिक काल को लेकर भी अनेक अनुश्रुतियां तथा प्रवाद प्रचलित हैं। जीवन के पूर्वार्द्ध मे वे लुटेरे डाकू थे और किसी महात्मा के उपदेशों से उनके जीवन की धारा बदली, यह एक प्रसिद्ध प्रवाद है। गोस्वामी तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस के आरम्भ में रामभक्त हनुमान के साथ ही उनकी वन्दना की और उन्हें विशुद्ध विज्ञान का प्रतीक बताया। तथापि उन्होंने संस्कृत के इस आदि कवि के उस रूप की ओर भी संकेत किया जो लोक मान्यता के अनुसार उनके जीवन के पूर्वार्द्ध में प्रशंसनीय नहीं था। राम नाम की महिमा के प्रसंग में तो गोस्वामी जी ने बाल्मीकि का ही उदाहरण दिया और लिखा

> 'उलटा नाम जपत जग जाना। बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।"

पता नहीं किसने यह भ्रान्त धारणा अनजाने या जानबूझकर फैला दी कि यही महर्षि बाल्मीकि आज के हरिजन कहे जाने वाले अछूतों के आदि पुरुष थे। अब तमाशा देखिये। सफाई कर्मचारियों ने अपने को बाल्मीकि सन्तान कहकर अपने नामके साथ बाल्मीकि या बालमीक नाम जोड़ना आरम्भ कर दिया और इस प्रकार सर्व लोक पूज्य विश्व के प्रथम महा कवि अखिल मानव समाज के आदर्शास्पद और पूजार्ह न रहकर मात्र हरिजनों के ही जातिपुरुष बन गये। आज राम और कृष्ण की ही भांति बाल्मीकि के भी मन्दिर बनते हैं, किन्तु कहां बनते हैं। उन गन्दी हरिजन बस्तियों में जहां कूड़े के ढेर लगे रहते हैं, ग्राम शूकर जहां इधर-उधर डोलते हैं। हमारा कहना है कि यदि हिन्दुओं के राम-कृष्ण आदि पूज्य पुरुषों की भांति बाल्मीकि के मन्दिर बनाने का भी कोई औचित्य है तो क्यों नहीं ऐसे मन्दिरों की स्थापना में हरिजनों से भिन्न सवर्ण हिन्दू-ब्राह्मण और क्षत्रिय भी रुचि दिखलायें। तथापि यह कटु सत्य है कि इन उच्च वर्ण के हिन्दुओं की रुचि या उत्साह बाल्मीकि मन्दिरों में नहीं है। जैसे बेचारे हरिजन वैसे ही उनके आराध्य और उपास्य महर्षि की जटाजूटधारी दीर्घ श्मश्रुयुक्त साधारण सी प्रतिमा जिसके पुजारी भी अछूत हैं और उपासक गण भी उसी श्रेणी के हैं। हम यह लिखकर महर्षि बाल्मीकि का अवमूल्यन नहीं कर रहे हैं किन्तु महापुरुषों के सम्प्रदायीकरण की उस घृणित मनोवृत्ति की ओर इंगित कर रहे हैं जिसके कारण बाल्मीकि के मन्दिर हरिजन बस्तियों में बनाये जाते हैं, बाल्मीकि जयन्ती का अवकाश घोषित कराने में भी बाल्मीकियों (हरिजनों) का ही उत्साह नजर आता है और इस महापुरुष की जयन्ती के दिन निकाली जाने वाली शोभा यात्राओं और जुलूसों में भी वे दलित वर्ग के लोग ही प्रधानता से दिखाई पड़ते हैं। बात सत्य किन्तु कटु है। महापुरुषों के सम्प्रदायीकरण की यह रीत कोई नई नहीं है। यह तो हमारे तथा-कथित सवर्णों मे भी प्रतिबद्ध दिखाई देती है। तभी तो भगवान् महावीर की जयन्ती के जुलूस में जैनों की प्रधानता रहती है तो महाराजा अग्रसेन की जयन्ती मनाने की जिम्मेवारी अग्रवालों की होती है। धर्मराज के प्रधान सचिव चित्रगुप्त उत्सव को मात्र कायस्थ ही मनाते हैं। इसी प्रकार महर्षि गौतम, पराशर और दधीचि आदि सर्व पूज्य ऋषि गणों को भी ब्राह्मणों की उपजातियों ने परस्पर बांट लिया है। इस स्थिति मे हम मात्र हरिजनों को ही दोष क्यों दें।

आज इलेक्ट्रोनिक मीडिया का जमाना है। प्रचार माध्यमों में दूरदर्शन की प्रधानता है। जब बाल्मीकि जयन्ती पर दूरदर्शन के अधिकारी महर्षि बाल्मीकि पर कोई चर्चा या वार्ता प्रसारित करते हैं तो इसे विडम्बना ही कहा जायेगा कि वे किसी रामायण मर्मज्ञ विद्वान् को न बुलाकर इन तथाकथित बाल्मीकि नेताओं को ही आमन्त्रित करते हैं और ये बाल्मीकि नेता रामायण के रचयिता के व्यक्तित्व और कृतित्व के विवेचक तो होते नहीं। इनकी ये चर्चायें और वार्तायें भी ऐसी होती हैं जिनसे श्रोता या दर्शक वर्ग को यह भ्रान्ति हो जाती है कि महर्षि बाल्मीकि का जन्म तो हरिजन कल्याण के लिये ही हुआ था। हम न तो मूर्तिपूजक हैं और न इस प्रथा के औचित्य को ही मानते हैं तथापि हमारा यह कहना है कि यदि आपको बाल्मीकि मन्दिर ही बनाने हैं तो रामायण प्रणेता इस महर्षि के मन्दिर भी उतने ही भव्य आकर्षक तथा स्वच्छ क्यों नहीं जैसे बिड़ला द्वारा निर्मित मन्दिर हैं। इनके प्रबंधक और पुजारी भी ब्राह्मण और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती (४)

(पूर्वनाम श्री लाला रामगोपाल शालवाले)

जीवन-परिचय

श्री सोमनाथ एडवोकेट, कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक सभा

इस पैम्फलेट में ब्रह्माकुमारियों से आठ प्रश्न किए गए हैं परन्तु किसी ने भी उनके उत्तर नहीं दिये। इस ट्रैक्ट में लाला रामगोपालजी तथ्यों को एकत्र करने और सस्था के भीतरी चित्र-चित्रण करने के ढग की विशिष्ट योग्यता का परिचय मिलता है, जिसका सकेत ऊपर किया गया है। यह बड़े दुःख की बात है कि इस सस्था को विधिवत् क्रियात्मक रूप से दिल्ली से सफाया कर दिया गया था अन्य कई स्थानों पर शाखाएं स्थापित हैं। लाला जी के ब्रह्माकुमारी ट्रैक्ट के दूसरे सस्करण में छपे दादा लेखराज के चित्र से सस्था के अनुयायियों का क्षुब्ध हो जाना स्वाभाविक था। लाला जी को धमकी भरे पत्रों का भेजा जाना शुरू हो गया जिनमें लाला जी को जान से मारने और सस्था के सस्थापक दादा लेखराज को बदनाम करने के अपराध में कानूनी कार्यवाही करने की धमकी दी जाती थी। बम्बई, कलकत्ता पटना, मेरठ (उ० प्र०) तथा अन्य कई स्थानों से उन्हें पत्र मिले जिनमें इस पैम्फलेट के वापस लेने के लिए कहा गया। यहां तक ही नहीं, इस पम्फलेट के प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगाने की भी कोशिश की गई। इन बहुसख्यक पत्रों का उत्तर भेजना सभव न था। अत लाला जी ने इस संस्था से सम्बद्ध सभी लोगों को खुला चैलेंज दिया कि यदि उनमें से कोई इस ट्रैक्ट के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करनी चाहता है तो वह खुशी से ऐसा कर सकता है परन्तु उसे परिणामों को भुगतने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। लाला जी ने यह भी कहा कि उन्होंने इस सस्था के विरुद्ध जो कुछ लिखा है वह शत प्रतिशत सही है और यदि किसी ने उनके विरुद्ध केस चलाया तो वे कोर्ट में इन्हें पूर्णत प्रमाणित कर देंगे। हां यदि कोई इस विषय पर उनके साथ बहस करना चाहेगा तो वे उसका स्वागत करेंगे। इस सबका परिणाम यह हुआ कि न तो कानूनी कार्यवाही की गई और न उनसे बहस करने का किसी को साहस हुआ। इस प्रकार यह धमकी कोरी कागजी धमकी समझी गई।

लाला रामगोपाल का जीवन प्राय इस प्रकार की सस्थाओं के विरुद्ध जिनमें ईसाई मिशनरीज, बालयोगेश्वर का हसामत, साईं बाबा तथा अन्यान्य कई सस्थाएं तथा राधास्वामी मत शामिल हैं सघर्षरत रहा है। अभी भी वे इन आश्रमों और मतों के विरुद्ध लेख लिखते रहते थे। इनके क्रियाकलापों का विस्तारपूर्वक वर्णन करने में हृदय कांपता है जो वस्तुत पुराने वाममार्गियों के अड्डे बने हैं जिनके विरुद्ध स्वामी दयानन्द ने जिहाद छेड़ा था। रजनीश और महेश योगी यह प्रचार करते रहे हैं कि व्यभिचार में प्रवृत्त रहते हुए भी जहां स्त्रियां पुरुषों के समान और पुरुषों की उपस्थिति में नंगी हो जाती हैं मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

गौ सेवा

इस सम्बन्ध में एक उदाहरण उल्लेखनीय है। कृष्णनगर दिल्ली स्थित अपने मकान पर उन्होंने गौ रखी हुई थी। वे ४ बजे प्रातः उठते, उसका गोबर स्वयं उठाते और फर्श आदि की सफाई करते थे। गौ का चारा और सानी भी स्वयं तैयार करके सुबह-शाम उसके सामने रखते थे और इस गौ सेवा का उच्च उदाहरण प्रस्तुत करते थे।

संगठन शक्ति

लाला रामगोपाल जी जितने आन्दोलनों के सर्वोत्तम आयोजकों, सूत्रधारों और सचालकों में होंगे थी और वे अपने आन्दोलन के पक्ष में जनमत तैयार करने की कला के जानकार थे। वे जानते थे कि समारोहों और जलूसों की व्यवस्था किस प्रकार की जाती है। वे यह भी जानते थे कि नवयुवकों एवं बूढ़ों से काम किस प्रकार लिया जाता है। वे कहते "जिसने आर्य समाज से और जन से किसी बात के प्रचार करने की ठान लेते थे, तो पूरी सफलता तक उसमें सलग्न रहते थे। केन्द्रीय गवर्नमेंट को पता है कि यदि दीवानहाल आर्य समाज से कोई आन्दोलन शुरू होता चाहे वह गोरक्षा से सम्बद्ध हो, अन्धविश्वास से, धरना देने से, सत्याग्रह या अन्य किसी प्रकार के आन्दोलन से सम्बद्ध हो तो वह एकमात्र शोभा यात्रा न होकर लम्बा और प्रभावशाली होगा और उसे (गवर्नमेंट को) शिकायत को मिटाने के लिए विवश हो जाना पड़ेगा।

इस बात को प्राय सभी जानते हैं कि गोरक्षा आन्दोलन छः महीने तक चलता रहा था। जलूस निकालकर प्रदर्शन सत्याग्रह के लिए निकला करते थे और ४० हजार गिरफ्तारियां हुई थीं। इसके अतिरिक्त जब ७-११-६६ को पुलिस ने गोली चलाई तो बहुत से साधु, जवान और बूढ़े, पुरुष और स्त्रियां मारे गये थे। यह उन आन्दोलनों में से एक आन्दोलन था जिसमें धर्म के अनुयायियों और नेताओं एवं जगद्गुरु शंकराचार्य ने आर्य समाजियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया था। इस सत्याग्रह में नेताओं के साथ मिलकर बूढ़ों, जवानों, स्त्रियों व पुरुषों ने बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया था। श्री स्वामी गुरुचरणदास जैसे सन्यासियों ने जिन्हें सनातन धर्म के क्षेत्रों में बड़ा आदर एवं सम्मान प्राप्त है खुले तौर पर इस बात को स्वीकार किया कि आर्य समाज ठीक रूप में हिन्दू धर्म का उद्धारक और गोमाता का रक्षक है। परन्तु यदि श्री शंकराचार्य ने अनशन तोड़ने और आन्दोलन को वापस लेने की कमजोरी न दिखाई होती तो सम्पूर्ण भारत में गोहत्याबन्दी हो जाती। फिर भी यह सन्तोष की बात है कि उस समय के प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के समक्ष ही गोरक्षा में दृढ़ आस्था रखते थे।

इस आन्दोलन का प्रभाव आपात स्थिति के दौरान उस समय दृष्टिगोचर हुआ जबकि प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सम्पूर्ण भारत में पूर्ण गोहत्याबन्दी के पुरोगम की घोषणा की। दक्षिण राज्यों के कुछ भागों में गोहत्याबन्दी का विरोध हुआ करता था और उस क्षेत्र के ईसाई और मुसलमानों का रुख भी सहयोग का न हुआ करता था। वस्तुत गोहत्याबन्दी के विरुद्ध उनकी भावनाएं बड़ी उग्र थीं। भारतीय संस्कृति को बदनाम करने, हिन्दुओं की नई पीढ़ी की धर्मनिष्ठा और गोहत्याबन्दी की उग्र भावना को कमजोर करने के उद्देश्य से भारतीय इतिहास में जान बूझकर बुरे भाव से ऐसी सामग्री मिलाई गई जिससे यह भावना घर कर जाये कि वैदिक युग के आर्य जन गोमांस का सेवन करते थे और अपने अतिथियों को बछड़े का मांस परोसा करते थे। यह दिखाने के लिए कि भारत के मुस्लिम शासकों ने प्रजाहित के बड़े बड़े कार्य किये और वे बड़े सहिष्णु थे इतिहास को तोड़ा मरोड़ा भी गया। गोमांस भक्षण की बात न केवल पो एच डी के लिए अभिप्रेत इतिहास की पुस्तकों में ही दिखाई गई अपितु स्कूलों के बच्चों के लिए नियत इतिहासों में भी अंकित की गई। एक ओर तो हिन्दुओं द्वारा गोमांस से परहेज न करने की और दूसरी ओर सूअर के मांस से परहेज करने की चर्चा की गई, यह सब कुछ यह दिखाने के लिए किया गया कि योरुप से ईसाईयों को छोड़कर भारत की समस्त जनता मुसलमानों की भावनाओं का आदर करती थी। यह बड़े सन्तोष की बात है, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है कि वर्तमान प्रधानमन्त्री गोरक्षा के प्रबल समर्थक हैं।

(क्रमशः)

प्रचण्ड-ज्योति के अन्तिम वचन:—

"प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो" (२)

धर्मदिवाकर मुनि

प्रश्न स्वाभाविक है, जब रोग प्रतिदिन बढ़ रहा था, उनका चिकित्सक क्यों न बदला गया। जब सर्वथा औषधों का नियन्त्रण न रहा, तभी सिविल सर्जन महोदय ने उपचार छोड़ा। दैनिक जीवन में, एक चिकित्सक के उपचार से लाभ न होने पर एक साधारण मनुष्य भी चिकित्सक बदलता है। फिर महर्षि का चिकित्सक क्यों न बदला गया? राजस्थान में भक्त महाराजाओं के पास यशस्वी चिकित्सकों का अभाव न था। महाराजाओं के अतिरिक्त, अनेकों समृद्ध, वैभव-सम्पन्न श्रेष्ठी भी महर्षि के भक्त थे। उनके परीक्षित, अनुभवी वैद्य-विशारदों को महर्षि की चिकित्सा करने का अवसर क्यों न दिया गया? महर्षि की अपनी भक्त श्रृंखला में अनेकों उच्चकोटि के चिकित्सक भी थे। उनमें से एक भी महर्षि की चिकित्सा क्यों न कर सका। वह कौन-सी शक्ति थी, जिसके सामने सभी समर्थ, शक्तिशाली, सम्पन्न, महर्षि के रोग का उपचार नहीं कर-करा पाये? मात्र मूक दर्शक बने रहे।

इतिहास चुप है। उस समय के महापुरुष, राजपुरुष, राजवंशी, श्रेष्ठी महाजन, सेवाव्रती भक्त, धर्मात्मा, मित्र-शत्रु उदासीन, सभी चुप हैं। महर्षि क्या विचारते एवं अनुभव करते होंगे। उनके अन्तःकरण में उस प्रत्येक व्यक्ति का चित्र उभर आया होगा, (क) जिन वीरों को उन्होंने मातृभूमि की रक्षा एवं स्वतन्त्र कराने हेतु प्राण आहुत करने की प्रतिज्ञा कराई थी, एवं जिन धर्मात्माओं को सच्चे वैदिक धर्म के प्रतिपादन प्रचार-प्रसार के लिये निर्भीक बनाया था,(ग) जिन कर्म-वीरों को वेद एवं वेद रक्षार्थ, आत्म बलिदान के लिए सन्नद्ध किया था, (घ) जिन विद्वानों को संसार से अविद्यान्धकार मिटाने के लिए जगाया था, (ङ) जिन पतितों/दलितों को उत्साहित कर उनके जीवन मे प्राण फूके थे, (च) जिनको नारी शिक्षा के प्रसार और समाज में व्याप्त अन्ध-परम्पराओं और कुप्रथाओं को नष्ट करने का व्रत धारण कराया था। वे सब आज असमर्थ, निस्तेज, मूक और दयनीय दशा में ग्रस्त है। उनके हृदयों में जागृत. देश, धर्म, संस्कृति-साहित्य पर मर-मिटने का दृढ़ व्रत लेशमात्र भी दिखाई नहीं दे रहा।

ऐसे समय में महर्षि दयानन्द प्रभु से कह रहे हैं—"प्रभु, मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं। शरीर, मन, प्राण, बुद्धि और आत्मा से भरपूर परिश्रम कर एकमात्र आपकी आज्ञा का ही पालन करता रहा हूं। अज्ञानियों को सच्चा ज्ञान दिया है। भटकों को सत्य मार्ग दिखा रहा हूं। निर्बलों को सरंक्षण प्रदान कर रहा हूं। निर्धनों को सच्चा धनवान् बना रहा हूं। असहायों को तेरे सहाय से भरपूर कर रहा हूं। प्रभु, दयालु तेरी ही तो इच्छा पूर्ण करने में लगा हूं। अपने लिए नहीं, आपकी प्रजा के लिए जी रहा हूं। गुरु (स कालेनानवच्छेदात् पूर्वेषामपि गुरु) की दक्षिणा ही आप परम गुरु की दक्षिणा को पूरा करने में प्राणपण से जुटा हूं। आज भी गाय रक्षा के लिए पुकार रही है। अभी भी जन-जन में वेदों का पूर्ण ज्ञान प्रकाशित नहीं हुआ। अभी भारत का अधिकांश मानस कुप्रथाओं/अन्धविश्वासों के दृढ़ बन्धनों में जकड़ा है। माताएं घोर यातनाएं पा रही हैं। भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ। ईसाई और कुरानियों की दुरभिसंधियां दिनों-दिन बढ़ रही हैं। अभी तो विशाल कर्म क्षेत्र अछूता पड़ा है। फिर भी आप मुझे बुला रहे हैं और मेरे ये भक्तगण हत-प्रभ, मुग्ध स्तब्ध एवं मूक हो गए हैं।

"अस्तु, मैं आता हूं। आपने मुझसे, इतने ही समय तक, इतनी मात्रा का कर्म कराना था। मैंने भारतवासियों को जगाया है। विश्व के मानव भी अंगड़ाई लेकर उठने लगे हैं। सब जाग चुके हैं। ये भारतवासी भटके बने, सोये पड़े हैं। मैं इन्हें और अधिक सन्मार्ग पर लाऊं, अब आपकी ऐसी इच्छा नहीं है। अतः आपकी इच्छा पूर्ति करते हुये, यह शरीर छोड़, आपके पास आ रहा हूं।"

तब महर्षि ने भूमि पर गाय के गोबर से लेप कराया। शुद्ध भूमि पर बैठे। बैठे! वेद मन्त्रों की सस्वर, गम्भीर ध्वनि द्वारा प्रभु का स्तवन किया। वर्ष, मास, पक्ष, तिथि, दिन, समय पूछा। फिर सस्वर वेद-मन्त्रों द्वारा प्रभु स्तवन किया। लेटे और अधिक घोर, गम्भीर, शान्त, प्रसन्न स्वर से बोले—"तूने विचित्र लीला की प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो।" फिर एक दीर्घ श्वास लिया। वह अमर आत्मा इस नश्वर देह को छोड़ गया।

क्या यही वह प्रभु इच्छा थी, जिसे पूरा करने में महर्षि ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण, ईश्वराग्नि में, आहुत किया था, अपने समाधि आनन्द को त्यागा था।

इस घटना ने उनके समग्र जीवन ने और इस अन्तिम वाक्य ने, अनेकों प्रश्न जगा दिए हैं। आइये, भक्तजन, विद्वज्जन, महा-मनीषी। आइये, धर्म-प्राण, व्रत पालक, कर्म-प्राण, अर्थ प्राण! इसे गम्भीरता से समझने का प्रयत्न किया जाय।

सन् १८६३ में, गुरु की आज्ञानुसार, जब महर्षि कर्म क्षेत्र में उतरे तो प्रथम कार्य प्रभु के सत्यस्वरूप का प्रतिपादन था। सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् को मनुष्य ने अपनी भावनाओं से जकड़ रखा था। प्रभु-बन्धन से छूट सकते हैं, जब सामाजिक अन्ध परम्परायें दूर हों। इन्हें विद्या। ज्ञान के उग्र प्रकाश से ही दूर किया जा सकता है। धर्म, अन्धविश्वासों की जेल में बन्द हो निष्प्राण है। महर्षि ने दूसरा कर्म क्षेत्र खोला। इस देश क्षेत्र की सफलता देश के स्वतन्त्र होने से सम्भव है। अब तीसरा कर्म क्षेत्र खुला। राष्ट्र का स्वतन्त्र होना—मात्र नारे से नहीं, सक्रियता से सम्भव है। राजधर्म का उपदेश किया, लिखा। राजाओं को उनके दायित्व का ज्ञान दिया। उसे पूरा कर पाने का मार्ग दिखाया। यहां तक कि दैनिक दिनचर्या बना दी। आश्चर्य! साधारण जन तो महर्षि के "जादू" से प्रभावित था, सशक्त राजाओं को अपने धर्म (दायित्व) समझ में आने लगे। ज्ञान में कर्म का रूप धारण किया। और देश की सामाजिक कुप्रथाएं दूर होने लगीं, ज्ञान-गंगधार बहने लगे जन-जन प्रसन्न प्रफुल्ल हुआ। ईश्वर की सच्ची भक्ति आरम्भ हुई। देश में ही नहीं विदेशों में भी आदित्य ब्रह्मचारी के ज्ञानाग्नि में कल्मष भस्म होने लगा। तब चक्रवर्ती राज्य, अंग्रेज को अपने साम्राज्य के विरुद्ध जाने के दृश्य दीखने लगे। अंग्रेज सतर्क हुआ।

अंग्रेज ने गम्भीरता से विचारा। आर्यों को (हिन्दुओं को) परम्परा में सन्यासी की हत्या महापाप है। ब्राह्मण की भी। और महर्षि दयानन्द जैसे तेजस्वी विद्वान्, दयालु की हत्या के विचार की सम्भावना ही नहीं। वह दिव्य दयानन्द प्राणी मात्र पर दया भाव रखता था। प्रत्येक नर, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान या ईसाई कोई भी उनके प्राणों का घातक बनने का साहस नहीं कर सकता था। जगन्नाथ ने प्राणघातक विष नहीं दिया। पिसा कांच पिलाने से सारे शरीर के प्रत्येक अंग के अन्दर बाहिर फफोले नहीं फूटते। उसे समझाया गया कि इससे वे थोड़ा अस्वस्थ होंगे, और योगाभ्यास द्वारा वे शीघ्र ही नीरोग भी हो जायेंगे। उस भोले पाचक सेवाव्रती को क्या पता था कि षड्यन्त्रकारी के मन में क्या पाप है। इस काम के लिये भी उसे मत मनाने में कितना कठोर प्रयास करना पड़ा होगा।

दूसरे दिन स्वामीजी के अस्वस्थ होने का समाचार फैलना आरम्भ ही हुआ था कि स्वामी जी का परम हितैषी के रूप में अंग्रेज रेजी-

(शेष पृष्ठ १० पर)

प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो

(पृष्ठ ६ का शेष)

जेन्ट था उपस्थित हुआ। बहुत चिन्तित, अत्यन्त व्यग्र, जैसे उस पर पहाड़ टूट पड़ा हो। वह प्रतीक्षा ही कर रहा था समस्त भक्तों के द्वारा किए जाने वाले सम्भावित उपचार का अनादर करता हुआ, वह बोला कि आप सब अच्छे चिकित्सक नहीं जुटा सकते। हमारा सर्वोत्कृष्ट डाक्टर सिविल सर्जन, इसका इलाज अत्यन्त लगन से करेगा। यहीं से, प्रथम दिन से स्वामी जी की चिकित्सा का सूत्र उसने बड़ी चतुराई से अपने हाथ में ले लिया। स्वामी जी ने भी विश्वास कर लिया। उस समय स्वामी जी को तनिक भी संशय नहीं हुआ। विष्णु शर्मा के पचतन्त्र का प्रथम वाक्य, न जाने कैसे भूल गए—"न विश्वसेत् पूर्व विरोधितस्य, शत्रोश्च मित्रत्व मुपागतस्य।" जब चौथे रोग असाध्य हो चुका था। यहीं वह अदृश्य (परोक्ष) शक्ति थी, जिसने किसी भक्त, समर्थ धनवान, अथवा राजा-महाराजा तक को हस्तक्षेप करने नहीं दिया परम भक्त डा० लक्ष्मणदास के उपचार का दो दिन में रोग शमन की ओर प्रवृत्त हुआ तो अग्रेज रेजिडेन्ट ने उसका तबादला कर दिया। डा० लक्ष्मण दास ने त्याग-पत्र देना चाहा तो महर्षि ने मना कर दिया। सिविल सर्जन द्वारा दिए जाने वाले कैलोमलके इंजेक्शन (सुलिया से) ही सारा शरीर फुंसी-फोड़ों से भर गया। काच से नहीं। यह सम्मति चिकित्सा विशेषज्ञों की है।

जिन्होंने इस तथ्य को पूरा समझा या अधूरा समझा या सर्वथा नहीं समझा, सभी मौन हैं। तब स्वामी जी ने भी इस पर प्रकाश नहीं डाला। वे तो प्रभु के साथ तादात्म्य स्थापित कर चुके थे। सभी कर्म प्रभु को समग्रभाव से अर्पित हुए थे। समाधिस्थ तो ईश्वर प्रणिधानी स्वाभाविक होता है। प्रभु की लीला को समझा। सभी समर्थ-असमर्थ भक्तों की शक्ति को परखा और प्रभु की आज्ञा मानते हुए, उसी की इच्छापूर्ण करते हुए, अश्रुपूरित नयनों और भाव-विह्वल हृदयों को असहाय छोड़, प्रभु के मोक्ष धाम में जा विराजे हैं। सम्भव है, वहाँ वे हमारी दुर्गति को देख रहे हैं और हमें उबारने के लिए, पुनः हमारे मध्य आने के लिए, प्रभु की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

"प्रभु की इच्छा पूर्ण' करने वाले! दिव्य, दयालु, दयानन्द! हम अबोध मानव तुम्हारा दिशा-निर्देश पाने के लिए बड़ी व्याकुलता से आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।
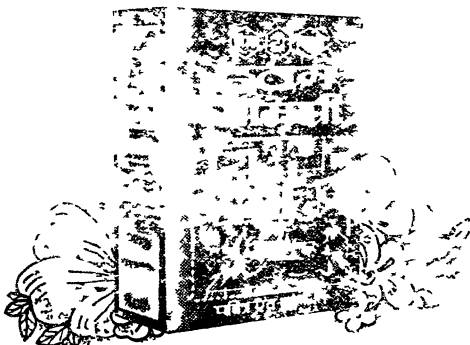
आर्यसमाजों के निर्वाचन

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुजफ्फरनगर में डा० जगदीश्वर गौतम प्रधान श्री कृष्णचन्द्र मन्त्री श्री योगेशकुमार कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज श्रद्धानन्दनगर पलवल में चौ० हरदेव आर्य प्रधान, अजीतकुमार आर्य, मन्त्री श्री मदनलाल चौधरी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज गया में श्री लक्ष्मीनारायण प्रधान, श्री जगदम्बाप्रसाद मन्त्री, श्री बृजकिशोर कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज बम्बई में श्री झाऊलाल शर्मा प्रधान श्री राजेन्द्र नाथ पाण्डेय मन्त्री श्री किशनलाल कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्यसमाज बल्केश्वर में ओमप्रकाश पालीवाल प्रधान श्री एन०बी० कुमार मन्त्री श्री रामगोपाल गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्य समाज ह्विटफील्ड में श्री मानवेन्द्र जी, नारायण राव ओरवे प्रधान, डा० सत्यव्रत वि० ओरवे मन्त्री श्री गोकुलदास नवरतलाल कोषाध्यक्ष चुने गए।

—आर्यसमाज लोहरदगा में श्री कुलदेव ठाकुर अध्यक्ष श्री कमल किशोर सिन्हा मन्त्री श्री गोपालराम कोषाध्यक्ष चुने गए

एक विवेचनात्मक सन्देश

(पृष्ठ ३ का शेष)

में सदाचार पुण्य के भागी बनें। कहीं अनाथालय मे सेवा करें उन्हें सहायता करें। यह मैं इसलिए कह रहा हू कि भारतीय संस्कार आप को ही है। आप को ही इसकी रक्षा करना है अरब-ईरान-अफगानिस्तान वालों को संस्कृति को मैं देख चुका हू। उनके पास मुसलमान नो न खिरच्छद से बढकर कोई काम नहीं। शायद आप भूल रहे हो। योगीराज कृष्ण के गुरुकुल मे शिक्षा अध्ययन काल के एक साथी थे जो कि एक गरीब ब्राह्मण थे

किन्तु योगीराज उस गरीब विद्यार्थी सहपाठी सुदामा से बहुत ही स्नेह करते थे। दोनो में काफी मित्रता थी। गुरुकुल से पढ़ाई समाप्त के बाद दोनो ही अपने घर आ गये। अपने काम मे ही व्यस्त रहे।

इधर सुदामा की पत्नी गरीबी मे तंग आ कर अपने पति से कहने लगी पति देव आप तो सुनाते थे कि आपका कोई मित्र है मथुरा के राजा है गोपाल कृष्ण तो इस गरीबी मे आप उनसे कुछ सहायता क्यों नहीं लेते ?

बहुत कहने पर गरीब ब्राह्मण सुदामा कृष्णके दरबार में पहुचने पर द्वार-पाल ने तो अन्दर जाने से रोक लिया और कहा मैं खबर देता हू द्वारपाल ने दरबार मे जाकर कहा एक गरीब भिखारी आया है जो अपना नाम सुदामा बताता है।

योगीराज कृष्ण के सुनते ही मस्तिष्क में बिजली सी दौड़ने लगी और कहा फौरन अन्दर ले आओ। जब लाया गया तो स्वयं कृष्ण ने सुदामा के पांव से कांटा निकाले क्योंकि वह नंगे पांव थे।

यहा तक लिखा गया कि अश्रु जल से कृष्ण ने अपने मित्र के पांव धोए। अपने पास रखा और सुदामा को पता तक लगने नहीं दिया और सुदामा का मकान बनवा दिया और धन-धान्य से भर दिया। सुदामा जब लौटकर अपने घर को आए तो उस घर को पहचानने में सुदामा को परेशानी हुई।

तो यह है सेवा अर्थात दाहिना हाथ से दान करो तो बायें हाथ को पता तक न चले। इस प्रकार फल की आशा न रखते हुए निष्काम भावना से सेवा करने का आदेश ऋषियों ने दिया है।

तो आइए हम संकल्प लें कि हमारे पूर्वजों ने जो रास्ता हमें दिया है उसे अपने जीवन मे धारण करें।

अथर्ववेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

कानपुर नगर जिला सोसाइटी में वैद्य धर्मपाल स्वतन्त्रता सेनानी के सौजन्य से दिनांक २० से २७ नवम्बर ८४ तक राष्ट्र कल्याण हेतु अथर्ववेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया है। इस यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी विद्यानन्द सरस्वती होंगे। इस अवसर पर अनेक साधु सन्यासी सामाजिक एवं राजनैतिक सत्पुरुषों को आमन्त्रित किया गया है। आप सभी आमन्त्रित हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ५०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ११ अंक ४१] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ मार्गशीर्ष कृ० ९ सं० २०५१ २७ नवम्बर १९९४

बकरीद पर गोवध करना धार्मिक अधिकार नहीं

पश्चिमी बंगाल सरकार की विशेष अपील याचिका रद्द

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

नई दिल्ली, २० नवम्बर। पश्चिमी बंगाल सरकार की विशेष अपील याचिका रद्द करते हुए उच्चतम न्यायालय ने फैसला दिया है कि भारत में मुस्लिम समुदाय का बकरीद पर गोवध करना धार्मिक अधिकार नहीं है। इस निर्णय से १९७१ में दायर इस मामले पर स्वामी केदारनाथ ब्रह्मचारी तथा २९ अन्य व्यक्तियों को २१ साल बाद न्याय मिल पाया है।

स्वामी केदारनाथ ब्रह्मचारी की याचिका जो कलकत्ता उच्च न्यायालय ने १९८२ में भी स्वीकार कर लिया था, लेकिन पश्चिमी बंगाल की मार्क्सवादी सरकार ने इस निर्णय के खिलाफ उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर करके स्थगन आदेश प्राप्त कर लिया था। इस स्थगन आदेश के सहारे पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ सरकार अगले १२ साल के दौरान हर बकरीद पर बड़े स्तर पर गोवध की अनुमति देती रही है।

न्यायमूर्ति कुलदीपसिंह, न्यायमूर्ति बी०एल० हंसारिया और न्यायमूर्ति एस० बी० मजूमदार की खण्डपीठ ने अपने निर्णय में कलकत्ता उच्च न्यायालय के १९८२ के निर्णय को सही बताया और कहा कि पश्चिमी बंगाल सरकार के पशु वध नियन्त्रण अधिनियम १९५० के तहत बकरीद पर गाय काटने की अनुमति देना उचित नहीं है। उल्लेखनीय है कि इस अधिनियम के तहत सांड, गाय, भैंस जैसे पशुओं को काटने की अनुमति देने का प्रावधान नहीं है, लेकिन मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार इस अधिनियम की धारा-१२ के विशेषाधिकार का उपयोग करके गायों या भैंसों को बकरीद पर काटने की खुली अनुमति देती रही है। इस धारा के तहत राज्य सरकार को धार्मिक, चिकित्सा और अनुसन्धान के उद्देश्यों के आधार पर इन पशुओं को काटने की अनुमति दी जाती रही है।

उच्चतम न्यायालय में अधिवक्ता ए०एस० पुंडीर ने बताया कि बकरीद के मौके पर गाय काटने की अनुमति सरकार इस आधार पर देती थी कि ऐसा करना मुसलमानों के धार्मिक रीति-रिवाजों को पूरा करने के लिये आवश्यक है। लेकिन उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि बकरीद पर गायों को काटना मुसलमानों के धर्म का आवश्यक हिस्सा नहीं है। खण्डपीठ ने कहा कि पशु वध नियन्त्रण कानून दुधारू पशुओं के वध पर रोकथाम और दूध का उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से बनाया गया है। इस कानून में स्पष्ट तौर पर लिखा है कि स्वस्थ गायों को काटना उचित नहीं है। इस अधिनियम की धारा २ के साथ दी गई सूची में शामिल पशुओं के वध पर पूर्ण रोक लगाने का प्रावधान है

उच्चतम न्यायालय ने अपने निर्णय में कलकत्ता उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ अपील करने को भी व्यर्थ का प्रयास कहा। उल्लेखनीय है कि १९५८ में ही उच्चतम न्यायालय एम०एच० कुरैशी बनाम बिहार सरकार के मुकदमे में इस मुद्दे पर स्पष्ट निर्णय दे चुकी है। तब उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया था कि गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने से भारत के संविधान का उल्लंघन नहीं होता है। इसमें विशेष तौर पर अनुच्छेद २५ (१) का उल्लेख था, जिसमें भारत के हर नागरिक को अपने-अपने सम्प्रदायों के अनुसार पूजा-पाठ का अधिकार दिया गया है। इसी निर्णय के आधार पर कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति, अनिलकुमार सेन और न्यायमूर्ति बी०सी० चक्रवर्ती ने अपना फैसला लिखा था। पश्चिमी बंगाल सरकार और कुछ मुस्लिम संगठनों को उच्चतम न्यायालय में अपील दायर करने से पशु वध नियन्त्रण कानून के तहत आगामी १२ साल तक कलकत्ता उच्च न्यायालय के फैसले को लागू होने से रोकने का लाभ मिल गया। ९ सितम्बर १९८३ को जारी उच्चतम न्यायालय के इस स्थगनादेश को खारिज करने की अपील विभिन्न हिन्दू संगठनों के २३ नेताओं ने भी की थी। २१ फरवरी, १९८४ को दायर इस याचिका को स्वीकार करने के स्थान पर उच्चतम न्यायालय की खण्डपीठ ने इस मुकदमे की सुनवाई शीघ्र करने का आदेश दिया था। इसके बाद भी सुनवाई सितम्बर १९९४ में ही हो पायी। स्वामी केदारनाथ ब्रह्मचारी की ओर से पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश और वरिष्ठ अधिवक्ता धर्मवीर सहगल ने पक्ष रखा। दो दिन तक चली सुनवाई में ही इसकी बहस पूरी हो गई। इसका फैसला इसी सप्ताह सुनाया गया।

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

शास्त्रार्थ महारथी

पं० सत्यमित्र शास्त्री दिवंगत

आर्य समाज के विद्वान् उपदेशकों के साथ ही शास्त्रार्थ महारथियों के अन्तिम कड़ी पं० सत्यमित्र शास्त्री का देहावसान २१ सितम्बर को हो गया। पण्डित जी स्वामी त्यागानन्द सरस्वती संस्थापक गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के प्रिय शिष्य एवं प्रथम स्नातक थे। शास्त्री जी संस्कृत के विद्वान्, व्याकरण के आचार्य तथा पुराणों के धुरन्धर पण्डित थे। संस्कृत गद्य तथा पद्य निर्माण में अतीव कुशल थे। गुरुकुल के स्नातक होने के बाद उन्होंने बौद्ध शास्त्रों का अध्ययन किया था और उनको उपाधि "धर्माचार्य" भी प्राप्त की थी। स्नातक होने के बाद आजीवन आर्य समाज के उपदेशक के रूप में जीवन व्यतीत किया। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश तथा बिहार उनका विशेष कार्य क्षेत्र बना। वैसे वे महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, गुजरात, बंगाल आदि प्रान्तों में भी प्रचारार्थ गये। उन्होंने अपने पौराणिक पण्डितों से पचासों शास्त्रार्थ किये जिनमे प्रसिद्ध पौराणिक विद्वान् पं० माधवाचार्य से किये अनेक शास्त्रार्थ भी थे।

पुराणों के सैकड़ों श्लोक उन्हें कण्ठस्थ थे और पौराणिक विषयों में उनकी शास्त्रार्थ की निपुणता प्रशंसनीय थी। स्वामी करपात्री जी भी उनके वैदुष्य से परिचित थे। संस्कृत भाषा एवं श्लोकों में भी शास्त्रार्थ करने का आह्वान उन्होंने पं० माधवाचार्य को किया था।

बड़े ही चाव से बाल्मीकि रामायण की कथा पण्डित जी कहते थे उन्हें रामायण के भी अनेक प्रसंग और श्लोक कण्ठ थे। पण्डित जी ने लगभग आधी शताब्दी तक आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार पूरे मनोयोग से किया। पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा सम्पूर्ण बिहार में आर्य समाज के उत्सवों की वे शोभा थे। ७९ उन्नासी वर्ष की अवस्था में उनका देहान्त हुआ।

पण्डित जी ने कुछ उत्कृष्ट सैद्धान्तिक निबन्ध भी लिखे हैं। जिनमें दो लेख तो अत्यन्त चर्चित रहे। प्रथम 'आर्यमित्र' का गौरवशाली विशेषांक 'वेदांग प्रकाश अंक १९६८ ई०। इस विशेषांक के सम्पादक थे उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन महामन्त्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री। पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ने भी उस विशेषांक की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उसमें 'वेद और ज्योतिष' शीर्षक निबन्ध उन्होंने ही लिखा था। उस जैसा विशुद्ध शास्त्रीय विशेषांक आज तक 'परोपकारी' 'वेदवाणी' को छोड़कर अन्य किसी आर्य पत्र ने प्रकाशित नहीं किया। उनका दूसरा चर्चित लेख भी 'आर्यमित्र' में ही छपा था—"सनातन धर्म विजय महोत्सव" यह लेख काशी शास्त्रार्थ शताब्दी के सन्दर्भ में काशी में मनाये अकाण्ड ताण्डव के परिप्रेक्ष्य मे था। स्वामी करपात्री जी तथा पं० माधवाचार्य जी को अनेक पौराणिक सन्दर्भों से और उनके कृत्यों से जोड़ते हुए यह अद्भुत लेख था, जिसकी आर्य जगत् में बहुत सराहना हुई और वे दोनों पौराणिक पण्डित तिलमिला कर रह गये।

शास्त्री जी के अन्य अनेक लेख भी आर्य पत्रों में छपे हैं 'सत्यार्थ प्रकाश शंका समाधान' शीर्षक से एक ग्रन्थ भी उन्होंने लिखा है, जिसे वे मेरी देख-रेख में छपाना चाहते थे। कोई आर्य या आर्य प्रकाशक जो इस ग्रन्थ को छपाना चाहें, मुझसे सम्पर्क कर सकते हैं।

पुरी के शंकराचार्य श्री निरञ्जनदेव तीर्थ से जब 'सती प्रथा' पर शास्त्रार्थ हो तो किस आर्य विद्वान् को खड़ा किया जाए। पं० क्षितीश वेदालंकार के इस प्रश्न पर मैंने आदरणीय शास्त्री जी का नाम लिया था। 'सती प्रथा वेद विरुद्ध' के लेखक होने के नाते मैं सहयोगी पण्डित के रूप मे रहूंगा ऐसी सलाह मैंने दी थी। दुर्भाग्य से शंकराचार्य जी शास्त्रार्थ-समर से पीछे हट गये।

आर्यसमाज ने शास्त्रार्थ द्वारा धर्म विचार करने, सत्यासत्य का निर्णय करने की परम्परा शुरु की और इसके प्रवर्तक स्वयं महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। उनके बाद यह परम्परा पं० लेखराम पण्डित गणपति शर्मा, स्वामी दर्शनानन्द, पं० मुरारीलाल शर्मा, पं० धर्मभिक्षु देवेन्द्रनाथ शास्त्री, पं० लोकनाथ जी, पं० मनसाराम जी वैदिक तोप तथा पं० रामचन्द्र देहलवी तक जाती है। उनके बाद पं० बिहारीलाल शर्मा, शान्तिकी काशी, पूज्य अमर स्वामी जी, पं० शान्तिप्रकाश जी, पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री और पं०सत्यमित्र शास्त्री ने शास्त्रार्थ की परम्परा को आगे बढ़ाया। इस कड़ी के सभी विद्वान् अब हमसे बिछुड़ चुके हैं। पं० सत्यमित्र के निधन से इस शास्त्रार्थ शृंखला के अन्तिम स्तम्भ भी अब नहीं रहे। उनके एकमात्र सुयोग्य पुत्र पं० ओमशंकर जी भी संस्कृतज्ञ हैं और भारत सरकार के रक्षामन्त्रालय में सेवा कर रहे हैं। पण्डित सत्यमित्र जी को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

—डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री
रीडर संस्कृत विभाग, रणवीर रणञ्जय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी (उ०प्र०)

वैदिक प्रचार को बढ़ावा दें

फूलचन्द मुलाना

वैदिक प्रचार मंडल, रामनगर अम्बाला कैंट के वार्षिकोत्सव के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए हरियाणा सरकार के शिक्षा मन्त्री श्री फूलचन्द मुलाना ने आह्वान किया कि वैदिक प्रचार को अधिक बढ़ावा देने की आवश्यकता है। मन्त्री जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने उस समय देश की बुराईयों को दूर करने के लिए संघर्ष किया था तथा छुआछूत एवं शिक्षा का प्रचार किया। इसलिए आर्य समाज की भूमिका प्रशंसनीय है।

मंडल के कार्य से प्रभावित होकर अपने ऐच्छिक कोष से ११०० रुपए अनुदान देने की घोषणा की।

समारोह की अध्यक्षता श्री भूपन जोहराव (उद्योगपति) ने की उन्होंने ५०००) रु० की घोषणा की।

१ दिन तक चलने वाले इस उत्सव पर जब के ब्रह्मा स्वामी [illegible] जी, स्वामी [illegible] जी, श्री महिपाल सिंह जी के उपदेश एवं श्री [illegible] आर्य के भजनों का उपस्थित जनसमूह पर बहुत प्रभाव पड़ा अन्तिम दिन १६ कन्याओं ने यज्ञ में हिस्सा लिया जो देखने योग्य था।

भूल सुधार

सार्वदेशिक साप्ताहिक के १३ नवम्बर के अंक में पृष्ठ १२ पर स्वामी [illegible] सरस्वती के प्रति शोक संवेदनाओं में बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा की शोक सम्वेदना छपी है इसमें नीचे विश्वनाथ सिंह आर्य प्रधान छपा है जबकि इस सभा के वास्तविक प्रधान श्री [illegible] सहाय जी हैं। कृपया सुधार कर पढ़ें।

संस्कृत एक जीवित परम्परा है

—युवराज

पिछले दिनों राजधानी दिल्ली में राष्ट्रीय संस्कृत-संस्थान के स्थापना-दिवस के समापन पर मानव संसाधन मन्त्री अर्जुनसिंह ने संस्कृत का महत्व बतलाते हुए तीन बातें कही थीं। उन्होंने कहा कि संस्कृत देश की एकता का आधार रही है। आज की सभी भारतीय भाषाओं को समझने के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। इसके साथ ही उन्होंने संस्कृत की तीसरी विशेषता यह बतलाई थी कि यह हमारे ज्ञान का भंडार रही है। गणित और ज्ञान-विज्ञान के दूसरे क्षेत्रों में की गई अनेक भारतीय उपलब्धियां संस्कृत भाषा में संग्रहीत हैं। अपने भाषण में अर्जुनसिंह ने दरअसल उन सभी बातों को समेट लिया था जो संस्कृत का महत्व बतलाते हुये हमारे नेता बार-बार कहते रहे हैं।

संस्कृत की ये विशेषताएं आज केवल औपचारिक रूप से दुहरा दी जाती हैं। अक्सर इन विशेषताओं को बताने वाले लोगों को भी इनका आशय ठीक से ज्ञात नहीं होता। संस्कृत भारत की एकता का आधार रही है, यह एक निर्विवाद तथ्य है। यह एक लम्बे समय तक भारत की शास्त्रीय भाषा रही है। इसलिये जब कभी धर्म, जाति या भाषा के आधार पर भारतीयों की एकता को तोड़ने के प्रयास हुये, संस्कृत भाषा ने ऐसे प्रयासों को सफल नहीं होने दिया। उदाहरण के लिये जब तुलनात्मक भाषा शास्त्र के सूत्रों और सिद्धान्तों से पश्चिम के भाषाशास्त्री भारतीय जातियों को भाषागत भेदों के आधार उत्तर की आर्य जाति और दक्षिण की द्रविड़ जाति के रूप में विभाजन करते हुये संस्कृत, लैटिन और ग्रीक को यूरोपीय परिवार में रखते हुये तमिल को इनसे इतर द्रविड़ मूल की भाषा घोषित कर रहे थे उस समय संस्कृत के अगाध साहित्य के आधार पर ही भारतीय भाषाओं के एक परिवार से सम्बद्ध होने की स्थापना सिद्ध की जा सकी थी। भारत की एकता में संस्कृत साहित्य के इस योगदान को अरविन्द ने बहुत ही साफ शब्दों में रेखांकित किया है। उनके अनुसार प्राचीन और अविच्छिन्न संस्कृत साहित्य का अस्तित्व ही हमें आर्य (भारतीय) भाषाओं की मूलभूत एकता को स्थापित करने योग्य बनाता है। यदि संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थ विद्यमान न होते और व्यवहारिक संस्कृत के आधार शब्द ही बचे रहते तो इन सम्बन्धों के विषय में किसको निश्चय हो सकता है?' संस्कृत भाषा की परीक्षा के आधार पर अरविन्द ने भारतीय भाषाओं के आर्य-द्रविड़ विभाजन के बखिये उधेड़ दिये थे। पश्चिमी भाषा शास्त्रियों का उन्हीं की शैली में जवाब देते हुये अरविन्द ने संस्कृत भाषा के आधार पर भारतीय भाषाओं की मूलभूत एकता सिद्ध की थी और भाषाओं के आर्य-द्रविड़ विभाजन को कपोल-कल्पित सिद्ध किया था।

भारत की एकता का रास्ता है यहां के लोगों का एक-सा स्वभाव एक जैसा संस्कार और एक-सी दृष्टि। भारत के अलग-अलग हिस्सों में रहने वाले लोगों की जीवन-शैली में, उनकी बोली में, देशकाल के अनुसार परिवर्तन आ सकते हैं लेकिन इस विश्व को देखने और समझने की उनकी दृष्टि एक ही रही है। संस्कृत के अपार साहित्य में हमें इस दृष्टि के स्पष्ट दर्शन होते हैं जहां विभिन्न सम्प्रदायों ने अपने विचारों के अनुसार तत्वों का विवेचन किया है, अपने ढंग से संसार को देखने की कोशिश की है। ये विभिन्न दृष्टियां सत्य के विभिन्न पहलुओं को अलग-ढंग से देखने का प्रयास है। यह बात भारत के सभी सम्प्रदाय मानते हैं और इसको स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त भी करते हैं। संस्कृत में उपलब्ध साहित्य भारतीयों की इस दृष्टि का जीवन्त प्रमाण है। भारतीय दर्शन का आस्तिक-नास्तिक विभाजन भारतीयों को धर्म के आधार पर बांटने का एक अन्य प्रयास था। इस प्रयास के द्वारा चार्वाक, जैन और बौद्ध दर्शन को नास्तिक दर्शन और सांख्य योग आदि षड् दर्शनों को आस्तिक दर्शन बताया गया है। लेकिन संस्कृत वाङ्मय में इस तरह के विभाजन का कोई प्रमाण नहीं मिलता, न ही जैन और बौद्ध दर्शन अपने आपको नास्तिक दर्शन मानते हैं। यह सही है कि जीवन-जगत को देखने की इन दर्शनों की दृष्टि भिन्न है, पर यह बात तो षड् दर्शनों पर भी समान रूप से लागू होती है। संस्कृत साहित्य के रहते जैन और बौद्ध दर्शनों को नास्तिक दर्शन कतई सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

यह सही है कि जैन और बौद्ध धर्म में प्राकृत और पाली भाषाओं में विपुल साहित्य का सृजन हुआ। इन भाषाओं में अनेक गाथाएं और पुराण रचे गये। लेकिन जहां तक शास्त्रीय सिद्धान्तों और मान्यताओं को स्थापित करने का सवाल उठा वहां जैनों बौद्धों को भी संस्कृत का ही सहारा लेना पड़ा। उदाहरण के लिये जैनों के करणानुयोग, चरणानुयोग और प्रथमानुयोग के ग्रन्थ तो ज्यादातर प्राकृत भाषाओं में उपलब्ध होते हैं पर द्रव्यानुयोग के ग्रन्थ संस्कृत ही में हैं। करणानुयोग के ग्रन्थ जैन भूमिका को दर्शाने वाले ग्रन्थ हैं। चरणानुयोग में आचार धर्म का प्रतिपादन किया गया है और प्रथमानुयोग में जैन कथा साहित्य का संकलन है। करणानुयोग, चरणानुयोग और प्रथमानुयोग का प्रयोग केवल जैन मतावलम्बियों तक ही सीमित था इसलिये इनके साहित्य की भाषाएं भी प्राकृत भाषाएं रहीं। लेकिन जहां सिद्धान्तों के प्रतिपादन का सवाल पैदा हुआ, जहां द्रव्यानुयोग सम्बन्धी रचनाओं के प्रणयन का प्रश्न उठा, वहां जैनों को भी संस्कृत को ही अपनाना पड़ा। संस्कृत के माध्यम से ही जैन लोग अपने सिद्धान्तों को बेहतर ढंग से समझ सकते थे और उन्हें अन्य मतावलम्बियों के सामने रख सकते थे।

जैनों में द्रव्यानुयोग सम्बन्धी संस्कृत रचनाओं की शुरुआत उमास्वामी के तत्वार्थ सूत्र से होती है। तत्वार्थ सूत्र का रचनाकाल निश्चित नहीं है मगर इसकी सबसे पहली टीका पांचवीं शताब्दी की है। अठारहवीं शताब्दी में आचार्य यशोविजय हुये, जिन्होंने जैन न्याय और सिद्धान्त को अपनी रचनाओं द्वारा खूब परिपुष्ट किया। पांचवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शताब्दी तक का द्रव्यानुयोग सम्बन्धी जैन साहित्य का अपार भंडार है। और यह साहित्य अधिकतर संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध है। इतने विशाल जैन संस्कृत साहित्य को देखकर कहा जा सकता है कि संस्कृत [illegible] की शास्त्रीय भाषा थी और इसी कारण बौद्धों और जैनों को भी अपने शास्त्रीय ग्रन्थ इसी भाषा में लिखने पड़े। (क्रमशः)

गाय को राष्ट्रीय पशु तथा पूर्ण गोहत्या बन्दी हेतु पूर्ण सहयोग दिया जायेगा।

शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द

नई दिल्ली १६ नवम्बर बद्रीकाश्रम के शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द जी सरस्वती ने गोरक्षा आन्दोलन के नेताओं को आश्वासन दिया कि गाय को 'राष्ट्रीय पशु" घोषित कराने, विदेशों में मांस निर्यात तथा केन्द्रीय कानून द्वारा सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये पूरा सहयोग व समर्थन प्रदान करेंगे।

भारत गोसेवक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रेमचन्द गुप्ता व सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महासचिव श्री जयनारायण खण्डेलवाल ने बद्रीकाश्रम के शंकराचार्य से भेंटकर प्रार्थना की कि वह अपने आध्यात्मिक प्रभाव का उपयोग कर सरकार व समाज को इस सद्कार्य के लिए प्रेरित करे।

जगद्गुरु जी ने कहा कि हम सक्रियता से गोहत्या बन्दी के कार्य में जुटेंगे और उसके लिए कोई उत्सर्ग भी करना पड़ा तो तत्पर रहेंगे।

—नरेन्द्र मोहन

पर्यावरण एवं यज्ञ

विश्वम्भर प्रसाद गुप्त, बन्धु

प्रस्तावना :

प्रकृति, संस्कृति और विकृति का भेद होता है। पशु पक्षी प्रकृति में जन्मते हैं और कुछेक को छोड़कर प्रकृति में ही मरते हैं। किन्तु मानव को ईश्वर ने विशिष्ट बुद्धितत्त्व बनाया है। वह प्रकृति में उत्पन्न होकर यदि संस्कृत हुआ तो देवत्व प्राप्त करता है और यदि विकृति में पड़ गया तो असुर राक्षस या नर-पशु हो जाता है।

भारत उन पुर्णाग्रह रहित, शान्ति-प्रेमी, दूरदर्शी, तत्त्ववेत्ता ऋषियों, मनीषियों, साधकों और चिन्तकों का देश रहा है जो पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान के प्रकाश की खोज में लगे रहे हैं—भारत=भा (ज्ञान का प्रकाश) की खोज में रत (लगा हुआ)। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय', (हे प्रभो, अज्ञानान्धकार से हटा ज्ञान के प्रकाश में ले चलो) से उनका लक्ष्य स्पष्ट होता है। उन्होंने अपने दीर्घकालीन अनुभवों के आधार पर मानव के जीने की एक श्रेष्ठ शैली विकसित की जिससे मानव देवता बन सके। यही भारतीय संस्कृति है जो सबसे पुरानी ही नहीं, विश्ववारा अर्थात सारे विश्व के लिए वरणीय भी है।

ऋषियों को प्राप्त सारा ज्ञान वैदिक संहिताओं में संगृहीत है, इसलिए भारतीय संस्कृति वैदिक संस्कृति कहलाती है। भारतीय ऋषियों ने आदि काल से ही सभी विषयों पर पर्यावरण और यज्ञ पर भी गम्भीरता से विचार किया है। इन दोनों ही विषयों के क्षेत्र बहुत व्यापक हैं। वस्तुतः ये दोनों अन्योन्याश्रित हैं। यहां इनके पारस्परिक सम्बन्ध की भी कुछ चर्चा की जाएगी और वह भी संक्षेप में, केवल वैज्ञानिक दृष्टि से। मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से विचार करना स्थानाभाव के कारण यहां सम्भव न होगा।

मानव और परिवेश या पर्यावरण

भारत ही नहीं, सारे संसार के विचारक इस पर सहमत रहे हैं कि मानव शरीर क्षिति जल पावक-गगन-समीर से ही बना है। ये ही हमारे पर्यावरण के तत्त्व भी हैं। परिवेश के घटक अगर अच्छे हैं तो हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, और वह परिवेश ही अगर बिगड़ गया तो हमारा स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है। परिवेश अच्छा या बुरा भी मानव के कारण ही होता है। वस्तुतः मनुष्य परिवेश को बनाता है, और परिवेश मनुष्य को। हम कहते हैं कि परिवेश प्रदूषित हो गया है और उसका कारण खोजने जाते हैं तो पता चलता है कि वह प्रदूषण भी स्वार्थान्ध मानव के अनुचित कार्य कलाप का ही परिणाम है।

वेद कहते हैं कि भूमि हमारी माता है, हम उसके पुत्र हैं और अन्नादि उगाने वाले पेड़ हमारे पालक हैं। इन्हें वैसा ही आदर भी मिलना चाहिए। वास्तव में सारे जीव, पशु, पक्षी, नदी, पहाड़ और सूर्य, चन्द्रमा आदि चर-अचर जो भी हैं उनमें ईश्वर का वास है—ईशावास्यमिदं सर्वम्। अत इन सबके प्रति देव बुद्धि रखना ही हमारी वैदिक संस्कृति हमें सिखाती है। इनको प्रदूषित करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इन्हें प्रदूषित होने से बचाना हमारा धर्म (कर्तव्य) है। ये दिव्य शक्तियां हैं जिनका दोहन होना चाहिए मानव के पालन पोषण के लिए हो। इनका शोषण करना, इनके साथ बलात्कार करना अनुचित है, अन्याय है, पाप है। हम गाय को माता कहते हैं कि उसका दोहन करें अपने पालन पोषण के लिए, न कि उसे ही मारकर खा जाएं। सोने का एक अण्डा रोज देने वाली मुर्गी को मारकर सारे अण्डे ले लेने की मानसिकता निरी मूर्खता है। गाय बैल, कच्छ-मच्छ-वाराह आदि सब की रक्षा होनी चाहिए। ये मारकर खा जाने के लिए नहीं हैं।

मानव और यज्ञ या यज्ञमय जीवन

डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन 'उपनिषदों की भूमिका' में कहते हैं, 'ऋग्वेद का ध्येय मानव को देवता बनाना है'। ऋषि कहते हैं कि वैदिक संस्कृति से मनुष्य देवता बनकर देवताओं में मिल सकता है।' वेद के अनुसार मानव के कल्याण का मार्ग, मानव के देवता बनने का साधन यज्ञमय जीवन ही है। गीता के अनुसार प्रजापति ब्रह्मा ने प्रजा की सृष्टि यज्ञ सहित ही की है, यज्ञ से मानव वृद्धि प्राप्त करता है और उसकी सब कामनाएं पूरी होती हैं। तात्पर्य यह है कि मानव-जीवन ही यज्ञ पर निर्भर है।

यज्ञ अनेक प्रकार के होते हैं। पांच महायज्ञ होते हैं, जिनमें से देव-यज्ञ पर्यावरण शुद्धि के लिए किए जाने वाले अग्निहोत्र ही हैं जिनसे रोग नष्ट होते हैं। यज्ञमय जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को प्रातः सायं अग्निहोत्र करने का निर्देश है। इससे मनुष्य में स्वार्थ त्याग की भावना बलवती होती है। हम सब मूत्र-विसर्जन और अन्य अनेक क्रिया-कलापों द्वारा पर्यावरण को प्रदूषित करते रहते हैं। इसलिए यह हमारा नैतिक दायित्व हो जाता है कि हम प्रातः सायं यज्ञ करके प्रदूषण दूर करते रहें, अन्यथा पाप के भागी होंगे। गीता का उपदेश है कि तुम यज्ञ के द्वारा देवों (दिव्य शक्तियों) को उन्नत करो और वे दिव्य शक्तियां तुम लोगों को उन्नत करें, इस प्रकार निःस्वार्थ भाव से एक दूसरे को उन्नत करते हुए तुम लोग परम कल्याण को प्राप्त होओगे। यज्ञ से उन्नत की हुई ये दिव्य शक्तियां तुम लोगों को बिना मांगे ही इच्छित भोग निश्चय ही देती रहेंगी।

यज्ञ द्वारा जिन दिव्य शक्तियों को उन्नत करने की चर्चा गीता में है, वे सब हमारे पर्यावरण के घटक ही हैं। पांच महाभूतों में प्रथम, भूमि हमारी माता है। इसी प्रकार जल (वरुण), वायु (मरुत), अग्नि भी देवता अर्थात दिव्य शक्तियां हैं, जिनके प्रति मानव को देव बुद्धि रखनी चाहिए। देव-यज्ञ (अग्निहोत्र) से इन सबकी उन्नति होती है, और फलतः सारा जीव जगत लाभान्वित होता है। किन्तु स्वार्थी मानव ने इन सबके शोषण का मार्ग अपना रखा है और बराबर उसी मार्ग पर चलता हुआ संकट में फंस रहा है। हम कुछ वृक्ष लगाकर या 'चिपको' आन्दोलन करके व्यापक वन-विनाश की क्षतिपूर्ति नहीं कर सकते, न उसे रोक सकते हैं। एक बड़ा वायुयान ही एक दिन में इतनी आक्सीजन खर्च करता है जितनी १७००० हेक्टार वन में तैयार होती है, और वन अब बचे ही कितने हैं। औद्योगिक अवशिष्टों का अन्धाधुन्ध शोषण भी एक आडम्बर ही है जिससे कल्याण की आशा नहीं है। स्वार्थी मानव तो शोषण के ही नये-नये तरीके खोजता रहता है। प्रभावी पर्यावरण शोधन के लिए तो घर-घर में दैनिक होम और गांव-गांव खेत-खलिहान, कल-कारखानों में समय-समय पर विशाल सामूहिक यज्ञ होने चाहिए। यही एकमात्र सफल समाधान है—तत्कालीन भी और चिरकालीन भी। इसी से मानसिकता भी सुधरेगी और मानव स्वार्थ छोड़ परहित की भी सोचेगा, जिससे पर्यावरण का व्यापक प्रदूषण रुकेगा।

अग्निहोत्र से द्रव्य का सर्वोत्तम उपयोग

भोगवादी अपसंस्कृति की चकाचौंध से अभिभूत स्वार्थी लोग कह बैठते हैं कि घृत आदि मूल्यवान सामग्री अग्नि की भेंट चढ़ा देना कहां की बुद्धिमानी है, अपनी कमाई का स्वयं भोग करना ही उचित है। किन्तु यह अर्थ काम-प्रधान पाश्चात्य संस्कृति की सीख है। भारतीय (वैदिक) संस्कृति तो धर्म-प्रधान है। मानव का धर्म है, यज्ञमय जीवन जीना—परहित सरिस धर्म नहिं भाई'।

(क्रमशः)

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वतः ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजने जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिये मात्र ५००) रुपये देकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बनें।—सम्पादक

प्रेरणा दायक संस्मरण

श्रीमती विमला श्रीवास्तव भिलाई

कुछ व्यक्तियों के प्रेरणादायक संस्मरण ऐसे होते हैं जिन्हें भूल पाना अत्यन्त कठिन ही नहीं अपितु असंभव होता है। आज मैं जिन महानुभाव के प्रेरणादायक संस्मरण आपको सुनाने जा रही हूँ उनका नाम है महाशय मुरलीधर छाबड़ा। सौभाग्य से वह मेरे पूज्य पिता जी थे। उनके संस्मरण सुनाने का अभिप्राय है उनके साहसी व्यक्तित्व व शिक्षाओं से सबको परिचित कराना जिन शिक्षाओं ने मेरे जीवन में आशातीत परिवर्तन ला दिया। आज मुझे अपने जीवन में आत्म-विश्वास व साहस का जो अंश अनुभव होता है उसका सारा श्रेय मैं अपने पिताजी को देती हूँ उन्होंने समय-समय पर अपने जीवन के संस्मरण सुना-सुना कर मुझे प्रेरित किया। सम्भव है आपको भी इससे प्रेरणा प्राप्त हो।

महाशय मुरलीधर जी (मेरे पिताजी) पाकिस्तान में खानपुर, में एक जमींदार थे। यद्यपि वे शिक्षा की दृष्टि से अल्पशिक्षित थे तथापि अत्यन्त तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी थे। समाज सेवा की भावना, सत्य और साहस उनमें कूट-कूट कर भरा था। मुझको उनके संस्मरण सुनना बहुत अच्छा लगता था। उनके कई संस्मरण मेरे मानस पटल पर अंकित है जो मुझे समय-समय पर याद आते रहते हैं तथा प्रेरित करते रहते हैं। उनमें से एक निम्नलिखित है—

"मैं बचपन से ही बहुत निर्भीक रहा हूँ क्योंकि जीवन में मुझे बहुत संघर्षों का सामना करना पड़ा है मैं जब नौ-दस वर्ष का था तो मेरे पिताजी का साया मेरे सिर से हट गया था यानि उनका देहान्त हो गया था। छोटी उम्र में शादी हो गई। छोटी उम्र में ही घर गृहस्थी तथा जमींदारी देखने का बोझ सिर पर पड़ गया। बड़ा जमींदार होने के कारण छोटी उम्र में यानि युवावस्था में ही शहर का मुखिया तथा पंचायत में पंच बन गया। पंचायत में मैं ही एक ऐसा था जो कुछ पढ़ा लिखा था। अतः पंचायत के अधिकांश कार्य मैं ही करता था और उसका खर्च भी मैं वहन करता था। इस कारण पंचायत में अपना काफी दबदबा था। एक बार की बात है जब शीला यानि तुम्हारी बड़ी बहिन की शादी थी। तब घनश्याम और मदन स्कूल में पढ़ते थे। वे दोनों झिझकते-झिझकते मेरे पास आये और बोले— 'चाचाजी! स्कूल में हमारे तीन-चार मुसलमान दोस्त हैं उन्हें भी हम शादी पर खाना खाने के लिये बुलाना चाहते हैं। क्या हम उन्हें बुला सकते हैं।

मैंने कहा—'हां! हां! क्यों नहीं। जरूर बुला लाना।"

स्वीकृति मिलते ही वे अपने तीन-चार दोस्तों को शीला की शादी के खाने पर बुला लाये और पंक्ति में सबके साथ खाना खाने के लिये बैठ गये। जैसे ही पंचायत के सदस्यों ने उन्हें अपने बराबर पंक्ति मे बैठे देखा तो वे आग बबूला होकर उठ गये और बोले—"मुखी! क्या ये मुसलमान लड़के भी हमारे साथ बैठकर खाना खायेंगे मैंने कहा—हां! क्यों आपको इसमें कोई आपत्ति है क्या। ये भी मेरे मेहमान हैं क्योंकि बच्चों के दोस्त हैं। वे इन्हें बुला लाये हैं। यह सुनना था कि वे ताव खा गये और बोले—"तुम तो आर्य समाजी हो इसलिए तुम्हें तो जात पांत व धर्म कर्म का कुछ फर्क नहीं पड़ता लेकिन हम तो आर्य समाजी नहीं हैं। यदि ये म्लेच्छ भी यहां खाना खायेंगे तो हम यहां खाना नहीं खायेंगे क्योंकि हमने अपना धर्म नष्ट नहीं करना।"

मैंने पंचायत को बहुत समझाया कि आखिर ये मुसलमान बच्चे भी इन्सान हैं। इनके यहां खाना खाने से आपका धर्म कैसे नष्ट हो जायेगा आदि परन्तु उन्होंने मेरी एक नहीं सुनी और वे अपनी जिद पर अड़े रहे आखिर मुझे कहना पड़ा—'ठीक है, यदि आप खाना नहीं खाना चाहते तो आपकी मर्जी परन्तु मैं इन्हें खाना खाने से उठाकर इनका अपमान नहीं कर सकता।"

यह उत्तर सुनकर सारी पंचायत बिना खाना खाये चली गई। अगले दिन मुझे किसी ने बताया कि तुमने पंचायत का अपमान करके अच्छा नहीं किया। अब तुम्हारा बिरादरी से हुक्का पानी बन्द कर दिया जायेगा। यह सुनकर मुझे हंसी आ गई। मैंने उत्तर दिया—"मुझे पंचायत की कोई परवाह नहीं। जब पंचायत की बैठक होगी तब मैं साफ-साफ कह दूंगा—"तुम सब लोग अनपढ़ व गलीज (मैले कुचैले) हो। तुम सब से तो ये मुसलमान लड़के कहीं अच्छे हैं जो पढ़े-लिखे हैं व साफ सुथरे रहते हैं। अच्छा है, मेरा पंचायत पर जो खर्च होता था बच जायेगा।"

जब मेरी यह बात सरपंच के कानों तक पहुँची तो वह डर गया। उसे मेरी आदत का पता था कि यह भरी पंचायत में ये सब बातें कह भी देगा। अतः उसने जब पंचायत की बैठक बुलाई तो पंचों ने सरपंच को बार-बार याद दिलाई कि मुरलीधर का हुक्का-पानी बन्द करने की बात करो परन्तु सरपंच ने इस विषय को नहीं छेड़ा और इधर-उधर की बातें करके बैठक बरखास्त कर दी। मैं उनकी कार्यवाही को देखकर मन ही मन हंसता रहा।

यह घटना सुनाने के बाद पूज्य पिता जी बोले—"बेटा! मेरी इस बात को सुनाने का उद्देश्य यह है कि यदि आप सच्चे हो तो फिर किसी से डरने की आवश्यकता नहीं। डरने वाले व्यक्ति को दुनियां और डराती है क्योंकि एक शेर है—

दुनियां मनदी जोरां नूं। (शक्तिशाली को)
लख लानत है कमजोरां नूं॥

सारांश है कि—

खुदी को कर बुलन्द इतना
अगर तू मर्तबा चाहे,
खुदा बन्दे से खुद पूछे,
बता तेरी रजा क्या है।

अर्थात्—यदि तुम ऊंचा उठना चाहते हो तो अपने व्यक्तित्व को इतना उच्च बनाओ व इतने निर्भय हो जाओ कि ईश्वर स्वयं तुमसे पूछे कि बताओ तुम्हारी क्या इच्छा है।

४-ए, स्ट्रीट-१, सैक्टर-४
भिलाई, दुर्ग (म० प्र०)

स्त्री–प्रस्थानत्रयी की दृष्टि में (३)

डा० शान्ति देवबाला

लोपामुद्रा अपने पति अगस्त्य से कहती है कि परमार्थ के साथ राज्य, शासन के ऐश्वर्य की कामना भी स्तुत्य है। हम दोनों मिलकर संसार का संग्राम जीतें। विश्ववारा का विश्वास है कि जैसे अग्नि अंधकार को नष्ट करती है। इसी प्रकार स्त्रियां भी अन्धकार को समाप्त करके प्रकाश फैलाने वाली बनें। जिस ग्राम, देश समाज की स्त्रियां सामाजिक चेतना से युक्त होती हैं वही समाज उन्नति करता है। अपाला आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करने वाली वह विदुषी थी जिसने अपना समस्त जीवन जगत का हित चिंतन, कल्याण साधन एवं अनाथ अपाहिजों की सेवा में बिताया। अपाला धीरे-धीरे उसी स्त्री के अर्थ में रूढ़ शब्द बनकर प्रतीक बन गई—जो गृहस्थ से मुक्त समाज के हित चिन्तन में अपना जीवन लगा देती है। स्त्री विविध विद्याओं में निष्णात हो सके, राष्ट्र समाज का चिन्तन कर सके इसलिए यदि वह वृद्-श्रती है तो गृहस्थ के जंजाल से मुक्त रहने का उसे पूरा अधिकार है। समाज को निरन्तर अपनी बुद्धि का दान देने वाली स्त्री दक्षिणा है। घुह नाम की ब्रह्मवादिनी तो यहां तक कहती है कि जब पुरुषों में कर्मत्याग की वृत्ति पनपने लगे वे धर्म मार्ग से विचलित होने लगें तो जिन स्त्रियों की बुद्धि ज्ञान-विज्ञान नैतिक आचरण से तेजस्वी और निर्मल हो चुकी है वे स्त्रियां मार्गदर्शन के लिए आगे आएं।

राष्ट्र पर संकट हो तो वीर स्त्रियां संग्राम में भाग लें, मुद्गल तथा उनकी मुद्गलानी का स्पष्ट मत है कि जो स्त्रियां शस्त्र विद्या में निपुण होवें संग्राम में अवश्य भाग लें। सुबोधा, विश्पला, अस्त्र-शस्त्र संचालन में निपुण स्त्रियां सेनापति भी बन सकती हैं।

इस प्रकार कह सकते हैं कि समस्त धर्मों के मूल वेद तेजस्विनी प्रखर नारी की ही छवि प्रस्तुत करते हैं। दीन हीन विवश अपमानित, शोषित अव-मानना का शिकार अभ्यावित नारी का यहां कोई स्थान नहीं है।

अब उपनिषदों को लें। वेदों में जहां स्थान-स्थान पर स्त्रियों के पारि-वारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, तथा धार्मिक कृत्यों तथा अधिकारों कर्तव्यों का उल्लेख है वहां उपनिषदों में ऐसा वर्णन शून्य के ही बराबर है क्योंकि उपनिषद की भावभूमि ही भिन्न है। स्त्री पुरुष का जहां भेद समाप्त होता है वहीं से ब्रह्मविद्या आरम्भ होती है। इसलिए उपनिषदों में पुरुषों के अधिकारों का उल्लेख नहीं है। पर इस भिन्न भावभूमि पर ही उभरती है याज्ञवल्क्य से जीवन का वास्तविक मर्म पूछने वाली मैत्रेयी, जनक की भरी सभा में याज्ञवल्क्य को चुनौती देता गार्गी वाचक्नवी, उपनिषदों का सारा आह्वान उत्तिष्ठत जाग्रत-प्राप्य वरान्निबोधत, सत्यं वद धर्मं चर. चरैवेति स्त्री-पुरुष के लिए समान रूप से है। पर इन ऋषि उपनिषदकारों की स्त्रियों के प्रति मूल दृष्टि क्या थी, इसके सन्दर्भ में दो प्रसंग अत्यन्त सारगर्भित हैं। प्रश्नोपनिषद में ऋषि पिप्पलाद से जब कबन्ध ने प्रश्न किया कि इस सृष्टि प्राण और रयि को दो शक्तियों से निरन्तर क्रियाशील रहती है। प्राण पुल्लिंग है और रयि स्त्रीलिंग, एक धनात्मक शक्ति है एक ऋणात्मक, पर ऋषि एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहस्य का उद्घाटन करते हैं कि दोनों शक्तियां सापेक्ष हैं। उत्तरोत्तर विकास में एक स्तर पर जो धनात्मक शक्ति है वह अगले स्तर पर ऋणात्मक बन जाती है और ऋणात्मक धनात्मक। यथा पृथ्वी और सूर्य के उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाएगी। पृथ्वी और सूर्य के युग्म में सूर्य धनात्मक शक्ति है पृथ्वी सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करती है। परन्तु हमारा सूर्य स्वयं बृहत सौरमण्डल के अन्य सूर्य से ऊर्जा पाता है इस प्रकार प्राण और रयि का सृष्टि के विकास में समतुल्य हिस्सा है. दोनों की अनिवार्य भूमिका है। इस आधार पर स्त्री शक्ति सृष्टि के विकास में अपरिहार्य शक्ति है।

दूसरा प्रसंग बृहदारण्यक उपनिषद के छठे अध्याय में है जहां स्पष्ट वर्णन है "स्त्री मानो एक पवित्र यज्ञ है—उसका जन्म स्थान ही वेदि है—जो स्त्री को यज्ञ के समान पवित्र समझकर उसके साथ बर्तता है, वह स्त्रियों के सुकृत को पा लेता है—जो इस रहस्य को न जानकर उससे बर्तता है उसका सुकृत क्षीण हो जाता है।' स्त्रियों के प्रति इससे अधिक आदर का भाव और किन शब्दों में संजोया जा सकता है—यह कहना असम्भव ही है। इतना आदर भाव रखकर कौन स्त्रियों को दूसरी श्रेणी का नागरिक मान सकता है।

अब अपने प्रस्थानत्रयी के तीसरे धर्मग्रन्थ गीता को लें। गीता के रचयिता महर्षि व्यास हैं और गीता महाभारत के भीष्म पर्व का एक भाग है। भीष्म पर्व के पच्चीस से बयालीस तक जो अठारह अध्याय हैं वे ही गीता कहलाते हैं। गीता का ज्ञानामृत अर्जुन के लिए ही नहीं है बल्कि अमरत्व के हर एक पिपासु जिज्ञासु के लिए है। सारी गीता श्रीकृष्ण के मुख से कहलाई गई है अतः गीता श्रीकृष्ण, योगेश्वर कृष्ण, सोलह कलाओं वाले विकसित मानव का जीवन दर्शन है। गीता में भी स्त्री-पुरुष को समान धरती पर रखा गया ग्रन्थ है—एक जीवनदर्शन है जो सांसारिक कर्तव्यों की पूर्ति करता हुआ अध्यात्म को प्राप्त करता है। गीता के दो प्रसंगों पर ध्यान दें तो गीता गायक श्रीकृष्ण या गीता के रचयिता महर्षि वेदव्यास की स्त्रियों के प्रति अवधारणा स्पष्ट हो उठती है। प्रथम अध्याय में अर्जुन के मुख से कहलाया गया है कि जब स्त्रियां भ्रष्ट हो जाती हैं तो समाज का क्षय होने लगता है। सारा समाज वर्ण-संकर हो जाता है।

> अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
> स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः॥

इस प्रकार अपरोक्ष रूप से ही सही समाज में नैतिकता पालन करने का विशिष्ट उत्तरदायित्व स्त्रियों पर आ जाता है। पर गीता में एक स्पष्ट प्रसंग दसवें अध्याय के चौतीसवें श्लोक में आता है—जहां ब्रह्म की विभूतियों का वर्णन करते हुए कृष्ण कहते हैं—

> कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।

हे अर्जुन! नारियों में मैं कीर्ति, लक्ष्मी, वाणी, स्मृति, मेधा धृति और क्षमा हूं। इसके क्या अर्थ हैं यही न कि समाज संस्कृति की धारा को निरन्तर रखने के लिए जिन धनात्मक शक्तियों की आवश्यकता है, वह मूलतः स्त्रियों में ही है। मानव समाज की जो कीर्ति है, सुकृत्यों के यश की परम्परा है, जो श्री है, ऐश्वर्य की लक्ष्मी विभूति है, समाज का समस्त आपसी व्यवहार की आधारशिला वाणी है, निरन्तर पुरानी परम्पराओं की रक्षा करती हुई मानव संस्कृति की स्मृति की धारा है, समाज में सत्य असत्य का विवेक करने वाली मेधा बुद्धि है. समाज को विकसित पुष्पित करने के लिए जो धीरज, धृति की भावना है और धरती के समान समस्त दुःखों अवसादों के ऊपर उठकर क्षमा करने का साहस यह सब स्त्री विभूति है। इन सात वृत्तियों से कोई भी मानव समाज ऊपर उठ सकता है निश्चय ही स्त्री आदर के योग्य, संस्कृति की पोषिका, विवेक की पारखी, सत्य-असत्य का निर्णय कर पाने वाली समाज की पूर्ण इकाई है, व्यक्ति है, नागरिक है, सामाजिक प्राणी है।

यहां केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एक अत्यन्त आधुनिक प्रोफेसर अनु-श्रेविज्ञविद डा० एलन विल्सन को उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं हो पा रहा, जिन्होंने साक्ष्य सहित प्रमाणित किया है कि आदिम चित्रलिपियों के आविष्कार से लेकर खेती और मृत्पात्र तक सब स्त्री का दिया हुआ है। उसी ने मिट्टी में फसल का पहला बीज बोया, उसी ने पहले भाषा को जन्म दिया तथा उसीने मानव जाति को सभ्यता तथा संस्कृति का ककहरा पढ़ाया। संभवतः मातृत्व और शिशुपालन की अनिवार्यता, अपनी शारीरिक कोमलता तथा संवेदनशीलता के कारण धीरे-धीरे उसे हर कदम पर वर्जनाओं का शिकार होना पड़ा, अपमान और शोषण सहना पड़ा। अब यह तर्क इतना दोहराया जा चुका है कि स्त्री को ईश्वर ने बनाया ही ऐसा है कि वह तन-मन से पुरुष के समकक्ष कभी आ ही नहीं सकती, कि स्वयं स्त्री ने इसमें विश्वास करना शुरू कर दिया है, यही उसकी कमजोरी का मूल कारण है। यह तर्क शारीरिक शक्ति के कारण बलवत्तर होता गया और सामाजिक रूढ़ियों, परम्पराओं, अंधविश्वासों, संकट या युद्धजनित परिस्थितियों, लम्बे समय तक मुगल शासन की पराधीनता, मुसलमानों की स्त्री जाति के प्रति अवमानना

(शेष पृष्ठ ८ पर)

स्त्री-प्रस्थानत्रयी की दृष्टि में

(पृष्ठ ७ का शेष)

की विचार दृष्टि, पश्चिमी संस्कृति की उपभोग संस्कृति के कारण स्त्री को भोग्या मानने की वृत्ति ने भारत में स्त्रियों की स्थिति को निम्नतर बना दिया है।

हमारे धर्मशास्त्रों में सिद्धांततः स्त्री के प्रति कोई अवमानना नहीं है। मध्यकाल में पराधीनता के कारण जब स्त्री के प्रति अवमानना अपनी चरम सीमा पर थी तब भी भारतीय संस्कृति में अर्द्धनारीश्वर की संकल्पना स्थिर रही और जीवन के तीनों बड़े आधार ऐश्वर्य, ज्ञान तथा शक्ति की देवियां लक्ष्मी, सरस्वती एवं दुर्गा स्वतन्त्र देवियां ही रहीं। अन्य किसी धर्म में चाहे वह क्रिश्चियन धर्म हो या इस्लाम, देवियों की स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। इस दृष्टि से हमारे पुरातनकाल की संस्कृति की मूल विचार दृष्टि को नष्ट नहीं कर पाए। १९वीं सदी के पुनर्जागरण के बाद तो वेदों, उपनिषदों तथा सभी धर्म शास्त्रों को तर्क की कसौटी पर कसा जाने लगा और निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि अनार्ष धर्म ग्रन्थों की बात छोड़ दें तो जो हमारे आर्ष ग्रन्थ हैं विशेषकर प्रस्थानत्रयी तो स्त्रियों को पुरुषों के समकक्ष ही नहीं थोड़ा ऊपर ही माना गया है।

इस प्रकार न तो हमारे धर्मग्रन्थ, न शास्त्र, न हमारी सांस्कृतिक विरासत, न हमारा मूल चिन्तन, न हमारी मनीषा और न ही जीवन मूल्य स्त्री को पुरुष से हेय मानते हैं—या उसे निम्न दोयम दर्जे का नागरिक मानते हैं और अब तो हमारा कानूनी ढांचा हमारा संविधान, स्त्री को एकदम बराबर के अधिकार देता है। स्त्री पर कोई धार्मिक या सांस्कृतिक निषेध नहीं है। यह केवल रूढ़ि या परम्परायें पूर्वाग्रह सामाजिक परिपाटियां, पुरुष का दंभ अहं और पूर्वाग्रह हैं, जो स्त्री को उठने नहीं दे रहा और यह उठना तभी होगा जब वह स्वयं उठेगी। परिवर्तन का बीज सदैव व्यक्ति के अन्दर ही कहीं प्रस्फुटित होता है, सत्य के द्वार सदैव अन्दर से ही खुलते हैं, इसलिए उसे स्वयं ही उठना होगा और लक्ष्य की ओर बढ़ना होगा।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

वह उठे और जागे तो कोई धर्म, कोई शास्त्र, कोई संविधान उसका मार्ग अवरुद्ध नहीं करेंगे यह निर्विवाद है।

—महानगर, लखनऊ

वैदिक संगोष्ठी

आर्य कन्या महाविद्यालय अम्बाला कैन्ट द्वारा एक वैदिक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में आप अपना विद्वत्तापूर्ण लेख पढ़ने के लिये आमन्त्रित है। गोष्ठी में विचारणीय विषय है—

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति
(वैदिक साहित्य के विशेष सन्दर्भ में)

आप से निवेदन है कि इस विषय से सम्बन्धित किसी शीर्षक पर आप अपना शोध लिखें तथा इसको संगोष्ठी में प्रस्तुत करने की स्वीकृति यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें।

संगोष्ठी का समय २८ से ३० नवम्बर १९९४ प्रस्तावित है। इसका स्थान आर्य कन्या महाविद्यालय अम्बाला कैन्ट (हरियाणा) होगा।

संगोष्ठी में प्रस्तुत किये जा सकने वाले शोध लेखों के कुछ प्रस्तावित शीर्षक आपकी सेवा में दिये जा रहे हैं अपनी सुविधानुसार इस विषय से सम्बन्धित कोई अन्य भी उपयुक्त शीर्षक आप विचार कर सकते हैं।

भारत की प्राचीन शिक्षा-पद्धति
(वैदिक साहित्य के विशेष सन्दर्भ में)

शोध लेखों के लिये कुछ प्रस्तावित शीर्षक—

१. वैदिक तथा अन्य प्राचीन साहित्य में शिक्षा की अवधारणा। २. वैदिक संहिताओं में शिक्षा विषयक तत्त्व, ३. ब्राह्मण साहित्य में शिक्षा विषयक तत्त्व, ४ आरण्यक एवं उपनिषद् साहित्य में शिक्षा विषयक तत्त्व, ५. शिक्षा का स्वरूप और उसकी आवश्यकता, ६. शिक्षा का आरम्भ और उसकी सामान्य परम्परा, ७. वर्तमान समय में प्राचीन शिक्षा पद्धति की प्रासंगिकता, ८. कुलपति, आचार्य, उपाध्याय और गुरु पदों की व्याख्या, ९ आचार्यों की योग्यता, आयु, अनुशासन और पारिश्रमिक १०. शिष्य की योग्यता, आयु, अनुशासन और गुरु-शिष्य सम्बन्ध, ११. शिक्षा-शुल्क तथा विद्यालयों का प्रबन्ध, १२. शिक्षा और वर्णाश्रम विचार, १३. शिक्षा सम्बन्धी संस्कार, १४. प्राचीन काल की शिक्षा विधि और अध्ययन की पद्धति, १५. शिक्षा-सत्र, अनध्याय, १६ स्त्री-शिक्षा और सह-शिक्षा, १७ प्राचीन काल के गुरुकुल और उनका रहन-सहन. १८, शिक्षा के विषय और विभिन्न विभाग, १९. विभिन्न कालों में शिक्षा, २०. शिक्षा-पद्धति के सम्बन्ध में विदेशी यात्रियो के विवरण, २१. विभिन्न तकनीकी विषयों की शिक्षा, २२. विभिन्न कलाओं की शिक्षा, २३ प्राचीन काल के विश्वविद्यालय-तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशील आदि, २४. वर्तमान युग में प्राचीन शिक्षा पद्धति का पुनः जागरण और उसका वर्तमान समाज पर प्रभाव।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०७५/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२७-११-१९९४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० U (C)९९
R.N. 626/57 Licensed to post without prepayment License No: U (C) 99 Post in N.D.P.S.O.on 24,25 11 1994

विशेष गोष्ठी

आर्य कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला

दिनांक २७ नवम्बर सायं ५ बजे

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स कमला नगर नई दिल्ली में २७ नवम्बर को सायं ५ बजे आर्य कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के सम्बन्ध में विचार किया जायेगा। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा स्वामी दीक्षानन्द जी विशेष मार्ग दर्शक के रूप में पधार रहे हैं। आर्य समाज के अधिकारियों तथा आर्य कर्त्ताओं से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर इस आयोजन को सफल बनायें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

अथर्ववेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

सवना। आर्य वीर दल विद्यालय (आर्य निर्माण केन्द्र) द्वारा अथर्ववेद पारायण यज्ञ माघ में पारिवारिक रूप से आयोजित किया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति गोवर्धन पब्लिक विद्यालय में की गयी जिसमें समस्त यजमानों सहित अन्य धर्म प्रेमी सज्जनों ने भी यज्ञ की महिमा से प्रेरित होकर यथाविधि शुभ कर्मों को निरन्तर करते रहने का विश्वास प्रकट किया। पूर्णाहुति के बाद विद्यालय के बच्चों ने ईश्वर भक्ति के गीतों से [illegible] धार्मिक हृदय स्पर्शी नारों द्वारा व्योम को गुंजायमान किया।

आर्य समाज पुष्पांजलि एन्क्लेव का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पुष्पाञ्जलि एन्क्लेव दिल्ली-३४ का वार्षिकोत्सव २८ नवम्बर से ४ दिसम्बर ९४ तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। प्रतिदिन प्रातः ७ से ९ बजे तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ होगा। रात्रि को ७-३० से ८-३० बजे तक श्री श्याम राघव के भजन होंगे तत्पश्चात ८-३० से ९-३० बजे तक आचार्य अर्जुनदेव जी वर्णी (पातञ्जल योग महाविद्यालय) के प्रवचन होंगे। शनिवार ३-१२-९४ को महिला सम्मेलन होगा। रविवार ४ दिस. ९४ को ११ कुण्डीय महायज्ञ की पूर्णाहुति होगी और ११ बजे से १२-३० बजे तक, संस्कृति रक्षा पर सार्वजनिक सभा होगी। अधिक संख्या में पहुंचकर धर्म लाभ उठाएं।

वेद प्रचार कार्यक्रम

आर्य समाज सिलीगुड़ी के तत्वावधान में २१ सितम्बर से ५ अक्तूबर तक वेद प्रचार कार्यक्रम नेपाल, दार्जिलिंग एवं सिक्किम में रखा गया। दो अक्तूबर से प्राचीन गुरुकुल संस्कृत विद्यालय एवं ग्रामवासियों के सहयोग से रखा गया। कार्यक्रम में अनेक प्रमुख विद्वान उपस्थित थे।

कार्यक्रम का समापन महिला आर्य समाज की प्रधाना ब्र० गीता आर्या ने किया उसके बाद प्रसाद वितरण किया।

प्लेग से बचाव हेतु निःशुल्क दवाओं का वितरण

आर्यसमाज आर्यनगर तथा आर्यवीर दल के आर्य कर्त्ताओं द्वारा प्लेग से बचाव हेतु निःशुल्क दवा वितरण का कार्य तूफानी गति से किया। लगभग चालीस हजार लोगों को प्लेग की दवा निःशुल्क वितरित की गई। यह परोपकार का कार्य महात्मा अभय मुनि की देख रेख में आर्य समाज तथा आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं ने किया।

आर्य समाज टांडा (फैजाबाद) का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज टाण्डा फैजाबाद का १०३ वां वार्षिकोत्सव १४ नवम्बर से १८ नवम्बर तक निर्मलशाला आर्य महिला महाविद्यालय के प्रांगण में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ के अतिरिक्त संस्कृत सम्मेलन, वेद सम्मेलन, आर्य सिद्धांत सम्मेलन शंका समाधान तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर श्रोताओं को लाभान्वित किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

आर्य महिला सभा दिल्ली द्वारा शोक श्रद्धांजलि

श्रीमती प्रवला मेहता की अध्यक्षता में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी जी के आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए उन्हें क्रान्तिकारी विचारक समाज सुधारक, वैदिक संस्कृति के संरक्षक एवं समर्पित वीतराग संन्यासी बताया। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्रीमती प्रवला मेहता ने कहा कि आर्य जगत को लगभग चार दशकों से अधिक समय तक कुशल नेतृत्व प्रदान करने वाले कर्मठ संन्यासी का देहावसान आर्य समाज की एक अपूर्णीय क्षति है। साथ ही दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गयी।

आर्य समाज सागरपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सागरपुर नई दिल्ली का नौवां वार्षिकोत्सव २५ से २७ नवम्बर ९४ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। समारोह में प्रतिदिन प्रातः ७ बजे से १० बजे तक यज्ञ तथा भजनोपदेश होंगे तथा दोपहर तथा सायंकाल को भजनोपदेश एवं प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया है। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव, सभामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, श्री सूर्यदेव जी, महात्मा धर्मपाल, डा० धर्मपाल, डा० महेश वेदालंकार, डा० शिवकुमार शास्त्री श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय सहित अनेकों प्रतिष्ठित विद्वान पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनावें।

जिलाधिकारी फिरोजाबाद द्वारा आर्य वीर पुरस्कृत

दिनांक ५ अक्तूबर १९९४ को लोक राष्ट्रीय इण्टर कालेज जसराना (फीरोजाबाद) में समायोजित स्काउट्स एवं गाइड्स की जिलाधिकारी श्री पी०के० महान्ति ने आदर्श जनता इण्टर कालिज जसराना (फीरोजाबाद) के छात्र राहुल आर्य, अतुल आर्य सुपुत्र श्री ब्रजपालसिंह आर्य, सन्दीप आर्य सुपुत्र श्री चन्द्रसिंह को योगासनों का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के वास्ते पुरस्कृत करते हुए कहा कि शरीर को पूर्ण स्वस्थ रखने के लिये योगासनों का प्रयोग परमावश्यक है। समापन समारोह में जिला विद्यालय निरीक्षक डा० काशीनाथ खन्ना पुलीस अधीक्षक हरीशचन्द्र कुमार, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी रामगोपालसिंह यादव, एस०डी०एम० जसराना, तहसीलदार, सी०ओ० जसराना जनपद के समस्त प्रधानाचार्य, भूतपूर्व विधायक श्री विष्णुदयाल वर्मा, आर्य वीर दल के जिला संचालक श्री ब्रजपालसिंह आर्य एवं सम्भ्रान्त नागरिक उपस्थित थे।

निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज बी०टी० रोड खतौली जि० मुजफ्फरनगर का वार्षिक चुनाव २५-९-९४ को श्री सत्येन्द्र चन्द्र प्रधान जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा मुजफ्फरनगर की अध्यक्षता में पूरे वैधानिक रूप से सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये।

श्री डा० सत्येश्वर गौतम प्रधान, श्री डा० हरीराम् उपप्रधान श्री कृष्णचन्द्र मन्त्री श्री रामकिशन सैनी उपमन्त्री श्री योगेन्द्रकुमार कोषाध्यक्ष रघुनाथ प्रसाद त्यागी पुस्तकाध्यक्ष श्री मिट्ठनलाल संरक्षक।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष : ३२७४७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ४१] दयानन्दाब्द १७० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५ मार्गशीर्ष शु० २ स० ५०५१ ४ दिसम्बर १९९४

अभिनन्दन सभा प्रतिज्ञा सभा में परिवर्तित

आर्यावर्त के लिए हम हर प्रकार के त्याग को तैयार रहें

—वन्देमातरम् रामचन्द्रराव

हैदराबाद, २० नवम्बर। आध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान मे सिकन्दराबाद आर्य समाज के विशाल भवन मे समचे प्रदेश की आर्य समाजो की ओर से एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता भारतीय सविधान की निर्माण सभा (Constituent assembly) के सदस्य श्री अल्लाडी कृष्ण मूर्ति के सुपुत्र श्री अल्लाडी कुप्पु स्वामी ने की जो कि आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नव नियुक्त प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव के अभिनन्दन हेतु आयोजित इस सभा को श्री वन्देमातरम् के आग्रह पर ही प्रतिज्ञा सभा घोषित कर दिया गया।

बैठक मे सर्वप्रथम श्री वन्देमातरम ने कार्यकर्त्ताओ को निम्न सामहिक प्रतिज्ञा करवाई।

"हम सब आर्य हैं, हमारा देश आर्यावत ही बना रहेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम हर प्रकार का त्याग करने को सदैव तैयार रहेगे।

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव ने अपने सम्बोधन मे उक्त प्रतिज्ञा को दोहराते हुए कहा कि आर्यो की सामाजिक व्यवस्था जिसे हम वर्ण व्यवस्था कहते हैं,जब से टूटी है तभी से हमारा देश और हमारी सस्कृति टूटने लगी है।

आज की स्थिति विचित्र है, पहले अग्रेजो ने मजहब के नाम पर हमे विभक्त करके अपने शासन को चिर स्थाई बनाना चाहा था और लगभग २०० वर्ष तक उसे बनाए भी रखा तो आज के राजनीतिज्ञ भी जात-पात के नाम पर देशवासियो को विभक्त करके अपना राज्य बनाए रखना चाहते है, देश की एकता की बात किसी के पास नही है।

श्री वन्देमातरम् ने कहा कि 'मैं चाहता हू कि आज हम सब प्रतिज्ञा करें कि इस स्थिति को बदल कर जातिवाद को दफना कर, पुन वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे जहा जन्म से नही अपितु कर्म से प्रवृत्ति से और गुणो के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति को समाज मे उचित स्थान मिले। केवल इसी

सेवा निवृत्त चीफ जस्टिस श्री अल्लाडी कुप्पु स्वामी प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव का अभिनन्दन करते हुये।

माग से हम विघटनात्मक शक्तियो का दमन तथा अपने देश की अखण्डता की रक्षा कर सकते है।

श्री रामचन्द्रराव ने कहा कि आज आर्य समाजियो से प्राय यह पूछा जाता है कि क्या आर्य समाज राजनीति मे दिलचस्पी रखता है या नही। हम राजनीति मे दिलचस्पी रखते हैं अन्यथा हम स्वामी दयानन्द के शिष्य कहलाने योग्य नही। क्योकि स्वामी दयानन्द ने सत्याथ प्रकाश का छटा समुल्लास इसी विषय को समर्पित किया है, परन्तु यहा यह स्पष्ट करना भी जरूरी है कि यह दिलचस्पी प्रेरणात्मक राजनीति की है स्वय भाग लेने की नही।

अपने देश मे प्रजातन्त्र का आज विकृत रूप पैदा हो चुका है जहा लोकसभा की एक सीट जीतने के लिए एक करोड रुपये से अधिक धन की आवश्यकता होती है। धन की व्यवस्था उन अन्तर्राष्ट्रीय ताकतो के इशारे पर होती है जो देश मे अस्थिरता और अराजकता

(शेष पृष्ठ ? पर)

संपादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

जीवन की समस्याओं का सच्चा समाधान

पण्डित रामचन्द्र देहलवी

जीवन की समस्याओं का समाधान किस धर्म से हो सकता है, यह विषय आपके सम्मुख रखना चाहता हूं। हर एक धर्म वाला यह जानना चाहता है कि जीवन की समस्यायें क्या हैं तथा उनका समाधान क्या है। इसके लिए एक पृष्ठभूमि की आवश्यकता है। जीवन क्या है, लोग यह समझते ही नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि अग्नि. जल, वायु आदि भूत इकट्ठे रखे और जीवन बन गया। जब जीवन समाप्त होगा तो ये सब भूत अलग-अलग हो जायेंगे। परन्तु भूतों के इकट्ठे करने से जीवन नहीं बनता। जब जीवन ही नहीं तो समस्यायें भी नहीं और समाधान भी नहीं।

जीवन के लिए यह बात याद रखने की है—

"ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:।" (य० २५ । १३)

जो आत्मज्ञान का दाता तथा बल-प्रदाता है। जिसकी उपासना सब करते हैं। मेरा अभिप्राय मन्त्र के इतने ही खण्ड से है। हम अपने-आप को नही जानते। हमने शरीर को ही आपा समझा हुआ है। भगवान् कहता है समझो। जिस दुकानदार की अपने गल्ले की रोकड़ का पता नहीं तो दिन भर बिक्री करने के पश्चात् उसे सायंकाल दिनभर की बिक्री का क्या पता?

दर्शनशास्त्र वेत्ताओं ने भूतों का अध्ययन करके यह समाधान किया है कि "न भूतचैतन्य"—अग्नि. जल, वायु आदि भूत चेतन नहीं है, जड़ हैं। जब भूतों मे जान है तो उनके मिलाने से भी उनमें जीवन नहीं आ सकता। अग्नि, वायु आदि जड़ हैं, आकाश भी जड़ है। यदि अग्नि अथवा वायु में आकाश मिलाया जावे तो उनमें जीवन नहीं आ सकता। जरा ध्यान दीजिये, एक उदाहरण से यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जायेगी। एक स्कूल मे Entrance को पढ़ाने के लिए एक अध्यापक की आवश्यकता है। बहुत खोज करने पर भी Entrance को पढ़ाने के लिए अध्यापक नही मिलता। प्रबन्धक सोचते हैं १० मिडल पास अध्यापक ले आयें। परन्तु १० मिडल पास वालों के ज्ञान का Total मिडल ही होगा। इसी प्रकार जिनमें ज्ञान नहीं, उन दोनों को मिलाने से उनमें ज्ञान आ जाना असम्भव है।

जीवन क्या है! जीवन की समस्यायें क्या हैं तथा उनका समाधान क्या है? यह वैदिक धर्म से ही मालूम होता है। वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य मतावलम्बियों को जीवन का अर्थ ही पता नही। मुसलमानों से पूछा, जीवात्मा क्या है? उत्तर मिला, खुदा का हुक्म। मुजस्सम क्या कभी हुक्म हुआ करता है? ईसाई कहते हैं "It is merely a breath" प्राण ही जीवन है। परन्तु ये दोनों बाते ही अशुद्ध हैं।

जीवन प्राणों का प्राण है। जहा आत्मा है वहां परमात्मा है, परन्तु जहां परमात्मा है वहां आत्मा का होना आवश्यक नही। वैदिक धर्म में जब कोई गृहस्थ नवजीवन को बुलाता है तो उसके लिये चेष्टा करता है। यहीं से जीवन आरम्भ होता है। जब गृहस्थ नया जीवन बुलाता है तो प्रार्थना करता है, हम देश की उन्नति करना चाहते हैं। हम शरीर से बलवान्, आत्मा से पवित्र तथा मेधावी पुत्र चाहते हैं। पुत्र बुद्धि मे गावदुम न हो। हां, कुतुबमीनार की तरह हो सकता है. ऊपर से सुकड़ा तथा नीचे से चौड़ा। वह उन्नति की ओर जाये अवनति की ओर नहीं, अच्छे संस्कारों वाला हो।

नव जीवन आ गया। उसे पवित्रता से बुलाया गया। विवाह के मन्त्रों में सन्तान के लिए प्रजा शब्द आया है। ऐसा पुत्र आया जो खानदान का कल्याण करने वाला हो। Ui de-ired न हो—अनिच्छित न हो। जो चाहा नहीं होता वहा जीवन उल्टा हो जाता है तथा जीवन की समस्यायें भी उल्टी हो जाती हैं। उदाहरणतः कुछ लड़के गेंद खेल रहे थे। एक लड़के ने अपने साथी को गेंद मारी। गेंद गूलर में जा लगी और गूलर गिर पड़ी। यह गूलर अनिच्छित थी। विशेष उद्देश्य से बच्चों को बुलाएं, खेल मे बच्चे न आयें।

एक अंग्रेज लेखक ने लिखा है—"Indians donot know how to live and bring up their children" माता को गर्भाधान के पश्चात् विशेष कर सावधान रहना है। बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़कर बल. बुद्धि पराक्रम तथा आरोग्यता प्रदान करने वाले दूध. घृत श्रेष्ठ अन्न आदि का सेवन करे। यदि माता ऐसा नहीं करती तो बुनियाद अच्छी नहीं बनती माता को ऐसे कार्य करने चाहियें जिससे बच्चे के सस्कारों में अच्छे गुणों की वृद्धि हो। श्रोतों से, अच्छी बातें सुनें तथा नेत्रों से अच्छे दृश्य देखें। परन्तु आज उल्टा हो रहा है। सिनेमा ने सर्वनाश कर दिया है। सिनेमाओं द्वारा गन्दे गाने गाये जाते हैं। तथा गन्दे दृश्य दिखाये जाते हैं। यदि सिनेमाओं का सुधार होकर इनसे ऐसे दृश्य दिखाये जायें कि माता गर्भ के समय कैसे रहे, बच्चों का पालन किस प्रकार करे तथा बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा दे तो देश का बहुत कल्याण हो सकता है।

पहले ब्राह्मण की उत्पत्ति होती है। जिस समय बच्चा पैदा होता है तो शिर पहले आता है। यदि कहीं उल्टा हो जाये तो माता तथा बच्चा दोनों का जीवन संकट में पड़ जाता है। बच्चा बाहर आया। अब माता की गोद क्रीड़ा-स्थल बन गई। तब बच्चा कैसे पालना चाहिए? क्या सिखाना चाहिए? क्या शब्द उच्चारण कराने चाहियें। महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के दूसरे समुल्लास में यह बता दिया है कि माता बच्चों का पालन कैसे करे। वे लिखते है:—

"बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा दिया करे जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अग से कुचेष्टा न करने पावें। जब बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करे। जब वह कुछ-कुछ बोलने और समझने लगे तब सुन्दर वाकी और बड़े. छोटे, मान्य, पिता. माता. राजा. विद्वान् आदि से भाषण, उनसे वर्तमान और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करे जिससे कही उनका अयोग्य व्यवहार न होकर सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे। जैसे सन्तान जितेन्द्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रुचि करे वैसा प्रयत्न करते रहे। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्षा द्वेष आदि न करे।"

जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए ब्रह्मचर्य का पालन अत्यन्त आवश्यक है। एक बार मैंने एक मुसलमान से पूछा कि आपके यहा ब्रह्मचर्य पालन है या नही। उसने कहा हमारे यहा जो शादी न करे वह आदमी नहीं। मैंने कहा कुरान मे तो स्पष्ट आता है यहिया सय्यद थे. ब्रह्मचारी थे। मुसलमान चुप हो गया। जिस प्रकार गणित में जोड़ बाकी, गुणा और भागाकार होती है. इसी प्रकार हमारे वर्णाश्रम धर्म में भी इन चारों का समावेश है।

(क्रमश:)

पर्यावरण एवं यज्ञ (२)

विश्वम्भर प्रसाद गुप्त, बन्धु

अग्निहोत्र में ऋतु के अनुसार अलग अलग पदार्थों से बनी सामग्री की आहुतियां दी जाती हैं। इनमें वाष्प शील द्रव्य २०० से ४०० डिग्री सेल्सियस तापमान पर उड़ जाते हैं और वायु में मिलकर दूर दूर तक पहुंचते हैं। जलाने से किसी वस्तु का नाश नहीं होता केवल रूप बदलता है। उड़ने वाले वाष्प कणों का व्यास मिलीमीटर के सौंवे से लेकर करोड़वें भाग तक हुआ करता है। ये सूक्ष्मकण श्वास के साथ फेफड़ों में पहुंचकर रोग दूर कर देते हैं। इस प्रकार जलाने से पदार्थ का प्रभाव ठोस या द्रव की अपेक्षा उग्र हो जाता है। मिर्च का ढेर कहीं पड़ा हो, कुछ नहीं होता किन्तु एक छोटा सा टुकड़ा भी आग में पड़ जाए तो दूर-दूर तक जहां भी उसके वाष्प कण पहुंचते हैं किसी का ठहर पाना कठिन हो जाता है।

अनुमान है कि एक साधारण दैनिक यज्ञ से आसपास का लगभग ५०० वर्ग मीटर क्षेत्र प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त बड़े बड़े और वृष्टि यज्ञ भी होते हैं जिनमें हजार हजार लाख लाख आहुतियां तक पड़ती हैं। इनसे बहुत दूर दूर तक शुद्ध वायु का संचार होता है और हानिकर तत्व कृमि कीट आदि नष्ट होते हैं। इस प्रकार अग्निहोत्र द्वारा अत्यन्त दूर और व्यापक प्रभाव होने से थोड़े से भी द्रव्य का अधिक और सर्वोत्तम उपयोग होता है जो और किसी विधि से सम्भव ही नहीं है। यज्ञ का प्रभाव सर्वतोमुखी होता है। वायु तो शुद्ध होती ही है उसके सम्पर्क में आकर जल भी और फिर उसके सम्पर्क से भूमि भी शुद्ध होती है। यह सरल एवं अनुपम उपचार है। यज्ञयुत सतों का अन्न अधिक स्वादिष्ट पौष्टिक और स्वास्थ्य वर्द्धक होता है। उसमें कीड़े भी प्रायः नहीं लगते। यज्ञ के लाभों को देखते हुए आर्थिक दृष्टि से भी इसका औचित्य है।

कुछ विशिष्ट वैज्ञानिक प्रयोग

टी० बी० सैनेटोरियम जबलपुर में तीन चार वर्ष पहिले यज्ञ के प्रयोग करके डा० कुन्दन लाल अग्निहोत्री ने ८० प्रतिशत रोगियों को लाभ पहुंचाया था। उनका निष्कर्ष था कि घी युत से यज्ञ करने पर रोगी शीघ्र चंगे हो जाते हैं जब के घी से ढेर में लाभ होता है और वनस्पति घी के प्रयोग से रोग बढ़ने लगता है। यज्ञ विज्ञानियों का दावा है कि यज्ञ द्वारा सभी रोग नष्ट किए जा सकते हैं। फ्रांस के एक भूतपूर्व विज्ञान अध्यापक ट्रिलबट के अनुसार खांड के लेने से जलने पर (जैसा होम में होता है) फारमैल्डी हाइड गैस बनती है जो कृमियों का नाश करके वायु को स्वास्थ्यप्रद बना देती है। वे कहते हैं कि इससे क्षय चेचक हैजा आदि बीमारियां दूर व नष्ट हो जाती हैं।

लगभग एक सदी पहिले, डा० एम ट्रल्ट ने मुनक्का (किशमिश आदि मेवों को जिसमें शकर अधिक होती है) जलाकर देखा था कि इसके धुएं में टाइफाइड ज्वर के रोग कीट आध घण्टे में और अन्य व्याधियों के रोगाणु घण्टे दो घण्टे में मर जाते हैं। मद्रास में १८९८ में एक सनिटरी कमिश्नर ने बताया था कि घी और चावल में केसर मिलाकर जलाने से प्लेग से बचा जा सकता है। उनके भाषण का सार देते हुए श्री हैमकिन ने अपनी पुस्तक ब्यूबानिक प्लेग में लिखा है कि हवन करना लाभदायी और बुद्धिमत्तापूर्ण है।

वनस्पति जगत में धूप में कार्बन डाई आक्साइड से कार्बोहाइड्रेट बन जाता है। इसी कारण दिन की अपेक्षा रात में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा वायु में १२ प्रतिशत बढ़ जाती है। अतः केवल सूर्योदय के पश्चात और सूर्यास्त के पहिले ही अग्निहोत्र किए जाते हैं। यज्ञ से उत्पन्न कार्बन डाई आक्साइड पौधों के लिए भोजन का काम देती है। फलतः यज्ञ करने से फसल की उपज बढ़ती है। यज्ञ धूम्र में एसिटिक एसिड होता है जो फसल में रोग फैलाने वाले कीड़ों को नष्ट करता है। अमेरिका के विद्वान एण्ड्रो जैक्सन डविस की पुस्तक 'हारमोनिकल मैन' में मेह बरसाने का विज्ञान दिया है जिसके सिद्धान्त वृष्टि यज्ञ के सिद्धान्तों से मिलते जुलते हैं।

भारत ने फिर पहल की

गीता में कहा है कि यज्ञ से वृष्टि होती है। वृष्टि यज्ञों की परम्परा भारत में अब भी विद्यमान है। वेद विद्यामार्तण्ड प० वीरसेन वेदश्रमी ने अपनी पुस्तक 'यज्ञ महाविज्ञान' में बहुत से यज्ञों की चर्चा की है जिनके द्वारा उन्होंने अनेक प्रकार के रोगियों को स्वस्थ करने में सफलता पाई थी। उन्होंने कई वृष्टि यज्ञ भी सफलता पूर्वक कराए थे। लम्बी गुलामी से मुक्त होकर भारत ने पुनः पहल कर दी है। आज जब संसार पर्यावरण प्रदूषण के प्रति चिन्तातुर है भारत उसका नाश करने की स्थिति में है।

यज्ञ की ओर अब सारे संसार का ध्यान जाने लगा है। पर्यावरण पर अब तक नासिक महाराष्ट्र के प्रो० एच० बी० मुले ने मेडिसिना इन्टर-नेशिया द्वारा आयोजित विश्वसम्मेलन में अग्निहोत्र का प्रदर्शन करके बताया कि पृथ्वी और सूर्य के बीच का वातावरण प्रदूषण के कारण बिगड़ गया है जिसे होम द्वारा आसानी से अनुकूल बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि होम या यज्ञ संस्कृत शब्द वैदिक काल से जैव ऊर्जा विज्ञान का तकनीकि शब्द है जिसका प्रयोग अग्नि के माध्यम से पर्यावरण के विषैले तत्व दूर करने की प्रक्रिया के अर्थ में होता था। उन्होंने वातावरण को शुद्ध करने की प्रक्रिया भी समझाई।

उपसंहार

पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न संकट से निबटने के लिए यज्ञ करना हमारा दायित्व ही नहीं एक अन्तर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य होना चाहिए। यह एक महाविज्ञान है जिसकी शिक्षा सभी स्तरों के विद्यालयों में दी जानी चाहिए। यज्ञ से सद्विचारों का जन्म होता है और जीव जगत के लिए शुद्ध जल अन्न वायु प्राप्त होते हैं। घृत आदि खाने की अपेक्षा होम करने से हजारों गुना लाभ होता है उसका विघ्नात्मक प्रभाव बढ़ जाता है। यज्ञ पर्यावरण शोधन का ही नहीं, मानवजाति के कल्याण का अमोघ साधन है।

संस्कृत एक जीवित परम्परा है (२)

—युधराज

अगर आज हम संस्कृत को भारतीय एकता का आधार बताते हैं तो उसका तात्पर्य यही है कि वह देश भर में हमारे विद्वत समुदाय की भाषा रही है। संस्कृत उस अर्थ में हमारी एकता का आधार नहीं रही है जिस अर्थ में आज अंग्रेजी, फ्रेंच या जर्मन को किसी देश की एकता का आधार बता दिया जाता है। इन भाषाओं का जीवन और व्याप्ति बहुत कम देश काल में सिमटी हुई है। इन भाषाओं को यह भी श्रेय नहीं दिया जा सकता कि उन्होंने इन्हें बोलने वाले समाजों के चित्त का निर्धारण करने में कोई अनन्य भूमिका निभाई है। जबकि संस्कृत की न केवल भारतीय चित्त को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है बल्कि इसके विस्तार और व्याख्यान में भी इसका अमूल्य योगदान रहा है।

यूरोप में ग्रीक, लैटिन और आज की भाषाओं का कुल योगदान मिला जाए तभी उसकी बराबरी संस्कृत से की जा सकती है। इसलिए संस्कृत इसी मायने में हमारे देश की एकता का आधार रही है कि उसने इतने बड़े भरत खण्ड में ज्ञान की एकरूपता को बनाए रखा और उस ज्ञान के विस्तार को सम्भव बनाया। यही कारण है कि हिन्दुस्तान में देशकाल के परिवर्तन के साथ जो नई भाषाएं विकसित हुई, उनकी रीढ़ संस्कृत ही रही है। आज कोई भी हिन्दी भाषी व्यक्ति आसानी से मलयालम समझ सकता है या कोई भी मलयाली असमिया भाषा को बखूबी सीख सकता है। इसका कारण यही है कि ये तमाम भारतीय भाषाएं अपने स्वभाव, संस्कार और शब्द भंडार को संस्कृत के आधार पर पुष्पित और पल्लवित करती रही हैं।

दुनिया की ऐसी और कोई भाषा नहीं है जो इतने लम्बे समय तक शास्त्र की भाषा रही हो जितनी कि संस्कृत रही है। अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों में यह धारणा घर कर गई कि संस्कृत में सिर्फ अध्यात्म पर लिखा गया है, पर यह एक भ्रांत धारणा है। हमारे जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं बचा है जिसके बारे में संस्कृत के उन्नत साहित्य में कुछ न कुछ न लिखा गया हो। कृषि से लेकर स्थापत्य तक के सभी विषयों की अत्यन्त सूक्ष्म जानकारी आज पुरानी पड़ गई है, ऐसा नहीं है। हमने उसे पुरानी मानकर छोड़ दिया है।

मानव संसाधन मन्त्री अर्जुन सिंह जब भाषण देने जाते हैं तो वे संस्कृत भाषा के गुणों का बखान करते नहीं थकते, लेकिन जब उनका मन्त्रालय शिक्षा सम्बन्धी नीति तय करने बैठता है तो संस्कृत को ताक पर रख देता है। यह अंधविश्वास बनाए रखा जाता है कि आज ज्ञान की भाषा अंग्रेजी के अलावा कोई अन्य भाषा हो ही नहीं सकती, बिना इस बात को याद किये कि दुनिया बहुत बड़ी है और बहुत पुरानी। न अंग्रेजी बोलने वाले दुनिया हैं और न ही अंग्रेजी दुनिया को कोई दीर्घावधि से ज्ञान विज्ञान की बाहक रही है। इस अन्धविश्वास को बनाए रखने का आधार हमारे अन्दर आत्मविश्वास की कमी है। हमने आज के पश्चिमी जीवन को सभ्यता का उत्कर्ष मान लिया है। पश्चिमी विद्वानों के पिता, पार्टेंड, पार्टर फार्टेंड, फादर' जैसी मान्यताओं के भ्रम जाल में फंसकर अपने आपको किसी अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का अंग समझना शुरू कर दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय बनने के लिए हमने अपनी प्रांतीय भाषाओं, राष्ट्र भाषा हिन्दी और शास्त्रीय भाषा संस्कृत को छोड़कर अंग्रेजी का दामन थामने की कोशिश की है इस कोशिश से हमने अन्तर्राष्ट्रीय जगत में कितनी ख्याति प्राप्त की है, यह तो नहीं मालूम अलबत्ता इस चक्कर में हमारा ताना-बाना जरूर बिगड़ गया है।

अपनी पराधीनता के काल में हमने आज के पश्चिमी जीवन को सभ्यता का उत्कर्ष मान लिया है, जो कि वह है नहीं। महात्मा गांधी तो उसे सभ्यता का अपकर्ष मानते थे। वे कहा करते थे कि पश्चिमी सभ्यता में धन की आराधना है, हमारे जीवन की वस्तु है उसकी पूजा है—यह विशुद्ध भौतिक वाद है।

महात्मा गांधी पश्चिमी ज्ञान विज्ञान और अंग्रेजी भाषा की चकाचौंध के शिकार नहीं हुए थे इसलिए वे पश्चिम सभ्यता के गुण दोषों को तटस्थ भाव से देख सके थे। इसी तरह उन्होंने भारतीय सभ्यता की व्याख्या करते हुए कहा था कि भारत का नवोन्मेष तो संस्कृत भाषा और साहित्य के सहारे ही संभव हो सकता है। उन्होंने प्राचीन संस्कृत शिक्षण पद्धति की मुक्त कंठ से प्रशंसा की थी और हिन्दुस्तान के लिए संस्कृत की शिक्षा अनिवार्य बताई थी। आज हम यदि गांधी जी के बताये रास्ते से भटक गये हैं तो इसका स्वाभाविक कारण यही है कि हम तमस के शिकार हो गए हैं। संस्कृत को फिर से प्रतिष्ठित करने के लिए हमें अपने अन्दर सत्व और रजस का उद्रेक लाना होगा। तभी हम संस्कृत की रक्षा कर सकेंगे और संस्कृत के माध्यम से पूरी भारतीय भाषाओं और भारतीय संस्कृति की रक्षा कर सकेंगे।

हमारे तमस को मिटाने के वे उपाय ही कारगर हो सकते हैं जिन्हें भारत के ऋषियों और मुनियों ने सतत और तपश्चर्या द्वारा सिद्ध किया था। वे उपाय हमारी शास्त्र-परम्परा में आज भी विद्यमान हैं। लेकिन अपने पराभव के दिनों में हमने अपने उन उपायों को भुला दिया है। हमारा पंडित समुदाय भी पश्चिमी शास्त्रीय परम्परा की चकाचौंध से अछूता नहीं रहा।

पश्चिमी सभ्यता के मायाजाल में फंसकर हम न तो उन दिशाओं में आगे बढ़ पा रहे हैं जिन दिशाओं में पश्चिम ने तरक्की की है और न ही हम भारत के सनातन मार्ग पर लौट पा रहे हैं। हम त्रिशंकु की तरह अधर में लटके हुए हैं। पूरी तरह पश्चिमी सभ्यता का मार्ग अनुसरण करने में हमारे भारतीय संस्कार आड़े आते हैं तो भारतीय मार्ग पर लौटने में हमारे शिक्षित और प्रभु वर्ग की हमारी अपनी शास्त्र परम्परा में आस्था की कमी बाधा उत्पन्न करती है। हममें अपनी शास्त्रीय परम्परा की श्रेष्ठता और उपादेयता में विश्वास नहीं रहा और न ही हम अपने शास्त्रों की देशकालानुरूप व्याख्या करने में सफल हो पा रहे हैं। हमारी प्राचीन शास्त्रीय परम्परा के पुनरुद्धार की एक गम्भीर कोशिश महात्मा गांधी ने की थी। उस जमाने में गांधी जी के पूर्ववर्ती महापुरुषों ने भी इस दिशा में प्रयत्न किये थे क्योंकि ये महापुरुष इस तथ्य से भलीभांति परिचित थे कि विश्व में हमारी स्वतन्त्र पहचान भारतीय सभ्यता की आधार शिला पर खड़े रहकर ही बनाई जा सकती है, पश्चिम का पिछलग्गू बन कर नहीं। इस भारतीय सभ्यता की पहचान संस्कृत भाषा के जरिए इसकी व्याख्या संस्कृत की शास्त्रीय परम्परा के सम्यक अनुशीलन से ही संभव है।

कर्मवीर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

विश्वम्भर देव शास्त्री

आर्य समाज मानव मात्र की दुर्बलताओं को दूर करने वाली एक क्रान्तिकारी संस्था है। जिसके अन्दर छल-कपट हो वह व्यक्ति इस समाज का उत्तरदायित्व सम्भालने में असमर्थ ही रहेगा।

स्वामी आनन्दबोध जी चार दशक तक सार्वदेशिक के मन्त्री और प्रधान रहे। प्रारम्भ से ही उनके अन्दर आर्य समाज के प्रति महान श्रद्धा थी।

प्रथम बार मुझे उनके दर्शन देवबन्द आर्य समाज के उत्सव में १९५८ में हुए। उस समय नवयुवकों के हाथ में समाज को सौंपा गया था।

सार्वदेशिक के मन्त्री लाला रामगोपाल शालवालों ने अपना जीवन "विद्यार्थि देव" रूप से प्रारम्भ किया। प्रारम्भिक काल में उन्होंने जो महत्वपूर्ण कार्य किया वह था प्रकाशवीर शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री, ओम् प्रकाश त्यागी को राजनीति के मंच पर उतारना, गुरुकुलों से स्वतन्त्र प्रत्याशी के रूप में लाला प्रकाशवीर को विजयी बनाना उन्हीं का काम था। स्वयं भी सांसद रहे। स्वतन्त्रता आन्दोलन में जो प्रेरणा गांधी जी को स्वामी दयानन्द से मिली—मद्य निषेध, छुआछूत मिटाना, नारी शिक्षा, स्वदेशी का प्रचार तथा स्वराज्य प्राप्त करना, उन्हीं बिन्दुओं को लेकर संसद के अन्दर और बाहर काम करना मन्त्री जी का काम था।

कई बार देवबन्द में उनको आमन्त्रित किया गया, वह पधारे। लाला चतुरसेन गुप्त के कारण उन्हीं के साथ देवबन्द आते थे।

दूसरा शान्तिपूर्ण आन्दोलन श्री कृष्ण गोशाला के सुधार सम्बन्ध में आर्य समाज की ओर से चलाया गया। आन्दोलन को आगे बढ़ाया फलस्वरूप गोशाला के सुधार के लिए नयी समिति बनी और आज वह सुखी हुआ है लगभग ११० गौ वंश वहां पल रहा है। संस्कृत के प्रति स्वामी आनन्दबोध जी को पहले से ही विकास करने की प्रेरणा थी। १९८० में देवी कुण्ड में चलने वाले कार्यक्रम में संस्कृत सम्मेलन का आयोजन आर्य समाज की ओर से किया गया। तब कहा था संस्कृत के बिना भारत नहीं रहेगा। यह भाषा हमारी संस्कृति की माँ है। इसकी उपेक्षा करने वालों से सावधान रहना चाहिए। हमारे गुरुकुलों की शिक्षा ने स्वतन्त्रता संग्राम को बल दिया था।

(शेष पृष्ठ १० पर)

कर्मवीर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

(पृष्ठ ८ का शेष)

वयोवृद्ध होने पर भी वे महान उत्साही थे। यद्यपि की वर्षा के सम्बन्ध में मैंने भी उनसे कई बार प्रार्थना की थी कि उनका आर्य समाज का कार्य दुर्बल हो रहा है जबकि विदेशी धन से वहां राष्ट्रीयता को हानि पहुंचाई जा रही है। उन्होंने इसी वर्ष निर्णय किया था कि मैं पूरा महीना यद्यपि भ्रमण में लगाऊंगा।

इस समय निरन्तर बीमार भी रहे गुरुकुल कुल में होने वाले चोटी अधि-वेशन में पहुंचे और अपने ओजस्वी भाषणों से एक जागृति उत्पन्न कर दी। उन्होंने तीन प्रचारक मांगे कि उनका पूरा व्यय सार्वदेशिक सभा वहन करेगी।

जो उत्साह मीनाक्षीपुरम को सुधारने में इन्दिरा जी से सम्पर्क करने, काश्मीर में गीता और सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध हटाने में था वह कम नहीं हुआ। गोहत्या बन्दी के सम्बन्ध में सभी महानुभावों को एक सूत्र में बांधकर आंदोलन की घोषणा तो पूर्ण मात्र की है।

अन्त मे ऐसे वीर नेता को जिसने सार्वदेशिक को कभी आर्थिक हानि नहीं होने दी अपितु उसकी वृद्धि ही की है। कैसे भुलाया जा सकता है?

सार्वदेशिक आर्य वीर दल को प्रोत्साहन देने मे उनका झुकाव हो गया। सार्वदेशिक सभा के कर्मठ कार्यकर्ता आर्य वीर दल के बौद्धिक आचार्य, महात्मा डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री प्रायः उनके आदेश से शिविरों में जाया करते हैं।

उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि तभी सफल होगी जब हम सब निष्ठा पूर्वक स्वामी दयानन्द के कार्य को आगे बढ़ाते जायेंगे।

महापुरुष दिव्य भाव दिखाने ही आते हैं।

डा० आर्य वीर दल संचालक, जनपद सहारनपुर 'देवव्रत'

सार्वदेशिक के ग्राहकों से

सार्वदेशिक साप्ताहिक के ग्राहकों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क भेजते समय या पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें।

अपना शुल्क समय पर स्वयं ही भेजने का प्रयास करें। कुछ ग्राहकों का बार बार स्मरण पत्र भेजे जाने के उपरान्त भी वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है अतः अपना शुल्क अविलम्ब भेजें अन्यथा विवश होकर अखबार भेजना बन्द करना पड़ेगा।

"नया ग्राहक" बनते समय अपना पूरा पता तथा "नया ग्राहक" शब्द का उल्लेख अवश्य करें। बार बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए आप एक ११० रुपये भेजकर सार्वदेशिक के आजीवन सदस्य बने।—सम्पादक

जी हां, हम स्वस्थ रह सकते हैं

: रामविलास लसौटिया

आज के युग में नाना प्रकार की बीमारियां एवं चिकित्सालयों की संख्या दिन-प्रति दिन बढ़ती जा रही है। डाक्टरों की बढ़ती हुई संख्या के बावजूद क्या कारण है कि औसत व्यक्ति अच्छे स्वास्थ्य का अनुभव नहीं कर पा रहा है। ऐसी स्थिति में इस लेख का शीर्षक "जी हां, हम स्वस्थ रह सकते हैं" अवश्य ही चौंकाने वाला है। लेकिन अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि अधिकांशतः हम सभी अच्छे स्वास्थ्य का आनन्द बहुत लम्बे समय तक ले सकते हैं। प्रस्तुत लेख में मैंने ऐसी व्यावहारिक एवं सरल बातों का विवेचन किया है जिनके पालन करने से हम स्वस्थ रह सकते हैं।

स्वास्थ्य की महत्ता :

ईश्वर की कृतियों में सबसे अधिक उपयोगी कोई चीज है तो वह है मानव शरीर। और मानव शरीर की इतनी अद्भुत रचना ईश्वर ने की है कि जिसके द्वारा हम इस लोक में भी अपनी उन्नति कर सकते हैं और पर लोक को भी सुधार सकते हैं। जब हम स्वास्थ्य की चर्चा करते हैं तो उसका तात्पर्य शारीरिक, मानसिक अथवा भावनात्मक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य से है। तीनों का उचित मात्रा में सम्मिश्रण होने से ही एक व्यक्ति स्वस्थ कहलाया जा सकता है। इसलिए हमें धर्म की प्राप्ति के द्वारा स्वयं, परिवार, समाज तथा देश की सेवा के लिए एवं अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए अपने आपको पूर्ण स्वस्थ रखना अति आवश्यक है

विचारों का प्रभाव :

यह निर्विवाद सत्य है कि हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर हमारे सकारात्मक व नकारात्मक विचारों का अनुकूल व प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है यदि हम शारीरिक दृष्टि से पूर्ण पुष्ट हों, फिर भी यदि हमारे विचार नकारात्मक हों तो हम पूर्ण रूप से अच्छे स्वास्थ्य का आनन्द नहीं ले सकते। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम अपने विचार सकारात्मक रखें और अपने धर्म के अनुसार अपने अपने इष्ट देवता या गुरु का ध्यान करते हुए नकारात्मक विचार, जिनसे क्रोध उत्पन्न होता हो या जिनके कारण ईर्ष्या होती हो, आदि को अपने जीवन में कोई स्थान न दें। क्रोध के बारे में जो जितना लिखा जाए उतना कम है। वैज्ञानिक दृष्टि से यह सिद्ध हो चुका है कि भोजन करते समय या अन्य समय जब भी हम क्रोध, ईर्ष्या या इस प्रकार के नकारात्मक विचार अपने मन में रखते हैं तो उसका कुप्रभाव हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर एवं हमारी पाचन शक्ति पर पड़ता है इस तरह अपने स्वयं के स्वास्थ्य के लिए चाहिए कि हम अपने में ऐसे विचार न लाएं। दैविक कारणों से या बाहरी कारणों से कभी स्वास्थ्य खराब हो जाए तो समझ में आ सकता है। लेकिन अधिकांशतः हमारे बिगड़े हुए स्वास्थ्य के लिए हम ही जिम्मेदार हैं और अच्छे स्वास्थ्य के लिए भी हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं। श्रीमद् भागवत गीता (६/५) में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा है—

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः। अर्थात 'हे अर्जुन हमारी अपनी आत्मा का भला हम स्वयं ही कर सकते हैं, हम ही हमारे सबसे अच्छे मित्र हैं और हम ही हमारे सबसे बड़े शत्रु हैं। इसलिए हे अर्जुन, तुम अपने शत्रु मत बनो बल्कि अपने ही मित्र बनो।

इस उक्ति के अनुसार यदि हम अच्छे स्वास्थ्य के इच्छुक हैं तो हमें चाहिए कि हम यह निश्चय करें कि अनावश्यक क्रोध और ईर्ष्या आदि हम कतई नहीं करेंगे। मेरी राय में सभी व्यक्तियों के प्रति जो भी भाव हम रखते हैं उन्हें चार भागों में बांट सकते हैं—मुदित भाव, प्रेमभाव, करुणा भाव और उपेक्षा भाव। अपने से बड़ों की उन्नति देखकर या अपने ही मित्रों की अधिक उन्नति देखकर हमें प्रसन्न या मुदित होना चाहिए। अपने समान स्तर के मित्रों की उन्नति या उनकी खुशहाली देखकर हमारे मन में प्रेमभाव होना चाहिए। उनसे कभी भी ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। अपने से कमजोर वर्ग के मित्रों और सहयोगियों के प्रति या कर्मचारियों के प्रति हमें करुणा या दया भाव रखना चाहिए। और, जो व्यक्ति दुष्ट हो, उनके प्रति घृणा या क्रोध के भाव के बजाय हमें उपेक्षा भाव रखना चाहिए। ऐसे विचार मन में रहने से हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर नहीं पड़ेगा। विद्वानों का ऐसा मानना है कि हम केवल शरीर ही नहीं बल्कि हम मन भी हैं और आत्मा भी। हमारी प्रसन्नता में शरीर को स्वस्थ रखने का १० प्रतिशत महत्व है तो मन को प्रसन्न रखने का ३० प्रतिशत महत्व है तो आत्मा को प्रसन्न रखने का ६० प्रतिशत महत्व है। इसलिए उदात्त विचारों से हम अपनी आत्मा को प्रसन्न रखें और ईर्ष्या क्रोध, द्वेष आदि नकारात्मक विचारों को हटाकर अपने मन को प्रसन्न रखें।

(क्रमशः)

५८वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी, नई दिल्ली—का ५८वां वार्षिकोत्सव दिनांक १२-१२-९४ से १८-१२-९४ तक होगा।

कार्यक्रम :—

चतुर्वेदशतक महायज्ञ—सोमवार १२ दिसम्बर ९४ से प्रातः ६-३० बजे तक प्रति दिन

वेद प्रवचन—रात्रि ९ बजे से ९-४५ बजे तक प्रतिदिन १२-१२-९४ से

भक्ति संगीत—रात्रि ८ से बजे से (श्री नरदेव भजनोपदेशक)

उत्सव स्त्री समाज—शुक्रवार १६-१२-९४ को दिन में ३ से ५ बजे तक

युवक सम्मेलन—१७-१२-९४ को रात्रि ८ बजे से १०-३० बजे तक

पूर्णाहुति यज्ञ—१८-१२-९४ प्रातः ८ से १०-३० बजे तक

ऋषि लंगर—१८-१२-९४ दिन रविवार १-३० बजे से।

R.N 626/57 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 93 1,2 12 1994

आर्यसमाज निर्माण बिहार दिल्ली का
१४वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज निर्माण बिहार दिल्ली का चौदहवा वार्षिक उत्सव १४ नवम्बर से रविवार २० नवम्बर ९४ तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर २१ कुण्डीय राष्ट्र कल्याण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा पूज्य स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती थे। इस महायज्ञ में हजारों की सख्या मे स्त्री. पुरुषों ने भाग लिया। यज्ञ की पूर्ण आहुति रविवार, २० नवम्बर १९९४ को हुई। यज्ञ के पश्चात् लगभग ३० बच्चों का यज्ञोपवित् सस्कार किया गया। इस अवसर पर श्री सत्यपाल पथिक व श्री गुलाबसिंह राघव के मनोहर भजन हुए। ११ बजे से १ ३० बजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमे श्री बी०एल० शर्मा प्रेम, ससद सदस्य, श्री [illegible], क्षेत्रीय विधायक, डा० धर्मपाल कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री. मन्त्री सार्वदेशिक सभा, डा० प्रेमचन्द श्रीधर, श्री सूर्यदेव जी प्रिधान आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० महेश विद्यालंकार, श्री आचार्य जगदीश आर्य, राष्ट्र कवि डा० सारस्वत मोहन 'मनीषी' आदि ने महत्वपूर्ण विचार रखें व कवियों ने ओजस्वी कविताए प्रस्तुत की।

इस उत्सव में विशेष कार्यक्रम वयोवृद्ध दैनिक यज्ञकर्त्ता सर्वश्री हरबंशलाल बहल, दामोदर प्रसाद आर्य, रविन्द्र मेहता, चन्द्र प्रकाश आर्य, व श्रीमती शान्ति देवी अग्निहोत्री का सम्मान स्वामी दीक्षानन्द जी ने शाल व स्मृति चिह्न देकर किया। आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्त्ता श्री रोशनलाल गुप्त. महामन्त्री दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा, श्री पतराम त्यागी मन्त्री क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा श्री रामनिवास कश्यप मन्त्री आर्य समाज शकरपुर, श्री [illegible]दत्त शर्मा मन्त्री आर्य समाज खिचड़ीपुर, श्री रामस्वरूप सूद प्रधान आर्य समाज निर्माण बिहार. श्री बलदेवराज शर्मा आर्य समाज निर्माण बिहार का स्वामी दीक्षानन्द जी द्वारा स्मृति चिह्न देकर अभिनन्दन किया गया। अन्त मे ऋषिलगर हुआ जिसमें हजारो की सख्या मे लोगों ने भाग लिया।

इस समारोह के सयोजक आर्य समाज सरोजिनी नगर के पुराने कार्यकर्त्ता श्री रोशनलाल गुप्ता जी थे।

कार्यक्रम का सचालन क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि उपसभा के मन्त्री श्री पतराम त्यागी ने किया।

योग सम्मेलन

गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी आत्मशुद्धि आश्रम मे श्री स्वामी दिव्यानन्द जी 'सरस्वती' अध्यक्ष योगधाम ज्वालापुर, हरिद्वार की अध्यक्षता में रविवार. २५ दिसम्बर १९९४ से रविवार १ जनवरी १९९५ तक "ध्यान योग शिविर" का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें मातायें भी भाग ले सकती हैं।

आवश्यक निवेदन : 'योग [illegible] लाने का कष्ट करे, घर या कार्यालय से पूरा [illegible] कर आवें।

विशेष सूचना—(क), २५ दिसम्बर शिविर उद्घाटन सायं ४ बजे होने पर अखण्ड गायत्री अनुष्ठान गुफा मध्य आरम्भ १ जनवरी प्रातः ९ बजे समापन।

(ख) १ जनवरी रविवार प्रातः ९ बजे योग सम्मेलन इस अवसर पर अनेकों उच्चकोटि के योगी महात्मा, संन्यासी आमन्त्रित किए गए हैं।

निवेदक :

स्वामी धर्ममुनि(दुग्धाहारी)	डा० शिवकुमार शास्त्री	ब्र०आत्मदेव शास्त्री
मुख्याधिष्ठाता	मन्त्री	व्यवस्थापक

आत्मशुद्धि आश्रम (प० न्यास) बहादुरगढ़-१२४५०७ हरियाणा

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
२५ दिसम्बर १९९४
विशाल शोभायात्रा

प्रातः १० बजे

श्रद्धानन्द बाजार से प्रारम्भ होकर सायं ३ बजे लालकिला मैदान में विराट् जनसभा के रूप में परिणत हो जायेगी।
हजारों की संख्या में पधारिए।

निवेदक :

महाशय धर्मपाल	डा० शिवकुमार शास्त्री
प्रधान	महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

अभिनन्दन सभा

(पृष्ठ १ का शेष)

पैदा करना चाहती है। इसलिए आर्य समाज किसी एक पार्टी के स्थान पर उस प्रत्येक व्यक्ति का समर्थन करेगा जो धर्म और कर्म की दृष्टि से पवित्र हो।

आर्य समाज प्रजातन्त्र में आस्था रखता है परन्तु आज के बिगड़े प्रजातन्त्र मे नहीं।

श्री वन्देमातरम् ने कहा कि राज्य के आज तीन अंग हैं—न्यायपालिका, विधायिका तथा कार्यपालिका। इन तीनों अंगों के निर्धारित कर्त्तव्य है जिनका पालन करना उनका कानूनी दायित्व है।

आर्य समाज का सुझाव है कि निर्वाचन आयोग को राज्य का चौथा अंग घोषित किया जाए जो कि इस राजनीति के शुद्धिकरण को श्री शेषन की तरह ही चलाए रखें। आर्य समाजियों को इस विचार के प्रचार हेतु भी विशेष प्रयत्न करना चाहिए।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री कृष्ण स्वामी ने श्री वन्देमातरम् के जीवन कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रदेश के सुदूर हिस्सों से इतनी बड़ी सख्या मे आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का आना इस बात का प्रतीक है कि उनमें श्री वन्देमातरम् के प्रति कितनी अटट श्रद्धा तथा प्रेम है।

आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कान्तिकुमार कोरटकर ने समस्त कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद किया।

इस बैठक में श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव की धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी भी मंच की शोभा बढा रही थी।

सत्यव्रत क्रान्तिकारी अधिष्ठाता भारतीय क्रान्तिकारी वेद प्रचार मण्डल ग्राम मोरी किरावली आगरा से लाभ उठावें

वैदिक कर्मकाण्ड वेद प्रचार तथा अन्य धार्मिक गतिविधियों के लिये वेदप्रचार मण्डल मोरी किरावली के अधिष्ठाता क्रान्तिकारी सत्यव्रत जी की सेवाओं से लाभ उठायें। आप वेद प्रचार तथा वैदिक कर्मकाण्ड में पूर्ण दक्ष है। इनकी योग्यताओं से लाभ उठावें।

[illegible] मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री [illegible] दिल्ली-२ से प्रकाशित

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष   वार्षिक मूल्य) एक प्रति) रुपया
वष ३२ अक   दयानन्दाब्द   सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९५   मार्गशीर्ष शु० ८ स०   दिसम्बर १९९४

देश की संस्कृति को बचाने के लिये समस्त राष्ट्रवादी संगठन एक हों

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा पाञ्चजन्य को दिया गया विशेष साक्षात्कार

नई दिल्ली ३ दिसम्बर।

सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभ के प्रधान पूज्य वन्देमातरम रामचन्द्रराव स राष्टीय स्वय सेवक सघ के प्रमुख साप्ताहिक पाञ्चजन्य के सम्पादक ने सभाभवन म विशष साक्षात्कार के दौरान कुछ राष्टीय महत्व के मुददो पर आय समाज क दष्टिकोण पर विस्तत चर्चा की। इस साक्षात्कार के समय सावदशिक सभा के कायकारी प्रधान श्री सामनाथ मरवाह भी उपस्थित थ

श्री वन्देमातरम न सविधान म सकुलर शब्द १९ ४ म जोडे जाने के विषय म बोलते हुए कहा कि मालिक रूप स यह शब्द सविधान मे नही था। परन्तु जब इस सविधान का अग बना दिया गया है तो सविधान को समस्त धाराओ का भी पथ निरपक्ष म ग पर ही चलाया जाना चाहिय था। पथ निरपेक्ष शब्द का अथ हे कि सरकार किसी भी पथ के कार्यों म किसी प्रकार का कोई भी हस्तक्षप नही करेगी। भारतीय सविधान मे आज कई एसी धाराय ह जो पथ निरपेक्षता के सिद्धात के विरुद्ध है। इन्हे या तो हटा दिया जाना चाहिये था या इनम परिवतन किया जाना चाहिय था यही अस्थिरता और अराजकता का एक कारण है।

गौ हत्या बन्दी के प्रश्न का जवाब देते हुय श्री वन्देमातरम ने कहा कि वसे तो इस मुददे पर भी सवधानिक स्थिति पूणत स्पष्ट है भारतीय सविधान के अनुच्छद म ५८ स्पष्ट रूप स कहा गया है कि गाय तथा उसके वश और समस्त दुधारू पशु धन की रक्षा करने के लिय सरकार कृत सकल्पित है। यह अनुच्छद सविधान के नीति निदशक अध्याय मे आता है। जब सरकार को नीति का निर्देशन देत हुये एक विशष प्रावधान बनाया गया ह तो सरकार उसका अनुसरण क्यो नही करती। आज देश म जगह जगह यान्त्रिक बूचड खानो क कारण पशु धन म भारी कमी आती जा रही है। हमारे देश की खेती आज भी बहुतायत स पुराने तरीको और पशुओ पर निभर है। यदि पशुधन के ह्रास को न रोका गया तो भविष्य म क्या होगा इसका अनमान लगाया जा सकता है। श्री वन्देमातरम न व्यग करते हुये कहा कि मख सरकार अपना अमल्य पशुधन देकर विदेशो से गोबर ले रहा है।

भारत की राजनीति म पाकिस्तानी खुफिया एजसी के हस्तक्षप पर विचार प्रकट करने हुये श्री वन्देमातरम न कहा कि हमारे दुश्मन देश की यह सस्था एक सुदृढ सगठन है जिसका सचालन वहा के सेवा निवृत्त फौजी और पुलिस अधिकारी करत है उनका खुफिया तत्र भारत म गुप्त सूचनाए दस्तावेजो को हासिल करने के लिये औरतो तक का सहारा लेता है सरकारो का यह सब रोकने का प्रयास करना चाहिये था परन्तु हमारे सरकार इसके विरुद्ध छापा मारने वाले अपने पुलिस अधिकारियो को ही दण्डित कर देती है। श्री वन्देमातरम न कहा कि हमारे दश के कुछ राजनीतिज्ञ भी देश द्रोही ताकतो को पूरा सरक्षण देते है यही नही कुछ तो स्वय इन गतिविधियो म लिप्त भी है।

पाञ्चजन्य के सम्पादक द्वारा यह पूछे जाने पर कि भारत मे मुसलमान भारत को नमक खाने के बाद भी इस देश के प्रति अपनी निष्ठा तथा भक्ति क्यो नही दिखाते श्री वन्देमातरम न स्पष्ट शब्दो म कहा कि इन सारी समस्याओ का मूल कुरान म है जिसम इन्हे यह उपदेश दिया जाता है कि सारी दुनिया म दो ही प्रकार के मुल्क है दारुल हरब और दारुल इस्लाम जहा इस्लामिक पद्धति से शासन चलता हो वह दारुल इस्लाम और अन्य दारुल हरब और इनका एकमात्र लक्ष्य है कि दारुल हरब मुल्को को दारुल इस्लाम म परिवर्तित करना। इसीलिये इस्लाम के शासको न जिन मुल्को पर भी आक्रमण किये वहा सबसे पहले शहरो के नाम परिवर्तित किये और हमारा देश एक सराय बनकर रह गया है जो भी आया यहा रह गया

(शेष पृष्ठ पर)

सम्पादक : डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सगठनात्मक एकता के बिना देशद्रोही ताकतों के विरुद्ध आन्दोलन असम्भव

नइ दिल्ली ७ नवम्बर। आय स्भ ज ारला ल म प आया जिन एक आय कायकर्त्ता गोष्ठा म बालत हुए सावदशिक आय प्रति निधि सभा के प्रधान श्री वन्दम तरम राम्च द्र व न कहा कि जिस प्रकार अग्रजो की साम्प्रदायिक भद प पदा करन का नाति क कारण देश का विभाजन हुआ था आज वह परिस्थिति दश क राजनातिक दलो की तुच्छ राजनीति क कारण उपन्न होता जा रहा है। वोट बक बनान का होड म य राजनातिक दल भारताय समाज को छोट छोट टुकडा म बाटन पर तुल हे । यदि आज इन पर अकुश न लगाया गया तो भविष्य पूण रूपेण अधकारमय हो जाएगा।

श्री वन्देमातरम ने कहा कि आय समाज का कमठ और देश भक्त जनता जब हैदराबाद के उस निजाम को झुका सकती है जिसक पास उस समय २० ०० नियमित फौजा १ ०० अनियमित ० पुलिस कर्मी १०००० अरब और एक लाख रजाकार जिनमे से सगस्त्र थ तथा निरिक्त निजाम के पास भारत की सरकार स भा कइ गुण अधिक सामरिक ताकत थी। आय समाज के उस आन्दोलन क समय की परिस्थितियो के मुकाबले आज की परिस्थितिया कम विकट परन्तु उनका नतीजा अत्यधिक भयकर होन का सम्भावना हे।

आज की इस ज तिवाद और भद भाव पैदा करने वाली विघटनात्मक शक्तिया का मुकाबला केवल आयसमाज के वही सैनिक कर सकते हे जो सवप्रथम आय समाज मे अनुशासन के पालन पर दृढ सकल्प हा। आय समाज की सनठनात्मक एकता को बनाए विना देशद्रोही ताकता के विरुद्ध कोई आन्दोलन नही छडा जा सकता।

दिल्ला आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूयदेव जी ने भा गोष्ठी का सम्बोधित किया। गोष्ठी की अध्यक्षता स्वामी दीक्षानन्द जी न तथा सचालन श्री जयप्रकाश आय न किया।

समस्त राष्ट्रवादी संगठन एक हों

(पृष्ठ १ का शष)

परन्तु हम यह चाहते हैं कि यहा जो भा रहे वह राष्टवादी बन कर रहे।

श्री वन्देमातरम ने भारत की शासन पद्धति म व्यापक परिवतन लान पर भी बल दिया क्योकि स्वतन्त्रता के ४५ वष बाद भी आज भारत का नागरिक अपने आपको सुरक्षित महसूस नही करता। हमार प्रधानमन्त्री चुनावो के दौरान आज यह कह रहे हैं कि वे देश का स्थिरता के लिये काम करगे। आने वाल कल म वे क्या करेंगे इस बात का कोई मतलब नही रह जाता यदि व अपनी आज की नीतियो को उस माग पर न न जाय। आज समाज को जातिगत तथा साम्प्रदायिक आधार पर बाटने वाल यह नता सारे देश को एक कम रख सकते है।

धर्मान्तिरण की समस्या पर अपन विचार रखत हुय श्री वन्दे मातरम ने कहा कि आय समाज ने ही शुद्धिकरण आन्दोलन की शुरुआत का थी और इस काय के लिये हम अप । कुछ भी बलिदान करन क लिये तैयार हैं आय समाज न जो काम मानाक्षीपुरम मे किया उसे सारा देश जानता है। मध्य प्रदेश म आदिवासी क्षत्रो मे आज भी हमारा काम चल रहा है। पूर्वान्चल म हमार विद्यालय राष्टाय सस्कृतिकी रक्षा भारतीय भाषाओ के उत्थान तथा ईसाइयत का विरोध करन क लिय काय कर रहे है। परन्त वास्तविकता यह है कि शुद्धिकरण आन्दोलन म एक सस्था क प्रयासो म कुछ नही होगा इसके लिये समस्त हिन्दूवादा और राष्टवादी सगठनो को मिलकर काय करना होगा।

आमतौर पर लोग यह महसूस करत है कि आयसमाज जैसा क्रान्तिकारी सगठन जीवित होत हय भी शिथिल क्यो हो गया है। इस प्रश्न का उत्तर देत हुय श्री वन्दमातरम न कहा कि स्वतन्त्रता के बाद हमने जब अपन आपको सुरक्षित महसूस कर लिया और दूसरी तरफ शासन प्रणाली ऐसे लोगो के हाथ आ गयी जिन्होने स्वाथ वश जातिगत और साम्प्रदायिक कमजोरियो का लाभ उठाकर वोट बक बनान की खातिर समाज को अधिक कमजार कर दिया। सरकारो न राष्ट्रवादी और बहुसख्यक लोगो की सस्कृति और भाषा को नजरदाज ही नही किया बल्कि उसेकुचल डालनेका हरसम्भव प्रयास किया परन्तु आयसमाज की सजगता के कारण ही ऐसे बहुतसे प्रयत्नो को निष्फल किया गया।

देश की सस्कृति का बचाने के लिये आय समाज एक मात्र ऐसा नैतिक सगठन है जो किसी भी रूप मे राजनैतिक गतिविधियो मे सलिप्त नही है हमारा समथन किसी विशष पार्टी को न होकर केवल उन लोगो के लिये है जो नैतिक रूप से पवित्र है।

भारत के आर्थिक क्षत्र म विदेशी कम्पनियो के आगमन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करत हय सावदेशिक के प्रधान ने कहा कि हमे ईस्ट इण्डिया कम्पना स सबक लना चाहिये वे भी व्यापार करने कि लिये आये थ लेकिन यहा क होकर रह गये। आज अनिवासी भारतीया के नाम पर विदेशा स पसा आ रहा है परन्तु इसके साथ ही हम यह भी ध्यान रखना चाहिये कि हम अधीनस्थ होते जा रहे है।

अपन देश क व्यापारिया का हमारी सरकारो ने आज तक सुविधाय नहा दी परन्तु विदेशी व्यापारियो को हर प्रकार की सुविधाय दा जा रही है। हमार दश की नैतिकता का ह्रास भी इसी कारण स आरम्भ हो गया है अब विदेशी समाचार-पत्रो के आने की बात भा चल रहा ह। यह राष्टाय एकता और अखण्डता के लिये और भी घातक होगा। इन षडय त्रो के विरुद्ध हमे लडना होगा।

श्री वन्देमातरम ने समस्त राष्ट्रवादी सगठनो को आह्वान किया कि इन सव परिस्थितियाम अपने छोट छोट मतभद भुलाते हुये हम एकजुट होकर राष्ट्र का एकता और अखण्डता के लिय नये सिरे से विचार करना हागा।

वेद प्रचारिका की आवश्यकता

रामकृष्ण मित्तल प्रचारक पुत्र माधोराम कस्बा झिनझाना जिला मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश को अपने यहा वेद प्रचारिका की आवश्यकता है।

अन्न तथा मन

असावि देवं गो ऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच।
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा न स्तोममन्धसो मदेषु॥
सा० ३१३॥

वास्तव मे सात्विक अन्न का बहुत महत्व है क्योकि यदि हम अपने मन को निर्मल व पवित्र बनाने के इच्छुक है तो हमे जो कुछ हम खाते है उस पर विशेष ध्यान देना होगा। इस मन्त्र मे स्पष्ट ही हमको आदेश है कि अन्न जो भूमि से उत्पन्न किया गया है वही खाना उचित है, न कि मास मछली-अण्डे आदि। इसके अतिरिक्त गौ-दुग्ध को सात्विक अन्न की कोटि मे गिनाया है। इतना ही नही अपितु सात्विक अन्न तो वह होता है जो परिश्रम की कमाई से ही क्रय किया गया हो, क्योकि सभी तो स्वयम् खेती करके अथवा गौ-पालन आदि द्वारा अन्न प्राप्त नही कर सकते।

ब्रह्मचर्य शक्ति का निष्पादन हेतु यह आवश्यक है कि सौम्य-सात्विकस्निग्ध भोजन हो, जैसा कि भगवान् कृष्ण ने गीता मे कहा है। परिश्रम की कमाई-गाढे पसीने की कमाई ही भोजन मधुर व स्वादिष्ट बनाती है। बेईमानी के धन से जो भोजन बनता है वह तो विकार पैदा करता है जिससे मल विक्षेप-आवरण चढकर आत्मा मोटी हो जाती है। वेद तो यहा तक कहता है कि आलसी मनुष्य को भोजन करने का अधिकार नही है। किन्तु वेद यह भी आदेश देता है कि जो अपाहिज, लूले, लगडे काम करने मे असमर्थ है, उन्हे खिलाना व उनकी अन्य आवश्यकताए पूर्ण करना समाज का कर्तव्य है।

सात्विक अन्न से शरीर हृष्ट-पुष्ट,हृदय विशाल तथा हाथ वास्तव मे 'कर' बनते हैं। जीवन मे सत्य अवतरित होता है। प्रभु कहते है कि ऐसे नर-नारियो का मै अन्न हू, अर्थात् वे मुझे भजते हैं। परन्तु ऐसे मनुष्य जो अन्न मे फस जाते हैं, उनको मैं अन्न रुप बनकर ही खा जाता हू अथवा रुद्र बनकर रुलाता हू—ऐसे मनुष्यो को अनेक प्रकार के रोग लग जाते हैं। सात्विक अन्न से सन्तान भी उत्तम उत्पन्न होती है, जो प्रत्येक गृहस्थी की अभीष्ट कामना रहती है जैसा कि इन श्लोको मे स्पष्ट है :

दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते।
यदन्नं भक्षयते नित्यं जायते तादृशी प्रजा॥

दीपक अन्धेरे को, कालस को खाता है प्रकाश करके और उसकी लौ से काली स्याही पैदा होती है। इसी प्रकार जो जैसा अन्न खाता है, उसके उसी प्रकार की सन्तान पैदा होती है।

और कहा भी है —

यस्यान्नं तस्य ते पुत्राः अन्नाद् शुक्रं प्रवर्तते।

जिसका हम भोजन खायेंगे, उसी की सन्तान वास्तव मे हमारे गृहो मे पैदा होती है क्योकि अन्न से ही वीर्य बनता है। यही कारण है कि हम देखते है कि आज विद्वान्-पण्डित वर्ग अपनी सन्तानो को विद्वान् या पण्डित नही बनाना चाहते, बल्कि जिनके ऊपर वे स्वय आश्रित है, उन्ही के सदृश बनाना चाहते हैं।

उपनिषदो मे कहा है

आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृति,
स्मृति लम्भे सर्वग्रन्थीना विप्रमोक्षः॥

शुद्ध-पवित्र भोजन से अन्त करण पवित्र होता है, स्मृति अटल बन जाती तथा स्मृति से सारे बन्धन टूट जाते हैं।

अर्थात् सासारिक मोह बन्धन छिन्न-भिन्न हो जाता है। बस यही वास्तविक सत्य ज्ञान-विवेक है। ठीक ही तो कहा है ज्ञानस्य पराकाष्ठा वैराग्यम्। ज्ञान जब पूर्णतया विवेक मे परिणित हो जाता है, तो सासारिक विषय-वासनाओं का जाल भी टूट जाता है इस भाति मनुष्य वैराग्य भावना से ओत-प्रोत होकर मोक्ष का अधिकारी बनता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद भाष्य मे लिखाने हेतु कुछ सहायक पण्डितो को रखते थे, जिनको वे वेतन के अतिरिक्त भोजन भी कराते थे, जो सात्विक घृत आदि से युक्त होता था। जब पण्डितो ने देखा कि इतना अच्छा भोजन दिया जा रहा है, तो कहा कि आप हमारे भोजन पर जितना व्यय करते हैं, उतनी राशि हमे दे दी जाये और हम भोजन अपने गृहो पर कर लिया करेगे। महर्षि का उत्तर था कि तुम लोग घरो पर इतना उत्तम भोजन नही करोगे, अत भोजन हम यही करायेगे, जिससे तुम्हारी सात्विक वृत्ति बनी रहे।

आहार का सीधा सम्बन्ध मनुष्य की सयमता से भी है, इसी से अन्त मे वीर्य-शुक्र बनता है। जो मनुष्य अपनी रसना पर जिह्वा पर काबू नही पा सकता, वह जितेन्द्रिय भी नही हो सकता। एक स्थान पर पढा—

तावत् इन्द्रियजितो न स्यात् विजितानि इन्द्रिय पुमान्।
न जयेत् रसनां यावत् जिते सर्वं जिते रसे॥

कोई मनुष्य तब तक अपनी इन्द्रियो पर काबू नही पा सकता, जब तक कि वह अपनी रसना पर काबू नही पाता। यदि रसना पर काबू पा लेता है, तो सभी इन्द्रियो पर विजयी हो जाता है और इन्द्रियजीत कहलाता है। जब कभी व्रत रखते हैं, तो उपवास करते है अर्थात् अन्नादि कुछ भी नही खाते। इसका तात्पर्य यही है कि जब हम भूखे रहेगे, तो हमारी इन्द्रिया-मन आदि अशक्त हो जायेंगे, और हम प्रभु का ध्यान करते रहेगे। अर्थात् उप+वास= समीप है प्रभु के वास हमारा और यह ध्यान से सम्पन्न होता है।

उपनिषदो मे सात प्रकार के अन्न का वर्णन आता है—(१) फल पदार्थ अन्नादि (२) दुग्ध, रस, पेयादि (३) हवि, शाकल्य यज्ञो मे (४) सेवा कार्य (५) मन द्वारा इन्द्रियो के साथ मिलकर (६) वाणी द्वारा (७) प्राण। प्रथम दो शरीर की पुष्टि करते है, दूसरे दो से सामाजिक उन्नति होती है तथा अन्तिम तीन के द्वारा आत्मा की पुष्टि होती है।

साधारणतया अन्न को दो भागो मे बाटा जा सकता है— अन्नादि पदार्थ तथा जलीय पदार्थ। इनको प्रत्येक को तीन भागो मे विभाजित किया जाता है स्थूल अन्न से पुरीष मध्यम से मास तथा सूक्ष्म मे मनस्तत्व का निर्माण होता है। इसी प्रकार जलीय पदार्थो का स्थूल मूत्र है, मध्यम तत्त्व रक्त है और सूक्ष्म प्राण तत्त्व का पोषक है।

मन एव मनुष्याणा कारण बन्ध मोक्षयो:

मन ही मनुष्यो के बन्धन व मोक्ष का कारण है। अत सात्विक अन्न के बारे मे जितना भी लिखा जाए, थोडा ही है। जहा तक बन सके सात्विक अन्न भी मात्रा ही मे खाय—"मात्रा बलम्" उचित परिमाण मे भोजन करना ही अच्छा है, जैसा कि चरक संहिता मे कहा हित भुक् मित भुक् ऋत् भुक्। भोजन हितकारी मात्रा मे कम व ऋतु के अनुकूल ही पान करना श्रेयस्कर है।

—अमर स्वामी

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

जहां संस्कृत है वहां संस्कार हैं

आचार्य सत्येन्द्र शास्त्री एम. फिल.

आर्यावर्त्तीय विश्वकोष वेद में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रमाणित किया है कि विश्व की कोई भी ऐसी बात नहीं है जिसका उल्लेख वेद में नही किया गया हो, जो ज्ञान विज्ञान वेद में वर्णित कर दिया गया है, वही विश्व में अन्यत्र यत्रतत्र सर्वत्र दिखाई देता है। संस्कृत के और समग्र भारतीय साहित्य के आधार स्तम्भ वेद, उपनिषद. ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक सूत्र, भारतीय दर्शन, रामायण, महाभारत आदि प्रमुख संस्कृत ग्रन्थों के अतिरिक्त भास, कालिदास बाण, भवभूति, मुनित्रय, भर्तृहरि, कृतिवास एवं समस्त आधुनिक भारतीय प्रान्तीय भाषाओं में रचे जा रहे साहित्य के भीतर एक सूत्र या अन्तर्धारा के रूप में जो मौजूद है वह संस्कृत तत्व ही है। ऋषि दयानन्द ने अपने समय के मानव के मस्तिष्क मे जो हल-चल मचा दी थी उसका लक्ष्य नव मानव का निर्माण था। वे कूड़े कर्कट को भस्म कर उसकी जगह समाज के नवीन भवन की नींव रखना चाहते थे जिससे नव मानव तथा नव समाज उठ खड़ा हो। इन्हीं विचारों के लिए क्रियात्मक एवं व्यावहारिक पक्ष हेतु संस्कार विधि की रचना की वैदिक संस्कृति के सोलह संस्कार मानव के नव निर्माण का सतत प्रयत्न है।

संस्कृत की ही सांस्कृतिक परम्परा है संस्कृत के बिना भारत की भारतीय संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती न केवल साहित्य अपितु ज्ञान-विज्ञान की समस्त शाखा उपशाखाओं के पूर्ण विकास तथा चरित्र कोष के सदर्भ में भी भारतीय संस्कृति का आधार सर्व समर्थ व समृद्ध संस्कृत ही है। कम्प्यूटर के ही समान विज्ञान के क्षेत्र में गणित की सर्वोच्चता विश्व विख्यात् है। वेद के छ: अंगों में से एक ज्योतिष जिसे वेद का नेत्र कहा जाता है वह गणित ही है। आचार्य भास्कर, आर्यभट्ट, वराहमिहिर जैसे गणितज्ञ थे। वर्तमान समय मे स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ, डा० कैलाश. डा० गुर्जरमल्ल वर्मा श्रीधर वर्णेकर आदि वैदिक गणितज्ञ संस्कृत को संस्कृत कहलवाने मे प्रयत्नशील है।

संस्कृत जैसी सर्व समृद्ध पूर्ण वैज्ञानिक भाषा का आधार उसका एक सुनिश्चित सुव्यवस्थित व्याकरण है, मुनित्रय विशेषकर पाणिनि ने उसे यह व्यवस्था प्रदान की है। कहा जाता है कि वेद रूपी एक परम पुरुष है उसका मुख है व्याकरण। हमारा प्राचीन ऋषि गुरु अपने शिष्यो से शिक्षा के बाद दीक्षा के पूर्व यह अवश्य स्मरण करा देता था कि बेटा सब कुछ पढा पर व्याकरण नहीं पढा तो सब कुछ पढना बेकार हो जायेगा, अत: व्याकरण पढना अवश्य चाहिए। व्याकरणाचार्य डा० दयानन्द भार्गव जोधपुर ने ताश के बावन पत्तों के माध्यम से संस्कृत व्याकरण सिखाने का एक अद्भुत व अनुभवी तरीके की खोज की है। गीता के कुछ चुने हुए श्लोकों को ताश के पत्तों के आकार के विभिन्न पत्ते पर मुद्रित कराकर पान के पत्तों पर पुल्लिंग रूप. हुकुम के पत्तों पर हलन्त रूप चिड़ी के पत्तों पर स्त्रीलिंग रूप तथा ईंट के पत्तों पर सर्वनाम पदों को रेखांकित किया गया (+) के चिह्न से सन्धि, ऋण (—) के चिह्न से समास, गुणित (×) के चिह्न से कृदन्त तथा (÷) भाजित के चिह्न से क्रिया का संकेत करते हुए व्याकरण सिखाने की एक रोचक तथा लोकप्रिय विधि विकसित की गई है। इतना ही नहीं आधुनिक युग में संस्कृत संगणकम (कम्प्यूटर). डा० शिवमूर्ति स्वामी मेलबोर्न ने कहा संस्कृत कम्प्यूटर अत्यन्त उपयोगी हैं। संस्कृत आशुलिपि शार्टहैण्ड के सम्बन्ध में प्रो० प्रभाकर पन्त जोशी का कहना है कि संस्कृत आशुलिपि जिसे शार्ट हैण्ड या स्टेनोग्राफी कहते हैं इसमें संस्कृत आशुलिपि की हिन्दी शीघ्र लेखन कला की जननी माना है विधि बड़ी ही सहज ग्राह्य है।

इतना ही नहीं दिल्ली संस्कृत अकादमी टेलीफिल्म "आजाद चन्द्रशेखर" का निर्माण कर रही है दूरदर्शन संस्कृत धारावाहिक मेघदूतम तथा मृच्छकटिकम् श्रेष्ठ गीतिकाव्य व रूपको की सफल प्रस्तुति के अलावा लोकप्रियता प्राप्त करने वाले तीन धारावाहिकों रामायण, महाभारत तथा चाणक्य पूर्णतः संस्कृत पृष्ठभूमि पर आधारित थे ही, आकाशवाणी पर संस्कृत वार्ता की रोचकता बढ़ती जा रही है। संस्कृत ने ही दी सांस्कृतिक पराकाष्ठा संस्कृत के कारण अपना तथा समाज का उत्थान करने वाले लोगों की हर क्षेत्र में बड़ी संख्या है। डा० शंकरदयाल शर्मा पापुलपति वेंकटपति नरसिंहराव आदि भी संस्कृति के पक्षधर व पारखी संस्कृतज्ञ हैं। अनेकों कन्या गुरुकुल, अनेकों ब्रह्मचारियों के गुरुकुल भी संसकारवान संस्कृति की ही देन हैं। व्याकरण क्षेत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आख्यातिक, लिंगानुशासन, वर्णोच्चारण शिक्षा, अष्टाध्यायी आदि ग्रन्थों से संस्कृति में प्राण फूंके हैं। आज तक जितनी भी संस्कृतियां हुई हैं उनमें वैदिक संस्कृति के कर्णधार ही संस्कृत को सस्कारवान समझकर पल्लवित एवं विकसित करने में प्रयत्नशील थे एव सलग्नशील है।

—महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय
मठपारा दुर्ग (म० प्र०)

शराब मांस दहेज जैसी बुराइयों को दूर करने के लिये युद्ध स्तर पर काम करें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने गत सप्ताह जिला सोनीपत के प्रमुख ग्राम जूआ आर्य समाज मन्दिर का उद्घाटन करते हुए उपस्थित नवयुवकों तथा नवयुवतियो का आह्वान किया कि अब समय आ गया है कि वे आर्यसमाज के सगठन मे सम्मिलित होकर शराब. मास, जूआ, दहेज तथा भ्रष्टाचार जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए मैदान मे उतरे। स्वामी जी ने इन बुराइयों को बढ़ावा देने का आरोप हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल पर लगाया। इस अवसर पर हरयाणा की जनस्वास्थ्यमन्त्री श्रीमती शान्ति राठी ने यज्ञशाला का निर्माण करने हेतु ११ हजार रुपये अनुदान देने की घोषणा की।

—केदारनाथसिंह आर्य

उच्चकोटि के सन्यासी

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

श्री छोटूसिंह आर्य

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के निधन से सारे राष्ट्र को और विशेष रूप से आर्य जगत को जो अपार क्षति हुई है उसका वर्णन करना लेखनी की सीमा से बाहर प्रतीत होता है। स्वामी जी के देहावसान के साथ ही एक युग की समाप्ति हो जाती है। मेरा स्वामी जी से पिछले पचास वर्षों से अधिक सम्बन्ध रहा है। श्रद्धानन्द बाजार में स्थित स्वामी श्रद्धानन्द भवन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय था मैं १९४३ से निरन्तर सार्वदेशिक सभा में एक प्रतिनिधि के रूप मे जाता रहा हूं। तभी से पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी से परिचय प्रारम्भिक जीवन से ही है। एक सामान्य व्यापारिक परिवार मे जन्म लेकर एक साधारण आर्य समाज के कार्यकर्त्ता से आर्य जगत की शीर्षस्थ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को सुशोभित करना निसन्देह उनके कर्मठ संकल्प सत्यनिष्ठा और उनकी संगठन शक्ति का प्रतीक है। स्वामी जी के निधन के साथ ही आर्य समाज के एक युग की समाप्ति हो गई है।

स्वामी जी उन उच्च कोटि के सन्यासियों में से थे जिन्होंने संन्यास आश्रम ग्रहण करने के पश्चात कभी भी पीछे हटकर नहीं देखा और गृह त्याग के पश्चात अन्तिम सास आर्य समाज की सेवा करते हुये आर्य समाज कार्यालय मे ही ली। जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा स्वामी जी अधिक से अधिक याद किये जायेंगे। किसी शायर ने कहा है—"मसल सच है बशर कि कद्र मरने के बाद होती है।"

सुना है लोग अब हमें भी याद करते हैं॥

स्वामी जी का बहुत से लोगों से निकट का सम्बन्ध था। उनमें से मुझे भी एक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जब-जब भी उन्हें याद किया वो सार्वजनिक कार्य से तो अनेक बार अलवर पधारे ही, मेरे अपने परिवार की खुशी या गमी मे हमेशा शामिल हुये।

६ अक्तूबर ९४ को मेरी सुपुत्री प्रीति आर्य का अलवर मे विवाह उत्सव का निमन्त्रण दिया उनके निधन से एक दिन पूर्व मुझे उनका पत्र मिला कि वो अस्वस्थता के कारण नही आ रहे हैं। बच्चों को उन्होंने आशीर्वाद भेजा यह था उनका स्नेह।

सन् १९४६-४७ में अलवर मे आर्य वीर दल का संगठन अपनी चरम सीमा पर था, आर्य वीर दल के प्रधान स्वर्गीय श्री ओमप्रकाश त्यागी ने घोषणा की आर्य वीरों के जत्थे हिन्दुओं की रक्षार्थ नोआखली जायेंगे। पूज्य महात्मा गाधी जी नोआखली जा चुके थे। श्री रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्दबोध सरस्वती) अलवर आये और उन्होंने ओजस्वी भाषण से सारी स्थिति का दिगदर्शन कराया और अपील की कि अलवर से आर्य वीरो का जत्था नोआखली भेंजा जावे, उस समय मुझे उनका तेजस्वी स्वरूप और प्रेरणा शक्ति देखने का दिगदर्शन हुआ। यहां से श्री लक्ष्मण यति के नेतृत्व में आर्य वीरों का जत्था नोआखली गया। आर्य वीरों ने अपने निजी खर्चों में कटौती कर एक हजार की धन राशि श्री रामगोपाल शालवाले जी को भेंट की। मैंने स्वामी जी को साधारण कार्यकर्त्ता. उपमन्त्री, मन्त्री और प्रधान के रूप में नजदीक से देखा है उनके समक्ष आर्य समाज के अलावा कोई लक्ष्य नही था। उन्होंने किसी भी जगह कहीं पर भी बढ़-चढ़ कर कार्य किया। वो अपनी बात मनवा लेते थे और सब कार्य को पूरा करने में जुट जाते थे।

स्वामी जी को भारत वर्ष की सबसे बड़ी पंचायत लोकसभा का भी एक सत्र रहने का अवसर प्राप्त हुआ। वे दिल्ली कि चांदनी चौक लोकसभा क्षेत्र के प्रतिनिधि बने। उन्होंने लोकसभा में अपनी एक पहचान छोड़ी। जब कभी भी आर्य समाज के सिद्धान्तों के विपरीत कोई भी विषय आता था उन्होंने डटकर उसका मुकाबला किया। गऊ रक्षा आन्दोलन में उन्होंने कई बार जेल यात्रा की। गऊ रक्षा आन्दोलन को उन्होंने भाषणों तक ही सीमित नहीं रखा उसे रचनात्मक कार्य रूप में परिणत किया। आज राजधानी के बीच मे इतनी बड़ी गऊशाला का निर्माण करना जहां पर सैकड़ों गऊएं पल रही हैं स्वामी जी की गऊ भक्ति और कर्मठ शक्ति का प्रतीक है।

सन् १९७५ मे आर्य समाज शताब्दी समारोह होने का निश्चय कियागया सभी के साथ हमारी राय भी यह थी समारोह बम्बईमें ही होना चाहिये चू कि गुरुवर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रथम आर्य समाज की स्थापना काकड़वाड़ी में सन् १८७५ मे कीथी इस सिलसिले मे कई मर्तबा बम्बई मे सार्वदेशिक कार्यकारणी की बैठके रखी गई वहा की स्थिति का अच्छी तरह से जायजा लिया गया। श्री प्रताप भाई गूरजी वल्लभदास और उनके सहयोगी के परामर्श से आखिर यह निश्चय हुआ कि आर्य समाज का स्थापना शताब्दी समारोह दिल्ली में ही रखा जावे। सभी ने मिलकर इस समारोह को सफल बनाने का भार रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पर छोड़ा गया। आर्य समाज शताब्दी समारोह जो १९७५ मे दिल्ली में मनाया गया उसके शान का कोई समारोह आज तक दिल्ली मे नही हुआ। दिल्ली के लोग चकित थे आर्य जनों की यह भीड़ कहा से उमड़ पड़ी ऐसा लोगों का सैलाब दिल्ली मे कभी देखने को नही मिला था। यह सब स्वामी जी की सगठन एव कर्मठ शक्ति का ही प्रतीक था।

यं तो जब-जब भी महान् पुरुष इस ससार मे विदाई लेते है तो एक उसकी रिक्तता महसूस होती है और किसी हद तक क्षति भी होती है किन्तु समय-समय पर इस भारत भूमि मे अनेक सपूत पैदा हुये हैं, जिन्होंने उन रिक्त स्थानों को भरा है। हम सब आर्यों का कर्तव्य है कि जो स्वामी जी के चले जाने से रिक्तता महसूस होती है हम सब संगठित रूप से सद्भावना के साथ उसकी पूर्ति करें।

उप-प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

श्रद्धांजलि

श्री आनन्दबोध सरस्वती

श्री श्रीमान की स्वर्गीय आत्मा को,कोटि प्रणाम के साथ मिले शांति।
आ आत्मज्ञान तत्वदर्शी शीलवान थे आप, आपसे किसी को न थी भ्रांति
न नम्र हृदय उदार दृष्टि से, सबके प्रति वक्षा आपने प्यार।
न् नव नूतन उज्वल भविष्य हो सबका ऐसे प्रयास किये अपार॥
द दनुजता छुड़ाते रहे मनुज की आप अपनी अन्तिम स्वांस तक।
बो बो मेहरबानी की आपने जिसके कर्जदार हम रहेंगे कई जन्म तक॥
ध धन्य आपको जो महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग को दिखाते रहे।
स सद्‌विचार सतसंग यज्ञ हवन द्वारा राष्ट्र का शृंगार करते रहे॥
र रमे रहे परहित मे, हर जन सुसस्कारित और सुखी रहे।
स् सूरज सम प्रकाशित, निज राष्ट्र की गाथा गाते रहे॥
व वसुदेव कुटुम्ब की रही भावना. आपका आर्य समाज पर
उपकार बहुत।
ति तिताप मिटे सदा जग के, ऐसी भक्ति की आपने बहुत-बहुत॥

सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी
बुरहानपुर पूर्व निमाड़ (म० प्र०)

पुस्तक समीक्षा

कर्म और भोग

ले० : स्व० स्वामी अखिलानन्द सरस्वती

पृष्ठ—१९२, मूल्य—१८ रुपए

प्रकाशक—मधुर प्रकाशन, आर्यसमाज सीताराम बाजार, दिल्ली-६

मानव उत्पत्ति का कारण कर्म ही है जड़-चेतन में भेद की रेखा भी कर्म ही है यह सिद्धांत अत्यन्त आवश्यक व उपयोगी है प्रायः मनुष्य इस कर्म की ओर से उदासीन रहते हैं।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।।

कर्मों को करता हुआ लम्बे समय तक भली प्रकार जीवन प्राप्त करो। पर कर्म क्या है यह ही ज्ञात नहीं। कर्म क्या है और भोग क्या है कर्म और भोग में क्या अन्तर है।

कर्म सिद्धांत तथा वैदिक कर्म सिद्धांत अनोखा कर्म सिद्धांत है।

कर्म जिसके मूल में अविद्यादि पंच क्लेश है वे वर्तमान में किए कर्म ही है। जो जीवन में भोगे जाते हैं।

कर्म की परिभाषा महर्षि दयानन्द ने जो मन इन्द्रिय और शरीर में जीव चेष्टा विशेष करता है वह कर्म कहलाता है ऋग्वेदादि० में महर्षि ने कर्म के अर्थ सब चेष्टाएं कहा है धर्म और अधर्म की व्यवस्था का नाम कर्म है। त्रिगुणात्मक प्रकृति के कम्पन या गति का नाम भी कर्म है।

या यूं कहें जो दूसरे के कर्म को उत्पन्न करे या जो किया जाता है। कर्म तीन प्रकार का है—प्रथम कर्म, द्वितीय भोग रूपी कर्म, तीसरा मिश्रित। भोग क्या है? भिद् धातुसे भोगः' चैतन्य की अनुभूति भोग है। अनुभूति में मनुष्य विवश है परतन्त्र है चैतन्य का यही स्वभाव है यह भोग है भोग मनुष्य के कल्याण के लिए होता है। भोग पर ही कर्म की समाप्ति होती है सुख दुःख भोग है।

जिस प्रकार कर्म क्या है समझना समस्या है उसी प्रकार भोग क्या है इसी भोग को समझना भी समस्या है।

इन सब परिस्थितियों को समझने के लिए ही इस पुस्तक पर विवेचना मान्य विद्वान संन्यासी स्व० स्वामी अखिलानन्द सरस्वती जी ने अपने जीवन के परिपक्व अनुभवों के आधार पर कर्म और भोग पुस्तक पर विचार लेख रूप में व्यक्त किये हैं। पुस्तक नाम से ही अच्छाई अभिव्यक्त करती है। पाठक ध्यान से पढ़ें, पुस्तक पठनीय है।

प्रकाशक मधुर प्रकाशन ने इसे प्रकाशित कर बड़ा-काम किया है।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सम्पादक

जीवन की समस्यायें

(पृष्ठ १० का शेष)

आदमी उनका बन जाता है। आज हमारा प्रचार उल्टे तरीके पर हो रहा है। जहा हम सोये हुए हैं वे जागे हुए हैं, जिनकी हम मदद नहीं करते वे उनसे सहानुभूति रखते हैं। हमारे यहा अनाथालय है परन्तु उनके प्रबन्धकर्ता स्वय ही बने हुए हैं।

अनाथो के लिए अच्छा अनाथालय रोगियों के लिए मुफ्त औषधालय, बालको के लिए उत्तम पाठशालायें तथा असहायों की सहायता के लिए सेवा-केन्द्र, ये चार आवश्यक हैं। ये हो तो जीवन की समस्याओ का समाधान हो जाये। आज इन्हीं के बल पर ईसाई लोग समस्त ससार को ईसाई बनाना चाहते हैं। एक जगह के आर्य समाज के मन्त्री के पास एक पत्र आया। पत्र इस प्रकार था—

मन्त्री जी!

अब समस्त ससार में ईसा का सन्देश फैलने वाला है। ससार की कोई शक्ति इसे रोक नहीं सकेगी। सनातन धर्मियो और जैनियो यदि तुम में शक्ति है तो अपनी पुस्तकें लेकर शास्त्रार्थ के लिए आ जाओ।

यह है ईसाइयो का पत्र। ऊपर मन्त्री जी लिखा है, अन्दर सनातन धर्मियों और जैनियो को चुनौती दे रहे हैं।

आज का वातावरण बहुत ही बिगड़ गया है। आज जहां ढीला पाजामा और कमीज पहने किसी व्यक्ति को देखो तो समझ लो ईसाई है।

Co education (सहशिक्षा) नहीं होनी चाहिए। रूस के सम्बन्ध में एक पुस्तक अध्ययन करते हुए पढ़ा था, 'हमने लड़के और लड़कियों के स्कूल अलग-अलग कर दिए हैं। सहशिक्षा से लड़के और लड़कियां खराब हो गए।" इतना ही नहीं 'वहा के विद्यार्थी प्रत्येक सिनेमा में नहीं जा सकते, किसी विशेष सिनेमा मे ही जायेंगे और वह भी अपने अध्यापको के साथ।"

जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए क्रीड़ा स्थल अच्छा होना चाहिए यदि क्रीड़ा स्थल अच्छा नहीं तो अपने बच्चो को घर मे ही खेलने की सुविधाएं दें। जब मैं देहली मे रहता था तो हमारे बच्चे ऊपर ही खेला करते थे। एक दिन एक बच्चा आकर कहने लगा कि एक लड़का गाली बक रहा था। मैंने पूछा क्या कह रहा था, तो कहने लगा कि मुझे बताने में शर्म आती है। यदि क्रीड़ा स्थल अच्छा हो तो बच्चो का स्वभाव भी उत्तम बन जाता है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज मोठ का वार्षिक उत्सव १६ से २० नवम्बर ९४ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन तथा नगर के विभिन्न मार्गों से शोभा यात्रा निकाली गयी। सुश्री उर्मिला तथा श्रीमती उषा आर्य के पौरोहित्य में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने श्रोताओ को लाभान्वित किया।

—आर्य समाज संभल का वार्षिकोत्सव ११ से १३ नवम्बर ९४ तक सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानो तथा भजनोपदेशको ने पधार कर जनता का ज्ञान वर्धन किया। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

—आर्य समाज बैतूल का वार्षिकोत्सव १५ तथा १६ अक्तूबार ९४ को दो चरणों मे श्री श्याम चौरसिया की अध्यक्षता में वेदमन्दिर मे तथा लक्ष्मीनारायण शर्मा की अध्यक्षता मे रामलीला मैदान गज में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ समारोह को अनेको विद्वान वक्ताओ ने अपने उद्बोधन से रोचक बनाया।

—आर्यसमाज कठुआ का वार्षिकोत्सव १० से १३ नवम्बर ९४ तक उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कश्मीर शांति हेतु हवन व नशाखोरी के विरुद्ध अभियान चलाया गया। १२ नव को भव्य शोभायात्रा निकाली गई तथा स्कूली बच्चो की भाषण प्रतियोगिता में विजयी बच्चो को पारितोषिक दान किए गए।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं० डी० एल० ११०७६/९४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (११-१२-१९९४) बिना टिकट भेजने की लाइसेंस नं० U (C)९३
R N 626/5 Licensed to post without prepayment licence No. U (C) 93 Post in N.D.P.S.O.on 8, 9-12-1994

हीरक जयन्ती समारोह

आर्यसमाज महाराजपुर जिला छतरपुर का हीरकजयन्ती समारोह उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वानों भजनोपदेशकों ने पधार कर श्रोताओं को लाभान्वित किया। समारोह में शोभा-यात्रा आर्य वीर दल सम्मेलन मातृ सम्मेलन महर्षि दयानन्द पुस्तकालय एवं वाचनालय का उद्घाटन सहित कई अन्य कार्यक्रम सम्पन्न हुए। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

वैदिक ज्ञान मेला सम्पन्न

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी महिला आर्य समाज उन्नाव के तत्वावधान में आर्य समाज के प्रांगण में वैदिक ज्ञान मेला विविध कार्यक्रमों के साथ ससमारोह सम्पन्न हुआ। वार्षिक निर्वाचन में श्रीमती कैलाश पुरी प्रधाना, श्रीमती प्रवेश पुरी मन्त्रिणी तथा श्रीमती पुष्पा मिश्र कोषाध्यक्षा निर्वाचित हुई।

वैदिक सिद्धांत प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज बिरला लाइन्स दिल्ली में महर्षि दयानन्द सिद्धांत रक्षणी सभा की ओर से १४ जनवरी से १२ फरवरी ९५ तक एक माह का वैदिक सिद्धांत शिविर लगने जा रहा है। इस शिविर में प्रत्येक प्रान्त से पांच-पांच व्यक्ति लिए जायेंगे इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द जी स्वामी ओमानन्द जी तथा स्वामी सत्यपति जी सहित आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान प्रशिक्षण देंगे।

आर्यों के लिए गौरवपूर्ण सन्देश

जब से हमने आश्रम व्यवस्था को छोड़ा है तब से जहां हम पिछड़े हैं वहां आर्य समाज भी पिछड़ा है आइए अब हम सब मिलकर इसे अपनाएं। हमारे लिए हर्ष का विषय है कि श्री सीताराम आर्य सम्पादक महर्षि सिद्धांत रक्षक हिसार अपने काफी साथियों सहित १२-२-९५ को वानप्रस्थ की दीक्षा ले रहे हैं और भी कोई सज्जन वानप्रस्थ या सन्यास लेना चाहे तो उनसे तुरन्त सम्पर्क करे। जिससे एक टीम के रूप में आर्य समाज के कार्य को गति दी जा सके। यह वानप्रस्थ दीक्षा समारोह आर्य विद्वत् सन्यासी सम्मेलन ११-१२ फरवरी ९५ को चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर सूरज पर्वत ईस्ट आफ कैलाश नई दिल्ली ६५ में होगा आप अधिक से अधिक संख्या में पहुंचे। श्री सीताराम आर्य का पता

२१३/३६ सी इन्द्रलोक दिल्ली-३५

ध्यान योग, ब्रह्मयज्ञ, वेद प्रवचन तथा चिकित्सा शिविर

ओमानन्द योगाश्रम देवधाम गांधीनगर इन्दौर में दिनांक २५-१२-९४ से ३-१-९५ तक स्वामी ओमानन्द सरस्वती के आचार्यत्व तथा अध्यक्षता में उक्त शिविर सम्पन्न होने जा रहा है। इस अवसर पर ध्यान योग साधना, ब्रह्मयज्ञ वेद प्रवचन चिकित्सा प्राकृतिक चिकित्सा आदि के बारे में विस्तृत रूप से शिक्षित किया जायेगा। साधना शिविर में केवल १०८ साधकों को ही प्रवेश दिया जायेगा अतः स्वामी ओमानन्द जी को आश्रम के पते पर पूर्व सूचना देवें

ओमानन्द योग आश्रम देवधाम गांधीनगर, इन्दौर

आर्ष पाठविधि के विद्यालय की स्थापना

प्राचीन आर्ष पद्धति के अनुसार पाणिनि व्याकरण एवं महाभाष्य तथा अन्य वैदिक वाङ्मय के अध्ययन के लिए 'आर्ष विद्या निकेतनम्' नामक विद्यालय प्रारम्भ किया गया है। यहां छात्र विद्याध्ययन कर रहे हैं इसका संचालन स्व० पू० पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु एवं पू० पं० युधिष्ठिर मीमांसक एवं पू० प० विश्वपाल जी आचार्य के शिष्य ब्रह्मदत्त शर्मा कर रहे हैं। इस विद्यालय में शिक्षा, भोजन, आवास इत्यादि पूर्ण निःशुल्क है। सम्पूर्ण व्यवस्था ईश्वर के विश्वास पर आधारित है। इच्छुक छात्र निम्न पते पर सम्पर्क करें—

'आर्ष विद्या निकेतनम्

१५०२, सिविल लाइन्स, बदायूं - २४३६०१, उ०प्र० आर्यावर्त

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन १५ जनवरी ९५ को

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का वार्षिक निर्वाचन (अधिवेशन) आर्य समाज शास्त्री नगर (आर्य अतिथि भवन) मेरठ में दिनांक १५ जनवरी ९५ को होगा।

उ० प्र० की समस्त जिला सभा, आर्य समाजे ज्यादा से ज्यादा सख्या मे मेरठ पहुचे।

स्थान आर्यसमाज शास्त्री नगर डी ब्लाक मेरठ
दिनांक १५ जनवरी ९५
समय----११ बजे प्रातः

भवदीय
इन्द्रराज (सभा-प्रधान)

पं० धर्मवीर घूरा (मौरिशस) सेवा सहायता स्थिर निधि

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा दिनांक १०-१०-९३ के निश्चय संख्या १२ के अनुसार ५००० रुपये की मोरीशस निवासी प० धर्मवीर घूरा सेवा सहायता स्थिर निधि की स्वीकृति प्रदान की गई। इस निधि के ब्याज को सार्वदेशिक सभा द्वारा विद्वान आर्यविधवाओं सन्यासियों और प्रचारकों के सहायतार्थ पर व्यय किया जायगा तथा मूल राशि कभी भी व्यय नहीं की जायेगी।

चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतम नगर नई दिल्ली १४ का १५ वां वार्षिक चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ १७ दिसम्बर शनिवार से १ जनवरी रविवार १९९५ तक विभिन्न भव्य सम्मेलनों के साथ सम्पन्न होगा। इस पवित्र यज्ञ के ब्रह्मा श्रद्धेय श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती होंगे ध्वजारोहण आर्य जगत के प्रसिद्ध नेता आदरणीय प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा श्री सोमनाथ जी मरवाह करेंगे

यज्ञ समय—प्रातः ७ बजे से १० बजे तक सायं ३ बजे से ६ बजे तक।

इस प्रकार दैनिक क्रम है जो दम्पति एक दो तीन या चारों वेदों में यजमान बनना चाहें वे भारतीय वेशभूषा पहनकर यज्ञ में भाग ले सकते हैं।

ऋषिऋण, वेदविद्या तथा संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार के लिए अधिक से अधिक दान देकर पुण्य के भागी बनें।

प्रधान-चौ० दिलीपसिंह निवेदक—आचार्य हरिदेव

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी को श्रद्धा सुमनाञ्जलि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी के निधन का समाचार अपने एक मित्र से १८ अक्तूबर को प्रात सुनकर मैं अवाक रह गया। अभी तो १४ अक्तूबर को मध्याह्न में मैं उनसे सभा में मिला था। उस समय उन्होंने मुझसे कहा था कि आपको आर्य समाज का बहुत काम करना है।

स्वामी जी के निधन से एक विराट स्तर पर सभी जगह जाकर आर्यों को उत्साह बढ़ाने वाला व्यक्ति आर्य समाज से चला गया। उनकी सेवाएं अविस्मरणीय हैं। उन्हें मेरे श्रद्धा सुमन हृदय से समर्पित हैं।

—डा० वसन्तकुमार शास्त्री अमेठी

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा,नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दूरभाष २ ७ ७७१ वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अंक ४३] दयानन्दाब्द ७० सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९५ मार्गशीर्ष शु० १५ स ५१ ८ दिसम्बर १९९४

त्याग, तप, बलिदान एवं आर्य संस्कृति के पुजारी
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समस्त आर्य जन धूम-धाम से मनायें

शोभा यात्रा मे अधिक से अधिक संख्या मे भाग लें

सार्वदेशिक सभा ने देशभर का आर्य समाजो तथा राष्ट्रवादी जनता से अपील की कि आगामी २५ दिसम्बर को देशभर म अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दि समारोह पूर्वक मनाये। हिन्दू समाज को संगठित करने आपकी रक्षा तथा बिछडो को मिलाने क्षमता उत्पन्न करने के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने महान कार्य किये तथा शिक्षा का भारतीय करण करने के लिये सफल प्रयत्न किये। उनके द्वारा किये गये कार्यो से हिन्दू समाज म संगठन तथा जागति आया।

भारत की राजधानी दिल्ली म पूरे समारोह के साथ २५ दिसम्बर का मुख्य कार्य मनाया जायेगा। श्रद्धानन्द बलिदान भवन श्रद्धानन्द बाजार से जहा १९ म एक मतान्ध वार सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द के सीने म गोली मारकर उन्हे शहीद कर दिया था वहा प्रात क विशेष यज्ञ सम्पन्न होगा तथा उसके बाद वही से एक विशाल शोभायात्रा प्रारम्भ होगी इस शोभा यात्रा का नेतृत्व आर्यजगत के नेता तथा प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव त सोमनाथ मरवाह एडवोकेट करेंगे। यह जलूस खारीबावली चादनी चौक के विभिन्न मार्गो होता हुआ लालकिला मैदान पहुचेगा। लालकिला मैदान म यह जलूस एक सार्वजनिक सभा रूप म परिणत हो जायेगा। इस सभा का अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान सोमनाथ मरवाह एडवोकेट करेगे। सभा म अनेको आर्य विद्वान व राष्ट्रीय नेता स्वतन्त्र आदोलन के महान सेनानी सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं गुरुकुल कागडी के संस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करेंगे।

आर्य जनता से अपील है कि इस अवसर पर अपनी अपनी समाजो म तथा सार्वजनिक स्थलो पर विशेष यज्ञ कर सार्वजनिक सभायें आयोजित कर तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जी तथा कार्यो को आम जनता के समक्ष प्रस्तुत कर। प्रात काल अपने अपने क्षेत्रो म प्रभात फेरी निकाल कर जन जागरण करें।

२५ दिसम्बर को प्रात १० बजे से पूर्व श्रद्धानन्द बलिदान भवन पहुच जाय। शोभायात्रा मे भाग लेने के लिये अपने अपने आर्य समाज स बस, ट्रक तथा टैम्पो आदि से जलूस के रूप बलिदान भवन पहुचकर अनुशासित होकर शोभायात्रा की शोभा बढाये। सभा का सचालन केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री शिवकुमार शास्त्री करेंगे।

विशेष पुरस्कार

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री का मेजर (डा०) अश्विनाकुमार कण्व वैदिक विद्वान पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

वेदामृतम्

ओ३म् आत्मने वर्च्चोदा वर्चसे पवस्वौजसे मे वर्च्चोदा वर्चसे पवस्वायुषे मे वर्च्चोदा वर्चसे पवस्व विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो वर्च्चोद सौ वर्चसे पवेथाम्।

यजु० । ७ अध्याय । म त्र २८ ।

पदार्थ (भाषा मे)—हे (वर्च्चोदा) योग और ब्रह्म विद्या देने वाले विद्वान आप। (म) मेरे (आत्मन) इच्छादि गुण युक्त चेतन के लिए (वर्चस) अपने आत्मा के प्रकाश को (पवस्व) प्राप्त कीजिये। हे (वर्च्चोदा उक्त विद्या देने वाले विद्वान आप (मे) मेरे (ओजस) आत्मबल होने के लिये (वर्चसे) योगबल को (पवस्व) जनाइये। हे (वर्चोदा)बल देने वाले (म) मेरे (आयुष) जीवन के लिए (वर्चसे) रोग छुडने वाले औषध को (पवस्व) प्राप्त कीजिए (वर्च्चोदौ योग विद्या पढने पढाने वाला तुम दोनो (मे) मेरी (विश्वाभ्य) समस्त(प्रजाभ्य) प्रजाओके लिए(वर्चसे) सद्गुण प्रकाश करने को (पवेथाम्) प्राप्त कराया करो।

भावार्थ—योग विद्या के बिना कोई भी मनुष्य पूर्ण विद्यावान नही हो सकता और न पूर्ण विद्या के बिना अपने स्वरूप और परमात्मा का ज्ञान कभी होता है। न इसके बिना कोई न्यायाधीश स प्रजा के समान प्रजा की रक्षा कर सकता है अत सब मनुष्यो को उचित है कि इस योग विद्या का सेवन निरन्तर किया करें

सम्पादक :
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा दिया गया प्रेस वक्तव्य

ार्य समाज उन अर्थों म धम नही है जिस प्रकार आज इस समझा जा रहा है यह एक जीवन पद्धति है जिसका मूल सदाचार और पवित्रता है तथा ना राज्य सचालन क मामला मे पण पथ निरपक्ष सिद्धाता का समथन करता है।

भारतीय सविधान की उद्देशिका म ४ व सशाधन क द्वारा सन १९७६ म एक शब्द सक्यूलर जोडा गया।

परन्तु विस्मय है कि लगभग २ दशक बात जान पर भी भारतीय सविधान क उन अनुच्छेदो का जो पथ निरपेक्ष भावनाओ क विरुद्ध है अपरिवतनीय रखा गया। परिणाम स्वरूप आज वह परिस्थितिया उत्पन्न हो गई है जो ब्रिटिश राज्य के समय मौजद थी। धत ब्रिटिशो ने धम का दुरुपयोग किया तथा भारतीयो को दो राष्ट्रो म विभाजित कर दिया हिन्दू और मुसलमान। हमारे आज क नेतागण भी धम तथा जाति दोनो भावनाओ को उकसा रहे है जिससे राष्ट्रीय एकता की भावना दिनो दिन लुप्त होती जा रहा है।

आय समाज इस बुराइ को दूर करन का एक उपाय सझाना चाहता है। सरकार को नागरिको के अधिकारो तथा सविधाओ मे सम्बन्धित हर मामले मे सर्वोच्च न्यायिक सिद्धात का पालन करना चाहिए कि—

न्याय के समक्ष समानता तथा राजगार क मामला मे समस्त नागरिको को समान अवसर।

मैं समझता हू कि सामाजिक और आर्थिक पिछडपन क तक को यदि सदव चलन वाल सिद्धात के रूप म मान्यता दी गइ तो वह उद्देश्य पूर नहीं हो सकन जिनक लिए इन्हे प्रारम्भ किया गया। लगभग अध शताब्दी तक सान्त्वना रूपी यह विशेषाधिकार दिये जान क बावजूद भी स्थिति म कोई परिवतन नही हो पाया बल्कि धम और जाति के नाम पर और अधिक अधिकार दिय जान की माग अभी भी विद्यमान है इस माग का हम जितना पूरा करत जाएग यह उतनी अधिक बढगा।

आज हम पतन के कगार पर खड़े है जहा से नाचे धकलन क लिए विध्वसक ताकत हम चारो ओर से घर चकी है। विश्व का ताकत आज यह महसूस करन लगी है कि भारतीय उप महाद्वाप की एशिया म भौगोलिक स्थिति इसके पास प्राकृतिक साधनो समाधनो तथा मानवीय शक्ति की बदौलत इस सर्वो च्चता क मकाबले के लिए एक ताकत बना सकता है

इसालए वे हमे सामाजिक तथा राजनतिक रूप से अस्थिर बनाय रखना चाहत है हमारी सीमाओ पर खतरा पदा किया जाता है। उत्तर पूव क राज्यो म समानान्तर सरकार खडी की जाती है उग्रवाद के बल पर विनाश लीला बढती जा रही है।

इन विकट परिस्थितियो मे भी क राजनीतिज्ञो न अभी तक आख ब कर ली है जिससे उन्हे दीवार पर लिखी बात भी नजर नही आती।

अभी कुछ दिन पहले ही हमन अन्तराष्ट्रीय दलित सेना क गठन का समा चार सना ार्य समाज हिन्दुआ के तथाकथित उच्च वग के लोगो तथा दलितो मे कोई भेदभाव नही समझता। यह केवल वर्णाश्रम धम का बिगडा हुआ रूप है जिसके कारण जन्म पर आधारित जाति प्रथा की शुरुआत हुई। आयसमाज इसका विरोध करता है। आय समाज उस वर्णाश्रम धम मे विश्वास करता है जिसका अनुसरण हमारे पूवजो ने किया था तथा जो मूलत उस सिद्धान्त पर आधारित है जिसके अनुसार

जन्म का सयोग नही बल्कि योग्यता और स्वभाव मायन रखत है

मेरी दलितो से अपील है कि वे स्वय को दलित कहना बन्द कर। यह एक मिथ्या नाम है। मैं चाहता हू कि उन सबको हाथ मिलाकर जन्मगत जातिवाद के हमेशा हमेशा के लिए विनाश हेतु सघषशील होना चाहिए अपनी योग्यता और स्वभाव क अनुसार सबको ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या शूद्र क कार्यो को अपनाना चाहिए।

मसलमानो द्वारा अयोध्या म तथा कथित बाबरी मस्जिद स्थल पर नमाज पढन क निणय की घोषणा क प्रति अपना असहमति जताना यह साबित करता है कि यह बहान बाज वाली अज्ञानता है

हमारा यह विश्वास है कि इसम इण्टर सर्विस पाकिस्तान का खुफिया एजेन्सी आइ एस आई का हाथ है सरकार को इस विषय म एक वक्तव्य जारी करना चाहिए था

मुसलमानो क प्रति तुष्टीकरण नीति का समथन करन को मानसिकता वाल राजनीतिज्ञो स हम प्राथना करना चाहते हैं कि उन्ह इस नीति क खतरो को महसूस कर लना चाहिए तथा स्वय को परिस्थितियो स उभार ल इससे पूव कि हालत बकाबू हो जाए।

मुस्लिम मनोवत्ति आज भी वसी ही है जैसी विभाजन से पूव थी विभाजन समझौते (भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम) की स्याही अभी सूखी भी नही थी कि सविधान समिति क कुछ मुस्लिम सदस्यो न पृथक मतदाता सूची की पद्धति को जारी रखन की माग प्रारम्भ कर दी क्योकि उनक अनुसार वे इस पद्धति क आदी हो चुके थ। जो कि सन १९१६ से ब्रिटिश राज्य क अन्तगत चल रही थी। उन्होने यहा तक कहा कि व एक सगठित तथा मजबूत ताकत है और यदि उनकी यह माग न मानी गई तो भारत क समस्त मुस्लिम उत्पात मचा सकत है।

इस उत्पात का अथ उदण्डता तथा विनाशवादी हिसात्मकता होता है।

जहा राष्ट्रवादी भारतीयो न स्वतन्त्रता की माग की वहा जिन्ना भारत का तोडना चाहता था। उन्होन भारत को तोडकर ही दम लिया

आज इसका अनुमान लगाना कठिन नहा है कि भारत क इन तथाकथित असन्तुष्ट मसलमानो का आन्दोलन म क्या छिपा है।

आय समाज समस्त राष्ट्रवादी लोगो से अपील करता है कि व इस विषय म गहन चितन कर तथा भारत क भविष्य क बार म विचार कर। हम सब इस देश को जाति और पथ क युद्ध स बचान पर विचार कर।

आज की इन विकट समस्याओ क प्रति लोगो म जागति पदा करन क उद्देश्य से ार्य समाज न एक जन जागरण अभियान चलान का फसला लिया है।

आय समाज इस म विदेशी समाचार पत्रो क प्रवश का विरोध करता है क्योकि यह किसी भी रूप म राष्ट्रीय विचारों क हित म नहीं होगा जिनके लिए हम कटिबद्ध हैं

आर्यसमाज के सिद्धात सरकार के लिए मौन प्रस्ताव

- सुश्री शैलजा

परोपकारिणी सभा की ओर स महर्षि क १११व निर्वाण दिवस क उपलक्ष्य म ११ से १ नवम्बर तक ऋषि मेला का आयोजन ऋषि उद्यान म किया गया। ऋषि मेले का उद्घाटन पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज न ध्वजा रोहण कर किया। ८ अक्तूबर से प्रारम्भ हुए विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति १२ नवम्बर को प्रात हुई। समारोह म वादविवाद प्रतियोगिता मद्यनिषध एव गोरक्षा सम्मेलन वद गोष्ठी सहित अनेको कायक्रम तथा सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री प्रियव्रत दास जी का अभिनन्दन एव प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता एव वदिक विद्वान प० विरजानन्द का सम्मान समारोह आयोजित किए गए। इस अवसर पर सस्कृति प्रदशनी भी लगायी गयी थी एव बालक बालिकाओ क द्वारा आकषक व्यायाम प्रदशन भी किया गया। समारोह मे आय जगत के प्रसिद्ध विद्वानो भजनोपदेशको के अतिरिक्त केन्द्रीय शिक्षा एव सस्कृति उपमन्त्री सुश्री शैलजा न अपन भाषण म आय समाज क सिद्धाता को सरकार के लिए मौन प्रस्ताव करार दिया। त्रिदिवसीय ऋषि मेले मे बडी सख्या मे देशभर से आयजनो ने अपने परिवार सहित पधार कर विभिन्न वैदिक विद्वानो क उपदेशामत का पान किया।

सम्पादकीय

नदवा कालेज में पुलिस द्वारा छापा

लखनऊ के एक छात्रावास पर पुलिस द्वारा छापा मारने की घटना तूल पकड़ती जा रही है लेकिन इसका कारण एकमात्र यही है कि पुलिस ने सावधानी से काम नही किया। दारुल-उलूम-नदवतुल-उलेमा के अतहर छात्रावास पर यदि इंटेलिजेंस ब्यूरो और उत्तर प्रदेश की पुलिस ने मिलजुलकर छापा मारा तो निश्चय ही उन्हे ऐसी सूचना मिली होगी कि छात्रावास मे कोई जासूस छिपा हो। यह भी सम्भव है कि जासूस वहा सामान्य छात्र बनकर रह रहा हो और उसके साथ रहने वाले छात्रो को भी उसका पता न हो। इसलिए न तो पुलिस का छापा मारना गलत था और न ही अनजान छात्रो का अपने साथियो को पुलिस के चगुल से छुड़ाने का प्रयास करना। वैसे पुलिस ने जिस छात्र को पकड़ने के लिए छापा मारा था वह उसे मिला नही। कुछ दिन पहले वह छात्रावास से जा चुका था। पुलिस को सन्देह था कि वह छात्र कश्मीरी था और उसके सम्बन्ध पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई एस आई से भी हो सकते हैं।

क्या इसके पूर्व कहीं भी छापा नही डाला गया।
स्वर्ण मन्दिर में पुलिस ने क्या छापा नहीं डाला।
फिर यह विद्रोह और राजनैतिक चीख पुकार क्यों ?

कुछ भी हो अगर इंटेलिजेंस ब्यूरो और राज्य पुलिस ने राज्य सरकार के गृह विभाग को और छात्रावास के अधिकारियो को विश्वास मे लिया होता तो जो कुछ हुआ वह नही होता। उक्त छात्रावास के अधिकारियो ने कहा भी है कि यदि पुलिस पहले विश्वास म ले लेती तो उसे पूरी सहायता मिल सकती थी। यहा तक कि राज्य सरकार के लिए भी परेशानी पैदा हो गयी मुख्य मन्त्री ने केन्द्र सरकार से आग्रह भी किया कि अगर भी इस तरह के छापे डाले जाय तो उसके बारे मे राज्य सरकार को अवश्य ही विश्वास मे लिया जाय या कम से कम सांकेतिक रूप से ही इत्तला दे दी जाए। वैसे एक सवाल यह जरूर उठता है कि क्या राज्य सरकार या छात्रावास के अधिकारियो को पहले से सूचना होती तो जाच कार्य पर कोई विपरीत प्रभाव पडता ? यहा यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नही है कि एक बार जाच करते हुए दिल्ली पुलिस की टीम नेपाल की सीमा मे घुस गयी और उस घटना को लेकर दोनो देशो मे अनावश्यक कडवाहट भी पैदा हुई। इस बात से इन्कार नही किया जा सकता कि इन दोनों विश्वविद्यालय कालेज छात्रावास या अन्य शिक्षण संस्थाओ मे पढाई लिखाई के साथ-साथ तोड फोड की गतिविधिया भी चलती हैं और तोड फोड करने वाले तत्व अपने को छात्र या शिक्षक के रूप म ही वहा प्रवेश दिला सकते हैं। फिर भी छात्र और तोड फोड करने वाले लोगो के बीच भेद तो करना ही होगा। चावल या दाल म जो ककड होते हैं उन्हे निकालना तो पड़ता ही है।

मुख्यमन्त्री कल्याण सिंह को मुआवजे की घोषणा इसलिए करनी पडी क्योंकि पुलिस की असावधानी से छात्रो पर अनेक तरह के जुल्म किये गये। छात्रावास मे पुलिस रात के डाई बजे घुसी और निचले तथा पहले तल के कमरो को बन्द कर दिया। फिर खिडकी का शीशा तोडकर वहा से गोली चलायी और छात्रों को आतंकित किया। इसके बाद सात छात्रो को गिरफ्तार किया गया। छात्र जाग उठे और उन्होंने पुलिस को घेर लिया। जाहिर है कि पुलिस को हवाई फायर करते हुए भागना पड़ा। यह भी बताया गया है कि छात्रावास की बिजली काट दी गयी थी और छात्रावास में इसी कारण भगदड़ जैसी स्थिति हो गयी जिससे अनेक छात्र घायल भी हुए।

सवाल उठने की बात यह है कि कानून-व्यवस्था से सम्बन्धित किसी भी विषय पर खास तौर पर धार्मिक प्रतिष्ठानों में किसी भी प्रकार की केन्द्रीय पुलिस या खुफिया संगठन कोई कदम उठायेगा तो वह गलत जरूर होगा। इसके अलावा भी कुछ सवाल हैं। छात्रावास के अधिकारियो को जवाब देना होगा कि छात्रो के पास गोली कहा से आयी और क्या छात्रावासों की जांच-पड़ताल नही होती ? दूसरा सवाल यह है कि मुस्लिम संगठनो को बीच मे कूदने की क्या जरूरत है ? कानून-व्यवस्था की समस्या सबके लिए एक जैसी है। यदि लखनऊ विश्वविद्यालय के किसी छात्रावास मे किसी तोड फोड वाले के रहने का संकेत होगा तो वहा भी छापा मारा जाएगा और गलत तत्वो को पकड़ा जाएगा। मुख्यमन्त्री ने यदि मुआवजे की घोषणा की है तो यह क्यो माना जाए कि उन्होने किसी वर्ग को खुश करने के लिए ऐसा किया है ? असलियत यह है कि विदेशी खुफियागिरी के खिलाफ पूरी सतर्कता बरतने की जरूरत है।

छापे के सिलसिले मे दिल्ली पुलिस के एक निरीक्षक को निलम्बित कर दिया गया है। इससे दिल्ली पुलिस म बेहद रोष है। निलम्बन आदेश से खिन्न कई वरिष्ठ पुलिस अधिकारियो का मत है कि यह कारवाई पुलिस कर्मियों का मनोबल गिराने वाली और मुस्लिम कट्टरपंथियो तथा आतंकवादियो के हौसले बुलन्द करने वाली है।

रणसिंह के निलंबन पर न केवल निरीक्षक या सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) बल्कि उपायुक्त (डीसीपी) स्तर के वरिष्ठ अधिकारियो मे भी गुस्सा है। ये अधिकारी निलंबन कार्रवाई को अन्याय बता रहे हैं।

एक अधिकारी ने कहा कि यह अप्रत्यक्ष रूप से पुलिस के कार्य मे राजनीतिक हस्तक्षेप है जिसका प्रतिकूल प्रभाव आतंकवादियो की धरपकड तथा मुस्लिम कट्टरपंथियो की जानकारी जुटाने के काम पर पड़ेगा।

विशेष शाखा के एक एसीपी की तीखी टिप्पणी है बिना रीढ की केन्द्र सरकार से और उम्मीद ही क्या की जा सकती है।

आतंकवादियो की धरपकड और उनकी संदिग्ध गतिविधियो की जानकारी जुटाना अपने आप मे जोखिम पूर्ण कार्य है। एक अधिकारी का कहना है कि जब इस जोखिम के साथ ही नौकरी का जोखिम उठाना पडे तो भला कौन पुलिस वाला काम मे दिलचस्पी लेगा।

उत्तर प्रदेश मे विभिन्न मुसलिम कट्टरपंथियो व कश्मीरी आतंकवादियो के ठिकाने मुस्लिम बहुल क्षेत्रो मे है। वहा दिल्ली पुलिस दल जाते रहते है। पुलिस अधिकारी कहते है कि अब स्वाभाविक है कि पुलिसकर्मी वहा जाने मे हिचकिचाहट दिखाए। वरिष्ठ अधिकारियो के लिए दुविधा यह भी है कि हिचकिचाहट दिखाने वाले उन पुलिस वालो को वह संतुष्ट कैसे करे ? एक अन्य अधिकारी ने इस प्रकरण को कुछ माह पूर्व हुए नेपाल प्रकरण से जोडा इस अधिकारी का कहना है कि पुलिस के कार्य मे राजनीतिक दबाव इस तरह यदि बढता गया तो अपराधियो की धरपकड दूभर हो जाएगी। इसका लाभ अपराधी अवश्य उठायगे और वे अपने ठिकाने धार्मिक नजरिए से संवेदनशील स्थानो मे बनायेगे।

हिन्सा को बढ़ावा

आजादी के बाद लोकतन्त्र की आड मे हमारा जीवन कितना गिर चुका है इसकी कल्पना नही की जा सकती है। म० बुद्ध महावीर स्वामी महात्मा दयानन्द और गांधी के अहिन्सक देश मे हमारी मानसिकता गिरकर कहा तक आ चुकी है। जिस देश का इन्सान पैरो तले चींटी को भी मरने नही देना चाहता है। उस देश मे भ्रूण हत्या जैसा निन्दनीय कार्य किस प्रकार सम्भव है।

एक तरफ हम विश्व मे आन्तरिक कलह को दूर करने हेतु शांति मिशन भेजकर शान्ति का सन्देश देते हैं। दूसरी ओर जिस देश मे नारी के पैशाचिक कृत्य गर्भपात कराने के लिये अपराध माना जाता था उस देश मे हमारी सरकार ने भ्रूण हत्या को कानूनी अधिकार देकर अहिन्सा को ताक मे रखकर हिंसा को बढावा दिया है और स्थान-स्थान पर बोर्ड लिखे देखे हैं कि भ्रूण हत्या (गर्भपात) कराने हेतु मिले। यह नर-नारी को खुला हिन्सा साधिकार निर्देश है।

अहिन्सा के पुजारी अपने ही देश मे हिन्सा का नारा दे और हत्या को बढावा दें कहा तक उचित है। जिस देश के लोग गौहत्या

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

एक संस्मरण

आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के दुःखद निधन का समाचार १८ अक्तूबर ९४ को प्रातः समाचार परिक्रमा दूरदर्शन से प्राप्त हुआ। स्वामी जी का देहावसान आर्य जगत की एक अपूर्णीय क्षति है। स्वामी जी ने अपने जीवन काल के अन्तिम क्षणों तक अपने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना आर्य समाज की सर्वतोमुखी उन्नति की दिशा में जो कार्य किये हैं वे अविस्मरणीय तो रहेंगे ही उनसे आर्यों को सदैव प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी।

स्वामी जी की काश्मीर समस्या के प्रति जो तड़प और सुझाव थे काश भारत की सरकार ने उस पर अमल किया होता तो आज वह समस्या इस प्रकार दुःखद नहीं रह जाती। राष्ट्र के प्रति स्वामी जी के अवदानों को भुलाया नहीं जा सकता। इधर अन्तिम दिनों में गोवध संरक्षण तथा पशु हिंसा को बन्द कराने की जो ज्वाला स्वामी जी के हृदय में धधक रही थी और जिस प्रकार उसे सफल कराने के लिए वह चिन्तित रहते थे उसे पूर्ण कराना हम सभी आर्यों का परम कर्तव्य है।

स्वामी जी ने पूर्व-रामगोपाल शालवाले के रूप में एक स्वतन्त्रता सेनानी, लोक सभा सदस्य गोरक्षा आन्दोलन हिन्दी आन्दोलन हैदराबाद सत्याग्रह में प्रमुख भूमिका निभाई थी। उन्होंने आर्य समाज की जो सेवा तन-मन-धन से एक आर्य सेवक के रूप में की है और जिसके फलस्वरूप आर्य जगत की उनमें जो श्रद्धा एवं विश्वास व्याप्त था और उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में आर्य समाज की जो ख्याति बढ़ाई थी उसी का परिणाम था कि आर्य समाज संगठन की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्वमान्य प्रधान पद को सन १९७५ ई० से अपने जीवन पर्यन्त सुशोभित करते रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल को उनका स्नेह एवं आशीर्वाद सर्वदा प्राप्त रहा और यह सौभाग्य ही रहा कि सभा का ऐतिहासिक महर्षि दयानन्द भवन का शिलान्यास सन १९८८ ई० में और उसका उद्घाटन सन १९९३ ई० में स्वामी जी के करकमलों से सम्पन्न हुआ था।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल स्वामी जी को एक प्रेरणा स्वरूप मानती रही है और उनके आदर्शों के पालन तथा गोरक्षा आदि के उनके चलाए आन्दोलन की पूर्ति में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी। स्वामी जी के बाकी कार्यों को निष्ठापूर्वक करना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—आनन्द कुमार आर्य
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल

संस्मरण सभा

आर्य जगत की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का ९१ वर्ष की आयु में दिनांक १८ अक्तूबर ९४ को आकस्मिक निधन हो गया। महर्षि मिशन के प्रति समर्पित स्वामी जी ने चार दशकों से अधिक समय तक आर्य समाज को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। ऐसे नेता पथ प्रदर्शक की पुण्य स्मृति में एक संस्मरण सभा का आयोजन २३ अक्तूबर रविवार को प्रातः ११ बजे महर्षि दयानन्द भवन, ८ शंकर घोष लेन में किया गया। सभी महानुभावों ने उस तपस्वी आर्य सन्यासी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

हा ! इस जग से चले गये एक आर्य जगत के पुरुष महान्।
स्वामी आनन्द बोध सरस्वती सार्वदेशिक के प्रधान ॥
आर्य समाज की सेवा में जिसने निर्विघ्न समय लगाया।
जो इसमें आने वाले कष्टों से जरा न घबराया॥
आर्य समाज के हित साधन में देते थे जो पूरा ध्यान।
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सार्वदेशिक के प्रधान ॥१॥
हिन्दी रक्षा गोरक्षा के चले थे जो भी आन्दोलन।
इन्हें सफल बनाने में जिसने किया जीवन अर्पण॥
वेद धर्म ऋषि दयानन्द के प्रति थे दृढ़ व आस्थावान।
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सार्वदेशिक के प्रधान ॥ २ ॥
वे देश व धर्म विरोधी तत्वों से लोहा लेते थे।
वीरत्व भरा ओजस्वी भाषण वे जनता में देते थे॥
निष्क्रिय व निर्जीव जनों के जीवन में आती थी जान।
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सार्वदेशिक के प्रधान ॥ ३ ॥
बड़ी विशेषता थी उनमें पत्रोत्तर शीघ्र ही देते थे।
सिद्धान्त पक्ष के आर्य जनों का पक्ष सदा ही लेते थे॥
सार्वदेशिक सभा में क्या अब ऐसा मिलना है आसान।
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सार्वदेशिक के प्रधान ॥ ४ ॥
आर्य समाज का प्रधान पुनः कर्मठ नेता वह अस्त हुआ।
इसके अभाव व वियोग में आर्य जगत अति त्रस्त हुआ॥
"भास्कर" आगे होगा कौन आनन्दबोध जी के समान।
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सार्वदेशिक के प्रधान ॥ ५ ॥

भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर
प्रधान नगर आर्य समाज, [illegible]

स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यतिथि पर विशेष—

२५ दिसम्बर की ऐतिहासिकता

डा० शिवकुमार शास्त्री

विशाल शरीर में विशाल आत्मा स्वामी श्रद्धानन्द इस सत्य के मूर्तिमान स्वरूप थे। गांधी जी ने मतभेद के बावजूद अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा था

"मृत्यु के सामने उन्होंने कभी सिर नहीं झुकाया। उनसे बढ़कर बहादुर मैंने संसार में दूसरा नहीं देखा। मरने का डर उन्हें नहीं था क्योंकि वे सच्चे आस्तिक ईश्वरवादी आदमी थे। मैं साक्षी हूं कि देश के लिए अपना शरीर कुर्बान करने की उन्होंने प्रतिज्ञा की थी। वे अनाथ बन्धु थे। अछूतों के लिए जितना उन्होंने किया उससे अधिक हिन्दुस्तान में दूसरे किसी ने नहीं किया। वे कर्मवीर थे वाक्शूर नहीं। वे वीर के समान जिए और वीर के समान मरे।

प० जवाहर लाल नेहरू अनेक व्यक्तियों के तीव्र आलोचक रहे हैं परन्तु स्वामी जी के लिए उन्होंने लिखा —

"स्वामी श्रद्धानन्द में निडरता की मात्रा आश्चर्यजनक थी। लम्बा कद भव्य मूर्ति सन्यासी वेश बहुत उमर हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी चमकती हुई आंखें और चेहरे पर कभी कभी दूसरों की कमजोरियों पर आने वाली झिलमिलाहट या गुस्से की छाया का गुजरना—मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूं। अक्सर वह मेरी आंखों के सामने आ जाती है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सारा जीवन मानो इस मूल्यांकन की सही व्याख्या है। सामन्ती युग में उनके पिता पुलिस अधिकारी थे अतः प्रारम्भिक जीवन में उन्हें वे सारी भोग्य सामग्री प्राप्त थी जो किसी राजा और रईस को होती है। मांस मदिरा और नारी उनसे कुछ भी नहीं छूटा। वे अपने को कट्टर नास्तिक भी मानने लगे थे परन्तु बरेली में स्वामी दयानन्द जी महाराज का साक्षात्कार एवं तर्कनाशक्ति ने उनकी काया पलट दी। लाहौर आर्य समाज का सदस्य बनने पर उनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। महर्षि द्वारा स्थापित आर्यसमाज को पुष्पित और पल्लवित करने में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सबसे अधिक योगदान रहा उन्होंने स्वाहा इदन्न मम को मूर्त रूप देकर गुरुकुल की स्थापना की और सबसे पहले अपने जिगर के टुकड़ा—हरीश और इन्द्र को प्रविष्ट किया।

विदेशी शासन से आर्थिक सहायता को लिए बिना और सरकार से अपनी परीक्षाओं की मान्यता लिए बिना मातृभाषा द्वारा शिक्षित-दीक्षित गुरुकुल कांगड़ी ने जिन स्नातकों को जीवन क्षेत्र में उतारा वे सफल रहे। तत्कालीन कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग के सैडलर ने स्वीकार किया —

'मातृभाषा द्वारा उच्च शिक्षा देने के परीक्षण में गुरुकुल को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है।

१८ वर्ष तक गुरुकुल के आचार्य पद पर सुशोभित रहकर जहां एक ओर उन्होंने [illegible] राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार किया वहां अनेक विदेशियों को भी आकर्षित किया। बहुत से व्यक्ति यहां हिन्दी पढ़ने आये तो बहुत से यह जानने के लिए भी आये कि यहां विदेशी शासन को उखाड़ने का [illegible] है।

महात्मा गांधी ने जिस समय असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात किया उस [illegible] स्वामी जी उनके साथ आ गये। ३० मार्च १९१९ को दिल्ली में पूर्ण [illegible] अपूर्व जलूस का नेतृत्व करते हुए स्वामी जी ने सिपाहियों की संगीनों के सामने छाती तान कर कहा था —

मैं खड़ा हूं, गोली मारो।

४ अप्रैल १९१९ को उन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर पर [illegible] उन्होंने [illegible] का सन्देश देते हुए [illegible] की प्रेरणा दी थी। उस [illegible]

[illegible] जनमानस सुखकर्ता वर्धन्तु।

[illegible]

इस वेद मन्त्र से किया था और समाप्ति ओ३म शान्ति शान्ति शान्ति से की थी।

स्वामी श्रद्धानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने १९१९ में अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय महासभा के मंच पर हिन्दी में भाषण दिया। महात्मा गान्धी ने उनके भाषण के सम्बन्ध में लिखा था —

स्वागत समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी का भाषण उच्चता पवित्रता, गम्भीरता और सच्चाई का नमूना था। वक्ता के व्यक्तित्व की छाप उसमें आदि से अन्त तक जमी हुई थी। मनुष्यमात्र के प्रति उसमें सद्भावना प्रकट की गई थी।

२३ दिसम्बर १९२६ को मध्याह्न जब प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति स्वामी जी के दर्शनार्थ आए तो उन्होंने देखा कि सब कमरे खुले पड़े हैं और स्वामी गाढ़ निद्रा में निमग्न हैं। स्वामी जी की निद्रा में बाधा डालना अनुचित समझ और सायंकाल दर्शन का विचार कर प्रो० इन्द्र जी वापस चले गये।

लगभग ढाई बजे डा० सुखदेव जी कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या विद्यावती जी एवं भक्त जमनादास आदि दर्शनार्थ आए। पौने चार बजे स्वामी जी ने सबको विदा किया।

सेवक धर्मसिंह ने कमोड ला दिया और स्वामी जी नित्य कर्मों से निवृत्त हो मसनद के सहारे बैठ गए। कमोड उठाकर बाहर रखा ही था कि सीढ़ियों से एक युवक ऊपर आता दिखाई दिया धर्मसिंह ने उसे रोकने का प्रयास किया परन्तु उसने स्वामी जी के दर्शनों का आग्रह किया। स्वामी जी ने आवाज सुनकर कहा— कौन है? अन्दर आने दो। अब्दुल रशीद नामक उस धर्मान्ध मुसलमान ने आते ही कहा— स्वामी जी मैं आपसे इस्लाम के सम्बन्ध में कुछ वार्तालाप करना चाहता हूं। स्वामी जी ने कहा— भाई मैं बीमार हूं। तुम्हारी दुआ से राजी हो जाऊंगा तो बातचीत करूंगा। इतने में उसने पानी मांगा। स्वामी जी के आदेश पर सेवक ने उसे पानी पिला दिया। पानी पीकर भीतर आते ही उस नराधम ने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर पिस्तौल से गोली चला दी। पलकों के झपकते ही दो फायर हो गए। लपक कर सेवक ने हत्यारे को पीछे से पकड़ा इतने में उसने तीसरा फायर भी कर दिया

धर्मसिंह ने अपनी जान की परवाह न कर उसका सामना किया तो उस पर भी गोली दाग दी गई। घायल होकर धर्मसिंह जमीन पर बैठ गया। हत्यारा भागने के प्रयत्न में था कि प० धर्मपाल विद्यालंकार ने आकर उसको दबा लिया एक हाथ रिवाल्वर वाले हाथ पर और दूसरा उस पर रखे हुए उसे आध घंटे तक दबाये रखा

लुढ़कते-लुढ़कते धर्मसिंह ने मकान के छज्जे पर पहुंच कर शोर किया तो लोग दौड़ चले आये। स्वामी जी की मृत्यु का समाचार बिजली की भांति सारे शहर में फैल गया। चारों ओर मातम छा गया। जिसने सुना वहीं सन्न रह गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर महात्मा गांधी के मुंह से सहसा निकला— शानदार जीवन का शानदार अन्त।

बलिदान के तीसरे दिन २५ दिसम्बर १९२६ शनिवार को अर्थी का जो विराट जुलूस निकला वह बड़े-बड़े सम्राटों को भी लजाने वाला था। मीलों तक नरमुण्ड ही नरमुण्ड दिखाई पड़ते थे। अपार जन समूह का उस दिन दिल्ली में समाना कठिन हो रहा था। लाहौरी गेट से प्रारम्भ हुई वह शवयात्रा चांदनी चौक आदि के मुख्य मुख्य भागों से होती हुई दोपहर बाद यमुना नदी के किनारे पहुंची। अपने हृदय सम्राट के नश्वर शरीर को अग्निदेव की भेंट कर जनसमूह अपने घरों को इस प्रकार लौटा मानो उसका सर्वस्व लुट गया हो।

आज हम जब स्वामी जी का ६८वां बलिदान दिवस मना रहे हैं, हमें प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अक्षुण्ण रखते हुए छुआछूत की भावना को समूल नष्ट करने का भरसक प्रयास करेंगे।

महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

अश्वमेध यज्ञ परिचय

श्री वेदप्रिय शास्त्री

हमारे देश मे धर्म के नाम पर यज्ञ, और योग के नाम पर मनमाने पाखण्ड प्रचलित हो रहे हैं। जन सामान्य, जो कि शास्त्रीय परम्परा से पूर्णतया अपरिचित तथा धार्मिक कर्मकाण्ड के औचित्य से अनभिज्ञ है, उसकी धार्मिक भावना का धूर्त लोग जमकर शोषण कर रहे हैं। इन तथाकथित धर्माचार्यों का उद्देश्य अपने को महापुरुष और परमात्मा का अवतार कहलाकर पूजा-प्रतिष्ठा प्राप्त करना तथा जनता का धनहरण करना ही होता है। इसके साथ यदि राजनीति बाज धूर्त भी सम्मिलित हो जावें तो फिर यह लूट और भी पराकाष्ठा को प्राप्त होती है। अभी कुछ समय से इसी प्रकार का एक नया पाखण्ड "अश्वमेध यज्ञ" के नाम पर प्रचलित किया गया है। देव संस्कृति दिग्विजय करने के बहाने कुछ लोग चले हैं लूट मचाने। पता नही कब और कहा देव संस्कृति की दिग्विजय हो रही है। क्या इस देश में काला बाजारी समाप्त हो गई? रिश्वतखोरी, बलात्कार व्यभिचार, अन्याय, अत्याचार, चोरी, तस्करी, नशाखोरी, जुआ, सट्टा, मारी उत्पीडन व हत्याए समाप्त हो गए या अधिकांश मे समाप्त हो गए? क्या गरीबो अनाथो, किसानो, मजदूरो का शोषण और दासता समाप्त हो गए? क्या राष्ट्र के लोग व राजनेता सब सत्य के अनुयायी हो गए या अधिकांश मे हो गए? यदि नही, तो फिर कौन सी देव संस्कृति की विजय हुई है या फिर ८०-जी का प्रमाण-पत्र लेकर दो नम्बरियों के धन को ट्रस्ट के माध्यम से काला-सफेद करने मे सहयोग करना तथा पाखण्डपूर्ण कर्मकाण्ड के माध्यम से धर्म भीरु जनो का धन लूटना, स्वय को पुजवाना और मौज मारना ही देव संस्कृति की विजय है?

अश्वमेध के नाम पर उट-पटांग ड्रामा करके वैदिक कर्मकाण्ड को दूषित करने वाले ये लोग कर्मकाण्ड का क, ख भी नही जानते। हमारी वर्तमान और भावी पीढी इस ड्रामे को देखकर यही समझेगी कि यही वास्तविक अश्वमेध है। परन्तु हम बलपूर्वक घोषणा करते है कि यह अश्वमेध नही है। अश्वमेध का इससे दूर स भी सम्बन्ध नही है। अपितु यह अश्वमेध का उपहास और वैदिक कमकाण्ड का विदूपण है। अश्वमेध इतना आसान यज्ञ है जो यह तपता है। यही अश्वमेध है। यही प्रजापति है। इसी प्रजापति नामक सम्पूर्ण यज्ञ का सस्कारित करके उसमे इक्कीस अग्निषो मीय पशुओ को नियुक्त करना है।" इस प्रकार ये ही अश्वमेध के इक्कीस हैं।

अश्वमेध यज्ञ का अर्थ

क्षत्रमश्व' अर्थात् क्षत्रिय वर्ग अश्व है। "क्षत्र राजन्य"। क्षत्र का अर्थ राजन्य अर्थात् राजा लोग हैं। (शतपथ—१३-३-२-१) मेध का अर्थ है 'यज्ञ साधन भूतो सार रस" आज्य मेध, मेधो वा आज्यम। अर्थात् सगठन का साधन भूत सार भाग रस ही मेध है। जैसे घृत दूध का सार भाग है। अत अश्वमेध का अर्थ हुआ "राष्ट्र यज्ञ के साधनभूत क्षत्रिय वर्ग का सार भाग राष्ट्र के स्वामी राजा के साथ प्रतिष्ठित शासन विभाग। इसको संस्कारित करके सर्वांग समृद्ध बनाकर सार्वभौम एकछत्र साम्राज्य की स्थापना करना। इसीलिये क्षत्रिय यज्ञ उ वा एष यदश्वमेध" अर्थात् यह जो अश्वमेध है सो क्षत्रिय यज्ञ है। (शतपथ १३-२-१४-२) "राजा वा एष यज्ञाना यदश्वमेध' अर्थात यह जो अश्वमेध है वह यज्ञो का राजा है। तात्पर्य यह है कि अन्य सब सगठनो का नियन्ता, रक्षक व सचालक क्षात्र सगठन या शासन तन्त्र ही है। तथा च "राष्ट्र वा अश्वमेध।" 'राष्ट्रं एते व्यायच्छन्तियेऽश्वम् रक्षन्ति।" राष्ट्र ही अश्वमेध है। जो अश्व की रक्षा करते हैं वे राष्ट्र की आर्थिक शक्ति बढाते हैं। उसे सुव्यवस्थित करते हैं। जो बलहीन अश्वमेध करता है वह शत्रुओ द्वारा दूर फेंक दिया जाता है। अत राष्ट्रपति राष्ट्र की रक्षा करते हुए उसे विस्तृत व सुदृढ करते हैं। यही अश्वमेध है। प्राचीन काल के समान आज भी राज्य कार्य मे अश्व आदि पशुओ का महत्व यथावत् बना हुआ है और यन्त्रों की गतिशील शक्ति अश्व शक्ति अर्थात् हार्सपावर" से मापी जाती है। इसी प्रकार अश्व पशु तथा बल, वीर्य, ओज, पराक्रम, अस्त्र शस्त्र तथा अन्य शासन व्यवस्था व युद्धोपयोगी पदार्थ अश्व के अन्तर्गत आ जाते हैं। अश्वमेध का अश्व इन सबका प्रतीक है। इन सबको संस्कारित करना अश्वमेध का प्रतिपाद्य है। इस प्रकार सूर्य, राष्ट्रपति, क्षात्र सगठन और अश्व पशु ये सभी अश्व हैं और इनका उपयोगी भाग मेध हैं। यह अश्वमेध यज्ञ राजनीति, अर्थनीति, दण्डनीति, विश्व-स्वशासन नीति आदि की उत्तम शिक्षा देता है, जो इसमे सम्पादित होने वाली यज्ञ क्रियाओ से भली भाति विदित होता है। राजा और राज्य सबका सस्कार इससे होता है। "यजमानो वा अश्वमेध" राष्ट्र का स्वामी राजा जो यजमान है वही अश्वमेध" राष्ट्र का सार) है।

इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि देव क्षत्र के कार्य कलापो का अनुकरण कर व्यवहार मे मानुषी क्षत्र बल का फल प्राप्त करना अश्वमेध है। जैसा कि ब्राह्मणकार स्वय ही अश्वमेध के लाभ बताता हुआ कहता है।

, एष वै प्रभूर्नाम यज्ञ। यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते। सर्वमेव प्रभूत भवति। इसी प्रकार, विभू, व्यष्टि विधृति, व्यावृति ऊर्जस्वान्, पयस्वान, ब्रह्मवर्चसी अतिव्याधी दीर्घ कल्हूरि और प्रतिष्ठा ये बारह अश्वमेध के यौगिक नाम हैं। इनसे क्रमश प्रभूत ऐश्वर्य, विविधता प्राप्ति व्यवस्थित कार्य विभाजन, सामर्थ्य स्वस्थान में प्रत्येक कि नियुक्ति आदि फल प्राप्त होते हैं। अपि च-प्रजापति ने कामना की कि मैं शुभेच्छाए पूर्ण करू सभी प्राप्तव्य प्राप्त करू। उसने इस त्रिरात्र यज्ञ अश्वमेध को देखा उससे यज्ञ किया और सब कामनाए पूर्ण कर सब कुछ प्राप्त किया। जो अश्वमेध से यज्ञ करता है उसकी सब कामनाए पर्ण हो जाती हैं। सभी प्राप्तव्य हो जाते हैं। इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण मे भूरिश इसका प्रयोजन बताते हुए कहा गया है। सब कुछ प्राप्ति के लिये और सर्व सम्पूर्णता व समृद्धि को राष्ट्र मे बनाये रखने के लिये अश्वमेध किया जाता है।

(क्रमश)

नमस्ते के औचित्य पर विचार (३)

धर्मवीर शास्त्री बी १/५१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६२

'व्यवहारभानु' मे 'नमस्ते' का निर्देश कहा है? मुझे तो मिला नहीं। किसी ग्रन्थ का हवाला बिना पते के देना दूसरे को भ्रम म डालना है तथा यह अनुचित है।

रही जीवनी लेखकों को प्रमाण-कोटि म रखने की बात तो स्वामी जी के ग्रन्थो से उपलब्ध अन्त साक्ष्यो के होते चरितकारो के कथनो का क्या महत्त्व है। फिर पहले 'जय गोपाल' पुन 'परमात्मा जयते' तत नमस्ते यह विकास क्रम क्या किसी अन्य ऋषि चरित मे भी मिलता है?

निस्सन्देह 'नमस्ते' वैदिक वाक्य है, किन्तु तेभ्यो नम, नमो व, नमो वाम्, नमस्कार वन्दे, अभिवादये, आदि क्या अवैदिक हैं? आप सारी दुनिया को ते की जद मे क्यो लाना चाहते है? 'ते' के नाम की चिट्ठी 'ते' को दीजिये। विवक्षानुसार वचन का प्रयोग वेद मे है—तेभ्यो वो नम (अ० ३।२६)नमस्तेभ्य (यजु १६।६५) संस्कार-विधि के शाला प्रकरण मे विवक्षानुसार वचन के प्रयोग का उदाहरण है—अग्निर्वैकेताऽऽदित्य सुकेता, तौ प्रपद्ये, ताभ्या नमोऽस्तु। प्रसन्न राघव नाटक मे आवश्यकतानुसार नम का ते, वाम् व के साथ प्रयोग है। यह सब समीक्षा का दावा करने वाले को दृष्टिगत होना चाहिये।

सम्प्रति, सख्या २ समीक्षा पर विचार कर। उत्तर लेखक ने प्रसंग के बिना नम के अन्य अर्थो की चर्चा की है। नम के नति से अन्य अर्थ केवल वेद मे प्रचलित हैं लोक मे नही इसका प्रमाण है नमस् से विकसित हुए अन्य शब्द जिनका अर्थ नतिपरक है। कृपया देखें—

नमस्कर्ता Awor Shipper नमस्कार,=Homrage
नमस्कार्य=सत्कार्य नमस्य, नमसित पूज्य नमस्कृति,
नमस्क्रिया=प्रणाम नमस्यति—सत्करोति, नमो वाक
नम उक्ति—नमोवचन आदि-आदि।

स्वय स्वामी जी ने ऋ० वे० भा० भू० मे नम का अर्थ किया है 'निरहभाव पूर्वक दूसरे को मान देना—नम इत्यस्य निरभिमान-द्योतनार्थ परस्योत्कृष्टताज्ञापनार्थश्चारम्भ। अत नमस्ते के स्वाभिमत प्रयोगौचित्यसाधनार्थ नैघण्टुक अर्थो की आड लेना सर्वथा अनुचित है।

यदि नम के नति नमन अर्थ से भिन्न अर्थ भी हैं तो हुआ कर। मेरा उनसे इस प्रसग मे कोई प्रयोजन नही है। यदि आप की दृष्टि मे नम सभी अर्थो को सर्वदा साथ लेकर चलता है तो किसी को नमस्ते-निवेदन झगड का कारण भी बन सकता है। कारण, नम का अर्थ वज्र भी तो है।

अब आइये मुख्य बिन्दु पर। आपके समीप छोट-बड सभी को परस्पर 'नमस्ते' का प्रयोग करना चाहिये किन्तु मेरी दृष्टि मे यह उचित नही है। अपने पक्ष मे हेतु मैंने पूर्व लेख मे दिये हैं। आपका यह कथन मेरे मत मे कतई युक्ति सगत नही है छोटा नम के लौकिक अर्थ में नमस्ते कहे और बड़ा वैदिक अर्थ मे छोट को नमस्ते कहे जिसका अर्थ होगा—फूलो-फलो। यो तो रिश्ते मे बड़ो को बिना कुछ बोले मात्र सकेत से (By gesture) ही आदर दे द तो भी बड आशीर्वाद दे ही देते हैं। किन्तु यदि शब्द का चयन करना हो तो बोलने का उपयुक्त शब्द होने चाहिय। मनु का कथन तो यही है कि अभिवादन के उत्तर मे आयुष्मान् भव सौम्य? कहा जाय।

और, आप यह नहीं मानते और छोटे-बड सबके लिये नमस्ते को सही मानते हैं तो कहिये क्या निम्नलिखित वाक्यो मे मर्यादा—भग नहीं हो रहा।

१—पिता का पुत्र को पत्र—प्रिय पुत्र, नमस्ते।
२—गुरु का शिष्य को पत्र—प्रिय मोहन, नमस्ते।

आइये अब 'ते' के अर्थ पर विचार कर। नमस्ते का ते युष्मद् ४-१ तुभ्यम का स्थानिक है जिसका स्पष्ट अर्थ है तेरे लिये, तुझे, तुझको। जिन्होने ते का अर्थ तुम्हे, तुम्हारे लिये या आपके लिये किया है उन्होंने बडो के सन्दर्भ मे ते के अशालीन प्रयोग की नग्नता को ढकने के लिए ऐसा किया है। क्योकि युष्मद् (तू अस्मद मैं) तद् (वह) ये तीन पुरुष वाचक सवनाम हैं। अस्तु ते का तेरे लिये, तुझे आदि के सिवा कोई और अर्थ नही हो सकता तथा बडो को तू-तेरा कहकर बोलना भारी अशिष्टता है। महाभारत मे लिखा है—

त्वकार नामधेय च ज्येष्ठाना परिवर्जयेत्।

मनु महाराज कहते है—

हुकार ब्राह्मणस्योक्त्वा त्वकार च गरीयस।
स्नात्वाऽनश्नन्नह शेषमभिवाद्य प्रसादयेत्॥

अर्थात् ब्राह्मण को 'हू' और बडे को तू कहकर बुलाने का प्रायश्चित्त यह है कि शेष दिन नहाकर अभिवादन पूर्वक उन्हे प्रसन्न करने मे बिताये। अभिवादन अर्थात् प्रणाम या नमस्कार नमस्ते नही।

अग्रजी मे त्वकार का अर्थ है—Addressing disrespeetfully with a thou ar theeing and thouing (तू-तेरा आदि।) कृपया, बताये कि ते' का मत्कथित अर्थ से भिन्न और कौन-सा अर्थ है? यह भी बताय कि मानव धर्म शास्त्र मे जब पूज्यो से त्वकार पूर्वक आलपन प्रायश्चित्तीय कर्म माना गया है तो बड के सदर्भ मे 'ते' का प्रयोग साधु कैसे हो गया? क्या लोक और वेद मे ते' के भिन्न-भिन्न अर्थ हैं?

नमो ज्येष्ठाय च नम' कनिष्ठाय च (य० १६।३२) का जो अर्थ मैंने वहा दिया है मैंने वही उसका उदाहरण भी दिया है। पूरे सदर्भ को देख-समझ कर निर्णय करना ही वैचक्षण्य है। स्वामी जी भी तो यही लिखते हैं कि छोट-बडे सभी को परस्पर मिलते समय अन्न और यथोचित सत्कार का आदान प्रदान करना चाहिये, किन्तु नमस्ते तो मन्त्र मे है ही नही फिर कहा से आ गया। यह भी नमस्ते के बलात प्रवेश का उदाहरण है। महर्षि इस वाक्य से इगित करते है मन्त्र वाक्य की ओर किन्तु नमस्ते के पक्षधरो ने 'इस वाक्य की दिशा नमस्ते की ओर मोड दी। खेद है कि आपने अपने उत्तर मे इसे छुआ तक नही।

मैने ज्येष्ठ और कनिष्ठ का अथ आचाय दुग के अनुसार किया है। नमो महदभ्यो अभकेभ्यश्च वो नम = महदभ्यो महत्परिमाणभ्यो देवेभ्य अभकेभ्योऽल्पपरिमाणभ्यो देवेभ्य।

व्यवहारभानु में तो नमस्ते के दशन क्वचिदपि हुए नही। हा दयानन्द लघु ग्रन्थ-सग्रह के अन्तगत आर्योददेश्य रत्नमाला म मौव (अर्थात अन्तिम) स्थान पर नमस्ते और उसके अथ के दशन हुए। किन्तु मैंने पाया कि इसी सग्रह मे नमस्ते तो एक बार ही है। हा कृ-सयुक्त नमस भिन्न भिन्न रूपो मे भाषा प्रवाह मे पूणत परिणत अनेकश दृष्टिगोचर होता है। स्वय देख ल।

नमस्ते के तत्रोपलब्ध अर्थ के विषय मे क्षमायाचनापवक कुछ कहना चाहूगा। अर्थ है—मैं तुम्हारा मान्य करता हू।

पहली बात, मान्य तो मानास्पद को कहते हैं—मान्यान मानय मान्य स मे स्थावरजगमानाम, अत वाक्य होना चा हय मै तुम्हारा मान करता हू। दूसरी बात, नमस्ते का यह अर्थ हो ही नही सकता। क्यो? इसलिये कि नमस्ते सक्षेप है नमोऽस्तु ते या नमस्तेऽस्तु का। अब यदि नम का अर्थ मान देना (परस्मिन पूज्यबुद्धि कर तो नमस्ते का अर्थ हुआ तेरा मान हो। तीसरी बात ने का अथ तुम्हारा कदापि नही। यदि ते' का अर्थ तुम्हारा मान ना तेरा नी सस्कृत क्या होगी? चौथी बात यदि ते का अर्थ तुम्हारा मान भा ल तो भी महर्षि के अपने अर्थ से ही 'नमस्ते पूज्य वग के लिये अप्रयोज्य हो गया. क्योंकि पूज्य पुरुषो के लिये तुम तु-हारा का प्रयोग भी शिष्ट समाज मे नही होता। (क्रमश)

विदेश-समाचार

घाना देश मे आर्योदय पत्र

प० धर्मवीर धूरा शास्त्री, एम बी ई

घाना देश अति सुन्दर है। अफीका महाद्वीप का धन सम्पन्न देश है। यहा का समुद्री तटीय इलाका ३७० मील का है जो मनोरम है। हिन्द महासागर के रोदिग टापू के कोलो तटीय समुद्र के समान है। काफी दूर तक लोग अनेक स्थानो मे तैर कर जा सकते। इन सात देशो से वायुयान रुक रुक कर घाना मे उड़ान भरते है। यहा पर आर्य समाज तन्मया सक्रिय है यहा के अध्यक्ष है प० क्लार्क एको जी। पता

Pt Wre ton Clarks Ankoh

Arya Vedic Mission P O Box 8337

Accra North GHANA

स्वामी धनानन्द जी जो खुद अफीकन है के साथ हमे अफीकन पीढ़ी के ऐसे लोगो से मिलने का मौका मिला जो रविवार के प्रात काल मे ठीक आठ बजे वैदिक रीति के अनुसार यज्ञ करते हैं वे मांस-मछली-अण्डे नही खाते है। शराब का सेवन नही करते। वे वेद मन्त्रो की व्याख्या अपनी अफीकन और अंग्रेजी भाषा मे किया करते है। हम उन महानुभावों से दो प्रमुख शहरो मे मिले आक्रा और कुमारी नगर। एक महायज्ञ मे आक्रा नगर मे भारतीय राजदूत श्री दिलजीत सिंह पानम जी पधार थे। आप ने हमारे आग्रह पर खुद अपने कर कमलो द्वारा स्वामी धनानन्द जी के साथ अनेक बार घृत की आहुतिया यज्ञ कुण्ड मे डाली और अपने भाषण के दौरान ५० हजार रुपये वहा की मुद्रा मे देने की बात की और अनेक जवानो को छात्रवृत्तिया प्रदान करने की बात की।

भारतीय राजदूत से गत अगस्त मास के मध्य मे उनके हाई दफ्तर १०६ रिज गली आक्रा घाना मे एक दिन पूर्व मिलने का मौका मिला था। आप से और दफ्तर के अनेक भाई बहनो से हम ८० मिनट तक खुल मिल कर बातें करने का और जलपान करने का शुभावसर प्राप्त हुआ। हमारे दल के श्री धनदेव बहादुर ने यज्ञ और मन्दिर के कार्यक्रमो मे शामिल होने के लिए भारतीय राजदूत को आमन्त्रित किया था स्वामी धनानन्द जी अति प्रसन्न हो चले थे। भारतीय राजदूत श्री सिंह जी मिलनसार स्वभाव के है। प्रसन्न चित्त और यहा के धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों मे बहुत सहयोग प्रदान करते है।

उनके आफिस मे मैंने अपने दल के समक्ष आर्योदय पत्र का वह अंक प्रदान किया जिसे आर्य सभा ने १ अप्रैल १९९४ को प० गयासिंह आश्रम के शुभावसर पर प्रकाशित किया था भारतीय राजदूत ने अति प्रसन्नता के साथ वह अंक स्वीकार किया और चाव से पण्डित गयासिंह का चित्र देखा। जब

आर्य समाज किरतियापुर--हरदोई मे महायज्ञ

समाज सेवी श्री प० अनन्तराम शर्मा जिले के प्रसिद्ध आर्य नेता है। उन्होंने आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व मे विशाल यज्ञ सम्पन्न कराया। प० श्यामाचरण शास्त्री सहायक बनकर और अनेक पण्डितो द्वारा ग्रामीण अञ्चल मे वेद मन्त्रो का पाठ हुआ। ग्रामीण नर-नारी सभी ने भाग लेकर यज्ञ मे आहुति दी।

अन्तिम पूर्णाहुति के दिन सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री दिल्ली से पधारे। उनका स्वागत समस्त जनता ने किया। भजनोपदेशक प० ब्रह्मानन्द शर्मा व श्री मामराज की मण्डली का प्रभावशाली कार्यक्रम हुआ।

श्री अभिमन्यु सिंह जी के भतीजे द्वारा अग्निक्रिया का प्रदर्शन भी हुआ। कई जिलो से आयजन उपस्थित थे।

यज्ञ की पूर्णाहुति व शान्तिपाठ और धन्यवाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—श्री० डा० बी एल पाण्डेय

पुस्तक समीक्षा

आर्यसमाज अजमेर का इतिहास

मूल्य—५० रुपए पृष्ठ—२१०,

प्रकाशक—वेदरत्न आर्य आर्य समाज अजमेर

अजमेर के नाम के साथ एक इतिहास अतीत की क्रमबद्ध विकास गाथा उन उन्नायको की प्रवृत्ति का परिचय भी मिलता है एक दिन दैनिक पत्र मे अजमेर की दरगाह उसकी जियारत पर लेख पढ रहा था। सम्भवत लेखक मजार को ही अजमेर का इतिहास समझ बैठा था।

दरगाह के बाद यदि अजमेर का ऐतिहासिक क्रान्तिकारी महत्व महर्षि दयानन्द के कार्यकलापों एव देश की कायापलट के विविध विचारो से युक्त रणस्थली कही जाय तो अत्युक्ति नही होगी।

म० गान्धी सेवाग्राम और महर्षि दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति की देन अजमेर है।

आर्य समाज के कर्णधारो ने ऋषि का प्रज्वलित अग्नि का साहस के साथ मार्ग प्रशस्त किया। विश्व इतिहास मे अजमेर मे आर्य समाज की चर्चा न कर उपेक्षित रखा तो अजमेर का इतिहास ही अधूरा रहेगा।

आर्य समाज अजमेर केसरगंज ऋषि उद्यान उनका स्मारक परोपकारिणी सभा ऋषि के पवित्र स्मारक है। डी ए वी कालिज शिक्षा का सबल केन्द्र है इन सबको देखने के उपरान्त आर्य समाज का इतिहास स्पष्ट बनता है।

जिनसे जुड़े स्व० प० जियालाल जी तथा आज के प० दत्तात्रय जी वाब्ले के कार्यकलापो से आर्य समाज की छवि संघर्ष पूर्ण युग की कहानी स्पष्ट बताती है।

खण्डहर बता रहे है—इमारत बुलन्द थी?

आर्य समाज अजमेर का इतिहास विस्तृत एव सात्विक पृष्ठ भूमि के रूप मे लिखा जाना चाहिए।

जहा तक आर्य समाज की छवि व गरिमा का प्रश्न है इसमे अतिशयोक्ति न होगी। यह एक सर्वग्राहा ससारव्यापी अग्नि है इसके समझने मे डा० श० अजमेर का इतिहास जनता के लिए प्रेरणादायक रहेगा। लेखक व प्रकाशक धन्यवाद के पात्र है अन्य महानुभावो का इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।

—सम्पादक

मैंने कहा कि इस अंक मे आप मारीशस टापू के प्रधान मन्त्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ मारीशस के राष्ट्रपति श्री कासम उतिम मारीशस मे नियुक्त भारतीय उच्चायुक्त श्री श्यामसरण जी के साथ और आर्य सभा के प्रधान श्री श्रद्धानन्द रामखेलावन आदि के सन्देश देख पायेंगे तो वे मन लगाकर हमारे नेताओ के चित्रो और सन्देशो को देखने लगे। इसी अंक मे मन्त्री कल्याण ओस्वान मन्त्री श्री मुकेश्वर चुनी लोक मेयर श्री अहमद जुलिमान बीबी श्री मुजफ्फर रामचली श्री मोहनलाल मोहित श्री चन्द्रमणि रामजी श्री सत्यदेव प्रीतम डा० उदयनारायण गंगू डा० बीरसेन जागासिंह श्री सत्काम बुलेल श्री देवदिनी बुलेल श्री जयकरण मोहित डा० हरिदत्त धूरा श्री विक्रमसिंह रामलाला बहन सरिता बुद्ध आदि के लेख और चित्र भी छपे हैं। भारतीय राजदूत श्री सिंह जी ने सभी पृष्ठों को उलट-पलट कर देखा और वह अंक अपनी मेज पर रखा। मेरे लिए गौरव था कि 'आर्योदय' के सम्पादक महानुभावों ने मेरा लेख भी इस अंक मे प्रकाशित करने की कृपा की। धनानन्द जी ने मुझसे घाना आने की बात की थी और लेख के लिए भी मांग की थी।

घाना देश के महाराजा के साथ उनकी 'पैलेस' मे उनके सिंहासन स्थान पर प्रमुख डाक्टर आकाशो जी के सहयोग से मिलने का सुनहरा मौका हासिल हो सका। वहां पर वैदिक धर्म बताकर जब मैंने उनके प्रति अपनी भाषा मे शुभ की कामना करते हुए १०० वर्ष से अधिक समय तक स्वस्थ रहकर जीने की कामना की तो वे मुस्कराये थे। इस प्रकार मुझे ४० देशों में जाने का और कार्य करने का मौका मिल पाया।

पुस्तक समीक्षा

मानस मन्थन

ले० श्री व्रजभूषण जी, एम.ए., पी.एच.डी.

प्रकाशक—आर्य प्रकाशन मण्डल गान्धी नगर दिल्ली-३१

मूल्य—७५ रुपए पृष्ठ—२०८

मानस मन्थन नामक पुस्तक के नाम से सहसा पाठक रामचरित मानस के नाम को समझेंगे। पर यह तुलसी का मानस नही अपितु एक नये आयाम प्रस्तुत कर लेखक ने नयी विधा दी है।

ले० श्री व्रजभूषण जी ने अपनी शैली में उपदेशात्मक शीर्षक देकर कथानक को रोचक बनाया है जीवनीय क्षणो का।

"केवल दीप ही ढूंढने से कुछ न दीखे, बल्कि वृक्ष अपने काटने वाले को भी फल देता है, तभी तो कहा है कि सौन्दर्य दर्शक के नेत्रो मे बसता है। सौन्दर्य का रूप मानव की आशा मे है फिर इसस विश्वास और प्रेम का हिसाब मिलता है—तुच्छ जनो की भाति मानव सन्तुष्ट भले ही हो जायें परन्तु लेखक सच्चाई पर निर्भर है घृणा से नही?

भगवान ने मानव को सुख-दुःख मे बांधा है, पर प्यार भी दिया है अत ईश्वरीय नियम मे मनुष्य बधता है उसी मे जीवन भर पिसता है।

इसीलिए कहा है जीवन मे कठिनाई है अपने को पहचानना और त्रुटिपूर्ण जीवन का स शोधित करने का नाम ही उन्नति है। लक्ष्य रखकर चलना, उसे प्राप्त करना ही उद्देश्य है।

इस प्रकार के घटनाक्रमो से पुस्तक को सजाया गया है जीवन के हर पहलू पर साद्देश्य शीषक देकर पुस्तक को अच्छा बनाया है। आज के भौतिक, विषमतापूर्ण सामाजिक जीवन मे जहा पर अशान्ति व्याप्त है उसमे मिठास उत्पन्न कर जीवन क कटु सत्यो को उजागर किया है।

लेखक पारखी और उसकी शैली सोद्देश्य है अत कहना है कि लेखक मानस के मन्थन करने म सफल हुए है। समाज की आवश्यकता और नई पीढी मे नैतिक भावो को भरने मे समथ हुए हैं—इस प्रकार की मन्थन प्रक्रिया से नवनीत ही निकलेगा।

लेखक की इस मौलिक रचना का पाठक वृन्द लाभ अवश्य उठावगे—तभी प्रकाशक प० जगतराम आय का मनोरथ भी सफल होगा। धन्यवाद

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

मऊ जिला मे वैदिक धर्म का प्रचार

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा की ओर से १ से ३० नवम्बर तक पूरे एक मास सम्पूर्ण जनपद मे स्वामी आत्मानन्द जी की अध्यक्षता एव ब्र० नरेन्द्रलाल जी के सयोजन मे वैदिक धर्म के प्रचार का आयोजन किया गया। जिसमे ब्र० सुरेशचन्द्र नैष्ठिक मगहर (बस्ती), वीरेन्द्र भजनोपदेशक (इटावा) ने अपने मधुर भजनोपदेश तथा प० रामाज्ञा जी आर्य पुत्र ब्र० अभिदेव शास्त्री एव स्वामी केवलानन्द सरस्वती ने अपने ओजस्वी व्याख्यानो द्वारा जनता को वेद तथा ऋषियो का सन्देश सुनाया।

—मन्त्री

भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन

१५ दिसम्बर ९४ को उत्कल आर्य समाज के प्राण प्रतिष्ठाता मूर्धन्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती के करकमलो मे अपन जमीन पर नवनिर्मित भव्य यज्ञशाला का उदघाटन सम्पन्न हुआ दिसम्बर १५ से १७ तक 'वेद पारायण यज्ञ उदघाटन (नूतन यज्ञशाला का) पूर्णाहुति आदि कार्यक्रम सम्पन्त हुये।

वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा

'हरिद्वार ता० १८ १९४ को श्री भुवनेन्द्र भूषण सिघल तथा माता अशोकलता सिघल ७५ ' छत्रसाल नगर, भोपाल को आर्य-वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर मे वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा प्रदान की गई।

स्वामी बलराम निर्वृत्तानन्द
प्रधान

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

विशाल शोभायात्रा

यज्ञ के उपरान्त प्रातः १० बजे

२५ दिसम्बर १९९४ को विशाल शोभा यात्रा श्रद्धानन्द बाजार से प्रारम्भ होकर दोपहर २ बजे लाल किला मैदान में सार्वजनिक सभा के रूप में परिवर्तित हो जायेगी। इस अवसर पर अनेक आर्य विद्वान राष्ट्रीय नेता स्वतन्त्रता आन्दोलन के महान सेनानी, सुप्रसिद्ध विधि शास्त्री एवं गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इस शोभायात्रा में अधिक से अधिक संख्या में पधार कर संगठन को सुदृढ़ करने की कृपा करें।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री को वैद्य (डा०) अश्विनी कुमार कम्बोज वैदिक विद्वान पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

महाशय धर्मपाल
प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री
महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

आवश्यक सुझाव

१ कृपया २५ दिसम्बर १९९४ का प्रात १० बजे से पूर्व श्रद्धानन्द बलिदान भवन पहुंच जाए।

२ शोभा यात्रा मे भाग लने के लिए अपने-अपने आर्य समाज अथवा संस्था म एकत्रित होकर बस ट्रक तथा टैम्पो आदि से जुलूस के रूप में बलिदान भवन पहुंचकर अनुशासनबद्ध शोभायात्रा में चले।

३. सब संस्थाओ तथा आयसमाजो के साथ ओ३म् ध्वज हो।

४. सभी आय पुरुष केसरिया पगडी अथवा टोपी तथा महिलाए केसरिया साडी या दुपट्टा पहनकर आन की कृपा कर।

५ साप्ताहिक सत्सगो म स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित कार्य क्रमा का आयोजन कर। प्रात अपने-अपने क्षेत्रो मे प्रभात फेरियो का आयोजन कर जन-जागरण करन का प्रयास करे।

६. सब आय समाजो व शिक्षण संस्थाओ से अनुरोध है कि अपने-अपने क्षेत्र म शोभायात्रा की सूचना के लिए कपडो के बैनर लगवाए। बैनर का विषय होगा —

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभायात्रा
२५ दिसम्बर प्रात दस बजे श्रद्धानन्द बाजार से

७. सभी आय समाज यथासम्भव अपनी-अपनी भजन मण्डली लाने की कृपा कर।

हिंसा को बढ़ावा

(पृष्ठ ३ का शेष)

पर पूर्ण प्रतिबन्ध की मांग कर और सम्पूर्ण पशुधन का विनाश से बचाकर दूध की नदी बहाई जाय जिस ऋषि प्रधान देश में हिंसा व्यापक रूप में की जा रही है।

१५ अगस्त ४७ के बाद आज हम जन गणना में पढ़ना चाहिये जन संख्या वृद्धि को रोकने दहेज दानव के न आने वाला पीढ़ी में नारी की हत्या करना कहां तक उचित है।

आज मानसिकता का सार यह है कि हम समाज में जन्म से ही कन्या उपेक्षित है जहां पैदा होने से वन्द तक नारी चिन्ता का जीवन जी रहा है। हमारे आध्यात्मिक देश में इस भ्रूण हत्या पर किसी भी धार्मिक समुदाय ने आवाज नहीं उठाई है और गर्भ गिराकर हिन्सा को बढ़ावा दिया जा रहा है लड़का है या लड़की गर्भ में जांच करके लड़की की हत्या और लड़के को उत्पन्न किया जाता है।

अभी हाल ही में हमारी सरकार ने जन्म के पूर्व भ्रूण के सेक्स परीक्षण को नकारते हुए एक विधेयक पारित किया है कि वंशानुगत रोगों का पता लगाने में जन्म से पूर्व भ्रूण परीक्षण उचित नहीं है।

पुत्र की लालसा प्रत्येक समय में सभी वर्गों में अति प्रबल रही है कन्या को सन्तान में गिनते ही नहीं है।

मानसिकता बदली जाय ?

समय समय पर लेख लिखे गये कि भ्रूण हत्या का कारण गरीबी है आज स्थान स्थान पर अल्टामाउन्ड एक्सरे केन्द्र खुल है वहां गरीबों को नहीं धनी सेठों की लाइन लग जाना है। अतः कहा जा सकता है कि

आज बेशक हम २१ वी सदी में जा रहे हैं किन्तु आज प्रगति शील व सभ्य कहे जाने वाले समाज में लड़का के जन्म लेने पर चेहरे पर वह रंगत गायब हो जाता है जो लड़के के जन्म पर दिखाई देती है। जो नारी सदा से कोमल स्वभाव वाली रही है वह नारी भी समाज की कुण्ठा का शिकार है और कन्या [illegible] प्रश्न पर उत्पन्न हो जाती है। आज हम कितना भी [illegible] प्रस्तुत करें आवश्यकता इस बात की [illegible] जहां अनुशासन की जरूरत है वहां सम [illegible]

हमारी सरकार से निवेदन है कि वह सब प्रथम अपनी मानसिकता को बदल और बुद्ध व गांधी के देश में हिंसा को रोककर अहिंसा का नाम पहुंचाय।

सार्वदेशिक सभा की नई उपलब्धि

वृहदाकार-सत्यार्थप्रकाश प्रकाशित

विद्वद गोष्ठी

दिनांक ७ १ ९४ को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) में एक विद्वद गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में वेद दर्शन शास्त्र एवं उपनिषदों की मानव जीवन में उपयोगिता विषय पर विद्वानों ने अपनी अपनी शोध रचनाएं पढ़ी तथा उन पर विचार मन्थन किया। इस अवसर पर श्री विश्वपाल जयन्त श्री मसाराम शास्त्री डा० भट्टाचार्य त्रिलोकधर द्विवेदी तथा श्री ललिताप्रसाद कुण्डलिया ने अपने विचार प्रकट किये।

गोष्ठी की अध्यक्षता भारत सरकार के सेवानिवृत्त मुख्य शिक्षा परामर्शक डा० रामकृष्ण शर्मा ने की।

गोष्ठी का संचालन गुरुकुल ज्वालापुर के प्राचार्य डा० हरि गोपाल शास्त्री ने किया

आर्य समाज दरियागंज का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज दरियागंज अपना ३३वां वार्षिकोत्सव पिछले सोमवार से रविवार तक दैनिक प्रातःकालीन हवन यज्ञ एवं आचार्य नरेन्द्र देव जी से वेदों पर प्रवचन करा कर मनाया। श्री बी० बी० सिंगल जी के प्रधानत्व में श्री देशराज चौधरी एवं श्री प्रकाशचन्द्र जैन की स्मृति में समाजसेवी विशिष्ट महानुभावों को दस शाल से सम्मानित किया गया। अभाव ग्रस्त व्यक्तियों को रजाई एवं कम्बल वितरण किया गया एक विशाल ऋषिलंगर डा० प्रेमप्रकाश ढल्ला जी के सौजन्य से किया गया। —योगेन्द्र मिश्र महामन्त्री

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अशोक विहार I दिल्ली का २ वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से नवम्बर ६ को सम्पन्न हुआ। एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं रात्रि को श्री जैमिनी शास्त्री द्वारा प्रवचन तथा श्री गुलाबसिंह राघव के मनोहारी भजन होते रहे। इस अवसर पर डा० सत्यकाम वर्मा भी उपस्थित थे। समारोह में प्रमुख दानवीरों का अभिनन्दन भी किया गया। ऋषिलंगर के उपरान्त उत्सव सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी का ५८वां वार्षिकोत्सव से दिसम्बर तक विक्री कर कार्यालय का प्रांगण चेतगंज वाराणसी में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के विख्यात महोपदेशक प्राध्यापक संगीतज्ञ एवं भजनोपदेशक पधार रहे है। समारोह में भव्य शोभायात्रा तथा अनेकों अन्य सम्मेलन आयोजित किये गये हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

आर्यसमाज [illegible] वार्षिकोत्सव से नवम्बर तक स्वामी [illegible] जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञ भजन तथा प्रवचन तथा सायंकाल ब० सुरेशचन्द्र [illegible] भजनोपदेशक तथा राम [illegible] जी आर्य पुत्र के ओजस्वी व्याख्यान हुए।

—आर्यसमाज चौक पटियाला का वार्षिकोत्सव ? ९४ से ९४ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वानों तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाया। समारोह में भाषण प्रतियोगिता वेद सम्मेलन महिला सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

आर्य समाज दिलशाद गार्डन दिल्ली का वार्षिकोत्सव एवं माता लाजवन्ती खुराना अभिनन्दन समारोह २० ११ ९४ को उल्लास पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विशेष यज्ञ तथा भजन और प्रवचनों के माध्यम से जनता में जागृति पैदा की गई। समारोह में माता लाजवन्ती खुराना को मान पत्र तथा शाल भेंटकर अभिनन्दन किया गया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एस० ११०४६/६४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१८-१२-६४ बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) ६३
R N 020/57 Licensed to post without prepayment Licence No I in N.D P S O on 15 16-12 1994

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन १५ जनवरी ६५ को

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का वार्षिक निर्वाचन (अधिवेशन) आर्य समाज शास्त्री नगर (आर्य अतिथि भवन) मेरठ मे दिनाक १५ जनवरी ६५ को होगा।

उ० प्र० की समस्त जिला सभा, आर्य समाजे ज्यादा से ज्यादा सख्या मे मेरठ पहुचे।

स्थान आर्यसमाज शास्त्री नगर डी ब्लाक मेरठ

दिनांक १५ जनवरी ६५

समय ---११ बजे प्रातः

भवदीय

मनमोहन तिवारी (सभा मन्त्री) इन्द्रराज (सभा-प्रधान)

महम में नशाखोरी के खिलाफ सेमिनार और प्रदर्शनी

महम ग्रामीणो मे नशे की बढती प्रवृत्ति को रोकने के लिए स्थानीय स्वैच्छिक विकास सघ ने सात दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमे उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली राजस्थान के विभिन्न स्वयसेवी सगठनो के प्रतिनिधियो ने काफी सख्या मे हिस्सा लिया।

इस कार्यक्रम के दौरान मद्यपान व नशीले पदार्थों की रोकथाम विषय पर एक सेमिनार का आयोजन भी किया गया। इसमे मेडिकल कालेज रोहतक के वरिष्ठ डा० राजीव डोगरा, चौ० चरणसिंह कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वरिष्ठ अभियन्ता डा० डी०के० शर्मा,महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कानून विभाग के प्रवक्ता डा० के०पी०एस० महलवार व करेश शर्मा ने नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाले नुकसान पर प्रकाश डाला।

दूरदराज के गावो से आए हजारो ग्रामीणो के आकर्षण का मुख्य केन्द्र "नशा सेवन से होन वाली बीमारियो" को दर्शाती हुई एक प्रदर्शनी रही।

समापन समारोह के बाद बुधवार को पत्रकारो से बातचीत करते हुए सघ के अध्यक्ष डा० जसफलसिंह ने बताया कि जिले के किसी भी गाव का कोई भी व्यक्ति यदि अपने नशे की आदत से छुटकारा पाना चाहेगा तो सघ अपने खर्चे पर उसकी मदद करेगा। उन्होने बताया कि सघ के कार्यकर्ता दजनो नशेडियो की नशा छुडवाने मे मदद कर चुके है।

शराबबन्दी उम्मीदवारों को ही सफल बनायें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद के अध्यक्ष प्रा० शेरसिंह जी तथा हरयाणा शराबबन्दी समिति के सयोजक श्री विजयकुमार जी ने एक सयुक्त प्रेस वक्तव्य मे हरयाणा के मतदाताओं का आह्वान करते हुए कहा है कि वे ग्राम पचायत नगरपालिका तथा जिला परिषद आदि के चुनाव मे शराबबन्दी उम्मीदवारों को सफल करके हरयाणा की प्राचीन वैदिक सस्कृति तथा सभ्यता की रक्षा करें। तीनो आर्य नेताओ ने दुःख प्रकट करते हुए हरयाणा सरकार पर दोष लगाया है कि आज ग्राम पचायतो आदि के चुनाव जीतने के लिए अधिकाश उम्मीदवार जहा जिस ऋषि मुनियो की धरती पर दूध की नदिया बहती थीं, आज वहा शराब की नदिया बहा रहे है। अनेक ग्रामो मे पीने का पानी नही मिलता परन्तु सरकार की आबकारी की गलत नीति के कारण जहा शराब के ठेके नही है, वहा चाय आदि की दुकानो पर आसानी से शराब की बोतल मिल जाती है। शराब के ठेकेदार सरकारी अधिकारियो तथा पुलिस कर्मियो को मुफ्त मे शराब पिलाकर अवैध बिक्री कर रहे है।

आर्य नेताओ ने विशेषकर महिला मतदाताओं जो प्राय शराब का सेवन नही करती तथा शराबियो के कारण कष्ट भी सहन करती है, अपील की है कि अब सुनहरी अवसर उनके हाथ मे आया है, वे सगठित होकर शराबी उम्मीदवारो को पराजित करने मे पूरी शक्ति लगा देवे। इस प्रकार आन्ध्र तथा तमिलनाडु राज्यो की भाति हरयाणा मे भी शराबबन्दी लागू हो सकती है।

—केदारसिंह आर्य

आर्यसमाजों के निर्वाचन

—केन्द्रीय आर्य सभा यमुनानगर श्री सुन्दरलाल अग्रवाल प्रधान, श्री मनोहर लाल दीवान मन्त्री कोषाध्यक्ष श्री हसराज अजमानी।

—आर्य समाज सी ब्लाक पुष्पांजलि एन्क्लेव दिल्ली श्री बहोरीलाल कश्यप प्रधान श्री विद्याप्रकाश वर्मा मन्त्री श्री सुभाषचन्द्र गुप्ता कोषा।

—आर्य समाज रीवा डा० कृष्णलाल डग प्रधान श्री सुशीलकुमार वर्मा मन्त्री श्री सुदामालाल सचदेव कोषाध्यक्ष।

—विश्ववेद परिषद लखनऊ श्री ओजोमित्र शास्त्री अध्यक्ष, श्री सजय कुमार मन्त्री राधेश्याम श्रीवास्तव कोषाध्यक्ष।

—चम्पारण जिला आर्य पुरोहित सघ, श्री राधाकान्त द्विवदी प्रधान, श्री रामचन्द्र सिंह मन्त्री श्री रघुनाथ जी आर्य कोषा०।

—आर्य समाज रानी की सराय आर्यमगढ श्री जगतनारायण आर्य प्रधान, श्री सरसचन्द्र आर्य मन्त्री श्री अशोक कुमार आर्य कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज नलवाडा श्री गोविंदराव रामराव पाटिल प्रधान गुरुनाथ राव जी आर्य मन्त्री।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित
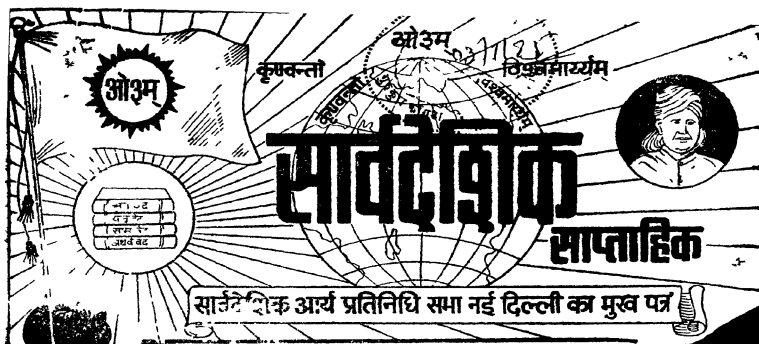
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र   दूरभाष : ३२७४७७१   वार्षिक मूल्य ४०) एक प्रति १) रुपया
वर्ष ३२ अक ४४]   दयानन्दाब्द १७०   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९५   पौष कृ० ७   स० २०५१ २५ दिसम्बर १९९४

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली राज्य के प्रधान—

आर्य नेता श्री सूर्यदेवजी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सर्वसम्मति से निर्वाचित

दिल्ली, १९ दिसम्बर। गुरुकुल कागड़ी विश्व विद्यालय भारत सरकार से विधिवत मान्यता प्राप्त शिक्षा सस्थान है और इसका सचालन पूर्व व्यवस्थानुसार सम्पूर्ण पजाब राज्य द्वारा सम्पन्न होता था। परन्तु पजाब विभाजन के बाद पजाब तीन हिस्सो मे विभाजित हो गया, जिसमे पजाब. हरियाणा और दिल्ली राज्य के प्रतिनिधि रखे गये और उन प्रतिनिधियो द्वारा इसकी सचालन व्यवस्था नियमानुसार बनाई गई। इन तीनों प्रान्तीय सभाओ के प्रधानो की समिति एक कुलाधिपति का चयन करती हे। विश्वविद्यालय विभाग मे कुलपति और परिदृष्टा के ऊपर कुलाधिपति का सर्वोच्च स्थान होता है।

प्रारम्भिक अवस्था म स्व श्री वीरन्द्र जी सभा प्रधान पजाब वर्षो तक कुलाधिपति रह। उनके पश्चात् श्री प्रो० शरसिह जी प्रधान हरियाणा सभा ने इस पद को सुशोभित किया। इस पद पर प्रोफेसर शेरसिह जी का कार्यकाल इस समय समाप्ति पर है, अत नवीन कुलाधिपति के चयन हेतु उपरोक्त सस्थान के कुल सचिव द्वारा एक आवश्यक बैठक आर्य समाज १५ हनुमान रोड मे बुलाई गई। जिसमे पजाब सभा के प्रधान श्री प हरवशलाल शर्मा, हरियाणा सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज और दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदव जी भी उपस्थित हुये।

बैठक दिन क ठीक ' वजे प्रारम्भ हुई, बैठक प्रारम्भ होते ही श्री पडित हरवशलाल जी शर्मा प्रधान पजाब सभा न कुलाधिपति पद क लिए श्री सूर्यदव जी के नाम का प्रस्ताव पढना प्रारम्भ किया, तभी स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने उच्च स्वर मे कहा कि इस प्रस्ताव का सर्व सम्मति से स्वीकार किया जाये। इस घोषणा पर तीनो सभाओ के प्रधानो ने सर्व सम्मति स श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली राज्य प्रतिनिधि सभा को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति घोषित किया।

बैठक की समाप्ति पर हाल म पजाव सभा क मन्त्री श्री अश्विनी कुमार एडवोकेट, डा० हरिप्रकाश व्यवस्थापक श्रद्धानन्द चिकित्सालय, श्री प्रकाशवीर विद्यालकार मन्त्री विद्या सभा, डा धर्मपाल कुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, चौ० लक्ष्मीचन्द सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश उपस्थित थे।

जैसे ही श्री सूर्यदेव जी बैठक से बाहर आये तभी सर्वप्रथम चौ० लक्ष्मीचन्द जी ने मालाओ से उन [illegible] स्वागत किया। डा० धर्मपाल डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा, डा हरिप्रकाश जी, श्री प्रकाशवीर विद्यालकार [illegible] श्री [illegible] सूर्यदेव जी का स्वागत किया। साथ ही [illegible] शुभ-कामनाए दी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का निर्वाचन स्थल आर्य समाज बुढ़ानागेट (मेरठ)

उत्तर-प्रदेश की समस्त आर्य समाजो को विशेष सूचना दी जाती है कि परिस्थिति वश चुनाव स्थल शास्त्री नगर मेरठ के स्थान पर आर्य समाज बुढाना-गेट मेरठ निश्चित किया गया है समस्त प्रतिनिधि बस या रेल मे उतरकर आर्यसमाज बुढाना गेट ही पहुचे। धन्यवाद !

इन्द्रराज
सभा-प्रधान

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान पर्व पर विशेष समारोह

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के सस्थापक शुद्धि आन्दोलन क प्रवर्तक महान स्वतन्त्रता सग्राम सनानी अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान पर्व पर २३ दिसम्बर १९९४ शुक्रवार का विशेष आयोजन किया गया है। समारोह म सार्वदेशिक सभा के प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव डा० सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा जस्टिस महावीर सिह श्री सूर्यदेव जी, महाशय धर्मपाल, प्रो० शेरसिह डा० धर्मपाल, स्वामी ओमानन्द प० हरवशलाल शर्मा, श्री प्रकाशवीर विद्यालकार आदि पधार रहे है। इस अवसर पर विशाल शोभा यात्रा निकाली जाएगी तथा श्रद्धाजलि सभा दोपहर १२ बजे डा० हरिराम आर्य इन्टर कालज म आयोजित की गयी है। अधिक स अधिक सख्या म पहुचकर कार्यक्रम का सफल बनाये।

संपादक : डा सच्चिदानन्द शास्त्री

बनवासी क्षेत्रों में आर्य समाज का प्रचार

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के भूतपूर्व महामन्त्री स्व० श्री पृथ्वी राज शास्त्री के एक शिष्य श्री अमर सिंह की वनवासी क्षेत्रो मे अशिक्षित लोगो के बीच सेवा करने तथा ऋषिमिशन को आगे बढाने की तडप को देखते हुए उनके उद्गार इस पत्र मे प्रकाशित किये जा रहे है। पाठक इनसे प्रेरणा ले और आर्य समाज के सिद्धातो के प्रचार तथा प्रसार म योगदान प्रदान करे। —सम्पादक

स्वामी आनन्दबोध जी के स्वर्गवास का समाचार पाकर बडा दुख हुआ। एक पल ऐसा लगा कि हमारा शुभ चिन्तक कही नही गया, मगर हम सब क्या कर सकते है परिवर्तनशील ससार के नियम से एक दिन सबको अपनी जीवन लीला समाप्त करनी होनी हैं। परन्तु इस अल्प जीवन लीला मे हम उनके द्वारा किय गये कार्यो को घटने नही देंगे। बल्कि इसे उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर करेंगे। तभी उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो सकेगी।

मैने मध्य प्रदेश के बलवन ग्राम मे सीता बालवाडी का कार्य भार सम्भाल लिया है इस ग्राम म एक भी व्यक्ति शिक्षित नही है और ईसाइयत का बोलबाला अत्यधिक है यहा पर वैदिक सस्कृति का प्रचार करना अत्यन्त दुष्कर है। लेकिन महर्षि के स्वप्नो की ज्योति को फैलाने और जो ज्ञान पूज्यपिता श्री पृथ्वीराजजी शास्त्री ने हमे प्रदान किया है उसे अन्य अशिक्षित भाई बहनो मे फैलाने का व्रत जो मैंने लिया है उसे पूरा करने का दृढ निश्चय मैंने कर लिया है। क्योकि आज हमारे कार्यो को बढावा देने तथा उत्साह वर्धन करने वाले स्वामी जी हमारे बीच नही है। हमने जो प्रतिज्ञाये की है वह अधूरी न रह जावे। इसलिये हमने अपना रोजगार जो मैं पहले किया करता था और मुझे वहा से १५०० रुपए मासिक मिलता था उसको लात मारकर इस अशिक्षित क्षेत्र मे कार्य करने का निश्चय किया है। इस जगली क्षेत्र मे मैंने अब तक ४० बच्चो को शिक्षण देना प्रारम्भ कर दिया है और मैंने यह अनुभव किया है कि यदि इन बच्चो को सुविधा दी जावे तो यहा पर और अधिक बच्चो को प्रशिक्षण दिया जा सकता है विद्यालय चलाने के लिए कुछ आवश्यक वस्तुओ की आवश्यकता है जैसे टाट पट्टी स्लेट किताबे तथा वर्दी बैज और दैनिक उपयोग की वस्तुयें। यदि इन चीजो की व्यवस्था हो सके तो यहा का कार्य बहुत अच्छा चलाया जा सकता है। आप सबसे प्रार्थना है कि देव दयानन्द की विचार धारा को प्रवाहित करने का जो उत्साह हमारे अन्दर है उसे आप लोग कमजोर नही होने देंवे। और इस अशिक्षित क्षेत्र मे स्वामी दयानन्द का जय घोष तथा वेद मन्त्रो का स्वर निरन्तर होता रहे इसके लिए सहयोग प्रदान करेंगे।

—आपका अमर आर्य

श्री रतनलाल सहदेव दिवंगत

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के वरिष्ठ उप-प्रधान, रघुमल आर्य कन्या उच्चतम विद्यालय, राजा बाजार तथा आर्य पब्लिक स्कूल, राजा बाजार के प्रबन्धक और रघुमल आर्य कन्या प्राइमरी विद्यालय, डा० लेन के अध्यक्ष श्री रतनलाल सहदेव का देहावसान १२ दिसम्बर, १९९४ को साय ८-३० बजे हो गया था।

आर्य समाजो तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ की ओर से श्री रतनलाल सहदेव जी के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करने हेतु रविवार १८ दिसम्बर, १९९४, प्रात १०-३० बजे आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली मे श्री सूर्यदेव, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे शोकसभा का आयोजन किया गया जिसमे डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, मन्त्री-सा० आर्य प्र० नि० सभा, महात्मा धर्मपाल, डा० धर्मपाल सहित अनेक वक्ताओ ने उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश नारायण स्वामी भवन, ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ-२२६०१८

सेवा मे, दिनाक १ अगस्त, ९४

मत्री जी

जिला सभा/आय समाज/महिला समाज,

श्रीमान नमस्ते,

विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की गत अन्तरग सभा दिनाक २२-५-९४ हरिद्वार के निश्चयानुसार सभा का वार्षिक वृहद्धिवेशन एव निर्वाचन दिनाक १५-१-९५ दिन रविवार को आर्य समाज बुढानागेट मेरठ मे सम्पन्न होगा।

अत जिन आर्य समाजो का अभी तक चित्र व दशाश प्राप्त न हुए हो तो प्राप्त करें। यदि चित्रो की कमी हो तो फोटो स्टेट कराके चित्र आर्य समाजो से भरवा ले। आप ज्यादा से ज्यादा प्रतिनिधियो को लेकर मेरठ पहुचे।

आशा है आप सभी आर्य बन्धु ज्यादा से ज्यादा चित्र भरवाकर सगठन को और मजबूत करेंगे।

हार्दिक शुभकामनाओ सहित। विनीत

मनमोहन तिवारी, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

धन्य श्रद्धानन्द स्वामी

(धर्मवीर शास्त्री)

दी झुका सगीन जिसने वह छुरे से हार जावे,
बात यह अचरज भरी, पर शत्रु को भी प्यार जावे।
मान ले जो मित्र, साथी या स्वजन परिवार का ही,
झेलनी उसको पडेगी एक दिन ऐसी तबाही।

दुष्ट जन विश्वास को ही सर्वदा छलते रहे हैं,
सुर-असुर-सग्राम सगरिम्भ मे चलते रहे हैं।
वक्त ने पाया जिसे सच बात जो देखी सुनी है,
साम्प्रदायिकता सियासत से विषैली चौगुनी है।

सब सिपाही झुक गई थी मजहबी मन झुक न पाया
क्रूर कातिल ने छुरे से प्यार का बदला चुकाया।
काल की काली निशा मे चाद कौमी छिप गया था,
वह नहीं था, किन्तु उसकी कीर्ति से नभ दिप गया था।

आज तो उस काल मे भी चौगुना नाजुक समय है,
पूर्ति हित जब स्वार्थ की ही बस रहा अर्थाभिनय है।
सगठन के नाम पर हा! दस तरह की टोलिया हैं,
जब धमाके हो रहे ये बोलते दस बोलिया हैं।

है तकाजा वक्त का यह एक श्रद्धानन्द आए,
आर्यजन को सगठित कर फिर करिश्मा कर दिखाये।
है अभी तक वादी मे उस तपी की गूज बाकी,
और दिल मे देहली के वीरता की मूर्त झाकी।

सत्य के प्रति अचल श्रद्धा से जगी जो ज्वाल तब थी,
कु ठिता भी जाति उससे गर्व-उन्नत-भाल तब थी।
सत्य-श्रद्धा के सबब जो हो गया अक्षय सबका,
धन्य श्रद्धानन्द स्वामी, कष्ट सबका, प्रेम सबका।

प्रेरणा देता रहेगा जाति को बलिदान उनका,
कल्प गुजरेंगे, रहेगा गूजता अवदान उनका।
आर्यता की धूम धरती पर मचाकर ही गये वह,
शत नमन उनको, हमारी याद मे अब भी नये वह।

बी-१/५१ पश्चिम विहार नई दिल्ली-६३

स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृतियां

डा. सुरेशचन्द्र वेदालंकार, गोरखपुर

श्री जयदेव शर्मा विद्यालंकार कक्षा १३ मे पढते थे। जनवरी का महीना था। श्री स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुंशीराम) अपने बटुआला वाले गंगा तट पर बने बगले मे रहते थे। हमारी बैरक मे छ छात्र रहते थे। विद्यालंकार जी ने लिखा है ऊपर टीन की छत थी और नीचे पक्की ईंटो का फर्श था और बंगले के आगे पूर्व की ओर बनी थी। प्रात लगभग ७ साढे सात बजे होंगे मैंने एक आवाज धीमी सी सुनी और ज्ञात हुआ कि कोई है। वे लिखते है कि मैं फौरन अपने कक्ष से बाहर आया। देखा बगले को जाने वाली कच्ची सड़क पर एक आदमी पतला दुबला काला कम्बल ओढे हुए, नगे पैर, नगा सिर बडी उत्सुक जिज्ञासा लिए खडा है। मैं पास आया। नमस्ते की। और पूछा 'महाशय जी, आप किनको पूछ रहे है ?'

उत्तर मिला 'श्री महात्मा मुंशीराम जी को। उनका बगला कहा है ?'

कम्बल मे लिपटे उस व्यक्ति से मैंने कहा 'आप मेरे साथ चलिए और उनको लेकर सीधा बगले मे पहुचा। महात्मा जी (स्वामी श्रद्धानन्द) मेज पर कुछ लिख रहे थे। भीतर ले जाकर मैंने उनसे कहा 'ये महाशय आपको पूछते है ?'' और मैं बाहर चला गया।

बाद मे पता चला कि वे महाशय महात्मा गांधी थे। नाम पूछते पूछते बगले पर आ गए। उनके पास न बिस्तर न झोला, बस तन पर एक कम्बल गले मे कुर्ता, एक खादी की जाकट सादी सी। नीचे धोती और कुछ नहीं। जब उनकी स्वागत सभा हुई तब जाकर यह पता चला कि यह और कोई नही महा गाधी थे। वे दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह से भारत आए थे। दोनो महात्माओं की भेंट एक चमत्कार था।

महात्मा गांधी महात्मा कैसे बने

एक बार कुम्भ के पर्व पर आर्य समाज के प्रचार के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने कैम्प लगाया। मायापुर की वाटिका, कनखल और हरिद्वार के बीच मे स्थित गुरुकुल की ही जायदाद थी। उनकी विस्तृत भूमि मे "प्रचार का कैम्प लगता था और उसी मे बाहर से आने वाला के लिए तम्बू लगाए जाते थे। एक नन्ही सी बस्ती बस जाती थी ' महात्मा गाधी अपने आश्रम के विद्यार्थियो के साथ सेवा कार्य के लिए पधारे। हरद्वार की ओर वाले कोने मे एक विशेष शामियाना गाधी जी के आयोजन के लिए लगाया गया था। इस स्वागत आयोजन की दूर दूर तक धूम मच गयी थी। इस आयोजन मे सम्मिलित होने के लिए कनखल, हरिद्वार के ही नहीं दूर दूर के लोग आए। देहरादून, बिजनौर, सहारनपुर, रुडकी आदि दूर दूर के नगरो के लोग पधारे थे। ८ अप्रैल १९१५ की अपराह्न वेला मे यह समारोह सम्पन्न किया गया। एक भावपूर्ण सुन्दर व आकर्षक अभिनन्दन पत्र गाधी जी को भेंट किया गया। शायद भारत मे उन्हे यह पहला ही अभिनन्दन पत्र दिया गया था। उसमे उन्हे इस मान पत्र मे स्वामी श्रद्धानन्द ने पहली बार महात्मा शब्द का प्रयोग किया। स्वामी श्रद्धानन्द महाराज तब 'महात्मा मुन्शीराम नाम से विख्यात थे और "महात्मा" कहे जाते थे। गाधी जी ने अपने भाषण मे स्वामी श्रद्धानन्द को महात्मा शब्द का प्रयोग किया। इसके बाद स्वामी श्रद्धानन्द का दिया यह 'महात्मा' शब्द गाधी जी के नाम के साथ प्रयुक्त होकर और भी अधिक सार्थक हो गया। साबर मती के सन्त और चम्पारण (बिहार) के सत्याग्रही वीर के लिए साधारण रूप से किया जाने लगा।

गुरुकुल विश्व विद्यालय के दीक्षान्त समारोह मे महात्मा गाधी ने इस घटना का स्मरण किया। बेलगाव मे कांग्रेस के अध्यक्ष चुने जाने पर गाधी जी ने स्वामी जी को अतिआग्रह के साथ वहा बुलाया था और अपने भाषण मे कांग्रेस के सामने अपने अधिवेशनो के लिए गुरुकुलकांगड़ी के उत्सवों का आदर्श उपस्थित करके उसकी सादगी की ओर जाने का आदेश दिया था।

स्वामी श्रद्धानन्द और होबर्ट

(सहारनपुर के जौयट मजिस्ट्रेट)

श्री श्रद्धानन्द (पंडित) विद्यालंकार महोदय ने इस घटना का उल्लेख करते हुए बताया कि वे जब १४वीं कक्षा मे पढते थे। तभी सहारनपुर के जौयट मजिस्ट्रेट श्री होबर्ट गुरुकुल मे स्वामी श्रद्धानन्द को देखने पहुचे। उनके साथ कुछ अन्य जन भी थे। महात्मा जी के बगले मे उन्हे पहुचाया गया। महात्मा जी ने उनका खडे होकर स्वागत किया।

आतिथ्य किया के बाद जब श्री होबर्ट और उनकी पत्नी स्वामी जी के पास गए तब अतिशील और लज्जा के साथ उनकी पत्नी ने निवेदन किया कि ९ वर्ष से हम विवाहित हैं, किन्तु अब तक भी सन्तान हीन है। हम आपका आशीर्वाद लेने आए हैं। महात्मा जी ने २ मिनट तक मौन रूप से प्रार्थना की और "पुष्प मीन इव ह्रद" के समान समाधिस्थ हो गए फिर आखें खोल अति प्रसन्न मुख से बोले "भगवान आपकी इच्छा पूरी करे।" उनको अत्यन्त आदर के साथ विदा किया।

सन १९१७ ई० मे महात्मा मुंशीराम ने सन्यास लिया। मुंशी राम अब स्वामी श्रद्धानन्द बने। सन्यास संस्कार के समय मायापुर वाटिका के सामने सडक पर घोडे पर बैठे रहे। उन्होने ब्रह्मानन्द विद्यालकार को बुलाया। वे 'नमस्ते' करते हुए उनके यहा पहुचे। वे घोडे से कूद पडे। कुशल क्षेम के बाद ब्रह्मानन्द जी विद्यालकार ने पूछा 'आपके चिरजीव पुत्र कहा है ?'' उन्होंने मुस्कराते हुए कहा "अभी मेरी पत्नी घर पर है। दो बजे यहा आ जाएगी। तब तक उनका सन्यास आश्रम, संस्कार भी पूर्ण हो जाएगा। मैं प्रथमवार पुत्र की उत्पत्ति के विषय मे आशीर्वाद लूगा। होबर्ट महोदय के ठीक १ वर्ष बाद उसी मास की उसी तारीख को आशीर्वाद प्राप्ति के समय ही इस पुत्र का जन्म हुआ था।" सन्यास ग्रहण के बाद स्वामी जी के चरणो मे लब्धूराम जी आर्य ने किया और उसके बाद होबर्ट परिवार के सुपुत्र, होबर्ट साहब और उनकी पत्नी ने प्रणाम किया।

स्वामी श्रद्धानन्द की नियम पालन मे दृढता भी अनुकरणीय है। प्रात काल का उनका घूमना। लबा डडा लेकर अपने नियत वेश मे वे जगल मे घूमने निकल जाते थे। एक घटे तक भ्रमण करके स्नान, व्यायाम, सन्ध्योपासना, वेद उपनिषद दर्शन आदि किसी वैदिक साहित्य का स्वाध्याय अवश्य करते थे। तब वे उच्चासन पर बैठकर स्वय किए हुए स्वाध्याय के आधार पर प्रवचन करते थे। उनकी योगदर्शन, उपनिषद और वेदमन्त्रो की व्याख्या बहुत मधुर लगती थी। कर्तव्य का बोध दिलाने वाले उन के प्रिय और मनोहर उपदेशो का सुनने के लिए गुरुकुल का अशिक्षित भृत्य वर्ग भी उनकी चौकी के पीछे यज्ञशाला के पास उपस्थित रहता था। श्री हीरालाल जी सूद के शब्दो मे—

श्रद्धा के अवतार शुद्ध श्रद्धा की मूरत।
श्रद्धा के आधार अटल पर्वत की सूरत॥
श्रद्धा के अर्द्धन भक्त श्रद्धा व्रतधारी।
श्रद्धा हित बलिदान हुए स्वामिन ' बलिहारी।
स्वामी श्रद्धानन्द परम योगी की जय हो।
स्वामी श्रद्धानन्द स्वर्ग भोगी की जय हो।
स्वामी श्रद्धानन्द जगत नेता की जय हो।
स्वामी श्रद्धानन्द युवा नेता की जय हो।

आदर्श लोक सेवक श्रद्धानन्द

श्री पं० भीमसेन विद्यालंकार

स्वामी श्रद्धानन्द जी प्राय अपने भाषण मे इस बात पर जोर दिया करते थे कि हमारा व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन एक दूसरे का प्रतिबिम्ब होना चाहिए। यथा पिंडे तथा ब्रह्माण्डे की लोकोक्ति के अनुसार पिंड और ब्रह्माण्ड के मूल तत्व एक ही है। इसी प्रकार व्यक्तिगत जीवन और सार्वजनिक जीवन के मूल तत्व एक होने चाहिये। वैदिक धर्म की यह विशेषता ही इसे सार्वभौम धर्म—सब देश-देशान्तरो के लिए समान रूप से हितकारी बनाती है। इसी भावना से प्रेरित व्यक्तियो और जातियो का राष्ट्र धर्म (Nationalism विश्व धर्म का पूरक बन सकता है। परन्तु यूरोपियन सभ्यता के वातावरण मे आविर्भूत राष्ट्र-धर्म देश प्रेम विश्व धर्म का विरोधी बनकर मानव समाज के सामने आया। दो विश्व युद्ध इसी भावना के परिणाम थे। गोरी जातिया-काली जातिया जर्मन, अंग्रेज, फ्रांसीसी, जापानी राष्ट्रो के नेता, दूसरे देशो के हितो की उपेक्षा तथा हानि करके भी, अपने देश का हित साधना आवश्यक समझने लगे क्योकि इससे उनका आर्थिक स्वार्थ तथा राष्ट्रीय अहंभाव चमकता था। भारत के सासारिक नेता राजा धनी भी सदियो की दासता के कारण वैदिक धर्म के विशाल उदार रूप को भूल चुके थे। मतवाद दार्शनिक सम्प्रदायवाद की सकीर्णता की रूढियो मे जकडे हुए थे। युरोपियन जातियो ने मौका देखकर १८वी १९वी सदी मे भारत को अपने-अपने राजसिक राष्ट्र का शिकार बनाया।

ऐसे समय मे ऋषि दयानन्द ने मानवता को इकाई मानने वाले, वैदिक धर्म के आदर्शवाद को भारत भूमि के रग मच पर व्याख्यानो तथा लेखो द्वारा जनता के सामने रखा स्वय अपना जीवन भी आदर्श वैदिक आचार्य की भाति योगविद्या से शक्तिशाली बनाकर ५ यमो और ५ नियमो को सार्वभौम धर्म की आधारशिला माना और घोषित किया। आर्य समाज के दस नियम—यम नियमो के ही रूपान्तर हैं। अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे उस समय की सामायिक समस्याओ तथा प्रचलित सम्प्रदायो और मिथ्या राष्ट्राभिमानी विचार धाराओ का खण्डन किया। सब सम्प्रदायो—राष्ट्रीय विचार धाराओ मे सर्व तन्त्र समान सिद्धान्तो को आर्य समाज के व्यास-पीठ से जनता के सामने रखा। उनके सिहनाद से सम्प्रदायो मे खलबली मची। उस सिंहनाद को सुनकर कई निभय आत्माओ ने उनका सत्सग उनका दर्शन साक्षात्कार किया और उनके सत्य-बल, न्याय-बल की सजीवनी शक्ति से अपनी आत्माओ को अनुप्राणित किया।

ऐसी आत्माओ मे—विशेष व्यक्तियो मे—पण्डित गुरुदत्त स्वामी श्रद्धानन्द पण्डित लेखराम ने ऋषि चरणो मे अपने आपको अर्पित किया। पण्डित गुरुदत्त जी अपने अलौकिक प्रतिभाशाली बुद्धिबल से ऋषि दयानन्द की वेदार्थ शैली को वेद-व्याख्यान द्वारा भारत तथा युरोप के शिक्षित दिमागो तक पहुचाया। उनकी वैदिक मैगजीन ने पता नही कितने दिमागो मे वैदिक आदर्शवाद के लिए आकर्षण पैदा किया। इस कठिन आत्मिक साधना मे—आचार्य शकर की भाति इन्होने अल्पायु जीवन मे क्रान्तिकारी कार्य किया। पण्डित लेखरामने लेखनी और वाणी द्वारा सत्यार्थप्रकाश के खण्डन भाग को केवल पुस्तको तक ही सीमित नही रखा असहिष्णु सम्प्रदायवादियो को उनके गढ मे ललकारा। हिंसक शेर को उसके घर मे निरुत्तर और धाराशायी किया और अन्तिम दम तक निष्ठा भाव से किसी सासारिक ऐश्वर्य की परवाह न करते हुए अपने आपको बलि कर दिया। इन दोनो बलिदानो से सिंचित भारत भूमि मे—वैदिक धर्म के आदर्शवाद को मूर्त रूप देने के लिए इन दोनो के सहवासी धर्म भाई स्वामी श्रद्धानन्द—उस समय के पण्डित मुन्शीराम ने अपने आपको यज्ञवेदि के लिए अर्पित किया। बिरादरी के बन्धनो को तोडा, बसे हुए शहरो और देहातो को छोडकर बीहड जगलो की काट-छाट कर गगा तट पर वैदिक आदर्शवाद को मूर्त रूप देने के लिए वैदिक आश्रम—गुरुकुल की स्थापना की।

यह गुरुकुल आश्रम वानप्रस्थ आश्रम, वैदिक धर्म वैदिक समाज के मूलाधार हैं। अंग्रेजी पढे लिखे आर्य भाइयो मे से कुछेक ने इसका उपहास किया। अंग्रेजी युरोपियन सभ्यता मे दीक्षित, विज्ञान की चकाचौंध से प्रभावित भारतीयो ने इसे भारत की उन्नति के लिए हानिकारक समझा। विदेशी सरकार ने प्रारम्भ मे इसकी उपेक्षा की। फिर भारत के कुछ राजनैतिक क्रान्तिकारियो के वहा जाने पर टेढी नजर डाली। महात्मा मुंशीराम 'साच को आच नही" के सिद्धान्त के अनुसार बेरोक टोक वैदिक धर्म का व्यावहारिक रूप देने के परीक्षणशाला मे, विश्व-मेध यज्ञ की भावना से लगे रहे। कुछ समय बाद उस आश्रम मे जन्म-मूलक भेद-भाव को तिलाजलि देने वाला वातावरण पैदा हो गया। छूत-अछूत अंग्रेज, अमरीकन ईसाई, मुसलमान—मत भेद होते हुए भी उस वैदिक आश्रम के वातावरण से प्रभावित होने लगे। गुरुकुल भारत मे अन्तर्राष्ट्रीय विचार धाराओ का केन्द्र बन गया। वैदिक धर्म के गुरु-शिष्य के आध्यात्मिक सम्बन्धो की दिव्य झलक वहा दिखाई देने लगी। ऋषियो के युग की झलक लिखित चित्र रूप मे भारतीय जनता के सामने उपस्थित हुई। उस वातावरण मे सदियो से पर्दे की रूढियो मे जकडी देवियो ने पर्दे को नमस्कार किया। सस्कृत शास्त्र मे सीमित सस्कृत भाषा गुरु-शिष्यो की बोल चाल की भाषा बन गई। यह सब कुछ क्यो और कैसे हुआ ?

इसका एक मात्र मुख्य कारण स्वामी श्रद्धानन्द का वैदिक धर्मानुरागी होना था।

स्वामी श्रद्धानन्द न मान अपमान लोकप्रियता तथा लोकनिन्दा की परवाह न करते हुए भारतीय राष्ट्रीयता की घातक साम्प्रदायिक, मजहबी असहिष्णुता के विरुद्ध युद्ध की ललकार की, उसमे अपनी प्राणाहुति दी। छूत अछूत के भेद भाव को दूर करने के, मलमन्त्र धार्मिक सहिष्णुता की साधना मे अपने आपको खपा दिया।

आज स्वतन्त्र भारत मे स्वामी श्रद्धानन्द क्या करते ? स्वामी श्रद्धानन्द के चरणचिह्नो पर चलने वालो को क्या करना चाहिए ? यह प्रश्न बार-बार हृदय मे उठता है। अमरीकन ब्रिटिश तथा युरोपियन जातियो के अनुकरण मे स्वतन्त्र भारत के अनेक कर्णधार देश मे भोगवाद के प्रसारण साधनो को कला प्रगति के नाम पर जुटा रहे है, स्कूलो कालेजो मे नाच-गान नाटक द्वारा विद्यार्थी जीवन को गृहस्थ जीवन का रूप दिया जा रहा है। आश्रम सेवक का नाटक खेला जा रहा है। आर्य समाज के शिक्षणालय भी राजनेज तथा राजधन से आकृष्ट होकर आर्य शिक्षणालयो मे गृहस्थाश्रमो का सा वातावरण पैदा कर रहे हैं। स्वामी श्रद्धानन्द ने सन्यासाश्रम मे प्रवेश करने के बाद, ब्रह्मचर्य प्रचार को ही जीवन का लक्ष्य बनाया था, परन्तु विदेशी भस्मासुरो की लडाई मे उन्हे समर जलना पडा। परन्तु आज स्वतन्त्र भारत मे वैदिक धर्म की आश्रम-मर्यादा को अपनाना, फैलाना ही स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान समारोह की विशेषता होनी चाहिए।

स्वामी श्रद्धानन्द ने विश्वामित्र की भाति पता नही कितने दशरथो को अपने पुत्रो को जगल मे भेजकर ब्रह्मयज्ञ की रक्षा के लिए तैयार किया। विश्वामित्र की भाति स्वयवर विवाहों की प्रथा चलाने के लिए अनेक युवकों को जाति-पाति के बन्धन तोड़ने के लिए उत्सा-

(शेष पृष्ठ १० पर)

कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द

प्रसिद्ध साहित्यकार काका कालेलकर

स्वामी श्रद्धानन्द जी मे आर्य जाति का सनातन स्वभाव पूर्णतया प्रतिबिम्बित था। वे अपने जमाने के सर्वांगीण प्रतिनिधि थे। सामान्य परिस्थिति मे रहते हुए भी आर्य पुरुष अपने पुरुषार्थ से कैसे उच्च और असामान्य कोटि तक पहुंच सकता है, इसका उदाहरण स्वामी जी के सफल जीवन मे हम पाते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जो चैतन्य देश मे प्रकट किया, उसका ग्रहण अधिक से अधिक किसी ने किया था तो वे स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। धर्म प्रचार शिक्षा प्रचार और लोकसेवा तीनो बातो मे अपना जीवन व्यतीत करके उन्होने बलिदान के जल मे जीवन यज्ञ का अद्भुत स्नान किया। गुरु और शिष्य दोनो पुरुषसिंहो ने अपने निर्भय जीवन से मृत्यु को परास्त किया।

अनार्य हत्यारे का बदला न लेकर उनके असख्य अनुयायियो ने अपना आर्यत्व ही सिद्ध किया है। निर्भय पुरुष का रक्त सास्कृतिक क्षेत्र का उत्तम स्वाद है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जीवन भर अपने पसीने से सेवा की और अन्त मे अपने खून से। इसलिए वे अमरपद प्राप्त कर सके।

सस्था खोलना और चलाना आजकल सामान्य सी चीज हो गई है, क्योकि जनता देख चुकी है कि लोक जीवन मे सुव्यवस्थित सस्थाओ का महत्व कितना है। लेकिन जब ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्य सस्कृति के आत्मा को जागृत करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश मे नई शिक्षा प्रणाली का आदर्श पेश किया, तब भारत-वर्ष मे स्वदेशी सस्थायें बहुत कम थी। ऐसे समय पर सर्वस्व त्याग कर अपने पुत्रो को साथ लेकर गगा के तट पर जगल मे जाकर बसना केवल श्रद्धावान पुरुष का ही काम था। मानो वह एक विश्वजित यज्ञ ही था। मुन्शीराम जी चाहते तो वे किसी भी क्षेत्र मे अपनी कार्यशक्ति का परिचय दे सकते थे। फौज मे दाखिल होते तो नामाकित सेनानी हो जाते। किसी रियासत की सेवा मे प्रवेश करते तो प्रजाहितैषी प्रधान बन जाते। राजनैतिक क्षेत्र मे प्रवेश करते तो महासभा की धुरा का वहन करते। केवल धर्मोपदेशक बन बैठते तो हजारो सभाजन हासिल करते। साहित्य सेवा का पेशा पसन्द करते तो साहित्य सम्राटो से कर-भार वसूल करने की योग्यता प्राप्त करते। परन्तु उन्होने सब छोडकर शिक्षा का ही कार्य अपना जीवन कार्य बनाया। इसीलिए मेरा सिर उनके सामने झुकता है। शिक्षा का क्षेत्र जगत मे अभी उतना प्रतिष्ठित नही है कि जितना उसका अधिकार है। तो भी मनुष्य जाति की उत्तम सेवा शिक्षा द्वारा ही होने को है।

शारीरिक शक्ति, द्रव्यशक्ति, राजशक्ति, सघर्षशक्ति इत्यादि सब शक्तिया शिक्षा शक्ति के मुकाबले मे गौण है। धार्मिकता, सेवा, ज्ञानोपासना और बलिदान यही जीवन का सर्वस्व है। और इन जीवन तत्वो का पोषण केवल शिक्षा प्रसार से ही हो सकता। दीर्घदर्शी समाज पुरुष ही इस बात को समझकर शिक्षा के क्षेत्र मे अपना सर्वस्व प्रदान कर सकता है। वे सच्चे ब्राह्मण थे और ब्राह्मण होने के कारण ही वे हरिजन सेवा की विशेष जिम्मेदारी अपने सिर पर है, ऐसा समझते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी को इसीलिए मै जातिगुरु कहता हू।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

स्वामी श्रद्धानन्द देश धर्म रक्षक सच्चे सन्यासी थे।
वेद धर्म के प्रबल प्रचारक दृढ ईश्वर विश्वासी थे॥
देश स्वतन्त्र कराने को जीवन देना उसने ठाना।
अंग्रेजी सेना के सम्मुख उसने अपना सीना ताना॥
गुरुकुल कागडी-हरिद्वार मे वेद प्रचार हेतु खोली।
वेदाचार्य, विद्वानो की वहा से ही निकली टोली॥
सर्व प्रथम पजाब प्रान्त मे कन्या विद्यालय खोले।
शुद्धि सगठन हेतु देश मे निर्भय होकर वे बोले।
भारत की आजादी को उसने भारी सघर्ष किया।
अंग्रेजो की सगीनो के सन्मुख सीना खोल दिया।
मुस्लिम तुष्टीकरण नीति जब कांग्रेस ने अपनाई।
स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी ने कांग्रेस तब ठुकराई॥
देश धर्म की रक्षा को शुद्धि सगठन पर ध्यान दिया।
एक मुस्लिम हत्यारे की गोली ने उनका प्राण लिया॥
कांग्रेस ने ऐसे तत्वो को भारत मे पनपाया है।
इनकी नीति के कारण ही पाकिस्ता बन पाया है॥
काश्मीर मे कांग्रेस ने भीषण कष्ट बढ़ाया है।
धारा तीन सौ सत्तर अधिकार विशेष दिलाया है॥
जाति व सम्प्रदायवाद वोटो के लिए बढाया है।
मुस्लिम तक को आरक्षण देने का नारा लगाया है॥
रामजन्म भूमि विवाद वोटो के लिए ही उलझ रहा।
राजनीति के कारण ही न्यायालय से न सुलझ रहा॥
हिंसा व आतकवाद चहु ओर देश मे है जारी।
भारत को खडित करने की हो रही है फिर से तैयारी।
श्रद्धानन्द बलिदान दिवस यह ही कर्तव्य बताता है।
देश धर्म की रक्षा का हम सबको पाठ पढाता है॥
उठो "भास्कर" भारत की सभ्यता सस्कृति बचाने को।
जो इसे मिटाना चाहते हैं उनके षडयन्त्र मिटाने को॥

—भगवती प्रसाद सिद्धात भास्कर
प्रधान नगर आर्य समाज
१४३०, प० शिवदीन मार्ग, कृष्णपाल, जयपुर

कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द जी की सेवा अपनी दृष्टि से अपूर्व है। राष्ट्रीय शिक्षण, धर्म जागृति, समाज सेवा आदि अनेक क्षेत्रो मे उन्होने भारत वर्ष को एक नया ही रास्ता दिखाया है। श्रद्धा के बल से ही व यह सब कर सके। जिस दिन उन्होने अपने प्रिय पुत्रो को लेकर गुरुकुल की स्थापना के सकल्प से गगा के तट पर निवास किया, वह दिन भारत वर्ष के वर्तमान इतिहास मे महत्वपूर्ण था। उस दिन उन्होने हिन्दू जाति के उद्धार की नीव डाली, ऐसा कहा जा सकता है। जिस दिन उन्होने अन्य बालको को अपनाया उसी दिन हिन्दू जाति का उन्होने सगठित किया। और जिस समय उन्होने पत्थर गोली और खञ्जर की तरफ तुच्छता की नजर से देखा, उसी दिन भारतवर्ष को उन्होने निर्भय किया। अपनी अतुलनीय श्रद्धा से उन्होने अपना दीक्षा नाम कृतार्थ किया। सचमुच श्रद्धानन्द राष्ट्रमूर्ति थे। ऐसा समय जरूर आयगा कि जब उनके द्वेषी और विरोधी भी स्वीकार करेंगे कि यह भारतवर्ष का आधुनिक सन्यासी मित्र की नजर से ही सभी की तरफ देखता था। कायरा के जमाने मे इस पुरुष सिह की निर्भयता बहुत लोग न समझे होगे और समय की नजर से उनकी तरफ देखा होगा तो वह स्वामी जी का दोष नही था। वैदिक आर्यो का स्वभाव हम श्रद्धानन्द जी मे देख पाते हैं।

श्रद्धामूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द

यशपाल आर्यबन्धु

स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज अपने नाम के अनुरूप ही श्रद्धा की मूर्ति थे। उनके जीवन की यह विशेषता थी कि उन्होंने जो भी कहा उसे करके भी दिखा दिया। वैसे तो उनका समस्त जीवन ही प्रेरणादायक है तथापि गुरुकुल खोलने सम्बन्धी उनका शिवसंकल्प विशेष प्रेरणादायक है उस प्रेरणादायक प्रसंग को हम आर्य जनता के सम्मुख प्रस्तुत कर श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर उस अमर बलिदान की याद दिलाना चाहते हैं।

बात उन दिनों की है जब आर्य समाज लाहौर का वार्षिकोत्सव चल रहा था। उस समय के आर्यसमाज के वार्षिकोत्सवों की शान ही कुछ निराली हुआ करती थी। उत्सव के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का अधिवेशन भी चल रहा था। उत्सव में अपार जनसमूह देखते ही बनता था और विशेषता यह कि प्रत्येक वक्ता की बात को बड़ी गम्भीरता से सुना जाता था।

जब गुरुकुल खोलने का विषय प्रस्तुत हुआ तो उस पर पर्याप्त वाद विवाद उठ खड़ा हुआ। जब बहुत देर तक वाद विवाद चलता रहा तो एक आवाज सुनाई दी। आवाज यह थी— अच्छा प्रधान जी! अब आप की भी सुननी चाहिये। प्रधान थे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज। प्रधान जी उठे और अति गम्भीर भाव से अपने चारों ओर एक दृष्टि डाल कर अपनी बात कहनी प्रारम्भ कर दी। प्रधान जी ब्रह्मचर्याश्रम पूर्वक गुरुकुल शिक्षा पद्धति की आवश्यकता पर प्रकाश डाल रहे थे और उसके स्थापना पर बल दे रहे थे। इतने में जनता में से एक धीमी सी आवाज फिर सुनाई दी। और वह आवाज इस प्रकार थी— धन कहां से आयेगा? बस फिर क्या था प्रधान जी गरज उठे— मुन्शीराम जब तक तीस हजार रुपये जमा न कर लेगा उसका घर में घुसना हराम होगा।

प्रधान की इस सिंह गर्जना के साथ गुरुकुल खोलने न खोलने विषयक विवाद समाप्त हो गया। फिर भी लोग यह सोचने लगे कि प्रधान जी ने भावावेश में आकर ऐसी घोषणा कर दी है। भला इतना रुपया कहां से आयेगा? लोग धन को एकत्रित कर लेना असम्भव मान रहे थे। पर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज वाणी या कथनी के ही धनी नहीं करनी के भी धनी थे। वे जो कहते थे उसे करके भी दिखाते थे।

मुन्शीराम जी जब जब भी अपने घर जालन्धर वापिस आया करते थे तो प्रायः घोड़ागाड़ी उनको लाने के लिये घर से भेज दी जाती थी। इस बार भी यथा समय घोड़ागाड़ी उनको लिवाने के लिये पहुंच गई। किन्तु इस बार घोड़ा गाड़ी घर की ओर न आकर आर्यसमाज मन्दिर की ओर मुड़ गई। इस घटना का वर्णन हम श्रीयुत इन्द्र विद्यावाचस्पति के शब्दों में प्रस्तुत करना उचित समझते हैं क्योंकि वे ही इसके प्रत्यक्षदर्शी थे और फिर उनकी वर्णन शैली की भी अपनी एक अलग ही विशेषता है। वे लिखते हैं कि— एक दिन हम लोग बहुत आशंकित हो गए क्योंकि पिता जी का सामान गाड़ी से उतार कर घर नहीं लाया गया। कोचवान ने अन्दर आकर कहा कि—बाबू जी ने अपना सामान समाज मन्दिर में ही उतरवा लिया है और कहा है कि घर पर नहीं आयेंगे और समाज मन्दिर में उतर गये हैं। इस समाचार ने घर पर तहलका सा मचा दिया। ताई जी पहले तो स्तब्ध सी रह गई फिर पिताजी के इस कार्य के औचित्य पर काफी जोरदार टिप्पणी करने लगी। हम चारों बच्चे घबरा कर ताई जी के चारों ओर इकट्ठे हो गये। नौकर जिसका नाम रणुआ था। एक ओर खड़ा आंखों से आंसू बहा रहा था। हमारे ताया जी जो परिवार के मौनधारी सदस्य थे। कुछ समय पीछे हाथ में हुक्का लिए ड्योढ़ी से घर के अन्दर आये और ताई जी को दिलासा दिलाने लगे।

जहां तक मुझे याद है उनके दिये हुए दिलासे का वह सारांश था कि — मुन्शीराम हमेशा से ऐसा ही रहा है, जो दिल में आता है, वही करता है। तुम चिन्ता न करो अपने आप घर आ जायेगा। परन्तु ताई जी घर के मामले में ऐसे वैराग्य से सन्तुष्ट होने वाली नहीं थीं। उन्हें यह सन्देह हुआ कि पिता जी किसी बात से नाराज होकर घर में नहीं आ रहे हैं कुछ समय के पश्चात उन्होंने निश्चय किया कि समाज मंदिर में जाकर नाराजगी का कारण पूछा जाये। ताईजी का निश्चय हो जाने पर ताया जी के लिए कोई समस्या शेष न रही उन्होंने अपना हुक्का ताजा कराया और चारपाई पर बैठकर उस आनन्द का अनुभव करने लगे जिसे केवल अफीम या हुक्के का भक्त ही कर सकता है।

ताई जी ने नौकर को आर्यसमाज मन्दिर में यह पूछने के लिये भेजा कि हम लोग मिलने के लिये आना चाहते हैं कोई रुकावट तो नहीं है। मैं पहले बतला चुका हूं कि हमारी कोठी और समाज मन्दिर के बीच में केवल पक्की सड़क थी। रणआ पांच सात मिनिट में ही लौट आया। वह उत्तर लाया कि मिलने में कोई रुकावट नहीं है हम लोग तब तक तैयार हो चुके थे। ताई जी भी उस समय के रिवाज के अनुसार रेशमी घाघरा पहन और ओढ़नी ओढ़कर आगे आगे चली। हम चारों भाई बहिन पीछे पीछे कुछ घबराते हुए से चले और अन्त में हमारा नौकर रणआ चला पिता जी समाज मन्दिर के द्वार पर प्रतीक्षा कर रहे थे। वे गम्भीर मुद्रा में थे। ताईजी की घबराहट देखकर उन्हें शान्त करते हुए प्रारम्भ में ही उन्होंने कहा भाभी मैंने लाहौर में प्रतीज्ञा कर ली है कि जब तक गुरुकुल बनाने के लिए तीस हजार रुपया इकट्ठा न कर लूंगा तब तक घर में पैर नहीं रखूंगा। इसी कारण समाज में ठहरा हूं। घबराने की कोई बात नहीं है। कोई चिंता मत करो। इस आश्वासन से ताई जी का मन थोड़ा शान्त देखकर हम लोग भी शान्त हो गये। यह सर्वमेध यज्ञ का प्रथम चरण था। (द्रष्टव्य—मेरे पिता जन ज्ञान विशेषांक दिसम्बर ७ पृष्ठ २८ २५)।

इस प्रकार वह अनोखा फकीर घर से निकल पड़ा भिक्षाटन के लिये। सौ दो सौ रुपयों के लिए नहीं पूरे तीस हजार रुपयों के लिए। पं० इन्द्र जी का यथार्थ कथन है कि— आज तीस हजार रुपये इकट्ठा करना बच्चों का खेल मालूम होता है। परन्तु तब गुरुकुल के लिये तीस हजार रुपये भी एकत्र करना असम्भव सा प्रतीत होता था। जब हितैषियों ने पिता जी बात सुनी तो यह समझा कि इस व्यक्ति का दिमाग फिर गया है। लोग यह भी नहीं जानते थे कि गुरुकुल किस चिड़िया का नाम है! (वही पृष्ठ २८)।

पं० सत्यदेव विद्यालंकार इस पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं कि— तीस हजार रुपया इकट्ठा करना उस समय मामूली बात न थी। पर वह था धुन का पक्का। उसे यह सब तो करना ही था कि— कौमें पागलों के पीछे पागल होती है? दिल्ली उस समय राजधानी न थी—पर उसे अभी बादशाहत के दिन याद थे। हां भी अमीर रईस और बानिया व लोगों की कमी न थी। एक आम जलसा बुलाया गया। उसमें इस अजब भिखारी ने फिर झोली पसारी। लोग हंस दिये। एक साथी ने खड़े होकर अपील करनी शुरू की— वह फरिश्ता है गदाय वतन है—यह कोई मामूली फकीर की नहीं है। खुदा की फकीरी है। यह दीवाना है यह भीख मांगता है इल्म के लिये। अमीरो! रईसो! देहली की लाज बचाओ इस फकीर की झोली भर दो यह फकीर तुमसे मांगकर तुम्हें ही खिलाने वाला फकीर है तुम समझते हो कि यह फकीर है। नहीं! नहीं! यह अमीर है। पर दौलत का वही खिल का इसकी दिनों फकीरी में कुछ भीख डाल दो। अपनी सारी कमाई बैंक चुका है —फिर भी धूनी रमाकर कौम के लिये भीख माग रहा है। कहता है हिमालय से भी शुभ्र ब्रह्मचर्याश्रम ऋषियों का तपोवन हिमालय के सामने खड़ा करना है। यही इसकी आस है। इसी के वास्ते यह रात दिन भीख मांगता है। वे खुदगर्ज हैं जो दौलत पे जान देते हैं—देखना बाजी बस टैले इसे एक जान गया बहा लेने दो। यह वह गंगा होगी जिसमें हमारे पाप धुलेंगे। अमीर और गरीब सब नहायेंगे। वतन के ज्ञान की ऐसी जगह नई है। उसे हरी भरी करने में मदद करो। सैकड़ों मासूम कौमी शिक्षा के लिये तरस रहे हैं। इन सब का यह फकीर मां बाप बनेगा। बच्चे! तुम्हारे सबके बिना इधर उधर भटकें विलायती शिक्षा हासिल करें और तुम्हारा दिल न पसीजे। यह नामुमकिन है नामुमकिन है। ढेर लगा दो चांदी का लोग कहें कि दिल्ली अब भी जिन्दा है। इसकी फकीरी झोली की लाज तुम्हारे हाथ में है उस फकीर ने घर बार छोड़ कर वनवास लिया है। अपना खून वह कौम के पसीनेपर गिरा रहा है। कहीं इसकी आंखों से आंसू टपक पड़ा तो

(शेष पृष्ठ १० पर)

नमस्ते के औचित्य पर विचार (४)

धर्मवीर शास्त्री बी १/५१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६२

तथ्य यह प्रतीत होता है कि 'नमस्ते के अथवा वाक्य नमस्कार परक है। तुलना कीजिये—मैं तुम्हारा मान करता हूं= हम तव मानम करोमि त्वा मान्य करोमि वा=अहम वाम नमस्करोमि विचार कदाचित् ऐसा तो नहीं कि नमस्ते का अर्थ करते वक्त अन्तर्मन में मन में नमस्कार ही प्रतिष्ठित था कुछ भी हो इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि ते का तेरा की बजाय तुम्हारा (कहीं कहीं वेदान्ति में आपका भी, अर्थ करना ते के स्वकीय अर्थ को कम से-कम बड़ों के सन्दर्भ में अरुचिकर ठहराना है और यदि ऐसा है तो नमस्ते के असमान वयस्कों में प्रयोग का अनुचित मानने वालों का पक्ष सही सिद्ध हो गया।

कृपया सख्या ३ की स्वकृत समीक्षा (?) पर अमन्याग्रह छोड़ कर मेरे पूर्व लेख के आलोक में विचार करें तथा भाषा के प्रत्यक्ष और परोक्ष व्यवहार की अधूरी समझ में सत्य को मत उलझायें।

मेरा कथन है कि नमस्ते इस वाक्य में ते (तेरे लिये) पूर्वत विद्यमान है तब माता पिता को नमस्ते ऐसा कहने में ते—तुम्हारा और माता पिता को दो बार आ गये यह एक भारी त्रुटि है और इसका स्पष्ट कारण है नमस्ते को नमः (नमस्कार) या प्रणाम जैसा एक पदीय प्रयोग मान लेना।

उत्तर लेखक ने कारक की इस त्रुटिपूर्ण द्विरुक्ति का एक असम्बद्ध वाक्य रख कर निरस्त करने का व्यर्थ प्रयास किया है उनका वाक्य है— वह बोला —मैं आज घर जाऊंगा। मेरा वाक्य है— गुरु ने शिष्य से कहा वत्स सुबह उठकर माता पिता को नमस्ते किया करो।

कृपया दोनों की तुलना कर सोचें कि क्या कारकों की द्विरुक्ति दोनों में तनिक भी एक जैसी है। श्री राजवीर शास्त्री के वाक्य में वह और मैं दो कर्ता हैं और बोला और जाऊंगा दोनों से सम्बद्ध दो क्रियाएं है। वस्तुत यह कारक की द्विरुक्ति का उदाहरण है ही नहीं। क्या कोई व्यक्ति एक ही अवस्था में रहा करे। ऐसा होगा तो भाषा की गाड़ी चलेगी ही कैसे? एक ही व्यक्ति अनेक क्रियाओं का कर्ता हो सकता है तथा अनेक कारकों में प्रयुक्त हो सकता है। ऐसी द्विरुक्ति यदि कदाचित भी हो तो कोई दोष नहीं है। यह भाषा का स्वाभाविक प्रवाह है।

अब मन्तव्यित वाक्य गौर करें। मेरे वाक्य में माता पिता और ते दोनों का अन्वय नमः के साथ है अर्थात् दोनों में नमः विषयक कारक है तथा जो ते का वाच्य है वही माता पिता का है। माता पिता च नमस्ते अथवा माता पितृभ्या नमस्ते तीनों सम्प्रदान कारक (Dative Case) में। जरा, सोचें यह कैसी वाक्य रचना हुई?

इस सब गड़बड़ का उत्तरदायी है वह सोच जो नमस्ते और नमस्कार अथवा प्रणाम में अन्तर नहीं करता जिसके लिये Bow down एवं Bow down to thee एक ही हैं। वस्तुतः समीक्षा लेखक जो कहना चाहते हैं कदाचित् कह नहीं पाये या समझ ही नहीं पाये। बात यह है कि नमस्ते की साधुना के लिये एक लम्बे रास्ता से गुजरना पड़ेगा। वह इस प्रकार—नमस्ते इस वाक्य द्वारा माता पिता को नमस्कार करो (नमस्ते इति वाक्येन मातापितृभ्या नमस्कुरु) किन्तु सोचने की बात है कि क्यों इतनी लम्बी कवायद की जाय? क्या सिर्फ ते की खातिर? क्यों न सीधे ढंग से कहा जाय—माता पिता को नमस्कार करो या प्रणाम करो। कोई झगड़ा न झंझट। ते (त्वकार, से भी बच गये ऐसा एवं उलटे कामों से भी बरी। ऐसी क्या खूबी है नमस्ते में कि लम्बे रास्ते से निकलो और अगर छोटे रास्ते से निकलो तो मुंह के बल गिरो

कृपया, स्पष्ट उत्तर दें कि क्या निम्नलिखित वाक्य शुद्ध एवं स्वीकार्य हैं?—

हिन्दी	संस्कृत
सब को नमस्ते=सर्वेभ्य	सर्वेभ्यो नमस्ते
उनको नमस्ते=तेभ्य	तेभ्यो नमस्ते
तुम सबको नमस्ते=युष्मभ्यं नमस्ते	
आपको नमस्ते=भवते नमस्ते	

और कहिये क्या यह शुद्ध है—यज्ञदत्त प्रभदत्त सुबचलि—प्रभदत्त देवदत्त रतुभ्यं नमस्ते इत्यभिदधतु। जरा ध्यान से देखें तुभ्यम भी ते भी।

तथ्य यह है कि नमस्ते ने भाषा में एक विकृति उत्पन्न कर दी है। कैसे? तनिक देखें नमस्ते' एक वाक्य है। वाक्य का लिंग वचन पद के समान होना असम्भव है। अस्तु निम्नलिखित में किसी एक को शुद्ध या अशुद्ध कहना असम्भव है—उनसे हमारी हमारा नमस्ते कहें। बच्चों को नमस्ते करना करनी सिखाना सिखानी चाहिये तथ्य यह है कि नमस्ते का लिंग वक्ता की इच्छा पर निर्भर है कितनी बड़ी त्रुटि है यह?

खेद है युष्मद और भवत के एकत्र प्रयोग के सम्बन्ध में मल्लिखित पूरे अनुच्छेद को पढ़े बिना आपने मुझे परस्पर विरोधी बात कहने का दोषी करार दे दिया। इसे कहते हैं कलमचलाना। मेरा कथन तो मात्र इतना है कि तुच्छवाक त्वकारपूर्वक सलाप शिष्ट समाज में पसन्द नहीं किया जाता। यदि कहीं सीमा का उल्लंघन है (चाहे वह कालिदास ही क्यों न हो) तो दोष भी उन्हीं के खाते में कहिये है कहीं वाप मरे पण में? हां, आप स्वय देख लें कि कहीं आप वाक्छल की गिरफ्त में तो नहीं आते।

मैंने पूज्य वर्ग के लिये प्रणाम को उपयुक्त माना है। अब भी मानता हूं। नमस् अव्यय * अत उस प्रकार की बैसाखी चाहिये। फिर नमस्कार करता हूं—कहने में कृ (करना) दो बार बोलनी पड़ता है हिन्दी में संस्कृत में नहीं अतः यह प्रणाम की तुलना में कमजोर है। और नमस्ते तो है ही ते का कैदी। अस्तु प्रणाम सर्वोपरि है सर्वोचित है उन्मुक्त है। एक को करो हजार को करो। प्र उपसर्ग ने उसके नति अर्थ में चार चांद लगा दिये हैं पुरुष (Person) का बन्धन नहीं अत सम्प्रयोग में कोई दिक्कत नहीं। रही प्रणाम की वैदिकता की बात। सो ठाम प्रह्वत्ते (शब्द च) के जितने भी of Springs हैं वेद में प्रयुक्त हैं ही—नम नमन्ता जनय उपमादो नमवु समच्चरायोषसो नम त आदि।

आपने नमस्ते की बखौहिणी व्यर्थ सजाई। नमस्ते कब किसने किसको की इससे मेरे लेख पर कोई समाधानात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। मैं नमस्ते के वजूद को स्वीकार करता हूं तथा समवयस्कों में आमने सामने के अभिवादन में उसके प्रयोग से भी सहमत हूं।

हां जिस भी कनिष्ठ ने ज्येष्ठ को त्वकारपूर्वक अभिवादन किया वह मनुस्मृति के अनुसार प्रायश्चित का भागी है तथा किसी ज्येष्ठ ने कनिष्ठ को नमस्ते कहा हो तो वह अतिशय नम्रता कहा जा सकता है किन्तु नदित आशा प्रदान के विधान का उल्लंघन का दोषी अवश्य है।

मार्ग में आने में वय और चलने वाली व्यवस्था को—कन्यों की ही तो समर्थित है

अन्त में विनम्र निवेदन है

सत्य स्वीकरण असत्य त्यजन यथा प्रसिद्ध व्रत
किं नर्भा अमलीक पर परिवर्तैर येमत स्वैरिव
तेनाऽव्यस्त मतनमस्ते इति वाक्य तदुद्भिद मत=
प्रोक्ते सविद धात लिव तनमून वन स्फुट जायताम॥

अश्वमेध यज्ञ परिचय (२)

श्री वेदप्रिय शास्त्री

प्रजापति की आंख

प्रजापति की आंख अस्वस्थ मृत सी होकर बाहर निकल कर गिर पड़ी वही अश्व है। सो उसका रहस्य यह है कि राष्ट्र का निरीक्षण विभाग शिथिल और प्रभाव शून्य हो गया। जब राष्ट्र के शासक की दृष्टि में दोष हो जावे। वह ठीक न देख सके या अन्धा ही हो जावे तो उसका परिणाम शत्रुवृद्धि और अराजकता ही होते हैं। इस एक अंग के अभाव में सम्पूर्ण प्रजापति मृत सा ही हो जाता है। राष्ट्र में पाप की वृद्धि और ज्ञान की अवहेलना होने लगती है, यही ब्रह्म हत्या है। इस कारण राष्ट्र का क्षत्रिय वर्ग पथभ्रष्ट, कर्तव्य-विमुख तथा पदभ्रष्ट हो जाता है। यही तो प्रजापति की आंख थे सो अपने स्थान से भ्रष्ट हो गिर पड़े। अब विद्वान् लोगों ने इन्हें पुनः संस्कारित किया, चिकित्सा की, उन्हें ठीक करके पुनः यथा स्थान प्रतिष्ठित किया। इस प्रकार विकलांग प्रजापति सर्व हुआ। यही आंख गिरने का रहस्य है।

जिस राष्ट्र को नष्ट करना हो वहां विद्वान् बुद्धिजीवी समुदाय की हत्या कर दो राष्ट्र स्वतः नष्ट हो जायेगा और जितने अधिक बुद्धिमान शत्रु होंगे उतना ही शीघ्र नष्ट होगा। अश्वमेध राष्ट्र को नष्ट होने से बचाता है जैसा कि कहा है—"पराऽस्य द्विषन् भ्रातृव्यो भवति" इससे द्वेष करने वाला शत्रु परास्त हो जाता है। जो अन्य प्रजावर्ग में विद्वान पुरुषों की हत्या करते हैं अश्वमेध से उनकी भी चिकित्सा होती है। अश्वमेधयाजी सारी दिशाओं को जीत लेता है। अश्वमेध से सम्राट बनने की महत्वाकांक्षा भी पूर्ण होती है। इसके अतिरिक्त एक अन्य प्रयोजन से भी किया जा सकता है। इसका वर्णन इस प्रकार है—प्रजापति ने पुन. यज्ञ करने की सोची। उसने प्रयत्न किया तप तपा सो वह इतना थक गया कि उसका यशोवीर्य रूप प्राण निकलने लगा, वह मरणासन्न हो गया परन्तु उसका मन, जीवित व सशक्त रहा। सो इस कारण जो वह अश्वत् अर्थात् मरणासन्न था सो अश्व हो गया। उसने अपने को मेध्य बनाकर आत्मन्वी होने का सकल्प किया और हो गया यही अश्वमेध का अश्वमेधत्व है। तात्पर्य यह है कि पराक्रमी पुरुष यदि यशोबल से हीन भी हो जाय और मनोबल बनाये रखते हुए शक्ति संचय करता रहे तो पुनः मृतप्राय राष्ट्र में प्राणों का सचार कर सकता है और विश्व सम्राट बन सकता है। यह अश्वमेध यज्ञ से सम्भव हो सकता है। (शतपथ १०-६-२-३-७)

अश्वमेध विधि व्याख्या

अश्वमेध करने की इच्छा वाला अर्थात् छात्र सगठन का नियोजन व राष्ट्रों को एक सूत्र में बान्ध कर विश्व सम्राट् बनने की इच्छा जिसे है वह सर्वप्रथम क्या करे यह बताते हैं।

ब्रह्मौदन

दीक्षा से एक दिन पूर्व ऋत्विक् वरण कर उन्हें घृत मिला भात खिलाता है। इसे ब्रह्मौदन कहते हैं। बचे हुए शेष घृत को अश्व बान्धने की रस्सी में चुपड़ता है यह रस्सी दर्भ की होती है इसे रशना कहते हैं। इसका तात्पर्य है कि जब कोई संगठनात्मक प्रवृत्ति अपना प्रभाव खो देती है तो उसे पुनः प्रभावशाली बनाना होता है। यह कार्य वही कर सकते हैं। जिनमे इस प्रकार की योग्यता हो। इन्हे ही ऋत्विक् कहा गया है। यह राजनीति का प्रकरण है अतः यहा राज्य शासन व्यवस्था के योग्य विद्वान् ही ऋत्विक् कहे गए है। इस प्रकार के ज्ञान को रेत या वीर्य कहते हैं। ब्रह्मौदन उसी का प्रतीक है। राजा स्नेह पूर्वक इनका सत्कार कर इस महा कार्य में उन्हे नियुक्त करें। क्योंकि सफलता दिखाने का सामर्थ्य इनमें ही है। वे विशेषज्ञ है। इसका वर्णन इस प्रकार है। "प्रजापति ने यज्ञ किया, उसकी महिमा निकल भागी और यहां ऋत्विकों में प्रविष्ट हो गई। उसने इनकी सहायता से पुनः प्राप्त किया।"

सुवर्ण दान एवं रशनाभ्यञ्जन

ऋत्विकों को सुवर्ण दान में देता है। सो यह अश्व का वीर्य ही था जो निकल कर सुवर्ण बन गया था, सो इस क्रिया से अश्व में वीर्य का आधान करता है। क्षत्रियगण को पुनः वीर्यवान् बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ करता है। इसके पश्चात् शेष घृत को रस्सी में चुपड़ने का तात्पर्य है कि पशु को संस्कार एवं प्रशिक्षण देने के लिये बांधना आवश्यक है। परन्तु बन्धन कष्टदायक होता है एवं परतन्त्र बनाता है। यहां राष्ट्र के क्षत्रियगण को बांधना है उन्हें संस्कारित, आस्थावान् समर्पित, पराक्रमी व तेजस्वी बनाना यह बिना अनुशासन एव प्रतिज्ञा बन्धन के सम्भव नहीं। बन्धन यदि स्नेहपूर्ण हो तो खटकता नहीं, दुःखों की ओर ध्यान न जाकर सहनशीलता व श्रद्धा बढ़ती है। खुरदरी रस्सी चुभती है पर चिकनी नहीं खटकती। हाथ से सहलाने और पुचकारने से, खिलाने पिलाने से क्रूर पशु भी क्रूरता छोड़ देते हैं। बन्धन और अनुशासन के बिना दोष दूर नहीं हो सकते सो क्षत्रियों का प्रेम पूर्वक अनुशासन में बांधने का यत्न ही इस रशनाभ्यञ्जन का तात्पर्य है। यह रस्सी १२ या १३ हाथ की होती है सो सम्वत्सर भी १२ माह या १३ माह का होता है। १३वा अधिक मास सम्वत्सर का ककुद् है। सम्वत्सर ऋतुओं का ऋषभ है. अश्वमेध यज्ञों का ऋषभ है सो ऋषभ के ककुद्-उच्चांग को संस्कारित करता है। इसका तात्पर्य है कि जितना बड़ा राष्ट्र उतना बड़ा अनुशासन तथा राजा स्वयं भी अनुशासितहो.अपने पद को संस्कार युक्त करे। रशना ग्रहण राष्ट्र की बागडोर ग्रहण करना है।

वसतीवरी आपः ग्रहण

मध्याह्न में चारों दिशाओं से लाए गए जलों का ग्रहण करता है और पूरे सत्र मे इन्हे साथ रखता है। इसका तात्पर्य है अपने राष्ट्र में चारों ओर बसने वाली श्रेष्ठ प्रजा का जो राज्य के प्रति निष्ठावान् एवं श्रद्धालु हो उसका इस महाकार्य में सहयोग लेना। इससे वह राष्ट्र में अन्नों को रोकता है। "प्रजा वै आपः" आप प्रजाओं की प्रतीक है। वह अन्नों का उत्पादन करती है। अतः उसका सहयोग बहुत आवश्यक है क्योंकि "अन्नं "साम्राज्यानामधिपतिः" अन्न साम्राज्यों का स्वामी है इसलिये कहा" दिशुवा अन्नं आपो अन्नम् अन्नेनैवास्मन् अन्ननं अवरुन्धे।"

अश्व बन्धन

अश्व को रस्सी में बांधने से पूर्व ब्रह्मा से अनुमति प्राप्त करता है। ब्रह्मा, उदगाता, होता और अध्वर्यु, ये चार ऋत्विक् हैं। ये निरीक्षण समर्थ, कार्य-सचालन समर्थ प्रचार-प्रसार समर्थ, एवं रक्षण-समर्थ विद्वान् और मुख्य व्यक्तित्व हैं। राष्ट्र का सारा कार्यक्रम इनके ही परामर्श से चलता है। ब्रह्मा इनमें प्रमुख होता है। सो इन्हें प्रधानमन्त्री (ब्रह्मा) मानव संसाधन विकासमन्त्री (होता) सूचना प्रसारणमन्त्री (उद्गाता) तथा रक्षा व गृहमन्त्री (अध्वर्यु) कहा जा सकता है। सो इसका यही तात्पर्य है कि बिना मन्त्रियों के परामर्श या विद्वानों से पूछे बिना कोई कार्य न करें। स्वयं आज्ञापालक होकर राज्य की प्रजा को तथा अपने राज्यकर्मियों को आज्ञा पालक बनावे। (क्रमशः)

आर्यसमाज नोएडा की अनुकरणीय गतिविधियां

बी-६९, से-१२, नोएडा-२०१३०१
Arya Samaj Noide Br off G-6, Sec-12 Noida Ph 89-53467

प्रमुख गतिविधियां एवं विनम्र निवेदन—

(क) निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएं :

१—ऐलोपैथिक, हृदय एवं छाती रोग विशेषज्ञ प्रत्येक शनिवार प्रात ९ से ११ बजे तक । (डा० ए बी आर्य, एम बी बी एस एम डी ,)

२—महिला रोग विशेषज्ञ प्रत्येक सोमवार प्रात ९ से ११ (डा० प्रवीण वर्मा, एम बी बी एस)

३—प्राकृतिक एव होम्योपैथिक सोमवार से शुक्रवार प्रात ९ से ११ (डा० धर्मवीर मनचन्दा)

४—आयुर्वैदिक , बुध वीर,शुक्र प्रात ११ से १(डा०अजीत नागिया)

५—शल्य (Surgery) मगल व शनिवार प्रात ११ से १ (डा० ओ०पी० बतरा)

६—हड्डी रोग विशेषज्ञ प्रत्येक बुधवार साय ४ से ६ (डा० अमिताभ गुप्ता, एम एस)

(ख) सत्संग एवं संस्कार :

१—भजन; प्रात ५ से ६, साय ६ से ७ बजे तक ।

२—दैनिक हवन एव वेद पाठ प्रात ६ से ७ बजे तक ।

३—रविवारीय पारिवारिक सत्सग प्रात ८ से १० यज्ञ भजन, स०प्र कथा, प्रवचन आदि ।

४—बृहस्पतिवार पारिवारिक महिला सत्सग साय ४ से ६ बजे तक

५—शुभ अवसरो पर विशेष कार्यक्रम एव वार्षिक उत्सव ।

६—विवाह, जन्म दिवस, मुण्डन, गृहप्रवेश आ द स स्कार शुद्ध वैदिक रीति से करवाने हेतु आचार्य भवानी दत्त आचार्य कैलाशचन्द्र आचार्य रामचन्द्र प० राजनारायण [illegible] श्रीमती गायत्री मीना आदि विद्वानो एव विदुषियो [illegible] उपलब्ध है ।

(ग) विविध कार्यक्रम एवं योजनाएं :

१—वैदिक पुस्तकालय एव वाचनालय प्रात ९ से १ बजे तक ।

२—वैदिक साहित्य चारो वेद, उपनिषद, दर्शन सत्यार्थप्रकाश, गीता, रामायण आदि साहित्य का विक्रय ।

३—हवन यज्ञ हेतु हवन कुड, समिधा, सामग्री आदि की व्यवस्था एव बिक्री ।

४—आर्य सगीत मडली । (सचालक श्री हसराज [illegible] श्रीमती गायत्री मीना)

५—शुद्धिकरण एव वैदिक धर्म मे परावर्तन करने की व्यवस्था ।

६—सस्कृत पाठशाला : प्रत्येक शनिवार व रविवार साय ४ से ५ बजे तक ।

७—प्रचार वाहन द्वारा नोएडा एव आस-पास के गावो मे प्रचार ।

८—रिश्ते-विवाहादि सम्बन्ध करवाने की व्यवस्था ।

९—आर्थिक सहायता निर्धन छात्रो एव असहाय विधवाओ आदि की यथासम्भव सहायता ।

१०—अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का स्कूलो-कालिजो आदि मे वितरण

११—शिविर समय-समय पर योग-शिविर, सस्कृत प्रशिक्षण शिविर, चिकित्सा शिविर रक्त दान शिविर, नेत्र व दन्त रोग निरीक्षण शिविर, टीकाकरण शिविर आदि की व्यवस्था ।

१२—प्रतियोगिताए आर्ष ग्रन्थों पर आधारित राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताए ।

१३—भावी योजनाए वानप्रस्थ आश्रम, आर्ष गुरुकुल, ध्यान केन्द्र इत्यादि ।

(घ) विनम्र अनुरोध .

१—समस्त महानुभावो से अनुरोध है कि आर्य समाज नोएडा के सदस्य बने और विभिन्न कार्यक्रमो एव भवन निर्माण कार्य आदि को सुचारु रूप से सचालित करने हेतु तन-मन-धन से सहयोग करें । प्रत्येक सदस्य को मासिक कार्यक्रमो एव गतिविधियो की सूचनार्थ एक मासिक-पत्र Circuler) नि शुल्क भेजा जाता है ।

२—ईश्वर, वेद, ब्रह्माण्ड, जीवन, धर्म, मतमतान्तरो के वास्तविक ज्ञान विज्ञान एव वैचारिक क्रान्ति हेतु महर्षि दयानन्द कृत विश्व प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थप्रकाश (LIGht cf Truth) एक अत्यन्त लाभदायक व ज्ञानवर्धक पुस्तक है । कृपया इसे एक बार अवश्य पढे । (सम्पर्क सूत्र)

डा० ए बी आर्य (प्रधान)
बी ६ सै० १२ नोएडा

पुस्तक समीक्षा

बुद्धि चमत्कार की सत्य घटनायें

पृ स० १६८ मूल्य ६० रुपये
लेखक—धर्मपाल शास्त्री
प्रकाशक—किताब घर गाधीनगर, दिल्ली-३१

मनुष्य और अन्य प्राणीमात्र मे भेद यदि है तो बुद्धि का ही है मानव उचित-अनुचित का ज्ञान विवेक बुद्धि से ही करता है ।

बुद्धिर्यस्य बल तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् ॥

भारी भरकम शरीर सेक्या यदि बुद्धि से शून्य है अत बुद्धि स्वय एक अद्भुत चमत्कार है भगवान ने ज्ञानेन्द्रिया और कर्मेन्द्रिया ज्ञान-पूर्वक कम करन के लिये दी है परन्तु प्रभु से प्रार्थना की है कि इसे सन्मार्ग पर प्रेरित कर चलायें । इसीलिये कहा कि 'धियो यो न प्रचोदयात्" ।

अच्छाई और बुराई का मापदण्ड बुद्धि द्वारा ही किया जाता है। प० धर्मपाल जी शास्त्री ने इस पुस्तक मे जो घटनाक्रम दिये हैं वह विलक्षण है, नन्हे जासूस की बुद्धिमत्ता, अभ्यास से जडमति होत सुजान पावा से नही बुद्धि से, जैसे के साथ तैसा, साप भी मरा लाठी भी न टूटी, जिसकी बुद्धि कमजोर हो बन्दूक और बुद्धि,बुद्धि बडी या भालू प्रयोग, एकाग्र, वैज्ञानिक, सुबुद्धि आदि ऐसे चमत्कारिक प्रसग लिखे हैं जो कोमल बुद्धि युक्त मानव मे चैतन्यता भर देंगे । अच्छे से अच्छा समाधान निकालने मे बुद्धि ही काम करती है ।

हितोपदेश पचतन्त्र मे सरल कथानक देकर बात को समझाने के लिये प्रयासकिये गये आम बुद्धि को मेधा कहतेहैं । बुद्धि के चमत्कार अकबर सेही बीरवल के किस्से प्रसिद्ध हैं ।

इस पुस्तक मे ऐसी चमत्कारिक घटनायें दी हैं जिन्हें पढकर पाठको का मनोरजन होगा साथ ही ज्ञानवर्धन भी मिलेगा । लेखक कलम के धनी हैं यशस्वी होंगे जब पाठको को लाभ मिलेगा ।

प्रकाशक भी बधाई के पात्र हैं जिन्होने ऐसे अनूठे ग्रन्थ छापे है जिनका पाठक अनुशीलन कर जीवन सार्थक कर सकेंगे ।

— डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

श्रद्धा मूर्ति श्रद्धानन्द

(पृष्ठ ६ का शेष)

कहर आ जायेगा। यहा से जावे तो झोलिया भर-भर कर लावे। कौम के फकीर की झोली खाली न रह जाये। सब और क्रांति की उस समय वागल फकीर की झोली भरी और खूब भरी। (द्रष्टव्य अलकार श्रद्धानन्द विशेषाक जनवरी १९३५ पृष्ठ ५९ ६०)।

पाठकवृन्द! सामान्य भिक्षु अपने लिये मागता है और वह भी परमात्मा अल्लाह खुदा या मालिक के नाम पर मागता है। किन्तु यह ऐसा अनोखा भिक्षु है जो अपने लिए नही मागता जाति के लिये मागता है कौम के लिए मागता है। और मालिक के नाम पर नही कौम के नाम पर जाति के नाम पर मागता है। और फिर पैसा दो पैसे नही मागता। पूरे तीन हजार रुपये मागता है। विशेषता यहकि औरो से मागने से पहले अपना सर्वस्व दे डालता है। सर्वमेध कर डालता है। और तब जाकर दूसरो के आगे इस पवित्र काम के लिए हाथ फैलाता है। इसी का परिणाम था कि छः मास की अल्पावधि मे ही इतनी बडी राशि एकत्रित हो गई कि जिस से गुरुकुल की स्थापना हो सकी। और फिर ब्रह्मचारियो के प्रवेश का प्रश्न आया तो सर्वप्रथम अपनी सन्तान उसके समर्पित कर दी आचार्य का प्रश्न आता है तो स्वयं को प्रस्तुत कर देता है। ऐसा था वह भिक्षु जिसका नाम था 'श्रद्धानन्द सन्यासी'।

आज कहा है ऐसे आदर्श त्यागी तपस्वी आर्य नेता जो करनी के धनी हो। जो कहते हो वह करके दिखाते हो और फिर कबीर की भाति यह कह सकने का साहस भी रखते हो कि

आदर्श लोक सेवक श्रद्धानन्द

(पृष्ठ ३ का शेष)

छिन्न किया, शिव के रूढियो के प्रतीक पुराने अस्थि धनुष को तोडकर चकनाचूर किया, वानर जाति अपनी अछूत जातियो को आर्य वीर बनाकर विदेशी रावण को मारकर उसके वशजों को आर्य वैदिक धर्म का अनुयायी बनाया। क्या आज स्वतन्त्र भारत मे यह स्वप्न, वैदिक धर्म के वैज्ञानिक आदर्श आश्रमवाद का स्वप्न पूरा नहीं हो सकता? क्यो नही? आशा है आप सब लोग सूत्रधार, इस दिशा मे विशेष रूप से ध्यान देंगे—वर्तमान समय मे Classless caste less वर्ग हीन, श्रेणी हीन आर्य मानव समाज का निर्माण कार्य स्वामी श्रद्धानन्द ने वर्षो पहले गगातट पर प्रारम्भ किया था। आज भारत के शिक्षणालयो के साथ ऐसे आश्रमो का स्थापित करना ही हमें वैदिकधर्मानुरागी श्रद्धानन्द का सच्चा श्रद्धालु शिष्य बना सकता है। यही असली श्रद्धाञ्जलि है, जो हमे वैदिक धर्मानुरागी बना सकती है।

कबिरा खडा बाजार मे लिये लकुटिया हाथ।
जो घर फूके आपना चले हमारे साथ।

इस अमर बलिदानी के पावन बलिदान दिवस पर हमारा शत शत प्रणाम।

आर्य निवास चन्द्र नगर मुरादाबाद २४४०१२

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

विशाल शोभायात्रा

यज्ञ के उपरान्त प्रातः १० बजे

२५ दिसम्बर १९९४ को विशाल शोभा यात्रा श्रद्धानन्द बाजार से प्रारम्भ होकर दोपहर २ बजे लाल किला मैदान में सार्वजनिक सभा के रूप में परिवर्तित हो जायेगी। इस अवसर पर अनेक आर्य विद्वान, राष्ट्रीय नेता, स्वतन्त्रता आन्दोलन के महान सेनानी, सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इस शोभायात्रा में अधिक से अधिक संख्या में पधार कर संगठन को सुदृढ़ करने की कृपा करें।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री को वैद्य (डा०) अश्विनी कुमार स्मृति वैदिक विद्वान पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

महाशय धर्मपाल
प्रधान

डा० शिवकुमार शास्त्री
महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

आवश्यक सुझाव

१ कृपया २५ दिसम्बर १९९४ को प्रात १० बजे से पूर्व श्रद्धानन्द बलिदान भवन पहुच जाए।

२ शोभा यात्रा मे भाग लेने के लिए अपने-अपने आर्य समाज अथवा स स्था मे एकत्रित होकर बस ट्रक तथा टैम्पो आदि से जुलूस के रूप मे बलिदान भवन पहुचकर अनुशासनबद्ध शोभायात्रा मे चले।

३ सब स स्थाओ तथा आर्यसमाजो के साथ ओ३म् ध्वज हो।

४ सभी आर्य पुरुष केसरिया पगडी अथवा टोपी तथा महिलाए केसरिया साडी या दुपट्टा पहनकर आने की कृपा करे।

५ साप्ताहिक सत्स गो मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से सम्बन्धित कार्यक्रमो का आयोजन करे। प्रात अपने-अपने क्षेत्रो मे प्रभात फेरियो का आयोजन कर जन-जागरण करने का प्रयास करे।

६ सब आर्य समाजो व शिक्षण स स्थाओ से अनुरोध है कि अपने-अपने क्षेत्र मे शोभायात्रा की सूचना के लिए कपडो के बैनर लगवाए। बैनर का विषय होगा —
"स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, शोभायात्रा
"२५ दिसम्बर प्रात दस बजे, श्रद्धानन्द बाजार से"

७ सभी आर्य समाजे यथासम्भव अपनी-अपनी भजन मण्डली लाने की कृपा करे।

ध्यान योग शिविर एवं विशाल यज्ञ

आर्य समाज लोहाई रोड फर्रुखाबाद के प्रांगण मे ११६ वे वार्षिक महोत्सव के अवसर पर ५ १-९५ से ११-१ ९५ तक डा० दिव्यानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता म ध्यान योग शिविर एव अथर्ववेद यज्ञ का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर ब्र० धर्मपाल जी आचार्य चन्द्रदेव जी तथा श्री वीरपाल सिंह जी आदि विद्वान पधार रहे है। समारोह म विभिन्न सम्मेलनो का भी आयोजन किया गया है। शिविरार्थी ४ जनवरी ९५ तक पहुचने का कष्ट कर। अधिक से अधिक संख्या म पहुचकर आध्यात्मिक लाभ का आनन्द लकर जीवन सफल बनाये।

जौनपुर क्षेत्र मे वेद प्रचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जौनपुर के अन्तर्गत २८ अक्तूबर से ३० नवम्बर तक विभिन्न विद्वानो द्वारा विभिन्न स्थानो पर वैदिक धर्म का प्रचार किया गया इस आयोजन से क्षेत्र की जनता मे नयी जागृति पैदा हुई तथा आयोजन सफल रहने से कार्यकर्ताओ मे नवीन उत्साह का संचार हुआ। प्रचार कार्य निम्न स्थानो म किया गया—भदेवरा, बासबारी, बम्हावन, मझगवा, बनपुरा, आर्य विद्यापीठ जौनपुर, गुतवन सहित अनेक स्थानो पर सर्वश्री प० बैरागी त्रिपाठी, मुकुन्द किशोर आर्य तथा आर्य मुनि वानप्रस्थ आदि अनेक विद्वानो ने वैदिक धर्म का नाद गुजाया।

पोस्टल रजिस्ट्रेशन न० डी० एल० ११०४६/६४ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२५ १२ ६४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० U (C) ६३
R N 626/57 Licensed to post without prepayment Licence No U (C) 93 Post in N D P S O on 22 23-12 1994

श्रद्धेय वीरेन्द्र जी की पुण्य तिथि

आपको सूचना म सूचनाथ निवदन है कि आय प्रतिनिधि सभा पजाब के भूतपूव प्रधान स्वर्गीय श्री वीरेन्द्र जी प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी निर्भीक पत्रकार एव आय नेता ३१ दिसम्बर १९९३ को स्वग सिधार गए थे। उन्होने बहुत दिना तक आय प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान क रूप मे काय किया। और आजीवन कई शिक्षण सस्थाओ धार्मिक व सामाजिक आय सस्थाओ से जुड रहे। उनका हमारे बीच म से गए हुए अब एक वष पूरा होने वाला है। इसलिए उन का पुण्य तिथि ३१ दिसम्बर १९९४ शनिवार को मनाने का निश्चय किया है। यह श्रद्धाजलि समारोह ३१ दिसम्बर को उनके निवास स्थान बारादरी समीप हसराज स्टडियम जालधर मे प्रात दस बजे यज्ञ से आरम्भ होगा। ११ बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। ११ बजे से साढे ११ तक भजन होग और साढे ११ बजे से एक बजे तक श्रद्धाजलि समारोह होगा। इसलिए मेरी सभी आय समाजो के अधिकारियो सदस्यो और आय प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित सभी शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो प्रिंसीपलो व अध्यापक वग और डी० ए० वी० सस्थाओ के अधिकारियो व अध्यापक वग से प्राथना है कि वे इस श्रद्धाजलि समारोह में पधार कर इस महान नेता को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा-महामन्त्री

आर्यवीर दल के शिविर

दिनाक २६ दिसम्बर ९४ से १ जनवरी ९५ तक

१—आमवन उत्थाथ साधना स्थली ग्राम डाहर राजगढ जिला सिरमौर हिमाचल प्रदेश (सयोजक आचाय आय नरेश)।

आय समाज [illegible] फरुखाबाद) उ प्र० सयोजक—डा० सर्वेश कुमार आय मन्त्री [illegible] आय वीर दल इटावा

३ गुरुकुल [illegible] उत्तमा) सयोजक [illegible] आय (सचा [illegible] प्रान्त)

उपरोक्त तिथियो म [illegible] स्थानो पर स्थानीय शिविर आयोजित किए जा [illegible] भाग ले सकते हैं

[illegible] बनियान सफेद शट ब्राउन पीं० टा० [illegible] एव अपना आवश्यकता के लिए अन्य वस्त्र

अन्य आवश्यक सामग्री—[illegible] बिस्तर लाठी टाच खाने के पात्र [illegible] आवश्यकतानुसार अपने साथ लाये।

द्वारा—हरिसिंह आय (कार्यालय मन्त्री)
सार्वदेशिक आय वीर दल नई दिल्ली

वैदिक-सम्पत्ति प्रकाशित

मूल्य—१२५) रु०

सार्वदेशिक सभा के माध्यम से वैदिक सम्पत्ति प्रकाशित हो चुकी है। ग्राहकों की सेवा में शीघ्र डाक द्वारा भेजा जा रही है। सूचना [illegible] काम दे पुस्तक सुरक्षा दें। धन्यवाद प्रकाशक

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द का पावन य बलिदान।
याद रखेगा ही सदा हमारा देश महान॥
ऋषि प्यारे की कृपा से किया जीवन का कल्याण
श्रद्धा भाव भर के दिल मे बने श्रद्धानन्द महान
देश जाति धम पर किये प्राण बलिदान।
जीवन ला मत माय पर पाया वेद का ज्ञान॥
काय गुरू पूरा कर लिया प्रण मन मे ठान
अन्तिम सास भी दे गए जन हित मे स्वामी दान
जामा मस्जिद पर दिया स्वामी ने व्याख्यान।
चकित हुए लोग सब क्या हिन्दू मुसलमान॥
ली उपाधि महात्मा की बने महात्मा गाधी महान
गाधी जी न भी उन्हें बडा भाई लिया मान
काय श्रद्धानन्द क पूरे कर देकर भी प्राण।
तभी सफल होगा य श्रद्धानन्द बलिदान॥

देव श्रुति
आय समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर

राष्ट्र चेतना महा सम्मेलन

आय समाज [illegible] के तत्वावधान मे तथा ग्राम प्रचार समिति के द्वारा ८ जनवरी को २ बजे से ५ बजे तक बी ब्लाक हनुमान मन्दिर किरण गाडन मे श्री मृणाल गुप्ता की अध्यक्षता मे राष्ट्र चेतना महा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर साव० सभा के प्रधान प० वन्दे मातरम रामचन्द्र राव मुख्य अतिथि होगे। समारोह मे डा० सच्चिदानन्द शास्त्री चौ० अमरनाथ मुकेश शमा बचनसिह आय डा० धमपाल तथा श्री सुखदेव सहित अनेक प्रतिष्ठित महानुभाव पधार रहे हैं। कायक्रम के सयोजक प० अशोक कुमार महामन्त्री मानव विकास परिषद हैं।

सार्वदेशिक सभा का नया प्रकाशन

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली द्वारा मुद्रित तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए डा० सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा नई दिल्ली-२ से प्रकाशित

939 (c) Three
940 (b) Ananda Mohan Bose
941 (b) 72
942 (c) 1876 AD
943 (c) 1904 AD
944 (a) 1904 AD
945 (c) 1849 AD
946 (a) Dadabhai Nauroji
947 (b) 1912 AD
948 (c) 1914 AD
949 (a) S Subramaniya Iyer
950 (a) April 1915
951 (d) Khan Abdul Gaffar Khan
952 (c) 1918 AD
953 (c) A weekly journal
954 (b) 1917 AD
955 (a) Hasan Imam
956 (c) 1848 AD
957 (d) 1858 AD
958 (c) 1813 AD
959 (a) Lord Bentinck
960 (b) European
961 (b) Three
962 (d) Aligarh
963 (b) 1936 AD
964 (c) 1940 AD
965 (d) 8th Aug 1942
966 (b) Chittaranjan Das
967 (c) Vallabhbhai Patel
968 (a) Gaya
969 (a) Wandiwash
970 (c) Rock edicts
971 (d) Lord Attlee
972 (b) Elephanta
973 (b) Architecture
974 (a) Kabir
975 (d) Maurya
976 (a) 1922 AD
977 (d) Pallavas
978 (b) Kanishka
979 (d) Banabhatta
980 (a) Vashishtha
981 (b) Prithviraj Chauhan
982 (d) Pawapuri
983 (a) Si Yu Ki
984 (d) Kabul
985 (c) Ujjain
986 (c) Iltutmish
987 (c) Aurobindo Ghosh
988 (c) James A Hickey
989 (d) Madam Bhikaji Cama
990 (d) Madam Bhikaji Cama
991 (a) Tolstoy
992 (c) Subhas Chandra Bose
993 (c) Vallabhbhai Patel
994 (d) S C Bose
995 (a) Dayanand Saraswati
996 (c) Lal Bahadur Shastri
997 (d) Jatin Das
998 (c) Gopal Krishna Gokhale
999 (b) J B Kripalani
1000 (d) Swami Vivekanand

□□□